CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जनवरी
१९६५

मूल्य रु. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ट्रांजिस्टर में नया मूल्यवान आविष्कार

शक्तिमान कम खर्च वाला आकर्षक

मॉडल टीवी ०७०९

९ ट्रांजिस्टर और डायोड • आल वेव • ३ बैण्ड • मीडियम वेव रिसिप्शन के लिए फेराइट रॉड की अन्दर व्यवस्था • शार्ट वेव के लिए टेलिस्कोपिक एरियल। (बैटरी की कीमत अलग से)

कीमत रु. ४००/- केवल एक्साइज कर सहित। बिक्रीकर और अन्य स्थानीय कर अलावा।

मरफी के नवीननम ट्रांजिस्टर मॉडल को अपने निकटतम मरफी व्यापारी के यहां देखें।

murphy radio

मरफी रेडियो घर को आनन्दमय बनाता है

NAS b 364a

आवरण-पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

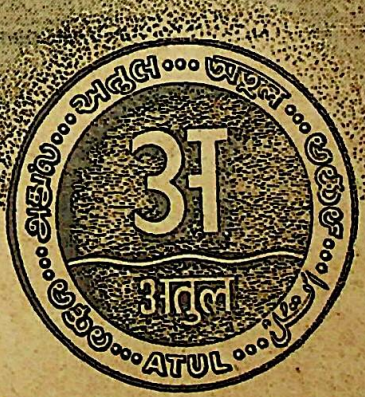

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)

पश्चिम रेलवे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत की छमाही जिल्दें

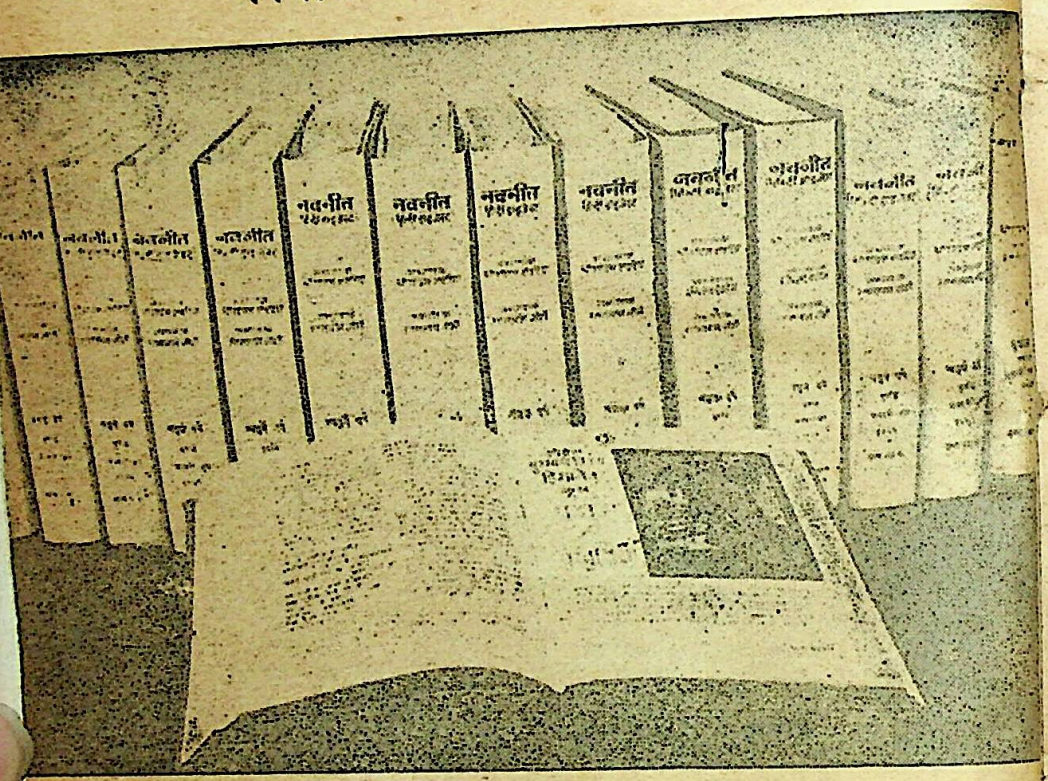

प्रति मास प्रकाशित 'नवनीत' की सामग्री इतने स्थायी उपयोग व सर्व-कालीन रुचि की होती है कि उसका संग्रह प्रत्येक घर के लिए वांछनीय है। इसीलिए 'नवनीत' के पाठक व ग्राहक सब अंकों को जमाकर अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय बना लेते हैं।

जो लोग पुराने अंकों को जमा नहीं कर पाये हैं या नये ग्राहक बने हैं – उन्हें पुरानी जिल्दें मिल सकती हैं। छः-छः अंकों (जनवरी-जून • जुलाई-दिसम्बर) को एक सुंदर जिल्द में बाँध दिया गया है। इसके अलावा छः महीने के अंकों में छपे लेखों की विषयानुसार सूची भी आरम्भ में लगा दी गयी है।

अपने अवकाश के समय में कोई भी जिल्द ले लीजिये और अपने प्रिय विषय के लेख या कहानियाँ पढ़िये।

जिल्दों का मूल्य

साधारण संस्करण ५) विशेष संस्करण ७॥) एक जिल्द पर १) डाक खर्च लगता है.

लिखिये : वितरण व्यवस्थापक, नवनीत, बम्बई-३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटेनिया के २ अपूर्व सुंदर उपहार के डिब्बे

यह लीजिये ब्रिटेनिया के दो और रंग-बिरंगे टिन्बे 'रोज़ेज़' और 'बुके' जो ब्रिटेनिया के चुने हुए तरह-तरह के स्वादिष्ट बिस्कुटों से भरपूर हैं। ये दिलकश टिन्बे किसी भी अवसर पर उपहार देने के लायक हैं और जब खाली हो जायें तो सामान रखने के लिये लाजवाब हैं।

ब्रिटेनिया बिस्कुट

अब परदेश में भी प्रसिद्ध

JWT-BC 13981

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ प्रसंगों पर

कम मूल्य में सुंदर भेंट

ऐसे अनेक शुभ प्रसंग आया करते हैं, जिस पर हम सभी मित्रों अथवा स्वजन-संबंधियों को कोई उत्तम भेंट देना चाहते हैं। पर भेंट का चुनाव एक बड़ी समस्या होती है। हम ऐसी वस्तु भेंट करना चाहते हैं, जो बार-बार हमारा स्मरण कराये; और कम मूल्य में ऐसी एक ही वस्तु हो सकती है – सुंदर साहित्य।

नवनीत के ग्राहक अपने मित्रों-स्वजनों को कम मूल्य में सुंदर साहित्य की ऐसी सुरुचिपूर्ण भेंट दे सकें, इसलिए हमने एक योजना शुरू की है। इस योजना के अनुसार नवनीत के ग्राहक १० रुपये के बदले ८ रुपये वार्षिक शुल्क देकर भेंट भिजवा सकते हैं। इस भेंट के लिए ८ रुपये का मनीआर्डर कार्यालय के पते पर भेजिये और म. आ. की स्लिप पर जिसे आप भेंट देना चाहते हों, उसका पूरा नाम-पता तथा 'भेंट' इन शब्दों के साथ अपना ग्राहक नंबर स्पष्ट अक्षरों में लिख भेजें। हम उसी के अनुसार नीचे दिये हुए भेंट–कूपन को भरकर प्रथम अंक की प्रति के साथ आपके मित्र को भेज देंगे।

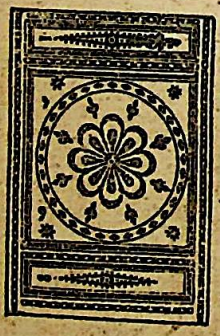

_____ को

_____ अवसर पर

_____ की ओर से

शुभकामनाओं के साथ हार्दिक भेंट

.....वर्ष के लिए : नवनीत : ग्रा. नं.

वार्षिक चंदा : एक साल का १० रु., दो साल का १८ रु., तीन साल का २५ रु; भेंट योजना का चंदा : एक साल का ८ रु., दो साल का १५ रु., तीन साल का २२ रु.

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, तारदेव, बम्बई–३४०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स
लिमिटेड.

टेलैफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS Ltd BOMBAY
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह न पूछिये

कि कितने
किलो का एक मन होता है ?

सेर और मन के बाट अब कानूनी नहीं रहे। खरीदारी और लेन-देन अब केवल किलो और क्विण्टल में ही कीजिए।

डी ए ६४/३०२

आप थके हों,

उदास हों,

तंग हों तो

नये उत्साह,

नयी उमंग

के लिये

पढ़िये

एक अंक :
५० पैसे
वार्षिक :
पांच रुपये
५० पैसे

हास्य व्यंग से भरपूर रंगीला मासिक

अपने न्यूज-पेपर एजंट से, रेलवे बुक स्टाल से या इस पते से प्राप्त कीजिये—
रंग, हिन्दी भवन, ३७०, रानी मंडी, इलाहाबाद-३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ गुना मज़बूत !!!

मेसर्स केटिन फेब्रिकेन, आस्लो नार्वे के टेक्निकल कोलैबोरेशन में बनायी हुई केलिब्रेटेड सांकलें २½ टन तक वजन उठाने के लिए, बनायी जाती हैं। परीक्षण से सिद्ध होता है कि ये सांकलें १६ टन वजन तक उठाने पर भी नहीं टूटती – वजन उठाने की निर्दिष्ट क्षमता से ६ गुना। निश्चित रूप से मजबूती की यह गारंटी है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें :]

द इंडियन लिंक चेन मैन्यफेक्चरर्स लिमिटेड

बम्बई-आग्रा रोड, भांडुप
बम्बई–७८

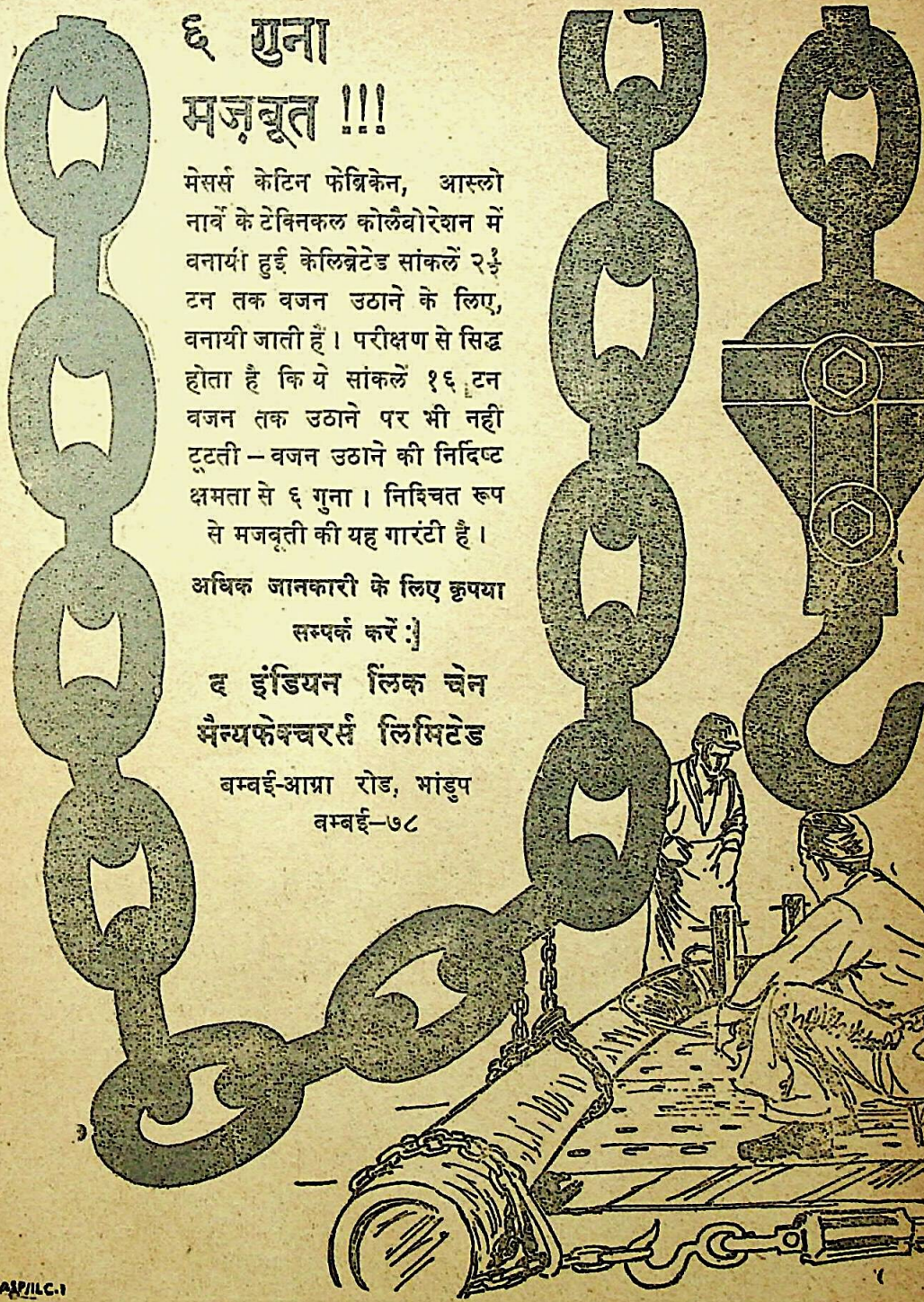

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी प्रमुख दवा-विक्रेताओं के यहां प्राप्त
विक्रेता : मेसर्स एन० चिमनलाल एंड कं० ३६, प्रिंसेस स्ट्रीट, बंबई–२

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें ।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे ।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पत में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे । अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे ।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

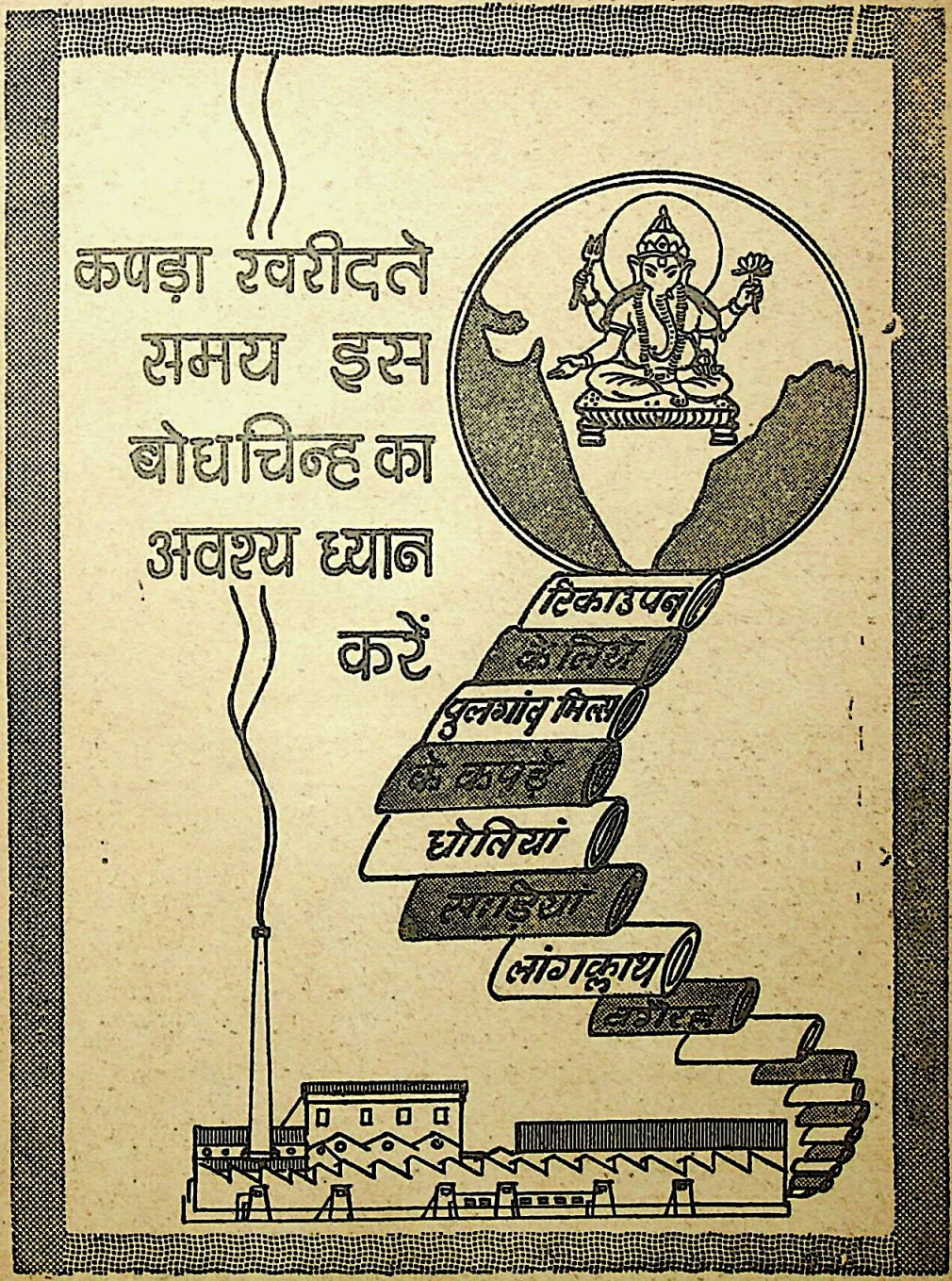

पुलगांव कॉटन मिल्स लि० बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यू स्वदेशी

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग

न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद

नरोडा रोड – अहमदाबाद

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

न व नी त प्र का श न लि०

बम्बई– ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

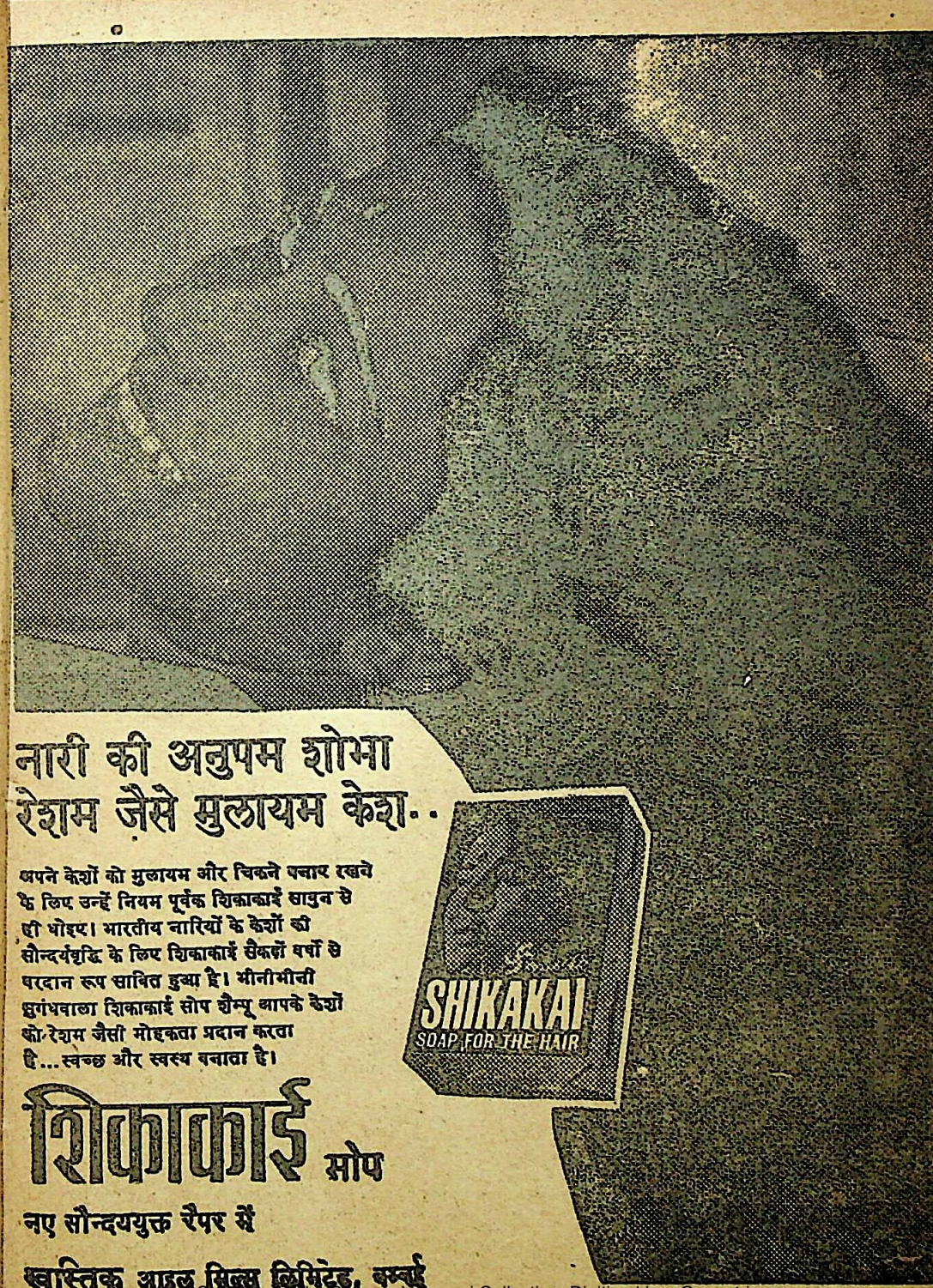

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप चाहे कुछ भी काम क्यों न करते हों,

आपका काम
देश के लिए
किया गया काम है।

आप, आपका काम, आपका जीवन सभी कुछ उस भारत के अभिन्न अंग हैं जो आज कुशलता तथा शक्ति बढ़ाने के काम में जी जान से जुटा है। इस वक्त ढील-ढाल या अकुशलता के लिए कोई जगह नहीं है। आपका काम चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह पूरी चतुराई और उत्तम ढंग से होना चाहिए। काम में रुकावट या कोई और अड़चन न आने दें और कुछ भी ज़ाया न करें। पूरी कुशलता से पूरी शक्ति से अपने काम में लगे रहें। विजय आप सरीखे लाखों-करोड़ों लोगों की कठोर मेहनत का ही फल होती है।

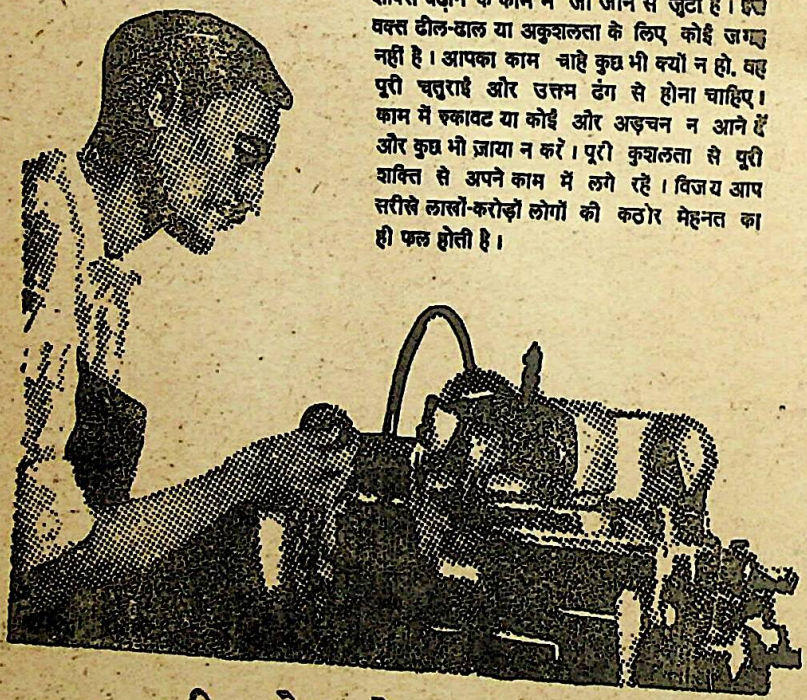

जी तोड़ मेहनत करें

क उत्पादन और सुदृढ़ रक्षा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन
खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीला की मां को अपनी 'उषा' सिलाई मशीन के ऊपर गर्व है। और उसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं है क्यों कि इन १५ वर्षों में 'उषा' ने उनकी अचूक सेवा की है। यही कारण है कि ५० से ऊपर देशों की स्त्रियाँ 'उषा' पर ही सिलाइ करना पसन्द करती हैं। शीला की मां ने निर्भरयोग्य 'उषा' सिलाई मशीनों पर भरोसा करना सीखा है। उन्हे मालूम है कि 'उषा' के देखभाल करनेवाले तथा सर्विसिंग केन्द्र देशभर में फैले हुए हैं।

आप कहीं भी हों, वहां आपकी 'उषा' मशीन की देखभाल करने के लिये एक प्राशीक्षित मेकेनिक आपको अवश्य मिलेगा···और साथ ही कम्पनी द्वारा निर्धारित मूल्य पर 'उषा' के असली पूर्जे भी।

आराम से सिलाई कीजिये—

उषा

से सिलाई कीजिये

'उषा' एम्ब्रयडरी एण्ड टेलरिंग स्कूल में सही ढंग से सिलाई करना सीखिये।

JESM/G/544

जय इंजिनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनवरी
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

ऊंचे चढ़ि-चढ़ि पंथ
निहारूं
चित्र : प्रभा जोशी

इस अंक में

१७ विश्वमाता
जावालि
१८ बापू : बहुमुखी वैद्य
कमलनयन बजाज
२३ जब मैं राजदूत था
सरदार हरदित्त सिंह मलिक
२५ आह्वान
मैथिलीशरण गुप्त
२६ मौन: सर्वोत्तम भाषण
आल्डुअस हक्सले
२८ विज्ञानी डा० युकावा
सतीश कुमार
३२ मरे हुओं का पुनर्निर्माण
शंभुनाथ मित्र
३७ मेरी कल्पना का सुख
३९ उद्योग-पथ के फूल-कांटे
श्रीगोपाल नेवटिया
४५ सूर्य के बौने बेटे
४९ मां, मैं देख सकता हूं
थियोडोर अविन
५५ खूब टहलिये
केशवदेव मिश्र 'कमल'
५७ आंतरिक सौंदर्य का पुजारी
अनंत गोपाल शेवड़े
६० 'रुस्तमेहिन्द' गामा
बलवीर सिंह 'कंवल'
६५ पथ के प्रदीप
हेवलाक एलिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

दर्द लौटाने का महायज्ञ
—नार्मन कजिन्स

कान में रखा कुतुबनुमा
—एम० मार्कोव

पाकिस्तान : प्रगति के नये मोड़
—सत्यकाम विद्यालंकार

कौन उड़ाता है इन पक्षियों को ?
—प्रो० जे० सी० जार्ज

अकेले आदमी ने लंदन की रक्षा की
—परदेशी

उसने जिगर की शराब छुड़ायी
—अयोध्याप्रसाद गोयलीय

मैंने लिखना कैसे सीखा
—मैक्सिम गोर्की

ड्राइंग टीचर की क्लास
—द० मा० मिरासदार

तीन लाख दीनारों का पत्थर
—जयभिक्खु

आग, मौत और जिंदगी
—आर्नाल्ड बेनेट

चित्रसज्जा :
फ्लेचर मार्टिन, ग्रहम पेक, निल्स फ्लकस्टैड, व्हिसलर, ओंके

प्रथम पृष्ठ का चित्र
विश्वमाता—चित्रकार साल्वाडार डाली

श्री हरिप्रसाद नेवाटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई–४ में मुद्रित ।

६७ दौलत : धूप की बदौलत
देवेंद्रनाथ

६९ बाल कैंप
लुई सी० ड्रेपो

७२ आस्तिक–नास्तिक
स्वामी विवेकानंद

७३ धन्य हूं ऐसे शिष्य पाकर
शंकराचार्य, कांची

७४ सन्नाटे में (कविता)
रमेशचंद्र कौशिक

७५ यह पेरिस है
अर्नेस्ट हेमिंग्वे

७९ मेरी रुचि की पंक्तियां

८१ लाल घोड़ा (बंगला कहानी)
नारायण गंगोपाध्याय

८९ टूटी हुई कड़ी (हिन्दी कहानी)
सुखबीर

९६ एक कोई और (कविता)
अमरनाथ चतुर्वेदी

९७ बुंदे (चीनी कहानी)
टी० के० चू

१०९ प्रेम की वेदी पर (पुस्तक - संक्षेप)
एच० जी० वेल्स

१३७ न्यूगिनी: नरमुंडों का द्वीप
जान गाडविन

१४५ जीवन की सीख
स्वामी शिवानंद

१४६ हम चार (कविता)
रसूल रजा

१४७ चुटकी - भर हंसी

१४९ नयी पुस्तकें

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक १

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

जनवरी १९६५

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

विश्वमाता

वैज्ञानिक ने विज्ञान से, योगी ने मनोबल से सत्य की खोज की।
दोनों सत्य के जिस धवल-शुभ्र शिखर पर पहुंचे,
वहां देखा कि
विश्वमाता ने दोनों को आंचल में भर लिया।
"तुम ज्योतिर्मयी हो मां!" दोनों ने कहा।
मां बोली—
"मैं भी उन्हीं दोनों तत्वों से बनी हूं
जिनसे तुम बने हो।
जो मेरी अंतरात्मा है, वही तुम्हारी अंतरात्मा है;
जो मेरा बीज है, वही तुम्हारा बीज है।
मैं भी ज्योतिवाहिका हूं, ज्योति नहीं हूं
स्वरवाहिका हूं, स्वर नहीं हूं।
अनंत काल से मैं भी उस
आदि स्वर, उस प्रथम प्रकाश की
प्रतीक्षा में खड़ी हूं,
जो न जाने कब किस मौन अंधकार में
लीन हो गया है।"

—जाबालि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलनयन बजाज

ईसा मसीह की तरह बापू ने यह तो नहीं कहा—मेरे पास आओ, मैं तुम्हें रोगमुक्त कर दूंगा; किंतु आजीवन वे आत्मिक एवं दैहिक रोगियों की परिचर्या करते रहे। रोगी के लिए तो वे वैद्य, माता और सेवक सभी कुछ थे।

मजाक में मैं अक्सर कहा करता था—(बापू से भी) कि आश्रम में रहने के लिए जितने भी लोग आते हैं, वे किसी-न-किसी रूप में मरीज होते ही हैं—चाहे उनमें बुद्धि, मन अथवा भावना का अतिरेक हो अथवा उनके मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक या शारीरिक स्वास्थ्य में कोई कमी हो। हां, कस्तूरबा और महादेवभाई अवश्य इसके अपवाद थे।

सन १९३८ की बात है। एक सज्जन शाम को सेवाग्राम आश्रम के फाटक के पास आकर खड़े हुए। बापू को संदेश भेजा कि एक बूढ़ा जीवन से ऊबकर मरने को तत्पर हुआ है, सिर्फ आपकी सम्मति प्राप्त करने की खातिर फाटक पर खड़ा है, अभी चला भी जाना चाहता है। बापू आये, उन्होंने देखा कि पुराने परिचित एवं संस्कृत के प्रकांड पंडित परचुरे शास्त्री हैं। वे कुष्ठ रोग से पीड़ित हैं, हाथ-पांव में जख्म आ गये हैं, मवाद व खून बह रहा है, बहुत अस्वस्थ हैं। बापू ने उन्हें सांत्वना दी, आग्रहपूर्वक उन्हें सेवाग्राम में रखा। आश्रमवासियों से सलाह की और उनके लिए एक कुटिया अपनी कुटी के पास ही बनवा दी।

उनका खाना-पीना, डाक्टरी इलाज, सेवा-शुश्रूषा बापू अपनी निगरानी में कराते थे। रोज नियमित रूप से स्वयं उनकी मालिश किया करते थे। रोग इतना बढ़ गया था कि देखकर घृणा-सी होती थी और दया भी आती थी। बीमारी संक्रामक होने से उसके लग जाने का पूरा भय और आशंका थी ही। बापू को कभी इन बातों की फिक्र नहीं हुई। रोगी किस तरह से ठीक हो, उसे कैसे आराम मिले, इसके लिए जो कुछ सेवा करनी पड़े, उसे कर्तव्य और धर्म के नाते अपने जीवन का एक अंग और दिनचर्या का एक कार्यक्रम ही समझकर वे किया करते थे।

परचुरेजी की मालिश करते हुए बापू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का चित्र भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी प्रख्यात हो गया है। जितने समय परचुरेजी आश्रम में रहे, ऐसा कोई प्रसंग नहीं याद आता, जब किसी भी दिन उनकी मालिश बापू ने न की हो—सिवा इसके कि जब वे स्वयं बीमार हों या सेवाग्राम में नहीं हों।

हर एक चीज को बापू शास्त्रीय दृष्टि से देखते थे। एक आश्रमवासी के पेट में एकाएक भयंकर पीड़ा शुरू हो गयी। बापू ने उसे सुला दिया, भीगी मिट्टी की पट्टी उसके पेट पर रखवायी, हवा करवायी। धीरे-धीरे वह सो गया। उसका पाखाना धोकर और कपड़छान करके देखा गया, तो उसमें गन्ने के रेशे निकले। उस बीमार को हमेशा के लिए इल्म हासिल हो गया कि गन्ने ऐसे ढंग से खाये जायें कि रेशे पेट में न जाने पायें।

सरहदी गांधी अब्दुल गफ्फार खां साहब भी सेवाग्राम में काफी दिन रहे। उस समय सेवाग्राम की आबोहवा में मलेरिया था ही। शायद ही कोई शख्स उस बीमारी से बचा हो—खुद गांधीजी भी इसके शिकार हुए थे। खां साहब को भी मलेरिया हो गया। बापू ने उनका इलाज किया। दोनों गांधियों का आपस का प्रेम हृदय को हिला देनेवाला था। देवों को भी दुर्लभ हो, ऐसा प्रेम और भक्ति का दर्शन था वह।

लेकिन सबसे लंबे समय तक और सबसे आत्मसूक्ष्मता से इलाज करने व करवानेवाले की जोड़ी ढूंढ़ी जाये, तो वह बापू और बालकोबा (संत विनोबा के छोटे भाई) की होगी। बालकोबा को क्षय रोग हो गया था। पांच-छः साल तक बापू ने उनका इलाज किया। बापू नहीं ऊबे; लेकिन बालकोबा महसूस करने लगे कि कहां तक इस शरीर की सेवा करवाता रहूं। उन्होंने बापू से कहा कि मुझे अब देह-विसर्जन के लिए हिमालय जाने दीजिये; क्षमा करें, अति हो गयी। बापू ने उन्हें समझाया, धीरज दिया। इलाज चालू रहा। कुल बारह साल बापू ने सेवा की होगी। आज वे ऐसे स्वस्थ हैं, जैसे यह बीमारी कभी हुई ही न हो।

मन की स्वच्छता रोगों से लड़ने की शक्ति देती है; अतः बापू के चिकित्सा-क्रम में प्रार्थना का बहुत महत्व था।

इस जोड़ी में खूबी यह थी कि मरीज व वैद्य दोनों ही सूक्ष्म विचारक, अपने-अपने क्षेत्र में बड़े सावधान थे। बापू रोज दो बार सुबह और शाम को घूमने के समय उनके निवास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थान पर जाते थे। क्या खाया, कितना खाया, कब खाया, कितने सोये, कितना घूमे, कितना परिश्रम हुआ, कितना ताप-मान रहा—ये सारी बातें बापू पूछते। मरीज-भी मिनिट-सैकेंड, तोला-माशा, फर्लांग-फुट तक का सूक्ष्म हिसाब देते। रोज वह संवाद सुनने को मिलता, मानो एक छोटा वैज्ञानिक बड़े वैज्ञानिक को अपनी शोध का माप-तौल और सूक्ष्म विवरण दे रहा हो। अगले दिन के लिए फिर सूचनाएं दी जातीं, दोनों ही पूर्ण एकाग्र होकर सुनते-सुनाते। यह थी बापू की रीति, भक्ति और सेवा! आज बालकोबा स्वयं एक कुशल प्राकृतिक चिकित्सक हैं और उरलीकांचन में एक प्राकृतिक चिकित्सा-केंद्र का संचालन कर रहे हैं।

वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठकें हुआ करती थीं। बड़े-से-बड़े लोगों का वहां आना-जाना बना रहता था। बापू कठिन समस्याओं, प्रश्नों और परिस्थितियों को सुलझाने में लगे रहते थे। कई बार ऐसे भी प्रसंग आ गये कि समयाभाव के कारण वे कांग्रेस कार्यकारिणी में जितना समय देना चाहिये, नहीं दे पाये हों; राजेंद्र बाबू, मौलाना साहब, जवाहरलालजी आदि वरिष्ठ नेताओं के लिए भी मुलाकात का समय न निकाल पाये हों; लेकिन उन्होंने रोगियों की सेवा-शुश्रूषा या आश्रम की दिन-चर्या में अपनी तरफ से कभी नागा तो दूर, फर्क भी नहीं पड़ने दिया।

कई बार बड़े-बड़े लोगों ने उनसे प्रार्थना भी की कि अमुक प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण है कि इसमें आपके आये बिना काम नहीं चलेगा; और जो कुछ सेवा आप रोगियों की स्वयं करते हैं, वह दूसरे आश्रमवासी या हममें से भी कोई कर लेगा; अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न के लिए, अथवा जहां पर मानवता की भलाई का सवाल है, आपको उपलब्ध हो जाना चाहिये।

ऐसे समय बापू का सहज-सरल जवाब यही होता था—"इससे मानवता की सेवा होगी भी या नहीं, या कब होगी, यह कौन जानता है? लेकिन ये रोगी-दुःखी तो मेरी नजरों के सामने हैं। इनकी जवाबदारी मुझ पर ही है। इनके दुःख को दूर करने के अवसर को छोड़कर मैं कैसे जाऊं?"

जिस तरह मां अपने बीमार बच्चे को छोड़कर नहीं जा सकती, बापू भी अपने रोगियों को छोड़कर नहीं जाते थे। उनका कहना था कि सेवा छोटी या बड़ी नहीं होती, न कोई काम ही छोटा-बड़ा होता है। जो कुछ सेवाकार्य जिसके पल्ले पड़ गया, उसे करना ही पुनीत है, और वही स्वधर्म है। उससे अधिक कुछ करने की अपेक्षा या लालसा करना लालच और निरा मोह है।

अधिकतया जेल में रहने और 'सी' क्लास की खुराक के कारण काकाजी (मेरे पिता स्वर्गीय जमनालालजी बजाज) का वजन इतना घट गया था कि उसकी वजह से कई तरह की बीमारियां उन्हें हो गयीं और कम-जोरी भी विशेष रहने लगी। कान का 'मेस्काडाइट' का आपरेशन उन्हें करवाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ा। दूसरे इलाज भी वे करवाते रहते थे। निसर्गोपचार भी उन्होंने काफी किया था। आखिर बापू ने उन्हें अपने पास ही आश्रम में रखा। उनसे उपवास करवाये और खुराक की फेरफार, मालिश आदि निसर्गोपचार से उनका इलाज किया। मेरी माताजी (श्रीमती जानकीदेवीजी बजाज) को भी वहां बुलवा लिया।

परचुरे शास्त्री की परिचर्या में

जब काकाजी और माताजी वहां थे, तो बंबई से मैं आता-जाता रहता था। मेरे स्वास्थ्य में भी कुछ गड़बड़ रहती थी, जो लापरवाही की वजह से कुछ बढ़ गयी थी। बापू ने मुझसे कहा कि तुम भी यहां आ जाओ, उपवास करो, ठीक हो जाओगे। मैं उनकी पकड़ में नहीं आना चाहता था। कुछ ऐसे कार्य में भी लगा हुआ था, जिससे जल्दी मुक्ति नहीं हो सकती थी। मैंने उन्हें जवाब दिया—"बापू, मैं भी यदि उपवास करने लगूंगा, तो फिर आप क्या करेंगे? हमारे जैसों के उपवास करने से आपके महात्मापन की कद्र भी घट जायेगी।" महादेवभाई और काकाजी भी वहां थे। सब हंस पड़े और हंसी में वह बात वहीं खत्म हो गयी।

लेकिन डांडी-मार्च के दौरान मेरी दोनों आंखें बुरी तरह आ गयी थीं। बीमारी को कुछ ही रोज हुए थे। अहमदाबाद के नामी डाक्टर कराडी में आये थे। उन्होंने जांच करके बापू को बताया, एक आंख तो करीब-करीब चली गयी है, दूसरी के बचने की कुछ संभावना है। मेरे आग्रह पर बापू ने ही मेरा इलाज किया। काकासाहब कालेलकर के साथ मुझे इलाज और आराम के लिए गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में भेज दिया। भीगी मिट्टी की पट्टी आंखों व पेट पर रखने से और दूध-फल की खुराक से दोनों आंखें ठीक हो गयीं।

एक सामान्य कार्यकर्ता जेल के कष्टों को न सह सकने की वजह से माफी मांगकर निकल आये; लेकिन फिर शर्मिंदगी की वजह से जीवन का उल्लास और आत्मविश्वास खो बैठे। साथियों और समाज की तरफ से मिले तिरस्कार की वजह से अपना विवेक खो बैठे थे, मानसिक क्लेश से पीड़ित थे, आत्मघात के भी विचार उनके मन में आते थे। वे यह भी सोचते थे कि सरकार को दिये हुए आश्वासन को तोड़कर दुबारा जेल में जाकर वहीं क्यों न मर जाऊं, जिससे जीवन की कालिमा से तो एक बार मुक्त हो जाऊंगा।

मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की; लेकिन उन्हें पूरा समाधान नहीं हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सका। मैं उन्हें बापू के पास ले गया। जब तक मानसिक दृष्टि से वे पूरे स्वस्थ नहीं हो गये और पूर्ववत् अपने आत्मविश्वास को उन्होंने प्राप्त नहीं कर लिया, बापू ने उन्हें आश्रम में ही रखा।

एक बार एक सज्जन बापू की दवा खाकर बीमार पड़े और बापू को कष्ट न हो, इसलिए वर्धा से चले जाना चाहते थे। बापू ने उनसे कहा—" भैंस को अपने सींग भारी होते हैं क्या ? तुम यहीं रहोगे। हां, तुम्हें मुझमें और मेरे इलाज में विश्वास न हो, तो खुशी से जा सकते हो।" वे सज्जन वहीं रहे और स्वस्थ हो गये।

बीमार की सेवा और उसका आराम ही बापू का समाधान था। उनके स्नेह से ही रोग भागता था और जीवन में उत्साह आ जाता था। इसी वजह से बापू ने कहा था कि अगर एक बार महादेव की आंख और मेरी आंख एक हो जाती, तो महादेव का वह दिन जीवन का आखरी दिन न होता। बापू के आने और उनकी आवाज सुनने के पहले ही महादेवभाई सदा के लिए शांत हो गये थे।

आश्रम तो पागलों का और बीमारों का अड्डा ही बन गया था। हंसी-मजाक में लोग उसे 'पागलखाना' कहते भी थे। बापू इसे तारीफ ही समझते थे। आश्रमवासियों में यदि कुछ ऐसी विशेषताएं थीं, जिन्हें अद्वितीय भी कहा जा सकता है, तो ऐसी कमियां भी मौजूद थीं जो कि सर्वसाधारण में नहीं पायी जातीं। इसकी वजह से अधिकांश का जीवन संतुलित नहीं हो पाता था। उस कमी की पूर्ति आश्रम के वातावरण और बापू की वजह से हुआ करती थी। ये सब लोग छोटे-बड़े महात्मा ही थे और महात्माजी की कठिन परीक्षा लेते रहते थे। इनमें ऐसे लोग भी थे, जिन्हें अपने प्राणों की तनिक भी परवाह नहीं थी। योगिराज भणसाली जैसों की शारीरिक यातनाएं और मानसिक कष्ट सहन करने की क्षमता अलौकिक थी।

आश्रम में ऐसे मौके भी आये जब आश्रम वासियों की अथवा उनके कार्यों की वजह से बापू को असीम कष्ट पहुंचा हो, वे विचलित हो गये हों और उन्हें गुस्सा भी आ गया हो। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि स्वयं बापू के अनेकानेक प्रयत्नों के साथ-साथ इन छोटे-मोटे महात्माओं की वजह से भी बापू को महात्मा बनने में मदद मिली। उन सबका तेज और पुण्य बापू और बापू के काम को मिला। उधर उनकी कमियों की पूर्ति बापू से हुई।

अन्याय, अज्ञान और गरीबी—इन्हें भी बापू बीमारी के लक्षण समझते थे। देश की गुलामी ऐसी ही एक बीमारी थी और इस बीमारी को दूर करना भी उनके जीवन का लक्ष्य था। व्यक्ति, समाज और देश की सेवा द्वारा इन बीमारियों को दूर करने का कोई ठेका उन्होंने ने नहीं लिया था; लेकिन वह उनका सहज स्वभाव, स्वधर्म ही हो गया था। उनमें माता का हृदय और सेवक का स्वधर्म शामिल था। ऐसी ही सेवा के बल पर बापू महात्मा बने। कई महात्मा सेवक हुए हैं; पर यह सेवक महात्मा हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मैं राजदूत था

कूटनीति कुटिलता का ही नाम नहीं; सद्भाव और शिष्टभाषण भी उसका अनिवार्य अंग है।

सरदार हरदित्त सिंह मलिक

मुझे दस साल तक भारत के राजदूत के रूप में सेवा करने का अवसर मिला। इस अरसे के दो अनुभव याद करने योग्य हैं। पहला कनाडा का है। वहां मैंने देखा कि भारत से आकर बसे हुए लोगों को वहां की नागरिकता के सारे कर्तव्य तो निभाने पड़ते थे; लेकिन उन्हें वे सब अधिकार नहीं थे, जो यूरोप के देशों से आये प्रवासियों को प्राप्त थे। स्पष्ट ही यह अन्याय था; किंतु कनाडा के जनमानस की स्थिति इस मामले में कुछ छुईमुई की-सी थी और मेरी समस्या यह थी कि जनमत को उत्तेजित किये बिना इस भेदभाव को कैसे दूर कराया जाये?

पहले विश्वयुद्ध के दौरान जब मैं शाही वायुसेना में था, तो कई कनाडावासी मेरे सहयोगी थे और हम अच्छे मित्र बन गये थे। अब मेरी खुशकिस्मती से इनमें से कुछ सरकार में थे। सो जब मैं भारतीय हाइ-कमिश्नर बनकर वहां पहुंचा, तो मैं कनाडा के लिए एकदम अपरिचित नहीं था और वहां की सरकार व अखबारों ने मेरा अच्छा स्वागत किया।

वहां जाते ही मैं वैयक्तिक चर्चाओं और सार्वजनिक भाषणों में कनाडावासियों को नये भारत के आदर्शों और अरमानों के बारे में समझाने लगा। होते-होते वहां अच्छा मैत्रीभाव बन गया। इससे कनाडा सरकार के साथ इस मामले की चर्चा छेड़ना मेरे लिए संभव हो गया। अंततः कनाडा सरकार की समझ में आ गया कि भारतीयों के साथ अन्याय हुआ है और हमारी मांग स्वीकार कर ली गयी।

फ्रांस में मैं साढ़े सात साल राजदूत रहा। वहां भी किस्सा कुछ ऐसा ही था। लेकिन मामला कहीं ज्यादा जटिल था। सवाल था भारत के उन हिस्सों की वापसी का, जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद अभी फ्रांसीसियों के हाथ में थे। जिस मित्रता और सद्भाव की मदद से मैं कनाडा में सफल हो सका था, उसी के द्वारा अंत में मैं फ्रेंच सरकार को भारतीय उपनिवेश भारत को वापस दे देने के लिए रजामंद कर सका। और यह सब बिना संघर्ष और कटुता के, मित्रता की 'स्पिरिट' में हुआ।

आरंभ में कुछ दिक्कत भी हुई। मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद है, जब पहली बार मैंने फ्रेंच विदेश-मंत्री शूमां से इसका जिक्र किया, तो वे मुस्कराये और बोले–" राजदूत महोदय, ये उपनिवेश वापस पाने की आपके देश-वासियों की उत्कंठा को हम समझ सकते हैं। किंतु कृपया हमारी भावनाएं भी समझने की कोशिश कीजिये। वे लोग २०० साल से हमारे साथ हैं। उन्होंने फ्रेंच संस्थाएं-व्यवस्थाएं अपने यहां स्थापित कर ली हैं, वे फ्रेंच संस्कृति के अनुयायी हैं, वे हमारी भाषा बोलते हैं। अब हम अचानक ही उनसे यह कैसे कह सकते हैं कि तुम हमसे दूर हो जाओ ?"

मैं बस मुस्करा दिया और बोला–"मंत्री महोदय, आप ये भावनाएं व्यक्त कर रहे हैं, यह देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। क्योंकि जब आपकी ये भावनाएं हैं, तो आप बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि हमारी भावनाएं क्या होंगी। आखिर ये लोग आप लोगों के आने के पहले २,००० साल तक हमारे साथ थे।"

शूमां के पास इसका कोई जवाब नहीं था। वे बस मुस्कराकर और सिर हिलाकर रह गये।

इसके दो-तीन साल बाद भी मैं इस सवाल से जूझ ही रहा था। एक दिन फ्रांस के राष्ट्रपति और मैं एक शिकार-पार्टी के बाद साथ भोजन कर रहे थे। पहले विश्व-युद्ध में मैं फ्रांसीसी सेनाओं के साथ मिलकर दुश्मन से लड़ा था; इस कारण राष्ट्रपति का मेरे प्रति बड़ा मैत्रीभाव था। सो उस दिन भोजन के दौरान वे मुझसे बोले–"राजदूत महोदय, फ्रांसीसी भारत को लेकर आप हमारे ही पीछे क्यों पड़े हुए हैं ? क्यों नहीं आप पुर्तगाल से कहते कि वह गोवा आपको लौटा दे !"

मैंने उनसे निवेदन किया –"राष्ट्रपति महोदय, हिन्दुस्तान में हम सदा ही फ्रांस को एक महान देश मानते आये हैं– संस्कृति और कला में महान देश; एक ऐसा देश, जो मानव की स्वतंत्रता का प्रथम संदेशवाहक था; एक ऐसा देश, जिसने १७८९ की महा-क्रांति द्वारा सारी मानव-जाति को नयी राह दिखायी; और हम सदा आपके प्रशंसक रहे हैं और बहुत वर्षों से, बहुत विषयों में आपसे नेतृत्व की आशा करते रहे हैं। अब अगर मैं अपने देश जाकर वहां लोगों से कहूं कि यह महान देश पुर्तगाल-जैसे छोटे-से, तुच्छ, प्रतिक्रियावादी देश से रहनुमाई की आशा लगाये बैठा हुआ है, तो राष्ट्रपति महोदय, क्या मेरे देशवासी मुझ पर हंसेंगे नहीं ?"

उत्तर में राष्ट्रपति महोदय मुस्करा-भर दिये। लेकिन वक्त आने पर पांडिचेरी हमें वापस मिल गया।

('आकाशवाणी' से साभार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि थे—केवल इसलिए नहीं कि उन्होंने राष्ट्र-प्रेम-पगी कविताओं द्वारा जनता को राष्ट्र-प्रेम से आप्लावित कर दिया; किंतु इसलिए भी कि धार्मिक जागृति और समाज-सुधार से निःसृत हुई हमारी राष्ट्रीय चेतना पिछले पचहत्तर वर्षों में प्रजातंत्रीय जनकल्याण राज्य और पंचशील की कल्पना तक कैसे पहुंची, इसका प्रमाण है उनकी काव्यसृष्टि। दिवंगत मैथिलीशरण गुप्त महाकवि थे। उनकी काव्य-साधना विपुल, विशिष्ट और वैभवमय थी, और उनका संपूर्ण वाङ्मय खड़ीबोली कविता के क्रमविकास का नक्शा भी है, इतिहास भी। कवि बच्चनजी के शब्दों में उन्होंने—

तुतलानेवाली को क्रमशः
गाना गीत सिखाया,
औ' घुटनों चलनेवाली को
नर्तन कुशल बनाया,
आजीवन साधना उन्हीं की
आज खड़ी बोली जो।

आह्वान

आ जगत्प्राण, उठ जाग-जाग,
धंस भीतर, धधका एक आग।
इस वेणुरंध्र से निकल पड़े
मानव-जीवन का ज्वलित राग॥

उठ ऊपर, उर की हूक-हूक
उड़ जाय व्योम-पट टूक-टूक
प्रकटे नटराज दिगंबर-सा
रह सके छिपा न रहस्य मूक
नाचे इंगित पर काल-नाग।
आ जगत्प्राण, उठ जाग-जाग॥

हां, ताप चाहिये, एक ताप,
हो जाय भस्म सब पाप-शाप
दरके, दरार खा जाय धरा
दीखे उसका तल-तत्त्व आप
पायें हम अपना पूर्ण भाग।
आ जगत्प्राण, उठ जाग-जाग॥

तप करे किरण-माला विकीर्ण,
हो जाय दग्ध सब जीर्ण-शीर्ण
उर्वर हों सारे क्षेत्र यहां,
बन जाय सार वह दलित-दीर्ण
फिर नवसुमनों के नव पराग।
आ जगत्प्राण, उठ जाग-जाग॥

—मैथिलीशरण गुप्त

भारत और भारती के अनन्य भक्त इस कृती कविपुंगव को नवनीत-परिवार सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौन : सर्वोत्तम भाषण

आल्डुअस हक्सले

अनियंत्रित तथा अविवेकपूर्ण भाषण नैतिक दृष्टि से तो एक अपराध है ही, आध्यात्मिक जीवन के लिए भी भारी खतरा है। बाइबल में कहा गया है कि मनुष्य को अपने प्रत्येक व्यर्थ शब्द का हिसाब ईश्वर के दरबार में देना पड़ता है। यह तो काफी कठोर बात लगती है। परंतु यदि हम दिन-भर में अपने मुंह से निकले तमाम शब्दों का लेखा-जोखा करें, तो पायेंगे कि उनमें से अधिकांश को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

पहली श्रेणी में ऐसे शब्द आते हैं, जो हम द्वेषवश बोलते हैं। दूसरी श्रेणी में वे शब्द आते हैं, जो हम लालसा, आत्मप्रेम तथा इंद्रियलोलुपता के कारण मुंह से निकालते हैं। तीसरी श्रेणी उन शब्दों की होती है, जो हम कायरतावश बोलते हैं और जिनका कोई अर्थ नहीं होता। ध्यानपूर्वक देखें, तो हम पायेंगे कि दिन-भर में हम ऐसे शब्द ही अधिक बोलते हैं; तर्क-युक्त तथा नितांत आवश्यकतावश बोले गये शब्द बहुत कम। और यदि इस निरर्थक शब्दावली में उन शब्दों को भी सम्मिलित कर लिया जाये, जो सदा हमारे मन में चक्कर काटते रहते हैं, तब तो इन वृथा शब्दों की संख्या तथा मात्रा न जाने कहां तक जा पहुंचे!

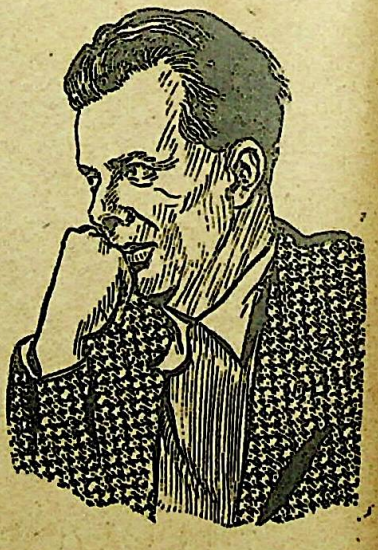

सब देशों और युगों के संतों तथा दार्शनिकों ने मौन को भाषण का सर्वोत्तम रूप माना है। चीन के प्रख्यात दार्शनिक लाओ-त्से के अनुसार—"जो जानता है, वह बोलता नहीं है और जो बोलता है, वह जानता नहीं है।" कुछ और भी वचन सुनिये :

सेंट जान आफ दि क्रास :

परम पिता ने एक शब्द का उच्चारण किया; वही शब्द उसका पुत्र है। वह चिरंतन मौन में उसे उच्चारित कर रहा है। तथा आत्मा उस शब्द को मौन में ही सुन सकती है।

.....यह न समझो कि अब तक मैं अपनी मर्जी से चुप था। मैंने तुम्हें नहीं लिखा, पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी शुभकामनाएं सदा तुम्हारे साथ रही हैं। मैं चुप था; क्योंकि जो आवश्यक है, वह काफी और कई बार कहा जा चुका है। अब तो आवश्यकता इस बात की है कि न कुछ लिखा जाये, न कुछ कहा जाये। मौन रहकर सब अपने कामों में लगे रहें। बोलने से ध्यान भंग होता है तथा मौन से विचारों को दृढ़ता मिलती है।

विलियम ला :

आध्यात्मिक जीवन जीनेवाला अपने अंतरतम में परमात्मा का स्वर सुनता है। इस स्वर को सुनने की तैयारी के लिए यह आवश्यक है कि हम मौन धारण करें। भाषण तथा तज्जन्य आनंद उस स्वर्गीय सुख में बाधक हैं, जो हमें अपने अंतरतम में परमात्मा के स्वर को सुनकर प्राप्त होता है। जो बड़े-बड़े शब्द बोलकर समझता है कि वह महान बन गया है, उसे स्मरण रखना चाहिये कि स्वर्ग में उसकी लच्छेदार भाषा को कोई नहीं सराहेगा।

चू आंग-तू :

जो कुत्ता भौंकता है, वह केवल भौंकने के कारण ही अच्छा कुत्ता नहीं कहलाता। जो मनुष्य खूब बोलता है, वह केवल खूब बोलने के कारण ही अच्छा आदमी नहीं कहलाता।

०००

मौन के तीन प्रकार माने गये हैं –जिह्वा का मौन, मन का मौन तथा आत्मा का मौन। बेकार बातें न करना कठिन है, पुरानी स्मृतियों तथा कल्पनाओं की चखचख को रोकना कठिनतर, तथा अंतरात्मा (अवचेतन) से टकरानेवाली आवाजों को रोकना कठिनतम।

आज का युग कोलाहल का युग है। पृथ्वी के इतिहास में ऐसा तीव्र कोलाहल कभी नहीं मचा था, जैसा आजकल मचा हुआ है। आज के आश्चर्यजनक उद्योगतंत्र के सब साधन मौन के विरुद्ध संघर्ष में प्रयुक्त हो रहे हैं। सबसे पहले रेडियो को ही लीजिये। उसके व्यापारिक संदेश हमारे कानों तथा चेतन मन को बींधकर, अवचेतन मन तक पहुंच जाते हैं और वहां नयी इच्छाओं को जन्म देते रहते हैं। समाचार-पत्रों का भी यही हाल है।

सभी विज्ञापनों का उद्देश्य यही रहता है कि हम शांत न बैठें। नयी-नयी वस्तुओं की लालसा व्यग्र तथा अशांत मन में ही होती है। और जब तक हम व्यग्र और अशांत हैं, तब तक साधना के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकते। जैसे-जैसे नयी-नयी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उनके प्रचार के साधन भी अधिकाधिक वैज्ञानिक तथा अचूक होते जाते हैं। ये साधन अपनी अलग-अलग आवाजों से हमारे मौन को भंग करके हमें अपने उच्चतम लक्ष्य–आत्मसाक्षात्कार–तक पहुंचने से रोकते हैं।

आज के युग का कोलाहल हमारा सबसे बड़ा शत्रु है तथा मौन हमारा सबसे बड़ा मित्र–मौन जो इस सारे कोलाहल से अधिक प्रभावकारी है तथा वार्तालाप का सबसे अच्छा और सर्वसमावेशी ढंग है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञानी डा० युकावा

अणुशक्ति की विध्वंस-लीला को प्रत्यक्ष अनुभव करनेवाले एकमात्र देश जापान के अणविज्ञान के आचार्य से इंटरव्यू—वी० एन० ओके रचित पोर्ट्रेट के साथ।

सतीश कुमार

जापान की जनता ने जिन पांच व्यक्तियों को अपना सर्वाधिक श्रद्धेय घोषित किया है, उनमें से एक हैं डा० युकावा, जिनके ऊंचे ललाट, गंभीर आंखों व दार्शनिकके-से भावप्रधान लंबे चेहरे से विज्ञान और आत्म-ज्ञान के समन्वय की धारा बहती है। जापान में अणुविद्या का सूत्रपात करनेवाले डा० हिदेकी युकावा जापान के एकमात्र नोबेल-पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक हैं। परंतु युकावा के विज्ञान की किरणें रसायनशास्त्र की प्रयोगशाला के कटघरे तक बंधकर नहीं रहतीं, बल्कि जीवन, समाज, संस्कृति और धर्म के अवैज्ञानिक बंधनों पर कुठाराघात करती हुई, मनुष्य के संपूर्ण परिवर्तन की डगर पर चलती हैं।

हमारी मुलाकात में डा० युकावा ने जिस बात पर सबसे अधिक बल दिया, वह थी एक विश्व की कल्पना। विज्ञान ने सारे संसार को नजदीक लाने में सर्वाधिक हिस्सा अदा किया है; पर अभी भी लंबा रास्ता पार करना बाकी है—ऐसा उनका मानना है। इसीलिए वे एक विश्व की कल्पना को साकार करने के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। जापान के सैकड़ों नगरों ने अपने आपको विश्वसंघ का सदस्य घोषित किया है। "हम इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। विज्ञान का सच्चा लाभ तभी मिलेगा, जब वह सारे संसार के लिए समान रूप से उपलब्ध होगा।" डा० युकावा ने इन शब्दों में अपनी तड़प व्यक्त की।

नब्बे मिनिट की हमारी बातचीत में इस महान वैज्ञानिक ने आइंस्टाइन और गांधी के विचारों का अनेक बार उल्लेख किया। डा० युकावा स्वयं अमरीका के प्रिंस्टन विश्वविद्यालय में छः वर्ष रह चुके हैं और आइंस्टाइन के बहुत नजदीक रहकर अनुसंधान करते रहे हैं। उन्होंने बताया, आइंस्टाइन अपने आखिरी दिनों में राज-नीतिज्ञों द्वारा किये जानेवाले विज्ञान के स्वार्थपूर्ण दुरुपयोग के कारण बेहद निराश हो गये थे और एक वैज्ञानिक होने के बजाय जूते गांठनेवाला चमार बनना पसंद करने लगे थे। उनका विश्वास था कि विज्ञान संपूर्ण मानव-जाति को जोड़नेवाला सूत्र है, न कि काटनेवाला चाकू। पर राजनीतिज्ञों ने संसार को अलग-अलग टुकड़ों में बांट-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

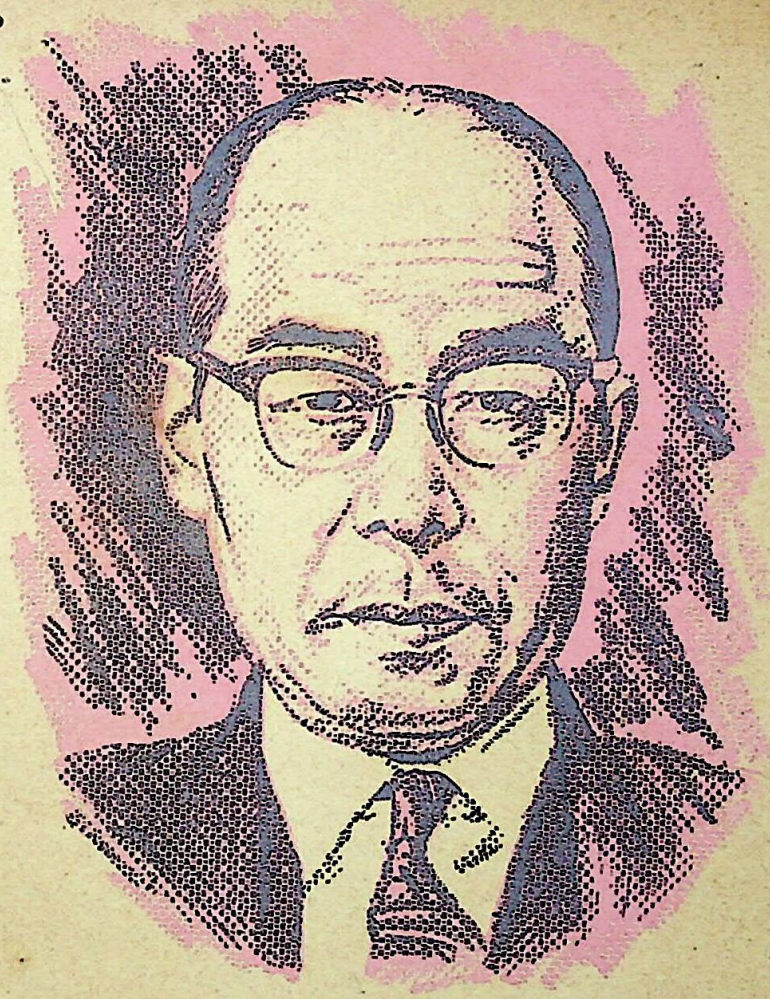

कर सारे संसार को समान रूप से विज्ञान का फल चखने से वंचित कर रखा है।

डा० युकावा इस तरह आइंस्टाइन से गांधी तक आये और बोले– "अणुयुग ने हिंसा की शक्ति को व्यर्थ बना दिया है। कोई भी देश, चाहे वह कितना ही बड़ा, कितना ही शक्तिशाली तथा कितना ही शस्त्रसज्ज क्यों न हो, युद्ध में विजय नहीं पा सकता। आनेवाले युद्ध में किसी एक देश की हार या जीत नहीं होगी। सारे संसार की हार होगी। इसलिए आज के वैज्ञानिक के सामने विज्ञान की प्रगति का अगर कोई रास्ता है, तो गांधी की अहिंसा के साथ ही है। धर्म के लोगों ने धार्मिक भाषा में जो अहिंसा शब्द का प्रयोग अब तक किया है, वह बहुत ही अधूरा, एकांगी तथा कायरता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन-बिंदु

जन्म : १९०७, क्योतो, जापान। १९२७: क्योतो विश्वविद्यालय से भौतिकी में स्नातक हुए। १९३६ : ओसाका विश्वविद्यालय में उप-प्राध्यापक। १९३९: प्राध्यापक बनकर क्योतो विश्वविद्यालय लौट आये। क्वांटम सिद्धांत में विशेष शोध के लिए डी० एस-सी० की उपाधि दी गयी। अणु की नाभि में इलेक्ट्रानों का अस्तित्व सिद्ध किया, जो 'युवाका सिद्धांत' के नाम से प्रसिद्ध है। बाद में अन्य विद्वानों ने ब्रह्मांड-किरणों में न्यूट्रानों का अस्तित्व सिद्ध किया, जिन्हें अब युकावा इलेक्ट्रान या यू-इलेक्ट्रान कहा जाता है। १९४० : सम्राट हिरोहितो द्वारा विशेष रूप से सम्मानित। १९४३ : बुंका कुंशो ('सांस्कृतिक') पदवी से विभूषित। १९४८ : ऊंची मौलिक खोजों के लिए प्रो० ओपनहाइमर द्वारा प्रिंस्टन विश्वविद्यालय (अमरीका) में बुलाये गये। १९४९ : मेसान संबंधी शोध के लिए भौतिकी का नोबेल-पुरस्कार प्राप्त किया। पुस्तकें (अंग्रेजी अनुवाद): रिसर्च इन न्यूट्रान्स, इंट्रोडक्शन टु क्वांटम थ्योरी, इन्फिनिटसाइमल वर्ल्ड।

का सूचक है। परंतु गांधी ने अहिंसा को न्यायप्राप्ति का मार्ग बनाकर शोषित मनुष्य के हाथों में बलवान शस्त्र सौंपा है।"

इसी संदर्भ में पिछले महायुद्ध की चर्चा छिड़ गयी। उन्होंने कहा—"जापान ने हिंसा का रास्ता पकड़ा। फिर उसे हिंसा ने ही परास्त भी किया। हिरोशिमा और नागासाकी में लाखों लोगों को अणुबम की ज्वाला ने भस्म कर दिया। लेकिन जापान के लोगों ने युद्ध के बाद एक नसीहत सीखी और एक नया कानून बनाया कि अब यह देश सेना का संगठन नहीं करेगा; बाहर के किसी भी देश में जापान का कोई आदमी सिपाही बनकर, हाथ में बंदूक लेकर नहीं जायेगा। यह कानून वैज्ञानिक के लिए सबसे बड़ा वरदान है; क्योंकि यह कानून वैज्ञानिक को समाज के निर्माण का अवसर देता है; समाज को नष्ट करने का नहीं। अगर सारे संसार के देश निर्णय करें कि उनका कोई भी आदमी दूसरे देश में बम-बंदूक लेकर नहीं जायेगा, लड़ने-मारने के लिए नहीं जायेगा, तो हम वैज्ञानिक इस धरती की काया-पलट कर सकते हैं।"

हम टोकियो से हिरोशिमा की पदयात्रा के बीच डा० युकावा से मिले थे। मैंने उन्हें एक पत्र लिखा कि हम क्योतो शहर में शाम को पहुंचेंगे और रात-भर वहां रहकर अगली सुबह आगे रवाना हो जायेंगे; इस बीच अगर आप हमें मुलाकात का समय देंगे, तो बड़ी कृपा होगी। जब हम क्योतो शहर पहुंचे, तो शहर के मेयर के कार्यालय से हमें सूचना मिली कि डाक्टर साहब हमारे लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। सो हम तुरंत विश्वविद्यालय पहुंचे और उनकी अनुसंधानशाला 'युकावा भवन' में उनसे मिले।

अपनी भारत की यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए उन्होंने बातचीत का प्रारंभ किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंबई में अणु-अनुसंधान के काम के प्रति संतोष और डा० भाभा की योग्यता का बखान करते हुए उन्होंने कहा कि अणु-शक्ति आयोग के गोरख-धंधे में भाभा जैसे व्यक्ति को इतना व्यस्त कर दिया गया है कि सच्चे वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए समय देने का मौका उन्हें कम मिलेगा। फिर वे बोले– "मैंने इसी व्यस्तता से मुक्ति पाने के लिए जापान के अणुशक्ति आयोग की अध्यक्षता से त्यागपत्र दिया और मैं अपना पूरा समय अपनी अनुसंधानशाला में बिता रहा हूं। इसके अलावा मेरा सारा समय राष्ट्रीय संकुचितता से ऊपर उठकर विश्व-संघ की स्थापना में जाता है।"

डा० युकावा की पत्नी भी विश्वसंघ के आदर्श की परम भक्त हैं। अनुसंधान की व्यस्तताओं से वे बरी हैं; इसलिए उनकी शक्ति विश्व-सरकार की स्थापना के आंदोलन में लगे, यह सहज ही है।

नेहरूजी की चर्चा आयी। युकावा बोले– "इस व्यक्ति ने राजनीति को सत्ता हथियाने का साधन न मानकर, एक दार्शनिक की भांति उसे एक शास्त्र माना। इसलिए संसार के राजनीतिज्ञों की पंक्ति में वे कुछ अलग दिखाई पड़ते थे। जब तक राजनीति के पीछे सिद्धांतों का बल नहीं होगा, तब तक राजनीति का सच्चा लाभ संसार को नहीं मिलेगा। .....नेहरूजी इस बात को समझते थे कि गरीब एशिया को युद्ध व झगड़ा नहीं चाहिये, उसे तो चाहिये रोटी, शिक्षा और स्वास्थ्य। इसके लिए आवश्यक है कि सारे एशिया को 'शांति-क्षेत्र' बनाया जाये।"

डा० युकावा ने हमारी दिल्ली से मास्को और वाशिंग्टन तक की पदयात्रा के अनुभव सुनने में बहुत रुचि ली। उन्नीस महीने में ८०,००० मील पैदल चलकर, बिना एक भी पैसा जेब में रखे किस प्रकार हमने रूस, यूरोप तथा अमरीका की यात्रा की, यह जानने की उन्हें उत्सुकता थी। मैंने बताया कि विश्व-नागरिक की भूमिका अपनाकर हम चले। गांधी की समाधि से हमारी यात्रा प्रारंभ हुई और केनेडी की समाधि पर पूरी हुई। अफगानिस्तान के पहाड़ों, ईरान के रेगिस्तानों और रूस के बर्फीले मैदानों को पार करने के बाद हमारा अनुभव यही है कि मूलतः मानव-स्वभाव सब जगह समान रूप से अच्छा है।

इस पर डाक्टर साहब बोले –"संसार में जापान ही एक ऐसा देश है, जहां के लोग अपने अनुभव से अणुबम की भयंकरता को जानते हैं। अतः हम चाहते हैं कि ऐसा भयंकर अनुभव और किसी को सहना न पड़े। टोकियो से हिरोशिमा की ६५० मील की पदयात्रा में आप देखेंगे कि किस प्रकार सारा देश नव-निर्माण में जुटा हुआ है। इन लोगों को सुरक्षित जीवन का मार्ग चाहिये, अणुबम नहीं।"

यों हमारी चर्चा ने सभी तरह के प्रश्नों को छुआ और विज्ञान का बल तथा वैज्ञानिक का मार्ग-दर्शन इस विश्व को अणुबम की ज्वालाओं से बचायेगा, इस विश्वास के साथ हमने डा० युकावा को प्रणाम किया तथा विदा ली।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान और कला की यह साझी सृष्टि
ब्रह्मा की सृष्टि से भी विस्मयकारी है।

मरे हुओं का पुनर्निर्माण

अच्छे विद्वान कई बार अपने सिद्धांत इतनी सरल भाषा में सामने रखते हैं कि सुननेवाले को इसकी कल्पना भी नहीं होती कि उन शब्दों के पीछे वर्षों का चिंतन, अध्ययन और परीक्षण छिपा हुआ होगा। फिर उस सिद्धांत के व्यावहारिक महत्व को समझने का तो सवाल ही नहीं उठता।

प्रोफेसर मिखाइल जेरासिमोव के इस कथन को ही लीजिये कि चेहरे की तरह खोपड़ी भी आदमी के जीवन का दर्पण होती है और किसी मनुष्य के चेहरे से उसके बारे में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उसकी खोपड़ी से भी जाना जा सकता है।

बात कुछ नयी तो लगती है, किंतु उसमें कोई विचित्रता या विशेषता नहीं दिखाई देती। लेकिन मास्को विज्ञान अकादेमी के नृतत्व-विद्यालय की प्रयोगशाला में जायेंगे, तो इन सरल शब्दों की गहनता और अर्थव्याप्ति को देखकर चकित रह जायेंगे।

प्रो० जेरासिमोव नृतत्व, जीवशास्त्र और इतिहास के प्रौढ़ विद्वान हैं और साथ ही सधे हुए मूर्तिकार भी। विद्वत्ता, हस्त-कौशल और सूझ-बूझ के इस समन्वय का परिणाम बहुत अद्‌भुत हुआ है।

किसी भी पुरानी या नयी खोपड़ी को देखकर वे जान जाते हैं कि जिस व्यक्ति की वह खोपड़ी है, उसकी शक्ल-सूरत कैसी रही होगी। इतना ही नहीं, थोड़े दिनों में वे उस चेहरे से हूबहू मिलनेवाली मूर्ति भी बना देते हैं। और यह सब वे महज मनोविनोद के लिए नहीं करते। इस विद्या के द्वारा उन्होंने पुलिस, अदालत और इतिहास-परिषदों को कई गुत्थियां सुलझाने में मदद दी है।

उदाहरण के लिए, ओयाशांस्की की ठठ-री का किस्सा लीजिये। ओयाशांस्की साइ-बेरिया का एक गांव है। वहां एक विधवा अपनी बैठक के फर्श की मरम्मत करा रही थी। जब फर्श के लकड़ी के तख्ते हटाये गये, तो उनके नीचे एक नर-कंकाल दबा हुआ मिला। पुलिस आयी और तहकीकात करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगी। जांच के दौरान में प्रकट हुआ कि वह औरत सचमुच विधवा नहीं थी, बल्कि उसका पति इवान लुकोश्किन १९५३ में एक रोज अचानक ही लापता हो गया था।

स्वभावतः पुलिस को शक हुआ कि शायद औरत ने अपने पति को मारकर फर्श के नीचे दबा दिया होगा। लेकिन संदेह तो कोई प्रमाण नहीं होता न। पुलिस ने वह कंकाल प्रो० जेरासिमोव के पास भेज दिया, ताकि वे मृत व्यक्ति के रूप-रंग के बारे में कुछ बतायें। ऐसे कई जटिल मामलों में वे पहले भी पुलिस की मदद कर चुके थे।

कुछ ही दिनों बाद मास्को से प्रोफेसर का तार मिला—"मृतक की भौंहें घनी थीं; उसकी आंखें धंसी हुईं व गाल की हड्डियां उभरी हुई थीं; ठुड्डी भारी थी। कंकाल यह भी प्रकट करता है, मृतक दायें पैर से लंगड़ा था।"

पुलिस को प्रसन्नता नहीं हुई। ये विवरण इवान लुकोश्किन पर लागू नहीं होते थे। पुलिस ने जांच जारी रखी। उसे पता चला कि गायब होने से पहले इवान ने एक छोटी-सी दुकान को लूटा था। खोजते-खोजते पुलिस ने पांच सौ मील की दूरी पर उसे पकड़ लिया।

जब इवान लुकोश्किन से सवाल-जवाब किया गया, उसने दुकान लूटने की बात तो कबूल कर ली; लेकिन कहा कि कंकाल के बारे में उसे कुछ भी पता नहीं है। देर तक वह यही बात दोहराता रहा। अंत में पुलिस अधिकारी ने पूछा—"अच्छा, यह तो ठीक है। लेकिन उस घनी भौंहोंवाले आदमी का क्या हुआ?"

"कौन आदमी?" इवान चौंक-सा उठा।

"वही जिसकी आंखें धंसी हुई थीं, गाल की हड्डियां उभरी हुई थीं ..... ठुड्डी भारी थी ....."

इवान लुकोश्किन का चेहरा पीला पड़ता जा रहा था। पुलिस अधिकारी ने उसकी आंखों में आंखें डालकर धीमी आवाज में कहा—"और जो दायें पैर से लंगड़ा था।"

लुकोश्किन अब और ठहर न सका, घिघियाता हुआ बोला—"मुझे कुछ कहना है।" और जो कुछ उसने कहा, वह अपराध-स्वीकृति थी। उसने लंगड़े आदमी को लूटकर व जान से मारकर फर्श के नीचे दबा दिया था। मृतक रेलवे की वर्दी में था हत्या के समय।

लेकिन वह लंगड़ा कौन था, यह इवान लुकोश्किन को भी मालूम न था। पुलिस ने १९५४ में मिली गुमशुदा की तलाश की तमाम सूचनाएं जांची। अपानासेंको नाम का एक रेल-कर्मचारी १९५३ में लापता हुआ था। उसका विवरण प्रो० जेरासिमोव की रिपोर्ट से मेल खाता था।

इस बीच उधर मास्को में प्रो० जेरासिमोव ने खोपड़ी के आधार पर मृतक के मुंह और कंधे की मूर्ति (बस्ट) मोम से बना ली थी। उस मूर्ति की फोटो रेल-कर्मचारियों को दिखायी गयी, तो अपानासेंको के पुराने सहकर्मियों ने तुरंत उसे पहचान लिया।

यह चमत्कार कैसे हुआ? जेरासिमोव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इवान 'खौफनाक'
चार सौ साल पुरानी खोपड़ी के आधार पर जेरासिमोव द्वारा मोम से निर्मित मुखाकृति ।

कहते हैं कि इसमें चमत्कार कुछ भी नहीं है। वे बताते हैं कि मुख की मुलायम कोशिकाओं और मांसखंडों का प्रभाव खोपड़ी के आकार को बदलता रहता है । भय, चिंता, घबराहट, नींद का अभाव, मुस्कान, शोक आदि सब भाव तथा मानसिक एवं दैहिक दशाएं अपनी गहरी छाप खोपड़ी पर छोड़ जाती हैं ।

और यह छाप कैसी होती है, इसे जेरासिमोव ने विस्तृत अध्ययन द्वारा जाना है । हजारों आंकड़ों और तालिकाओं द्वारा इनका विश्लेषण करके उन्होंने खोपड़ी पर अंकित सूचनाओं के द्वारा चेहरे का पुनर्निर्माण करने का विधान खोजा है ।

वे बताते हैं –"आरंभ में तो मुख की आकृति खोपड़ी के आकार से ही निर्धारित होती है । लेकिन आदमी के जीवन के अनुभव, कष्ट-सुख, स्थायी मनोभाव, मुख की भाव-भंगिमा – ये सब धीमे-धीमे उसकी खोपड़ी के आकार को बदल डालते हैं; ठीक वैसे ही, जैसे बूंद-बूंद टपकता हुआ पानी पत्थर का रूप बदल देता है ।

किसी भी कंकाल के दांत देखकर वे बता सकते हैं कि वह आदमी मुंह खुला रखता था या दांत भींचे रहता था । खोपड़ी के गुंबज पर हाथ फिराकर वे बता सकते हैं कि वह आदमी गंजा था या नहीं । माथे और गाल की हड्डियों को आतिशी शीशे से देखकर वे बता सकते हैं कि उस आदमी के माथे पर शिकन और आंखों के पास झुर्रियां तो नहीं थीं ।

और यह सब निरी खामखयाली नहीं है । इसके आधार पर उन्होंने अनेक समस्याएं सुलझायी हैं । लोकप्रिय ताजिकी कवि रुदाकी की मूर्ति बनवाने को ताजिक लोग उत्सुक थे । कवि को मरे हजार से ज्यादा साल हो गये थे, उसकी कब्र निश्चित रूप से किसी को मालूम नहीं थी । कई लोगों ने अलग-अलग कब्रों में से ठठरियां खोद निकालीं और उन्हें रुदाकी का अस्थि-पंजर बताना शुरू किया । मामला अंत में प्रो० जेरासिमोव के पास आया ।

उन्होंने पहले रुदाकी की समस्त रचनाएं पढ़ने की इच्छा प्रकट की । उनका कहना था कि हर कवि अपने साहित्य में अपने स्वरूप के बारे में अवश्य कुछ जानकारी छोड़ जाता है । और उनकी बात गलत नहीं थी । रुदाकी के काव्यों से पता चलता था कि वह अंधा था, लेकिन जन्म से नहीं (उसने रंगों का बड़ा सजीव वर्णन किया है); स्थानीय शासक ने दंड-स्वरूप उसकी आंखें फोड़वा दी थीं । अंधा होने के बाद भी वह बहुत वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक जिया। कवि ने यह भी बताया था कि उस पर बुढ़ापे ने अचानक ही आक्रमण किया और उसके तमाम दांत एक साथ झड़ गये।

जेरासिमोव ने कहा कि जब उन्हें ऐसी खोपड़ी मिलेगी, जिस पर आंखें फोड़ने की यातना, दीर्घकाल के अंधेपन और अचानक तमाम दांत एक साथ झड़ जाने के चिह्न होंगे, तभी वे कवि की मुखाकृति बनायेंगे। अपनी बात स्पष्ट करते हुए वे बोले—"अंधे आदमी के खड़े होने, चलने की खास अदा होती है। उसका मुख एक खास ढंग से उठा हुआ होता है। इसका स्थायी प्रभाव उसकी रीढ़ के मनकों व खोपड़ी के आकार पर होता है।" आखिरकार वैसी खोपड़ी मिल गयी और आज उनकी बनायी रुदाकी की मूर्ति की नकलें ताजिकिस्तान में हर जगह नजर आती हैं।

यह बात प्रसिद्ध है कि बुढ़ापे में मनुष्य का नीचे का होंठ जरा लटकने लगता है, नाक जरा लंबी खिंच जाती है। जेरासिमोव बताते हैं कि इसका भी असर खोपड़ी के आकार पर पड़ता है और इसके आधार पर बताया जा सकता है कि मृत्यु के समय मनुष्य की उम्र लगभग कितनी रही होगी और मृत्यु किस रोग से हुई होगी।

रूस पर सैंतीस वर्ष तक निरंकुश शासन करनेवाले इवान 'खौफनाक' (१५३०-५४) के बारे में परस्पर विरोधी विचार प्रचलित हैं। कई उसे एक दृढ़निश्चयी और सशक्त शासक मानते हैं, दूसरे लगभग पागल। वह कभी धर्म-कर्म में डूब जाता, तो कभी

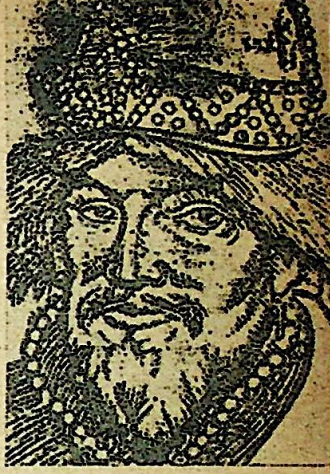

इवान 'खौफनाक' दरबारी चित्रकार द्वारा अंकित इस चित्र की प्रामाणिकता पर इतिहासज्ञों को संदेह है।

पाशविक अत्याचार पर उतर आता।

उसकी मृत्यु का कारण विवादास्पद है। कुछ कहते हैं, उसे जहर देकर मार डाला गया, तो कुछ मानते हैं कि वह अफीम से मरा। तीसरी मान्यता के अनुसार उसके मुंहलगे मुसाहिब बोग्डन बोल्स्की और बोरिस गोडुनोव ने उसका गला घोंट दिया था, तो चौथी धारणा यह है कि एक दिन शतरंज खेलते हुए उसे बहुत तेज गुस्सा आया और तीव्र भावावेश के तनाव से वह मर गया। यह भी माना जाता है कि उसे कोई छिपा हुआ रोग (शायद सूजाक) था।

जेरासिमोव से इन सब बातों की जांच करने को कहा गया। सरकार ने उन्हें क्रेमलिन के आर्केंजल गिरजे की ४०० साल पुरानी शाही कब्र खुदवाकर जार इवान का कंकाल निकलवाने की अनुमति दे दी।

कंकाल के अध्ययन के साथ-साथ जेरासिमोव एक-एक धारणा का खंडन करते गये। इवान को गला घोंटकर मारा नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया था—उसके टेंटुए की कच्ची हड्डी सही-सलामत थी। विष भी उसे नहीं दिया गया होगा—ठठरी में विष का कोई चिह्न नहीं था। और न ही नशेबाजी और सूजाक का कोई निशान था। तो वह तीव्र क्रोधावेग से ही मरा होगा। और ऐसा अत्यंत सशक्त मनुष्यों के साथ ही होता है।

यों सोलहवीं सदी के दरबारी चित्रकारों ने भी इवान के चित्र बनाये हैं; किंतु उनकी प्रामाणिकता पर किसी को विश्वास नहीं। जेरासिमोव ने उसकी खोपड़ी के आधार पर उसकी मोम की मूर्ति बनायी है, जिसका चित्र साथ में हैं। मूर्ति एक बदसूरत, डरावने आदमी की है, जिसकी आंखें उग्र हैं। ऐसा चेहरा किसी सुस्त अफीमची का नहीं हो सकता। उन्होंने इवान की हड्डियों की आंतरिक रचना की भी सूक्ष्म जांच की; क्योंकि उससे पता लग सकता है कि आदमी स्थूल था या कृशकाय। वे इस परिणाम पर पहुंचे कि इवान छः फुट का आदमी था; तीस की उम्र में वह मोटा होने लगा और मरते समय उसका वजन २१० पौंड था।

ये सब तो सूखी ऐतिहासिक खोजें हुईं। लेकिन कभी-कभी जेरासिमोव के सामने बड़े मार्मिक प्रसंग आ जाते हैं। एक दिन एक बूढ़े रूसी दंपति ने उनसे अपने मृत पुत्र की शिनाख्त करने की प्रार्थना की। इनका बेटा द्वितीय विश्वयुद्ध में मास्को की रक्षा करते हुए मारा गया था। उसकी कब्र का पता लगाने में बूढ़े-बुढ़िया को कई वर्ष लगे थे। सरकार ने उन्हें बेटे की अस्थियां ले जाकर अपने गांव में दफनाने की अनुमति भी दे दी। किंतु उस कब्र में दूसरे भी कई सैनिक दफनाये गये थे और लड़का शरीर पर निशानी के तौर पर जो चेनदार पट्टी पहना करता था, वह दो कंकालों के बीच पड़ी थी। किस ठठरी को चुनें?

प्रो० जेरासिमोव ने इनकी मदद की। उन्होंने पहले एक कंकाल की खोपड़ी के आधार पर उसकी मुखाकृति मोम से बनायी बूढ़े दंपति ने देखते ही कहा—"यही हमारा लाल है।" उन्होंने आशीर्वादों की झड़ी लगा दी। लेकिन प्रोफेसर को संतोष नहीं था अपने काम से। उनका मन कहता था कि उस लड़के के गाल ऐसे पिचके हुए नहीं थे।

बहुत दिनों बाद गुत्थी सुलझी। लड़का सेना में भर्ती होते समय गोल-मटोल ही था; लेकिन सेना में पौष्टिक भोजन व आराम के अभाव में पतला होता गया। मरने से कुछ दिन पहले ली गयी उसकी एक फोटो सेना-दफ्तर की फाइलों में मिली। जेरासिमोव की बनायी मूर्ति से उसकी तुलना की गयी, तो ऐसा लगा, जैसे वह उस मूर्ति की ही फोटो हो।

लेकिन इस प्रकार पुलिस या इतिहास संशोधकों की मदद करना ही प्रो० मिखाइल जेरासिमोव का काम नहीं है। वे एक नृतत्वशास्त्री हैं, इस नाते मानव के पूर्वजों में उनकी गहरी दिलचस्पी है। उन्होंने अफ्रीका में प्राप्त छः लाख साल पुरानी ठठरी के आधार पर पैरांथ्रोप मानव की मुखाकृति भी बनायी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

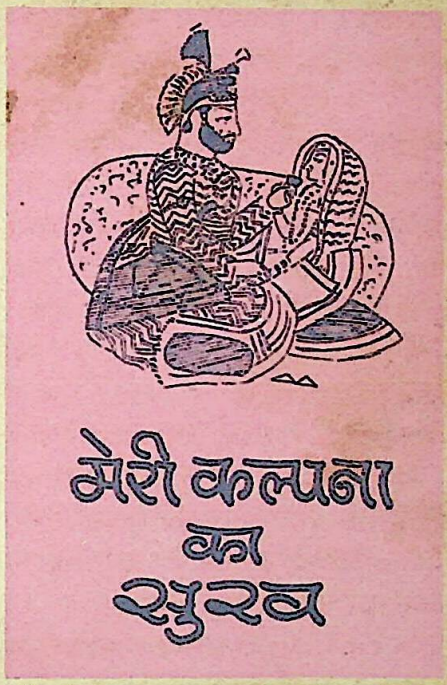

मैं अपने कल्पना-चित्र के निर्माण को सफलता और असफलता की धुरी पर नहीं, शुद्ध संकल्प रूपी कसौटी पर कसना पसंद करता हूं। और मेरा विचार है कि शुद्धसंकल्पी मानव के शब्दकोश में असफलता जैसा कोई शब्द होता ही नहीं।

—सेठ गोविंददास

०००

मैं ऐसी मनःस्थिति को सुख समझता हूं, जिसमें आनंद का अनुभव हो; किंतु जिस सुख में केवल मुझे आनंद मिले और दूसरों को दुःख, तो उसे मैं सुख नहीं समझता। मेरा मन सदैव इस बात के लिए छटपटाता रहता है कि समाज में जो दुर्गुण आ गये हैं, वे नष्ट हो जायें। मैं जानता हूं कि मेरे अकेले प्रयास या मेरे जैसे अनेक लोगों के प्रयास से समाज के दुर्गुण नष्ट नहीं हो सकते; किंतु उनके नष्ट होने के लिए प्रयत्नशील रहने में मुझे आनंद मिलता है और जब कभी मेरे आस-पास के लोग मेरे इस विचार से तालमेल रखते हुए पाये जाते हैं, तब मुझे अपनी कल्पना के सुख की अनुभूति होने लगती है।

—मन्नूलाल द्विवेदी, संसद-सदस्य

०००

पैदा होते ही मृत्यु की प्रतीक्षा करते बच्चों के स्थान पर हर जगह फूल से खिले-खिले बच्चे मिलें। गलियों और सड़कों पर भिखारियों के दर्शन न हों। सामान खरीदने के बाद वापसी रेजगारी बिना गिने अपनी जेब में रख लूं और मन में कोई शंका भी न हो। आदमी के चेहरे पर तनाव घटे और उसका स्थान मुस्कराहट ले ले कुछ इस प्रकार की परिस्थितियां हों, तो मेरे लिए बड़ी सुखदायी होंगी।

—दीनानाथ मिश्र

०००

वह देश और समय कितना सुखमय होगा, जब संसार की खाद्य-समस्या हल करने के लिए, माताएं दो संतान उत्पन्न करने के बाद ही वंध्यकरण-जड़ी का पान करने का व्रत ले लेंगी!

—हरिमोहन शुक्ल

०००

जीवन का ध्येय ही जब 'आनंद' है, तो मैं सुखमय जीवन की आशा और कल्पना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसे छोड़ दूं ? लेकिन मैं आज के आनंद को इस तरह नहीं भोगना चाहता कि वह कल के सुख के लिए बाधा बन जाये। अच्छा-खासा सुंदर घर, जिसमें जीवन की सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों। दो सुंदर प्यारे कुत्ते (क्योंकि कुत्ते बहुत-से मनुष्यों से ज्यादा वफादार होते हैं), फूल और फुलवारी, और एक अच्छी-खासी लाइब्रेरी भी मैं अवश्य रखूंगा। मैं चाहता हूं कि दुनिया से जितना ले सकूं, उससे अधिक दे सकूं। संसार से लौटते समय जब मैं पीछे मुड़कर देखने लगूं, तो मुझे यह संतोष हो कि जीवन और संसार से मैंने जितना लिया, उससे अधिक दिया और मेरे यहां आने से संसार प्रसन्न तथा समृद्ध हुआ।

—तलवार मदनमोहन

०००

आगामी दस वर्षों के भीतर मैं 'नवनीत' का संपादक बनूं, यही मेरी कल्पना का सुख है।

—रमेशकुमार जैन

०००

आज के इस संघर्षरत जीवन में मनोवांछित फल-प्राप्ति, जहां परिश्रम का परिणाम होती है, वहां उसमें भाग्य के योगदान को महत्वहीन नहीं समझा जा सकता। इस संबंध में अनेक उदाहरण हैं। भाग्य का पहलू छोड़कर केवल स्वपरिश्रम के बल पर तो मैं किसी भी सुख की कल्पना नहीं कर सकता, क्योंकि परिस्थितियों से बहुत धोखा खा चुका हूं। किंतु फिर भी एक आशा की किरण है – मेरा उचित मूल्यांकन हो। इससे अधिक किसी भी सुख का काल्पनिक चित्रण मेरी शक्ति से बाहर है।

—रामनाथ गुप्ता

०००

जब विद्यार्थी था, तो प्रोफेसर बनने की कल्पना किया करता था। बाद में प्राध्यापक तो न बन सका, हां अनचाहे अध्यापक अवश्य बन गया। जब देखा कि यह तो गले पड़ी बला बन गयी, तो स्वेच्छा से त्यागपत्र दे दिया। भावी जीवन की कल्पना और सपने अब तो सफल चिकित्सक और सफल पत्रकार के रूप में ही सिमट गये हैं। देखें, कब पूरे होते हैं ! मैं उस दिन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूं।

—कृष्णदेव अग्रवाल

०००

मेरी कल्पना का एक 'आश्रम' है, जो किसी सुरम्य नदी के तट पर या पहाड़ की तराई में हो। जहां दिन-भर का थका-मांदा या अपनी परिस्थितियों में वर्षों से उलझा हुआ मनुष्य शांति एवं सुख पाने आता हो और लौटता हो स्वपूर्णता का बल एवं आत्मविश्वास लेकर। जहां आश्रम की अपनी खेती हो, चिकित्सालय हो, पाठशाला हो, उच्च गवेषणा की व्यवस्था हो, पशु, कर्मी सब हों; किंतु सबके सब दिखावे से दूर, सत्यमार्ग के पुजारी हों, जो आज की सरकार एवं दुनिया को एक चुनौती दे सकें कि देखो तुम्हारी क्रूरता एवं द्वेष से दूर, प्रेम एवं विश्वास से भी उन्नतिशील सौंदर्यमय जीवन संभव है।

—रघुनाथ महापात्र

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

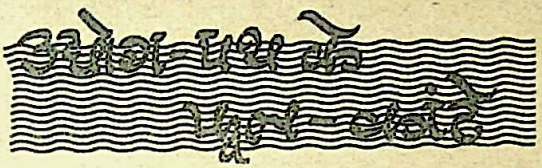

"हम तकाजा करते हैं कि व्यापारी व उद्योगपति जनता के साथ न्याय करें; बदले में हमारा यह भी आग्रह होना चाहिये कि जो व्यापारी और उद्योगपति सही राह पर चल रहा है, उसके साथ भी न्याय किया जाये।" थियोडोर रूजवेल्ट के इस नीतिवचन के साथ एक व्यवसायी के रोचक स्वानुभव।

श्रीगोपाल नेवटिया

जीवन एक बड़ा क्षेत्र है। उसके इस छोर से उस छोर पर पहुंचने के लिए मनुष्य अपनी शक्ति और सुविधा के अनुसार एक पगडंडी को पकड़ लेता है, जिस पर कदम बढ़ाता हुआ जीवन-यापन करता है।

किसी युग में—और सो भी पुराने युग में नहीं, यही सौ वर्ष पुराने युग में—मनुष्य के जीवन का क्षेत्र होता ही कितना बड़ा था? उसे पार करने के लिए पगडंडी ही पर्याप्त थी और उस पर कदम-कदम चलना ही बस था। पर अब तो जीवन के क्षेत्र का इतना विस्तार हो गया है कि उसको पार करने के लिए न पगडंडी पर्याप्त है और न पैदल चलना। अब तो जीवन-क्षेत्र में प्रशस्त मार्ग बनाना पड़ता है और उस पर चलना पड़ता है द्रुतगति से, मोटर में बैठकर!

लगभग सौ वर्ष पहले जीवन के क्षेत्र में व्यापार की पगडंडी पकड़कर आगे बढ़ने का अभिप्राय था, अपने गांव में या छोटे-बड़े शहर में पंसारठ की दुकान कर लेना, किसानों का अनाज और जुलाहों का कपड़ा खरीदकर उसे फरोख्त कर देना। पगडंडी कुछ चौड़ी और लंबी हुई, तो इतनी-सी ही कि आस-पास के कृषि-उत्पादन को खरीदकर बड़े शहर में भेजा जाये और कुछ शहरी चीजें मंगवाकर अपने गांव में बेची जायें।

व्यापार की यह पुरानी पगडंडी संतोष की समतल व सरल भूमि पर, सत्य के वृक्षों की छाया से सुखपूर्ण बनी हुई थी। उसमें यथाशक्य दान रूपी विश्राम के स्थान बने हुए थे और सबसे बड़ा आराम यह था कि उस पगडंडी में उतराव-चढ़ाव नहीं थे। यह वर्णन करते समय मेरे बाल्यकाल की स्मृति सजग हो जाती है, जब जीवन की गति-प्रगतियां काफी सीमित थीं।

मेरे बाबाजी राजस्थान से व्यवसाय के लिए ऊंट पर चढ़कर सवा महीने की यात्रा के बाद पूना पहुंचते थे और नौ वर्ष की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रा करके देश लौटते थे। नौ वर्ष तक लेवा-बेची का धंधा करते जो पूंजी इकट्ठा होती, उसे कमर में बांधकर डाकुओं से बचते-बचाते देश पहुंचते, तो ब्राह्मण भोजन होते, देवमंदिरों के घंटे बजते और उस अर्जित धन का मंदिर, धर्मशाला निर्माण, सदान्नत आदि में उपयोग होता। जीवन के क्षेत्र में व्यापार की उस पगडंडी की, उस मार्ग की, जरा कल्पना तो कीजिये, और उसकी तुलना कीजिये, आज के अणुयुग में जेटप्लेन में बैठकर आठ-दस घंटे में यूरोप पहुंचकर, करोड़-दो करोड़ की मशीनें खरीदकर, लौटकर स्वदेश में एक कारखाना खड़ा करने और उससे हुए धनार्जन से टैक्स और चंदा देने तथा शरीर सुख के साधन जुटाने से!

जीवन के क्षेत्र में व्यापार की अब पगडंडी नहीं रह गयी है और न रह गया है प्रशस्त मार्ग। अब तो आकाश-मार्ग है, और उस पर गति है वायु की। जीवन का क्षेत्र अभी तक हमारी पृथ्वी ही है; पर कौन जाने हमारे जीवन-काल में ही व्यापारी शनि का सोना और चंद्रमा की चांदी लाकर धरती पर बेचने लगें।

उतना ही उदात्त

व्यापार सबसे उदात्त पेशा तो भले न हो; किंतु लोग इसमें ऐसे भी कुछ गुण लेकर आते हैं, जो अन्वेषकों, वैज्ञानिकों, कलाकारों को प्रेरणा देते हैं, जैसे – उत्साह, खुला दिमाग और कभी-कभी तो विशुद्ध शास्त्रीय खोज में लगे हुए वैज्ञानिक की-सी निःस्वार्थता भी। –अर्नेस्ट ई० काल्किन्स

स्वाभाविक साहस

सफल व्यापार चलाने के लिए भी साहस उतना ही जरूरी है, जितना कि सैनिक बनकर युद्ध में जाने के लिए। और व्यापारिक साहस अधिक स्वाभाविक है; क्योंकि भौतिक संपदा के रूप में आज जनता को जो भी सुविधाएं प्राप्त हैं, वे सब व्यापारिक साहस का ही वरदान हैं।

–चार्ल्स एफ० एबट

आज तो जीवन के क्षेत्र में व्यापार का मार्ग नहीं, 'आटोबान' – जर्मनी का सा प्रशस्त मार्ग– बनाना पड़ता है। छोटी-सी पगडंडी बनाने के लिए निजी परिश्रम पर्याप्त होता है; पर एक चौड़ी सड़क बनाने के लिए तो 'बुलडोजर' की जरूरत होती है। आज के युग में व्यापार की अपनी गाड़ी दौड़ाने के लिए कितने साधन जुटाने पड़ते हैं और उनकी व्यवस्था भी आज हो ही जाती है।

इन व्यवस्थाओं में परमावश्यक होती है पूंजी। पुराने जमाने में व्यापारी अपनी निजी पूंजी तक ही अपने व्यापार को सीमित रखता था। उधार लेना तो मानो पाप था, शर्म का काम था। पर आज तो कंपनी बना-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर शेयर और डिवेंचर बेचने में सफलता पाना अभिमान का काम है। मान्यताएं कितनी और कैसे बदलती हैं! पुराना व्यापार पूंजी पर आधारित नहीं था, आधारित था व्यापारी के अपने अध्यवसाय पर, उसकी योग्यता व परिश्रम पर; और आज आधारित है बीसों-पचासों नहीं, सैकड़ों-हजारों के योगदान पर। वह योगदान चाहे पूंजी में हिस्सा बटानेवालों का हो, अथवा श्रमिकों का। आज जीवन के क्षेत्र को पार करने की पगडंडी ऐसी नहीं, जिस पर एक या दो आदमी ही साथ-साथ चल सकें। आज तो व्यापार की सड़क ऐसी है, जिस पर मोटरों का काफिला-का-काफिला एक साथ चलता है। उस सड़क को आज पहाड़ लांघने होते हैं, नदियां पार करनी पड़ती हैं, छोटे-बड़े गढ़ों को पाटकर और टीलों को काटकर चलना तो मामूली बात है।

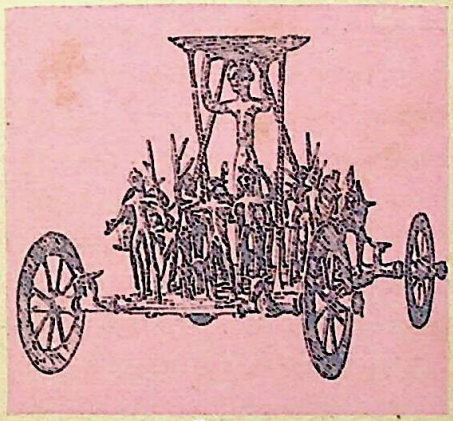

प्रगति का रथ

यह सदी-आध सदी पहले के राजस्थान का चित्र है। चारों ओर बालू के बड़े टीबों से घिरा एक कस्बा है, जिस तक पहुंचने के लिए पचीस-पचास मील दूर के रेलवे स्टेशन से रेगिस्तान के जहाज ऊंट से मुसाफिरी करनी पड़ती है। न सड़क की जरूरत, न पुल-पाल की; जरूरत है सिर्फ दिशा-ज्ञान की। मार्ग के प्रदर्शक हैं, कुओं के ऊंचे स्तंभ। ऐसे दुर्गम स्थान के वासी यथासंभव अपने आप में ही रहते। पहली बरसात के साथ भूमि पर डाले मोठ-बाजरे के बीज लहलहा उठते। पर्याप्त खाद्य पैदा होता; पर न रुई, न तेल-बाना। दूध-दही की कमी नहीं; पर साग-सब्जी के नाम पर सर्दियों में केवल मूली-गाजर, बाकी समय 'सूखी सब्जी'। ऐसी जगह में झोंपड़ी की जगह हवेली में रहने, पत्नी और पुत्रवधू के लिए चांदी की जगह सोने-मोती के गहने बनवाने की इच्छा रखनेवाले को तो व्यापार का पथ स्वीकार ही करना पड़ता। देश के ही मोठ-बाजरे को और सौ-पचास कोस से मंगवाये गुड़ को बेचकर तो हवेली नहीं बनती, सोने के गहने नहीं घड़े जाते। उसके लिए तो दूर देश जाना पड़ता। उस वक्त के दूर देश थे—अजमेर, दिल्ली और फिर बंबई-कलकत्ता।

कई चीजें एक ही जगह उपजतीं, दूसरी जगह उनका अभाव होता। ऐसी हालत में व्यापारी काम आता। राजस्थान के उस दुर्गम स्थान का व्यापारी बरेली का गुड़ जयपुर-जोधपुर पहुंचाता। बरार की रुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंबई पहुंचाता और उसे फिर इंग्लैंड-जापान भी। मालवा से अफीम को चीन भी यही व्यापारी पहुंचाता और इंग्लैंड का बना कपड़ा भी अपने देश में यही व्यापारी बेचता। वस्तुओं के इस विनिमय से राजस्थान का वह व्यापारी धनवान बनता, "व्यापारे वसति लक्ष्मी:" आर्षवाक्य को सत्य सिद्ध करता। लोटा-डोर लेकर 'विदेश' आया हुआ व्यापारी विदेश में भी और अपने देश में भी धर्मशाला बनवाता, कुएं-बावड़ी बनवाता। कुछ आधुनिक होता, तो स्कूल-अस्पताल बनवाता, अपनी हवेली बनवाता, गृहिणियों को सोने से लादता, विवाह-शादी में दोनों हाथों से लुटाता, सारे कस्बे को मिठाई खिलाता। बस यह था तत्कालीन व्यापारी का स्वरूप। मेरे अपने पूर्वजों का भी यही व्यापार था, यही स्वरूप था!

लेकिन धीरे-धीरे उपभोक्ता की आवश्यकता, जमाने का तकाजा, धन-संग्रह की बढ़ती लालसा ने मशीनों से कपड़ा बुनवाने के व्यापार को प्रोत्साहन दिया। कोल्हू का बैल चलाने की जगह तेल पेरने के एक्सपेलर अधिक मौजूं साबित होने लगे और गुड़ की जगह सफेद चीनी की गाहकी बढ़ने लगी। व्यापारी इस नये क्षेत्र में उतर आया। उसने कपड़े की मिलें लगायीं, तेल व चीनी की मिलें लगायीं। व्यापारी व्यवसायी, उद्योगपति, मिल-मालिक बना।

सादे कपड़े, सादे तेल और चीनी का उत्पादन भी पुराना पड़ने लगा। सदी का मध्य पार होते-होते तो उपभोक्ता को सूती धागे की जगह नरम-नरम बारीक रेशम, कच्चे सादे तेल की जगह वनस्पति, चीनी की जगह चाकलेट की इच्छा होने लगी। व्यापारी ने उनके उत्पादन में अपना कौशल, अपनी सफलता प्रदर्शित करनी प्रारंभ कर दी।

उत्पादन का यह क्षेत्र पिछले पचीस वर्ष में इस द्रुतगति से विस्तृत होता चला जा रहा है कि उसका कोई अंत ही नहीं दिखता। राजस्थान के छोटे कस्बे का व्यापारी उन दिनों बंबई-कलकत्ता आकर, वहां की दुकानों को देखकर जिस प्रकार चकाचौंध रह जाता था, उसी प्रकार आज हिन्दुस्तानी उद्योगी जर्मनी व जापान जाकर अचरज-भरा रह जाता है कि वहां के शो-केसों में सजी वस्तुओं में से क्या-क्या अपने देश में पहुंचाये और क्या बनाये और कैसे अपने व्यापार-व्यवसाय और उद्योग-उत्पादन को बढ़ाये।

व्यापार, व्यवसाय, उद्योग का मार्ग ऐसा है, जिसमें मंजिल नहीं कि वहां तक पहुंचे और ठहर गये। एक मंजिल के बाद एक पार करते रहने की लालसा बढ़ती रहती है। इस प्रकार आगे बढ़ते रहना, चलते चले जाना एक नशा है। यह सही है कि यह नशा मद्य की भांति तन-मन-धन का विनाशक नहीं, यह है सुख-समृद्धि का साधक, परम वांछनीय। आर्ष वाक्य भी है—संतुष्ट वणिक् का विनाश हो जाता है। राजस्थान के बालू के टीबों से घिरे कस्बे की एक जीर्ण-शीर्ण हवेली के एक भाग में रहनेवाले किसी वय:-प्राप्त वाणिक् को आज विदेश के होटल में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाई व टोप से लैस देखता हूं, तो उसमें एक मौजी शौकीन को नहीं, पर देखता हूं उत्पादन और वितरण के लिए आतुर एक देश-सेवी को !

मैं यह अभिमान तो नहीं करूंगा कि मेरा परिवार भी इसी श्रेणी में रहा है, अथवा है। पर मेरे जीवन का जो दृश्य मेरे मानस-पटल पर अंकित है, उसे देखने से मुझे यही भान होता है कि हमने भी ऐसी 'देशसेवा' में यत्किंचित योग-दान दिया है। आज से पचास-पचहत्तर वर्ष पहले हमने मालवा की अफीम को खरीदकर चीन भेजा। उससे चीनियों का शाप तो लगा ही होगा; पर मालवा के किसानों का आशीश भी खूब मिला होगा। बाद में रुई-तिलहन विदेश भेजकर देश के लिए 'फारेन एक्सचेंज' कमाते रहे, गोकि उन दिनों फारेन एक्सचेंज की कोई गरज नहीं थी और न उसे आज के इस रूप में कोई जानता था।

अभी गत युद्ध के पहले तक इंडस्ट्रियल लाइसेंस, इम्पोर्ट लाइसेंस, स्टील-सीमेंट रिलीज, फारेन एक्सचेंज लोन सरीखे शब्द भी व्यवसाय-जगत में नहीं थे। पर अब तो पद-पद पर उनका मुकाबला होता है। व्यापार के मार्ग के इन अवरोधों को लांघे बिना तो एक फर्लांग भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

और इन अवरोधों के प्रहरियों की फौज-की-फौज केंद्र और राज्यों की राजधानियों में सजग बैठी है। सोचता हूं, एक २५ वर्ष पहले की ही बात, जब किसी ने विचार किया तो कुछ पूंजी इकट्ठी की, मशीनवालों को बुलाया, मोल-तोल किया, मशीनें आने लगीं, मकान बनने लगे और कारखाना बनकर चलने लगा। अब तो कारखाने के लिए जमीन भी लें, तो एक सरकारी प्रहरी की आज्ञा के बिना, और यह भी कहूं तो सत्य होगा कि उसकी प्रसन्नता संपादन किये बिना, एक कदम आगे नहीं बढ़ाने पाये और मजा यह कि वह द्वार-अवरोधक कहलाया जाता है मार्ग-प्रदर्शक !

प्लानिंग के इस जमाने में, प्लानिंग के नाम पर, ऐसा मालूम देता है अनिवार्य रोग के रूप में यह प्रणाली हमारे जीवन-क्षेत्र में, व्यापार-मार्ग पर छा गयी है। अपने व्यापारिक जीवन के मीठे-कड़ुवे अनुभवों में मेरा सबसे मीठा अनुभव रहा है स्वतंत्रतापूर्वक इच्छा के अनुसार एक व्यावसाय को करना, एक उद्योग को स्थापित करना; और अब सबसे कटु अनुभव हो रहा है, पद-पद पर प्लानिंग और सहायता के नाम पर अवरोधों से जूझना।

मुझे स्मरण है ३० वर्ष पहले मैंने चीनी का एक कारखाना लगाया बिलकुल देहात में। सिवा पटवारी और कानूनगो के और किसी अफसर से मेरा साबका नहीं पड़ा; उनसे भी इसलिए कि काश्तकारों से जमीन के इस्तीफे उनकी मौजूदगी में लेना जरूरी था। बाकी तो सारा काम मैंने बिना किसी अफसर का मुंह देखे पूरा किया। और आज तो देखता हूं कि व्यापार की सड़क पर अफसरों का ऐसा पहरा है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा वक्त तो उनको सलाम करने में ही गुजरता है।

दूसरा मीठा अनुभव था मालिक और नौकर का संबंध, जो अब मीठा तो दूर रहा, इतना कटु होता चला जा रहा है कि कई बार तो ऐसा लगता है कि इन मंजिलों पर चलते रहने की यह लालसा कम हो जाये तो ठीक। मेरे व्यापारी जीवन का समय भी रहा ही कितना बड़ा, यही २५-३० वर्ष! पर उसके प्रारंभ-काल में मालिक और नौकर के पारस्परिक व्यवहार में जितनी मिठास थी, वह कहां चली गयी, क्यों चली गयी? उस समय के मालिक के व्यवहार को आज शोषण का नाम दिया जाता है। पर जितना मैं समझ सका हूं, उससे यही पाया कि उस जमाने में नौकर को मालिक अपनी संतान समझता था, और वह उसकी सबसे बड़ी तनख्वाह थी। और बहुत-सी बातों के साथ वह अच्छी बात भी तिरोहित हो गयी है। पर उसकी जगह मालिक और नौकर के बीच आज जो खाई खुद गयी है, वह तो भयावह है। व्यापार-व्यवसाय के मार्ग पर चलते समय इस खाई को बार-बार लांघना पड़ता है। उस खाई पर पुल बांधते रहने के लिए हमेशा सतर्क-सजग रहना पड़ता है। और कई बार तो मन बड़ा व्यथित और उदास भी हो जाता है।

एक उदाहरण देता हूं। किसी कारखाने का एक मजदूर थोड़ी बीमारी से अचानक मर गया। सब मजदूर उसे बहुत चाहते थे। उसके सम्मान में उनके अगुआ बोले—एक दिन काम बंद। मैंने कहा—"यह क्यों? मृतक के प्रति सम्मान करना है, तो उसके अनाथ परिवार की मदद करो। काम करके अपनी एक दिन की तनख्वाह उसे दो, उतनी ही मदद कंपनी भी करेगी। काम न करके तो अपनी तनख्वाह का नुक्सान ही करोगे न?" पर नहीं, मेरी बात उन्हें ठीक नहीं जंची। ऐसे अनुभव को कटु नहीं कहूं, तो और क्या कहूं?

खैर, कुछ भी हो, सरकार और कामगार की धारदार तलवार पर चलते चले जाना व्यापारी-व्यवसायी का कर्तव्य है, स्वाभाविक धर्म है, उसका पालन उसके लिए एक सुख का विषय है। ऐसे अनुभव कटु भले ही हों, फिर भी वे उसे अपने पथ से विचलित न करें, आज के वास्तविक उद्योगी का सदा यही प्रयत्न रहता है। ईश्वर करे, हमारे देश के लाखों लोगों के जीवन-क्षेत्रों में व्यापार के मार्ग बनें और वे उस पर निष्ठापूर्वक आगे बढ़े और अपने कर्म से स्वयं सुखी हों और अन्य लाखों को सुखी करें।

ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव गृह्णीयुः पापचेतसः।
तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात् प्रवासनम्॥

—जो लोभी कर्मचारी कार्यार्थी प्रजाजनों से घूंस लें, राजा उनका सर्वस्व छीनकर उन्हें देशनिकाला दे दे।

—मनुस्मृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य के बौने बेटे

प्रसिद्ध ब्रिटिश खगोलशास्त्री पैट्रिक मूर के एक लेख पर आधारित।

जब हम सौर मंडल की चर्चा करते हैं, तो प्रायः हमारा ध्यान चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि तक जाकर रुक जाता है। आखिर सप्ताह के सात दिनों के साथ इन्हीं के नाम तो जुड़े हुए हैं। यदि हम कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के हिन्दू हैं, तो राहु और केतु को भी इसमें जोड़ लेते हैं और यह जानते हुए भी कि चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह मात्र है, उसका नाम ग्रहों की सूची में से काटते नहीं हैं; क्योंकि हमारे दिमाग में नवग्रह की कल्पना बसी हुई है।

यदि हम जरा नयी रोशनी के आदमी हैं और खगोल-संबंधी लेख पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ा करते हैं, तो युरेनस, नेपच्यून और प्लूटो को याद कर लेते हैं और शायद उन धूमकेतुओं को भी, जो कभी-कभी दिगंत पर उदित हो, मनुष्य को घबराहट में डालकर ओझल हो जाते हैं।

लेकिन हममें से अधिकांश को इसकी कल्पना भी नहीं होती कि सूर्य के कुनबे में और भी बहुत-से सदस्य हैं, जो बहुत छोटे होने के कारण हमारे दृष्टिपथ में नहीं आते। सूर्य के इन बौने बेटों को खगोलशास्त्र में भी 'एस्टरायड' यानी 'क्षुद्रग्रह' कहकर अपमानित किया जाता है।

सौर मंडल एक ऐसा किला है, जिसके अनेक परकोटे हैं। बीचों-बीच सूर्य है। उसके चारों और एक के बाद एक चार परकोटे हैं, काफी सटे हुए। इन पर क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल गश्त लगाते हैं। इनके बाद दूर-दूर तक खाली जगह पड़ी है, जिसके उस पार बृहस्पति का परकोटा है। फिर हैं क्रमशः शनि, युरेनस और नेपच्यून के परकोटे। ये चारों ग्रह बड़े भीमकाय हैं। नन्हा ग्रह प्लूटो भी चालाकी से इन 'सात सवारों' में शामिल हो गया है। संभवतः प्लूटो असली ग्रह नहीं है। विद्वानों का अनुमान है कि पहले वह नेपच्यून का उपग्रह था; फिर कभी मौका पाकर दूर छिटक गया और अपने को स्वतंत्र ग्रह घोषित कर सूर्य की परिक्रमा करने लगा।

बहुत पहले से खगोलशास्त्रियों को शक था कि मंगल और बृहस्पति के बीच की करोड़ों मीलों की खाली जगह में अवश्य कोई ग्रह घूमा करता होगा। अठारहवीं सदी में बोड के बनाये समीकरण से भी इस अनुमान की पुष्टि हुई। अंत में १८०१ में इटली के खगोलविद पियाजी ने मंगल और बृह-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पति के बीच एक ग्रह खोज निकाला। इसका व्यास ४२७ मील था और बिना दूरबीन की मदद के इसे देखा नहीं जा सकता था। पियाजी ने इसका नाम रखा—सीरिस।

फिर तो और भी ग्रहों का पता चला। १८०२ में पैलास, १८०४ में जूनो और १८०७ में वेस्टा की खोज हुई। एस्ट्रिया के अस्तित्व का पता १८४७ में लगा। उसके बाद से तो कोई साल नहीं जाता, जिसमें आठ-दस नये क्षुद्रग्रहों की खोज नहीं होती। अब तक हजारों क्षुद्रग्रहों का पता लगा है, इनके भ्रमण-पथों के नक्शे बनाये गये हैं।

वैसे इनमें से अधिकांश का नामकरण वाकायदा हो चुका है; लेकिन जेल के कैदियों की तरह प्रायः ये अपने क्रमांक से पहचाने जाते हैं। वैसे कौन इनके नाम याद रखे? ये हैं भी तो हजारों। अमरीकी खगोलज्ञ आर० एस० रिचार्डसन ने इनकी संख्या ४४ हजार के करीब कूती है। लेकिन रूसी वैज्ञानिक मानते हैं कि इनकी आवादी एक लाख के ऊपर है।

अधिकांश क्षुद्रग्रह बृहस्पति और मंगल के बीच घूमा करते हैं।

क्षुद्रग्रहों की खोज का सर्वोत्तम साधन है कैमरा। आसमान की फोटो लेते हुए अगर काफी लंबा 'एक्सपोजर' दिया जाय और कैमरे को ग्रहों की गति के अनुसार धीमे-धीमे घुमाया जाये, तो तारे प्लेट पर उजले बिंदुओं की तरह अंकित हो जाते हैं और क्षुद्रग्रह पतली व छोटी लकीरों के रूप में अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

अधिकांश क्षुद्रग्रह बहुत ही छोटे हैं—व्यास में पचास मील से भी कम। एक-डेढ़ मील व्यास के पिंड भी इनके झुंड में हैं। ये सभी प्रायः मंगल और बृहस्पति के बीच घूमा करते हैं। लेकिन इनमें से कुछ बड़े मनचले हैं। इसका उदाहरण है ईरोस, जिसका क्रमांक ४३३ है और जिसकी खोज १८९८ में हुई। यह धरती के डेढ़ करोड़ मील निकट तक पहुंच जाया करता है। इकैरस (क्रमांक १५६६) बड़ा ही साहसी है; वह सूर्य और बुध के बीच के भयंकर गर्म इलाके में से घूम आता है। हाइडाल्गो (क्रमांक ९४४) शनि के उस पार की सैर करने का शौकीन है।

सन १९३७ में एक मजेदार किस्सा हुआ। हर्मेस नाम का एक बौना ग्रह पृथ्वी के पांच लाख मील नजदीक तक चला आया। तहलका मच गया। आशंका प्रकट की जाने लगी कि वह आकर धरती से टकरा जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसे इसकी संभावना कम ही थी और अगर टक्कर हो भी जाती, तो धरती का कुछ खास न बिगड़ता—शायद एक-आध शहर तबाह हो जाता। आखिर हर्मेस है ही कितना बड़ा! एक मील से भी तो कम है उसका व्यास।

क्षुद्रग्रहों की दुनिया के 'तीन बड़े' हैं—सीरिस, पैलास और वेस्टा। इन तीनों में सबसे छोटा होते हुए भी वेस्टा विज्ञान-वेत्ताओं को अधिक प्रिय है। बात यह है कि वह अन्य सब क्षुद्रग्रहों से अधिक चमकीला है। यों पृथ्वी से उसकी दूरी का मध्यमान २२ करोड़ मील के करीब है। और पृथ्वी के १० करोड़ मील से अधिक निकट तो वह कभी आता ही नहीं। सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में उसे ३.६ वर्ष लगते हैं और अपनी धुरी पर घूमने में १० घंटे ४५ मिनिट।

अत्यधिक छोटा और अत्यधिक दूर होने के कारण वेस्टा आंखों से उन्हीं रातों में देखा जा सकता है, जिनमें आसमान बहुत ही साफ हो। वैसे सामान्य बाइनाक्युलर की मदद से वह दिखाई दे जाता है। हमने कहा था, सीरिस और पैलास से छोटा होते हुए भी वह उनसे अधिक चमकीला है। इसका कारण यह है कि उसमें सूर्य की किरणों को प्रतिक्षिप्त करने की अधिक शक्ति है। हमारा चंद्रमा लगभग १० प्रतिशत प्रकाश प्रतिक्षिप्त करता है, जबकि वेस्टा २५ प्रतिशत तक। इससे अनुमान किया गया है कि वह चंद्रमा से अधिक समतल है।

इसके बावजूद वैज्ञानिक जान नहीं पाये हैं कि वेस्टा का धरातल कैसा है। यों कुछ बातें अनुमान से भी सिद्ध की जा सकती हैं। वेस्टा की काया बहुत छोटी है, इस कारण उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी बहुत क्षीण होगी। इसका मतलब है कि उसकी तमाम हाइड्रोजन गैस एवं पानी की भाप उड़कर आकाश में विलीन हो चुकी होगी और जल के अभाव में वहां वृक्ष-वनस्पति और जीव-जंतु भी नहीं होंगे। यही बात अन्य सब क्षुद्रग्रहों के बारे में भी कही जा सकती है।

क्षुद्रग्रहों की उत्पत्ति कैसे हुई, यह एक रोचक प्रश्न है। कुछ विद्वानों का खयाल है कि कभी मंगल और बृहस्पति के बीच कोई ग्रह रहा होगा, जिसका किसी कारण से विघटन हो गया। या संभव है, दो ग्रह रहे हों और वे आपस में टकराकर चूर-चूर हो गये हों। इस विघटन या टक्कर से जो खंडहर टूटकर गिरे, वे ही क्षुद्रग्रह बन गये।

वैसे यह कल्पना करना कठिन है कि सौर मंडल का कोई ग्रह अपने आप टूटा होगा, अथवा दो ग्रह आपस में टकराकर नष्ट हो गये होंगे। एक बात और है। यदि तमाम क्षुद्रग्रहों को जोड़कर एक पिंड बनाया जाये, तो भी उसका आकार हमारे चंद्रमा से छोटा ही रहेगा।

इसलिए यह कल्पना की गयी है कि मुख्य ग्रहों के बनने के बाद सौर मंडल में जो सामग्री बची रह गयी, उसने क्षुद्रग्रहों का रूप धारण कर लिया होगा।

विज्ञान-कथाओं के लेखकों ने क्षुद्रग्रहों को लेकर तरह-तरह की दिलचस्प बातें लिखी हैं। जैसे आज महाद्वीपों के बीच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायुयान चलते हैं, वैसे ही जब लोक-लोकांतरों के बीच अंतरिक्ष-यान चला करेंगे, तब वेस्टा जैसे बड़े क्षुद्रग्रहों पर स्थापित सिग्नल-स्टेशनों से उन्हें संकेत दिये जाया करेंगे। कुछ क्षुद्रग्रहों को उनके भ्रमण-पथ से खींचकर अपने अनुकूल कक्षाओं में बैठा दिया जायेगा, जिससे दूसरे लोकों को जाते हुए अंतरिक्ष-यान वहां पड़ाव डाल सकें। क्षुद्रग्रह इन कामों के लिए विशेष रूप से उपयोगी रहेंगे। उनकी गुरुत्वाकर्षण-शक्ति बहुत क्षीण होती है, लिहाजा यान उन पर धीरे-धीरे सुरक्षित उतर सकेंगे और आसानी से उनसे रवाना भी हो सकेंगे।

अमरीकी वैज्ञानिकों ने इन योजनाओं पर हर तरह से विचार करके देखा है। किसी क्षुद्रतम क्षुद्रग्रह को भी अपने भ्रमण-पथ से विचलित करने के लिए जबर्दस्त ताक़त चाहिये और उतनी शक्ति उत्पन्न करना अभी मनुष्य के बस की बात नहीं है।

एक और मजेदार कल्पना यह है कि मनुष्य क्षुद्रग्रहों को पकड़कर धरती पर ले आया करेंगे और उनसे तरह-तरह की धातु प्राप्त करेंगे। इससे कुछ मिलते-जुलते संकट का सामना क्षुद्रग्रहों को पहले भी करना पड़ा है। कई विद्वानों का खयाल है कि कुछ बड़े ग्रहों ने क्षुद्रग्रहों को पकड़कर अपना गुलाम बना रखा है। मंगल के दो छोटे उपग्रह फोबोस और डेइमोस व्यास में १० मील से भी कम हैं। बृहस्पति के सात बाहरी उपग्रह और शनि के छोटे उपग्रह भी बहुत ही नन्हे हैं। खगोलज्ञों का अनुमान है कि ये सब गुलाम बनाये गये क्षुद्रग्रह हैं।

★

बादशाह शाहजहां की अगर यह महत्वाकांक्षा थी कि वह अपनी प्यारी बीबी मुमताज महल का मकबरा ऐसा बनवाये कि संसार में उसके जोड़ का मकबरा दूसरा कोई न बनवा सके, तो अवध के नवाब शुजाउद्दौला की महत्वाकांक्षा यह थी कि उनके बेटे वजीर अली खां की शादी ऐसी शान व धूम-धाम से हो कि वैसी शादी और कोई न कर सके। वजीरअली खां की शादी वह शादी थी, जिसमें लखनऊ शहर के हर अमीर व गरीब को दावत दी गयी थी और कुल शहर बराती था। बारात की शोभायात्रा में सौ हाथी थे, घोड़ों की पूरी पलटन थी। दूल्हा जो राजसी वस्त्र पहने था, उसमें उस जमाने की कीमत के अनुसार बीस लाख के जवाहरात टंके हुए थे। गायन, वादन व नृत्य के लिए और मेहमानों के बैठने के लिए दो शामियाने बनाये गये थे—प्रत्येक १,२०० फुट लंबा, ६० फुट चौड़ा और ६० फुट ऊंचा था। कपड़ा इनमें इतना कीमती लगा था कि दस लाख रुपया उसी में खर्च हो गया। बारात के दिन शाही दस्तरख्वान पर सैकड़ों किस्म की मिठाइयां और पकवान थे। भोजन के हर कौर का मूल्य कई रुपये पड़ता था। दूल्हे तथा बादशाह के भोजन के प्रत्येक कौर का मूल्य पचासे तक पहुंचता था। मकबरे बाद में भी बने हैं, शादियां आज भी होती हैं; पर आगरे के ताज और लखनऊ की इस शादी की समानता कहां! —मेवाराम गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मां, मैं देख सकता हूं!

इनके जीवन में अभी तक एक ही रंग था--अभेद्य काला रंग; किंतु नये चश्मों ने उसमें अब रंग और रूप का इंद्रधनुष सजा दिया है।

थियोडोर अर्विन

सात वर्ष के स्टीफन के लिए जीवन अंधकारमय था। वह मायूस किस्म का, गुमसुम रहनेवाला, चिड़चिड़े स्वभाव का लड़का था। उसके नेत्रों में केवल चार प्रतिशत ज्योति थी, जो पढ़ने या खेलने के लिए पर्याप्त न थी। वह दुर्बल, किंतु स्वाभिमानी बालक था। किस्मत ने उसके साथ बड़ी क्रूरता बरती थी। वह शायद ही कभी मुस्कराया हो। हरदम वह कल्पनाओं के लोक में अकेला विचरता रहता। और उसका यह कल्पना-लोक भी नितांत नैराश्यपूर्ण था।

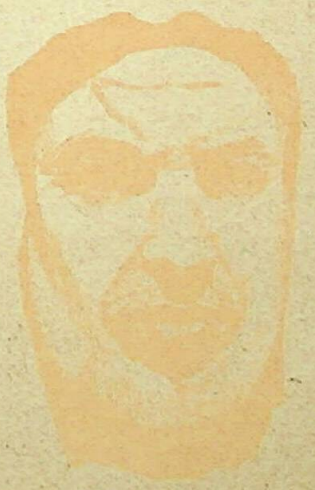

प्रकाश से वंचित

कानूनन स्टीफन अंधा था। कनेक्टीकट (अमरीका) में कोई स्कूल उसे छात्र के रूप में लेने के लिए तैयार न था। और वह अंधों के ब्रेल-स्कूल में जाने को तैयार नहीं था।

एक दिन उसकी मां उसे एक चिकित्सा-गृह में ले गयी, जो विशेष रूप से अल्प दृष्टिवालों के लिए था। स्टीफन ने न जाने ऐसी कितनी नेत्र-परीक्षाएं करायीं थीं व्यर्थ ही। उसने विरोध किया। किंतु डाक्टरों ने जबर्दस्ती एक खास प्रकार का चश्मा उसकी आंखों पर लगा दिया। बड़बड़ाते हुए उसने चश्मे में से देखा। वह आश्चर्य से चौंक उठा, कुर्सी से उछला और कमरे में नाचने लगा। वह खुशी से चिल्ला रहा था--"मां, मां, मैं देख सकता हूं। सचमुच मैं देख सकता हूं।"

लपककर वह अपनी मां के पास पहुंचा। ध्यान से मां के मुख की ओर देखा और मुस्करा पड़ा। दीवारों पर लगे चित्रों को उसने गौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से देखा। फिर जैसे उसे कुछ याद आया। बोला—"सरकस! मां, कल सरकस चलेंगे। मैं बंदरों को अच्छी तरह देखूंगा, झूले पर कूदनेवालों और जोकरों को देखूंगा। पिछली बार मैं साफ-साफ नहीं देख पाया था, अब मैं बहुत अच्छी तरह देखूंगा।" लंबे समय से उसके मन में दबी हुई इच्छाएं प्रबल वेग से बाहर उमड़ने लगीं—"मैं बेसबाल देखने जाऊंगा; अब तो शायद मैं खेल भी सकूंगा।"

यह घटना एक वर्ष पहले की है। आज स्टीफन अपने सूक्ष्मदर्शक (माइक्रोस्कोपिक) चश्मे की मदद से पढ़ सकता है और दूरवीक्षक (टेलिस्कोपिक) चश्मे की सहायता से दूर की वस्तुएं भी देख सकता है। वह एक अच्छे स्कूल में पढ़ता है। उसके बहुत-से मित्र हैं। वह फुटबाल खेलता है। अन्य बालकों की भांति दौड़ता है। विज्ञान में उसे बड़ी दिलचस्पी हो गयी है। उसका कहना है कि वह खगोल-भौतिकी का विशेषज्ञ बनेगा।

ये चमत्कारी चश्मे, जिन्होंने स्टीफन की जिंदगी बदल दी, विज्ञान की नयी देन हैं। किंतु उन्हें पिछले दस वर्षों में अनेक यांत्रिक कठिनाइयों और अनेक नेत्र-चिकित्सकों के संदेह से संघर्ष करना पड़ा है।

बहुत सावधानी से घिसकर तैयार किये गये ताल (लैंस) से युक्त ये चश्मे ऐसे कानूनन अंधे माने जानेवाले लाखों व्यक्तियों को दृष्टि-दान कर सकते हैं। चश्मों के ऊपरी भाग में एक छोटा-सा चपटा शीशा होता है, जो दूरबीन का काम करता है। नीचे के भाग में खुर्दबीन का ताल जड़ा होता है। कुछ चश्मों में दो ताल चिपके हुए होते हैं।

इन अद्वितीय चश्मों की बदौलत लगभग लुप्तप्राय दृष्टिवाला व्यक्ति भी सुई के छिद्र में डोरा डाल सकता है, छोटे टाइप की पुस्तकें पढ़ सकता है, गर्दन जरा टेढ़ी करके दूरवेक्षण-ताल की सहायता से टेलिविजन और फिल्म देख सकता है, कमरे में बैठे हुए मित्रों को देखते हुए उनसे संभाषण कर सकता है।

अमरीका के ४१ अल्पदृष्टि-चिकित्सागृहों में आज हजारों की संख्या में लोग चश्मे ले रहे हैं। लगभग पचास हजार व्यक्ति इनका उपयोग करने लगे हैं। और प्रति वर्ष लगभग पंद्रह हजार व्यक्ति शाश्वत अंधकार की कैद से मुक्ति पा रहे हैं। इनमें ऐसे व्यक्ति भी हैं, जो कानूनन अंधे हैं और जिनकी दृष्टि दस प्रतिशत या उससे भी कम है। नेत्र-विशेषज्ञ इन्हें २।२०० कहते हैं, अर्थात् इन्हें २० फुट की दूरी से उतना ही दिखाई देता है, जितना कि सामान्य स्वस्थ व्यक्ति को २०० फुट से। २५ प्रतिशत दृष्टिवाले व्यक्ति ऐसे काम नहीं कर पाते, जिनमें सूक्ष्मदृष्टि की आवश्यकता होती है। ये औद्योगिक दृष्टि से अंधे कहलाते हैं। ऐसे व्यक्ति इस नये चश्मे का लाभ उठा सकते हैं।

कठिनाई केवल यह है कि दृष्टि-लाभ करानेवाले इन उपकरणों का विकास बहुत ही मंद गति से हो रहा है और ये सहज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुलभ नहीं है।

सशक्त तालों (हाईपावर्ड लैंस) वाले चश्मों की खोज की कहानी काफी पुरानी है। सन १९२० में नेत्र-चिकित्सक आल्फ्रेड केस्टेनबाम ने जो वियेना से आकर न्यूयार्क में बसे थे, एक परीक्षण किया। उन्होंने कपड़े बुनने के कारखानों में अलसी के रेशे गिनने के लिए उपयोग किये जानेवाले 'लिनेन टेस्टर' के दो तालों को तार से बांधकर विशेष प्रकाश के फ्रेम में जड़ा और एक नया चश्मा बनाया। उन्होंने उसका नाम रखा 'माइक्रोग्लास'। इससे देखने पर वस्तुएं बहुत बड़ी दिखती थीं। लेकिन ये चश्मे भौंडे लगते थे। सो बहुत कम लोग उन्हें खरीदने को तैयार हुए। ऐसे और भी कई प्रयोग हुए और कई चश्मे बने। इन सभी का मुख्य दोष यही था कि ये देखने में सुघड़ नहीं थे।

इस दिशा में सतत प्रयत्न करते रहनेवालों में मुख्य थे न्यूयार्क के डाक्टर विलियम फेनब्लूम। इस चश्मा-विशेषज्ञ ने अपने उर्वर मस्तिष्क और वर्क-शाप की मदद से गत तीस वर्षों में बीस प्रकार के नये ताल खोज निकाले हैं। सर्वप्रथम उन्होंने न्यूयार्क के एक उद्योगपति के लिए, जो लगभग अंधा ही था, दो ताल बनाये। ये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। तब से डा० फेनब्लूम ने अपने चश्मों में काफी सुधार किया है। इन चश्मों से अधिक साफ दिखाई देता है—अधिक दूर तक भी। अब तो उनकी इतनी ख्याति हो गयी है कि दुनिया के हर कोने से रोगी उनके पास आते हैं। अन्य डाक्टर भी रोगियों को उनके तालों का उपयोग करने की सलाह देते हैं।

किंतु अपने पास आनेवाले आधे से अधिक रोगियों से डा० फेनब्लूम को कहना पड़ता है—"मुझे दुःख है कि मैं आपके लिए कुछ नहीं कर सकता।" इसका भी कारण है। अनेक नेत्र-चिकित्सकों की मान्यता है कि जो व्यक्ति एक हाथ की दूरी पर से उंगलियां नहीं गिन सकता, उसे दृष्टिवर्द्धक उपकरणों से लाभ नहीं हो सकता। डा० हालबर्ग का कहना है—"यदि केंद्रीय रेटीना का ज्यादातर हिस्सा पूर्णतः नष्ट हो चुका हो, यदि नेत्र-शक्ति इतनी क्षीण हो कि मनुष्य केवल प्रकाश का परिवर्तन-भर देख पाता हो, तो किसी भी प्रकार के साधन से उसे लाभ संभव नहीं। ऐसे लोगों को झूठी उम्मीद बंधानेवालों से बचना चाहिये।"

फिर भी लाखों लोगों को इन चमत्कारी चश्मों से लाभ हो सकता है।

अत्यंत क्षीण दृष्टिवाले अंधों को दृष्टि-सहायक उपकरण देने की योजना अमरीका में लगभग दस वर्ष पूर्व आरंभ हुई, जब ब्रुकलिन (न्यूयार्क) के अंधों के उद्योग-गृह (इंडस्ट्रियल होम फार दि ब्लाइंड) ने एक नया चिकित्सा-गृह खोला। तब तक कई नेत्रोपकरण बाजार में आ चुके थे और इनमें सबसे मुख्य था डाक्टर फेनब्लूम का 'क्लियर-इमेज-लेन्स' (स्पष्ट-बिंब-ताल) क्लिनिक के प्रबंध-संचालक पीटर जे०सामन, जो ब्रेल-लिपि ही पढ़ा सकते थे, स्वयं इन नवीन चश्मों का उपयोग करने लगे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रुकलिन के इंडस्ट्रियल होम की सफलता से प्रेरणा पाकर अन्य नगरों में भी ऐसे चिकित्सा-गृह खोले गये। इन्हीं में से एक है रोज आइलैंड का विजन-रिहैबिलिटेशन क्लिनिक। इस चिकित्सा-गृह में एक दिन एक बुद्धिमान, परिश्रमी बीमा-एजेंट विलियम जे० राल्स्टन आया। वह दस वर्ष की अवस्था में ही अंधा हो गया था। केवल एक प्रतिशत दृष्टि उसके नेत्रों में थी। पेशे में सफल होते हुए भी, उसने जीवन में बहुत कड़वे अनुभव पाये थे। उसे चिट्ठियां और अखबार उसकी पत्नी या सेक्रेटरी पढ़कर सुनाते थे। वह सड़कों के नाम एवं बसों के नंबर भी नहीं पढ़ सकता था।

विजन-रिहैबिलिटेशन क्लिनिक में जब दो अभिवर्धक (मैग्निफायर) तालों से बना चश्मा उसकी आंखों पर लगाया गया, वह उछल पड़ा और चिल्लाया –"हे भगवान, मैं तो देख सकता हूं!" सामने टंगा रंगीन नेत्र-चार्ट उसे साफ चमकता हुआ दिखाई पड़ रहा था। मंत्रमुग्ध होकर वह उसे देखता रहा।

फिर उसने अपनी पत्नी को फोन किया। उसका रोम-रोम पुलकित था, उसका कंठ गद्गद था और उसने कहा–"प्रिये, मैं यह देखने के लिए घर आ रहा हूं कि तुम वास्तव में कैसी दिखती हो!"

अब उसके पास दो प्रकार के चश्मे हैं, जिनमें से एक पढ़ने के लिए और दूसरा दूर की वस्तुएं देखने के लिए। इनकी सहायता से वह बीमा-व्यवसाय में दुगुने उत्साह से जुट गया है। बीमा-पालिसी के सुंदर ढंग से छपे हुए अक्षरों को पढ़ने में उसे अत्यंत आनंद आता है। दृष्टि मिलने से उसे व्यापार में तो लाभ हुआ ही है। लेकिन उसका कहना है – "मुझे सबसे अधिक आनंद तब हुआ, जब मैंने पहली बार अपनी छोटी बच्ची को एक परीकथा पढ़कर सुनायी।"

दृष्टि-दान करनेवाले ऐसे तालों (लैंस) का निर्माण करना बड़ा ही जटिल और कठिन कार्य है। किंतु लंबे डील-डौल और सफेद केशोंवाले डाक्टर फेनब्लूम ने सारा जीवन इन तालों के शोध एवं निर्माण के पीछे लगा दिया है। वे जानते हैं कि ये चश्मे बहुत बड़े और बेढंगे नहीं होने चाहिये, अन्यथा उन्हें पहननेवालों की हंसाई होगी और वे उन्हें उतार देंगे।

कई बार फेनब्लूम के पास ऐसे रोगी आ जाते हैं, जिनकी आवश्यकता किसी भी उपलब्ध चश्मे से पूरी नहीं होती। तब फेनब्लूम उसकी दृष्टि का सही नाम लेते हैं और रात को फुरसत के समय घर पर प्रयोग करके तय करते हैं कि उसे किस प्रकार के ताल की आवश्यकता होगी। फिर वे अपनी वर्क-शाप में, जो उनके कार्यालय के नीचे ही है, इस ताल का आकार-प्रकार निश्चित करते हैं और खराद तथा अन्य उपकरणों की मदद से ताल को घिसने और काटनेवाली सान तैयार करते हैं। इस सान पर ताल घिसकर वे अपनी 'आप्टिकल' मेज पर उसे जांचते-परखते हैं। इस कार्य के लिए काफी परिश्रम और मनोयोग अपेक्षित है;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक आदमी क्या कर सकता है

सीग्फ्रिड जोहान्सन जन्म से नेत्रहीन होते हुए भी स्वीडन के दूसरे पंद्रह हजार अंधे नागरिकों की तरह स्वस्थ और सहज जीवन बिता रहे थे। पेशे से वे पियानो-टर्नर थे और आंखों का न होना उनकी पेशेवर सफलता में किसी प्रकार बाधक नहीं बना था। अतः जब एक दिन उन्होंने सुना कि भारत में अंधों के लिए जीविकोपार्जन के अधिकांश गौरवपूर्ण मार्ग बंद हैं और उनमें से कितनों को भिक्षावृत्ति अपनानी पड़ती है, उन्हें गहरी ठेस पहुंची। सात समुद्र पार के अपने इन भाई-बहनों के लिए कुछ करने को उनका हृदय छटपटाने लगा। वे तब ४७ वर्ष के थे। वे होटल, क्लब, गिरजाघरों में ही नहीं, पार्कों व चौराहों में भी गाते और रुपया, चवन्नी, अधन्नी जो भी मिले, सादर स्वीकार करते। उनके ऊंचे ध्येय से प्रभावित होकर उन्हें टेलिविजन कार्यक्रम दिये गये। इस प्रकार छः वर्षों में उन्होंने १,२०,००० रुपये एकत्र किये। यह रकम तिरुप्पुत्तूर (मद्रास राज्य) में अंधी बालिकाओं का एक छात्रावास बनाने में खर्च की जायेगी। इसी सिलसिले में जोहान्सन एवं उनकी पत्नी भारत आये हुए हैं।

गायक सीग्फ्रिड जोहान्सन

क्योंकि ताल का माप सर्वथा शुद्ध होना चाहिये।

बहुत-से ताल दुहरे होते हैं। कांच के दो टुकड़ों को एक-दूसरे पर चढ़ाकर उनके बीच में थोड़ा-सा स्थान रिक्त छोड़कर उन्हें चारों ओर से सीलबंद कर दिया जाता है। कुछ चश्मों में दो, और कुछ में तीन ताल जुड़े होते हैं। दो तालवाले चश्मे में ऊपर की ओर एक दूरवीक्षक ताल बैठाया जाता है, जिससे मनुष्य सिर को थोड़ा झुकाकर दूर की वस्तुएं देख सकता है। तीन तालवाले चश्मे में नीचे की ओर एक सूक्ष्मदर्शी ताल भी होता है, जिसमें से देखने पर निकट की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म वस्तु भी स्पष्ट दिखाई पड़ती है। क्लिनिकों में ऐसे चश्मों की कीमत १०० रुपये तक पड़ती है, जब कि प्राइवेट डाक्टरों के यहां दो हजार रुपये तक।

नये प्रकार के ताल की डिजाइन बनाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथा उन्हें तैयार करने में डाक्टर फेनब्लूम को चालीस से लेकर दो सौ घंटे तक लग जाते हैं। अब चश्मों की अनेक कंपनियों ने कुछ स्टैंडर्ड माप स्थिर कर दिये हैं। परंतु प्रत्येक व्यक्ति की सावधानी से परीक्षा लेना अत्यंत आवश्यक है।

ये विशेष तालोंवाले चश्मे ऐसे अंधों को दिये जाते हैं, जिनकी आंख के रेटीना की बहुत-से शलाकाएं और शंकु नष्ट हो गये हों। मनुष्य के नेत्र-पटल (रेटीना) में साठ लाख से अस्सी लाख तक शलाकाएं और शंकु होते हैं। जब इनमें से कुछ लाख शलाकाएं व शंकु नष्ट हो जाते हैं, तो प्रतिबिंब स्पष्ट नहीं बनता और ऐसा दिखाई देता है, जैसे किसी खुरदुरे और तरेड़ खाये हुए दर्पण में। वे विशेष ताल प्रतिबिंब को बड़ा बना देते हैं, जिससे नाड़ी-तंतु उसके अधिक-से-अधिक भाग को ग्रहण कर सकें।

बहुत-से नेत्र-विशेषज्ञ ईर्ष्यावश डा० फेनब्लूम की कटु आलोचना करते हैं। बात यह है कि जब भी फेनब्लूम कोई नवीन प्रणाली या निदान खोज निकालते हैं, समाचार-पत्रों में उसकी बड़ी चर्चा होती है। दूसरे, फेनब्लूम नेत्र-चिकित्सक नहीं हैं, वे चश्मा-विशेषज्ञ हैं। वे कोलंबिया विश्व-विद्यालय के आप्टोमीट्री-विभाग के स्नातक हैं और पी० एच-डी० भी हैं।

ईर्ष्यालु डाक्टर कुछ भी कहें; लेकिन जिन्होंने इन विशेष तालों से जीवन का सबसे बड़ा सुख दृष्टि-सुख पाया है, वे तो फेनब्लूम को धन्यवाद देते नहीं थकते।

बासठ-वर्षीय श्रीमती मेरी डेवालिन को लीजिये। विशेष तालवाला चश्मा लेने के पहले उन्होंने कहा था —"मेरे पांच पौत्र-पौत्रियां हैं। यह देखने की मेरी तीव्र इच्छा है कि वे कैसे लगते हैं? अभी तक उनके चेहरों को छूकर ही मैंने उनकी सूरत-शक्ल की कल्पना की है। लेकिन उन्हें अपनी आंखों से देखने पर मुझे बहुत खुशी होगी।" उन्होंने चश्मा लिया और अब अपने पौत्र-पौत्रियों के बीच उन्हें पहले से अधिक सुख मिलता है।

प्राविडेंस का २६ वर्षीय बाब गोल्ड एक स्वस्थ युवक है। बचपन से उसकी दृष्टि इतनी मंद थी कि वह पढ़-लिख नहीं सकता था। फर्नीचर की दुकान में वह अलमारियों पर पेंट किया करता था। उसकी आंख की पुतलियां हरदम डोलती रहती थीं। दो साल पहले उसे काम से निकाल दिया गया; क्योंकि वह अलमारियों पर जगह-जगह पेंट बिना लगाये छोड़ देता था। पेट पालने के लिए वह एक होटल में रसोइया बन गया। फिर उसने विशेष तालवाला चश्मा खरीदा। उसकी दृष्टि में काफी सुधार हुआ। अब वह होटल का रात पाली का मैनेजर है। कितनी ही स्त्रियां नेत्रज्योति पुनः पा लेने पर जब अपने चारों ओर की दुनिया को प्रथम बार देखती हैं, तो रो पड़ती हैं।

दृष्टिहीनों को दृष्टि देने का पुण्य-कार्य करनेवाले डाक्टर फेनब्लूम तथा उनके साथी वैज्ञानिक इन आनंदाश्रुओं को अपना सबसे बड़ा पारितोषिक मानते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूब टहलिये

केशवदेव मिश्र 'कमल'

यदि आप स्वस्थ रहना चाहते हैं और खोये हुए स्वास्थ्य को वापस लाना चाहते हैं, तो टहलना शुरू कर दीजिये। दूसरे व्यायाम आप भले ही छोड़ दें; पर टहलना कभी न छोड़ें, टहलने की बात ही निराली है। जो आदमी—स्त्री या पुरुष चौबीस घंटे में कम से- कम दो घंटे नहीं टहलता, वह पूर्ण स्वस्थ हो ही नहीं सकता।

टहलने का भी अपना तरीका है। अगर आप बेढंगे तौर पर टहलेंगे, तो उससे शक्ति तो प्राप्त होगी; लेकिन आप जल्दी थक जायेंगे और वह लाभ नहीं उठा सकेंगे, जो नियमित रूप से और व्यवस्थित रूप से टहलने से होता है। टहलते समय गति में साम्य होना चाहिये और शरीर को एक खास तरीके से रखना चाहिये। चाल में एक प्रकार की सरलता होनी चाहिये और गति में एक नियमित प्रवाह। इससे शरीर में इतनी स्फूर्ति आयेगी, जितनी दूसरे तरीके से नहीं आ सकती।

टहलने से पेट, हृदय और फेफड़ों पर, जो शरीर के मुख्य अंग हैं, बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त-वाहिनी शिराओं में स्वास्थ्यप्रद गति पैदा हो जाती है, खून साफ होता है, आंखों की ज्योति बढ़ती है, रूप-रंग निखर जाता है, और शरीर के अंग-अंग में शक्ति तथा दृढ़ता का संचार होने लगता है।

जो लोग खोये हुए स्वास्थ्य को पुनः पाने के इच्छुक हों, अथवा जो किसी पुराने रोग से पीड़ित हों, उनके लिए टहलने से बढ़िया दूसरी कोई कसरत नहीं हो सकती। अपनी शक्ति से बाहर इस व्यायाम को करना कठिन है। टहलते-टहलते थककर- आप बैठ जायें, तो लाभ-ही-लाभ है, हानि कुछ भी नहीं। लेकिन यह नहीं कि थोड़ी-सी थकावट आने पर ही आप बैठ जायें। जब तक आपको यह मालूम न हो कि अब विश्राम करने से मन को प्रसन्नता होगी, तब तक आप बराबर टहलते रहें।

अच्छी प्रकार से टहलने के लिए यह जरूरी है कि आपका शरीर आगे की ओर झुका रहे, जैसा कि दौड़ने में होता है। हर कदम ऐसा हो कि वह मानो आपको गिरने से बचाये और आपका शरीर आगे की ओर इतना झुका रहे, जिससे गति लगातार एक-सी बनी रहे। सारा बदन सीधा रहना चाहिये। कंधे पीछे दबे हुए, सीना आगे निकला हुआ, सिर पीछे की ओर तथा दृष्टि एकदम सामने।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके शरीर पर किसी प्रकार का कड़ापन या जोर नहीं पड़ना चाहिये। सीने और कंधे के ऊपर भी बहुत जोर न देना चाहिये। कंधों को ऊपर की ओर नहीं उचकाइये। वे पीछे की ही ओर रहें; मगर नीचे की ओर दबे हुए। हर कदम में आगे की ओर बढ़नेवाली शक्ति होनी चाहिये।

अगर टहलने के साथ-ही-साथ आप स्वच्छ वायु में गहरी सांस भी लेते जायें, तो उससे बहुत ज्यादा फायदा हो सकता है। पक्की चट्टानों पर भी टहलना लाभदायक है। मगर जहां तक संभव हो, घास अथवा मिट्टी पर चलना ज्यादा फायदेमंद है। यदि आपको किसी निश्चित समय पर अपने काम पर जाना पड़ता है, तो आप सवारी पर कदापि न जाइये, पैदल ही जाइये। यदि आप गांव में रहते हैं, तो आप बड़े भाग्यशाली हैं। अपने काम पर लगने से पहले आप खुले खेतों में घास पर घूमकर टहलने का आनंद ले सकते हैं।

वैसे तो टहलना हर समय गुणकारी है; लेकिन प्रातः ४ से ६ बजे तक हवा में एक खास प्रकार की मस्ती रहती है, इसलिए उस समय टहलने में कहीं ज्यादा आनंद आता है। उस समय की वायु मन को बहुत प्रसन्न करनेवाली और श्रेयस्कर होती है।

लंबी दूरी तय करने से पहले चलने की अवस्था ठीक करने की कोशिश कीजिये। आप कितनी दूर चल सकते हैं, इस बात की फ़िक्र न कीजिये; आपको अपनी संजीवनी शक्ति बढ़ानी है, न कि सिर्फ दूरी तय करनी है। टहलने का उद्देश्य भी यही है।

अगर आप बहुत मोटे हैं, या आपका मांस बहुत ढीला-ढाला, लटका हुआ और मुलायम है, तो लंबी चहलकदमी से वह ठीक हो जायेगा। अगर आप बहुत दुर्बल हैं, तो टहलने से आपकी भूख बढ़ेगी और कुछ दिनों में आपका वजन भी बढ़ जायेगा।

टहलना बुढ़ापे को रोकता है। वह वृद्ध कोषाणुओं को दूर करके आपके अंग-प्रत्यंग में स्वास्थ्य, जीवन और शक्ति भर देता है।

आप जब घूमने के लिए निकलें, तो यह पहले से समझ लीजिये कि आप कहां तक जाना चाहते हैं। इधर-उधर अनिश्चित और अव्यवस्थित रूप से घूमने में आनंद तो अवश्य आता है; मगर विशेष लाभ नहीं होता।

इन सबके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान अवश्य रखिये कि नियमपूर्वक सांस लेना बड़े महत्व की चीज है। यदि आप अपने सांस को संतोषजनक रीति से नियमित नहीं बना सकते, तो आप इस उपाय को काम में लाइये। कुछ कदम तक, जैसे ७ या ८ कदम तक, सांस भीतर खींचिये और उतने ही और कदम गिनकर उसे बाहर निकालिये। टहलने का स्वाभाविक तरीका यह है कि मामूली रफ्तार से लंबी चहलकदमी की जाये। काम करने की शक्ति, आंतरिक शक्ति और दिमागी शक्ति बढ़ाने तथा शरीर के विभिन्न अंगों में साम्य स्थापित करने के लिए टहलने से उत्तम दूसरा व्यायाम नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंतरिक सौंदर्य का पुजारी

कला के संबंध में गांधीजी के चिंतन का सार-संग्रह

अनंत गोपाल शेवड़े

महात्मा गांधी सर्वतोमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे राष्ट्रपिता और भारत-भाग्य-विधाता तो थे ही; पर धर्म, राजनीति, शिक्षा, समाजसुधार, स्वास्थ्य, विश्व-शांति, जीवन-दर्शन आदि न जाने कितने विषयों के ज्ञाता एवं उपासक थे। वे इस अर्थ में विद्वान या प्रकांड पंडित नहींथे कि उन्होंने बहुत-सी किताबें पढ़ी थीं, गंभीर अध्ययन किया था। पर उन्होंने जीवन की किताब को ही सबसे अधिक महत्व दिया, और उसी को खूब पढ़ा। उनका सारा जीवन-दर्शन ही एक अद्‌भुत सृजन-शक्ति से उत्स्फूर्त हुआ था और इसलिए वह सर्वस्पर्शी था, सर्वथा मौलिक था। उनके चिंतन या विचारधारा को किसी एक सांचे में ढालकर बंद करना मुश्किल है।

गांधीजी का एक और रूप हमारे सामने आता है –संत-फकीर का। उनका जीवन त्याग और सादगी का प्रखर जीवन था। ऐसा लगता था कि वह एकदम रूखा-सूखा है, कर्मठ है, घड़ी के कांटों की तरह नपा-तुला है, चौबीसों घंटे नियम-बद्ध है। ऐसे जीवन में काव्य, कला और सौंदर्य के लिए स्थान कहां ?

इसी व्यापक धारणा के कारण उनसे एक बार प्रश्न पूछा गया –" आपके कई बुद्धिमान एवं प्रतिष्ठित प्रशंसक मानते हैं कि आपने राष्ट्र - नवनिर्माण की कल्पना में कला को कोई स्थान नहीं दिया। क्या यह सच है ?"

गांधीजी ने यह जवाब दिया– "खेद है कि लोगों को मेरे विचारों के बारे में भ्रांति है। किसी भी वस्तु के दो पहलू होते हैं–बाह्य और आंतरिक। मैंने हमेशा आंतरिक पहलू पर अधिक जोर दिया है। जो चीज आंतरिक पहलू यानी हृदय और आत्मा के उत्कर्ष के लिए उपयोगी नहीं होती, उसे मैंने महत्व नहीं दिया है। सच्ची कला आत्मा की ही अभिव्यंजना है।"

कला की यह परिभाषा किसी भी श्रेष्ठ कला-समीक्षक, कलाकार या कला-रसिक की व्याख्या से क्या भिन्न है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलाकार आखिर अपनी आत्मा की उन्नत बनने की क्षुधा को, अपनी तड़पन और छटपटाहट को ही तो शब्दों, रंगों और आकारों में मूर्त करता है।

गांधीजी कहते हैं – "होना तो यही चाहिये; पर कभी-कभी ऐसा नहीं भी होता है।" और उन्होंने उदाहरण के लिए आस्कर वाइल्ड का नाम लिया–" जब मैं बैरिस्टरी पढ़ने इंग्लैंड गया, तब उसकी काफी चर्चा सुनी जाती थी। आस्कर वाइल्ड को बड़ा कलाकार माना जाता था; पर उसने केवल बाह्य सौंदर्य की ही उपासना की, जब कि मेरी मान्यता है कि जिस कला से आंतरिक सौंदर्य या आत्मा के सौंदर्य की अनुभूति नहीं होती, वह सच्ची कला नहीं है।"

गांधीजी आगे चलकर कहते हैं–"बाह्य उपकरणों के बगैर मेरा काम चल जाता है। मेरे कमरे की दीवारों पर चित्र नहीं होंगे। हो सकता है कि छत भी न हो। पर जब मैं रात्रि के अंधकार में तारों से जगमगाते हुए आकाश को देखता हूं, उस विराट के सौंदर्य के दर्शन करता हूं, तो लगता है कि मानव की कला उस असीम सौंदर्य-राशि के सामने कितनी ओछी है!"

पर क्या सौंदर्य के द्वारा ही सत्य की अनुभूति नहीं होती? बाह्य सौंदर्य उस सत्य तक पहुंचने का साधन नहीं होता? कई कलाकार तो ऐसा ही मानते हैं। प्रसिद्ध सौंदर्योपासक अंग्रेजी-कवि कीट्स का कथन है कि सत्य ही सौंदर्य है, सौंदर्य ही सत्य है।

इस प्रश्न के उत्तर में गांधीजी कहते हैं कि वे इस विधान के प्रथम अंश पर ही जोर देते हैं कि सत्य ही सौंदर्य है। सत्य, फिर चाहे वह विचारों का हो, रूप का हो, चित्रों या संगीत का हो, वही सुंदर होता है। जब मानव सत्य में ही सौंदर्य के दर्शन करता है, तभी सच्ची कला का जन्म होता है।

तो क्या, सत्य को छोड़कर सौंदर्य का अस्तित्व नहीं है? गांधीजी की तो यही धारणा थी। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए वे स्वयं प्रश्न पूछते हैं –"जिस स्त्री का चेहरा सुंदर है, वह क्या अनिवार्यतः सुंदरी होगी ही? भले ही उसका चरित्र कुरूप रहे तब भी?" आगे चलकर वे स्वयं ही अपनी बात और भी खोलकर रखते हैं– "सच्चे कलाकार को तो वही चेहरा सुंदर लगता है, जिस पर आत्मा के सौंदर्य का आलोक प्रतिबिंबित हो उठता है। यूनान के दार्शनिक महर्षि सुकरात शारीरिक दृष्टि से एकदम कुरूप थे; पर मैं उन्हें सबसे सुंदर व्यक्ति मानता हूं, क्योंकि उन्होंने जन्म-भर सत्य का ही अन्वेषण किया और उसी के लिए अपने प्राण भी दे दिये।"

तब फिर प्रश्न उठता है कि कई कलाकारों ने, जिनका व्यक्तिगत जीवन सुंदर नहीं था, कई महान कलाकृतियों का निर्माण कैसे किया?

गांधीजी का कथन है कि सत्य और असत्य, सुंदर और असुंदर दोनों अक्सर साथ ही साथ रहते हैं, ठीक उसी तरह जैसे अच्छाई और बुराई, पाप और पुण्य साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहते हैं। पर जब सत्य, सौंदर्य और अच्छाई की शक्ति जागृत रहती है, हावी होती है, तभी श्रेष्ठ कलाकृति का निर्माण होता है, अन्यथा नहीं।

इसी परस्पर-विरोधी द्वैत के सहअस्तित्व को खलील जिब्रान ने दूसरी तरह व्यक्त किया है। वे कहते हैं कि सुख और दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। या वे ऐसे मित्र हैं, जो हमेशा साथ ही रहते हैं। एक जब आपके साथ बैठकर मेज पर खाना खाता है, तो दूसरा आपके सोने के कमरे में आपके बिस्तर पर लेटा हुआ होता है।

संध्या की सुषमा या अर्धचंद्र की आभा में—जो पाप और पुण्य, अच्छाई और बुराई से परे है — सौंदर्य होता है या नहीं ?

गांधीजी का जवाब था—"अवश्य होता है।" उन्होंने कहा भी है —"जब मैं संध्या या अर्धचंद्र के अपरिमित सौंदर्य को देखता हूं, तो मुझे उनके निर्माता का स्मरण हो आता है, क्योंकि ये मुझे सृष्टि की आत्मा में बसनेवाले सत्य की अनुभूति कराते हैं। उन्हें देखकर मेरी आत्मा उनके महान निर्माता, सर्वश्रेष्ठ कलाकार, सार्वभौम शक्तिशाली परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति से झुक जाती है, उसकी महानता के संपर्क में विशाल और महान बनने के लिए लालायित हो उठती है। जो कला आत्मा की इस उड़ान में मदद नहीं करती, प्रेरणा नहीं देती, वह निकम्मी है, व्यवधान उत्पन्न करनेवाली है, ठीक उसी तरह जैसे शरीर आत्मा की मुक्ति में बाधा पहुंचाता है।"

प्रसिद्ध फ्रेंच कलाकार (चित्रकार) पाल गोगां, जो अपनी कला की साधना में लीन होकर अपनी मातृभूमि से हजारों मील दूर ताहिती द्वीपों में रोगग्रस्त होकर मृत्यु-शायी हुए थे, कला के इस दिव्य एवं दैवी स्वरूप को मानते थे। उन्होंने अपने 'स्टेटमेंट आफ फेथ' (अपने विश्वासों और मान्यताओं के वक्तव्य) में कहा था—"मेरा विश्वास है कि कला का स्रोत दैवी ही होता है और वह उन सब व्यक्तियों के हृदय में निवास करती है, जो ईश्वर के दिव्य प्रकाश से उद्भासित हैं।"

अन्य कई कलाकारों की तरह गांधीजी ईश्वर को ही सर्वश्रेष्ठ कलाकार मानते थे, और सृष्टि की तरह जीवन को भी एक महान कलाकृति। इसलिए उन्होंने अपना जीवन ही इतना कलापूर्ण और अर्थपूर्ण बना लिया कि वे स्वयं असंख्य कवियों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और साहित्यकारों की प्रेरणा बन गये, और युगों-युगों तक बने रहेंगे। उनकी कलादृष्टि का इससे बढ़कर सबूत और क्या हो सकता है ?

☆

लोग सदैव एक दूसरे से ऊब जाते हैं। यदि मैं दस मिनट भी अकेला रह जाऊं, तो स्वयं से ही ऊब जाऊं; और मुझे विश्वास है कि मुझे अपने आपसे प्यार है, ऐसा प्यार जो किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं हो सकता। —जार्ज बर्नार्ड शा

☆

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलवीर सिंह 'कंवल'

गामा पहलवान का नाम सदियों तक अमर रहेगा। सन १८८२ में उसका जन्म हुआ था झांसी के निकट एक छोटी-सी रियासत दतिया में। उस समय उसका पिता अजीज पहलवान वहां एक शाही पहलवान की हैसियत से रहता था। गामा अभी चार वर्ष का ही था कि पिता की छांव सिर पर से उठ गयी। अब पालन-पोषण की समस्या थी। उसे उसके मामा ईदा पहलवान के पास भेज दिया गया।

जीवन के प्रारंभिक वर्ष ईदा के पास बिताने के बाद गामा भाई माधोसिंह पहलवान की शरण में गया और उसका शागिर्द बन गया। जब कुश्ती के दांव-पेचों में पूरी तरह तैयार हो गया, तो उसका मुकाबला उस समय के प्रसिद्ध पहलवान रहीम सुलतानी के साथ हुआ। कुश्ती में दोनों बराबर रहे। इस कुश्ती ने सिद्ध कर दिया कि गामा एक शक्तिशाली पहलवान है और उसका भविष्य बड़ा उज्वल है।

उसकी दूसरी कुश्ती सन १९०६ में खलीफा गुलाम महीउद्दीन 'आफताबे हिंद' के साथ लाहौर में हुई। उस कुश्ती में दोनों पहलवान इस प्रकार लड़े कि लोग अश-अश कर उठे। पैर-पैर पर दांव लगाये गये और तोड़े गये। यह कुश्ती भी बराबर रही; पर हर किसी को पता लग गया कि गामा किस मिट्टी का बना हुआ है।

गामा की रहीम के साथ दूसरी कुश्ती इंदौर में हुई। पूरे तीन घंटे दोनों आपस में फंसे रहे। पर हार-जीत का फैसला न हो सका। कुछ महीनों के बाद इन दोनों का फिर लाहौर में मुकाबला हुआ। पूरे दो घंटे दस मिनिट तक यह कुश्ती होती रही। इस बार फिर दाना बराबर रहे।

१९१० की बात है। 'जान बुल वर्ल्ड रेस्लिंग चैंपियनशिप' के संचालकों ने संसार-भर के पहलवानों को बुलाया। भारत के प्रतिनिधि गामा, इमाम बख्श और अहमद बख्श चुने गये। इनके खर्च का भार बंगाल के एक लखपति सेठ शरत कुमार ने अपने सिर पर लिया। जब पहलवानों की यह टोली लंदन पहुंची, तो उसे बड़ी निराशा हुई। उक्त संस्था के संचालकों ने कहा कि वे भारतीय पहलवानों का नाम उस मुकाबले में लड़नेवालों की सूची में नहीं रखना चाहते, क्योंकि उन सबके कद बहुत छोटे हैं और वजन भी आवश्यकता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कम हैं। उस समय गामा का वजन २५० पौंड के लगभग था और उसके भाई इमाम बख्श का १८२ पौंड। गामा का कद निःसंदेह ऊंचा नहीं था। साढ़े पांच फुट के कद-वाले गामा को पहलवान ही न माना गया, क्योंकि वहां तो बहुत ही ऊंचे कद-काठ-वाले, दैत्य किस्म के पहलवान आये हुए थे।

सब देशों के आये हुए पहलवानों की संख्या ४५० के लगभग थी। उनमें जबिस्को, हेकन्जमिद, मौरिस लैम और डेरियज जैसे पहलवान भी थे, जो संसार में अपना सिक्का जमा चुके थे। कद-काठ के खयाल से गामा सचमुच ही उनके सामने बहुत छोटा-सा लगता था। जब गामा को किसी तरह भी न चुना गया, तो उसके दिल पर बड़ी सख्त चोट लगी। उसे अपनी ताकत और कला पर पूर्ण विश्वास था। अंततः उसने खुलेआम दो घोषणाएं कीं, जो पहलवानी के इतिहास में अद्वितीय हैं।

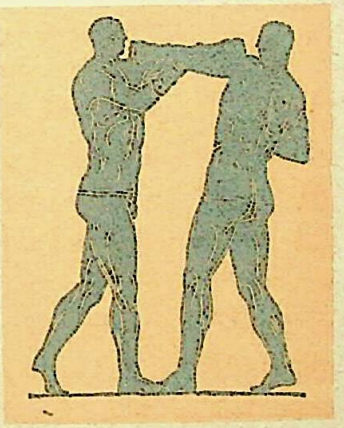

दो मल्ल

पहली घोषणा थी—"जो भी पहलवान अखाड़े में मेरे सामने पांच मिनिट तक खड़ा रह सकेगा और नहीं ढहेगा, उसे मैं पांच पौंड इनाम के तौर पर दूंगा।"

दूसरी घोषणा थी—"मैं इंग्लैंड के किन्हीं बीस पहलवानों को एक-एक करके सिर्फ एक घंटे में चित कर सकता हूं। जो भी चाहे मुझसे मुकाबला करके आजमा ले।"

गामा की दूसरी चुनौती तो किसी ने स्वीकार नहीं की; पर पहली चुनौती के उत्तर में पहले दिन ही तीन पहलवान मुकाबले के लिए तैयार हो गये। वे समझते थे कि गामा से कुश्ती लड़ते हुए वे किसी-न-किसी तरह पांच मिनिट निकाल लेंगे और शर्त जीत जायेंगे। पर उनका यह सोचना गलत साबित हुआ। गामा ने किसी को भी चित करने के लिए दो या तीन मिनिट से अधिक समय नहीं लिया।

यह देखकर दूसरे दिन बारह पहलवान मुकाबले के लिए तैयार हो गये। पर वे भी उसके सामने नहीं टिक सके। एक ही बार में गामा ने उन्हें एक-एक करके चित कर दिया। गामा की ऐसी असाधारण जीतें देखकर टूर्नामेंट कमेटी को उसका नाम लड़नेवालों की सूची में दर्ज करना पड़ा।

जब कुश्तियां शुरू हुईं, तो गामा का मुकाबला पहले दिन ही जबिस्को के साथ रख दिया गया। पूरे तीन घंटे वह कुश्ती होती रही; पर हार-जीत का फैसला न हो सका। यद्यपि जबिस्को अपनी पूरी तैयारी में था और भीमसेनी शक्ति का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमूना बना हुआ था, फिर भी उसने कुश्ती लड़ते हुए पूरे समय तक अपने बचाव के ही प्रयत्न किये। लंदन के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'टाइम्स' के अनुसार " जबिस्को अखाड़े के एक कोने में पड़ा रेंगता रहा। वह तीन बार गामा के नीचे से निकलकर उठा और उस पर असफल हमले किये, जबकि गामा का हाथ उसके ऊपर था और साफ दिखाई दे रहा था कि वह जबिस्को से बढ़िया पहलवान है। जबिस्को उसके नीचे पड़े रहने में ही संतुष्ट था।"

'टाइम्स' ने आगे लिखा—"यह कोई कुश्ती नहीं थी। दर्शक भी अब उस कुश्ती का मजाक उड़ाने लगे थे। गामा जबिस्को की पीठ पर सवार हुए बैठा था और उसे थपेड़े मार-मारकर उठने के लिए ललकार रहा था। कभी-कभी तो वह उसकी पीठ पर से उतरकर उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता था, ताकि जबिस्को उठकर खड़ा हो जाये।"

आखिर हार-जीत का फैसला न होते देखकर टूर्नामेंट कमेटी ने यह कुश्ती अगले दिन के लिए स्थगित कर दी। पर अगले दिन जबिस्को अखाड़े में ही न आया। फलस्वरूप कमेटी को विश्व-विजेता की पेटी गामा को देनी पड़ी। वह पेटी गामा के घराने के पास आज भी लाहौर में रखी हुई है। गामा को 'रुस्तमे जमां' का खिताब मिला। वह सारे यूरोप में भारत का सिक्का जमाता हुआ घर लौटा।

जब वह इंग्लैंड से भारत पहुंचा, तो आते ही उसका पहला प्रतिद्वंद्वी रहीम पहलवान मुकाबले के लिए फिर तैयार हो उठा। दोनों की यह आखिरी टक्कर इलाहाबाद में हुई। एक बहुत बड़ा अखाड़ा तैयार किया गया। हजारों की संख्या में दर्शक जमा हो गये। पहले रहीम पहलवान अपने शरीर पर सिंदूर मलकर मस्त हाथी की तरह चलता हुआ अखाड़े में अया। 'या अली!' के नारों से आकाश गूंज उठा। सलामी देने के बाद अखाड़े में दौड़ता हुआ चक्कर लगाने लगा।

उधर गामा भी तैयार होकर अखाड़े में आया। वह चुपचाप अपनी बांहें हिलाता हुआ गरम हो रहा था।

आखिर दोनों पहलवानों ने 'दस्तपंजा' लिया और कुश्ती शुरू हुई। गामा ने रहीम पर कई भयंकर दांव लगाये; पर रहीम सब दांवों को तोड़ता गया। गामा की कोई पेच नहीं जम रही थी। फिर भी जब रहीम ने दो बार अखाड़े में से भागने का प्रयत्न किया, तो गामा ने उसके पीछे भागकर उसे पकड़ लिया। अंत में गामा ने उसे कमर से पकड़कर ऊपर उठा लिया। दर्शक भौंचक्के रह गये। सभी बेचैनी से देख रहे थे। बड़ा गंभीर दृश्य था। ऐसा लग रहा था, जैसे अभी गामा रहीम को नीचे पटक देगा।

पर ऐसा नहीं हुआ। जब गामा ने उसे नीचे पटकने का प्रयत्न किया, तो रहीम की टांगें कैंची की तरह मुड़ीं और वह एकाएक गामा के सामने आ खड़ा हुआ। दर्शकों ने तालियां बजायीं। अब रहीम गामा के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने एक मस्त हाथी की तरह खड़ा था। पर तभी गामा ने पूरी शक्ति लगाकर उसे दोहत्थड़ मारा, तो वह दर्द से टिक न सका और कराहता हुआ अखाड़े के बाहर आ गया। इस प्रकार उससे वह कुश्ती पूरी नहीं लड़ी गयी। और विजयी होने के नाते गामा को गुरज दे दिया गया। साथ ही ही 'रुस्तमे हिंद' का खिताब भी दिया गया।

इसके बाद गामा पंडित विट्ठो पहलवान सितारा-ए-हिंद, से दो बार लड़ा। एक कुश्ती बराबर रही। पर दूसरी में गामा जीत गया। मुलतान के हसनबख्श को भी गामा से हार खानी पड़ी।

'रुस्तमे जमां' जीवन के अंतिम दिनों में, जब वज्रकाया कंकाल मात्र रह गयी थी

१९२८ में जबिस्को ने गामा से फिर लड़ने की इच्छा प्रकट की, ताकि अपनी हार का बदला ले सके। उन दिनों गामा महाराजा पटियाला का दरबारी पहलवान था। महाराजा ने उसे सात 'मुरब्बे' जमीन दी हुई थी और उम्र-भर के लिए २५० रुपये महीना पेन्शन लगायी हुई थी। गामा हर तरह से निश्चिंत था। जबिस्को की चुनौती पर महाराजा पटियाला ने उसे लिख भेजा कि अगर गामा से लड़ना हो, तो भारत में आकर लड़े।

जबिस्को पटियाला पहुंच गया। कुश्ती का दिन नियत हो गया। यह कोई साधारण कुश्ती नहीं थी। दोनों पहलवानों को अपनी ही नहीं, अपने-अपने देश की इज्जत का भी खयाल था। इस महान कुश्ती को देखने के लिए भारत के हर कोने से लोग पटियाला पहुंचे।

कुश्ती शुरू हुई और अभी दोनों पहलवानों ने दस्तपंजा लिया ही था कि गामा चीते की तरह जबिस्को पर लपका और कुछ ही क्षणों में उसे चित कर दिया। यह कुश्ती पूरे अढ़ाई सेकेंड में खत्म हो गयी। 'गामा पहलवान जिंदाबाद!' और 'महाराजा पटियाला जिंदाबाद!' के नारों से आकाश गूंज उठा। जब प्रेस के रिपोर्टरों ने जबस्को से उस कुश्ती के बारे में उसके विचार पूछे, तो वह अनायास ही कहने लगा —"गामा बिजली की तरह है।" कुश्ती में गिरते समय भी उसके मुंह से गामा के लिए निकला था —"गामा, तुम सचमुच शेर हो!" और आज से दो साल पहले भी जब जबिस्को से गामा के बारे में राय पूछी गयी, तो उसने लिखा —"गामा सर्वश्रेष्ठ पहलवान है और उसे संसार कभी नहीं भूल सकेगा।"

जब लोगों ने अखबारों में गामा की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुराक की चर्चा पढ़ी,तो उसे मजाक समझा। उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि एक व्यक्ति रोज डेढ़ सौ रुपये की खुराक भी खा सकता है। गामा की रोज की खुराक में २९ सेर दूध, ३ पाव घी, २ पाव मक्खन, २ सेर बादाम और ६ सेर फल होते थे।

उसकी कसरत का यह हाल था कि पांच-पांच हजार डंड-बैठकें निकालता था। ढाई-ढाई मन के चार व्यक्तियों को उठाकर कुछ कदम चल सकता था। जिस कुदाल से वह अखाड़ा खोदता था, उसका वजन १२ सेर था। इतनी खुराक और कसरत की बदौलत उसकी छाती ५६ इंच थी और भुजाएं २१ इंच।

१९१२ में गामा ने नवाब बेगम से शादी कर ली थी। जब वह कुछ साल के बाद मर गयी, तो गामा ने उसकी छोटी बहन नजीर बेगम से शादी की। दूसरी पत्नी की कोख से नौ बच्चे हुए, जिनमें पांच लड़के थे। पर उनमें से कोई भी जीवित न रहा। हां, गामा की चारों लड़कियां जीवित हैं और विवाहित हैं।

पांच पुत्रों की मौत ने गामा की जैसे कमर तोड़ दी। उसमें घोर निराशा आ गयी। यहां तक कि उसे संसार से घृणा हो गयी। इसीलिए उसने लाहौर में अपने पहले मकान को छोड़ दिया और रावी के किनारे जाकर रहने लगा।

एक बार मैं कई कारणों से गामा को जल्दी पत्र न लिख सका। फिर एक पत्र में देर से लिखने के लिए क्षमा मांगी। गामा ने उत्तर दिया—"किसी को देर से खत का जवाब देना गुनाह नहीं है, बल्कि किसी से मुहब्बत जगाकर उसे भूल जाना बहुत बड़ा गुनाह है।"

अपने स्वभाव के अनुसार गामा रात के तीन बजे उठ जाता था। १९५३ में एक रात जब वह उठा, तो एक सांप ने उसे डंस लिया। गामा बच गया। पर जल्दी ही दमा और दिल की पीड़ाओं का शिकार हो गया। वह पूरे छः साल इस हालत में दिन काटता रहा। वह पहलवान जिसके सामने कोई टिक नहीं सकता था, अंत में अपनी आखिरी उम्र में उस हालत को पहुंच गया कि चेहरे पर बैठी मक्खी भी नहीं उड़ा सकता था। उन दिनों उसके पास इलाज कराने के लिए रुपये भी नहीं बचे थे। उसने अपने कई मेडल और सात में से छः गुरज बेच दिये।

तब समाचार-पत्रों ने आवाज उठायी और आम लोगों का ध्यान गामा की उस दयनीय दशा की ओर खींचा। अंत में श्री बिड़लाजी ने गामा को पांच हजार रुपये भेजे और साथ ही दो साल के लिए प्रति मास तीन सौ रुपये भेजने का भी वादा किया। तब लाहौर और कराची की म्युनिसिपालिटियों ने भी उसे एक-एक हजार रुपया दिया। जब गामा की हालत ज्यादा खराब हो गयी, तो उसे सरकारी खर्च पर अस्पताल में दाखिल करवा दिया गया। पर हालत दिन-प्रतिदिन खराब होती गयी। अंत में २३ मई १९६० को गामा मौत के दैत्य से हार ही गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेवलाक एलिस

पथ के प्रदीप

अपनी एक पुस्तक में मैंने एक घटना का जिक्र किया है। इटली की एक औरत ने घर में आग लग जाने पर जलते कपड़े उतार-कर अपने प्राण बचाने के बजाय, अपनी लाज-शरम की रक्षा करते हुए जल मरना ज्यादा पसंद किया। जहां तक भी मुझसे बन पड़ा है, जीवन-भर मैंने कोशिश की है कि यह औरत जिस दुनिया में जीती थी, उसके नीचे बम रख दूं, ताकि वह दुनिया भस्म हो जाये। और आज मैंने खबर पढ़ी कि एक जंगी जहाज, जो तट के काफी पास पहुंच चुका था, दुश्मन का तारपीडो लगने से फूटकर डूबने लगा। एक नर्स उसके डेक पर खड़ी थी। वह तेजी से अपने कपड़े उतार फेंकने लगी और पास खड़े सैनिकों से बोली— "माफ करना दोस्तो, मुझे जवानों को बचाना है।" कपड़े उतारकर वह समुद्र में कूद पड़ी और तैर-तैरकर उसने दस-बारह डूबते सैनिकों को तट पर पहुंचाया। यह है मेरी दुनिया की नारी! जब-तब ऐसी मधुर, सर्वथा स्त्रैण और साहसी महिलाएं मुझे देखने को मिल जाती हैं, जो ऐसे या इससे भी अधिक कठिन और इससे भी अधिक वीरतापूर्ण कार्य कर गुजरी हैं। और मैंने देखा है कि उन देवियों के समक्ष मेरा हृदय पूजा के धूपदान की तरह प्रेम और भक्ति का सौरभ उगलने लगता है।

मैं ऐसी दुनिया के स्वप्न देखा करता हूं, जिसमें नारी की आत्मा आग की लपटों से अधिक शक्तिशाली होगी; जिसमें शील-शरम साहस बन जायेगी, पर शील-शरम भी बनी रहेगी; जिसमें नारी पुरुष से उतनी ही भिन्न होगी, जितनी उस दुनिया में थी जिसे मैंने बम से उड़ा देना चाहा है; और जिस में नारी पुराण-कथाओं की स्त्री की तरह आत्मोद्घाटन की कमनीय कांति से दमक रही होगी; किंतु मानवता की सेवा के लिए आत्मोत्सर्ग करने की तत्परता में पुरानी दुनिया की स्त्री से अधिक आगे होगी। जब से मैंने स्वप्न देखना सीखा है, ऐसी दुनिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का स्वप्न देखता आया हूं।

× × ×

किसी महिला ने मुझे एक भौंडा और अप्रिय पत्र दिखाया है। यह पत्र एक ऐसे आदमी का लिखा हुआ है, जिसे मैं बड़ा ही शरीफ और सुसंस्कृत समझता रहा हूं। और यह आदमी अपना समर्थन करते हुए कहता है कि "जो पवित्र हैं, उनके लिए सभी कुछ पवित्र होता है।"

"जो पवित्र हैं, उनके लिए सभी कुछ पवित्र होता है। शायद यह सत्य है। लेकिन कभी-कभी मैं सोचने लगता हूं, काश संत पाल ने इस खतरनाक सत्य को इस रूप में रखा होता कि "जो अपवित्र हैं, उनके लिए सभी कुछ अपवित्र होता है!"

सागर की विशाल गोद में ढेर-सा मल-मैल आ गिरता है और धूप व हवा के प्राण-दायक प्रभाव और सागर के सर्वव्यापी विषनाशक खारेपन की कृपा से सुंदर तथा उपयोगी वस्तुओं में, स्वास्थ्यवर्धक ओजोन गैस में बदल जाता है। लेकिन कई तंग और बंद दिमाग सागर के बजाय चहबच्चे के अधिक समान होते हैं। और चहबच्चा यह दावा करे कि उसमें सागर के महा-गुण हैं – इस पर मुझे सख्त आपत्ति है।

× × ×

याद आता है कि बरसों पहले भारत की जाने किस धर्म-पुस्तक में एक औलिया का किस्सा पढ़ा था। अपने शिष्यों के साथ यह औलिया ईसा मसीह की तरह सदा घूमता रहता था। एक दिन बड़े सवेरे औलिया और उसके चेले पास की मसजिद की मीनार पर से आती हुई मुअज्जिन अजां सुनकर उठ बैठे। आंखें मलते हुए एक चेला बोला– "खुदा की आवाज!" संयोग से तभी किसी की अपान वायु छूटने का शब्द हुआ। औलिया ने कहा –" और यह भी खुदा की आवाज है।" इस पर चेला उसकी ओर मुड़ा व उसे डांटने लगा; क्योंकि औलिया की बात में उसे कुफ्र नजर आया। लेकिन औलिया ने उसे समझाया–"बेटा, दोनों ही आवाजें हवा का कंपन-भर हैं; दोनों ही खुदा की आवाजें हैं।"

तब से बहुत बार मैंने भारत के उस मुसलमान धर्मोपदेशक के शब्दों पर विचार किया है। कितनी गहराई, कितनी सचाई छिपी है इनमें! आम आदमी मुअज्जिन के खड़े होने की ऊंची मीनार से ही खुदा की आवाज सुनते हैं। लेकिन जब रहस्यदर्शी की आंखें संसार के रहस्य में गहरे पैठती हैं, तब उसे दिखाई देने लगता है कि दिव्यता तथाकथित तुच्छ मानवीय वस्तुओं में भी अच्छी तरह प्रकट होती है। हवा, पानी सभी कुछ मनुष्य के शरीर में से गुजरता है; और मनुष्य-शरीर रूपी बेजोड़ मशीन से छू जाने मात्र से उनकी दिव्यता कम नहीं हो जाती। इस प्रकार वस्तुतः रहस्य-दर्शी के लिए स्वयं मनुष्य दिव्य बन जाता है। उसके भीतर स्थित वायु और जल भी बाहरी वायु और जल की भांति ही उसे खुदा की आवाज प्रतीत होते हैं।

['इंप्रेशन्स एंड कामेंटस' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दौलत धूप की बदौलत

देवेंद्रनाथ

हमारी धरती के पास जितना भी कोयला, तेल तथा अन्य प्रकार का ईंधन है, वह सौ या दो सौ साल के भीतर खत्म हो जानेवाला है। जब ईंधन का यह कोष चुक जायेगा, तब केवल परमाणु-शक्ति ही उसकी जगह ले सकेगी, अथवा सूर्य की किरणों द्वारा प्राप्त होनेवाली शक्ति। दुनिया-भर के ईंधन को एक जगह इकट्ठा करके जलाया जाये, तो उससे जितनी गरमी पैदा होगी, उतनी गरमी सूर्य दस दिन में पृथ्वी पर बिखेरता है।

फ्रांस के कुछ वैज्ञानिकों ने पेरेनीज पर्वत के माउंट लुई में यह साबित करके दिखा दिया है कि सूर्य-किरणों से प्राप्त की जानेवाली शक्ति बहुत सस्ती होती है। वहां सत्रहवीं शताब्दी के एक किले में, सूर्य-किरणों द्वारा जलनेवाली संसार की सबसे बड़ी भट्ठी बनायी गयी है। चौंतीस फुट व्यास का एक आईना सूर्य-किरणों को केंद्रित करके भट्ठी में डालता है, जिससे कि एक सैंकेंड से भी थोड़े समय में तीन हजार डिग्री सेंटिग्रेड गरमी पैदा हो जाती है।

इसकी सहायता से यहां प्रतिदिन १३२ पौंड जिरकोमियम तैयार किया जाता है। यह धातु २,७०० डिग्री शतांश पर पिघलती है और ऊंचे तापमान की भट्ठियों में इसका उपयोग होता है।

माउंट लुई के इस केंद्र की स्थापना प्रोफेसर फेलिक्स ट्रांबे ने बारह साल पहले की थी। पहले-पहल जब उन्होंने यह योजना फ्रांसीसी उद्योगपतियों के सामने रखी थी, तो वे उस पर हंसे थे।

आज माउंट लुई से आठ किलोमीटर की दूरी पर ओडेलो में ऐसी ही एक बहुत बड़ी भट्ठी बनाने का काम शुरू हो गया है। इस भट्ठी में लगभग ५,५०० वर्गफुट के आईने लगे हुए होंगे, जो सूर्य-किरणों को इकट्ठा करके बहुत तीव्र गरमी पैदा करेंगे।

प्रोफेसर ट्रांबे का विश्वास है कि ऐसी भट्ठियां सहारा में लगायी जायें, तो सूर्य की शक्ति द्वारा सहारा की विशाल खनिज संपदा को शोधा जा सकेगा। सहारा में में १ अरब टन तेल, ३२ खरब घन फुट गैस और १० करोड़ टन कोयला पता चला है। इसके अतिरिक्त लोहा, तांबा, मैगनीज, सीसा, एसबस्टस, टंग्स्टन, यूरेनियम, थोरि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बस इतनी सेवा करो कि सामने से हट जाओ, जिससे देवताओं की दी हुई दौलत धूप मुझ तक निर्बाध पहुंच सके।" डायोजिनस ने सिकंदर प्रतापी से कहा था।

यम आदि और भी कई खनिज पदार्थ सहारा में पाये जाते हैं।

उत्तरी अफ्रीका के लोगों की जरूरतों की पूर्ति के लिए सूर्य को जोता जा चुका है। अलजीरिया के बहुत-से घरों की छतों में एक काली प्लेट लगी होती है। वह सूर्य की गरमी को इकट्ठा करती है और साथ जुड़े हुए पाईपों के पानी को गरम करती है। मोरक्को में भी इस प्रकार के यंत्र का प्रयोग किया जा रहा है, जो लगभग चार सौ गैलन पानी गरम कर सकता है। इस पानी की भाप से छोटे कारखाने चलाये जा रहे हैं।

माउंट लुई की-सी भटठी बहुत छोटे पैमाने पर भी बनायी गयी है, जिसमें एक मीटर का वर्गाकार आईना इतनी गरमी पैदा करता है, जितनी गरमी ६०० वाट की बिजली की छड़ से पैदा होती है।

फ्रांसीसी वैज्ञानिकों ने सूर्य-शक्ति द्वारा पानी साफ करने के छोटे-छोटे यंत्र बनाये हैं और ये अब इतनी बड़ी संख्या में प्रयोग किये जा रहे हैं कि इनकी बदौलत सहारा में ताजा, पीने योग्य पानी बहुत सस्ता मिलने लगा है—एक पैसे का एक लिटर। भारत में भले यह महंगा प्रतीत हो; किंतु सहारा जैसे निर्जल क्षेत्र के लिए तो सस्ता ही है।

ऐसा जलशोधक यंत्र बनाने का सबसे आसान तरीका है कि कांच के दो टुकड़े खारे पानी की एक तश्तरी पर कुछ ढलवां करके रख दिये जाते हैं। सूर्य की गरमी से पानी की भाप बनकर कांच के निचले हिस्से पर जमा होने लगती है और फिर ठंडी होने पर बहती हुई, किसी बर्तन में पानी बनकर गिरती है। यह पानी स्वच्छ होता है और पीने के काम आता है।

ऐसी बैटरियां भी बनायी गयी हैं, जो सूर्य की गरमी को बिजली में बदल देती हैं। इस बिजली की शक्ति का कई कामों में प्रयोग होने भी लगा है। पर अभी ये बैटरियां काफी महंगी पड़ती हैं, जिससे उनका आम प्रयोग नहीं हो रहा है।

सूर्य अन्न-समस्या के समाधान में भी हाथ बंटायेगा। प्रोफेसर अलैक्स मोयसे फ्रांस के भूमध्य-सागरीय तट पर ऐसी खेती की योजना बना रहे हैं, जहां 'क्लोरेला' नाम की, पानी में उगनेवाली घास पैदा की जायेगी। यह घास पशुओं की खुराक की समस्या हल कर देगी। इस घास को सूर्य-शक्ति द्वारा तालाबों में पैदा किया जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालकेंप
जहां कल के अपराधियों की रक्षा होती है

नेहरूजी अक्सर कहा करते थे—"बच्चों से मुझे बेहद प्यार है और यह उम्र के साथ-साथ बढ़ता ही रहा है।" इस प्यार की एक साकार कल्पना यहां प्रस्तुत है, जो भारत के नव-निर्माण में बड़ी सहायक सिद्ध हो सकती है।

लुई सी० ड्रेपो

अदालत की पूर्ण निःस्तब्धता में जब कोई अपराधी बालक मेरे सामने लाया जाता है और वह भयभीत आंखों से मेरी ओर देखता है, तब मेरे मन में आता है कि उसे एक 'बेस-बाल' देकर यह कहूं—"चलो, हम दोनों घर चलें और इससे खेलें।" लेकिन मैं ऐसा कर नहीं सकता, क्योंकि वह उसका घर नहीं है—वह घर, जहां उसे प्यार, कोमलता और स्नेहसिक्त मार्ग-दर्शन मिलता है।

एक समय ऐसा था कि जब इस तरह के बालकों के बारे में निर्णय देते समय मेरे सामने दो ही विकल्प होते थे—या तो उन्हें दो वर्ष के लिए 'कैलिफोर्निया यूथ एथोरिटी' की भीड़भाड़ में भेज दूं, अथवा उन्हें मुक्त कर दूं। परंतु आजकल हम उन्हें 'लास प्रेस्टास कैम्प' में भेज देते हैं। यह कैम्प तीन साल पहले बाल-अपराधियों के सुधार के निमित्त खोला गया था। वहां के पर्वतीय वातावरण में हम अधिकांश बालकों को छः मास तक रखकर उन्हें सुधारने का प्रयत्न करते हैं। हमारे प्रयोग काफी सफल रहे हैं।

दस वर्ष पूर्व जज नियुक्त होने पर मैंने इन सुधार-केंद्रों तथा अन्य संस्थाओं का निरीक्षण करना आरंभ किया, जहां मैं ऐसे अपराधियों को भेजा करता था। जब मैंने देखा कि ताले और पहरे के भीतर उन बाल-अपराधियों के साथ कैसा अमानुषिक व्यवहार किया जा रहा है, तो मुझे बड़ा आघात पहुंचा। उन्हें इस तरह क्रूरतापूर्वक कैदखाने में

विद्रोही बालक
स्केच: आइंसेंस्टाइन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाल दिया जाता था कि उनके विकास की कोई संभावना शेष नहीं रह जाती थी।

अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि हमें एक ऐसी नयी संस्था की आवश्यकता है, जो बाल-अपराधियों के लिए घर-जैसा स्नेह-मय वातावरण पेश कर सके। उनके मन में समाज के प्रति उपेक्षा-भाव जगानेवाले कारावास का वातावरण एकदम ठीक नहीं था। काफी विचार-विमर्श के पश्चात सांटा बार्बरा और वेंचुरा की काउंटियों ने संयुक्त योजना में चौदह से अठारह वर्ष की आयु के बच्चों के लिए लास प्रेस्टोस कैंप की स्थापना की।

इस योजना को कार्यान्वित करते समय हमने ताले और कायदे-कानूनों को अलग रख दिया और इस तरह एक नयी दिशा की ओर कदम बढ़ाया। हमारा पहला उद्देश्य था बालक के मन में यह विश्वास जगाना कि वह उस कैंप में स्वेच्छा से जा रहा है—हम उसे बलात् नहीं भेज रहे हैं। दूसरा उद्देश्य था, उसे इतना समझदार बनाना कि वह अपने घर निःसंकोच लौट सके। बालकों में यह विश्वास भी जगाना चाहते थे कि हम उन्हें योग्य नागरिक बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, न कि उन्हें दंड देने का।

यह ठीक है कि ऐसे बालकों को नागरिकता की शिक्षा देना सर्वथा सरल नहीं है। जब कभी मेरा उत्साह मंद पड़ने लगता, तब मैं कार्ल विलियम्स के 'केस' की याद कर लेता हूं। वह १९४३ में चोरी के अपराध में मेरे सामने लाया गया था। पंद्रह वर्षीय, स्वस्थ, आकर्षक और बुद्धिमान किशोर था वह। मैं तो उसके व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उसे फिर उसके माता-पिता के पास शिक्षा जारी रखने के लिए भेज दिया।

लेकिन यह मेरी भूल थी। जो बालक छोटे अपराध करते हैं और प्रायः स्कूल से गायब रहते हैं, उन पर सतत निगरानी रखना विशेष आवश्यक होता है। १९४४ में कार्ल फिर मेरे सामने आया। उसने गैस के 'राशन स्टैंप' चुराकर बेच दिये थे। उसके पिता उसके प्रति कोई जिम्मेदारी महसूस नहीं करते थे और शिक्षकों का कहना था कि वह अन्य विद्यार्थियों के लिए भी गलत उदाहरण था। ऐसी हालत में कार्ल के बारे में कुछ करना मेरे लिए अनिवार्य हो गया।

मैंने उसे समझाया कि यदि उसे बाल-सुधार-केंद्र में भेज दिया गया, तो वहां उसे दो वर्ष तक कठोर निगरानी और नियंत्रण में रहना होगा। इसके बजाय उसे लास प्रेस्टोस में प्रवेश दिया जा सकता है, जहां उसे आदर्श नागरिक बनने की शिक्षा दी जायेगी। मैंने उसे यह भी बताया कि वहां वह तीन महीने में ही ग्रेजुएशन के लिए पढ़ सकता है। कार्ल ने लास प्रेस्टोस जाना स्वीकार कर लिया। यह उसके सुधार की दिशा में पहला चरण था।

सांटा बार्बरा से कार द्वारा २५ मील का सफर तय करके कार्ल सैन मार्कोस के पास के सुरम्य स्थान में पहुंचा, जो किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय सी०सी०सी० कैंप था और जहां छोटी-छोटी इमारतें दूर तक बिखरी प्रतीत होती थीं। प्रवेश-द्वार पर कोई संतरी न था, खिड़कियों में लोहे की छड़ें न थीं, दरवाजों पर ताले नहीं थे। केवल बगीचे के चारों ओर चहारदीवारी थी; वह भी हिरनों को भीतर न आने देने के लिए बनायी गयी थी।

कार्ल की पहली मुलाकात 'कैंप' के अधीक्षक मिस्टर हाल एरिक्सन से हुई। हाल बड़े शांत स्वभाव के चतुर व्यक्ति थे और उन्होंने 'कैंप' जैसी अनूठी संस्था के संचालन के लिए योग्यतम शिक्षकों की नियुक्ति की थी। एरिक्सन ने कार्ल को समझाया कि उससे ईमानदारी, सचाई और नित्यप्रति स्नान की अपेक्षा की जायेगी। वह आधे दिन तो स्कूल में रहेगा और बाकी समय 'कैंप' की विभिन्न गतिविधियों में व्यतीत करेगा। और ये योजनाएं थीं—पशु-पालन, बागवानी, रसोई का काम और सामान्य सेवा-शुश्रूषा। ये कार्य मजदूरी के लिए नहीं थे, वरन इनमें बालकों की सहज रुचि का भी समावेश था।

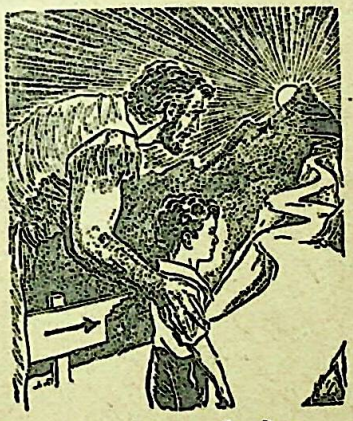

सुभग जीवन की ओर

इसके बाद कार्ल 'सान्टानेज यूनियन हाईस्कूल फैकल्टी' के अध्यापक एल्मर संडक्विस्ट से मिला। यूनियन हाईस्कूल का एक अंग होने के कारण लास प्रेस्टोस को संडक्विस्ट की सेवाएं सुलभ थीं। उन्होंने कार्ल की पढ़ाई-लिखाई का रिकार्ड देखा। संडक्विस्ट की देखरेख में ४० बालक थे।

हालांकि कार्ल को विशेष सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ी; किंतु वह कैंप के सामूहिक-जीवन के निर्वाह में असफल रहा। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि कैंप के लोग उससे द्वेषभाव रखते हैं। बागवानी-विभाग के नायक से तो कार्ल को विशेष अरुचि थी। परिणामस्वरूप कार्ल एक दिन भाग खड़ा हुआ। इस पर हमें आश्चर्य भी नहीं हुआ। कैंप से पहाड़ पर चढ़ने के दो मार्ग थे, भागनेवाला बालक या तो सांटा बार्बरा जानेवाले मार्ग से या फिर दूसरे मार्ग से भागता था।

कार्ल सात घंटे तक पैदल चलकर पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया। वहां कैंप के सहायक अधीक्षक मिस्टर पाल कैम्पबेल एक कार लेकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कार्ल से बड़ी आत्मीयता से कहा—"भाई, यदि हमें यह मालूम होता कि लास प्रेस्टोस के स्थान पर तुम्हें वेन्चुरा काउंटी जेल पसंद है, तो हम तुम्हें वहीं पहुंचा देते।"

कार्ल कुछ नहीं बोला; किंतु मैंने उसे आड़े हाथों लिया। मैंने उसे बताया कि जो व्यक्ति पहाड़ पर पैदल चढ़कर जेल जाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की योजना बनाता है, उसे जरूर कोई मानसिक रोग है। मैंने उसे मानसिक रोगियों के अस्पताल में भेज दिया, जहां उस पर निगरानी रखी गयी। इससे कार्ल का आत्मविश्वास हिल गया और एक महीने के मानसिक परीक्षणों के बाद उसने पुनः कैंप में आने की इच्छा व्यक्त की।

अब उसका आचार-व्यवहार एकदम बदल गया। एकाएक उसकी नेतृत्व की प्रवृत्ति असामाजिक दिशा को छोड़ सामाजिक प्रवृत्तियों की ओर झुक गयी। यों भी प्रायः सभी अपराधी बालकों में नेतृत्व की अपूर्व प्रवृत्ति होती है। कार्ल शीघ्र ही बागवानी-विभाग में 'कार्पोरल' बन गया। 'ग्रैज्युएशन' के बाद वह 'सार्जेंट' बना दिया गया। कैंप छोड़ने के बाद उसने अच्छे अंकों से परीक्षा पास की और जल सेना में भर्ती हो गया।

हमारे इस प्रयोग की कई बार आलोचना की जा चुकी है। हम बालकों के प्रति जो सहिष्णु हैं, इसे कुछ लोग लाड़-प्यार कहते हैं। मैं ऐसी आलोचनाओं का कोई प्रत्युत्तर नहीं देता, क्योंकि मुझे संतोष है कि मेरे कई प्रयोग बाल-अपराधियों को सुधारने में काफी सफल हुए हैं।

किसी न्यायाधीश के लिए यह बड़े दुःख की बात होती है, जब वह अपने सामने खड़े बालक के चेहरे की ओर देखता है और जानता है कि उसे 'रिफार्म-स्कूल' में नहीं भेजना चाहिये, और न मुक्त ही कर देना चाहिये। लास प्रेस्टोस उस बालक को वह सुअवसर देता है, जिससे वह अपने वर्तमान जीवन को सुधार कर भविष्य में योग्य नागरिक बन सके।

आस्तिक : नास्तिक

एक बार एक शिष्य ने गुरु के पास जाकर कहा—"महाराज मुझे धर्मज्ञान चाहिये।" गुरु ने उसे एक नजर देखा; बोले कुछ नहीं और हंस-भर दिये। शिष्य रोज उनके पास जाता और धर्मज्ञान देने की प्रार्थना करता। एक दिन गुरु उसे नदी पर ले गये और उससे पानी में डुबकी लगाने के लिए कहा। आज्ञानुसार शिष्य ने डूबकी लगायी। झपटकर गुरू ने उसकी गर्दन दबा ली और उसे ऊपर न निकलने दिया। शिष्य ऊपर आने के लिए छटपटाने लगा। अंत में गुरु ने हाथ ढीला किया और जब शिष्य पानी के ऊपर आकर दम लेने लगा, तब पूछा "जब तुम पानी के भीतर थे, तुम्हारी सबसे तीव्र इच्छा क्या थी?" शिष्य ने कहा—"महाराज मुझ केवल हवा की कामना थी। मैं सोच रहा था, एक सांस लेने लायक हवा के लिए सर्वस्व देने को तैयार हूं।" गुरु ने प्रश्न किया—"क्या ईश्वर-प्राप्ति की ऐसी ही उत्कट तुम्हारे हृदय को है? अगर नहीं, तो धर्म के बाजार में तुम्हारी और किसी नास्तिक की कीमत एक-ही है। तुम दोनों में इतना ही अंतर रह जाता है कि शुद्ध नास्तिक तुमसे ज्यादा सच्चा होता है।

—स्वामी विवेकानन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन्य हूं ऐसे शिष्य पाकर

शंकराचार्य, कांची

सन १९२९ में उत्तर अर्काट जिले की सीमा पर किसी गांव में मेरी मुलाकात एक संन्यासी से हुई। उसे न तमिल आती थी, न तेलुगु। वह केवल मराठी और हिन्दी जानता था। उसने हमें बताया कि वह रेल में रामेश्वर तक गया था और इस यात्रा में अपना दंड खो बैठा था। मैंने उसे विधिवत अभिमंत्रित दंड (डंडा) दिया और तबसे वह मुझे ही अपना गुरु मानन लगा; क्योंकि मैंने उसके आश्रम-धर्म की रक्षा की थी। उस समय भी वह अस्सी साल से अधिक का था। १९४५ में उसने सिद्धि पायी; तब तक वह मेरे पास से हटा नहीं।

सन १९२९ के चतुर्मास्य में, वह हमारे दल में सम्मिलित हुआ। उसके कुछ ही समय बाद मैं मलेरिया ज्वर से चालीस दिन तक बिस्तर पर पड़ा रहा। तब तक कोई मुझे छूआ नहीं करता था। लेकिन जब मैं उठने और चलने-फिरने में असमर्थ हो गया, तब इस बूढ़े आदमी ने, जो संन्यासी था, मेरी सेवा और सहायता का जिम्मा उठाया।

वह गुस्सैल आदमी था। बड़ी रौबीली आवाज में बोलता था। आस-पास के लोग उससे बहुत डरते थे। पहले वह मध्य भारत के देवास राज्य के माल-महकमे में काम किया करता था। रौब-दाब में नाना साहब और झांसी की रानी भी शायद उसका मुकाबला न कर पाते!

वह बिना चूके प्रतिदिन मेरे पैरों की पूजा करता और इससे उसे कोई विमुख न कर सका और पद-पूजा करते समय उसके नैनों से आंसू की झड़ी लग जाती।

एक बार उसका एक रिश्तेदार तीर्थ-यात्रा करते-करते कांची आया। वह उससे बातचीत करके मेरे पास आया और मुझ पर बिगड़ पड़ा। उसने कहा—"आप कैसे निष्ठुर आदमी हैं! यह बूढ़ा सौ साल का होने को आया और आपको भगवान से भी ऊंचा मानता है। फिर भी आप उसके प्रति कोई प्रेम नहीं दरशाते!" अपने उथले स्वभाव के कारण इस भर्त्सना की मुझ पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

एक बार हम लोग तिरुपति गये। यह बूढ़ा स्वामी भी हमारे दल में था। मैं बालाजी की पूजा करने पहाड़ पर गया और बालाजी के दर्शन करके लौटने को तैयार हुआ कि यह बूढ़ा संन्यासी मेरे सामने पड़ गया। वह जैसे-तैसे पहाड़ चढ़कर आया था। मंदिर के अधिकारियों ने उसकी उम्र और मठ के साथ उसके संबंध का लिहाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके कहा कि उसके लिए बालाजी के दर्शन की विशेष व्यवस्था कर दी जायेगी। लेकिन वह मेरे चरणों पर गिर पड़ा और उनसे बोला–"मेरे बालाजी तो ये हैं। क्षमा कीजिये, आपकी कृपा की मुझे आवश्यकता नहीं।" और बालाजी के दर्शन किये बिना ही लौट आया।

दो और सज्जन भी मेरे संपर्क में आये– उस बूढ़े से बिलकुल उलटे। ये दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे, उनमें उम्र का अंतर भी बहुत कम था; लेकिन दोनों का विचार और आचरण एक-सा था।

मेरे पैरों की पूजा करते दोनों विभोर हो जाते। किंतु जब उन्हें मेरी त्रुटियों का और मेरी स्वाभाविक अस्थिरता का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने स्वयं तो मेरे पैर पूजना छोड़ ही दिया; बल्कि दूसरों को भी मेरे चरण छूने से वे रोकने लगे। उनका विश्वास था कि भक्तों का मेरे पैरों को पूजना मेरी कमजोरियों का कारण है।

उन्होंने भी अमनी तमाम सांसारिक जिम्मेदारियां छोड़ दीं और अपना सारा जीवन मुझसे ऊंचा उठने का अनुरोध करने और मेरे सुधार के लिए बराबर जप-तप करने में ही बिता देने का निश्चय कर लिया।

जीवन से मैंने यही सीख ली है कि भगवान ने कुछ मनुष्य दूसरों की खातिर जीने के लिए ही बनाये हैं।

[भवन्स जर्नल से साभार]

सन्नाटे में

हे पिता !
जाने किन अनजाने जन्मों का कौन
आज मुझे भोगने को छोड़ गये ?

असमय अनाथ कर
अंधियारी नगरी की
संकरी इन गलियों से
अनचाहा संबंध जोड़ गये।

घिरा हूं मकानों से
मदिरालय, होटल, सिनेमा, दुकानों
दीवारों, क्लबों, पूजा–स्थानों से
सब पर लगा रहा शैतान पहरा है
जाऊं कहां मैं ?
सुनसान गहरा है।
ऐसे में क्यों भला
नाता तुम तोड़ गये ?

दूर किसी घर से
जाने किस डर से
बच्चे के रोने की आवाज आती है
लगता है, रोशनी को
प्रसथ्यु की आत्मा बुलाती है,
किंतु रोशनी कहां ?
उसका रथ तो देवदूत
कल धोखे से
किसी और ओर मोड़ गये

–रमेशचंद्र कौशि

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

यह एक बनावटी और गहमागहमी से भरा हुआ पेरिस है, जहां आदमी शराब के कुछ पैग पीने के बाद किसी भी चीज की कोई भी कीमत देने के लिए तैयार हो जाता है। हां, वह किसी कीमत पर भी अपनी पसंद की चीजें खरीदता है। चीजों की कीमतें आधी रात के समय इस कद्र ऊपर चढ़ने लगती हैं कि उन्हें वही व्यक्ति खरीद सकता है, जिसने लड़ाई के दिनों में अंधा पैसा कमाया हो।

शैंपेन, जो शाम के समय कहीं भी १५ फ्रेंक प्रति बोतल के हिसाब से खरीदी जा सकती है, रात के दस बजे के बाद अपने आप महंगी होनी शुरू हो जाती है और उसकी कीमत १५० फ्रेंक प्रति बोतल तक पहुंच जाती है। दूसरी चीजें भी इसी हिसाब से महंगी होने लगती हैं। किसी बढ़िया कैफे में, जहां नाच होता हो, किसी भी विदेशी की जेब से कम-से-कम २०० फ्रेंक निकल जाते हैं। अगर वह साथ में रात का खाना भी खाता है, तो उसका बिल १००० फ्रेंक तक पहुंच जाता है।

इसी प्रकार टैक्सी ड्राईवर जब किसी अमरीकी को अपनी टैक्सी में बैठाता है, तो उससे कम-से-कम पांच फ्रेंक झाड़ लेता है। बढ़िया होटलों के बैरे भी, किसी अमीर विदेशी द्वारा बिल चुकाये जाने पर जब बाकी पैसे लाकर देते हैं, तो पांच फ्रेंक की 'टिप' लेने में सफल हो जाते हैं; क्योंकि पांच फ्रेंक का उनके पास छुट्टा होता ही नहीं। वास्तव में, पेरिस में आये अमीर विदेशियों को लूटना भी एक कला बन गयी है।

मजा यह है कि इतनी बड़ी कीमत चुकाने पर भी उसे यह पता नहीं लगता कि वह क्या पाना चाहता है। वह पेरिस में 'रात की दुनिया' देखना चाहता होगा; पर वह जो चीज देखने का इच्छुक है, वह उसे कहीं दिखाई नहीं देती।

पेरिस के फैशन

कई वर्षों से लोगों को इस बात पर आश्चर्य था कि फ्रांसीसी मजदूर इतने तंग पायचोंवाली पतलून क्यों पहनता था कि उसे बड़ी कठिनाई से पावों के ऊपर खींचा जा सकता था। पर अब उस रहस्य का पता लग गया है। वास्तव में वह ऐसी पतलून खुद नहीं खरीदता। उसकी पत्नी उसके लिए खरीदती है।

दो फ्रांसीसी मजदूर जो कभी एक ही रेजिमेंट में थे और काफी समय से एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे से मिले नहीं थे, एक दिन बस में अचानक मुलाकात हो जाने पर अपने दुःखों का रोना रोने लगे।

"हेनरी, तुम्हारे बाल!" एक ने कहा।

"मेरी पत्नी! हां, वही काटती है। पर तुम्हारे बाल? ये भी तो ठीक नहीं कटे हुए हैं!"

"मेरे बाल भी मेरी पत्नी ही काटती है। वह नाइयों को तो भला-बुरा कहती है; पर जब वह बाल काटकर हटती है, तो मुझे उसे भी वही टिप देनी पड़ती है, जो नाई को देता हूं।"

"आह, बालों की बात तो फिर भी सहन हो सकती है। जरा इन बूटों को देखो।"

"तब तो तुम्हारी बुरी हालत है। ऐसे बूट! हद हो गयी है! ....."

"यह मेरी पत्नी का ही काम है। वह बूटों की दुकान में जाती है और कहती है– 'मुझे अपने पति के लिए बूटों का जोड़ा चाहिये। महंगे न हों। मेरे पति के पांव मेरे पांव से इतने लंबे हैं और मेरा खयाल है कि इतने चौड़े। हां, ये ठीक हैं। इन्हें बांध दीजिये।' दोस्त, बहुत बुरी हालत है।"

"मेरी भी यही हालत है। मेरे कपड़े मेरी पत्नी ही खरीदती है। कोई जरूरी नहीं है कि वे ठीक माप के हों। पर इतना होने पर भी वह भोजन बहुत अच्छा बनाती है। इस काम में वह लाजवाब है।"

"मेरी पत्नी भी। वह भी बेजोड़ है भोजन बनाने में। हीरा है हीरा! उसके हाथ का बना खाना खाकर ये कपड़े वगैरह सब भूल जाते हैं।"

"ठीक! बिलकुल ठीक। सब कुछ भूल जाता है।"

सो फैक्टरियों में कपड़ों की बिक्री है और मर्दों द्वारा स्त्रियों के प्रति विरोध प्रकट किये जाने के बावजूद, उन पर जो स्त्रि की हुकूमत है, वह जारी रहेगी।

पेरिस के हैट

स्त्रियों के हट बनानेवाले पेरिस दुकानदार ने आखिर अंग्रेजी चिड़िया उपयोग ढूंढ़ ही लिया है। उस चिड़िया हैट बाजारों में दिखाई देने लगे हैं और साधारण-सा पक्षी प्रसिद्धि पाने लगा है।

यह नया हैट, जिसकी कि दुकानदा के कहने के मुताबिक बहुत बड़ी बिक्री रही है, भूरे रंग की, कुकरमुत्ते की श की चीज है, जिसके चारों ओर अंग्रे चिड़ियां टंकी होती हैं। प्रत्येक हैट लगभग पंद्रह चिड़ियां देखी जा सकती हैं

अभी तक फ्रांसीसी लोग इस नये का विरोध कर रहे हैं, यद्यपि दुकानदा उसे बेचने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं खैर, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता कि क्या नतीजा निकले। इसी तरह बंदर खाल के कपड़ों का रिवाज भी बहुत दिन से चालू है और यह रिवाज तभी हटेगा जब बंदर कहीं दिखाई नहीं देंगे। आ लंबे बालवाले ये बंदर यहां अफ्रीका औ दक्षिण अमरीका से मंगाये जा रहे हैं औ बंदरों की संख्या कम होती जा रही है। चिड़ियों की संख्या इतनी जल्दी नहीं घटेगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैफे का शोर

न्यूयार्क के ग्रीनविच गांव की सारी गंदगी उठाकर जैसे पेरिस के रोटोंड कैफे के आस-पास के इलाके में फेंक दी गयी है। निःसंदेह पुरानी गंदगी की जगह अब नयी गंदगी ने ले ली है। पता नहीं यह गंदगी किस तरह समुद्र पार करके न्यूयार्क से पेरिस में आ गयी है! और विदेशी यात्रियों के लिए रोटोंड में, शाम के समय एक नया वातावरण छा गया है।

रोटोंड की मेजों के गिर्द बैठे हुए लोग अजीब-से दिखाई देते हैं और अजीब-सी ही हरकतें करते हैं। वे सब अपने लिबास में लापरवाही बरतकर अपना अलग व्यक्तित्व बनाना चाहते हैं; पर उनमें कुछ ऐसा सनकीपन है कि वे सबके सब एक-से लगते हैं। धुएं से भरे हुए, ऊंची छतवाले और मेजों से खचाखच भरपूर। रोटोंड को पहली नजर देखकर ऐसा लगता है, जैसे किसी चिड़ियाघर में कोई जानवरों के पिंजरे में चला गया हो। वहां भांति-भांति की ऊंची और मध्यम आवाजों का शोर सुनाई देता है और उस शोर और धुएं में बैरे काले और सफेद पक्षियों की तरह उड़ते हुए नजर आते हैं। मेजें भरी हुई हैं—हमेशा ही भरी रहती हैं; और लोग हैं कि आये जा रहे हैं।

रोटोंड अक्सर चित्रकारों से भरा रहता है। पर सच पूछिये तो आपको वहां कोई भी ऐसा चित्रकार दिखाई नहीं देगा, जो अपनी कला के प्रति गंभीर और ईमानदार हो। विदेशी यात्री जब रोटोंड में आते हैं,

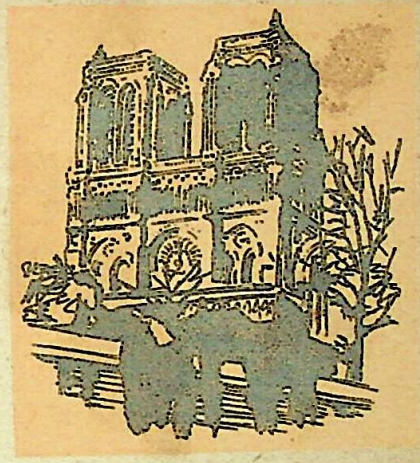

गाथिक कला का बेजोड़ नमूना नोत्रदाम

तो उन्हें लगता है कि वे वहां पेरिस के महान चित्रकारों को देख रहे हैं। पर असलियत यह है कि पेरिस के वे चित्रकार, जो अच्छे चित्रों का सृजन कर रहे हैं, रोटोंड की भीड़ से घृणा करते हैं। रोटोंड में बैठनेवाले चित्रकार आवारा किस्म के लोग हैं और अपनी शक्ति का उपयोग अपने चित्रों में करने के बजाय व्यर्थ की बातों में करते हैं और उन चित्रकारों को गालियां दिया करते हैं, जिन्हें किसी हद तक सफलता प्राप्त हो चुकी है। कला के बारे में बातें करते हुए उन्हें वही संतोष होता है, जो एक सच्चे कलाकार को अपना काम करने में होता है। वास्तव में ये लोग चित्रकार होने का सिर्फ दिखावा करते हैं।

फ्रांसीसी शिष्टाचार

जिसने ग्रथम विश्वयुद्ध के पहले के पेरिस को देखा है, वह उसके बाद के पेरिस को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखकर सन्न रह जायेगा। अब का पेरिस उस पहले के पेरिस से बिलकुल ही भिन्न है। विश्वयुद्ध के पहले पेरिस का शिष्टाचार संसार-भर में प्रसिद्ध था।

आज पेरिस में आप देखेंगे कि गाड़ियों में चढ़ते-उतरते समय लोग एक दूसरे को धक्के दे रहे हैं, बसों में मर्द धोखे से स्त्रियों की सीट पर कब्जा जमा रहे हैं, चीजों की कीमतों पर लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, जबर्दस्ती 'टिप' मांगी जा रही है।

टैक्सी ड्राईवर हमेशा ही अशिष्टता का बर्ताव करते हैं। उनके सामने एक ही मनोरथ है कि किस तरह टैक्सी में बैठे हुए यात्री से ज्यादा-से-ज्यादा पैसे बटोरे जायें।

यह बात मशहूर है कि पेरिस में आये प्रत्येक विदेशी ने टैक्सी ड्राइवर को हमेशा उसके किराये से ज्यादा पैसे दिये हैं और साथ में अच्छी बड़ी 'टिप' भी, ताकि टैक्सी ड्राइवर यह शोर न मचाये कि उस विदेशी ने उसे लूट लिया है। टैक्सी ड्राइवर जानता है कि इस प्रकार शोर मचाने और विदेशी यात्री का पीछा करने में भी उतने ही पैसे हैं, जितने टैक्सी चलाने में।

पेरिस में दिखाई देनेवाली इस नयी अशिष्टता के सबसे बड़े उदाहरण आपको बसों में मिलेंगे। आप पास में खड़ी स्त्री को सीट देने के लिए उठते हैं कि बड़ी-बड़ी मूछोंवाला कोई मर्द झट-से वहां बैठ जाता है। अगर आप उससे कुछ कहते हैं, तो वह आप पर बरसने लगेगा—"अगर हिम्मत हो, तो उठाओ मुझे! देखो कोशिश करके! अगर मुझे हाथ भी लगाया, तो सीधे पुलिस के पास ले चलूंगा!"

चाहे कोई कितना भी उकसाये, फ्रांस में विदेशी यात्रियों को अपने आप पर काबू रखना पड़ता है। फ्रांसीसी बहुत बुरी तरह लड़ते हैं; पर वह लड़ाई हाथापाई की जगह बातों से ही होती है। इस लड़ाई में आपने किसी फ्रांसीसी को हाथ लगाया नहीं कि वह आपको पुलिस के पास ले जायेगा और उस पर हाथ उठाने के जुर्म में छह महीने से ज्यादा कैद की सजा दिलवा देगा।

सरकारी कर्मचारी भी अशिष्टता का बहुत अच्छा सबूत देते हैं। ये पुलिस के आदमी नहीं हैं, बल्कि पार्कों और अजायबघरों के दरवाजों पर खड़े होनेवाले दरबान हैं। कई बार वे आपको अंदर जाने से बिना किसी कारण ही रोक देते हैं और बहुत धूर्तता से पेश आते हैं। इनके अलावा उस दफ्तर के कर्मचारी भी बेहद अशिष्ट हैं, जहां आप पेरिस छोड़ते समय अपने पासपोर्ट पर सही करवाने जाते हैं। वे जबर्दस्ती और खुलेआम आपसे टिप लेने की कोशिश करते हैं।

इतने पर भी लोगों को यह आशा है कि फ्रांसीसी समाज ऊपर से ही खराब हुआ है। भीतर से अभी भी उसमें अच्छाई मरी नहीं है। आखिर तीन सदियों की सभ्यता चार-पांच साल में ही नष्ट नहीं हो सकती!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी रुचि की पंक्तियां

वाणी को अभिव्यक्ति देने के लिए नेत्रों से अधिक संवेदनशील माध्यम भला और क्या हो सकता है ? नेत्र बोलते हैं, नेत्र सुनते हैं, नेत्र आघात करते हैं, नेत्र आघात सहते हैं और तिलमिलाते भी हैं। फिर नेत्र नेत्रों से बातें भी करते हैं—सब ओर मौन रहता है; सब कुछ निःशब्द। संवाद से अधिक हाव-भाव बोलते हैं।

प्रेषक —जनार्दन कुमार नागवान

—हिमांशु श्रीवास्तव (धर्मचेता)

जीवन एक कहानी है। कहानी की तरह यह शुरू होता है, कहानी की तरह यह चलता है और कहानी की तरह ही यह समाप्त हो जाता है। हम लोग सभी, एक बड़े आख्यान के पात्र हैं। विश्व की रचना के साथ ही कहानी का प्रारंभ हुआ और प्रलय के साथ ही इसका अंत होगा। कलाकार निर्भय, निर्विकार-भाव से कहानी कहता चला जा रहा है। हमारे सुख-दुःख उसे छूते तक नहीं, हमारे रोने या हंसने से उसे न तो विषाद होता है, न आल्हाद। वह तो चरित्रों का चित्रण कर रहा है, कथानक की सृष्टि कर रहा है। वैज्ञानिक इसे विकास कह सकते हैं, इतिहासज्ञ उसे ऐतिहासिक प्रगतिवाद कह सकते हैं। एक के बाद दूसरा आता है, दूसरे के बाद तीसरा। सभी आते हैं और चले जाते हैं— कोई ठहरता नहीं। कहानी चलती जाती है।

प्रेषिका — प्रभा पुरी

—कमलाकांत वर्मा (बारहवां संस्कार)

संदेह दुर्बलता की निशानी है और मानसिक कायरता का प्रमाण। उस शख्स की जिंदगी अजीरन है, जो दरो-दीवार को चौकन्नी नजरों से देखता रहे, जिसे अपने चारों तरफ दुश्मन ही दुश्मन नजर आयें—कहीं दोस्त की सूरत न दिखाई पड़े।

प्रेषक —जगदीश यादव

—अमृतराय (कलम का सिपाही)

रूप मुसीबत है—उसके लिए तो पहले कि जिसमें है, फिर उसके लिए भी कि जो उस पर रीझता है। रूप इस तरह छल है। एक ओर मान के साथ मिला हुआ है, तो दूसरी ओर कामना के साथ। अपने अंदर की कामना बाहर रूप की सृष्टि कर दिखाती है। अध्यापक के लिए जो लड़की निकम्मी है, प्रेमी के लिए वही अप्सरा है। इसे आंखों का ही फर्क कहना चाहिये। इसलिए रूप तो देखनेवाले की आंखों में है; वैसे वह कहीं नहीं है। इसलिए प्रेम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को तो मैं छोड़कर ही चलना चाहता हूं।
प्रेषक–जयराम यादव

–जैनेंद्र कुमार (साहित्य का श्रेय और प्रेय)

ऐसा कोई काम कर्तव्य हो ही नहीं सकता, जो मनुष्य की आत्मा की पुकार से परे हो।
प्रेषिका–उषा जोशी

–आचार्य चतुरसेन शास्त्री (सेना और खून)

लोग आपके तर्क को कभी स्वीकार नहीं करते; न आपकी सचाई को, न आपकी वेदना की गंभीरता को। तब तक नहीं, जब तक कि आपकी मृत्यु न हो जाये। जब तक आप जीवित हैं, आपका मामला संदिग्ध है; आपको अधिकार है, केवल उनका संदेह-मिश्रित विश्वास पाने का।
प्रेषक–'पाखी'

–आल्बेर कामू (पतन)

यह रोशनी की वह दीवानी तलाश है, जिसके अंधे मोड़ों से हजारों के पैर टकराये हैं और वे निराशा की, शिकायतों की, सनक या मौत की गहरी खाइयों में जा पड़े हैं। यह केवल कभी-कभी ही होता है कि एक बीमार और रोऊं-रोऊं करता बालक बड़ा होकर राजेंद्र सिंह बेदी बन जाता है, मां की ममता के लिए तरसा हुआ एक बच्चा बालजाक बन जाता है, गरीबी और यातना के झकझोरे खाता हुआ एक लड़का गोर्की बन जाता है। यह दर्द जब सृजनात्मक होता है, तो करामाती बन जाता है और स्वयं को पहचानते-पहचानते इंसान पाल पाट्स बन जाता है, खलील जिब्रान बन जाता है।
प्रेषक – अशोककुमार जोशी

अमृता प्रीतम (काला गुलाब)

शायद सारे आकर्षण थोड़े दिनों के होते हैं। जिन स्थितियों में हम अरसे से रहे आते हैं, उनसे ऊबकर बदली हुई परिस्थितियाँ कुछ समय के लिए सुख-जैसा अहसास दे सकें, अंततः ऊब अकेलापन या उकताहट वहां भी पहुंच जाती है और तब पुरानी स्थितियों का आकर्षण नया हो जाता है।
प्रेषक–कांतिकुमार

–शानी (पत्थरों में बंद आवाज)

"……बेटी तो किसी दुश्मन के भी न हो भगवान! जरा बढ़ी कि मां-बाप ने ससुराल ढकेल दिया। ससुरालवाले नाराज हुए, तो मायके लुढ़का दिया। हाय! यह कपड़े की गेंद ……अपने ही आंसुओं से भीग जाये, तो फिर लुढ़कने योग्य भी नहीं रहती ……।"
प्रेषक–रमेशचंद्र शर्मा

–राजेंद्रसिंह बेदी (एक चादर मैली-सी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अंग्रेजी पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहा था कि बायीं ओर नजर पड़ी। पूरे पृष्ठ पर किसी टानिक का विज्ञापन था। इस टानिक को पीने से किस परिमाण में स्वास्थ्यवृद्धि होगी, यह बात समझाने के लिए एक बहुत बड़े और शक्तिशाली लाल घोड़े की तस्वीर छपी है। केसर फुलाकर दुलकी के लिए तैयार खड़ा है—आगे वाला एक पांव थोड़ा मोड़ रखा है, सिर ऊपर उठाये है। पूरे शरीर की हर पेशी से तेजी और शक्ति फूटी पड़ रही है। ऐसा लग रहा है, जैसे खुद को और रोक नहीं पा रहा है। तस्वीर देखते-देखते मेरे मन में होने लगा कि जैसे थोड़ी देर बाद ही इस मैगजीन के पन्ने में से एक लाल अंगारे की तरह यह घोड़ा बाहर छिटक पड़ेगा।

बंगला कहानी

लाल घोड़ा

भारतीय संस्कृति

मेरी खिड़की के बाहर बारिश की बौछारों के नीचे बिछा हुआ कलकत्ता है। रात का वक्त। बंद कांच के चौखटे पर रह-रहकर बिजली चमक रही है। ऐसा लग रहा है, जैसे बादलों की गड़गड़ाहट नहीं, बल्कि घोड़ा ही अपने खुरों की आवाज करता हुआ तीर के वेग से दौड़ता चला जा रहा है। सामने की सूनी डगर पर बिजली के खंभों की लंबी लाइन दिखाई पड़ रही है, मूसलाधार बारिश, गहरे काले आकाश और निद्रामग्न मकानों के बीच जलते हुए बल्ब असंख्य हरी आंखों की तरह लग रहे हैं।

.....और .....और मैं कुछेक पलों में ही अनेक वर्ष पहले के अपने जीवन में चला गया। तब मैं तेरह साल से अधिक का नहीं था। तब चैत्र महीने की दोपहरें हमारे बगीचे के चंपा फूलों की खुशबू से भर उठती थीं। तब भरपूर बरसात में करतोआ का नीला पानी पंकिल होकर झाग उठाता और हमारा घाट पूरा लबालब भर जाता, पानी अस्तबल तक बढ़ आता।

और उसी अस्तबल में रहता था हमारा लाल घोड़ा।

एक नहीं, दो घोड़े। एक चमकदार काला, उसके माथे पर एक सफेद तिलक था। दादी ने उसका नाम 'चांदकपाली' रखा था। और दूसरा घोड़ा था सुर्ख लाल रंग का। दौड़ते वक्त जब उसके केसर नाच उठते थे, तो बिलकुल ऐसा लगता, जैसे आग की लपटें कांप रही हैं। शायद उसको भी दादी ने ही नाम दिया था— 'लालू'!

बहुत बड़े दो घोड़े, बहुत कीमती। बाबा के खास शौक की चीज। बूढ़ा सईस रामजस कहता था—"एकदम मिलिटरी के घोड़े हैं।"

बाबा लालू पर चढ़कर ही कस्बे में जाते थे। रकाब में पांव रखकर जीन पर बैठते-न-बैठते ही उसके सारे अंगों में जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उल्का का वेग आ जाता था। टकाटक्-टका-टक्-टकाटक्। पलक मारते ही वह सामने देवदार-बकुल-वन को पार करके, डाक बंगले की बगल से मुड़कर, दूर की उस मिट्टी की लाल सड़क पर गायब हो जाता। उसके पीछे रह जाती घूर्णि की तरह उड़ती हुई धूल। फिर जब दूर के ताड़ के जंगल पर संध्या उतरती और बादलों पर खून-सी लालिमा बिखर पड़ती, तब पुनः धूल की वैसी ही आंधी उठती, लालू की टापों की आवाज साफ होती जाती। घर के सामने पहुंचते ही लालू फरमाबरदार बेटे की तरह खड़ा हो जाता, बाबा उस पर से टप से उतर आते। वह लंबी-लंबी सांसें छोड़ता, दुम हिलाता। उसके पसीने की एक अद्भुत मादक गंध से वह जगह भर जाती थी।

रोज सवेरे पढ़ाई कर लेने के बाद और स्कूल जाने के बीच का जो समय बचता, उसमें मैं चौकी लाकर एक बड़े अमरूद के पेड़ के तले बैठ जाता था। एक साथ दो काम होते। तारिणी सुतार अपनी हथौड़ी-करांत-रंदा लेकर वहां ठकठाक घसघस करके काम करता। बाबा वहां सामने न होते, तो खूब कड़ी तम्बाकू से भरी चिलम का जोर से कश लेकर सक्-सक् करके खांसता और बक-बक करते हुए मुझे समझाता—"छोटे बाबू, सुतार का काम बहुत मुश्किल होता है, हमारी जातवालों की रग-रग में यह काम बसा हुआ है, दूसरा कोई इसे इतनी आसानी से नहीं सीख सकता है। अरे बाबा, रंदा हाथ में ले लेने से ही अगर कोई मिस्त्री हो जाये, तब तो चल चुकी दुनिया। बीच-बीच में जब मैं उसके औजारों के साथ छेड़खानी करता, तो एकदम टोकता हुआ कहता—"हाथ मत लगाना—हाथ मत लगाना। उस करांत में खुरों की-सी धार है—उंगली में एक बार लगते ही खच करके उंगली बाहर निकल जायेगी।"

तारिणी मेरा उपलक्ष्य जरूर था, पर असली लक्ष्य तो रामजस ही था। तब वह सामने के अस्तबल से चांदकपाली और लालू को बाहर लाकर उनकी खूब तबीयत से मालिश-वालिश करता था। चटास-चटास करके इतने जोरों से उन पर चांटे मारता कि मैं सिहर उठता और सोचता—वैसा एक चांटा अगर मुझे लगे, तो मैं तो उसी क्षण बेहोश होकर गिर पड़ूंगा। पर देखता कि दोनों घोड़े पूरी तरह से निर्विकार रहते और आंखें मूंदकर घास चबाते रहते थे। ऐसा लगता, जैसे उन्हें खूब आराम मिल रहा है।

मगर तारिणी से न रहा जाता, तो कह उठता—"ए रामजस, यह क्या शुरू किया तूने? मालिक के घोड़ों को चांटों-ही-चांटों से मार डालेगा क्या?"

"ठक-ठक करो जाकर।" रामजस कहता—"घोड़े का मतलब तुम क्या समझोगे भला!"

"हां, हां घोड़ा तो हमने कभी देखा नहीं है ना! आज पहली बार ही तो तुमने दिखलाया है!" तारिणी व्यंग्य करता।

"अरे तुमने अब तक जो देखे हैं ना,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे घोड़े नहीं, गधे के बच्चे थे। ऐसा घोड़ा तुम कहां से देखोगे ! ये सब तो बहुत ऊंची जात के घोड़े हैं– गोली लगे तो भी इनका कुछ नहीं बिगड़ता है, फिर मालिश इनका क्या बिगाड़ लेगी – हां ऽ !"

मैं कभी-कभी रामजस से मिलिटरी के घोड़ों की कहानियां सुनता था। बैंड की ताल के साथ वे कैसे नाच उठते हैं, कैसे पांव मिलाते हुए मैदान में मार्च करते हैं, लाट साहब की गाड़ी के साथ गोरे घुड़सवार किस तरह से चलते हैं – ये बातें सुनते-सुनते मेरी कल्पना बहुत दूर उड़ चलती।

अस्तबल में घोड़े बड़े-बड़े बरतनों में भीगे हुए चने खाते–मैं खड़ा-खड़ा देखता रहता। मोटे-मोटे नथुनों से फोंस-फोंस करके सांस लेते, कभी-कभी भीमकाय जबड़े की हड्डी के पास से चबाये हुए चने बाहर निकल पड़ते। क्या पता, क्या सोच-कर अपने दांतों को हंसने की भंगिमा में बाहर निकालकर ई-ई-ई की एक अजीब आवाज करते और चंवर की तरह अपनी पूंछ को हिला-हिलाकर मक्खी उड़ाते। चबाये चने और घोड़ों की गंध से पूरा अस्त-बल भर उठता। मैं देख पाता–साफ देख पाता कि आस्ट्रेलिया के उस असीम-अनंत तृणप्रांतर से घोड़ों का झुंड़ दौड़ा चला आ रहा है, उनके पांवों से सूखे घास की घूर्णि उठ रही है, और उस झुंड में ही मैं लालू और चांदकपाली को भी देखने लगता।

ऐसे ही चल रहा था कि अचानक एक घटना हो गयी।

गांव में बंजारों का एक दल आया। गांव के किनारे एक बड़ा बड़ का पेड़ था। उन बंजारों ने वहीं अपना डेरा जमाया। ये लोग छुरी-छुरा, जड़ी-बूटियां और इसी तरह की छोटी-मोटी चीजें लेकर घर-घर फेरी लगाते। बहुत रात तक ढोल-करताल बजाकर गाना-नाचना भी करते थे, ये लोग।

उनमें से ही कोई एक व्यक्ति एक दिन छुरी-कैंची के भाव-ताव करते हुए किसी से झगड़ पड़ा। चट से एक छुरा बाहर निकाल लिया और खून कर बैठा। उसी वक्त बाबा ने उन बंजारों को बुलवाया, उस खूनी से नाक रगड़वायी और हुक्म सुनाया–सवेरा होने से पहले ही उन्हें गांव छोड़कर चले जाना होगा।

रात के अंतिम पहर में वे लोग गांव छोड़कर चले गये।

लेकिन उस दिन सवेरे लालू को जीन पहनाते समय एक उलटी ही बात हो गयी।

बिना बात ही हठात् हिनहिनाकर एक भयंकर चीत्कार की लालू ने। उसके मुंह से ऐसी वेदना-भरी पुकार मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। उसके बाद ही तड़ाक-तड़ाक करके उछलने-कूदने लगा, पागल की तरह लातें मारने लगा।

"अरे बाप रे !" चिल्लाता हुआ मिलि-टरी का अनुभव प्राप्त रामजस पीछे की ओर उछलकर आया–अगर पीछे हटने में उसे थोड़ी-सी भी देर हो गयी होती, तो लालू की लात सीधे उसके सिर पर पड़ती।

तारिणी उसी अमरूद के पेड़ के नीचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बठा, लकड़ी में छेद कर रहा था। मजाक उड़ाता हुआ कहने लगा—"क्यों कैसी रही? और करो मालिश घोड़े की। अब छटी का दूध ....."

पर तारिणी के मुंह की बात मुंह में ही रह गयी। इस बार चट-से घोड़ा उसकी ओर मुड़ा। भयंकर हंसी की भंगिमा में अपने सारे दांत बाहर निकालकर. ईं-ईं करते हुए ऐसी आवाज की कि जिसे सुनकर हमारे दिलों की धड़कनें न जाने कितनी गुना बढ़ गयी थीं—खून जहां-का-तहां जम गया था।

"अरे बाप रे!"

सब औजार फेंककर तीन छलांगों में तारिणी ने चौक पार कर लिया और बरामदे में आकर खड़ा हो गया। थर-थर कांपने लगा। हांफते-हांफते बोला—"यह घोड़ा तो पागल हो गया है—एकदम पागल हो गया है।"

पागल नहीं तो और क्या! रामजस भी उसके पास नहीं जा सका। जो घोड़ा बाबा को देखते ही खुशी से नाच उठता था, आज वह जैसे किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था। कुछ देर तक इधर-उधर छलांगें मारीं और भयानक चीत्कार से सारे मोहल्ले को कंपा दिया, दो लातों से बगीचे के बांस के घेरे को तोड़ डाला—फिर अचानक दौड़ना शुरू किया। करतोआ के पास से होता हुआ काली मंदिर को पार करके जैसे आग की एक लपट बढ़ती चली जा रही है—ऐसा लगा, जैसे अब उसके पांवों तले बंगाल नहीं है, आस्ट्रेलिया का जंगल है।

घर में हो-हुल्लड़ शुरू हो गया। दादी ने रोना शुरू कर दिया, बाबा अपनी ईजी-चेयर पर गंभीर होकर मौन बैठे रहे। घो की खोज करने लोग दौड़े—चौकीदार भागा। लेकिन लालू फिर मिल जायेगा, इ बात की किसी को भी उम्मीद नहीं थी।

आंखें पोंछता-पोंछता रामजस सा आकर खड़ा हुआ—जैसे सारा अपराध उ का हो।

"हुजूर, मुझे कुछ भी नहीं मालूम। क रात तक तो घोड़ा बिलकुल ठीक था लेकिन....."

पड़ोस के ओवरसियर बाबू ने कहा "अरे साहब, यह उन बंजारों की बदमा है। आपने उन्हें गांव से भाग जाने को क था, इसीलिए बदला लेने को रात में चु चाप आकर वे घोड़े के दाने में कुछ जह वहर मिला गये। उन लोगों के लिए कु भी करना मुश्किल नहीं है।"

सिर हिलाते हुए उदास आवाज में बाब बोले—"ऐसा ही लगता है।"

उसके बाद एक घटना घटी।

पर उसे कहने के पहले और एक बा कहना जरूरी है। मैं तब तेरह साल का था नया तैरना सीखा था, करतोआ के पा में उछल-कूद करता, पेड़ों की डाल - डा पर पके फल और बुलबुल के बच्चों को ढूंढ़ता फिरता, मैदान पार करके चंडी के दल दल से भरे ताल पर चला जाता—वहां भूत और काले भयानक सांपों का डर जरूर है पर सिंघाड़े आदि के लोभ में मैं उस ओर बढ़ जाता। बाबा इन सब बातों में कोई रुका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

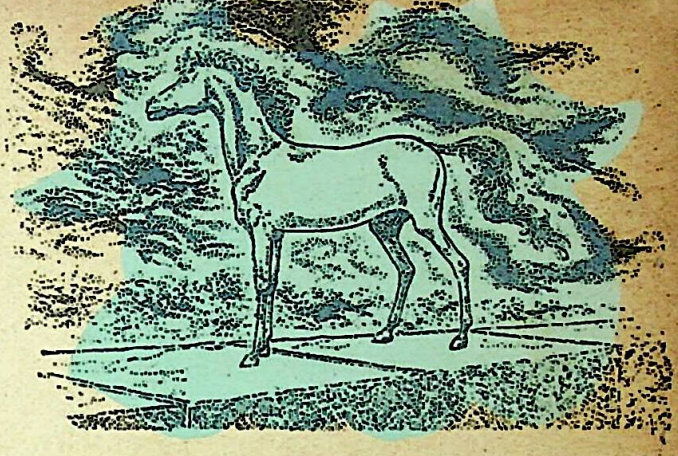

वट नहीं डालते थे । शायद उनको अपने खुद के बचपन की बातें याद हो जाती होंगी—दादी के मुंह से उनके लापरवाह जीवन की कहानी हमने सुन रखी थी।

सिर्फ एक बात के लिए बाधा देते थे। अपने दोनों बड़े-बड़े घोड़ों पर मुझे कभी भी बैठने नहीं देते । रामजस ने दो-एक बार मेरी तरफ से वकालत भी की थी, पर उसे डांटकर चुप कर दिया ।

बाबा कहते—"वह घोड़े पर चढ़ने के लायक हो जाये, तब देखा जायेगा।"

लेकिन क्या तेरह साल की उम्र, कुछ उम्र नहीं होती ? कहानी की किताबें पढ़-पढ़कर मन तो तब अफ्रीका के जंगल में शेर और गोरिल्लों का शिकार करता फिरता था, सहारा के रेगिस्तान को घोड़े पर बैठकर दौड़ते हुए पार करता था, इसी प्रकार से न जाने कहां-कहां की दौड़ लगाता रहता था मेरा मन । अतः बाबा घोड़े पर नहीं बैठने देते तो क्या, मेरा घोड़ों पर चढ़ना बंद नहीं हुआ । मैदान में जो छोटे-गंवार घोड़े इधर-उधर चरते-फिरते थे, मौका मिलते ही उनकी पीठ पर सवार हो जाता था । पेड़ की शाखा से तोड़ी एक चाबुक से उन घोड़ों को दौड़ने के लिए जबरदस्ती मजबूर करता और मन में सोचता कि अगर किसी दिन लालू या चांदकपाली की पीठ पर चढ़ पाऊं, तो मरुभूमि को पार करके नील नदी के किनारे-किनारे पिरामिडों की छाया-ही-छाया में अदृश्य हो जाऊंगा ।

जिस दिन लालू उल्का के समान अदृश्य हो गया था, उसी दिन शाम की बात है। उस समय हमारी खिड़की की ओर कोई भी नहीं था । तारिणी मिस्त्री अपने औजार वगैरह बटोरकर चला गया था । रामजस शायद लालू को ढूंढ़ने गया हुआ था, बाबा को भी कहीं बाहर कोई बुलाकर ले गया था । बाकी सभी लोग घर के भीतर थे । मैं बाहर आकर खड़ा हुआ। देखा, अस्तबल के सामने लालू खड़ा है। हां लालू ही। कब वापस आ गया, किसी को नहीं मालूम । मिट्टी की मूरत की तरह एकदम स्थिर खड़ा है । उसका विशाल लाल शरीर अपूर्व लग रहा था—जैसे अंगारों से बना घोड़ा है।

पता नहीं किस आकर्षण से मैं उसकी ओर बढ़ चला । सवेरे ही मैंने उसका भयंकर रूप देखा था, यह भी देखा था कि उसके खुरों के नीचे पड़नेवाली मिट्टी किस तरह आसमान को ढंक रही थी—उसकी डरावनी हिनहिनाहट भी सुनी थी । फिर भी उसके पास जाने में मुझे डर नहीं लगा । मैं उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास गया, उसकी लंबी गरदन पर हाथ सहलाया, उसके पेट के स्पर्श का अनुभव किया, उसके बालों से चूनेवाले पसीने की खुशबू मुझे अभिभूत करने लगी।

जीन पीठ पर चढ़ी थी, उसी हालत में सवेरे वह भागा था। अनजाने ही मैं ऊपर हुआ और थोड़ी-सी कोशिश के बाद लालू की पीठ पर चढ़ गया।

उसके बाद लालू के पेट में पांव की एक ठोकर लगाकर बोला—" ए चल, चल !"

फिर वही अद्‌भुत आवाज। ऐसा लगा, जैसे एक पागल मेरे कान के पास तीखे गले से 'ही-ही' करके जोर से हंस दिया हो। और लालू दौड़ पड़ा। लाल आग का गोला तीर की तरह आगे बढ़ने लगा—मैदान से नहीं, आकाश के पथ पर।

उसी क्षण मैं समझ पाया—कितनी बड़ी गलती कर बैठा हूं, यह भूल प्राण ही ले लेगी। यह तो मैदान में चरनेवाला छोटा टट्टू नहीं है। यह तो हवा से बातें करनेवाला घोड़ा है, जिसके पांवों के नीचे असीम भी सीमित है। तेज हवा मेरे कानों से टकराने लगी, ऐसा लगने लगा कि अब मैं किसी भी वक्त कागज के एक टुकड़े के समान उड़ जाऊंगा। और इस प्रकार उड़ जाने से मेरी क्या हालत हो जायेगी, यह समझने में भी मुझे देर नहीं लगी।

पीछे से जैसे बहुत-से लोगों की चीत्कार का स्वर कान में पड़ रहा है—अरे, बच्चे को लेकर लालू उड़ रहा है, लालू, लालू.....

अर्थात् लोगों ने देख लिया है, रामजस की आवाज भी मुझे सुनाई पड़ी। लेकिन पानी के बुद्‌बुदों की तरह ही वे आवाजें भी कुछ क्षणों में निश्चिह्न हो गयीं—घोड़े के पांवों की आवाज में वे आवाजें न जाने कहां खो गयीं — तेज हवा हू-हू करती हुई मुझसे टकरा रही थी।

कहां हूं, कितनी दूर चला आया मैं, नहीं जानता — जानने का कोई उपाय भी नहीं है, मेरी आंखों की दृष्टि अंधी हो गयी। काले आकाशों को पार करते हुए एक तारे से दूसरे तारे की ओर बढ़ता चला जा रहा हूं—वक्त नहीं, सीमा नहीं, कोई रुकावट नहीं। फिर भी डर, मृत्यु का डर, बीच-बीच में मेरे खोखले हृत्पिंड में बर्फ की सिल्ली का स्पर्श करा दे रहा है, इतनी तेज हवा के बावजूद भी बदन से पसीना चू रहा है।

लालू दौड़ रहा है। तारों पर दौड़ रहा है। एक बार आंखें खोलकर देखने की कोशिश की, न जाने कैसी परछाइयां मेरे चारों ओर लिपट-लिपटकर जाने लगीं। निश्चित मृत्यु को रोकने के लिए दोनों हाथों से गरदन पकड़ रखी थी और केसर में मुंह छिपा लिया था, साथ ही यह अनुभव कर रहा था कि हवा हर पल डाकू के समान मुझे घोड़े की पीठ पर से छीन लेना चाहती है।

इसके बाद न जाने किस चीज की ठोकर खाकर घोड़ा अचानक शून्य की ओर लपक पड़ा, उसके गले पर से मेरा हाथ अलग छिटक पड़ा, फिर...

जब आंखें खोलीं, तो देखा कि मेरे चारों ओर गाढ़ा अंधेरा-ही-अंधेरा है। मैं जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी कुएं के भीतर डूब-तिर रहा हूं। ओह, कितना दर्द हो रहा है मेरे बायें पांव में, मेरे सीने के पंजर में। ऐसी यंत्रणा कि जिससे पूरा शरीर तिल-तिलकर पिस जाता है।

मैंने चीखने की कोशिश की, पर गले से दबी हुई एक गूंगी-सी आवाज ही निकल पायी। पेट के नीचे एक हाथ दब गया है, उसे निकालने की बहुत कोशिश की, पर निकाल नहीं पाया। लेकिन इस शारीरिक चेष्टा और अनुभूति के फलस्वरूप मेरा जड़ हुआ स्तब्ध मस्तिष्क इतनी देर में कुछ-कुछ सक्रिय होने लगा। तब देखा–अंधेरा नहीं रहा–मिट्टी-सी धुंधली ज्योत्स्ना बिखर गयी है। मेरे सामने मिट्टी के असंख्य टीले हैं, थोड़े टूटे बांस भी पड़े हैं। और मेरी बायीं ओर करीब तीन हाथ की दूरी पर एक बहुत बड़ी परछाईं निश्चल होकर खड़ी है। इस विवर्ण ज्योत्स्ना में भी उसका उज्वल लाल रंग–सिंह के समान उसके केसर, उसकी पीठ के ऊपर चकचक करती बादामी रंग की जीन। लालू!

लालू खड़ा है। इस वक्त वह पहले-सा लाल अंगारा नहीं है। ऐसा लग रहा है, जैसे जली हुई मिट्टी से उसे बनाया गया है। हिल-डुल नहीं रहा है–हिनहिना भी नहीं रहा–यहां तक कि पूछ भी स्थिर है। एक अचल पत्थर की मूर्ति।

पूरे बदन में फिर से वही असह्य यंत्रणा होने लगी–चक्की के पाटों के बीच पिस जानेवाली अनुभूति। चीखने की प्राणपण कोशिश करते-करते मैं थम गया। सामने वह क्या जल रहा है? वे किसकी आंखें हैं?

एक नहीं, दो नहीं, आठ-दस, या शायद इससे भी अधिक। आधे इंच, एक इंच की दूरी पर हरी आग के जोड़े हैं–कितनी निष्ठुरता से जल रहे हैं ये जोड़े! मैं समझ पाया–ये आंखें मुझे ही घूर रही हैं।

लालू के भागते समय एक डर मेरे अचेतन पर छा गया था, अभी एक और डर ने मेरे सर्वांग में आतंक का संचार किया। मैं समझ गया कि वे गीदड़ हैं। मुझे याद आयी, बाबा के मुंह से सुनी उस आदमी की बात। बाजार से लौटते-लौटते ही जिसे हैजा हो गया था, रात में रास्ते पर जो एक बड़ के पेड़ के नीचे गिर पड़ा था, और जिसे जिंदा हालत में ही गीदड़ चिथड़े उघाड़-उघाड़कर खा गये थे।

वे मुझे भी खाने आ रहे हैं। हरी आंखों के कई जोड़ों के भीतर तीखे दांत मुझे साफ दिखाई पड़ रहे हैं।

बिना आंख झपकाये मैंने देखा एक जोड़ी हरी आंखें धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ती चली आ रही हैं। चीखना चाहा, पर आवाज नहीं निकल पायी। मेरी स्थिर आंखों के तारों के ऊपर हिंस्र, हरी रोशनी के दो बटन जमे रहे–धीरे-धीरे मेरी दृष्टि को वे आंखें और उनके वे दांत डसने लगे–उसी हरी आग में मेरी चेतना फिर से डुबकी लगाने लगी।

तब–उसी समय, फिर से वह आवाज हुई। उसी पागल की एक तीक्ष्ण हंसी के समान–'ई-हि-हि!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े में स्पंदन हुआ। तीन छलांगें बिजली की गति से मारीं। हरी आंखों का मेरा सम्मोहन दूर हो गया–देखा कि डर के मारे वे बहुत दूर चले गये हैं, लालू के पांवों से खिंची रेखाओं के पास खड़े रहने तक की भी हिम्मत उनमें नहीं है। उसके बाद सारी रात।

सामने के आकाश पर बादल-पर-बादल चढ़ते गये, एक के बाद एक तारे डूबते रहे। पीड़ा के मारे बीच-बीच में मैं चीत्कार करने लगा, प्यास के मारे गला सूखा जा रहा था। इसलिए कुछेक बार भीगी मिट्टी को ही मुंह के भीतर दांतों से काटा, कितनी ही बार रुक-रुककर मृत्यु का-सा अवसाद मुझे कुछ देर के लिए बेहोश करने लगा। और कभी-कभी वही 'ई-हि-हि' करके खून जमा देने-वाली भयानक आवाज। लालू एक बार आगे की ओर लपक रहा है, तो एक बार पीछे की ओर, एक बार दायीं ओर और एक बार बायीं ओर। हरी आंखें जैसे मेरे चारों ओर घिर गयी हैं और आंखमिचौनी खेल रही हैं, और लालू मुझे बचा रहा है–उन राशि-राशि तीखे दांतों की अंध आदिम हिंसा से मुझे बचा रहा है।

हठात् लालू के खुरों से टकराकर एक चीज लुढ़कते-लुढ़कते मेरी ओर चली आयी। मेरे कपाल पर वह ठक् करके लगी। मुझे दिखाई पड़ा, वह सफेद रंग का एक नरमुंड है। भूतों की कहानियोंवाली किताबों में जैसी तस्वीरें रहती हैं, बिलकुल वैसा ही नर-मुंड। अपने कपाल पर उसका ठंडा कठोर स्पर्श होते ही मैंने चीखने की आखिरी बा कोशिश की और बेहोश हो गया।

एक और भयानक आवाज से मेरी आं खुलीं, दूसरी बार। चारों ओर सवेरे ध धूप झिलमिल कर रही है। मैं एक कब्र पड़ा हूं। बहुत दूरी पर बाबा दिखाई प रहे हैं, रामजस को भी देख पा रहा हूं। औ भी बहुत लोग हैं। बाबा के हाथ में ट बंदूक से धुआं निकल रहा है, और मेरे पा ही अपने सुर्ख लाल बदन को खून से औ भी लाल बनाकर मिट्टी में लोट रहा है ला बहुत बड़ा चिकना पेट आखिरी सांसों उतार-चढ़ाव से लहर के समान गिर औ उठ रहा है।

मुझे तीन महीने तक पड़े रहना प था। दो हड्डियां भी टूट गयी थीं। बांयें, घु का जोड़ खुल गया था। फिर भी रोते-रो बाबा से पूछा था –"क्यों मारा, लालू आपने क्यों मारा?"

बाबा रुंधे गले से बोले थे –"हमा ओर बढ़ता चला आ रहा था। हम लोगों सोचा था कि पागल होकर उसने तुझे मा डाला है।"

बाहर बरसात में भीगा कलकत्ता है हर घर के दरवाजे बंद हैं, ये सब मकान, जै बहुत सारी कब्रें हों। कांच के फ्रेम से रा के पंक्तिबद्ध लैंप निशाचर की हरी आं की तरह जल रहे हैं। मेरे सामने रखी मे पर वही अंग्रेजी पत्रिका है–एक लाल घो आग की लपट के समान आकाश की ओ दौड़ रहा है। –रूपांतर : शेफाली चौधर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुखबीर

वह शो-केस के सामने खड़ा हो गया। जब भी वह उस दुकान के सामने से गुजरता, उसकी दृष्टि दुकान के शो-केस पर जरूर जाती। वह फोटो-फ्रेम बनाने की दुकान थी। शहर का बहुत बढ़िया इलाका था वह। और उस इलाके में वह खासी बढ़िया दुकान थी। विशेष रूप-सज्जा और ऊंची कीमतोंवाली। उस दुकान में फ्रेम बनाने के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के चित्र भी बिकते थे। धार्मिक चित्र, दृश्यचित्र, आधुनिक शैली के चित्र और अन्य कई प्रकार के चित्र।

दुकान के पास से गुजरते हुए शो-केस में लगे, एक चित्र ने उसकी दृष्टि को अपनी ओर खींचा, तो उसके कदम रुक गये। वह शो-केस के सामने खड़ा हो गया। शो-केस में और भी कई चित्र थे; पर एक चित्र उन सबसे भिन्न था। उसका आकार भी विचित्र सा था—बहुत कम चौड़ा और बहुत ज्यादा लंबा। एक स्त्री का चित्र था वह। किसी जंगली स्त्री का अर्धनग्न चित्र। ब्रश के कुछ एक स्पर्शों से ही वह चित्र साकार हो उठा था। पर लगता था, जैसे उसका कुछ भाग अभी कैन्वास में छिपा हुआ है। गहरे सलेटी रंग से बना हुआ वह एक प्रभाववादी चित्र था।

वह देखता रहा और उसे लगा कि सलेटी रंग भी कितना आकर्षक रंग है। कितनी कोमलता है इस रंग में और कितनी लय! क्या यह कोमलता और लय स्त्री के शरीर के कारण है? चित्र में स्त्री की नंगी पीठ दिखाई दे रही थी और दायें वक्ष की हल्की सी गोलाई। और चेहरा, जैसे उसने चौंककर पीछे मुड़कर देखा हो। सलेटी रंग के चेहरे में उसके लाल सुर्ख होंठ थे और जूड़े में टंगा एक साल सुर्ख जंगली फूल। वह अधखिला फूल था और लगता था, जैसे जूड़े में अभी-अभी पूरा खिल उठेगा।

चित्र ने उसकी दृष्टि को जकड़ लिया था। चित्र की स्त्री अपनी लंबी आंखों से उसे बड़े आश्चर्य से देख रही थी। वे आंखें काले रंग में, ब्रश के दो स्पर्श मात्र थीं। हालांकि वे वास्तविक आंखें नहीं थीं; फिर भी कितनी सजीव लगती थीं! "अगर यह चित्र बहुत महंगा न हुआ, तो मैं इसे आज खरीद ही लूंगा।" उसने सोचा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका ध्यान अपनी जेब के तीस रुपयों की ओर गया ।

"अब दोपहर के बाद दफ्तर जाने के बजाय सीधा घर जाऊंगा ।" उसने मन में कहा –"बस, एक बार कड़वा घूंट पीकर खरीद ही लूंगा । जिंदगी की और जरूरतें तो कभी खत्म होंगी ही नहीं ।"

उसने दुकान के अंदर जाने के बारे में सोचा । पर उसके कदम वहीं जमे रहे । एक बार उसने मन में कहा, आज नहीं, कल सही । पर चित्र को देखते हुए उसे लगा कि पता नहीं कल कब आयेगा । आज का दिन भी पता नहीं कब बीतेगा । और अगर कल तक़ इसे किसी ने खरीद लिया तो ? तभी उसके कदम हिले और दूसरे क्षण वह दुकान में दाखिल हो गया ।

काउंटर पर एक पारसी स्त्री खड़ी थी । वह उसकी ओर देखकर मुस्करायी । फिर कुछ आगे को झुकते हुए उसने बड़े अंदाज से सिर हिलाया, जैसे कहा–" आइये ।" और उसकी आंखों ने जैसे पूछा–"कहिये ?"

वह स्त्री दुकान की मालकिन लगती थी । अधेड़ उम्र थी उसकी, सुंदर चेहरा, गहरा मेक-अप और बढ़िया लिबास । उसने एक नजर में ही यह सब देख लिया । फिर काउंटर के पास जाकर कहा–"वह जो शो-केस में पेंटिंग है–क्या दाम है उसका ?"

स्त्री ने बड़ी नर्म आवाज में पूछा–"कौन-सी पेंटिंग ?"

"वह जो भील औरत की है ?"

स्त्री ने एक क्षण के लिए उसकी ओर से दृष्टि हटाकर अपनी कल्पना में शो-केस को देखा और उसमें टंगे उस चित्र को देखा । फिर कहा–"एक सौ पच्चीस रुपये!"

"कितने ?" उसने ऐसे पूछा, जैसे स्पष्ट रूप से सुना न हो ।

"एक सौ और पच्चीस रुपये ।" स्त्री ने और अधिक स्पष्टता से कहा ।

उसे सूझा नहीं कि आगे क्या जवाब दे ।

तभी स्त्री ने कहा–"इस आर्टिस्ट की और भी पेंटिंग्स हैं हमारे पास । आइये दिखाऊं ।" और वह काउंटर के पीछे से हटकर दुकान के एक कोने की ओर बढ़ी ।

वह उसके पीछे हो लिया ।

दुकान के उस कोने में दीवार के साथ टेक लगाकर खड़े किये गये, उस कलाकार के कई चित्र थे । कुछ चित्र एक दूसरे के पीछे छिपे हुए थे । वे विभिन्न आकारों के चित्र थे । कुछ वर्गाकार, कुछ आयताकार । कुछ जरूरत से ज्यादा लंबे, कुछ जरूरत से ज्यादा चौड़े । कुछ छोटे, कुछ बड़े ।

"छोटी पेंटिंग्स सवा-सवा सौ की हैं, बड़ी अढ़ाई-अढ़ाई सौ की ।" स्त्री ने कहा ।

उसे बेचैनी-सी होने लगी ।

तभी उसने एक चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा–"यह पेंटिंग किस साइज में आती है ?" वह चित्र लंबाई में उसके कद से भी ऊंचा था और चौड़ाई में मुश्किल से एक फुट । उसमें जामुनी रंग से बनी हुई एक स्त्री खड़ी थी । उसके शरीर का आधा भाग चित्र में था और आधा चित्र के बाहर । ऐसे लग रहा था, जैसे वह एक तरफ से आयी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो और चित्र में से होती हुई दूसरी तरफ जा रही हो। एक विचित्र-सी लोच थी उसके पूरे पर अधूरे शरीर में। कुछ सीधी रेखाएं थी, कुछ कोण, कुछ गोलाइयां और कुछ खम। जैसे वह स्त्री का शरीर नहीं था, रेखागणित की कोई बड़ी आकर्षक आकृति थी। और इसमें स्त्री की नग्नता दिखाई देने पर भी एक तरह से छिपी हुई थी।

"यह पेंटिंग ?" स्त्री ने कुछ सोचते हुए कहा—"वैसे यह बड़े साइज में ही आती है। लेकिन आप लेना चाहें, तो इसके पचास रुपये कम हो जायेंगे।"

"फ्रेम के साथ या फ्रेम के बिना ?" उसने पूछ लिया।

"फ्रेम के साथ।" स्त्री ने कहा —"इन पेंटिंग्स के साथ हम फ्रेम अपनी तरफ से मुफ्त देते हैं।"

वह कुछ देर और उस चित्र को देखता रहा। फिर दूसरे चित्रों को देखने लगा।

वे सब स्त्रियों के चित्र थे। जंगली और मजदूर स्त्रियों के। वे उन स्त्रियों के यथार्थ चित्र नहीं थे। बस, एक प्रभाव पैदा किया गया था, जिससे स्त्री के शरीर की सुंदरता उजागर हो उठी थी। हर चित्र में अतीव सादगी से स्त्री के शरीर को कुछ सीधी-टेढ़ी रेखाओं और आधी-पूरी गोलाइयों में ढाल दिया गया था। सभी चित्र अर्धनग्न थे, जैसी कि मजदूरिनें और जंगली स्त्रियां प्रायः होती हैं। और वह अर्धनग्नता इतनी स्वाभाविक थी, इतनी सांकेतिक थी कि उन चित्रों को कोई भी परिवार बिना किसी संकोच के अपने घर में टांग सकता था। प्रत्येक चित्र में एक रंग प्रधान था। वे भूरी स्त्रियां थीं, लाल सुर्ख स्त्रियां थीं, पीली और जामुनी स्त्रियां थीं, स्याह काली स्त्रियां, और किरमिजी स्त्रियां थीं। किसी में स्त्री बैठी हुई, किसी में झुकी हुई, किसी में मुंह मोड़े खड़ी हुई। किसी में नहाती हुई, किसी में प्रतीक्षा करती हुई, किसी में बच्चे को दूध पिलाती हुई।

वह मंत्रमुग्ध-सा एक-एक कर चित्रों को देखता रहा। एक बार देखकर फिर से देखने लगा। उसे तृप्ति नहीं हो रही थी। हर रंग का ऐसा आकर्षण था और रेखाओं में इतनी लोच-भरी सादगी थी और स्त्री के अंगों की ऐसी लय थी कि चित्रों पर से दृष्टि ही नहीं उठती थी। बस कुछ ही रेखाओं में प्रत्येक चित्र पूर्णरूप से साकार हो उठा था। पहली नजर में वह अधूरा-सा लगता था। फिर हौले-हौले इस पूर्णता से उभरता हुआ प्रतीत होता था कि दर्शक देखता रह जाता था।

वह देर तक उनमें खोया रहा। फिर अचानक चौंका। उसने दुकान की मालकिन की ओर देखा। उस समय वह काउंटर पर खड़ी दो-तीन ग्राहकों से बात कर रही थी। यह अच्छा मौका है, उसने सोचा, और उसने स्वयं को जैसे चित्रों से तोड़कर अलग किया। फिर हौले-हौले काउंटर की ओर बढ़ा और वहां खड़ी स्त्री की नजर बचाकर दुकान से बाहर निकल गया।

बाहर आकर उसे अजीब-सा लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-लिखी नारी

[व्हिस्लर का चित्र]

जैसे वह किसी नयी जगह पर आ गया हो। उसने इधर-उधर लोगों को देखा। वे बहुत फीके-से लगे। बहुत बेरंग-से। उनमें स्त्रियां भी थीं। नये फैशन के लिबास पहने अध-नंगी स्त्रियां। वे सब उसे बड़ी बनावटी लगीं; जैसे दुकानों के शो-केसों की प्लास्टर की स्त्रियां हों। उसे और भी अजीब लगा कि ये स्त्रियां उसे पहले कभी ऐसी नहीं लगी थीं—ऐसी दयनीय और ऐसी फीकी। वह वहां से दूर चला जाना चाहता था। शहर के किसी एकांत इलाके में, जहां वह चित्रों की स्त्रियों को देख सके।

आखिरकार वह लोगों की भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ, वहां से एक तरफ को चल दिया।

कुछ देर तक वह समुद्र के किनारे बैठा रहा। चित्रों की स्त्रियां समुद्र की लहरों में डूबती रहीं, तैरती रहीं। फिर वह एक होटल में चला गया। होटल के कोने में बैठकर काफी पीता रहा और सामने की दीवार को देखता रहा, जिस पर एक बहुत बड़ा एब्स्ट्रैक्ट किस्म का चित्र बना हुआ था। उस दीवार पर उसे चित्रोंवाली स्त्रियां स्पष्ट रूप से साकार होती हुई प्रतीत हुईं।

आखिर वह उस होटल से उठकर एक पार्क में जाकर बैठ गया। वहां बेंचों पर बूढ़े पारसी स्त्री-पुरुष बैठे हुए थे। वहां बैठे हुए वे उसे एकदम अस्तित्वहीन-से लगे। यहां मौजूद स्त्रियों की अपेक्षा चित्रोंवाली स्त्रियां कितनी सजीव थीं!

आखिर रात होने पर वह घर पहुंचा। उसे अपना छोटा-सा कमरा बड़ा उदास लगा। उसमें एक विचित्र-सा परायापन महसूस हुआ। कमरे की मैली दीवारें बेहद सूनी लगीं। जैसे वे नंगी थीं और उनकी नग्नता बहुत सपाट थी। उसने बूट उतारे, कपड़े बदले और चारपाई पर लेट गया। सामने की दीवार पर उसने दुकान के उस चित्र को देखा, जो पीले रंग से बना हुआ था। चौड़ा ज्यादा था, लंबा कम। उसमें एक स्त्री सो रही थी। देखनेवाले की ओर उसकी पीठ थी। उसके चेहरे के पास एक खिड़की थी और उस खिड़की के बाहर एक पीले रंग का फूल खिला हुआ था। रात की चांदनी में वह फूल किसी परी-लोक का फूल प्रतीत होता था। ..... वह देर तक उस चित्र को देखता रहा। फिर उसने दूसरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीवारों पर अन्य चित्रों को देखा। अब कमरे में उदासी नहीं रही थी। अब उसकी दीवारें नंगी नहीं थीं और न ही सपाट। फिर उसे पता ही न लगा, कब नींद आ गयी। और उसने नींद में भी रंगों की विचित्र-सी आकृतियों को उड़ते हुए देखा।

सुबह जब वह जागा, तो खिड़की में से धूप कमरे में आ रही थी। कमरे में दिन का प्रकाश था और दीवारें ज्यादा मैली और उदास लग रही थीं। वह कुछ देर लेटा हुआ छत की ओर देखता रहा। उसे फिर चित्रों का खयाल आया। वे चित्र उसे जैसे अपने पास बुलाने लगे। उसके दिल में आया कि उसी समय दुकान में पहुंच जाये और फिर से एक-एक करके उन चित्रों को देखे। पर आज फिर कैसे जाऊंगा? उसने सोचा। दुकान की मालकिन क्या सोचेगी? क्या फिर देखने देगी? कल तो मैं उसकी आंख बचाकर आ गया था। आज फिर जाऊंगा तो क्या सोचेगी? .....

मगर चित्रों को देखने की लालसा उसके मन में ऐसी भड़की कि वह लेटा न रह सका। उठकर तैयार होने लगा। एक बार तो उन्हें और देखूंगा ही, उसने मन में कहा, चाहे दुकान की मालकिन नाराज ही क्यों न हो जाये।

वह घर से चल पड़ा।

दुकान में दाखिल होने पर उसे लगा कि स्त्री कल की अपेक्षा आज अधिक खुलकर और नरमी से मुस्कराती है। उसे स्त्री का चेहरा कल की अपेक्षा अधिक बनावटी भी लगा। गहरे मेकअप के नीचे उसके चेहरे की स्वाभाविकता खोयी हुई थी। और वह उसका असली चेहरा प्रतीत नहीं होता था।

स्त्री की मुस्कराहट का जवाब उसने धीमे-से मुस्कराकर दिया और सोचा, बस कुछ देर बाद उसकी यह मुस्कराहट गायब हो जायेगी। उसका चेहरा झुंझलाहट और गुस्से से विकृत बन जायेगा। खैर, जो भी हो। वह कोने में रखे चित्रों की ओर बढ़ा।

एक चित्र पर उसकी दृष्टि पड़ी, तो उसे लगा, चित्र की स्त्री बेहद उदास आंखों से उसकी ओर देख रही है। वह जैसे बिछुड़ने की उदासी है। वह स्त्री दरवाजे के साथ लगकर दहलीज में खड़ी है और उदास आंखों से दूर कहीं देख रही है। जैसे कोई अभी-अभी उससे बिछुड़कर गया हो। वह पूरा चित्र शोख किरमिजी रंग से बनाया हुआ था। स्त्री की आंखें गहरे काले रंग से बनी हुई थीं। वे आंखें टेढ़ी - लंबी रेखाओं के नीचे दो बिंदु मात्र लग रही थीं। बहुत ज्यादा गहरी और उदास प्रतीत हो रही थीं।

सहसा उसे अपने निकट खड़ी दुकान की मालकिन का आभास हुआ। उसे बेचैनी होने लगी। अब इसे क्या कहूं? उसने सोचा चित्रों को ऐसे कब तक देखता रहूंगा? वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री यद्यपि चुप थी; पर उसे लगा, उसकी वह चुप्पी जैसे पूछ रही थी, अब कोई पसंद भी करोगे या नहीं ? बोलो, कौन-कौन से चित्र चाहिये ?

वह स्त्री की ओर मुड़ा। स्त्री ने आशा-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और हल्का-सा मुस्करायी। उसे घबराहट हुई। तभी उसके मुख से निकला –"इनका आर्टिस्ट इसी शहर में रहता है ?"

"नहीं", स्त्री ने कहा–"वह एक जगह नहीं रहता। उसे घूमने का शौक है। हिन्दुस्तान-भर में घूमता रहता है।"

"इस शहर में कब आयेगा ?"

"कहा नहीं जा सकता। अभी पिछले महीने यहां था। ये पेंटिंग्स उसने यहीं पर बनायी थीं। महीना-भर यहां रहा था।"

"उससे मिलने को दिल चाहता है।"

स्त्री चुप रही। अब वह उसे ऐसे देख रही थी, जैसे सोच रही हो कि वह आर्टिस्ट से मिलने आया है या चित्र खरीदने।

वह भी कुछ देर एक चित्र को देखता हुआ चुप रहा। फिर उसने चित्र की ओर देखते हुए ही कहा –" पिकासो के क्यूबिज्म (घनत्ववाद) का बहुत असर है इस आर्टिस्ट पर। वैसे उसने उस क्यूबिज्म को डिस्टार्ट करके (तोड़कर) बहुत ज्यादा सिंप्लिफाइ (सरल) कर दिया है। पिकासो के साथ इन पेंटिंग्स में मोदिग्लियानी का भी असर है। यह देखिये, इन सभी स्त्रियों की बेहद लंबी गरदनें। वैसे रंग सभी मातीस के हैं। मासूम रंग और बहुत शोख रंग। पर यह न्यूड्स (अनावृत चित्र) मातीस की न्यूड्स से बहुत भिन्न हैं। मातीस के न्यूड्स में शरीरों की अपेक्षा रंगों की कंपोजिशन (रचना) ज्यादा महत्वपूर्ण है और उनसे पैदा होनेवाले रिद्म (लय) पहली दृष्टि से देखने पर उसके न्यूड्स बड़े घिनौने लगते हैं। फिर जब देखनेवाले की नजर को शरीर के बजाय रंग पकड़ लेते हैं, तो उन न्यूड्स में एक अलौकिक सुंदरता जाग उठती है। देखा जाये, तो माडर्न आर्ट को इस आर्टिस्ट ने किसी हद तक कमर्शियलाइज किया हुआ है। मेरा खयाल है काफी बिकती होंगी ये पेंटिंग्स।"

"हां, हां, बहुत मांग है इनकी," स्त्री ने उसकी बात काटकर कहा।

वह अब एक और चित्र देख रहा था। उसे देखते हुए ही बोला – " बहुत-से असर लेने पर भी इस आर्टिस्ट में अपना एक अलग रंग है। उसकी पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) झलकती है इनमें।"

"हां, बहुत अच्छी पर्सनैलिटी है उसकी। आप कभी उससे मिलेंगे, तो खुश होंगे।"

उसने एक बार स्त्री की ओर नजर उठायी और हल्का-सा मुस्कराया। स्त्री भी हल्का-सा मुस्करायी। लिपस्टिक से रंगे उसके होंठों के गुलाबी रंग में उसे दरारें पड़ी हुई महसूस हुईं। और लगा, उसके उस गुलाबी रंग में वह मासूमियत नहीं थी, जो सामने के भूरे रंग के चित्र में थी, जिसमें एक स्त्री घुटने पर ठुड्ढी टिकाये बैठी हुई थी और उसे ध्यान नहीं था कि उसके कंधे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर से साड़ी का आंचल फिसलता जा रहा है। उसके भूरे रंग के कंधे में ऐसी मांसलता थी और ऐसी कोमलता कि लगता था, उस पर से आंचल का फिसलना बहुत ही स्वाभाविक बात है। आंचल के फिसलने से उसके वक्ष की अस्पष्ट-सी गोलाइयां दृष्टिगोचर होने लगी थीं। पर वह स्त्री कुछ इस तरह विचारों में खोयी हुई थी कि वे गोलाइयां भी खोयी प्रतीत हो रही थीं। और देखनेवाले का ध्यान सामूहिक रूप से उस भूरे रंग में खो जाता था, जो उस स्त्री का शरीर था और जो उस स्त्री का शरीर नहीं भी था। वह मात्र एक गहरा, शोख और मासूम भूरा रंग था, जिसमें आंखों को मंत्रमुग्ध कर देने की शक्ति थी।

"कई रंग सोये हुए होते हैं, जैसे बच्चा सोता है," वह कह रहा था—"और कई रंग भड़कते हुए प्रतीत होते हैं, जैसे आग भड़कती है। इस आर्टिस्ट में एक ही समय, रंग सोये हुए भी लगते हैं और भड़कते हुए भी। यह देखिये, इस चित्र का किरमिजी रंग ....." वह एक चौरस चित्र को देख रहा था, जिसमें एक स्त्री का तिकोना चेहरा था और उसके गले में दूधिया-सफेद सीपियों की माला थी।

स्त्री आश्चर्यचकित दृष्टि से उसे देखती रही। उसे सूझ नहीं रहा था कि क्या कहे। तभी उसने दुकान में दाखिल हुई दो बूढ़ी स्त्रियों को देखा, तो काउंटर की ओर चल पड़ी। उनमें से एक स्त्री ने काफी पूछताछ और देखने-परखने के बाद दो दृश्यचित्रों के लिए फ्रेमों का आर्डर दिया, फिर चली गयीं।

उनके जाने पर वह काउंटर पर ही खड़ी थी। वहीं से उसे देखती रही। वह अभी तक उसी चौरस चित्र को देखे जा रहा था।

उसने अपनी ओर स्त्री की दृष्टि महसूस की, तो चौंका। फिर संभला। स्त्री उसकी ओर देख रही थी। उसकी आंखों में संशय था और आशा भी।

वह स्त्री के सामने जाकर खड़ा हो गया। फिर उसने कहा—"चार पेंटिंग्स मुझे खास तौर पर पसंद आयी हैं।

"अच्छा," स्त्री ने होंठों पर मुस्कराहट लाकर कहा। फिर पूछा—"छोटी या बड़ी?"

"एक छोटी और तीन बड़ी।" उसने कहा। फिर हल्का-सा मुस्कराया।

स्त्री भी मुस्करायी।

तभी उसे लगा कि उस मुस्कराहट ने उसे जैसे पकड़ लिया है और अब दुकान में से बाहर निकलने का उसके लिए कोई रास्ता नहीं है। उसे घबराहट हुई। पर वह संभला और उसने कहा—"ये चारों पेंटिंग्स आप कल तक के लिए रख छोड़ेंगी?"

"हां, हां, क्यों नहीं, बताइये, कौन-कौन-सी चुनी हैं, ताकि मैं अलग रखवा दूं।"

वे दोनों उन चित्रों के पास गये। उसने चार चित्रों की ओर संकेत किया और फिर उन चित्रों को एकटक देखने लगा।

"ये चारों आपके लिए रिजर्व रहेंगी," स्त्री ने कहा—"जब भी चाहें, ले जायें।"

"धन्यवाद!" उसने कहा।

"कोई बात नहीं," स्त्री ने कहा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने भी उसे धन्यवाद दिया। उसके चेहरे पर एक छोटे और तीन बड़े चित्रों के बिक जाने की खुशी थी।

आखिर वह दुकान से बाहर निकला। बाहर जाने पर उसे फिर कल-जैसा आभास हुआ। लोग बहुत बेरंग और फीके लगे। नये फैशन के लिबास पहने अधनंगी स्त्रियां बहुत बनावटी लगीं। और उसका मन हुआ कि वहां से कहीं दूर चला जाये। शहर के किसी एकांत इलाके में, जहां वह उन चित्रों को अपनी कल्पना में देख सके। वह भीड़ में से एक तरफ निकल गया।

अंत में जब वह होटल में बैठा काफी पी रहा था और सामने देखता हुआ, एक-एक करके उन चित्रों को अपनी आंखों के सामने लाने का प्रयत्न कर रहा था, तो रह-रह-कर एक खयाल उसके दिमाग में उभर रहा था। अब फिर कैसे मैं उन चित्रों को देख पाऊंगा ?-अब फिर किस बहाने मैं दुकान में जा सकूंगा ? उसे वे चित्र हमेशा के लिए आंखों से ओझल होते हुए लगे।

सोचते-सोचते उसकी आंखों में उदासी भर गयी। फिर वह उदासी गहरी होने लगी। ऐसी उदासी उसने तब महसूस की थी, जब अढ़ाई साल पहले वह अपने घर-वालों से बिछुड़कर इस शहर में आया था और उसने सोचा था, पता नहीं फिर कब मैं अपने घरवालों से मिल पाऊंगा ? तब उसे अपने माता-पिता और भाई-बहन हमेशा के लिए आंखों से ओझल हो गये प्रतीत हुए थे।

एक कोई और

जिंदगी के वे दिन
जो शुरू किये थे मैंने
सुखद प्रभाती के जागरण गीत से
जीना जिन्हें चाहा था
अपने ही भावों में—
और नहीं सोचा था
जिनके ढलाव की बात कभी भूले से।

लगते अब ऐसे कुछ
जैसे बिना पूर्णतर प्रसरित हुए ही
ढल चुके हैं किसी शाम की सायूसी में
जिसका संचालक निर्माता कोई और है

जो शायद मुझसे
मेरी कल्पना, मेरे सपनों की
हर उस ऊंचाई से ऊंचा है
जिसकी कभी सीमा ही आंकी
न जाती थी।

और यह जिंदगी
जिसे मैंने अपनी सोचा था
लगता है—

इसका अधिकारी है
कोई एक दूसरा
जो जीता है इसे अपने ढंग से
अपने मन से, अपनी हर बात से।

—अमरनाथ चतुर्वेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीनी कहानी

टी० के० चू

कप्तान नाकामूरा नार्किंग-स्थित जापानी सेना का एक पदाधिकारी था। वह पंद्रह दिन की छुट्टी लेकर नार्किंग से संघाई जा रहा था। इसलिए उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा न थी। बात यह थी कि चीन की प्राचीन राजधानी नार्किंग में नाकामूरा के लिए ऐश्वर्य का कोई साधन उपलब्ध न था। न यहां कोई जापानी रेस्तरां था, जहां वह जी-भरकर जापानी शराब 'साके' पी सकता और न कोई ऐसा स्थान था, जहां वह जापानी 'गीशा' सुंदरियों के साथ गुलछर्रे उड़ा सकता। विपरीत नार्किंग के, संघाई में वह सारे आनंद उठा चुका था और इन्हीं वस्तुओं का आकर्षण उसे संघाई लिये जा रहा था।

संघाई स्टेशन से बाहर आकर कप्तान नाकामूरा एक रिक्शे के पास गया और एक झटके के साथ उस पर बैठ गया, रिक्शावाला गिरते-गिरते बचा और संभलकर बोला—"कहां चलना होगा हुजूर? सादी फोंग?"

'नहीं, चापूलू।'

थोड़ी देर में रिक्शा चापूलू रोड पर पहुंच गया। नाकामूरा ने उसे एक जापानी दुकान के सामने रोक दिया और सिर्फ पांच सेंट चालक के हाथ पर रखकर चलने लगा। रिक्शा-कुली गिड़गिड़ाकर कुछ और मांगना चाहता था; मगर नाकामूरा को तलवार के कब्जे पर हाथ रखते देखकर वह बदहवास होकर दूर भागा।

यह दुकान नाकामूरा के मित्र कोया याशीसु की थी। मित्र ने नाकामूरा का बड़े तपाक से स्वागत किया, मूची और हरी चाय के जलपान के बाद दोनों युद्ध-विषयक बातचीत करते रहे।

दूसरे दिन नाकामूरा कप्तान वांग मेतुक से भेंट करने गया।

वांग का पिता मंचू परिवार के पतन से पहले एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और धनवान था और वांग इन दिनों संघाई की कठपुतली सरकार का सदस्य था, जो जापान की उंगलियों के संकेत पर नृत्य किया करती थी। नाकामूरा गुप्तचर विभाग से संबंध रखता था और उसी की शुश्रूषा से वांग को यह पद मिला था।

वांग में न कोई राजनीतिक योग्यता थी और न व्यापारिक। वह धन एवं मान प्राप्त करने की योग्यता और दक्षता से बिलकुल वंचित था। वह अगर कुछ कर सकता था, तो यह कि रंगरेलियां मनाये और ऐश उड़ाये। यही कारण है कि उसमें एक प्रकार की नैतिक और मानसिक नीचता उत्पन्न हो गयी थी। मुफ्त का धन हाथ आने के बाद मनुष्य में इस प्रकार की त्रुटियां पैदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे तेज़
हवाई सर्विस—

दिल्ली
मॉस्को
लन्दन!

एयर-इंडिया, आपके लिए दिल्ली और लन्दन के बीच सबसे तेज हवाई सर्विस चलाते हैं। इस सर्विस की दो उड़ानें नजदीक से नजदीक के रास्ते से, यानी मॉस्को होती हुई, की जाती हैं और यह दूरी तय करने में १२ घंटे भी नहीं लगते।

मॉस्को में विमान क़रीब १ घंटा रुकता है। आगे जानेवाले मुसाफ़िरों को मॉस्को के लिए वीज़ा की कोई जरूरत नहीं।

हर मंगलवार और शुक्रवार
बम्बई - दिल्ली - मॉस्को - लन्दन

इनके अलावा मध्य पूर्व और यूरोप होती हुई ८ उड़ानें

एअर-इंडिया

सहयोगी: बी. ओ. ए. सी. और कैन्टस

JWT/AL 3102

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो ही जाती हैं। जिन दिनों जापान ने संघाई पर अधिकार किया, वह अपने बाप-दादा के धन को ऐश्वर्य की भेंट कर चुका था।

वांग जुए का इतना प्रेमी था कि निरंतर तीन-तीन दिनों तक टेबल पर बैठा रह जाता, बीच में केवल इतनी देर के लिए उठता, जितनी देर में वह 'लुस-लुस' खा लेता, और जिन दिनों जुए का प्रोग्राम न होता, किसी क्लब में चला जाता और वहां ऐयाशी और मदिरा-पान में रात्रि बिताता।

संघाई सरकार की सदस्यता के लिए जापानियों को कोई योग्य और सम्मानित चीनी न मिला, तो अंततः उन्होंने विवश होकर रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए वांग मेतुक का चुनाव किया। लेकिन वांग के लिए इस पद का स्वीकार करना लज्जाजनक भी था और खतरनाक भी। लज्जाजनक तो इसलिए कि जापान के साथ सहयोग एवं सहायता करना देश के साथ खुली बेवफाई और गद्दारी थी और खतरनाक इसलिए कि देशभक्त चीनी ऐसे कितने ही गद्दारों को गोलियों का निशाना बना चुके थे। वांग मेतुक बेशर्मी और लज्जा के कड़वे प्याले को तो आंखें बंद करके कंठ से सरलता से उतार सकता था; लेकिन स्वतंत्रता के इच्छुक चीनियों के भय से उसे यह पद स्वीकार करने का साहस न होता था। मगर जापानियों ने दो हजार डालर मासिक वेतन और अंगरक्षकों के लिए एलांउस का लालच दिलाकर उसे अपना पक्षपाती बना लिया। वांग का काम इसके सिवा और कुछ न था कि जापानी जो विधान या घोषणा तैयार करें, वह उस पर हस्ताक्षर कर दे।

वांग मेतुक के यहां इतनी अधिकता से जापानी पदाधिकारियों का आना-जाना होता था कि उसके गार्ड ने कप्तान नाकामूरा का मुलाकाती कार्ड ले जाकर दिया, तो उसे बिलकुल आश्चर्य न हुआ। जापानी जासूस प्रायः हर समय उसके यहां पड़े चाय के प्याले खाली करते और सिगरेट फूंकते रहते थे। वे बातें तो अनेक प्रकार की करते; लेकिन सब फिजूल और व्यर्थ। उनका ध्येय वांग के विचारों का जायजा लेते रहने के अतिरिक्त और कुछ न था। वह भी उनके बेहूदा आरोपों और मूर्ख संदेहों का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि उनका घंटों बैठे रहना भी उसे असह्य न होता था।

कप्तान नाकामूरा अंदर आया, तो वांग ने अपनी भारी भरकम प्रतिमा के साथ उठकर उसका स्वागत किया और फिर नौकर को चाय, मिठाई और तरबूज के बीज लाने का आदेश दिया।

कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद नाकामूरा ने कहा—"मिस्टर वांग! आज्ञा दीजिये, तो मैं आपसे एक बात कहूं?"

"अवश्य! अवश्य कप्तान साहब। कहिये, क्या बात है?"

"मेरे पास मोती के दो बुंदे हैं, क्या आप उनको देखना पसंद करेंगे?"

"अवश्य कप्तान साहब।"

वांग मेतुक जानता था कि नाकामूरा की ही शुश्रूषा से उसे यह पद मिला है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन का आरम्भ कॉफी से

पलकें खुलीं, लेकिन प्रातः की वेला का
धुंधलापन छाया ही रहा, पलक भारी, हाथों में
समाचारपत्र के शीर्षकों पर जैसे कुहासा
छाया है।

उसी क्षण कॉफी–सुरुचिपूर्ण, ताजगी भरी
मधुर सुगन्धि लिये एक कप गरम कॉफी–
दिन का आमंत्रण करती है।

अनायास उनके हाथ कॉफी के प्याले की
ओर बढ़ जाते हैं, धन्यवाद है उन्हें
जिन्होंने दिया,–कॉफी की एक घूंट,
फिर मानो स्फूर्ति प्राणवन्त हो उठी
हो–सचमुच में प्रातः की वेला यही तो है।

एक कप कॉफी, आमोद भरा–कॉफी–इससे
बढ़कर तृप्ति और आनन्द सचमुच में है कहाँ।

कॉफी में स्फूर्ति का प्राचुर्य...

...कहीं भी ...किसी भी समय

कॉफी बोर्ड, बंगलोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह आज इस बहाने से उसका पारिश्रमिक वसूल करना चाहता है। वह कांच के दो टुकड़े देकर उससे एक बड़ी रकम मांगेगा। अगर उसने अस्वीकार किया, तो किसी जापानी को संकेत करके उसका जीवन समाप्त करा देगा।

"देखिये तो मिस्टर वांग इन्हें।" नाकामूरा ने एक रेशमी रूमाल में बंधे हुए मोती के बुंदे वांग की ओर बढ़ा दिये।

वांग ने रूमाल की गिरह खोली, तो उसमें से मोती के दो बुंदे निकले। वांग उन्हें देखकर सहसा चौंक पड़ा। ये बुंदे उसने अपनी छोटी बहन को उपहार में दिये थे। नाकामूरा का ध्यान किसी दूसरी ओर था, इसलिए उसने वांग का चौंकना न देखा, न उसको यह पता चल सका कि वांग का चेहरा एकाएक सफेद पड़ गया है। अफीमची वांग के चेहरे पर रक्त की लाली थी भी कहां, जो नाकामूरा को पता चलता।

वांग देर तक मोतियों को घुमा-फिराकर देखता रहा। कुछ ही वर्ष पूर्व उसने अपनी छोटी बहन को ये मोती दिये थे, अभी तक उनकी चमक-दमक में कोई अंतर न आया था। इन मोतियों पर उसने भारी रकम व्यय की थी। आज उन्हें पाकर उसे आशा हो रही थी कि उसकी लापता बहन का पता चल जायेगा। आह, कितनी क्रांतियों और घटनाओं के बाद आज वे मोती फिर उसके हाथ में थे।

बुंदेवाली

[ग्राहम पेक का रेखांकन]

"कप्तान साहब! यह बुंदे तो निहायत नफीस और मूल्यवान हैं, क्या आप मेरे हाथ बेचना पसंद करेंगे?"

"आप इनका क्या मूल्य देंगे?"

"आप ही कहिये?"

कप्तान नाकामूरा को मोतियों का उचित मूल्य क्या मालूम? उसका अनुमान था कि चंद सौ डालर के होंगे। मगर वह वांग से पांच हजार डालर वसूल करना चाहता था। वह जानता था कि मोल-भाव के बिना सौदा नहीं होता, इसलिए उसने दस हजार डालर मूल्य से बातचीत आरंभ की।

"आप तो मजाक कर रहे हैं कप्तान साहब, निःसंदेह मोती अच्छे हैं, फिर भी इनका मूल्य दो सौ डालर से अधिक नहीं हो सकता।"

"मजाक नहीं मिस्टर वांग। भला, मैं आपसे मजाक करूंगा? मैं आज सुबह जौहरी के पास गया था, उसने दस हजार दाम लगाये; लेकिन मैंने सोचा, आप जवाहरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालेज में हर दिन चुस्त रहना जरूरी है ...

टिनोपाल अधिक सफेदी लाता है – सफेद कपड़ों को और चुस्त बनाता है।

चुस्त लड़की। अपने कालेज की शान। वह कितनी चुस्त है–पढ़ने में भी। और देखने में भी। वह हर दिन अत्यधिक सफ़ेद कपड़े पहनती है–सबके कपड़ों से अधिक सफेद–यह टिनोपाल का ही कमाल है।

कपड़ो को आखिरी बार निचोड़ने से पहले थोड़ा सा टिनोपाल मिलाइये और फिर देखिये, आपके सभी सफेद कपड़ों—कमीजों, पतलूनों, साड़ियों, फ्राकों, चद्दरों—में कितना अनोखा फर्क आ जाता है और इस पर खर्च क्या आता है ? प्रति कपड़ा एक पैसा भी नहीं। सफेद कपड़ों को चुस्त बनाने के लिए हर दिन टिनोपाल इस्तेमाल कीजिये— यह हर जगह चुस्त लोगों को पसन्द है। टिनोपाल एक आधुनिक वैज्ञानिक व्हाइटनर.. यह किसी भी तरह के कपड़े को नुकसान नहीं पहुंचाता।

सुहृद गायगी लिमिटेड, पो. बा. नं. ९६५, बम्बई–१ वी.आर

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल, स्विट्ज़रलैण्ड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के शौकीन धनवान हैं, आप इनको खरीद लेंगे। इसलिए मैं आपके पास ले आया हूं।"

"यह आपका आदर-सत्कार है कप्तान साहब; लेकिन आजकल हाथ खाली है। फिर भी, चूंकि मुझे चीज पसंद है, मैं एक हजार डालर तक दे दूंगा।"

कप्तान ने कहा—"देखिये, वांग साहब! अगर आप कहेंगे, तो मैं आपको एक हजार छोड़ दूंगा, नौ हजार ही ले लूंगा।"

वांग बोला— "लेकिन मैं अधिक-से-अधिक दो हजार डालर दे सकता हूं, इससे अधिक के लिए मुझ में साहस नहीं है। दूसरी चीज इससे दुगुना मूल्य की होती, तो भी मैं इससे अधिक न दे सकता।"

कप्तान नाकामूरा समझता था कि वांग अभी और मूल्य बढ़ायेगा। उसने कहा— "मुझे मालूम है कि आप जवाहरात के कितने प्रेमी हैं, इसलिए आप कभी पसंद न करेंगे कि ये मोती किसी जौहरी के पास चले जायें। इस विचार से साढ़े सात हजार डालर मैं आपको दे दूंगा।"

कप्तान के शब्द स्पष्ट रूप में तो कोमल थे, फिर भी उनमें धमकी अनुभव होती थी।

वांग ने कहा—" जब आपको इतना ध्यान है,तो मैं भी आपकी बात रद्द नहीं कर सकता; लेकिन आपसे मैं प्रार्थना करूंगा कि आप पांच हजार से अधिक के लिए मुझे विवश न करें।

दोनों के अधरों पर मुस्कान की लहर दौड़ गयी, क्योंकि सौदा दोनों के अनुकूल तय हुआ था।

कुछ देर बाद वांग बोला —"आप रकम किस प्रकार लेना पसंद करेंगे?"

"नकद ही तो लेना चाहता हूं।"

"इसके लिए तो मैं क्षमा चाहता हूं, आज किसी प्रकार का भुगतान संभव नहीं, कल आशा है कि दे दूं।"

"इतने के लिए आपत्ति नहीं, कल ही सही। लेकिन कल फिर मेरा आपके यहां आना उचित न होगा।"

कुछ देर विचार करने के बाद वांग बोला—"मुझे किसी जापानी रेस्तरां में गये बहुत दिन हो गये, अगर कल संध्या के लिए आपको भोजन का निमंत्रण दूं, तो आप स्वीकार कीजियेगा? उसी समय आपकी रकम भी दे दूंगा।"

"अगर ऐसा ही है मिस्टर वांग, तो आप क्यों कष्ट उठायेंगे, मैं स्वयं आपको निमंत्रित करता हूं।"

"चलिये यही सही।"

स्थान और समय निश्चित होने के बाद चाय का अंतिम प्याला पीकर कप्तान नाकामूरा ने विदा ली।

दूसरे दिन सात बजे से कुछ पहले ही कप्तान नाकामूरा, गोल्डन क्रिश्चियन रेस्तरां में पहुंच गया। यहां उसने टेलिफोन द्वारा एक उम्दा कमरा रिजर्व करा लिया था। उत्तम भोजन और दो सुंदर सेविकाओं के प्रबंध के लिए भी आदेश दे दिया था।

वांग ठीक सात बजे बंद मोटर से रेस्तरां के दरवाजे पर उतरा। वह आसमानी रंग की बारीक पोशाक पहने था। आज कई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है – सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-ज़ुकाम व इन्फ्लूएंज़े का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व शकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

HIN

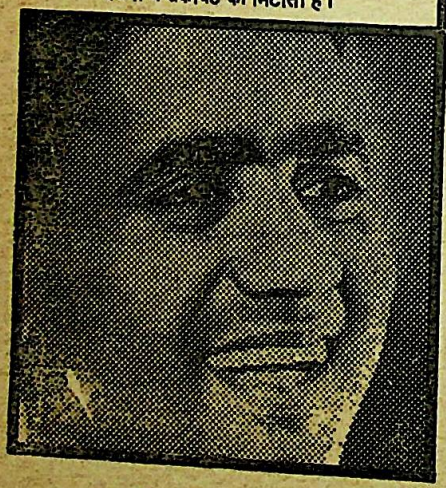

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माह बाद वह खतरा अनुभव किये बिना घर से बाहर निकला था, नियमानुसार दो अंगरक्षक उसके साथ थे।

एक गार्ड ने ठोकर मारकर रेस्तरां के दरवाजे को खोला। ऊपर एक घंटी की आवाज सुनाई दी। रेस्तरां का स्वामी वांग की प्रतीक्षा कर रहा था, इसलिए जैसे ही वांग छोटे-छोटे वृक्षों और फवारेवाले बाग में प्रविष्ट हुआ, स्वामी ने बढ़कर उसका स्वागत किया।

"श्रीमान्! कप्तान नाकामूरा आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, इधर से पधारिये।"

वांग ने अपने आदमियों को वापस किया और रेस्तरां के स्वामी ने एक छोकरी को वांग के जूते उतारने और सिलीपर पहनाने का आदेश दिया, इतने में नाकामूरा भी लकड़ी के चमकते हुए जीने से उतरकर नीचे आ गया, वह आज अत्यधिक प्रसन्न था। उसने बड़ी गर्मजोशी से वांग का अभिवादन किया।

वांग और नाकामूरा कमरे के मध्य-स्थित एक मेज पर पहुंचे। कप्तान ने ताली बजाकर पुकारा —"नाईसान!"

उनकी सेवा के लिए जो दो युवतियां नियुक्त थीं, उनमें से एक धीरे-धीरे सीढ़ियों को पार करती हुई, कमरे में आकर आंख नीची करके खड़ी हो गयी। नाकामूरा ने उसे खाने-पीने की चीजें लाने का आदेश दिया।

आदेश पाते ही दोनों सेविकाएं तश्तरियों में विभिन्न प्रकार के सुंदर और स्वादिष्ट पदार्थ सजाकर लायीं, दो गैस स्टोव मछलियां उबालने के लिए मेज पर रख दिये गये। लोहे की कड़ाही में तेल डालकर मांस और मुर्गी तली जाने लगी। जब तक भोजन तैयार हो, कप्तान और वांग जलपान करने लगे। जलपान की स्वादिष्ट वस्तुओं, मदिरा की बोतलों, सुंदर एवं पुष्पवती युवतियों ने इन दोनों के बीच भेदभाव की दीवार को हटा दिया। पीने-खाने का शगल जैसे-जैसे उन्नति करता गया, दोनों की जबानों और हरकतों में बेतकल्लुफी बढ़ती गयी। वे एक दूसरे को साग्रह पिलाने-खिलाने लगे।

कप्तान ने मेज साफ करके कुछ और शराब, फल और सिगरेट लाने का आदेश दिया, इन वस्तुओं के आ जाने के बाद सेविकाओं को छुट्टी दे दी गयी।

"होटल की लड़कियां कितनी हीं सुंदर

कायाकल्प!

जो विलासी व्यक्ति अपनी लालसा-तृप्ति और उसके लिए नित नये साधन जुटाने में डूबा रहता है, वह घृणित से घृणित कार्य कर सकता है। किंतु यदि कोई उसके मर्मस्थल को वेध दे, उसकी आत्मा को कोंच दे, तो कोई अचरज नहीं कि उसका चोला ही बदल जाये। —अज्ञात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया

यूनिटों की आरम्भिक बिक्री—
१ जुलाई से १४ अगस्त, १९६४—के अरसे
में ही यूनिटों को, उनके वास्तविक मूल्य पर खरीदने के लिए
१,२५,००० से भी अधिक अर्जियां प्राप्त हुईं

ऊंची दरों पर भी यूनिटों के लिए अर्जियां आ रही हैं

यूनिटों पर मिलने वाला लाभ ट्रस्ट की आमदनी में शामिल है, जो ट्रस्ट के आय-वितरण में यूनिट धारकों को डिविडेंड के रूप में दिया जाता है।

यूनिटों में धन लगाना सुरक्षित है क्योंकि इनसे आपको नियमित आय होती है। दूसरे, आप जब चाहें इन्हें भुना सकते हैं। इसके अलावा यूनिटों से प्राप्त १,००० रु० तक की आय पर आयकर नहीं लगता।

यूनिट ट्रस्ट ने यूनिटों को वापस खरीदना १६ नवम्बर १९६४ से शुरू कर दिया है।

यूनिट सर्टिफिकेट हर रोज भेजे जा रहे हैं। जिन्हें अभी तक नहीं मिले हैं, उन्हें जल्दी ही मिल जायेंगे।

देश भर के प्रमुख अनुसूचित बैंकों की सभी शाखाओं में यूनिटों की बिक्री हो रही है

यूनिट खरीदिये

बचत के लिए
इनमें धन लगाना अच्छा है।

यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया
अमर बिल्डिंग, फिरोजशाह मेहता रोड,
बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डी ए ६४/४१

हों; लेकिन मैं तो इनकी अपेक्षा वेश्याओं को अधिक पसंद करता हूं।" कप्तान नाकामूरा कहने लगा—" लड़कियों के संबंध में मुझे युद्ध में काफी अनुभव हुआ। युद्ध भी विचित्र चीज है! जापानी सेना ने भी हद कर दी, इस कदर माल लूटा कि बयान से बाहर है।"

कप्तान की आंखों में युद्ध के दृश्य नृत्य करने लगे। उसे ऐसा अनुभव होने लगा, वह रेस्तरां में नहीं, युद्ध के मैदान में है। उसके अंदाज में शराबीपन था और वह दिल खोलकर बातें कर रहा था— "जिस समय हम लोगों ने नानकिंग पर अधिकार किया, उस दिन आप साथ होते, तो देखते। हम अपने कई साथियों को खोकर पागल से हो रहे थे; लेकिन हमने भी बदला लेने में कोताही नहीं की। बूढ़ा, युवक, स्त्री, बालक जो भी चीनी मिला, उसे बेधड़क काल के घाट उतारते गये .....

"हमने चीनियों के समूह-के-समूह गिरफ्तार किये, और दस-दस, बीस-बीस पचास-पचास, जितने भी मिलते गये, हम सबको मशीनगन की भेंट करते गये। हमारे कानों में आज भी 'रट-टट-टट' की ध्वनि गूंजा करती है। हर सच्चे सैनिक को मशीनगन की ध्वनि संगीत मालूम होती है। हमने विजय तो प्राप्त कर ली; लेकिन विजय-समारोह करने के लिए हमारे पास न बारूद थी और न चिराग ही मौजूद थे। फ़िर भी हमने एक उपाय सोच लिया, युद्धबंदियों में से कुछ को लिया और उन पर घासलेट छिड़ककर दियासलाई लगा दी। फिर तो न पूछिये कि हमने चीख-पुकार से भरे आतिशबाजी के क्या-क्या तमाशे देखे।"

वांग पर एक निस्तब्धता छायी हुई थी।

कप्तान ने कहा—"अजी, पीजिये भी। आप तो यों ही बैठे हुए हैं, पीने-पिलाने के सिवा संसार में और रखा ही क्या है!" यह कहते हुए कप्तान 'साके' के चार-पांच पैग गट-गट कंठ से उतार गया।

वांग ने अधिक शराब पीने से मजबूरी प्रकट करते हुए क्षमा चाही, उसके चेहरे पर व्याकुलता टपक रही थी।

उसने धीरे-से प्रश्न किया—"इसके अतिरिक्त आपको और दूसरे प्रकार के अनुभव भी तो हुए होंगे, कप्तान साहब?"

कप्तान बोला—"अजी, आप अनुभव की पूछ रहे हैं, जितनी लड़कियों की आवश्यकता होती, बिना विचारे मिल जातीं और हम पदाधिकारियों को तो एक-से-एक सुंदर अप्सराएं .....काश, एक बार आप साथ होते और देखते ....."

वांग बीच में ही बोल उठा —" आप तो सुंदरता के पारखी हैं, अगर आपके स्तर पर कोई उतर सकी हो, तो ....."

"अगर आप यह कहते हैं, तो मेरे उच्च स्तर के अनुसार नानकिंग में एक युवती मिली थी। जब हमें चीनियों की हत्या और गिरफ्तारी के कार्यों से अवकाश होता, तो हमारा सबसे आनंददायक और मनपसंद काम युवतियों की खोज ही होता था।"

वांग ने कहा—"कप्तान साहब! जरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस नानकिंगवाली युवती का हाल सुनाइये। उस प्रकार की कुछ एक लड़कियां मेरे अनुभव में भी आ चुकी हैं।"

"एक दिन मैं किसी सुंदर और मनपसंद युवती की खोज में नानकिंग की गलियों में घूम रहा था कि एक शानदार मकान नजर आया। अगरचे वह मकान खाली मालूम हो रहा था, फिर भी उसमें घुसना खतरे से खाली न था। इसलिए मैं सावधानी के लिए पांच-सात आदमियों को लेकर अंदर प्रविष्ट हुआ। खूब सजा-सजाया मकान था। मैंने कुल कमरों का चक्कर लगाया। अंत में उसमें मेरे मन की चीज मुझे मिल गयी।"

"आपने उस मकान में क्या देखा?" वांग ने प्रश्न किया।

"ठहरिये, बताता हूं।" कुछ देर चुप रहकर कप्तान ने कहना आरंभ किया– "निचली मंजिल के कुल कमरों को देख लेने के बाद हम ऊपर चढ़े। हमें आरंभ ही में जो कमरा मिला, उस पर ताला पड़ा हुआ था। उसे तोड़ने में हमें कोई कठिनाई न हुई। मैं सबसे आगे था, इसलिए मैंने एक कोने में एक अल्पायु, चंद्रमुखी चीनी युवती को देखा, ऐसी सुंदर लड़की मैंने जीवन में कभी नहीं देखी थी। उसकी आंखें, उसकी सूरत, उसकी रंगत ..... बस, मैं क्या कहूं? मेरे पास शब्द नहीं कि उसकी कोमलता निर्मलता और सुंदरता की प्रशंसा कर सकूं। मेरे आदमी तो उसे देखते ही अपना आपा भूल गये थे। पर मैंने उन सबको बाहर भेज दिया।

"वह लड़की भय से निर्जीव मूर्ति [illegible] खड़ी थी। मैंने जैसे ही उसकी ओर [illegible] बढ़ाया, वह सहसा चीख उठी और कहने लगी–नहीं, नहीं। कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिये।

"लेकिन मैं उसकी कब सुननेवाला था। मैंने उसे उठाकर बिस्तर पर डाल दिया। उसने अपने कानों के दोनों बुंदे उतारकर मेरे सामने रख दिये, गिड़गिड़ाकर कहने लगी– तुम यह बुंदे ले लो, और मुझे छोड़ दो।

"वह कितनी भोली और मूर्ख लड़की थी। उसने बुंदे भी खोये और मुझसे बच भी न सकी।" वांग ने पूछा –"यही वे बुंदे तो जो आपने कल मुझको दिये थे?"

नशे में चूर कप्तान ने उत्तर दिया–"हां, हां, वही बुंदे थे।"

वांग कहने लगा–"कप्तान साहब! आपने तो वास्तव में खूब हाथ साफ किये हैं, मुझे आपसे ईर्ष्या होती है, आपने अपनी बातों से मुझे अत्यधिक आनंद दिया है। इसके अतिरिक्त मूल्यवान बुंदे भेंट करके मुझे कृतज्ञ बनाया है। इसलिए, क्या मैं भी आपकी सेवा में एक पुरस्कार भेंट कर सकता हूं?"

कप्तान ने स्वीकृति में सिर हिलाया। वांग धीरे-से बोला –"तो इधर देखिये कप्तान साहब।"

कप्तान ने वांग की ओर देखा और वांग ने एक चमकदार तेज छुरा उसके सीने में घुसेड़ दिया। **रूपांतर : मोफीजुर्रहमान**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम की वेदी पर

'टाइलर्स आफ दि सी' विश्वविख्यात लेखक एच० जी० वेल्स की उदात्त लेखनी से प्रसूत एक निर्धन, निष्ठावान और परिश्रम-पुरुष मछुए की कहानी है। इसमें आप एक ऐसे संवेदनशील प्रणयी के दर्शन करेंगे, जो देखने में मामूली-सा आदमी है; पर उसके विचार और कर्म हमें उदार मानवता के भव्य दर्शन कराते हैं। रूपांतर : सत्य।

इंगलिश चैनल के गर्नसे द्वीप से लगभग सत्रह मील दूर उत्तर में दावरेज अवस्थित है। समुद्र में ऊंची उठी हुई दो चट्टानों को दावरेज कहा जाता है। ये चट्टानें एक दूसरे को छूती हुई नजर आती हैं। लेकिन इन दोनों चट्टानों के बीच काफी खाली जगह है। समुद्र अपनी विशाल तरंगों के साथ इन चट्टानों से खेलता रहता है। सन १८२– की बात है। भाप-चालित जहाजों का आविष्कार हो चुका था। ऐसा एक जहाज गर्नसे द्वीप और फ्रांस के सेंट मालो के बीच आया-जाया करता था। हर बार यह जहाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दावरेज के पास से गुजरा करता ।

१८२–के क्रिसमिस का दिन । आधी रात से भयंकर बर्फ गिरने लगी थी । सुबह हो गयी, लेकिन बर्फ का गिरना बंद नहीं हुआ। इस समय नौ बज चुके थे । दो व्यक्ति काफी फासले से समुद्र के किनारे-किनारे चल रहे थे । आगे चलनेवाली थी एक तरुण कन्या और उसके पीछे था अपनी पतलून में हाथ डाले सर्दी भगाने की चेष्टा में सीटी बजाता हुआ एक नवयुवक । एक स्थान पर आकर तरुण कन्या रुक गयी । उसने मुड़कर पीछे की ओर देखा । एक मिनिट के लिए वह सोचती रही । इसके बाद नीचे झुककर रेत पर उंगली से उसने कुछ लिखा । खड़ी हुई और चल दी । तरुणी के इस आचरण को पीछे आनेवाला नवयुवक बड़े ध्यान से देख रहा था ।

तरुण कन्या थी देरुचेते । मेस लेथेरी की भतीजी । नवयुवक सोचता रहा । बर्फ पर उसने क्या लिखा होगा और इसका हेतु क्या हो सकता है ? धीरे-धीरे जब वह स्वयं उस स्थान के पास पहुंचा, तो जहां तरुण कन्या ने झुककर कुछ लिखा था, उस की नजर वहां गयी । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । सुंदर अक्षरों में स्वयं उसी का नाम लिखा हुआ था । लेकिन नवयुवक की समझ में नहीं आ रहा था । देरुचेते भला उसका नाम क्यों लिखने लगी ?

वह एक गरीब मछुआ था–नाम था गिलियत । समुद्र तट के पहाड़ी क्षेत्र के एक कोने में अवस्थित अपने एकांत मकान में वह रहता था । साहसी था । नाव चलाने में निपुण । बचपन से ही वह समुद्र में तैरने, मछली पकड़ने की कला में निपुण हो गया था । एक बार पत्थरों से लदी नाव की दौड़ में वह विजय भी पा चुका था। किशोरावस्था पार करने से पहले ही उसकी मां की मृत्यु हो गयी थी । वह अपने मकान में अकेले ही रहता था । उसने शादी नहीं की थी । लोग कहा करते थे कि समुद्र के किनारे का उसका मकान भुतहा है । सीधी खड़ी चट्टानों पर जान की बाजी लगाकर वह अक्सर ऊपर चढ़कर पुतला टांगना पसंद करता था पक्षियों को डराने के लिए, ताकि समुद्री चिड़ियांएं आकर वहां घोंसला बनाएं और अंडे न दिया करें । कारण, इस द्वीप के बच्चों को इन चिड़ियों के अंडे चुराने का बड़ा शौक था और एक दो बच्चे इन सीधी खड़ी चट्टानों से गिरकर मर चुके थे । गिलियत के मकान से कुछ ही दूर समुद्र में एक चट्टान उभरी हुई नजर आती थी । चट्टान का ऊपरी हिस्सा ठीक कुर्सी के आकार का था । समुद्र में जब ज्वार आता, तो चट्टान डूब जाती । यह प्राकृतिक राजसिंहासन पानी में विलुप्त हो जाता और जब पानी कम हो जाता, तो गिलियत के घर के सामने से उभरे हुए पत्थरों के जरिये इस चट्टान तक बड़े मजे से पहुंचा जा सकता था ।

गर्नसे द्वीप के लोग अपने द्वीप और सार्क के सेंट मालो के बीच चलनेवाले जहाजों को शैतानी जहाज कहा करते थे । लेकिन इस जहाज ने इस द्वीप के निवासी मेस लेथेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को यहां का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति भी बना दिया था। फल्टन द्वारा आविष्कृत इस भापचालित जहाज को खरीदने के लिए मेस लेथेरी को काफी रुपया कर्ज लेना पड़ा था। इंगलिश-चैनल में चलने-वाला यह पहला भाप-संचालित जहाज था। मेस लेथेरी ने जहाज का नाम रखा था दुरांदे। उनकी भतीजी का नाम था देरुचेते। इस जहाज का नाम उन्होंने अपनी भतीजी के नाम पर ही रखा था, जिसे वे प्यार से दुरांदे पुकारा करते थे। जहाज को खरीदने से पहले मेस लेथेरी के एक भागीदार थे। उनका नाम था रंतेने। जिन लोगों ने इन दोनों को एक साथ देखा था, उनका विश्वास था कि इन दोनों में सगे भाइयों से भी बढ़कर प्यार है। लेकिन दोनों के चेहरे से साफ जाहिर था कि दोनों की मनोवृत्ति बिलकुल अलग है। मेस लेथेरी के चेहरे पर जो कुछ स्पष्ट था, वही रंतेने के चेहरे पर बिलकुल विलुप्त। एक दिन मालूम हुआ कि रंतेने मेस लेथेरी के पचास हजार फ्रैंक लेकर गायब हो गया है। मेस लेथेरी बर्बाद हो गये। विश्वासघात के इस दुःख से प्रताड़ित उन्होंने अपना सिर थाम लिया। इतने बड़े आर्थिक नुक्सान के धक्के को संभालना उनके लिए आसान नहीं था।

जिस दिन से गिलियत ने अपना नाम समुद्री रेत पर देखा था, उसका सारा ध्यान देरुचेते के मकान की ओर लगा रहता था।

.....और गिलियत ने देखा—युवती ने रेत पर उसी का नाम लिखा है।

अब तो ऐसा लगता था कि उसका सारा व्यापार और काम-धाम उस रास्ते के जरिये से ही हो सकता है, जो देरुचेते के मकान के पास से गुजरता है।

उसके दिमाग में एक ही प्रश्न था—उस दिन रेत पर उसने मेरा नाम क्यों लिखा था?

एक दिन देरुचेते के मकान के पास से गुजरते हुए उसने उसे पियानो पर गाते हुए सुन लिया। देरुचेते की आवाज सुन-कर वह निहाल हो गया। तब से उसके द्वारा गाया हुआ गीत उसके दिमाग में गूंजता रहता।

धीरे-धीरे गिलियत का साहस बढ़ा। अक्सर वह देरुचेते के बगीचे के पीछे चुप-चाप खड़ा रहता, जिससे वह उसकी एक झलक देख ले। एक दिन उसने देरु-चेते को अपने चाचा मेस लेथेरी के साथ देख लिया। दोनों बातचीत कर रहे थे। पूरी बात तो वह नहीं सुन सका। पर जो कुछ वह सुन-समझ सका, वह यह था कि वे अपनी भतीजी को बता रहे थे कि जहाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उनका व्यापार अच्छा चल निकला है। उन्होंने देरुचेते को कहा –"तुम्हीं मेरी एक मात्र वारिस हो। तुम्हारे ब्याह की बड़ी फिक्र है मुझे।"

गिलियत भारी मन से अपने घर लौट आया। समुद्र के किनारे बैठा-बैठा वह देरुचेते के बारे में ही सोचता रहा। एक ही बात उसके सारे विचारों की मधुरता को कुचलकर रख देती थी – वह धनवान है और मैं बेहद गरीब।

एक दिन चांदनी रात में देरुचेते ने अपनी पसंद के गीत 'बोनी-दुंदे' की धुन सुनी। वह शयन-कक्ष में सो रही थी। उसकी आंख खुल गयी। दूर से आनेवाली संगीत की इस मधुर ध्वनि ने इसके बाद उसे सोने नहीं दिया। गिलियत बांसुरी पर यह धुन बजा रहा था। उस दिन के बाद से किसी भी दिन आधी रात के समय बोनी-दुंदे का मधुर संगीत सुना जा सकता था।

इस तरह चार साल गुजर गये। देरुचेते की उम्र इक्कीस साल की हो गयी। एक दिन मेस लेथेरी ने रात के समय अपने घर का चक्कर लगाते हुए गिलियत को देख लिया। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि लड़का बिना कुछ कहे, बिना किसी मतलब के इस तरह क्यों चक्कर लगाता रहता है।

एक मछुआ
निल्स फ्लैकस्टैड का शिल्प

आधी रात के समय वह घर पर आराम करने के, यहीं बैठा रहता है। बांसुरी बजाता रहता है। यदि देरुचेते से ब्याह करना चाहता है, तो उसे आकर मुझसे मिलना चाहिये। इस तरह बांसुरी बजाने से आखिर क्या लाभ है।

समुद्र में ज्वार आ रहा था। गिलियत मछलियों का संग्रह करके घर लौट रहा था। इसी समय उसने देखा कि उसके घर के सामनेवाली चट्टानी कुर्सी पर एक आदमी बैठा है। समुद्र चढ़ती पर था। इस चट्टानी सिंहासन पर बैठे-बैठे सो जानेवाले सज्जन थे यहां के नये पादरी। अभी-अभी इंग्लैंड से आये थे। नाम था रेवरेंड जे० एवं काउड्री। गिलियत ने उन्हें दूर से ही देख लिया था। वह अपनी नाव लेकर उस चट्टान सिंहासन तक पहुंच गया। दस मिनिट और देर हो जाती, तो पादरी समुद्री लहरों में डूब जाते। गिलियत ने उनका पांव पकड़ कर झकझोरा। कहा–"मेरी नाव में बैठ जाइये, वरना जिंदा रहना मुश्किल है।"

पादरी साहब ने आंखें खोलीं। खतरे को समझ गये। कुछ लज्जित से स्वर में बोले–"यहां से सब कुछ इतना सुंदर दिखाई दे रहा था कि मैं उठ ही नहीं सका।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, मुझे कब नींद आ गयी।"

किनारे पर पहुंचने के बाद रेवरेंड एबेंजर ने गिलियत को कुछ इनाम देना चाहा। लेकिन गिलियत ने बड़ी नम्रता के साथ उसे लौटा दिया। रेवरेंड ने कहा—"आज आपने मेरी जान बचायी है। इस एहसान को कभी नहीं भूलूंगा।"

"इस बात को भूल जाइये।" गिलियत ने हंसते हुए कहा।

अब तक मेस लेथेरी अपने जहाज दुरांदे के कप्तान थे। लेकिन अब यह काम उन्होंने क्लूबिन को सौंप दिया। क्लूबिन के बारे में माना जाता था कि वह बेहद धार्मिक वृत्ति का आदमी है। उसके जैसा विश्वस्त आदमी मिलना मुश्किल है। मेस लेथेरी उसे बेहद होशियार और समझदार आदमी मानते थे। एक बार क्लूबिन ने उन्हें कहा था कि रंतेने उन्हें धोखा देकर लूट लेगा, और यह बात सच ही साबित हुई। लेथेरी के शब्दों में क्लूबिन से बढ़कर नाविक-विद्या में निपुण कोई व्यक्ति आसपास में नहीं था।

एक दिन फ्रांस के सेंट मालो की एक बदनाम गली की एक गंदी-सी दुकान से क्लूबिन ने एक पिस्तौल खरीदा। दूकानदार ने पिस्तौल की तारीफ करते हुए कहा—"इसे मैं अभी-अभी अमरीका से लाया हूं। आटोमेटिक है। छः गोलियां एक साथ दाग सकती है।"

दूसरे दिन दोपहर की बात है। फ्रांसीसी तटीय पहरेदार दूरबीन से एक जहाज की गतिविधि को देख रहा था, जो सेंट मालो से रवाना हुआ था। उस जहाज से एक छोटी डोंगी उतारी गयी। डोंगी समुद्र के इसी किनारे की ओर आ रही थी। इसी समय एक विशालकाय व्यक्ति पीछे से इस पहरेदार की पीठ की ओर बढ़ा। उसने पहरेदार को जोर से धक्का दिया। बिना किसी तरह की आवाज किये, यह पहरेदार समुद्र की सतह से ऊंची उठी हुई चट्टानों से गिरकर समुद्र की लहरों में विलुप्त हो गया। एक धड़ाम की आवाज हुई और समुद्र की लहरों से लगातार उठनेवाली आवाज में किसी को पता ही नहीं चल सका कि फ्रांसीसी पहरेदार की हत्या हो चुकी है। हत्यारे ने मुड़कर पीछे देखा, एक आदमी पिस्तौल ताने खड़ा था। उसके मुंह से चीख निकल गयी—"क्लूबिन।"

"हां रंतेने, ठीक ही पहचाना तुमने। अभी-अभी एक आदमी की हत्या कर चुके हो तुम। ठीक है?"

रंतेने क्लूबिन की ओर झपटा; लेकिन रुक गया। इसी समय पिस्तौल से क्लिक की आवाज आयी। क्लूबिन के चेहरे पर दृढ़ता स्पष्ट थी। बोला—"इस चट्टान के नीचे एक पहरेदार मरा हुआ पड़ा है। तीन सौ कदमों की दूरी पर एक और पुलिस का आदमी खड़ा है। याद रखो, तुमने सिर्फ एक आदमी को मारा है। बाकी सिपाही अभी भी जिंदा हैं। यदि मैंने पिस्तौल दाग दी, तो तुम निश्चित रूप से गिरफ्तार कर लिये जाओगे। सुनो:

"आज से दस साल पहले तुम गर्नसे द्वीप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाट एअर यूनिट

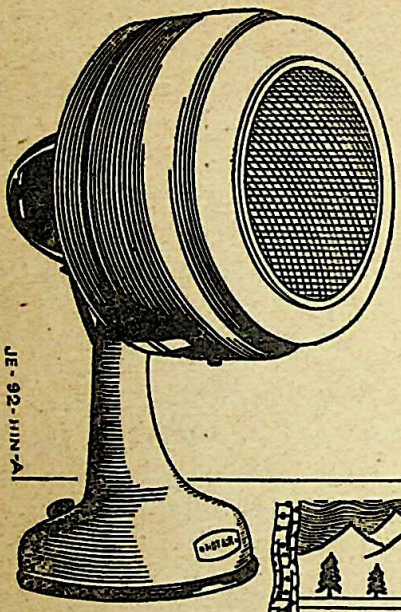

आप अपने टेबल या पेडेस्टल पंखे में यह यूनिट लगाकर उसे गरम हवा देनेवाला पंखा बना सकते हैं।

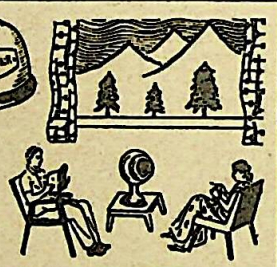

सर्व ऋतूपयोगी पंखा

सर्दी में • हाट एअर यूनिट पंखे में लगाने से अपना कमरा गरम रखकर आप सर्दी से बच सकते हैं।

वर्षा में • धुले हुए कपड़े और ज़रूरत पड़ने पर गीले बाल भी आप गरम हवा में सुखा सकते हैं।

गर्मी में • हाट एअर यूनिट निकालकर फिरसे वही पंखा ठंडी हवा के लिये काम में ला सकता हैं।

अपने निकटतम उषा डीलर से जानकारी प्राप्त कीजिये

उषा

का नवीन उत्पादन

यह हाट एअर यूनिट उषा १२" टेबल और १६" टेबल या पेडेस्टल ए.सी. पंखों में लगाया जा सकता है।

जय इंजिनियरिंग वर्क्स लिं०, कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से भाग निकले थे मेस लेथेरी के पचास हजार फ्रैंक लेकर। याद है! यदि उसका ब्याज जोड़ा जाये, तो यही रकम कम-से-कम लगभग अस्सी हजार फ्रैंक हो जाती है। मुझे मालूम है, इस समय तुम्हारी जेब में तीन हजार पौंड मौजूद हैं। मेस लेथेरी के नाम पर मैं तुम से यह रकम वसूल करना चाहता हूं। मुझे मालूम है, तुम फ्रांस छोड़कर चिली जाना चाहते हो। क्यों और किसलिए, यह तुम जानो। तुम्हें लेने के लिए डोंगी आ रही है। यह तुम जानो, तुम यहीं रहना चाहते हो या जाना। लेकिन पौंडों का डिब्बा मेरी ओर फेंक दो।"

रंतेने के पास कोई उपाय नहीं था। उसने वह डिब्बा क्लूबिन की ओर फेंक दिया। डिब्बा पांव के पास जाकर गिर गया। क्लूबिन ने हंसते हुए डिब्बा उठा लिया। रंतेने चीखा –"यह सरासर डकैती है!"

"डकैती! जी हां। एक ईमानदार पहरेदार को डाकू कहने की तुम्हें आजादी है। मुझे इसकी परवाह नहीं। जाओ।"

रंतेने चट्टान से नीचे उतरा, डोंगी में बैठ गया। जब डोंगी रवाना होने लगी, तो क्लूबिन को सुनाकर उसने कहा– "क्लूबिन याद रखो, मैं मेस लेथेरी को इत्तिला क़र दूंगा कि मैंने तीन हजार पौंड तुम्हारे जरिये वापस लौटा दिये हैं!"

अपने कमरे में क्लूबिन ने अपने सहायक से कहा–

"हम लोग गर्नसे के लिए कल रवाना हो जायेंगे।"

"लेकिन कल तो भयंकर कुहरा रहेगा। मेरी राय में कल जहाज को खोलना ठीक नहीं होगा। कोहरे का साथ होना अच्छी बात नहीं है।"

"यह मेरा हुक्म है।" क्लूबिन ने अंतिम निर्णय दिया। उसे बहस करना बिलकुल पसंद नहीं था।

दूसरे दिन सुबह दुरांदे सेंट मालो से रवाना हो गया। छः यात्री थे और कुछ पालतू जानवर। जहाज की गति को नियंत्रित करनेवाले चक्र की डचूटी पर तैनात तांगरौले के पांव कांप रहे थे। अधखुली आंखों के सामने उसे सभी कुछ हरा-ही-हरा नजर आ रहा था। वह यही सोच रहा था कि क्या बढ़िया शराब उसे रात को नसीब हुई थी। लेकिन रात के समय इतनी कीमती शराब मेरे कमरे में आखिर छोड़ कौन गया?

लगभग ग्यारह बजे कप्तान क्लूबिन तांगरौले के हाथ से चक्र लेकर उसे एक निश्चित स्थान पर रोककर चीखा–"ठीक से पकड़ो इसे।"

जहाज ने अपनी गति बदल दी।

समुद्र के आरपार कोहरे के बादल घने होकर छा गये। लगता था, जैसे सारा मौसम बदल गया हो। क्षितिज के ओर-छोर तक जब कोहरा अच्छी तरह व्याप्त हो गया, तो कप्तान क्लूबिन की गुरु-गंभीर आवाज सुनायी दी–"तांगरौले, तुमने बुरी तरह शराब पी है!"

तांगरौले घबरा गया।

कप्तान ने आदेश दिया–"और ज्यादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई - ५६

भारत में हस्त-कला का सब से बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाप। पूर्व की ओर तेजी के साथ।" एक यात्री ने क्लूबिन से पूछा—"इस कोहरे में इस रफ्तार से चलने से ईंधन की कमी नहीं आ जायेगी ?"

क्लूबिन ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया—"नहीं। उस बदमाश, शरावी तांगरौले की गलती के कारण जो देर हो चुकी है, उसे ठीक करने के लिए हमें पूरी रफ्तार से चलना ही होगा।"

यात्रियों तथा कर्मचारियों को विश्वास हो गया कि उनका कैप्टिन काफी समझदार है। उस पर निर्भर रहा जा सकता है।

रास्ते में इन लोगों को एक जहाज मिला, जो अपनी सुरक्षा के लिए लंगर डाले खड़ा था। उस जहाज के कप्तान को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दुरांदे घने कोहरे में अत्यंत द्रुत गति से जा रहा है।

लेकिन कुछ घंटों बाद यात्रियों तथा कर्मचारियों में कुछ बेचैनी नजर आने लगी। कोहरे के कारण अब हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। यहीं कहीं दावरेज की उठी हुई चट्टाने हैं। पता नहीं कब दुरांदे उन चट्टानों से जा टकराये। जहाज अब गर्नसे के काफी करीब था।

इसी समय कैप्टिन क्लूबिन ने तांगरौले की गर्दन पकड़ी। गुस्से से चीखा—"नालायक, तुम इस जहाज को बर्बाद कर दोगे। शरावी, हरामखोर, तुमने हमें बर्बाद कर दिया। तुम्हें तो जंजीरों से बांधकर जेल में डाल देना चाहिये। इस गधे के कारण हमें गर्नसे पहुंचने में इतनी देर हो गयी।"

एक यात्री चीखा—"कैप्टिन, हम लोग चट्टानों की ओर बढ़ रहे हैं।"

क्लूबिन ने स्थिर स्वर में जवाब दिया—"चुप रहो। मैं तुमसे ज्यादा जानता हूं। मुझे मालूम है, हम लोग किस तरफ जा रहे हैं।"

"मैंने समुद्र में एक ऊंची उठी हुई चट्टान देखी है, हम लोग उसी ओर बढ़ रहे हैं। खुदा के लिए, जहाज की दिशा बदलो।"

इसी समय लगा कि जैसे भूचाल आ गया हो। एक भयंकर टकराहट हुई। कई यात्री धक्के को संभाल नहीं सके। गिर पड़े। भगदड़ मच गयी। लोग चिल्लाने लगे—"मर गये। हाय, मर गये!"

क्लबिन पर जैसे कोई असर ही नहीं हुआ। वह उसी स्थिर आवाज में बोला—"चुप रहो। कोई नहीं मरा। कोई नहीं मरेगा।"

इसी समय इंजिन-रूम से एक खलासी निकल आया। उसने अर्ज किया—"इंजिन-रूम में पानी भरना शुरू हो गया। जल्द ही आग बुझ जायेगी।"

तांगरौले चीखा—"तले में बड़ी तेजी के साथ पानी जमा हो रहा है।"

पालतू जानवर करुण स्वर में चीखने लगे।

क्लूबिन के हुक्म के अनुसार एक डोंगी पानी में उतारी गयी। जब यह डोंगी पानी में उतर गयी, तो तमाम यात्री तथा कर्मचारी सीढ़ी के जरिये इस डोंगी में सवार हो गये। इंजिन-रूम के एक आदमी ने एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिलकुल सरल

आप केवल

रु० ५/- से ही

खोल सकते हैं

सेविंग्स बैंक एकाउन्ट नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में

कोई बैंक चार्जेज नहीं—
और आपको व्याज भी
मिलेगा वार्षिक ३
प्रतिशत के हिसाब से

आपकी निकट की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये :

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

(संयुक्त राज्य में समितिबद्ध • सदस्यों का दायित्व सीमित)

NGB/61AHIN

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायडज़ ब्रान्च) ; मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२९, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायडज़ ब्रान्च) ; ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी ; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज़ ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि,फ़ल रोड, बाइकला। **ठाणा :**—आग्रा रोड, कोलवाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेहोश यात्री को उठाया और उसे भी डोंगी में रख दिया। जब सब लोग डोंगी में बैठ गये, तो क्लूबिन ने हुक्म दिया कि वे लोग रवाना हो जायें।

इंजिन-ड्राइवर ने चिल्लाकर पूछा—"और आप ?"

"मैं यहीं रहूंगा।"

डोंगी में बैठे प्रायः सभी ने कैप्टिन क्लूबिन से प्रार्थना की कि वह भी उनके साथ आत्मरक्षा के लिए डोंगी में सवार हो जाये। लोगों ने समझाया—"यदि आप नहीं आये, तो बचने की कोई उम्मीद नहीं है।"

तांगरौले लगभग रो दिया—"हुजूर, यह सब मेरी गलती के कारण हुआ। मुझे माफ कर दीजिये, जो चाहे सजा दे दीजिये; लेकिन आप नीचे उतर आइये।" लेकिन क्लूबिन टस-से-मस नहीं हुआ। बोला—"मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं यहीं रहूंगा। आज की रात में आनेवाले तूफान में यह जहाज टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जायेगा। जब जहाज नष्ट हो जाये, तो कप्तान का मरना लाजिमी है; ताकि किसी को यह कहने का मौका न मिले कि मैंने अंतिम समय तक अपना फर्ज पूरा नहीं किया। तांगरौले, मैं तुम्हें माफ करता हूं।"

डोंगी, लाचार हालत में रवाना कर दी गयी। सब लोगों ने कर्तव्य-निपुण क्लूबिन की जयजयकार के नारे लगाये। लगभग सभी के हृदय में करुणा थी। क्लूबिन की महानता और त्याग के प्रति आदर का भाव था।

थोड़ी देर में पतवारों की आवाज मंद होते-होते समाप्त हो गयी। इस जहाज पर क्लूबिन अकेला रह गया।

उसने अनंत आकाश की ओर देखा। कुटिलता के साथ मुस्कराया, साथ ही आराम की सांस ली। अपनी योजना के अनुसार उसने जहाज को चट्टानों से टकराकर तोड़ डाला। यहां से तैरकर किनारे तक पहुंच जाना मुश्किल नहीं होगा। लोग मुझे मुस्तैद कप्तान ही मानेंगे, समझेंगे। बदनामी नहीं होगी। मैं किनारे पर पहुंचकर सीधे अमरीका के लिए रवाना हो जाऊंगा। रंतेने ने मेस लेथेरी का जो धन चुराया था, वह इस समय मेरे पास मौजूद है, और सारी जिंदगी के लिए काफी है।

इसी समय कोहरे के किनारे पर कुछ धुंधला-सा दिखाई दिया। आश्चर्य के मारे क्लूबिन के मुंह से चीख-सी निकल गयी। अरे, यह मामूली चट्टान नहीं, यह है दावरेज ! मुझसे गलती हो गयी। अब एक मील के बजाय मुझे पांच कोस तैरकर समुद्र पार करना होगा।

दुरांदे दावरेज की गिरफ्त में फंस गया।

कुहासा कम होता जा रहा था। दूर से आता एक जहाज दिखाई दिया। उसे भरोसा हो गया कि वह बच जायेगा। मुझे किसी एक चट्टान पर पहुंचकर इशारा-भर करना होगा। आनेवाले जहाज का कप्तान मुझे देखते ही अपने आप बचा लेगा। उसने फौरन अपने तमाम कपड़े खोले। चमड़े का एक बैग अपनी कमर से बांध लिया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके केशकी अनुपम शोभा

स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

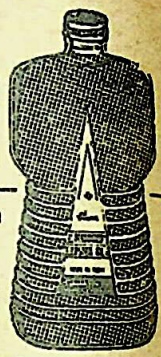

आपके केश को कोमल और सुंदर बनाए रखता है

स्वस्तिक हेयर स्पाइक 'मयूर'

पौधे से स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल को बालों पर लगाइये। केश को तीन भागों में बांट लीजिए। मध्यम भाग गोलाकर घुमा कर एक ओर पंखे के रूप में रख छोड़िए। शेष दो भागों को आपस में गूंथ कर पंखे की पारों और घुमाते हुए स्पेट दीजिए। अब आभूषणों से सजा लीजिए।

स्वस्तिक ऑयल मिल्स लिमिटेड, बर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन हजार पौंड के नोट इसी में थे। इसके बाद समुद्र में कूद पड़ा। समुद्र की गहराई से सतह पर आने की उसने जैसे ही कोशिश की कि उसे लगा, जैसे किसी ने उसका पांव पकड़ लिया हो और जिसे छुड़ाना कतई संभव हो।

मेस लेथेरी के मकान के निचले हिस्से में भीड़ जमा थी। इस भीड़ में गिलियत भी एक ओर चुपचाप खड़ा था। दुरांदे जहाज नष्ट हो चुका था और मेस लेथेरी बर्बाद हो चुके थे। देरुचेते एक कुर्सी पर बैठी सिसकियां भर रही थी। उसे मालूम था कि उसके चाचा की तमाम उम्मीदों पर पानी फिर गया है।

जो जहाज दुरांदे को लंगर डाले मिला था, उसका कप्तान भी इस भीड़ में मौजूद था। उसने आगे बढ़कर कहा—"आते वक्त मैं खुद दुरांदे जहाज पर गया था। वहां कोई नहीं था कि जिसे बचाया जा सके। टूटे हुए जहाज को कप्तान क्लूबिन छोड़ चुका था। जैसे ही हम लोग लौटकर आयें, समुद्र की एक खतरनाक लहर ने दुरांदे को उछालकर दावरेज के बीच अधर लटका दिया। इन दोनों चट्टानों के बीच वह अब भी लटका हुआ पड़ा है। समुद्र की भयंकर लहरें इस जहाज की धज्जियां उड़ा देंगी। लेकिन जैसा कि मैंने देखा, इंजिन की पूरी मशीनरी बिलकुल सही-सलामत है।"

इंजिन-ड्राइवर ने मेस लेथेरी से कहा—"जहाज का सबसे अधिक कीमती सामान उसकी मशीनरी ही है। दुरांदे जहाज को बचाना मुमकिन नहीं; लेकिन उसका इंजिन बचाया जा सकता है। कोशिश करने पर सारा इंजिन हासिल किया जा सकता है।"

मेस लेथेरी ने ठंडे स्वर में जवाब दिया—"ठीक है। लेकिन यह मौसम है तूफान और अंधड़ का। पहली बात तो यह है कि यदि किसी जहाज को वहां भेजा भी जाये, तो इस मौसम में लंगर की चेन ही टूट जायेगी और सहायता के लिए जानेवाला जहाज भी चट्टानों से टकराकर बर्बाद हो जायेगा। दूसरे जहाज को बचाव के लिए भेजना, सिवा बर्बादी के कोई माने नहीं रखता।"

दूसरे जहाज के कप्तान ने अपनी राय दी—"दुरांदे के इंजिन को बचाने के लिए जानेवाले आदमी को वहां अकेले रहना पड़ेगा। लेकिन सारी मशीनरी को बचाकर निकाल लाना दुराशा मात्र है।"

लगभग सभी लोगों ने मान लिया कि यह असंभव काम है।

तभी एक कोने से आवाज आयी—"यदि कोई यह असंभव काम कर डाले तो ?"

देरुचेते ने आंसुओं से भरा चेहरा उठाया। बोली—"मैं उससे शादी कर लूंगी। वही मेरा पति होगा।"

गिलियत का चेहरा मुस्कुराता, उत्तेजना और आशा से प्रदीप्त हो उठा। भीड़ में से निकलकर वह ठीक देरुचेते के सामने आकर खड़ा हो गया। पूछा—"आप उससे ब्याह कर लेंगी ?"

मेस लेथेरी की आंखें चमक उठीं। अपना टोप उठाकर जमीन पर फेंकते हुए उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

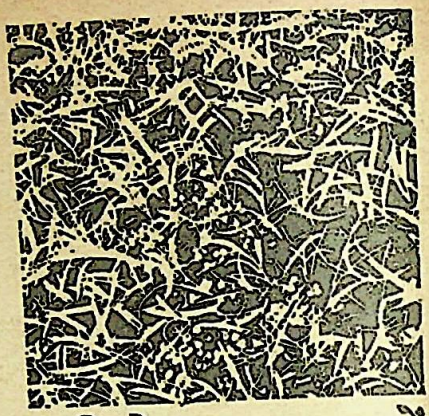

चलिये, टहल आयें

अब हम गहरी साँस लें और खुली हवा की ओर चल पड़ें। अब चलें खुली सड़क पर, घर से बाहर की दुनिया में, सारे स्वास्थ्य और सुख के स्रोत में। टहलने से बढ़कर स्वास्थ्यकर और आनंदमय शौक और कोई बेशक नहीं। और बाटा के एक जोड़ा जूतों में दोनों पाँव बड़े आराम से रखकर चलते चलें।

Bata

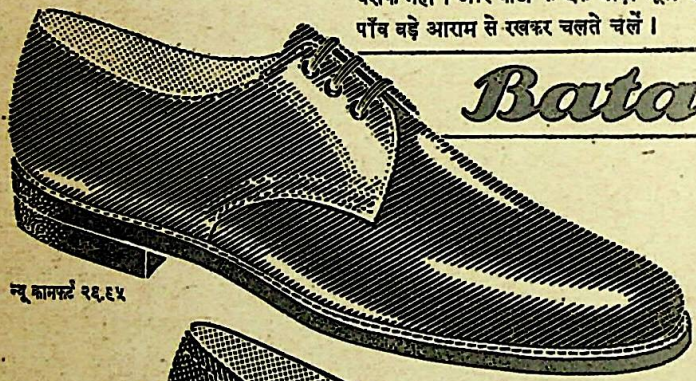

न्यू फ्रांकफर्ट २६.९५

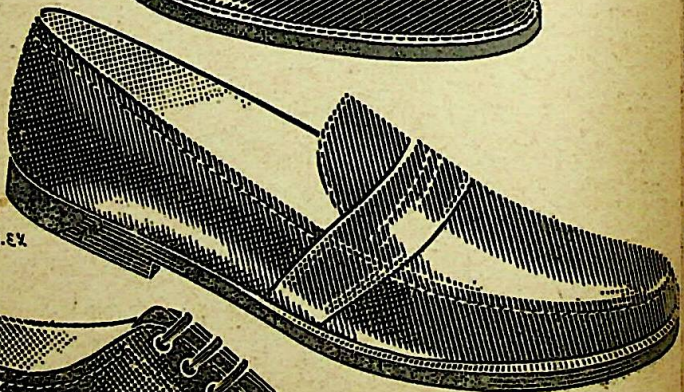

ऐक्टिव २२.९५

न्यू लांगलाइफ डर्बी १७.९५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा–" मैं वचन देता हूं, देरुचेत ऐसे आदमी की ही पत्नी बनेगी ।"

उसी दिन दोपहर के समय एक अपरिचित व्यक्ति के साथ रेवरेंड जे० एवेंजर मेस लेथेरी के यहां पधारे । उन्होंने मेस लेथेरी को प्रवचन देकर ढांढस बंधाने की चेष्टा की । रेवरेंड महोदय जब जाने लगे, तब देरुचेते से उनकी आंखें चार हो गयीं । एक क्षण के लिए दोनों में से कोई पलक तक नहीं झपका सका ।

उधर गिलियत गर्नसे से अपनी नाव में रवाना हो चुका था । सुबह की पहली किरण के साथ उसने देखा, सामने दो चट्टानों के बीच दुरांदे लटका हुआ पड़ा है । पानी उतार पर था । गिलियत ने अपनी नाव का लंगर डाल दिया । पानी की सतह से बीस फुट की ऊंचाई पर दुरांदे स्थिर पड़ा था । गिलियत चट्टान के चारों ओर घूमकर ऐसी जगह तलाशने लगा, जहां से वह दुरांदे की ऊंचाई तक पहुंच सके । अंत में उसे ऐसा स्थान मिल गया । वह दुरांदे के डेक पर कूद गया । वहां सभी कुछ अस्त-व्यस्त और ध्वस्त था । लेकिन गिलियत ने देखा, इंजिन का एक भी पुर्जा हिला नहीं था । एक भी हिस्सा टूटा नहीं था । जहाज के किनारे पर आकर उसने चारों ओर फैली हुई चट्टानों का निरीक्षण किया और योजना बनाकर काम पर जुट गया । सारे दिन वह जहाज पर काम करता रहा । रात होने आयी । वह सोने लायक जगह ढूंढ़ने लगा । जहाज पर नींद में रात गुजारना खतरे से खाली नहीं था ।

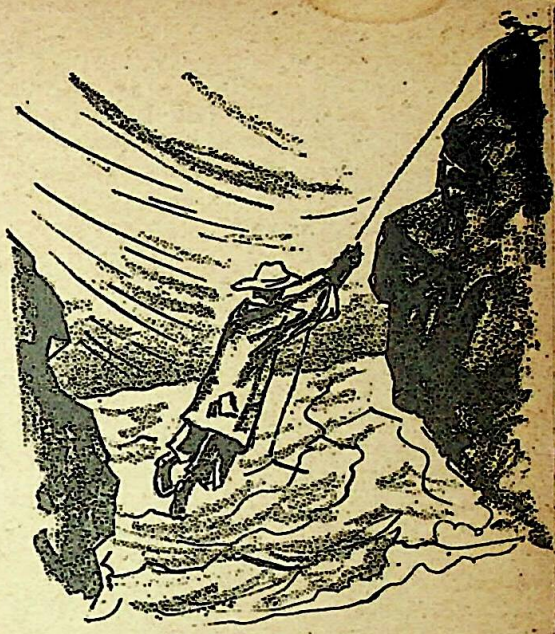

बड़ी चट्टान पर पहुंचने के लिए उसने जैसे-तैसे लंगर डाला ।

उसे ध्यान आया, शायद दावरेज की चट्टानों के ऊपरी भाग में कोई गुफा या ऐसी कोई जगह हो, जहां निश्चित होकर रात काटी जा सके । बड़ी कोशिश करने के बाद वह इन दोनों चट्टानों में से छोटीवाली चट्टान के सिरे पर पहुंच गया । वहां से उसने बड़ी चट्टान की ओर लंगर फेंका । दो तीन बार कोशिश करने पर लंगर ने जमीन पकड़ ली । अपने दायें हाथ में एक रूमाल बांध, वह इस लंगर से बंधी डोरी के सहारे लटक गया । बड़ी चट्टान से टकराने से उसकी हड्डियां बज उठीं । इस समय वह डोरी के सहारे लटका हुआ था । उसे लगा कि उसकी हिम्मत जवाब दे रही है । लेकिन दूसरे ही क्षण वह डोरी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा और बड़ी चट्टान के सिरे पर पहुंच गया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल
नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानगृह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफरिजरेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

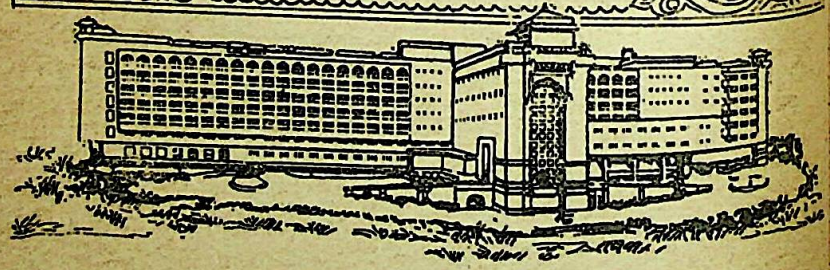

भारत का एकमात्र ★★★★★ डी लक्स होटल

टेलीफोन-७०३११ (४० लाईन) तार का पता-अशोका होटल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका सोचना सही था। चट्टान के ऊपरी हिस्से के दक्षिण भाग में उसे एक बड़ा छेद दिखाई दिया, जिसमें एक आदमी मजे से घुस सकता था। उसने तसल्ली की सांस ली। उसकी नाव को बंदरगाह मिल गया था और उसे रहने के लिए निवास-स्थान। अब वह बड़े मजे में दुरांदे पर काम कर सकता था। अब बड़ी चट्टान थी उसका निवास-स्थान और दुरांदे उसका कारखाना। अपने घर से, अपने कारखाने पर वह लंगर से जुड़ी हुई मजबूत डोरी के जरिये आसानी से आ-जा सकता था।

दूसरे दिन संध्या के समय उसे अजीब-सी आवाज सुनाई दी। समुद्री चिड़ियों का एक समूह था और आवाज थी उनके पंखों की। शायद बड़ी चट्टान इन समुद्री पक्षियों का निवास-स्थान था। लेकिन सामनेवाली चट्टान पर पक्षियों का यह समूह उतरा और हर गया। गिलियत ने चैन की सांस ली। उस छोटी-सी कंदरा में घुसकर वह सो गया। पास ही उसके खाने-पीने की सामग्री की डलिया पड़ी थी। सुबह के समय जब उसकी आंख खुली, तो उसने देखा कि उसकी खाद्य-सामग्री की डलिया गायब है। वह घबरा गया। शायद रात के समय तूफानी हवाओं ने डलिया को नीचे फेंक दिया हो। तभी उसने देखा कि डलिया चट्टान की जड़ में पानी पर तैर रही है और समुद्री चिड़ियां खाद्य-सामग्री के लिए लड़-झगड़ रही हैं। अपने एकांत प्रयत्न के इस दुखद प्रसंग को उसने हंसकर टालते हुए सोचा —"चलो अच्छा हुआ। मैंने चिड़ियों का घर लूट लिया और उन्होंने मेरा खाने-पीने का सामान। दोनों बराबर हो गये। झगड़ा खत्म।"

एक सप्ताह गुजर गया। कभी-कभी उसे लगता कि जिस काम को उसने अपने हाथ में ले लिया है, वह उसकी ताकत से बाहर है। लेकिन फिर हिम्मत लौट आती। वह काम पर डटा रहा।

बड़ी चट्टान पर एक छोटा-सा मीठे पानी का सोता मिल गया। शाम के समय काम खत्म होने के बाद जो समुद्री मछली, कीड़े अथवा पौधे मिल जाते, वह खा लेता। वहां मछली पकड़ना आसान नहीं था; लेकिन केकड़े पर्याप्त मात्रा में मिल जाते थे।

रात के समय भयंकर सर्दी के कारण वह थर-थर कांपता रहता। नीचे समुद्र की विकराल तरंगें शोर मचाती रहतीं। आस-पास में छिटके हुए तारों की ओर देखते हुए अपनी प्रियतमा की याद में उसका वक्त इस तरह गुजर जाता कि उसे कुछ पता ही नहीं चल पाता था।

मार्च का महीना। लंबे दिन। गिलियत दुरांदे का पेडल-चक्र खोलने में लग गया। उसने जहाज पर मिली हुई लकड़ी से दो बड़े संदूक बनाये। इनमें उसने पेडल - चक्र का एक-एक टुकड़ा सहेजकर रख लिया। इसके बाद दुरांदे के दो मस्तूल खोलकर उसने दोनों चट्टानों के ऊपर बांध दिये। एक मस्तूल पर चढ़कर वह खुद देख आया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने की
आवश्यकता
नहीं

कलकत्ता में जैसे
विक्टोरिया मैमोरियल
वैसे ही

ग्वालियर सूटिंग

पहनने वाले
व्यक्ति
भी अलग ही
नजर आते
हैं

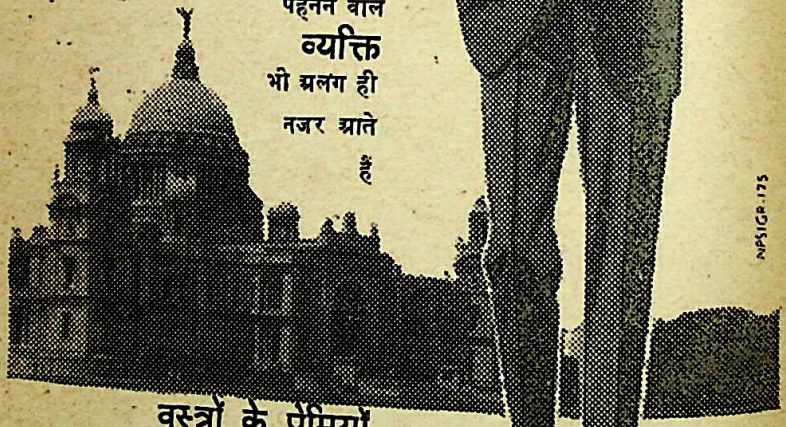

NASICP-175

वस्त्रों के प्रेमियों
के लिये सूटिंग के
निर्माता
ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (विविग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि इन मस्तूलों के जरिये जहाज का इंजिन उठाया जा सकता है या नहीं। मस्तूलों के शहतीरों पर उसने लटकनेवाले पहिये अटका दिये। दूसरी ओर पुली थी। इसके बाद इन शहतीरों पर से रस्सा बांधकर इंजिन के चारों ओर लपेट दिया। उसने रस्सी का ताना-बाना ऐसा बुना कि योजना के अनुसार सारी कार्यवाही एक ही आदमी एक ही हाथ से कर सके। इसके बाद जो कुछ करना था, वह भयंकर रूप से खतरनाक था। जगह-जगह से उसका शरीर छिल गया था। समुद्री हवाओं ने बेरहमी से घावों में दर्द भर दिया था।

एक दिन गिलियत को मालूम हुआ कि बड़ी चट्टान के ऊपरी हिस्से में पीने के पानी का सोता सूख गया है। एक बूंद भी पानी नहीं बचा था। निराश होकर वह नीचे लौट आया। उस सोते में पानी का पता लगाने का एक ही उपाय था कि जब समुद्री चिड़ियां आकर वहां डेरा डालें, तब समझ लेना चाहिये कि ऊपर थोड़ा-सा पानी मिल सकता है। काम छोड़कर वह ऊपर आता, चिड़ियों के साथ पानी पीता और लौट आता। ये समुद्री चिड़ियां अब गिलियत को पहचानने लगी थीं। उससे डरती नहीं थी।

दिन गुजरते गये और बरसात का मौसम आ गया। पानी बरसने लगा। सर्दी के मारे उसका सारा शरीर सिकुड़ गया। रात के समय भयंकर तूफान के बावजूद गिलियत मारे थकान के सो जाता। दिन में चट्टान के सूखे भागों में उगी हुई घास के सिवा उसे कुछ भी नहीं मिलता था। खाने की तलाश में उसे तैर-तैरकर एक चट्टान से दूसरी चट्टान तक जाना पड़ता था। ठंड के मारे वह बेदम होने लगा था। पानी उसे बर्फ की तरह जमा देता था। भूख ने उसकी सारी ताकत खत्म कर दी थी। वह सोचता—"यह समुद्र, ये चट्टानें—ये सब मुझे निगलते जा रहे हैं। मुझे नष्ट करते जा रहे हैं।" फिर भी उसने किसी मदद की याचना नहीं की। खुदा की मदद की भी नहीं। कारण, वह यह सब कर रहा था देरुचेते को पाने के लिए। उसका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन कमजोर होता जा रहा था; लेकिन उसके निश्चय में कोई फर्क नहीं था।

उस दिन अप्रैल की अंतिम तारीख थी। सब कुछ तैयार था। इंजिन-रूम अच्छी तरह से बांध दिया गया था और वह ऊपर लटकनेवाले मस्तूल के शहतीरों के आधार पर लटक रहा था। अब बस नीचे अपनी नाव लाकर इंजिन को उसमें डाल देना भर बाकी था। समुद्र में भाटा था। धीरे-धीरे गिलियत ने अपनी नांव दुरांदे के ठीक नीचे लाकर खड़ी कर दी। बड़ी सावधानी के साथ उसने नाव का लंगर डाला। बीस मिनिट बाद लकड़ी के दो संदूक उसने नाव पर डाल दिये। अब बस इंजिन को जहाज में लादना भर बाकी था। जिस लोहे की जंजीर पर सारा इंजन झूल रहा था, उसे उसने फाइल से काट डाला। आधा भाग कटते ही भारी वजन के कारण चैन टूट गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

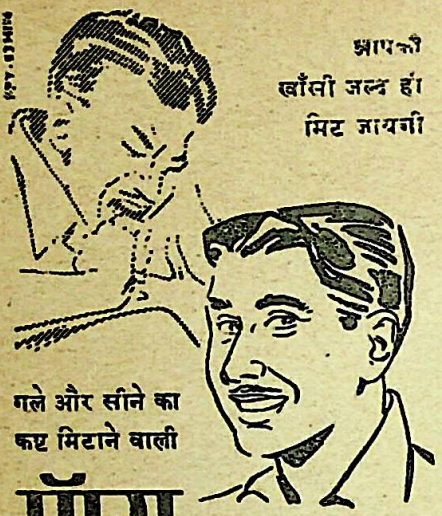

आपकी
खाँसी जल्द ही
मिट जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटाने वाली

पॅप्स टिकियाँ लीजिये।

पॅप्स की टिकियाँ चूसिये – आप देखेंगे कि इनकी आरोग्यकारी भाप दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़, ब्रॉंकाइटिस, ज़ोमी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है। पॅप्स से शीघ्र ही आराम मिलता है।

इनमें कोई हानिकारक दवाएं नहीं होतीं। ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती है।

ब्रॉंकाइटिस, गले के दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं।

सभी औषधि-विक्रेताओं के पास मिलती है।

बी. ई. फुलफ़ोर्ड (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई के सोल एजेन्ट : केम्प एण्ड कं० लि०
पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई–२८ (डीडी)

यह है

बजाज

प्रेशर कुकर

हर गृहणी के लिए अत्यंत उपयोगी!

केवल बजाज प्रेशर कुकर में ये विशेष गुण है–अतिरिक्त इमरा यानी पाँच लिटरवाला मॉडल छः लिटरवाले मॉडल के बराबर काम करता है – तीन प्रकार का दबाव देनेवाले एक ही प्रेशर रेग्युलेटर और नरम धातु के सेफ़्टी प्लग से खाना पकाने में शीघ्रता, सुविधा और किफायत – कुकर के अन्दर तीन बर्तनों के अलावा एक स्टीमिंग ट्रे रहने से विविध भोजन एक साथ तैयार किया जा सकता है– समय और ईंधन–सब में बचत होती है – स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन चन्द मिनिटों में तैयार हो जाता है। और फिर, बजाज कुकर के साथ पाँच साल की गारंटी भी रहती है। आज ही अपने बजाज विक्रेता से सविस्तर और साथ में अंग्रेजी – हिन्दी की पाक – पुस्तिका मुफ्त लीजिए।

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंजिन चरमराकर भयंकर आवाज के साथ दुरांदे से अलग होकर नीचे खड़ी नाव में दूसरे रस्सों के सहारे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। उसने नीचे झुककर देखा मशीन सही-सलामत है या नहीं। पहले तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसके मुंह से, तब अचानक चीख-सी निकल गयी– हो गया! नामुमकिन काम मुमकिन हो गया! वह खुशी के साथ नीचे कूद पड़ा।

लेकिन समुद्र में उथल-पुथल मची हुई थी। सामने तूफान के आसार साफ नजर आ रहे थे। इस भयंकर तूफान में इतने वजन के साथ नाव खेना काफी खतरनाक था। एक ही उपाय था कि चट्टान की दूसरे ओर भी लकड़ी की एक बाड़ बना दी जाये, ताकि समुद्री लहरों का वेग नाव और उसके वजन से टकराने के बजाय बाड़ से टकराकर लौट जाये।

उसने बड़ी चट्टान के ऊपर चढ़कर देखा। सामने से काले-काले बादलों की विशालकाय दीवार धीरे-धीरे आगे बढ़ती आ रही थी। उसने मोमजामा पहन लिया। बारिश, कड़कती हुई बिजली और भयंकर तूफान, ललकारती–चीखती समुद्री लहरें–लगता था कि कोई शैतान अपनी पूरी ताकत के साथ उसे चुनौती दे रहा है। इन लहरों का धक्का सहना गिलियत को असंभव लगने लगा। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। समुद्री तूफान जब शांत हो गया, तब उसे होश आया कि वह अभी भी अपनी जगह पर मजबूती के साथ जमा हुआ है। तूफान से बचाव के लिए उसने लकड़ी की जो बाड़ें बनायी थीं, वे चट्टानों से टकराकर चकनाचूर हो गयी थीं। दुरांदे का कुछ हिस्सा भी टूटकर नीचे गिर पड़ा था। धीरे-धीरे तूफान की गति मध्यम होने लगी। बारिश भी रुक गयी। सामने खुला आसमान नजर आने लगा। गिलियत की आंखें चमक उठीं।

थकान के मारे गिलियत सो गया। उठने पर उसे बड़े जोर से भूख लगी थी। एक चाकू लेकर वह कुछ खाने लायक सामग्री की खोज में चल पड़ा। चट्टान के तलेवाली गुफा में एक केकड़ा रेंगता हुआ गुजरा। गिलियत ने उसका पीछा किया; पर वह हाथ नहीं आया। पानी की ऊपरी सतह पर उसने एक बड़ी मछली को देखा। उसने अपना हाथ बढ़ाया।

अचानक उसे लगा कि किसी ने उसका हाथ मजबूती के साथ पकड़ लिया है। कोई मजबूत-सी रस्सी उसकी बांह के चारों ओर लिपट गयी। तभी एक और बांह दूसरे हाथ की ओर बढ़ी। फिर एक और बांह...

इसी समय एक भयंकर मांस-पिंड सामने दिखाई दिया।

यह था ओक्टोपस।

ओक्टोपस की भुजाएं गिलियत के चारों ओर लिपटने लगीं। उसकी भुजाओं की रगड़ से गिलियत के शरीर में सूई चुभने जैसा दर्द हो रहा था। गिलियत का सारा शरीर क्षत-विक्षत हो गया। गनीमत थी कि उसका दांया हाथ अभी तक मुक्त था और उसमें एक बड़ा-सा चाकू मौजूद था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुलोचना सुकेशी...

यह सदा टाटाका हेअर ऑइल इस्तेमाल करती हैं
जिससे इनके बाल स्वस्थ और चमकदार रहते हैं।
टाटा के हेअर ऑइल • मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाते हैं
• बालों को स्वस्थ और सुन्दर बनाते हैं • संवारने के बाद
बाल ठीक से बैठ जाते हैं • बाल घने उगते हैं
• इनकी सुगंध भी मनमोहक होती है

THOY-47 HIN

टाटा के सुगंधित हेअर ऑइल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे ही ओक्टोपस ने अपना माथा गिलियत की ओर बढ़ाया, गिलियत ने पूरी ताकत के साथ चाकू उसके शरीर में भोंक दिया। थोड़ी देर में ही यह जानलेवा संघर्ष समाप्त हो गया। उसके शरीर के चारों ओर लिपटी हुई भुजाओं का दबाव ढीला हो गया। ओक्टोपस का मांस पिंड समुद्र की गहराइयों में एक गोलाकार निशान छोड़ता हुआ विलुप्त हो गया। स्वस्ति की सांस लेकर गिलियत जैसे ही मुड़ा, उसे लगा कि शायद सामनेवाली गुफा में उसने किसी का चेहरा देखा है। उसका दिमाग चकराने लगा। कहीं मौत तो उसकी ओर देखकर मुस्करा नहीं रही है ?

लेकिन वह मनुष्य की हड्डियों का पूरा ढांचा था। संभवतः यह मनुष्य भी इसी तरह ओक्टोपस द्वारा खींच लाया गया था। अचानक मृतक के ढांचे की कमर में उसे एक चमड़े का बैग लटकता हुआ दिखाई दिया। उसने उसे खोला। उसमें एक लोहे की पेटी थी। तीन नोट थे– प्रत्येक एक हजार पौंड का। बैग पर लिखा हुआ था क्लूबिन। उसकी समझ में आ गया कि हड्डियों का ढांचा क्लूबिन का ही है।

गिलियत अपनी नाव पर लौट आया। दूसरे दिन छोटी-मोटी आवश्यक मरम्मत करने के बाद वह गर्नसे की ओर चल पड़ा। मई का पहला सप्ताह था। शाम का समय। मेस लेथेरी घर में आराम कर रहे थे। उन्हें रंतने का खत मिल चुका था। वे जान चुके थे कि क्लूबिन ने ही रुपया हथियाने के लिए दुरांदे को नष्ट करने की साजिश की थी। वे चुपचाप सामने फैले विस्तीर्ण आकाश की ओर देख रहे थे। इसी समय उन्होंने कोई अद्‌भुत चीज देखी। दुरांदे की धुआं उगलनेवाली चिमनी सामने दिखाई दे रही थी। वे उछलकर खड़े हो गये। खिड़की के पास जाकर देखा। उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।

चांदनी रात थी। हाथ में लालटेन लेकर मेस लेथेरी बाहर निकल आये। नाव घाट के करीब आ गयी थी।

गिलियत उस दिन शाम होने से पहले ही गर्नसे पहुंच गया था। उसने अपनी नाव मेस लेथेरी के घर के सामने खड़ी कर दी। लंगर डाल दिया। इसके बाद उसके थके हुए पांव लेथेरी के बगीचे के पिछले हिस्से की ओर चल पड़े, जहां वह देरुचेते के दर्शन करने के लिए पहले घंटों चुपचाप खड़ा रहा करता था। उससे खड़ा नहीं रहा गया। बैठ गया। इसी समय चांदनी रात में उसने एक छाया-मूर्ति को सामने से गुजरते देखा। एक दूसरी छाया-मूर्ति आकर पहली मूर्ति के पास बैठ गयी। एक पुरुष था; दूसरी स्त्री। पुरुष ने इतना ही कहा –"मेरी प्राण !"

गिलियत की आंखें फटी-की-फटी रह गयीं।

मेस लेथेरी ने गिलियत को देख लिया। उत्साह, प्रसन्नता और प्रशंसाभरी आवाज के साथ उन्होंने गिलियत को ग्रहण किया। बोले–" बांसुरी बजानेवाले मेरे लाड़ले बेटे, आ गये तुम ! यह सब जादू है ! चम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

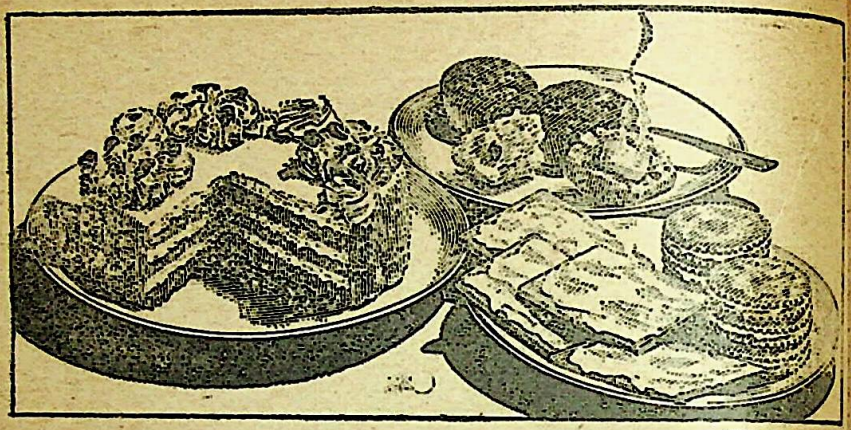

अमूल मक्खन से घरेलू व्यंजन ज्यादा स्वादिष्ट बनते हैं.

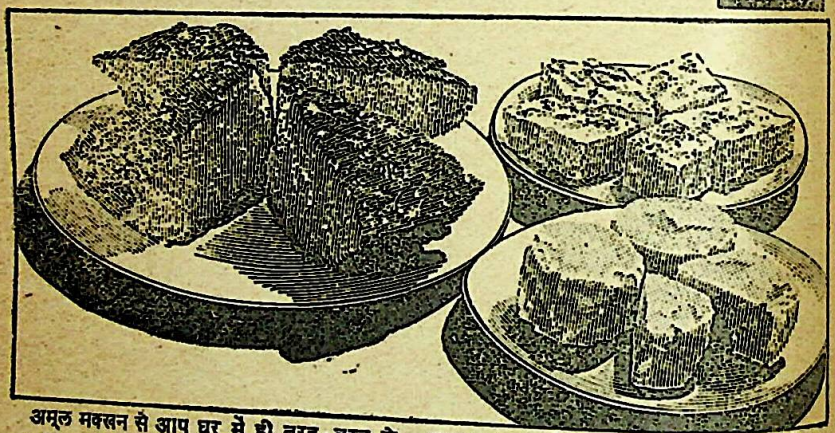

अमूल मक्खन से आप घर में ही तरह-तरह के व्यंजन बना सकते हैं, यह जान कर आप बेहद खुश होंगे। अमूल मक्खन की चीज का स्वाद व लुत्फ निराला ही होता है। आप अमूल मक्खन में स्वादिष्ट केक, बिस्किट, हांडवो, घारी धोकड़ा मजे से बना सकते हैं। और यह भी याद रखें कि अमूल मक्खन में बनी हर चीज अधिक पौष्टिक होती है। शुद्ध व ताजी क्रीम से बना अमूल मक्खन शक्तिवर्धक विटामिन 'ए' और 'डी' से भरपूर है – हर रोज सिर्फ पांच घंटे में दूध से पैकटबंद मक्खन अमूल ही बनाते हैं और अमूल मक्खन बढ़ते हुए बच्चों के लिए वरदान है।

डेअरी जैसी ताज़ी... शुद्ध क्रीम...

अमूल मक्खन

अमूल हर स्वाद-पदार्थ को लाजवाब पौष्टिक बनाता है

एक खेड़ा सहकारी उत्पादन—लाजवाब

खेड़ा जिला सहकारी दूध-उत्पादक संघ लि., आणंद

CAS/KMP.32 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्कार ! एक स्क्रू भी कम नहीं है । कोई विश्वास ही नहीं करेगा । तुम्हें मालूम है, क्लूबिन ने ही यह शैतानी की थी । वह मेरा रुपया हड़पना चाहता था । इसीलिए उसने जहाज को नष्ट कर डाला ।"

गिलियत चुपचाप मेस लेथेरी की ओर देखता रहा ।

वे उसे अपने कमरे में ले आये । गिलियत ने चुपचाप चमड़े का बैग और लोहे की पेटी उनकी ओर बढ़ा दी । लेथेरी मारे खुशी के चीखने लगे –" बेटे, तुमने मेरी मशीन ही नहीं ला दी । मेरा रुपया भी ले आये । यह कमरपट्टा क्लूबिन का ही है । मैं उसका नाम अच्छी तरह पढ़ सकता हूं । अब जल्द ही दुरांदे वापस बन जायेगा । तुम मेरी भतीजो देरुचेते से ब्याह करोगे ! निश्चित रूप से ।"

गिलियत दो कदम पीछे हट गया । मारे घबराहट के उसके मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी । एक तरह से वह कांप रहा था। उसने किसी तरह कहा –"नहीं, मैं उसे प्यार नहीं करता !"

"क्या कहा ? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या ! तो क्या मुझसे मुहब्बत थी तुम्हें कि तुमने यह असंभव काम कर डाला ? किस मुसीबत के साथ तुमने दिन गुजारे होंगे, कुछ-कुछ अंदाज कर सकता हूं । तुम जैसा ही आदमी मुझे चाहिये, जो देरुचेते का हाथ थाम सके । नये बननेवाले दुरांदे जहाज के कप्तान भी तुम्हीं बनोगे ।"

धीरे-धीरे उनके कमरे में गांव के लोगों की भीड़ जमा होने लगी । मेस लेथेरी का बोलना खत्म नहीं हो रहा था । बोले– "यह रहा बहादुर नौजवान ! मेरे दोस्तो ! आप सबको खबर मिल गयी होगी । दुरांदे की पूरी मशीनरी सही-सलामत लानेवाला यही आदमी है । गिलियत, जियो बेटे, जियो ।"

इसके बाद लेथेरी ने पादरी रेवरेंड एवेंजर को अपने पास बुलाकर कहा– "आप भी यहां मौजूद हैं । बड़े मजे की बात है । इन दोनों का ब्याह करने की व्यवस्था आपको ही करनी होगी ।"

नौकरानी टेबल पर दो मोमबत्तियां जला गयी थी । उस पीली रोशनी में गिलियत का पूरा शरीर दिखाई दे रहा था ! जर्जर मगर तेजस्वी ।

लेथेरी ने कहा –"यह है मेरा जवांई । देखो, किस तरह इसने समुद्र मथ डाला ! क्या हालत हो गयी है इसकी ! लेकिन क्या कंधे हैं इस नौजवान के, कितनी मजबूत भुजाएं ! कितनी दिलेरी ! कितना साहस ! बेटी देरुचेते, तुम्हारे लिए इससे बढ़िया दूल्हा मैं सारी धरती पर ढूंढ़ता, तो भी नहीं मिलता ।"

लेकिन शायद देरुचेते सुन नहीं रही थी । वह कांप कर, बेहोश होकर एक ओर लुढ़क गयी । रेवरेंड ने हाथ का सहारा देकर उसे संभाला ।

दूसरे दिन दाढ़ी साफ करवाकर, साफ-स्वच्छ कपड़ों में गिलियत समुद्र के किनारे पहुंच गया । देरुचेते रेवरेंड एवेंजर को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी के शानदार व्यक्तित्व में निखार...

कपड़ों से ही व्यक्ति की रुचि, उसकी सफलता... और उसके विशिष्ट व्यक्तित्व का पता चलता है। उसका प्रेय है शक्ति की 'टैरिलिन' सूटिंग को। शक्ति की 'टैरिलिन' सूटिंग शर्टिंग्ज धोओ और पहिनो की स्वाहि- वाले कपड़े हैं, जो आयात किये हुए 'टैरिलिन' पॉलीस्टर से तैयार किये हैं। पहिनने में मजबूत और टिकाऊ क्रीज-अवरोधक। परीक्षित पक्के आरामदेह। हर स्थिति में साज- पहिनने योग्य

पोद्दार
प्राडक्ट

Shakti Silk

'टैरिलिन' सूटिंग्ज और शर्टिंग्ज। रेयान सूटिंग्ज। क्रेप्स। टाफेटाज़। साटन। ब्रोकेड्स। नायलॉन्स और रे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विदा करने के लिए आयी थी। वे लंदन जा रहे थे। सामने जहाज उनका इंतजार कर रहा था।

मुस्कराकर, दोनों का अभिवादन करते हुए गिलियत ने कहा—"तुम उन्हें अलविदा क्यों कर रही हो? तुम दोनों एक दूसरे को प्यार करते हो। दोनों शादी कर लो। पति-पत्नी बन जाओ। फिर साथ ही चले जाना।"

जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। देरुचेते ने आंसुओं से भरी कृतज्ञ आंखों से गिलियत की ओर देखा।

गिलियत इन दोनों का हाथ पकड़कर पास के चर्च में ले गया। अपनी उपस्थिति में उसने दोनों का ब्याह करवा दिया। इसके बाद दोनों को विदा करने के लिए वह फिर समुद्री बंदरगाह पर लौट आया।

रेवरेंड ने कहा—"एक बार सामनेवाली चट्टानी कुर्सी पर बैठे-बैठे मैं सो गया था, उस दिन इसी नौजवान ने मेरे प्राण बचाये थे और आज फिर इसी ने मेरे प्राण मुझे लौटा दिये; लेकिन भगवान जानता है कि किस कीमत पर।"

जब नव-विवाहित दंपति जहाज पर सवार हो गये, तो गिलियत समुद्र के किनारे-किनारे अपने घर की ओर लौट आया। समुद्र उतार पर था। चट्टानी रास्तों पर चलते-चलते, वह पत्थर के उसी प्राकृतिक राज-सिंहासन के पास पहुंच गया, जहां उसने एक दिन रेवरेंड के प्राण बचाये थे। वह जाकर कुर्सी पर बैठ गया। और जाते हुए जहाज की ओर एकटक देखता रहा। नीचे समुद्री पानी का ज्वार चढ़ रहा था। उसे पता ही नहीं चला, कब उसके पांव पानी में डूब गये। जहाज धीरे-धीरे नजरों से ओझल हो रहा था। अब क्षितिज के उस पार सिर्फ एक काला-सा दाग-भर दिखाई दे रहा था। धीरे-धीरे पानी बढ़ने लगा। घुटने डूब गये। कंधे भी। गिलियत अभी भी क्षितिज के उस पार के एक काले धब्बे की ओर देख रहा था। समुद्री चिड़ियां गिलियत के मस्तक पर चक्कर काटने लगीं। चीखने-चिल्लाने लगीं। लेकिन गिलियत का ध्यान भंग नहीं हुआ।

संध्या होने आयी। जहाज दृष्टि से ओझल हो गया। गिलियत का मस्तक भी समुद्र की बढ़ती हुई ज्वार की लहरों में विलुप्त हो गया। ★

सत्य उसे मिलता है, जिसकी आत्मा शांत और गहरी होती है, समुद्र के अंतराल की तरह। समुद्र की ऊपरी सतह की तरह, जो विक्षुब्ध और तूफानी होता है, उसके अंतर्द्वंद्व में चाहे कितनी ही गूंज-गरज हो, लेकिन सत्य की शांत अमृतमयी आवाज नहीं होती।

—धर्मवीर भारती [गुनाहों का देवता]

प्रेषक—बसंतकुमार

डाक्टर प्रायः ऐसी दवाइयां देते हैं, जिसका उन्हें क—ख—ग भी नहीं मालूम। ऐसे रोगों के लिए, जिनका उन्हें क—ख भी नहीं मालूम... और ऐसे रोगियों को, जिनका वे कभी नहीं जानते।

—वाल्तेयर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीडा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद मे ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

खास जनता

किरासन कुकर

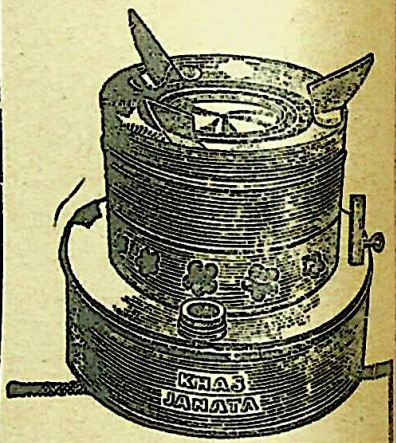

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA. OM. 35 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यूगिनी नरभक्षियों का द्वीप

हम ऐसे संसार का स्वप्न देखते है, जिसमें सारी मानव जाति सभ्य होकर सुख-शांति से रहे। जहां सभ्य कहलानेवाले मनुष्य ने संसार को आणविक संहार के द्वार पर खड़ा कर रखा है, वहां असभ्य कहे जानेवाले मनुष्य, मनुष्य को ही अपना सर्वोत्तम आहार मानते हैं। उसे मार-खाकर उसकी खोपड़ी अपनी बल्लियों पर लटकाये फिरना उनके लिए वीरता और गौरव का विषय है। यहां प्रस्तुत है उस असभ्यता की एक झांकी।

जान गाडविन

दक्षिणी न्यूगिनी की फ्लाई नदी के निकट स्थित एक काफी के बगीचे का उद्घाटन हो रहा था। लंबी बल्लियों पर नारियल बांधे, वहां के आदिवासी जब हमारे सामने से गुजरे, तो मैंने पास खड़े हुए डच मिशनरी से कहा—"इन नारियलों का प्रयोग क्यों किया जाता है? शायद ये उर्वरता के प्रतीक हैं!"

मुस्कराते हुए, उदास स्वर में मिशनरी ने कहा—"नहीं, मित्र। ये उन चीजों के प्रतीक हैं, जिन पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया है—आदमी की खोपड़ियों के!" इस एक वाक्य में उस मिशनरी ने अणुयुगी न्यूगिनी की तस्वीर खींच दी।

आस्ट्रेलिया के उत्तर में स्थित न्यूगिनी विश्व का तीसरा विशालतम द्वीप है। अभी भी इसका बहुत-सा भाग सभ्य संसार की जानकारी से परे है। इसके समुद्र-तट के निकट बसे आदिवासी तो आधुनिक ढंग की छोटी नावें चलाते हैं; लेकिन भीतर के इलाकों के निवासियों ने अभी पहिया भी नहीं देखा होगा। इसके नगरों में रहनेवाले कोका-कोला पीते हैं; पर अंदरूनी प्रदेशों के बाशिंदे अपने शत्रु को मारकर उसके लाल-लाल खून का आस्वादन करते हैं।

इस समारोह से पूर्व भी मैं न्यूगिनी में एक विचित्र दृश्य देख चुका था। हालैंडिया नगर में सार्वजनिक छुट्टी के दिन, आग से तपे पत्थरों से भरे एक गढ़े में ३०० आदिवासी नंगे पांव चल रहे थे। इनमें से कुछ स्कूटरों पर चढ़कर आये थे और उन्होंने काले चमड़े की जाकेटें पहन रखी थीं, जिन पर विख्यात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मॉडल पी टी-७७५
रु. ३२८.००

चमड़े का केस रु. २०.०० अलग

नेशनल एक्को

का नये से नया ट्रान्सिस्टर

आप जहाँ भी जाएँ, जहाँ भी हों, आपका मनोरंजन आपके हाथ में! नेशनल-एक्को का नया पोर्टेबल ट्रान्सिस्टर इधर-उधर ले जाने के लिए ही ख़ास तौर से बनाया गया है। सैर-सपाटे या यात्रा के समय या फिर फ़ुरसत के वक़्त यह हल्का-फुल्का और मज़बूत ट्रान्सिस्टर आपके लिए बड़ा ही अच्छा साथी साबित होगा। आज ही अपने पासवाले नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ इसे मुफ़्त बजवाकर सुनिए!

मॉडल पी टी – ७७५ : ७ ट्रान्सिस्टर २ डायोड; ३ बैण्ड; ख़ास डिज़ाइन का लाउडस्पीकर; सेट के अन्दर ही फेराइट रॉड और फ़्रेम एरियल। सफ़ेद और रॉयल ब्ल्यू रंग की प्लास्टिक की कैबिनेट, जिसमें बाहरी एरियल लगाने का सॉकेट भी है। क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है; टैक्स अलग।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज लि.
बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • सिकन्दराबाद • पटना

नेशनल एक्को मॉन्सूनाइज़्ड रेडियो

भारत की सबसे बड़ी रेडियो फ़ैक्टरी में बनते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीकी गायक-अभिनेता एल्विस प्रेसली का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में अंकित था।

पिछले वर्ष न्यूगिनी के आस्ट्रेलिया - शासित ११,७३८ वर्गमील प्रदेश पर से प्रवेश-निषेध की आज्ञा हटाने की घोषणा की गयी। इस घोषणा का अर्थ यह है कि यदि आपको घनघोर जंगल में कच्ची पगडंडियों पर चलने का शौक हो, तो आप वहां जा सकते हैं– वशर्ते आपको इस बात की चिंता न हो कि कोई आपको लक्ष्य बनाकर तीरंदाजी का अभ्यास कर सकता है। लेकिन अभी भी समूचे ब्रिटेन-जितने क्षेत्रफल का एक इलाका इस द्वीप में है,जहां आप गये कि तीरों का निशाना बने। इस इलाके का विवरण आपको दुनिया के किसी भी मानचित्र में नहीं मिलेगा। कारण सीधा है, अभी तक किसी सभ्य मनुष्य को यहां कदम रखने का साहस ही नहीं हुआ है। यहां के आदिवासियों ने किसी सभ्य व्यक्ति के दर्शन नहीं किये।

कुछ दिन पहले, जब हालैंड और आस्ट्रेलिया के गोरे नृतत्वशास्त्रियों के एक दल ने साहस करके इस प्रदेश की सीमा पर एक गहरी घाटी में प्रवेश किया, तो वहां के निवासियों ने गीली उंगलियों से सदस्यों की त्वचा को रगड़-रगड़कर उनका सफेद रंग उतारने का प्रयत्न किया था।

सीमावर्ती क्षेत्रों में कभी-कभी पादरी लोग जाते रहते हैं। यहां के आदिवासियों से उनकी बातचीत का एक नमूना देखिये। एक आदिवासी साहब, जिनकी बांह पर फोड़ा हो गया था, एक गोरी मिशनरी सिस्टर के पास आये और अपना फोड़ा दिखाकर पूछने लगे–"यदि मैं तुम्हें इसका इलाज करने दूं, तो मुझे क्या दोगी?"

सिस्टर चकित रह गयी। उसने कहा–"देना कैसा ? हम तो इलाज पूरा होने पर कुछ नहीं देते।"

"तो फिर मैं अपना फोड़ा वैसा ही ले जाता हूं।" कहकर वह मुड़ा और वापस जाने लगा। सिस्टर की हैरानी का कोई ठिकाना न था। उसने पूछा–"तुम इलाज कराने के बाद हमसे कुछ और पाने की आशा क्यों रखते हो ?"

इस पर आदिवासी बोला–"हां, तुम गोरे लोग हमेशा हमसे प्रार्थना करते रहते हो न कि हम अपने फोड़ों का इलाज तुमसे करायें। सो तुमसे इलाज कराके मैं तुम पर एहसान ही तो कर रहा हूं। उसके बदले में मुझे कुछ मिलना तो चाहिये।" इतना कहकर वह बिना रुके वापस चला गया।

इन अंदरूनी घाटियों के लोग सदा आपस में लड़ते-भिड़ते रहते ह। दो जातियों में तो युद्ध होते ही हैं, एक ही जाति की उपजातियों तथा उपजातियों की खांपों में भी लड़ाइयां होती रहती हैं। निकटतम पहाड़ी पर भी जाना जान का खतरा मोल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेना है। आज तक ऐसा नहीं हुआ कि कोई सभ्य इंसान उस क्षेत्र की सीमा पर पूरा एक दिन रहकर जीवित लौट आया हो।

इन लोगों के बीच वीरता की ख्याति प्राप्त करने का नुस्खा बहुत सीधा है। रात को चुपके-से पास के गांव में चले जाइये, किसी झोंपड़ी में आग लगा दीजिये और जब झोंपड़ी के निवासी उसके छोटे-से द्वार से बाहर निकलने लगें, तो बाण चला-चलाकर उन्हें परलोक पहुंचा दीजिये। लीजिये, आपको न्यूगिनी का परमवीर चक्र प्राप्त हो गया।

यहां ऐसी जातियां भी मौजूद हैं, जो अपने शत्रुओं को मारकर खा जाती हैं। कुछ जातियों के सदस्य अपने शिकारों के सिर काटकर उन्हें सुखाकर रख लेते हैं। शत्रुओं की हड्डियां सुखाकर उन्हें आभूषणों की भांति नाक और कानों में पहनने के शौकीन भी बहुत हैं। और शत्रु कोई भी हो सकता है—अपना पड़ोसी, अपने पास के गांव का बाशिंदा, वैज्ञानिक दल का सदस्य, आस्ट्रेलियाई पुलिस का सिपाही। एक ही शर्त है—वह इक्का-दुक्का घूम रहा हो। ये लोग अपने सिवा सबके दुश्मन हैं। सबसे दुश्मनी करना इनका जन्मसिद्ध अधिकार है।

क्षेत्रफल में न्यूगिनी ब्रिटेन से चार गुना बड़ा है। उसका पश्चिमार्द्ध अभी कुछ साल पहले तक हालैंड के अधिकार में रहा। पूर्वी भाग अब भी आस्ट्रेलिया के अधिकार में है। दोनों भागों की सीमा अभी तक अनिश्चित ही है।

आस्ट्रेलिया द्वारा शासित भाग को पापुआ तथा न्यूगिनी कहा जाता है। १९०६ में ब्रिटेन ने पापुआ को नवस्थापित आस्ट्रेलिया को सौंप दिया। १९१४ में आस्ट्रेलियाई सेना ने जर्मनों से उत्तर-पूर्वी न्यूगिनी को जीत लिया। पिछले तीस वर्ष से जर्मन लोग इस भाग के स्वामी थे। आस्ट्रेलिया ने सब स्थानों के जर्मन नाम बदल कर अंग्रेजी नाम रखे। केवल बिस्मार्क पर्वत-श्रेणी का नाम नहीं बदला गया।

आस्ट्रेलियनों ने बस इसके अलावा इस क्षेत्र के लिए कुछ नहीं किया। उनके डच पड़ोसी भी उनके समान ही आलसी और निष्क्रिय रहे। उनका सारा ध्यान जावा और बोर्नियो का शोषण करने में ही रहा। उनकी दृष्टि में न्यूगिनी का महत्व इन दोनों प्रदेशों से अधिक न था।

परंतु नृतत्वशास्त्रियों के लिए न्यूगिनी वरदान सिद्ध हुआ। वहां के २५ लाख के करीब निवासी पांच सौ से अधिक भाषाएं बोलते हैं तथा उनकी जातीय तथा सांस्कृतिक रीतियों और प्रथाओं में भी बड़ा अंतर है। दक्षिण भाग के नरभक्षक आदिवासी आधुनिक सभ्यता के प्रभाव से बिलकुल अछूते हैं, जबकि हालैंडिया तथा मोर्सबी के छैले राक-एन-रोल की धुनों पर नृत्य करते हैं।

गोरे रंग के आदिवासी भी हैं तथा धुएं के समान काले मैंडीज भी हैं। लंबे-चौड़े और तगड़े ओरोकावस भी हैं और बंदरों-जैसे पर्वतवासी बौने कूकूक भी। कूकूकों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

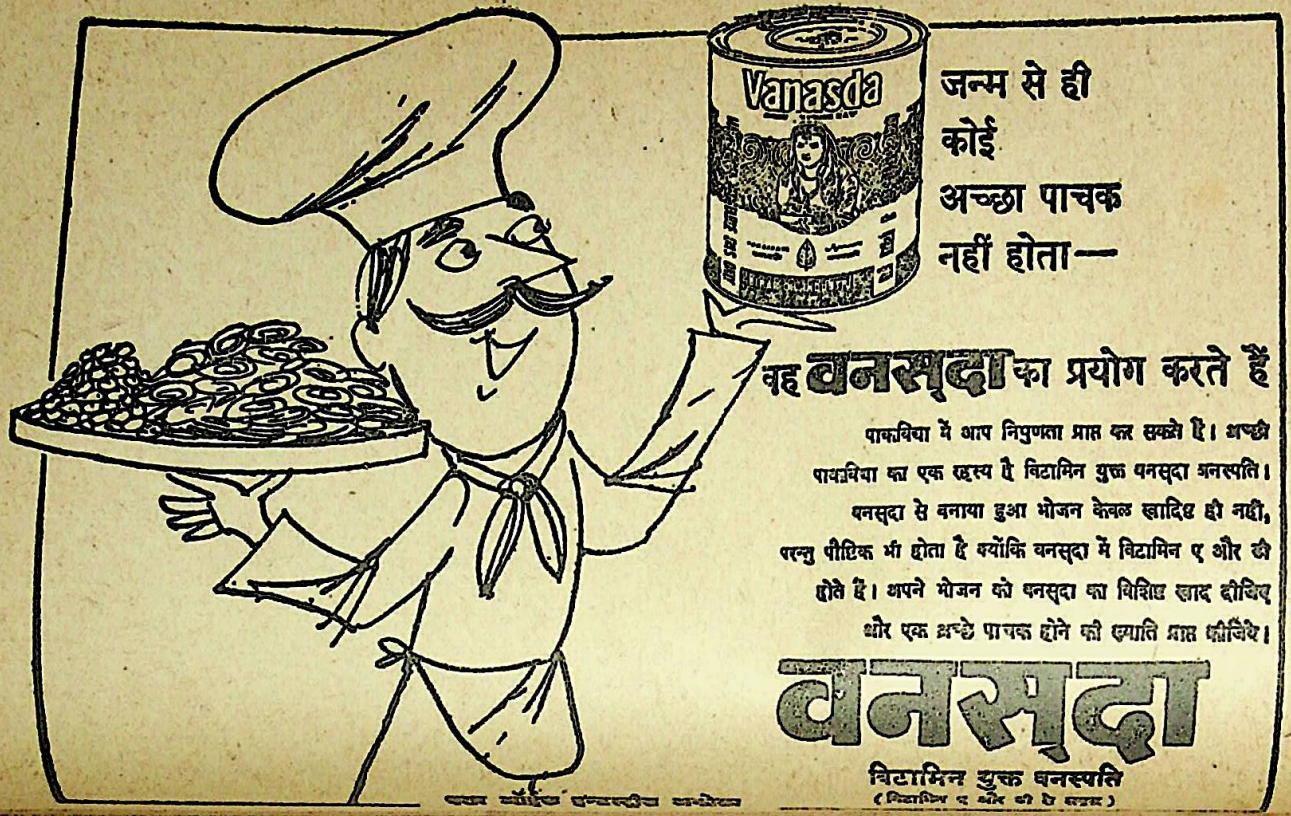

औसत ऊंचाई चार फुट होती है, फिर भी उन्हें बहुत ही खतरनाक और खूंख्वार माना जाता है। कारण यह है कि ये लोग 'श्रेष्ठ सूअर' अर्थात् मनुष्य का गोश्त बहुत पसंद करते हैं।

सन १९५६ में आस्ट्रेलिया के पुलिस-दल का एक कर्मचारी जैक मेटर अपने साथियों के साथ एक हत्यारे की खोज में कूकूक लोगों के किवोग्वोंगा गांव में गया था। हत्यारे ने भागने की कोशिश की; पर जैक मेटर ने उसे पकड़कर बंदी बना लिया। अगले दिन एक बूढ़ी कूकूक मेटर के पास एक सूअर लायी और बोली—" मेरे बेटे के गोश्त के स्थान पर तुम लोग इस सूअर का गोश्त खा लेना।" उसे पूरा विश्वास था कि पुलिस का आदमी उसके बेटे को खा जायेगा। नहीं तो फिर वह उसे पकड़ता ही क्यों ?

द्वितीय महायुद्ध में न्यूगिनी को सामरिक महत्व मिल गया। आरंभ में जापानियों ने तीन-चौथाई द्वीप पर अधिकार कर लिया। बाद में अमरीकियों व आस्ट्रेलियनों ने उन्हें वहां से खदेड़ा। युद्ध के बाद डच ईस्ट इंडीज ने इंडोनेशिया प्रजातंत्र का रूप धारण किया। हालैंड जैसे-तैसे न्यूगिनी में डटा रहा।

लेकिन जब इंडोनेशिया ने उस पर अपना दावा पेश किया, हालैंड का ही नहीं, बल्कि आस्ट्रेलिया का भी माथा ठनका। दोनों ने न्यूगिनी का शासक होने की नये सिरे से घोषणा की। धन और यंत्र लेकर गोरे वैज्ञानिक, शिल्पी, प्रशासक तथा मिशनरी न्यूगिनी में आने लगे। सड़कें बनीं, हवाई अड्डे बने। आदिवासी जीप और ट्रैक्टर चलाने लगे। दोनों भागों की राजधानियों यानी हालैंडिया और मोर्सबी ने आश्चर्य-जनक रूप से प्रगति की।

यहां की मैंडीज जाति का आंतरिक शासन बड़ा अद्भुत है। ये लोग न किसी मुखिया को मानते हैं, न बड़ों को। सारे निश्चय सदस्यों के बहुमत से किये जाते हैं। किसी को हुक्म चलाने का अधिकार नहीं है। और कोई सामूहिक आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकता। जाति के आदेश को न माननेवाला या तो बिरादरी से निकाल दिया जाता है, या मार डाला जाता है।

मोटरों के आवागमन के लिए बनायी गयी नयी सड़कों से कुछ कदम आगे चलते ही आपको कोई आदिवासी औरत मिल जायेगी, जिसके सारे शरीर पर गोदना गुदा होगा, तथा जिसके एक स्तन से उसका बेटा दूध पी रहा होगा और दूसरे स्तन से सूअर का कोई बच्चा। कुछ मील और आगे चल-कर जंगल का साम्राज्य आरंभ हो जाता है, जिसके अपने नियम हैं, अपनी प्रथाएं हैं।

पांच हजार फुट ऊंचे इस पहाड़ी इलाके में सारे वर्ष अनवरत वर्षा होती रहती है। विशाल वृक्षों पर विचित्र आकारों की गाढ़ी काई जमी रहती है। कोई नहीं जानता कि वहां लोग और पशु कैसे रहते हैं। न्यूगिनी की इस हरित अधित्यका में सभ्य संसार का अंतिम अज्ञात प्रदेश बसा हुआ है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

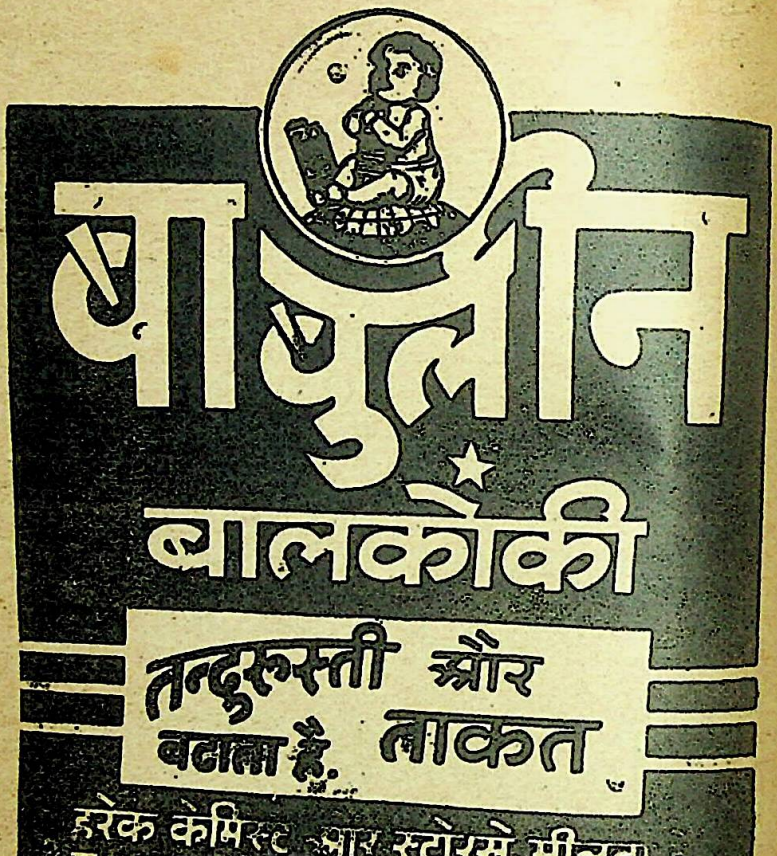

बी० ए० एंड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०

कलकत्ता, पटना और गोहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की सीख

स्वामी शिवानंद

मेरी मान्यता है कि अनावश्यक वाद-विवादों से धर्म का मर्म न तो समझा जा सकता है, न समझाया जा सकता है। लगातार उपदेश छांटते रहने से भी धर्म की प्रस्थापना नहीं की जा सकती। हमें अपनी परिस्थिति के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना सीखना होगा। ईश्वर की सृष्टि के रहस्य को बड़े गंभीर रूप से समझना होगा। पाखंड अथवा वाद-विवाद से नहीं, अपितु धर्मानुमोदित जीवन बिताते हुए ही धर्म का रहस्य समझ में आता है। मैं तो समझता हूं कि व्यक्ति का चाहे कोई भी धर्म हो, उसका कोई भी आराध्य महापुरुष हो, उसका कोई भी देश या भाषा हो, वह स्त्री हो या पुरुष, छोटा हो या बड़ा, अगर वह आत्म-संयम रूपी तपस्या के पवित्र अर्थ को समझता है और जीवन के किसी भी क्षेत्र या परिस्थिति में रहते हुए उसे अपने आचरण में परिणत कर लेता है, तो वह धार्मिक है।

वास्तव में धर्म वही तो है, जिसे हमारा हृदय स्वीकार कर ले। विशुद्ध हृदय में सत्य, प्रेमादि का वास होता है। ये ही धर्म के स्वरूप हैं। इनके अतिरिक्त मानव में छिपा हुआ जो पशुत्व है, उसका हनन, मन का प्रशमन, सद्गुणों का विकास, निष्काम सेवा, सद्भावना तथा मैत्रीभाव आदि मिलकर वास्तविक धर्म का स्वरूप निर्धारण करते हैं।

आज के व्यस्त जीवन में न किसी चिंतक के पास इतना समय है, न इतना धैर्य ही है कि वह कठोर तपस्या और कर्मकांड में पड़ने जाये। इसी कारण उनमें से बहुतों पर से जनता का विश्वास भी उठ गया है। अतः आज की जनता को तपस्या का वास्तविक अर्थ समझाने के लिए ही मैंने दिव्य जीवन का प्रचार किया है। इस जीवन का एकांतसेवी से लेकर एकदम व्यस्त व्यक्ति तक अभ्यास कर सकता है—विवेकवान से लेकर अल्पज्ञ तक सबके प्रति यह अनुकूल हो सकता है। मेरे विचार से मनुष्य स्वयं अच्छा हो, और दूसरों के लिए अच्छा करे, यह जीवन की बहुत बड़ी सीख है। सब परिस्थितियों में सबके साथ समुचित रूप से अपने कर्तव्य का निर्वाह ही मनुष्य की अच्छाई का उत्तम आदर्श है। इसी को दूसरे शब्दों में ईश्वरीय जीवन भी कहते हैं।

★

नवनीत, नवंबर १९६४ में प्रकाशित 'मैं सर्वदर्शी बन गया' के लेखक पीटर हर्कोस का पता यों है: Mr. Peter Hurkos, C/o Peter Hurkos & Associates Foundation Inc., Milwaukee (Wisconsin), U. S. A..

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम चार

रूसी कवि रसूल रजा की एक कविता का रूपांतर।

एक समय की बात
आधी रात के सन्नाटे में
हम चार
आशा, संशय, शोक और मैं
मिल गये एक साथ
भयंकर आधी रात
उस पर झंझावात
बिजली की कड़क
और मूसलाधार बरसात
कहा आशा ने –
वर्षा थम जायेगी,
आंधी का दम भी टूट जायेगा।
रात की सांसें हैं ही कितनी ?
पूरब के सुनहरे आकाश पर
अभी आयेगी बारात
सूरज की,
संशय बोला
मगर कब ?
कौन जाने ?
हवा फिर से बन जाये बवंडर
वर्षा की बूंदें गोले बनकर
बरसें धरती पर
रात की अंधियारी
छा जाये मृत्यु बनकर
कौन जाने ?
शोक ने कहा

वर्षा भले ही थम जाय
सूरज का उजियाला
भले ही फैल जाय गगन में,
मगर वह भी कैसे
मेरे मन के एकांत में
कराहती आह को
कर सकेगा चुप ?
इसी तरह देर तक
आशा देती रही दिलासा
संशय करता रहा तर्क
हृदय लेता रहा सिसकियां
और मैं ?.....
मैं सुनता रहा
सबकी बातें चुपचाप प्रतीक्षा में
प्रभात की, सुनहरे प्रभात की
मैंने कुछ न पूछा
कि वह कब आयेगी ?
क्या लायेगी ?
आखिर
सुनसान खामोशी की एक घड़ी म
मैंने देखा
पूरब के आकाश
पर छा गयी लाली
आशा ने कहा –
बोलो अब बोलो।

रूपांतरकार : सोमपायी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

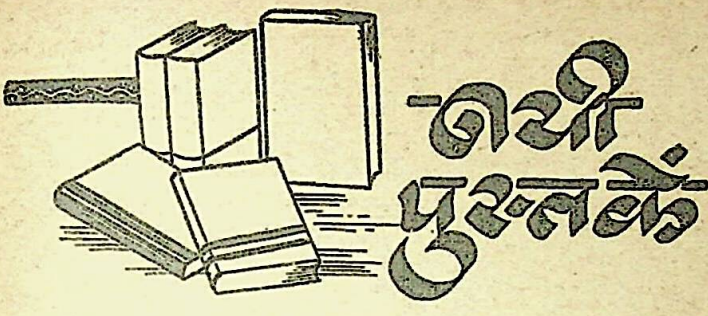

चौरंगी

लेखक : शंकर, अनुवादक : राजकमल चौधरी, प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, प्रा० लि०, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : ५२८; मूल्य : ग्यारह रुपये ।

मानव अपने उदय से आज तक जीवन को सुखमय बनाने का अनवरत प्रयास करता आया है । संस्कृति और सभ्यता के भव्य कीर्ति-स्तंभ खड़े करनेवाला धरती का सर्वोत्तम प्राणी—मनुष्य—सुख की खोज में आज कहां आ पहुंचा है—बंगला के वरिष्ठ लेखक शंकर ने अपने उपन्यास 'चौरंगी' में ऐसे ही एक स्थान का वृहत् चित्र प्रस्तुत किया है।

इसमें दो मत नहीं हो सकते कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य आनंद है । मुसीबत यह है कि इस लक्ष्य को पाने के संबंध में मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्नावाली उक्ति चरितार्थ होती है । यही नहीं, सुख की प्राप्ति के लिए दौड़ते हुए मनुष्य ऐसी भगदड़ मचाये हैं, अपने-अपने 'सुख' को पाने को इस कदर लपक रहे हैं कि इस आपाधापी में सीधे-सादे मनुष्य की तो कभी बारी ही नहीं आ सकती । उसके लिए यह धरती नरक हो गयी है । सुख की तलाश ने मनुष्य को इतना अविचारी बना दिया है कि स्वयं सुख आज विडंबना बन गया है ।

कलकत्ता नगर की रंगस्थली चौरंगी में स्थित है एक होटल शाहजहां । आधुनिक जीवन की क्रीड़ास्थली है यह । इस विशाल आधुनिकतम पांथशाला के पंथियों और कर्मचारियों की गतिविधियों के माध्यम से लेखक ने आज के एक विशिष्ट समुदाय का वर्णन किया है । सभ्य-सभ्रांत कुलीन कहे जानेवाले लोगों से लेकर असभ्य-अशिक्षित लोगों तक का जीवन इस उपन्यास के दर्पण में देखा जा सकता है । लगभग सारे पात्र यथार्थ हैं । मेरे एक कलकत्तावासी मित्र ने बताया था कि इन पात्रों में से बहुतों से, जो अब भी जीवित हैं, आप चाहें तो मुलाकात कर सकते हैं । कुछ पात्रों ने तो इस उपन्यास को पढ़ा भी है और अपन जीवन का ऐसा सही-सच्चा वृत्त पढ़कर दंग रह गये हैं ।

लगता है, लेखक ने यह उपन्यास पहले स्वयं जिया है, बाद में लिखा है । किंतु यह कोई इतिवृत्तात्मक वृत्तांत नहीं है । कथा-विन्यास जिस भाव-भूमि पर खड़ा किया गया है, जब हमारी अंतर्दृष्टि उस पर जाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, तो जीवन और जगत् के कलात्मक ताने-बाने के रूप में यह उन्यास मन को अद्भुत आलोक से जगमगा देता है।

कहा जाता है कि दुनिया एक सराय है। मनुष्य-यात्री यहां आते हैं, कुछ क्षण विश्राम करते हैं, और चले जाते हैं। शाहजहां होटल उसी सराय का प्रतीक है, सारे पात्र-यात्री जब तक इसमें ठहरते हैं, अपनी लीला दिखाते हैं। अवश्य ही इनमें ऐसे यात्री बहुत हैं, जिनकी कुत्सित, बीभत्स गतिविधियों ने लेखक के मन को विक्षोभ से भर दिया है, किंतु ऐसे पात्र भी हैं, जो देखने में हाड़-मांस के और सीधे-सादे हैं; पर उनके कृत्य देव-तुल्य हैं। मानव जीवन को वे ही अधिक अभिभूत और अनुप्राणित करते हैं।

राजकमल चौधरी ने अनुवाद काफी अच्छा किया है; पर वे भाषा को हिन्दी की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल नहीं ढाल सके हैं। क्लर्क या मुंशी के लिए किरानी जैसे शब्द का प्रयोग हिन्दी के प्रचलन में नहीं है। फिर भी एक बढ़िया उपन्यास को हिन्दी पाठकों तक पहुंचाने का उनका यह कार्य सर्वथा प्रशंस्य है।

प्यासा निर्झर

कवि : नरेंद्र शर्मा; प्रकाशक : समुदय प्रकाशन, बंबई ; पृष्ठसंख्या २४०; मूल्य : आठ रुपये।

पुस्तक में कवि की गत दस वर्ष में लिखी गयी १३४ कविताएं सग्रहीत हैं।

आज जबकि निरर्थक काव्य-सृजन की भरमार हो रही है, इस संग्रह में अच्छी रचनाओं का बाहुल्य है। सधा-बंधा शिल्प, सरस-ललित पदावली और भावानुभूति की तीव्रता तथा विविधता, इन कविताओं में सर्वत्र परिलक्षित होती है। कहीं-कहीं स्पष्टता भी है, तो दार्शनिक कथ्यों के प्रति और वह भी अपवाद स्वरूप।

कई गीतों में कवि ने दार्शनिक तथ्य को काव्य में बांधा है और ऐसा करते उसकी काव्य-प्रतिभा कुछ ऐसी मौलिक और कवि के अपने व्यक्तित्व की लिये हुए रही है कि हम कह सकते हैं उसकी कृतियां रहस्यवाद या छाया जैसे किसी भी वाद से ग्रस्त नहीं हैं। के गूढ़-गंभीर विषयों के अतिरिक्त सादी शृंगारमयी कृतियां भी इस संग्रह हैं, जिनमें सारल्य के साथ सरसता अपनी छटा है। पुस्तक का मूल्य लगता है।

युग-चिंतन

संकलन और रूपांतरकार : शरद देव प्रकाशक : रूपा एंड कंपनी, कलक पृष्ठसंख्या : १५९, मूल्य : छः रुपये।

हम अणु-युग में जी रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति की गति के समान ही हमारे रिक चिंतन की गति भी अणुयुगीन दर्शन, धर्म, साहित्य और कलाओं के क्षेत्र हमारी पूर्व-मान्यताओं और आस्था का बड़ी तेजी से विघटन हो रहा है। परागत मतों के खंडन और नये मतों मंडन का काम कुछ इस कदर हो रहा मानो हम नित्य नयी फैशन-परेड में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले रहे हों। इस परिवर्तन की दौड़ में– संक्रांति वेला में– सामान्य व्यक्ति के सामने एक विचित्र झमेला खड़ा हो जाता है। आखिर वह किसे छोड़े ? किसे ओढ़े ?

सौभाग्य से हमारे युग के कतिपय मनीषियों ने अपने-अपने चिंतन के क्षेत्र में पर्याप्त साधना की है और उनके सुचिंतित मतों में आज की जिज्ञासा को संतुष्ट करने और मार्ग-दर्शन देने की क्षमता है। जहां इस क्षमता का अभाव है,वहां विचारशील पाठक के सामने सोचने-समझने की सामग्री है, जो उसके लिए स्वमत निर्धारित करने में सहायक हो सकती है।

शरद देवड़ा ने इस शताब्दी के विख्यात दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, शिक्षा-शास्त्रियों, साहित्याचार्यों और लेखक-आलोचकों की पुस्तकों अथवा लेखों से यह संकलन तैयार किया है और इस चयन में उन्होंने बड़ी सूझबूझ से काम लिया है। फलस्वरूप, पुस्तक में विविधता और सरसता दोनों है।

जिन विद्वानों की मनीषा का इस पुस्तकमंजूषा में समावेश है, उनमें से कुछ एक के नाम ये हैं :

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, डा० बर्ट्रेंड रसेल, डा० हैवलाक एलिस, रेबेका वेस्ट, डा० अल्बर्ट श्वाइत्जर, डा० जुलियन हक्सले डा० कार्ल यास्पर्स, चार्ल्स बोदलेयर, माइकेल रावट्र्स, एलेन, रोब्व ग्रिल्लेत, विलियम कूपर, ताहा हुसैन, बोरिस पास्तरनाक, इलियट, आडेन, टामस, ओसामू, देजाई आदि।

पुस्तक में धर्म, पाप, सुख, कविता, आत्महत्या, आहत पीढ़ी, आत्म-हत्या, प्रणयिनी नारी, प्रभृति विषयों पर बड़े अनूठे विचार पढ़ने को मिलते हैं। संकलन में परस्पर विरोधी मतों को स्थान दिया गया है। ऐसे स्थलों को पढ़ते हुए वादविवाद गोष्ठी या डिबेट का सा आनंद आता है। ऐसे विचारकों के विचार भी पढ़ने को मिलते हैं, जिनसे भारतीय पाठक बहुत कम सहमत होंगे। उदाहरण, फ्रांसीसी लेखिका साइमन दे ब्यूवोय का 'नारी प्रणयिनी रूप में, तथा चार्ल्स बोदलेयर का लेख; लेकिन इन लेखों में पढ़ने और सोचने का मसाला इतना है कि इसके लिए भी इन्हें पढ़ना उपयोगी होगा।

अपने इस श्रम के लिए शरद देवड़ा बधाई के पात्र हैं। संकलन अंग्रेजी से हिन्दी में रूपांतरित है। रूपांतर में भाषा काफी साफ-सुथरी है; पर कहीं-कहीं अजीब से शब्दों का प्रयोग है, जैसे–कैदिनी। हिन्दी शब्द बंदिनी का यह भद्दा अनुकरण है।

पुस्तक का आवरणपृष्ठ आकर्षक है और छपाई-सफाई उत्तम। –आलोक शीशोदिया

जब पुस्तक खरीदें

पुस्तक खरीदना तभी उत्तम होगा, यदि हम खरीदते समय उन्हें पढने का समय भी खरीद लें।

– शोपनहावर

पुस्तकों के साथ वैसा ही बरताव करना चाहिये, जैसा मनुष्य के साथ किया जाता है।

– वाल्तेयर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलका

यदि आप अपने दुखों का रोना रोये बिना न रह सकें, तो बजाय दोस्तों को 'बोर' करने के, अपने दुश्मनों को पकड़ें और उन्हें अपना 'कष्ट पुराण' सुनायें। वे उसे अच्छे श्रोता के समान सुनेंगे और रस लेंगे।

ईश्वर के भी शुभचिंतक !

पहलवान ठाकुर मलखान सिंह अपने इलाके के सबसे तगड़े पलवान थे। एक बार उन्हें एक दूसरे इलाके के मशहूर पहलवान ने चुनौती दी। वे दंगल में पहुंचने की तैयारी कर रहे थे कि उनसे किसी मित्र ने पूछा—"मेरे खयाल से आप मल्लयुद्ध से पहले ईश-प्रार्थना जरूर करते होंगे।"

"जी हां," उन्होंने कहा—" मैं प्रार्थना किया करता हूं कि किसी को चोट न लगे। यह भी प्रार्थना करता हूं कि दंगल भी खूब जोरदार जमे।"

"और यह प्रार्थना नहीं करते कि मैदान आपके हाथ ही रहे ?"

"नहीं, "उन्होंने कहा —" मान लो, मैं प्रार्थना करूं कि मैं जीतूं। उधर दूसरा पहलवान भी ऐसी ही प्रार्थना कर सकता है। उस हालत में बेचारे भगवान क्या चक्कर में नहीं पड़ जायेंगे ?"

बालकुंज : शीशगंज !

बालक के सिर पर बालों का घना था; पर उसने देखा कि पिताजी के पर सपाट मैदान है।

कारण जब खुद-ब-खुद उसकी समझ में न आया, तो वह पूछ बैठा—"आप क्यों हैं पिताजी ?"

"इसलिए बेटा, कि मैं अच्छा लड़का था। और तुम्हारी दादी शाबाशी देने के लिए मेरा सिर थपथपाया करती थीं

विलक्षण दंतकथा !

व्यापार-मंडल के अध्यक्ष महोदय की हालत देखने लायक थी। हुआ यह था कि वे दावत खाने के बाद वाश-बेसिन में हाथ मुंह धो रहे थे कि उनकी नकली बत्तीसी का ऊपरी भाग बेसिन में अचानक गिर पड़ा और दो टुकड़े हो गया।

मंडल का वार्षिक मिलन-समारोह था। इसके लिए उन्हें विशेष रूप से विमान से बुलाया गया था। दावत के बाद उन्हें महत्वपूर्ण भाषण देना था। तमाम लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी कठिनाई को भांपते हुए एक अपरिचित सज्जन सहानुभूतिपूर्वक आगे बढ़े और पूछा –"क्या मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूं ?"

"आप ?" व्याकुल अध्यक्ष ने उन सज्जन की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा – "पंद्रह मिनिट में मुझे भाषण करना है। आप मुझे किस प्रकार मदद दे सकते हैं ?"

"संयोग की बात है कि मेरे पास एक अतिरिक्त वत्तीसी मौजूद है," अजनबी बोला–" मैं नहीं समझता कि वह आपके काम आ ही जायेगी; मगर इस हालत में उसे आजमाने में क्या हर्ज है ?"

"हो सकता है, यह काम दे जाये," अध्यक्ष ने अजनबी से वह वत्तीसी लेते हुए कहा–"डूबते को तिनके का सहारा होता है!" उसे मुंह में लगाते ही उनके मुखड़े पर हर्ष और अचरज की मुद्राएं देखते ही बनती थीं।

"कमाल है ! यह तो बिलकुल फिट बैठी। भई, क्या लाजवाब काम किया है आपने मेरे लिए। मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं ? भला, मैं आपसे कैसे उऋण हो सकता हूं ?"

"आप इसे मेरी शुभकामनाओं के साथ स्वीकार करें," अजनबी ने कहा–" मेरे पास दो और भी स्पेअर हैं।"

अध्यक्ष महोदय चकराये–"तो क्या आप हमेशा अपने साथ तीन सेट रखा करते ?"

"नहीं, हमेशा तो नहीं। हां, आज मैंने तीन ग्राहक पटाये हैं।"

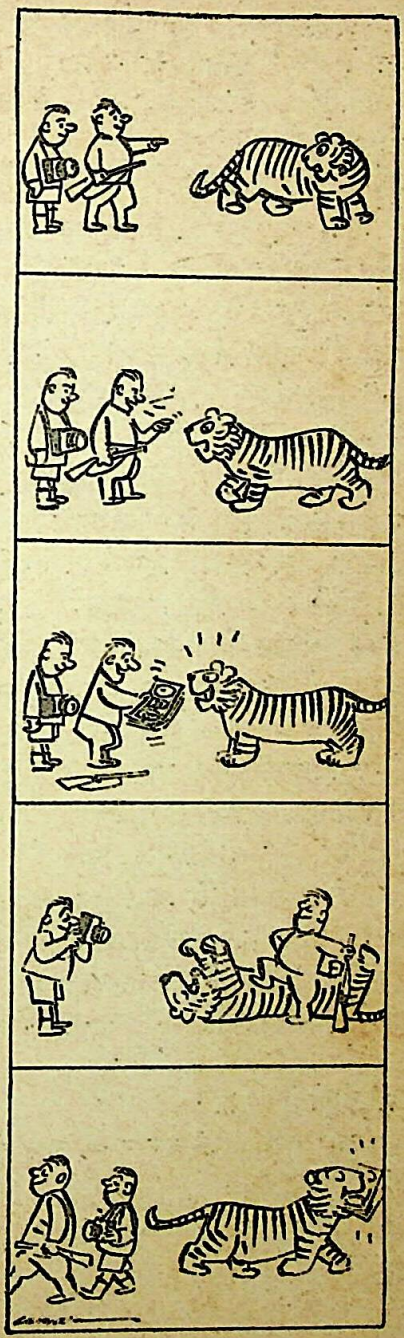

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ओहो! मैं अब समझा", अध्यक्ष महोदय मुस्कराये—"आप दांतों के डाक्टर हैं।"

"नहीं, अजनबी ने कहा—"मैं तो दांतों का व्यापारी हूं।"

इसे कहते हैं अफसर!

वीरेंद्र अहंकारी तो है ही, बतबना भी बहुत है। मगर आज उसके मित्रों को पता चला कि उसकी ऐंठ और ड गों में कोई दम नहीं है। वह अपने दो-तीन मित्रों के साथ गली के नुक्कड़ पर गपशप कर रहा था कि उधर से एक सींकिया साहब निकले। उन्हें देखते ही वीरेंद्र अपने मित्रों के कंधों का सहारा छोड़कर मानो 'अटेंशन' में खड़ा हो गया। इस पर भी साहब ने उसे तहजीब का लेक्चर पिलाया। आश्चर्य कि वह अकड़ू नौजवान उनके सामने आधे घंटे तक दुम दबाये खड़ा रहा। उनके जाते ही एक मित्र ने चुटकी ली—"यार,आज पता चला कि तुम कितने सुशील और सहनशील हो। क्या ये तुम्हारे पिताजी थे?"

"नहीं!" वीरेंद्र ने बताया

"तो क्या तुम्हारी भावी पत्नी के पिता थे? अभी से इतनी नसीहतें देने लगे हैं?"

"नहीं यार," वीरेंद्र ने अपने चेहरे से शरमाहट हटाने की चेष्टा के साथ कहा—"भाई, वह अपना 'बास' है।"

इसे कहते हैं दफ्तर!

मुंशी करमचंदजी दफ्तर की डाक लेने और उसे रजिस्टर में दर्ज करने की पर हैं। उस दिन की डाक में एक ऐसा आया था, जो उनके अधिकार व्यक्तिगत नाम था। उस पर उन्होंने शियल (संक्षिप्त हस्ताक्षर) किये और संबंधित अधिकारी के पास भेज दिया। कागज तुरंत मुंशीजी के पास लौट साथ में अधिकारी की यह टिप्पणी थी

यह कागज आपसे संबंधित नहीं कृपया अपने हस्ताक्षर मिटाइये और क्षर मिटाने के हस्ताक्षर कीजिये।

परिवर्तन मात्र का नाम!

"मेरे एक मित्र हैं," कवि कंचन ने बताया—"उन्हें कविता करना तो जाता नहीं; मगर अपनी कविता छपाने बड़ा शौक है। अपनी इस छपास की मिटाने के लिए वे पत्र-पत्रिकाओं के और संपादकों के यहां चक्कर काटते हैं। एक दिन मेरे पास उनका पत्र लिखा था—आपकी कविता मैंने एक पत्र में छपवा दी है। बस नाम मात्र परिवर्तन किया है उसमें।"

"वाह, तब तो वे परोपकारी भी हैं

"खाक परोपकारी हैं!" कंचन रहस्य खोला—"कुछ दिन बाद उस मैंने अपनी वह कविता देखी। वह मेरे उनके नाम से छपी थी—सचमुच नाम का परिवर्तन किया था उन्होंने!"

★

सैनिक के लिए युद्ध-भूमि में मरना और प्रेमी के लिए आहें भरना आसान नहीं है।

— ई० अ

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

मलिये
और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। **अमृतांजन** मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। **अमृतांजन** की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

IWT/AM 2817A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B 62

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरवरी

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९६५

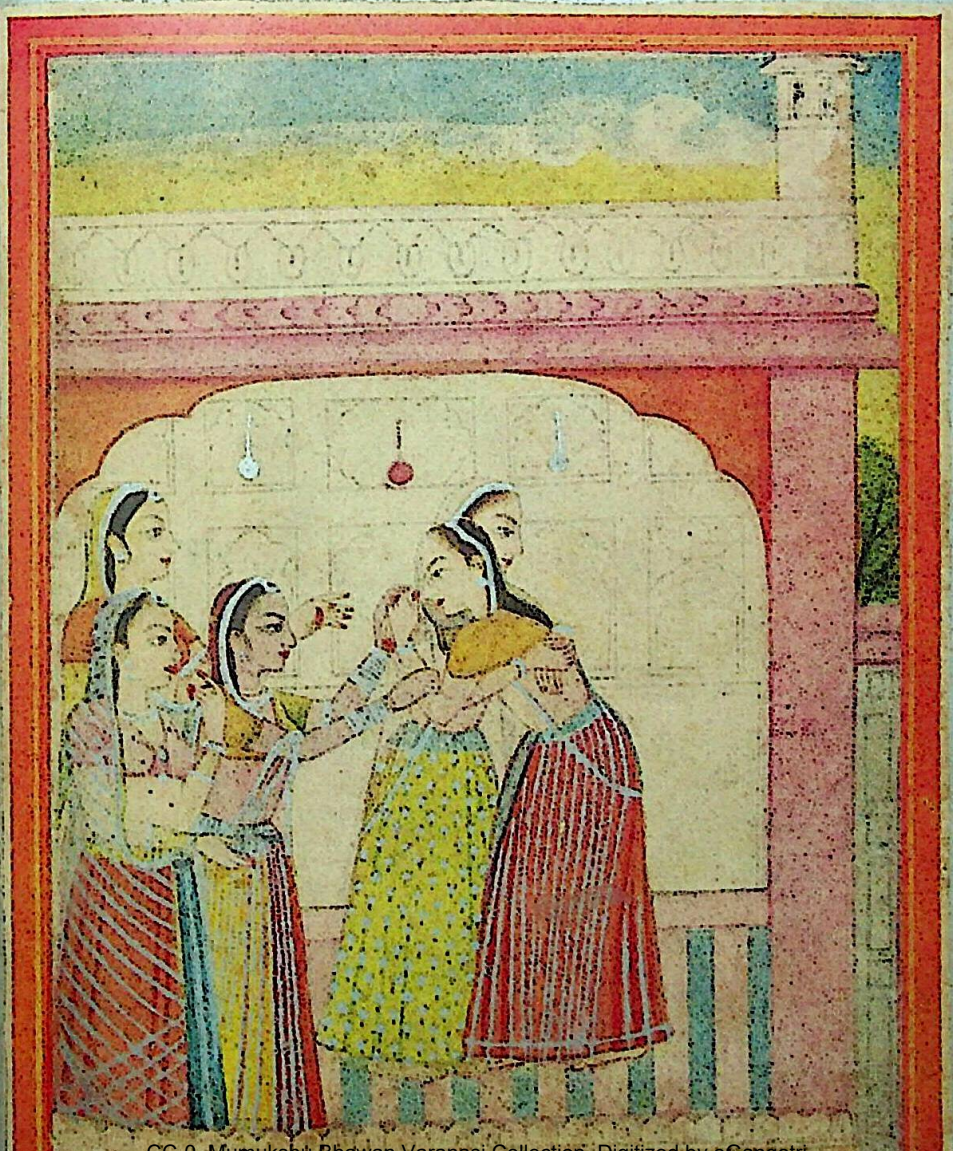

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मम्मी, मैंने सब खिलौने ठीक से रख लिये...

तब तो मिन्नी को चॉकलेट
ज़रूर मिलेगा–दूध के गुणों से भरपूर
कॅड्बरिज़ चॉकलेट!

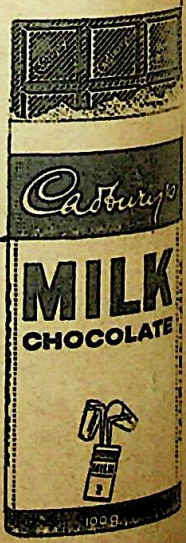

Cadbury's कॅड्बरिज़ चॉकलेट
सिर्फ़ मिठाई ही नहीं...पौष्टिक ख़ुराक भी है।

आवरण-पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"गीत गाया पत्थरोंने"

सांसोंके तार धड़कनकी ताल पर
दिलकी पुकारका रंग भरे प्यारका
गीत गाया पत्थरोंने
इन्सांकी चाहत भरी कल्पनाने
दे दी है-भर दी है
पत्थरमें वह नवजवानी
एक एक सूरत है शक्ले मुहब्बत
आंखोंने दी जिन्दगानी
प्यारके सुरों पर अपनी ही धुनमें
गीत गाया पत्थरोंने
हर एक पत्थरसे बरसेगी उल्फ़त
सालोंही–सदियों ही
हरदम रहेंगे यह मिलके
इनमें नहीं हैं इन्सांका भेद भाव
टुकड़े हैं यह दिलके
शांतीके राग पर एकताके ताल पर
गीत गाया पत्थरोंने

व्ही. शांताराम प्रोडक्शन का

शानदार चित्र

"गीत गाया पत्थरोंने"

लिबर्टी और प्लाजा (बम्बई)
और अन्य छबिघरों में.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चक्रांकित तिरंगे ध्वज को—जो हमारे गणतंत्र का उद्घोषक है तथा उस चक्र को जो हमारी उन्नति को गतिमान करता है, प्रणाम!

चक्र मानव की सांस्कृतिक प्रगति का प्रतीक है। ऐसे प्रतीक युक्त तिरंगे ध्वज से हमारे गणतंत्र बनने की घोषणा हुई थी। इसी प्रकार रेलमार्ग पर द्रुत-गति से दौड़ रहे बड़े-बड़े लौह-चक्र भी हमारे राष्ट्र की प्रगति के सूचक हैं। आज समस्त राष्ट्र के साथ भारत के रेल-कर्मचारी इस प्रतीक की वन्दना करते हुए अपना शीश झुकाते हैं और इसके प्रति निष्ठावान बने रहने की पुनः प्रतिज्ञा करते हैं। मध्य तथा पश्चिम रेलवे द्वारा प्रसारित

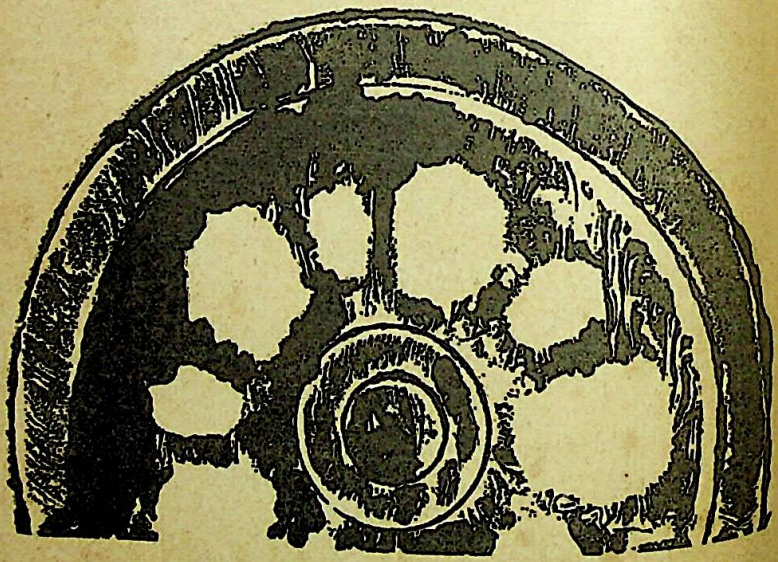

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी सुन्दरता में चार चाँद लगाइये
उदयपुर का
गाय छाप

ब्राह्मी आँवला तैल
और काला दन्त मंजन
इस्तेमाल करके देखिए कि
आपमें कितनी मोहकता छिपी थी!

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड
उदयपुर, वाराणसी, हैदराबाद

चमकते बाल
और
चमकते दाँत

AS-41

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यू स्वदेशी

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग

न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद

नरोडा रोड – अहमदाबाद

कमर तोड़ बोझ

इसी लिए समझदार लोग

प्लानीटैब

गर्भ-निरोधक टिकियां

प्रयोग करते हैं

परिवार नियोजन का यह सबसे सरल विश्वसनीय और किफायती साधन है. अपने डाक्टर से राय लें या हमको लिखें.

हिन्द कैमिकल्स लि०, कानपुर

"सभी प्रमुख दवा-विक्रेताओं के यहां प्राप्त"

वितरक : मेसर्स एन० चिमनलाल एंड कं०, ३६ प्रिंसेस स्ट्रीट, बंबई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटेनिया के २ अपूर्व सुंदर उपहार के डिब्बे

यह लीजिये ब्रिटेनिया के दो और रंग-बिरंगे टिन्बे 'रोजेज' और 'पुके' जो ब्रिटेनिया के चुने हुए तरह-तरह के स्वादिष्ट बिस्कुटों से भरपूर हैं। ये दिलकश टिन्बे किसी भी अवसर पर उपहार देने के लायक हैं और जब खाली हो जायें तो सामान रखने के लिये लाजवाब हैं।

ब्रिटेनिया बिस्कुट

अब परदेश में भी प्रसिद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश-भर में

विख्यात

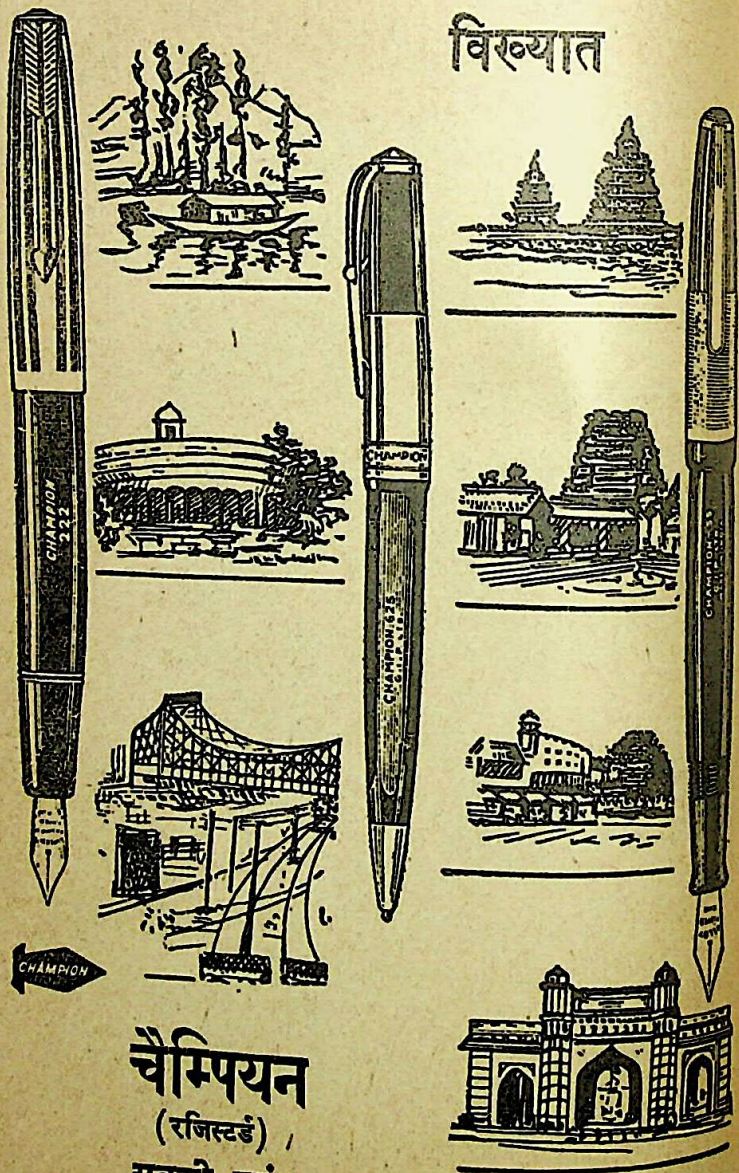

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसंद

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्रा. लि., बंबई–२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

HIN

अब लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

२०० ग्राम

मध्यम आकार

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं

शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
एजेंटस: सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

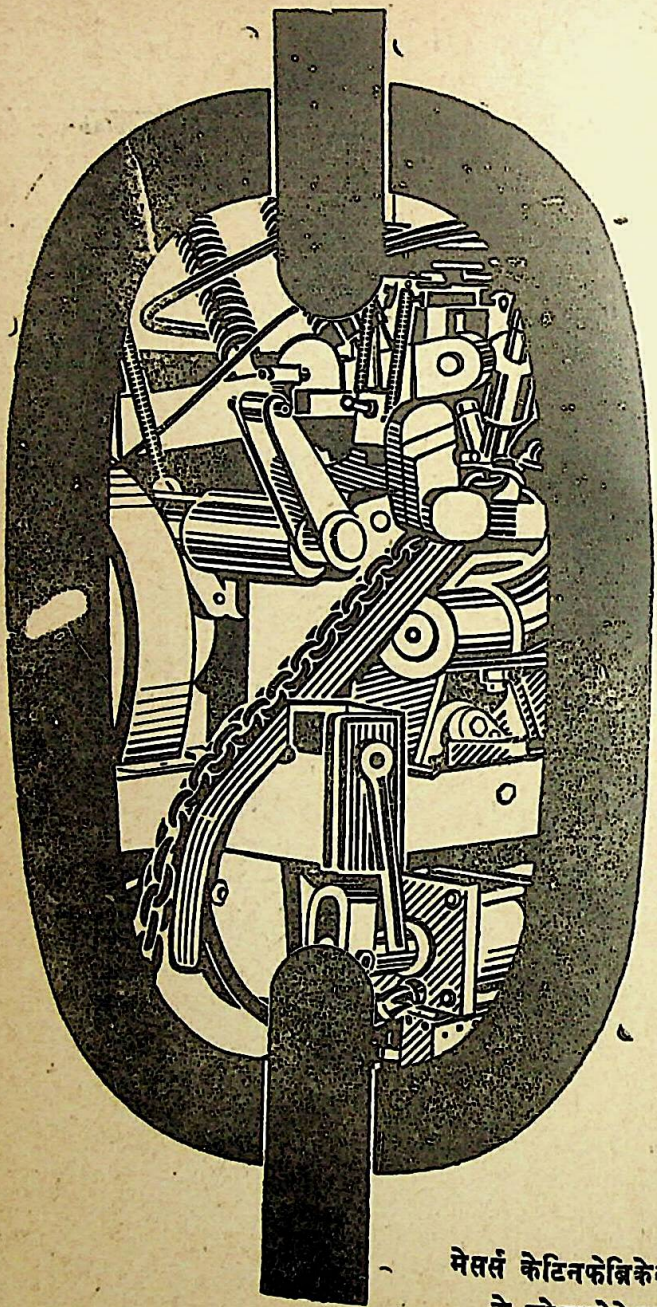

तीव्र परीक्षण के बावजूद यह कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की वेल्डिंग पूर्ण निरीक्षण में ली जाती है।

प्रत्येक कड़ी एक उच्च क्वालिटी की बनी है। इन कड़ियों से बनी सांकल की मजबूती व क्वालिटी की गारंटी है। कैलिब्रेट की हुई सांकल की नाप तौल एकदम ठीक और विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अस्लो नार्वे के कोलाबोरेशन में निर्मित

ASP/LC-3 E

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स लि०

बंबई आगरा रोड, भांडुप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टाइल के लिहाज़ से लाजवाब!
क़ीमत के लिहाज़ से बेहतरीन!

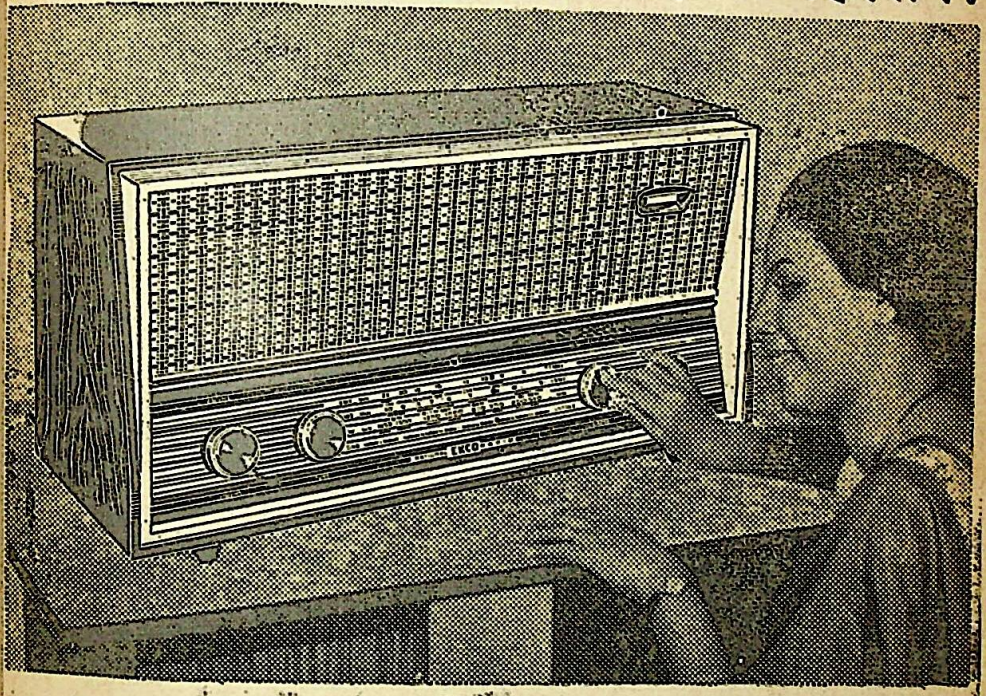

इस नेशनल-एक्को रेडियो सेट की ख़ूबियों की तुलना इतने ही क़ीमत के किसी दूसरे रेडियो सेट की ख़ूबियों से कीजिए... तो आप देखेंगे कि यह आपके पैसों का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाता है। इसकी साफ़ और हूबहू आवाज़ और दिलकश ख़ूबसूरती पर तो आप फ़िदा हो जाएँगे! अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ आज ही इसे बजवाकर सुनिए!

मॉडल ८०६: ६ वाल्व, ३ बेव-बैण्ड; लकड़ी की विनियर्ड कैबिनेट।
मॉडल यू-८०६ — एसी/डीसी सेट।
मॉडल ए-८०६ — एसी सेट।
रु. ३९५.००
क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है; टैक्स अलग

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • सिकन्दराबाद • पटना

नेशनल एक्को — भारत का एकमात्र मॉनसूनाइज्ड रेडियो!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए जरूरी है
बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेअर आयल
आपके लम्बे काले
मुलायम और
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

बेंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

आपकी प्रिय चीजों को
रंगीन
कलात्मक
रेडिमेड टीन
बॉक्सीस में
पेक कीजिये

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात
वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले :- बॉम्बे टिन प्रिन्टर्स
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन ४०१८७

भारतीय कला

विश्व के बढ़ते हुए युग चरणों के साथ भारत भी प्रगति-पथ पर अग्रसर है। इस विकास-काल में हमारी प्राचीन भारतीय कला का ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

एक ही स्थान पर आपको पूर्णरूपेण भारत की प्राचीन कला के दर्शन पाना हो तो मणियार के यहां एक बार अवश्य पधारें। मणियार की विभिन्न प्रकार की साज-सज्जा की सामग्री में बड़ी ही प्रेरणादायक प्राचीन-अर्वाचीन कला के दर्शन पाकर आपको परमतृप्ति का अनुभव होगा।

मणियार एंड संस, ९३ भूलाभाई देशाई रोड, बम्बई २६ (WB)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१ अरी कृष्णा, क्या तुम अब इतना बर्तन मलने बैठोगी ? इसी में तो सारा दिन निकल जायगा । दाई कहाँ गयी ?

क्या कहूँ, दाई ने तो आज मार दिया । काँसा, अल्यूमिनियम आदि के बर्तनों को मलते मलते हाथ में दर्द हो गया । मैं तो बैठी बैठी बर्तन ही मलती रहती हूँ ।

२ चीनी मिट्टी के बर्तन रखने से ही तो सारा काम हो जायगा । धोने में भी कितना आसान । सिर्फ साबुन का एक टुकड़ा और गर्म पानी चाहिए, बस । भोजन के बाद बर्तन मलने में मुझे तो सिर्फ १५ मिनट ही लगते हैं ।

चीनी मिट्टी का बर्तन, बाप रे बाप, कितना महंगा पड़ता है ? और बराबर टूटते भी रहते हैं ।

३ कौन कहता है ? मैं तो स्वयं बंगाल पॉटरीज़ का डिनर सेट, टी सेट व्यवहार में लाती हूँ, कितना मजबूत है अगर थोड़ा संभाल कर रखा जाय तो बहुत दिनों तक टिकेगा । खर्च कम और देखने में भी खूबसूरत । ये नाना प्रकार की डिज़ाइनों में आते हैं, मन-पसन्द चुन लीजिए।

अच्छा बहन मालती, बंगाल पॉटरीज़ का एक डिनर सेट खरीद कर देखा तो जाय । कल मेरे साथ चल कर तुम ज़रा पसन्द कर देना ।

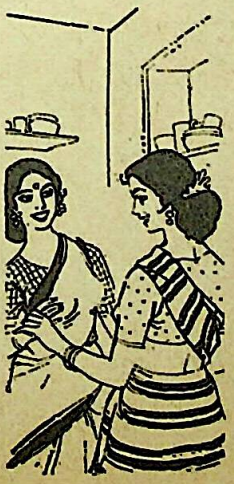

अब वही कृष्णा बंगाल पॉटरीज़ के चीनी मिट्टी के बर्तनों के अलावा अन्य किसी बर्तन का इस्तेमाल ही नहीं करती है । ये देखने में सुन्दर और किफ़ायत भी पड़ते हैं । सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन्हें बात की बात में साफ कर लिया जाता है । दूसरे कार्यों के लिए काफी समय बच जाता है ।

बंगाल पॉटरीज़ लिमिटेड
४५, टांगरा रोड,
कलकत्ता-१५
एकमात्र विक्रय प्रतिनिधिः
एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स
एण्ड कं०
३३, ब्रेबोर्न रोड,
कलकत्ता-१

BPC-91 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

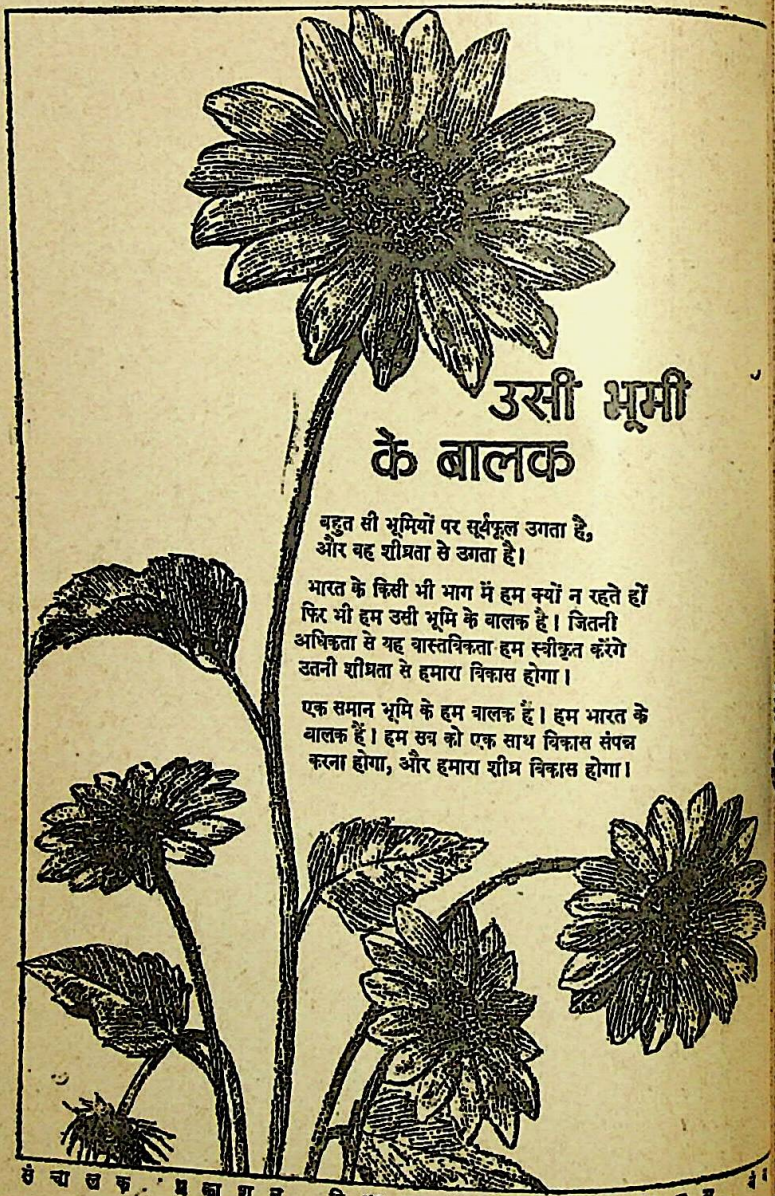

उसी भूमी के बालक

बहुत सी भूमियों पर सूर्यफूल उगता है, और वह शीघ्रता से उगता है।

भारत के किसी भी भाग में हम क्यों न रहते हों फिर भी हम उसी भूमि के बालक है। जितनी अधिकता से यह वास्तविकता हम स्वीकृत करेंगे उतनी शीघ्रता से हमारा विकास होगा।

एक समान भूमि के हम बालक हैं। हम भारत के बालक हैं। हम सब को एक साथ विकास संपन्न करना होगा, और हमारा शीघ्र विकास होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके केशकी अनुपम शोभा

स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

आपके केश को कोमल और सुंदर बनाए रखता है

स्वस्तिक हेअर ब्रांड
'मयूर'

थोड़े से स्वस्तिक परफ्यूम्ड केस्टर ऑइल को बालों पर लगाइये। केश को तीन भागों में बांट लीजिए। मध्यम भाग गोलाकर घुमा कर एक ओर कंघे के रूप में रख छोड़िए। शेष दो भागों को आपस में गूंथ कर कंघे की चारों ओर घुमाते हुए क्लिप दीजिए। अब आभूषणों से सजा लीजिए।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने की
आवश्यकता
नहीं

कलकत्ता में जैसे
विक्टोरिया मैमोरियल
वैसे ही

ग्वालियर सूटिंग

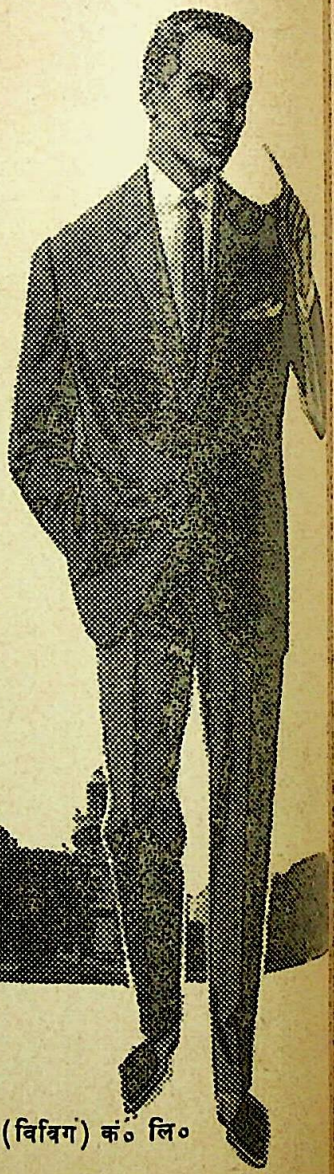

पहनने वाले
व्यक्ति
भी अलग ही
नजर आते
हैं

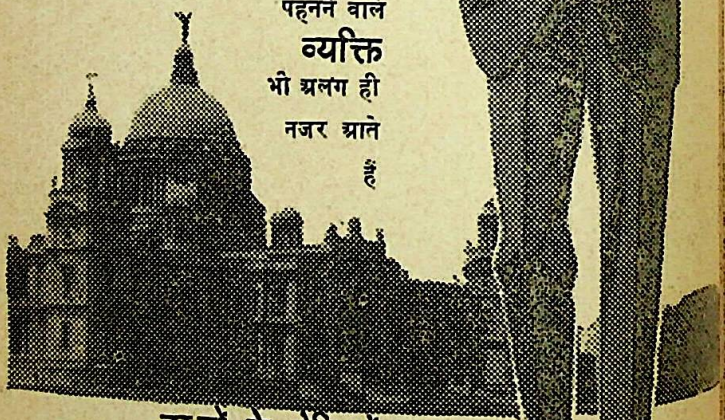

वस्त्रों के प्रेमियों
के लिये सूटिंग के
निर्माता
ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (विविंग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फरवरी
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया

शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

★

इस अंक का मुखपृष्ठ

मिलन

मणियार एंड संस के संग्रहालय से साभार

इस अंक में

१७ एटमी शक्ति से
शिवसहाय पाठक
१८ अमरीका का वेदांती संत
१९ भगवान मुझसे बोले
हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय
२१ गीत
माखनलाल चतुर्वेदी
२२ पाकिस्तान : प्रगति के नये मोड़
सत्यकाम विद्यालंकार
२७ इथियोपिया
श्रीगोपाल नेवटिया
३२ पथ के प्रदीप
सोरेन कीएर्कगार्ड
३३ शराब से तौबा की जिगर ने जिसकी खातिर
अध्योध्याप्रसाद गोयलीय
४० दर्द लौटाने का महायज्ञ
नार्मन कजिन्स
४६ मैंने लिखना कैसे सीखा
मैक्सिम गोर्की
४९ मेरी कल्पना का सुख
५२ तेरी महफिल भी गयी, चाहनेवाले भी गये
ब्रजकिशोर 'नारायण'
५५ अकेले आदमी ने लंदन की रक्षा की !
परदेशी
६० अवगुंठिता रेबेका के प्रति (कविता)
कन्हैयालाल सेठिया
६१ कौन उड़ाता है इन पक्षियों को ?
प्रो० जे० सी० जार्ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

एक लेखक का सफर
—विलियम फाकनर

इश्तिहारात (उर्दू हास्य)
—मुहम्मद खालिद अख्तर

जब भैंसे ने चीते को पछाड़ा
—यमुनादत्त वैष्णव

कवि इलियट के साथ कुछ क्षण
—डोनाल्ड हाल

दूध के बारे में कितना जानते हैं
—डा० कैलासनाथ मिश्र

माओ के उत्तराधिकारी
—अशोक महाजन

दिल खोलकर हंसिये
—दामोदर शर्मा

चांद का निवासी (हिन्दी कहानी)
—कुसुम अगस्त

प्रतिशोध (पुस्तक-संक्षेप)
—एलेक्जैंडर डयूमा

हमारा पता :
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
३४१ तारदेव, बंबई—३४
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई—३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई—४ में मुद्रित ।

६५ खूंख्वार जबड़े, विकराल पंजे
कैप्टन फारसाइथ

७१ आनंद की प्राप्ति
हरिमोनलाल श्रीवास्तव

७४ नयी बहू
सुशीला श्रीवास्तव

७७ वादे के फूल
स्टेफान लाकनर

८० नियम और तर्क
राधाकृष्ण

८१ हेनरी फोर्ड की व्यावसायिक देन
जान डाइवोल्ड

८४ एक शरीर : अनेक आत्माएं
श्याम मनोहर व्यास

८८ तीन लाख दीवार का एक पत्थर
जयभिख्खु

९३ संभावनाएं और संयोग (कहानी)
वीरेंद्र सक्सेना

१०० ड्राइंग-टीचर की क्लास (मराठी कहानी)
द० मा० मिरासदार

१०७ ईरा-क्लब की फाइलोंसे दो पत्र (कहानी)
रावी

११३ मौत, आग और जिंदगी (पुस्तक-संक्षेप)
अर्नाल्ड बेनेट

१४१ क्या आपको भी सिर-दर्द होता है
केशवप्रसाद मिश्र 'कमल'

१४३ सत्य-असत्य (कविता)
मदनमोहन परिहार

१४५ कानों में रखा कुतुबनुमा
एम० मार्कोव

१५१ नयी पुस्तकें

१५५ चुटकी-भर हंसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक २

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

फरवरी १९६५

के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि

एटमी शक्ति से

मनन की मुद्रा में
एक बाइजेंटियन चित्र की ओके द्वारा अनुकृति

हरे डहडहे डाभ मुरझा रहे
इनको कुछ नेह-भरे
जीवन का संबल दो
अगहन की धरती का
ओस-भरा अंचल दो
चैता-बैसाख की बहार दो
तपती दुपहरिया में छांव दो
बरगद की ।
दे सकते हो तो कुछ
रिमझिम फुहार दो
आषाढ़ी अंगारे बादल की
जीवन मनुहार दो ।
काटो मत, छांटो मत
रक्त-सने हाथों से
लाल बने पंजों से
इससे तो इनकी बढ़वार
मर जायेगी ।
शक्तिमान हो तो कुछ
इनको भी बल दो
एटम के दानव से
मानव को संबल दो ।

—शिवसहाय पाठक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

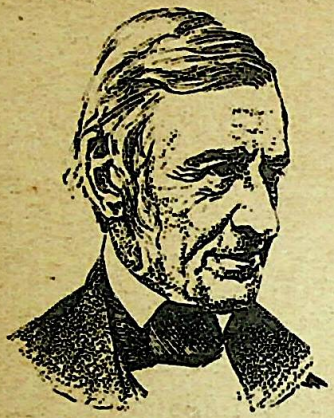

देश और काल के विशाल व्यवधान के वावजूद उपनिषदों के उद्गायकों और अमरीकी मनीषी एमर्सन में निकट बांधव्य था—सत्य आत्माओं को परस्पर जोड़नेवाला सूत्र है।

अमरीका का वेदांती संत

अपने पुत्र मणिलाल को जेल से पत्र लिखते हुए महात्मा गांधी ने एक बार लिखा था—"...मगनलाल (गांधीजी के भतीजे) से कहना कि वह एमर्सन के निबंध ध्यानपूर्वक पढ़े। प्रत्येक निबंध को पढ़ने के बाद महत्वपूर्ण अंशों को रेखांकित कर ले, फिर उन्हें अलग कापी में उतारे। मेरे विचार से इन निबंधों के माध्यम से एक पश्चिमी गुरु ने भारतीय ज्ञान तथा दर्शन की शिक्षा दी है। कभी-कभी अपनी संस्कृति को दूसरों की दृष्टि से देखना भी अच्छा रहता है।"

गांधीजी ने कई अवसरों पर यह स्वीकार किया कि वे एमर्सन के विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए। और एमर्सन ने अपने विचारों पर भारतीय मनीषी राजा राममोहन राय के प्रभाव को स्वीकार किया है।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में जब एमर्सन हारवर्ड विश्वविद्यालय के डिविनिटी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तब अमरीका के सांस्कृतिक क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा था। नैष्ठिकतावाद और प्योरिटनवाद का स्थान उदारवादी प्रोटेस्टेंटिज्म लेता जा रहा था। अमरीका का यह उदारतावादी प्रोटेस्टेंटिज्म उन विचारों के बहुत निकट था, जो राममोहन राय ने भारतीय दर्शन के गहन अध्ययन के बाद निश्चित किये थे, जिनके आधार पर वे हिन्दू धर्म तथा ईसाई धर्म में समन्वय स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

डा० हरिदास मजूमदार के कथनानुसार "भारत तथा अमरीका के प्रगाढ़ सांस्कृतिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिक संबंधों की व्यापकता तथा गहराई को समझने के लिए तथा यह जानने के लिए कि नवोदित राष्ट्र अमरीका पर भारतीय विचार-धारा का क्या प्रभाव पड़ा, उस अनुभवातीत सत्यवाद तथा परम तत्व को समझना आवश्यक है, जिसका प्रतिपादन राल्फ वाल्डो एमर्सन ने किया था। साथ ही यह भी सत्य है कि एमर्सन ने भारत के वेदांत दर्शन से काफी कुछ सीखा।

०००

आज चारों ओर यही स्वर सुनाई देता है कि वर्तमान युग प्रजातंत्र का युग है, जनता का युग है।... जनता! जनता के नाम पर कितने जोरदार नारे लगाये गये हैं, निरंकुश अत्याचार किये गये हैं, लोगों को कितनी यातनाएं पहुंचायी गयी हैं, उसका सही अनुमान लगाना कठिन ही है।

एमर्सन विश्व के उन इने-गिने चिंतकों में से थे, जिन्होंने इस शोर-गुल से दूर रहकर मानव को एक अपूर्व गरिमा प्रदान की तथा उसे एक उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया। कवि, दार्शनिक तथा निबंधकार एमर्सन ने एक स्थान पर कहा है—"जनसाधारण का प्रायः जिक्र किया जाता है। पर साधारण जन है कौन? प्रत्येक जन अपने-अपने में असाधारण है। मेरे लेखे सभी जन समान है, क्योंकि मेरी प्रतीति है—सच्ची कला का आधार यह धारणा है कि प्रत्येक जनमें देवपन है। यह दैवीकरण प्रत्येक जन की रचना का एक अनिवार्य अंग है।"

भारतीय तथा अमरीकी संस्कृति के पारस्परिक प्रभावों की बात करते हुए, एक महत्वपूर्ण बात हमें याद रखनी चाहिये। वह यह कि ये पारस्परिक प्रभाव न तो एकदम आधुनिक ही हैं और न एकदम भौतिक ही हैं। उनकी जड़ें अतीत में ही मिलेंगी तथा उन्हें बौद्धिक तथा आत्मिक क्षेत्रों में सक्रिय तथा सजीव पाया जा सकता है।

इस संबंध में विख्यात अमरीकी पत्रकार लुई फिशर का यह कथन मननीय है—"जिस

भगवान मुझसे बोले

कवि, यदि तुम मुझे पाना चाहते हो, यदि तुम मुझसे निर्विघ्न बातचीत करना चाहते हो, तो मंदिरों से दूर रहो; क्योंकि अब तो वहां अधिकांश नरनारी मुझे घूंस देकर मुझसे सांसारिक सुख-सुभीते प्राप्त करने का गुप्त उद्देश्य हृदय में लिए आते हैं; बहुत बार वे स्वयं भी इस उद्देश्य से बेखबर होते हैं। मुझसे तो तुम मिलो निर्जन पहाड़ों पर, शांत खेतों में, नदियों के तट पर। मेरे सच्चे संदेशवाहक हैं कलियां, चिड़ियां और मधुमक्खियां, तितलियां, बदलियां, दूब की हरी पत्तियां और नदी-जल की ऊर्मियां। मानो ये मेरे मुंह हैं, जो कह रहे हैं—"देखो, वह यहां है! देखो, वह यहां है!" और वह से इनका अभिप्राय तुम्हारी ही आत्मा से है, जिसकी तुम्हें तलाश है और जिसे तुम्हारे शब्दकोश 'ईश्वर' कहते हैं। —हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार गांधीजी के कार्यों पर थारो के विचारों की छाप अंकित है, उसी प्रकार थारो पर भारतीय दर्शन की छाप स्पष्ट रूप से अंकित है। थारो तथा उनके मित्र एमर्सन ने भगवद्गीता तथा उपनिषदों का अध्ययन किया था।"

राजनीति विषयक अपने एक निबंध में एमर्सन ने कहा है—"मुझे किसी ऐसे व्यक्ति का स्मरण नहीं आता, जिसमें केवल नैतिक कारणों से प्रचलित नियमों तथा कानूनों की सविनय अवज्ञा करने का साहस हो।" परंतु महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका में यही तो कर रहे थे। एमर्सन का देहांत १८८२ में हो गया, इस कारण वे गांधीजी से अपरिचित रहे। जिस समय गांधीजी ने थारो की वाणी सुनी थी, उस समय वे "नैतिक कारणों से प्रचलित नियमों तथा कानूनों की सविनय अवज्ञा करने के साहस" के अपराध में जेल में बंद थे। उनका यह साहस आजीवन उनका साथी रहा।

एमर्सन एक निर्भीक चिंतक थे, जो यह कहते थे—"मेरे कार्यों के बारे में मेरी अपनी आत्मा का मत क्या है, यही मेरे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है; दूसरे लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, यह नहीं।" उनकी दृष्टि में किसी व्यक्ति या विचार का महत्व इस बात में नहीं है कि कितने व्यक्ति उसे पसंद करते हैं, बल्कि इस बात में है कि किस सीमा तक उस व्यक्ति कि आत्मा उसका अनुमोदन करती है। वे कहा करते थे—"सत्य के दर्शन करने हों, तो अल्पसंख्यकों में करो।" उन्हें इस बात का बड़ा दुःख था कि [illegible] कांश लोग मौलिक नहीं हैं; उनकी [illegible] ज्ञाएं उनकी अपनी प्रतिज्ञाएं नहीं हैं, [illegible] से उधार ली हुई प्रतिज्ञाएं हैं। मरते [illegible] भी उन्हें यही खयाल रहता है कि [illegible] शवयात्रा में कौन-कौन शामिल हो[illegible]

व्यक्ति की गरिमा का उल्लेख [illegible] ने बार-बार किया है। एक स्थान पर [illegible] कहा है—"आप केवल अपने लिए ह[illegible] सकते हैं; आपका कार्य तभी तक गु[illegible] जब तक वह जीवित है तथा आप उसे [illegible] हैं। जब उसी कार्य को आपका बेट[illegible] शिष्य करता है, तो वह आपके का[illegible] पुनरावृत्ति भले हो; परंतु आपका काम[illegible] बन सकता। संसार में आनेवाला ह[illegible] व्यक्ति अपनी खुद की समस्याओं को[illegible] करता है।"

भारत में एमर्सन की ख्याति आ[illegible] वैसी ही है, जैसी उनके जीवन के स[illegible] थी। जिस परम आत्मा (ओवर सोल) [illegible] उल्लेख उन्होंने बार-बार अपने निबंधों [illegible] किया है, वह एक अत्यंत प्राचीन भा[illegible] मान्यता है, और उसके विषय में एमर्स[illegible] विचार पढ़कर भारतीय जन-मानस [illegible] नाद से भर जाता है। जवाहरलाल नेह[illegible] अपनी 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में एमर्स[illegible] निबंध 'आत्मनिर्भरता' में से कई अंश [illegible] किये हैं। दक्षिण भारत ने तो अमरीक[illegible] इस महान वेदांती संत के प्रति अपनी [illegible] प्रकट करने लिए एक नये राग का [illegible] 'एमर्सन-प्रिया' रखा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीत

रोने की क्या बात हंसो, हंसने से जी हलका होने दो
सांसों के वैराग्य-देश में आनंदों के कण बोने दो !

राधा के प्रिय की यह जमना बहती थकी नहीं है
गिरि - गह्वर में, चढ़न - पतन में हरगिज रुकी नहीं है,
अत्याचारी के विनाश की प्रबल सूझ - सी बनकर
बहती है हिमवान - देश से उज्वल - सी छन - छनकर !

रूप ओढ़नी में से निकला राधा का, छवि धन का
हरा - हरा वृंदावन धरता रूप श्याम के मन का,
सदियां बीत गयीं पर चुकता नहीं पुराना गीत
बह - बहकर जमना में बाढ़ें लेता मन का मीत,
नश्वरता अनमनी और ईश्वरता बोल उठी है
छबि - वैभव के घर वैभव की सारी कीर्ति लुटी है।

हम सदियों की सरिता - यात्रा तट के पंथी प्यारे
गिन - गिनकर थक गये धरा की रेतों के अंगारे,
वह हृदयों का एकाकीपन खेतों खेल रहा है
अलगोजा लटकाकर गोफन भरी उंडेल रहा है।
अब उस दिन की सांसों पर आंसू थोड़ा ढलका लेने दो,
रोने की क्या बात हंसो, हंसने से जी हलका होने दो।

— माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकिस्तान
प्रगति के नये मोड़

राजनीतिक विरोध के कारण हम भारतीयों की नजरें प्रायः पाकिस्तान राजनीतिक हलचल पर ही अटकी रह जाती हैं—वहां हो रही प्रगति जागृति को लक्ष्य नहीं कर पाती। प्रस्तुत लेख में उसी का विवरण है

सत्यकाम विद्यालंकार

स्वतंत्र भारत और पाकिस्तान का निर्माण अगस्त १९४७ के मध्य में एक साथ ही प्रारंभ हुआ। दोनों देश पिछड़े हुए थे। दोनों को दुनिया की दौड़ में जीतने और जीवित रहने के लिए अथक उद्योग करना था।

भारत विशाल देश था। उसके साधन विशाल थे और कठिनाइयां भी उतनी ही विशाल थीं। पाकिस्तान छोटा देश था, उसके साधन भी अल्प थे, उसके नेता भी अनुभव-हीन थे। किंतु उसकी कठिनाइयां भी उतनी उलझी हुई नहीं थीं, जितनी भारत की थीं और आज भी हैं।

दोनों देशों में पिछले सत्रह वर्षों में समर्थ बनने का पूरा उद्योग हुआ है। इस उद्योग में दोनों को कुछ सफलता भी मिली है और कुछ असफलता भी। परंतु यह लेख दोनों की तुलना के लिए नहीं, अपितु पाकिस्तान की प्रगति के सिंहावलोकन के लिए लिखा जा रहा है। लेख में उद्धृत तथ्य 'टाइम्स आफ इंडिया' के विशेष प्रतिनिधि श्री पी० जी० वर्गिस की उस लेखमाला पर आधारित जो पिछले वर्ष नवंबर-दिसंबर और इस जनवरी के 'टाइम्स आफ इंडिया' में प्रकाशित हुई है।

श्री वर्गिस ने स्वयं पाकिस्तान जाकर अध्ययन किया है, उससे निम्न परिणाम निकलते हैं:—

१. पाकिस्तान की आर्थिक प्रगति [illegible] के बाद लगभग ६ प्रतिशत हुई। कृषि उत्पादन में वृद्धि का अनुपात ३.५ प्रतिशत रहा।

२. पाकिस्तान में कुल कृषि-उद्योग योग्य जमीन ६ करोड़ १० लाख एकड़ इसमें से ३ करोड़ ९० लाख एकड़ भूमि पैदावार होती है। पिछले वर्षों में १५ एकड़ अतिरिक्त भूमि को उत्पादन बनाया गया है। आशा है, द्वितीय पंचवर्ष योजना के पूरे होने तक २ लाख ६३ हजार एकड़ भूमि पर सिंचाई का नया प्रबंध सकेगा तथा २ लाख २३ हजार एकड़ [illegible] करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाढ़ के भय से सुरक्षित कर दी जायेगी ।

पाकिस्तान की कृषि-संवर्धन नीति का यह लक्ष्य है कि तृतीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत १ करोड़ ४० लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि पैदावार के योग्य हो जाये और इसी तरह ९० लाख एकड़ भूमि बाढ़ से सुरक्षित कर दी जाये ।

३. पाकिस्तान की स्थापना के समय वहां कोई बड़ा उद्योग-व्यवसाय नहीं था । आज वहां प्रतिवर्ष २ लाख ४३ हजार टन खांड, ७३ करोड़ गज कपड़ा तथा ३१ करोड़ ५० लाख टन जूट की चीजें बनती हैं ।

भविष्य की संभावनाएं भी उज्वल हैं । चटगांव में २७ करोड़ की लागत से जहाज-निर्माण का विशाल कारखाना बन रहा है । कराची में ११० करोड़ की लागत की लोहे की मिल बनेगी, जो प्रतिवर्ष ४ लाख ५० हजार टन लोहे की चीजें बनायेगी । कराची में १० करोड़ की लागत से एक मशीनटूल फैक्टरी भी लग रही है ।

पाकिस्तान की पंचवर्षीय योजनाएं सफल रही हैं । प्रथम योजना की सफलता देखकर दूसरी योजना, जो मूलतः १९०० करोड़ रुपये की थी, २३०० करोड़ रुपये की कर दी गयी । द्वितीय योजना में राष्ट्रीय उत्पादन की वृद्धि का अनुमान २० प्रतिशत था । अब वह २४ माना जाता है ।

पाकिस्तान की प्रतिव्यक्ति आय तीसरी योजना तक ४२४ रुपये वार्षिक हो जायेगी । और अनुमान है कि छठी योजना की समाप्ति पर औसत वार्षिक आय अवश्य ७१० रुपया प्रतिव्यक्ति होगी । तब तक पाकिस्तान की जनसंख्या भी ९ करोड़ ४० लाख से बढ़कर १८ करोड़ पर पहुंच जायेगी ।

इन सब योजनाओं के परिणामस्वरूप १९८५ तक पाकिस्तान में न कोई बेकार रहेगा और न कोई अशिक्षित ।

भविष्य की उज्वलता के ऐसे स्वप्न तो सभी देश देखते हैं । भारत के नेता शायद इससे भी अधिक उज्वल स्वप्न देख रहे हैं । इसलिए हम इन अनुमानित सफलताओं को बहुत महत्व नहीं दे सकते । किंतु पाकिस्तान

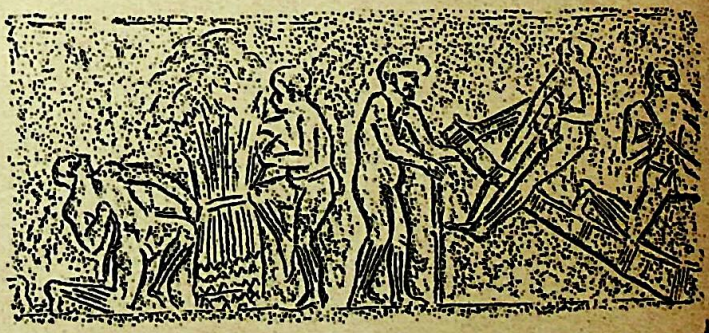

समृद्धि का आयोजन—एक मिस्री भित्तिचित्र

की प्रगति ने जो नया मनोवैज्ञानिक मोड़ लिया है, उसकी चर्चा भी श्री वर्गिस ने अपनी लेखमाला के आठवें खंड में की है । इसमें जिन तथ्यों का विवरण है, वे वस्तुतः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। लेख की भूमिका में ही उन्होंने लिखा है–"इसमें एक ऐसी बात है, जो भारत के अध्ययन और अनुकरण करने योग्य है।"

यह बात पाकिस्तान के पंचायती राज की है। भारत की तरह पाकिस्तान ने भी पंचायती राज की व्यवस्था १९५८ में की। १९५८ में पाकिस्तान ने भूमिसुधार कानून बनाया, जिसके अनुसार भूमि के स्वामित्व की सीमा ५०० एकड़ निर्धारित की गयी। इस कानून से सरकार को लगभग ३० लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई, जो भूमिहीन किसानों में बांट दी गयी।

इस कानून के बाद पाकिस्तानी गांवों में ऐसा नया जागरण शुरू हुआ, जो भारत के गांवों में नहीं हो सका। भारत में भी जमींदारी-उन्मूलन का कानून तो बना, भूमि-स्वामित्व की सीमा भी निर्धारित की गयी; किंतु श्री वर्गिस के कथनानुसार हमारे यहां वह उत्साह पैदा नहीं हो सका, जो पाकिस्तान में हुआ है।

इस उत्साह का एक कारण लेखक की राय में यह है कि पाकिस्तान ने गांवों की जनशक्ति का पूरा उपयोग किया है।

गांवों के हजारों बेकार हाथों को ग्राम-विकास योजनाओं में पूरी तरह लगा दिया गया, जिससे ग्रामवासियों के जीवन में नया उत्साह भी आया और उनकी आमदनी भी बढ़ गयी।

ग्राम - विकास योजनाएं बनानेवाले दो सिद्धांत लेकर चले। प्रथम यह कि श्रमदान के रूप में जो कुछ भी श्रम लिया जाये, उसका मूल्य पूरा चुकाया जाये। इस प्रकार श्रमदानी को डेढ़ रुपया प्रतिदिन दिया गया। दूसरा सिद्धांत यह था कि यह पारिश्रमिक आधा सिक्कों में और आधा अनाज के रूप में दिया जाये, जिससे मूल्यों में वृद्धि न हो।

यह योजना १९६१ के वसंत काल में बनी। पुरानी परंपराओं में पले लोगों ने इसे मूर्खतापूर्ण कहा। परंतु पूर्व पाकिस्तान के कुमिल्ला थाने के एक सज्जन श्री अख्तर हमीद खां इस योजना को सफल बनाने में तुल गये। उन्होंने २५ वर्ग मील के क्षेत्र में इस योजना का प्रयोग प्रारंभ किया। यह इलाका बार-बार बाढ़ की लपेट में आकर करता था और यहां पिछले छः वर्षों से फसल उजड़ती आ रही थी।

सन १९६१ में इस इलाके में बाढ़ को रोक-थाम का काम हाथ में लिया गया। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र पर बांध बनाने के काम में ६ हजार मनुष्यों का एक दिन का श्रम लगा। लागत १ लाख ६५ हजार रुपये आयी। सुपरिणाम यह हुआ कि अगले वर्ष बाढ़ तबाही न मचा सकी और पैदावार की आय ७ लाख २० हजार रुपये हो गयी।

कुमिल्ला थाने के इस परीक्षण को १९६२-६३ में बड़े पैमाने पर जारी किया गया। इसके लिए सरकार ने १० करोड़ रुपये की सहायता दी। कार्य प्रारंभ होने पर २ लाख ५० हजार आदमियों की नियुक्ति की गयी, जिन्होंने औसतन आठ सप्ताह कार्य किया। कार्य की देखभाल के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो सत्रह हजार निरीक्षक नियुक्त हुए थे, उन्होंने ग्राम-विकास योजना की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की थी।

इन व्यक्तियों के श्रम से ३,६०० मील नयी सड़कें बनीं, ८,७०० मील लंबी सड़कों की मरम्मत हुई, ४५० मील लंबी पुरानी नहरों की मरम्मत हुई, १,३०० मील लंबी नयी नहरें खोदी गयीं। इसी श्रम से १६० मील लंबे बांध बनाये गये और ३६० मील लंबे पुराने बांधों की मरम्मत भी हुई।

डेढ़ रुपया प्रतिदिन पानेवाले इन श्रमिकों ने दूसरे जिलों में जो कार्य किये, वे इसके अतिरिक्त हैं और उनके आंकड़े निम्न प्रकार हैं :

पुरानी सड़कों की मरम्मत	८,४००	मील
नयी सड़कों का निर्माण	४८	,,
नयी नहरों की खुदाई	४९	,,
पुरानी नहरों की मरम्मत	२४८	,,
नये पुलों का निर्माण	५२७	

इन कामों में स्थानीय श्रमदानी स्वयं-सेवकों ने जो अवैतनिक श्रम किया, वह पांच लाख आदमियों के एक दिन के श्रम के बराबर है। यह सब काम इतनी तत्परता से हुआ कि निर्धारित समय से पहले ही पूरा हो गया।

इस सफलता से प्रभावित होकर पूर्व पाकिस्तान ने १९६३-६४ में २० करोड़ के अनुदान का निश्चय किया तथा पश्चिम पाकिस्तान ने १० करोड़ का। इसके अनुसार पूर्व पाकिस्तान में ७५ लाख लोगों को तीन महीने का रोजगार मिला। यह कार्य

पृथ्वी के पुत्र

चालीस हजार कमेटियों के जरिये हुआ।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में पाकिस्तान सरकार ने १९६५-७० के लिए २५० करोड़ रुपये के अनुदान की व्यवस्था की है, जिसमें से १५० करोड़ रुपये पूर्व पाकिस्तान के ग्राम-विकास कार्यक्रम में व्यय होंगे।

इन ग्राम-विकास योजनाओं की आशातीत सफलता ने पाकिस्तान में नये प्राण फूंक दिये हैं, नयी स्फूर्ति जागृत कर दी है। इसका प्रभाव केवल आर्थिक नहीं, मनोवैज्ञानिक भी हुआ है। जनता में आत्म-विश्वास की नयी लहर पैदा हो गयी है।

योजनाओं के प्रति सर्वसाधारण के हृदय में अपूर्व उत्साह जाग उठा है। युवकों में विशेषतः शिक्षाप्राप्त नौजवानों में—ग्राम-विकास कार्यों के प्रति रुचि पैदा हो गयी है। जिला और तहसील के अफसरों के मन में भी यह भावना बस गयी है कि उनका काम केवल हुकूमत करना नहीं है, बल्कि विकास में पूरा योग देना भी उनका फर्ज है।

पश्चिम पाकिस्तान के पेशावर विश्व-विद्यालय ने समाज-सेवा को अनिवार्य विषय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बना दिया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए यह लाजिमी होगा कि डिग्री प्राप्त करने से पूर्व तीन सप्ताह ग्राम-विकास के कार्य में सक्रिय भाग ले। पिछले वर्ष दो हजार विद्यार्थियों ने पेशावर के आस-पास के गांवों में समाज-सेवा का कार्य किया। इन विद्यार्थियों में इंजिनीयरी, डाक्टरी, कृषि आदि सभी विषयों के विद्यार्थी होते हैं। इन कार्यों का व्यय विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है।

पाकिस्तान में पंचायती राज के सफल होने का एक कारण यह भी है कि पाकिस्तान सरकार ने मतदान की जो व्यवस्था बनायी है, वह बहुत उपयोगी है। नवीन व्यवस्था के अनुसार जनता ने ८० हजार प्रतिनिधियों का चुनाव किया है, जो 'बेसिक डेमोक्रेट' कहलाते हैं। ८ से १२ वर्ग-मील के प्रत्येक क्षेत्र को, जिसकी आबादी लगभग ८ से १२ हजार हो, एक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है।

इस चुनाव से देश में ७,३७२ यूनियन कौंसिलें और १००० टाउन-कमेटियां बनायी गयी हैं। इन कमेटियों का एक तिहाई भाग उस इलाके के सरकारी अफसरों का होता है। कौंसिलें जिला कौंसिल के सदस्यों का निर्वाचन करती हैं। एक जिला कौंसिल में लगभग ३० से ५० तक सदस्य होते हैं, जिनमें से आधे निर्वाचित होते हैं और आधे नामजद।

पंचायती राज की यह व्यवस्था ही इस समय पाकिस्तानी शासन की नींव है। इन पंचायतों से जनता और शासक दोनों देश के विकास-कार्य में भागीदार बनकर बहुत निकट आ गये हैं। यों तो नौकरशाही रंग-ढंग का असर अभी मौजूद है। फिर भी विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि पाकिस्तान में लोकशाही का प्रभाव बढ़ने लगा है और यह प्रभाव अब पाकिस्तान के सार्वजनिक जीवन का अंग बन चुका है।

यह ठीक है कि भारत की लोककल्याण योजनाओं का प्रारंभ भी इन्हीं आदर्शों की स्थापना के लिए किया गया था; किंतु भारत में ठेकेदारी और परमिट-लाइसेंस प्रथाओं ने लोककल्याण-योजनाओं को भी केवल मुनाफाखोरी का माध्यम बना डाला है। कल्याण होता है केवल ठेकेदारों का और बेईमान दलालों का, जो संपूर्ण प्रणाली को दूषित कर देते हैं। निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इस संबंध में भारत को पाकिस्तान से सबक लेना होगा।

पाकिस्तान प्रगति के नये मोड़ पर है, जो यह सिद्ध करता है कि कम्युनिस्ट हुए बिना भी सरकार आम जनता का हित साध सकती है। *

चश्मे का व्यापारी पुत्र को ग्राहकों से अधिक कीमत वसूल करने की तरकीब बता रहा था—"बेटा, जब तुम ग्राहक का चश्मा तैयार कर चुको और वह तुमसे उसके दाम पूछे, तो कहना—दस रुपये—अगर दस रुपये सुनकर वह न चौंके, तो कहना—"यह तो हुई फ्रेम की कीमत और दस रुपये—" अगर इससे भी वह न चौंके तो कुछ रुककर कहना, एक शीशे के।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

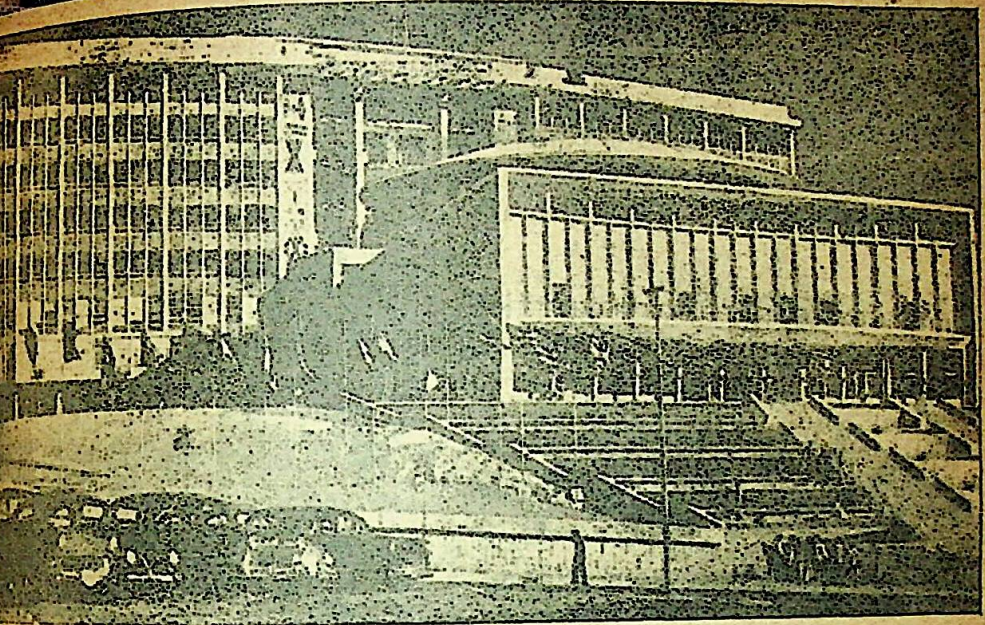

ओ अदिस ! मनोहर मुकुलित
एंतोतो पर्वत से वेष्टित
घन-जल-स्नात सुसस्मित
मित्र-देश-हितकारी*
मेनेलिक महान से निर्मित
निज प्रिया हेतु सुखकारी
सुरभित वन-उपवन पूरित
संत जार्ज के रजत-शिखर से
अभिनव गगन-विचुंबित
जूड़ा के अभिमान समान
स्वर्ण-सिंह है जहां विराजित
ओ अदिस ! मनोहर मुकुलित !

पूर्वी अफ्रीका के शोभाशाली प्रदेश इथियोपिया की राजधानी अदिस अबाबा की प्रशंसा में किसी अज्ञात कवि ने ये पंक्तियां लिखी थीं । देश-विदेश से आनेवाले पर्यटक इस भू-प्रदेश को दिये नाम 'नवकुसुम' को सार्थक समझते हैं। भूमिगत तेल की कृपा से आधुनिक जगत में प्रशंसित मरु-प्रदेशों की यात्रा के पश्चात इस सुंदर कुसुमित वन,

इथियोपिया

जहां आज भी सालोमन के वंशजों का शासन है

श्रीगोपाल नेवटिया

अनुपम शैलावली, हरित भूमि, नव-पल्लवित विटप आदि से संपन्न प्रदेश में पहुंचकर भगवत्-कृपा के सम्मुख नमस्कार किये बिना नहीं रहा जाता। हजारों फुट ऊंचे पर्वतों के पठार पर बसा हुआ यह देश, और उसकी

* इथियोपिया से प्रवाहित होकर मिस्र देश को सींचनेवाली नील नदी की ओर यह संकेत है।

ऊपर अदिस अबाबा के अफ्रीका हाल की एक झांकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजधानी यह अदिस अबाबा प्राचीनता-आधुनिकता का प्राकृतिक और मानव-कृत निर्माण का अद्‌भुत एवं आह्लादकारी संमिश्रण है।

मिस्र देश के दक्षिण तथा अन्य अफ्रीकी देशों से पश्चिमोत्तर भाग में बसे साढ़े चार लाख वर्गमील व सवा दो करोड़ निवासियों के इस देश का इतिहास ख्रिस्ती-काल के पूर्व आरंभ होता है और २५०० वर्ष से आज तक एक ही शासक-कुल के अधीन है। इतनी प्राचीन वंश-परंपरा द्वारा शासित देश शायद ही दूसरा कोई हो। साम्राज्य-स्थापना के लोलुप पश्चिमी देशों के प्रहार से वंचित यह देश वास्तव में अनोखा है।

यह देश वैसे प्रहार से सर्वथा वंचित तो

वीर संत जार्ज

जो अदिस अबाबा के सबसे बड़े गिरजे के संरक्षक हैं और जिनकी आकृति इथियोपिया के राजमुकुट पर अंकित रहती है।

नहीं रहा। प्राचीन इतिहास की बात तो नहीं कहता; पर १८८० में इटली ने इस पर आक्रमण किया; लेकिन मुंहकी खाकर लौट गया। फिर १९३६ से मुसोलिनी ने इस देश पर कुछ वर्ष शासन किया। पर वह भी काल-कवलित हो गया और सालोमन-वंश का २५५-वां सम्राट् हेली सलासी प्रथम आज यहां राज्य कर रहा है। वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार यहां पार्लमेंट व मंत्री इत्यादि हैं सही; पर इस सफल व जनसुखदायी शासन का श्रेय है सर्वाधिकारी शासक हेली सलासी को, जो सन १९३० से यहां राज्य कर रहा है और इतना लोकप्रिय है कि सर्वत्र उसके चित्र प्रदर्शित हैं और राम की भांति उसकी सौगंध खायी जाती है। अगर बाहर सड़क पर से वह गुजर रहा हो, तो घर के भीतर लोग खड़े होकर श्रद्धा से झुक जाते हैं।

अद्‌भुत संयोग है! इस नगर के निर्माता मेनेलिक द्वितीय ने सत्तर वर्ष पूर्व भारतीय कारीगरों से अपने महल का निर्माण करवाया था और आज का सम्राट् अपने देश में कारखाने स्थापित करने के लिए भारतीयों को आमंत्रित करता है। सुविशाल महलों और प्रभावशाली देवस्थानों का युग अब नहीं रहा, अब युग है कल-कारखानों का, तेल-बिजली का। परंपरागत रीति से निर्गृह और निर्वस्त्र रहनेवाली प्रजा को जीवन के सुख प्रदान करने में निरत वर्तमान शासन का उदाहरण यहां देखिये। एक भारतीय यहां कपड़े की मिल स्थापित करता है धनी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

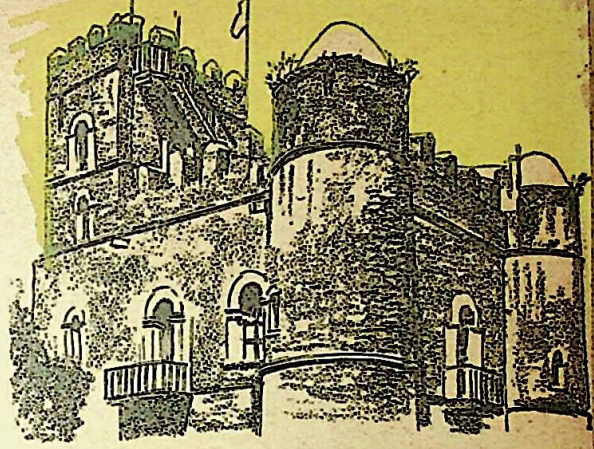

प्राचीन राजधानी गोंडार का एक किला

पार्जन के लिए; पर फलस्वरूप वह वस्त्रहीनों को वस्त्र प्रदान करता है। ऐसी है इस युग की गति।

व्यवसाय के उद्देश्य से मध्य एशिया की यात्रा के पश्चात् पूर्व अफ्रीका जाते हुए मैंने इस देश में जो देखा, जो सुख पाया, वह स्मरणीय रहेगा। इसकी प्रशंसा बहुत सुन रखी थी; पर इन चार दिनों के आवास में प्रत्यक्ष देख लिया। अभी यह देश आधुनिकता के प्रथम चरण में ही है। सैकड़ोंवर्षों से पशु-वत् जीवन-यापन करते आनेवाले यहां के लोग अब मनुष्यवत् रहने का प्रयास कर रहे हैं। मिट्टी के घरौंदों में प्रायः नग्न रहने-वालों और कच्चा गोश्त खानेवालों को मनुष्योचित जीवन-स्तर प्रदान करना कोई छोटा काम नहीं। आधुनिकता का प्रभाव भी अभी तक दो-चार शहरों में ही पहुंच पाया है, ग्राम-सुधार तो अभी भी स्वप्न-वत् ही है।

पार्वत्य प्रदेशों में अधिकांशतः जीविका-निर्वाह कष्टसाध्य होता है। पहाड़ी देश के निवासी अपने बुद्धिबल और अध्यवसाय से ही मैदानवालों की समता कर पाते हैं। किंतु यहां इथियोपिया में यह बात नहीं! पार्वत्य प्रदेश होकर भी यह समतल भूमि भागों से पूरित है। पनबिजली और खेती-बारी की यहां सुविधाएं हैं। काफी तो यहां की जगत्-विख्यात है और उसी के सहारे यह देश पनप रहा है।

परंतु भूमि का स्तन्यपान कर हृष्ट-पुष्ट होने के लिए सुयोग्य संतान भी चाहिये। ईश्वर की यह अकृपा ही समझिये कि पय-पूरित पर्वत-स्तन-मंडल का दोहन करने-वाले नहीं हैं ये लोग। बिना अथक श्रम के कहीं किसी की गरीबी दूर नहीं हो सकती, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इथियोपिया है।

क्षितिज पर नील पर्वतराजि है। उसके चरणों से यहां तक हरियाली विस्तृत है। मौसमी पीले फूलों से यह हरियाली सुशो-भित है। बीच-बीच में साफ-सुथरे गांव भी हैं। एक पतली-सी सड़क इस पार से उस पार तक निकल गयी है। यदा-कदा उस पर से एक-आध मोटर निकल जाती है। दूर कभी वायुयान भी नाद करता हुआ उड़ता दिखता है। इन दृश्यों में विशेष नवीनता नहीं। नवीनता इस बात में है कि अफ्रीकी रेगिस्तानों के बीच उत्तर से दक्षिण तक धरती को चीरती हुई 'रिफ्ट वैली' के बहुत बड़े भाग के दोनों ओर बसा यह प्राचीन देश इथियोपिया दिन प्रतिदिन अफ्रीकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जागृति का केंद्र हो रहा है।

प्रजातंत्र एवं जनसत्तात्मक शासन का आज बोलबाला है। वास्तव में त्यागी और कष्ट सहे हुए सत्तारूढ़ देशभक्तों के साथ शेर की खाल ओढ़े भेड़ियों की जमात का यह जमाना है। नवोदित देशों में तो ईसप के इस रूपक को बहुत सार्थक होते देखने को मिलता है। पर जहां असली शेर विद्यमान होता है, वहां भेड़ियों की नहीं बन पाती। कुछ ऐसी ही बात इस देश में है। यहां का सम्राट् बड़ा कर्मठ, बड़ा देशप्रेमी, बड़ा विवेकी है। मुसोलिनी से एक बार मार खाकर, सजग होकर, युद्धोत्तर विकास-भावना से प्रेरित और विदेशों से समर्थित होकर वह अपने देश की उन्नति में पूर्णतः प्रयत्नशील है।

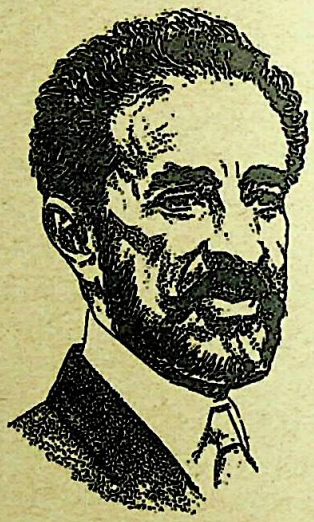

सालोमन का २५५ वां उत्तराधिकारी जनप्रिय सम्राट् हेली सलासी

वह जानता है कि प्रकृति की यह शोभा पर्यटकों को आकर्षित कर अवश्य ही देश की माली हालत सुधार सकती है; पर स्वीट्जरलैंड और बेरुत की भांति नहीं, जहां कि भौगोलिक स्थिति विशेष लाभप्रद है। वास्तविक उन्नति होगी भूमिदोहन से, मानव-श्रम एवं बुद्धि को वस्तुओं में परिणत करने से। इसीलिए वह अन्य उन्नति-व्यग्र देशों की भांति पनबिजली की वृद्धि, खेती बारी में सुधार-विस्तार तथा कल-कारखानों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। वह विदेशी धन और बुद्धि का आह्वान करता है, देशवासियों को कर्मशील होने के लिए प्रेरित करता है।

सम्राट् के इन प्रयासों का एक उदाहरण लीजिये। उसने अपनी राजधानी अदिस अबाबा में एक बड़ा सुंदर-सुसज्जित 'अफ्रीका हाल' बनवाया है, राष्ट्रसंघ के सभागृह सरीखा ही। उसी से संलग्न एक विशाल कार्यालय भी है। इस हाल में अफ्रीका संबंधी महत्वपूर्ण समारोह होते हैं, कार्यालय में राष्ट्रसंघ का अफ्रीकी आर्थिक उन्नति विभाग स्थित है। सैकड़ों विदेशी यहां अपने-अपने देश की मुद्रा और अपने ज्ञान का वितरण करते हैं। देश कितना लाभान्वित होता है इससे! और मेरे-जैसे सैकड़ों-हजारों पर्यटक उस भवन की शोभा देखकर हर्षित होते हैं।

इथियोपिया में विदेशियों पर कोई प्रतिबंध नहीं। कोई अपनी योग्यता लाये, कोई अपना धन—सबका स्वागत है। वह अपनी पिछड़ी हालत को, अपने अभावों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानता है और किसी प्रकार के राजनीतिक या सैद्धांतिक पूर्वाग्रह से वह अपनी प्रगति पर 'ब्रेक' नहीं लगाना चाहता। यही कारण कि भारतीय एवं जापानी वहां कपड़े की मिल लगाते हैं, तो डच चीनी की मिल; और जर्मन लाल सागर के इथियोपियाई तट ओगाडन में तेल की तलाश में हैं। औद्योगिकों के लिए यहां का द्वार खुला है। कोई प्रतिबंध नहीं।

आज सारे अफ्रीका का नवोदय हो रहा है। वहां के अनेक स्थानों की नैसर्गिक संपन्नता का जनहित के लिए दोहन अभी होना है। वह दोहन शीघ्र व सुचारु रूप से तभी संभव है, जबकि अपने कार्य में पटु और आवश्यक पूंजीवाले व्यक्ति वह काम अपने हाथ में लें। इथियोपिया के शासक ने इस सत्य को स्वीकार किया है।

लाखों वर्ष पहले एक भयंकर घटना घटी थी। उत्तर में लाल सागर से लेकर दक्षिण केन्या तक, यूरोप-एशिया के संगम से लेकर पूर्वी अफ्रीका तक पृथ्वी अचानक टूट गयी थी। कोई बड़ा भूकंप आया होगा। पृथ्वी उसी प्रकार टूटी, जिस प्रकार कच्ची मिट्टी के एक लोंदे को कोई दो ओर से झुकाये और उसके बीच में बड़ी दरार पड़ जाये। पृथ्वी में पड़ी यह दरार 'रिफ्टवैली' के नाम से आज भी भूगर्भशास्त्रियों के कौतूहल तथा प्रकृति-पर्यवेक्षकों के सुख-संपादन का विषय बनी हुई है।

ऊंचाई पर बसे इस देश में धरती की यह दरार अनुपम प्राकृतिक दृश्य उपस्थित करती है। इसी दरार के पहाड़ों में खोदकर बनाये गये गिरजाघरों के रजत-गुंबजों को प्रातःकालीन सूर्य के प्रकाश में चमकते देखा था, वायुयान में उड़कर जाते समय। नीचे की धरती हरियाली और उस पर खिले पीले फूलों से हरित-पीत-वसना हो रही थी। उसे काटकर बहते हुए जलप्रवाह, 'रिफ्ट वैली' की वह गहराई, वह मनोरमता और यत्र-तत्र वे पर्वत में खुदे गिरजाघर निराली शोभा उपस्थित कर रहे थे।

यहां हिमाच्छन्न गिरि-शिखरों की शोभा तो नहीं, शेष हरे-भरे पार्वत्य वन-प्रदेश की सारी शोभा विद्यमान है। और अफ्रीका में सुलभ वन-विहारी पशुओं की बहुतायत भी है ही। यों 'सभ्यता' ने यहां अभी विशेष प्रगति नहीं की है; पर ईसाइयत ने यहां-पंद्रह सौ वर्ष पूर्व प्रवेश पा लिया था। प्राचीन काल का धर्महीन देश अब पूरा-का-पूरा ईसाई है।

आज तो प्रकृति की कहिये अथवा ईश्वर की कृपा से तथा धर्म की प्रेरणा से, पूजा-स्थानों के निर्माण की अपेक्षा मानव-हित-साधन की संस्थाओं के ही प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन पार्वत्य प्रदेशों में बहती नील नदी के सौंदर्य को निरखकर उस पर कविता करने अथवा अजर पर्वत-स्कंधों को खोदकर उसमें चर्च बनाने की अपेक्षा जल-प्रवाह को रोकर बिजली-उत्पादन और पर्वत के पत्थर से सड़क-निर्माण की ओर ही प्रवृत्ति होती है। यही युगधर्म है और इथियोपिया भी आज इसी की साधना में प्रवृत्त है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोरेन कीएर्कगार्ड

पथ के प्रदीप

और जब भगवान किसी को अपने से बांध लेना चाहता है, तो अपने सबसे स्वामिभक्त नौकर, अपने सबसे विश्वस्त दूत दुःख को बुलाकर कहता है – उसका पीछा करो, उसके बगलगीर हो जाओ और उसके संग-संग रहो। . . . और कोई स्त्री भी अपने प्रियतम से इतने जोर से क्या चिपटती होगी, जितने जोर से दुःख चिपटता है।

जब विशेषतः विपदा के क्षणों में कोई मनुष्य दिखा देता है कि वह बड़े सुंदर ढंग से बना है, पुरानी वीणा की तरह है, जिसके सब तार विपदा में अक्षुण्ण तो बने रहते ही हैं, बल्कि हर नयी विपदा जिसमें एक नया तार जोड़ जाती है, तो निश्चय मानिये कि उस पर भगवान का अनुग्रह है।

पास्कल ने कहा है–"श्रद्धा करना बहुत कठिन है, क्योंकि कष्ट सहना बहुत कठिन है।" . . . बिना संकट के श्रद्धा असंभव है; आत्मा से नाता जोड़ने का अर्थ ही है विषम परीक्षा में पड़ना। श्रद्धा का, श्रद्धा करने की इच्छा का अर्थ ही है–जीवन को एक परीक्षा में बदल डालना। प्रतिदिन परीक्षा, यही श्रद्धा की कसौटी है।

समझने के अधिकार की प्रामाणिकता इसमें है कि मनुष्य जीवन में उतरे, सागर में कूद पड़े और जोर से पुकारे, भले ही भगवान सुन न रहा हो– तट पर खड़े-खड़े दूसरों को लड़ते-जूझते देखता न रहे। समझने की प्रामाणिकता इसी में है; क्योंकि एक टांग पर खड़े होकर भगवान का अस्तित्व सिद्ध करना और बात है, घुटने टेककर भगवान को धन्यवाद देना और बात है।

['जर्नल्स आफ कीएर्कगार्ड' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शराब से तौबा की जिगर के जिस्म की रवानि

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

जिगर मुरादाबादी, जो वर्तमान युग के गजल के बादशाह समझे जाते थे, जो मुशायरों में शिरकत फरमाने के लिए एक-एक हजार रुपया वसूल करते थे, जिन्हें अनेक नवाब और रऊसा अपने दरबार की जीनत बनाना चाहते थे, जिन्हें सुनने को बेगमात और शहजादियां लालायित रहती थीं, जो पढ़ते वक्त श्रोताओं की मंत्र-किलित जैसी स्थिति कर देते थे, जिन्हें सुनने को खासो-आम उमड़ पड़ते थे—वही जिगर नशे में चूर होने के कारण बाज दफा गजल नहीं पढ़ पाते थे, तो श्रोता-गण मन मसोसकर रह जाते और अपने इस महबूब शाइर को गर्के-मैनोशी (मदिरा-निमग्नता) से बचाने की दुआएं मांगते थे। उनके हितैषियों, पीरों, मुर्शिदों और मौलवियों ने इस लानत से बचने की नसीहतें भी कीं, मिन्नतें भी कीं; किंतु जिगर जैसे रिंद (शराबी) पर उनके समझाने-बुझाने का एक क्षण को भी प्रभाव नहीं हुआ। बल्कि बकौले-अदम वे यही कहते रहे—

कौन कहता है 'अदम' ने मैगुसारी[1] छोड़ दी।
इत्फिरा[2] है, झूठ है, बोहतान[3] है, इल्जाम है ॥

लेकिन यही रिंदे-पाकबाज किसी के तीरे-नजर से ऐसे बिस्मिल हुए कि फिर ताउम्र पीना तो दरकिनार, उसे छुआ तक नहीं। अधिकांश लोग इस इश्क को बवाले-जान समझते हैं; परंतु 'असर' लखनवी के इस शेर के अनुसार—

बेइश्क आदमी को सलीका नहीं आता।
जीना तो बड़ी चीज है, मगर मरना नहीं आता ॥

जिगर ने कूचए-इश्क में कदम रखकर जीना भी सीखा और मरना भी सीखा।

जिगर की वह महबूबा कौन थी, जिसने जिगर जैसे रिंद को जाहिद (संयमी) बनाकर रख दिया; पर अपने दामन को छूने तक नहीं दिया, जिसके कोठे को जिगर 'तूर' जैसे पवित्र और महत्वपूर्ण शब्द से संबोधित करते थे ?

१. सुरापान, २. आरोप, ३. लांछन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह चंद्रमुखी उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में आज भी जीवित है। उसकी जवानी के आलम में जिगर ने कहा था—

वे कहते हैं—सब दिल के अंदाज़ कहिये
मुहब्बत का अंजामो-आग़ाज़ कहिये
हरइक राज बेपर्दए-राज़ कहिये
कहां तक ग़मे-इश्क़े-शीराज़ कहिये
कि हर आरज़ू महशरे-आरज़ू है ।।

जिगर की इस माशूका से इंटरव्यू लेने के लिए हजरत मुहम्मद अजीम साहब फिरोजाबादी मैनपुरी तशरीफ ले गये थे। जबाने मुबारक से जिगर की तर्के-मैनोशी की दास्तां सुनिये :

मैनपुरी के उजड़े दयार में मुझे उसका पता चलाने में ज्यादा दुश्वारी नहीं हुई। उसके मकान के अंदर दाखिल हुआ, मैंने देखा कि एक बड़ी वीं चारपाई पर सिमटी-सिमटायी पड़ी हैं। सिर खुला हुआ, बाल ज्यादातर सफेद, चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुईं, आंखों में जहानत और तकद्दस के आसार नुमायां।

शीराजनः—(चारपाई से उठते हुए) कहिये, किसकी तलाश है आपको ?

मैं:—शीराजन से मिलना चाहता हूं।

चित्रकारः रामचंद्र शुक्ल

शीराजनः—(दालान में ले जाकर मुझे एक तख्त पर बैठने की फर्माइश करते हुए) जी, शीराजन मेरा ही नाम है;..... फर्माइये।

मैं:—मुझे 'जिगर' साहब के बारे में आपसे कुछ मालूमात हासिल करनी हैं।

शीराजनः—शौक से ! बेहतर यह होगा आप सवालात करते जायें और मैं उनके जवाबात देती जाऊं।

(इतने में शीराजन की छोटी बहन 'अम्माजन' भी उनके करीब ही चारपाई पर आ बैठीं और छालियां कतरते हुए मुझसे पान खाने की दरख्वास्त की।)

मैं:—मैं पान नहीं खाता।

अम्माजनः—तो फिर क्या तवाजअ की जाये आपकी ! चाय मंगवायी जाये ?

मैं:—मेहरबानी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अम्माजनः—आप पान भी नहीं खाते, चाय का भी शौक नहीं। चाय तो पी लीजिये, क्या मुजायका है ?

मैं:—सिर्फ जिगर साहब के बारे में अपनी तिश्नगी रफअ करने (जिज्ञासा शांत करने) आया हूं।

अम्माजनः—(प्रशंसात्मक स्वर में) बड़े भले आदमी थे बेचारे! बड़े अच्छे आदमी थे! हमारा उनका साथ कोई सोलह-सत्रह साल तक रहा। क्या तारीफ की जाये उनकी! बड़े भले आदमी थे।

मैं:—जिगर साहब से आपकी मुलाकात कहां और किस सन में हुई ?

शीराजनः—सन-वन तो मुझे याद नहीं; लेकिन उस वक्त मेरी उम्र सोलह-सत्रह साल की थी, और जिगर साहब कोई पच्चीस-तीस साल के रहे होंगे। यहीं इसी मकान में 'असगर' साहब उन्हें अपने साथ लाये थे।

मैं:—अब आपकी उम्र क्या होगी ?

शीराजनः—साठ के करीब समझिये।

मैं:—ये असगर साहब कौन हैं ?

शीराजनः—असगर हुसैन यहां एक मुख्तार थे। खासी प्रैक्टिस थी उनकी, करीब ही उनका फाटक है। इंतकाल हुए थोड़ा अर्सा हुआ।

मैं:—असगर गोंडवी से भी आप वाकिफ हैं?

शीराजनः—जी नहीं।

मैं:—असगर साहब जिगर के उस्ताद थे। कहा जाता है, ऐनक का कारोबार असगर साहब ही के ईम (संकेत) पर जिगर ने शुरू किया था।

शीराजनः—जिगर साहब जब मैनपुरी आते, तो ऐनक की पेटी उनके साथ जरूर होती थी। लेकिन ऐनक-फरोशी का काम उन्होंने यहां कभी नहीं किया।

मैं:—असगर साहब का जिक्र तो कभी किया होगा ?

शीराजनः—मुझे तो याद नहीं पड़ता।

मैं:—आखिर मैनपुरी तो मुशायरों का गढ़ रहा है। यहां फानी, जिगर, सीमाब सभी ने मुशायरों में शिरकत की है और मुमकिन है, जिगर साहब की वजह से ये शाइर आपके यहां भी आये हों।

शीराजनः—मुशायरे के बाद यहां शेरो-सुखन की मजलिसें जमती तो थीं और कभी-कभी उनमें बाहर से आये हुए शाइर भी तशरीफ लाते थे; लेकिन मैं फानी के अलावा और किसी को नहीं जानती।

मैं:—फानी का रंग सांवला था। और वे यों बुझे-बुझे नजर आते थे, जैसे उनका सब-कुछ लुट चुका हो।

शीराजनः—हां, एक सोगवारी तो उनके चेहरे से टपकती थी। लेकिन मुस्कराते वक्त वे बहुत हसीन मालूम होते थे। हालांकि बातें करते वक्त नजरें हमेशा नीची रखते थे। मैंने एक बार जिगर से इसका सबब पूछा भी। कहने लगे, उनकी आंखों में मेस्मरिज्म है; जिसकी तरफ देखते हैं, उसे अपना बना लेते हैं। सचमुच उनकी आंखों में बड़ी कशिश थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं:—फानी के लहजे में जो सोगवारी, महरूमी और मायूसी पायी जाती है, कहा जाता है, यह उनकी नाकाम मुहब्बत का नतीजा है। क्या यह सच है ?

शीराजन:—मैं आपकी बात नहीं समझी।

मैं:—कहा जाता है, फानी ने किसी से इश्क किया था और उसमें उन्हें नाकामी का मुंह देखना पड़ा।

शीराजन:—हां, इटावा की एक तवाइफ नूरजहां से वे मुहब्बत करते थे। और नाकामी क्यों होती उन्हें ?

मैं:—नसीम को देखा है कभी आपने ?

शीराजन:—जी नहीं।

मैं:—नसीम शुरू में क्या थीं ?

शीराजन:—मुझे नहीं मालूम।

मैं:—सुना है, जिगर साहब नसीम से बहुत मुहब्बत करते थे। लेकिन जब उन्हें पता चला कि असगर साहब भी नसीम पर फरेफ्ता हैं, तो उन्होंने उसे तलाक देकर असगर साहब से निकाह करा दिया। यह गोया जिगर साहब का बहुत बड़ा ईसार (त्याग) था अपने उस्ताद की खातिर। लेकिन जिगर साहब उस गम की ताब नहीं ला सके। शराब की पनाह ली, वतन को खैरबाद कहा और मैनपुरी चले आये।

अग्माजन:—नहीं, यह बात नहीं। लेकिन अब उसका जिक्र बाद अज वक्त है।

मैं:—क्या जिगर साहब ने नसीम का जिक्र आपसे कभी किया था ?

अग्माजन:—कभी नहीं।

मैं:—कहा जाता है कि शीराजन नसीम से बहुत मुशाबः (हमशक्ल) हैं और शीराजन से जिगर साहब की दिलबस्तगी की वजह भी यही थी !

अग्माजन:—जी नहीं, यह बात गलत है।

मैं:—क्या आपने नसीम को देखा था ?

अग्माजन:—जी नहीं, लेकिन मैंने सुना है और मुहब्बत तो जिगर साहब ने आपा (बड़ी बहन) ही से की, किसी और से नहीं। वे आपा से हमेशा 'सरकार' कह कर खिताब करते थे। और (छत की तरफ इशारा करते हुए) इसी बाला-खाने को, जिसमें हम रहते थे, वे तूर कहा करते थे।

मैं:—तो गोया 'शोलए-तूर' आप ही की फैजान (कृपा) है। खूब !

अग्माजन:—और 'शोलए-तूर'[1] तो वजूद में ही न आता, अगर आपा ने उसकी गजलें सेंत-सेंतकर न रखी होतीं। जिगर साहब तो बड़े लाउबाली (बेफिक्रे) थे। गर्के-जामे-शराब रहना और जिंदगी को फरामोश किये रहना उनकी जिंदगी थी। चुनांचे, भोपाल के कोई साहब उनके कलाम की इशाअत (प्रकाशन) की नीयत से मैनपुरी असगर हुसैन के पास आये, तो तमाम गजलें उनके सुपुर्द कर दी गयीं।

मैं:—(शीराजन से) अपने कलाम में जिगर

१. सीरिया का वह पहाड़, जिस पर हजरत मूसा ने खुदा का जल्वा देखा था। २. जिगर के प्रथम संकलन का नाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहब ने आपका नाम कहीं-न-कहीं जरूर नज्म किया होगा।

शीराजनः—बहुत-सी गजलों में; लेकिन 'शोलाए-तूर' की इशाअत के वक्त ऐसे अशआर को हजफ (नष्ट) कर दिया गया। और मुझे तो उनकी तमाम गजलें अजबर (कंठस्थ) थीं। लेकिन जब हज करने गयी, तो सब मेरी याद से महव (विस्मृत) हो गयीं।

मैं:—मुझे तो चंद अशआर ऐसे याद हैं, जिन्हें आपकी जात के सिवा और किसी से मनसूब नहीं किया जा सकता, जैसे—

कहां तक ग़मे-इश्क़े शीराज़ कहिये
कि हर आरज़ू महशरे आरज़ू है।

और वह पूरी गजल या नज्म जो 'यादे-ऐयाम' के उनवान (शीर्षक) से 'शोला-ए-तूर' में शामिल है।

शीराजनः—(याद करने की कोशिश करते हुए) मुझे तो अब कोई शेर याद नहीं आता।

मैं:—अच्छा तो यह बताइये कि जब जिगर साहब को आपसे ऐसी बेपनाह मुहब्बत थी, तो उन्होंने आपको छोड़ क्यों दिया?

शीराजनः—छोड़ने का क्या सवाल है? मेरे उनके कोई नाजाइज ताल्लुकात तो थे नहीं।

मैं:—मेरा मतलब है कि वे क्यों चले गये यहां से?

शीराजनः—जिगर साहब जब यहां आये, तो मैं सेठ धरमदास की मुलाजिम थी

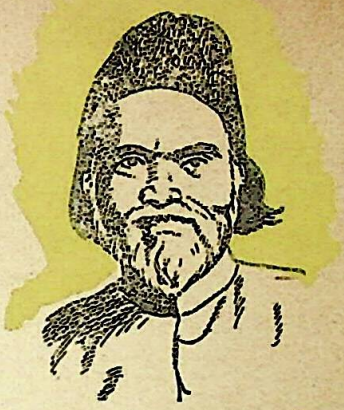

मरहूम जिगर मुरादाबादी

और सेठ धरमदास के सामने जिगर साहब बेचारों की हैसियत क्या थी? आमदनी का कोई मुस्तकिल जरिया तो था नहीं।

मैं:—आखिर खर्च किस तरह चलता होगा?

शीराजनः—असगर साहब उनके कफीले (खर्च उठानेवाले) थे।

मैं:—और शराब?

शीराजनः—शराब पिलानेवालों की कभी कमी नहीं रही। जिस जगह बैठ जाते, वहीं जगह मैखाना हो जाती।

मैं:—एक शाइरे-मुफलिस को कैसे बरदाश्त कर लिया आपने और खसूसन सेठ धरमदास ने? उनकी मौजूदगी से आपके मशागल (कारोबार) में भी तो हर्ज होता होगा?

शीराजनः—गाने-बजाने का काम अमूमन शाम को होता था। जिगर साहब ज्यादातर दिन में रहते थे। चार-पांच बजे के बाद चले जाया करते थे। और हर्ज की बात कहते हैं आप! मेरे कारोबार का फरोग (उन्नति) उन्हीं के दम से था। नयी-नयी गजलें लिखकर दिया करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे और सेठ धरमदास जानते थे कि जिगर साहब मुझे मुहब्बत करते हैं। लेकिन इशारतन या कनायतन (गुप्त रीति से) कभी कोई बात उन्होंने ऐसी नहीं कही, जो मेरी तबीयत पर गरा (भारी) गुजरे।

मैं:—नशे की हालत में जिगर साहब क्या बहक जाते थे ?

शीराजन:—कभी नहीं। वे इसका पूरा खयाल रखते थे कि बकैदे होशो-हवास (होशो-हवास सहित) मेरे यहां आयें और जब कभी लड़खड़ाती हालत में यहां आ जाते, तो मैं अंदर भाग जाती। वे मुअद्-बानः (बाअदब) एक तरफ बैठ जाते, जैसे अपनी गलती पर नादिम (लज्जित) हों।

मैं:-आप भाग क्यों जाती थीं ?

शीराजन:— मुझे शराब से नफरत थी। उसकी बदबू से मुझे मितली होने लगती थी। अपने-अपने मिजाज की बात है। गाने-बजाने से भी मुझे रगबत (रुचि) नहीं थी। मजबूरी से यह शगल (पेशा) इख्तियार कर रखा था। और जैसे ही फरागत (आत्मनिर्भरता) नसीब हुई, मैंने हमेशा के लिए यह बिसात उलट दी और हज करने चली गयी।

मैं:—हज आपने किस सन में किया होगा?

शीराजन:—पहला हज मैंने आज से कोई तेईस साल पहले किया था। वापसी पर असगर हुसेन और जिगर साहब मुबारक बाद देने आये, तो मैं उनके सामने नहीं आयी। हज का तबर्रुक (प्रसाद)

आबे-जमजम और कुछ खजूरें असगर साहब के लिए भिजवा दिं जिगर साहब की फर्माइश पर कहला दिया कि "जिस हलक में जमजम उतर आये, मैं उसका शराब आलूदा (तर) होना गवारा नहीं सकती।" जिगर साहब सन्नाटे आ गये। थोड़ी देर बैठे रहे, उठकर चले गये। असगर बदस्तूर बैठे रहे। थोड़ी देर में धोकर कपड़े बदलकर जिगर आये कहलवाया —"अब मेरे हिस्से का शराब भिजवा दीजिये। शराब मैं अब नहीं पिऊंगा।" मैंने अर्ज किया कि वादा तो आप कितनी बार कर चुके जिगर साहब ने कहा—"नहीं, अब पक्का इरादा कर लिया है, अब आपको शर्मिंदगी नहीं होगी।" गुजरा, दो दिन हुए, हफ्ता आया गुजर गया। उन्होंने शराब नहीं भोपाल या कहीं और जगह मुशाअ था। भाई को साथ ले गये। वापसी भाई ने शहादत दी कि जिगर साहब वाकई शराब को मुंह नहीं लगाया। यहां बराबर आते रहे। सामने आ मैंने छोड़ ही दिया था; लेकिन वे बर कहते रहे—"देखिये, अब मैं शरा नहीं पीता हूं। जब तीन महीने हो तो उन्होंने अक्द (शादी) की फर्म इश की। मैंने कहा, तीन महीना बहु कलील अर्सा है। अगर आप साल-भ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक साबित-कदम रहे, तो मुझे कोई उज्र न होगा। कबीदा खातिर (अप्रसन्न) हुए। किसी कदर झल्लाये भी। इसी दौरान में असगर गोंडवी के इंतकाल का तार आया, चले गये। वहां से खबर भिजवायी—"मैंने नसीम से अक्द कर लिया है। कोई आठ-दस साल के बाद गालिबन किसी मुशायरे के सिलसिले में मैनपुरी तशरीफ लाये। कहने लगे—" सरकार को अफसोस तो होता होगा।" मैंने पूछा—"किस बात का?" "मुझे खोकर आपने गलती की।" मैंने अर्ज किया—"जिगर साहब, खुदा की कसम, मुझे कोई अफसोस नहीं। खानादारी (घरेलू जीवन) अगर मुझे अजीज होती, तो सेठ धरमदास का बहुत नमक खाया था। हज के बाद जब उनके सामने भी नहीं आयी, तो उन्होंने कहा—"यह जिंदगी तुम्हारे बगैर कैसे कटेगी?" तो उनसे कह दिया कि मैं तो अब अपने खुदा से नाता जोड़ चुकी, आप अपने धरम के मुताबिक भगवान को याद कीजिये।"

मैं:—फिर उसके बाद आपकी जिगर साहब से मुलाकात नहीं हुई?

शीराजन:—हुई क्यों नहीं! कोई चार-पांच साल हुए, अपने एक अजीज से मिलने पाकिस्तान गयी हुई थी। देखा, जिगर साहब कार में चले आ रहे हैं। देखते ही मैं अंदर जाने लगी। जिद करके रोक लिया—"खुदा के लिए अब तो यह पर्दादारी रहने दो।", कुछ इधर-उधर की बातें होने के बाद मैंने अर्ज किया—मैंने पाकिस्तान में रहने का इरादा कर लिया है। आपकी क्या राय है? कहने लगे—"मैं तो हरगिज इसका मशविरा नहीं दूंगा। इतनी बड़ी जायदाद है आपकी। डेढ़-दो सौ रुपये महीने की किराये की आमदनी है। आखिर वहां आपको क्या तकलीफ है, जो आप यहां आना चाहती हैं? यहां कितने लोग हैं, जो मुसिर (आग्रही) हैं कि मैं यहीं ठहर जाऊं। लेकिन मैं यहां रुकनेवाला नहीं।" जब मैंने अपने इरादे का किसी कदर मजबूती से इजहार किया, तो कहने लगे—" पहले ही आपने मेरी बात कब मानी है, जो अब मानेंगी।"

मैं:—आपके पास जिगर साहब की कोई निशानी है?

शीराजन:—जी नहीं।

अम्माजन:—जिन दिनों जिगर साहब भोपाल गये थे, वहां चंद मुअज्जिम हजरात ने उनके साथ अपना फोटो खिंचवाया था। वापसी पर वह ग्रुप फोटो लाकर आपा की खिदमत में पेश किया और उसकी पुश्त पर अपने मखसूस कातिबाना अंदाज में यह शेर लिखा—

अब भी हैं तेरे तसव्वर से वही राज़ो-नियाज़।
अपने उजड़े हुए आग़ोशे—मुहब्बत की क़सम॥

वह फोटो अभी तक हमारे पास महफूज है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द लौटाने का सौदागर

कुष्ठरोग पर मानव को विजय दिलाने के लिए प्रयत्नशील अंग्रेज सर्जन दंपत्ति का जीवन-चरित्र 'सैटर्डे रेव्यू' से साभार उद्धृत—पोर्ट्रेट : वी० एन० ओझा

नार्मन कजिन्स

मद्रास से पचासी मील दूर वेल्लोर के मिशनरी मेडिकल कालेज और अस्पताल में इतिहास का एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। वहां दुनिया के सबसे आतंककारी रोग से लोहा लिया जा रहा है, उसे शिकस्त दी जा रही है। डा० पाल ब्रैंड और उनके सहयोगी चिकित्सक वहां जो मौलिक कार्य कर रहे हैं, उससे कोढ़-संबंधी वैज्ञानिक मान्यताओं में क्रांति-सी हो रही है।

समूचे इतिहास पर दृष्टिपात कर जाइये। किसी अन्य रोग से लोग इतना नहीं डरते, जितना कोढ़ से। किसी और रोग के विषय में लोगों में इतना अंधविश्वास भी नहीं है, जितना कोढ़ के विषय में है। कोढ़ी होने का मतलब ही है—समाज से ही नहीं, मानवीय सहानुभूति एवं करुणा के दायरे से भी बहिष्कार। ईसा के जन्म से पंद्रह सदी पहले मिस्र से तमाम कोढ़ी जलावतन कर दिये गये। उसके दो हजार वर्ष बाद एक राजा ने सारे कोढ़ियों को जिंदा भून डाला।

सदियों तक सारे यूरोप में कोढ़ियों को शहरों में कदम रखने की मनाही थी। उन्हें काले चोगे पहनकर और लकड़ी से खट्-खट् करते हुए चलना पड़ता था, ताकि लोग पहले से ही दूर हो जायें। दिन में शहरपनाह के बाहर किसी टीले पर उनके लिए खाना रख दिया जाता था; उसे उठाने के लिए भी वे केवल रात के समय जा सकते थे। अगर भूले-भटके कोई स्वस्थ आदमी उन्हें छू जाये, तो उसे तुरंत हाकिमों को सूचना देनी पड़ती थी और प्रायः उसे भी समाज से निकाल दिया जाता था।

चीनी इतिहास में अठारहवीं सदी में एक मंडारिन अफसर का जिक्र मिलता है। उसने एक बार आस-पास के कोढ़ियों को दावत दी। ऐलान किया गया कि दावत के लिए सब कोढ़ी शहर में प्रवेश कर सकेंगे। मीलों से चलकर कोढ़ी आये। जब भोज चल रहा था, मंडारिन ने मकान में आग लगवा दी। इने-गिने कोढ़ी ही उस अग्नि-व्यूह में से निकल सके और वे भी सिपाहियों द्वारा गोलियों से छलनी बना दिये गये।

आज कोढ़ी जिंदा जलाये या गोलियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा-जगत की बेजोड़ जोड़ी मार्गरेट और पाल ब्रैंड

से भूले तो नहीं जाते; लेकिन कोढ़ के बारे में युग-युग से चली आती हुई भ्रांतियों में खास फर्क नहीं पड़ा है। अब भी कोढ़ को रोग के बजाय एक अभिशाप माना जाता है। अगर अभी कहा जाये कि एक कोढ़ी हमारे कमरे में प्रवेश करनेवाला है, तो हममें से अधिकांश व्यक्ति निश्चय ही भय से चौंक उठेंगे।

चिकित्साशास्त्र का तो आधार विज्ञान है। लेकिन वह भी अन्य रोगों के मुकाबले कोढ़ के बारे में बहुत कम जानता है। सच यह है कि कोढ़-संबंधी प्रचलित भ्रांतियां जिन भावनाओं से उपजी हैं, उनसे कोढ़संबंधी डाक्टरी चर्चाएं भी पूर्णतः मुक्त नहीं हैं।

इस वक्त संसार में कोढ़-ग्रस्तों की संख्या १ करोड़ ४० लाख के करीब है। दूसरे तमाम रोगों ने मिलकर उतने लोगों को अपंग नहीं बनाया है, जितनों को अकेले कोढ़ ने।

डा० पाल ब्रैंड एक ४९-वर्षीय अंग्रेज सर्जन हैं—विकलांगों की शल्य-चिकित्सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के विशेषज्ञ। पक्षाघात अथवा अन्य कारणों से बेकार हुए हाथों को पुनः उपयोगी बनाने के लिए वे सारे संसार में डाक्टरी हलकों में जाने जाते हैं।

पाल ब्रैंड जब १९४७ में वेल्लोर आये, वे अभी युवक थे। अगले साल उनकी पत्नी भी आ पहुंचीं। वे भी सर्जन हैं। पाल और मार्गरेट आज के चिकित्सा-जगत के सबसे अनोखे दंपतियों में से हैं। पाल ने हजारों कोढ़ियों को पुनः अपने हाथों का उपयोग करने योग्य बनाया है। मार्गरेट ने हजारों कोढ़ियों को अंधेपन के खतरे से उबारा है। दोनों मेडिकल कालेज में अध्यापन और शोध करने के अलावा चिकित्सा करते हैं।

डा० ब्रैंड जब भारत आये, वे देखना चाहते थे कि लूले हाथों के पुनर्निर्माण की उनकी विलक्षण दक्षता क्या कोढ़-ग्रस्तों के लिए भी उपयोगी हो सकती है। सामान्यतः कोढ़ियों की हथेलियों की मांसपेशियों का नियंत्रण करनेवाली स्नायु-तंतुओं को पक्षाघात हो जाता है, जिससे उनकी उंगलियां अकड़ व सिकुड़ जाती हैं। पाल ब्रैंड इन उंगलियों को बाहों की स्वस्थ स्नायुओं की प्रेरणा (इंपल्स) से संबंधित कर, पुनः सक्रिय बनाना चाहते थे।

लेकिन वेल्लोर में शीघ्र ही उन्हें अनुभव हो गया कि कोढ़ियों के हाथों के सुधार तक ही वे अपने को सीमित नहीं रख सकते। उन्हें तो समूचे कोढ़ से जूझना होगा। कोढ़ क्या है? वह मनुष्य को कैसे दबोचता है? कैसे उससे लड़ा जा सकता है?...वे शोध में डूब गये। जितना ही उनका ज्ञान बढ़ा, भावना भी उनके मन में पक्की होती गयी कि कोढ़-संबंधी जो वैद्यकीय धारणा लेकर वे भारत आये, वे सब बासी और बिलकुल मध्यकालीन।

वैसे यह बात काफी समय से ज्ञात थी कि तपेदिक की तरह कोढ़ भी कीटाणुओं से पैदा होता है। डेढ़ सौ साल पहले जॉर्ज हेनरिक हैन्सन ने यह बात पता लगायी थी। तपेदिक की तरह कोढ़ के कीटाणु भी रोग उत्पन्न कर देते हैं, जो मटर के दाने से लेकर बेर तक विभिन्न परिमाण के हो सकते हैं। ये मुंह पर, कानों पर, हथेलियों पर और पांवों पर निकलते हैं। चिकित्सक यह भी जानते थे कि कोढ़ियों की उंगलियों व हाथ-पांव के गल जाने में इन कीटाणुओं का हाथ है।

लेकिन कोढ़-आक्रांत कोशों के संबंध में अब तक बहुत कम शोध किया गया है। कुष्ठग्रस्त अवयवोंके कोशों और स्वस्थ कोशों में कोई अंतर होता है? क्या अवयवों की मृत्यु में कोढ़ के कीटाणु सीधे कारण बनते हैं? डा० ब्रैंड ने निदानशास्त्रियों (पैथालाजिस्टों) को ये सब बातें खोजने में लगा दिया; और उनके शोध से यह चौंका देने वाला तथ्य निकला कि स्वस्थ कोश और कोढ़-आक्रांत कोश में कोई फर्क नहीं होता।

अलबत्ता यह सच है कि कोढ़-कीटाणु स्नायुओं के सिरों को बेकार बना देते हैं, जिससे उनकी स्पर्श-शक्ति समाप्त हो जाती है, या बहुत क्षीण हो जाती है। लेकिन कोढ़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में कोई विकृति नहीं पैदा होती।

और जैसा कि चिकित्साशास्त्र में बहुत बार होता है, डा० ब्रैंड की सबसे महत्वपूर्ण खोजें व्यवस्थित शोध का परिणाम नहीं थीं, अकस्मात हाथ लग गयी थीं। शुरू में ही उनका ध्यान कोढ़ियों के हाथों की मजबूती की ओर गया था। कोढ़ियों से हाथ मिलाते समय ऐसा प्रतीत होता है, जैसे हाथ शिकंजे में कस दिया गया हो। क्या कोढ़ से हाथों की शक्ति बढ़ जाती है?

इस सवाल का उत्तर अचानक ही मिल गया। डा० ब्रैंड अपने कमरे का बड़ा-सा ताला खोलना चाहते थे; लेकिन चाबी ताले में घूमती ही नहीं थी। बारह साल का एक कोढ़ी बालक उनकी परेशानी देखकर मदद करने आया। इस आसानी से उसने चाबी घुमा दी कि डा० ब्रैंड चकित रह गये। उन्होंने बालक के दायें हाथ का निरीक्षण किया, तो पाया कि चाबी की मूठ ने उसके अंगूठे की हड्डी को चीर डाला है। किंतु चाबी घुमाते वक्त बालक को इसका एहसास भी नहीं हुआ।

डा० ब्रैंड को अपने सवाल का समाधान मिल गया। स्नायुओं के अग्रभागों की संवेदनशक्ति नष्ट हो जाने के कारण ही बालक चाबी पर इतना जोर लगाता चला गया, जबकि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति दर्द के कारण छोड़ देता। तो कोढ़ियों के हाथों में अतिरिक्त शक्ति नहीं होती; बल्कि दर्द महसूस न होने के कारण वे यह नहीं जान पाते कि उन्हें कब जोर लगाना बंद करना चाहिये।

अब उनके मन में यह विचार उठा कि कोढ़ियों के हाथ-पैर की उंगलियों के नष्ट होने का कारण भी यही तो नहीं है। उन्होंने कोढ़ियों के काम-काज का निरीक्षण किया और इससे उनकी मान्यता की पुष्टि हुई। उन्होंने कोढ़ियों को सिखाया कि काम करते हुए कितना जोर लगाना चाहिये; और उनके हाथों की रक्षा के लिए विशेष दस्ताने बनाये। अब इसका विशेष ध्यान रखा जाने लगा कि घाव लगने पर तुरंत मरहम-पट्टी क दी जाये, जिससे व्रण न बनने पाये।

बड़ा चमत्कार हुआ। नये घावों की संख्या घट चली, कोढ़ियों की उत्पादन-क्षमता भी बढ़ी। आखिर चिकित्सा की सही दिशा मिल गयी।

किंतु रोगियों की समूची उंगलियां या उनके अंश अब भी गायब हो जाया करते थे। क्या कारण हो सकता था इसका? क्या वे कटकर या टूटकर गिर जाते थे? वैसे इसका कोई सबूत नहीं था कि कोढ़ियों की हड्डियां स्वस्थ व्यक्तियों की हड्डियों से ज्यादा भंगुर होतीं हैं। और न ही उंगलियों के कटे टुकड़े कहीं देखने को मिले थे।

इस समस्या पर विचार करते-करते उनके मन में एक विचार कौंध गया। चूहे! जरूर उनका इसमें हाथ है। सो कोढ़ियों के शयन-कक्षों में रात को पहरा लगाया गया। डा० ब्रैंड का खयाल दुरुस्त था। चूहे रोगियों के बिस्तरों पर चढ़ जाते थे, वे चुपचाप उन्हें सूंघते और जब देखते कि रोगी कोई प्रतिरोध नहीं करते, तो धीरे-धीरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी उंगलियां कुतरने लगते।

चूहों के विरुद्ध अभियान शुरू किया गया। खाटों की ऊंचाई बढ़ायी गयी। चूहे खाट के पायों पर चढ़ न सकें, इसकी भी व्यवस्था की गयी। उंगलियों का गायब होना बहुत घट गया।

साथ ही डा० पाल ब्रैंड ने अपना मुख्य कार्य अर्थात् हाथों का पुनर्निर्माण, सिकुड़ी हुई उंगलियां सीधी करना, मांस-खंडों को सक्रिय बनाना जारी रखा। जिन हाथों की उंगलियां जा चुकी हों या अंश मात्र बाकी हों, उन्हें वे पुनः सक्रिय बनाते। इस तरह हजारों कोढ़ियों के हाथ उत्पादक श्रम करने योग्य हो गये।

कोढ़ की एक अति भयंकर और प्रसिद्ध निशानी है नाक का धंस जाना। उंगलियों की भांति नाक भी संवेदन-शक्ति के क्षय के कारण नष्ट हो जाती हो, यह संभव नहीं लगता था। वैसे भी कोढ़ी के चेहरे और खासकर मुंह के आस-पास के भाग में काफी संवेदन-शक्ति बाकी रहती है।

खोज करते-करते वे इस परिणाम पर पहुंचे कि कोढ़ के कीटाणुओं के असर से नाक के भीतर की श्लेष्मा झिल्ली (म्यूकस मंब्रेन) सिकुड़ जाती है और उस झिल्ली से जुड़ी हुई नाक की कच्ची हड्डी भीतर खिंच जाती है। तो दरअसल नाक नष्ट नहीं होती, खोपड़ी में घुस जाती है। और डा० ब्रैंड ने देखा, आपरेशन द्वारा नाक को भीतर की ओर से ऊपर उठाना ही इसका इलाज है। बड़ा क्रांतिकारी विचार था; परंतु अब तो संसार के अनेक अस्पताल इस आपरेशन द्वारा कोढ़ियों की नाक ठीक करने लगे हैं।

अगली चीज थी आंख। कोढ़ जो आंख ढाता है, उनमें सबसे दुखदायी है अंधापन। सदियों से यही माना जाता था कि नेत्र बहुत बढ़ जाने पर आंखों को नष्ट कर देते हैं। लेकिन वेल्लोर के सर्जन इस परिणाम पर पहुंचे कि अंधापन कोढ़ का आनुषंगिक परिणाम है।

उनकी धारणा बनी की विटामिन 'ए' की कमी से मोतियाबिंद होता है, जो इलाज न किये जाने पर रोगियों को अंधा कर देता है। रोगियों के भोजन में विटामिन 'ए' की मात्रा बढ़ा दी गयी, मोतियाबिंद के नये केस आना घट गया। पुराने मोतियाबिंद का आपरेशन किया जाने लगा।

पाल ब्रैंड की पत्नी सर्जन मार्गरेट इस क्षेत्र में विशेष कार्य कर रही हैं। मोतियाबिंद के सौ-सौ आपरेशन तक एक दिन में कर देती हैं। यूरोप व अमरीका में १०-१२ आपरेशन भी बहुत समझे जाते हैं। लेकिन वेल्लोर के सर्जनों के सामने हजारों रोगी अंधत्व से त्राण पाने के लिए कतार बांधकर खड़े रहते हैं। लिहाजा आपरेशन की ऐसी विधियां अपनायी गयी हैं, जिनमें समय बचता है।

डा० मार्गरेट ब्रैंड एक चलते-फिरते आपरेशन यूनिट में हैं। यूनिट दूर-दूर के गांवों का दौरा करता है। तंबू गाड़कर आपरेशन थियेटर बना लिया जाता है। बिजली जीप के इंजिन से प्राप्त की जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु वेल्लोर के बहुत-से कोढ़ियों को मोतियाबिंद नहीं था, फिर भी वे दृष्टि-शक्ति खोते जा रहे थे। उनकी आंखों में व्रण पैदा हो गये थे। क्या कोढ़ के कीटाणुओं ने व्रण पैदा कर दिये थे? या कहीं यह भी कोढ़ का आनुषंगिक परिणाम तो नहीं था?

हवा में धूल और गर्द भरी रहती है। उसके कण आंख की पुतली से टकराकर उसमें खुजली पैदा करते हैं। आंखें इसका स्वयं इलाज कर लेती हैं। हमारी पलकें दिन में हजारों बार झपकती हैं और अश्रु-ग्रंथियों से निकले खारे पानी से पुतली को धोकर खुजलाहट शांत करती हैं। डा० ब्रैंड और सहयोगियों ने कल्पना की कि कोढ़ियों में यह प्रक्रिया नहीं होती, क्योंकि स्नायुओं के अग्रभागों के बेकार हो जाने के कारण उनकी पुतलियां संवेदनशील नहीं होतीं।

निरीक्षण से पाया गया कि कोढ़ियों की आंखों में धूल पड़ने पर भी पलकें नहीं झपकतीं; लिहाजा पुतलियों की धुलाई नहीं हो पाती और व्रण बन जाते हैं। इसलिए कोढ़ियों को पलकें झपकाते रहने की ट्रेनिंग दी जाने लगी है। किंतु देखा गया कि इसमें रोगियों को पलकों पर ध्यान केंद्रित रखना पड़ता है, जिससे वह और कुछ सोच नहीं पाते। पलकें अपने आप यह काम करें, ऐसी व्यवस्था करना आवश्यक था।

शल्य-चिकित्सा ने उन्हें इसका रास्ता दिखाया। पाल ब्रैंड और उनके सहयोगियों ने पलकों को जबड़ों की मांसपेशियों से जोड़ दिया। इससे रोगी जब भी मुंह खोलता है, पलकें नीचे खिंच आती हैं और पुतलियों की धुलाई हो जाती है।

वेल्लोर तथा दूसरे स्थानों पर हुई इन खोजों से कोढ़ विषयक भयंकर भ्रांतियां धीरे-धीरे दूर हो रहीं हैं। कोढ़ बहुत संक्रामक नहीं होता, जैसा कि लोग भ्रमवश समझते हैं। वस्तुतः स्वस्थ आदमी को कोढ़ लगना बहुत कठिन है। हां, जब शरीर कमजोर हो, तब तपेदिक की तरह यह भी हमला कर सकता है। यह आनुवंशिक रोग भी नहीं है। अलबत्ता माता-पिता कोढ़ी हों, तो संतान को कोढ़ होने की संभावना अधिक होती है। पर ऐसा तो और रोगों में भी होता है।

मूलतः कोढ़ गंदगी, कंगाली और अपौष्टिक आहार का परिणाम है। ऊष्ण कटिबंध से उसका कोई खास संबंध नहीं है। आइसलैंड में भी कोढ़ी हैं। संसार का कोई देश इस रोग से अछूता नहीं। किंतु इसका उन्मूलन साध्य है और चिकित्सा द्वारा कोढ़ियों को काफी हद तक रोगमुक्त करके स्वस्थ-सामान्य जीवन बिताने योग्य बनाया जा सकता है।

दर्द खतरे की घंटी भी है और रक्षा-कवच भी। वह मनुष्य को अपने शरीर को अक्षुण्ण बनाये रखने की क्षमता देता है। संसार के करोड़ों रोगी दर्द की यह शक्ति खो बैठने के कारण खतरे में हैं। उनके लिए पाल ब्रैंड और उनके सहकारी दूसरी खतरे की घंटियों की व्यवस्था कर रहे हैं। और एक दिन वे दर्द और उसमें छिपी कल्याण कारी शक्ति पर अधिकार पा लेंगे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने लिखना कैसे सीखा

मैक्सिम गोर्की

जब कोई लेखक अपने परिचित किसी अफसर, दुकानदार या मजदूर का चित्रण करता है, तो वह बहुत कुछ उस व्यक्ति की प्रतिमूर्ति बनाता है। लेकिन इतने पर भी उसका कोई सामाजिक मूल्य नहीं होगा और न उससे हमारे ज्ञान में कोई वृद्धि ही होगी।

यदि कोई लेखक सौ-पचास दुकानदारों, अफसरों या मजदूरों के स्वाभाविक गुणों, अर्थात् उनकी आदतों, रुचियों, तरीकों, भंगिमाओं और विश्वासों को किसी एक मजदूर, अफसर या दुकानदार के अंदर चित्रित करता है, तो उसकी कृति कला-पूर्ण होगी। उससे हमारे ज्ञान की वृद्धि होगी और उसका सामाजिक मूल्य होगा।

मुझे अपने एक कथा-नायक 'फोमा गोर्डयेव' का चित्रण करने के लिए दर्जनों व्यापारियों के लड़कों को देखना पड़ा, जो अपने पिता के जीवन से असंतुष्ट थे। उन लोगों के भीतर यही भावना रहती थी कि उनका जीवन बेकार है। ये लोग ऊबकर शराब पीने लगते, ऐयाशी में डूब जाते और अपने जीवन को जलाते रहते थे।

लिखने की आकांक्षा क्यों उदित होती है? इस प्रश्न के दो उत्तर हैं। पहला वह, जो मुझे पंद्रह वर्ष की लड़की ने लिखा है। "मेरी आयु केवल पंद्रह वर्ष है; लेकिन इस आयु में ही मैंने जान लिया है कि मुझ में लेखन-प्रतिभा है। इसका कारण है, मेरा दरिद्र और अभावपूर्ण जीवन।" यहां अगर 'लेखन-प्रतिभा' के स्थान पर उसने 'लिखने की आकांक्षा' लिखा होता, तो ज्यादा ठीक होता।

दूसरा प्रश्न यह उठता है कि यदि कोई दरिद्र और अभावपूर्ण जीवन बिताता है तो लिखेगा किस चीज के बारे में?

इसका उत्तर दिया है वोल्गा-काठे की यूराल और साइबेरिया की जातियों ने। कुछ दिनों पहले तक इसमें से कई जातियों में लिखने की कोई लिपि नहीं थी। इन लोगों ने वनों, रेगिस्तानों, दलदलों आदि में रहते हुए भी पिछली दस शताब्दियों में अपने दरिद्र जीवन को परियों की कहानियों से, गीतों से, देवताओं और वीरों की कथाओं से सजाया है। देवताओं की कथाएं कल्पना के आधार पर रची गयीं और इन्हें को धर्मकथाओं की संज्ञा दी गयी। सच पूछा जाये, तो वे कलाकृतियां हैं।

मेरा तो विश्वास है कि यदि इस पंद्रह वर्षीय पत्र-लेखिका में सचमुच लिखने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा है, तो वह तथाकथित रूमानी चीजें ही लिखेगी। "अपने दरिद्र और पूर्ण जीवन" को उत्तम बनाने के लिए वह अपनी कल्पना से अच्छा ही चित्रण करेगी। गोगोल ने भी अपनी कहानियों में ऐसा ही किया है।

प्रश्न यह पैदा होता है कि साहित्य में रूमानियत आवश्यक है? इसका उत्तर होगा–हां! लेकिन साथ ही हम इस रूमानियत में एक विशेष महत्वपूर्ण चीज का पुट और दे दें।

सत्तर वर्ष के एक मजदूर पत्र-लेखक ने मुझे लिखा है–"मेरी अनुभूति इतनी है कि बिना लिखे मुझसे रहा नहीं जाता।"

इस तरह लिखने की आकांक्षा का उदय जीवन के अभाव और दरिद्रता में नहीं, वरन उसकी अनुभूतियों में होता है। मेरे अधिकांश तरुण पत्र-लेखक इस कारण से लिखना चाहते हैं कि उनके भीतर अनुभूतियों का भंडार है। वे अनुभव करते हैं कि जो कुछ भी उन्होंने देखा और अनुभव किया है, उसके विषय में वे चुप नहीं रह सकते। इन तरुण लेखकों में से अनेक यथार्थवादी लेखक निकलेंगे। मेरा विश्वास है कि उनके यथार्थ में रोमांस अवश्य रहेगा।

सत्य और सौंदर्य

जो सुंदर विचार है, वही हृदय में संजोने योग्य है। जो सुंदर शब्द है, वही शाश्वत रहने योग्य है। जो कार्य सुंदर है, वही सर्वदा और वस्तुतः सत्य है, समुचित है। बस इतना याद रखो कि तुम्हारी सौंदर्य की पहचान खरी और बेचूक हो; और इसके लिए तुमसे अनुरोध है कि सर्वोच्च सौंदर्य के निकट बने रहो– इतने निकट कि वह तुममें समा जाये।

–बर्था बेली

मैंने लिखना क्यों आरंभ किया? मेरा उत्तर इस प्रकार है–मैंने लिखना आरंभ किया अपनी दरिद्रता और कष्टमय जीवन के कारण और उन अनुभूतियों के कारण, जिन्होंने मुझे लिखने को बाध्य कर दिया था। और तब मैं चुप कैसे रह सकता था? पहले कारण से मैंने दरिद्र और अभावपूर्ण जीवन में कल्पनापूर्ण चीजें लिखीं, जैसे कि 'बाज और पहाड़ी चूहा' 'जलते हृदय की कथा' आदि। दूसरे कारण से मैंने यथार्थवादी रचनाएं कीं, जैसे 'छब्बीस पुरुष और एक लड़की', 'आर्लोव' आदि।

अब मैं एक प्रश्न का उत्तर दूंगा–'मैंने लिखना कैसे सीखा?'

मेरी अनुभूतियां दो तरह से आयीं– सीधे जीवन से तथा ग्रंथों से। सीधी अनुभूतियों की तुलना कच्चे माल से की जा सकती है और पुस्तकों से प्राप्त अनुभूतियों को आधे कच्चे माल से। और भी स्पष्ट शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रथम अनुभूति में मैंने एक हिरन देखा और दूसरी में सुंदर चमड़ा।

मेरे बाबा बड़े निर्दय और कंजूस थे; लेकिन मैं उन्हें अच्छी तरह तभी समझ पाया, जब मैंने फ्रेंच लेखक बालजक का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

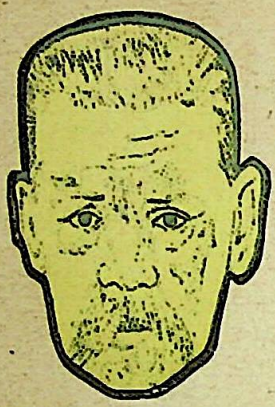

मैक्सिम गोर्की

उपन्यास 'यूजीन ग्रांद' पढ़ा। बूढ़ा ग्रांद भी कंजूस और कठोर है। लगभग मेरे बाबा की तरह। मेरे बाबा, जो मुझे तनिक भी अच्छे नहीं लगते थे, इस फ्रांसीसी नायक के साथ तुलना करने पर मुझे अधिक श्रेष्ठ जान पड़ने लगे। इससे उनके प्रति मेरा मनोभाव बदला हो, सो बात तो नहीं; लेकिन यह मेरे लिए एक बहुत बड़े ज्ञान की बात थी कि जिस आदमी को मैं पहले से जानता था, उसके बारे में एक पुस्तक ने मुझे एक नयी बात बतायी।

बीस वर्ष की आयु में मुझे आभास हो गया कि मैंने बहुत-सी बातें देखी, सुनी और अनुभव की हैं, जिनके बारे में मुझे लिखना चाहिये। मुझे लगता था कि मैंने कुछ चीजों को दूसरों से भिन्न दृष्टिकोण से देखा है, एकदम भिन्न ढंग से सोचा और समझा है। तुर्गनेव जैसे महान लेखक की रचनाएं पढ़ते समय भी मैं सोचता था, यदि मैंने ये कहानियां लिखी होतीं, तो इसका कुछ दूसरा ही रूप होता।

इस समय तक लोग मुझे दिलचस्प कहानियां कहनेवाला समझने लगे थे। नाना तरह के श्रमिक, आवारा लोग और यात्री जिनके बीच मैं रहता, बड़े ध्यान से मेरी कहानियां सुनते थे।

मैं पढ़ी हुई कहानियां कहते समय अपनी ओर से अपने अनुभव की बहुत-सी बातें भी जोड़ देता था। ऐसा क्यों होता था? क्योंकि साहित्य और जीवन मेरे लिए एक रूप हो गये थे। मेरे लिए पुस्तकें भी मनुष्य की तरह सजीव और बोलती मालूम पड़ती थीं। जो बुद्धिजीवी मेरी बात सुनते थे, वे कहते—"लिखो, लिखने की चेष्टा करो।"

लेखक अपने देश, जाति और समाज का स्वर होता है। उसे यथासंभव ज्ञान का पार्जन करना चाहिये। भूतकाल का जितना ठोस ज्ञान उसे होगा, उतना ही सही ज्ञान उसे वर्तमान का हो सकेगा, उतनी ही गहराई के साथ वह समय की क्रांति और जनता के इतिहास को समझ सकेगा।

इसी प्रकार के सजीव विचारों ने ही मुझे सोचना और लिखना सिखाया है।

जीवन-अनुभव के बिना पुस्तकें व्यर्थ हैं, क्योंकि पुस्तकों का उद्देश्य जीने की कला सिखाना है।

—जान

मेरी पुस्तकें ही मेरी मित्र, मेरा प्यार, देवालय, विश्रामस्थल और मेरी संपत्ति हैं।

— आर० लि० गॉल्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी कल्पना का सुख

मैं एक ऐसी सुंदर कुटिया की कल्पना करता हूं, जो किसी नदी के किनारे हो और नदी के उस पार विशाल धूमिल पर्वत-माला का दृश्य दीखता हो। वहां कुछ चुनी हुई पुस्तकों का संग्रह हो—दर्शन, साहित्य और संगीत-संबंधी। पास में एक सुंदर वीणा हो, जिस पर प्रातः और सायं अपने प्रिय गीत गा सकें - रवींद्र, कबीर और तुलसी के। एक लेखक या लेखिका भी साथ हो, जो मेरे विचारों को लिख सके और कभी-कभी सुंदर गीत सुना सके। कुटिया के आस-पास सुंदर उद्यान हो, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प खिले हों, जिनकी सुगंध से उद्यान महक उठे। एक विशाल वट-वृक्ष भी हो, जिसकी शीतल छाया में ध्यान आदि कर सकें। साथ ही एक कृषि-क्षेत्र हो, जिस-में आवश्यकता के योग्य खाद्य-पदार्थ उत्पन्न कर सकें।

—व्योहार राजेंद्रसिंह

०००

हमारे देश का हर आदमी प्रतिदिन कम-से-कम १५-१६ घंटे काम करे। हमारी आर्थिक-स्थिति दुनिया में सबसे सुदृढ़ हो। हमारी सेनाएं आधुनिकतम-अजेय हों। देश के भीतर सामाजिक न्याय एवं सुरक्षा हो। प्रगति का सबको समान अवसर हो। हमारा नेतृत्व कोई ऐसा पुरुष करे, जो कैनेडी की तरह युवा हो, कुसुम से कोमल, वज्र से कठोर हो, सर्वगुण संपन्न, दर्शनीय हो! भारत का ही नहीं, जो विश्व का एकछत्र नेता—युगद्रष्टा हो।

और तब चीड़ के वनों के बीच, मेरी एक कुटिया हो। रेडियो हो, संसार की अनगिनत पुस्तकें-पत्रिकाएं हों, लिखने के लिए ढेर-सारे कागज हों। मित्रों के बीच मैं हूं और चाय की प्यालियां हों- चेखव, रोला, काफ्का और सार्त्र की बातें हों।

—हिमांशु जोशी

०००

जब मैं अपने खेत में कठिन परिश्रम करता हूं, तो मेरी कल्पना उन हरे-भरे खेतों में रहती है; मेरी मित्रता उन बढ़ते पौधों से होती है, जिनके विकास में मेरी उन्नति छिपी हुई है। उन्हें लहलहाते देख मेरा हृदय असीम सुख और गर्व से भर उठता है। इसी सुख के लिए मैं अपनी सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थकान धरती की मृदु मुस्कान पर भूल जाता हूं! —अवधनाथ दुबे

०००

मेरे पिताजी पी० डब्ल्यू० डी० के 'ए' क्लास ठेकेदार हैं। मेरी भी तीव्र इच्छा है कि मैं उनकी तरह कर्मठ, साहसी, सुंदर और शक्तिसंपन्न बनूं। बिल्डिंग की ठेकेदारी के साथ ही जंगल की ठेकेदारी भी सफलतापूर्वक करूं। मैं स्वयं फसल उत्पन्न कर सकूं। घर में ही दूध-दही तैयार हो।... मेरे जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ न जाये और मैं अपने देश व समाज की पूरे दिल से सेवा कर सकूं। —केशवप्रसाद पटेल

०००

अब से कोई दस-ग्यारह वर्ष पूर्व जब मैं कालेज का विद्यार्थी था, एक प्राध्यापक ने पूछा—"आखिर, तुम जीवन में क्या करना चाहते हो?"

"कुछ नहीं, केवल देश-देशांतरों में घूमता फिरूं और जब खूब थक जाऊं, तब अपने देश लौट आऊं। यहां रहकर उस ज्ञान गरिमा से श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को जन्म दे सकूं।".....आज भी मेरी वही कामना है। —रमेशचंद्र कौशिक

०००

नौका-विहार के समय, नदी की गोद में चांद व तारों की परछाइयों से क्रीड़ा करते हुए, असंख्य दीप झिलमिला रहे थे। मंदिर की शंख-ध्वनि के बीच न जाने कब मैं यमुना के किनारे पहुंच गयी और देखने लगी—युगों पूर्व हुआ रास, राधा-कृष्ण की जोड़ी और मुरली की धुन पर नाचती हुई गोपियों व ग्वालों की टोली! मैं उस अलौकिक दृश्य में एकदम डूबती चली गयी कि तभी एक सखी ने हिलाकर मेरा वह स्वप्न-सुख भंग कर दिया। —सुधा टंडन

०००

भूत, भविष्य को भूलकर 'आज' को भोग सकूं—जिस दिन मैं ऐसी स्थिति में पहुंच जाऊंगा, वही मेरी कल्पना का सुखद दिन होगा। —मोहन प्रतिष्ठित

०००

मां, बहन, भाई आदि एक भरा-पूरा परिवार और आज की महंगाई! ट्यूशन, अनुवाद व लेखन से जीविका चलाना और बाकी समय में 'शोध-कार्य'! यह मानसिक संघर्ष मेरे अध्ययन के बीच ही नहीं, पत्नी-प्यार और मेरे बीच में भी एक मौन संघर्ष है। कभी-कभी इससे ऊबकर आंखें बंद कर लेता हूं, तो मां की हंसी दीख पड़ती है। लगता है जैसे उसकी सारी कामनाएं पूर्ण हो गयीं—घर, तीर्थ यात्रा, मेरी नौकरी... तब अनुभव होता है कि मेरी तपस्या भी पूरी हो गयी। —प्रमोदकुमार सिंह

०००

हम लोग ईश्वर के कृपापात्र बनें हुए अपने पैरों पर खड़े रहकर, अंत तक दूसरों को सहायता देते रहें और अज्ञात रहें। —अज्ञात

०००

आखिर इन महापुरुषों में ऐसी कौन-सी शक्ति थी, जो ईसा ने फांसी के तख्ते पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लटकाये जाने पर भी उफ नहीं किया। सुकरात को जहर का प्याला भी नहीं रुला सका। मीरा राज-परिवार की होते हुए भी साधु-संतों का सत्संग न छोड़ सकी। महाराणा प्रताप भूख-प्यास आदि किसी भी संकट में अपने कर्तव्य से नहीं डिग सके। दुनिया की वर्वर ताकतें गांधी और नेहरू को सत्य-अहिंसा की निष्ठा से नहीं डिगा सकीं।...काश, मैं भी उस महान शक्ति का एक अंश अपने में पाता।

—प्रेमचंद फोगला

०००

हमारी मूक सहानुभूति से किसी बेचैन मन को क्षणिक शांति मिल सके और कोई रोता हुआ बच्चा मुस्करा पड़े—इस क्षमता को प्राप्त कर लेना ही मेरी कल्पना का सुख है।

—जगदीशचंद्र बत्रा

मेरी कल्पना के सुख के लिए संपादकजी ने आमंत्रित किया है। संपादकजी कितने अच्छे हैं! लेकिन मेरी कल्पना के सुख के लिए भगवान ने मुझे कभी आमंत्रित नहीं किया, भगवान छंटा हुआ कंजूस है न! जानता हूं मेरी कल्पना का सुख मुझे मिलनेवाला नहीं। लेकिन मन मूरख है, मानता नहीं। यदि आपकी दुआ लग जाये और मेरे मन की हो जाये, तो आपके मुंह में घी-शक्कर।

मुझे एक अत्यंत सुंदर पत्नी मिल जाये। उसका सौंदर्य-वर्णन नहीं कर सकता; पर इतना जरूर कह सकता हूं कि मैं उसको देखकर दूसरी सब परियां भूल जाऊं। उसके सौंदर्य में वफा हो और उस पर मेरा एकाधिकार हो। वह तन से, मन से मुझे सुखों के सागर में डूबो दे, डुबोती रहे।

—कन्हैया एल० किंगर

रहस्य

एक दिन गुरुदेव प्रातः टहलने निकल पड़े। साथ में उनका प्रिय शिष्य अभय भी चल दिया। मार्ग में यत्र-तत्र कांटे व कंकड़ पड़े थे; किंतु दोनों निश्चित भाव से नंगे पांव चले जा रहे थे। गुरुदेव जब कुछ परिश्रांत हुए, तो एक ऊंचे टीले पर चढ़े और प्रसन्नचित्त बैठ गये। अभय ने उनसे कहा—"आज मुझे नींद नही आयी। मैं बहुत दुःखी हूं, कुछ भी तो समझ में नही आता कि क्या करूं?" गुरुदेव ने प्रश्न किया—"तुम्हारे दुःख का क्या कारण है?" शिष्य ने व्याकुल होकर निवेदन किया—"गुरुदेव, जब एक समय ऐसा आयेगा कि सभी आत्माओं को इस जीवन-मरण से छुटकारा मिल जायेगा, तब क्या होगा?"

प्रश्न सुनकर गुरुदेव कुछ गंभीर हो गये, बोले—"वत्स, तुम्हारा प्रश्न भविष्य से संबंध रखता है; और भविष्य अनादि है, अक्षय है। वह रहस्यपूर्ण है। यह संसार बड़ा विशाल है। इसकी गति का कोप अपार है। इसका न आदि है न अंत। यह पूर्ण है। परिवर्तन ही इसका प्रमुख गुण है। 'एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा' इस संभावना में भ्रम है, अज्ञान है। संतोष ही हमारे मन का बल है, मूल आश्रय है, जो हमारी इंद्रियों की पूर्ण रक्षा करता है। हम वर्तमान में संतोष प्राप्त करें। बाकी सब कुछ तो रहस्य है।"

—चक्रधर 'नलिन'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री कामताप्रसाद सिंह 'काम' का एक शब्द-चित्र

ब्रजकिशोर 'नारायण'

शमां वह संज्ञा है, जिस पर परवाने फिदा होते हैं; मगर स्वर्गीय कामजी वह विशेषण थे, जो शमां की तरह जलते हुए भी परवानों पर फिदा थे। आज वे नहीं हैं, तो सारी की सारी महफिल वीरान है। राजनीति के सरताजों का ताज जैसे चोरी चला गया है। साहित्य के सुधा-घट को जैसे किसी ने पाताल में छिपा दिया है। गुण-ग्राहकता की सर्वतोमुखी उदारता जैसे स्वप्न में समा गयी है।

श्री कामताप्रसाद सिंह 'काम' हिन्दी के शैलीकार और ललित-लेखों के विधाता थे। वैयक्तिक निबंधों की विधा में तो वे अपना जोड़ नहीं रखते थे। 'भूलते भागते क्षण,' 'आत्मा की कथाएं,' 'आसपास की दुनिया', 'पुरानी दुनिया,' 'घुमक्कड़ की डायरी', और 'मैं छोटनागपुर में हूं' नामक पुस्तकें उनकी ऐसी कृतियां है, जिनके शिल्प, कथ्य, गहन ज्ञान और अभिव्यंजन की अप्रतिमता हिन्दी की गौरव-वृद्धि करती है। लगभग डेढ़ दर्जन सरल, सरस और सुंदर साहित्यिक कृतियों की रचना अपने जीवन के ४८ वें वर्ष में ही करके, उन्होंने यह दिखा दिया था कि राजनीति के खारे, अगा समुँदर में ऊभचूभ करके भी वे या गहरी गोतेबाजी से मनोरम रत्नों की उ लब्धि करते थे या लहरों की छाती न अपना प्रतापी पाल तानकर चांद की चंद्रि को चूमने की उद्ग्रीवता अपनाते थे।

'काम' भाई की अद्वितीय विलक्षणता को उंगली के पोरों पर गिनना, आसम के सितारों को गिनना है। उनकी उदार की, कद्रदानी की, शौक की, रुचि-वैचित्र्य सैलानीपन की, संघर्षशीलता की, दुर्धर्ष की और विश्वासपात्रता की कहानि सैकड़ों ही नहीं, हजारों की संख्या में है अगर उन्हें वर्गीकरण द्वारा आकलित कि जाये, तो वे एक साथ कर्ण, अर्जुन, समु गुप्त, अकबर, जहांगीर, वाजिदअली शा और जवाहरलाल के आंशिक अवतार थे इतने सारे अनुकूल और प्रतिकूल तत्वों सम्यक सम्मिश्रण अगर कहीं एक व्यक्ति तरंगायित हो रहा था, तो वह व्यक्ति कामजी का था।

हाफपैंट पहने, रंगबिरंगी 'जर्सी' लग दर्जनों व्यक्ति ड्राइंगरूम में बैठे हैं। दर्ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किस्म की मिठाइयां हैं। चाय है, काफी है, शर्बत भी। पूछने पर पता चलता है कि ये मोहन बागान टीम के खिलाड़ी हैं, जो कल 'मोहमडन स्पोर्टिंग्स' से हार गये हैं। यह प्रीति-गोष्ठी उन्हीं की हिम्मत अफजाई के लिए है।

अचकन पहने, शेरवानी डाटे, किश्ती-नुमा रोएंदार कश्मीरी कैप लगाये और खालता या चुस्त पजामे में ये दाढ़ीदार या सफाचट सूरतें कहां से आ गयी हैं इतनी तादाद में? घबराइये नहीं, ये हिन्दुस्तान-भर के वे मशहूरोमारूफ शायर हैं, जो आकाश-वाणी पटना केंद्र द्वारा आयोजित मुशायरे में शिरकत करने को दूर-दराज से तशरीफ लाये हैं।

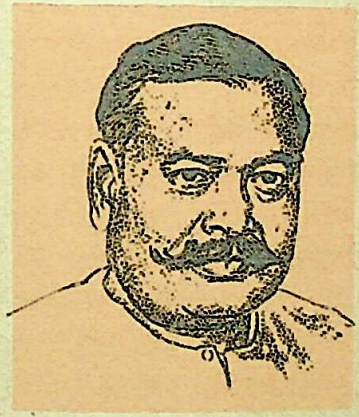

स्व० कामजी

यह देखिये! बाहर के बरामदे में दस कुर्सियों पर – साधारण कुर्सियों पर नहीं, सोफा सेटों पर, ये मंजुल मूर्तियां कौन हैं? पांव में फटी चप्पल! उटांग धोती!! ओछा कुरता!!! जनाब, जानकर बेहद हैरत होगी या हंसी भी आ सकती है कि ये महानुभाव सरकारी कार्यालयों के साधारण किरानी हैं। पेशा किरानीगीरी का है; मगर तबीयत में रंगीनी है। मिजाज में मिठास है। व्यवहार में मनुष्यता है। बस, इतना पर्याप्त है।

भला ये कामजी के यहां खीर-पूरी नहीं खायेंगे, तो क्या धन्नामलजी की आवभगत होगी? हरगिज नहीं, "तुलसी मस्तक तब नवै, धनुस बान लो हाथ!"

बंगला बना, तो कैक्टस के शौक ने जोर मारा। जब पटना के कैक्टसों ने अपने किस्मों का करिश्मा कम कर दिया, तो कलकत्ते पर अभियान हुआ। एक-दो तरह के नहीं, पचासों प्रकार के कैक्टस चुने गये और देखते-देखते हजारों का वारा न्यारा हो गया। जब खुद गाड़ी पर चढ़ने और उन कंबख्त कैक्टसों को चढ़ाने की नौबत आयी, तो रेलवे का स्टाफ प्लेटफार्म पर पूरी परेड में परेशान! हर किसी में यही होड़ कि कौन ज्यादा अनुगृहीत करे!

बंबई गये, तो पचासों तरह की रंगबिरंगी और छड़ी से लेकर घड़ी के आकार-प्रकार तक की पेंसिलें खरीद लाये। कश्मीर गये, तो सौ तरह की अखरोटी लकड़ी की तश्तरियां-मूर्तियां ले आये। लखनऊ गये, तो दर्जनों तरह के इत्र उठा लाये। बुक-स्टाल पर खड़े हुए; तो बगलगीर चित्रकार-मित्र के सुझाव पर तीन-चार दर्जन कला-शिल्प की पुस्तकें लेकर पांच-छः सौ रुपयों का नगद भुगतान कर दिया। अगर किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टोर के आगे गाड़ी खड़ी हो गयी, तो दसियों किस्म की तार्शें खरीदी गयीं। सब्जी बाजार में गये, तो दस-बारह तरह की तरकारियां खरीद लीं और अगर मांस-मछली की हाट में कदम पड़ गये, तो खुदा हाफिज!

राजनीतिज्ञों, विद्वानों, कलाकारों, फनकारों और दूसरे प्रकार के गुणियों की खिदमत और खातिरदारी में अपनी आखिरी पाई तक खत्म कर देने की बेकरारी कामजी की अपनी खूबी थी, जो उनके साथ ही चली गयी। अब रह गयी है उनकी एक कसक-भरी याद। एक बेधक उसांस। एक मर्मांतक आह।

तेरी महफिल भी गयी, चाहनेवाले भी गये
शब की आहें भी गयीं, सुबह के नाले भी गये

विशिष्ट व्यक्तित्व की बहुमुखी पहचान उसके जीवन-काल में बहुत विरल ही होती है; किंतु काम भाई उन सौभाग्यशाली पुरुषों में थे, जिनकी विशिष्टता उनके मित्रों द्वारा ही नहीं, शत्रुओं द्वारा भी शिरोधार्य हुई थी। बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री कृष्णवल्लभ सहायजी ने तो उनके दिवंगत हो जाने पर यहां तक कहा था कि अब मैं सोच रहा हूं कि राजनीति में रहूं या संन्यास ले लूं! उन्हें ऐसा लगा था कि कामजी को खोकर उन्होंने अपना हृदय खो दिया है। मस्तिष्क तो बहुत हैं; मगर वह मृदुल मानस कहां, जिसमें मरालों की मंजुल जोड़ियां अपनी अनूठी मौजों में पंख फड़फड़ाती हैं!

मुझे तो उनकी अंतिम एक ही घटना याद है, जब उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र के विवाह के शुभ अवसर पर मुझे बुलाया और कहा—"नारायण भाई! 'बाबू' के विवाह का निमंत्रण-पत्र कुछ ऐसे ढंग से छपे कि आमंत्रित लोग भी याद रखें कि किसी के पुत्र के परिणय की अप्रतिम आमंत्रण-पत्रिका प्राप्त हुई थी। बहुत देर तक मगजपच्ची करने पर हम दोनों ने गुप्त-मुगलकाल के फरमाननामों की शक्लवाली सूझ उतारी और उसे रंगीन रेशमी कपड़े पर दुरंगी छपाई में यों सुसज्जित कराया कि जो देखे, वही दांतों तले उंगली दबा ले। उसकी एक अविस्मरणीय विशेषता यह थी कि उसके ऊपर और नीचे साधारण लकड़ी न लगाकर दोनों ओर आने की रंग-बिरंगी पेंसिलें लगायी गयी थीं। बहुत लोगों ने तो उन्हीं के लोभ से कई कई निमंत्रण-पत्र झिटक लिये।

आज कामजी अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर और हंसमुख रौबीली आकृति से हमारी आंखों के सामने बेशक नहीं हैं; मगर उनका कीर्ति-केतु हजारों हृदयों के ऐसे हिमालय पर फहरा रहा है, जिसे कोई भी तूफान, कोई भी बवंडर, कोई भी प्रलय नीचे नहीं गिरा सकता। वे मरकर भी अमर हैं; वे न रहकर भी हमारे बीच हैं; वे जाकर भी जैसे लौट आये हैं।

★

मुझे यह डर है दिले जिंदा तू न मर जाये,
कि जिंदगानी इबारत है तेरे जीने से। —दर्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकेले आदमी ने लंदन की रक्षा की!

परदेशी

सन १९४३—दूसरी बड़ी लड़ाई का पांचवां साल चल रहा था। अक्टूबर का महीना था। सुबह का वक्त था। वन-प्रदेश था।

ऐसे समय लगभग पैंतालीस वर्ष का एक नाटा, ठिगना किंतु मजबूत आदमी सीमा पार करने का प्रयत्न कर रहा था। व्यक्ति यह फ्रांसीसी था। नाम था माइकेल होलार्ड। तटस्थ देश स्वीट्जरलैंड में प्रवेश का उसका प्रयास था।

माइकेल के कंधे पर एक थैली थी, जिस में कुछ आलू थे। हाथों में एक कुल्हाड़ी थी। बाहरी दिखावे से वह एक लकड़हारा लगता था। घने वन में पेड़ों और झाड़ियों के बीच वह बड़ी तेजी से गुजर रहा था, इस फुर्ती और चालाकी से, मानो वह आदमी नहीं, वन-बिलाव है। पेड़ों से छन-छनकर सुबह के सूरज की रोशनी आ रही थी। लेकिन माइकेल का ध्यान उस तरफ नहीं था। उसे तो यही चिंता थी कि तनिक भी आवाज न हो जाये और उस वक्त आवाज का मतलब 'मौत' था। क्योंकि उस जंगल में और पहाड़ियों के पीछे बड़े चौकन्ने कान प्रत्येक ध्वनि को सुनते थे—ये कान थे, जर्मन पहरेदारों के और जर्मन पुलिस के चतुर कुत्तों के।

वैसे इन पहरेदारों और इनके जबरदस्त और खूंख्वार कुत्तों को छका देना माइकेल के लिए बड़ी बात नहीं थी। अब तक वह ४९ बार सीमा पार कर स्वीट्जरलैंड में जा चुका था। वास्तव में होलार्ड एक औद्योगिक डिजाइनर था, जो स्वदेश की सेवा के निमित्त एक जासूस बन गया था। उसने बड़ी सेवाएं की थीं। सीमा पार कर वह कई महत्वपूर्ण सूचनाएं लाया था, जिन्हें ब्रिटेन भेज दिया गया था।

माइकेल और उसके साथियों ने फ्रांस में बने हुए नाजी जर्मनी के कई हवाई अड्डों का भेद प्राप्त किया था। किन-किन सागर तटों पर तोपें लगीं है, बोलोन में पनडुब्बियों के गुप्त अड्डे कहां है और कौन-कौन सी सैनिक टुकड़ियां कब कहां से प्रयाण करने-वाली हैं—सबका पता माइकेल ने लगाया।

लेकिन इस वक्त माइकेल जो अत्यंत महत्वपूर्ण और रहस्यमय समाचार ले जा रहा था, उसकी तुलना में पिछले सभी रहस्य फीके पड़ जाते थे। इस समय उसकी थैली के आलुओं में एक छोटा-सा किंतु अतिशय महत्व का कागज पड़ा था। यही वह रहस्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मय कागज था, संसार का सबसे कीमती कागज का टुकड़ा, जिसने लंदन नगर को भयंकर विनाश का शिकार होने से बचा लिया। इतना ही नहीं, इसके कारण लड़ाई भी जल्दी खत्म हो गयी।

माइकेल के थैले में था परम प्रतापी हिटलर के नये अस्त्र, उड़नेवाले बम, वी-वन का नक्शा। इस नक्शे से सहज ही पता लग सकता था कि किस स्थान से हिटलर अपने इस सर्वसंहारकारी अस्त्र को उड़ायेगा?

अब हिटलर की योजना थी कि लंदन नगर पर पचास-हजार वी–वन बरसाये जायें। पांच हजार बम प्रतिमास गिरें। इस बमवर्षा की सारी तैयारी बहुत ही गुप्त रखी गयी थी। फिर हिटलर-जैसा पहले नंबर का शक्की आदमी! शक पैदा होने से पहले ही गोली मार दे! भला ऐसी जगह और ऐसी व्यवस्था के साये से रहस्य को खींच लाना कितना कठिन! नाजी जर्मनी ने यह भी चतुराई दिखायी कि इन गुप्त अड्डों पर जो मजदूर काम करते थे, वे उस देश-प्रदेश की भाषा या बोली नहीं जानते थे और यों, वे गूंगे-बहरों-जैसे थे। पोलैंड और हालैंड के बेगारी मजदूरों से भी काम लिया जाता था–इनके श्रम से लगभग एक सौ जगहों पर गुप्त अड्डे बन रहे थे। जहां से वी-वन के जबरदस्त ज्वालामुखी भेजे जा सकते थे।

इन एक सौ जगहों के, संसार के सबसे मूल्यवान रहस्य का पता लगाकर जासूस माइकेल होलार्ड, धीमे- धीमे दुश्मन की सीमा से निकलकर, तटस्थ राष्ट्र की सीमा में प्रवेश करनेवाला था। स्मरण रहे, मित्र राष्ट्रों के लाखों जासूसों में माइकेल ही ऐसा था, जिसे इस विनाशकारी आदमी जन का रहस्य ज्ञात था।

सीमांत सम्मुख था। माइकेल दौड़ने लगा सामने कांटेदार तार लगे थे, जो फ्रांस और स्वीट्जरलैंड को अलग करते थे। ज्यों ही उसे महसूस हुआ कि उसका घुटना किसी फौलादी शिकंजे में अचानक ही जकड़ लिया गया है– माइकेल ने अपनी कुल्हाड़ी और थैला कांटेदार तारों के पार फेंक दी। अब यह फौलादी शिकंजा क्या था? यह तो एक खूंख्वार और भयंकर जर्मन पुलिस-कुत्ते का जबड़ा था। माइकेल के घुटने को अपने जबड़े में दबाये, कुत्ता वहीं अचल खड़ा रह गया। माइकेल हिल नहीं सकता था; लेकिन यह जरूरी था कि माइकेल कुत्ते के जबड़े से छुटकारा पाये, क्योंकि वह जानता था कि कुत्ते के साथ काम करनेवाले पहरेदार अब आने ही वाले होंगे।

माइकेल के पास कोई हथियार नहीं था। उसका भेष एक साधारण ग्रामीण का था। यदि वह हथियार रखता, तो सहज ही संदेह होता। माइकेल ने घबराकर इधर-उधर देखा–ऐसी चीज मिल जाये, जिससे कुत्ते का मुंह खुलवाया जा सके। माइकेल के भाग्य से समीप ही एक मजबूत लकड़ी पड़ी नजर आ गयी। बड़े जतन से उसने उस लकड़ी को कुत्ते के जबड़े में डालकर एकदम झटका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नली में घुसेड़ दी। दो ही मिनिट में कुत्ता गिर पड़ा और मर गया। माइकेल तारों से उलझता हुआ निकल गया; किंतु सामने एक लंबा-तगड़ा स्विस गार्ड बंदूक ताने खड़ा था, उसका निशाना माइकेल नहीं था, वरन् उसका पीछा करनेवाले दो जर्मन सैनिक थे, जो उसे गोली मारने ही वाले थे। गार्ड को देखकर जर्मनों ने अपनी बंदूकें नीची कर लीं और बड़बड़ाते हुए चुपके से चले गये।

माइकेल के इस घटनापूर्ण निष्क्रमण को अभी कुछ ही दिन बीते होंगे कि मित्र देशों के बममार वायुयानों ने वी-वन के जर्मन-अड्डों को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। सिर्फ पांच ही सप्ताह में लगभग तिहत्तर अड्डे बरबाद कर दिये गये। यद्यपि जर्मनों ने नये अड्डे बनाये; मगर लंदन नगर को राख कर देने की उनकी भारी योजना स्वयं नष्ट हो गयी। अंतर इसी से स्पष्ट है कि हिटलर महोदय पचास हजार बमों के स्थान पर केवल दो हजार बम ही गिरा सके। और ये भी सन १९४३ में नहीं, सन १९४४ के मध्य में। यदि १९४३ में गिराये जाते, तो ब्रिटेन की बड़ी हानि होती; किंतु अब तो काफी देर हो चुकी थी।

इस चीज का महत्व आइजनहावर ने इस प्रकार बताया —"यदि जर्मनी वी-वन का निर्माण छः मास पूर्व कर लेता, तो यूरोप पर हमारा आक्रमण बहुत मुश्किल हो जाता, शायद असंभव!"

इस कथा का विस्मयकारी अंश तो यह है कि माइकेल होलार्ड ने जो कुछ किया अपनी मर्जी से। स्वेच्छा से उसने गुप्तचर का कार्य किया, वह किसी नौकरी में नहीं था। उसकी सेवाओं ने उसे विश्व का सबसे बड़ा गुप्तचर बना दिया। जब भी उसके पास मित्र देशों को देने-योग्य कोई सूचना होती, वह स्वीट्जरलैंड में प्रविष्ट होता। न तो उसके पास रेडियो था, न पेराशूट की छतरी थी और न दूसरा कोई साधन।

माइकेल होलार्ड एकदम सादा आदमी था। वह योग्यता से कम वेतन पाता था और अन्वेषण की एक संस्था में काम करता था। फ्रांस जब हार गया और जर्मन सेनाओं ने राजधानी पेरिस में प्रवेश किया, तब माइकेल की संस्था जर्मनों के लिए काम करने लगी। माइकेल ने सोचा, यही मौका है। उसने इस्तीफा दे दिया और कोयला-गैस के कारखाने में काम करने लगा। आगे चलकर उसकी यह नयी नौकरी बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई, क्योंकि इसके कारण उसे बार-बार सीमांत के निकट वन प्रदेश में जाने का बहाना मिल गया—वह कोयले के योग्य लकड़ी की तलाश में था।

एक दिन चुपचाप उसने स्वीट्जरलैंड की सीमा पार की और ब्रिटिश अधिकारियों को जासूस के रूप में अपनी सेवाएं सौंप दी। बाद में जर्मनों ने उसे पकड़ लिया; लेकिन वह किसी तरह बातें बनाकर लौट आया। अब तो वह निरंतर इधर से उधर जाने-आने लगा; किंतु इसके लिए उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी—उसे अपने तीन बच्चों और पत्नी से अलग होना पड़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न स्थानों में छिपकर रहना पड़ा; किंतु उसने हिम्मत न हारी और कई फ्रांसीसी नागरिकों को अपना सहयोगी बना लिया। इन लोगों में रेलवे मजदूर, ड्राइवर और होटलवाले थे। उसने जर्मन सेनाओं की हल-चल का पता लगाया और ब्रिटेन को उसकी सूचना दी। आरंभ में माइकेल के पास सिर्फ पांच आदमी थे, बढ़ते-बढ़ते ये एक सौ बीस हो गये। इनमें से बीस जासूसों को जर्मन नाजियों ने पकड़ लिया और मृत्यु-दंड दिया।

माइकेल की सबसे महत्वपूर्ण सफलता का आरंभ अगस्त सन १९४३ में रोओं के एक काफे में हुआ। उस दिन के बाद वह वी-बन संबंधी योजना का पता लगाने में लग गया। उसके एक जासूस ने खबर दी कि दो ठेकेदार परस्पर बातचीत कर रहे थे कि अमुक जगह अजब तरह का इमारती काम चलनेवाला है, जिसमें बहुत बड़े परि-माण में 'सीमेंट–कांक्रीट' का उपयोग होनेवाला है!

यह खबर मिलते ही माइकेल पादरी का भेष बनाकर रोओं जा पहुंचा। वहां एम्प्ला-यमेंट आफिस में उसने बताया कि वह मजदूरों के कल्याण के निमित्त अपना जीवन अर्पण कर चुका है। उसने अपने थैले में से निकाल कर कई बाइबलें दिखायीं। उसने पूछा कि इमारती काम कहां चल रहा है, ताकि वह मजदूरों को धर्म और मुक्ति का मार्ग बता सके। सूचना पाकर वह आगे बढ़ा। उसने देखा कि सैकड़ों आदमी काम कर रहे हैं, कांक्रीट डाली जा रही है और इमारतें ऊंची उठ रही हैं।

स्मरण रहे, इस समय माइकेल मजदू के भेष में था। अब तो वह भी भीड़ शामिल हो गया और बड़ी फुर्ती से झेलने लगा। किसी ने उसे रोका नहीं।

यहां एक नयी समस्या और सामने मजदूर फ्रांसीसी भाषा नहीं जानते थे। में से एक-दो, जो टूटी-फूटी फ्रांसीसी सकते थे, उन्होंने बताया कि गैरेज रहे हैं। लेकिन यह सही नहीं था, क्यों इमारतें बहुत छोटी थीं और भला से इतनी दूर गैरेज किसलिए? माइकेल लिए सबसे अधिक विस्मयकारी और सम्म हक दृश्य तो यह था—लंबी, नीली पट्टीवा लगभग पचास गज लंबी कांक्रीट की ए पट्टी। माइकेल ने तुरंत अपनी जेब कंपास निकाला। कंपास की सुई पट्टी मुंह लंदन की ओर बता रही थी।

माइकेल वहां से चुपचाप खिसक गया उसने ब्रिटेन को रिपोर्ट दी। लंदन में मित्र देशों के नेता बड़े चिंतित और परेशान थे नाजी क्या कर रहे हैं। उन्हें यह तो संकेत मिल गया था कि जर्मनी 'चालक-रहित वायु-यान' बना रहा है; परंतु वह क्या और कैसी चीज होगी, यह उन्हें नहीं मालूम था।

माइकेल और उसके चार जासूस नवीन सूचनाएं पाने के लिए साइकिलों पर निकल पड़े। उनकी जेबों में नक्शे थे। उत्तरी फ्रांस उन्होंने छान डाला। धीरे-धीरे लोगों से बात करते, पता लगाते, तीन सप्ताह बीत गये। इतना ही ज्ञात हुआ कि साठ जगह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचित्र प्रकार का इमारती काम चल रहा है। दो-चार सप्ताह और प्रयत्न करने पर उन्होंने और ऐसे स्थानों का पत लगा लिया। ये सभी स्थान दो सौ मील लंबे और तीस मील चौड़े रास्ते में थे, समुद्र-तट के समानांतर थे और सभी अड्डों का मुंह लंदन की ओर था। लेकिन आखिर ये क्या चीज थे?

कभी-कभी जासूसी के क्षेत्र में भी किस्मत अपना चमत्कार दिखाती है और यह किस्मत की चाल ही थी कि कई वार माइकेल हिटलर के गुप्ततम रहस्यों तक पहुंच गया। आंद्रे नामक एक फ्रांसीसी की सहायता से माइकेल को वी-वन की सबसे बड़ी योजना का पता पाने में सफलता मिली।

जिस जर्मन अधिकारी के अधिकार में इस योजना का नक्शा था, वह हर वक्त सावधान रहता था और अपने ओवरकोट की जेब में नक्शे को सुरक्षित रखता था। कभी भूलकर भी ओवरकोट न उतारता था। यहां तक कि दफ्तर में भी इस कोट को पहने रहता। सिर्फ सुबह नौ बजे, जब वह नित्य कर्म के निमित्त स्नानघर में जाता, तब ओवरकोट उतारकर रख देता। ऐसे ही एक दिन आंद्रे ने नक्शा उड़ा लिया। माइकेल ने उसकी प्रतिलिपि रख ली।

यही प्रतिलिपि थी, जो आलुओं के बीच रखी थी, जबकि उस दिन माइकेल सीमा पार कर रहा था और जर्मन पुलिस के कुत्ते ने उसकी टांग पकड़ ली थी।

इस कार्य की समाप्ति पर माइकेल को ब्रिटिश सरकार से धन्यवाद और बधाई का तार मिला। माइकेल इतना थक चुका था कि अब वह कोई नया काम हाथ में नहीं लेना चाहता था। उसका तन-मन थक गया था – एक जगह से दूसरी जगह भागते उसे वर्षों हो गये थे। शंका और भय की अशांत मानसिक स्थिति में रहते वह थक गया था। ब्रिटिश सरकार ने उस पर जोर दिया कि वह स्वीट्जरलैंड में ही रहे। वह भी अपने काम के आकर्षण और प्रलोभन को रोक न सका।

लेकिन फ्रांस में अपनी जरा-सी चूक के कारण माइकेल गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद जर्मन नाजियों ने उसे भयंकर कष्ट दिया; किंतु वे उससे किसी प्रकार की सूचना न पा सके। प्रमाण के अभाव में उसे जेल में डाल दिया गया। युद्ध जब समाप्ति के निकट आया, जर्मनों ने सभी कैदियों को अधटूटी नौकाओं में बैठाकर समुद्र में छोड़ दिया। जर्मनों का खयाल था कि मित्र-देशों के बम-वर्षक वायुयान इन नौकाओं को डुबा देंगे; किंतु भाग्य ने माइकेल का साथ दिया और अंतिम समय, रेडक्रास ने डूबती हुई नौकाओं के बंदियों को बचा लिया।

दो-तीन मास अस्पताल में रहने पर, माइकेल स्वस्थ हुआ। रायल एयर फोर्स का एक विशेष वायुयान उसे लेने के लिए भेजा गया। लंदन में उसके स्वागत समारोह की तैयारियां की गयीं। उसे डी० एस० ओ० के सम्मान से सम्मानित किया गया। किसी भी विदेशी नागरिक को मिलनेवाली ब्रिटेन की यह सबसे बड़ी उपाधि थी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवगुंठिता रेबेका के प्रति

हे अछूते कौमार्य की
मूक पर मुखरित प्रतिमे,
तू किस विदग्ध कलाविद की
समर्पित छेनी के
निगूढ़ संकेत पर
अपने स्फटिक उत्तरीय को लपेट
वज्रहृदय पाषाण के
द्वारहीन अंतःपुर से
वैसे ही सहज भाव से निकल आयी है
जैसे मां के गर्भ से शिशु !

हे कंबुग्रीवे कमलाक्षि षोडशी,
तू किस अश्रुत राम के
पावन-पग का
संजीवन संस्पर्श प्राप्त कर
शिला-शाप से विमुक्त
नत-नयना शावकोपम चरण के
कोमल अंगुष्ठ से
निष्ठुर अतीत का हृदय कुरेद रही है ?

हे मरमर के पारदर्शी आंचल में
प्रतिबिंबित तन्वंगी,
तू किस विरही कालिदास के
सकरुण स्वर में पठित
मेघदूत को श्रवण कर
स्मृति विह्वला यक्ष-प्रिया की तरह
काल की दुर्लंघ्य कारा लांघ
विश्व के दृष्टि-पथ पर आ खड़ी हुई है ?

—कन्हैयालाल सेठिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन उड़ाता है इन पक्षियों को?

प्रवासी पक्षियों के संबंध में बड़ौदा के सयाजीराड़ गायकवाड विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र-विभाग में लेखक की अध्यक्षता में किये गये मौलिक शोधकार्य का परिचय।

प्रो० जे० सी० जार्ज

बहुत पुराने जमाने से मनुष्य इस बात पर अचरज करता आया है कि बहुत-से पक्षी सर्दियां शुरू होने पर कहां गायब हो जाते हैं और वसंत ऋतु में फिर कहां से प्रकट हो जाते हैं?

आरंभ में इसकी जो भी व्याख्याएं पेश की गयीं, वे प्रकृति-निरीक्षण के बजाय, प्रायः अटकलबाजी और अंधविश्वास पर आधारित थीं। लोग समझते थे कि सर्दियों में बड़े पक्षी उड़कर देशांतर को चले जाते हैं; और छोटे पक्षियों को या तो सारस अपनी पीठ पर बैठाकर विदेश पहुंचा देते हैं या वे मेंढकों की तरह कीचड़ अथवा खोहों में सुप्त होकर महीनों तक शीतनिद्रा (हाइबर्नेशन) लेते हैं।

पक्षियों के प्रवास के विषय में लिखनेवाला पहला विद्वान था अरस्तू। किंतु उसके विचार भी तर्क-संगत नहीं थे। उसका कहना था कि राबिन जैसे कुछ पक्षी गर्मियों में अपनी जाति बदलकर दूसरे पक्षी बन जाते हैं। बाद में भी बहुत सदियों तक यूरोपवासियों का यही खयाल था कि कोयल सर्दियों में 'स्पैरोहाक' नामक चिड़िया बन जाती है और वसंत ऋतु में पुनः अपने असली स्वरूप में लौट आती है।

पक्षियों के प्रवास के वैज्ञानिक अध्ययन की शुरूआत तो बीसवीं सदी के आरंभ में जाकर हुई। खेतों व जंगलों में पक्षियों को पहचानने और उन्हें नंबरवाले छल्ले पहनाने के तरीके सुधरे। चिह्नांकित पक्षियों के आवागमन की सूचनाएं भेजने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग स्थापित हुआ। इन सब बातों से पक्षियों के प्रवास-मार्गों का पता चला और पर्याप्त ज्ञानवृद्धि हुई।

'अमेरिकन गोल्डन प्लोवर' नाम का पक्षी उत्तर अमरीका के धुर उत्तरी इलाके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में घोंसला बनाया करता है। शरद ऋतु के आरंभ में वह राह में रुक-रुककर खाता-पीता और विश्राम करता हुआ अटलांटिक महासागर की ओर कूच करता है। सागर-तट पर पहुंचकर वह दक्षिण की ओर उड़ान भरता है और बिना कहीं रुके, बिना कुछ खाये-पिये व सोये लगातार २,४०० मील सागर की छाती पर उड़कर दक्षिण अमरीका के पूर्वी तट पर उतरता है। इसके बाद और २,००० मील धरती पर से उड़कर अर्जेंटाइना पहुंचता है। वसंत में वह अंडे देने को उत्तरी अमरीका में अपने मूल स्थान पर लौट आता है। वापसी यात्रा में वह सारा रास्ता जमीन पर से तय करता है।

'पेसिफिक गोल्डन प्लोवर' गर्मियों में अलास्का में नीड़ बसाता है। शीतकाल में वह २,००० मील दक्षिण-पश्चिम उड़कर हवाई द्वीप चला आता है। किंतु अगली गर्मियों में वह पुनः अलास्का में हाजिर मिलता है।

लेकिन प्रवासी पक्षियों का सरताज है उत्तर ध्रुव का 'टर्न'। ध्रुव के बहुत पास उसकी प्रसव-भूमि है। हर साल सर्दियों में वह दक्षिण ध्रुव चला जाता है, जिसके लिए उसे ११,००० मील उड़ना पड़ता है। वसंत में वह पुनः ११,००० मील पार कर अपने घर लौटता है। इस तरह साल-भर में वह पूरे २२,००० मील का चक्कर लगा लेता है—पृथ्वी की परिधि से सिर्फ ३,००० मील कम।

दूसरे भी कई पक्षियों के प्रवास-मार्ग अब ठीक-ठीक पता लग चुके हैं। मार्गों का ठीक अक्षांश-देशांतर जानने के लिए राडार भी उपयोग किया गया है।

पक्षियों के प्रवास के संबंध में प्रयो व परीक्षण करनेवाले प्रथम वैज्ञानिक कनाडा के प्राणिशास्त्री विलियम रोवैन उन्होंने देखा कि पक्षियों के प्रवास प्रजनन की तिथियों में गहरा नाता है इससे उनका यह विचार बना कि तापमान दिन की लंबाई और खुराक आदि कई बा प्रवास से संबंधित हैं।

यह बात देखी जा चुकी थी कि पक्षी वसंत ऋतु में उत्तर में अपने प्रजनन-क्षे (अंडे देने के इलाके) की ओर प्रस्थान करते हैं और तब तक उनके प्रजनन-अं पूरे विकसित व परिपक्व हो चुके होते हैं

रोवैन ने 'स्लेट कलर्ड जूनो' नाम प्रवासी पक्षी को प्रयोग के लिए चुना स्लेटी रंग का यह पक्षी अंडे कनाडा में देत है और सर्दियां संयुक्त राज्य अमरीका गुजारता है। रोवैन ने बहुत-से जूनो पक्षि को घर के भीतर बाड़े में रखा। सर्दि शुरू होने पर जब सूरज जल्दी छिपने लग तो कुछ पिंजरों में बिजली के तेज बल्ब जलाकर दिन की लंबाई क्रमशः बढ़ाई जाने लगी।

कुछ हफ्ते बाद देखा गया कि इ पिंजरों के अधिकांश पक्षियों के प्रजनन-अं पूर्णतः विकसित हो गये थे, यद्यपि अभी आधी सर्दियां भी नहीं बीती थीं और बाहर तापमान शून्य अंश फारनहीट से कम था किंतु जिन पिंजरों में इस प्रकार रोशनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा दिन की लंबाई बढ़ायी नहीं गयी थी, उनके निवासियों के प्रजनन-अंग वैसे ही अविकसित अवस्था में थे, जैसे कि सर्दियों में हुआ करते हैं।

अल्बर्ट वूल्फसन नामक अमरीकी शोधकर्ता ने भी यही प्रयोग एक दूसरी जाति के पक्षियों के साथ दोहराये। उनसे भी इस बात की पुष्टि हुई कि दिन की लंबाई बढ़ने से पक्षियों को अपने शीतकालीन निवास-स्थान छोड़कर अंडे देने के स्थान की ओर कूच करने की प्रेरणा मिलती है।

अब सवाल यह है कि रोशनी से पक्षियों में ऐसा आंतरिक परिवर्तन कैसे पैदा होता है? इसके समाधान के लिए हम जाक बेन्वात और ईवों एस्सेंमाशेर नामक दो फ्रांसीसी विद्वानों के ऋणी हैं। उनके सूझ-बूझपूर्ण प्रयोगों से सिद्ध है हुआ कि रोशनी ये सब परिवर्तन मस्तिष्क के एक खास भाग 'हाइपोथैलामस' के माध्यम से करती है।

आंखों से टकरायी हुई रोशनी 'हाइपोथैलामस' की कुछ विशेष स्नायुओं को उत्तेजित करती है। इन स्नायुओं के कोशाणुओं में यह शक्ति होती है कि वे भी ग्रंथियों के कोशाणुओं की तरह स्राव उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए ये कोशाणु 'स्नायु-स्रावी कोशाणु' कहलाते हैं। इनका स्राव रक्तवाहिनियों के मार्ग से पिच्यूटरी ग्रंथि में पहुंचता है, जो शरीर की ग्रंथियों का सरताज है और मस्तिष्क के अधोभाग में स्थित है। अब पिच्यूटरी विविध तत्वों का निर्माण आरंभ कर देती है और ये तत्व विभिन्न अंतःस्रावी ग्रंथियों को प्रेरित करते हैं कि वे अपना-अपना स्राव उत्पन्न करें। ये स्राव 'हार्मोन' कहलाते हैं।

मैंने अनुभव किया कि पक्षियों के प्रवास पर प्रभाव डालनेवाली इन सब बातों की पूरी जानकारी प्राप्त करनी हो, तो हमें एक ही जाति के पक्षियों में चलनेवाले परिवर्तन-चक्र का अध्ययन करना होगा। सो मैंने एवं मेरे एक शिष्य दामोदर नाईक ने मिलकर सयाजीराव गायकवाड विश्वविद्यालय, बड़ौदा में प्रयोग शुरू किये।

'रोजी पास्टर' एक पक्षी है, जो मैना जितना बड़ा होता है। गुजराती में इसे बैयां या तीलीयर कहते हैं। सितंबर के आस-पास हजारों की तादाद में 'रोजी पास्टर' बड़ौदा प्रदेश में आते हैं और अप्रैल मास के आखिरी सप्ताह में अपनी प्रसव-भूमि की ओर कूच कर जाते हैं। यह स्थान शायद दक्षिण यूरोप या सोवियत संघ में है। सन १९६४ में वे कुछ जल्दी, यानी १८ अप्रैल को ही रवाना हो गये। जब वे बड़ौदा आते हैं, पतले-दुबले व हल्के-फुल्के होते हैं—वजन में लगभग ५० ग्राम। लेकिन विदाई के समय तक उनका वजन १२० ग्राम के करीब पहुंच चुका होता है। वजन में इस आश्चर्यजनक वृद्धि का कारण है, शरीर में चर्बी का अधिक निर्माण और संचय।

सर्दियों के अनंतर जब दिन की लंबाई और तापमान में वृद्धि होने लगती है, 'रोजी पास्टर' के मस्तिष्क की 'हाइपोथैलामस' ग्रंथि को स्नायुस्राव पैदा करने की प्रेरणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलती है। उसी समय नर पक्षियों के अंड-कोश परिपक्व होने और आकार में बढ़ने लगते हैं। मादा पक्षियों के डिंबाशय कुछ समय बाद विकसित होते हैं। इसी कारण पहले नर पक्षी कूच करते हैं; कुछ दिन बाद मादा-टोली।

जब यह सब कुछ चल रहा होता है, तब पक्षियों के मस्तिष्क का भूख-केंद्र उत्तेजित हो उठता है और पक्षियों को बहुत तेज भूख लगती है। वे भुखमरों की तरह ठूंस-ठूंसकर खाते हैं और मांसपेशियों, जिगर और मुख्यतः वसा-पिंडकों (फैटबाडी) में बहुत चर्बी जमा कर लेते हैं। शरीर में इन्सुलीन का निर्माण बढ़ जाना इसमें सहायक होता है। आप जानते ही हैं कि इन्सुलीन खून में शक्कर की मात्रा को कम करता है और मधुमेह के रोगियों को दिया जाता है।

'हाइपोथैलामस' का स्नायुस्राव धीरे-धीरे एकत्र होता रहता है और प्रवास के तीन-चार दिन पूर्व अचानक ही रक्तवाहिनियों के मार्ग से पिच्यूटरी ग्रंथि में पहुंचता है। तुरंत पिच्यूटरी में अद्भुत परिवर्तन होने लगते हैं। तभी थाइराय्ड ग्रंथि भी अपना स्राव भेजती है। (थाइराय्ड का स्राव शरीर में शक्ति के निर्माण और व्यय को बढ़ाता है।)

इसी बीच एड्रिनल ग्रंथि का स्राव भी बहुत बढ़ चुका होता है, जिससे पक्षी बहुत बेचैनी अनुभव करता है। हमारा खयाल है, 'हाइपोथैलामस' का स्नायुस्राव पिट थाइराय्ड एवं एड्रिनल ग्रंथियों के स्राव ही कूच की सीटी बजाते हैं।

सैकड़ों-हजारों मील के प्रवास के लि पक्षियों को शक्ति किस स्रोत से प्राप्त होती है ? प्रवास के पूर्व पक्षी अपने शरीर में खूब चर्बी जमा कर लेते हैं, यह तो ज्ञात था; किंतु यह चीज पहले-पहल मेरी प्रयोगशाला में ही सिद्ध हुई कि प्रवासी पक्षियों की मांसपेशियां शक्ति के मुख्य स्रोत के रूप में चर्बी का उपयोग करती हैं।

चर्बी विघटित होकर वसायुक्त (फैटी) एसिडों का रूप धारण करती है। यह विघटन 'लिपेस' नामक जैविक उत्प्रेरक (बैटरी लिस्ट) की उपस्थिति में होता है। इसके अनंतर ये एसिड मांसपेशियों के 'माइटोकोंड्रिया' नामक कोशों में जलते हैं, जिससे शक्ति उत्पन्न होती है। 'माइटोकोंड्रिया' को अतिसूक्ष्म बिजलीघर समझिये। जब मांसपेशियों की अपनी चर्बी खत्म हो जाती है, तब जिगर और वसापिंडकों की चर्बी वसायुक्त एसिडों के रूप में बहकर मांसपेशियों में आती है।

मैंने पक्षियों के प्रवास संबंधी कुछ बातों को अत्यधिक सरल बनाकर समझाने की कोशिश की है; लेकिन ये समस्याएं वस्तुतः बड़ी जटिल हैं और इनके बारे में जितना ही ज्ञान प्राप्त करते हैं, ये उतनी ही अद्भुत लगती हैं। ('आकाशवाणी'से साभार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूंखार जबड़े, विकराल पंजे

लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व सेना तथा वन-विभाग से संबद्ध कैप्टन फारसाइथ ने मध्य प्रदेश के वनों का व्यापक भ्रमण किया था। ये प्रसंग उनकी 'दि हाइलैंड्स आफ सैंट्रल इंडिया' शीर्षक पुस्तक के आधार पर घनश्याम सक्सेना ने प्रस्तुत किये हैं।

शेर की गतिविधि का पता लगाने के लिए प्रातःकाल का समय सबसे अच्छा रहता है। इस समय मौसम भी अच्छा रहता है और रात के सारे पद-चिह्न आदि भी ताजे रहते हैं। अन्य वन-पशु भी, जिनकी सहायता से शेर की गतिविधि का पता लगता है, इस समय चल-फिर रहे होते हैं। सुबह आठ-नौ बजे तक तो बंदर, मोर, सांभर और चीतल की भिन्न-भिन्न आवाजों से भी शेर के हाल-चाल जाने जा सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंदर भी शिकारियों के लिए बड़े सहायक सिद्ध होते हैं। कहा जाता है कि शेरनी बंदरों और मोरों के द्वारा ही अपने बच्चों को शिकार करना सिखाती है, अतः ये दोनों ही शेर से बहुत सावधान रहते हैं। एक बार मैं बैतूल के वनों में गर्मियों के दिनों में शेरों के पांव के निशानों की सहायता से उनका पीछा कर रहा था। अकस्मात् उतार शुरू हो गया। मैं कुछ कदम और चला होता, तो बिलकुल निचली घाटी में पहुंच जाता। इसी बीच बंदरों की चीख सुनाई देने लगी। मैंने आंख उठायी, तो बगल में एक मोटे-ताजे शेर का सिर और सशक्त पुट्ठे दिखाई देने लगे। नीचे से एक दूसरे शेर ने विकट गर्जना की और नीचे की ही तरफ चला गया। मैंने अपना हाथी साथ लिया और दोनों की तलाश में रवाना हुआ। कुछ फासले पर जाकर मुझे एक शेर दिखाई दिया। मैंने हौदे से निशाना साधा और तीन आँस भारी गोली उसके माथे पर दाग दी। इतना आसान शिकार मुझे अपने जीवन में कभी नहीं मिला। शेर की तरफ से जब कोई आवाज नहीं आयी, तो मैंने नजदीक जाकर देखा। शेर मर चुका था। फिर मैं दूसरे शेर की तलाश में चला, जो कि मोरन नदी की ओर जामुन की झाड़ियों में खो गया था। काफी भाग-दौड़ के बाद उसे भी खोज निकाला। अपने अगले पंजों पर सिर टिकाये वह शैतानी की मुद्रा में बैठा था। गोली खाकर वह बड़े जोर से गरजा। मेरा हाथी यद्यपि नया था; किंतु उसने बड़ी वीरता और धैर्य का परिचय दिया। घायल लगभग उसके अगले पैरों के बीच हुआ था; किंतु हाथी घबराया नहीं खिसक-भर गया। वास्तव में टूटी वाले घायल शेर का दिल दहला वाला दृश्य शिकार में दूसरा है भी अपने आस-पास के पत्थरों, झाड़ियों अपने खुद के शरीर तक का वह निकाल देता है। एक गोली और उसे इस पीड़ा और दुःख से मुक्त करना लिए आवश्यक हो गया था।

सांभर की आवाज से तो कभी विलकुल ठीक सूचना ही मिल जाती निमाड़ जिले के चांदवेल स्थान में एक सांभर ने मेरी बड़ी सहायता की। वह एक मवेशीखोर शेर के शिकार के आया था। रात को एक भैंसे का बांध दिया गया, तो शेर उसे काफी दूर घसीट ले गया। उसका खाने का तरीका भी समझदारी और चालाकी से भरा था। एक बार तो मैं उसे ढूंढ़ने में असमर्थ रहा, क्योंकि मेरे हाथी ने चिंघाड़ मारकर सारा काम बिगाड़ दिया; किंतु दूसरी बार मैंने उसे ढूंढ़ निकाला। एक सांभर पास ही चिल्लाया और मैंने मुड़कर देखा, उसका संकेत स्पष्ट था। मैं बड़ी मुश्किल से इस शेर को मार सका। नापने पर उसकी लंबाई १० फुट १ इंच निकली।

यहां मैं एक सहायक शिकारी का उल्लेख अवश्य करूंगा। उसे लोग 'लाला' कहते थे। वह इतना मोटा, बेडौल और कुरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वह स्वयं भी कहा करता था कि कोई शेर भी उसे खाने की बात नहीं सोच सकता।

उसने अपने प्रारंभिक दिन उत्तर भारत के सरदारों और राजपुत्रों के लिए बाज इकट्ठा करने और उन्हें शिकार की कलाएं सिखाने में बिताये थे। रेत पर जंगली जानवरों के पांव के जो चिह्न बन जाते हैं, उनको छोड़कर दूसरी किसी वर्णमाला अथवा अक्षर का उसे ज्ञान न था। उसकी नजर बड़ी तेज थी। शेर की गतिविधि की सूचना देने में तो वह इतना लगनशील और ईमानदार था कि सिर्फ अनुमान के आधार पर उसने शेर के होने की सूचना कभी नहीं दी। जब तक वह शेर को स्वयं न देख ले, तब तक वह उसकी खबर नहीं देता था। शेरों के बीच वह निहत्था चला जाता था और मैं तो यहां तक कहूंगा कि वह अपने को उन्हीं में से एक समझता था।

एक बार मुझे बहुत ज्वर हो आया। लाला मेरा सबसे अधिक विश्वस्त साथी शिकारी था, अतः मैंने उससे कुछ चिड़ियां मार लाने को कहा। किंतु उसे तो शेर के शिकार की इतनी सनक सवार थी कि मेरे कहने के विरुद्ध भी उसने एक बछड़ा बांध दिया और शेर के पदचिह्नों को देखकर एक पेड़ पर बंदूक लेकर बैठ गया। शेरनी आयी और अपनी जांघ में लाला की गोली खाकर घने जंगल में घुस गयी। बहादुर किंतु नासमझ लाला ने प्रातःकाल घायल शेरनी का पीछा उसके खून की बूंदों के हिसाब से किया; किंतु जल्दी ही उसकी समझ में आ गया कि बिना शिकार के इरादे के शेर का पीछा करने और बंदूक लेकर शिकार की भावना से घायल शेर का पीछा करने में बहुत अंतर है। वह मुश्किल से कुछ ही कदम गया होगा कि शेरनी ने उसे आ दबोचा। उसकी बंदूक बिना गोली क्या चलती? वह उसके हाथ से छूटकर दूर गिर गयी और आधी लंबाई तक रेत में घुस गयी। शेरनी के पंजे की चोट से उसका सिर थोड़ा ही बच सका और उसका साफा कहीं दूर जा गिरा। अब अभागा लाला शेरनी के नीचे था।

शेरनी जब उस पर अपना क्रोध उतार चुकी, तो उसे छोड़ गयी। बाद में मृतप्राय लाला को मीलों दूर खंडवा लाया गया। किंतु उसकी वीरता में कोई कमी नहीं आयी थी। उसकी आंखों में प्रतिशोध की भावना स्पष्ट परिलक्षित थी। उसने मुझे आज्ञा दी कि यदि मुझे जीवित देखना चाहते हो, तो तुम उस शेरनी को मारकर मेरे सामने हाजिर करो। मैं उसकी बहुत कद्र करता था और स्थानीय लोगों के अंधविश्वासों को समझता था। अतः मैं भारी बुखार के बावजूद शेरनी के शिकार की टोह में रवाना हो गया। पानी गिर चुका था और रेत पर से सब पद-चिह्न मिट चुके थे; किंतु हमसे पहले शेरनी ने हमें पा लिया। इसके पहले कि मेरे साथी पेड़ों पर चढ़ सकें, शेरनी मेरे ऊपर दृढ़ व निश्चित भाव से झपटी। वह दुबली शेरनी एक ऐसी बिल्ली की तरह दिखती थी, जिसे कुत्तों ने घेर रखा हो। पहली दो गोलियां यद्यपि ठीक स्थान पर लगीं;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु वे शेरनी को रोक न सकीं। वह बिजली की तेजी से झपटी हुई मेरे हाथी की सूंड के बिलकुल नजदीक ही आ गयी। मैं आश्चर्य-चकित था। दो गोलियां खाकर भी दौड़ती हुई शेरनी के जीवट की तारीफ करने का वक्त न था। मैंने एक और गोली छोड़ी, जो गले से होती हुई छाती तक निकल गयी। अब वह विवश तो थी; किंतु उसके क्रोध में कोई कमी नहीं आयी, वह जोर से दहाड़ने और पंजे फटकारने लगी। उसकी यह हालत तब तक रही, जब तक कि मैंने उसके सिर पर एक और फायर करके उसका अंत नहीं कर दिया। हालांकि लाला का बदला मैंने ले लिया था; लेकिन वह इतने भयानक और घातक घाव खाकर बच न सका। वह चल बसा और अपनी स्मृति छोड़ गया।

× × ×

एक प्रसंग और है। लगभग एक सप्ताह तक मैं एक आदमखोर शेर के शिकार में व्यस्त था। उसने अब तक लगभग १०० आदमियों को खा डाला था और उसके भय से सड़कें तक बंद हो गयी थीं। इनमें से एक सड़क तो मुख्य थी, जो बैतूल के सागौन के वनों में नर्मदा घाटी की ओर जाती थी, जहां कि उन दिनों रेलवे लाइन के निर्माण का काम जोरों से चल रहा था। इसकी वजह से स्लीपरों के ठेकेदारों का काम बिलकुल रुक-सा गया। इस शेर ने ३०–४० वर्ग मील के क्षेत्र में मोरन से गंजाल नदी तक उपद्रव मचा रखा था। मैं समझ चुका था कि यह काम एक शेर का नहीं है। वास्तव में वहां दो शेर जिनमें से एक तो कुछ दिनों में मार गया; किंतु दूसरे के शिकार में एक मेरी और मेरे हाथी की जान तक खत पड़ गयी थी। सौभाग्य से लाला उस हमारे साथ था। इस नरभक्षी दानव के में उसके द्वारा तरह-तरह की बातें सुन मिलती थीं। लोग उसे बहुत मोटा बताते थे, जिसका पेट जमीन से लग और जिसके माथे पर पूर्ण चंद्र का चि था। लोग कहते थे कि वह राह चलते फिरों की टोलियों को रोक दिया करत और खुद रेत में लोट लगाता रहता फिर वह त्रस्त और आक्रांत मुसाफिरों मृतप्राय परेड का निरीक्षण करता उनमें से सबसे मोटे आदमी को छांटक जाता। उसमें मनचाहे रूप बदलने की थी और वह कभी-कभी भोले-भाले हारे का रूप तक रख लेता था। कहत उसके द्वारा मारे हुए आदमियों की त्माएं उस पर सवार रहती थीं और पथ-निर्देश करती थीं, साथ ही उसे से भी बचाती थीं। ऐसी-ऐसी अजीब, विश्वासपूर्ण और विचित्र कहानियां बारे में फैली हुई थीं, जो निश्चय ही रिपक्व मस्तिष्क और भयभीत हृदयों उपज थीं।

फिर भी मैंने इस नरभक्षी दानव मारने की ठान ही ली थी। मैं हाथी सवार होकर चरखेरा गांव की ओर हुआ और रास्ते में उन वीरान गांवों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा, जहां के लोग उस आदमखोर शेर के भय से मकान छोड़कर भाग गये थे। मैं नीचे एक नाले की ओर बढ़ा, जिसके चारों ओर घना जंगल था। इसी गांव के पास शेर द्वारा कुछ तीर्थयात्रियों को पकड़ ले जाने के समाचार मिले थे। मैं घटना-स्थल पर पहुंचा, तो खून के धब्बे, फटे कपड़े और हड्डियां उस दानव के कुकृत्य के गवाह थे। किंतु उस शेर में यह विशेषता थी कि वह लाश को खाने दुबारा नहीं आता था, अतः उसके शिकार के लिए लाश के पास बैठना बेकार था। हम लोगों ने आस-पास का सारा प्रदेश खोज डाला; लेकिन उस नर-भक्षी शेर का कहीं कोई पता नहीं लगा। शाम हो ही रही थी कि मेरे हाथी के बगल में चलनेवाले एक आदमी ने रुक जाने का इशारा किया। उसने शेर के पंजों के स्पष्ट चिह्न देखे थे। रात में अधिक खोजबीन करना व्यर्थ समझ, हम लोग विश्राम करने लगे। सुबह उठकर मैं नाले की ओर गया; किंतु कोई निशान नहीं मिले। मैं लौटकर नाश्ता करने बैठा ही था कि बंजारों ने आकर बताया कि उनका एक आदमी शेर द्वारा मार लिया गया है। घटनास्थल पर सब चीजें साफ थीं। उस बंजारे का शरीर घसीटकर शेर नाले के नीचे तक ले गया था। वहां तक तो चिह्न स्पष्ट थे; किंतु उसके बाद ऊंची-ऊंची घास शुरू हो जाती थी, जो हौदे तक पहुंचती थी। यहां सरजू (मेरा मुकना हाथी) ने एक जोर की लात जमीन पर मारी, इसके तुरंत बाद लंबी घास हिलती हुई दिखाई दी। हम लोग तेजी से बढ़कर उस अभागे बंजारे के अधखाये शरीर तक पहुंच गये। हमें यद्यपि एक पीली चीज अवश्य दिखाई दी; किंतु घास घनी होने के कारण निशाना स्थिर करना कठिन था और हम फायर करने की स्थिति में नहीं थे। आगे जाकर रास्ता पथरीला हो गया और कोई चिह्न नहीं दिखा। धीरे-धीरे शाम रात में बदल गयी।

यह रात भी हमें एक छोटे-से गांव में ही बितानी पड़ी। मैं तड़के ही नदी की तरफ रवाना हुआ। अब हमें उसके निशान मिलने लगे थे और इसमें संदेह नहीं था कि हम लोग उस नरभक्षी के पीछे ही थे। उस शेर की गतिविधि देखने के लिए लोगों को ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर बैठा दिया गया था। थोड़ा आगे जाने पर कुछ चिड़ियों की चहचहाहट सुन पड़ी और सरजू भी थोड़ा रुककर ठोकर मारने लगा। मुझे शेर की उपस्थिति का आभास मिलते देर नहीं लगी। महावत ने कहा कि उसे शेर जामुन की झाड़ी में दिखाई दे रहा है। हौदे में कुछ पत्थर भी थे। हमने एक पत्थर झाड़ी में फेंका। शेर उछला और दहाड़ता हुआ निकल भागा। किंतु जब उसे भागने के रास्ते में हाथी दिखाई दिया, तो उसने पलटकर मुझ पर हमला किया। जब मैंने फायर किया, तो वह लगभग २० गज की दूरी पर रहा होगा, क्योंकि घनी झाड़ियों में उसे ठीक से देख पाना कठिन था। मैं उसके ऊपर बड़ी बंदूक से एक भारी गोली चलाना चाहता था कि अचानक हाथी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पलट गया और मेरा मुंह दूसरी ओर हो गया। हाथी की भाव-भंगिमा से मुझे पता चल गया कि उसके सवारों की संख्या में वृद्धि हो गयी है—एक क्रूर सवार उसकी पीठ के पूंछवाले भाग पर था। अच्छा हुआ कि मैं और मेरी बंदूक नीचे गिरने से बच गये। हाथी और शेर दोनों ही एक सेकेंड को हक्के-बक्के रह गये।

मेरे ऊपर भी इस स्थिति का प्रभाव पड़े बिना न रह सका। वन-विभाग में प्रवेश करने के पूर्व मैंने अपने सैनिक जीवन में भी बहुत से जानलेवा संकटों का सामना किया था। जोखिम उठाने और जान खतरे में डालने की मुझे आदत-सी हो गयी थी; किंतु चाहे आप मुझे कमजोर और डरपोक ही क्यों न कहें, मैं आपसे यह बात नहीं छिपाऊंगा कि एक खूंख्वार नरभक्षी शेर के साथ हाथी पर सफर करने का अभ्यास मुझे नहीं हुआ था। आज भी उस घड़ी की कल्पना करके मुझे रोमांच हो आता है। आप तनिक सोचिये तो, हौदे पर शिकारी और हौदे के नीचे हाथी की पीठ पर शेर—शिकारी और शिकार के बीच मुश्किल से एक गज की दूरी! एक गज से भी कम की दूरी पर मौत खूंख्वार जबड़ों और विकराल पंजों के रूप में विद्यमान थी। वे खूंख्वार जबड़े और विकराल पंजे का भी दिल दलहाने के लिए काफी थे। हमारे बीच की दूरी कुछ ही कम होती, तो शिकारी स्वयं ही शिकार हो होता। सरजू सरीखा सधा हुआ और क्षित हाथी भी पीड़ा और भय से व्याकुल था। शेर के पैने पंजे उसके के मांस में गड़े जा रहे थे। न सोचने का था, न विचारने का। मैंने इस अल में ही, जब मेरे और मौत के बीच एक गज का फासला रह गया था, अपनी योजना तय कर ली। बंदूक शेर के माथे पर सटाकर मैंने एक गोली दाग दी और शेर आलू के बो तरह नीचे गिर गया। बाद को मुझे चला कि पीछे की ओर जो लड़का बैठा हुआ था, वह शेर के जबड़ों में जाने बचा। सरजू ने अब शेर पर अपना उतारा। उसने मृतक शेर पर अपने पांवों के बल सारे शरीर का वजन रख वह शेर वास्तव में वही १० फुट लंबा भक्षी था; किंतु उसके माथे पर न तो पूर्ण चंद्रमा का चिह्न था और न उसका धरती तक ही आता था। वह कथा-नियों, अंध-विश्वासों और किंवदंति शेर से बिलकुल भिन्न जंगल का शेर

★

रोगी ने कहा—"डाक्टर साहब, मुझे नींद न आने की बीमारी है। सारी रात जा रहता हूं। कभी जरा आंख लगती है, तो बिल्ली की पदचाप तक से जाग पड़ता हूं।"

डाक्टर ने गोलियां दी। रोगी ने पूछा—"इन्हें कब खाऊं?"

डाक्टर बोला—"आप मत खाइये, बल्कि दूध में डालकर बिल्ली को खिलाइये।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

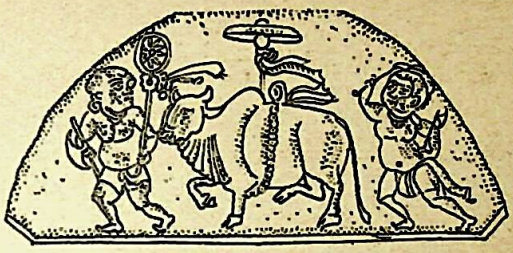

आनंद की प्राप्ति

हरिमोहनलाल श्रीवास्तव

आनंद प्राप्त करना मानव जीवन का प्रथम और अंतिम लक्ष्य है। परंतु सुख की सार्वभौम कामना लेकर जहां प्रयास सब करते हैं, वहां सफलता थोड़े ही उपलब्ध कर पाते हैं। जो सुख नहीं चाहता, वह या तो कोई देवता है अथवा पागल; परंतु सुख का मापदंड भी व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होता है।

महात्मा बुद्ध ने कहा है कि यदि किसी को आनंद की कामना है, तो वह सभी इच्छाओं का त्याग कर दे। जिसने सभी इच्छाओं का त्याग कर दिया है, वही संपूर्ण आनंद प्राप्त कर सकेगा। इस उपदेश के अनुसार स्वयं आनंद की प्राप्ति की कामना का त्याग भी आनंद की ओर ले जानेवाला एक सोपान है। एक विद्वान के अनुसार आनंद और क्षोभ, स्वभाव अथवा भाग्य पर निर्भर करते हैं। इस कथन को कुछ और स्पष्ट किया जाये, तो आनंद का निवास हमारी अभिरुचियों में है, स्वयं वस्तुओं में नहीं। कोई भी व्यक्ति अपनी चाह को पाकर ही प्रसन्न हो सकता है; दूसरे जो कुछ चाहते हैं, उसे पाकर वह अपने को सुखी नहीं समझ सकता। हमारा अपना आदर्श होना चाहिये। किसी व्यक्ति को लक्ष्मी की चाह है, किसी को यश की। किसी को सरस्वती की आराधना में आनंद मिलता है, तो कोई चाहता है रूप, स्वास्थ्य अथवा यौवन। इन सभी भौतिक सुविधाओं अथवा उपलब्धियों से परे कुछ को केवल आध्यात्मिक शांति की कामना रहती है।

वास्तव में अपने निर्धारित लक्ष्य को पाकर ही हम सच्चे आनंद की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। किंतु सच्चे सुख का प्रासाद किसी के विनाश पर खड़ा नहीं हो सकता। ईमानदारी के साथ अपने लिए अर्जित सुख ही वास्तविक आनंद प्रदान करता है।

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नता। संतोष की
सीखने का अर्थ
हम यह जानें कि
किस वस्तु में निहि
उदार मस्तिष्क
सबसे अधिक संतो
है। जो अपने
संतोष नहीं पाता,
ही उसे इधर-
खोजता फिरता है

लेकिन संतोष
निकम्मापन नहीं सिखाता। "दै
आलसी पुकारा।" सुप्रसिद्ध कवि
ने एक बड़ी अच्छी बात कही है–"हमें
में संतुष्ट रहना चाहिये, हम अपने
काम करें, और इस बात पर
नहीं कि काम छोटा या तुच्छ है।"
विवेकानंद ने इस संबंध में कहा है
की जांच हम उसके कार्य के रूप से
अपितु उस ढंग से करें, जिससे वह
कर्त्तव्य का पालन करता रहे।
रस्किन ने कहा है, लोग अपने
आनंद पा सकें, इस हेतु तीन बातें
हैं। वे उसके पीछे पड़ जायें, उसे
सीमा तक न ले जायें और उसमें
पाने का भाव लेकर बढ़ें।

प्रायः लोग आनंद को ठीक ढंग से
खोजते। उनके विचार में प्रसन्नता दूसरों
दी गयी सुख-सुविधाओं के उपभोग में है
कि सच्चाई यह है कि प्रसन्नता दूसरों
देने, उनका उपकार करने में है।

उदासी के क्षणों में

चित्रकार: कमलाक्ष शर्मा

ध्यान देने योग्य बात यह है कि कामनाओं का कभी अंत नहीं होता। लक्ष्मी एक बड़ी शक्ति है। आज के युग में तो बहुत बड़ी है; परंतु "नित्यानवे का फेर" सदैव व्यथा का कारण बनता है। पद और प्रभूत-यश, रूप, विद्वत्ता और सबलता में भी एक से एक बढ़ कर पड़े हैं। हमारा एक निश्चित लक्ष्य हो, उसे प्राप्त करने की हमारी एक अदम्य कामना हो, और उस दिशा में एक सच्चा स्वस्थ और निर्दोष प्रयास भी हो।

हम अपनी स्थिति पर संतोष करते हुए सुख के लिए सच्चाई से श्रम करें, और फल को ईश्वर पर छोड़ दें, यह संतोष का सच्चा चित्र है। जैरोल्ड ने संतोष को "निर्धन व्यक्ति का बैंक" बताया है। जार्ज इलियट ने कहा है, संतोषी व्यक्ति कभी गरीब नहीं होता, और असंतोषी कभी अमीर नहीं। महात्मा सुकरात का कथन है–संतोष प्राकृतिक संपदा है, विलास कृत्रिम निर्धनता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मन और विचारों की उपज है। संघर्षों और कठिनाइयों के बीच भी कितने ही लोगों का जीवन-सुमन आनंद की अनुभूति के साथ खिलता है, और सारी प्रकृति उन्हें प्रसन्न दिखाई देती है।

आनंद-प्राप्ति के लिए हम इस सूची को ध्यान में रखें :

१ हम अपनी संपूर्ण शक्तियां योग्यकार्य में लगायें।

२ कार्य में व्यस्त रहें और मन को व्यर्थ न भटकने दें।

३ सहयोग की भावना से कार्य करते हुए हम व्यक्तिगत इच्छाओं को भूल जायें।

४ आदर्श की प्राप्ति में संलग्न रहकर हम आकस्मिक प्रसन्नता का उपभोग करें।

५ जब अधिक तृप्ति की इच्छा हो, तब हम अपने ऊपर योग्य नियंत्रण लगा सकें।

६ हमें ध्यान रहे कि जीवन एक पवित्र धरोहर है, वह एक मधुर रागिनी है, उसमें सर्वत्र उल्लास है।

आनंद के ये छः सूत्र हमारे कार्य–कलाप की प्रेरक शक्ति हों। उदासी के छोटे-छोटे कारणों से या अपने प्रति दूसरे के व्यवहार को अनुचित महत्व देकर हम जीवन-रस में विष क्यों घोलें ?

सहयोग

चित्र : लियो लियोनी

सच पूछें, तो अपनी लगन, धैर्य, संतोष और आदर्श की मूक साधना में ही वास्तविक आनंद समाया हुआ है। अधिकतर अलभ्य होते हुए भी यह आनंद प्राप्त कर सकना प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सामर्थ्य में है। अब्राहम लिंकन का यह कथन बहुत अर्थ भरा है–"लोग अपने मन में जितनी प्रसन्नता पाने का निश्चय करते हैं, उतनी ही प्रसन्नता उन्हें मिलती है।"

काम निकल गया

जेल की कोठरी में फांसी की सजा पानेवाला कैदी सबसे अधिक भगवान का नाम लेता था। जब भी जेलर गश्त पर आता, वह भगवान की याद में डूबा होता। हर वक्त पूजा-पाठ में लगा रहता और बातों का जवाब तक इशारों में देता। उसका यह सिलसिला दिन में ही नहीं, बल्कि रात-भर भी जारी रहता।

एक दिन दोपहर के समय जेलर राउंड पर आया, तो वह बेखबर पड़ा सो रहा था। जेलर ने उसे जगाया और पूछा–"क्यों, आज पूजा-पाठ बंद है ?"

कैदी धीरे से बोला–"घरवालों ने सूचना दी है कि मौत की सजा सात साल की कैद में बदल गयी है। भगवान से जितना काम लेना था ले चुका। अब मैं उसे अधिक कष्ट नहीं देना चाहता।

–मुगनी अब्बासी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी बहू

पारिवारिक जीवन की एक व्यापक समस्या पर चर्चा

सुशीला श्रीवास्तव

प्रत्येक युवती के जीवन में एक न एक दिन यह प्रसंग अवश्य आता है, जब वह शहनाई की ध्वनि और मंत्रोच्चारण के साथ किसी दूसरे घर की सदस्या बन जाती है। उस दिन की वह प्रतीक्षा करती है, मन में अरमानों की माला संजोती है– जब वह साड़ी और घूंघट से लिपटी, गहनों-कपड़ों से सुसज्जित ससुराल जायेगी। उस घर जायेगी, जो उसका होगा, वहां वह घर की रानी होगी। कितना आकर्षक, मधुर और सुहावना लगता है यह सब सोचकर! सुनहले भविष्य की कल्पना उसके रोम-रोम को पुलकित कर देती है और फिर एक दिन वह भी आता है, जब उसकी कल्पनाएं साकार हो उठती हैं।

हंसी-खुशी, चहल-पहल और दिवा-स्वप्नों में उसके दिन बीतने लगते हैं। पति-पत्नी दोनों ही परियों और फरिश्तों के लोक में विचरण करते हैं। उनके जीवन की हर रात दिवाली होती है और हर दिन मधु की वर्षा हुआ करती है। उस युवती की लजीली दृष्टि, सुंदर और सलौने मुख एवं कजरारी आंखों पर उसके 'वे' आकाश के चांद और तारे लाने को प्रस्तुत हो जाते हैं। धीरे-धीरे कल्पना जगत से उतरकर उसकी दृष्टि घर और परिवार की ओर भी जाती है। सास, ननदें और देवर - जेठ आदि भी सदस्य भी अपना अस्तित्व रखते हैं। फिर ऐसा लगता है, मानो समतल में कोई रुकावट आ गयी। एकाएक कांटा चुभ गया। वह सोचती है कि ननदें न होतीं, सास और देवर न होते वह घर की पूरी मालकिन होती। जाते समय किसी सास से आज्ञा न होती। दोनों को एकांत में हंसने-मिलने-जुलने और उठने-बैठने की आजादी होती। उसके पति को देवर की न देनी होती, ननदों के लिए साड़ी और उज के कपड़े न खरीदने होते। वह सोचे कि कितना अच्छा होता, यदि उसकी की सारी आय केवल उन दोनों पर व्यय होती। और इस प्रकार उसके में अशांति के बीज उगने लगते हैं। खुशी से भरे घर में दरारें पड़नी शु जाती हैं।

जब वह दुल्हन बनकर आयी थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंवारी ननद ने दौड़कर उसे फूलों से सजी मोटर से उतारा था। सास ने उसकी आरती उतारी थी, क्योंकि भविष्य में वही तो उनका स्थान लेने जा रही थी। उनके लाडले बेटे की संतानों की भावी मां भी वही थी। गृहिणी और मातृत्व पद से गौरान्वित होकर सास ने उसका विशाल हृदय से स्वागत किया था। किंतु परिवार के वे ही सदस्य अब उसे फूटी आंखों नहीं सुहाते। सास परिवार की एक अनावश्यक सदस्या मालूम होती है, उसका तनिक भी नियंत्रण उसे बुरा लगता है। ननद उसे 'सी० आई० डी०' जैसी लगती है, क्योंकि वह उसकी गतिविधियों की रिपोर्ट मां से करती है। यह सब कुछ सोचते समय वह बहू शायद भूल जाती है कि पारिवारिक जीवन की सफलता सदस्यों के आपसी व्यवहार, स्वभाव की कोमलता, सहयोग और समझदारी पर ही निर्भर करती है। जब वह सोचती है कि सास कुटुंब की अनावश्यक सदस्या है, जेठ-देवर और ननदें उसकी स्वतंत्रता में बाधक हैं, तो वह यह भूल चुकी होती है कि जिस पति को वह अपने प्राणों से अधिक प्यार करती है, जो उसके मन-मंदिर के देवता हैं, वे किसी के लाडले बेटे और भाई भी हैं। उन पर सिर्फ बहू का ही अधिकार नहीं है।

मैं मानती हूं कि विवाह के बाद बेटा सिर्फ बेटा ही नहीं, वह किसी का पति भी बन चुका होता है। अभी तक उसके जीवन में सिर्फ एक ही नारी थी, जिसने पाल-पोसकर उसे बड़ा किया, जिसकी छाया में वह किशोर से युवा बन सका। पर विवाह के बाद अब एक दूसरी नारी प्रवेश करती है, जो यह दावा करती है कि अब उसके पति और उसके बच्चों की रक्षा के लिए, उसका आंचल ही पर्याप्त है। उसके पति को अब किसी मां के वात्सल्य की आवश्यकता नहीं है, मां की भूमिका खत्म हो चुकी है। किंतु वह यह भूल जाती है कि किसी पुरुष के जीवन में मां का स्थान पत्नी नहीं ले सकती। इसलिए ईर्ष्या का प्रश्न नहीं उठना चाहिये। ममतामयी मां भी जब देखती है कि एक दूसरे घर की लड़की, जो उसकी बहू बनकर आयी है, उसके स्नेह के पात्र बेटे को उससे अलग कर रही है, उसकी सोने-सी गृहस्थी में शोले झोंक रही है, तो वह भी बहू के प्रति कटु बन जाती है। इस प्रकार संयुक्त परिवार की नींव ढहने लगती है.. गृह का वातावरण श्मशान-जैसा बन जाता है।

हमारी आधुनिक बहनें यह न भूलें कि हमारे ये परिवार जीवन के सूने घटक होते हैं। जिंदगी के कठोर थपेड़े खाने के बाद संध्या समय व्यक्ति को अपनी शीतल छाया प्रदान करनेवाले ये पीपलवृक्ष होते हैं। इनकी दीवारों की नींव में उत्सर्ग और कर्तव्य समाया रहता है। यदि इनका वातावरण विषाक्त हुआ, तो व्यक्ति और समाज किसी की भी उन्नति संभव नहीं। अतः बीसवीं शताब्दी की अति आधुनिक बहू होते हुए भी जीवन की कुछ अति प्राचीन मान्यताओं के प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे जागरूक और कर्तव्य-परायण रहना ही होगा। गृहस्थ-जीवन में प्रवेश करने के पश्चात उसके कुछ मूलभूत सिद्धांतों पर आचरण करना ही होता है। किसी विश्वविद्यालय के 'यूनियन हाल' में सहिष्णुता, आत्म-त्याग और बलिदान पर धुआंधार भाषण देनेवाली आधुनिक युवती जब गृहस्थ जीवन में प्रवेश करती है, तब अपने पति की मां व भाई-बहनों के लिए आत्म-त्याग की बात भुलाकर उन्हें अपनी स्वतंत्रता में बाधक मान बैठती है। इसका कारण यही है कि बचपन से उसे जीवन के श्रेय उपादानों की शिक्षा नहीं मिलती। उसे यह नहीं बताया जाता कि स्त्री केवल पत्नी ही नहीं है; वह मां, बहन और पुत्र-वधू भी है। पति की आय पर केवल उसी का अधिकार नहीं, सारे कुटुंब का अधिकार है। वह यह नहीं समझ पाती कि कुटुंब में मातृत्व का चिरंतन त्याग, पुत्र की कर्तव्य-निष्ठा और पति का अनुरक्त प्रेम सभी कुछ वर्तमान होता है। अपने संक्षिप्त और घनीभूत रूप में यहां जीवन के चिरंतन तत्वों का सामंजस्य होता है। विवाह तो व्यक्ति की सामाजिकता की और समाज के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करने की प्रथम सीढ़ी है। यह त्याग और कर्तव्य की पहली सार्वदेशिक शाला है।

अतः विवाह के बाद पति और पत्नी दोनों ही कर्तव्य के कठोर बंधन में बंध चुके होते हैं। जीवन-चक्र एक क्षण के लिए भी नहीं रुकता और उसके साथ शरीर और मन की भावनाएं भी बदलती हैं। ...वह नवेली दुल्हन है, तो घर के अन्य ...का साथ उसे अप्रिय लगता है; ...एक समय वह भी आयेगा, जब वह ...करेगी कि घर के उन बड़े-बूढ़ों और ...यों के स्नेह की छाया में वह अधि... थी। उस समय वह स्वतंत्र थी, जिम्मे... यों से मुक्त थीं, उस पर गृहस्थी ... न था। परिवार का प्रत्येक सदस्य ... महत्व रखता है—उसकी अपनी उप... है। आज सास आपको बुरी लगती है; ... एक दिन यही पद आपको भी मिलेगा ... आप भी सास बनेंगी। आज ननद ... परिवार का बोझ समझती हैं; लेकिन ... भी एक दिन किसी की ननद ही थी ... लिए परिवार के सुख एवं शील ... एक निष्कपट, उत्सर्गमय गृहजीवन ... श्यक ही नहीं, अनिवार्य है। इसे ... जीवन कभी सुखी नहीं रह सकता। ... की दुनिया किसी होटल के सौंद... पाउडर आदि से आयोजित एवं ... नहीं होती, यहां यूरोप के बगीचों में ... होनेवाला वायलेट आपको न मिलेगा ... तो अपनी सुगंध को स्वयं में छिपाए ... जूही की कली ही मिलेगी। अतः हमारे ... वारों की ये आधुनिक नववधुएं यदि ... सामने विवाहित जीवन का वह चित्र ... जहां कर्तव्य और कल्याण साथ-साथ ... हैं, जहां एक के बिना दूसरे का अ... नहीं; तो हमारे परिवार अधिक ... एवं संपन्न रहें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादे के फूल

स्टेफान लाकनर

ऐसा लगा कि हम मृग मरीचिका देख रहे हैं। नीली और सुनहली चमक के फूल यहां कैसे? कैलिफोर्निया के इस मोजावे रेगिस्तान में?

रेगिस्तान की सख्त गर्मी से बचने के लिए हम तीन बजे सुबह ही निकल पड़े थे। डिब्बों में पीने का पानी भर लिया था और अपनी कार में पेट्रोल। एकाएक हमें रेत के टीलों के बदले फूलों की क्यारियां दिखाई दीं। मीलों तक जमीन तरह-तरह के फूलों से ढकी पड़ी थी। कितने आश्चर्य की बात थी!

इनके बीचों-बीच अल्युमिनियम की पवन-चक्की सिर उठाये खड़ी थी। थोड़ी देर में हम एक मकान के पास आ पहुंचे। यहां क्यारियों में फूलों के बीजों के थैले भरे जा रहे थे। मेरी पत्नी ने सलाह दी कि यहां थोड़ी देर ठहरकर फूल खरीदें; इससे रेगिस्तान की मुसाफिरी कुछ उल्लासमय हो जायेगी।

आफिस में हमें एक आदमी नजर आया। उसने कहा—"माफ कीजिये, हम फूल नहीं बेचते। सिर्फ बीज बेचते हैं। क्या आप खुद ही फूल नहीं तोड़ लीजियेगा?" उसने मेरी पत्नी को कैंची ला दी। हमने कुछ बीज खरीदे और पहली ही फूलों की क्यारी में फूल तोड़ने लगे।

थोड़ी ही देर में एक बुजुर्ग आदमी हमारी ओर आता दिखाई दिया। सख्त धूप होने पर भी उसने सिर पर हैट नहीं लगाया था। चांदी से चमकते सफेद बालों का एक गुच्छा उसके धूप से तपे हुए भूरे चेहरे पर लहरा रहा था।

वह पीले रंग के चिरुट से धुएं के गाढ़े बादल निकाल रहा था। हमें पसोपेश में पड़ा देखकर उसने हमसे पूछा—"आपको मेरे फूल पसंद आये?

"जी हां, आपके नौकर ने हमें इजाजत दी है . . . "

उसने कहा —"मुझे बड़ी खुशी है कि आपने मेरे इन बच्चों को अपनाया है। मेरे तो लाखों बच्चे हैं।" उसकी आवाज जरा भर्रायी हुई थी।

मार्गरेट ने मुस्कराते हुए बूढ़े से कहा—"फूलों के बीच रहने में कितना आनंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आता होगा! आप यहां कब से रहते हैं?"

"यही लगभग दो पीढ़ियों से . . ."

"सचमुच? आपके आने के पहले तो यहां एक भी फूल न रहा होगा। बागवानी के लिए इस रेगिस्तान में जगह पसंद करने का क्या कारण?"

बूढ़े के चैतन्यपूर्ण चेहरे पर विषाद की एक हलकी-सी लहर दौड़ गयी –"क्या आप सचमुच जानना चाहते हैं कि मैंने यह जगह क्यों पसंद की? मेरे साथ चलिये, मैं आपको बताता हूं।"

वह हमें नुकीली छतवाले एक मकान की तरफ ले गया। यह स्पेनिश ढंग का मकान था; मगर मध्य पश्चिम के खेतिहरों के मकान जैसा था। एक छोटे-से बाग में एक कब्र पर हरी डालियां झुकी हुई थीं। सारी कब्र फूलों से अच्छी तरह ढंकी हुई थी।

"यहां मेरी पत्नी सोयी हुई है।" बूढ़े ने कहा। उस पर लिखा था :

जेन पोर्टर १८७४–१८९४

फिल पोर्टर १८७०–

× × ×

"फिल, फिल, ठहर जाओ, मुझसे अब ज्यादा सहा नहीं जाता . . ."

जेन की दर्द-भरी पुकार सुनकर फिल ने गाड़ी खड़ी कर दी और रेगिस्तान की रेत में चादर बिछाकर अपनी पत्नी को उस पर लिटा दिया। फिर पूछा –"कुछ खाओगी?"

जेन ने केवल एक घूंट पानी पिया और बोली–"बार्स्टो शहर यहां से कितनी दूर होगा?"

फिल का एक चाचा बार्स्टो में रहता था। वहां उसका एक बड़ा फार्म था। वे अपने चाचा के पास रहने के लिए पूर्व की ओर से आ रहे थे। मिशिगन की सर्दी जेन के लिए खतरनाक थीं और वह बीमार केलिफोर्निया आकर तंदुरुस्त हो जाते थे। रेलगाड़ी में ये लोग सेंट लुई तक पहुंच गये थे। यहां आकर इन्होंने एक घोड़ा और गाड़ी खरीदी और अब रेगिस्तान को पार कर रहे थे।

"अब डेढ़ दिन का रास्ता रह गया प्यारी!" जेन का चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। फिल को सूझ नहीं रहा था कि क्या करे?

संध्या के प्रकाश में आह भरते हुए वह बोली –"फिर, क्या तुम्हें यकीन है कि हम सही रास्ते पर हैं? मुझे तो इस रास्ते का कोई अंत नहीं दिखाई देता। अनंत-सा लंबा रास्ता है . . . और अभी तो बहुत देर . . ."

"घबराओ नहीं, अब दूर नहीं है।"

थोड़ी देर में अंधकार ने लंबे-लंबे डग भरकर सारे क्षितिज को ढंक लिया। जेन ने कराहते हुए कहा–"काश, मैं चाचा के घर तक पहुंच सकी होती। वहां मनुष्यों के ताजे फूलों के बीच मरने में मुझे इतना डर न होता। मगर यहां तो आखिरी क्षण भी कुछ सुंदर नजर नहीं आता।"

"तुम्हें ऐसी मरने की बातें नहीं करनी चाहिये। बार्स्टो में डाक्टर मिल जायेगा और तुम फिर तंदुरुस्त हो जाओगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिल गाड़ी में से कुछ लकड़ियां ले आया और उसने जेन के पैरों के पास आग जलायी। आग के प्रकाश में उसने देखा कि जेन का चेहरा बिलकुल फीका पड़ गया है।

आकाश में जब तारे टिमटिमाने लगे, तब जेन ने धीरे-से कहा –" मैं यहां इस रेगिस्तान में अकेली मर जाऊंगी . . . फिल, क्या मेरी कब्र पर एकाध पौधा भी नहीं उगाया जायेगा ?"

"ऐसी बातें मत करो। सोने की कोशिश करो।" धीरे-से फिल ने उसके माथे को चूमा। जेन ने उसका हाथ जोर से पकड़ लिया।

"फिल, वादा करो . . . एकाध पौधा, जो वर्षों में एक बार फूलता हो। अब मैं सो जाऊंगी। मैं फूलों के सपने देखूंगी। खूब सारे फूल !"

× × ×

बूढ़े ने ऐनक उतारकर आंखें पोंछीं– "वह उसी रात को मर गयी, यहां इसी जगह ! यहां के मौसम के कारण मुझे उसे फौरन दफना देना पड़ा। थोड़ी दूर पर मुझे आधा मुरझाया हुआ एक पौधा मिला। मैं उसे ले आया। मुझे आशा न थी कि वह जड़ पकड़ेगा और जम जायेगा। मैंने कब्र की थैली-भर मिट्टी बास्टों ले जाने के लिए ले ली। कुछ समय बाद हमने वह मिट्टी विश्लेषण के लिए भेज दी। वैज्ञानिक जांच के मालूम पड़ा कि उस मिट्टी में पौधों के लिए आवश्यक सभी गुण हैं; कमी केवल पानी की है।

"जब मैंने कुछ पैसा कमा लिया, मुझे लगा कि मुझे इस जगह लौटना चाहिये। मेरा एक चचेरा भाई मेरे साथ आया। हमने देखा कि जो पौधा मैंने कब्र पर लगाया था, वह हरा-भरा था और कुछ बड़ा भी हो गया था। हमने तुरंत खुदाई शुरू कर दी और पानी मिल गया। मैंने जेन से उसकी कब्र पर फूलों के पौधे लगाने का वादा किया था और वह मैंने पूरा किया। देखिये, मैंने कितने फूल उसके लिए लगा दिये हैं।" उसने क्षितिज की ओर स्नेह और गर्व से इशारा किया।

मेरी पत्नी ने कहा –"जेन की अंतिम इच्छा आपके लिए बड़ी सुखद साबित हुई।" उसने भारी हृदय से सिर हिलाते हुए कहा– "आर्थिक दृष्टि से हां। सरकार से जमीन पाना बहुत आसान था। जो जितनी जमीन चाहे घेर ले और पटवारी को सूचित कर दे। एक पैसा भी मुझे खर्चना नहीं पड़ा। आज जेन और मेरे बच्चे इस सारे संसार में फैले हुए हैं।"

मैंने बीजों का पैकेट जेब से निकालते हुए कहा–"जब हम इन बीजों को बोयेंगे, तब इस सुंदर स्थान को हमेशा याद करेंगे।

फिल ने बीजों के पैकेट पर छपे चित्र की ओर इशारा किया। उसमें एक युवती थी, जिसके काले बालों में फूल गंथे हुए थे, जिन्हें यहां 'वसंत की विदाई' कहा जाता है। बूढ़ा बोला –"यह जेन है और मैंने इसके साथ किया हुआ अपना वादा निभाया है।" **–मूल जर्मन से रूपांतर : नरेंद्र नायक**

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियम और तर्क

राधाकृष्ण

भूदान के सिलसिले में संत विनोबा उन दिनों रांची में थे। एक दिन मुझे भी उनसे भेंट करने का अवसर मिला। मैंने सुना था कि विनोबाजी अपनी लिखी हुई पुस्तक पर हस्ताक्षर कर देते हैं। मैं भी उनके हस्ताक्षर लेने का लोभ संवरण नहीं कर सका। बाजार से 'विचार-पोथी' नामक पुस्तक लेकर विनोबाजी के पास पहुंचा। बातचीत के बाद मैंने वह पुस्तक हस्ताक्षर के लिए बढ़ायी, तो वे कलम लेकर हस्ताक्षर के लिए तैयार हो गये। मगर जैसे ही पुस्तक के शीर्षक पर उनकी दृष्टि पड़ी कि उनका हाथ रुक गया। बोले—"मैं केवल 'गीता-प्रवचन' पर ही स्वाक्षर करता हूं।"

मैंने कहा—"परंतु यह भी तो आपकी ही पुस्तक है।"

"वह है!" विनोबाजी ने कहा—"मगर मैंने नियम लिया है कि 'गीता-प्रवचन' पर ही स्वाक्षर करूंगा। यह नियम नहीं टूट सकता।"

मैंने तर्क दिया—"एक ही पुस्तक पर आसक्ति और दूसरी पर नहीं, इसमें मुझे समत्व-दृष्टि नहीं मिलती।"

विनोबाजी बोले—"मगर नियम नियम है। इसका उल्लंघन नहीं हो सकता।"

मैंने फिर निवेदन किया—"संभव नियम बनाते समय आपने इस समस्या गहराई से विचार न किया हो। निय भी तर्क का आधार चाहिये। और यह पुस्तकों के महत्व का सवाल है, प्रवचन' में विनोबा ने व्यास को न समझाया है; लेकिन इस 'विचार में तो विनोबा अकेले अपना मौलिक दे देता है। कृपया एक बार फिर इस पर विचार कर लें।"

संत विनोबा एक मिनिट तक रहे। उसके बाद उन्होंने हाथ बढ़ाकर हाथ से पुस्तक ले ली। बोले "तुमने जीत लिया!" और संत के हस्ताक्षर पुस्तक के पन्ने पर चमक उठे।

मेरीआत्मा ने कहा—"हे तपस्वी संत तुम्हें क्या जीत सकूंगा? जिसने आपको जीत लिया है, उसे कौन जीत है? नियम के पालन के लिए जितनी की जरूरत है, नियम की कमजोरी करने के लिए उससे भी अधिक दृढ़ता आवश्यकता है। मेरे-जैसे तिनके की के आदमी के कहने पर...।" और आत्म-कथन के बाद मेरा मस्तक श्रद्धा से झुक गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेनरी फोर्ड की व्यावसायिक देन

व्यवसाय की सफलता में कई कारण निहित रहते हैं--अमरीका के शीर्षस्थ उद्योगपति का जीवन इसकी सनद है ।

जान डाइबोल्ड

सन १९०३ में जब सर्वप्रथम फोर्ड इंजन बन रहे थे, जोसेफ एंडरसन नाम के एक वकील उन्हें देखने पहुंचे । ये उन बारह सज्जनों में से एक थे, जिन्होंने उस फोर्ड-कारखाने में पूंजी लगायी थी । फैक्टरी में घूमते हुए वे बोले--"मोटरें बनाने का यह धंधा काफी उलझन-भरा लगता है ।"

यह सुनकर हेनरी फोर्ड ने कहा--"अभी जो कुछ आपने देखा है, यह तो बीच की स्थिति है । असली बात तो तब बनेगी, जब पिनों या दियासलाइयों की तरह मोटर के इंजन बनने लगेंगे ।"

एंडरसन को यकीन नहीं हुआ कि मोटर के इंजन भी कभी उस पैमाने पर बनाये जा सकेंगे । लेकिन फोर्ड ने फिर कहा--"तरीका वही है । बस जरूरत है, तो ज्यादा जगह की ।"

उस जमाने में फोर्ड का ऐसा सोचना सचमुच एक क्रांतिकारी बात थी । वह चाहता था कि हर अमरीकी को अपने उपयोग के लिए एक मोटर मिले, जो आसानी से चलती हो, सस्ती हो और साथ ही बहुत बढ़िया हो । वह औद्योगिक उत्पादन के तौर-तरीकों में क्रांति लाना चाहता था । इस क्रांति ने उसे करोड़पति और उसके कारखाने के कर्मचारियों को संसार-भर में सबसे ज्यादा तनख्वाह पानेवाले श्रमिक बना दिया । वकील जोसेफ एंडरसन ने फोर्ड के साथ मिलकर मोटर कारखाने में जो बीस हजार रुपये की पूंजी लगायी थी, वह दस साल में बढ़कर छः करोड़ रुपये हो गयी ।

हेनरी फोर्ड को विश्वास था कि वह अपनी एक खास माडल की मोटरकार का इतनी बड़ी तादाद में उत्पादन कर सकता है कि कार पर आनेवाले खर्च का औसत बड़ी हद तक घट जाये । इस तरह खरीदार को कार उसी हिसाब से कम कीमत में मिल सकेगी । इसका नतीजा यह होगा कि बहुत बड़ी संख्या में लोग कारें खरीदने आयेंगे । और उसका यह विचार सही निकला । सन १९०८ से १९२७ तक केवल टी-माडल की ही डेढ़ करोड़ कारें बनायी गयीं और जहां पहले इस कार की कीमत ९५० डालर थी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंत में ३४५ डालर हो गयी। और सन १९४७ (उसी साल फोर्ड की मृत्यु हुई) तक तीन करोड़ कारें बिक चुकी थीं।

फोर्ड कहा करता था कि समय एक ऐसी चीज है, जो नष्ट होने पर फिर हाथ नहीं आती। और चीजें अगर खराब हो जायें, तो भी कूड़ा-करकट के रूप में हमारे पास पड़ी रहती हैं और किसी रूप में उनका उपयोग हो सकता है। खराब हुआ समय हमेशा के लिए हाथ से चला जाता है।

सन १९१३ में चार्ल्स सोरेंसन ने, जो कि फोर्ड का दायां हाथ था, टी-माडल की फोर्ड-जैसी कारें बनाने के लिए २५० फुट का कन्वेयर पट्टा लगाया। यह पट्टा कारखाने के विभिन्न भागों में होकर घूमता था, जहां कार के अलग-अलग भाग जोड़े जाते थे। जबकि पहले एक कार जोड़ने में १४ घंटे लगते थे, अब पांच घंटे पचास मिनिट लगने लगे। इस प्रकार सोरेंसन ने लगभग ६० प्रतिशत समय की बचत कर दिखायी।

हेनरी फोर्ड इस बात का सिद्धांततः विरोधी था कि मजदूरों को तो कम-से-कम तनख्वाह दी जायें और उनकी बनायी चीजें ज्यादा-से-ज्यादा कीमत में बेची जायें। सन १९१४ में उसने अपने मजदूरों की तनख्वाह दुगनी कर दी।

हेनरी फोर्ड महसूस करता था कि जी उकता देनेवाली कमरतोड़ मेहनत से मनुष्य को छुटकारा मिलना ही चाहिये। वह मानता था कि मनुष्य के समय और सामर्थ्य का अधिक से अधिक उपयोग सृजनात्मक कार्यों में होना चाहिये। और लिए वह काम के घंटे कम करने के पक्ष था। आज अमरीका में जो हफ्ते में पांच दिन काम करने की व्यवस्था हो सकी उसमें फोर्ड का बहुत हाथ रहा है। कन्वेयर पट्टा लग जाने पर फोर्ड कारखाने में दूरों को दिन-भर एक ही तरह का काम तक करना पड़ता था; किंतु इस नीरसता को मिटाने के लिए फोर्ड ने नियम बनाया कि मजदूरों का तबादला थोड़े-थोड़े बाद एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे विभाग किया जाता रहे। इस प्रकार एक ही जगह में लगातार एक-सा काम करने की नौबत खत्म हो जाती थी।

फोर्ड में बेहद आत्मविश्वास भरा और उसे यह पता था कि लोग क्या चाहते हैं—कम कीमत की, अच्छा काम देनेवाली, चार सिलेंडर की, टी-माडल की। वह इस हक में नहीं था कि कार में तरह तरह के उपकरण जोड़ें जायें, कारों विभिन्न रंग किये जायें या उनमें छः सिलिंडर के इंजिन लगाये जायें। उसे सबसे अधिक ध्यान रहता था उत्पादन का कि किस प्रकार अधिक-से-अधिक संख्या में कारें बनायी जायें? आखिर १९२७ में उसने ए-माडल की कारें बनानी शुरू कीं। तब तक प्रतियोगिता में दूसरे कार-निर्माताओं से काफी आगे निकल चुका था। उसने अपना व्यवसाय की जड़ें मजबूती से जमा ली थीं।

उसका बेटा, एडसेल ग्राहकों की मांग को समझने में उससे भी ज्यादा चतुर था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु हेनरी उसकी बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं देता था। लेकिन कैसी विडंबना की बात है कि लगभग तीस साल बाद (तब तक हेनरी और उसके बेटे की मृत्यु हो चुकी थी) हेनरी के पोते ने एक कार का नाम अपने पिता एडसेल के नाम पर रखा और उसे बेचना शुरू किया। ये कारें बिलकुल नहीं बिकीं। फोर्ड कंपनी के इतिहास में यह सबसे बड़ी असफलता है।

हेनरी बड़ा मानव-प्रेमी था। उसने अपने कर्मचारियों के लिए एक बढ़िया अस्पताल स्थापित किया और उद्योग-धंधे सिखाने के लिए एक स्कूल खोला। वैसे वह बुनियादी तौर पर दान देने के हक में नहीं था।

हेनरी फोर्ड

फोर्ड स्वयं बहुत ही मेहनती था और चाहता था कि उसके सब कर्मचारियों में भी यही गुण हो। तीन बार उसके सामने प्रस्ताव आया था कि पचास लाख रुपये में अपना कारखाना बेंच दे। लेकिन तीनों बार उसने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया और कहा– "तब मेरे पास पैसा तो होगा; पर काम नहीं होगा।"

इस प्रकार हेनरी लाखों रुपयों के प्रलोभन के आगे भी विचलित न हुआ।

फोर्ड कंपनी के पहले दस साल के अंत में बहुत बड़ा मुनाफा हुआ और बड़े खुले दिल से डिविडेंड आदि देने पर भी काफी पूंजी जमा हो गयी।

फोर्ड उसे नयी फैक्टरी में लगाना चाहता था; पर उसके हिस्सेदार सहमत नहीं थे। विवाद का निपटारा अदालत ने किया और फोर्ड को दस करोड़ रुपये केवल डिविडेंड के तौर पर देने पड़े थे। पर हेनरी फोर्ड ने अपने हिस्सेदारों के बाकी स्टाक खरीद लिये और बाद में सारा व्यापार फोर्ड-परिवार के हाथ में आ गया।

हेनरी फोर्ड ने स्वयं-चलित यंत्रों द्वारा उत्पादन करने की पृष्ठभूमि तैयार की। अब अगला कदम था–इन स्वयं-चलित यंत्रों का नियंत्रण भी मशीनों द्वारा करना। आज फोर्ड कारखाने में बहुत बड़े पैमाने पर कंप्यूटरों का उपयोग होता है। अगर हेनरी फोर्ड आज जिंदा होता, तो कंप्यूटरों का यह उपयोग देखकर खुश होता कि उसका रोया हुआ बिरवा वृहदाकार होकर अपने स्वामियों और श्रमिकों को अधिकाधिक सुख-सुविधा की छाया दे रहा है। *

प्रेम की वेदी पर

उपर्युक्त शीर्षक से जनवरी १९६५ के अंक में प्रकाशित पुस्तक-संक्षेप 'टाइलर्स आफ दि सी' विक्टर ह्यूगो-लिखित उपन्यास है। खेद है कि भूल से लेखक के रूप में एच० जी० वेल्स का नाम चला गया। —संपादक

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

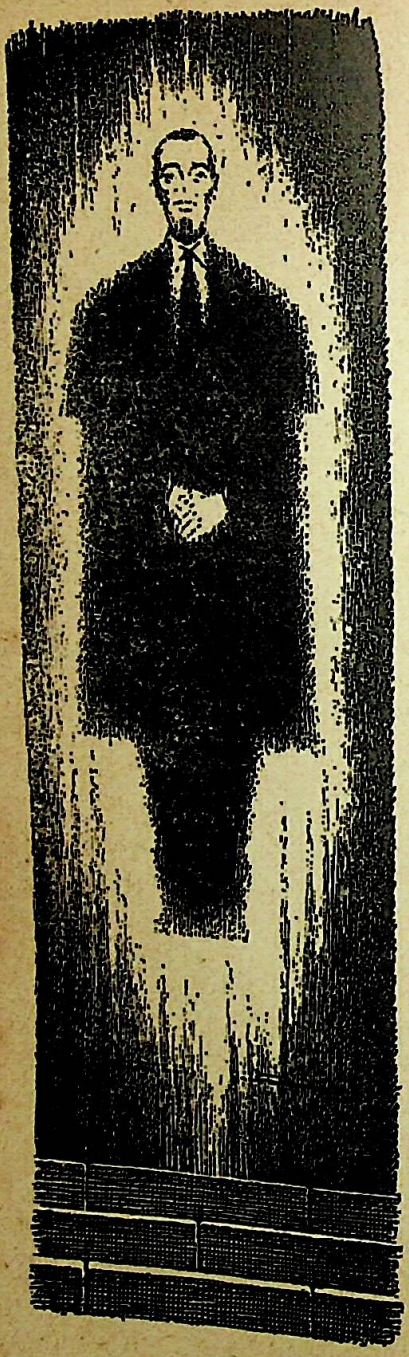

लेख के शीर्षक को देखकर चौंकिये
मनुष्य की मानसिक क्रियाएं रहस्य
हैं। आज का विज्ञान आत्मा, ईश्वर व
जन्म आदि के बारे में पूर्णतया मौन है

एक ही शरीर में दो या दो से
आत्माओं के बोध के जो उदाहरण
निकों के सामने आये हैं, वे उनको आश्च
न्वित करने के लिए पर्याप्त हैं।

अमरीका के हारवर्ड और कैलिफोर्नि
विश्वविद्यालय के दो अध्यापकों ने बी
सदी में अवचेतन मनोविज्ञान में नयी
करने का काफी श्रम किया है। उन्
इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी
इसमें माना गया है कि एक ही शरीर
भिन्न-भिन्न आत्माओंकीस्थिति कोईविल
कारक नहीं; वह मानसिक शक्ति का
रूपांतर है। एक स्थल पर लिखा है-

"एक शरीर में अनेक आत्माओं की
का बोध कोई नयी बात नहीं, वह न
होना चाहिये; क्योंकि अनेक क्षणिक
के समुदाय का नाम मन है।"

इसके बारे में अधिक न लिखकर
मैं पश्चिमी देशों में घटित इससे संबं
कुछ उदाहरण रखता हूं :

सन १९०४ में डाक्टर आसवन ने
पत्र में लिखा था कि एक धनवान
एक दिन शाम को हवा खाने केलिए निक
और एकाएक गायब हो गया ! दो
पश्चात् एक स्थान पर एक कसेरा
औजार फेंककर चौंक पड़ा।

उसने कहा—"मैं यहां कैसे आया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक शरीर : अनेक आत्माएं

प्रेतात्माओं में विश्वास करना दकियानूसी बात हो सकती है; किंतु इस बारे में वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षित है।

श्याम मनोहर व्यास

मेरा यह नाम कैसे पड़ा ? मैं तो अमुक व्यक्ति हूं; जो दो वर्ष पूर्व खो गया था।"

दो वर्ष तक कौन प्रेत उस पर सवार था, कुछ ज्ञात नहीं हुआ। इन दो वर्षों की बातें उसे बिलकुल विस्मृत थीं।

१७ जनवरी १८८७ को रीड्स नामक शहर के निवासी एंसेलबूर्न ने एक बैंक से कई हजार रुपये कुछ जमीन खरीदने के लिए निकाले और उन्हें लेकर वह गाड़ी पर सवार हुआ। उस समय से लेकर ४ मार्च तक उसका क्या हुआ, कुछ भी पता नहीं चला।

वह स्वयं भी इस परिवर्तन को न जान सका। एक आदमी ने, जिसने अपना नाम ए० जे० ब्राउन बताया, एंसेलबूर्न के शरीर को अमरीका पहुंचाया, और उन रुपयों से मिश्री का व्यापार किया। १५ मार्च को ए० जे० ब्राउन गायब हो गया, और अब एंसेलबूर्न सोकर उठा।

वहां वह कैसे आया, यह उसे विदित न था। उसे बैंक से रुपये लेकर चलने तक की बात याद थी। उसका वजन भी २० पौंड कम हो गया था। दो महीने तक एंसेलबूर्न के व्यक्तित्व की जगह ए० जे० ब्राउन के व्यक्तित्व ने काम किया।

सन १८९४ की 'साइकालाजिकल रेव्यू' नामक पुस्तक में डाक्टर डाना ने एक रोगी के बारे में लिखा था कि वह एक बार धुएं के कारण बेहोश हो गया। जब होश में आया, तब उसकी मानसिक क्रिया में काफी अंतर आ चुका था। वह एक बालक के समान हो गया था। पढ़ाई-लिखाई भी भूल गया था। उसे तीन महीने तक लिखना-पढ़ना सीखना पड़ा।

तीन महीने पश्चात् उसे अचानक सिर-दर्द हुआ। विश्राम करने के लिए वह सो गया। सुबह जागकर उठा, तो पुनः पुराना व्यक्तित्व उसमें जाग उठा। बालक गायब हो गया!

बोस्टन के डाक्टर नार्टन प्रिंस ने एक पत्रिका में लिखा था कि एक सुशिक्षित और मितभाषी महिला उनसे इलाज कराने आयी। एक दिन जब वह सोकर उठी, तो उसने अपने आपको अन्य व्यक्तित्व के अधीन पाया।

नयी आत्मा अपना नाम सैली बताने लगी। यह सैली उपरोक्त महिला के स्वभाव के बिलकुल विपरीत थी। यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक वाचाल, कर्कश और पुस्तकों से घृणा करनेवाली थी। पहले यह आत्मा महिला के शरीर में कुछ ही घंटे रहती थी; पर बाद में लगातार कई दिनों तक उसके शरीर में रही। अंत में वह महिला को छोड़कर चली गयी और महिला पूर्ववत् स्थिति में पुनः आ गयी।

ऐसे मामलों में पादरी हाना का उदाहरण सबसे अधिक विस्मयकारक है। पादरी हाना इंग्लैंड के निवासी थे। १५ अप्रैल १८९७ की शाम को गाड़ी पर घर लौटते समय वे गाड़ी से गिर पड़े। उनके सिर में बहुत चोट आयी। गाड़ी से गिरने के पूर्व वे पूर्णतया ठीक थे। गिरने के बाद उन्हें बेहोशी की दशा में उठाया गया। लेकिन जब उनकी बेहोशी दूर हो गयी, तो वे विचित्र दृष्टि से देखने लगे। वे न कुछ बोलते थे और न लोगों की बोली ही समझ सकते थे। जो हरकतें वे करने लगे थे, वे बहुत ही विचित्र थीं।

वास्तव में हुआ यह कि हाना साहब तो गायब हो गये और एक बच्चे की आत्मा उनके शरीर में प्रविष्ट हो गयी!

उन्हें कुछ भी समझ नहीं पड़ता था। वे हाथ-पांव उठाना, पढ़ना-लिखना और खाना-पीना सब भूल गये!

अब पुराने हाना साहब बिलकुल लुप्त हो गये थे और एक सद्यःजात बालक के व्यक्तित्व ने उनकी जगह ले ली थी।

धीरे-धीरे बालक ने पढ़ना-लिखना शुरू किया। तत्पश्चात् धीरे-धीरे वह वस्तुओं के नाम भी सीखने लगा। अब प्रश्न यह उठता है कि पहलेवाले हाना साहब का अस्तित्व कहां लुप्त हो गया? नये बालकरूपी व्यक्ति कौन था?

उन दोनों में केवल यही संबंध दिखाई देता था, जितना खाली घर में टिकनेवाले अतिथि और घर के स्वामी में होता है।

पहला हाना यहूदी भाषा जानता था, पर दूसरा नहीं जानता था। एक बार किसी ने यहूदी भाषा का एक पद्य सुनाया। एकाएक हाना साहब बोले—"हां, मैं इसे जानता हूं।"

फिर आद्योपांत वे पूरा पद्य सुना गये, पर तुरंत वे फिर वह पद्य भूल गये। इससे जाहिर था कि दोनों हानाओं का उस शरीर में अस्तित्व था।

पहला हाना कभी-कभी ही सामने आता था। वह और कहीं सो रहा होता था।

एक दिन हाना साहब को न्यूयार्क ले गया। वहां उनके शरीर के भीतर छिपे हुए व्यक्तित्व को अच्छी तरह से जगाने का यत्न किया गया। वे एक होटल में ठहराये गये थे। एक दिन तीन घंटे के पश्चात् जब वे सोकर उठे, तो उन्होंने अपने में पहले हाना को पाया। दूसरा हाना गायब हो चुका था। चार मास पूर्व गाड़ी से गिरने की बात को छोड़कर उन्हें बाकी सब बातों का कुछ भी ज्ञान न रहा। उन्हें लगा, मानो उन्हें कल ही चोट लगी है। एक घंटे तक उनकी यह दशा रही। जागने पर पहला हाना गायब हो गया और दूसरा उपस्थित हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर कई दिनों तक दोनों हानाओं का आनाजाना जारी रहा। दोनों का व्यक्तित्व एक दूसरे से सर्वथा भिन्न था। पहला हाना जिनको जानता था, दूसरा उनको पहचानता तक न था।

वे समझने लगे कि हम दो आदमी एक ही घर में रहते हैं, उन्हें यह भी याद रहने लगा कि हमारा अमुक समय अमुक दशा में व्यतीत हुआ है।

हमारे देश में भी ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं। मेरे पड़ोस में एक जुलाहा रहता था। लोग कहते थे कि वह प्रेत-बाधा से पीड़ित है।

एक दिन मैंने देखा कि उसमें प्रेतात्मा का प्रवेश हो रहा है। वह अशिक्षित जुलाहा अंग्रेजी और फारसी बोलने लगा। यह स्थिति उसमें लगभग पंद्रह मिनिट तक रहती थी। इससे स्पष्ट है कि जुलाहे के शरीर में कुछ समय के लिए दो भिन्न-भिन्न आत्माओं का अस्तित्व रहता था।

स्वामी शंकराचार्य की परकाय-प्रवेश की घटना बहुप्रचलित है। उन्होंने सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक राजा के मृत शरीर में (योगविद्या द्वारा) प्रवेश किया था। इसमें कितना सत्यांश है, यह कहना कठिन है।

मनोवेत्ताओं का कथन है कि मानसिक बोधों के समुदाय में परिवर्त्तन होने पर मनुष्य भिन्न व्यक्ति-सा प्रतीत होता है। मानसिक अवस्था का परिवर्तन प्रकृत अवस्था में न होकर रोग, चोट, प्राण-परिवर्तन की क्रिया अथवा नशीली वस्तुओं के प्रयोग आदि से होता है।

यह कथन पूर्ण रूप से सत्य प्रतीत नहीं होता। यदि इसे सत्य मान लिया जाये, तो अशिक्षित व्यक्ति का विदेशी भाषा बोलना क्योंकर संभव है?

ये सब प्रश्न अवचेतन मनोविज्ञान से संबंधित हैं। विज्ञान इन बातों पर अभी मौन है। क्या यह संभव है कि एक शरीर में अनेक आत्माओं का अस्तित्व रह सके?

आशा है भविष्य में ऐसा समय अवश्य आयेगा, जब वैज्ञानिक इन रहस्यमयी मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को सुलझा देंगे। *

विश्वास

हम विश्वासों के बीच जन्म लेते हैं। विश्वास मनुष्य के मन में उसी प्रकार जन्म लेता है, जिस प्रकार वृक्ष पर फल।
—एमर्सन

जिस बात पर किसी को विश्वास नहीं होता, उसे प्रमाणित करना वतुतः अत्यंत कठिन है।
—जार्ज बर्नार्ड शा

कोई भी रूह खुदा की रजामंदी के बिना यकीन नहीं कर सकती। कोई भी इशारा या पीर उस इन्सान को यकीन नहीं दिला सकता, जो यकीन नहीं करना चाहता।
—कुरान

किसी दरिद्र का उद्धार मनुष्य का वह सर्वश्रेष्ठ कार्य है, जिसे वह यथाशक्ति कर सकता है। यह कुछ अंशों में ईश्वर और विधि का कार्य करने के समान है।
—पोप

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस नगरी का नाम भद्रावती था । वह रत्नाकर सागर के तट पर बसी थी; और सदैव मुक्तहस्त से रत्नों का उपहार बांटती रहती थी । इन रत्नों को प्राप्त करने दूर देशों के समुद्र-यात्री और प्रख्यात व्यापारी वहां आते-जाते रहते थे ।

भद्रावती के समुद्र-यात्री प्रख्यात व्यापारी थे । जगडूशाह जगतशाह उनका विरद था । उनके सहस्रों वाहन सागर में इधर-से-उधर माल ले जाते रहते थे; बंदरगाह के सहस्रों गोदामों में माल प्रतिदिन ठसाठस भरता और प्रतिदिन खाली होता रहता था ।

जगडूशाह ने ही इस भवन का निर्माण कराया था, जिसके खंडहर पर बैठकर मैं

इतिहास जगप्रख्यात था । यह मस्जिद उन्हीं की बनवायी हुई थी, जिसमें भद्रा जानेवाले व्यापारी मुसलमान मुवह नमाज पढ़ा करते थे । एक हिन्दू, और भी जैन, वह मस्जिद बनवाये—यह आश्च का-आश्चर्य था । परंतु खडंहर के प इसकी साक्षी दे रहे थे ।

× × ×

अंधकार में कोई एक नगर जल-न पर लहराता दिखाई दिया । इस नगर बड़ी गोदियों पर बड़े भीमकाय वाहन की तरह झूम रहे थे । लोग विचित्र पहने थे और कुछ अस्पष्ट भाषा बोलते

यह ईरान का होरमझ बंदर था। बंदर तक गुजरात के वाहन आते थे।

गुजराती कहानी

तीन लाख दीनार का एक पत्थर

जयभिक्खु

अस्त होते सूर्य की आभा में आस-पास के प्र देश का निरीक्षण कर रहा था । यह भवन आज तो खंडहर ही रह गया है; परंतु यह किसी मंदिर का नहीं, अपितु एक मस्जिद का खंडहर था ।

हिन्दू-कुलभूषण, जैनधर्म - शिरोमणि जगडूशाह के गगनचुंबी देवताओं और देव-विमान जैसे भव्य मंदिरों के सर्जन का

का माल भरकर जाते और उतारते । उत्त कर फिर नया माल भरकर चले जाते । की गोदी पर अनेक देशों के वाहन ल डालते थे ।

इस बंदर पर देश-देश के व्यापारि के गोदाम थे । केसरी रंग के झंडे गोदाम भद्रावती के व्यापारी-सम्राट जग सेठ जगडूशाह के थे । उनका एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुनीम जेतसिंह यहां का कार्य संभालता था। नीले रंग के झंडेवाले गोदाम खंभात के समुद्र-यात्री अमरुद्दीन शाहबुद्दीन के थे। सेठ अमरुद्दीन बड़े कुटुंब-कबीलेवाले थे। वे स्वयं यहीं रहते और व्यापार संभालते थे।

दोनों गुजराती व्यापारी-सम्राटों के सौ-सौ वाहन जहाजों के बेड़े यहां पड़े रहते थे और गुजरात की कीर्ति-पताका फहराया करते थे।

पिछले कुछ काल से यहां के इन दो महान व्यापारियों के बीच एक पत्थर के लिए विवाद चल रहा था। किसी एक वाहन में एक सुंदर शिला निकली थी। इसका रंग चंपा के फूल जैसा था। और कारीगर की टांकी स्पर्श करते ही अद्वितीय नक्काशी उभर उठे, ऐसी की मखमली मुलायमत थी उसमें।

दो-एक दिन में एक वाहन भद्रावती की ओर जानेवाला था। जगतसेठ जगडूशाह के मुनीम जेतसिंह ने इस पत्थर को वाहन में चढ़ा देने की आज्ञा दी। बंदर के अधिकारी भी उस पत्थर को देने के लिए सहमत थे। सबका मुंह मीठा हो जाये, बस इतनी उनकी मांग थी।

जेतसिंह के नौकर जब इस पत्थर को गोदी पर उठा ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे, तब अमरुद्दीन सेठ का गुमाश्ता वहां होकर गुजरा। उसने इस पत्थर को खिसकाते देखकर कहा—"यह पत्थर हमें ले जाना था। हमारे सेठ ने अभी बात की थी। खंभात जानेवाले वाहन की ही प्रतीक्षा में थे।"

मजदूरों ने कहा—"आप मुनीम जेतसिंहजी से मिलिये। हमें अपना काम करने दीजिये।"

गुमाश्ता इस उत्तर से उबल उठा और बोला—"अरे, खंभात के व्यापारी-सम्राट अमरुद्दीन सेठ को जानते हो कि नहीं? खबरदार, जो पत्थर हिलाया। रंग बेरंग हो जायेगा।"

मजदूर बोले—"अरे भाई, आपने भद्रावती के जगतसेठ जगडूशाह का नाम भी सुना होगा?"

इस तरह बात बढ़ गयी। थोड़ी देर में अमरुद्दीन सेठ वहां पहुंचे। उन्होंने कहा—"यह पत्थर हम खंभात ले जाने की सोच रहे थे और मस्जिद के मिंबर में जड़वाना चाहते थे। परंतु अब तुमने हाथ लगा दिया, इसलिए धर्म के काम में छीना-झपटी या जोर-जबरदस्ती से कुछ भी नहीं किया जा सकता। अतः अब बोली बोलिये, जो बढ़ेगा, वही इसे ले जायेगा।"

अमरुद्दीन सेठ के सामने कौन बोलता? मुनीम जेतसिंह को फौरन सूचना भेजी गयी। जेतसिंह दो घोड़ों के रथ में बैठकर वहां पहुंचे। उनका रोब-रुआब भारी था।

"बोलिये, हमारे एक हजार दीनार। आपको आगे बढ़ना है?" अमरुद्दीन सेठ ताव में आ गये।

आसपास एकत्र हुई मानव-मेदिनी भी जोश में आ गयी। जेतसिंह ने देखा कि अब यह पत्थर, पत्थर नहीं रहा, अपितु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेढ़ी की प्रतिष्ठा का विषय बन गया है; और व्यापारी के लिए प्रतिष्ठा ही धन है। उसने धीरे से कहा-"पंद्रह सौ दीनार हमारे।"

"हमारे दो हजार दीनार ! देखिये, बनिया-भाई की मूंछ नीची मत करियेगा।" अमरुद्दीन सेठ बोले। उन्होंने सोचा कि अब गुमाश्ता-मुनीम की शक्ति नहीं कि आगे बोली बढ़ा सके। आगे बोलेगा, तो सेठ बरतरफ ही कर देंगे। परंतु जेतसिंह बिना रुके आगे बढ़ा– "मेरे पच्चीस सौ।"

"हमारे तीन हजार !" अमरुद्दीन तनकर बोले, मानो जेतसिंह को चाबुक मार रहे हों।

"हमारे साढ़े तीन हजार।" जेतसिंह ने ठंडे कलेजे से कहा। बाहर से वह शांत दीख रहा था; परंतु भीतर ज्वालामुखी जाग उठा था। अब उससे लौट जाना संभव नहीं था, अब यह अपनी पेढ़ी और अपने सेठ की प्रतिष्ठा का प्रश्न हो गया था।

"हमारे चार हजार दीनार।"

"हमारे पांच।"

बात खूब रंग पर चढ़ गयी। दस-बीस-पच्चीस तक बोली गयी। अंत में जेतसिंह ने तीन लाख दीनार में यह पत्थर खरीद लिया। दूसरे दिन वाहन पर चढ़वा दिया।

सब बंदरों पर जगडूशाह की वाह-वाह होने लगी।

तीन लाख दीनार का पत्थर जिस जहाज में प्रवास पर निकला, उसी में मुनीम जेतसिंह भी कच्छ के लिए रवाना हुआ। उसका मन भारी था–उसे जगडूशाह ने वहां कमाने के लिए भेजा था, ऐसी [illegible] र्थक होड़ में पड़कर पेढ़ी को हानि चाने के लिए नहीं। और उसके हाथों पेढ़ी को अपार हानि हो गयी थी, वह जल्दी से जगडूशाह के पास जाना चाहता था, पहुंचकर पैरों में [illegible] रख, उस अपराध की क्षमा मांग चाहता था। खलासियों को जल्दी-वाहन चलाने को कहता जाता था। बुरी तरह घबराया हुआ था।

अंत में कच्छ का किनारा दिखाई दि भद्रावती नगरी की गगनचुंबी हर्ष की ध्वजाएं दृष्टिगोचर हुईं। जेतसिंह दिल धड़कने लगा कि अब क्या होगा!

जहाज से जब सब लोग उतर आये सेठ ने अपने मुनीम जेतसिंह को नहीं तो भीतर तहखाने में जाकर उसे आ लगायी। उसे वहां पाकर सेठ ने पूछा– क्यों बैठे हो ?"

"अब मुंह दिखाने लायक कहां रहा सेठ साहब ? मैं तो लाख के बारह हजा करनेवाला निकला। पर एक प्रार्थना है

"कैसी प्रार्थना ?" सेठजी के स्व चिढ़ थी।

"पहली प्रार्थना यह कि आपको मुझे भी कहना हो, एकांत में कहियेगा। अपनी भूल स्वीकार करता हूं। परंतु इस सार्वजनिक अपमान मुझे सूली-जैसा लगे होने को हो गया। मैं प्रतिष्ठा के झूठे ख में पड़ गया, झूठे अहंकार में आ गया जेतसिंह के शब्दों में पश्चात्ताप था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"लेकिन मुझे तो आज जो कहना है, वह सब प्रकट रूप में ही कहना है। चलो खड़े हो जाओ।" सेठ ने मुनीम की कलाई पकड़ी, मानो बाज ने चिड़िया पकड़ ली हो।

"एक बार क्षमा कर दीजिये। मैं और मेरे वंशज नौकरी करके आपकी क्षतिपूर्ति कर देंगे। कृपया सबके सामने मेरा फजीता न करें। मुझ अभिमानी को फिर कोई नौकरी में भी नहीं रखेगा।" जेतसिंह पीछे खिचता-खिचता गिड़गिड़ा रहा था।

"देख, कितने लोग तेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" सेठ ने जेतसिंह को खींचा।

जेतसिंह गरीब गाय बन गया था। मन में सोच रहा था कि लोग क्या कहेंगे—वह तो मियां भाई था, पर तू तो बनिये का बेटा ठहरा। किसी के कहने में कैसे आ गया। और चढ़ गया तो ठीक; परंतु छलांग क्यों मारी?

तभी सेठ और मुनीम नीचे उतर आये, सेठ ने नीचे उतरते ही अरब सिपाही को आवाज लगायी—"जमादार, रथ में से वह सब लाओ तो।"

क्या लाओ, रस्सा? रस्से से बांधकर जेतसिंह को क्या सरेबाजार खींचना है? लोगों को उस समय उदार जगडूशाह बड़े संकुचित-मन के लगे।

इतने में अरब सिपाही एक पोटली लेकर आया। उसे लेकर सेठ ने उसमें से एक लाल पगड़ी निकाली और वह जेतसिंह के सिर पर बांधी। एक मोती का मूल्यवान कंठा भी निकाला और खुद ने ही अपने हाथ से वह कंठा उसके गले में पहनाया और कहा—"जेतसिंह को आज से मैं अपनी सब पेढ़ियों का मुख्य मुनीम नियुक्त करता हूं। व्यापारी के लिए धन से आबरूप्रतिष्ठा ज्यादा आवश्यक है। इसने परदेश में जगडूशाह की पेढ़ी की इज्जत बढ़ायी है। आज जो लोग देश-देश से लाखों रुपये पेढ़ी में जमा कराने आते हैं, वे कहते हैं कि एक आंट के लिए जो तीन लाख दीनार फेंक दे, उसकी धन-संपत्ति कितनी होगी! चलो अब इस प्रतिष्ठा के पत्थर को रथ में रखो, एक ओर मैं बैठूंगा दूसरी ओर जेतसिंह। जेतसिंह ने आज मेरे नाम को जगप्रसिद्ध कर दिया है।" और जगडूशाह ने हाथ फैलाकर जेतसिंह को छाती से लगा लिया।

उस दिन निर्जीव पत्थर को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, वह अपूर्व थी। और इस पत्थर ने बिना लिखे जगडूशाह की जो प्रतिष्ठा लिख दी, वह अजर-अमर थी।

× × ×

इस तीन लाख दीनार के पत्थर को देखने के लिए लोग दूर-दूर से उलट पड़े। कुछ दिनों तक भद्रावती में भारी मेला-सा लगा रहा।

एक दिन एक ज्योतिषी पहुंचे और बोले—"सेठ, यह पत्थर सुलक्षणा है, इसमें धन है, ऐसा लगता है। तुड़वाकर देखिये।"

फिर एक दिन एक मुनि महाराज पहुंचे, बोले—"जगडूशाह, एक सुंदर देव-भवन का निर्माण करो, इस पत्थर का सिंहासन बनवाकर इस पर प्रभुमूर्ति प्रतिष्ठित कराओ।"

जितने आये, उतने कुछ-न-कुछ सलाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देते गये। परंतु जगडूशाह के हृदय में एक भी नहीं उतरी, वे मौन रहकर सबकी सुनते रहे।

एक दिन भोर में उन्होंने जमादार को बुलाया और कहा—"महान देव-भवन का निर्माण करनेवाले राजों को बुला लाओ। भद्रावती में एक मस्जिद बनवानी है।"

"मंदिर बनवाना है—यही कह रहे हैं न सेठ साहब!" अरब जमादार समझा कि सेठ ने शायद भूल से मंदिर के बदले मस्जिद कह दिया है।

"मियां, कुछ ऊंचा सुनने लगे हो क्या? मंदिर नहीं, मस्जिद बनवानी है। यहां आने-वाले दीनदार व्यापारी मुसलमानों को नमाज-बंदगी के लिए दिक्कत होती है न? देखते नहीं हो?"

"देखता हूं सेठ साहब, अच्छा अवसर देख किसी दिन मैं खुद आपसे इस विषय में बात करनेवाला ही था। परंतु जीभ उख-ड़ती ही नहीं थी, हिम्मत होती ही नहीं थी, धन मैं एकत्र कर लूंगा।"

"जमादार, खुदा की दौलत यहां क्या कम है? जाओ तुरंत ही खंभात जाओ, और सेठ अमरुद्दीन को बुला लाओ। उन्हें कहना कि भद्रावती के सेठ जगडूशाह मस्जिद बनवा रहे हैं। नीव खोदने का मुहूर्त करने के लिए वे जल्दी ही यहां पधारें। वह तीन लाख दीनारों का पत्थर उस [illegible] रोपण में लगाना है, धर्म के काम में [illegible] का दिल नहीं दुखाया जा सकता, न [illegible] का दिल बुझाया ही जाता है। पैसा [illegible] दूसरी ही चीज है। इसमें कोई बड़ा [illegible] नहीं है। अमरुद्दीन सेठ ने जिस पत्थर [illegible] मस्जिद के मिंबर के लिए चाहा था, [illegible] हम अन्यत्र कैसे उपयोग में ले सकते हैं।

कुछ ही दिनों बाद सेठ अमरुद्दीन [illegible] हाथ से मस्जिद की नींव पड़ गयी, [illegible] देखते-देखते मस्जिद तैयार हो गयी। [illegible] ही दीनदार मुसलमानों ने इस मस्जिद [illegible] खुदा की इबादत की।

उस ज्योतिषी और मुनि की (पत्थर [illegible] धन होने की) भविष्यवाणी भी सच निकली। मुसलमान व्यापारियों ने जगडूशाह के [illegible] ही धंधा करने का निश्चय किया। इस [illegible] जगडूशाह को तीन लाख दीनार का [illegible] पत्थर लाखों दीनार दे गया।

समय बीतता गया। कथनी रह गयी।

आज मैं मस्जिद के भग्नावशेष पर बैठा हुआ था, जहां से थोड़ी देर पहले ही बुलबुल उड़ गयी थी और एक उल्लू ने आकर आसन जमाया था। ये खंडहर जगडूशाह की बनवायी हुई "खीमली मस्जिद" के हैं।

—रूपांतरकार : कस्तूरमल बांठिया

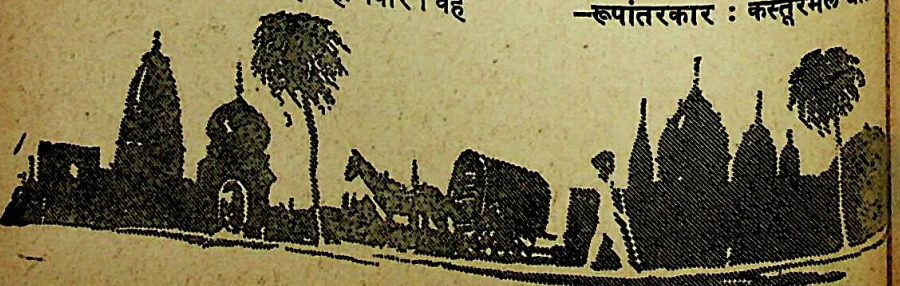

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

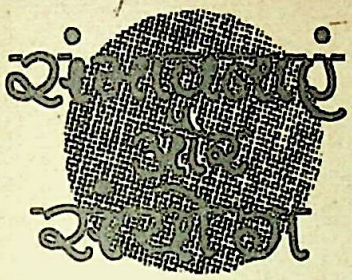

गणित की रोचकता कहानी बन सकती है—यह बात आप इस कहानी को पढ़कर ही जानेंगे ।

वीरेंद्र सक्सेना

उस रविवार को 'सन्डे क्लब' की बैठक में लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे । क्लब के प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी महोदय भी इतनी अच्छी उपस्थिति देखकर प्रसन्न दीख रहे थे। पिछले कई सप्ताह से उन्हें यह भारी शिकायत थी कि क्लब के सदस्यों की अभिरुचि क्लब के कार्यक्रमों में कम होती जा रही है और सदस्यगण कम संख्या में आते हैं, या आते भी हैं तो लेट आते हैं, जिससे कार्यक्रम में विघ्न पड़ता है । आज इस शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि लगभग सारे सदस्य समय से पूर्व आ गये थे और अब अतिथि की प्रतीक्षा कर रहे थे।

नियत समय पर अतिथि महोदय को साथ लिये डा० तिवारी ने प्रवेश किया। सब लोग अभिनंदन के लिए खड़े हो गये। प्रेसिडेंट ने उन्हें अपने पास की एक कुर्सी पर बिठाया, फिर स्वयं बैठ गये । जब हम सब अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये, तो डा०तिवारी ने अतिथि महोदय का अंग्रेजी में परिचय कराया —"आप हैं डा० बी० पी० अधिकारी । अभी हाल ही में पेरिस से डी० एस-सी० करके लौटे हैं और यहां कालेज में गणित-विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त होकर आये हैं । " इस औपचारिक परिचय के तुरंत बाद प्रेसिडेंट ने उनसे अपना व्याख्यान शुरू करने की प्रार्थना की ।

डा० अधिकारी उठकर खड़े हुए और मेज पर रखे डिब्बे में से एक चाक हाथ में लेकर कहने लगे —".....आज आपके क्लब के सदस्य डा० तिवारी ने मुझे यहां निमंत्रित करके जो सम्मान प्रदान किया है, पता नहीं, उसके मैं योग्य भी हूं या नहीं । मैं एक गणितज्ञ हूं और आप सब साहित्य, कला, इतिहास, दर्शन तथा शिक्षा आदि में रुचि रखते हैं ।..... गणित को एक नीरस एवं कठिन विषय माना जाता है, फिर भी आज मैं प्रयत्न करूंगा कि उसकी कुछ रोचक बातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरल भाषा में आपके समक्ष रख सकूं। साध्यों आदि की उपपत्तियों में न जाते हुए मैं इस समय उनमें से कुछ की केवल उपयोगिता पर प्रकाश डालूंगा, फिर भी यदि आप लोगों को कोई बात कहीं पर समझ न आये, तो मुझे टोक दें, मैं यथासंभव उसे स्पष्ट करने का प्रयास करूंगा। इतना कहकर उन्होंने श्यामपट पर शीर्षक लिखा—गणित के चमत्कार।

हम सब एक बार को चौंक पड़े, फिर हमारे चेहरे शर्म से झुक गये। अब तक जितने भी व्याख्यान—चाहे वे किसी भी विषय पर रहे हों—क्लब के सदस्यों द्वारा या बाहर से आमंत्रित अतिथियों द्वारा; सब अंग्रेजी में ही हुए थे। आज इस गणितज्ञ ने, जिसकी मातृभाषा बंगला थी और जिसने अपने विषय का अध्ययन और शोध विदेशी भाषाओं—अंग्रेजी तथा फ्रेंच में किया था, हिन्दी में बोलना शुरू करके, हम जन्मजात हिन्दी भाषी लोगों की आंखें खोल दी थीं। वैज्ञानिक विषयों अथवा गणित को समझने-समझाने के लिए हिन्दी माध्यम पीछे है, यह तथाकथित तथ्य अब जैसे अपना महत्व खो चुका था।.....

डा० अधिकारी ने कहा—"श्रद्धेय प्रधानजी तथा 'सन्डे क्लब' के अन्य सदस्यो, क्या आप अपनी सभा का कोई हिन्दी नाम नहीं रख सकते थे? बुरा न मानिये, यह नाम मुझे विदेशी लगा, इसीलिए यह बात कही। मैं फ्रांस में लगभग पांच वर्ष रहा हूं और देखा है कि वहां का सब काम उनकी अपनी भाषा फ्रेंच में ही होता है। अंग्रेजी वहां वही स्थान है, जो किसी अन्य विदेशी भाषा का। खैर, अब मैं अपनी बात पर आता हूं। आज मैं केवल गणित के कुछ चमत्कारों के बारे में आपको बताऊंगा और फिर, अब तो मिलते ही रहेंगे। इससे आप लोगों को कोई आपत्ति न होगी, तो मैं संस्था का सदस्य भी बन जाऊंगा।...

हम लोग डा० अधिकारी की बातों में रुचि लेने लगे। हां, हम लोगों को, कम-से-कम मैं अपनी जानता हूं कि उनकी शुरू की बातें बहुत अपमानजनक मालूम हुई। वह हैं, हम हिन्दी-प्रेमी नहीं? इन्हें क्या मालूम पहले हम लोगों का क्लब 'सटरडे क्लब' था, क्योंकि रविवार के बजाय पहले शनिवार को बैठक होती थी। तब नगर के कुछ लोगों ने उसके नाम का अनुवाद किया 'शनीचर संघ'! जरा सोचिये तो सही, हम 'बौद्धिक' व्यक्ति शनीचर हो गये! तब पहली बार एहसास हुआ कि क्या आवश्यकता है कि नाम दिन-विशेष पर ही रखा जाये 'वैचारिक संस्था' या इसी प्रकार का कोई अर्थ-पूर्ण नाम क्यों न रख लिया जाये?...

"देखिये," डा० अधिकारी कह रहे थे "कई बार देखने में आता है कि कुछ थोड़े से व्यक्तियों द्वारा देखी या सुनी कोई अद्भुत घटना कुछ घंटों में ही सारे नगर में फैल जाती है। अफवाह की यह तेज गति सचमुच में ही हमें अचंभित कर देती है, उलझन में डाल देती है। आखिर ऐसा कैसे हो जाता है? लीजिये, मैं आपको संक्षेप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका एक सरल स्पष्टीकरण देता हूं, जिसे सुनकर आप विस्मित हुए विना नहीं रहेंगे।

"मान लीजिये, पचास हजार की जन-संख्यावाले एक नगर में कोई व्यक्ति शाम के चार बजे आता है। अपने साथ वह एक चटपटी खबर लाता है। जिस परिवार में वह ठहरता है, उसके तीन सदस्यों को वह यह समाचार सुनाता है। खबर सुनाने में मान लीजिये, पंद्रह मिनिट लगते हैं। इस प्रकार सवा चार बजे इस खबर को चार व्यक्ति जान जाते हैं।

"अब, इन तीनों में से प्रत्येक इस सनसनी-खेज समाचार को तुरंत दूसरे तीन व्यक्तियों को सुनाता है। अर्थात् आधे घंटे में चार पहले तथा तीन गुणा तीन (३×३) नौ अन्य—कुल तेरह व्यक्ति जान लेते हैं। यही क्रम चलता जाता है और हम देखते हैं कि....." कहकर उन्होंने श्याम – पट पर लिखा –

समय	व्यक्ति
४–००	१
४–१५	१+३ =४
४–३०	४+(३ × ३) = १३
४–४५	१३+(३ × ९) = ४०
५–००	४०+(३ × २७) = १२१
५–१५	१२१+(३ × ८१) = ३६४
५–३०	३६४+(३ × २४३) =१०९३
५–४५	१०९३+(३ × ७२९) =३२८०
६–००	३२८०+(३ × २१८७) =९८४१
६–१५	९८४१+(३ × ६५६१)=२९५२४

".....और अगले पंद्रह मिनिटों के पूर्व ही इस खबर को सारा शहर जान जायेगा। इस प्रकार जो खबर चार बजे केवल एक व्यक्ति जानता था, साढ़े छः वजे संपूर्ण नगर में फैल जाती है।

"एक अन्य उदाहरण लीजिये," कहते हुए डा० अधिकारी ने डस्टर से ब्लैक बोर्ड साफ किया और चाक से सने हाथों को झाड़ते हुए बोले—" एक व्यक्ति किन्हीं दो व्यक्तियों को पत्र लिखता है और उनसे कहता है कि इस पत्र की नकल करके अन्य दो व्यक्तियों को भेज दो। अब देखिये, क्या चमत्कार होता है ? पहलेवाले श्रीमान तो दो पत्र लिखकर छुट्टी पा जाते हैं; पर दूसरी स्थिति में पत्रों की संख्या २×२=$२^{२}$=४ हो जाती है, तीसरी स्थिति में २×२×२=$२^{३}$=८ और यह संख्या बढ़ती ही जाती है। तीसवीं स्थिति में पत्रों की संख्या $२^{३०}$ =१,०७३,७४१,८२४ अर्थात् एक अरब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से भी अधिक हो जायेगी। प्रचार करने का कितना आसान ढंग है यह!" डा० अधिकारी बीच-बीच में आवश्यक बातें या संख्याएं ब्लैक बोर्ड पर लिखते भी जाते थे, जिससे उनकी बात हम लोगों की समझ में भलीभांति आ जाये। हम लोग दुगुने उत्साह एवं विस्मय से उनकी बातें सुन रहे थे।

डा० अधिकारी ने अब जेब से एक ५० पैसे का सिक्का निकाला और कहा—"देखिये, इस सिक्के को मैं मेज पर उछालता हूं। यह चित ही गिरे इसकी 'प्राबेबिलिटी' या संभावना कितनी है?"

शायद कोई भी इस प्रश्न का आशय न समझ सका। मैंने पूछा—"पहले आप यह बताइये कि यहां 'संभावना' से आपका अभिप्राय क्या है?"

"यह तो एक सरल बात है।" डा० अधिकारी ने स्पष्ट किया, "या तो यह चित गिरेगा या पट। इन दोनों में से केवल एक ही बात घटित होगी। इस प्रकार हम निम्न संबंध-सूत्र प्राप्त करते हैं:

$$\text{संभावना} = \frac{\text{अपेक्षित घटनाओं की संख्या}}{\text{कुल संभावित घटनाओं की संख्या}} = \frac{१}{२}$$

यह ½ सिक्के की चित पड़ने की संभावना दरसाता है,

"अर्थात् यदि हम इस सिक्के को १००० बार उछालें, तो लगभग ५०० बार चित गिरने की अपेक्षा कर सकते हैं।"

"एक सिक्के के साथ तो यह सरल [illegible] है," किसी ने बीच में टोका—"किसी [illegible] वस्तु के साथ इसे समझाइये।"

"ठीक है," डा० अधिकारी ने [illegible] "आइये, हम इस 'छक्के' को लें।" [illegible] छक्का निकालते हुए वे आगे बोले—"[illegible] आपने बच्चों को 'लूडो' या 'सांप-सी[illegible]' आदि खेल खेलते देखा होगा। यह घनाकार है और प्रत्येक भाग पर संख्याएं हैं—१ से ६ तक।

"अब पहले ही दांव में ६ आने की [illegible] संभावना है? कुल संभावनाएं कितनी हैं? क्योंकि घन के ६ चेहरे हैं, अतः १ से ६ तक कोई भी संख्या आ सकती है, लेकिन हम चाहते हैं ६ को। इस दशा में संभावना हुई ⅙।

"क्या किसी भी घटना की संभावना निकालना संभव है?" अकस्मात् एक सदस्य मेजर दिलजीत सिंह ने पूछा—"मेरा अनुमान है, खिड़की के सामने से गजरने वाला पहला व्यक्ति पुरुष होगा। मेरे [illegible] अनुमान की आपके हिसाब से संभावना कितनी है?"

क्लब की उस दिन की बैठक भी मेजर साहब के कैंट में स्थित बंगले में हो रही थी अतः उनके प्रश्न पूछने का सब पर विशेष प्रभाव पड़ा और सभी चौकन्ने हो गये। पर डा० अधिकारी ने उसी तत्परता से उत्तर दे दिया। कहा—"संभावना ½ है यदि हम यह मान लें कि संसार में स्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषों की संख्या बराबर है। तब या तो सामने से गुजरनेवाला पहला व्यक्ति पुरुष होगा या स्त्री। कुल दो ही संभावनाएं हैं और उनमें से हम एक में ही 'इंटरेस्टेड' हैं। अतः संभावना हुई $\frac{1}{2}$।"

"और प्रथम दो व्यक्ति पुरुष ही होंगे, इस घटना की संभावना कितनी है?" मेजर साहब को शायद पूर्ण संतोष नहीं हुआ था।

"इसके लिए हम विभिन्न संभावनाओं पर विचार करेंगे।" डा० अधिकारी उंगलियों पर गिन-गिनकर स्थिति समझाने लगे—"प्रथम; यह संभव है कि दोनों ही पुरुष हों।" दूसरे; पहला पुरुष हो सकता है, दूसरी स्त्री। तीसरे; पहली स्त्री हो सकती है, दूसरा पुरुष। चौथे; दोनों स्त्रियां हो सकती हैं। अतः चार प्रकार की विभिन्न संभावनाएं हैं और इनमें से केवल एक संभावना की हमें अपेक्षा है। अतः इस अपेक्षित घटना की संभावना १/४ हुई। यही आपके प्रश्न का उत्तर है।"

"यह तो समझ में आ गया। लेकिन यदि तीन पुरुषों का प्रश्न हो तो? हमारी खिड़की के सामने से गुजरनेवाले प्रथम तीन व्यक्ति लगातार पुरुष ही हों, इस घटना की 'प्रावेबिलिटी' क्या है?" मेजर साहब ने पुनः पूछा।

"लीजिये, इसे इस प्रकार समझिये, डा० अधिकारी पूरे आत्मविश्वास के स्वर में बोले—"ऊपर हम देख चुके हैं कि दो राहगीरों के लिए ४ विभिन्न संभावनाएं हैं। एक और राहगीर को जोड़ने से संभावनाएं

स्त्री की संभावना ?
पुरुष की संभावना

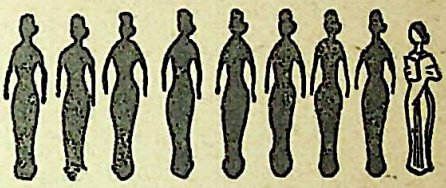

दुगुनी हो जाती हैं; क्योंकि दो राहगीरों की ४ संभावनाओं में से प्रत्येक में हम एक पुरुष या एक स्त्री जोड़ सकते हैं। अतः इस उदाहरण में ८ विभिन्न संभावनाएं हैं। स्पष्ट है कि संभावना की भिन्न १/८ होगी; क्योंकि ८ में से केवल एक ही संभावना की हमें अपेक्षा है। अतः इस उदाहरण में संभावना ज्ञात करने की विधि हुई : $\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}=\frac{1}{8}$। आपने देखा कि हर बार संभावना कम होती जाती है।"

"इस प्रकार १० राहगीरों के लिए तो संभावना काफी कम हो जायेगी।" अब मुझसे भी बोले बिना न रहा गया।

"हां।" डा० अधिकारी मुसकराये—" आपका मतलब यही है न, कि प्रथम दस राहगीर लगातार पुरुष ही हों, इसकी संभावना यह होगी — $\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}\times\frac{1}{2}=1/1024$ यदि आप इस घटना के घटित होने पर एक रुपये की शर्त लगाते हैं, तो मैं घटित नहीं होने पर १००० रुपये की शर्त लगा सकता हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"शर्त तो बड़ी लुभावनी है," मेरे मन में लोभ जगा—"मैं तो १००० रुपये के लिए एक रुपये से भी अधिक की शर्त लगा सकता हूं।"

"लेकिन यह मत भूलिये कि इस शर्त को जीतने की संभावना एक हजार चौबीस में से केवल एक है।"

"कोई परवाह नहीं। १००० रुपये के लिए एक रुपया लगाने के लिए मैं यहां तक तैयार हूं कि प्रथम १०० राहगीर पुरुष ही हों, तो भी शर्त लगाने में मुझे कोई एतराज नहीं।" मुझे न जाने क्या हो गया था।

"आप जानते हैं कि इस घटना के घटित होने की संभावना कितनी कम है?" 'कम' शब्द पर उन्होंने बहुत जोर दिया।

"संभवतः दस लाख में एक।"

"नहीं; इससे भी बहुत कम! दस लाख में एक तो २० पुरुष लगातार निकलने की संख्या होगी। १०० प्रथम राहगीर पुरुष ही हों, तो संभावना यह होगी—

१/१,०००,०००,०००

शायद आप विश्वास न करें। इसलिए मैं अपनी यह घड़ी आपको देता हूं। पर इतना मैं आपको बता दूं कि जीवन में संभावनाओं के साथ संयोग भी इस कदर जुड़े हुए हैं कि हम भौंचक रह जात हैं और हमारी सारी संभावनाएं जैसी-की-तैसी रखी रह जाती हैं।" कहते-कहते उनकी आंखें भर आयीं। मैं सकुचा गया, मना भी किया—घड़ी मुझे नहीं चाहिये, वह तो हंसी की बात थी; परंतु वे नहीं माने और अत्यंत आग्रह से वह घड़ी मुझे देने लगे। मैंने मन में सोचा हर्ज भी क्या है, शर्त भी तो उन्होंने स्वयं ही लगायी थी, मैंने तो कहा नहीं था।

संभावना और संयोग ! यदि वे स्वयं सच्चे हो जाते, तो कह देते मेरी संभावना सही निकली है ! और मैं सच्चा हो गया, तो कह दिया संयोग से ऐसा हो गया। गणित क्या हो गयी, सबको मूर्ख बनाने का ढंग हो गया। चलो, घड़ी मेरे भाई के काम आयेगी। (मेरा छोटा भाई, जो मुझे अत्यंत प्रिय था, इंजीनियरिंग में पढ़ रहा था—उससे मुझे बहुत-बहुत आशाएं, बड़ी-बड़ी संभावनाएं और ऊंची-ऊंची आकांक्षाएं थीं।) मन में ऐसा सोचकर और ऊपर से एकाध बार ना-नू करके मैंने घड़ी ले ली।

पर हाय रे भाग्य ! घर पर आया, तो फूटी किस्मत को पाया। खड़गपुर, आइ० आइ० टी०, जहां मेरा भाई पढ़ता था, से एक्सप्रेस तार आया था, वहां के प्रिंसिपल का—राजीव दुर्घटना का शिकार होगया—इस दुनिया से चला गया। मेरी सारी आशाएं, आकांक्षाएं, संभावनाएं मिट्टी में मिल गयीं।

बाद में मेरी समझ में आया, जिसे हम भाग्य या ईश्वर की इच्छा कहते हैं, वही शायद वैज्ञानिक का संयोग है, जिसे वश में करने या जिसके परिणाम के बारे में जानने में गणित अभी तक सफल नहीं हो पाया है। क्या कभी हो सकेगा ?

विवस्त्रा वाणी

एक दिन एक राजा की सभा में अनेक गुणी सज्जन जमा हुए। कोई राजा की स्तुति-गान कर रहा था, कोई वक्तृता दे रहा था, कोई अपना दुखड़ा रो रहा था; अनेक व्यक्ति कविता सुना रहे थे। राजा ध्यानमग्न होकर, सभी की बातें सुन रहे थे तथा सभी को पुरस्कृत कर रहे थे। सभा समाप्त हो जाने पर राजा ने देखा कि सभा के अंतिम कोने में जो ब्राह्मण बैठा हुआ है, वह चुपचाप उठकर चला जा रहा है। राजा ने उसे बुलाया। कहा—"आप यहां क्यों आये थे ?" ब्राह्मण बोला—"राजदर्शन कर पुण्य-संचय करने के लिए।" राजा ने प्रश्न किया—"सबने इतनी कविताएं सुनायीं, वक्तृताएं सुनायीं; आपने तो कुछ भी नहीं कहा। क्या आपके पास कहने के लिए कुछ भी नहीं है ?" कुछ क्षण मौन रहकर ब्राह्मण बोला—"महाराज ! दरिद्रता की अग्नि में मेरी अंतरवासिनी वाणी दग्ध हो चुकी है। वह विवस्त्रा है, इसीलिए राजसभा में वह आत्मप्रकाश नहीं कर सकी।" राजा ने ब्राह्मण की दरिद्रता दूर कर दी।

—'वनफूल' (अनुदान)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मराठी कहानी

द० मा० मिरासदार

इतिहास के मास्टर साहब छुट्टी पर थे। क्लास खाली थी। पीरियड शुरू हुए पांच मिनिट गुजर गये थे; पर अभी तक क्लास में कोई न आया था। यह देखकर हम लोग मारे खुशी के फूले न समा रहे थे। अब कोई मास्साब नहीं आने के। पिछले तीन-चार घंटों में अभ्यास करते-करते हाथ की उंगलियां दर्द करने लग गयी थीं। जी उकता-सा गया था। बस, इस पीरियड के बाद रेसेस। पेट में चूहे दौड़ रहे थे। कब रेसेस होती है और कब खाने के डिब्बे पर टूट पड़ते हैं, इसी की प्रतीक्षा हो रही थी।

मैं थैले से डिब्बा निकालकर देखने लगा। एक मठरी निकाली और मुंह में डाली। दूसरा कुछ काम न होने से डेस्क को तबले की तरह पीटने लगा। किसी ने पड़ोसी लड़के को एक घूंसा जमा दिया। कुछ लड़के मानीटर को जीभ निकाल-निकालकर चिढ़ाने लगे। दो-चार टेबल पर खड़े होकर सरकस करने लगे और कुछ ऊपर लगे पंखे को छूने का प्रयत्न करने लगे। एक हूं-हूं करने लगा, तो दूसरा याऽ हूऽऽ। धीरे-धीरे सारी क्लास में हंगामा-सा मच गया।

मठरी खाते-खाते मेरा ध्यान न गया। दायीं ओर पर जग्गू मुंह में पैर डाले, मुंह बजा रहा था। उसके खाकी में से लंगोट की छोर लटक रही थी। भी खूब बुद्धू है! हमेशा लंगोट पहने है और हनुमानजी-जैसी पूंछ निकाले रहता है। मैं तो उसे देख, हंसी से लोट हो जाता हूं। धीरे-से उठकर मैंने बढ़ाया और उसका लंगोट खींच लि

जग्गू चिल्ला पड़ा। उसका लंगोट हाथ में था।

सारी क्लास पेट पकड़कर हंस रही जग्गू लाल-पीला होने लगा। कोई बोल उठा—"बोल बजरंग बली की ज

"जग्गू की पूंछ।"

जग्गू रुआंसा होकर बोला—"देता है नहीं मेरा लंगोट? नहीं तो देख लूंगा

"क्या देख लेगा?" मैंने उसका हवा में नचाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मास्साब से कह दूंगा।" उसने लंगोट का एक छोर पकड़ा और खींचने लगा। मैं भी जोर से खींचने लगा। फिर क्या था, रस्सा-खिंचाई शुरू हो गयी। बाकी बचे लड़कों ने तालियां बजाकर उत्साह बढ़ाया। इस वजह से मुझे और उत्साह आया। झपटा-झपटी के चक्कर में सबने तालियां कब बंद कर दीं, मैं न जान सका। लड़के आगकर अपनी-अपनी जगह बैठने लगे। पर मेरा ध्यान ही न गया। मैंने लंगोट खींचते-खींचते सामने देखा "वाऽऽप रे!" सामने हमारे ड्राइंग टीचर मेज के पास खड़े थे।

उन्हें देखते ही मैंने हाथ का लंगोट एक-दम छोड़ दिया। जग्गू भीत से जा टकराया, उसके पांव पास बैठे हुए रामू की खोपड़ी से टकरा गये। दोनों एक साथ चिल्ला पड़े। ड्राइंग टीचर ने मुझे पास बुलाया। डरते-डरते मैं अपनी जगह से हिला और मेज की दिशा में धीरे-धीरे यात्रा करने लगा।

"बदमाश, चलते नहीं बनता तुझसे?" ड्राइंग टीचर, चिल्लाये। और फिर वे खुद ही मेरे पास आ गये। मेरा हाथ पकड़कर बोले—"क्या कर रहे थे?"

"कुछ नहीं, सर! यह जग्गू मुझसे कहने लगा कि देखो मेरा लंगोट कितना पक्का है। फट नहीं सकता। इसलिए मैंने खींच-कर देखा।" मैं नम्रता से बोला।

"नहीं, सर! इसने मेरा लंगोट बेकार में खींचा," जग्गू सिर से हाथ लगाये बोला—"सर, मैंने इसे कुछ भी नहीं कहा था।"

"अच्छा?"

ऐसा कहकर सर ने मेरी पीठ में एक घूंसा जमा दिया। पीठ दबाते हुए मैं बोला—"पर सर,....."

"क्या है?"

"अभी तो इतिहास का पीरियड है सर, ड्राइंग का नहीं।"

"मुझे पता है। आज शर्माजी छुट्टी पर हैं, उनकी जगह मैं आया हूं।" बोलने के चक्कर में सर ने मेरा हाथ छोड़ दिया। मैं भागते हुए अपनी जगह पर जा बैठा—"अच्छा हुआ सर, आप पीरियड में आ गये। अब ड्राइंग पढ़ाइये, इतिहास नहीं सर।"

क्लास में कानाफूसी होने लगी। कुछ लड़के कहने लगे कि कहानी सुनाइये। कुछ छुट्टी कर देने की बात कहने लगे। पर इतिहास नहीं चाहिये, इस बात पर सब सहमत थे।

मेज पर हाथ मारकर मास्टर साहब ने शांति स्थापित की। फिर वे कुर्सी में जम गये। कुछ देर सोच-विचार कर वे गुस्से में बोले—"पीरियड इतिहास का है न?"

"हां सर।" मैंने नम्रता से कहा।

"फिर? इतिहास गोल करने का विचार है? एं?"

१९६५ हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पर सर आप कैसे इतिहास पढ़ायेंगे ?"

सर का चेहरा लाल हो गया। वे झल्ला पड़े–"क्यों? मैं क्यों नहीं पढ़ा सकता इतिहास ?"

इतने में एक और लड़का उठकर बोला–"सर, आप इतिहास पढ़ा सकेंगे ?"

सर चिल्लाकर बोले–"याने तुम लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है ? हम क्या इतिहास पढ़े नहीं कभी ? हो किस होश में। हमारे जमाने में सारी हिस्ट्री रटनी पड़ी थी हमें।"

ड्राइंग के सर इतिहास भी जानते होंगे, यह बात हमारे लिए बिलकुल नयी-सी थी। उस पर भी ये सर हिस्ट्री भी रट लेते होंगे, याने कमाल हो गया। कारण, उनका चेहरा गवाही नहीं देता था। हां, वैसे वे दिखते बिलकुल नाना फडनवीस-जैसे थे। देखा जाये, तो गुस्सैल भी नामी थे। दूसरी क्लास के लड़के कहते थे कि वे चिढ़ने पर बिलकुल नादिरशाह जैसे दिखते हैं। हंसने पर शायद मोहम्मद तुगलक जैसे दिखते होंगे। हमारे इतिहास की पुस्तक में मोहम्मद तुगलक का एक भी चित्र नहीं है। इसलिए हम मिलाकर नहीं देख सकते।

"सर, आपके जमाने में स्कूल में इतिहास था ?" मैंने पूछा।

"था याने क्या ?" सर बरस पड़े। बोले–"था ही नहीं, तुम लोगों से भी कठिन कोर्स था। फिर भी हमें सब मुंहजबानी याद था। शिवाजी महाराज को औरंगजेब ने कैसे मार गिराया, संभाजी आगरे से कैसे भागा, अफजलखां ने कैसे शहिस्ते के कान काटे आदि, सब-का-सब रटा था।" मास्टर साहब का चेहरा खिल दिखाई दिया। हम लोगों को लगा कि बताने में कहीं कुछ गड़बड़ है। पर नाराज न हो जायें, इसलिए पूछ हिम्मत किसी ने न की।

"अच्छा हां ? क्या पढ़ा दिया है हास में ?" सर पूछने लगे।

मानिटर खड़ा हो गया –"पानी तीसरी लड़ाई हो गयी, सर।"

"फिर, वह तो हो गयी भाई, मूं समझा रहे हो ?"

"नहीं, सर !" मानिटर कहने पर सर ने उसे बोलने ही न दिया।

"नहीं सर क्या, फिर तुझे कहना लड़ाई हुई ही नही ? बुद्धू कहीं के लड़ाई हुई है। अभी तक मुझे याद है

"हो गयी यानी क्लास में हो गयी यानी उसकी पढ़ाई हो गयी, सर। केवल रिवीजन रहा है।"

"अच्छा-अच्छा ऐसा कहो न। पुस्तक !"

ड्राइंग टीचर तुरंत खड़े हो गये। इधर-उधर नजर घुमायी। कुछ देर देखते रहे –"रिवीजन है न ? फिर रखा है उसमें ! मैं सवाल पूछता हूं लोग जवाब दो। कुछ शंका हो, तो लेना।"

हम लोगों ने किताबें खोल लीं। पलटने लगे। यह देख, सर चिल्ला पड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो किताबें। हम लोग कभी खोलकर भी न देखते थे। सब फटाफट मुंहजबानी याद था। अच्छा बताओ—"इस लड़ाई को पानीपत की तीसरी लड़ाई क्यों कहते हैं?"

सारी क्लास चुप हो गयी। मैं सिर खुजाने लगा। पर उत्तर कुछ सूझता ही न था। शर्मा मास्टर साहब ने कभी इसका उत्तर बताया ही न था। कम-से-कम मेरे ध्यान से तो कभी भी नहीं बताया था। किस कारण से इसे तीसरी लड़ाई कहते हैं? मैं सोचने लगा—इसके पहले दो लड़ाइयां हुई होंगी। साफ ही है। उन दो के बिना यह तीसरी कैसे हो सकती है? तीसरी थी, इसलिए इसके पहले पहली और दूसरी लड़ाई हुई होगी। क्या चक्कर है, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। यही उत्तर दे देना चाहिये और क्या?

हाथ उठाकर मैंने वहीं उत्तर दे दिया। मास्टर साहब खुश हो गये।

"शाबाश! बिलकुल ठीक। पहले दो लड़ाई हो गयी थीं, इसलिए इसे तीसरी लड़ाई कहते हैं।"

रामू उठकर बोला—"पर सर, पहली दो लड़ाइयां किसमें हुईं?"

"किसमें हुईं?" सर ने पूछा। फिर वे हाथ की पुस्तक धीरे-से टटोलते हुए दिखाई दिये—"अरे, इतना भी नहीं जानते? कैसे पढ़ाई करते हो? हम लोगों को तो सारी बातें रटी हुई थीं।"

"किस-किसमें हुई सर?"

मास्टर साहब फिर किताब के पन्ने पलटते हुए दिखाई दिये।

"किस-किस में यानी क्या? हमारे और शत्रु के बीच। समझो कि हम सामने खड़े हैं, फिर शत्रु सामने ही खड़ा होता है। बस हो गयी लड़ाई शुरू। एक दफे नहीं, दो बार ऐसी लड़ाई हो चुकी है। इसलिए इस लड़ाई को तीसरी लड़ाई कहते हैं। समझ गये?"

यह प्रश्न सर ने इतने जोर से पूछा कि मैंने एकदम सिर हिला दिया। रामू बैठ गया। इतने में जग्गू खड़ा हो गया। जग्गू क्लास में स्कालर माना जाता था। वह हमेशा कुछ-न-कुछ पूछता ही रहता था। पागल है और क्या! वह बोला—"ऐसी बात नहीं है सर, पहली लड़ाई बाबर और लोदी में हुई थी, ऐसा किताब में लिखा है सर!"

सर किताब की लाइनों पर उंगली रखे जोर की आवाज में बोल पड़े—"बिलकुल ठीक। पुस्तक में वैसा लिखा ही होगा। कारण, लड़ाई वैसी ही हुई थी। बाबर और.....और वह क्या नाम है उसका? ढोढी कि लोढी?"

इतने में गंगू चश्मुद्दीन खड़ा हो गया। गंगू जग्गू जैसा ही घमंडी है। जब देखो, तब अपनी चलाता रहता है।

"ढोढी नहीं सर, लोदी।"

सर गुस्से में बोले—"फिर? लोदी ही तो कहा मैंने; कि और कुछ कहा?"

"पर कौन-सा लोदी सर?"

"कौन-सा लोदी?" मास्टर साहब फिर विचार में पड़े हुए दिखाई दिये। उन्होंने मेज का ड्रावर खोला और उसमें पुस्तक रख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

.....और 'सर बुरी तरह चकरा उठे !

दी। गर्दन नीची किये कुछ सोचने लगे—"जग्गू, कौन-सा लोदी ?"

"इब्राहीम लोदी, सर !" जग्गू तत्परता से बोल पड़ा।

"बिलकुल ठीक। वह इब्राहीम लोदी ही था। मैं जानता हूं। बचपन में हमने सब याद किया था। इब्राहीम मोदी का नाम बिलकुल जबान पर था।"

"मोदी नहीं लोदी, सर !" जग्गू ने फिर गुस्ताखी की। मुझे जग्गू पर बड़ा गुस्सा आया और सर भी चिढ़े हुए दिखाई दिये। उनका चेहरा फिर लाल दिखाई दिया। उन्होंने बड़ी-बड़ी आंखों से जग्गू की ओर देखा। जग्गू बैठ गया। घबराकर गंगू भी बैठ गया।

फिर मास्टर साहब ने लड़ाई का वर्णन विस्तारपूर्वक समझाया—"बाबर और इब्राहीम खान में पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई। यह पहली लड़ाई ही थी। फिर दो लड़ाइयां होनेवाली हैं। जानते थे। बाबर भी जानता था और हीम भी। दोनों की सेना एक दू सामने खड़ी थी। दोनों एक-दूसरे को समझ रहे थे। इसलिए दोनों में घ युद्ध हुआ। परिणाम यह हुआ कि सब घबरा गये। इस लड़ाई में एक प विजय और दूसरे पक्ष की पराजय इतिहास की पुस्तक पढ़ने पर ज्ञात हो कि उस लड़ाई में बाबर विजयी इससे यह बात भी ज्ञात होती है कि हीम खान की हार हुई। बाबर को का राज्य प्राप्त हुआ। अगर यह लड़ाई न होती, तो दूसरी और तीसरी इयां हो ही नहीं सकती थीं। इस इतिहास में पहली का विशेष महत्व अच्छा समझ गये न ? अब दूसरी इतने महत्व की नहीं है। इसलिए तीसरी लड़ाई की ओर आते हैं। यह लड़ाई किस-किस में हुई ?

क्लास के दस-बारह लोगों ने हाथ किये। इनमें से एक को सर ने पूछा—" तुम बताओ।"

मुंह में दो उंगलियां डालकर वह बो "भाऊ साहब और अब्दुल्ला में !"

"बिलकुल ठीक !" मास्टर साह सिर हिलाया।

"नहीं सर !" मैंने चिल्लाकर क "इतिहास के सर ने ऐसा नहीं बत उन्होंने बताया था कि तीसरी लड़ाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और गुलामों में हुई।"

"क्या बताया तुमने ?" सर ने पूछा।

"मराठे और गुलाम।"

"हां-हां, यह उत्तर भी ठीक है।" सर ने समर्थन किया।

"नहीं सर, भाऊ साहब पेशवा और अब्दुल्ला के बीच हुई थी।" पहलेवाला लड़का फिर बोल बैठा।

"अच्छा ? हां-हां, ठीक है उनमें भी हो सकती है।"

"अब्दुल्ला नहीं, अबदा....."

सर का चेहरा सकपकाया-सा दिखाई दिया। उन्होंने बारी-बारी से एक बार मेरी ओर और दूसरी बार उस लड़के की ओर देखा। कुछ देर नीची गर्दन किये रहे। ड्रावर की ओर निगाह गयी। काफी समय हो गया, पर वे कुछ न बोल सके। फिर किसी तरह बोले—"कोई भी ठीक नहीं बता सकता है ? बचपन में ये सारी बातें कंठस्थ थीं हमें। अच्छा, अब ऐसा करो, अपनी-अपनी पुस्तक खोलो और पढ़ो थोड़ा। कौन पढ़ेगा पहले ?"

दस-बारह हाथ ऊपर उठे। एक से मास्टर साहब ने पढ़ने को कहा। वह पढ़ने लगा। दिल्ली से भाऊ साहब कैसे निकले, उन्होंने कुंडापुरा कैसे पार किया और यमुना की ओर कैसे आये, आदि सब पढ़ गया। सर ने उसे नीचे बिठाया और दूसरे को पढ़ने को कहा। पर पहलेवाले ने पूछा—"सर, कुंडापुरा पार किया यानी क्या?"

अब की बार, सर गड़बड़ी में पड़ गये। उन्होंने गुस्से में हाथ टेबल पर पटके, चेहरा भीषण बनाया—"खूब हो तुम लोग ! कुंडापुरा भी नहीं जानते। फिर क्या पढ़ा अभी तक, खाक ! कुंडापुरा याने समझ गये न ?" सर ने हाथ से गेंद फेंकने जैसा अभिनय किया—"क्या समझे ? उसे पार किया। कुंडापुरा पार किया समझे ? बैठो नीचे। फिर कभी ऐसे फालतू प्रश्न न पूछना।"

कोने में बैठा लड़का उठकर पढ़ने लगा। दोनों सेनाओं की रसद कैसे खत्म हुई और आखिर में पानीपत का युद्ध कैसे शुरू हुआ, यह पढ़कर उसने विश्वास राव पेशवा को कैसे गोली लगी, यहां तक का वर्णन पढ़ डाला। फिर ड्राइंग टीचर ने उसे नीचे बैठाया और मेज पर घूंसा मारकर बोले—"अब तो आ गया समझ में ? या अभी भी कोरे ही हो ? पेशवा हाथी पर थे। सन-सनाती गोली आयी। आखिर गोली ही थी, लगे बिना कैसे रहती ? खलास ! पेशवा के दो टुकड़े हो गये। फिर आगे क्या हुआ जानते हो ? हां पढ़ो, आगे तुम पढ़ो।"

मास्टर साहब ने मुझसे पढ़ने को कह दिया। मैंने उस वक्त अपने डिब्बे में से निकालकर एक मठरी मुंह में डाली हुई थी। घबरा गया कि अब पोल खुल जायेगी। आखिर मैं पढ़ने लगा—".....इस घटना से मराठा राज्य में सर्वत्र आनंद-मंगल मनाया गया। सब जगह हाथी पर से मिठाई बांटी गयी। मराठा राज्य को नया राजा मिल गया।"

मास्टर साहब ने संतोष से सिर हिलाया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"समझ गये ! उसके गोली से मर जाने से मराठे राज्य में आनंद-मंगल मनाया गया। साफ ही है।"

सर और भी कुछ कहनेवाले थे; पर इतने में गंगू मेरी ओर इशारा करके बोला—"सर, इसने आगे का हिस्सा पढ़ा है।"

"क्या ?" सर झुंझला उठे।

"तीन-चार पन्ने आगे का पढ़ा है इसने, सर। बीच के पन्ने खा गया, सर।"

सर ने हाथ की किताब खोल ली। इधर-उधर पन्ने पलटे। उनका चेहरा लाल हो गया। एकदम उठ खड़े हुए और मेरे पास आ, कान पकड़कर बोले—"गधे कहीं के ! कहां ध्यान था तुम्हारा ? हम यहां विश्वास राव पेशवा पढ़ा रहे हैं और तू सवाई माधव राव तक पहुंच गया ? मूर्ख कहीं का, बैठ नीचे।"

फिर उन्होंने सबको किताबें बंद करने को कहा। वे बोर्ड की ओर बढ़े और नक्शा खींचने लगे—"लड़ाई कैसे-कैसे हुई, जरा ध्यान से समझ लो।"

ऐसा कहकर उन्होंने बोर्ड पर दो-चार गोले बनाये। बीच में एक नदी की रेखा खींची और उसके दोनों ओर कुछ बिंदु बनाये। बोर्ड भर जाने पर बोले—"अब तुम लोग ठीक तरह से समझे कि नहीं। इस तरफ मराठे, भाऊ साहब, और दूसरी ओर अब्दुल्ला। यह रहा तोपखाना—इस में घमासान युद्ध हुआ।"

इतने में घंटी बजी—टन्-टन्-टन्-

हम लोगों ने फौरन अपना-अपना संभाला। आधे से ऊपर लड़के खड़े थे। सर ने डांटकर फिर सबको किताब वापस देते हुए जोर से बोले—खड़े हो गये सब ? घंटी बजी नहीं कि जाने की जल्दी ! इसी लगन से अगर करो, तो क्या मर जाओगे ?"

खाने का डिब्बा हाथ में लेते हुए नम्रता से कहा—"सर, कल फिर इ का पीरियड है। कल फिर इसी तरह जन लीजिये। यानी सब याद हो सर।"

"हां, कल भी शायद मैं ही आऊंगा। होगा क्या ? भैंस के आगे बीन क्या फायदा।"

"फिर कल क्या पढ़ायेंगे सर ?"

दरवाजे की ओर बढ़ते हुए सर रता से बोले—"तुम्हारे आगे क्या पीटूं ? कुछ भी तो पढ़कर नहीं आते लोग ? क्यों उस पचड़े में पड़ते हो ? ड्राइंग ही अच्छा है। उसे ही पढ़ कल।"

ऐसा कहते हुए सर क्लास के निकल गये। रूपांतर : विजय

★

स्पेशलिस्ट और जनरल प्रैक्टिशनर में यही अंतर है कि स्पेशलिस्ट केवल अ में बैठकर ही रोगी को धैर्यपूर्वक रोग का कष्ट सहने का सबक देते हैं और प्रैक्टिशनर रोगी किसी भी समय चौगुनी फीस देकर घर बुला सकता है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत से दो पत्र

रावी

राजपुत्र,

मुझे तुम्हारी प्रेयसी होने का गौरव कभी प्राप्त नहीं हुआ, और अब जबकि अवसियों का रूप तुम्हारी आंखों से उतर चुका है और तुम दो बार आत्महत्या का भी प्रयत्न कर चुके हो, अपने लिए वैसे सौभाग्य की मुझे कोई आशा नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारी अपरिचिता, तुमसे बहुत दिनों से प्रेम करती हूं। अपने लिए इस 'अपरिचिता' शब्द का प्रयोग विश्वास के साथ कर रही हूं। तुम्हारी दृष्टि और कान के स्वभाव को जानती हूं। जब भी मैं तुम्हारे सामने आऊंगी, वे मुझे तुम्हारी अपरिचिता ही घोषित करेंगे। फिर भी यदि कभी तुम्हारा-मेरा साक्षात्कार हो सका, तो मैं तुम्हें याद दिलाने का प्रयत्न करूंगी कि हमारा पहला परिचय कब और किस रूप में हुआ था। तभी से मैं तुमसे प्रेम करती हूं, यद्यपि मेरा यह पत्र ही मेरे प्रेम का पहला, प्रत्यक्ष दीख पड़नेवाला व्यापार है।

दो बार आत्महत्या का प्रयत्न करके तुम विफल हो चुके हो। तुम्हारा कुशल निशानेबाज हाथ नौ इंच की दूरी से तुम्हारे गले में रिवाल्वर की गोली दागने में चूक गया; और बरसात की उमड़ी गोमती तुम्हें अपनी गोद में न सुला सकी। ये दोनों तुम्हारे लिए गहरे आश्चर्य की घटनाएं हुई हैं। संभव है, इनसे तुम्हारे मन में ईश्वर या अदृश्य के प्रति विश्वास और भय भी जाग उठा हो। लेकिन वह विश्वास और भय इतना सबल नहीं हो सकता कि वह तुम्हें आत्महत्या के तीसरे प्रयास से सदैव के लिए रोक ले। क्या यह संभव नहीं कि तुम तीसरी बार आत्महत्या का प्रयत्न करो और उसमें सफल हो जाओ?

स्वेच्छया आत्महत्या का मनुष्य को नैतिक रूप में अधिकार होना चाहिये; और जो राज्य-न्याय और लोक-हठ उसमें हस्तक्षेप करना चाहते हैं, वे मूर्खतापूर्ण और बर्बरतापूर्ण ही हो सकते हैं। तुम्हें आत्मघात से रोकने का मेरा कोई आग्रह नहीं है; फिर भी मैं चाहती हूं कि जिन कारणों से तुम यह करना चाहते हो, उन पर एक बार ठंडे मस्तिष्क से विचार कर लो। निस्संदेह मेरी इस चाह में मेरा एक शुद्ध स्वाभाविक स्वार्थ भी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल तक एक विस्तृत-समृद्ध राज्य के युवराज और उत्तराधिकारी तुम, आज भारतीय राज्य की एक साधारण, धनिक वर्ग की प्रजा मात्र रह गये हो। तुम्हारे साथ तुम्हारे स्वजनों द्वारा ही विश्वास-घात हुआ है। तुम्हारे राज्य को दो भागों में विभक्त कर, एक भाग पर एक अनधिकारी का अधिकार स्थापित न कर दिया गया होता, तो तुम्हें विधान द्वारा निश्चित दर के अनुसार जो दस लाख वार्षिक से भी कम की थैली मिली है, वह सत्रह लाख से कुछ ऊपर होती। मैं जानती हूं कि तुम्हें इस आर्थिक घाटे का मलाल नहीं है। पैसे के नीचे रहना तुमने अपनी महानता के विरुद्ध माना है। फिर तुम्हें क्षोभ किस बात का है? राज्यासन की ऊंचाई से नीचे उतरने का? वह भी नहीं, क्योंकि राज्यासन की अपेक्षा घोड़े की पीठ पर या राजधानी से दूर वन-ग्रामवासी निर्धन प्रजाजनों की झोंपड़ियों की टूटी खाट पर बैठकर तुमने कहीं अधिक गौरव का अनुभव किया है। हां, तुम्हारे साथ जो विश्वासघात और अन्याय हुआ है, उसका दुःख अवश्य किसी सीमा तक स्वाभाविक है। स्वजनों द्वारा विश्वासघात का घाव मनुष्य के हृदय में गहरा लगता है और उससे जो प्रतिशोध की ज्वाला उठती है, वह मानव-अनुभूति की एक सबसे कठिन ज्वाला है। लेकिन क्या वह ज्वाला तुम्हारे लिए इतनी असह्य है कि तुम उससे पराजित होकर आत्मघात के लिए पलायन कर चलो? ऐसा मानकर मैं तुम्हारे पौरुष का अपमान नहीं कर मैं अंतर्यामी होने का या तुम्हारे संग बसनेवाली छाया होने का दा कर सकती, फिर भी मेरा विश्वा मैंने तुम्हारे क्षोभ के गहनतम भाग लिया है, और वह भाग है तुम्हा राजकुमारी नंदिनी का अपहरण।

जिस व्यक्ति ने छल-कौशल द्वा कुमारी का अपहरण किया, वह आज (रियासती राजसत्ताओं के) भाग्यवि के बीच एक ऊंची कुर्सी पर जा है और अब अपना रिवाल्वर लेकर सामने पहुंचने का तुम्हारा मार्ग अवरुद्ध है। अपहृता राजकुमारी लंबा आत्मग्लानि और आंसुओं पत्र तुम्हारी तिजोरी में सुरक्षित है अतिसिद्ध बलात् अपहरण के पश्चा कीय न्यायालय में उस व्यक्ति के सा कुमारी की वैवाहिक स्वीकृति तुम्हा कोई सांत्वनाप्रद अर्थ नहीं रखती तुम्हारे रोष और क्षोभ को बढ़ाने सहायक हुई है। राजकुमारी के (अब पति) और अपने शत्रु का व में असफल (और अब असमर्थ) होक अपनी दुर्दम्य प्रतिशोध की कामना में एक दुर्भेद्य पर्वत आया देखते हो। शोध की आग मानव-अनुभूति की बड़ी आग है और जब उसके मार्ग में शता का अवरोध आ जाता है, तब उसकी सबसे बड़ी पीड़ा बन जाती है। अपने शत्रु का वध नहीं कर पाये,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहन का भी उसके बंदीगृह से जीवित या मृत रूप में उद्धार नहीं कर सके, यही तुम्हारा सबसे बड़ा क्षोभ है और इससे मुक्ति का मार्ग, आत्मघात से भिन्न दूसरा तुम्हें नही दिखाई देता ।

इस क्षोभ से मुक्ति का यदि कोई दूसरा मार्ग तुम्हारे सामने नहीं है, तो मैं इससे पीठ फेरने की सलाह तुम्हें नहीं दूंगी । लेकिन मैं चाहती हूं कि तुम अपने इस क्षोभ को पहले समझ लो ।

.....ने राजकुमारी का अपहरण क्यों किया ? क्या बिना किसी कारण के ही ? राजकुमारी के उस व्यक्ति के प्रति आकृष्ट होने का कोई प्रश्न नहीं था । वह तुम्हारे राजदरबार के एक अधीनस्थ कर्मचारी का पुत्र ही था । पुरुषत्व की दृष्टि से असुंदर भी और अयोग्य भी । तुम्हें याद होगा, उसकी बहन को अपने एक रंगमहल में रखकर तीन रातों के लिए तुमने उससे 'विवाह' किया था । प्रजाजन और अपने अधीन कर्मचारियों की तरुण पुत्रियों के साथ ऐसे सामाजिकता और वैधानिकता से मुक्त स्वल्पकालीन 'विवाह' करना, तुम्हारी रीति रहती आयी है और इस पर किसी का कोई प्रकट विरोध भी नहीं दीख पड़ा है । लेकिन इससे कुछ तरुणियों के पिताओं, भाइयों और स्वजनों के हृदय को कुछ ठेस लगी हो, तो कुछ अस्वाभाविक नहीं । क्या यह संभव नहीं कि उस व्यक्ति को तुम्हारे उस व्यापार से कोई गहरी चोट लगी हो और उसने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित

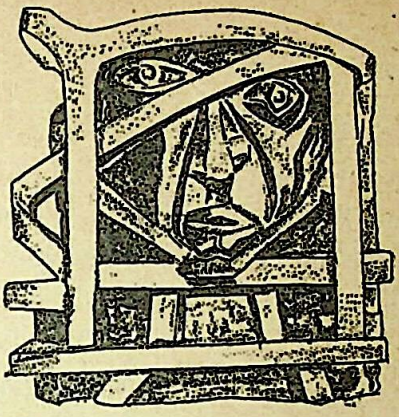

विवशता की कैद में !

होकर ही यह दुस्साहस किया हो ? तुमने अभी तक यदि यह समझा है कि अपनी सम्मान और स्वाभिमान की भावनाओं पर चोट मानने की प्रवृत्ति केवल बड़े लोगों में ही है और छोटों में नहीं है, तो अब अपनी उस धारणा में संभवतः कुछ परिवर्तन कर सकते हो । मेरे इस संकेत का अभिप्राय यह कभी नहीं है कि मैं उस व्यक्ति के कार्य को किसी भी सीमा में उचित ठहरा रही हूं; पर उसके प्रतिशोध के इस रूप को क्षम्य बताना चाहती हूं । निस्संदेह उसका यह प्रतिकार उसकी सीमा से बहुत आगे बढ़ा हुआ है और उसका अपराध तुम्हारे अपराध से—यदि उसे भी तुम अपराध कह लेने दो—कहीं अधिक बड़ा है । फिर भी इस शोध और प्रतिशोध की शृंखला में तुम्हारे सोचने के लिए कुछ सामग्री है ।

मैं चाहती हूं कि तुम जान लो कि यदि उस व्यक्ति का तुम वध कर सको, तो उसे इससे तुम्हारे संतोष के अनुकूल कितनी पीड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिल जायेगी और उससे तुम्हारा कितना समाधान हो जायेगा। उसे मारकर क्या तुम उसकी पीड़ा, ग्लानि और पश्चात्ताप को देख सकोगे? क्या उसे सचमुच तुम्हारी इच्छा-भर यथेष्ट पीड़ा और पश्चताप का दंड मिल जायेगा? इस विषय में तुम निश्चित नहीं हो सकते। और स्वयं का वध कर क्या तुम उस क्षोभ से मुक्त हो जाओगे? क्या तुम जानते हो कि मृत्यु के साथ ही तुम्हें विस्मृति या सुख-निद्रा की प्राप्ति हो जायेगी? जिस अपमान और कुल-गत कलंक की कल्पना से तुम क्षुब्ध हो, क्या यह संभव नहीं कि वह तुम्हारे अगाध आंतरिक व्यक्तित्व के आगे एक तुच्छ, केवल लोकमत और लोकभय द्वारा पोषित कल्पना-मात्र हो? और फिर क्या तुम निश्चयपूर्वक विश्वास कर सकते हो कि तुम्हारी बहन आज भी उसी पीड़ा और ग्लानि की अग्नि में झुलस रही है और उसकी धारणा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है? क्या यह संभव नहीं कि वह अब सच-मुच अपनी नयी परिस्थिति में सुखी या कम-से-कम सुस्थिर रहने लगी हो और उसे अब तुम्हारी ऐसी क्षोभ-मूलक सहानुभूति की आवश्यकता न रह गयी हो?

मैं चाहती हूं कि तुम इन प्रश्नों पर एक बार ठंडे मस्तिष्क से विचार कर सको। करना चाहो, तो मैं इस संबंध की कुछ और बातें साक्षी और प्रमाण सहित तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर सकती हूं। न करो, तो भी इनके लिए मेरा बहुत आग्रह नहीं है। मेरा प्रमुख आग्रह इस बात का है कि अपनी आत्महत्या के किसी अगले में सफल होने के पहले अपनी विशाल राशि का उपयुक्त प्रबंध कर दो। पास स्वर्ण और रत्नों की जितनी संपत्ति है, उतनी तुमसे भी बड़े दारों के पास प्रायः न निकलेगी। है कि तुम्हारी दृष्टि से इस समय कोई मूल्य न हो; लेकिन भूखी दुनि पेट भरने का साधन तो इस युग में तुम्हारे लिए इस समय जो मिट्टी संसार के सहस्रों प्राणियों के लिए प्राण है। उसे अनुपयुक्त या दुरुपयुक्त लिए छोड़ जाने का तुम्हारा कोई नहीं है। तुमने उचित प्रबंध न कि वह संपत्ति कुछ अनधिकारी हाथों में कर व्यर्थ नष्ट होगी और कुछ धरती में समा जायेगी। तुम्हारे पिता की मृ अभी आठ महीने भी पूरे नहीं हुए हैं उनके प्रिय कर्तव्यों को निभाने का तुम अपने ऊपर नहीं मानोगे? संपत्ति के सदुपयोग की व्यवस्था हर से तुम्हारा कर्तव्य है और जब तुम उसे में उठाओगे, तब देखोगे कि उसमें तु मानसिक शांति का भी मार्ग है।

मैं तुम्हारे सुख के लिए कुछ कर हूं—शायद बहुत कुछ कर सकती हूं। उससे पहले अपने स्वार्थ की बात कह मुझे इस समय अपने एक विशेष कार्य के दस लाख रुपये की आवश्यकता है। तुमसे मांगती हूं। तुम्हारे लिए यह रकम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं है। तुम अपनी संपत्ति में से सुगमता-पूर्वक एक करोड़ का दान कर सकते हो। और फिर मैं जो मांग रही हूं, वह केवल दान ही नहीं है, सौदा भी है। यदि तुम मेरी यह मांग पूरी कर दोगे, तो दस घंटों की एक रात-भर के लिए तुम्हें रीना के अनिंद्य रूप और अक्षत यौवन का पूरा सत्कार प्राप्त होगा। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हें अब उसकी दरकार नहीं होगी ? तुम्हारे मन में ऐसा संदेह होना स्वाभाविक है, जबकि तुमने अभी तक नारी के उस निम्न वर्ग का ही स्पर्श पाया है, जिसका रूप छीजने और यौवन ढलने के लिए विवश है और जिसकी संसार में बहुलता है। नारी पुरुष की मांसल उत्तेजना का आहार ही नहीं है, उसके शारीरिक और आत्मिक पुरुषत्व की पोषिका और जीवन की गति-दात्री भी है।

और तुम्हारा वह क्षोभ ! क्या वह सचमुच कोई टिकनेवाली वस्तु है ? तुम चाहोगे, तो जिस वर्ग के द्वारा तुम अपने आपको अपमानित अनुभव करते हो, उसके चुने हुए प्रधान व्यक्ति और वह व्यक्ति भी जिस पर तुम्हारा सबसे उग्र, खौलता हुआ रोष है—वे सभी तुम्हारे पैरों पर सिर रखकर तुम्हारे सामने अपना हृदय खोलने के लिए तुम्हारे द्वार पर आ सकते हैं। तुम्हारी इस पत्र-प्रेषिका रीना के आदेश में इतना बल है। और क्या यह संभव नहीं कि उनका विनयावनत, खुला हुआ हृदय देख लेने पर तुम उन्हें बहुत कुछ क्षम्य पाओ और इस प्रकार अपने रोष-क्षोभ के दुर्वह भार से सहज मुक्ति पा जाओ ?

उन्मुक्त यौवन

अंत में, इस पत्र के प्रारंभिक शब्दों को दोहराकर मैं इसे समाप्त करूंगी; क्योंकि अब तुम उन्हें मेरे अभीष्ट अर्थ में देख सकोगे। मुझे तुम्हारी प्रेयसी होने का गौरव कभी प्राप्त नहीं हुआ और अपने लिए वैसे सौभाग्य की मुझे कोई आशा भी नहीं है।

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आशा इसलिए नहीं है कि उसके लिए आवश्यक अवकाश मेरे पास नहीं है—मेरा समय मेरे कार्यभार से घिरा हुआ है और इसलिए भी कि वैसी मेरी कोई बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा भी नहीं है। फिर भी यह सच है कि मैं तुमसे बहुत दिनों से—जबसे मैंने तुम्हें देखा है—प्रेम करती हूं और उस कोटि का प्रेम करती हूं, जिस तक तुम्हारी कलतक की कोई प्रेयसी नहीं पहुंच सकती। मेरे प्रेमियों, प्रशंसकों और प्रशंसितों की भी संख्या बड़ी है; किंतु तुम्हारे भीतर के पुरुषत्व को झांककर ही मैं कह रही हूं कि आज के युवा वर्ग में तुम्हारा जैसा पुरुष मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं आया है। तुम्हारी प्रेयसी बनने की कामना, मेरी बहुत बड़ी आकांक्षा न सही; किंतु तुम्हारे पौरुष के हाथों एक बार आत्म-समर्पण की चाह तो मेरी एक मधुर लालसा है ही। तुम्हारे सत्कार में मेरी लालसा की भी तृप्ति है, फिर भी इसके लिए तुमसे एक धन-राशि की मांग कर रही हूं। इस पर तुमने कोई छोटी बात न सोची और हमारा मिलन संभव हुआ, तो इसका रहस्य भी तुम जान लोगे।

मेरी खुली बाहों का देखूं, तुम क्या उत्तर दोगे।

तुम्हारी, रीना

(२)

प्रिय रीना,

तुम्हारे पत्र ने मेरे मन में एक सबल कुतूहल जगा दिया है और उसमें मुझे अपने हताश जीवन के लिए आशा की एक [illegible] भी दिखाई दी है। मुझे आश्चर्य है कि [illegible] मेरे बारे में इतना सब कैसे जानती [illegible] तुम्हार नाम मेरे लिए नया ही लगत[illegible]

मेरी बहन की वर्तमान मनोदशा [illegible] तुम मुझे प्रमाण-पूर्वक, विश्वास-योग्य [illegible] दे सको और मेरे शत्रुओं को मेरे [illegible] प्रस्तुत कर सको, तो शायद मेरा यह [illegible] घातक क्षोभ दूर हो सकता है। तुम [illegible] कर सको, तो मैं तुम्हारा सचमुच [illegible] कृतज्ञ हूंगा।

अपने रूप और यौवन के सत्कार [illegible] प्रस्ताव तुमने रखा है, कह नहीं [illegible] उसका कितना स्वाद मैं ले सकूंगा। [illegible] मनोदशा उसके लिए स्वस्थ नहीं है। [illegible] घंटों की एक रात के लिए दस लाख [illegible] तुम्हारी मांग मेरी समझ में नहीं आ[illegible] इतना महंगा सौदा मैंने अपनी वैसी [illegible] दिनों में भी कभी नहीं किया; फिर [illegible] संभव है, तुम्हारे साथ करने के लिए [illegible] हो जाऊं—मेरे लिए वह सुगम है।

मेरा-तुम्हारा परिचय कब हुआ [illegible] स्मृति दूर-दूर तक दौड़कर शीघ्र ही [illegible] लाना चाहती है। कोई बाधा न हो [illegible] तुरंत ही लिखना।

यदि तुमसे मुझे अभीष्ट मानसिक [illegible] मिल सकी, तो दस लाख की तुम्[illegible] मांग पूरी करने में मुझे प्रसन्नता होग[illegible] तुम्हारे प्रेम और सहारे का चिर आन[illegible] भी हो सकूंगा।

तुम्हारा, रमे[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत, आग और जिंदगी

घोर दरिद्रता में भी अभिजात-कुलीन स्वाभिमान की रक्षा के लिए जीवन की अपेक्षा मरण का वरण करने को तत्पर एक वयोवृद्ध व्यक्ति की मर्मस्पर्शी कथा। आर्नाल्ड बेनेटे की रत्न-गर्भा लेखनी से प्रसूत अमरीकी कहानी 'डेथ, फायर एंड लाइफ' का यह रूपांतर पहली बार हिन्दी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। लेखक के सचित्र परिचय के लिए कृपया पृष्ठ ११७ देखें।

रूपांतरकार : बिंदु फीचर्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी सुबह पूरी तरह नहीं हो पायी थी। ठंड के दिन थे। मिस्टर करटेंटी बिस्तर में जागे हुए पड़े थे और अपने क्रूर भविष्य के बारे में सोच रहे थे। वे लांगशा के एक अत्यंत सम्माननीय परिवार में पैदा हुए थे और भले ही आज वे आर्थिक दृष्टि से सम्माननीय नहीं थे; लेकिन अन्य कई दृष्टियों से उन्हें अवश्य ही सम्मान दिया जाता था—या कहिये, दिया जाना चाहिये था। जान-बूझकर कभी उन्होंने पाप नहीं किया, कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। इसीलिए वे किसी भी व्यक्ति के सामने शान से खड़े होकर बातें कर सकते थे। स्वभाव से वह अत्यंत गर्वीले थे। किसी पर निर्भर रहने की नाम मात्र की लाचारी भी उन्हें पीड़ित कर जाती। अपने परिचितों व रिश्तेदारों में वे हमेशा 'मिस्टर' कहकर ही पुकारे जाते थे। एक बार उनके एक अधिकारी ने बिना 'मिस्टर' लगाये, उन्हें मात्र 'करटेंटी' कहकर पुकार लिया। इस पर मामला इतना बढ़ा कि मिस्टर करटेंटी को नोकरी छोड़नी पड़ी। इस नुक्सान का उन्हें लेशमात्र भी दुःख नहीं हुआ; क्योंकि उनके अनुसार यदि नौकरी न छोड़ी जाती, तो यह बेवकूफी होती। नौकरी छोड़कर वे और भी ज्यादा गर्वीले हो गये। यहां तक कि कुछ लोग उन्हें झगड़ालू कहने लगे।

कुछ दिनों बाद उन्होंने एक नयी नौकरी प्राप्त कर ली; किंतु संयोगवश उनके अधिकारी की मृत्यु हो गयी और उन्हें फिर से नौकरी छोड़नी पड़ी। अब इसे एक साल गुजर चुका था और तब से आज वेकार थे। साठ वर्ष की उम्र हो चु और ऐसा लगता था, मानो यह इतनी ज्यादा उम्र के लिए उन्हें दो राना चाहता हो। उनके पास न कोई थी, न कोई स्वतंत्र धंधा ही। फिर ऐसा रुख क्यों न अपनाता? इसके जब वे नौकरी पर थे, तब भी उन्हों में कोई शानदार योग्यता नहीं दिखा प्रायः उनके पास इस तरह के का करते—चौकीदार, चपरासी, टाइम इन्स्पेक्टर इत्यादि। अच्छे खान आने के बावजूद ऐसे पद मिलना ही सबसे बड़ा कारण था कि मिस्टर इतने गर्वीले हो गये थे।

इस गर्व को छिपा सकने में वे थे। अपने जवांई जिम क्रोदर के साथ गर्व के साथ पेश आते। जिम को यह नापसंद था; लेकिन वह चुप रह वह लांगशा की खदानों में मजदूर मिस्टर करटेंटी के मतानुसार उन हैरिएट ने जिम के साथ विवाह करके मुच ही भूल की थी। कहां जिम और मिस्टर करटेंटी का शानदार खान मिस्टर करटेंटी को गलतफहमी थी उन्होंने अपने मन में पनपे हुए इन को आज तक जिन और हैरिएट से रखा है।

एक के बाद दूसरा सप्ताह व्यतीत और उन्हें जिम व हैरिएट से अधिक घृणा अनुभव होती; क्योंकि ये दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर करटेंटी के इन बुरे दिनों में उनकी सहायता कर रहे थे। जिम व हैरिएट के सहायता करने के तरीके इतने फूहड़ नहीं थे कि मिस्टर करटेंटी का गर्व किसी प्रकार आहत होता हो। आज तक कभी उन्होंने नकद पूंजी से सहायता करने की भूल नहीं की थी। ऐसी सिर्फ एक भूल से दोनों कुटुंबों की बोलचाल हमेशा के लिए बंद हो सकती थी। सच पूछा जाये, तो मिस्टर करटेंटी को इन सहायताओं का कोई अहसास होने ही नहीं दिया जाता था। होता यह था कि जब भी मिस्टर करटेंटी का आखिरी सिक्का खत्म हो जाता, उनकी पत्नी दस शिलिंग या उसके लगभग कोई राशि, इस प्रकार पेश करती, मानो क्षमायाचना कर रही हो। मिस्टर करटेंटी अच्छे राजनीतिज्ञ तो नहीं थे; लेकिन वे कभी यह पूछने की भूल न करते कि अकसर ही ये शिलिंग आ कहां से जाते हैं।

अब मिस्टर करटेंटी के सामने एक विकटता मुंह बाये आ खड़ी हुई थी। उनकी पत्नी ने सूचित किया था कि जिम ओर हैरिएट की तरफ से एक (विनम्र) प्रस्ताव आया है कि यदि मिस्टर करटेंटी उन लोगों के साथ रहना पसंद करें, तो वे सपरिवार लांगशा आ जायें। जैसा कि मिस्टर करटेंटी का स्वभाव था, प्रस्ताव स्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता था; परंतु धीरे-धीरे उन्हें यह बात बहुत स्पष्टता के साथ समझा दी गयी थी कि या तो वे लांगशा चले जायें या फिर अकेले अपनी भुखमरी में सड़ते रहें। मिस्टर करटेंटी ने कसम खायी थी कि चाहे जो हो जाये, वे अपने जवांई के घर में नहीं रह सकते। यह सचमुच एक कल्पनातीत बात थी कि छोटी-से-छोटी आवश्यकताओं के लिए भी मिस्टर करटेंटी को अपनी पुत्री के आसरे पर रहना पड़े। यह फैसला उन्होंने अपनी पत्नी को सुना दिया। अगले ही क्षण पत्नी की ओर से जो उत्तर मिला, उसने मिस्टर करटेंटी को काफी दुखी कर दिया।

पत्नी ने कहा—"मेरी बला से! आप जायें, चाहे न जायें; मैं तो जरूर जाऊंगी।"

ऐसा उत्तर देने का एक ही उद्देश्य हो सकता था कि मिस्टर करटेंटी मजबूरी में उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लें। हुंह! जैसे सचमुच मिस्टर करटेंटी को मजबूर किया जा सकता हो!

दो दिन पहले (बुधवार को) उनकी पत्नी घोषणा कर चुकी थी कि वह इस सप्ताह के आखिरी दिन (शनिवार को) यहां से विदा लेकर लांगशा चली जायेगी। आज शुक्रवार था। कुछ घंटों बाद यह कटु विडंबना साकार होने जा रही थी। जिंदगी-भर मिस्टर करटेंटी ने अपने भविष्य के बारे में इतनी चिंता की थी कि रिश्तेदारों में अक्सर उनका मजाक उड़ाया जाता था। उतनी चिंता करने के बावजूद आज भविष्य की कालिमा कितनी गहन थी। लोगों ने उन्हें कंजूस घोषित कर रखा था। मिस्टर करटेंटी का विश्वास था कि वे कंजूस नहीं हैं। भविष्य के प्रति सावधानी बरतना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंजूसी नहीं कही जा सकती। मिस्टर करटेंटी ने डाकखाने में बचत खाता खोल रखा है, यह सबको ज्ञात था। इस खाते के लिए लोगों ने मिस्टर करटेंटी को दोष नहीं दिया था, किंतु उनमें खाते की चर्चा अक्सर होती रहती। मिस्टर करटेंटी सबको बता-बताकर थक गये थे कि उनका ऐसा कोई खाता नहीं है, लेकिन सब जानते थे कि उनका खाता है।

उनके कानों में पफपफ-पफपफ की आवाज पड़ी। क्लेहेंगर के भाप से चलनेवाले छापेखाने के इंजिन की खांसी-जैसी अनियमित आवाज मिस्टर करटेंटी के लिए घड़ी का काम करती थी। समय जानने का कोई और तरीका मिस्टर करटेंटी के पास नहीं था। यह छापखाना डक बैंक से शुरू होकर गली के पिछवाड़े तक फैला हुआ था। पफपफ-पफपफ के तुरंत बाद वर्सले नगर के विभिन्न हिस्सों में अनेक भोंपुओं की आवाजें गूंज उठीं। सात बज चुके थे।

मिस्टर करटेंटी अपनी पत्नी की बगल से हटकर बिस्तर में से बाहर निकल आये और बेहद नाराजगी के साथ कपड़े पहनने लगे। उनका हर काम अब नाराजगी के साथ होता था। यहां तक कि काम की तलाश करते समय भी उनके मन में नाराजगी का धुआं घुटता रहता। उनकी अनेक नाराजगियों में से एक यह भी थी कि उन्हें काम की तलाश करनी पड़ती है, जबकि काम को उनकी तलाश करनी चाहिये थी। यह उनकी स्वभावगत आवश्यकता थी कि हर समय उनके पास फालतू समय करे। वे सोचते थे कि फालतू समय पास होता है, जो सम्मानित हैं। जल्दबाजी करनी पड़ती है, वे निम्न से दलित वर्ग के सदस्य होते हैं।

अधिकांश कपड़े उन्होंने अंधेरे में तत्पश्चात् सिरहाने रखी मोमबत्ती गायी। एक बहुत पुराने, भारी-से उन्होंने जूते साफ किये, फिर उन पर लगायी। अथवा कहिये, जूतों बनाये हुए अनेक पैबंदों पर पालिश

वह छोटा-सा, फूहड़ कमरा। मिस्टर करटेंटी को अपना घर कहना था। एक जमाना था, जब मिस्टर ने इतना बड़ा घर किराये पर लिया था कि एक कमरे से दूसरे कमरे में जाइये अथवा एक सीढ़ी उतरकर सीढ़ी चढ़ जाइये और फिर भी आप ही-घर में बने रहें। अधिकांश फर्नीचर तथा अन्य चीजें बिक जाने के बाद इस से कमरे में अब बचा ही क्या था? एक स्टोव, जिस पर उनकी पत्नी (तथाकथित) खाना पकाया करती। इस औरत के पास एक लंबा-चौड़ा घर होता था।

बहुत सम्मानित ढंग से मिस्टर ने अपनी सहनशीला युवती पत्नी से (जिसका स्वर शिकायत करते समय यम हो जाता था) अपने आपको काफी और परेशान महसूस किया। युवती से उसे क्या कहा जाता (क्योंकि वह एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मां थी !); लेकिन कम-उम्र अवश्य कहा जा सकता था। शादी के समय उस की उम्र केवल उन्नीस वर्ष की थी, जब कि मिस्टर करटेंटी थे तीस के। अतः चाहे जितने वर्ष बीत जायें, मिस्टर करटेंटी के लिए उनकी पत्नी कम-उम्र ही रहने-वाली थी। भले ही वह पचास वर्ष की हो जाये। (इसमें अधिक समय नहीं था।) किसी तटस्थ व्यक्ति से पूछा जाता, तो वह उसे पचास से ज्यादा की ही बताता। अभावों में वह बिलकुल रीत गयी थी। लेकिन अपनी गाढ़ी और भोली नींद में मिस्टर करटेंटी को वह किसी बालिका-सी नजर आयी—ऐसी बालिका, जो मूर्ख, असहाय किंतु निश्छल हो। वह उन्हें दयनीय लग रही थी। क्या कहा था इस औरत ने? वह अपनी बेटी और जवांई के घर लांगशा चली जायेगी—मिस्टर करटेंटी स्वयं जाने से इन्कार कर दें, तो अकेली ही चली जायेगी। इसका यही अर्थ हो सकता था कि वह अपने पति से नाता तोड़ रही है। पति जो चाहे करे, उसे कोई लेना-देना नहीं। तो यही होगा.....! मिस्टर करटेंटी वही करेंगे, जो उन्होंने करने की ठान रखी है।

टिन की बनी हुई एक पुरानी ट्रे में थोड़ी-सी ब्रेड रखी थी। थोड़ी-सी मछली भी थी। एक समाचार के अनुसार ब्रेड और मछली की सप्लाई, जो लांगशा से होती थी, निकट भविष्य में बंद होनेवाली थी। तब क्या होगा? मिस्टर करटेंटी बर्सले-जैसे नगर में क्या खायेंगे? सभी चीजें इतनी महंगी

आर्नाल्ड बेनेट वकील बनाना चाहते थे, लेकिन पत्रकार और लेखक बनकर अमर हो गये। 'वूमन' के सह-संपादक के रूप में इन्होंने कई वर्षों तक काम किया 'क्लेहैंगर, 'हिल्डा लेस्वेज' और 'दीज ट्वेन' जैसे लाजवाब उपन्यासों के सृजन के बाद इन्होंने 'दि ओल्ड वाइव्ज टेल' लिखा, जो इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। नाटक, निबंध, आलोचना आदि अन्य क्षेत्रों में भी इनकी ख्याति उच्चतम शिखरों तक पहुंची।

बेनेट १९३१ में स्वर्गवासी हुए; किंतु इनके साहित्य में मानवीय मूल्यों के प्रति जो आस्था उद्घाटित हुई है, वह इन्हें हमेशा जीवित रखेगी।

आर्नाल्ड का ऊपर दिया हुआ कैरिकेचर प्रख्यात कार्टूनिस्ट डेविड लो का बनाया हुआ है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं कि... ऐसी हालत में मिस्टर करटेंटी-जैसा गर्वीला और झगड़ालू व्यक्ति क्या करेगा? प्रश्न बहुत बड़ा और बहुत महत्व-पूर्ण था। उसका उत्तर न हैरिएट को ज्ञात था, न जिम को; न मिस्टर करटेंटी की पत्नी को। सिर्फ एक व्यक्ति को मालूम था कि यह गर्वीला आदमी क्या करेगा—वह व्यक्ति था स्वयं मिस्टर करटेंटी।

मोमबत्ती की रोशनी में उन्होंने अपने जूतों के तसमे कसे, बालों में कंघी फेरी। फिर मोमबत्ती बुझाकर वे अंधेरे में नित्य-कर्मों से निवृत्त हुए। रात खत्म होने की तैयारी में थी। धुंधलके को अपने साथ लेकर पृथ्वी हमेशा की तरह धुरी पर घूम रही थी। घूमने की इस प्रक्रिया में वर्सले नगर क्रमशः सुबह की ओर बढ़ रहा था। मिस्टर करटेंटी ने अपनी हरी जैकेट के बटन लगाये। जैकेट के कालर नहीं थे। उन्होंने एक गर्म मफलर लपेट लिया। फिर हैट लगाकर वह वूडीसन लैन में निकल आये।

उन्हें अहसास था कि वह काफी जल्दी निकल पड़े हैं। हर काम के लिए वह जल्दी निकल पड़ते थे। डक स्क्वायर की शान के प्रति सचेत रहते हुए, वे चुस्ती के साथ कदम उठाते रहे। एक बहुत बड़ी ट्राम, जिसमें ठुंसे हुए नौकरीशुदा लोग काम पर जा रहे थे, घड़-घड़ का शोर मचाती हुई, वेस्लेयान चैपल को पीछे छोड़कर हैनब्रिज की तरफ जा रही थी। मिस्टर करटेंटी ने फुटपाथ पर पैर झटकारे और दोनों हथेलियां आपस में रगड़ीं। जनवरी की सुबह में इस में बेहद ठंडी हुआ करती है। पैर झटक के बावजूद उन्होंने गर्व से इसका किया कि ठंड कोई खास नहीं है।

वे शीघ्रातिशीघ्र डाकखाने पहुंच चाहते थे। डाकिया दरवाजे पर ही मिस्टर करटेंटी को देखकर मुस्कराने उसने कहा—"गुड मार्निंग।"

"गुड मार्निंग। क्या हाल है?" मिस्टर करटेंटी ने दर्प के साथ उत्तर लौटाया डाकिये ने उनकी ओर एक छोटा-सा, लिफाफा बढ़ा दिया।

उन्होंने एक सूनी गली में जाकर लिफाफा खोला। इसी लिफाफे के लिए आये थे। उसमें डाक-विभाग की तरफ भेजा गया एक अधिकार-पत्र था—बचत में से दो शिलिंग निकलवाने का अधिकार पत्र। अंदरूनी जेब से मिस्टर करटेंटी पीले रंग की बैंक-बुक निकाली, जिस आंकड़ा सिद्ध करता था कि उनके नाम बीस पौंड जमा हैं। अधिकार-पत्र को बुक में अच्छी तरह दबाकर उसे निहायत तरतीब से जेब में वापस रख लि

इसमें अचरज की क्या बात है? स्वाभिमानी व्यक्ति को संभावित त्कालीन स्थिति के लिए कुछ-न-कुछ कर रखना ही चाहिये। पिछले एक मिस्टर करटेंटी ने यह धन बचाकर हुआ था। (बचत के लिए उन्होंने दो बार अपमान भी सह लिया था!) को छिपाने के लिए उन्हें अनेक बार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोलना पड़ा था। चाहे आप कितनी भी बुरी स्थिति में क्यों न हों, उससे भी बुरी स्थिति की कल्पना अवश्य की जा सकती है। ये बीस पौंड किसी भी बुरी परिस्थिति के लिए ठोस सहारा थे। खस्ता हाल ने पिछले चालीस वर्षों से उन्हें परेशान कर रखा था। आत्मरक्षा का यह आखिरी साधन था। अहं की तुष्टि का भी आखिरी साधन।

"कहां गये थे इतनी सुबह?" जब वे घर आये, तो पत्नी ने पूछा।

"यों ही जरा घूमने निकल पड़ा था।" मिस्टर करटेंटी ने कहा।

× × ×

रात को करीब साढ़े सात बजे मिसेस करटेंटी (गरमाहट के लिए) बिस्तर पर लेटी हुई थीं और मिस्टर करटेंटी दो कुर्सियों में से एक पर बैठे हुए थे। अंधेरा काफी हो चला था। मिस्टर करटेंटी अपनी कुर्सी को आवाज के साथ पीछे खिसकाते हुए उठ खड़े हुए और दरवाजे की तरफ बढ़े, जहां एक हुक पर उनका मफलर और हैट टंगे हुए थे।

पति-पत्नी रात का खाना खा चुके थे। दोपहर व रात के खाने और शाम के नाश्ते में मछली खत्म हो गयी थी; लेकिन ब्रेड थोड़ी बाकी थी। दोपहर के भोजन के पश्चात् मिस्टर करटेंटी किसी बहाने घर से निकलकर डाकखाने के बचत खान में से दो शिलिंग प्राप्त कर चुके थे। घर से निकलने और वापस घर आने के दौरान उनकी पत्नी कहीं गयी थी अथवा नहीं, उन्हें नहीं मालूम था। उन लोगों ने शायद ही कोई शब्द आपस में बोला था—इसलिए नहीं कि उनमें अनबन थी, बल्कि इसलिए कि उन्हें ऐसी आदत पड़ गयी थी। कल शनिवार होगा। लांगशा खाना होने का दिन। मिस्टर करटेंटी ने इस बारे में भी एक शब्द नहीं कहा था। उनकी पत्नी उनसे पूछना तो जरूर चाहती थी; लेकिन उसे शक था कि इस कोशिश में कहीं वह अपने पति को छेड़ न बैठे। मिस्टर करटेंटी को छेड़ना किसी रूप में सुरक्षित नहीं था। मिसेस करटेंटी अपनी बेटी से कहा करती थीं कि जब उलझनें दूर न होती हों, तो उन्हें ज्यों-का-त्यों छोड़ देना चाहिये—वे अपने-आप सुलझ जाती हैं। यही बात आज वह बारंबार अपने मन में दुहरा रही थीं। मिस्टर करटेंटी के भयावह दर्प एवं आत्मनिर्भरता की असहनीय आकांक्षा का सामना उनकी पत्नी इसी उपाय से किया करती थी। मिस्टर करटेंटी ने बाहर निकलने के लिए जब दरवाजा खोला, तो पत्नी ने केवल इतना पूछा—"कहां जा रहे हो?"

इसका उत्तर बहुत संक्षिप्त था—"जरा टहल आऊं।"

घर छोड़ने से पहले मिस्टर करटेंटी ने अपनी जीवन-संगिनी की ओर देखा तक नहीं। यदि उन्होंने देखा होता, तो भी वे न देख पाये होते, क्योंकि भीतर बहुत अंधेरा था। उन्हें इच्छा नहीं थी। यदि होती, तो वे मोमबत्ती (का बहुत छोटा बच रहा टुकड़ा) जलाकर ही देख सकते थे। उन्हें देखना चाहिये था, क्योंकि यह क्षण विदाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे तेज़
हवाई सर्विस—

दिल्ली
मॉस्को
लन्दन!

एयर-इंडिया, आपके लिए दिल्ली और लन्दन के बीच सबसे तेज़ हवाई सर्विस चलाते हैं। इस सर्विस की दो उड़ानें नज़दीक से नज़दीक के रास्ते से, एक मॉस्को होती हुई, की जाती हैं और यह दूरी तय करने में १२ घंटे भी नहीं लगते!

मॉस्को में विमान क़रीब १ घंटा रुकता है। उसे जानेवाले मुसाफ़िरों को मॉस्को के लिए वीज़ा की कोई जरूरत नहीं!

हर मंगलवार और शुक्रवार
बम्बई - दिल्ली - मॉस्को - लन्दन

एअर-इंडिया
सहयोगी · बी. ओ. ए. सी और कैन्टस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का क्षण था—जीवन के तीस-वर्षीय साथ के बाद विदाई का क्षण ! लेकिन उनकी भावनाएं मर चुकी थीं—दुर्भाग्य की शीतलता के कारण, दर्प और अपने में ही डूबे रहने की ललक के कारण; भाग्य के प्रति अनबूझे क्रोध और अपने-आप से ही विद्रोह की भावना के कारण। इसीलिए वे बिना देखे चले आये। वे जानते थे कि रात गहरी होने पर उनकी कम-उम्र पत्नी सो जायेगी और सोती रहेगी।

वूडीसन लेन की इस रात में समझी न जा सके, ऐसी नग्नता थी।

मिस्टर करटेंटी वेजवूड इन्स्टीटचूट की फ्री रेफरेंस लाइब्रेरी जाना नहीं चाहते थे, लेकिन उन्होंने मात्र सुरक्षा के लिए ऐसा करने का निर्णय लिया। वेजवूड इन्स्टीटचूट की यह लाइब्रेरी (वास्तव में) बेकार लोगों का (समय काटने का) अड्डा था। रेफरेंस बिंग की भीगी-भीगी, कागजी, स्याहीली और गोंदीली गंध मिस्टर करटेंटी की नाक में गयी। उन्हें अच्छा लगा। औपचारिक खानापूरी के बाद उन्होंने क्वेंस द्वारा संपादित 'दवाओं की डिक्शनरी' प्राप्त कर ली। उसके भारी-भरकम आकार को मेज पर रखकर उन्होंने शीघ्रता से पन्ने पलटना शुरू किया—मानो उनके हाथ में बाइबल आ गयी हो और उन्हें भली-भांति मालूम हो कि आज कौन-सा परिच्छेद पढ़ा जाना है।

उनके विचारों में बिल्लौरी कांच जैसी स्पष्टता थी। मानसिक रूप से वे न क्षुब्ध थे, न अस्थिर। अपने जवांई के यहां जाकर रहने लगने का प्रश्न ही नहीं उठता था। उनकी पत्नी चाहे, तो जा सकती है। बल्कि, वह सचमुच जानेवाली है। वह वहां खुश रहेगी। खुश न सही, संतुष्ट तो रहेगी ही। जो बीस पौंड (दो शिलिंग घटाकर) उन्होंने आपत्कालीन स्थिति के लिए येन-केन-प्रकारेण बचाकर रखे थे, वे बेकार ही थे; क्योंकि 'घर बैठकर खाने' की स्थिति में वे शीघ्र ही खत्म हो जानेवाले थे। इसमें शक नहीं कि बीस पौंड से अकेले आदमी का गुजारा काफी दिनों तक चल सकता था, (यह अलग बात है कि काफी दिन भी शीघ्र बीत जाते हैं); लेकिन उतने दिनों तक चलनेवाला गुजारा (एक बेकार आदमी का) सभी लोगों में जाहिर कर देता कि मिस्टर करटेंटी के पास कोई गुप्त धन है। अन्य शब्दों में, मिस्टर करटेंटी लगातार झूठ बोलते रहे थे कि उनके पास गुप्त धन नहीं है। एक झूठे आदमी के रूप में शोहरत पाने से तो अच्छा है कि.....खैर, जाने दीजिये। मूल प्रश्न यह था कि जब बीस पौंड खत्म हो जायेंगे, तब क्या होगा ? नहीं, वह स्थिति सामने नहीं आयेगी। उससे पहले ही समस्या हल हो जायेगी। यदि नौकरी न मिली, तो भी वह समस्या हल हुए बिना नहीं रह सकती। इस बुरे जमाने में नौकरी भी कहां मिलती है ? नहीं मिलेगी; और फिर भी समस्या हल हो जायेगी।

क्वेंस के संपादन में बहुत सादगी के साथ समझाया गया था—"कोई भी घुलनशील

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोरदार संघर्ष—मैच खत्म होने में सिर्फ दो घंटे हैं—दो वल्ले हाथ में हैं—मैच जीतने के लिए सिर्फ ५० रन की जरूरत है और शतक बनाने के लिए सिर्फ १० रन

अब कॉफी विश्राम के लिये

अब दूने जोश और विश्वास के साथ गेंद का मुकाबला होगा। कोई भी दूसरा पेय कॉफी की तरह शरीर और दिमाग को ताजगी नहीं देता। जब शक्ति क्षीण होने लगती है तो यह एक नई शक्ति प्रदान करती है तथा इससे जीवन में एक उमंग, तृप्ति और आनन्द मिलता है।

कॉफी में स्फूर्ति का प्राचुर्य.... कहीं भी ... किसी भी समय

कॉफी बोर्ड, बंगलोर

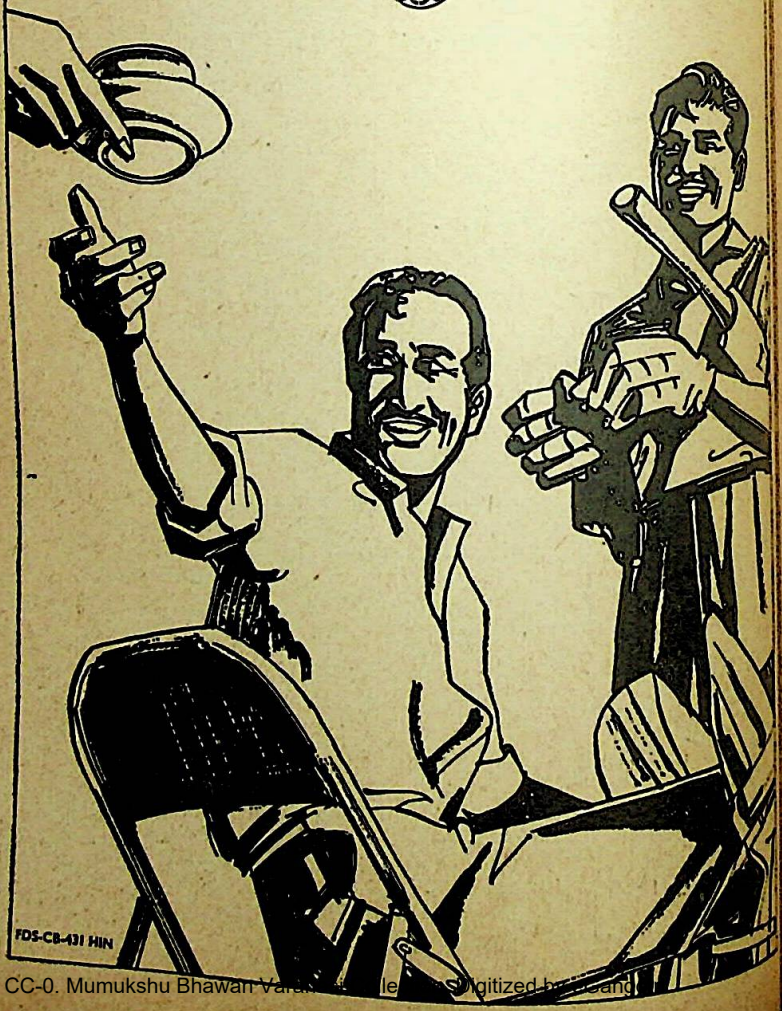

FDS-CB-431 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साइनाइड, विशेषत: पोटेशियम का साइनाइड, जो फोटोग्राफी और इलेक्ट्रो-प्लेटिंग में खुलकर इस्तेमाल किया जाता है, व्यापार की सामान्य चीजों में से एक है और उसका प्रभाव उसी तरह का होता है, जैसा कि स्वयं एसिड का। पोटेशियम साइनाइड की थोड़ी-सी मात्रा भी मनुष्य की तत्काल मृत्यु का कारण बनती है।"

भला इससे ज्यादा साफ-साफ बात और कैसे बताई जा सकती है? डिक्शनरी के इन शब्दों को वे पहले भी पढ़ चुके थे; किंतु आज उन्होंने चाहा था कि एक-एक शब्द दिमाग में बिलकुल ताजा मालूम पड़े। इस तरह किसी जबर्दस्त भूल की गुंजाइश खत्म हो जाती थी। जहर के कारण शरीर पर क्या-क्या प्रभाव पड़ते हैं और उन प्रभावों की चरम परिणति मृत्यु में कैसे होती है, इसका वर्णन मिस्टर करटेंटी ने जान-बूझ कर न पढ़ा। वे इसे पहले भी पढ़ चुके थे और जानते थे कि फिर से पढ़ने पर मन के अस्थिर हो जाने का पूरा खतरा था।

डिक्शनरी बंद करके वे बड़ी शान से उठ खड़े हुए। काउंटर पर जो युवती (खूबसूरत, जवान और चुस्त) बैठी थी, उसे डिक्शनरी सौंपकर वे बड़ी बेतकल्लुफी से इन्स्टीट्यूट की सीढ़ियां उतरने लगे। कोई सोच भी नहीं सकता था कि सीढ़ियां उतर रहा यह आदमी आज एक अनोखा, अद्‌भुत, अद्वितीय आदमी है—पूरे नगर में अपने-जैसा बस, अकेला ही आदमी।

सेंट ल्यूक्स स्क्वायर में जो क्रिश्लो की दुकान थी, मिस्टर करटेंटी उस ओर कदम उठाने लगे। क्रिश्लो बर्सले का सबसे पुराना केमिस्ट था। क्रिश्लो से उनकी थोड़ी-बहुत पहचान थी; या शायद वह तो क्रिश्लो को पहचानते थे, पर क्रिश्लो उन्हें नहीं जानता था। बहरहाल, इतना जरूर था कि क्रिश्लो की दुकान में ज्यादा 'पूछताछ' नहीं की जाती थी। दीगर दुकानों की बनिस्बत वहां से जहर खरीदना काफी आसान था। अव्वल तो कोई नहीं पूछेगा कि मिस्टर करटेंटी को 'स्चील के एसिड' की जरूरत क्यों है। पोटेशियम साइनाइड 'स्चील के एसिड' के नाम से बिकता था। लेकिन मान लो, किसी ने पूछ ही लिया? पहले से तैयारी रखनी चाहिये। खैर.....दिक्कत नहीं थी। बड़ी आसानी से कहा जा सकता था कि इलेक्ट्रो-प्लेटिंग के लिए चाहिये। नाइप के एक छोटे इलेक्ट्रो-प्लेटिंग संस्थान में मिस्टर करटेंटी किसी समय थोड़ा-बहुत काम कर चुके थे, अत: इस धंधे से ताल्लुक रखनेवाली कुछ बारीकियां उन्हें मालूम थीं। यदि और भी जरा कुरेदकर पूछा गया, (कौन पूछेगा भला!) तो मिस्टर करटेंटी ऐसे उत्तर अवश्य दे सकते थे, जिससे दुकानदार का विश्वास जीता जा सके।

क्रिश्लो की दुकान बंद थी। ऐसी की तैसी! बंद करने का और कोई दिन न मिला? स्क्वायर के टावर पर लगी घड़ी आठ बजने में छ: मिनिट बता रही थी और क्रिश्लो की दुकान हमेशा आठ बजे तक खुली रहती थी। न मालूम कैसे आज...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साड़ियाँ, कमीजें, बच्चों के वस्त्र...हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, बेदाग साफ़...इसलिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है। सारी धुलाई घर में सर्फ़ से कीजिये!

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर करटेंटी आठ क्या, सात बजे ही यहां पहुंच सकते थे, लेकिन जान-बूझकर उन्होंने देर से आना पसंद किया था, ताकि आठ बजने में ऐन कुछ मिनट पहले 'श्चील के एसिड' की खरीदारी कर ली जा सके और जब दुकान से बाहर आया जाये, तो गलियों में चहलकदमी कम-से-कम हो। किसे मालूम था कि आज दुकान जल्दी बंद हो जायेगी। यह भी मुमकिन था, आज दुकान किसी कारणवश खोली ही न गयी हो। उन्हें याद आया कि मारकेट प्लेस में अभी साल्टर की दुकान खुली होगी। टाउन हाल के बाद खेल का जो खुला मैदान है (यहीं उन्होंने अपने को समाप्त करने का निर्णय किया था), उसकी दिशा में आते समय मारकेट प्लेस रास्ते में पड़ता है। स्क्वायर पार करके वे दाहिनी ओर मुड़े, जहां मारकेट प्लेस था।

दुकान खुली थी। वे तुरंत भीतर चले गये। खुली होने के बावजूद दुकान में कोई नहीं था। काउंटर भी खाली था।

साल्टर बर्सले का नया केमिस्ट था, जो अनेक आशाओं और दृढ़ निश्चयों के साथ बर्मिंघम से यहां आया था। आज जहां उसकी दुकान थी, पहले भी वहां एक दवाओं की ही दुकान थी, जो पिछले पचास वर्षों से चली आ रही थी। उसका बूढ़ा मालिक न केवल दवाएं बेचता था, अपितु नगर निवासियों को भांति-भांति की सलाह भी देता था। साल्टर ने उसकी दुकान खरीदी और तोड़ डाली, ताकि उसकी जगह पर नयी, आलीशान दुकान खड़ी की जा सके। नयी दुकान में फर्श से छत तक ऐसी सजावट की गयी, जो इस नगर के लिए अनहोनी बात थी। साल्टर की यह दुकान चमकती नहीं थी, बल्कि चौंध पैदा करती थी। वह बर्सले की सबसे साफ और व्यवस्थित जगह थी। उसकी घड़ी कभी गलत समय नहीं दिखाती थी और वहां की हवा में एंटी-सेप्टिक गंध होती थी। वहां शीशे थे, कुर्सियां थीं, ग्राहकों को मुफ्त में वजन बतानेवाली एक मशीन भी थी। पच्चीस वर्ष पहले पूरे नगर में जितने टूथब्रश इस्तेमाल होते थे, उससे कहीं ज्यादा टूथब्रश आज इस दुकान के शोकेस में थे।

मिस्टर करटेंटी इन सभी बातों से प्रभावित न हो सके। उनके भीतर कुछ आदिवासियों जैसी प्रवृत्तियां थीं, जिनके कारण वे उन सभी चीजों से भड़कते थे, जिनमें दिखावट ज्यादा होती। उनके लेखे, दिखावट का अर्थ ही बनावट था।

मिस्टर साल्टर, जिन्होंने केमिस्टोंवाला लंबा चोगा नहीं पहना था, दुकान की अंधेरी गहराई में से बाहर निकलते नजर आये। मिस्टर करटेंटी को वे किसी प्रश्नवाचक की तरह मालूम पड़े—ऐसा प्रश्नवाचक, जो काउंटर की दिशा में बढ़ रहा था। उस समय मिस्टर करटेंटी के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्हें अपनी जीभ मुर्दा मालूम पड़ी और गला सूखा हुआ, खुरदरा और भीतर से मानो सूजा हुआ। किसी प्रकार उन्होंने कहा—"मुझे श्चील का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

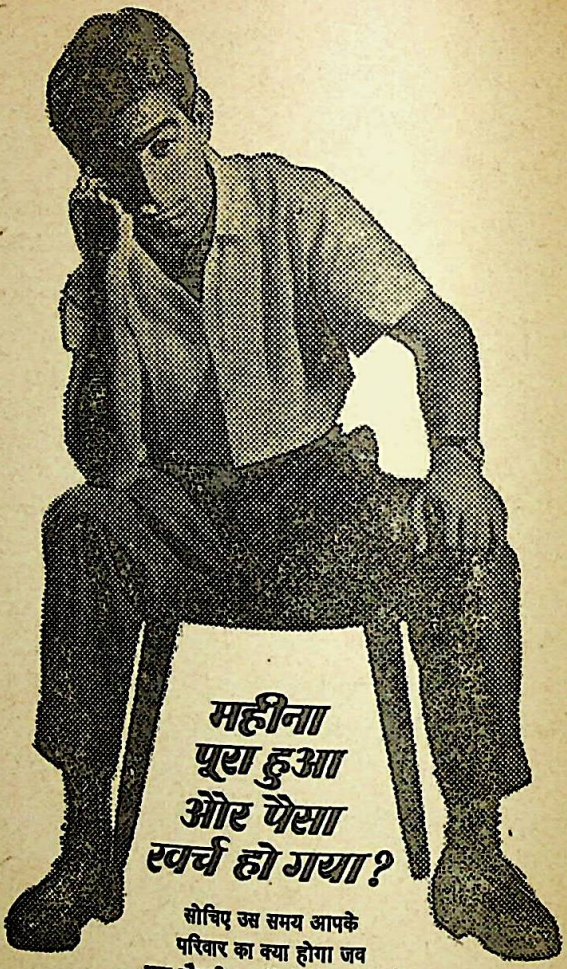

महीना पूरा हुआ और पैसा खर्च हो गया?

सोचिए उस समय आपके परिवार का क्या होगा जब आप नौकरी या धंधे से निवृत्त होंगे?

आप महीने के अंत में कितना बचाते हैं? हम में से कई लोग हर माह मुश्किल से थोड़ा बहुत बचा सकते हैं। लेकिन सोचिए कि आप किसलिए काम करते हैं? इसलिए न कि आप और आपका परिवार मजे से जिन्दगी गुजारें और समय आने पर आप निश्चिंत बुढ़ापा बिता सकें।

आप यदि बुढ़ापे का प्रबन्ध करना चाहते हैं तो अभी से बचाइए। और जीवन बीमा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा आप बुढ़ापे में आय प्राप्त कर सकते हैं। आज ही बीमा एजेंट से मिलिए।

जीवन बीमा सुरक्षा का बेजोड़ साधन है।

ASP/LIC/Z-21 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एसिड चाहिये।"

मिस्टर साल्टर ने मिस्टर करटेंटी को घूरा। मिस्टर करटेंटी ने भी, मानो उन्हें चुनौती दी जा रही हो, इस प्रकार मिस्टर साल्टर को घूरा।

"आप फोटोग्राफी का काम करते हैं?"

मिस्टर करटेंटी ने सिर हिलाया—"जी हां?"

"अच्छा, तो कितना चाहिये?"

"छोटीवाली जो भी शीशी हो, दे दीजिये।"

"आधा पिंट?"

"हां, चलेगा।"

"आपको हमारी 'पायजन बुक' में हस्ताक्षर करने होंगे।"

"जरूर!"

इसके बाद मारकेट प्लेस में जो लोग आ-जा रहे थे, उन्होंने मिस्टर करटेंटी को अपने-आप से कुछ बुदबुदाते या गुनगुनाते सुना। मिस्टर करटेंटी ने नाराजगी के साथ गौर किया कि लोगों द्वारा उन पर ध्यान दिया जा रहा है। वे नहीं चाहते थे कि ऐसा हो। वे तेजी से हैनब्रिज की ओर बढ़े।

आधुनिक नगर-जीवन
[चित्र : मार्क चैगाल]

उन्हें लगा कि दुनिया की कोई ताकत उन्हें अपने निश्चय से नहीं डिगा सकती; लेकिन जो काम वे करने जा रहे थे, उसे वे बिलकुल अकेले में करना चाहते थे। श्चील के एसिड की शीशी उनकी जेब में सुरक्षित थी।

× × ×

मिस्टर करटेंटी ने सोचा कि श्चील का एसिड पीना तो है ही; लेकिन उससे पहले क्यों न इसकी जानकारी प्राप्त कर ली जाये कि मिसेस करटेंटी ने मोमबत्ती का कुछ ही इंच बचा हुआ टुकड़ा अब तक बेवजह जला रखा है या नहीं। उन्होंने एक ऐसा रास्ता चुना, जो हैनब्रिज की तरफ तो जाता ही था, साथ-साथ बीच में उनका घर भी दूर से देखा जा सकता था। मिस्टर करटेंटी ने दूर से निगाह डालकर पता लगा लिया कि मिसेस करटेंटी ने ऐसी फिजूलखर्ची नहीं की—घर में अंधेरा था। अचरज की बात यह रही कि मिसेस करटेंटी की इस समझदारी से मिस्टर करटेंटी को जरा भी प्रसन्नता न हो सकी। वे तहे-दिल से चाहते थे कि (फिजूल ही) मोमबत्ती जलायी जा रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में

पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है – सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-जुकाम व इन्फ्लूएंज़े का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती तो अच्छा था, ताकि एसिड पीने से पहले, पीने के कई कारणों के साथ एक कारण और भी जोड़ा जा सके। अप्रसन्नता की यह भावना उनके मन में किसी सड़े फल की तरह गंध फैलाती रही। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व उस गंध के कारण विलविला उठा।

रात में अकेले घूमते हुए मिस्टर करटेंटी ने महसूस किया कि चौकीदारों को भी इसी तरह घूमना पड़ता है। उन्हें वे दिन याद आये, जब स्वयं उन्हें चौकीदारी का काम मिला हुआ था। अपना मकान पीछे छोड़-कर वे काफी आगे निकल चुके थे।

सहसा जो सांस उन्होंने ली, उसने उन्हें चौंका दिया। जिस तरह शेर को दूर से खून का पता चल जाता है, उसी तरह चौकीदार को आग का। आज मिस्टर करटेंटी चौकी-दार नहीं थे, लेकिन उससे क्या ? कभी तो वे चौकीदार रह चुके थे न ? उन्हें स्पष्ट मालूम हो गया कि जो सांस अभी-अभी उन्होंने ली है, उसमें कहीं आग लग जाने की गंध मिली हुई है। मिस्टर करटेंटी ने दूसरी बार सांस ली, फिर तीसरी बार। हां, जरूर कहीं आग लगी है। कहां ? कैसे ? किसी की जान तो खतरे में नहीं ? बच्चों को आग में फंसते देर नहीं लगती। औरतें भी फंस जाती हैं। कहां लगी है आग ?

जिस दिशा से गंध आ रही थी, उन्होंने उधर निगाह दौड़ायी। आसपास की इमा-रतें ऊंची थीं, जिनके ऊपर से आग के धुएं का कोई सबूत नजर न आया। तो क्या आग नहीं लगी है ? सिर्फ धोखा हो रहा है? नहीं। मिस्टर करटेंटी को अपनी नाक पर पूरा भरोसा था। इतने वर्षों तक आखिर उन्होंने चौकीदारी की थी, कोई घास नहीं खोदी थी। उन्होंने हवा सूंघने के लिए फिर से गहरी सांस ली। वे श्चील के एसिड को फिलहाल पूरी तरह भूल चुके थे। जिस सड़क पर वे खड़े थे, वह आगे जाकर एक मेहराब के नीचे से गुजर रही थी। वहां का गेट बंद था।

अब ?

मिस्टर करटेंटी ने दौड़ लगायी। वे एक पुरानी चहारदीवारी पार करके एक कारखाने के पिछवाड़े जा पहुंचे। वहां से यार्ड तक दौड़ लगाने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं हुई। सचमुच उनकी नाक को धोखा नहीं हुआ था। सामने की अधबनी इमारत की (पहली मंजिल की) एक खिड़की में से धुएं के बादल बाहर आ रहे थे। धुएं की कालिमा के गर्भ में मिस्टर करटेंटी ने आग की डरावनी रोशनी भी देखी। एकाएक उन्हें पता चल गया कि सबसे पहले कौन-सा काम करना चाहिये, और उसके बाद कौन-सा और उसके भी बाद कौन-सा। और जब इसका उन्हें पता चल गया, तो उसके अमल में देर लगाने की जरूरत उन्होंने कतई महसूस नहीं की। मिनिट के भी चौथाई हिस्से में वह ट्राफलगर रोड पर आ पहुंचे। आग की जानकारी अब तक किसी और को नहीं थी। जानकारी सबसे पहले पुलिस को दी जानी चाहिये। पुलिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा

आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती है

- ऊँचे दर्जे की वर्जीनिया तम्बाकू
- संतुलित मिश्रण
- हमेशा ताज़ा

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT. (P) 633HIN

Greens' Advts.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही आगे का इंतजाम करेगी। लेकिन कहां है पुलिस? कोई माई का लाल दिखाई नहीं पड़ता। कुछ मजदूर लड़कियां नजर आयीं, जो बाहों-में-बांहें डाले हुए किलकारियां भर रही थीं। मिस्टर करटेंटी ने उनकी उपेक्षा की। स्क्वायर के एक नुक्कड़ पर चर्च की पीली इमारत थी। उसके पास ही एक लाल लैम्प जल रहा था। ओह, डाक्टर एकरिंग्टन का मकान! मिस्टर करटेंटी पूरी ताकत से दौड़े। दरवाजा बंद था। उन्होंने घंटी बजायी। दरवाजा खुला। सामने एक प्रौढ़ा नर्स खड़ी थी।

"आपके यहां टेलिफोन है?" मिस्टर करटेंटी ने अधैर्य से पूछा।

"है, लेकिन तुम्हें इजाजत नहीं मिलेगी।" नर्स ने कहा। ऐसे मामूली कपड़े पहने व्यक्ति को डाक्टर का टेलिफोन छूने की इजाजत भला कैसे दी जा सकती थी?

"मुझे फोन नहीं करना है।" मिस्टर करटेंटी चिढ़कर बोले—"डाक्टर से कहिये कि मिस्टर कालक्लो की 'न्यू पाट-बैंक' इमारत में आग लग गयी है। फायर-बिग्रेड को फोन करना जरूरी है। पुलिस को भी।"

नर्स हतप्रभ होकर मिस्टर करटेंटी की ओर देखती रह गयी। वह अपनी जगह से हिली तक नहीं। मिस्टर करटेंटी ने उसे डांट दिया—"मुंह क्या देखती हैं? जाइये। फोन करिये। समझीं?"

मिस्टर करटेंटी दौड़े और फिर से कारखाने के दायरे में आ गये। अंधेरे में उन्हें रेत के ढेर-जैसा कुछ आभास मिला। उन्होंने हाथ बढ़ाकर छुआ—वह रेत ही थी। इमारत जल्द ही पूरी करने के सिलसिले में रेत मंगवाई गयी थी। आसपास कई बाल्टियां भी रखी थीं। उनमें से एक बाल्टी उठाकर मिस्टर करटेंटी ने झटपट रेत भरी। सीढ़ियां ढूंढ़कर, भारी-भरकम बाल्टी उठाये हुए वे जल्दी-जल्दी ऊपर चढ़ने लगे। अंधेरे में उन्हें आंखों से ज्यादा अपनी सूंघने की क्षमता पर ही भरोसा करना पड़ रहा था। गलियारा पार करके वे एक घुटन-भरे, बड़े कमरे में आ गये। हां, यही थी वह जगह, जहां आग लगी हुई थी।

लकड़ियों के तख्तों ने जलना शुरू कर दिया था। एक छोटे तख्ते की आग को उन्होंने तुरंत ही रेत डालकर खत्म कर दिया। लेकिन अभी और रेत की जरूरत थी। खाली बाल्टी उठाकर वे स्फूर्ति के साथ जीना उतरने लगे। जब कुछ ही सीढ़ियां बची थीं कि वे लड़खड़ा गये और गिर पड़े। उनके घुटनों पर इतनी चोट आयी कि दो पल के लिए वहीं-के-वहीं बैठे रह गये। फिर अधैर्य से तड़पकर उठे और रेत की तरफ भागे।

इस प्रकार कई बार जीना चढ़ने-उतरने के बाद उन्होंने उन तख्तों की आग बुझा दी। तख्तों के आसपास की जिन चीजों पर आग फैलनेवाली थी, उन्हें भी मिस्टर करटेंटी ने समय रहते बचा लिया। कमरे में कच्चा, कसैला धुआं भरा हुआ था और आग बुझ जाने से रोशनी गायब हो गयी थी। अंधेरे के बावजूद आग का कारण सम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नंदा से सुनिए एक रहस्य की बात

'लक्स मेरा दैनिक सौंदर्य-साधन है'

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
सौंदर्य साबुन

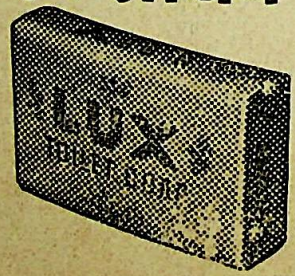

सफ़ेद और
इंद्रधनुष के
४ रंगों में

LTS. 175-75 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने में उन्हें देर नहीं लगी । कारण वही
ा, जो अक्सर हुआ करता है—मजदूरों की
ापरवाही । इमारत बनाने की अनेक चीजें
स कमरे में थीं । ठंड से बचने के लिए मज-
रों ने यहां आग जलायी थी । कमरा छोड़ने
पहले वे आग बुझाना भूल गये थे । इत्त-
ाक से कमरे की अनेक चीजें गीली थीं,
जससे आग फैल न सकी थी, वरना कितना
ुक्सान हो जाता, कहना मुश्किल था ।

इमारत का यह हिस्सा पूर्णतया खाली
ा । शायद ये कोठरियां बन रही थीं मज-
रों के लिए—या ऐसा ही कुछ । मिस्टर कर-
टी बाहर आकर गलियारे में चलने लगे ।
ुछ खाली कमरों के सामने से गुजरने के
ाद उन्हें एक खिड़की में से ट्राफलगर रोड
े लैंप-पोस्ट की रोशनी दिखाई पड़ी ।
न्होंने बाहर देखा—इस विश्वास के साथ
ि कोई उन्हें नहीं देख रहा है । एक छोटी
ीड़, जो क्रमशः बढ़ती जा रही थी, बड़ी
ेकलता से उस खिड़की की ओर देख रही
ी, जहां से धुएं का उठना अभी तक जारी
ा । आग बुझाने की या इस दिशा में कुछ
ी करने की कोई इच्छा भीड़ में नहीं थी—
ह केवल तमाशा देखने आयी थी । अब तक
कोई पुलिसमैन आया था, न फायर-
ब्रिगेड का इंजिन । एक ट्राम शोर मचाती
ई लापरवाही के साथ सामने से गुजर
यी । मिस्टर करटेंटी स्वयं अनदेखे रहते
ुए भीड़ को देखते रहे—गर्व और संतोष के
ाथ तथा मन में इन सभी दर्शकों के प्रति
ाकोश लिये हुए । किसी का घर जले, कोई
आग तापे ! वाह, कैसी है यह दुनिया !

हैनब्रिज के रास्ते से एक कार आयी, जिससे भीड़ में सनसनी फैल गयी । कार में कई लोग थे । मिस्टर कालक्लो, उनकी नव-विवाहिता पत्नी तथा उनके दो मित्र कार रुकते ही बाहर निकल आये । डाक्टर एक-रिंग्टन के यहां से न केवल फायर-ब्रिगेड को फोन किया गया था, बल्कि मिस्टर कालक्लो को भी इत्तला दे दी गयी थी । मिस्टर और मिसेस कालक्लो उस समय अपने दो मित्रों के साथ डिनर की तैयारियां कर रहे थे । फोन आते ही बिना डिनर लिए वे रवाना हो गये थे ।

मिस्टर करटेंटी मिस्टर कालक्लो को पहचानते नहीं थे; लेकिन इन्हीं में से कोई एक मिस्टर कालक्लो होंगे, इस विश्वास के साथ, अपने दर्द करते घुटने को सहलाते हुए वे जीना उतरने लगे ।

पहले मिस्टर और मिसेस कालक्लो, उसके बाद उनके दोनों मित्र हड़बड़ाते हुए सीढ़ियां चढ़ रहे थे । मिस्टर करटेंटी को देखते ही मिस्टर कालक्लो ने पूछा—"कहां है ? कहां है आग ?"

"कहीं नहीं ! मैंने उसे बुझा दिया ।" मिस्टर करटेंटी ने जैसे ठंडी चुनौती देते हुए कहा ।

"अच्छा ? लेकिन तुम कौन हो ?" मिस्टर कालक्लो ने बौखलाते हुए पूछा । वे गरम मिजाज और जल्दबाज मालूम पड़े ।

"मुझे मिस्टर करटेंटी कहते हैं ।" मिस्टर करटेंटी बोले—"यदि आप मेरे साथ ऊपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलिये

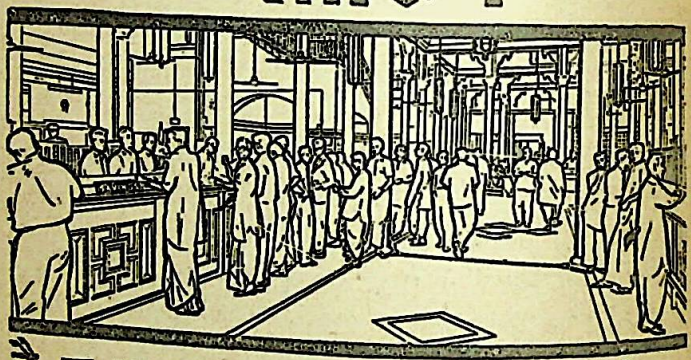

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज़ में सेविंग्स बैंक एकाउन्ट खोलना आसान है। आपको कम से कम सिर्फ रु० ५/- लगाना पड़ेगा और साल में ३ सैकड़ा ब्याज मिलेगा।

विस्तृत विवरण के लिये पास की स्थानीय शाखा में आज ही पधारिये। बैंकिंग संबंधी आपकी चाहे जो भी समस्यायें हों, यहाँ हमारी नम्रता और योग्य सेवा आपकी प्रतीक्षा में है।

नैशनल एण्ड ग्रिन्डलेज बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समितिबद्ध ● सदस्यों का दायित्व सीमित

NGB/33ANS

बम्बई की शाखायें :—१०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायडज़ ब्रान्च)। मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२६, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायडज़ ब्रान्च)। ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी : ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज़ ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल : शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि,फ्लन रोड, बाइकला। ठाणा :—आग्रा रोड, कोलवाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आना पसंद करें, तो मैं आपको घटना स्थल दिखाऊं।"

मिस्टर कालक्लो ने अपनी जेबें टटोलते हुए माचिस ढूंढ़ने की असफल कोशिश करते हुए कहा—"तुम्हारे पास तीली होगी? यहां कुछ दिखाई नहीं पड़ता।"

"सारी, मैं सिगरेट नहीं पीता।" मिस्टर करटेंटी ने मद्धिम स्वर में कहा।

मिस्टर कालक्लो के उन दो मित्रों में से एक के पास टार्च निकल आयी। वे सब उसकी रोशनी में उस कमरे में आये। मिस्टर करटेंटी विस्तारपूर्वक वर्णन कर रहे थे कि किस प्रकार राह चलते उन्हें आग लगने की गंध आयी, किस प्रकार दूर से उन्होंने इस कमरे में से धुआं निकलते देखा, फिर किस प्रकार फायर-ब्रिगेड को फोन करवाया, किस प्रकार रेत की बाल्टियां भर-भरकर आग पर डालीं, इस कोशिश में किस प्रकार अपने घुटने को आहत कर डाला और किस प्रकार वह सब कुछ भला होता है, जिसका अंत भलाई में हुआ हो इत्यादि। कमरे की अधजली लकड़ियों और वहां अभी तक मौजूद कसैले धुएं से मिस्टर करटेंटी के प्रत्येक शब्द की सत्यता प्रमाणित हो रही थी। धुएं से काला पड़ा उनका चेहरा टार्च की रोशनी में गर्वीला और आत्मविश्वासी लग रहा था। मिसेस कालक्लो अंधेरे में खड़ी थीं, फिर भी उनकी खूबसूरती जाहिर हो रही थी। मिस्टर करटेंटी की कहानी में न बनावट थी, न कोई भूल—इसलिए सभी की (विशेषतः मिसेस कालक्लो की) प्रशंसा उन्हें बड़ी आसानी से मिल गयी।

"लीजिये, यह आपके लिए।" मिस्टर कालक्लो ने कहा और मिस्टर करटेंटी की ओर दो पौंड बढ़ा दिये।

"शुक्रिया।"

"आपको आग बुझाने का काफी अनुभव है शायद।" मिसेस कालक्लो ने गरम मुस्कराहट के साथ, टार्च की रोशनी में आगे आते हुए कहा।

मिस्टर करटेंटी ने उन्हें अपने जीवन के दो-एक किस्से संक्षेप में सुनाये।

"तुम कहां काम करते हो?" मिस्टर कालक्लो ने जानकारी प्राप्त करनी चाही।

"फिलहाल कहीं नहीं।" बिना झिझके मिस्टर करटेंटी ने कहा।

मिस्टर कालक्लो खामोश हो गये। फिर बोले—"तुमने अपना नाम क्या बताया था?"

"मिस्टर करटेंटी।"

"हूं...तो...करटेंटी?" मिस्टर कालक्लो ने कहा। फिर वाक्य पूरा किये बिना, मानो कुछ सोच रहे हों, इस प्रकार दो क्षण वे अपनी पत्नी की ओर देखते रहे।

मिस्टर करटेंटी ने अपने नाम में से लापरवाही के साथ 'मिस्टर' शब्द गायब कर दिये जाने के लिए बुरा न माना—अब तक के अनुभवों ने उन्हें इतना सहनशील बना ही दिया था।

"देखो, करटेंटी, हमें एक अच्छे चौकीदार की जरूरत है। तुम यह काम पसंद करोगे?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

नन्हे बालक जल्द ही सीख जाते हैं कि पौधे पानी से ही जिन्दा रहते और बढ़ते हैं। यह साधारण सत्य एक बार सीखने के बाद भूलता नहीं।

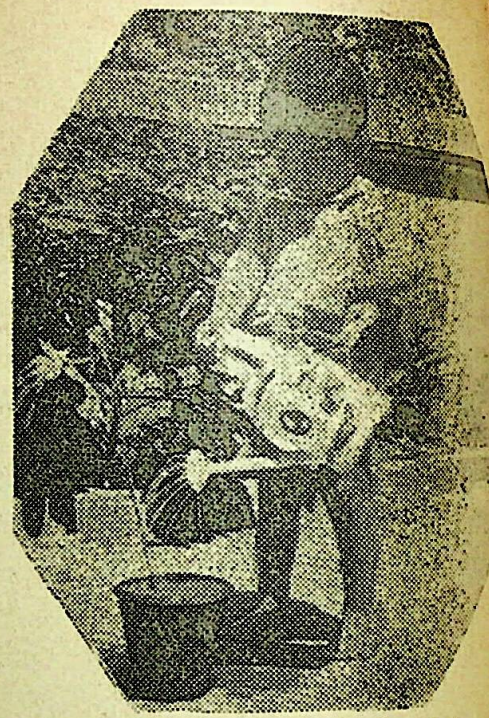

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूड़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूड़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें — उन्हे दांतो व मसूड़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूड़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूड़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर करटेंटी की तनख्वाह वगैरह उसी वक्त तय कर ली गयी।

एकाएक हड़बड़ाते हुए मिस्टर करटेंटी कमरे से बाहर निकले। सब उनके पीछे-पीछे आये। टार्च उनकी पीठ की तरफ से रोशनी दे रही थी। उन्होंने एक खिड़की से बाहर झांका। उनके कान भी उतने ही तेज थे, जितनी कि उनकी नाक। फायर-ब्रिगेड का विशाल इंजिन आ पहुंचा था। लैंप-पोस्ट की रोशनी में उसके कर्मचारियों के पीतल के टोप चमक रहे थे। वर्सले फायर-ब्रिगेड की तत्परता के क्या कहने। मिस्टर करटेंटी व्यंग्य से मुस्कराने लगे..... अब आये हैं बुझाने! चालीस मिनिट बाद! खिड़की से ही मिस्टर करटेंटी जोरों से चीखने लगे—"अब यहां क्या धरा है? जाओ लौट जाओ। आग बुझ गयी—मैंने बुझा दी। सुना कुछ? आग मैंने बुझा दी। जाओ! लौट जाओ।"

टार्च की रोशनी अपनी छाती पर झेलते हुए मिस्टर करटेंटी वापस घूमे।

"ओह! आप कितने जोशीले हैं!" मिसेस कालक्लो के मुंह से निकला। हार्दिक आभार, कुछ-कुछ यौवन का उफान, भावुकता तथा हनीमून की रंगीन मदहोशी, मिस्टर करटेंटी की फूहड़ टोपी का मसखरापन—ये अनेक बातें थीं, जिन्होंने अकस्मात मिसेस कालक्लो को इतना प्रभावित कर दिया कि वह अपनी पूरी खूबसूरती और शान के साथ आगे बढ़ गयीं। बहुत स्नेह से उन्होंने मिस्टर करटेंटी का कंधा छुआ, फिर उनके दाढ़ी-बढ़े गालों को हल्के-से चूम लिया।

× × ×

डक स्क्वायर की एक दुकान आधी रात के बाद तक भी खुली रहती थी। उसकी रोशनी दूर से दिखाई पड़ती। मिस्टर करटेंटी ने इस दुकान में आकर बड़ी तसल्ली के साथ (सबसे बढ़िया) तली हुई मछली खरीदी। उन्होंने मोमबत्ती भी खरीदी। ड्रेगन होटल बंद होने ही वाला था। वह तेजी के साथ वहां पहुंचे, ताकि बीयर की बोतल खरीद सकें।

उन्होंने वूडीसन लेन वापस आकर काटेज का ताला खोला और महसूस किया कि जिस चाबी से वे उसे खोल रहे हैं, वह उनकी अपनी चाबी है। सीढ़ियां चढ़ना शुरू करने से पहले उन्होंने जूते उतार लिये।

उनकी (कम-उम्र) पत्नी गहरी नींद में थी। मिस्टर करटेंटी ने मोमबत्ती जलायी, किंतु उसकी रोशनी से भी मिसेस करटेंटी की नींद न खुली। नयी दिलचस्पी के साथ वे अपनी पत्नी का चेहरा निहारते रहे। वे अपने दिल को जोरों से धड़कता महसूस कर रहे थे (लेकिन ऐसा सीढ़ियां चढ़ने के कारण हुआ था। कोई और कारण हो भी क्या सकता था!)। यह धड़कन कुछ-कुछ अ-मांसल थी। मिस्टर करटेंटी आधे खुश थे, आधे डरे-सहमे हुए। संयोगों के इस क्रम को एकाएक वे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। अगर आग न लगी होती और लगी भी होती, तो उसका पता अगर मिस्टर करटेंटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम का मुक़ाबला करने के लिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

लाल लेबल

लीजिए

सर्दी-ज़ुकाम को मामूली बात समझा जाता है, लेकिन दरअसल इससे कमज़ोरी आजाती है और शरीर की रोग-निरोधक शक्ति घट जाती है। वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड आराम पहुँचाता है, शक्ति पैदा करता है और बीमारियों का मुक़ाबला करता है। इसके सक्रिय तत्त्व 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' सर्दी-ज़ुकाम में आराम पहुँचाते हैं, लोहा तथा दूसरे बलवर्धक तत्त्व, जो तथा प्लीहा के सत्त्व भूख बढ़ाते हैं, फिरसे शक्ति पैदा करते हैं तथा शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं।

बारहों महीने रोग-निरोधक शक्ति क़ायम रखने के लिए लाल लेबलवाला वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड नियमित रूप से पीजिए।

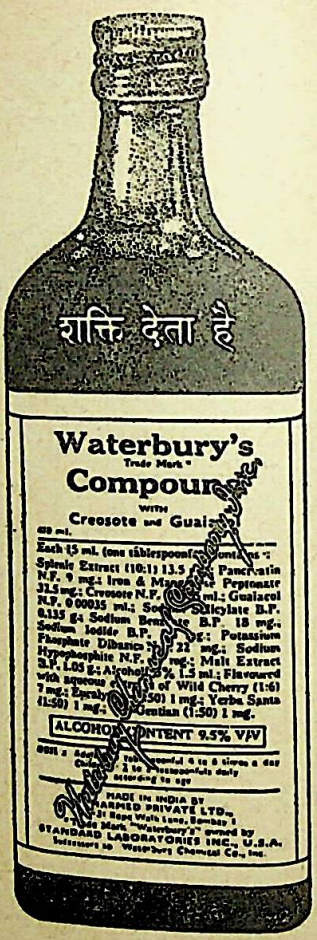

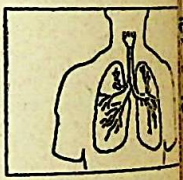

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड मौजूद 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' श्वास-तंत्र को रोग से मुक्त रखते हैं और कफ़ निकालते हैं, फेफड़ों को रखते हैं, खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने में मदद करते हैं और रोग को दुबारा फैलने से रोकते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने की शक्ति देता है

वॉर्नर-हिन्दुस्तान लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को न चला होता, तो इस समय तक संभवतः वे इस दुनिया से विदा ले चुके होते।

भुनी हुई मछली की लाजवाब खुशबू पूरे कमरे में फैल गयी। इस खुशबू के कारण पहले तो मिसेस करटेंटी को एक निहायत प्यारा सपना आया और उसके बाद उनकी नींद टूट गयी। आंखें खोलते ही मिस्टर करटेंटी को अपने पर झुकते पाया। वे बुदबुदा रहे थे—"कुछ तो होश रखा करो। ठंड इतनी तेज है और कंबल तुम्हारे कंधों से नीचे सरका जा रहा है।"

उनकी पत्नी ने जवरन मुस्कराकर कंबल ठीक किया, फिर डूबते स्वर में पूछा—"तो कल हम दोनों लांगशा चल रहे हैं न, हैरिएट के यहां ?"

"नहीं !"

"मैं जाऊंगी। तुम न चाहो, न चलो।" मिसेस करटेंटी ने गहरी सांस ली।

"तुम भी नहीं जाओगी।" मिस्टर करटेंटी उत्तेजना से लगभग चिल्ला उठे।

श्चील के एसिड की शीशी घर में प्रवेश करने से पूर्व ही वे एक नाली में पटककर तोड़ चुके थे। उन्होंने अपनी पत्नी को बुरी तरह चौंकाते हुए उसे बांहों में भर लिया और चूमकर कहा – "मेरी नौकरी लग गयी है। अब बोलो ?"

आदान-प्रदान

सूर्य समुद्र से जल ग्रहण करता है; किंतु उसे वर्षा-रूप में लौटाने के लिए। तुम भी आदान-प्रदान के एक यंत्र मात्र हो; तुम ग्रहण करते हो, ताकि तुम दे सको। अतः बदले में कुछ मत मांगो; क्योंकि तुम जितना अधिक दोगे, उतना ही अधिक पाओगे। तुम जितनी जल्दी इस कमरे की हवा खाली करोगे, उतनी ही शीघ्र बाहरी हवा इसे भर देगी। किंतु यदि तुम सब दरवाजों और छिद्रों को बंद कर दोगे, तब जो अंदर है, वह अंदर रह जायेगी; किंतु जो बाहर है, वह कभी अंदर न आ सकेगी। परिणामस्वरूप अंदर की हवा स्थिर होकर गंदी होती जायेगी और विषाक्त बन जायेगी। नदी का प्रवाह सतत समुद्र में गिर रहा है और सतत भरता जा रहा है। उसका समुद्र में गिरने का द्वार अवरुद्ध मत करो। जिस क्षण तुम यह करोगे, मृत्यु तुम्हें पकड़ लेगी।

—स्वामी विवेकानंद

मानवता के लिए

रूसी, अमरीकी, अथवा साम्यवादी या पूंजीवादी होने से पहले हम सब मानव हैं। यदि मनुष्य इस या उस 'वाद' के मोह-वश होकर, मानव-जाति की ही हत्या करता है, तो तुम्हारे इन प्रिय वादों की स्मृति भी शेष नहीं रह जायेगी। आप अपना सिर गैस के चूल्हे में डालना चाहें, तो भले ही डाल दें; लेकिन एक ऐसे अणु-युद्ध का सूत्र-पात न करें, जो आपके और मेरे, दोनों के बेटे-पोतों की हत्या कर दे। और आगामी पीढ़ियों को इस धरती पर जन्म लेने का अवसर ही न दे। उनकी इच्छाओं का खून करने का आपको क्या अधिकार है, जिन्होंने अभी इस धरती पर जन्म ही नहीं लिया है ?

—आर्नाल्ड टायनबी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है—
यह तो जीवन-साथी है।

बारह साल बीत चुके हैं और हर्क्युलिस आज भी
और अब पुत्र की सेवा में उसी विश्वसनीयता से
तत्पर है।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, वह
जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद
बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन हो
आपकी तरक्की होगी··· आपके बच्चे बड़े होंगे,
शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया
लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके
रहेगा।

टी. आई. सायकिल्स आफ इण्डिया अम्बत्तूर,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या आपको सिर-दर्द होता है?

केशवदेव मिश्र 'कमल'

प्रायः लोग शिकायत किया करते हैं कि उन्हें सिर-दर्द रहता है। कभी पीड़ा कम हो जाती है, तो कभी बढ़ जाती है। हमारे शरीर में कितने ही ऐसे छोटे-छोटे कल-पुर्जे हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। इन पुर्जों का एक छोटा-सा हिस्सा भी खराब हो जाने से समस्त शरीर का काम रुक जाता है। शरीर के किसी हिस्से की खराबी की सूचना हमें सिर-दर्द के रूप में मिलती है। यदि इस ओर हम ध्यान न दें, तो खराबी अधिक बढ़ जाती है और हम काम करने के योग्य नहीं रहते। वास्तव में सिर-दर्द कोई स्वतंत्र बीमारी नहीं है, अपितु किसी अन्य बड़ी बीमारी के प्रारंभ होने का संकेत-मात्र है। शरीर के प्रत्येक हिस्से—जैसे आंख, कान, पेट आदि—का संबंध सिर से है। इन अंगों में से किसी में भी कोई गड़बड़ी हुई नहीं कि सिर-दर्द हो गया।

स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने के कारण ही हम अस्वस्थ हो जाते हैं। हम जब आवश्यकता से अधिक भोजन कर लेते हैं, तो उसका जो भाग हजम होता है, वह मल के रूप में निकल जाता है; किंतु जो हिस्सा हजम नहीं होता, वह आंतों में एक प्रकार का विष पैदा करता है, जो बड़ा भयानक और जहरीला होता है। इस विष का पता कब्ज से लगता है। याने सिर-दर्द का एक कारण शरीर में गंदगी या विषैले पदार्थों का एकत्र होना है।

कभी-कभी सामर्थ्य से अधिक कार्य करने पर भी सिर दर्द होने लगता है। हमारे शरीर में प्रति क्षण मैल एकत्र होता रहता है। उसे जलाकर शरीर को स्वस्थ रखना लाल रंग के रक्त-कोषों का काम है। यदि मैल उस परिमाण से अधिक एकत्र होने लगे, जिस परिमाण में लाल कोष उसे जला सकते हैं, तो सिर-दर्द होने लगेगा।

कभी स्नायविक विकार, जैसे शोक, अनिद्रा, उत्तेजना से, कभी पित्ताधिक्य और कभी आंखों पर अधिक भार पड़ने से भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

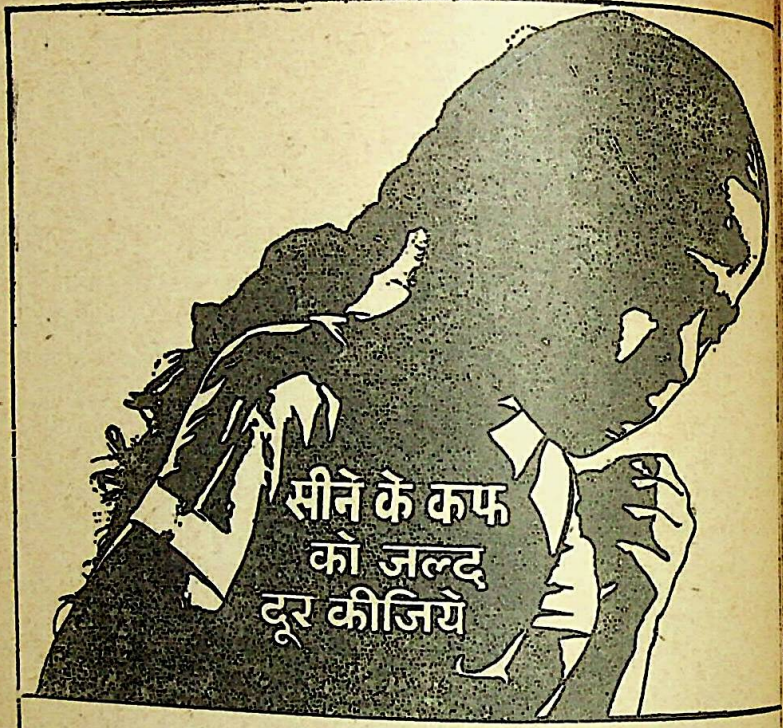

अमृतांजन

मलिये और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। **अमृतांजन** मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक वार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। **अमृतांजन** की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

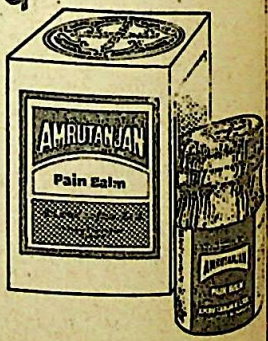

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2818A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर-दर्द शुरू हो होता है।

यदि अनिद्रा के कारण सिर-दर्द होता हो, तो पूरी नींद सोना; शोकादि कारणों से होता हो, तो उन्हें भुलाने की कोशिश करना और उत्तेजना के कारण होता हो, तो उसे कम कर देना आवश्यक है।

यदि पित्त की अधिकता से सिर-दर्द होता है, तो भोजन पर ध्यान देने से सिर-दर्द जाता रहेगा। नींबू के रस को जल में मिलाकर या किसी पतले खार का पानी पीने से सिर-दर्द दूर हो जाने की बहुत संभावना रहती है।

आंख की खराबी से पैदा हुए सिर-दर्द के लिए चश्मे का उपयोग ही एकमात्र उपचार है।

सिर-दर्द का एक उपाय शिथिलीकरण का अभ्यास करना भी है। रोग की अवस्था वह काल होता है, जबकि स्नायविक संस्थान उत्तेजित रहते हैं। हमें जीवन में अनेक प्रकार की चिंताओं का सामना करना पड़ता है, जिससे अनेक प्रकार के उद्वेगों की उत्पत्ति हो जाती है। इनसे पहले तो अपच की व्याधि पैदा होती है और उसके बाद मांसपेशियों और रक्त-प्रवाह में भी व्यतिक्रम पैदा हो जाता है। इससे नाड़ी-संस्थान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। शिथिलीकरण इसका श्रेष्ठ उपाय है। शरीर को ढीला छोड़ देना, लेटे-लेटे या बैठे-बैठे गहरी सांस लेना, मन और मस्तिष्क को सांसारिक द्वंद्वों से अलग रखना शिथिलीकरण कहलाता है।

१९६५

सत्य-असत्य

धुले कपड़े पहने देखकर,
अभद्र मनुष्य मुझ पर
कीचड़ उछाला करते हैं,
म उन गंदे कपड़ों को
धोबी से धुलाकर
फिर पहन लेता हूं!

मैं देखता हूं
ईर्ष्या-द्वेष-वैमनस्य का कीचड़
सत्य के परिधान पर
टिक नहीं पाता है।
मुझे इस बात का
बड़ा दुःख है कि
इन लोगों की मेहनत
व्यर्थ जाती है। —मदनमोहन परिहार

पुरानी कहावत है—"आंत भारी, तो माथ भारी।" यदि पेट साफ रहे, तो सिर-दर्द कभी न हो। यदि आपको कब्ज रहता है, तो भोजन कम कर दीजिय और गरिष्ठ भोजन त्याग दीजिये

सिर-दर्द की तेजी को शांत करने के लिए 'एस्प्रो' या इर्गेटेमाइन टार्टरेट' जसी दवाइयां तो लीजिये ही नहीं। रोग को दबाने में स्नायु तथा नाड़ियों के साथ इन दवाओं का कोई संबंध नहीं है। ये दवा-

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इयां रोग को नहीं निकालतीं, वरन रोग के उभरे लक्षणों को शांत करके रोगी की चेतना को सुप्त कर देती हैं। शरीर में रोग रहता है; पर उसकी प्रतीति नहीं होती। इन दवाइयों से दिमाग के कमजोर होने का भी यही कारण है।

सिर-दर्द को स्थायी रूप से दूर करने के लिए पहले तो शक्ति के अनुसार दो-तीन दिन केवल फल खाकर रहिये और रोज एनिमा लेते रहिये। चौथे दिन सवेरे फल, दोपहर को चोकर समेत आटे की रोटी, कुछ पकी और कुछ कच्ची तरकारियां लीजिये। शाम को फल या तरकारियां लें। रोटी शुरू करने पर सवेरे और शाम को कटि-स्नान लेकर टहलने जायें। इतनी दूर जायें कि वापस आते-आते हल्की थकान हो जाये। कटि-स्नान ५ मिनिट से करके हर दूसरे दिन एक मिनिट बढ़ाते १० मिनिट का कर लीजिये। कटि-लेते हुए जब दस दिन हो जायें, तब कटि-स्नान के बदले मेहन-स्नान कीजिये। इसे १० मिनिट से शुरू करके एक मिनिट बढ़ाते हुए १५ मिनिट का लीजिये। मेहन-स्नान शुरू करने पर को फल के साथ आधा सेर गाय का दूध लेना शुरू कीजिये।

इस प्रकार बीस दिन होने पर शाम दोनों वक्त पंद्रह-पंद्रह मिनिट मेहन-स्नान लीजिये और उसे एक तक जारी रखिये।

इस नैसर्गिक उपचार से आप लिए सिर-दर्द से छुटकारा पा जायेंगे।

★

एक आधुनिक फार्म देखते हुए पत्नी ने आश्चर्य से कहा—"कितनी अजीब बात गायें अपने आप बाहर जाती हैं और लौटकर ठीक अपनी जगह पर खड़ी हो जाती हैं।"

उसका पति मुस्कराकर बोला—"वाह, इसमें ताज्जुब की क्या बात है? हरएक खूंटे के पास उसके नाम का बोर्ड जो लगा है।"

अध्यापक (विद्यार्थियों से)—"आज मैं आपको दस मिनिट पहले छुट्टी दे रहा कृपया चुपचाप बाहर आइये। कहीं ऐसा न हो कि और क्लासों के सोये विद्यार्थी जाग जा

★

दुनिया की इस सराय में हमने कुछ क्षणों के लिए आश्रय लिया है। हम लोगों कुछ लोग ब्रेकफास्ट खाकर ही चले जायेंगे। कुछ लोग लंच खत्म करते ही चले जायेंगे का अंधेरा पार करके जब हम रात में डिनर-टेबल पर इकट्ठे होंगे, तो कितने ही परिचि लोगों को गायब पायेंगे। इतने लोगों में से दो-चार व्यक्ति ही वहां मिल सकेंगे। मगर वाह मत करो, दुःख मत करो। जो जितना पहले चला जायेगा, उसे उतना ही कम चुकाना पड़ेगा।

—शंकर (

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानों में रखा कुतुबनुमा

जिसे स्वयं विधाता ने हमारे कानों के भीतर रखा है।

एस० मार्कोव

काकेशियाई कुत्ते त्साब्ला का किस्सा जार्जिया में बहुतों ने सुना होगा। यह चरवाहा कुत्ता तिब्लिसी के निकट रहता था। उसका दोस्त, रहनुमा और शिक्षक सभी कुछ था सांद्रो नाम का एक बालक, जो मिडिल स्कूल का विद्यार्थी था। सांद्रो का पिता एक पहाड़ी सामूहिक कृषि-फार्म का प्रतिनिधि था। एक दिन उसे आदेश मिला कि अपना कुत्ता पहाड़ी गड़रियों को सौंप दो। बात यह है कि काकेशिया के चरवाहे कुत्ते अकेले ही पूरे रेवड़ की रखवाली कर लेते हैं।

और त्साब्ला को लेने के लिए गड़रियों का मुखिया आ पहुंचा। कुत्ते को बालक से अलग करने में बड़ी दिक्कत हुई। जैसे-तैसे उसे ट्रक में डालकर पहाड़ों पर ले जाया गया। मंजिल जब करीब ही थी, त्साब्ला किसी तरह रस्सा तुड़ाकर भाग निकलने में कामयाब हो गया।

त्साब्ला और उसके प्यारे दोस्त सांद्रो के बीच कई ऊंचे पहाड़ खड़े थे। पहाड़ों में घाटियां थीं। घाटियों में वसंत की बाढ़ से भरे हुए नदी-नाले बह रहे थे। नदी-नालों के तट पर गांव थे, जिनके झबरे कुत्ते अजनबियों पर यमदूतों की तरह झपट पड़ते थे।

बीसों दिशाएं खुली पड़ी थीं और त्साब्ला तो बंद ट्रक में आया था, सो रास्ता उसका बिलकुल अनदेखा था। नाक, कान, जीभ व शरीर का गतियंत्र भी त्साब्ला की मदद नहीं कर सकते थे; क्योंकि वह चलकर नहीं आया था। उसे तो ट्रक में डालकर लाया गया था।

फिर भी दो दिन बाद क्षत-विक्षत, भूखा-प्यासा त्साब्ला घर की बाड़ फांदकर सांद्रो की गोद में आ गया। कुत्ते को वापस लौटने में जितना समय लगा, उससे पता चलता था कि वह शुरू से ही सही दिशा में चल पड़ा होगा, और नाक की सीध में चलकर घर लौटा होगा।

पालतू पशु दिशा कैसे पहचानते हैं? सदियों से यह सवाल आदमी को चकित किये हुए है। किंतु अब पशुओं ने स्वयं अपने व्यवहार द्वारा इसका जवाब दिया है; और यह उत्तर बहुत स्पष्ट है।

उनसे यह उत्तर दिलवाया है आइ० एस० बेरिताश्विली ने। वे रूस के एक प्रति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ष्ठित शरीरक्रिया-शास्त्री हैं और जार्जिया की विज्ञान अकादमी के शरीरक्रिया-विद्यालय में पढ़ाते हैं। वहां की प्रयोगशाला में उन्होंने अनेक परीक्षण किये हैं।

प्रयोगशाला के लंबे कक्ष के छोर पर दीवार के साथ एक पिंजरा है। प्रयोग करनेवाले वैज्ञानिक के संकेत पर पिंजरा अपने आप खुल जाता है। भीतर से लाल बालोंवाला एक बिलाव ल्योवा बाहर निकलता है। उसकी आंखों पर नकाब लगा रहता है, जिसे रोशनी पार नहीं कर सकती।

ल्योवा बाहर निकलकर, पंजे फैलाकर अंगड़ाई लेता है। फिर सीधे बढ़ता है कक्ष के दूसरे सिरे पर रखी हुई खाने की तश्तरी की ओर। यह न भूलिये कि उसकी आंखों पर नकाब है और वह देख नहीं सकता। फिर भी तश्तरी तक पहुंचने के लिए वह सबसे नजदीकी रास्ता चुनता है और राह में जो अड़चनें आयें, उन्हें बिना छुए सफाई से निकल जाता है।

बेशक प्रयोग शुरू करने के पूर्व ल्योवा को कुछ ट्रेनिंग मिली थी। उसे नकाब का अभ्यस्त होने में भी कुछ समय लगा था। पहली बार जब उसे पिंजरे से तश्तरी तक ले जाया गया, नकाब नहीं पहनाया गया था और उसने देख लिया था कि तश्तरी में क्या रखा है। लेकिन इस बार तो वह बिना कुछ देखे ही अपनी दिशा निर्धारित कर रहा था।

इस सीधे परीक्षण से पशु-मनोविज्ञान संबंधी कई प्रचलित भ्रमों का खंडन हो जाता है। आंखों की सहायता के बि तश्तरी तक का रास्ता चुनने और तय के लिए बिलाव को कमरे के सारे दृ प्रतिबिंब अपने मन में लाना होगा और कदम-कदम पर यह भी कल्पना करनी कि इस समय वह कहां पर है और की शेष सब चीजें उससे किस ओर कि दूरी पर हैं : दूसरे शब्दों में कहें, तो कि में प्रत्यक्षानुभव ही नहीं, बल्कि मान धारणा (कन्सेप्शन) के आधार पर भी करने की क्षमता होनी चाहिये।

तो क्या इससे यह परिणाम नहीं नि लता कि पशु भी विचार कर सकते हैं? 'विचार' से हमारा मतलब स्थूल प्राथमिक ढंग के विचार से है।

लेकिन इस प्रयोग से हमें दिशाबोध प्रक्रिया की गुत्थी का आंशिक उत्तर मिलता है। हां, पशु चारों ओर की के मानसिक चित्र के आधार पर दिशा चान सकते हैं। लेकिन ये चित्र देखी चीजों के चित्र होते हैं। पर हमें तो पता लगाना है कि क्या पशु ज्ञानेंद्रियों मदद के बिना भी दिशा पहचान सकते

एक छोटा-सा सुंदर काला कुत्ता वि प्रयोगशाला में लाया जाता है। उसे सफेद मुखौटा पहना दिया गया है, कि से उसे कुछ नहीं दिखाई देता, और तो रोशनी भी नहीं सूझती। जिल्डा पहली बार इस कमरे में लाया गया है। लिह इस कमरे की किसी चीज का चित्र उ मन में नहीं है। प्रयोगशाला की एक मेज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

दर्द बसाद

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन
खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की ज़रूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

83 DOL 2A HIN

खास जनता

किरासन कुकर

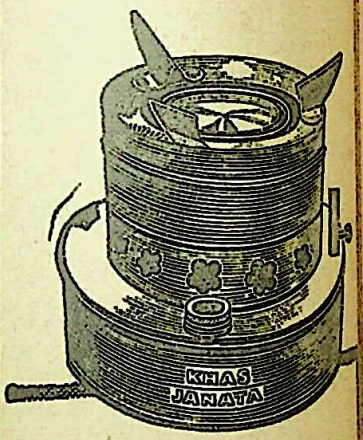

- न गंदगीं, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA, GM.35

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्मचारी उसे गोद में लेकर थपथपाते हुए आती है और पिंजरे में बंद कर देती है।

थोड़ी देर बाद वह महिला पिंजरे का दरवाजा खोलकर उसे फिर गोद में उठा लेती है और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाते हुए अंत में उसे एक तश्तरी के पास ले जाती है। तश्तरी में मांस का टुकड़ा रखा है। जिल्डा उसमें मुंह मारने की कोशिश करता है; लेकिन चूक जाता है। महिला उसे इसका मौका नहीं देती और वापस लाकर फिर पिंजरे में बंद कर देती है।

लौटती बार भी वह चक्कर लगाकर पिंजरे पर आती है। जिल्डा गोद में सवार होकर आता और लौटता है, चलकर नहीं। इसलिए मांस-पेशियों, गतियंत्र या स्पर्श से उसे मदद मिलने की संभावना नहीं है। कहीं गंध उसकी मदद न करे, इसका भी ध्यान रखा गया है। प्रयोगशाला के फर्श पर बेंजाइन रगड़ दी गयी है।

कानों से कोई सहायता मिले, इसकी भी संभावना नहीं है। परीक्षण करनेवाले सारे कर्मचारी दूसरे कमरे में चले गये हैं और प्रयोगशाला एकदम निःशब्द है।

फिर सरसराहट होती है और पिंजरे का दरवाजा खुलता है। जिल्डा भीतर से निकलकर फर्श पर उतरता है और पंजे आगे बढ़ाता हुआ भोजन की तश्तरी की तरफ बढ़ चलता है। हैरत की बात यह है कि वह बिलकुल सीधा चलकर वहां पहुंचता है।

यहां हमने जो देखा है, उसे त्साब्ला के

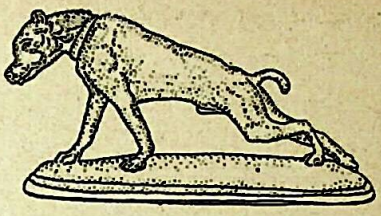

घर लौटने की राह का छोटा परीक्षणात्मक संस्करण मान सकते हैं। दोनों की दूरियां भिन्न हैं, उद्देश्य में भी अंतर है। लेकिन दोनों ही मामलों में पशु को उसकी ज्ञानेंद्रियों से कोई मदद नहीं मिलती।

लेकिन सबसे बड़ा चमत्कार तो अभी होना बाकी था। जिल्डा पर वही परीक्षण फिर किया गया। इस बार कुत्ता एकदम उद्भ्रांत-सा प्रतीत हुआ। वह कमरे में इधर-उधर भटकता रहा, मेज-कुर्सी व दीवारों से टकराता रहा। बीच-बीच में वह रोने लगता, मुखौटा नोच डालने की चेष्टा भी करता, जबकि पिछली बार उसने ऐसा दिखाया था, मानो मुखौटे से उसे देखने में जरा भी अड़चन नहीं हो रही थी।

तो इस बार क्या फर्क पड़ गया था? जिल्डा का आपरेशन करके उसके शरीर में से वह अवयव निकाल दिया गया था, जो दिशाबोध कराता है।

मनुष्य और अन्य ऊंचे दर्जे के विकसित प्राणियों के भीतरी कान का एक अंग 'लैबिरिंथ रिसेप्टर' कहलाता है, जो अनेक नलियों और डचौढ़ियों से मिलकर बना होता है। अब तक माना जाता था कि यह भाग अवकाश (स्पेस) में शरीर के अवस्थान तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संतुलन का बोध कराता है।

आइ० एस० बेरिताश्विली के परीक्षणों से अब सिद्ध हुआ है कि यह अवयव एक प्रकार का कुतुबनुमा है और शरीर की समस्त दिशानुभूति का आधारभूत इंद्रिय है। जब मनुष्य-शरीर को अपनी स्थिति-गति का और कोई आधार ज्ञात नहीं होता, तब यह अवयव काम करता है। वैसे हमेशा यह आंख या कान के साथ उसके सहकारी के रूप में कार्य किया करता है।

तीन साल पहले मेरी मुलाकात एक लड़के से हुई थी। एक संस्था के पास हमारी कार बिगड़ गयी थी और इस लड़के ने वहां से हमें एक व्यापारी संस्था के अफसर के दफ्तर का रास्ता दिखाया था। बड़ा लंबा और टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता था; कई गलियारे और जीने पार करने पड़ते थे।

लड़का हमसे दो कदम आगे चल रहा था और यूरी गागारिन की अंतरिक्ष-यात्रा के विषय में तरह-तरह के सवाल पूछता जा रहा था। गागारिन की यात्रा अभी ताजी घटना थी। बाद में हमें पता चला कि वह बालक तोल्या क्रावचेंको जन्म से अंधा था और हम जिस इमारत में थे, वह अंधों का स्कूल था।

बेरिताश्विली को बच्चों के साथ परीक्षण करते देखकर मुझे तीन साल पहले की यह घटना याद हो आयी। वे बहरे और गूंगे बच्चे, जिनके भीतरी कान का यह भाग 'लैबिरिंथ रिसेप्टर' बिलकुल बेकार हो गया हो, आंखों की मदद के बिना दिशा प्राप्त करने में सर्वथा असमर्थ रह हैं। इसके विपरीत, अंधों का 'लैबि रिसेप्टर' बहुत ही तीक्ष्ण और विक होता है।

इसका यह मतलब हुआ कि 'लैबि रिसेप्टर' को ट्रेनिंग दी जा सकती है उसके संबंध में प्रयोग भी करके देखे सकते हैं। किंतु सबसे महत्व की बात हमें दिशाबोध का अवयव ज्ञात हो गया इसका बहुत महत्व है। और बातों सही, अंतरिक्ष-यात्रियों को लोकांतर रहने की शिक्षा देने में तो इसका उप सफलता से हो ही सकता है।

लेकिन विज्ञान इसकी अनुमति नहीं कि इस उत्साहवर्धक विचार के साथ यह समाप्त करूं। मुझे आपको फिर से दिलाना होगा कि ये परीक्षण शाला में गये थे, जिसमें फासले कुछ ही गज के किंतु त्साब्ला की यात्रा जैसे सैकड़ों के सफर के वाकये भी प्रत्यक्ष गये हैं।

मेरा विचार है कि इन दोनों तरह मामलों में अंतर दिशाबोध की प्रक्रिया नहीं, बल्कि उसके उद्देश्य और प्रेरणा का प्रयोगशाला के प्राणी पिंजरे में रखे हुए और मांस के टुकड़े के लिए उन्होंने कमर पार किया, जबकि त्साब्ला को कोई ही चीज खींचकर तिब्लिसी वापस आयी।—'लितरेतुरान्या गेजेटा' से साभार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

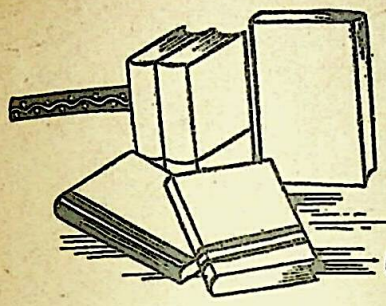

नयी पुस्तकें

रेखा

लेखक : भगवतीचरण वर्मा; प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन दिल्ली; पृष्ठसंख्या : ३५३; मूल्य ९ रुपये ।

भावना के वशीभूत होकर गलत साथी चुनने और यौन-संबंध स्थापित करने से जीवन में पीड़ा और पश्चात्ताप ही हाथ आते हैं– इस तथ्य का विशद विवेचन भगवती बाबू ने अपने इस उपन्यास में किया है ।

रेखा भारद्वाज श्रद्धा-भक्ति में विभोर होकर प्रोफेसर डा० प्रभा शंकर से विवाह कर लेती है । वह २१ वर्ष की है और प्रोफेसर ५० वर्ष के । उसका जीवन जबकि विकास की ओर उन्मुख है, प्रोफेसर का ह्रास की ओर । मन से वह प्रोफेसर के प्रति निष्ठावान रही आती है; किंतु तन से नहीं रह पाती । आखिर शरीर की सहज-स्वाभाविक मांग को वह ज्यादा दिन दबाये नहीं रख पाती और पति के अतिरिक्त एक-एक कर पांच अन्य पुरुष उसके जीवन में आते हैं, जिन्हें वह अपना तन देने को व्याकुल हो उठती है । इससे तन तो तृप्त होता है; पर मन ग्लानि और घुटन में ग्रस्त रहता है ।

अंत में वह अपने वृद्ध पति के सहकारी डा० योगेंद्रनाथ मिश्र का सहारा लेती है । वे दोनों पति-पत्नी के रूप में अमरीका जाकर रहने की योजना बनाते हैं । भावना और कर्तव्य के ऊहापोह में फंसी हुई रेखा अपने इस प्रेमी के साथ नहीं जा पाती ।

प्रोफेसर प्रभा शंकर ने भी भावना के वशीभूत होकर जीवन में कम गलतियां नहीं की थीं । देवकी उन्हें प्रेम करती थी; किंतु वह सदा उनकी वासना की तृप्ति का साधन रही । वह बूढ़ी हो चली, तो उन्होंने रेखा से विवाह कर लिया । वे रेखा के अमित रूप और यौवन के कारण उसके प्रति वासना में अंधे हो रहे थे और रेखा उनकी विद्वत्ता और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के कारण उनके प्रति भक्ति-भावना में अंधी हो उठी थी । वह तो खैर, वय के कारण अबोध थी; पर विद्वान और वयोवृद्ध होने के कारण डा०प्रभा शंकर तो पर्याप्त अनुभवी थे–मगर उन्होंने बुढ़ापे में भी ब्याह रचाने में दिलचस्पी ली और अपना और रेखा का जीवन अभिशप्त कर दिया । दोनों को दुःखी जीवन का दारुण दंड भोगना पड़ा । इसमें प्रभा

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्योति

बेजोड़...

जल-निकासी के पंपो में आप की बेह-तरीन पसंद यानी ज्योति 'यूनिबिल्ट' पंप। इसे चाहे जिस कसौटी पर उतार लें...यह निर्माण-कला में श्रेष्ठ, कार्यशक्ति में उत्कृष्ट और बिजली के बिल में बहुत ही किफ़ायती है। साइज : १"×१" से ६" ×६" कार्यशक्ति : घंटे में ५८,००० गैलन तक, चढ़ाव : २१० फुट तक

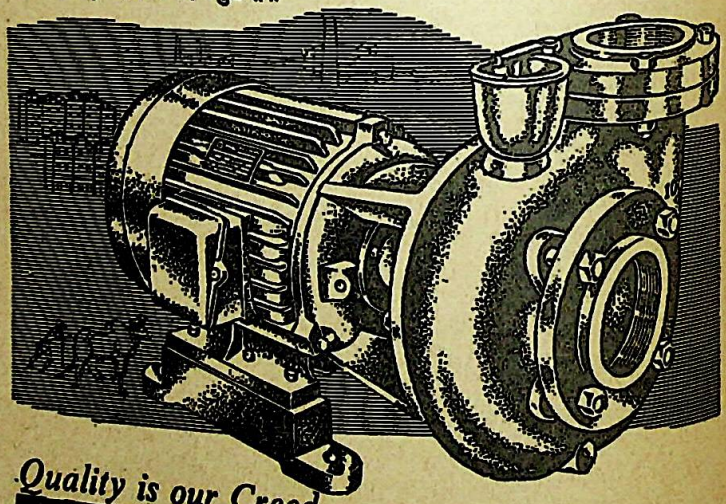

Quality is our Creed

ज्योति लिमिटेड, बड़ौदा-३

JY-865-HI EVEREST

शाखाएँ : बंबई, नयी दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, जयपुर, भोपाल और सिकंदराबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंकर की मृत्यु हो गयी।

इस कथा-सूत्र के आधार पर लेखक ने मानव-मन की वास्तविकता को बड़ी परिपक्वता के साथ उभार-उरेह कर पाठकों के समक्ष रखा है। अपनी अनुभवपरक शैली में उसने मध्यवर्गीय जीवन की वासनाजन्य कुंठाओं, लालसा और लिप्साओं का बखिया उधेड़कर रख दिया है।

उपन्यास में जहां रेखा-जैसी पात्रा है, जो शरीर के धर्म और आत्मा के धर्म को अलग-अलग मानती है, वहां ज्ञानवती-जैसी पात्रा भी है, जो शिवेंद्र धीर से, उसके नपुंसक होते हुए भी, विवाह करती है। उसकी मान्यता है कि यौन-संबंध और वासना की तृप्ति ही शरीर का एकमात्र धर्म नहीं है। रेखा और ज्ञान दोनों ही अपनी-अपनी मान्यताओं को लेकर वेदना की वह्नि में जलती रहती हैं, यद्यपि ज्ञानवती अपेक्षाकृत कम।

डा० योगेंद्रनाथ मिश्र शारीरिक संबंध को आत्मिक संबंध का एक भाग मानते हैं। उनके अनुसार प्रेम—आत्मा और शरीर—दोनों के समान भाव से एक-दूसरे में लय होने की प्रक्रिया का नाम है।

इस कथा में पाठकों को सोचने और समझने का काफी मसाला है। इस दृष्टि से यह कृति लेखक की एक विशिष्ट उपलब्धि मानी जायेगी।

यत्र-तत्र भाषा और प्रूफ की भूलें रह गयी हैं। एकत्र को एकत्रित और सिवा को कहीं-कहीं सिवाय लिखा गया है। रेखा की जगह पृष्ठ १७५ पर रत्ना छपा है। कवर कुरूप है। प्रकाशक राजकमल अपने प्रकाशनों का मूल्य प्रायः कुछ अधिक रखते हैं।

महादेवी अभिनंदन ग्रंथ

संपादक : देवदत्त शास्त्री; प्रकाशक : भारती परिषद्, प्रयाग; पृष्ठसंख्या : ८६०।

हिन्दी की शीर्षस्थ कवयित्री महादेवी वर्मा के सम्मान में समर्पित यह ग्रंथ अनेक लेखकों के सृजन और श्रम का उपहार है।

आरंभ में महादेवीजी से संबंधित चित्र हैं, जिनमें उनका जीवन मुखरित है। कलेवर का एक तिहाई भाग (२९० पृष्ठ) कवयित्री के काव्य के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालता है। अगले खंड (१०६ पृष्ठ) में उनके समस्त साहित्यिक कृतित्व पर विवेचन है, तीसरे खंड (११४ पृष्ठ) में विभिन्न भारतीय भाषाओं की कवयित्रियों के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है और चौथे खंड में भारतीय भाषाओं का संक्षिप्त इतिहास है।

इस विराट् आयोजन में कुछ लेखक अत्यंत प्रतिष्ठित और अपने विषय के अधिकारी विद्वान हैं। इस प्रकार ग्रंथ में हमें बहुत-सी उपयोगी सामग्री एक स्थान पर मिल जाती है। आयोजकों का यह प्रयास स्वागतार्ह है। यदि संपादन और प्रूफ शोधन में कुछ और अधिक सतर्कता बरती जाती, तो ग्रंथ की शोभा और पाठक का संतोष और बढ़ जाता। आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है और ग्रंथ के गौरवानुकूल है। —आलोक शीशोदिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Jyoti

ज्योति फैशन के जेवर

सर्वत्र ऊंची पसंद की महिलाओं के प्रिय...

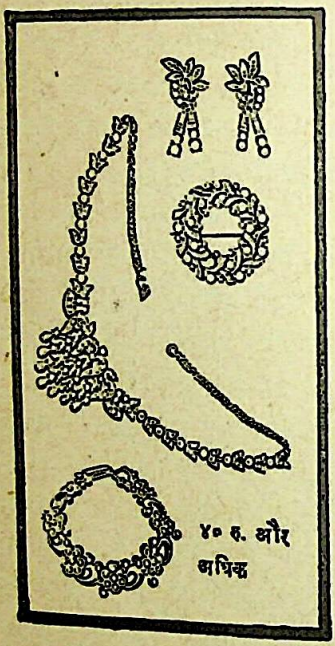

* बेजोड़ किस्म - डिजाइन और कारीगरी में बेमिसाल
* मनपसंद चुनाव के लिए विविध सुंदर डिजाइन
* नगीनेदार * प्लेटिनम और सुनहरी रंगों में
* फैशन के जेवरों के मरताज

ज्योति - आपके लिए फैशनका संदेश है

सभी मशहूर स्टोरों में सुलभ

भारत में बनानेवाले

(सनशाइन इंडस्ट्रीज, बम्बई - १०)

स्टाकिस्ट्स

दि नेशनल स्टोर्स, १२ न्यू कटलरी मार्केट बंबई २; मेसर्स शृंगार, विद्युत, गिरगाम रोड, बंबई २; मेसर्स कृष्णमुरारी एंड कं०, ९८/३, भोईवाड़ा, भूलेश्वर, बंबई २; दि शारदा मैन्यूफैक्चरर्स, ३ भोईवाड़ा, भूलेश्वर, बंबई २; दि लाहोर जनरल पोस्ट आफिस लेन, सदर बाजार, दिल्ली, मेसर्स जगदीश स्टोर्स, शाप नं ७२, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता १; मेसर्स जतीन डायमंड कं० ५८ एन० एस० रोड, मद्रास-१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुसुम अगस्त

प्रवचन-कीर्तन के अंत में गुरु ने शिष्य को प्रसाद बांटने के लिए पुकारा। शिष्य प्रसन्नमन प्रसाद की थाली लेकर भक्तों की ओर दो कदम बढ़ा; किंतु रुककर गुरु से पूछा–"गुरुदेव, प्रसाद इन्सान की तरह बांटूं या भगवान की तरह ?"

गुरुदेव परम तृप्ति के स्वर में बोले–"भगवान की तरह बांटो बेटा !"

और शिष्य ने दो ही क्षणों में थाली-भर प्रसाद समाप्त कर दिया—किसी को सेर-भर दे दिया, किसी को रत्ती-भर। किसी को मिला ही नहीं, किसी को देकर छीन लिया। किसी के करीब फेंक दिया और किसी को एक मुट्ठी दिया; तो किसी को नहीं। गुरु यह सारा व्यापार देखते रहे। शिष्य निवृत्त होकर गुरु के निकट पहुंचा, तो वे गुमसुम बैठे–"क्यों बेटा, यह क्या किया तूने ? यह तो अंधेर है ..... ।"

शिष्य बीच में ही बोला–"वाह गुरुदेव, आपने ही तो कहा था, भगवान की तरह बांटना प्रसाद। मैंने भी वैसे ही किया, जैसे भगवान करता है–किसी को छप्पर फाड़कर देता है, तो कोई दाने-दाने को मोहताज है; किसी को इतना देता है कि घर में रखने को जगह ही नहीं होती और किसी को घर ही नहीं देता ..... ।"

अजब तेरी दुनिया !

एक उत्तर भारतीय मद्रास के किसी सैलून में बाल कटवाने पहुंचा। उसके कुर्सी पर बैठने पर हाथ में कैंची इत्यादि संभालकर नाई ने पूछा–" 'हाफ क्रोप' या 'फुल क्रोप' ?"

वह व्यक्ति घबराया–"यह 'हाफ क्रोप-' 'फुल क्रोप' क्या बला है, भाई ? "

नाई ने तुरंत दो चित्र उसे दिखाये। एक चित्र में सिर पूरा मुंड़ा हुआ था–यानी फुल क्रोप। और दूसरे में शिखा के चारों ओर केशों के एक वृत्त को छोड़कर शेष सिर मुंड़ा हुआ था – अर्थात् हाफ क्रोप !"

चतुर नागरिक !

सुदूर गांवों के भोले ग्रामीण पान से परिचित नहीं थे तब। जब गांव के निकट से कोई सड़क बनी, तो एक पनवाड़ी ने पान-तंबाकू आदि की दुकान भी गांव के पास खोल ली। एक जिज्ञासु ग्रामीण पान की दुकान पर पहुंचा। बड़े चाव से पान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगवाकर उसने पत्ता अच्छी तरह चाटा, और उसे फेंककर थूकता हुआ चल पड़ा। पनवाड़ी से न रहा गया, वह बोला– "यह क्या भाई ? पान फेंक क्यों दिया, अच्छा नहीं लगा क्या ?

"फेंकता नहीं, तो और क्या करता ? जो लाल-सफेद पोता था वह मैंने चाट लिया। मैं कोई बकरी थोड़े ही हूं, जो पत्ता भी खा जाता ?"

सूझ-भरा उपहार !

प्रेमी–"प्रिये, इस बार तुम्हारे पिताजी के जन्मदिन पर मैं उन्हें एक हाथ-घड़ी देनेवाला हूं।"

"घड़ी; भला क्यों ?"

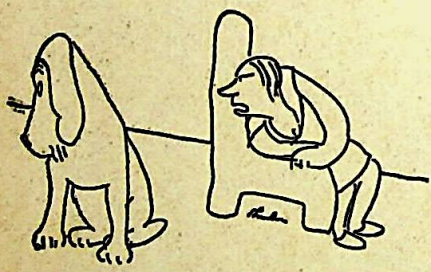

व्यंग्य चित्र : जेम्स थर्बर

"वे बार-बार समय पूछने हमारे पास नीचे जो आ जाते हैं।"

अनुभव के आंसू !

पुत्र ने अपना विवाह निश्चित होने की बात अपने पिता से कही। आंखों में आंसू भरकर पिता ने उत्तर दिया–"बेटा, तुम नहीं जानते कि तुम्हारे विवाह की बात सुनकर मुझ पर क्या बीत रही है। यकीन मानो, विवाह से पहले कोई नहीं जानता

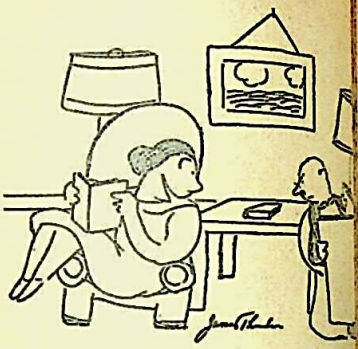

व्यंग्य चित्र : जेम्स थर्बर

कि सच्ची खुशी क्या है।"

"अच्छा ?"

"हां ! और जब मालूम होता है बहुत देर हो चुकी होती है।"

मरदुए बनाम मर्द !

गाड़ी में भीड़ थी। लेकिन एक [illegible] विलकुल बेतकल्लुफ बैठी थी और संकोच इधर-उधर ताक रही थी। [illegible] प्लेटफार्म पर गाड़ी ठहरी, तो एक [illegible] बड़ी मूंछोंवाला व्यक्ति भी डिब्बे में [illegible] गया। उपरोक्त महिला ने चौंककर [illegible] घूंघट निकाल लिया। उनकी बगल में [illegible] महिला ने कौतूहल-वश पूछा–"क्यों [illegible] नजी, क्या ये आपके कोई [illegible] हैं, जिन्हें देखकर आपने घूंघट [illegible] लिया है ?"

वह स्त्री बड़े ही दबे हुए स्वर में–[illegible] फुसफुसाते हुए–बोली–"मेरा [illegible] काहे को होता ? हां, अब तक तो [illegible] मरदुए बैठे थे, असली मर्द तो अब [illegible] है, इसलिए घूंघट डालना पड़ा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत डेट साफ़ धुलाई के साथ साथ सफ़ेदी भी लाता है

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है। केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से... और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना... कर सकता है

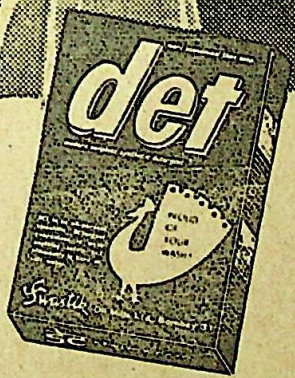

स्वस्तिक आईल मिल्स लि., बम्बई

Shilpi SOM I Hin.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

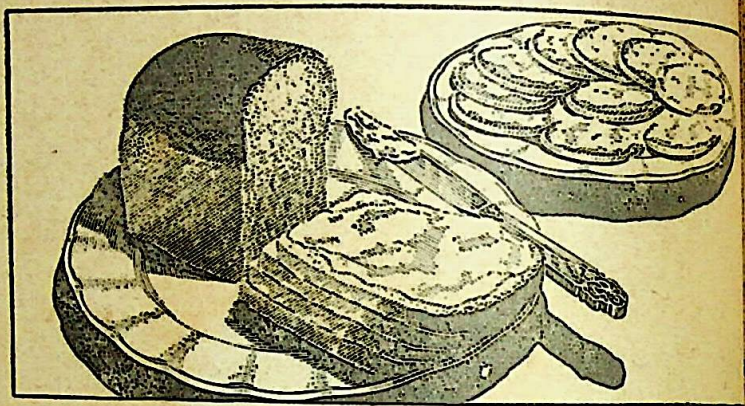

अमूल मक्खन से हर चीज पौष्टिक और स्वादिष्ट होती है...

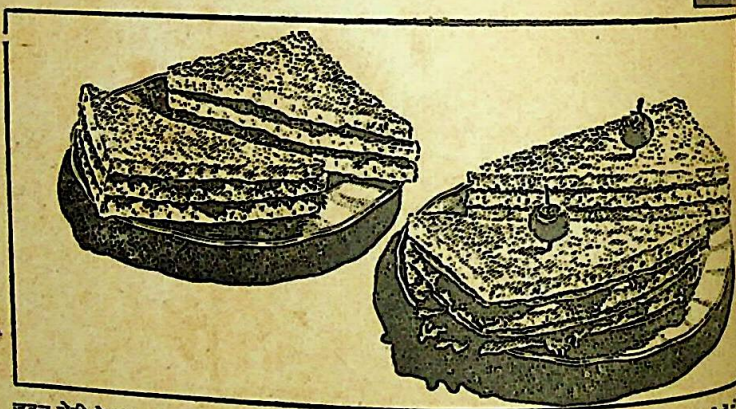

डबल रोटी के साथ अमूल मक्खन और अमूल मक्खन के साथ सैंडविचेज काफी पौष्टिक और स्वादिष्ट होते हैं और अपने परिवार को पौष्टिकता और शक्तिवर्धक विटामिन 'ए' और 'डी' देने के अनोखे तरीके हैं।

शुद्ध ताजी क्रीम अमूल मक्खन डेअरी में हल्के रंग में बनता है जहां पर सिर्फ पांच से पकेटबंद मक्खन ही बनाते हैं—जिसमें की ताजगी रहती है।

डेअरी जैसी ताज़ी... शुद्ध क्रीम...

अमूल मक्खन

अमूल हर स्वाद-प्रेमी को लाजवाब पौष्टिक बनाता है

एक खेडा सहकारी उत्पादन—लाजवाब

खेड़ा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लि., आणंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS LTD BOMBAY
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाउस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पति** का प्रयोग करते हैं

पाकविधा में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविधा का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पति। वनस्पति से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पति में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पति का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पति

विटामिन युक्त वनस्पति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वदेश घूमिये
जन-जीवन देखिये

पूर्व या पश्चिम, उत्तर या दक्षिण, आप कहीं भी जाएं भारत भर में दर्शनीय वस्तुओं का प्राचुर्य पाएंगे—समय की छाप से अछूते स्मारक, विविध नयनाभिराम दृश्य, गौरवपूर्ण परम्पराओं, रंग-बिरंगी वेष-भूषा तथा रीति-रिवाजों वाला जन-जीवन; आपकी ज्ञानवर्द्धक यात्रा को और भी सुखद बना देंगे।

यदि आपको सलाह-मशविरे की जरूरत हो तो पास के भारत सरकार के पर्यटक कार्यालय से निम्न स्थानों पर सम्पर्क कीजिए :

दिल्ली * बम्बई * कलकत्ता * मद्रास * आगरा * जयपुर
वाराणसी * औरंगाबाद * कोचीन

वार्षिक मूल्य १०) (मूल्य १.००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. E.

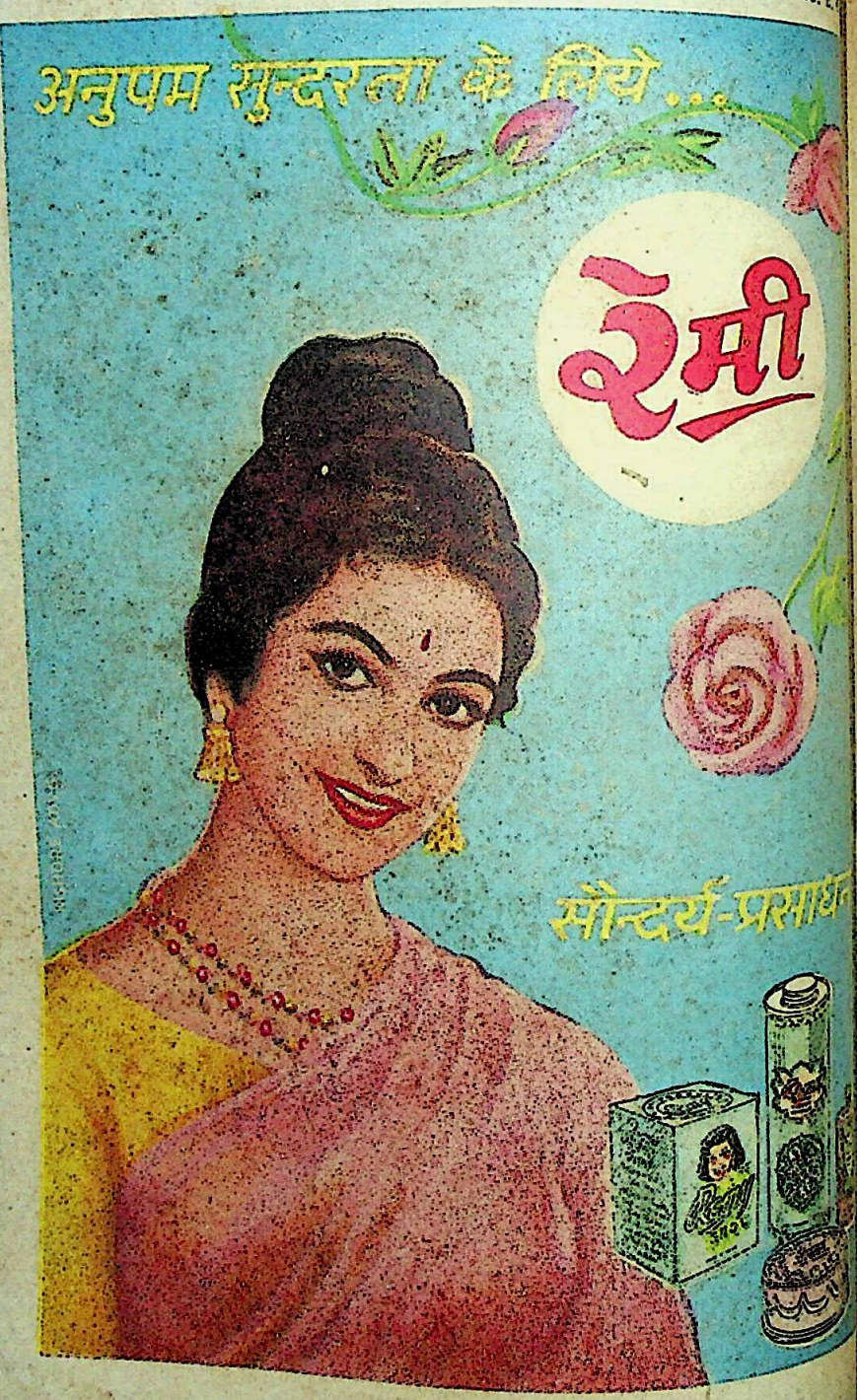

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६ फरवरी से गुरुदत्त का अंतिम और सर्वश्रेष्ठ अभिनव चित्र

एक दंपति की असाधारण कथा, जिनका परस्पर प्रेम ही एक-दूसरे के भय का कारण बना

ए.एल.एस.प्रॉडक्शन्स (मद्रास)

सुहागन

गुरुदत्त, माला सिन्हा, नाजिर हुसेन, डेविड और ओम प्रकाश ।

कथा, पटकथा और दिग्दर्शन के० गोपाल कृष्णन्

संगीत : मदन मोहन, गीत : हसरत, संवाद : विश्वामित्र आदिल

नॉवेल्टी, पैलेस, ब्राडवे, कुमकुम, नेपच्यून, (बांदरा), भारत (कुर्ला), उषा (अंधेरी) विजय (चेम्बूर), जवाहर (मुलुंड), परमानंद (कल्याण कैंप), जया (बोरिवली),

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटेनिया

विटामिनों से भरपूर

ग्लुकोज़

मिल्क बिस्कुट

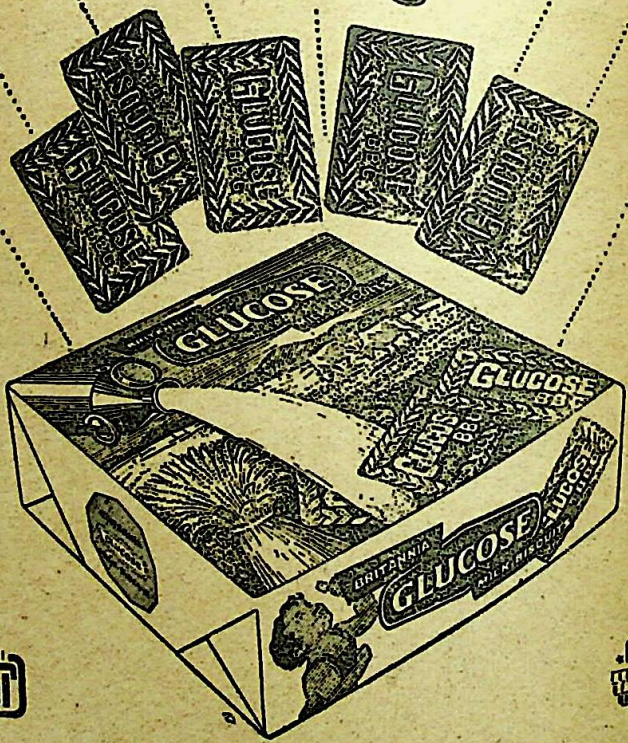

IWTBC-60 57A

IS:1011

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

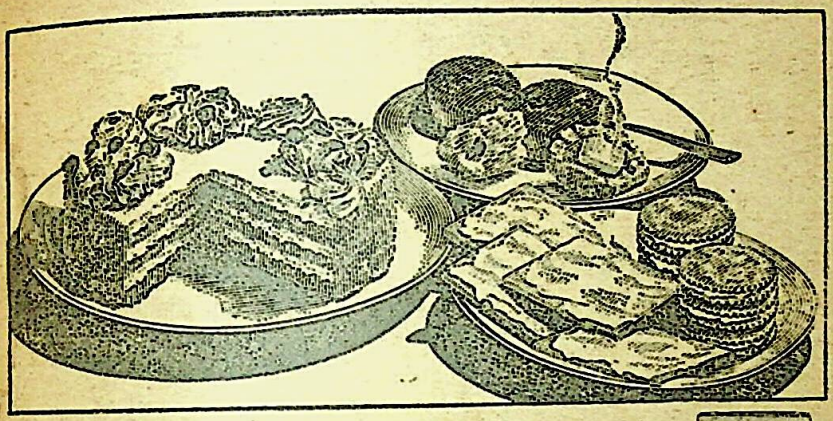

अमूल मक्खन से घरेलू व्यंजन ज्यादा स्वादिष्ट बनते हैं.

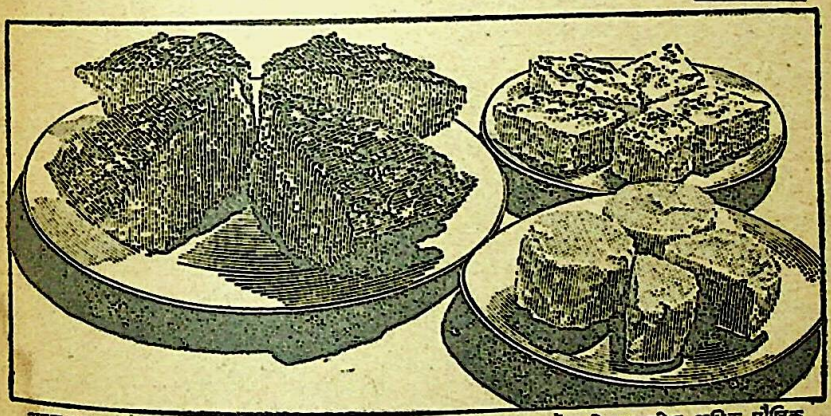

अमूल मक्खन से आप घर में ही तरह-तरह के व्यंजन बना सकते हैं. यह जान कर आप बेहद खुश होंगे। अमूल मक्खन की चीज का स्वाद व लुत्फ निराला ही होता है। आप अमूल मक्खन में स्वादिष्ट केक, बिस्किट, हांडवो, घारी धोकड़ा कचे से बना सकते हैं। और यह भी याद रखें कि अमूल मक्खन में बनी हर चीज अधिक पौष्टिक होती है। शुद्ध व ताजी क्रीम से बना अमूल मक्खन शक्तिवर्धक विटामिन 'ए' और 'डी' से भरपूर है-हर रोज सिर्फ पांच घंटे में दूध से पेकटबंद मक्खन अमूल ही बनाते हैं और अमूल मक्खन बढ़ते हुए बच्चों के लिए वरदान है।

डेअरी जैसी ताजी... शुद्ध क्रीम...

अमूल मक्खन

अमूल हर स्वाद-पदार्थ को लाजवाब पौष्टिक बनाता है

एक खेड़ा सहकारी उत्पादन—लाजवाब

खेड़ा जिला सहकारी दूध-उत्पादक संघ लि., आणंद

CAS/KMP.32 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

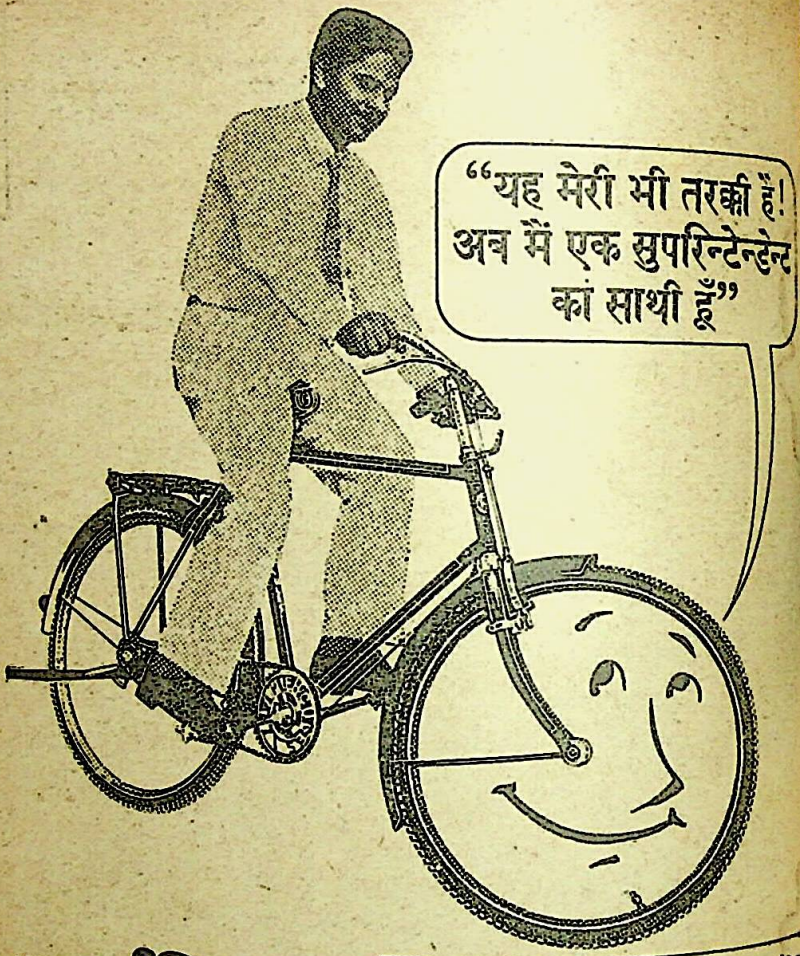

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है-
यह तो जीवन-साथी है।

ये दोनों ही तरक्की की प्रचुर योग्यता रखते हैं—हर्क्युलिस और इसका सन्तुष्ट मालिक, आखिर कठोर परिश्रम के लिये साल लगे हैं।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, यह आपके जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद वर्ष बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन होंगे... आपकी तरक्की होगी... आपके बच्चे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया बसा लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके साथ रहेगा, सर्वदा अच्छी हालत में रहेगा।

टी. आई. साइकिल्स आफ इण्डिया, अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

प्रोप्राइटर्स : ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स आफ इंडिया लिमिटेड, मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आनोखा नया टायर"

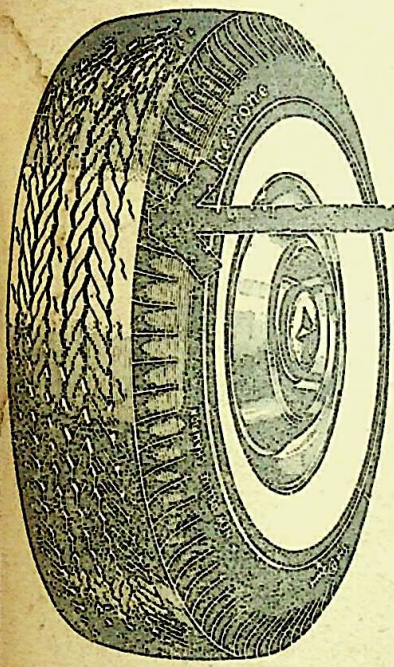

अतिरिक्त माइलेज के लिये बेजोड़

सुपर-टफ

आश्चर्यजनक रबड़

से बने नये टायर आपको अतिरिक्त माइलेज देते हैं !

फायरस्टोन की खोज और विकास इंजीनियरों ने अकथ परिश्रम के बाद एक नया आश्चर्यजनक रबड़ निकाला—सुपर—टफ जो अतिरिक्त लागत के बिना आपको अतिरिक्त माइलेज देता है। अब आपके सामने पेश करते हैं—न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर, जिसका सुदृढ़ ट्रेड सुरक्षित मोटरिंग के लिये बनाया गया है।

अब प्रत्येक फायरस्टोन पॅसिंजर टायर सुपर—टफ रबड़ से बनते हैं, जिससे आपको किसी भी गति पर किसी सड़क पर अतिरिक्त माइलेज मिलता है। इससे आप सुरक्षित रहते हैं; क्योंकि सुपर—टफ बहुत मजबूत होता है। जिस पर पंचर, चोट या ब्रेक का कोई असर नहीं।

Firestone फायरस्टोन

न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमर तोड़ बोझ

इसी लिए समझदार लोग

प्लानीटेब

गर्भनिरोधक टिकिया

प्रयोग करते हैं

परिवार नियोजन का यह

सबसे सरल विश्वसनीय

और किफायती साधन है।

अपने डाक्टर से राय लें

या हमको लिखें.

हिन्द कैमिकल्स लि०, कानपुर

"सभी प्रमुख दवा-विक्रेताओं के यहां प्राप्त"

वितरक : मेसर्स एन० चिमनलाल एंड कं०, ३६ प्रिंसेस स्ट्रीट, बंबई २

tik-20

टिक-20 खटमलों का नाश करता है

गायगी डायजिनॉन

टाटा-फाइजन उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह! कितना खूबसूरत डिनर सेट है! इसे कहाँ से ढूंढ निकाला सुशीला, तुमने?

क्यों, बहन आशा, बंगाल पॉटरीज़ तो ऐसी अनेक आकर्षक डिज़ाइनें बनाते हैं। वे इतने विविध प्रकार की डिज़ाइन तैयार करते हैं कि तुम्हें मनपसन्द सेट पाने में ज़रा भी दिक्कत नहीं होगी।

क्या उनकी बनाई हुई विविध डिज़ाइनों का कोई सचित्र सूचीपत्र भी है? इससे मनपसन्द सेट के चुनाव करने में मदद मिलेगी।

जरूर, जरूर आशा बहन। बंगाल पॉटरीज़ के अधिकांश डीलरों के पास अति आकर्षक डिस्प्ले कार्ड होते हैं जिनमें उनकी तमाम डिज़ाइनों को अंकित किया गया होता है। इस सचित्र कार्ड से मनपसन्द डिनर सेट चुनने में तुमको मदद मिलेगी।

बंगाल पॉटरीज़ के डीलर की दुकान पर

हाँ ठीक, ऐसा ही डिनर सेट मैं खोजती थी। कृपया एक मुझे पैक कर दीजिए।

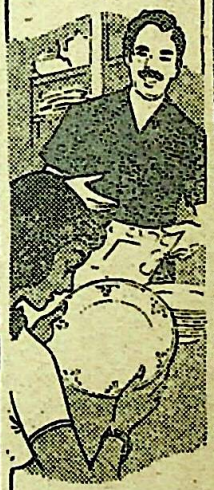

उस रात, घर में खान पान का आयोजन था, उपस्थित मेहमानों ने इस सेट के चुनाव के कारण आशा की भूरि भूरि प्रशंसा की। अब बंगाल पॉटरीज़ के डिनर सेट को पसन्द कर वह फूली नहीं समाती।

BP

बंगाल पॉटरीज़ लिमिटेड

४५, टांगरा रोड, कलकत्ता-१५

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि:

एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स ऐण्ड कं०

३३, ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता-१

BPC-94 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

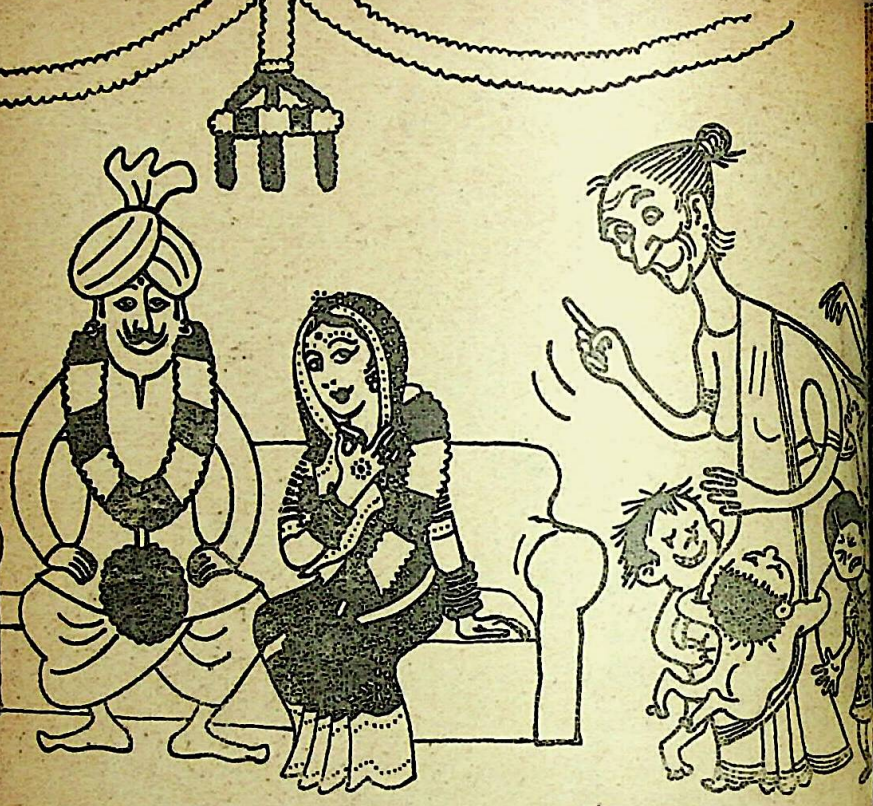

विवाह का एक रहस्य ???

सुखी विवाह का एक रहस्य नियोजित परिवार है। इससे आपको एक सुखी और सुव्यवस्थित वैवाहिक जीवन बिताने में सहायता मिलती है।

बच्चे सचमुच भगवान की देन होते हैं। फिर भी ज्यादा बच्चे दुख व परेशानी का कारण बन सकते हैं। बच्चे अगर ज्यादा हों तो घर का खर्च चलना भी दूभर हो जाता है।

बच्चों के जन्म में समयान्तर लाने के अनेक तरीके हैं। ये सादे, आसान और सुरक्षित हैं।

एक के बाद दूसरे बच्चे के जन्म में तीन-चार वर्ष का समयान्तर लाने से मां और बच्चा—दोनों ही तन्दुरुस्त रहते हैं। इसके अलावा मां-बाप को अपने बच्चे की परवरिश करने का काफी समय भी मिल जाता है और फिर बच्चों की भी यही उम्र होती है, जबकि उन्हें मां-बाप के लालन-पालन की सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

मुफ्त सलाह और जानकारी के लिए निकटतम परिवार कल्याण नियोजन केंद्र में जाइये।

याद रखिये : छोटा परिवार—एक सुखी परिवार होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

...ई को फ़ौरन दूर करता है

...ीय दर्द को दूर करने के लिये दवा खाने की क्या जरूरत ...र्द की जगह पर अमृतांजन मलिये—दर्द जाता रहेगा, ...रन्त महसूस करेंगे। अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक ...वाली १० दवाइयों की एक दवा है—मांस पेशियों के ...ोंच और जोड़ के दर्द के लिये बिलकुल अचूक है, ...हं. प्रभावकारी है। अमृतांजन का इस्तेमाल सीने में ...क्स, सर्दी और जुकाम में भी जल्द से जल्द आराम ...ता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ...शी आपके घर में महीनों चलती है। आप भी ...न की एक शीशी बराबर ही पास रखिये।

...र्षों से भी ज्यादे दिनों से अमृतांजन एक घरेलू दवा ...में विख्यात है।

...तांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द ...ुकाम में अचूक।

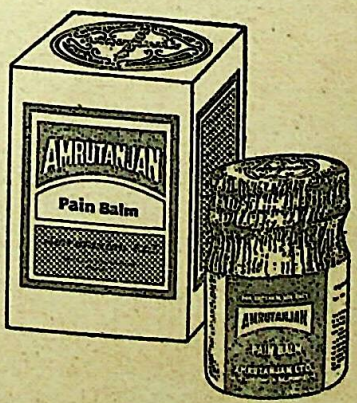

...तांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2815A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए जरूरी है
बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेअर आयल
आपके लम्बे काले
मुलायम और
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

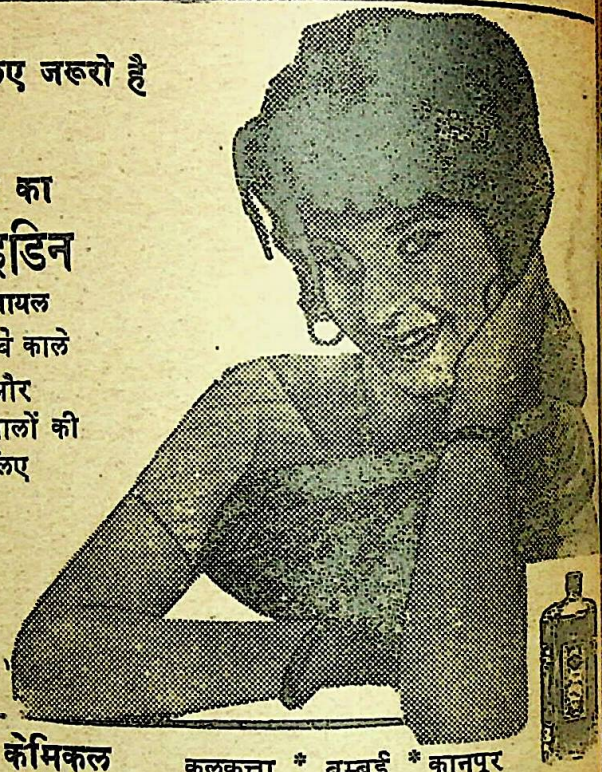

बंगाल केमिकल
कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

न्यू स्वदेशी
के वस्त्रों का आग्रह रखिये
आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग
न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद
नरोडा रोड – अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे तेज़
हवाई सर्विस—

दिल्ली मॉस्को लन्दन!

एयर-इंडिया, आपके लिए दिल्ली और लन्दन के बीच सबसे तेज़ हवाई सर्विस चलाते हैं। इस सर्विस की दो उड़ानें नज़दीक से नज़दीक के रास्ते से, यानी मॉस्को होती हुई, की जाती हैं और यह दूरी तय करने में १२ घंटे भी नहीं लगते।

मॉस्को में विमान क़रीब १ घंटा रुकता है। आगे जानेवाले मुसाफ़िरों को मॉस्को के लिए वीज़ा की कोई ज़रूरत नहीं!

हर मंगलवार और शनिवार

बम्बई - दिल्ली - मॉस्को - लन्दन

एअर-इंडिया

एजेंसी: बी.ओ.ए.सी. और कैप्टस

JWT/AL 3103

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

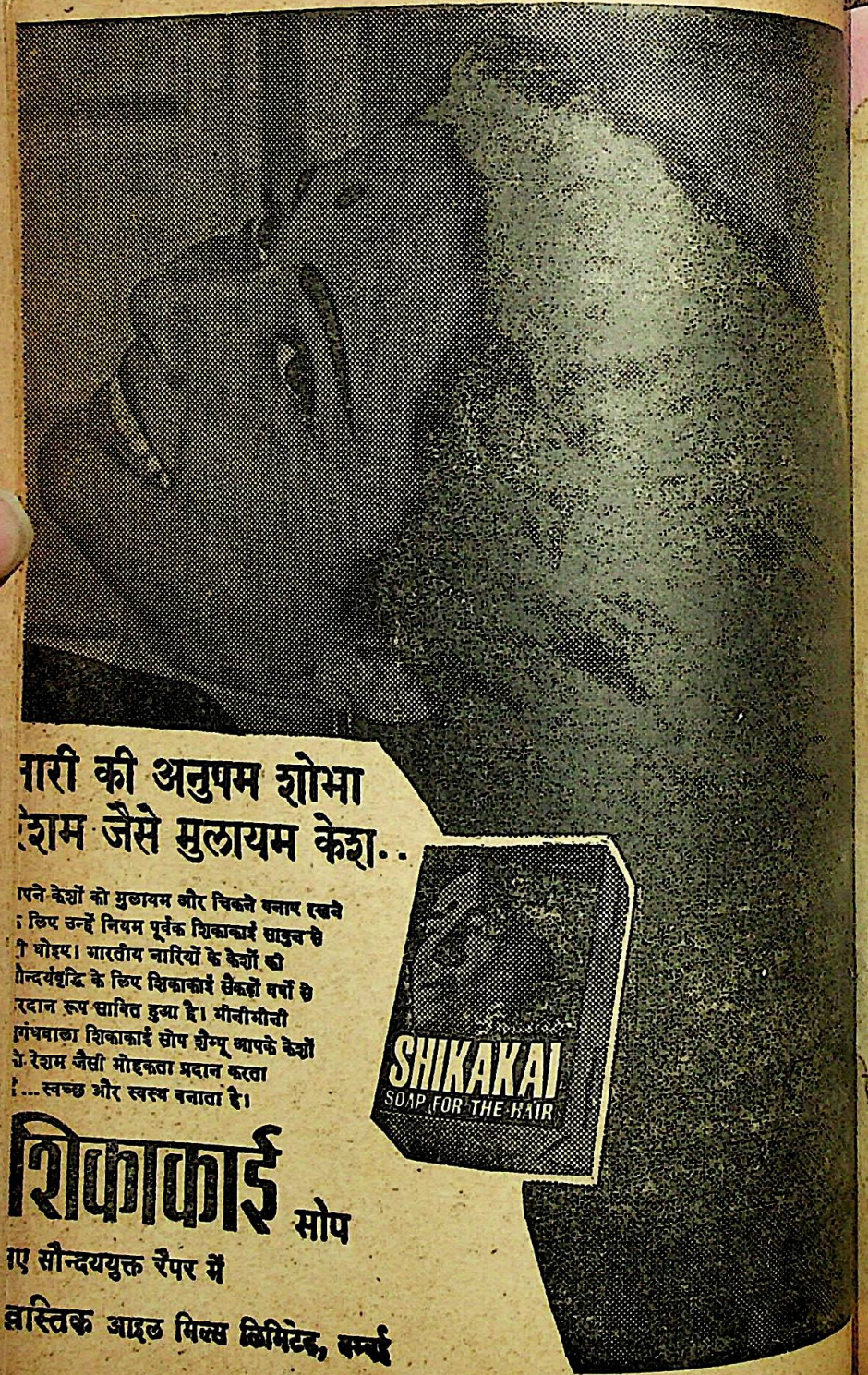

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्च
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता

मंगल-प्रसंग
चित्रकार: एस० टी० शेटये

इस अंक में

१७ नेत्र खोलो
जाबालि
१८ भारत भी अणुबम बनायेगा ?
सत्यकाम विद्यालंकार
२० ये कीमतें भी जानिये
बर्ट्रेंड रसल
२३ सूर्योदय का कवि
काका कालेलकर
२६ व्यक्तित्व के तहखाने की कुंजियां
विमल चंद्र
२९ थर की नाक में नकेल
सुरेश वैद्य
३२ एक अनोखा राष्ट्रीय स्मारक
३५ पथ के प्रदीप
सर विंस्टन चर्चिल
३६ रहस्यवादी वैज्ञानिक सेंट-ज्योर्जी
होमर पेज
४१ दिल खोलकर हंसिये, जी भरकर रोइये
दामोदर शर्मा
४४ ये बहते हुए महाकाव्य
डडले ग्लास
४९ केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में
डा० गोविंददास
५३ मेरी कल्पना का सुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

एक अलौकिक घटना
—तुषारकांति घोष

हमारी उलझनें
—एक नया स्तंभ

मेरा मृत्युलेख
—जे० बी० एस० हाल्डेन

बिजली की नदी शरावती
—एस० श्रीनिवासाचारी

श्रमर्षि बाबासाहेब आमटे
—प्रेरणा-पुष्प

सुइयां (उर्दू कहानी)
—इंतजार हुसैन

टूटते अरमान (हिन्दी कहानी)
—गुरदीप

सफलता का प्रतीक : डचु पांट
—जीवन-प्रसंग

बिना खेती के भरपूर अन्न
—विज्ञान-चर्चा

हाय मेरी तेन्युल! (पुस्तक-संक्षेप)
—टीनी का उपन्यास

चित्रसज्जा:
पाल गोगां, वान गाफ, लिपचिट्स, जार्ज जोटेस, धरमानी, कैलन, हुसैन फावरी, ओके, शर्ण, रामचंद्र शुक्ल

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बम्बई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी वैक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

५६ जहूर दादा
प्रेम नारायण खरे

५७ माओ के उत्तराधिकारी
अशोक महाजन

६० दो क्षण, दो बातें इलियट के साथ
डोनाल्ड हाल

६४ यह धरती का दोष नहीं (कविता)
बुधमल शामसुखा

६५ लीजिये, दिल बदलवाइये
सरोज मित्तल

६८ जब भैंसे ने चीते को पछाड़ा
यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक'

७३ दूध के बारे में कितना जानते हैं
डा० कैलाशनाथ मिश्र

७७ बात सलूक की है

८० तुम (कविता)
रमा सिंह

८१ इश्तिहारात (उर्दू व्यंग्य)
मुहम्मद खालिद अख्तर

८६ मृत्यु के समय, मृत्यु के बाद
डा० दामोदरन्

९० चांद का निवासी (हिन्दी कहानी)
कुसुम अगस्त

९७ रमसरना (उर्दू कहानी)
डा० हसन मंजर

१०५ यादों की तस्वीरें (बंगला कहानी)
नारायण गंगोपाध्याय

११३ प्रतिशोध (पुस्तक-संक्षेप)
अलेग्जैंडर डयूमा

१५१ चुटकी-भर हंसी

१५५ नयी पुस्तकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक ३

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मार्च १९६५

देह के सब आवरण खुलने
और मन का मैल सब धुलने
के अनंतर भी
अगर तुम्हारी मुंदी आंखें
धरती की गुफाओं में
केवल अंधेरा खोजती हैं–
तो अरे पथभ्रष्ट राही
तुम्हारे हृदय में अब भी
कहीं असत्य छिपा है ।
शत-सहस्र सूर्यों की दीप्ति भी
उस अंधेरे की
एक रेखा को न पोंछ पायेगी ।
सो, उठो
पलकें उघाड़ो,
अंतरात्मा को जगाओ,
जिससे
तुम्हारी निगाहों की दीप्ति से
आकाश के चांद-तारे जगमगा उठें ।

–जाबालि

नेत्र खोलो

चित्रकार :
जार्ज जोटेस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत भी अणुबम बनायेगा ? ?? ??? ?? ?

सत्यकाम विद्यालं

भारत अणुबम बनाये या न बनाये ? यह आज भारत के सर्वाधिक जटिल प्रश्नों में से एक है ।

प्रश्न के कई पहलू हैं—आर्थिक, तांत्रिक (तकनीकी), राजनीतिक और नैतिक ।

क्या भारत की गरीब जनता अणुबम बनाने का खर्च उठा सकेगी ? यह प्रश्न सबसे पहला और सबसे मुख्य है ।

अणुबम बनाने में कितना खर्चा आयेगा?

दुनिया के सर्वप्रथम अणुबम पर जो खर्च आया था, वह किसी से छिपा नहीं है । प्रथम अणुबम का निर्माण १५ जुलाई १९४५ को पूरा हुआ, और उसका परीक्षणात्मक विस्फोट १६ जुलाई की सुबह ५.३० बजे किया गया । उसके बीस दिन बाद एक अमरीकी विमान ने साढ़े तीन लाख की आबादी के जापानी नगर हिरोशिमा पर अणुबम फेंका ।

इसकी सूचना देते हुए अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रुमैन ने बम की लागत का जो अंदाजा दुनिया के सामने रखा था, वह दो अरब डालर यानी लगभग दस अरब रुपये का था । प्रेसिडेंट ट्रुमैन ने यह भी बताया था कि इस बम को बनाने के लिए [illegible] व्यक्तियों ने चार वर्ष तक मेहनत [illegible]

भारत को भी अपना प्रथम [illegible] बनाने में दस अरब रुपये खर्च [illegible] तो निःसंदेह यह गरीब देश इस [illegible] उठा नहीं सकेगा ।

किंतु विशेषज्ञों का कहना है कि [illegible] को पहला अणुबम बनाने व फोड़ने में [illegible] १० हजार किलोटन टी० एन० टी० [illegible] शक्ति विकीर्ण करने में) केवल [illegible] लाख रुपये व्यय करना होगा । हमें [illegible] पहला अणुबम इतना सस्ता क्यों [illegible] इसके दो कारण हैं :

१. भारत में अणुशक्ति के [illegible] का कार्यक्रम पर्याप्त प्रगति कर चुका [illegible]

२. ट्रांबे स्थित अणुशक्ति - प्रति [illegible] पिछले दो वर्ष से २५० किस्म के [illegible] ऐक्टिव उपकरण बना रहा है ।

निःसंदेह १७५.५ लाख रुपये का [illegible] भार भारत की अर्थ-व्यवस्था को [illegible] नहीं करेगा ।

लेकिन हम एक ही अणुबम बना [illegible] तृप्त नहीं हो जायेंगे । हमें अणुब [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पादन निरंतर जारी ही नहीं रखना होगा, बल्कि बढ़ाते जाना होगा। शस्त्रास्त्रों से प्राप्त होनेवाली सुरक्षा का आधार ही यह है कि हम अपने दुश्मन से एक पग आगे रहें—चीन के झोले में अगर पांच बम हैं, तो हमारे पास कम-से-कम आठ बम हों।

दूसरा प्रश्न है, क्या भारत के पास ऐसे यंत्रोपकरण तथा वैज्ञानिक कर्मचारी हैं, जो अविलंब अणुबम बनाकर दे सकें?

इसका उत्तर देना कठिन नहीं; क्योंकि—

१. भारत में अणु-वैज्ञानिकों की कमी नहीं है। ट्रांबे-प्रतिष्ठान में ही आज १५२६ वैज्ञानिक अणुशक्ति-संबंधी विविध कार्य-क्रमों में लगे हुए हैं।

२. भारत के यंत्रोपकरण भी काफी शक्तिशाली हैं। बंबई से ६२ मील उत्तर तारापुर में जिस अणुशक्ति-संयंत्र की स्थापना हो रही है, वह शीघ्र ३८० मेगावाट विद्युत उत्पन्न करेगा। इस संयंत्र को भी अणुबम निर्माण में जोता जा सकता है।

३. कनाडा, आस्ट्रेलिया और राष्ट्र-संघ के पृथक्-पृथक् अणुशक्ति आयोगों के अध्यक्ष अभी पिछले दिनों बंबई में प्लूटो-नियम कारखाने के उद्घाटन के अवसर पर आये थे। उन सबने भारत की अणुबम बनाने की क्षमता पर विश्वास प्रकट किया।

४. भारत में अणुशक्ति के स्रोतों, अर्थात् नैसर्गिक पदार्थों तथा भारी जल की कमी नहीं है। भारत में प्राकृतिक रूप से ३० हजार टन यूरेनियम जमा है। भारत का थोरियम का भंडार विश्व के अन्य सब देशों से बड़ा है—बिहार और केरल में ही ५ लाख टन कच्चा थोरियम है।

इस प्रकार अणुबम बनाना हमारे लिए असंभव नहीं है। लेकिन अणुबम बनाने की सार्थकता तभी है, जब हम उन्हें शत्रु पर गिरा सकें। और इसके लिए चाहिये तीव्र वेग-वाले वायुयान, और प्रक्षेपास्त्र। अभी तो हम सुपर-सानिक युद्ध विमानों के लिए कभी अमरीका और कभी रूस का दरवाजा खटखटा रहे हैं। ऐसी अवस्था में अणुबम ढोनेवाले विमानों या रेडियो-चालित प्रक्षे-पास्त्रों के निर्माण की बात सोचना आकाश के तारे तोड़ना है।

तीसरा प्रश्न राजनीतिक है। आर्थिक एवं तांत्रिक दृष्टि से समर्थ होते हुए भी हमारे प्रधान मंत्री ने अणुबम बनाने का निषेध किया है। इस निषेध के राजनीतिक और नैतिक दोनों प्रकार के कारण हैं।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का तकाजा है कि भारत अणुबम बनाने की होड़ में न पड़े। अभी संसार के कोई ४० देश ऐसे हैं, जिन्हें अणुबम बनाने की विधि का स्थूल परिचय है, या जो जरा-सी मेहनत से उसका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यदि ये सब देश अणु-शस्त्र-संपन्न बनने का निश्चय कर लें, तो अगले कुछ वर्षों में भारत के अलावा कनाडा बेल्जियम, पश्चिम जर्मनी, पूर्व जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, इटली, जापान, नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क, स्पेन, स्विट्जरलैंड, हंगरी, पोलैंड, हालैंड आदि के पास भी अपने-अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अणुबम होंगे। और दूसरे देश भी इन देशों से सैनिक संधियां करके अणुशस्त्र प्राप्त कर सकेंगे। इस प्रकार एक सार्वदेशिक अणुशस्त्र प्रतियोगिता खुल जायेगी। अपने निवासियों की शोचनीय आर्थिक स्थिति को सुधारने में लगा हुआ भारत अणुबम बनाकर अपने अर्थतंत्र पर तो अनावश्यक बोझ लाद ही लेगा; बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का भी संतुलन बिगाड़ देगा।

भारत के अणुबम का निर्माण शुरू करने की राह में कई राजनीतिक बाधाएं भी हैं। अभी हमारे यहां तीन अणुभट्ठियां आणविक अनुसंधान में सहायता कर रही हैं। इनमें से 'अप्सरा' की उत्पादन-क्षमता केवल एक मेगावाट है। 'जेरलीना' की क्षमता भी बहुत मामूली है। केवल 'सी० आइ०आर० (कनाडा-इंडिया-रिएक्टर) की क्षमता ४० मे... है। लेकिन ... उपयोग ... बनाने के लि... किया जा सक... कनाडा ने इसे... पर भारत में... भट्ठी की न... की है कि इसमें... दित अणुशक्ति... विनियोग केवल... नात्मक कार्यों... किया जाये, न... कार्यों में नहीं...

संसार की... भट्ठियां प्रधान... में समर्थ... स्वयं भी... का निर्माण नहीं... रहा है; क्योंकि... रीका ने उसे... दिया है कि... संकट उपस्थित... पर वह कनाडा... रक्षा करेगा।

राजनीति के... ही सैनिक... का सवाल भी... हुआ है। जब...

ये कीमतें भी जानिये

फिलहाल संसार ७०० अरब रुपये प्रतिवर्ष शस्त्रास्त्रों पर खर्च करता है—अर्थात् प्रतिदिन लगभग २ अरब रुपये, अथवा प्रतिघंटे कोई ८ करोड़ रुपये। यह रकम संसार के तमाम आयात-निर्यात से बड़ी है; अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमरीका की सम्मिलित राष्ट्रीय आय से बड़ी है। शस्त्रास्त्रों के निर्माण में कुल ६ करोड़ व्यक्ति लगे हैं।

एक ब्रिटिश विमान-वाहक जंगी जहाज ८६॥ करोड़ रुपये का पड़ता है। ५३ करोड़ रुपये में मिस्र के प्रत्येक नागरिक के लिए शुद्ध पीने के जल की व्यवस्था की जा सकती है। इसी रकम से ९०० अच्छे देहाती अस्पताल चलाये जा सकते हैं। एक एटलस मिसाइल लगभग ४० करोड़ रुपये का पड़ता है। इतनी पूंजी से ५० से ७० हजार टन वार्षिक उत्पादनवाला नाइट्रोजन खाद का कारखाना खड़ा हो सकता है। एक पोलारिस मिसाइल से ब्रिटेन के चार विश्वविद्यालय; एक ए० बी० बमवर्षक से सात सेकंडरी स्कूल; एक टी० एस० आर०—२ से पांच साधन संपन्न अस्पताल वर्ष-भर चलाये जा सकते हैं। एक मिसाइल विध्वंसक की कीमत से एक लाख ट्रैक्टर खरीदे जा सकते हैं। —बर्ट्रेंड रसल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बम फोड़ा है, भारत अपनी सीमा की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठा है, जो स्वाभाविक ही है। किंतु अणुबम के निर्माण ने आज तक किसी राष्ट्र को युद्धभय से मुक्ति नहीं दी है। अमरीका और रूस ढेरों अणुशस्त्र होते हुए भी अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं करते। बम का लक्ष्य प्रहार है, रक्षा नहीं। हम प्रतिप्रहार कर सकते हैं, इसलिए शत्रु हम पर प्रहार नहीं करेगा, यह मनोवैज्ञानिक भावना ही सुरक्षितता का संतोष दे दे, तो और बात है।

अन्यथा अब यह विश्वास जड़ पकड़ता जा रहा है कि अणुशस्त्र युद्ध के लिए तभी उपयोगी होंगे, जब सारी दुनिया सर्वनाश के लिए कमर कस ले। यदि भूल से किसी ने एक अणुबम चला दिया, तो समस्त संसार राख की ढेरी बनकर रह जायेगा।

इस समय रूस, अमरीका आदि के पास २०-२० मेगाटन के १६ हजार बम हैं। एक मेगाटन का बम ही बंबई जैसे शहर को भस्म करने के लिए पर्याप्त है। रूस और अमरीका एक बार नहीं, दस-दस बार सारी दुनिया को श्मशान बना सकते हैं। हिरोशिमा पर गिराया गया अणुबम केवल २० किलोटन का था। आज के मेगाटन बमों के सामने उसकी हस्ती दावानल के सामने दीपक के-सी है।

राजनीतिक महिमा की दृष्टि से भी भारत अणुबम बनाकर केवल मानसिक समाधान ही प्राप्त कर सकेगा। चीनी अणुबम ने दक्षिण एशिया और अफ्रीका में जो राजनीतिक वर्चस्व प्राप्त कर लिया है, उसे भारत अणुशस्त्रों में स्वावलंबी बनकर कुछ घटा भले दे, मिटा नहीं सकेगा। दर-असल प्रभुत्व-विस्तार की नीति में भारत चीन का मुकाबला नहीं कर सकता।

राष्ट्रसंघ में अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए और अणुबम-क्लब का सदस्य बनने के लिए भारत का अणुबम बनाना शायद उचित प्रतीत हो। अणुबम बनाकर संभव है, भारत भी सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बन सके। (क्योंकि अभी सुरक्षा परिषद के जो पांच स्थायी सदस्य हैं, वे सभी अणुशस्त्र-सपन्न हैं। राष्ट्रवादी चीन इसका अपवाद है; लेकिन चीन की सीट का असली हकदार साम्यवादी चीन है और वह किसी-न-किसी रोज अपनी कुर्सी पर आकर डट ही जायेगा।) लेकिन तब कनाडा, जापान, मिस्र, युगोस्लाविया, स्वीडन आदि छः-सात और भी तुरंत अणुबम बनाकर सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का दावा पेश करेंगे। वस्तुतः परिषद के संघटन में कुछ वर्ष के भीतर अवश्य परिवर्तन करना पड़ेगा और तब अणुशस्त्र-विरोधी राष्ट्र के रूप में भारत के लिए स्थायी सदस्यता प्राप्त करना शायद अधिक आसान होगा।

एक बात और, अगर भारत कनाडा की तरह अमरीका से आणविक संरक्षण की आशा रखता है, तो अपना अणुबम-कार्यक्रम आरंभ कर देने पर उस आशा को तिलांजलि दे देनी पड़ेगी।

पिछले दस-बारह वर्ष से भारत अणु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शस्त्रों के निर्माण और उपयोग का विरोध करता आ रहा है। १९६३ में केनेडी, ख्रुश्चोव और मैकमिलन के बीच अणु-शस्त्रों पर कई पाबंदियां लगाने के विषय में जो संधि हुई, उस पर सबसे पहले जिन राष्ट्रों ने सहमति की मोहर लगायी, उनमें भारत एक था।

टेस्ट-परीक्षणों का तो भारत ने सदा ही खुलेआम विरोध किया है। टेस्ट परीक्षणों के विरुद्ध सबसे पहला प्रामाणिक सरकारी ग्रंथ भारत ने ही प्रकाशित किया।

इन नैतिक बंधनों से भारत के हाथ बंधे हुए हैं। इसलिए बम बनाने में समर्थ होते हुए भी वह बनायेगा नहीं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह सैनिक सुरक्षा का प्रबंध नहीं करेगा। यथासंभव यह प्रबंध वह रूस या अमरीका से सुरक्षा संबंधी सैनिक द्वारा करेगा। किंतु उस संधि को [illegible] करने के लिए उसे भारत में बमयुक्त पास्त्रों के अड्डे देने होंगे, तो शायद उसे इस प्रश्न पर पुनर्विचार करना

तो प्रश्न उठता है कि भारत क्या मेरे खयाल से उसे कुछ भी करने की श्यकता नहीं। वस्तुस्थिति यह है कि अमरीका से संधि करके उससे [illegible] आणविक संरक्षण लें या न लें, इतना तो हम और हमारे दुश्मन दोनों अच्छी तरह मालूम है कि अगर भारत अणुशस्त्र बरसाये गये, तो अमरीका नहीं देखता रहेगा। राह के किनारे हुआ वटवृक्ष चाहे किसी का भी हुआ हो, छाया तो हमें भी देता ही है।

★

एक अमरीकी विशेषज्ञ ने अंदाज लगाया है कि सैनिक दृष्टि से प्रभावकारी अणु के निर्माण के कार्यक्रम के लिए भारत को २५ करोड़ रुपये की पूंजी लगानी पड़ेगी और बाद सालाना १० करोड़ रुपये खर्च करने होंगे। अमरीकी अणुशक्ति आयोग का अंदाज और ही है। उसके मत में एक आरंभिक किस्म के अणुबम के लिए पर्याप्त प्लुटोनिय उत्पादन करनेवाला कारखाना हम २५ करोड़ रुपये में खड़ा कर सकते हैं। किसी अनुमान लगाया है कि यूरेनियम २३५ के पृथक्करण के कारखाने के निर्माण में ५०० रुपये की पूंजी लगेगी और उसके चलाने का वार्षिक खर्च ५०० करोड़ रुपये आयेगा। वर १९६४ में फ्रांस के मंत्रिमंडल ने विशेषतः अणुशस्त्रों के निर्माण के लिए एक सैनिक स्वीकार किया, जो १६०० करोड़ फ्रैंक यानी लगभग १६०० करोड़ रुपये का है। अलावा अणुशस्त्र-वाहक मिराज-४ मिसाइल के लिए १६०० करोड़ रुपये और नि किये गये हैं। यानी फ्रांस एक वर्ष में कुल मिलाकर ३२०० करोड़ रुपये खर्च करेगा। हमारी चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में प्रस्तावित पूंजी-विनियोग का तीन चौथाई हिस्सा है अगर हमने भी फ्रांस का अनुकरण किया, तो योजना-व्यय का तीन चौथाई भाग सी प्रयत्न में खप जायेगा; शेष कामों के लिए सिर्फ एक चौथाई बचेगा। —मीनू

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय मैथिलीशरणजी के सत्वनिष्ठ जीवन और काव्य-तप के प्रति उनके समानधर्मा समवयस्क साहित्यकार की श्रद्धांजलि ।

काका कालेलकर

सूर्योदय का कवि

हम नये-नये हिन्दी सीख रहे थे और किसी ने हमारे सामने एक छोटा-सा कविता-ग्रंथ रख दिया, जिसका नाम था 'भारत-भारती' । हम तो आज की खड़ी बोली में पले हुए और हमारा परिचय मातामही संस्कृत भाषा से ! हमारे लिए 'भारत-भारती' एक मधुरतम और पौष्टिक आहार हो गयी ।

'भारत-भारती' पढ़कर हम उतने ही मस्त हो गये, जितने रवींद्रनाथ की 'गीतांजली' पढ़कर हुए थे— हालांकि 'भारत-भारती' और 'गीतांजली' इन दोनों प्रासादिक काव्यों का विषय भिन्न है, रस भी भिन्न है, प्रयोजन और फल तो भिन्न हैं ही । 'गीतांजली' पढ़ते समय तृप्ति के साथ लगता था कि आज हमने कुछ पाया, हम समृद्ध हो गये और अपनी संस्कृति के हृदय तक पहुंच गये ।

'भारत-भारती' के तीन खंड हैं । अतीत खंड में भारतीय संस्कृति का प्राचीन उज्वल चित्र है, वर्तमान खंड में भारत की दुर्दशा का विलाप है और भविष्य खंड में आशा का स्फुरण है । तीनों से युवकों के हृदयों को प्रेरणादायी पुष्टि मिलती थी, जो अमृत-संजीवनी का काम दे सकती थी । नवयुग का आवाहन करनेवाली ऐसी प्राणदायी कविता के कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त हमारे श्रद्धा-भाजन बने, इसमें आश्चर्य ही क्या ? कहीं भी मैथिलीशरणजी का नाम आया, हम उनकी कृति का आस्वादन बड़े चाव से करने लगे ।

इसके बाद 'जयद्रथवध,' 'साकेत' आदि अनेक कविताएं प्रसाद के रूप में हिन्दी-जगत को मिलने लगीं और भारतीय जनता को अपनी संस्कृति के आर्य आदर्श को हृदयंगम करने का मौका मिला ।

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

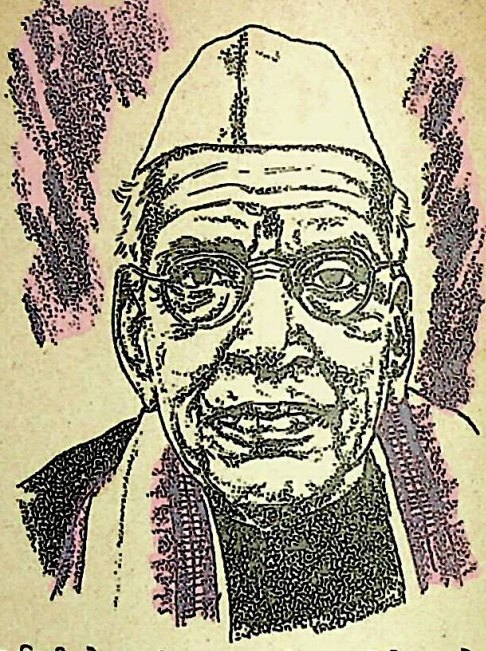

उन दिनों चंद हिन्दी लेखक संस्कृत का परिचय खोये हुए थे। एक जमाना ऐसा तरह बीत गया था। उसके बाद देशाभिमान के रूप में संस्कृत के प्रति उनमें श्रद्धा उ लेकिन चिरपरिचय की स्वाभाविकता उसमें न आ सकी। ऐसे लोग जब अपनी हिंदी संस्कृत शब्द लाते थे, तब वे उसमें घुल-मिल नहीं जाते थे, कंकड़ के जैसे अखरते थे। में, मराठी में और दक्षिण की भाषाओं में भी संस्कृत भाषा जैसी एकरूप होती है, वैसी में कभी-कभी एकरूप होती न देखकर मन में ग्लानि होती है।

श्री मैथिलीशरणजी का साहित्य पढ़ते इसलिए आनंद होता है कि उनकी भ संस्कृत के शब्द लबालब भरे होते हुए भी उनकी शैली कानों और हृदय को अखरती उलटे संस्कृत के कारण वह एक नयी ही प्रौढ़ि, नया गांभीर्य और नया प्रसाद पाती है हृदय को असाधारण तृप्ति देते है; और चित्त कहता है कि हमारी संस्कृति की भव्यता करने के लिए शैली भी वैसी ही धीरोदात्त और प्रसन्न-गंभीर होनी चाहिये।

भारत की दुर्दशा देखकर हमारे मन में जब निराशा का अंधकार छा जाता था, से हृदय कातर हो उठता था, "सूर्योदय अवश्य होगा" यह विश्वास भी ढीला हो जाता तब हमारी वह हृदय-विदारक दुविधा कवि की एक पंक्ति में व्यक्त हुई देखकर कवि के एकदम श्रद्धा बढ़ती थी। श्री मैथिलीशरणजी हमारे ही हृदय की शंका व्यक्त करते हुए हैं—"पतझड़ कहें या सूखना, काया-पलट है, काल है?" भक्ति और भीति के मिश्रण से हुए ये उद्‌गार हम देशप्रेमी नवयुवकों के अंतस्तल तक पहुंच जाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविवर रवींद्र ने अपने एक निबंध 'काव्येर उपेक्षिता' में बताया था कि महाकवि वाल्मीकि ने बेचारी ऊर्मिला की उपेक्षा की है, महाकवि कालिदास ने शकुंतला की सखी अनसूया और प्रियंवदा की और महाकवि बाणभट्ट ने नायिका कादंबरी की सहचरी पत्र-लेखा की।

उस निबंध को पढ़ने के बाद हमारा हृदय इन तीनों काव्य-कन्याओं की ओर द्रवित हो उठा और जब भी कभी मौका आया, इन काव्य-कन्याओं के बारे में हमने कुछ-न-कुछ लिखा अथवा लिखवाया। लेकिन हमें तृप्ति तब हुई, जब श्री मैथिलीशरणजी ने रामसेवक लक्ष्मण की अर्धांगिनी ऊर्मिला का काव्यमय चित्र हमारे सामने खड़ा किया। रवींद्रनाथ ने कवियों को जो उलहना दिया, वह मैथिलीशरणजी ने आर्योचित ढंग से धो डाला।

गुप्तजी का जो अंतिम काव्य मैंने पढ़ा, सो था भक्त-शिरोमणि गौरांग प्रभु की धर्म-पत्नी 'विष्णुप्रिया' के बारे में। केवल शिष्टाचार में स्त्री-जाति के प्रति आदर दिखाना आज-कल का रिवाज हो गया है, जिसे स्त्री-दाक्षिण्य कहते हैं। (अंग्रेजी शब्द है—शिवैल्री।) ऐसे केवल स्त्री-दाक्षिण्य से नहीं, किंतु नारी-हृदय के आत्मार्पण की कद्र और भक्ति करते हुए श्री मैथिलीशरणजी ने 'विष्णुप्रिया' को अंजली अर्पण की है और ऐसा ही भव्य श्राद्ध किया है बुद्ध भगवान की प्राण-वल्लभा गोपा अथवा यशोधरा का।

मैंने मैथिलीशरणजी से एक दफा पूछा—"ऊर्मिला, यशोधरा और विष्णुप्रिया के त्याग और बलिदान का जैसा कीर्तन आपने किया है, वैसा ही सीता माता के बारे में आपने क्यों नहीं किया? भवभूति के रामचंद्र ने अपने बारे में कहा है—दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमाहितम्। किंतु यह वचन तो सहनमूर्ति सीता पर अधिक लागू होता है। विवाह के पूर्व सीता ने जो कुछ बाल्यकाल का आनंद पाया होगा, सो होगा; उसके बाद तो उसके भाग्य में पतिभक्ति के साथ दुःख-ही-दुःख बदा था। राज्य-वियोग, वनवास, रावण द्वारा हरण, अशोकवन का विरह-शोक, अग्निशुद्धि, विवासन और भूमि माता के पेट में प्रवेश—यह है बेचारी सीता का जीवन। आपकी कलम से सीता का यह दुःख ज्वाला जैसा प्रकट होगा और आर्यजनों के हृदयों को दहलचा देगा।"

गुप्तजी बोले—"आपकी बात ठीक है। लेकिन हमारी कुल-परंपरा रामोपासना की है। राम हमारे आराध्य दैवत हैं। हम मानते हैं कि सीता वस्तुतः राम से वियुक्त हुई ही नहीं। जिसे लक्ष्मणजी वन में छोड़ आये, वह तो सीता माता की छाया ही थी। रामचरित केवल भगवत्-लीला है। उसका वर्णन जैसा आप कहते हैं, उस ढंग से हो ही नहीं सकता।"

गुप्तजी का जवाब मैंने अपने सिर माथे चढ़ाया; क्योंकि मैं जानता था कि उनके भाई सियारामशरणजी की और उनके सारे स्नेही परिवार की शक्ति ही परंपरागत रामभक्ति के कारण है। और प्रतिभा कभी मूलक्षयकारिणी नहीं हो सकती। ['मंगलप्रभात' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

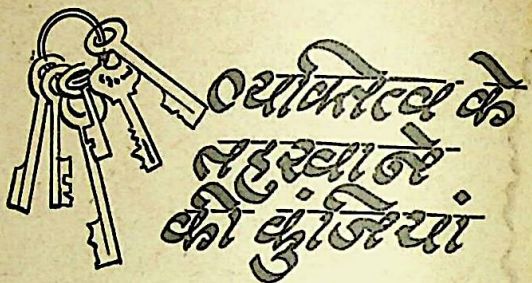

हीरे की परख जौहरी कर सकते हैं; लेकिन मनुष्य को परखना बृहस्पति के लिए भी आसान नहीं ।

विमल चंद्र

किसी पत्र में विनोबाजी ने लिखा था कि उन्हें आज तक कभी किसी व्यक्ति से निराशा नहीं हुई है; क्योंकि वे कभी किसी व्यक्ति के प्रति कोई पक्की धारणा बनाते ही नहीं । उनका कहना है कि हर व्यक्ति हर क्षण नया होता है ।

बात दार्शनिक दृष्टि से सही हो सकती है । लेकिन यह केवल आशा-निराशा और आशंका की बात नहीं है—बात है लोक-व्यवहार की । और अपने संपर्क तथा परिचय में आनेवाले व्यक्तियों के विषय में धारणाएं बनाये बिना दुनिया में काम नहीं चल सकता । यदि हम सभी अपने पत्नी-पुत्र, साथी-स्वजन, पड़ोसी-परिजन, अफसर और नौकर को अज्ञात एवं अज्ञेय व्यक्ति समझकर व्यवहार करना शुरू कर दें, तो घर, दुकान, दफ्तर, कारखाने सब ठप हो जायें।

इसलिए लोगों के बारे में धारणा बनाने अर्थात् उनके स्वभाव को परखने एवं उसके बारे में किसी परिणाम पर पहुंचने में [illegible] कने की जरूरत नहीं । जरूरत इस बात [illegible] है कि बिना अच्छी तरह सोचे-समझे [illegible] बिना पर्याप्त आधार के धारणाएं न बन [illegible] जायें, ताकि हमारी धारणाओं से हम [illegible] और दूसरों के प्रति अन्याय न हो।

नीचे बताये उपाय किसी भी व्यक्ति को जांचने और उसके विषय में सही [illegible] बनाने में सहायक हो सकते हैं :

१. बातचीत में उसे ज्यादा बोलने का अवसर दीजिये ।

बातचीत को वह जिस भी दिशा में मोड़ना चाहे, मोड़ने दीजिये । इस बात को मन में नोट करते जाइये कि किस प्रकार के विषयों पर बातचीत करना उसे भाता है । संसार और मनुष्यों के प्रति उसके दृष्टि-कोण को समझने का यह शायद सबसे अच्छा तरीका है ।

यह भी देखते रहिये कि हर विषय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रति उसका 'एप्रोच' क्या है ? मूलतः स्वीकारात्मक हैं या नकारात्मक ? क्या वह नये विचार, सुझाव और उपयोगी जानकारी देता है ? कहीं हर नये प्रस्ताव पर यह तो नहीं कहता—"साहब, इन-इन कारणों से यह काम असंभव है। सो इस योजना को छोड़ देना ही अच्छा है।"

२. वह जो कहे, ध्यान से सुनिये।

बोलने के लहजे पर गौर कीजिये। देखिये कि जो कुछ वह कह रहा है, वे महज काम-काजी बातें हैं क्या ? उसकी बातों में शेखी, क्षमा - याचना, हीन - भावना या उत्साह आदि में से किस प्रवृत्ति की झलक मिलती है।

आप देखेंगे कि मनहूसियत फैलानेवाली बातें प्रायः वही लोग करते हैं, जो अपने को दीन-हीन, दयनीय समझते हैं। बढ़ा-चढ़ाकर अपनी बात कहनेवाले प्रायः अपने को बहुत बड़ा समझते हैं। संकोची आदमी दबी जबान से, बिना भावावेश के बोलते हैं। और व्यक्तित्व के ये पहलू चार-छः लोगों के बीच उतनी अच्छी तरह नहीं प्रकट होते, जितने कि एकांत में संभाषण करते हुए प्रकट होते हैं।

३. उसके जीवन की बड़ी चीजों को जानने की कोशिश कीजिये।

बातचीत को चतुरतापूर्वक ऐसा मोड़ दीजिये कि वह अपने जीवन की बड़ी-बड़ी सफलताओं के विषय में बोलने लगे। इससे पता चलेगा कि जीवन में वह किन चीजों को महत्व देता है? किस किस्म के मित्र बनाता है; किस तरह के लोगों के साथ उठना-बैठना पसंद करता है ? दूसरों के साथ मिलकर क्या-क्या कार्य करता है ?

उस व्यक्ति से बचिये, जो किसी एक चीज को भी दिखाकर अभिमानपूर्वक यह न कह सके —"जीवन में मैंने ज्यादा तो नहीं; लेकिन यह एक चीज हासिल की है।" इस प्रकार के लोग न घर के होते हैं, न घाट के। उनकी अपनी कोई निश्चित महत्वाकांक्षा नहीं होती। वे हवा के साथ अपनी जीवन-दिशा बदलते रहते हैं। ऐसे लोग अपना और दूसरों का समय और सामर्थ्य बरबाद करते हैं।

४. देखिये वह किस विषय में बातचीत करने से बचता है।

हर आदमी कुछ विषयों की चर्चा में पड़ने से कतराता है। और जब कोई आपके सवाल का जवाब देने से बचने की कोशिश करे या सीधा जवाब न दे, तो समझ लीजिये, कि यह विषय उसे अप्रिय है। सामान्यतः ऐसे अवसर पर बातचीत का विषय बदल देना अच्छा है।

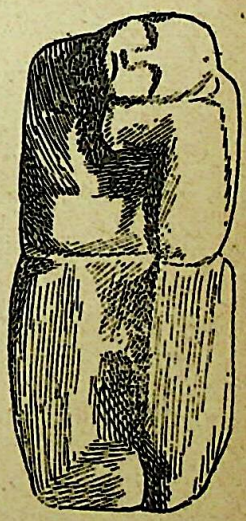

हर इन्सान एक बंद ताला है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन उस बात को याद रखना लाभप्रद है।

अंतर्मुखी प्रवृत्ति के लोग निजी मामलों पर दूसरों से बातचीत नहीं करना चाहते। निर्वैयक्तिक विषय—खासकर बौद्धिक विषय उन्हें ज्यादा रुचते हैं। बहिर्मुखी स्वभाव के लोग बौद्धिक चर्चाओं से तो घबराते हैं; किंतु थोड़े ही परिचय से अपने कष्ट-सुख, काम-धंधे और आशा-आकांक्षाओं के संबंध में खुलकर बोलने लग जाते हैं।

५. उसके हाव-भाव, व्यवहार को बारीकी से देखिये।

कुछ लोग धीरे-धीरे झिझकते हुए काम करते हैं; कुछ चुस्त होते हैं। कुछ के काम में सफाई नहीं होती, जबकि दूसरे बड़े सलीके से काम करते हैं। शारीरिक क्रियाएं मन का प्रतिबिंब होती हैं।

इसी तरह बेतरतीब और बेसलीका वेश भी बेतरतीब, बेसलीका दिमाग का सूचक है। इसके विपरीत कपड़े के विषय में बेहद सावधान होना इस बात का सूचक हो सकता है कि मनुष्य दिखावा-पसंद है। यही बात बालों व नाखूनों की है।

लेकिन इन विषयों में पूर्वग्रह से बचना आवश्यक है। टाइ सलीके से बांधी गयी हो, यह महत्व की चीज है; टाइ का रंग अपनी-अपनी पसंद की बात है।

६. बहुत जल्दी धारणा न बना लीजिये।

अधिकांश मनुष्यों का स्वभाव काफी जटिल और विसंगतियों से भरा हुआ होता है। और गंभीर एवं विश्वसनीय व्यक्ति की तुलना में दिखावटी, छिछोरा आदमी थोड़े समय के परिचय में अक्सर अधिक प्र[भा]वित कर लेता है। बहुधा बाहरी चमक-[दमक] चतुरता के खोखलेपन को ढके रहती है।

७. अपनी धारणाओं को पत्थर की लकीर न समझिये।

किसी को चाहे कितने समय तक [और] परखा व समझा हो, फिर भी गलती की गुंजाइश तो रहती है। पहली धारणा [को] यही समझकर बनानी चाहिये कि वे तात्का[लिक] हैं; निरीक्षण और विवेचन द्वारा [उन] सुधार करते चलिये। इससे आपको [यह] पता चल जायेगा कि प्रायः व्यक्ति [के] मूल्यांकन में आप क्या गलतियां करते [हैं]।

८. खूब अभ्यास कीजिये।

दूसरी सभी चीजों की तरह आदमी [को] परखने की शक्ति भी अभ्यास से [बढ़ती] है। कपड़े का व्यापारी कपड़ा देखकर [ही] का स्तर और मूल्य समझ लेता है। [इसका] यही है कि रोज तरह-तरह के कपड़े [से] उसका वास्ता पड़ता रहता है। शराब [के] रसिया रंग और खुशबू से ही बता दें [कि] कि कोई शराब किस किस्म की और [कि]ती पुरानी है। कारण यही है कि तरह-तरह [की] शराबों का जायका वे लेते रहते हैं। [यही] बात आदमी को परखने के संबंध में [है]। जितने ही अधिक आदमियों को आप [पढ़] लेंगे, उतने ही अच्छे पारखी बनेंगे।

हम रोज तरह-तरह के व्यक्तियों [से] मिलते हैं। उनका अध्ययन करना [और] उन्हें परखना भी रोचक ही नहीं, लाभप्रद [भी] हो सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थर की नाक में नकेल

सुरेश वैद्य

पश्चिम भारत का थर, जिसे स्थानीय लोग 'मरुस्थल' के नाम से जानते हैं, संसार के बड़े-बड़े रेगिस्तानों में से है। इसने भारत और पाकिस्तान की सीमा पर ८० हजार वर्गमील इलाके पर कब्जा जमा रखा है। यह सारा ही प्रदेश ऊजड़ है और उसकी औसत जनसंख्या १६ मनुष्य प्रति वर्गमील है-कहीं-कहीं तो प्रति वर्गमील ६ मनुष्य से भी कम। रेत और चट्टानें,मीलों तक एक के पीछे एक फैले हुए मामूली ऊंचाई के रेतीले टीले– यह है थार की दृश्यावली। सभी रेगिस्तानों की तरह यह भी ऊसर और निर्जल है।

आपको आश्चर्य होगा सुनकर कि इसमें भी गांव हैं, कुंए हैं– बेशक बहुत थोड़े, और कई-कई मील के अंतर पर। लेकिन थर का एक तिहाई हिस्सा इतना सूखा है कि वहां कुछ भी नहीं उगता। मैं उसके छोर पर गया था। मैंने देखा कि वहां तो चिड़िया भी नहीं उड़ती।

तो भी थर की पशु-संपदा काफी बड़ी है। उसमें ४० लाख गाय-भैंस, २ करोड़ भेड़-बकरी और कोई ५ लाख ऊंट हैं। क्या खाकर गुजारा करते होंगे ये ? प्रकृति ने उनकी मदद की है। 'सेवन' नाम की एक घास वहां उगती है, जो बहुत उम्दा चारा है। रेगिस्तानी झाड़ियां भी पशुओं के लिए पौष्टिक होती हैं। पशु इन पर पलते हैं। रही पानी की बात। सो रेगिस्तानी पशुओं को वैसे भी कम प्यास लगती है। हप्ते में तीन बार पेट-भर पानी मिल जाये, तो वे तृप्त हो जाते हैं।

मरुस्थल पर प्रथम आक्रमण करनेवाले सर गंगासिंहजी

हजारों वर्षों तक थर लगभग जनहीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गगरी-भर मीठे जल के लिए मीलों यात्रा

था। लोग उसे पार करने से डरते थे। उसे मनुष्य के निवास योग्य बनाने की बात किसी को नहीं सूझती थी। इसके एकमात्र अपवाद थे बीकानेर के स्वर्गीय महाराज गंगासिंह राठौड़, जिनकी रियासत उत्तरी थर में पड़ती थी। अपने राज्य को समृद्ध बनाने के लिए उन्होंने यह साहसपूर्ण योजना बनायी कि डेढ़ सौ मील लंबी नहर खोदकर पड़ोस के राज्य पंजाब में बहनेवाली सतलज नदी का पानी हनुमानगढ़ लाया जाये।

गंगा-नहर नाम की यह योजना १९२७ में पूरी हुई और उसके सुफल ने सबको चकित कर दिया। हनुमानगढ़ गेहूं, दाल, सरसों और कपास के खेतों से लहलहा उठा। आज यह प्रदेश गंगा नगर कहलाता है और यहां के कृषकों की खुशहाली देश-भर में प्रसिद्ध है। भारत की सबसे समृद्ध कृषि-भूमियों में इसकी गिनती होती है। साल में १० लाख से ज्यादा तो यहां अनाज ही उगता है; दूसरे उत्पादनों की बात अलग।

गंगा नहर ने लोगों की आंखें खोल दीं। देश को सबक मिल गया कि सिंचाई द्वारा रेगिस्तान को नंदनवन बनाया जा सकता है। अब तो भाखड़ा-नंगल के पानी से मरुभूमि को सींचने की बात सोची जा रही है। आर-पार छः सौ मील लंबी नहर से रेगिस्तान के दक्षिणी छोर पर स्थित बाड़मेर जिले तक पानी पहुंचाया जायेगा।

रेगिस्तान से लड़ने के और भी उपाय हो रहे हैं। केंद्र सरकार ने जोधपुर में 'अरिड जोन रिसर्च इंस्टिट्यूट' नामक शोध-संस्थान खोला है। यहां हो रहे शोध-कार्य थर के भविष्य पर जबर्दस्त असर डालेंगे।

यहां के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जैसे अनावृष्टि के कारण भूमि रेगिस्तान बन जाती है, उसी प्रकार भूमि का रेगिस्तान बनना अनावृष्टि को पैदा करता है। इस चक्र को सुलझाने के लिए थर के खास इलाकों में पशु चराने और ईंधन बटोरने की मनाई कर दी गयी है, ताकि वहां के पौधों को जीने-पनपने का मौका मिले। प्रयोग सफल हुआ है और इन सुरक्षित इलाकों में हरियाली बढ़ी है। इसका परोक्ष प्रमाण है कि वर्षा की मात्रा में सुधार हुआ है।

रेगिस्तान का सबसे बड़ा बवाल है आंधी। वह रेत को उड़ा ले जाती है और खेती को बिगाड़ डालती है। उसके उत्पात को रोकने का साधन है वायुरोधकों द्वारा हवा के बहाव को तोड़ना। वृक्षों की पांतें उत्तम वायुरोधक होती हैं। लेकिन रेगिस्तान में वृक्ष रोपना बड़ा कठिन काम है। इसलिए वैज्ञानिकों ने रेत के टीलों पर घास और झाड़ियां उगाकर उनसे वायुरोधक का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेने की बात सोची है।

घास नमी की खोज में दूर-दूर तक अपनी जड़ें फैलाती है। इस प्रकार टीबे के भीतर जड़ों का जाल बिछ जाता है और वे टीले स्थिर हो जाते हैं। फिर उनसे टकराकर हवा का प्रवाह टूट जाता है। पाताल से पानी निकालने के लिए यहां गहरे कुंए भी खोदे जा रहे हैं।

थर को कोई अब अजेय नहीं मानता। गंगानगर का दृष्टांत सबके सामने है। लेकिन यह भी देखा गया है कि रेगिस्तान की विजय अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जन्म देती है। उदाहरण के लिए गंगानगर को लीजिये। पशु-पालन वहां के निवासियों का पेशा था। जब कृषि ने वहां कदम जमाये, तो ये लोग विस्थापित हो गये। तो क्या जब थर के दूसरे भागों में भाखड़ा का पानी पहुंचेगा, वहां के मूल निवासियों को भी इसी तरह बेघर हो जाना पड़ेगा?

यह एक गंभीर समस्या है और इसके विषय में कोई सुस्पष्ट नीति अब तक निर्धारित नहीं हुई है। लेकिन हवा के रुख को देखते हुए आशा बंधती है कि रेगिस्तान के निवासियों को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। नहर से उनकी हालत सुधरेगी ही।

रेगिस्तान से आहार उत्पन्न करना बहुत ही जरूरी है; क्योंकि भारत में आहार की तंगी है। लेकिन आहार का अर्थ केवल अनाज ही नहीं है। दूध, घी और मांस भी आहार है। और नहरें जैसे खेतों को सींच सकती हैं, चरागाहों को भी सींच सकती हैं। यों भी भारत में दूध और मांस की तंगी है। सिंचाई - व्यवस्था हो जाने पर रेगिस्तान इसे दूर कर सकता है।

राजस्थान सरकार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। थर भारत की कई उत्तम नस्ल की गायों का जन्मस्थान है—साहीवाल, कांकरेज, लाल सिंधी और मालवी नस्लें थर की ही देन हैं। ऊंची नस्ल की गायों व सांड़ों के उत्पादन व पालन की शिक्षा देने के लिए बीकानेर में पशु-चिकित्साशास्त्र का कालेज खोला गया है। भेड़ों की नस्ल व ऊन की किस्म को सुधारने के लिए एक शोध-केंद्र की भी स्थापना की गयी है। राजस्थान सरकार और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने मिलकर एक ऊंट-फार्म भी आरंभ किया है। ये संस्थाएं थर के पशु-पालकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

थर की नाक में नकेल डालने से देश के दूसरे हिस्सों को भी लाभ पहुंचेगा। रेगिस्तानों की आदत होती है कि सख्त नजर न रखी जाये, तो वे धीरे-धीरे पांव पसारने लगते हैं। और थर, जिसमें सदा तेज हवाएं बहती रहती हैं, धीरे-धीरे गंगा के कांठे की ओर अग्रसर होता जा रहा है। एक वक्त तो खतरा पैदा हो गया था कि दिल्ली, आगरा, मथुरा कहीं रेत में न दब जायें। अब तक जो कदम उठाये गये हैं, उनसे भी यह खतरा काफी हद तक टल गया है और अगर हम मुस्तैदी-से कदम उठायेंगे, तो बिलकुल दूर हो जायेगा। ['आकाशवाणी' से साभार]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस देश ने अपने राष्ट्रनिर्माता
स्मृति को अक्षुण्ण बनाने का
अनोखा मार्ग चुना है।

स्वीडन का 'वासा-स्की' या 'वासालोपेट' फ्रांस की 'ग्रां प्री' मोटर-दौड़ और 'टूर दे फ्रांस' साइकल - प्रतियोगिता की भांति यूरोप के सबसे बड़े सालाना खेल-समारोहों में से है। स्कीइंग यानी पैरों में लकड़ी के तख्ते बांधकर बर्फ पर फिसलने की इस दौड़ में भाग लेना स्वीडन में मर्दानगी की निशानी समझा जाता है। और यह धारणा बिलकुल गलत भी नहीं है।

वासा-स्की रेस हर साल फरवरी-मार्च में होती है और उसमें सारी दुनिया के तीन-चार हजार स्कीइंग-खिलाड़ी भाग लेते हैं। प्रतिस्पर्धी मध्य स्वीडन में सालेन के पास कोपरबर्ग्स की पहाड़ी पर से स्कीइंग आरंभ करते हैं और ५५ मील दूर झील सिलजान के दक्षिण मोरा में दम लेते हैं। विजेता खिलाड़ियों को यह रास्ता तय करने में प्रायः छः घंटे लगते हैं; लेकिन फिसड्डी प्रतिस्पर्धी कूच की सीटी बजने के चौबीस घंटे बाद भी मोरा पहुंचते रहते हैं। मोरा पहुंचते-पहुंचते खिलाड़ी इस कदर थके-हारे और भूखे होते हैं कि अपनी दैनिक से तीन-चार गुना ज्यादा खाना खा जाते हैं।

किंतु इस क्रीड़ा-समारोह की सबसे विशेषता यह है कि यह आज से चार साल पहले की एक ऐसी घटना का स्म है, जिसने स्वीडन की स्वाधीनता की डाली थी।

सोलहवीं सदी के आरंभ में स्वीड राष्ट्रीयता की भावना जोर पकड़ रही उन्हीं दिनों डेन्मार्क के राजा क्रिस द्वितीय ने स्वीडन पर हमला कर उसे लिया। स्टाकहोम में प्रवेश करने के विजयी राजा ने आदेश दिया कि स्वीड कतिपय प्रमुख सरदार जमानत के उसके सुपुर्द किये जायें।

इस प्रकार जो सरदार पकड़े गये, एक था तेईस वर्ष का युवक गुस्ताव सान या गुस्टावस वासा। वह एक सरदार-घराने का सदस्य था, जिसने का डटकर मुकाबला किया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उसके साथी जहाज द्वारा डेन्मार्क ले जाये गये और वहां उन्हें बेड़ियां पहनाकर जेल में डाल दिया गया।

सन १५१९ में गुस्टाव किसी प्रकार भाग निकला और अगले साल मई में ग्वाले के वेश में काल्मार पहुंचा। वहां उसे पता चला कि स्टाकहोम में उसके पिता और बहनोई को मौत के घाट उतारकर उसकी मां और बहन को कैद कर लिया गया है। सो स्टाकहोम जाना अपनी जान बेकार जोखिम में डालना था।

एक ही स्थान था, जहां गुस्टाव को शरण मिल सकती थी। वह था मध्य स्वीडन का डेल कार्लिया जिला, जहां के चरवाहों और खनिकों की देशभक्ति प्रसिद्ध थी। लुकते-छिपते वह रानकैटन में अपने मित्र के घर पहुंचा। लेकिन वहां एक दिन उसके चोगे के नीचे छिपे जरी के कालर को देखकर एक परिचारिका ने उसे पहचान लिया।

तुरंत गुस्टाव को उसके मित्र ने कुछ दूर एक और मित्र के घर पहुंचवा दिया। यह मित्र कच्चा था। उसने स्थानीय डेनिश कोतवाल के पास खबर भेज दी। लेकिन कोतवाल के आदमी आयें, इसके पहले ही बेवफा मित्र की बीवी ने गुस्टाव को आगाह कर दिया और वह भाग निकला। स्वार्डस्यो में एक पादरी ने उसे शरण दी और इसाला में जंगलात के कर्मचारी स्वेन ने।

लेकिन खबर फैल चुकी थी और डेनिश सैनिक गुस्टाव को पकड़ने के लिए डेल-कार्लिया को छान रहे थे। सैनिक सारे जिले को चारों ओर से घेरकर केंद्र की ओर आगे बढ़ते आ रहे थे। वे नहीं जानते थे कि गुस्टाव स्वेन के घर है।

एक दिन स्वेन की पत्नी डबल रोटियां पका रही थी और स्वेन भट्ठी के पास खड़ा हुआ आग ताप रहा था। इतने में सैनिक दरवाजे पर आ पहुंचे। स्वेन की पत्नी क्षण-भर में परिस्थिति की भीषणता को भांप गयी और उसने बेलन उठाकर गुस्टाव की पीठ पर मारा और झल्लाकर कहा—"यहां खड़ा-खड़ा तमाशा क्या देख रहा है बेवकूफ? जाकर दूसरे नौकरों के साथ खेत में काम क्यों नहीं करता?"

और यह युक्ति काम कर गयी। सैनिक चकमे में आ गये। वे समझ नहीं पाये कि जिस आदमी को पकड़ने के लिए वे कई हफ्तों से रतजगा कर रहे हैं, वह उनकी आंखों के सामने खड़ा है और चुपचाप चले गये।

इसाला में रहना अब खतरे से खाली नहीं था। गुस्टाव के समर्थकों ने उसे भूसे की गाड़ी में छिपाकर राष्ट्रीयता के गढ़

एक अनोखा राष्ट्रीय स्मारक

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झील सिलजान की ओर रवाना कर दिया ! लेकिन पीछे से डेनिश सैनिक आ पहुंचे । उन्होंने भूसे में भाले घोंपकर देखा कि कहीं उसमें कोई आदमी तो नहीं छिपा है । गुस्टाव के कई गहरे घाव लगे ; लेकिन उसने आह तक न भरी ।

सैनिक लौट गये । लेकिन गाड़ीवान ने देखा कि घास में से रक्त गिर रहा है। यही राज न खोल दे, इस विचार से उसने छुरा निकालकर घोड़े के पांव में गहरा घाव कर दिया और गाड़ी हांक दी । आगे जब दूसरे सैनिकों ने खून बहने का कारण पूछा, तो उसने घोड़े की ओर इशारा कर दिया ।

सिलजान के तट पर रैत्विक पहुंचकर उसने लोगों को बगावत के लिए उकसाया । किंतु लोगों ने कोई उत्साह न दिखाया, तो वह १५२० के बड़े दिनों में मोरा पहुंचा । वहां के लोग भी बगावत का झंडा बुलंद करने के लिए तैयार न थे । निराश गुस्टाव स्कीइंग करता हुआ नार्वे की सीमा की ओर चल पड़ा ।

दो-चार दिन बाद ही चारों ओर से डेनिश सैनिकों के जोरो-जुल्म के समाचार आने लगे । गांव-गांव में सूलियां खड़ी कर दी गयी थीं । छोटे-छोटे अपराधों पर प्राण-दंड दिया जा रहा था । मोरा-निवासियों के मन पश्चात्ताप एवं ग्लानि से भर गये कि उन्होंने उस वीर युवक को खाली हाथ लौटा दिया था । स्कीइंग में तेज-तर्रार दो नौजवान गुस्टाव के पीछे भेजे गये, जो दो दिन बाद लिमा में उसके पास जा पहुंचे ।

गुस्टाव एरिक्सान स्कीइंग करता उनके साथ लौटा । उसने देशभक्त सेना जुटायी और डेनों पर धावा बोल अगले ढाई साल में उसने अत्याचारी ताओं को स्वीडन से खदेड़ दिया। देशवासियों ने १५२३ में उसे स्वीड राजा चुन लिया । और चालीस स सुदीर्घ और सुदक्ष शासन में उसने निक स्वीडन की नींव डाली।

गुस्टाव की यह गाथा स्वीडिश का अंग है। लेकिन उस घटना की स्कीइंग-प्रतियोगिता चलाने का १९२२ में एक अखबार के प्रकाशक देश-भर में इस सुझाव का जो स्वागत हुआ, उससे प्रेरित होकर नागरिकों ने इस वार्षिक स्कीइंग की शुरूआत की ।

पहली प्रतियोगिता १९ मार्च को हुई । सवेरे ६ बजकर ४० मिनि ११६ प्रतिस्पर्धी सालेन से चले। ३२ मिनिट, ४९ सेकेंड बाद अन्त लक्ष्य छूकर प्रतिस्पर्धा जीत गया।

पिछले बयालीस वर्षों में प्रति के रास्ते में खास परिवर्तन नहीं हुआ तीन मील लंबाई जरूर कम कर दी शुरू के अट्ठाईस साल केवल स्वीड इसमें भाग ले सकते थे । १९४८ से देशों के खिलाड़ियों के लिए खोल दी है । १९५४ में विजय का सेहरा एक लैंडवासी के सिर बंधा । अब तो वियाई देशों के अलावा इंग्लैंड, जर्मनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ के प्रदीप

यह चीज मनुष्यों के बूते की नहीं है कि वे पहले से ही भविष्य के घटनाक्रम को जरा विस्तार से भांप या बता सकें – और यह अच्छा ही है; क्योंकि अन्यथा उनका जीना दूभर हो जाता। एक क्षण तो प्रतीत होता है कि अमुक मनुष्य सही राह पर थे; दूसरे क्षण लगता है कि नहीं, वे गलती पर थे। फिर कुछ वर्ष पीछे, जब काल का परिप्रेक्ष्य कुछ लंबा खिंच जाता है, तब सभी कुछ दूसरे ही परिवेश में दिखाई देता है। हम पाते हैं कि अब नया ही अनुपात है, मूल्यांकन का पैमाना भी बदला हुआ है। इतिहास अपना टिमटिमाता दीपक लिये, डगमगाते कदमों से अतीत के पीछे-पीछे चलता है – उसके दृश्यों को पुनः घड़ने, उसकी गूंज को फिर से जगाने और बीते दिनों के भावावेशों को अपनी बुझी-बुझी लौ से फिर भड़काने की कोशिश करता है। किंतु इस सबका उपयोग क्या है ? मनुष्य का एकमात्र मार्गदर्शक उसकी अंतरात्मा है; उसकी स्मृति की रक्षा करनेवाली एकमात्र ढाल है, उसके कामों की प्रामाणिकता और सच्चाई। और यह ढाल लिये बिना जीवन-पथ पर चलना बहुत बड़ा अविवेक है; क्योंकि हमारी आशाएं धरी रह जाती हैं, हमारा हिसाब गड़बड़ा जाता है और हम मजाक बन जाते हैं। किंतु यदि यह ढाल हमारे हाथ में है, तो हम सदा इज्जतदार लोगों की कतार में रहेंगे।

–सर विंस्टन चर्चिल

इटली के खिलाड़ी भी इसमें भाग लेते हैं।

रेस जीतने में कितना समय लगता है, यह खिलाड़ियों की दक्षता के अलावा जल-वायु पर भी निर्भर रहता है। अब तक केवल एक खिलाड़ी ने पांच घंटे से कम समय में प्रतियोगिता जीती है। वह है– डेविड जोहान्सन, जिसे १९६१ में ५५ मील तय करने में केवल ४ घंटे, ४५ मिनिट, १० सेकेंड लगे।

रेस का रास्ता ठीक वही है, जिस पर गुस्टाव ने स्कीइंग की थी, यह तो नहीं कहा जा सकता; लेकिन दोनों रास्तों में बहुत ज्यादा अंतर नहीं होगा। महत्व की बात तो यह है कि प्रतियोगिता के लिए गुस्टाव के नार्वे की ओर जाने का नहीं, बल्कि उधर से लौटने का रास्ता चुना गया है। प्रतियोगिता जिस रेखा पर समाप्त होती है, वहां एक तख्ते पर ये शब्द लिखे रहते हैं– "भावी विजयों के लिए अपने पूर्वजों के चरण-चिह्नों पर।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहस्यवादी वैज्ञानिक सेंट-ज्योर्जी

चिकित्साशास्त्र के लिए महान वरदान सिद्ध हो सकनेवाले गहन प्रयोगों निरत एक बुजुर्ग वैज्ञानिक का जीवन परिचय--वी० एन० ओके रंगीन पोर्ट्रेट के साथ; सामग्री 'थिंक' साभार ।

होमर पेज

"यों रोगियों को स्वस्थ करने की अभिलाषा चिकित्साशास्त्रियों को सदियों से देती आ रही है; लेकिन अब तक उनके प्रयत्नों को आशा के अनुरूप सफलता मिली है। आखिर, यह जाने बिना कि कोई मशीन कैसे काम करती है, उसकी मरम्मत का प्रयत्न व्यर्थ ही है न। और जीव-शरीर भी एक तरह से मशीन ही है, जिसके पुर्जे सूक्ष्म व अति जटिल हैं और इसलिए आसानी से समझ में नहीं आते।

"अतः हमें जीवशास्त्र के जरिये यह समझना होगा कि शरीर-यंत्र कैसे काम करते हैं। सच्चे आधुनिक चिकित्साशास्त्र की नींव डालने के लिए हमें प्रकृति की बुनियाद तक पहुंचना होगा और इस सवाल का जवाब देना होगा कि जीव-शरीर की बुनियादी इकाई 'कोश' आखिर क्या चीज है।"

और इसी सवाल का जवाब खोजने में जीवन बिता दिया है रुपहले बाल, हंसते भरे चेहरे, ठिगने-ठोस शरीर और बहुत लंबे नामवाले वृद्ध विज्ञान-साधक अल्बर्ट नाग्यरापोल्त सेंट-ज्योर्जी ने, जो वुड्स होल (मैसाचुसेटस्, अमरीका) के 'इंस्टिट्यूट मसल्स रिसर्च' के निर्देशक हैं और जिनकी हाल की वैज्ञानिक खोजों से संभव है, को पराजित करने का ब्रह्मास्त्र इन्सान के हाथ लग जाये।

मैसाचुसेट्स के दक्षिण-पूर्वी समुद्र-तट पर एक शांत एकांत स्थान पर उनका बंगला खिड़की से झांकने पर बुजार्ड खाड़ी की शांत जलराशि और उस पर गश्त लगाती किश्तियां दिखाई देती हैं। दीवानखाना आरामदेह कुर्सियों से भरा पड़ा है, और उनकी अक्सर विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिक बढ़ाया करते हैं। कोने में एक नीची मेज पर शतरंज बोर्ड और मोहरे रखे हैं। दूसरे कोने में पियानो है और उस पर सजी हुई हैं बिथोवेन रचनाओं की स्वरलिपियां।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

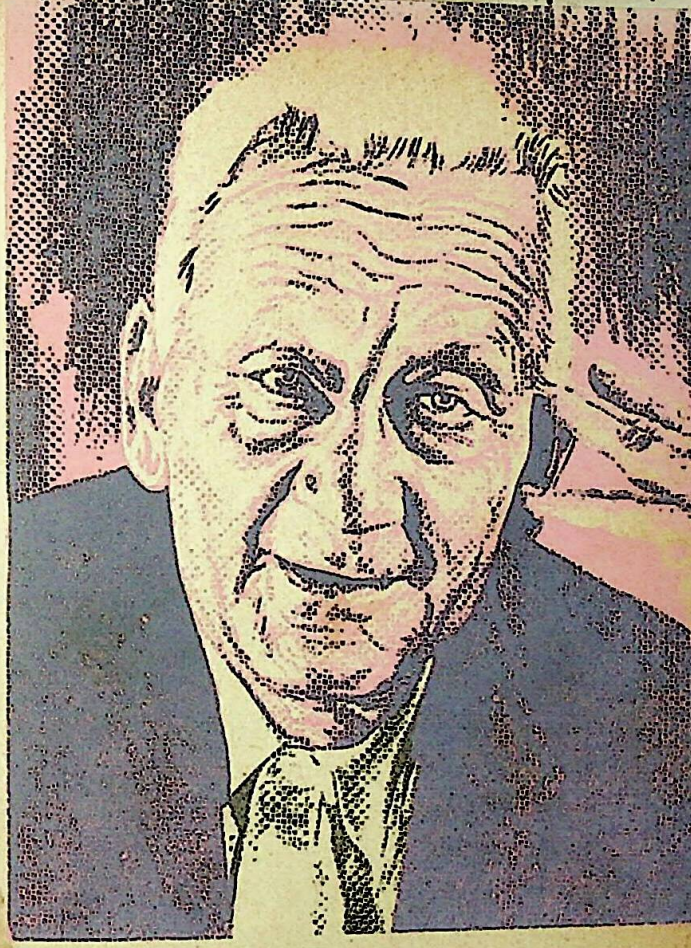

आगंतुकों से ये वृद्ध वैज्ञानिक प्रायः दो ही विषयों पर बातचीत करते हैं—बुनियादी शोध और मानव का अस्तित्व। अध्यापक नहीं, बल्कि बड़े भाई की तरह वे समझाने लगते हैं :

"मोटर को समझने के लिए पहले कार्बुरेटर और पिस्टन को समझना पड़ता है। इसी तरह किसी भी वस्तु की रचना को समझने के लिए वैज्ञानिक को उससे नीचे की सीढ़ी की चीज को समझना पड़ता है। जब आज से बहुत पहले हंगरी में चिकित्साशास्त्र पढ़ते हुए मैंने 'जीवन क्या है ?' इसे समझने की कोशिश करने का निश्चय किया, तब यह बात मेरी समझ में आयी। शरीरक्रिया-शास्त्र मुझे बेहद जटिल लगा, और मैं औषधशास्त्र की ओर झुका। उसमें एक चीज—औषध—तो सरल होती है। लेकिन मेरी मुसीबत दूर नहीं हुई। इसलिए मैं कीटाणुशास्त्र, फिर दैहिक रसायनशास्त्र और अंत में शुद्ध रसायनशास्त्र की शरण में पहुंचा और व्यूहाणुओं का अध्ययन करने लगा, जो तब तक द्रव्य की सबसे छोटी इकाई थी। फिर अभी कुछ दशक पहले मुझे प्रतीत हुआ कि व्यूहाणु भी बहुत जटिल चीज है और मैं इलेक्ट्रानों की दुनिया में उतर पड़ा।

"इस प्रकार जीवन का अध्ययन करने के लिए चला हुआ मैं एक-एक सीढ़ी उतरता हुआ अंत में निर्जीव अणु पर आ पहुंचा। मैं तो जीव के जीवत्व को ही खो बैठा था। इसलिए मैं उलटा मुड़ा और सरल से जटिल और जटिलतर रचनाओं की ओर लौट पड़ा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधी सदी के प्रखर और उज्वल ज्ञान-तप का इससे अधिक अलंकारहीन रूप हो सकता। उनकी विनम्रता न्यूटन की याद दिलाती है, जिसने कहा था–"मैं सागर-तट पर खेलता हुआ एक नन्हा बालक हूं, जो जरा अधिक चिकना कंकड़ या, जरा सुंदर सीप पाकर ही खुश हो उठा है; जबकि सत्य का विशाल सागर मेरे सामने अनमापा पड़ा है।"

उनके शोधकार्य के कुछ प्रसंग तो विज्ञान-जगत में पुराण-कथाओं की तरह हैं। प्रसिद्ध 'शिमला-मिर्च का किस्सा' उन्हीं के मुंह से सुनिये :

"तीस साल पहले कैंब्रिज में शोधकार्य करते हुए मैंने मवेशियों की एड्रिनल से एक द्रव निकाला था, जिसका नाम मैंने 'हैक्स्युरोनिक एसिड' रखा। इसे बनाना कठिन था कि अमरीका की मिनेसोटा क्लिनिक में मुझे २५ ग्राम जितना यह एसिड में पूरा एक साल लग गया। फिर मैं हंगरी लौट आया।

"अब तक यह सिद्ध हो चुका था कि वास्तव में यह एसिड ही विटामिन 'सी' इसे 'एस्कार्बिक एसिड' नाम दिया जा चुका था। चिकित्साशास्त्रियों को इस एसिड की आवश्यकता थी; किंतु हंगरी में मवेशियों की एड्रिनल ग्रंथियां सुलभ न होने से यह दुष्प्राप्य था।

"उन्हीं दिनों एक रात को मेरी पत्नी ने भोजन में शिमला मिर्च की सब्जी दी, जिसे खाने की मेरी इच्छा नहीं थी। तभी मुझे खयाल आया कि शायद यही एक चीज है, जिसे मैंने एस्कार्बिक एसिड के लिए नहीं जांचा है। सब्जी की प्लेट लिये मैं प्रयोगशाला पहुंचा और रात का दूसरा पहर बीतते-बीतते पता चला कि यह मिर्च तो एस्कार्बिक एसिड का खजाना है। कुछ ही हफ्तों के भीतर मैंने कई किलोग्राम एस्कार्बिक एसिड वैज्ञानिकों को बांट दिया।"

एक खोज ने दूसरी खोज के लिए रास्ता बना दिया। एस्कार्बिक एसिड जब अशुद्ध रूप में था, तब 'पर्पुरा' नाम चर्मव्याधि के रोगियों पर उसका प्रयोग किया और उन्हें उससे लाभ भी हुआ। इसलिए जब एस्कार्बिक एसिड के विशुद्ध स्फटिक हुए, तो 'पर्पुरा' के रोगियों को उनका सेवन कराया गया। लेकिन अजीब बात थी कि उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

सेंट-ज्योर्जी ने अनुमान किया कि जरूर अशुद्ध एस्कार्बिक एसिड में कोई और चीज थी, जिसने रोगियों को राहत पहुंचायी। खोज की गयी और सिद्ध हुआ कि मिर्च तथा कई पौधों पर पाये जानेवाले 'फ्लेवोन' नाम के स्फटिकों ने यह काम किया था।

इस घटना ने आगे सन १९३७ में उन्हें नोबेल-पुरस्कार तो दिलवाया ही, साथ यह भी सिखाया कि वैज्ञानिक शोध में सब कुछ बुद्धिपूर्वक ही नहीं होता। वे खुले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं–"अपनी वैज्ञानिक समस्याओं का हल मुझे बुद्धिपूर्वक चिंतन से बहुत कम ही प्राप्त होता है। बेशक मैं दिन-भर समस्याओं पर सोचता रहता हूं; लेकिन मेरे सो जाने पर भी मेरा दिमाग अपने ही ढंग से खोज करता रहता है और नींद खुलते ही, कई बार तो नींद में भी, पूरा-का-पूरा उत्तर मेरी आंखों के सामने कौंध जाता है।"

सेंट-ज्योर्जी आजकल जिस शोध में लगे हैं, वह भी विज्ञान की इस रहस्यमयता का खासा नमूना है। कोई पंद्रह साल पहले मांस-पेशियों का अध्ययन करते हुए उन्होंने महसूस किया कि बीच की कोई कड़ी उन्हें मिल नहीं रही है। सो उन्होंने यह जांच शुरू की कि आखिर कोश क्यों बढ़ते और विभक्त होते हैं? और निरीक्षण के लिए उन्होंने कैन्सरग्रस्त कोश लिये, जो अन्य कोशों की अपेक्षा बहुत अधिक तेजी से बढ़ते हैं।

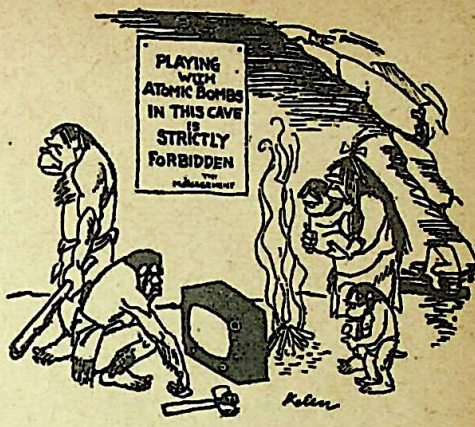

इस गुफा में अणुशस्त्रों से खेलने की सख्त मनाई है।

[एमरी कलन का व्यंग्यचित्र 'हिन्दू' से साभार]

इस प्रयोग से दो तत्व हाथ लगे, जिनमें से एक कैन्सरीय कोश की वृद्धि में सहायता देता है, दूसरा वृद्धि की रोकथाम करता है। संभव है, सेंट-ज्योर्जी की यह खोज आगे चलकर कैन्सर की पहेली को सुलझा दे।

सेंट-ज्योर्जी का जीवन भी उतना ही घटनापूर्ण है, जितना कि उनका शोधकार्य। वे १६ सितंबर १८९३ को बुडापेस्ट में जन्मे और अनेक विदेशी विज्ञानशालाओं में खोज-कार्य करने के बाद हंगरी में विज्ञान के प्राध्यापक बने। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व वे सीजेड विश्व-विद्यालय के स्थानापन्न अध्यक्ष थे। इस बात से वे बहुत दुःखी थे कि फासीवाद की चेचक हंगरी में भी फैलने लगी थी; वहां भी यहूदियों का दमन शुरू हो गया था।

और जब विश्वयुद्ध छिड़ ही गया, तो सेंट-ज्योर्जी इस्तंबूल जा पहुंचे। कहने को तो वे विज्ञान पर भाषण देने आये थे; लेकिन उनके पास मित्र राष्ट्रों के नाम हंगरी सरकार का एक महत्वपूर्ण गुप्त संदेश था। बड़ी मुश्किल से गुप्तचरों का घेरा तोड़कर, यह संदेश अंग्रेजों तक पहुंचाकर वे वापस लौटे।

किंतु जर्मनों को इसका सुराग मिल ही गया और हंगरी पर कब्जा जमाते ही उन्होंने सेंट-ज्योर्जी को अपने सुपुर्द करने की मांग की। सेंट-ज्योर्जी स्वीडिश दूतावास में छिप गये। एक स्वीडिश प्रकाशक की नासमझी से राज खुल गया और गेस्टापो दूतावास की तलाशी लेने आ पहुंचा। किंतु पिछली रात को ही स्वीडिश दूत ने उन्हें अपनी कार के 'बूट' में लिटाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया था। फिर तो जब तक रूसियों ने बुडापेस्ट को स्वतंत्र दिलवायी, सेंट-ज्योर्जी इधर-उधर छिपते रहे। अपनी पत्नी व पुत्री से भी उन्हें विछुड़

युद्ध के बाद उन्होंने देश के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में ध्यान लगाया। पचास निकों को लेकर उन्होंने विज्ञान अकादमी की पुनः स्थापना की। जब दो-चार आदमी के लिए भी बुडापेस्टवासियों को दस-दस घंटे भटकना पड़ता था, तब भी उन्होंने के लिए समस्त सुख-सुविधाएं जुटा दीं। रूसी उनके साथ अदब से पेश आये। किंतु युद्ध और पुराने पूंजीपतियों के साथ रूसियों का व्यवहार देखकर उनका मन कड़वा हो गया वे हंगरी छोड़कर अंत में अमरीका में आ बसे।

युद्ध के इन अनुभवों ने उन्हें अवसाद से भर दिया; लेकिन इससे भी अधिक वे हैं बड़े राष्ट्रों में लगी अणुशस्त्रों की होड़ पर। विज्ञान के इस दुरुपयोग के विरुद्ध अपनी पुस्तक 'सायंस, एथिक्स एंड पालिटिक्स' में आवाज बुलंद की है।

वे पूछते हैं—"क्या यह एकदम उपसाहास्पद नहीं है कि कोई विशाल राष्ट्र तो अपनी बहुत-सी शक्ति मनुष्य को अंतरिक्ष भेजने में खर्च करे और साथ ही दूसरी धरती पर मनुष्य को मनुष्य से अलग करने के लिए दस फुट ऊंची सीमेंट की दीवार खड़ी क्या यह उपाहासास्पद नहीं है कि संसार की एक-तिहाई जनता अपना बहुत-सा मारक शस्त्रों के निर्माण में व्यय करे, जबकि दूसरी एक-तिहाई आबादी भूखी मर रही

यह परिस्थिति कैसे उत्पन्न हुई, यह समझाते हुए वे कहते हैं—"हमारा मस्तिष्क तक हमारी जीवन-रक्षा का प्रमुख साधन रहा है। किंतु मानव-मस्तिष्क का विकास के अनुसंधान के लिए नहीं हुआ है; उसका विकास तो खाना, सुरक्षा और लाभ खोजने अपनी हर हरकत को जायज सिद्ध करनेवाली दलीलें घड़ने के लिए हुआ है। इसी हमारी इंद्रियों का विकास वस्तुओं के यथार्थ रूप को देखने के लिए नहीं, बल्कि भोजन कुत्ते के अंतर को पहचानने के लिए हुआ है, ताकि हमारा दिन सुरक्षित कट जाये। और पिछले ३०,००० वर्षों में मानव-मस्तिष्क में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं हुआ लिहाजा एक तरह से हम आज भी गुफाओं में रहनेवाले आदि मानव हैं।

"और यह सीधी-सी बात है कि आदिम गुफा की आग को पहचानने के लिए मस्तिष्क से हम डेढ़ करोड़ अंश तापवाली आग की कल्पना नहीं कर सकते, न यही कर सकते हैं कि तीन सौ मील दूर होनेवाला विस्फोट हमें अंधा कर सकता है।"

किंतु जैसा कि सेंट-ज्योर्जी ने कहा है — "जो भी हो, हमें यह समझ लेना होगा विज्ञान ने विश्व को सिकोड़कर छोटा बना दिया है और अब हम अलग-अलग गुफा रहते हुए लड़ते नहीं हैं। हम एक ही गुफा में हैं और हमें अब वहां यह सूचना टांग चाहिये— इस गुफा में अणु बमों से खेलने की सख्त मनाई है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल खोलकर हंसिये जी भरकर रोइये

दामोदर शर्मा

अगर आप शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ और प्रसन्न रहना चाहते हैं, तो मेरी सलाह मानिये—दिल खोलकर हंसिये और जी भरकर रोइये। जी हां, हंसना और रोना ऐसी क्रियाएं हैं, जो हमारे हृदय में पड़ी गांठों को खोल सकती हैं। इनके द्वारा हमारे हृदय के भीतर दबे हुए भाव सहज ही बाहर निकल आते हैं और हमें राहत मिलती है।

हमारा जीवन सुख-दुःख के बीच झूलता रहता है। कभी हमारे जीवन में सुख और आनंद का ज्वार आता है, तो कभी हम दुःख और दुश्चिंताओं के दलदल में फंस जाते हैं। दोनों अवस्थाओं का हम पर प्रभाव पड़ता है, हममें हर्ष और शोक आदि भावनाएं उत्पन्न होती हैं। किंतु प्रायः हम इन्हें ठीक से व्यक्त नहीं कर पाते और बहुधा लोक-लाज या भय आदि कारणों से हम बहुत-से भावों को दबा भी देते हैं।

व्यक्त न होने या दब जाने पर ये भाव अन्य रूपों से बाहर निकलते हैं। बहुधा इनके कारण मानसिक विकार और आंतों की बीमारियां जन्म लेती हैं। इन सब समस्याओं के जन्म लेने से पूर्व ही उन्हें कुचल देने का उपाय है दिल खोलकर हंसना और जी भरकर रोना।

हंसने के बाद रोने की अपेक्षा हंसने के पहले ही रो लेना अच्छा होता है; इसलिए पहले रोने की बात करें।

कुछ लोग किसी संबंधी या स्वजन की मृत्यु पर अथवा अन्य दुःखपूर्ण अवसरों पर रोते नहीं हैं। किंतु ऐसी घटनाओं से उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है, वे बात-बात पर झगड़ने लगते हैं; और कभी-कभी इसके विपरीत वे शांत होकर गुम-सुम बन जाते हैं। ऐसे लोग कई बार तो पागल भी होते देखे गये हैं।

मित्रों एवं संबंधियों की मृत्यु पर रोना उनके साथ बने बंधनों को तोड़ने में सहायक होता है। रोने के बाद मनुष्य अपने प्रिय व्यक्ति की याद उतने तीव्र दुःख के साथ नहीं करता, जितना कि रोने के पूर्व करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। यों तो बहुत-से लोग अपने संबंधी के मरण को उससे बिछुड़ना नहीं मानते, वे उसे केवल शारीरिक जुदाई मानते हैं और मृत्यु पर रोते नहीं हैं। किंतु केवल असाधारण लोग ऐसा कर पाते हैं। यथार्थ में ये लोग रोकर मृतक के साथ अपने संबंध तोड़ना नहीं चाहते।

रोना हमारे शरीर की बहुत महत्वपूर्ण क्रिया है। अनेक प्राकृतिक चिकित्सकों तथा डाक्टरों ने अपने कई ऐसे मरीजों को, जो किसी भी दवा से ठीक न होते थे, उचित अवसरों पर रुलाकर ठीक कर लिया। गांवों में तो आजकल भी पागल मनुष्य को रुलाने का प्रयत्न किया जाता है।

मुहावरा है—अपना-अपना रोना। लेकिन प्रायः मनुष्य अकेला भली प्रकार रो नहीं पाता, जबकि दूसरों को रोते देख रुलाई आसानी से फूट पड़ती है। इतना ही नहीं, साथ में रोनेवाले व्यक्ति के साथ मनुष्य आत्मीयता का भी अनुभव करने लगता है।

हम सभी की रोने की इच्छा होती है; लेकिन लज्जावश हम अपने को रोक लेते हैं। प्रायः इसे चरित्र की दृढ़ता का प्रमाण समझा जाता है। लेकिन मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐसे अवसरों पर हमें रोना चाहिये। और सिसकियां भरने की बजाय हिचकियां भर-भरकर रोना कहीं लाभदायक है।

रोने में लोगों को लज्जा आती है, पर हंसने में उन्हें कभी शर्म नहीं आती। इसका मूल कारण है कि हंसने की क्रिया मस्तिष्क द्वारा निर्देशित होती है, जबकि रोने की क्रिया का नियंत्रण अवचेतन मन करता है।

रोना ऐसा है, जिससे मन की हमारी इच्छा पर भी बाहर जाते हैं। हमारे दबे तनावों तथा हुई प्रवृत्तियों निकाल देने का साधन है। इसी से जहां दुःख को बाहर निकलने का अवसर मिलता वहीं हंसने से सुखद भाव उभर आते हंसना मनुष्य की अन्य सामाजिक को भी प्रकाश में लाता है।

मेरे एक शिक्षक मित्र जब भी पढ़ाने जाते थे, तो उनके विद्यार्थी उन्हें से हंसने लगते थे। वे इससे काफी थे। मैंने उन्हें एक उपाय सुझाया।

बेखटके हंसिये

न प्राप्नुवन्ति यतयो रुदितेन मोक्षं
स्वर्गायितं न परिहासकथा रुणद्धि।
तस्मात् प्रतीतमनसा हसितव्यमेव
वृत्तिं बुधेन खलु कौसकुचीं विहाय॥

—यतिगण रोने-कलपने से ही मोक्ष नहीं पा जाते। यदि आगे स्वर्ग मिलनेवाला होगा, तो हंसी-ठट्ठे से उसमें बाधा नहीं पड़नेवाली है। इसलिए बुद्धिमानों को मुंह बिगाड़े रहने की आदत छोड़कर बेखटके हंसना चाहिये।

—'पादताडितकम्' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन जब वे कक्षा में गये, तो उन्होंने अपना रूमाल निकालकर कहा– "देखो, मैं अपना रूमाल उछालूंगा। जब रूमाल ऊपर जायेगा और जब तक ऊपर रहेगा, हम सब हंसते रहेंगे। जब रूमाल नीचे आयेगा, सब चुप हो जायेंगे।" शिक्षक के दो-चार बार ऐसा करने के बाद छात्र-छात्राओं का हंसना अपने आप बंद हो गया।

पेरिस के एक मनोवैज्ञानिक ने सुखद भावों को बाहर लाने का एक नया प्रयोग किया है। प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल वह हंसने के संबंध में शिक्षाप्रद भाषण देता है। लगभग १० बजे भाषण-कक्ष हर उम्र के लोगों से भर जाता है। प्रारंभ में वह कहता है–"मित्रो, आप सब यहां जी खोलकर हंसने के लिए एकत्र हुए हैं। हममें से प्रत्येक में हंसने की प्रवृत्ति और शक्ति है। हम हंसकर अपने दबे हुए भावों को बाहर निकालने की क्षमता रखते हैं....." फिर अचानक ही वह आज्ञा देता है – "अंधकार ! हाल में अंधकार कर दो।"

हाल में अंधेरा कर दिया जाता है। सब लोग शांत हो जाते हैं। अब धीरे-से ग्रामोफोन पर हंसने का रेकार्ड बजाया जाता है। इसमें मंद मुस्कान से लेकर उन्मुक्त अट्टहास तक सभी प्रकार की हंसी की आवाज भरी होती है। लोग अपनी तरह का हंसना सुनकर स्वयं भी हंसना प्रारंभ कर देते हैं। पहले वे धीरे हंसते हैं; किंतु शीघ्र ही वे सहज रूप से हंसने लगते हैं। धीरे-धीरे हंसने का क्रम तेज और जोरदार हो जाता है। इसी समय मनोवैज्ञानिक आज्ञा देता है – "हाल में प्रकाश करो।"

हाल में प्रकाश होने पर धीरे-धीरे सभी का हंसना बंद हो जाता है; किंतु सभी के चेहरे प्रसन्न, चमकीले और तनाव-रहित दिखाई देते हैं।

बुजुर्गों का कहना है कि हंसने से खून बढ़ता है। मेरे कुछ डाक्टर मित्रों का भी यही मत है। और यूरोप तथा अमरीका के कुछ डाक्टरों ने इस बारे में प्रयोग भी किये हैं। एक प्रयोग में बालकों के दो समूह लिये गये। प्रथम समूह को दोपहर के भोजन के बाद एक मस्खरा तरह-तरह से हंसाता रहता था। एक मास बाद सर्वेक्षण करने पर पता चला कि इस समूह के बालकों का शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं अच्छा हो गया; अपितु वे पढ़ने-लिखने में भी दूसरे समूह से तेज हो गये।

पेरिस के एक सुविख्यात मनोवैज्ञानिक ने अपने बच्चों की मुस्कानों तथा हंसने का अध्ययन किया। उसके अनुसार बच्चे की प्रथम मुस्कान उसके संतोष और आनंद की द्योतक होती है। चार-पांच सप्ताह बाद यही मुस्कान पूरी हंसी बन जाती है।

रोना और हंसना दोनों ही हमारे शरीर की आवश्यक क्रियाएं हैं। रोना जहां हमारे दुःखदायी भावों को बाहर निकालता है, वहां हंसना हमारे सुखद भावों में संतुलन रखता है। इसलिए दिल खोलकर हंसिये तथा जी भरकर रोइये। किंतु इतना याद रखिये कि अति हर चीज की बुरी होती है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये बहते हुए अजायबघर

किसी अमरीकी ने टेम्स नदी की हंसी उड़ायी, तो एक अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने कहा था—"महाशय, टेम्स नदी नहीं है, पिघला हुआ इतिहास है।" यही ममता यहां विश्व की तमाम नदियों के प्रति प्रकट हुई है।

डडले ग्लास

भौतिक स्वरूप तो नदियों के जीवन का एक अंश मात्र है; जिस चीज से कुछ नदियां अपना विशिष्ट व्यक्तित्व बन जाता है, वह अध्यात्म भी हो सकता है, पुराण या इतिहास भी, और साहस-गाथा या सौंदर्य भी। न लंबाई-चौड़ाई ही सब कुछ है। अदना-सी टेम्स व टाइबर संसार की नजरों में उतनी ही महिमाशाली हैं, जितनी विराट मिसिसिपी या अमेजन। यूरोप की सबसे व्यस्त जल-वीथी राइन और यूरोप की सबसे सरिता वोल्गा गीतों की घाटियों में होकर बहती हैं। नदियां कवियों, चितेरों और कारों को और हम सबके अंदर छिपे कलाकार को अपील करती हैं। आखिर उनके निर्मल जल में क्या नहीं प्रतिबिंबित हो सकता! उनकी गहराइयों में क्या नहीं खोजा जा सकता!

बाइबल में वर्णित जुड़वां नदियां दजला-फरात इतिहास में प्रसिद्ध हैं। कहते हैं, अदन का बगीचा इनसे परिवेष्टित था। इनके किनारे के भव्य नगर बैबिलोन और निनेवे के अवशेष भर आज पुरातत्ववेत्ताओं के लिए बाकी रह गये हैं। किंतु आज भी मन की आंखों से उनके प्रासादों की स्तंभपंक्तियां और उड़नेवाले वृषभों से अंकित चित्रभित्तियां देखी जा सकती हैं। लेकिन धार्मिक हृदयों में अपना ही अदन का उपवन बसानेवाली, पूरब की एक और प्रागैतिहासिक नदी गंगा की झांकी पाने के लिए हमें इतनी दूर की कौड़ी नहीं लानी पड़ती।

आज भी प्राणों से भरी हुई, इस पवित्र भारतीय नदी का उद्गम पुराणों में है। अति प्राचीन काल में इंद्र देवता ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा सगर का अश्वमेध का घोड़ा चुराकर उस जगह बांध दिया था, जहां महर्षि कपिल समाधि में लीन थे। सगर के पुत्रों ने महर्षि पर चोरी का आरोप लगाया और उनकी कोपाग्नि में भस्म हो गये। उनका उद्धार तभी संभव था, जब ब्रह्माजी को रिझाकर देवलोक-वाहिनी गंगा को भूतल पर लाया जाये। कहीं जल-प्रलय न हो जाये, इस विचार से शिवजी ने गंगा को अपनी जटाओं में लपेट लिया। तभी तो हिमालय पर जिस रहस्यमय हिम-कंदरा में से गंगा निकलती है, वहां आज भी हिमखंड अटके हुए हैं। बुद्ध ने जहां पहला धर्मोपदेश दिया, उस स्थान का सूचक धम्मेख स्तूप और तत्वज्ञानी शंकर के नाम से संबद्ध बदरीनाथ का पहाड़ी मंदिर—ये भी गंगा से दूर नहीं है।

राइन के तट पर कोलोन विख्यात गिरजा

हिन्दुओं के कितने ही धार्मिक दृश्य गंगा के साथ-साथ देखे जा सकते हैं; क्योंकि गंगा और अन्य कुछ नदियां हिन्दुओं की प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में पिरोयी हुई हैं। नदी-संगमों की विशेष महिमा होती है और गंगा-यमुना का संगम-स्थान प्रयाग प्रतिवर्ष लाखों यात्रियों को स्नान का न्योता देता है। किंतु गंगा का सबसे प्रतापी तीर्थ काशी है। उसके स्नान-घाटों पर हजारों यात्री पाप-प्रक्षालन करते हैं और श्मशान-घाटों की चिताभस्म से चितकबरा होकर जल कलकल बहता है।

गंगा की तरह कल्पना को गुदगुदानेवाली एक और पुरानी नदी है मिस्र की नील, जो मानो मरुवन की भूरी रेत पर खिंची हुई एक हरी रेखा है। इसी रेत ने नील घाटी को कबाइली युद्धों से बचाया है, जिससे वहां फैराओं की सभ्यता पनपी और नील की छाती पर बजरों में भरकर लाये गये पत्थरों से चिने गये पिरामिड और मंदिर छोड़ गयी। थीब्स स्थित करनाक के खंडहर विश्व के विस्मय का विषय हैं; इसी प्रकार अबू सिंबल की प्रस्तर निर्मित रेमसिस द्वितीय की भीमकाय प्रतिमाएं भी, जिन्हें आस्वान उच्च बांध के पानी में डूबने से बचाया जा रहा है।

देवी आइसिस जिसके आंसू नील की बाढ़ बनकर मिस्र को नवजीवन देते।

नीला नील और सफेद नील मिलकर एक नदी है, प्राचीन काल से पूजित। वह "पृथ्वी की परिधि के ग्यारहवें भाग से भी लंबी है" जैसा कि नाव पर बैठकर घास से मढ़े कगार, हरे-भरे कदली-कुंज, हिरनों के समूह,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वत्तखों के झुंड और धूप सेकते हुए मगरमच्छों को सविस्मय निहारते हुए सन्
उद्गम विक्टोरिया-न्यांजा तक जा पहुंचनेवाले खोजी कप्तान स्पीक ने लिखा था

अंधकारमय महाद्वीप अफ्रीका को एक और अंग्रेज खोजी मनगो पार्क को
देना पड़ा, मनमौजी नाइजर की गुत्थी सुलझाने के लिए। इस नदी को कोई नील
था, कोई कांगो। और जांबेजी की उस भव्य कृति "गानेवाले धुएं" (विक्टोरिया
को खोजना तो मानो लिविंग्स्टन के लिए ही सुरक्षित था।

ताड़वृक्षों और उष्ण कटिबंध के जंगलों को भुला दीजिये, तो उत्तर की नदि
अपना ही जादू है। रूस के सांवले डान के डाभ से लदे तट नार्स पुराणों के अनुसार
नार्डिक देवताओं की जन्मभूमि थे। यहीं से ये देवता स्कैंडिनेविया पहुंचे। इनका
पुजारी था ओडिन। और रही धूसरवर्ण सुविशाल वोल्गा, जो रूस के बहुत बड़े
प्रधान जलपथ है। आज भी वोल्गा शहतीर पकड़नेवालों के साथ गीत गुनगुनाया
निज़नी-नोवोग्राद के मेले पर जिप्सियों का संगीत सुनती है। ये गीत, यह संगीत
जैसे कि दुनिया की नौ सबसे लंबी नदियां अंतहीन हैं। इन नौ नदियों में से चार रूस
में वहती हैं। उनमें से एक है साइबेरिया की येनेसी। निर्जन दर्भवनों (स्टेपीस) में
मील घूम-घामकर यह उत्तर ध्रुव-सागर पहुंचती है। कभी यह नदी जमकर बर्फ
है, कभी इस पर शहतीर तैरते रहते हैं।

मध्य यूरोप में तो रूमानी नदियों का जाल विछा पड़ा है। वैग्नर ने उस
पर गाने रचे हैं, जिसके जल में जलपरियां सोना छिपाकर रखती हैं। लोरेली के
हेनरीख हेन की रची कविता भी स्वरों में बांधी जा चुकी है। मानवकन्या लोरेली
का अभियोग लगाये जाने पर राइन में कूद पड़ी। वह एक चट्टान पर रहती है और

गर्वी पेरिसवासी
द गोल और ईफ़ेल टावर

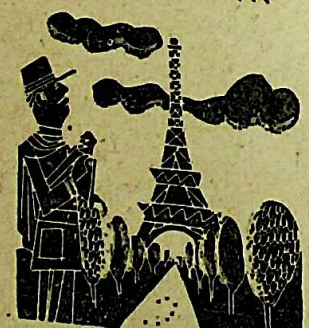

को अपनी मोहिनी से आकृष्ट करती है, ताकि
नावें चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जायें।
कट्टे किसान अंगूरी उत्सवों में नाचते हैं, तो
घाटी संगीत से मुखर हो उठती है।

राइन के बराबर ही गीत और गाथाओं
है आस्ट्रिया, हंगरी और पूर्वी यूरोप के हृदय
सजल करनेवाली डेन्यूब, जिसका आरंभ और
दोनों काले हैं। वह कृष्णवन (ब्लैक फारेस्ट)
लती है और कृष्ण सागर (ब्लैक सी) में गिरती
इस रंगीली नदी के मार्ग से ही यूरोप के राजा
पर गये थे। इसी के तट पर हैं इचूरेस्टीन दुर्ग

नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

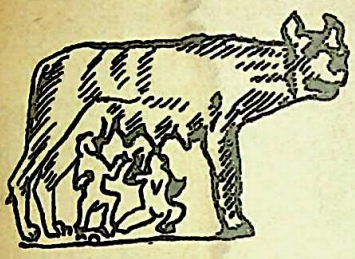

टाइबर-तट पर भेड़िये का दूध पीते हुए रोम्युलस और रीमस

भिखारी के गीत ने शेरदिल रिचार्ड की प्राण-रक्षा की थी; और वियेना, जिसके निवासी स्ट्रास ने इसकी स्तुति में संगीत रचा; और बुडापेस्ट, जिसके पुलों के नीचे 'नीली डेन्यूब' बहती है—कल्पना में भी, यथार्थ में भी।

गर्वोन्नत स्विट्जरलैंड दो नदियों की प्रसवभूमि है। एक है राइन, जो देवदारु वनों में से कूदती-फांदती हुई, जर्मनी की दुर्गमंडित पहाड़ियों और अंगूर की वाड़ियों को चूमती-पुचकारती हुई हालैंड के निचले मैदान में फैल जाती है। नदी-जल के साथ बहकर आयी मिट्टी से बने हालैंड पर नेपोलियन ने दावा किया था, क्योंकि आल्प्स पर भी तो उसका कब्जा था। स्विस हिमानियों की दूसरी दुहिता है रोन, जो सेंटगोट्ट हार्ड की रेलवे-सुरंग के पास निकलती है। जिनीवा झील के बाद यह धूप से धुली फ्रांस की धरती पर कदम रखती है, और रेशम-नगर लियोन्स को धोती हुई, एविन्योन के पोपों के प्रासादों के शानदार खंडहरों की छाया को छूती हुई, वान गाफ के चित्रवत् चमकते हुए प्रोवेन्स में स्वर्णरेखा की भांति जगमगा उठती है।

हल्का हरा रंग है पेरिस की जन्मदात्री सीन का, जिसकी गोद में किश्ती के आकार के एक मछुओं के टापू पर पेरिस की नींव पड़ी थी। एक विशाल जलमार्ग की जान होते हुए सीन व्यापारिकता से अभी तक अछूती है और नोत्रदाम व ईफेल टावर को निहारती, तथा घाटों पर सजी किताबों की दुकानों पर दृष्टिपात करती हुई आराम से बहती है।

इसी भांति इटली की नदियों में भी संस्कृति बहती है। सात पहाड़ियों का फेरा लगाने-वाली, रोम के विगत वैभव को स्मरण करानेवाली टाइबर इतिहास के प्रभात की लाली में नहायी थी। जुड़वां भाई रोम्युलस और रीमस पालने में रखकर इसकी लहरों में बहा दिये गये थे। इसी ने उन्हें अंजीर वृक्ष के नीचे पहुंचाया, जहां उन्होंने मादा भेड़िये का स्तन-पान किया और बड़े होकर रोम की स्थापना की।

मार्क ट्वेन मिसिसिपी का विनोदी मल्लाह

इंग्लैंड के गीतकारों में से अन्यतम स्पेन्सर ने लिखा है—"प्यारी टेम्स, वहो तुम धीरे, जब तक मैं यह गीत न गा लूं।" अमरीकी पैमाने पे टेम्स एक नन्ही नदी है, जो रिसरिसकर २५० मील बहती है। लेकिन कास्टवोल्ड की पहाड़ियों से मैदान तक उसकी बित्ता-बित्ता लंबाई सौंदर्य से लबालब भरी है। वेस्टमिंस्टर के वैभव और लंदन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टावर की बुजुर्गी को सिर नवांकर, जब वह आगे बढ़ती है, तो गोदियां और
के जहाज उस पर कब्जा जमा लेते हैं।

अटलांटिक के उस पार रियो ग्रांद, यूकोन, क्लोनडाइक, सेक्रामेंटो, ह्वांग
लारेन्स इन सभी की अपनी गरिमा है, अपनी गाथाएं हैं। किंतु रेड इंडियनों की
थी मिसिसिपी, जो बहुधा बाढ़ लाकर उन्हें भयभीत किया करती थी। आखिर
उसे दोनों बाजुओं से बांध दिया है। अमरीका का एक नामी हास्यकार अपनी
इसी नदी पर चलनेवाली एक किश्ती पर काम करता था। उसने आगे चलकर
ल्लुस रखा 'मार्क ट्वेन' जो पानी की गहराई का एक खास नाप है। अपनी
मिस्सौरी को मिलाकर यह चार हजार मील लंबी है। थियोडार रूजवेल्ट ने कहा
नदी की विशाल घाटी में सभ्यता का जो रूप विकसित होगा, वही सारे पश्चिमी
सभ्यता का स्वरूप निर्धारित करेगा।"

मिसिसिपी चाहे कितनी लंबी हो, संसार की सबसे बड़ी नदी तो दक्षिण
रीका में है। वह है अमेजन, जिसे डी ओरेलानो ने १५४० में खोजा। उसके
लहंगापोश रेड इंडियनों को उसने पुराण-वर्णित पौरुषमयी अमेजन नारियां समझ
ब्राजील की इस विशाल जलधारा के बारे में उस जमाने की एक पुस्तक में लिखा

"कहीं-न-कहीं एक देश था, जिसके बीचों-बीच एक सफेद समुद्र था, जिसमें
सोने की रेत और हीरों के कंकड़ थे। उसकी राजधानी मनाओ राजमहलों से
विशाल नगरी थी, जिसमें समस्त संसार की सारी संपदा भरी हुई थी। वहां 'एल
(स्वर्णमय) नाम का सम्राट राज्य करता था। उसका शरीर सोने के सलमों
जगमगाया करता था, जैसे कि सितारों से आसमान।"

'एल डोराडो' की खोज में बहुत लोगों ने अमेजन की घाटी को छान डाला,
इसी घाटी में जर्मन वैज्ञानिक हंबोल्ट को अपार वनस्पति-संपदा हस्तगत हुई। अंग्रेज
घाटी से दौलत लूटने की आधुनिक संभावना पर भी तब पानी फिर गया, जब पता
अमेजन का पोष्य पुत्र रबर का पौधा सुदूर पूर्व में अधिक अच्छी तरह पनपा
फिर भी 'दक्षिण अमरीका के भूमध्य सागर' की चार हजार मील लंबी शान
नहीं हुई है।

['आर्यन पाथ' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में मेरे संस्मरण

डा० गोविंददास

सन १९२० में कांग्रेस का नेतृत्व गांधीजी के हाथ में आया और उन्होंने देश के सम्मुख असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम रखा। इसके अनुसार भारत के नये संविधान में जिन कौंसिलों की व्यवस्था की गयी थी, उनका कांग्रेस द्वारा बहिष्कार किया गया। यद्यपि कौंसिलों के सब स्थान भर गये, तथापि बहुत कम मतदाता अपना मत देने के लिए गये। कांग्रेसवादियों में एक दल ने सन १९२३ में इस नीति में परिवर्तन किया और वह दल स्वराज्य पार्टी के नाम से केंद्रीय तथा प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं में पहुंचा। केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में स्वराज्य पार्टी ने अपना नेता पं० मोतीलाल नेहरू को चुना। मैं भी उसी समय केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में चुना गया और तब से अब तक गत इकतालीस वर्षों से मैं केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा, कौंसिल आफ स्टेट, विधान सभा और लोकसभा का सदस्य रहा हूं।

यद्यपि स्वराज्य पार्टी अल्पमत में थी, तथापि सबसे बड़ा दल स्वराजियों का ही था। श्री मुहम्मद अली जिन्ना किसी पार्टी के टिकट पर नहीं आये थे और उन्होंने अपना एक दल बनाया। परंतु उस समय श्री जिन्ना इतने बड़े राष्ट्रवादी थे कि जब तक कम-से-कम एक हिन्दू उनके दल में सम्मिलित नहीं हुआ, तब तक उन्होंने कोई दल बनाना स्वीकार नहीं किया। उनके दल में सम्मिलित होनेवाले एकमात्र हिन्दू सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास थे। परंतु बिना बहुमत के उस समय की केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में कोई प्रभावी कार्य नहीं हो सकता था। इसलिए स्वराज्य दल और श्री जिन्ना के स्वतंत्र दल मिले और एक नये दल की रचना हुई, जिसका नाम राष्ट्रीय दल रखा गया। जैसा विचित्र दल यह बना, वैसा दल शायद ही दुनिया के किसी देश में कभी बना हो। इस दल की विचित्रता थी, इसका नेता-विहीन होना। जब इस दल की बैठक होती, तब पहले से ही आकर मोतीलालजी सभापति का आसन ग्रहण कर लेते और श्री जिन्ना दल के कार्य का संचालन करते।

सन १९२३ में चुनी गयी इस केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होती थी और यह सन १९४५ तक होती रही। वाद-विवाद का स्तर बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊंचा रहता था। कितने ही सदस्य इस वाद-विवाद में भाग लेने के लिए उत्सुक रहते थे। साथ ही बड़े शंकित भी रहते कि कहीं वे निम्न स्तर का भाषण न दे डालें। मैंने अनेक ऐसे कांग्रेसवादियों की भी उस उत्सुकता को देखा था, जो सन १९२० से २३ तक कांग्रेस संगठन में बड़ी भारी अनुनय-विनय के पश्चात् किसी तरह अपना मुंह खोलते थे; पर वहां बार-बार अपनी सीट पर उचक-उचककर बड़ी आतुरता और दयनीय दृष्टि से स्पीकर की ओर देखते थे कि बोलने के लिए कब उनका नाम पुकारा जाये। जिनका नाम पुकार लिया जाता, उनकी मुद्रा से जान पड़ता कि वे स्वर्ग में पहुंच गये हैं और जिनका नाम न पुकारा जाता, उनकी मुद्रा से जान पड़ता कि उन्हें नरक में ढकेल दिया गया है। इनमें से जिनका भाषण हो जाता, उनमें से अनेक को मैंने दूसरे दिन के पत्रों को देखते भी देखा है। किस तरह वे उन पंक्तियों को गिनते, जो पंक्तियां उनके भाषण के संबंध में छपी होतीं और फिर वे अन्य वक्ताओं के भाषणों की पंक्तियां भी गिनते। यदि पत्रों ने उनके भाषण को कम स्थान दिया होता, तो वे उन पत्रों को कोसते। यदि किसी का चित्र उनके भाषण के साथ छप जाता, तब तो फिर पूछना ही क्या था?

सन १९२४ से २६ तक चलनेवाली इस केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में कुछ वक्ताओं के अपने-अपने विशिष्ट गुण थे। पंडित मोतीलालजी कोई बहुत अच्छे वक्ता नहीं थे; परंतु उनके अत्यंत प्रभावशाली के कारण उनका भाषण भी प्र हो जाता था। पं० मदनमोहन का भाषण जिस प्रकार धाराव चलता था, वैसा भाषण तो अ कहीं सुनने को नहीं मिला। पतराय उस छोटे-से सदन में भी बोलते थे, जैसे हजारों की भीड़ में भाषण दे रहे हों। उस समय विस्तारक यंत्र ईजाद नहीं हुआ लालाजी की आदत ही उस प्र की पड़ गयी थी। जिन्ना साहब उतार के स्वर में भाषण देने का विशिष्ट ढंग था। वे कभी कोई नै नहीं आते थे। जिस विषय पर होता, अंत में बोलते और उ के पूर्व जो भाषण हो चुकते, उन्हीं मुद्दों को ले 'कहीं की ईंट कहीं वाली कहावत चरितार्थ कर देते।

अध्ययनपूर्ण भाषण होते सर अय्यर, दीवान बहादुर रंगाचार्य, चंद्र राव और वेंकटपति राजू भारतीय सदस्यों के। ये सभी बड़े देते। संकल्पों पर तो समय की पाब पर विधेयकों पर नहीं। अतः यकों के भाषण कभी-कभी घंटे, तक चलते। ये लोग इतना धीरे देर तक बोलते कि जब ये सदन प्रायः खाली रहता। धीमी कारण पूरा भाषण सुनने को मिलता। पर वे भाषण कितने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका पता उनके छपकर आने पर लगता।

सन १९२६ में जो नये चुनाव हुए, वे हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों के वायुमंडल में हुए। मालवीयजी तो आरंभ से ही किसी दल के निकट पर नहीं आये थे। लालाजी ने भी कांग्रेस दल छोड़ दिया। श्री नरसिंह चिंतामणि केलकर और अब तक बंबई की विधान सभा में जो श्री एम० आर० जयकर थे, उन सबने मिलकर हिन्दू हितों का नारा उठाया। मोतीलालजी के नेतृत्व में स्वराज्य पार्टी के नाम से नहीं; पर कांग्रेस पार्टी के नाम से ही कांग्रेस ने चुनाव लड़े। मालवीयजी और लालाजी के सदृश कांग्रेस के ही स्तंभों का विरोध बड़ा अटपटा जान पड़ता था। लालाजी दो स्थानों से खड़े हुए। दोनों जगह उनके विरुद्ध कांग्रेस के उम्मीदवार खड़े किये गये; पर लालाजी दोनों ही जगह प्रचंड बहुमत से चुने गये। कांग्रेस के उम्मीदवारों की जमानतें जब्त हुईं। इतने पर भी मोतीलालजी के नेतृत्व में कांग्रेस दल के सदस्यों की प्रायः उतनी ही संख्या फिर से केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में पहुंची, जितनी १९२३ में थी।

इस बार दक्षिण भारत में कांग्रेस को विशेष सफलता मिली, जिसका कारण श्री श्रीनिवास अय्यंगार का व्यक्तित्व था। श्री अय्यंगार उस वर्ष गोहाटी अधिवेशन के अध्यक्ष भी चुने गये। उनके मन में कांग्रेस अध्यक्ष होने के कारण एक नयी महत्वाकांक्षा का उदय हुआ। वह महत्वाकांक्षा थी केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा के कांग्रेस दल का नेता बनना। मोतीलालजी के प्रखर स्वभाव के कारण उनके विरुद्ध कांग्रेस दल में एक गुट तो था ही, श्री अय्यंगार उस गुट के नेता हो गये। और जब दल के पदाधिकारियों के चुनाव के लिए दल की बैठक हुई, तब विहार के श्री सफी दाऊदी कुछ इस प्रकार बोले—"कांग्रेस पार्टी का नेता वही शख्स चुना जाना चाहिये, जो गांधीजी के ऊसूलों पर चलता हो, विलायती कपड़े का रोजगार न करता हो, और शराब न पीता हो ..... ।"

'शराब' शब्द दाऊदी साहब के मुंह से निकलते ही मोतीलालजी आगबबूला हो गये और कुछ इस प्रकार बोले—"दाऊदी साहब, आप साफ-साफ क्यों नहीं फरमा रहे कि मैं शराब पीता हूं, इसलिए लीडर न चुना जाऊं। मैं लुक-छिपकर शराब नहीं पीता। गांधीजी तक इसे जानते हैं। हजार बार आपको गरज हो, तो मुझे लीडर चुनिये, नहीं तो हरगिज नहीं।" अंत में सौ सुनार की और एक लुहार की वाली कहावत चरितार्थ हुई। किसी के मुंह से एक शब्द न निकला और पंडितजी सर्वसम्मति से कांग्रेस दल के नेता चुन लिये गये।

सन २६ से जो विधान सभा चली, उसमें आरंभ से ही एक शिथिलता महसूस होती थी। कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ, जो उल्लेखनीय कहा जा सके। मोतीलालजी भी इस जीवन से ऊबते से जाते थे। और यदि सन २८ में साइमन कमीशन न आता तथा उसके बहिष्कार का प्रस्ताव केंद्रीय व्यव-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थापिका सभा में न रखा जाता, तो शायद सन २६ से २९ तक चलनेवाली यह विधान सभा निर्जीव ही कही जाती।

सन ३४ में केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में कांग्रेस दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई चुने गये। उनके साथ कांग्रेस दल में अब और भी कई महत्वपूर्ण व्यक्ति आ गये थे। इनमें प्रमुख थे श्री गोविंदवल्लभ पंत और श्री सत्यमूर्ति। मुझे सन २३ में जो अंतिम श्रेणी की बेंच पर स्थान मिला था, उसमें भारी परिवर्तन हुआ। सन २५ में मैं कौंसिल आफ स्टेट में भेज दिया गया था। सन २९ में मैंने वहां से त्यागपत्र दिया था। अब मैं फिर केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में आया। इस समय सबसे पुराने दो सदस्य थे—उड़ीसा के श्री बी० दास० और मध्य प्रदेश का मैं। इस वरिष्ठता और कौंसिल आफ स्टेट के मेरे कार्य के कारण मुझे अब प्रथम श्रेणी की बेंच पर स्थान मिला।

यद्यपि सन ३४ की यह विधान सभा भी तीन ही वर्ष के लिए चुनी गयी थी; परंतु यूरोपीय युद्ध छिड़ जाने के कारण वह ग्यारह वर्ष तक चली। आरंभ में कुछ चहल-पहल रही; पर धीरे-धीरे वह नवीनता समाप्त हो चली।

युद्ध के उपरांत सन ४५ में फिर चुनाव हुए। इस बार श्री भूलाभाई को गांधीजी ने केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा में दिया और अब कांग्रेस दल के नेता चंद्र बोस चुने गये। इस बार स्पीकर पर श्री मावलंकर का चुनाव हुआ लंकरजी ने अध्यक्ष होते ही मेंबर जो सबसे बड़ी बात की, वह निय के-तैसे रहते हुए भी सदस्यों को भाषण की अनुमति देना था। सर्वप्रथम केंद्रीय व्यवस्थापिका हिन्दी का चलन सन ४५ में मा ने ही किया।

स्वतंत्र भारत की पहली लोक सन ५२ में आम चुनाव हुआ। दो चुनाव और हुए। सार्वभौम संसद् का, जिस प्रकार कार्य च उस पर आज कुछ लिखना होगा। हां, सन २३, २६ और केंद्रीय व्यवस्थापिका सभाओं की तथा लोकसभा की कार्यवाही बहुत अंतर दिखाई देता है। विक है। उन दिनों जिस प्रकार जाते थे, उनमें और आज जो जाते हैं उनमें भी बहुत अंतर है। यह भी नहीं भूलना चाहिये कि सभाएं एक तरह से परतंत्र 'डिबेटिंग सोसाइटी' मात्र थीं; लोकसभा सार्वभौम सत्तावाली

इतिहास मनुष्य को विद्वान बनाता है; कवि को कुशाग्र; गणितज्ञ को अर्थ निक को गंभीर; नैतिक आचरण को श्रेष्ठ और तर्कशास्त्र को आलंकारिक एवं योग्य बनाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

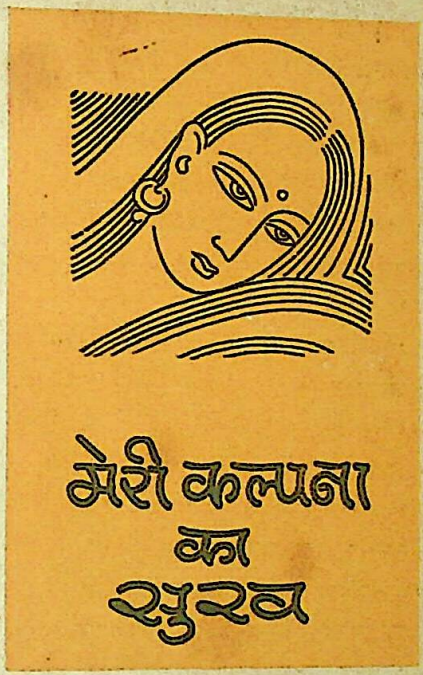

दफ्तर, कारखाने और व्यवसाय ! आदमी का पूरा जीवन इसी में चुक जाता है। ९० प्रतिशत जनसंख्या का श्रम, चिंतन और दर्शन सिर्फ पेट भरने और तन ढंकने में निपट जाता है।

वह दिन न जाने कब आयेगा, जब आदमी का संपूर्ण जीवन सिर्फ रोटी और कपड़े के संघर्ष में व्यय होने की जगह दुनिया को सुंदर, अतिसुंदर बनाने में भी समर्थ होगा।

वह दिन न जाने कब आयेगा, जब आने-वाला युग बीते युग की शिकायत नहीं करेगा।

वह दिन जब आयेगा, तब कांटों के होंठों पर भी फूलों-जैसी मोहक मुस्कान होगी।

—विजय श्रीवास्तव

०००

मेरे देश में हर नर-नारी को आवश्यकता-नुसार कामकाज मिले। मैं भी आखिरी वक्त तक कार्य-रत रहूं। मेरा कार्य चाहे कितना भी छोटा हो; पर उस पर मुझे गर्व हो। छोटा-सा परिवार हो—आदर्श पत्नी और नीरोग बच्चे, जो सभी भावी भारत के निर्माण में कोई-न-कोई योग दान दे सकें।

—मदनलाल तिवारी

०००

पहले जठराग्नि से मुक्ति; उस मुक्ति के बाद एकांतवास; उस वास में सतत लेखन; लेखन में सामाजिकता और उस सामाजिकता में पूर्णता—बस, यही मेरी कल्पना का सुख है। —रामचंद्र सिंह सागर

०००

यों सुख नाम की कोई चीज कहीं है भी, कह नहीं सकता। अगर वह कहीं है, तो उसका अस्तित्व बहुत अजीब और अनोखा होगा। ऊंट को आपने भी देखा होगा। बबूल की कांटों से भरी हरी पत्तियां खाने में उसे अद्‌भुत आनंद प्राप्त होता है। खून बहता जाता है और वह उन पत्तियों को खाता जाता है। कैसा अद्‌भुत जीव है वह!

कुछ वैसा ही अजीब जीव मैं भी ठहरा। चाहता हूं, हर रात बहुत मोहक सपने आयें! मैं उन क्षणों को खूब अच्छी तरह जी सकूं। कम-से-कम उतनी देर के लिए तो भौति-कता के पीछे अंधी इस दुनिया को भूल सकूं।

—एस० लाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति का जीवन बिताना चाहता हूं। कम-से-कम दस विषयों में एम० ए० करने की अभिलाषा है। कवि बनकर हर एक के दिल व दिमाग पर छा जाना चाहता हूं। समाज की प्रचलित कुरीतियों से चिंतित हूं और समाज को उन्नत देखने को उत्सुक हूं। —एल० आर० कपूर

०००

मेरी कल्पना का सुख एक ऐसा समाज है, जिसमें स्वाभिमानी नागरिक बसते हों, जहां भावनाओं का मूल्य हो, पद और नाम के स्थान पर जहां मनुष्य के 'कर्तृत्व' को प्रधानता दी जाती हो और जहां उदरभरण व शरीर ढकने के साथ ही जीवन का कोई अन्य उदात्त लक्ष्य रहता हो। —चंद्रभूषण झा

०००

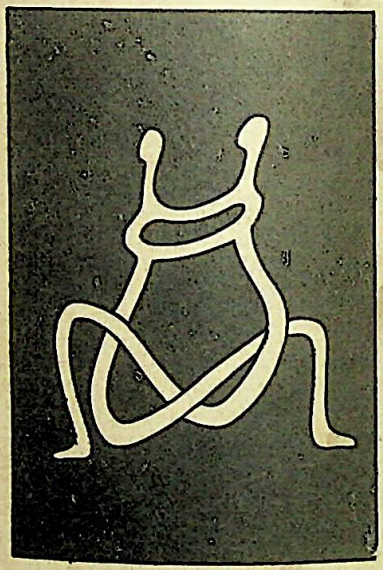

मिलन

चित्रकार : कमलाक्ष शर्मा

हे ईश्वर, हमें परिपूर्ण कीजिये, आत्मविश्वास जगाइये; कार्य की योग्यता-क्षमता प्रदान कीजिये; हमें निर्भयता दीजिये! —मोहन भारती

०००

मेरे चारों ओर सुंदर, सुरुचिपूर्ण व स्वस्थ पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का ढेर लगा हो और उनके बीच बैठी हुई मैं बस पढ़ती जाऊं, पढ़ती जाऊं... । —ममता श्रीवास्तव

०००

मैं देख रहा हूं कि उन्नत सुखों की एवं दौड़-धूप में मनुष्य की निरीहता ही जा रही है। अतः मैं तो इन तथा मोहक इच्छाओं, आकांक्षाओं कामनाओं का स्वेच्छापूर्वक परम सुख की अनुभूति मान —देवनारायण

०००

जापान और देशों ने एक पट चलनेवाली रेलें हैं; लेकिन जिन रेल एक पटरी पर सके, यह असंभव सृष्टि की ह द्विधा विभक्त प्रकाश अंधकार गोद में पलत सुख को जब दुःख का हाथ कर चलते हैं

जीवन में बेखुदी का पुरजोर रहता है; तो कभी ऐसे लमहे भी जो गमगीन कर जाते हैं। ऊंची-नीची पर चलते समय लड़खड़ा जाना विक नहीं है; लेकिन सच्चा राही है, जो गिरने पर हताश न हो। खिलाड़ी हारकर भी मुस्कराता रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने जिस स्नेह से दोस्त को गले लगाया, उसी जिंदादिली से दुश्मन को कंधे पर नहीं चढ़ा सका। जिंदगी के मेले में कुछ पा गया, तो खुशी से पागल हो उठा; ले किन गांठ का पैसा कहीं गिर पड़ा, तो चेहरे से हंसी न जाने कहां गायब हो गयी। सुना जाता है कि राम समभावी थे – सुख-दुःख दोनों में समान रहनेवाले। मैं इससे आगे बढ़ना चाहता हूं। सुख के पलों में जितना आनंदित हो सकूं, दुःख के क्षणों में उससे अधिक मुस्करा सकूं, यही तमन्ना है। बतौर दाग – "दिल दे तो इस मिजाज का परवरदिगार दे, जो रंज की घड़ी भी खुशी में गुजार दे।"

–धनंजय

०००

मेरे कमरे में मेज के सामने महाप्राण निराला का एक सुंदर चित्र लगा है। जब भी मैं काल्पनिक मनःस्थिति में होता हूं– न जाने कब और कैसे मेरी आंखें निरालाजी के चित्र पर टिक जाती हैं; और मेरा मन कहता है –जीऊं, तो तुम-सा जीऊं; लिखूं, तो तुम-सा लिखूं। मेरे सृजन की यही कसौटी है, और यही मेरी कल्पना है।

–मनोहर 'मधुर'

प्रकाश-किरण

१९५९ की होली के शाम की घटना है। बस स्टेशन पर शहर जानेवाले मुसाफिरों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। बस न आने से सब बुरी तरह घबरा रहे थे। आज होली का दिन था और सब शाम तक अपने परिवार में पहुंच जाना चाहते थे। स्टेशन इंचार्ज ने कहा– "अगर शहर की ओर से कोई बस आयी और ड्राइवर राजी हो गया, तो वे उसे वापस करने का प्रयत्न करेंगे।"

थोड़ी ही देर में शहर की ओर से बस आ पहुंची। उस पर से दुर्बल आकृति का एक वृद्ध ड्राइवर उतरा। उसके हाथ में एक गठरी थी, संभवतः होली की आवश्यक वस्तुएं रही होंगी। स्टेशन इंचार्ज ने उसे स्थिति से अवगत कराया और बस का ले जाना, न ले जाना उसकी इच्छा पर छोड़ दिया। लौटने के लिए कोई मोटर न रही, तो उसे रात-भर शहर में ही रहना पड़ सकता था।

परिवार के बीच पहुंचने का प्रलोभन एवं एक ऊंचे दर्जे का कर्तव्य–एक विकट द्वंद्व उसकी आंखों में तड़प उठा। पल-भर के लिए सभी मुसाफिर, स्वयं स्टेशन इंचार्ज, सब जड़ से हो गये। अगले क्षण हम लोगों ने उसे अपनी सीट पर वापस लौटते देखा। बस स्टार्ट हो गयी, मुसाफिरों के मन थिरक उठे। मगर उस थिरकन पर जो एक बोझ-सा आ जमा था, उसके भार को भी सब स्पष्ट अनुभव कर रहे थे।

मैंने अंधकार को चीरती प्रकाश-किरण पर दृष्टि स्थिर किये हुए ड्राइवर को देखा– क्या उसमें वह प्रतीक्षा करती वृद्धा पत्नी एवं बाबा के हाथ की मिठाई पाने के लिए आतुर नन्हे मुन्नों की तस्वीरें देख रहा था?

–प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहूर दादा

जहूरबख्शजी एक ऐसे साहित्यकार थे, जिनकी कलम ने सदैव ईमान की गंगा, बालोपयोगी गल्प साहित्य, सदाचरण के निबंध और श्रेष्ठ उर्दू साहित्य के अ की इस त्रिवेणी का शाश्वत मिलन जहूर दादा की कलम में था। एक कवि की स्वाधीन ने कभी लिखा था –

जो कलम सरीखे टूट गये पर झुके नहीं,
उनके आगे यह दुनिया शीश झुकाती है।

जहूरबख्शजी से भेंट करने का मुझे एक बार सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं नेत विद्यार्थी की हैसियत से उनसे मिला था। वार्तालाप के बीच यह स्पष्ट प्रतीत होता जहूरबख्शजी को आधुनिक समाज के आडंबर की चकाचौंध तनिक भी स्पर्श नहीं है। उनकी सादगी, सरलता और वात्सल्य का त्रिवेणी स्वरूप देखकर मन गद्‌गद हो था। एक मुस्लिम परिवार में जन्म लेनेवाले जहूरबख्शजी हिन्दी की सेवा में अप महत्व रखते हैं, जो जायसी और कबीर रखते आये हैं।

सन १९५६ के सांप्रदायिक उपद्रवों में उन पर आयी विपत्ति को सुन आंखों आ जाना स्वाभाविक था। जिसने मां सरस्वती की अर्चना में अपना जीवन अर्पित हो, उस पर सांप्रदायिकता के अंगारे फेंककर क्या समाज ने अपने को धन्य समझा द्रवियों के हमले में उनका मकान ही अग्नि को भेंट नहीं हो गया, बल्कि वे बहुमू लिपियां भी जल गयीं, जो उनकी आजीवन साहित्य-साधना की फलश्रुति थीं।

जहूरबख्शजी ने शिक्षा-दान का व्यवसाय अपनाया और एक प्राइमरी शिक्षक में जीवन आरंभ किया। उन्होंने बालोपयोगी कथा-कहानियों की उत्कृष्ट रचना कर साहित्य को समृद्ध किया। शेख सादी की फारसी की प्रसिद्ध कृति 'गुलिस्तां' और और कुछ अन्य उर्दू की श्रेष्ठ रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया। उनकी भा अत्यंत परिमार्जित और मुहावरेदार थी।

भोपाल में बेसहारा जीवन व्यतीत करते-करते आखिर जहूर दादा चल स्वाधीन कलम की तरह टूट गये। उनका पार्थिव रूप आज हमारे बीच नहीं है, उनकी साधना हमें सदैव उनका स्मरण दिलाती रहेगी।

– प्रेमनारायण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माओ के उत्तराधिकारी

चीन की साम्राज्यवादी मनोवृत्ति ने आज समूचे विश्व को आतंकित किया हुआ है। उसकी इस प्राणलेवा भूख को जगाने में चीनी साम्यवादी दल के अध्यक्ष माओ त्से-तुंग और उनके संभावित उत्तराधिकारियों का कितना योग है या हो सकेगा, यह सामयिक अध्ययन का विषय है।

अशोक महाजन

माओ की खोपड़ी पर आज विश्वविजयिनी महत्वाकांक्षा का भूत भले ही सवार हो; लेकिन अब वे जर्जर और दुबले दिखलाई पड़ते हैं। उनके भूरे बाल सफेद हो गये हैं। आंखें भी कमजोर हो गयी हैं, उन्हें बोलने में काफी तकलीफ होती है। कई वर्षों से उन्होंने सार्वजनिक सभाओं में कोई भाषण नहीं दिया है और न ही कोई वृहदाकार ग्रंथमाला ही तैयार की है। वे ठीक से चल भी नहीं पाते हैं। चलते वक्त उन्हें किसी सहारे की जरूरत पड़ती है। हालांकि इस वर्ष माओ विदेशी प्रतिनिधि-मंडलों के आयोजनों में शामिल हुए ; परंतु उन्होंने विदेशी अतिथियों से कोई बातचीत नहीं की।

७१ वर्षीय माओ त्से-तुंग पिछले ३० वर्षों से चीन के साम्यवादी दल के निर्विरोध अध्यक्ष हैं। उनके इस पद को खुलकर कभी चुनौती नहीं दी गयी है। पर इधर असंख्य युवा चीनियों में माओ-समर्थक सरकार के प्रति असंतोष पैदा हो गया है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नौजवान कार्यकर्ता यह मानने को तैयार नहीं हैं कि मौजूदा समस्याओं के समाधान हेतु माओ के विचार रामबाण हैं। आजकल चीन के समाचार-पत्रों में केंद्रीय समिति के यांग हूसीन-चेन नामक सदस्य का नाम खूब छपता है और उसकी कटु आलोचना करते हुए कहा जाता है—"वह आंतरिक एवं विदेशी समस्याओं के संबंध में सुधारवादी सिद्धांतों का पोषक है।"

माओ और उनके पिट्ठुओं को अब नींद नहीं आती। वे इस बात से चिंतित रहते हैं कि पार्टी के ही कुछ लोग मौजूदा नीतियों को चुनौती दे रहे हैं। हाल ही में एक चीनी अधिकारी ने एक विदेशी सैलानी को बताया—"हम नेतृत्व बदलना चाहते हैं; किंतु इस तरह नहीं कि माओ त्से-तुंग की जगह चाऊ एन-लाई आ जायें या चाऊ की जगह चेन-यी को ले आया जाये। हम तो आमूल परिवर्तन चाहते हैं।"

हिन्दी डाइजेस्ट

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु माओ तब तक शासन-सूत्र अपने हाथ में रखेंगे, जब तक कि स्वास्थ्य की खराबी और बुढ़ापे के कारण वे अपना पद छोड़ने को मजबूर न हो जायें। तदुपरांत उनके निकटवर्ती सहयोगियों की टोली (क्लोज कामरेड्स इन आर्म्स) ल्यू शाओ-ची के अधीन कार्य करेगी। वस्तुतः ल्यू शाओ-ची ही माओ के सच्चे और सही वारिस हैं। वे इस समय चीनी गणराज्य के अध्यक्ष हैं। उनकी आयु ६१ वर्ष है और सैद्धांतिक दृष्टियों से वे माओ त्से-तुंग के विचारों के समर्थक हैं। माओ के उग्र सिद्धांतों में उनकी गहरी आस्था है। माओ की ही भांति वे भी प्रतिक्रियावादियों के विरोधी हैं। ल्यू शाओ-ची रूस के सुधारवादियों के काफी विरुद्ध हैं। उन्होंने रूसी कम्युनिज्म के खिलाफ कई उत्तेजनापूर्ण लेख भी लिखे हैं। राष्ट्रवाद उनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है।

माओ त्से-तुंग

ल्यू शाओ-ची औद्योगिक एवं कृषि-संबंधी तीव्र प्रगति के लिए कार्यान्वित 'लंबी छलांग' नामक कार्यक्रम में माओ के सहयोगी भी रहे हैं। माओ के बाद आज वे ही चीन के एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनके लेखों को चीनी अधिकारी और कार्यकर्ता बड़े चाव से पढ़ते हैं। सन १९३९ में उ 'हाऊ टु बी ए गुड कम्युनिस्ट' नाम पुस्तक प्रकाशित करवायी थी, जो साम्यवादी दल के सदस्यों का मार्ग करती है।

ल्यू को बहुत समय से माओ का उत्तराधिकारी माना जा चुका है। उग्रवादी जनता का खयाल है कि मा तुंग के पश्चात् ल्यू ही साम्यवादी अध्यक्ष होंगे; पर के नरमपंथी और वर्गीय लोग चाऊ लाई को उस प लाना चाहते हैं।

चाऊ की उ वर्ष है। उन्हें प्रियता प्राप्त है। तरह वे भी समर्थक हैं; अधिक सोफिया वे माओ और अपेक्षा साम्यवा गैर-साम्यवादी देशों की ज्यादा भी कर चुके हैं। सोवियत संघ के ए नीतिज्ञ ने एक बार कहा था—"चा लाई को हम प्यार करते हैं, क्योंकि स्वभाव मधुर और हृदयग्राही है।" चाऊ एन-लाई नीति-कुशल और हैं। उनकी आवाज सुरीली है और करने का ढंग तो बड़ा ही प्रभावशा वे बहुरूपिया हैं—कभी गरीबों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में भोजन करते हुए दिखाई देंगे, तो कभी श्रमिकों के साथ हथौड़ा चलाते हुए। आशय यह है कि उन्हें ढोंग करना खूब आता है। वे हमेशा मुस्कराते रहते हैं और अखबारों में अक्सर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर लेख छपाया करते हैं।

ल्यू और चाऊ के अतिरिक्त एक और व्यक्ति का नाम माओ त्से-तुंग के उत्तराधिकारी के रूप में लिया जाता है-तेंग सियाओ-तिंग। उनकी आयु ६४ वर्ष है। इस वक्त वे केंद्रीय समिति के महामंत्री हैं। खुफिया पुलिस की वागडोर भी उन्हीं के हाथ में है। विचारों से वे उग्रपंथी हैं और दल के भीतर उन्हें भी सुदृढ़ समर्थन प्राप्त है।

ल्यू, चाऊ और तेंग—ये तीनों ही माओ त्से-तुंग के संभाव्य उत्तराधिकारी हैं। ये लोग अंधे राष्ट्रवाद और युद्ध के समर्थक हैं। सब पर एक-सा ही रंग चढ़ा हुआ है। ऐसी हालत में निःसंदेह ये सब विश्व-शांति के हत्यारे हैं।

ये चीनी पति-पत्नी !

चीन में विवाहित व्यक्तियों को बुर्जुआ समझा जाता है। वहां की कम्युनिस्ट पार्टी को 'पति' और 'पत्नी' शब्द से इतनी चिढ़ है कि लंबी कूच के दिनों में इनके प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। विवाहित पुरुष और स्त्रियों को प्रेमी और प्रेमिका कहा जाता था और उन्हें यह हुक्म मिला था कि पहले वे पार्टी के कामरेड हैं और बाद में कुछ और।

जब कम्युनिस्टों का शासन हुआ, तो उन्होंने लड़के-लड़कियों की अपनी पसंद से शादी करने पर रोक लगा दी। चीनी लड़कियों को यह आजादी नहीं है कि वे अपने जीवनसाथी का चुनाव करते समय उसकी पसंद-नापसंद, उसकी आमदनी, नौकरी आदि पर विचार करें। 'चीन की स्त्रियां' नामक पत्रिका में इन विचारों को दकियानूसी कहा गया है। इसी प्रकार यदि लड़के-लड़कियों का शील और स्वभाव देखें, तो यह भी बुर्जुआपन है।

अब तक चीन में लड़कियों के चार गुण ये माने जाते थे : अच्छा स्वभाव, अच्छा व्यवहार, मीठी बोली और अच्छी नौकरी। अब इसे भी दकियानूसी बताया गया है।

चीनी स्त्रियों को पति-भक्ति के बजाय पार्टी भक्ति का उपदेश दिया जाता है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की राय में आदर्श पति-पत्नी वे हैं, जिनके विवाह क्रांतिकारी अर्थात् कम्युनिस्ट हैं। फलस्वरूप आज चीन में कोई स्त्री अपने पति के साथ सिनेमा या सैर को जाने का सपना भी नहीं देख सकती और न अपने खाली समय का उपयोग अपने मन के काम में कर सकती है। चीनी पति भी अपने खाली समय में अपने मन का काम नहीं कर सकते। उसे अपने खाली समय में समाजवाद के लिए तैयारी करनी होती है।

यदि पति और पत्नी दोनों काम करते हों, तो उनके मिलने के दिन निश्चित हैं। वे रोज नहीं मिल सकते, ताकि काम में बाधा न पड़े। बच्चे सरकारी बालघरों में रखे जाते हैं, और मां-बाप महीने में केवल दो बार उन्हें साथ ले जा सकते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो क्षण, दो बातें
कवि इलियट के साथ

डोनाल्ड हाल

प्रश्नः—क्या आपको वे परिस्थितियां स्मरण हैं, जिनमें आपने कविता लिखना आरंभ किया था ?

इलियटः—याद आता है कि उस समय मैं चौदह वर्ष का था और फिट्जजेरल्ड के 'उमर खैयाम' से प्रेरित होकर मैंने उसी शैली में बड़ी उदासी-भरी नास्तिकतावादी कविताएं लिखी थीं। सौभाग्य से मैंने इन्हें कभी प्रकाशित नहीं होने दिया और न ही किसी को दिखाया। आज तो उनका अस्तित्व भी नहीं है।..... फिर मैंने कालेज में पढ़ते समय पहले बोदेलेयर और बाद में लाफार्ज से प्रभावित होकर बहुत-सी कविताएं लिखीं।

प्रश्नः—विद्यार्थी-अवस्था में क्या आपको उन बड़े-बुजुर्ग कवियों का आभास था, जो उस समय काव्य-जगत् पर छाये हुए थे ? आज का तरुण कवि इलियट, पौंड और स्टीवेन्स के दौर में कविता रचता है। क्या उस समय भी ऐसा कोई दौर था ?

इलियटः—मैं सोचता हूं, यह अच्छा ही हुआ कि उन दिनों इंग्लैंड या अमरीका में ऐसे कवि नहीं थे, जिनमें हम लोग विशेष दिलचस्पी लेते। मेरा विचार है कि बुजुर्ग कवियों का काव्य-लोक में रहना नये कवियों के रास्ते में बनता है। सौभाग्य से हम ऐसों से बचे रहे।

प्रश्नः—आपने लिखा है कि पौंड ने कविता 'वेस्ट लैंड' में बहुत की थी। क्या पौंड की आलोचना आपको कुछ लाभ हुआ ? क्या आपकी और कविताओं में भी छांट की थी ?

इलियटः—हां। उन दिनों वे बहुत आलोचक थे; क्योंकि वे यह नहीं थे कि कोई उनकी नकल करे। वे दूसरे की वास्तविक प्रतिभा को पकड़ने की पूरी करते थे।

प्रश्नः—पौंड ने 'वेस्ट लैंड' में से कि की चीजें काटी थीं ? क्या पूरे भी काट डाले थे ?

इलियटः—हां, पूरे प्रकरण तक। मूल में जहाज के टूटने का एक रण था। मैं कह नहीं सकता कि कविता से उसका क्या संबंध था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे मैंने 'इन्फर्नो' के एक भाग से प्रेरित होकर लिखा था। एक और भाग 'रेप आफ दि राक' की शैली में था। पौंड बोले–"वह काम करने से क्या लाभ, जिसे दूसरे हमसे अधिक अच्छी तरह कर रहे हैं। कोई और ही बात करो।"

प्रश्नः–आपके विचार में किसी कविता की वस्तु और स्वरूप में परस्पर क्या संबंध होता है? कहीं पढ़ा था कि आपने और पौंड ने एक बार एक खास प्रकार की छंदबद्ध कविता लिखने का संकल्प किया था। तो क्या आपको कविता में क्या कहना है, यह सोचने के पहले ही आपने कविता का स्वरूप निर्धारित कर लिया था?

इलियटः–हां, एक तरह से। हमने मोलियेर की कविताओं का अध्ययन किया और सोचा कि क्या हमारे पास कोई ऐसी बात है, जिसे कहने के लिए यह रूप उपयुक्त होगा। तो रूप ने विषय को सामने लाने में सहायता दी।

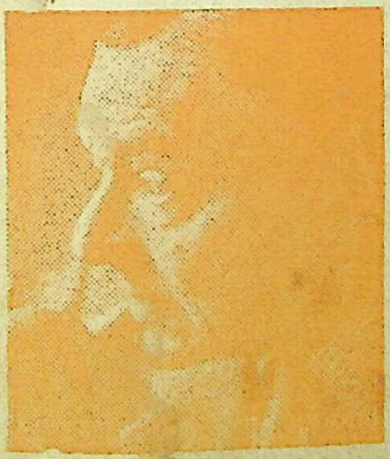

कवि इलियट

प्रश्नः–क्या आपने कभी फ्रेंच भाषा का प्रतीकवादी कवि बनने की कल्पना भी की थी?

इलियटः–हार्वर्ड छोड़ने के बाद मैंने पेरिस में एक रोमांटिक वर्ष बिताया था; उसमें मैंने इसकी कोशिश की थी। तब मैंने सोचा था कि अंग्रेजी छोड़कर फ्रेंच में ही क्यों न लिखा करूं। परंतु यह बड़ा मूर्खतापूर्ण विचार था। अब मैं मानता हूं कि कोई मनुष्य दो भाषाओं का कवि नहीं बन सकता। किसी ने दो भाषाओं में एक-सी महान या उत्तम कविता की हो, इसका कोई उदाहरण मेरे देखने में नहीं आया है। जिस भाषा में कोई अपने कवि-रूप को पूर्ण अभिव्यक्ति दे सके, वही उसकी असली काव्य-भाषा है; और इसकी खातिर दूसरी भाषा को तिलांजलि दे देनी चाहिये।

प्रश्नः–आपके पास तो अपनी कई अधूरी कविताएं होंगी। उन्हें आप कभी-कभी पढ़ते होंगे?

इलियटः–ज्यादा नहीं। दरअसल मैं सोचता हूं कि अधूरी चीजों को मिटा देना ही अच्छा है। अगर उसमें कुछ अच्छी चीज है, जिसका और कहीं उपयोग हो सकता है, तो उसे दिमाग में रखना चाहिये, दराज में बंद कागज पर नहीं। दराज में पड़ी हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीज हमेशा वैसी ही रहेगी, जबकि दिमाग में पड़ी हुई चीज की शक्ल बदलती रहती है।

प्रश्नः—अपनी लेखन-रीति के संबंध में कुछ बताइये। सुना है, आप कविताओं की रचना टाइप-राइटर पर करते हैं।

इलियटः—कभी-कभी टाइप राइटर पर भी। आजकल मैं जो नाटक (एल्डर स्टेट्समैन) लिख रहा हूं, उसका अधिकांश भाग मैंने पेन्सिल से लिखा है। बाद में मैंने उसे स्वयं टाइप किया है और उस पर से मेरी पत्नी ने दुबारा टाइप किया है। स्वयं टाइप करते समय मैं परिवर्तन और परिवर्धन करता रहता हूं। कई बार तो काफी परिवर्तन कर डालता हूं। मैं निश्चित समय में ही कविता करता हूं। अनुभव से मैंने पाया है कि प्रतिदिन मैं तीन घंटे कविता-लेखन कर सकता हूं। एक बार मैंने ज्यादा समय लगाने का निश्चय किया। लेकिन अगले दिन जब मैंने वह रचना पढ़ी, तो पाया कि प्रथम तीन घंटों के बाद जो कुछ लिखा था, वह संतोषप्रद नहीं था।

प्रश्नः—कविता के मुकाबले पद्य-नाटक लिखना कितना कठिन होता है?

इलियटः—मेरे विचार से कविता अलग दृष्टिकोण से लिखी जाती है और नाटक अलग दृष्टिकोण से। नाटक दर्शकों को दृष्टि में रखकर लिखा जाता है, जबकि कविता विशेषतः अपने लिए लिखी जाती है—भले बाद में उसे और को पहुंचाये बिना कवि को चैन कविता के संबंध में कहा जा कि हम अपने ही लिए अपने शब्दों का लिबास पहनाते है कभी दोनों दृष्टियां एक बिंदु जाती हैं, और कविता का है। शेक्सपियर में बहुत बार आता है कि वह कविता भी होता है और साथ ही रंगमंच और दर्शक की दृष्टि से भी होता है।

प्रश्नः—आजकल जो कविता अमरीका में लिखी जा रही है उसे ध्यान से पढ़ते हैं।

इलियटः—कह नहीं सकता। प्रकाशक के नाते कभी ध्यान से पढ़ा और अच्छे कवियों को ढूंढ़ता था। लेकिन ज्यों-ज्यों कवि बढ़ती जाती है, उसका वह डिगता जाता है कि वह नवीं अच्छे कवियों को पहचान या नहीं। और उसे यह भय है कि कहीं ये नये कवि उसे न ले लें, जैसेकि कभी उसने पूर्ववर्ती पीढ़ी के कवियों का लिया था। हमारी प्रकाशन संस्था एंड फेबर' में एक कम उम्र है, जो नये कवियों की कविताओं व परखता है। अगर मुझे स्वयं नये कवि की रचनाएं जंच जाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं उन्हें अपने कम उम्र साथियों को दिखाता हूं और उनकी राय लेता हूं। फिर भी यह खतरा तो रहता ही है कि कई बार न चाहते हुए भी अच्छी कविता नजर-अंदाज हो जाती है। इसीलिए मैं किसी भी नये कवि के बारे में अपने कम उम्र मित्रों की राय लेता हूं और फिर अपनी राय बनाता हूं कि वह कितना अच्छा कवि है। मैं नहीं चाहता कि मैं नये कवियों का विरोध करूं, जैसे कि आरंभ में मेरी कविता का विरोध हुआ था।

धंधा

एक जेलर और उनकी पत्नी बाजार से गुजर रहे थे, तो एक व्यक्ति ने झुककर सलाम किया। जेलर साहब ने उपेक्षा से हाथ उठाया और सरसरी तौर पर पूछा–"कहो जग्गू क्या कर रहे हो आजकल ?"

"वही वटुए का धंधा हुजूर।" उसने मुस्कराकर कहा।

जेलर साहब की पत्नी ने सोचा, शायद लेडीज पर्स बनाता है। उन्होंने पति को फौरन टहोका दिया–"इससे पूछो, इसका वटुए बनाने का कारखाना कहां है। शायद वटुवा सस्ता मिल जाये।"

जेबकतरा होशियार था, फौरन ताड़ गया। बात बनाकर बोला–"बीबीजी, थोक का माल बनाते हैं। चमड़े के वटुए, लेडीज पर्स, प्लास्टिक पर्स बहुत-सी किस्में–जैसा ग्राहक मिल जाये।

जेलर और जेबकतरे की आंखें मिलीं। दोनों मुस्कराये जेलर ने पत्नी से मुस्कराकर कहा–"चलो बेगम, कहीं यह तुम्हारा पर्स नमूने के तौर पर न ले जाये।"

और जेबकतरा सलाम करके भीड़ में गायब हो गया।

दिल की दिल में

पश्चिमी पाकिस्तान में एक कबीला है, जिसमें यह दस्तूर था कि जब तक उनका जवान कोई कामयाब चोरी न करले, कोई ऊंटनी न चुराये, कोई घोड़ी खोलकर न ले आये उस वक्त तक उसकी दस्तारबंदी न होती थी, न उसकी सगाई या शादी ही हो सकती थी।

संयोग से उस कबीले के एक नौजवान ने किसी को कत्ल कर दिया। मुकदमा चला और उसे फांसी की सजा सुनायी गयी। अपील खारिज हो गयी और फांसी का दिन तय हो गया। जब उसके रिश्तेदार उसकी लाश लेने जेल पहुंचे, तो उसकी मां ने रो-रोकर बैन करना शुरू किया–

"ओ शेरा! जवानी की मौत मरा। न तूने कोई अच्छी-सी चोरी की, न कोई घोड़ी चुरायी, न किसी जमींदार के घर नकब लगायी, न कोई ऊंटनी भगायी। तेरी तमाम हसरतें दिल की दिल में रह गयीं। तूने जिंदगी में देखा ही क्या –? अब तू आगे जाके क्या मुंह दिखायेगा ?"

–मुगनी अब्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह धरती का दोष नहीं है

मैंने जब दर्पण में देखा, तेरी आंखें पड़ीं दिखायीं
समाधान जब करना चाहा, मेरी आंखें भर-भर आयीं
यह दर्पण का दोष नहीं है, मन की कुछ ऐसी विकृतियां
सच हो जाती है परछाई, झूठी हो जातीं आकृतियां।

शायद ये आंखें मेरी हों; लेकिन आंसू तेरे होंगे
जिनको मैंने स्वर में बांधा, गीत सभी वे तेरे होंगे
यह गीतों का दोष नहीं है, अर्पण की ऐसी मजबूरी
झूठा हो जाता है अर्चन, सच हो जाती है कमजोरी।

मरु का पंथी मैं प्यासा था, मृग-तृष्णा का भरम हो गया
जब तक सरिता का तट आया, पीने का भी होश खो गया
यह प्यासे का दोष नहीं है, हो जाती ऐसी नादानी
तन की आग बुझानेवाला, मन में आग लगाता पानी।

मेरे मन-मंदिर की प्रतिमा, स्वयं प्यार की पूजा करती
क्षितिज रेख तक जाकर नभ को, स्वयं समर्पित होती धरती।
यह धरती का दोष नहीं है, आकर्षण करता मनमानी
नभ का चांद अतल सागर में, भर देता पीड़ा अनजानी।

— बुधमल शामसुखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीजिये, दिल बदलवाइये

सरोज मित्तल

अब आपको इसलिए पछताने की बिलकुल जरूरत नहीं है कि भगवान ने आपको इतना रोमांटिक दिल क्यों नहीं दिया कि आप किसी के प्रेम में तड़पकर लंबे-लंबे प्रणय-गीत लिख सकें या और कुछ नहीं तो कम-से-कम नयी कविता लिखकर ही अपने उद्गारों को प्रकट कर सकें, अथवा आपको इतना कमजोर दिल क्यों मिला है कि रात को जरा-सी आहट होते ही आप अपना मुंह चादर से ढंक लेते हैं और अपनी श्रीमतीजी से कहते हैं कि जरा देखना, यह आवाज कैसी हुई? अगर आप चाहें, तो अब आपको अपने पुराने दिल की जगह अपनी मर्जी के मुताबिक नया दिल मिल सकता है। आज विज्ञान ने यह संभव बना दिया है कि आप अपने पुराने दिल की जगह नया दिल लगवा सकें। आज के युग में जबकि जिंदगी का कुछ भरोसा नहीं, विज्ञान की यह खोज मन में यह विश्वास पैदा करती है कि शायद एक दिन ऐसा भी आये, जब आदमी मौत को भी जीत ले।

अमरीका और रूस में पुराने दिल की जगह नया दिल लगाने के बहुत से प्रयोग किये गये हैं और उनमें आशातीत सफलता मिली है। पिछले दिनों अमरीका के एक अस्पताल में एक ऐसा मरीज भर्ती किया गया, जिसका दिल बिलकुल खराब हो चुका था और कभी भी धड़कना बंद कर सकता था। डाक्टरों ने जब मरीज को आपरेशन टेबल पर लिटाया, तो वह ठीक काम कर रहा था, लेकिन यह क्या? आपरेशन शुरू करते ही वह धड़कना बंद हो गया। अस्पताल में चारों तरफ भगदड़ मच गयी। मरीज असल में मर चुका था; लेकिन डाक्टर भी कब हिम्मत हारनेवाले थे! फौरन आपरेशन करके दिल को पंप किया गया और शरीर में कृत्रिम रूप से खून का संचार जारी रखा गया। इस सबमें करीब एक घंटा लगा और मरीज फिर भला-चंगा उठ खड़ा हुआ—पूरे एक घंटे तक बेजान पड़े रहने के बाद। और वह आदमी आज भी पूरी तरह स्वस्थ है, ठीक आपकी और हमारी ही तरह। यह विज्ञान का चमत्कार नहीं तो और क्या है?

कुछ दिनों पहले तक अगर किसी आदमी का दिल धड़कना बंद हो जाता था, तो डाक्टर निराश होकर कह देते थे—"मरीज का दिल रुक गया है, वह मर गया है।" लेकिन अब दिल का रुक जाना ही मौत का सूचक नहीं है। दिल के रुक जाने के बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी मरीज को जिंदा किया जा सकता है, उसके पुराने दिल में ही फिर से धड़कन पैदा की जा सकती है, या उसकी जगह किसी दूसरे आदमी का अथवा कृत्रिम दिल लगाया जा सकता है। लेकिन दिल का धड़कना किसी भी समय बंद हो सकता है, उसमें वापस धड़कन पैदा करने के लिए सीने की चीर-फाड़ हर समय मुमकिन नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखकर ऐसी मशीनें ईजाद की गयी हैं, जिनके द्वारा बिना सीने की चीर-फाड़ किये, ऊपर से ही वापस धड़कन पैदा की जा सकती है। इस तरह के यंत्र की भी खोज की जा चुकी है, जो बैटरी से चलता है और जिसे आदमी के शरीर में ही फिट कर दिया जाता है। मशीन की ही तरह दिल भी सेलों के जरिये लगातार व्यवस्थित रूप से धड़कता रहता है और इस तरह आदमी सेलों के द्वारा पैदा की गयी धड़कनों के बल पर जिंदा रह सकता है। दूसरे शब्दों में उसके शरीर में बिजली द्वारा चालित बनावटी दिल काम करता रहता है। बिजली के अलावा दिल की धड़कन को चालू रखने के लिए रासायनिक, तापीय (थर्मल) और यांत्रिक तरीके भी इस्तेमाल में लाये जाते हैं।

नृत्य की थिरकनों पर दिल की बात

असल में विज्ञान दिल की धड़क जाने को ही मौत का पर्याप्त लक्षण मानता। मौत दिल के बजाय दिमा ज्यादा निर्भर करती है। दिमाग ज्यादा चार मिनिट तक आक्सिजन को बर्दाश्त कर सकता है; अगर इससे समय तक उसमें काफी आक्सिज पहुंच पाती, तो जान खतरे में पड़ अगर मरीज को तरह बचा भी लि तो स्नायु-संस्थान काम करना बंद है। शरीर को अग कर दिया जाये उसका तापक्रम दिया जाये, तो दि आक्सिजन की आव कम हो जाती है। रुक जाने पर दि आक्सिजन पहुंचना जाता है और फि स्वरूप उसके सेल जाते हैं। इसीलिए धड़कन बंद होते ही डाक्टर शरीर क क्रम कम कर देते हैं, जिससे दि आक्सिजन की जरूरत कम हो जा बाद में कृत्रिम रूप से दिल की धड़क से जारी करने की कोशिश करते हैं। समय रहते ही वे अपने काम में हो जाते हैं, तब तो मरीज बच नहीं तो दिमाग के सेलों के नष्ट हो

नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कारण उसकी मौत हो जाती है।

इस तरह दिल में बनावटी धड़कनें पैदा करने की दिशा में तो विज्ञान काफी तरक्की कर चुका है; लेकिन अभी पुराने दिल को निकालकर उसकी जगह कोई दूसरा दिल लगाने में खास कामयाबी नहीं मिल पायी है। अभी हाल में ही मिसिसिपी विश्व-विद्यालय (अमरीका) के मेडिकल सेंटर में इस दिशा में बड़ा ही चमत्कारिक प्रयोग किया गया। वहां पर एक ऐसा मरीज था, जो दिल की बीमारी से बुरी तरह पीड़ित था। डाक्टरों ने आपरेशन द्वारा उसका खराब दिल निकालकर चिंपैंजी का दिल लगा दिया। यह दिल उस आदमी के शरीर में एक घंटे तक ठीक तरह से काम करता रहा, लेकिन चिंपैंजी का दिल आदमी के दिल से बहुत छोटा था। वह मरीज एक घंटे से ज्यादा जिंदा न रह सका। इस प्रयोग के परिणाम निराशाजनक नहीं कहे जा सकते। इससे यह आशा तो बंधती ही है कि शीघ्र ही किसी दूसरे उपयुक्त प्राणी के दिल से खराब दिल को बदला जा सकेगा।

शायद वह दिन भी दूर नहीं, जब आप अपने पुराने, घिसे-पिटे दिल को निकलवाकर अपनी पसंद के मुताबिक नया दिल लगवा सकेंगे।

★

शिक्षा की सार्थकता

जबलपुर में मेरे एक रिश्तेदार रेलवे के उच्चाधिकारी हैं। मैं उनके यहां गया, तो देखा कि उनके प्राइमरी के बच्चे को पढ़ाने के लिए एक एम० ए० लड़की आती थी। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मैंने पूछा—"बहनजी, आप एम० ए० हैं, फिर भी प्राइमरी की ट्यूशन क्यों करती हैं?"

वह बोली—"मेरे बूढ़े माता-पिता हैं एक बड़ा और दो छोटे भाई हैं। बड़े भाई की रेलवे में सर्विस है। पहले वे ही घर चलाते थे। लेकिन जब से उनकी शादी हुई, वे हमको छोड़कर दूसरे घर में चले गये।..."

तब से बूढ़े माता-पिता व छोटे भाइयों की पढ़ाई का सारा भार मेरे ऊपर आ गया है। सर्विस आजकल मिलती नहीं, दो-चार जगह अर्जी भी दे रखी हैं; लेकिन तब तक तो काम चलाना ही है। रेलवे कालोनी में मेरी पहचान थी, सो मैं दो-चार परिचित व्यक्तियों के पास गयी और मुझे प्राइमरी के ६ बच्चों की ट्यूशन मिल गयी हैं, जिनसे मुझे ९० रु० मिल जाते हैं। एक मराठी स्कूल में हिंदी का पीरियड लेती हूं। उससे ४० मिलते हैं। इस तरह १००—१२५ में घर चल जाता है। आज नहीं तो कल सर्विस मिलेगी ही। सोचती हूं यदि माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकी और छोटे भाइयों को पढ़ा दिया, तो मेरा एम० ए० होना सार्थक हो जायेगा।

—रामनारायण उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब भैंसे ने चीते को पछाड़ा

यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक'

कोसी की घाटी में हमारा भैंसा सबसे खूंख्वार समझा जाता था। उन दिनों मैगड़ी, गवालदम और हवालबाग में अंग्रेजों के चाय के बाग थे। उनमें भी अच्छी जाति के भैंसें थे। चाय की बड़ी मशीनों को घुमाने और चाय की पेटियों से लदी गाड़ियों को रेलवे स्टेशन तक पहुंचाने का काम भैंसा-गाड़ियां ही करती थीं; लेकिन उन भैंसों से कई गुना बलवान हमारा जतिया (सांड) भैंसा था। कोट की माई के थान पर प्रति-वर्ष अष्टमी का मेला लगता था और अंग्रेज बागवानों के पशु भी प्रदर्शनी में आते थे। भैंसों की दौड़ और उनकी लड़ाइयों का आयोजन होता था। उन लड़ाइयों में हमारा भैंसा तीन वर्ष तक लगातार सब जतियों को पछाड़ता आ रहा था। उसकी काली देह ठोस लोहे की-सी बनी लगती थी। घुमाव-दार सींगों के आगे उसका चौड़ा माथा हाथी के मस्तक-सा मजबूत था। अपनी अगली टांगों को जमीन में गड़ाकर उनके बीच अपना सिर तानकर जब वह हुंकारता हुआ अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर झपटता, तो उसकी लाल आंखों से चिनगारियां-सी निकलने लगती थीं।

मैं तब दस-बारह वर्ष का रहा हूंगा। गेहूं की फसल कटने के बाद हमेशा की तरह उस वर्ष भी हमारे पशु बरसाती [illegible] में रहने के लिए एड़देव पहाड़ [illegible] की ओर ले जाये गये थे। इस छः [illegible] प्रवास के पहले ही दिन की बात है [illegible] दिन दादा हमारे साथ नहीं आ सके [illegible] पशुओं को खरिकों तक ले जाने [illegible] हम दोनों भाइयों के जिम्मे आ पड़ा [illegible] तीसरे पहर वहां पहुंचने पर भाई [illegible] पास के गांव के मुखिया के घर चले [illegible] वहीं पिछली दीपावली के समय [illegible] छोड़ने से पहले हमारे खाना पकाने [illegible] और दही-दूध की कठौतियां संभला [illegible] थीं। उनको लाये बिना न रात का [illegible] बन सकता था और न दूध ही दुहा जा [illegible] था। सो, भाई साहब के चले जाने पर [illegible] शाम मैं अकेला रह गया।

इसके पहले मैं उन पशुओं के साथ [illegible] अकेला नहीं रहा था। फिर भी जब तक [illegible] रही, मुझे उस जंगल में सभी कुछ [illegible] और मनोहर लगा। उस ऊंचाई पर [illegible] के पेड़ भी टेढ़े-मेढ़े न होकर सीधे [illegible] लंबी-लंबी पूंछवाले कठफोड़वा पक्षी [illegible] बांसों की काई पर उलटे-सीधे लटककर [illegible] स्वागत-सा कर रहे थे। कभी दो-चार [illegible] हमारे टूटे छप्पर पर बैठकर भैंसों को [illegible] लेते थे और कभी ऊंचे उड़कर कलाबाजि[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही मुझे दिखा रहे थे । दिन डूबने के समय उन पेड़ों की लंबी छाया के पीछे आकाश एकदम नया-सा दिखाई दे रहा था । वन-प्रदेश की वह छटा अंधेरा होते ही एकाएक लोप हो गयी । दूध दुहने का समय हो चला था; लेकिन मैंने दूध दुहना तब तक सीखा ही न था । मैंने रस्सियां डालकर पहले पाड़ों को उनके खूंटों से बांधा और फिर भैंसों को उनकी नांदों के समीप ले जाकर बांध दिया । दैत्य से खड़े भैंसे के पास जाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई । मैं ही क्या, दादा के अतिरिक्त गांव का कोई चरवाहा उसे छूने का साहस न कर सकता था । अपने बड़े-बड़े जबड़ों को चलाता हुआ वह शायद मेरी ओर ही ताक रहा था । अपनी उन आंखों से शायद उसने मेरी अनुभवहीनता को ताड़ लिया था ।

मैं उससे बचता हुआ चीड़ के तिनकों के ढेर की ओर खिसक गया । पीले तिनकों के दो बड़े ढेर पिछले वर्ष से ही छप्पर के आगे लगे पड़े थे । इन तिनकों को रात में जानवरों के नीचे बिछाकर दूसरे दिन समेटकर एक ओर करके नये तिनके बिछा दिये जाते थे । इस प्रकार सड़े हुए तिनकों के ढेर खाद का काम देते थे । मैं दोनों ढेरों के बीच में दुबक कर बैठ गया । यद्यपि हमारे पास गांव से लाये हुए दो मोटे कंबल थे; किंतु जंगल में उन सूखी कोमल पत्तियों के नीचे दुबककर सो जाने में जो आनंद आता था, वह भला उन कंबलों में कहां प्राप्त था ?

उस ऊंची चोटी से दूर नीचे घाटी में जलते हुए दीपक तारों की भांति चमकने लगे थे । नीचे तलहटी में अंधेरा हो चला था, तथापि हमारे छप्पर की चोटी पर सूर्य की अंतिम किरणें पीली उदास-सी अस्त होती हुई भी चमक रही थीं । मेरी आंखें पहाड़ के ढलान की ओर बटिया का अनुमान-सी लगातीं, और उस पर भाई साहब की प्रतीक्षा करती-करती थक गयी थीं । धीरे-धीरे उत्तर की ओर से आनेवाली ठंडी हवा ने जोर पकड़ा । पेड़-पौधे सांय-सांय करने लगे । मैं अपने उस घोंसले में और भी गहरा पैठ गया । भैंसें जुगाली करने लगी थीं । उनके सिरों पर छोटी-छोटी फुनगियां मंडरा रही थीं । वे बार-बार अपनी पूंछों को पीठ पर मार रही थीं और कान फड़फड़ा रही थीं । ऐसे समय मेरा यह कर्तव्य था कि उनके खूंटों के निकट कंडे सुलगाकर ऊपर से गीली पत्तियां डाल खूब धुआं कर देता; किंतु मुझे अपने घोंसले से बाहर निकलने का साहस ही नहीं हो रहा था ।

मैं दिन-भर का थका तो था ही । मुलायम-मुलायम पत्तियों के बिछावन पर मेरी आंख लग गयी । अचानक किसी पक्षी की चीत्कार सुनकर मेरी आंख खुली । न जाने रात कितनी बढ़ गयी थी । भाई साहब अभी तक नहीं लौटे थे । मुझे उनकी इस लापरवाही पर क्रोध आ रहा था । धूमिल प्रकाश में मैंने पशुओं को छटपटाते हुए देखा । पहले तो चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर भी कहीं कुछ न दिखाई दिया । फिर भैंसों की कनौती के रुख की ओर दृष्टि करने पर मैंने देखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वे सभी दूसरी ओर के पहाड़ की ओर देख रही हैं। उसी पहाड़ी की ओर मैंने भी गरदन मोड़ी, तो हलके से उजाले को अपनी ओर आते देखकर सहज ही अनुमान लगा लिया कि भाई साहब इस नये रास्ते से आ रहे हैं और उनके पास छिलुके (चीड़ की जलती लुकाई) की मशाल है। जैसे-जैसे उस उजाले और हमारे छप्पर के बीच की दूरी कम होती गयी, मैंने भी उसी अनुपात में एक-एक इंच गरदन ऊपर निकालनी आरंभ कर दी। मैंने देखा कि वहां एक मशाल नहीं, दो हैं। दोनों हवा में तैरती हुई-सी हमारे छप्पर की ओर बढ़ती चली आयीं। इसी बीच भैंसों में खलबली मच गयी। पाघे टूट गये। पांचों भैंसें पाड़ों की ओर पिछली टांगें किये और सींग बाहर निकाले एक गोल घेरे में खड़ी हो गयीं। भैंसा उनके बीच दैत्य-सा खड़ा उस गोल घेरे में, अपने विशाल शरीर के कारण, आधा बाहर ही निकला-सा रह गया।

वे चमकीली लुकाइयां छप्पर के पास चीड़ की पत्तियों के ढेरों के ठीक पीछे क्षण-भर अटक गयीं। कपड़े के जलने की-सी तेज गंध हवा में व्याप्त हो गयी। तभी चक्की के चलने की घरघराहट-सा शब्द सुना और पत्तियों के दोनों ढेर कांप उठे। मैं समझ गया कि वह और कोई नहीं, चीता है। मेरी ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे ही रह गयी। एक ही क्षण बाद बिजली-सी कौंधी, सटाक-सट-सा शोर हुआ और वे दोनों जलते अंगारे ओझल हो गये।

पूरे दो मिनिट बाद मेरी और मैंने अपने चारों ओर देखा। पाड़े निस्तब्ध खड़े थे। उनकी ओर लगी थी, जिधर चीता तिनकों के नीचे से ही मैंने छायाओं को गिना। तीनों पाड़े भैंसें पूर्ववत् खड़ी थीं। मेरा मन हुआ कि उस चालाक चीते ने नहीं की। उस चीते की अनेक मैंने सुन रखी थीं। पिछले दिन तक लगातार बर्फ पड़ी इस चीते ने मोटिये के छप्पर रात-ही-रात में दो भेड़ें मार सवेरा होने तक वह उन्हीं भेड़ चुपचाप लेटकर अपना जाड़ा काट वह मील-दो-मील दूर से आदमी सुनकर जंगल में सूखी घास में जाता था कि पता ही न चलता तिनके हैं या चीता। कभी-कभी चढ़कर किसी अकेले बैल को पीठ पर सवार होकर उसको दौड़ाकर उसके माथे पर जबड़ा उसको बेहोश कर देता था, और कदम दूर छलांग मारकर को अपने ही साथ उछालकर मरोड़ लेता था।

पिछले साल उसने हमारे एक ऐसा थप्पड़ मारा था कि बैल पहाड़ वान पर जा लुढ़का था। उस गिरने के कारण उसका तो निकल गया। उस पर एकाएक

नवनीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्काल उसका कंठ पकड़कर इस चीते ने उसका ताजा रक्त पी लिया था और लाश को वह नाले की झाड़ियों में छुपा गया था। खुद केवल डेढ़-दो मन भारी होने पर भी वह दस-बारह मन भारी घायल पशु को खींचकर ले जा सकता था। मैं प्रसन्न था कि आज अपने को सौंपे गये पशुओं की रखवाली के इस काम को मैंने शायद बड़ी खूबी से निभाया है और हमारे उस मरकहे भैंसे पर ही डरकर चीता पशुओं को घायल किये बिना ही खिसक गया है। भैंसे का स्मरण होते ही मैंने फिर पशुओं के बाड़े की ओर देखा। मैं उसे गिनना तो भूल ही गया था। यह क्या! वह तो बाड़े में था ही नहीं! तो क्या वह चालाक चीता आज हमारे भैंसे को ही चंपत कर ले गया? यह बात विश्वास के योग्य न होते हुए भी सच थी। मैं उस भैंसे की खोज में निकलूं या न निकलूं, इसी उधेड़बुन में था कि भाई साहब ने बर्तनों से भरे बोरे को पीठ से उतारकर मेरा दोना मेरी ओर बढ़ा दिया।

मैं घिघियाते हुए चीते की बात कहने ही जा रहा था कि वे स्वयं बोले—"मैं जिस समय उस पार टीले पर पहुंचा, चीता हमारे भैंसे को दौड़ाता हुआ उसी ओर भागा जा रहा था। मैं वहीं दुबक गया। मैंने देखा भैंसा आगे-आगे भाग रहा है। जैसे ही चीते ने अपना सिर नीचा करके पूंछ तरेरकर उस पर झपटना चाहा, वह अपनी चाल तेज करके एक ओर हट गया। चीते ने दो बार उस पर झपटने की कोशिश की; लेकिन दोनों बार उसने उसका वार विफल कर दिया। मैं उन दोनों के दांव-पेंच वहीं से छिपा-छिपा देखता रहा। तीसरी बार चीता उसे दौड़ाता हुआ अपने आगे-आगे पहाड़ की धार तक ले गया और फिर उससे आगे उछलकर ऊंची चट्टान पर बैठ गया। भैंसा आगे चलने का मार्ग बंद देखकर अपना सिर जमीन पर गड़ाये उसके झपट्टे को अपने सींगों पर ओटने के लिए तैयार खड़ा हो गया। जैसे ही चीता उस पर कूदा, भैंसा एकदम उलटे ही पांव पीछे की ओर हट गया। कुछ सेकेंड तक दोनों एक-दूसरे के सामने डटे रहे। भैंसा पीछे हटता गया और चीता उसकी पीठ पर चढ़ने का प्रयत्न करता रहा। अपने पीछे भी एक चट्टान के आ जाने से जैसे ही भैंसा अपने आपको संभालने लगा, चीते ने अपना भारी पंजा उसकी पीठ पर दे मारा। चीते का शायद अनुमान था कि उस झपट्टे की मार से भैंसा लुढ़ककर संकरे रास्ते से नीचे ढलवान पर जा गिरेगा।

"लेकिन ऐसा कुछ न हुआ और वह अपनी पीठ पर सवार चीते को लिये चट्टान की ओर उछल गया। भैंसे ने उस चट्टान और अपनी कठोर देह के बीच चीते को पीस देना चाहा। दो मिनिट तक यह गुत्थमगुत्था चलती रही। फिर चीता किसी तरह अपने को छुड़ाकर लंगड़ाता हुआ ढलवान पर उतर गया। उसकी चाल से मुझे पता चल गया कि वह बुरी तरह घायल हो गया था। नाले तक तीन-चार सौ गज का फासला तय करने में वैसे चीते को आधे मिनिट से अधिक नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगता; लेकिन इस बार उस दूरी को पार करने में उसे लगभग दस मिनिट लग गये। घायल चीते के आंखों से ओझल होने के उपरांत मैं भैंसे की खोज में चट्टान की ओर बढ़ा, लेकिन वह वहां नहीं था। मैंने सोचा, वह इस ओर आ गया होगा; लेकिन यहां भी तो वह कहीं दिखाई नहीं देता।"

भाई साहब ने यह भी बताया कि गांव के मुखिया ने बिना खाये उन्हें वापस आने ही नहीं दिया। फिर मेरे लिए खाना बनाकर रखने में और भी देर हो गयी।

दूसरे दिन हमें ज्ञात हुआ कि चीते से मुठभेड़ होने के बाद भैंसा सीधे हमारे गांव वापस चला गया और हमारी गोशाला के दरवाजे पर लेट गया। दादा ने सवेरे उसे खून से लथपथ देखकर सोचा कि शायद वह किसी दूसरे गांव के भैंसे से लड़कर आया होगा। वे उसे सहलाने के लिए उसके निकट पहुंचे, तो देखा कि उसकी पीठ से चीते की समूची टांग लटक रही है।

वह उसी चालाक चीते की टांग थी, यह बात नाले में मरे हुए तीन टांग के उस चीते की लाश के मिलने पर प्रमाणित हो गयी।

फिर तो दूर-दूर के गांवों के लोग हमारे भैंसे के पीठ पर गड़ी उस चीते की टांग को देखने आने लगे। भैंसा कई दिन खड़ा ही नहीं हो सका। धीरे-धीरे उसके घाव सूखे; लेकिन उस टांग को निकालने के सभी प्रयत्न विफल रहे। कुछ महीने बाद टांग पर से चीते के घुटने से ऊपरवाली हड्डी चमड़े के सड़कर गिर जाने से अलग हो गयी और चीते का पंजा ही भैंसे की पीठ की भांति लटकता रह गया।

कोट की माई के मेले तक [illegible] चलने-फिरने लगा। दादा ने निश्चय कि चीते के पंजे को निकाल लेने के भैंसे को मेले में भेजा जाये। इसके बड़े रस्से मंगवाकर भैंसे को पेड़ गया और उसे चित लिटा दिया। पहलवानों ने उसे जकड़कर बांधा। चीते की सूखी टांग पर रस्सियां एक साथ झटका देकर उसको खींच

रस्सियों के खोल दिये जाने भैंसा उठ बैठा; लेकिन न उसने ओर मुंह उठाया और न अपने उन त्राताओं की ओर! वह वहीं पर गया। उन दिनों आज की भांति में पशुओं के अस्पताल नहीं थे। में एक ही पशु-अस्पताल मुक्तेश्वर और उस पहाड़ की ऊंचाई तक इतने भरकम भैंसे को लादकर ले जाना भी न था।

शाम तक दो-तीन बार हरी घास पर भैंसे ने मुंह चलाया; किंतु उसे निगलने या जुगाली लेने में भी होने लगी।

दूसरे दिन सवेरे वह अपने ही कुंड में डूबा हुआ मरा पाया गया। सभी अफसोस करने लगे कि यदि उखाड़ा जाता, तो संभव है भैंसा रहता और चौथी बार भी जीतकर ही लौटता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूध के बारे में कितना जानते हैं

डा० कलाशनाथ मिश्र

धर्मराज युधिष्ठिर से यक्ष ने जो प्रश्न पूछे थे, उनमें से एक था—"अमृतं किम्?" अर्थात् अमृत क्या है? धर्मराज ने तत्काल उत्तर दिया था—"गवामृतम्" अर्थात् गाय का दूध ही अमृत है। यक्ष इस उत्तर से संतुष्ट था और उसने चारों मृत पांडवों को पुनर्जीवित कर दिया।

महाभारत के ही शांति-पर्व में कृतघ्न गौतम की कथा आती है। इसमें भी राजधर्मा की मृत देह पर आकाश में प्रकट हुई सुरभिदेवी के स्तनों से फेन-मिश्रित जो दूध गिरा था, उसके पड़ने से राजधर्मा पुनर्जीवित हो उठे थे।

इन कथाओं में सत्य क्या और कितना है, इसके विवेचन में न पड़कर यदि हम आज की वैज्ञानिक दृष्टि से भी दूध को देखें, तो पता चलेगा कि वह वास्तव में अमृत है, अमृत कहलाने योग्य है। या यों कहें कि इस धरती पर सर्वसामान्य को बिना योगाभ्यास या तप के जो अमृत आसानी से मिल सकता है, वह गाय का दूध ही है। पर दूध के विषय में हम कितना जानते हैं?

वेदों में गौ को 'अघ्न्या' अर्थात् न मारने योग्य कहा गया है। ऋग्वेद में आया है—"गौर्मे माता ऋषभः पिता" अर्थात् गौ हमारी माता और बैल पिता है, तथा यजुर्वेद में कहा है—"माध्वीर्गावो भवंतु नः।" हिन्दू धर्म में गौ को ऐहिक और पारलौकिक सुख प्रदान करनेवाली माता का उच्चतम स्थान दिया गया है।

आयुर्वैदिक ग्रंथों में तो गो-दुग्ध की महिमा पढ़ने ही योग्य है। कश्यप संहिता में यहां तक कहा गया है—"क्षीरात्परं नास्ति च जीवनीयम्" अर्थात् दुग्ध से बढ़कर कोई जीवन बढ़ानेवाला आहार नहीं है। पर दुग्धों के औषधीय और आहारोपयोगी गुणों का सबसे अच्छा वर्णन हमें चरक संहिता (सूत्रस्थान, अध्याय १, श्लोक १०५-११३) में मिलता है। उसमें आठ प्रकार के दूध का वर्णन है। इसी अध्याय के श्लोक २१७-२४ में लिखा है—"गाय के दूध में दस गुण हैं। यह स्वादिष्ट, ठंडा, कोमल, चिकना, गाढ़ा, सौम्य (सात्विक), लसदार, भारी, बाहरी पदार्थ को देर से ग्रहण करनेवाला तथा चित्त को प्रसन्नता देनेवाला है।"

भेल संहिता में पांच प्रकार के दूधों का उल्लेख है। गो-दुग्ध के विषय में उसमें लिखा है—"सभी दूध रेचक होते हैं; परंतु गाय के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूध का गुण इससे भिन्न है। इसमें वाजीकरण गुण है और वह वलवर्धक है।"

कश्यप संहिता में एक स्थान पर लिखा है–" गावः प्रतिष्ठा सचराचरस्य" अर्थात् गौयें ही समस्त विश्व का आधार हैं। चरक संहिता में एक स्थान पर दूध का महत्व इस प्रकार प्रकट किया गया है–"क्षीरं जीवयति," दूध ही जिलाता है।

भैंस के दूध को आयुर्वैदिक ग्रंथों में कहीं भी प्रतिष्ठा का स्थान नहीं मिला है। सुश्रुत संहिता में सुश्रुत गो-दुग्ध के विषय में कहते हैं–" गाय का दूध दस्त को वांधनेवाला, स्निग्ध, भारी, रसायन, रक्त-पित्त का शमन करनेवाला, शीतल, मधुर, जीवन वढ़ानेवाला और वातपित्त के विकारों को नष्ट करनेवाला है।"

एकमात्र सुश्रुत संहिता में ही वकरी के दूध को गाय के दूध के समान गुणकारी बतलाया गया है; पर जहां दधि प्रकरण आया है, वहां गो-दुग्ध की श्रेष्ठता को सुश्रुत ने भी स्वीकार किया है।

अंग्रेजी में एक कहावत है–"गो-दुग्ध और मधु सौंदर्य का मूल है।" मि०फैंक०ओ० लाडेन ने एक स्थान पर स्पष्टतया कहा है –" शताब्दियों से कथाओं और उपन्यासों में वर्णित यौवन के उद्गम की खोज मनुष्य कर रहा है; पर उस यौवन का निकटतम सान्निध्य रखनेवाला जो पदार्थ अव तक मिल सका है, वह गौ का दूध है।"

गाय का दूध भैंस के दूध की अपेक्षा मुख्य रूप से निम्नलिखित वातों में अधिक अच्छा है –

(१) गाय के दूध का प्रोटीन [illegible] दूध के प्रोटीन की अपेक्षा अधिक [illegible] होता है। इसलिए सरलता से पच [illegible]

(२) गो-दुग्ध में प्रोटीन को [illegible] वाली चर्वी का अंश पर्याप्त होता [illegible] लिए वच्चों, दुर्वलों तथा युवा [illegible] समान रूप से लाभदायक है।

(३) गाय के दूध में अधिक [illegible] होता है। गो-दुग्ध के अंश में अधिक [illegible] तत्व विटामिन ए, वी, डी, पाये [illegible]

(४) खमीर पैदा करनेवाला [illegible] (एनजाइम), जो पाचन में सहायक [illegible] है और मानव-शरीर में पैदा होने [illegible] (टाक्सिन तथा टोमेंस) का अधिक [illegible] निवारण करता है, भैंस के दूध [illegible] गाय के कच्चे दूध में अधिक अनुकूल [illegible] में एवं वहुतायत से पाया जाता है।

(५) गाय के दूध में भैंस के [illegible] अपेक्षा लवण भी अधिक घुलनशील [illegible] पचने योग्य रूप में पाया जाता है।

दूध में सैंकड़ों प्रकार के उपयोगी [illegible] पाये जाते हैं और अलग से इन [illegible] मिलाकर दूध का निर्माण नहीं [illegible] सकता। इसमें आठ प्रोटीनों में २१ [illegible] एसिड, मक्खन में ११ चिकने एसिड [illegible] एसिड), ६ विटामिन, ८ जीवाणुहीन [illegible] २५ धातुज तत्व, २ चीनी, ४ [illegible] के यौगिक, १९ नाइट्रोजन के तत्व [illegible] अन्य बहुत से पदार्थ पाये जाते हैं।

अभी तक हमने दूध पर विभिन्न [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार किया है और आयुर्वेद के विभिन्न आचार्यों के दुग्ध-विषयक विचारों का अध्ययन किया है। अब हम किंचित् आधुनिक विज्ञान की विवेचक दृष्टि से भी इसका विश्लेषण करें और देखें कि उपर्युक्त कथनों में कितना सत्य है। हमें यह न भूलना चाहिये कि कितने ही तत्वों का अभी तक पता नहीं लग पाया है। इसके अतिरिक्त यह सारा विश्लेषण केवल गाय के दूध का है। निम्नलिखित विश्लेषण विदेशी गाय के दूध का है, जिसमें घी की मात्रा यहां के दूध की अपेक्षा कम रहती है। यह विश्लेषण डा० डब्ल्यू० एल० डेविस के विवरण पर आधारित है।

दूध में जल ८७.१ प्रतिशत व घनपदार्थ १२.९ प्रतिशत होता है। इसमें घी ३.९ प्रतिशत है, जिसमें ११ तरह की फैटी एसिड होती है।

दूध में लवण या क्षार की मात्रा ०.७५ प्रतिशत है। इसमें १६ प्रकार के क्षार सम्मिलित हैं।

इसी तरह ३.५६ प्रतिशत अंश प्रोटीन, केसीन, अल्ब्यूमेन का है। इनकी संख्या २१ है—१. ग्लिसिन २. एलनिन. ३. वेलिन, ४. ल्यूसिन, ५. फेनाइलैलानिन ६. टाइरोसिन, ७. सेरिन, ८. सिस्टिन, ९. प्रोलिन, १०. हाइड्राक्सी-प्रोलिन, ११. ग्लूमैटिक एसिड, १२. हाइड्रोग्लूमैटिक एसिड, १३. एस्पार्टिथ एसिड, १४. ट्रिप्टोफेन, १५. आर्जिनिन, १६. हिस्टिडिन, १७. लाइसिन, १८. मिथियोनाइन, १९. डोडेकेमिनो एसिड, २०. अमोनिया, २१. फास्फोरस।

इसमें भी ल्यूसिन, फेनाइलैलानिन, टाइरोसिन, प्रोलिन, ग्लूमैटिक एसिड, आर्जिनिन, हिस्टिडिन और लाइसिन अधिक मात्रा में पाया जाता है।

दुग्ध-शर्करा का अंश ४.९ प्रतिशत है। इसमें ९ प्रकार के पाचक—किण्व या एन-जाइम-होते हैं— १. डायस्टेज, २. पेरक्सिडेज, ३. रिडक्टेज, ४. लाइपेज, ५. प्रोटिएज, ६. लैक्टेज ७. फास्फेटेज, ८. ओलिनेज और ९. गैटालेज।

जीवन-तत्व या विटामिनों में ए, ए१ (कैरोटिन), डी, ई (टोकोकेराल), बी १ (थियामिन), बी २ (रिबोफ्लेविन), बी३ (१) बी४ (१) और विटामिन सी (एसकार्बिक एसिड) हैं।

वायु की दृष्टि से (१) कार्बन (२) नाईट्रोजन और (३) आक्सीजन होती है।

इसके अतिरिक्त दूध में प्रोटिओज, लैक्टोम्यूसिन और अल्कोहल में घुलनशील प्रोटीन भी अंशाशतः पाये जाते हैं।

दूध में प्रोटीन रहित नाइट्रोजनवाले पदार्थ ये हैं — १. लैक्टोक्रोम, २. क्रियेटिन, ३. यूरिया, ४. थायोसायनिक एसिड, ५. ओराटिक एसिड, ६. हाइपोक्जेन्थीन, ७. जेन्थीन, ८. यूरिक एसिड, ९. कोलीन, १०. ट्राइमिथाइल ऐमीन आक्साइड ११. मिथाइल ग्वैनिडीन और १२. अमोनिया के लवण अंशाशतः पाये जाते हैं।

फास्फोरसवाले पदार्थों में— १. फ्री फास्फेट. २. केसीन के साथ मिला फास्फोरस, ३. लेसिथिन, ४. सिफेलिन, ५. डाइ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वात्सल्य

एमिनो-मानो फास्फाइड और ६. अम्ल में घलनशील आर्गनिक कास्फोरिक यौगिक (फास्फोरिक ईस्टर)।

यों देखा जाये, तो दूध कितना साधारण है; पर इसमें कितने अद्‌भुत तथा जटिल तत्त्व विद्यमान हैं! फिर भी इसके गुणों की तुलना में इसकी कीमत कितनी कम है!

गो-दुग्ध के विषय में भाव-प्रकाश में लिखा है—"दूध दोपहर के पहले लेने पर वीर्यवर्धक व अग्निदीपक; दोपहर को वलकारक, कफ, पित्त तथा मंदाग्नि का नाश करनेवाला है; वाल्यकाल में वृद्धि करनेवाला तथा वृद्धावस्था में वीर्यवर्धक तथा क्षयनाशक है। रात्रि में सेवन करने से यह अनेक दोषों को दूर करता है।"

काली गाय का दूध विशेष रोगापहारक है। लाल और चित्र का दूध पित्त का नाश करता है गाय का दूध कफकारक होता है। तथा सद्यःप्रसूता गाय का दू कारक होता है। वाखड़ी गाय गाढ़ा, वलवर्धक, तृप्तिकारक और नाशक होता है। खली और दाना खानेवाली गाय का दूध होता है। बिनौला तथा घास वाली गाय का दूध सब रोगों को कारी है। युवा गौ का दूध मधु और त्रिदोषनाशक है। वृद्धा गाय निर्वल तथा गाभिन गाय का तीन का पित्तकारक, खरास लिये हुए शोषण करनेवाला होता है। व्यायी गाय का दूध निस्सार होता व्यायी गाय का दूध रूखा, दाहकार दोषकारक तथा पित्तकारक व्याने के अधिक दिन बाद का दू दाहकारक और खट्टा होता है। दूध वृष्य, धातुवर्धक, निद्राकार प्रद, पथ्य, स्वादिष्ट, अग्निदीपक तुल्य तथा सर्वरोगापहारी है। दू प्रहर बाद का ठंडा दूध त्रिदोषकार है। गरम दूध पित्तनाशक तथा क कफ का नाश करता है।

अत्यधिक उदारता असंख्य अपराधों को जन्म देती है।
ज्ञान अभिमान को जन्म देता है; किंतु करुणा आध्यात्मिक निर्माण को।
करुणा अनेक दोषों को छिपा लेती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात सलूक की है

हमारे दैनंदिन जीवन में छोटी-छोटी बातों का भी इतना महत्व है कि हम कल्पना नहीं कर सकते ।

बैंक का अफसर थका-हारा घर पहुंचा । दिन-भर वह बेहद व्यस्त रहा था-कोई और दिन होता, तो सोफे पर बैठकर चाय की चुस्कियां लेते हुए संगीत सुनता और थकान मिटाता । लेकिन इधर कई हफ्ते से उसकी मां सख्त बीमार थी । यों दफ्तर में तो वह सब कुछ भूलकर काम में डूब जाता था; लेकिन घर लौटते ही उसे चिंता घर दबाती और वह बेचैन हो उठता था ।

आज शाम को जब वह घर लौटा, तो मेज पर एक लिफाफा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, जिस पर सुपरिचित लिखावट में उसी का पता लिखा था । पत्र बैंक के जनरल मैनेजर का था । कुछ डरते-सहमते उसने लिफाफा फाड़ा और चिट्ठी निकालकर पढ़ने लगा ।

"आशा है, आपकी माताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा होगा । मैं जब दो ही साल का बच्चा था, मेरी मां गुजर गयी । उसकी एक ही स्मृति मेरे मन में शेष है—वह बिस्तर में पड़ी हुई थी और अपलक मुझे देख रही थी । रोज सुबह व रात को मुझे उसकी याद हो आती है ।

"और कुछ ही रोज हुए मेरी मां की मौसी ने, (भगवान उनकी आत्मा को शांति दे । बड़ी भली औरत थी । हाल में ९६ वर्ष की उम्र में स्वर्ग सिधारीं । मां जब बचपन में ही मातृहीन हो गयी, तब उन्हीं ने उसे पाला-पोसा था ।) हां, तो मेरी मां की मौसी ने मेरे पास रेशम का एक टुकड़ा भेजा है, जिस पर मां ने दस वर्ष की उम्र में, यानी आज से ९० वर्ष पहले, कशीदा काढ़ा था । मां की यही एक यादगार मेरे पास है ।....."

पत्र को वह कई बार पढ़ गया और उसकी आंखों में आंसू छलक आये । बैंक में एक वही अफसर तो नहीं है । फिर भी जनरल मैनेजर ने उसकी मां की बीमारी की खबर सुनते ही अपने हाथ से उसे चिट्ठी लिखने के लिए समय निकाल लिया । उसका दिल उत्साह और आनंद से भर गया । उसे अब्राहम लिंकन के ये शब्द सहसा याद आ गये—"मैं जो कुछ भी हूं और होने की आशा करता हूं, वह सब मेरी देवता-स्वरूप मां की कृपा है।"

बड़े अफसोस की बात है कि आज की जटिल व्यावसायिक व्यवस्था में मानवीय संबंधों की महत्ता को पूरी तरह नहीं समझा जाता और जब समझा भी जाता है, तो उस विषय में ज्यादा कुछ किया नहीं जाता।

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे एक व्यावसायिक संस्था मालूम है, जिसके कर्मचारी अपने चीफ एग्जिक्युटिव अफसर से इस कदर चिढ़ते हैं कि सवेरे जब दो कर्मचारी मिलते हैं, तो आपस में इस तरह अभिवादन करते हैं। एक पूछता है—"क्यों भाई, आज उनके दुश्मनों की तबीयत कैसी है?" दूसरा कहता है—"उम्मीद तो यही करनी चाहिये कि बहुत खराब होगी।"

बहुत-से अफसर इस बात को भूल जाते हैं कि स्टाफ का 'संचालन' करना और चीज है, स्टाफ को 'हांकना' और ही चीज। किस्सा है कि कारखाने का प्रधान अधिकारी विदेश से लौटने वाला ही था कि एक विमान-दुर्घटना में बहुत-से यात्रियों के मारे जाने की खबर छपी। लगभग हर कर्मचारी के मन में सहज ही यह विचार उठा—"कितना अच्छा हो कि हमारे साहब बहादुर भी इसी जहाज में रहे हों।"

तत्व की बात यह है कि आज व्यापार-व्यवसाय और पेशों में विचार-प्रेषण के कारगर उपाय अत्यंत आवश्यक हैं। श्रोता और वक्ता दोनों की अपनी भावनाएं होती हैं। और जैसा कि एक विशेषज्ञ ने कहा है—"शब्दों के प्रति हमारी प्रत्येक प्रतिक्रिया भावनात्मक प्रतिक्रिया होती है और यह प्रतिक्रिया आनंदप्रद भी हो सकती है, व्याकुल बनानेवाली हो सकती है, या अंगारे के स्पर्श की तरह दाग छोड़ जानेवाली भी हो सकती है। मालिक-नौकर, अफसर-अधीनस्थ—इन सब संबंधों का आधार है विचार-प्रेषण, और विचार-प्रेषण [illegible] अच्छा होगा, नौकरी भी उतनी [illegible] दायक होगी। नौकरी में मालिक [illegible] नौकर-सहकर्मी सब एक दूसरे [illegible] प्रभाव डालते हैं—कुछ स्नेहमय और [illegible] वर्धक होते हैं; दूसरे 'बोरियत' और [illegible] सियत फैलानेवाले होते हैं।"

एक बैंक के जनरल मैनेजर [illegible] व्यवस्था-चातुरी और कार्यदक्षता [illegible] प्रसिद्ध थे। एक बार किसी मित्र [illegible] उनकी सफलता का रहस्य पूछा। [illegible] शब्द सुनकर बैंक मैनेजर हंस [illegible] बोले कि बैंक में मैं जो कुछ भी [illegible] खुले आम करता हूं, रहस्य में [illegible] करता। लेकिन वे यह भी बोले—[illegible] बात का मुझे सदा ध्यान रहता [illegible] आदमी की भावनाएं होती हैं।"

वे सज्जन सब हिदायतें इस ढंग [illegible] थे, जिस ढंग से वे दूसरे से हिदा[illegible] पसंद करते। इस नियम में उनकी [illegible] आस्था थी कि दूसरों से वैसा ही [illegible] करो, जैसा व्यवहार तुम उनसे पाना [illegible] हो। जीवन में बहुत जल्दी ही उन्हें [illegible] बात हृदयंगम कर ली थी कि सद्भा[illegible] वातावरण में काम अधिक अच्छा हो[illegible]

और उनके एक अधीनस्थ कर्म[illegible] उनकी सफलता का यह रहस्य सम[illegible] उन्होंने इन सज्जन को छोटे-पद से [illegible] बढ़ते जनरल मैनेजर पद तक पहुंचा[illegible] था और उनके स्नेह और सहानुभूति [illegible] रवैये पर वे सदा से मुग्ध थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने बताया कि अगर कोई अधीनस्थ कर्मचारी ऐसा कोई मामला लेकर उनके पास पहुंचता है, जिसमें उसे स्वयं निर्णय करना चाहिये, ये सज्जन उसकी पीठ थपथपाकर मुस्कराते हुए कहते हैं– "भैया, तुम्हें जो ठीक लगे, करो। और जो तुम्हारे लिए ठीक है, वह मेरे लिए भी ठीक ही है।" नतीजा यह होता कि वह अधीनस्थ कर्मचारी अधिक सोच-समझकर निर्णय लेता है; क्योंकि वह जनरल मैनेजर के विश्वास को उचित सिद्ध करना चाहता है।

मनुष्य को इज्जत दीजिये, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। उसका आत्मविश्वास तोड़ दीजिये, तो वह टूट जाता है, खत्म हो जाता है। कवि होमर का किस्सा इसका बढ़िया उदाहरण है। उसे अभिमान था कि चाहे कितनी भी जटिल पहेली उसके सामने रखी जाये, वह उसे हल कर सकता है। और सचमुच उसे देश का सबसे सयाना आदमी समझा जाता था। एक दिन एक मछुआ उसके पास आया और यह पहेली उसके सामने रखी –"कई मछुए किश्ती पर सवार होकर निकले। उन्होंने जो कुछ पकड़ीं, फेंक दीं; जो नहीं पकड़ीं, रख लीं। बताओ तो क्या ?" होमर ने सारा दिमाग लगा दिया; पर पहेली को बुझा न पाया। यह देखकर उसकी बुद्धिमत्ता में उसके प्रशंसकों की आस्था डिग गयी। होमर आत्मविश्वास खो बैठा और मरते दम तक पहेली का उत्तर न दे सका। उत्तर था–मक्खियां।

चित्रकार : हुसैन फावजी (मित्र)

भावनाएं कितना असर डालती हैं, इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, सुप्रसिद्ध हाथार्न-परीक्षण। अमरीका की वेस्टर्न इलेक्ट्रिक कंपनी ने हाथार्न में अपने कारखाने की कई महिला-कर्मचारियों पर यह परीक्षण किया था। परीक्षण का उद्देश्य यह पता लगाना था कि रोशनी की तीव्रता या मंदता का कर्मचारियों की कार्यक्षमता पर क्या असर पड़ता है। जब रोशनी तेज की गयी, तो कार्यक्षमता बढ़ गयी। फिर रोशनी जरा मंद कर दी गयी। परिणाम क्या हुआ ? कार्यक्षमता में और वृद्धि हो गयी।

विश्लेषण से यह नया तथ्य सामने आया कि कार्यक्षमता में वृद्धि रोशनी बढ़ाने या घटाने से नहीं हुई थी। असली कारण यह था कि कर्मचारियों को यह बात अच्छी लगी कि उनकी सुविधाओं पर ध्यान दिया जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम

तुमः
एक बांसुरी हो,
जिसे बजाते-बजाते
हर वादक का
कौशल हार गया है ।
तुमः
धूप से तरल हो,
तुम्हें रूप देने के लिए
कितना सोना
पिघला है, वहा है।
तुम : हवा की तरह
निस्संग हो,
तुम्हें छूने के लिए
फूलों की गंध
अकुलाती तिरती है।
तुम : ओस की बूंद से
निर्लिप्त हो,
तुम्हें बांधने के लिए
किरन-किरन
धरती पर उतरी है :
तुम्हें समेटना
भला क्योंकर संभव है ?
तुम तो केवल व्याप्ति हो;
तुम्हें मापने की
शक्ति कहां किसमें है
तुम्हीं तो आदि–
और तुम्हीं समाप्ति हो।

– रमा सिंह

रहा है । रोशनी चाहे तीव्र की
मंद, वे परीक्षण के दौरान में
से काम करने लगे ।

सो यह ठीक ही कहा गया है
और व्यवस्था की पहली सीढ़ी
और यह बात व्यापार-उद्योग
भीतरी व्यवहार में भी लागू होती
व्यवहार में भी । दो व्यापारी
बैंक के संबंध में बात कर रहे थे।
दिन सवेरे अपने-अपने बैंकों के
मिले थे । एक बोला–"बिलकुल
हूं मैं इस आदमी से । इसके साथ
लेन-देन नहीं करूंगा । कर्ज तो
उसने; लेकिन उसका देने का
बुरा है ।"

दूसरे व्यापारी का अनुभव
था । उसे अपने बैंक के जनरल
कर्ज नहीं मिला–फिर भी बैंक में
तुष्ट होकर नहीं लौटा । बोला–
बैंक मैनेजर गजब का आदमी है
बड़े दोस्ताना ढंग से सारे मामले
किया । मेरी योजना का उसने
विश्लेषण किया । सच कहता हूं,
बिना पूछे मैं अपनी योजना पर
बैठता, तो मुसीबत में फंस जाता
सबसे बढ़िया बात तो यह है कि
लाभ की दृष्टि से ही सारी बातों
किया, जैसे मेरा हित और उसका
ही हो ।"

तो वास्तव में सारी बात

['बैंक आफ इंडिया बुलेटिन' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू हास्य--

इश्तिहारात

मुहम्मद खालिद अख्तर

मैं हमेशा अपने रोजनामे (दैनिक पत्र) में सबसे पहले मुख्तसर इश्तिहारात के कालम को पढ़ता हूं और हकीकतन इसके अलावा और कुछ नहीं पढ़ता। यह कालम हमेशा नित नयी ताजगियों और खुशबरियों से पुर होता है। उन लोगों के लिए, जो यह कालम नहीं पढ़ते, नमूना पेश है।

एक अदद फोर्ड गाड़ी १९१८ माडल बेचनी है। नया इंजिन और नये टायर-ट्यूब पड़ने के बाद चल सकती है। ऊपर का ढांचा, चेसिस वगैरह ज्यों-का-त्यों कायम है। अठारह - उन्नीस आदमी तक उसकी अगली-पिछली सीटों, बानेट और बाडी के मुख्तलिफ हिस्सों पर बेखतर बैठाये जा सकते हैं। कीमत आम ग्राहकों से सिर्फ (१०) रुपया, जिसमें कार को बैलगाड़ी में लादकर ग्राहक के घर तक पहुंचाने का किराया भी शामिल है। अजायबघरवालों से इस नादिर (बढ़िया) चीज के सिर्फ बीस हजार रुपये लिये जायेंगे। हाजी अब्दुल फूर, लोहे के बेपारी, चोर बाजार से खुद मिलें या पोस्टकार्ड द्वारा आर्डर भिजवायें।

× × ×

कार्पोरेशन के गंदे पानी के निकास के तालाब के आस-पास, सांडा रोड पर पुर-फिजा (खुला हुआ, हवादार) रिहायशी प्लाट आसान किस्तों पर। पहली किस्त अदा करके कब्जा हासिल कीजिये और साहिबे-जायदाद कहलाइये। ऐसे नादिर मौके बार-बार नहीं मिलते। मालिकान—शेख कुद्दूस, हाउसिंग कार्पोरेशन, प्रापर्टी डीलर्स, ३०, गुलफिशां, मार्केट कश्मीरी बाजार, लाहौर।

× × ×

एक चीनी बिल्ली (जो चीन की है, चीनी की नहीं), दो अजगर, एक लकड़बग्घा, चार लंगूर, दो ऊदबिलाव बेचने हैं। लंगूर काफी भले मानस हैं और अजगर बिल-कुल बेजरर। ख्वाहिशमंद हजरात पिंजरे वगैरा साथ लायें। पूरी तफ्सील क्युरेटर, चिड़ियाघर से हासिल की जा सकती है।

× × ×

मैंने आज से अपना नाम गोल बयाबानी के बजाय नजी बुत्तरफैन (माता और पिता दोनों ओर से कुलीन) रख लिया है। वे नज्में और गजलें, जो मैंने पहले गोल बदा-वानी के नाम से लिखी थीं, अब मेरी न समझी जायें। आइंदा मुझे मेरे नये नाम से लिखा और पुकारा जाये। गोल बयाबानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के नाम पर भेजा हुआ खत मैं बिलकुल वसूल नहीं करूंगा। पोस्ट मास्टर जनरल, कर्ज देनेवाले और पत्र-पत्रिकाओं के संपादक नोट फरमा लें– नजीबुत्तरफैन वल्द अल्लाहदत्ता कुम्हार, साकिन-पिंडीखेप, जिला-कैमलपुर।

× × ×

निहायत अफसोस से सबको यह इत्तिला दी जाती है कि पिछली सितंबर, ववक्त दस बजे रात, नागहानी हरकते कल्ब बंद हो जाने से मेरा इंतकाल हो गया है। हक मगफिरत करे, अजब आजाद मर्द था। (भगवान मृत आत्मा को शांति दे!) मेरे लिए दुआ दीजिये। चेहलुम (मृतक भोज) मरने की तारीख से पूरे चालीस दिन बाद होगा। –मुहम्मद इदरीस वूटा, खुल्द आशियानी, लाहौर मेंटल अस्पताल, लाहौर।

× × ×

आप जदीद (आधुनिक) शाइरी सीखने की तमन्ना रखते हैं, तो मैं आपको एक ही महीने में इस फन में पूरी तरह माहिर बनाने का जिम्मा लेता हूं। टी हाउस पर किसी भी वक्त तशरीफ लाइये। मैं हर वक्त वहीं रहता हूं। होनहार शायरों से कोई मुआवजा नहीं लिया जाता। अलबत्ता चाय के बिल की अदायगी की उनसे उम्मीद की जाती है। पता–बेकार मुल्तानी मशहूर जहीद नज्मगो, (आधुनिक कविताकार) टी हाउस, लाहौर।

× × ×

एक कागज का थैला, जिसमें तीन केले, दो अमरूद और बच्चे की छल्ले थी, तारीख ५ मार्च को स्टेशन बिल्डिंग आते हुए बस नं०१९ था। जिन साहब को यह थैला अजराहे हमदर्दी और इनायत पर पहुंचा दें– मुसलेहउद्दीन नं०८ मलंग टाउन, चौबुर्जी के कचहरी से चौबुर्जी तक का बस का किराया अदा किया खाली थैला न लायें।

× × ×

ता० २८ फरवरी को अपने गाड़ी पर सवार कराने के बाद से घर आते हुए मेरी कार तब्दील है। इसका पता मुझे उस वक्त घर पहुंचकर मेरी नजर इत्तिफाक की नंबर प्लेट पर पड़ी। जिन साहब तब्दील हो गयी है, वे मुझसे मिलकर कार या उसकी नंबर प्लेट बदल वैसे मुझे उस कार के रखने में कोई नहीं है। एफ० ए० टेडी, गुलबर्ग,

× ×

एक तजुर्बेकार उस्ताद यानी जरूरत है, जो तीसरी जमात के तालिबे-इल्म को आइंदा साल मैट्रि दसवीं जमात का इम्तिहान दिला बरखुरदार रियाजी (गणित), उर्दू वगैरह में काफी कमजोर है। योग्यतानुसार दी जायेगी। रहने का इंतजाम मुफ्त होगा और बरस कामयाब हो जाने पर एक पगड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफेद लट्ठे का तहबंद टीचर को पेश किया जायेगा। विस्तर साथ लायें।—खान वल्लोच खान, तमनदार, वरशाव, कल्लात।

× × ×

अल्लाहरखा वल्द अहमददीन, रंग सियाह मुश्की, कद ठिगना, आधे सिर से गंजे, भूरी छोटी-छोटी मूंछें, एक हफ्ते से लापता हैं। उनके घरवालों को या तो सचमुच उनका पता नहीं या जानबूझ कर अनजान बने हुए हैं। जिन साहब को मिलें, किसी तरह पकड़-धकड़ के या वरगलाकर इस पते पर पहुंचा दें। लानेवाले को तीन रुपये नकद और आने-जाने का मुनासिब किराया पेश करूंगा। अल्लाहरखा साहब मेरे तीन हजार रुपये के कर्जदार हैं, इसीलिए भागे-भागे फिरते हैं—अहकरवेग पहलवान, मेवा मंडी, लाहौर।

× × ×

ऊंचे खानदान की दो वाइस्मत, खूबरू, शरीफ और फैशनेवल, तालीमयाफ्ता लड़कियों के लिए सी० एस० पी० अफसर या फर्म मैनेजर की हैसियत के रिश्ते दरकार हैं। सिर्फ वही लोग बातचीत शुरू करें, जिनकी अपनी मोटरकार हो और जो खानसामा रखने की हैसियत रखते हों। उन्हें बीवी के पीछे बच्चे को उठाकर चलने में कोई आर न होनी चाहिये। पहले ही खत में अपनी जायदाद, तनख्वाह और बैंक बैलेंस वगैरह के मुताल्लिक जरूरी बातें आनी चाहिये। उम्र की कोई कैद नहीं। बक्स नं. ३८, मार्फत रोजनामा, तोपोतुफंग, लाहौर।

× × ×

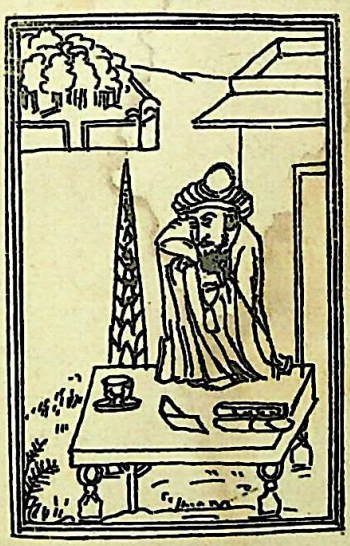

शाइरी का आलम

× × ×

हमें अपनी एटमी गोलियों की विक्री के लिए टूरिंग एजेंट्स की फौरन जरूरत है। पांच सौ रुपये जमानत लेकर फौरन इस पते पर पहुंचें—हकीम आफ्तावी, बूचड़खाने से ऊपर की मंजिल, जुनैद रोड, लाहौर। तीन बजे दोपहर के बाद तशरीफ लायें। इससे पहले मैं बूचड़खाने में मसरूफ रहता हूं।

× × ×

एक इंडस्ट्रियल स्कूल (महिलाओं के लिए) को चलाने के लिए सनदयाफ्ता, तजुर्बेकार टीचर की जरूरत है, जो सिलाई, कशीदाकारी, चूल्हे के काम वगैरह में पूरी महारत रखती हो। स्कूल के लिए जगह का इंतजाम, सिलाई की मशीनों, तेल के चूल्हों और फर्नीचर वगैरह हासिल करने की जिम्मेदारी टीचर की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगी। हम यह इश्तिहार अपने मुहल्ले के भले के लिए अपने पैसे से दे रहे हैं।

—एम० ए० चौधरी एंड कंपनी, टेलर्स एंड आउटफिटर्स, अफजल रोड, लाहौर।

× × ×

एक हट्टेकट्टे, फुर्तीले और समझबूझवाले महावत की जरूरत है, जो अपने काम में पूरी महारत रखता हो और हर किस्म के हाथियों को वश में कर सकता हो। हमारे पास हाथी मौजूद है। शरीफ हाथी है। अगरचे हफ्ते में एक बार उस पर दौरा पड़ता है और वह मस्त हो जाता है।

महावत को आठ घंटे हाथी की पीठ पर बैठकर हमारी कोठी के फाटक पर पहरा देना होगा। हम अपने मौरूसी वतन सितमाबाद में थे, तब भी हमारे बाप-दादा की पुरानी हवेली के बाहर हाथी झूला करते थे। हम यह रिवायत (परंपरा) कायम रखना चाहते हैं। और हाथी को काम में लाना चाहते हैं। तनख्वाह मामूल होगी। पता नवाब खानबहादुर फरजंद अली खानबहादुर आफ सितमाबाद स्टेट, ५७ जेड, गुलबर्ग।

× × ×

एक तजुर्बेकार मिस्त्री की खिदमात दरकार हैं, जो हर किस्म के ताले खोल सके और उनकी दूसरी चाबियां ढाल सके। नकब लगाने में भी थोड़ी बहुत समझबूझ रखता हो, कमीशन बहुत माकूल दिया जायेगा। पता कज्जाक (लुटेरा) ब्रदर्स, कूचा राहगीरां, माटीगेट, लाहौर।

मेरा रीछ भोलू नामी, जिसकी शक्ल सियाह, कान लंबे और कद खड़ा होने पर लगभग मेरे जितना है, कल रात रूठकर कहीं चला गया है। जिन साहब को मिले, इस पते पर इत्तिला करें या खुद नकेल पकड़ कर ले आयें। साईं खुश महम्मद वाजीगर, कूचा मेहराब पुरा, मिश्री शाह सामने मिशन साईं जी, लाहौर।

× × ×

हमें अपनी पहली फिल्म के लिए एक पढ़े-लिखे प्रोडयूसर-डाइरेक्टर की जरूरत है, जो दो-ढाई लाख रुपये का सरमाया लगा सके। कैमरा और सदावंदी (साउंड रिकार्डिंग) के काम से भी वाकफियत रखता हो। और अगर धुनें भी गा और बना सकता हो तो और भी बेहतर। फिल्म का स्क्रिप्ट मय गानों के तैयार रखा है। ए० जी० तस्वीर, सदाबहार पिक्चर्स, रावजी रोड, लाहौर (इमाम दीन जिल्द साज के ऊपर वाला कमरा।)

× × ×

सितारे सब कुछ बता देते हैं। मैं अपने नुजूम और रमल (ज्योतिष) के कारोबार से कुछ नागुजीर हालात के तहत रिटायर हो रहा हूं और उसे बेचने का इरादा रखता हूं। जिन साहबान को इस कारोबार से दिलचस्पी हो, मिलकर मामला तय करें। शफीक हेयर कटिंग सेलून के सामने फुटपाथ पर बैठने की जगह, बोरिया (चटाई) संदूकची और नुजूम व रमल के बेशकीमती नक्शे मुनासिब दामों में हासिल करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...मौका हाथ से न गंवाइये। मुहम्मद ...नुजूमी, शफीक हेयर कटिंग सेलून के ...लोहारी दरवाजे के बाहर, लाहौर।

× × ×

...से (खुशी के साथ) एलान किया ...है कि हमने सन १९७० ई० में ...को जानेवाले "भोंपू" नामी खलाई ...(अंतरिक्ष-यान) के लिए अभी से ...शुरू कर दी है। यह जहाज ठीक १ जनवरी १९७० ई० को ९ बजे लाहौर एयर पोर्ट से अपने सफर पर रवाना होगा। वापसी के बारे में अभी कुछ पता नहीं। सिंगल और रिटर्न टिकिट की लागत सिर्फ दो सौ और तीन सौ रुपये है। जो लोग दुनिया की जिंदगी से तंग आ चुके हों, उनके लिए यह बहुत अच्छा मौका है। बाबा एंड बाबा, ट्रैवलर्स, ८५२५ दि माल, लाहौर। —रूपांतर: मुगनी अब्बासी

एक डाक्टर, एक वकील और एक राजनीतिज्ञ तीनों बड़े दोस्त थे। एक बार इन ...में इस बात पर मत-भेद हो गया कि किसका धंधा सबसे पुराना है? डाक्टर ने ...आदम की हड्डी तोड़कर भगवान ने 'ईव'—नारी की सृष्टि की। उसी समय से ...चिकित्सा का प्रादुर्भाव हो गया है। अतः मैं यह कहूंगा कि हमारा ही पेशा सबसे ...है।"

"लेकिन मैं नहीं मानूंगा। जो रार-तकरार होती है, उसका फैसला करता है कानून! ...जब से पैदा हुआ तभी से झगड़े-फिसाद दुनिया में चलने लगे हैं। अतः मैं कहूंगा ...हमारा ही धंधा पुराना है!" — वकील ने अपनी दलील पेश की।

तब राजनीतिज्ञ ने टोककर कहा —"अजी, तुम दोनों व्यर्थ मगजपच्ची क्यों करते ...इन सारे झगड़े-फिसादों के मूल में हम राजनीतिज्ञों का ही हाथ रहा है। सच पूछो, ...आदम की कहानी भी हमारी ही गढ़ी हुई है!"

× × ×

लोकसभा के चुनाव में एक सुप्रसिद्ध नेता का प्रतिद्वंद्वी हुआ एक सामान्य व्यक्ति। ...उसके मुंह के सामने ही कहने लगे थे कि वह पागलपन कर रहा है। उसे जमानत की ...तक से भी हाथ धोना पड़ेगा।

उस व्यक्ति ने न तो कोई आपत्ति उठायी और न अपने पक्ष में मत इकट्ठा करने ...कोशिश ही की। इस बात का निश्चय-सा हो गया कि उसकी हार सुनिश्चित है। पर आश्चर्य! चुनाव का फल निकला, तो वह बहुमत से चुनाव जीत चुका था। ...रहस्य है पूछा गया तो उसने उत्तर दिया—"इसमें आश्चर्य करने की कौन-सी ...है? मुझे जाननेवालों ने—मेरे चरित्र से परिचित लोगों ने मुझे वोट नहीं दिया और ...जाननेवालों ने उन्हें वोट नहीं दिया। वोट की अदला-बदली इस प्रकार हुई कि मैं ...गया।"

—रा० वीलिनाथन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत्यु के समय मृत्यु के बाद

डा० दामोदरन

आधुनिक शरीरविज्ञान मृत्यु का दो चरणों में वर्णन करता है। पहला है मृत्यु-वेदना। मृत्यु वेदना का अर्थ कोई शारीरिक कष्ट नहीं, अपितु शरीर के विभिन्न अंगों का बार-बार अपनी क्रियाओं को जारी रखने का अंतिम प्रयास करना है। मृत्यु का दूसरा चरण है, हृदय की गति तथा श्वास-क्रिया का बंद होना। सामान्य लोग प्रायः दूसरे चरण को भली भांति समझते हैं और मुंह और नाक के सामने कांच रखकर अथवा नथुनों में रुई रखकर श्वासक्रिया के बंद होने की परीक्षा करते हैं। पर यह तरीका विश्वासप्रद नहीं है। आजकल पूर्ण मृत्यु का पता लगाने के लिए त्वचा में यूरेनाइन का इंजेक्शन दिया जाता है। यदि मनुष्य की मत्यु नहीं हुई है, तो त्वचा का रंग पीला-हरा हो जाता है। मृत्यु हो जाने पर त्वचा पर कोई रंग नहीं आता; क्योंकि मुर्दे के शरीर में रक्तसंचार नहीं होता।

मृत्यु के पश्चात शरीर में कई भौतिक और रासायनिक परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन उस समय तक जारी रहते हैं, जब तक कि सारा शरीर धूल नहीं बन जाता। सबसे पहले शरीर ठंडा होता है, फिर खून त्वचा में जमने लगता है; स्नायु पहले ढीले हो जाते हैं, फिर कड़े होकर पुनः ढीले हो जाते हैं। रक्त के रासायनिक रूप में भी परिवर्तन जारी रहता है।

इन सभी परिवर्तनों के जारी रहते भी यदि हम किसी शव को देखें, तो हमें वह किसी सोते हुए व्यक्ति के समान ही लगेगा। कभी-कभी तो सोते हुए व्यक्तियों के चेहरे शवों के चेहरों से अधिक विकृत दिखाई देते हैं। शवों के विकृत चेहरों को आम लोग मृत्यु-वेदना का परिचायक मानते हैं; किंतु मृत्यु के समय मनुष्य को कोई वेदना नहीं होती। यथार्थ में चेहरे की विकृति वेदना की परिचायक नहीं है। वह तो केवल सोये हुए व्यक्ति के चेहरे की विकृति के समान ही उस अनंत निद्रा की परिचायक है, जिसमें मनुष्य कभी नहीं जागता।

उपर्युक्त सत्य की पुष्टि बहुप्रचलित कहावत "सोनेवाला मुर्दे के समान होता है" से होती है। इसी प्रकार मृत्यु के पश्चात होनेवाले भौतिक और रासायनिक परिवर्तनों का ज्ञान होने के कारण ही प्राचीन काल में जब कभी किसी शव को मृत्यु के बाद कुछ दिनों तक रखने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यकता पड़ी, तो उसे लेप द्वारा सुर-
क्षित रखा गया, जिससे इन परिवर्तनों की
परीक्षा की जा सके। भारतीयों को राजा
रामचन्द्र के शव को लेपों तथा रसायनों द्वारा
(उनके अयोध्या आने तक) सुरक्षित रखे
जाने की बात मालूम है।

आज का विज्ञान जीवन के अध्ययन के
साथ ही मृत्यु का रहस्य जानने का प्रयास
कर रहा है। अब हम बड़ी सरलता से किसी
व्यक्ति की मृत्यु का समय बता सकते
हैं। इसके लिए आजकल दो विधियां
सर्वाधिक प्रचलित हैं। एक है, 'संघविधि'
और दूसरी है 'गतिविधि'।

संघविधि या एसोसिएशन विधि में
मृत द्वारा खाये गये भोज्य पदार्थों की
संख्या तथा उसके शरीर पर उपस्थित
अन्य वस्तुओं की सहायता से मृत्यु-समय
निश्चित किया जाता है।

'गतिविधि' या रेट-विधि संघविधि से
अधिक विश्वासप्रद है। 'मृत्यु के बाद मानव
शरीर का तापमान एक निश्चित गति से
गिरता है'– इस सिद्धांत पर यह विधि
आधारित है। दुनिया के प्रायः सभी मेडि-
कल एसोसिएशन इस बात पर सहमत हैं कि
मृत्यु के बाद शरीर का तापमान मानव के
सामान्य तापमान ९८.४° फारन हाइट से
१.५° फारनहाइट प्रतिघंटे की गति से कम
होता है। मृत्यु का समय निकालने के लिए
शव का आंतरिक तापमान (मुंह का ताप-
मान) निकालकर उसे ९८.५ फा० में से
घटा दिया जाता है। इससे प्राप्त संख्या में
१.५ का भाग देने पर प्राप्त संख्या मृत्यु
होने के बाद का समय बताती है।

इस विधि में भी कई अन्य बातों का ध्यान
रखना पड़ता है। उदाहरणार्थ, शव कपड़ों
से ढका है या खुला ? शव कहां से प्राप्त हुआ
है ? शव मोटा है या पतला, आदि।

साधारण लोगों की भांति वैज्ञानिक
मृत्यु को कभी आकस्मिक नहीं मानते।
यहां तक कि हार्टफेल अथवा आपरेशन
के समय सदमे से हुई मृत्यु को भी वे साधा-
रण मृत्यु ही मानते हैं। उनके अनुसार इस
आकस्मिक मृत्यु में भी हृदय-गति बंद होने
के बाद मनुष्य तीन-चार गहरी सांसें लेता
है। इतना ही नहीं, कुछ हालतों में तो अंतिम
सांस के बाद भी मस्तिष्क पांच-छः मिनिट
अथवा कुछ अधिक समय तक काम करता
रहता है।

मृत्युदूत

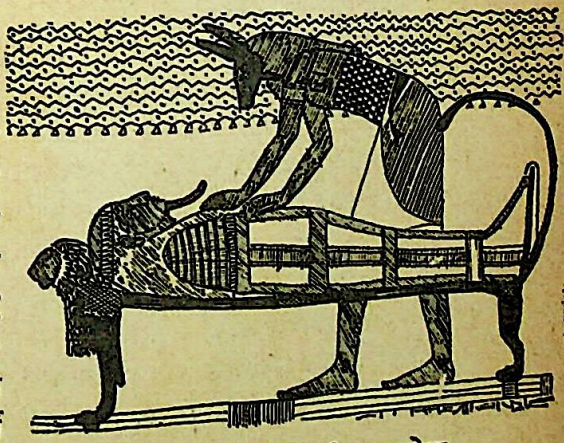

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क आक्सिजन से शक्कर को जला कर ऊर्जा प्राप्त करता है। हृदय की गति बंद होते ही मस्तिष्क को आक्सिजन मिलना बंद हो जाता है। इस संकटकाल में मस्तिष्क शक्कर को जलाने के बजाय, उसे तोड़कर उससे आक्सिजन प्राप्तकर काम चलाता है। इस व्यवस्था से मस्तिष्क लगभग छः मिनिट तक अपना काम चला लेता है। इस बीच यदि किसी क्रिया द्वारा हृदय-गति पुनः आरंभ हो जाये, तो मस्तिष्क आधा घंटे में पुनः अपना काम साधारण रूप में करने लगता है।

विदेशों में हृदय की गति को पुनः आरंभ करने के लिए 'लिवोफेड' नाम की दवा का प्रयोग किया जाता है। २५ वर्ष के एक युवक को, जिसकी हृदय की गति बंद हुए चार मिनिट हो गये थे, जब इस औषध का इंजेक्शन हृदय में दिया गया, तो उसकी गति फौरन आरंभ हो गयी। केवल दो माह बाद वह युवक ट्रक चलाने जैसा झटकेदार काम भी सुचारु रूप से करने लगा। अन्य आपरेशनों के दौरान भी हृदय-गति बंद हो जाने पर यदि लिवोफेड का इंजेक्शन दिया जाये, तो हृदय-गति तुरंत आरंभ हो जाती है। हृदय-गति के आरंभ होते ही दिमाग को खून से आक्सिजन मिलना शुरू हो जाता है; किंतु इसमें एक खतरा भी है। दिमाग को आक्सिजन अधिक मात्रा में मिलने से भी दिमाग की मृत्यु हो सकती है अर्थात् हृदय-गति बंद होने के समान उसकी गति भी बंद हो सकती है। इसलिए लिवोफेड अथवा अन्य तरीकों का इस्तेमाल करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि मस्तिष्क को बहुत अधिक आक्सिजन न मिले।

भारतीय मत के अनुसार मनुष्य को मृत्यु के पूर्व अपने सभी कर्म याद आते हैं। उसकी सारी शक्तियां थक जाती हैं; किंतु दृष्टि और श्रवण-शक्तियां प्रायः बनी रहती हैं। इसीलिए मरणासन्न व्यक्ति के कान में "तुझे सद्गति मिलेगी, भगवान का स्मरण करो" अथवा "अमुक मंत्र जपो" कह देने की परंपरा आज भी कायम है।

इसी प्रकार यह आत्मविश्वास है कि मरण के पूर्व मनुष्य को प्रकाश या यमदूतों के दर्शन होते हैं, उन्हें मंदिरों की घंटियां सुनाई देती हैं और फिर उन्हें अंधकार में यात्रा करनी पड़ती है।

आधुनिक वैज्ञानिकों की खोज के परिणाम भी इससे मिलते-जुलते हैं। जैसे-जैसे हृदय-गति मंद होती है, वैसे उन्हें काल्पनिक घंटियों की आवाज सुनाई देती है, उन्हें कभी-कभी बिजली की चमक भी दिखाई देती है और अंत में वे मृत्यु के अनंत शयन के अंधकार में खो जाते हैं। यह अंधकार सोते समय के अंधकार के समान ही होता है। विज्ञान की इस खोज की सत्यता १८ वीं सदी के प्रसिद्ध शरीरशास्त्री विलियम हंटर के अंतिम वाक्य से सिद्ध होती है। अंतिम सांस लेते समय विलियम हंटर ने कहा था- "यदि मुझमें कलम उठाकर लिखने की शक्ति होती, तो मैं लिखता- 'मरना कितना सरल और शांतिपूर्ण है'।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत्यु से यद्यपि सभी डरते हैं; किंतु प्रत्येक प्राणी प्राकृतिक रूप से उसे गले लगाने को सदैव तैयार रहता है। वृद्ध लोग बिना चाहे ही मर जाते हैं। रोगियों को मृत्यु उनके सारे कष्टों से छुटकारा दे देती है। कुछ तो इन दोनों से भी अधिक शांति से मृत्यु का आलिंगन करते हैं।

अनेक भारतीय ग्रंथों में ऐसी अनेक कथाएं हैं, जिनमें मृत मनुष्य पुनः जिंदा हो गए और उन्होंने अपनी मरण अवस्था का वर्णन किया; किंतु उनकी प्रामाणिकता का कोई प्रमाण नहीं है। आज भी संसार में कई बार मरे हुए लोग जी उठते हैं। कुछ समय पूर्व भोपाल राज्य के एक राजकुमार का मरकर जी उठना संभवतः बहुत-से पाठकों को याद होगा। किंतु हमारे युग में संसार-भर में हलचल मचा देनेवाली घटना थी रूसी वैज्ञानिक लेव देवीदोविक लेंडो की, जो सोवियत वैज्ञानिकों के प्रयासों के कारण चार बार मरकर पुनः चार बार जी उठे और अब भी साधारण जीवन बिता रहे हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक यदि श्री लेंडो जैसे व्यक्तियों का गहन अध्ययन करें, तो शायद मृत्यु विज्ञान के कई और रहस्य खुलें।

★

मेरे साथी !

तू बाज़े साइदे शाही ब' अउस्तुखाँ म' नगर
हुमा-इ हिम्मते खुदरा बुलन्द रह परवाज़

—अखलाक महसीनी

तू शाही कलाई पर बैठनेवाला बाज़ है, हड्डियों की ओर न देख ! तू हुआ[1] है, अपनी हिम्मत को ऊंची उड़ानों पर ले जा।

तू हमा तस अवर अन निह कि बर अन निस्त उम्मीदत
कि ज़ नाउम्मीदी-इ-अव्वल तू बादिन सू ए रसीदी

—दीवान-ए--शम्सं-इ-तबरीज़

तू अपनी पूरी कामना वहां लगा दे, जहां तुझे उम्मीद न हो। आखिर तू अपनी इस नाउम्मीदी से चलकर उम्मीद के आधे रास्ते तक तो पहुंच ही गया है।

तू पाक बाश व मदार, ए बिरादर अज़ कस बाक
जनन्द जामए नापाक गाज़राँ बर संग'

—गुलिस्तान

मेरे साथी, तू पवित्र है तो किसी से न डर। मैले कपड़ों को ही धोबी पत्थर पर पटकते हैं।

---

[1] एक पक्षी, जो जिसके सिर पर बैठता है, उसे बादशाह बना देता है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी कहानी :

चांद का निवासी

कुसुम अगस्त

दीदी,

तुम्हें तो मालूम ही है कि किसी को पत्र लिखते समय मेरी जान पर आ बनती है। पर कुछ बहुत जरूरी बात कहनी है तुमसे। हालांकि तुम मेरी रग-रग से परिचित ही हो, मगर फिर भी, बड़े संकोच से कलम उठायी है मैंने।

तुम्हें तो मालूम ही है मेरा हाल। किसी ने जरा-सी ऊंची आवाज में कुछ कह दिया और मेरी सिसकियां बंध गयीं। किसी ने मजाक में भी आरोप लगाया और मैंने स्वयं को अपराधी मान लिया। कोई भूल हो जाती है, तो किस कदर कांप उठती हूं मैं। तुम तो मेरे भीरु स्वभाव को अच्छी तरह जानती ही हो।

पर इन सब बातों से परे, मेरा जो अस्तित्व है, वह सिर्फ तुम्हारे ही कारण। अगर तुम मेरी पथ-प्रदर्शिका न होतीं, तो मैं, मैं न होती। तुमने बी० ए० करने के लिए कई कठिनाइयों का सामना किया और मैं; मैं तो तुम्हारी बनायी हुई राह पर चली आयी यहां तक। मुझे नृत्य का चाव था। तुम्हारे प्रयत्नों से ही दो वर्ष में मैं प्रांत की श्रेष्ठ नृत्यांगनाओं में गिनी जाने लगी। मुझे चित्रकला का शौक था, तुमने 'दिनकर आर्ट क्लासेस' में मेरा नाम लिखा दिया। मैं यदा-कदा गुनगुनाया करती थी, तुमने मेरी इस गुनगुनाहट को स्पष्ट और मधुर स्वर देने के लिए मुझे 'ज्योति संगीत विद्यालय' में पहुंचा दिया। तुम कहा करती थीं "जो कुछ मैं नहीं कर सकी, तुझे वह करने से रोककर मैं स्वयं अपनी तमन्नाओं को कुचल दूंगी।" है न। ओ दीदी, अनाशनाप तो बहुत कुछ लिख मारती हूं; लेकिन पत्र लिखना जरा मुश्किल ही है मेरे लिए। देखो न, मेरा अनाड़ीपन किस तरह इन शब्दों में उतर आया है। तुम जरूर सोच रही होगी कि यह नालायक पत्र लिख रही है या पन्ने रंग रही है! पर दीदी, क्या करूं? चित्र रंगने को देती, सुंदर से-सुंदर रंग भरकर दिखलाती; गीत लिखकर गाने को कहतीं, ऐसे मधुर शब्द पिरोती छंद में और ऐसे स्वर में गाती कि वे स्वर हर सुननेवाले की अंतरात्मा को छू लेते। मजबूरी यही है कि मेरे हाथ में कलम है और कहानी नहीं, पत्र लिखना है।

कहोगी, कैसी प्रगल्भ है! क्या बताऊं कलम कितनी असमर्थ है मेरी कि उन शब्दों को आकार ही नहीं दे पा रही है, जो मेरे मनोभावों को ज्यों-का-त्यों प्रकट कर दें। दीदी, तुम अंदाज भी न लगा सकोगी कि खास बात लिखने में मुझे कितनी परेशानी महसूस हो रही है। जरा कल्पना तो करो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे जबानी कहना पड़ जाये, तब तो शायद पानी-पानी होकर ही वह जाऊं देखो तो, पसीना भी आ गया ..... छूट रही है जैसे ।

और लिखूं भी क्या ? बस, ख्वामख्वाह हो गया है कि अगर कोई मुझे समझ ता, तो केवल तुम्हीं । अम्मा से कैसे कहूं ? अभी तक दूध-पीती बच्ची समझती हैं । अगर कभी कोई समझदारी की बात बैठती हूं, तो वे शो-केस में रखे मेरे गुड़ियों की कतार दिखा देती हैं । लेकिन बारे में बहुत ही अच्छा खयाल है । तुम उनकी समझदार, अनुभवी, संपन्न बेटी हो । मैं बाईस वर्ष की हूं; पर बारह वर्षीया बालिका की संकोची भावनाएं अभी तक मेरे ओर मंडराती हैं । यों तो एम० ए० रही हूं; पर पता नहीं सब क्यों आश्चर्य है इस बात पर ! मेरी हमउम्र लड़-में जो गांभीर्य होना चाहिये, वह तो कोसों दूर है । अल्हड़ उन्मादी नदी तरह अपनी ही तरंगों में खोयी रहती । जीवन के किसी भी पहलू पर गहराई नहीं सोचा ... लेकिन दीदी, अब कभी महसूस होता है कि मैं कहीं किसी केंद्र के गुरुत्वाकर्षण से आकृष्ट कहीं में ही उलझ कर रह गयी हूं—वह केंद्र है, कहां है, और मैं क्यों प्रभावित हूं यह सब मुझे नहीं मालूम । जिससे भी की, वह अपना-सा लगा । अपने इस से अब किसी खतरे की बू आने लगी है ... सब मेरी ओर अजीब-सी दृष्टि से देखते हैं । वह दृष्टि बहुत खटकती है, चुभती है कहीं... और मैं झुंझला पड़ती हूं तब ।

मेरी सहेलियां मेरे जीते हुए पुरस्कार देखती हैं, तो हैरत से कह बैठती हैं—"पता नहीं, किस आभा ने ये जीते होंगे; तुम तो ऐसी नहीं लगती ।" कैसे झूठे हैं सबके-सब ! पर मैं तो जानती हूं, उन्हें पाने के लिए मैंने कितनी मेहनत की है । मेरी अलमारी पुरस्कारों से भर गयी है अब । कभी-कभी तो मुझे खुद भी आश्चर्य होता है कि यह सब मैंने जीते ? मुझे लगता है, मैं अब ऐसी संज्ञा मात्र रह गयी हूं, जो भावों से परिपूर्ण है, कर्महीन क्रिया है, जिसका अस्तित्व तो है, किंतु ध्येयहीन ।

तुम खुद ही देख लो, कैसा विरोधाभास है मेरे स्वभाव और कृत्यों में । सच कहो, ऊब गयी हो न तुम ? हां, मुझे मालूम है मेरा मन रखने के लिए कह दोगी कि नहीं ऊबी हूं । ऐसा अक्सर कई लोग करते हैं । खैर छोड़ो, मुझे किसी से क्या लेना-देना है । दीदी, तुमने मेरी आदतें बुरी तरह बिगाड़ दी हैं । मुझे जिन नजाकतों से रहने की आदत पड़ गयी है, वह सब तुम्हारी करनी का फल है । तुम्हारे कहने पर पिताजी और अम्मा ने भी मुझे सिर चढ़ा रखा है । मैं तो तुम्हें ही दोष दूंगी, तुम्हारी वजह से ही मैं मात्र नाजुक पुतली बनकर रह गयी हूं ।

इन सब बातों के विपरीत मैं अपने आप को पूरा एहसास दिलाने के लिए कि मैं मात्र नजाकतों का ही घर नहीं हूं, बाग में खुद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुदाल आदि से काम करती हूं। इस साल बगीचा मेरी मेहनत से हरा-भरा है। पर बाग में काम करने के बाद हाथों में पड़े छाले देखती हूं, तो मुझे किसान की बेटी होने की इच्छा होती है। मैं रसोई में भी खूब काम करती हूं। पिताजी तो कहते हैं कि अम्मा के बाद अगर कोई स्वादिष्ट भोजन बनाता है, तो वह आभा। जिस दिन नौकर छुट्टी पर होता है, बर्तन मांजना, कपड़े धोना, घर की सफाई, यह सब काम मैं खुद करती हूं। यह तो अम्मा को भी पसंद है कि मैं अपने कपड़े खुद सीती हूं और बुनने-काढ़ने में भी बड़ा आनंद आता है मुझे।

दीदी, माफ करना, यह अपने मुंह मियां-मिट्ठू में किसी खास उद्देश्य से बनी हूं। पढ़ाई अब लगभग पूरी हो चुकी है। शायद अब और अधिक पढ़ने की इजाजत अम्मा न दें। इसका कारण अब तक उनके खत से मालूम हो ही चुका होगा तुम्हें।

पिछले तीन साल से सुनती आ रही हूं कि मेरे विवाह की बात चल रही है। मैं इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ तो नहीं हूं; पर मुझे पूरी तरह कुछ पता भी नहीं है। थोड़ा बहुत कभी - कभी बताया भी गया और बहुत कुछ छिपाया भी गया। न जाने क्यों शादी के नाम से घबराहट होने लगती है मुझे। कैसी बेतुकी-सी बात है यह विवाह का प्रश्न भी! लेकिन दीदी, यह मनोदशा एकाएक बिलकुल बदल गयी। तुम्हीं जिम्मेदार हो इसके लिए भी। तुम्हारा पिछला पत्र मिला था। तुमने लिखा था कि आभा के रूप-गुण के अनुरूप हमें लड़का देखना होगा। कितना सही लिखा था तुमने—"वह सुकुमार है, तन से ही नहीं, मन से भी। वह अपनी मासूम-सी जिंदगी में कहीं कोई चोट न खाये, इसके लिए हमें पूरी सावधानी बरतनी होगी। यह सच है कि कोई उसके लिए चांद से उतरकर नहीं आयेगा...।" दीदी, कैसी निष्ठुर हो तुम! यह बात कहां बड़ी कोमल जगह पर चुभ गयी है... कसक रहा है कहीं कुछ। क्या बताऊं तुम्हें मैं, और कहूं भी कैसे?

दीदी, सबसे स्नेह पाया है, आदर भी मिला है मुझे। दुःख इसी बात का है कि अब तक कोई ऐसा मन का मीत नहीं मिला, जिसे मैं सहज रूप से मित्र मान सकूं। मित्र अर्थात् वह साथी, जिसे मन खोलकर दिखा सकूं, सारे अवगुंठन खोल दूं अपने और उसके बीच के। मेरा अपनापन अब तक मुझ ही में सीमित है। एक लक्ष्मण-रेखा अपने अनजाने में मैंने खींच ली है अपने चारों ओर, जिसके भीतर मैं स्वयं को सुरक्षित पाती हूं और स्वतंत्र भी। सुरक्षित इसलिए कि अब तक पूर्णतः मैं अपने आप में मशगूल हूं और स्वतंत्र इसलिए कि कोई अलौकिक बंधन और भौतिक चाह मुझे नहीं बींध पायी है। दीदी, अब मैं गंभीर हो गयी हूं। तनिक ध्यान दो मेरी ओर। क्या कोई ऐसा पुरुष इस धरती पर नहीं है, जो मेरी इन कोमल भावनाओं को समझे? पुरुष इसलिए कहा कि अब यही संज्ञा आधार बनने को है।

बाग में नारियल के ऊंचे प्रपुष्ट तने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...हुई 'मनी प्लाट' की बेल को देखकर ...कभी मुझे ऐसा लगता है कि हर लता ...किसी वृक्ष का सहारा अपेक्षणीय है ...कदाचित् प्राप्य भी है। मनी प्लांट के ...चिकने, बेहद कोमल किंतु स्वस्थ ...चौड़े पत्ते बड़ी ही सहजता से पेड़ के ...पर बल खाते हुए फैले हैं, जैसे उनका ...उस तने के कारण ही है। क्या ऐसा ...हो सकता दीदी कि किसी की कोमल, ...भावनाओं को भी कोई मजबूत ...मिल जाये ?

...कोई राजकुमार चांद ...उतरा हो; लेकिन ...यह जरूरी है कि ...का चांद से उतरकर ...पर आना ही उसके ...का निवासी होने का ...हो? धरती पर क्या ...नहीं, जिनमें हम चांद ...निवासी होने की कल्पना ...जीता-जागता स्वरूप ...सकें? मैं चांद पर रहने के बेमतलब ...तो नहीं देखती; लेकिन चांद के इर्द-...छायी चांदनी-जैसे शीतल मधुर-मृदुल ...के स्वरूप का पूरा रूप तो संवा-...ही हूं।

...की पत्रिका में एक गीत लिखा ...अपने बनाये हुए भाव-चित्र के साथ। ...गीत का नायक एक दिन अनायास ही ...आ गया। वह चांद का निवासी ...है दीदी, वह धरती का जीता-जागता बेटा है— हमारी-तुम्हारी तरह। तुम कहती हो कि आभा के लिए कोई चांद से उतरकर नहीं आयेगा; लेकिन दीदी तुम्हारे कथन का भाव जरूर उसमें हूबहू उतर आया है।

प्रत्येक पक्षी नीड़ बनाता है। हर लहर किनारा चूमना चाहती है। हर भावना किसी आधार पर ही जागती है। दीदी, ऐसा लगता है, एक बेरोकटोक बहती हुई नदी सहसा किसी प्रशांत, किसी असीम, किसी अतुल सिंधु में समा गयी है। अपने अन-जान में मैंने किसी अलभ्य की सतत खोज की है ... लेकिन, वह सहज सुलभ हो सकती है, इसका किंचित अनुमान भी न था मुझे। मैं गहराइयों में कभी नहीं उतरी हूं। कोई स्थिति ऐसी आयी ही नहीं। दीदी, अब तक यही सोचती आयी थी कि फूल पर मंडरानेवाला भौंरा सिर्फ गंध और पराग का अनुरागी होता है; पर अब कुछ ऐसा अनुभव मिला कि कोई भौंरा ऐसा भी हो सकता है, जो संभलकर चुपचाप फूल की ताजगी देखता है, महक का आभास पाता है, पंखुड़ियों की कोमलता को परखता है और मंद-मंद गुंजार करता हुआ कहता है— फूल, जब भी तुझे विहंसते, महकते देखूंगा, तो तेरे इस सुख-सौरभ से सुखी मैं भी संतृप्त होऊंगा।

लो, कहां खो गयी मैं! मैं जानती हूं, वह

स्वप्निल कौमार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि नहीं है। बांसुरी बजाता है कभी-कभी। कैसी बजाता है ? ..... लगता है, स्वर उसके अंतर्मन से उठते हैं और श्रोता के अतल को छू लेते हैं। उसकी बांसुरी सुनकर एक दिन मेरी आंखें भर आयी थीं। वह अपराधी की-सी कातर दृष्टि से देखकर बोला था—" अब आपके सामने कभी नहीं बजाऊंगा बांसुरी।" पर ऐसा उसने क्यों कहा भला ?

हम दोनों ने कई बार 'वाल मैगजिन' एडिट की है। साथ-साथ कालेज के कई समारोहों का आयोजन किया है। मैं विद्यार्थियों की प्रतिनिधि हूं और वह हमारी एसोसिएशन का अध्यक्ष। वह समाजशास्त्र का प्राध्यापक है। मैंने उसका लेक्चर तो स्वयं पालिटिक्स में होने से नहीं सुना, वहां अध्यक्ष पद से बोले गये उसके भाषण सुने हैं। उसके निकट रहकर उसका शिष्ट व्यवहार देखा है, उसका स्वभाव जाना - परखा है मेरा। दीदी वह अपनी शर्ट पर खुद बटन टांकता है, खुद जूतों पर पालिश करता है, खुद कपड़े धोता है। बड़ी साधारण बातें हैं ये; पर उसके व्यक्तित्व में मिलकर असाधारण प्रतीत होती हैं। उसकी छोटी बहन ने इसी साल कालेज ज्वाइन किया है—व्यवहार में अपने भाई की ही प्रतिच्छाया है, जो निरंतर मेरे साथ लगी रहती है। एक दिन दीदी, कुछ लड़कियों ने मजाक-मजाक में कहा था कि प्रोफेसर श्री कुमार आभा के प्रसंशकों में पहले हैं। छिः ! कैसी घिनौनी है उनकी विनोद-भावना ! उन्होंने अपना छोटापन तो दिखाया ही, साथ ही सच्चरित्रता का भी मजाक उड़ा दिया। खैर, मैंने भी मन को समझा लिया कि दूध का धुला चरित्र देखने के लिए दूध की धुली दृष्टि भी तो चाहिये।

दीदी, सबसे बढ़कर उसकी वह ठंडी-ठंडी आवाज है, जिसे सुनकर हर संतप्त आत्मा सुख पाये। उसके व्यवहार से कभी ऐसा लक्षित नहीं हुआ कि वह मुझे एक छात्रा के अतिरिक्त कुछ और समझता हो। नहीं, बिलकुल स्वच्छ है उसकी दृष्टि, एकदम स्पष्ट और निश्छल व्यवहार। भावों में इतनी स्थिरता है कि जब मैं सामने जाती हूं, तो मुझे उस पहाड़ी नदी की याद आ जाती है, जो उफनती हुई, छहराती हुई पहाड़ों से उतरती है और फिर एकाएक धीर-गंभीर समुद्र में मिलकर अस्तित्व खो देती है। जब-जब भी मैं उसके सामने जाती हूं, मुझे अपने चंचल स्वभाव के प्रति सचेत रहना पड़ता है।

कैसी सुडौल स्वस्थ देहयष्टि है उसकी। खिलता हुआ रंग, चमकती हुई आंखें, उन्नत ललाट, अंग-प्रत्यंग की सुघड़ता और सहज व्यवहार उसके निराले व्यक्तित्व को दुगुना निखारते हैं। उसका व्यवहार सहज आदत नहीं है, बल्कि वह तो उसके स्वभाव की, संस्कारों की सहज संभाव्य उपलब्धि है। हो सकता है, यह तुम्हें अतिशयोक्ति लगे, पर दीदी, मुझे कुछ-कुछ ऐसा विश्वास हो चला है कि वह इस धरती का प्राणी नहीं है या फिर मैं ही किसी दूसरे लोक की कल्पना में भटक गयी हूं।

मार्च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीदी, तुम झूठ कहती हो कि चांद का [illegible] इस धरती पर नहीं आ सकता। [illegible] व्यवहार में निश्चय ही कुछ अन्यत्र [illegible] है। जब वह अपनी पूरी खुली आंखों [illegible] देखता है, तो लगता है संसार-भर की [illegible] पावनता, निश्छलता और सात्विकता [illegible] स्वच्छ-विमल दृष्टि में समायी हो। [illegible] यह कि कल प्रिंसिपल साहब ने मुझे [illegible] था। कहने लगे—"तुम्हारे पिताजी [illegible] थोड़ा अवकाश मिल सकेगा?"

"जी हां, आजकल घर पर ही हैं।"

"मैं कल उनसे मिलना चाहता हूं। कुछ [illegible] काम है। तुम बैठो, मैं अभी पत्र लिखे [illegible] हूं।"

दीदी, मैं बैठ तो गयी, पर मेरा दिल [illegible] लगा। बड़ी चुभती निगाह से देख- [illegible] था उन्होंने कि कुछ खास काम है। [illegible] याद करके एकाएक नखशिख सिहर [illegible]-किसी ने मेरे खिलाफ कोई शिकायत [illegible] नहीं कर दी। जरूर कुछ बात है। मैं [illegible] हो उठी। वे तो परिवार के सदस्य [illegible]-ऐसी कौन-सी बात थी कि वे मुझसे [illegible] न कहकर पिताजी को लिखकर दे [illegible]। तभी श्री कुमार भी वहां आ गये। [illegible] देखकर वे ठिठके। प्रिंसिपल साहब से [illegible] निगाहें चार हुईं, वे आरक्त हो उठे [illegible] लौटने लगे। लेकिन प्रिंसिपल साहब ने [illegible] लिया। वे चुपचाप खिड़की से बाहर [illegible] हुए बैठ गये। कुछ देर बाद पूछा—[illegible] आभा, पढ़ाई कैसी चल रही है?"

मैं हकलाकर ही रह गयी—"जी, जी ठीक है।" साथ ही मैं खड़ी भी हो गयी। भगवान जाने क्यों? मेरी इस घबराहट पर प्रिंसिपल साहब ठहाका मारकर हंस पड़े। मैं हैरत में पड़ गयी। क्या उन्हें अपने पद की मर्यादा का एक छात्रा और प्रोफेसर के सामने मान नहीं है। लिफाफा बंद करके मुझे देते हुए उन्होंने मुस्कुराकर कहा—"याद करके दे देना आज ही, कहीं खो मत देना.....।" उनकी दृष्टि उस वक्त श्री कुमार के सौम्य चेहरे पर टिकी थी, और वह प्रियदर्शी सिमटकर बैठा हुआ था।

मैं कुछ ढंग से उत्तर देना चाहती थी; पर मुंह से निकला—"मैं.....मैं लापरवाह नहीं हूं सर।" मैं लड़खड़ाती-सी कैबिन से बाहर आ गयी। बड़ा आश्चर्य हुआ अपनी ऐसी हालत पर।

दीदी, शाम को पिताजी ने पत्र पढ़ा। वे भी मेरी ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखकर मुस्करा दिये। मैं परेशान हो गयी। अगले दिन वे कालेज गये और आज सुबह अम्मा ने बताया कि श्री कुमार ने प्रिंसिपल साहब के द्वारा विवाह का प्रस्ताव रखा था। एकाएक मुझे अपने चारों ओर सब कुछ बदला-बदला-सा लगा। अम्मा की स्नेहसिक्त दृष्टि में भी मुझे अपने तिरस्कार की झलक दिखी। हाय, श्री कुमार तो ऐसे न थे। यह क्या किया उन्होंने? लेकिन दीदी, सच मानो, जैसे-जैसे मैंने इस बात पर गौर किया, मैंने पाया कि मुझे वह मिल गया है, जिसकी मैंने अपने अनजाने में खोज की है। "सब क्या कहेंगे?" यह बात बवंडर की तरह उठी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर तुरंत शांत भी हो गयी।

दीदी, पिताजी कहते हैं, होनहार तो है; पर आप कुछ भी नहीं। उसका अपना मकान नहीं है, कार की बात तो 'लग्जरी' है उसके लिए। वे तो किसी रईसजादे की खोज में हैं। श्री कुमार की एक बहन भी है, उसकी पढ़ाई है उनके सामने। फिर उसका विवाह भी करना होगा। सिर पर पिता का साया नहीं है। अपने पांव पर खड़े रहकर अध्ययन पूरा किया है और अब पी-एच० डी० कर रहे हैं। अम्मा और पिताजी को बड़ा भारी संकोच है। तुमने कहा था न कि तुम अम्मा के लिए सब कुछ करोगी। दीदी, अम्मा और पिताजी अमीर घर देखना चाहते हैं, जो मेरी ख्वाहिश हरगिज नहीं है। उसके पास तो बस सादगी, संतोष, सच्चरित्रता और ज्ञान की दौलत है। पिताजी प्रिंसिपल साहब से कहकर आये हैं कि सोचकर जवाब देंगे। वे कहीं इन्कार न कर दें। बार-बार वे यही कहते हैं कि शानो-शौकत और ऐशो-आराम में पली आभा कैसे उस जीवन की अभ्यस्त हो सकेगी? काश कि पिताजी अपनी आभा की मनोदशा समझ पाते! उसकी आंखों में हर घड़ी तैरते स्वप्न को देख पाते, जो उसने अपने जीवन के लिए संजोया है। दीदी, खुद को खरा कुंदन बनाने की लालसा उसी पारस को देखकर घर कर गयी है मन में। सच-सच बताना, क्या मैं उसके काबिल नहीं हूं? और, अगर मेरे जी की सुनो, तो मैं स्वयं को बहुत क्षुद्र पा रही हूं।.....बिलकुल नगण्य।

अब एक भूकंप-सा मेरे आसपास हो रहा है, मैं असंतुलित हो गयी हूं। मन कांप-कांप जाता है। वह तो चांद के निवासी की तरह सुकुमार है। और मैं धरती पर पली कहीं बहुत कठोर न हो जाऊं? न जाने क्या होने को है? विचारों का यह दोतरफा सैलाब, यह तीव्र झंझावात मुझे झिंझोड़ रहा है। पिताजी तो बिलकुल व्यापारिक दृष्टिकोण से देखेंगे इस पूरे व्यापार को। और अम्मा? वे इतनी अधिक सांसारिक हैं कि मेरी कल्पनाओं के अछोर विस्तार को आंक ही नहीं पायेंगी। बस, अब तुम्हीं मुझे समझ सकती हो, संबल दे सकती हो। तुम चाहोगी, तो तुम्हारी यह आभा तुम्हारी कल्पनाओं के अनुरूप अपना नीड़ बसा सकेगी। तुमने स्वयं इस आभा को गढ़ा है, तो सिर्फ तुम्हीं इस निष्प्राण देह में प्राण फूंक सकती हो।

और क्या लिखूं अब दीदी? आओगी, तो खुद पूछ लेना। अच्छा अब विदा दो। पत्रोत्तर से अधिक तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा करूंगी।

तुम्हारी नादान अनुजा,
आभा

★

पराजित का कोई मित्र नहीं होता।
—साउदी

सद्विचार ही तुम्हारे होते हैं और उनके लिए प्रशंसा तो पड़ोसियों के कारण ही मिलती है।
—आगस्टीन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमरारना

डा० हसन मंजर

दोपहर का वह समय था, जब भिखारी एक चुटकी आटा मांगने आते हैं। वही [illegible] गलियारे में गूंजी, धूप बड़ी कड़ी [illegible] हवा नम और बोझिल। भिखारी [illegible] तेरह साल का लड़का था, उसने दर-[illegible] का टाट उठाकर अंदर झांका और [illegible] था, वहीं खड़ा रहा।

अंदर से किसी स्त्री ने पूछा—"कौन है?"

[illegible] बैठी लड़की ने बताया—"लड़का।"

"पूछो, मुसलमान होता है?"

"मुसलमान होगा रे?"

भिखारी लड़के ने उसके चेहरे को [illegible] से देखा और बिना उत्तर दिये चल [illegible] हुआ।

[illegible] दूर था, और उसे आज की कमाई [illegible] अब अपने पैर तोड़ने होंगे। यह घर [illegible] शहर की हाट को जाते हुए आधे [illegible] पर पड़ता था और यहां से कमाकर [illegible] सरल होता; लेकिन भीख के लिए [illegible] नहीं करता।

[illegible] रास्ते पर होकर उसने सोचा—[illegible] किस प्रकार के हैं? भीख और धर्म [illegible] संबंध है?"

[illegible] घर स्टेशन मास्टर का था। जब वे [illegible] आये, तो पत्नी-बच्चे सब खाने पर बैठे। सबने उस चुटियावाले भिखारी लड़के का जिक्र छेड़ा।

बड़े बाबू ने पूछा—"उस लौंडे को कुछ दिया था?"

"नहीं!" लड़की ने कहा।

"क्यों?"

"वह मुसलमान होने के नाम पर चलता बना।"

बड़े बाबू ने महसूस किया कि ततैया-मिर्च उनके दांतों में कुचल गयी है। पिछले तीन दिन से बात का यही विषय था कि चुटियावाला लड़का मुसलमान होगा या नहीं। यह इतनी महत्व-भरी समस्या थी कि छोटे-बड़े सभी को उसमें दिलचस्पी थी।

दूसरे दिन फिर वही चुटियावाला लड़का आया।

पहले दिन उसे डांटकर भगा दिया गया था; क्योंकि उसके चुटिया थी। अगर वह मुसलमान होता या उसके चुटिया न होती, तो उसे पहले दिन ही भीख मिल जाती। एक हिन्दू लड़के का मुसलमान घराने से भीख लेने आना, इस बात की दलील थी कि उस घर में कौन रहता है, या फिर वह अनाड़ी है और हिन्दू-मुस्लिम के भेद को नहीं पहचानता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय तेज बारिश हो रही थी। वह पानी से भीगा हुआ आया और टाट उठाकर चौखट में खड़ा हो गया।

एक लड़की ने अंदर आ जाने को कहा। पर वह अपनी जगह पर खड़ा रहा।

लड़की ने दोबारा उससे अंदर आ जा को कहा।

"यहां क्यों घुसा लिया इसे तुमने ?" मां ने लड़की से पूछा।

लड़का दोबारा चौखट पर जाकर खड़ा हो गया और वहीं खड़ा रहा। वह हां या ना सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था।

थोड़ी देर बाद एक बच्चे ने उसे एक पैसा लाकर दिया। उसने "राम भला करें" कहा और चल दिया।

अगले दिन वह फिर वहीं खड़ा था।

औरत ने पूछा –" क्या नाम है तेरा ?"

चुटियावाले लड़के ने कहा–"रमसरना।"

बच्चे उसके नाम पर हंसने लगे –"रमसरना ! रमसरना !!"

छोटी बच्ची ने कहा –" रमसरना तो हाथियों का नाम होता है। अहा, बड़ा मजा आ गया !"

अब जब उसे आटा दिया जाता, तो वही बच्ची कहती –" अब रमसरना हाथी अपने रोट पकायेगा।"

रमसरना को बच्चे पसंद आने लगे। वह दोपहर को भीख मांगने आता और चौखट पर खड़ा होकर एक चुटकी आटे का सवाल करता। बच्चे हाथियों को बिठानेवाली आवाज में कहते–" धत्-धत् !!"

रमसरना बारी-बारी से अपने कमजोर सफेद घुटने जमीन पर टेकता और फिर अपनी दुर्बल पिछाड़ी जमीन पर रखकर अपने दोनों हाथों के बल बैठ जाता। उसका खयाल था, हाथी इसी तरह जमीन पर बैठते हैं।

एक दिन फिर वह ऐसे वक्त आया, जब बारिश हो रही थी। मां ने उससे बरामदे में आ जाने को कहा। बच्चे अंदर कमरे में पलंगों पर कूद रहे थे, बड़ी लड़कियां इधर-उधर बिखरी हुई थीं और बड़े बाबू स्टेशन गये हुए थे।

मालकिन के हाथ में तरकारी काटने का चाकू था और एक अंगूठे पर पट्टी लिपटी हुई थी।

रमसरना ने पूछा –" बहूजी, अंगूठा कट गया क्या ?"

"हां कट गया।"

"राम रे राम !" लड़के ने सचमुच तकलीफ-भरे स्वर में कहा।

औरत के दिल में एक खयाल आया, रमसरना 'या अल्लाह' क्यों नहीं कहता ?

थोड़ी देर बाद उससे पूछा –" तेरे मां-बाप हैं ?"

"नहीं।"

"और कोई है ?"

"कोई नहीं बहूजी !" रमसरना ने बनावटी दुःख से कहा।

रमसरना इस ढंग को बरसों से आजमाता आता था और इस वक्त भी आशा की कोंपल उसके मन में फूट रही थी। बहूजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...हम खाने पर आज का दिन त्योहार ...बन सकता था।

...की मां पांच-छः बरस हुए मर चुकी ...। बाप कौन था? कहां से आया था? ...कहां गया? यह भोजपुरवालों में से ...को मालूम न था, शायद वह उन ...में से होगा, जो दुनिया की भीड़ में खो ...हैं।

...किन सबसे अचरज की चीज थी उसकी ...या, जो उसके सिर पर स्याह भौंरे की ...तरह बैठी थी। रमसरना शायद यह भी ...बता सकता था कि चुटिया कब से थी ...आज तक क्यों वह उसे अपने सिर पर ...हुए था।

...वह मक्की का आटा लेकर चला ...तो औरत देर तक बैठी उसके बारे में ...रही।

...की तरफ देहात में कुछ लोग थे, ...घर में गये थे, जो लोगों को कलमा ...थे। उसे मालूम था, वे लोग तबलीग ...प्रचार) कर रहे हैं और रमसरना ...देखकर उसके दिल में भी खुदबुद होने ...क्यों न तबलीग की जाये?

...रात उन लोगों ने खुलकर रम-...के बारे में बात की।

...बाबू देर तक औरंगजेब आलमगीर ...जिक्र करते रहे और मंझले लड़के को ...महसूस हुआ कि खुद वह औरंगजेब का ...दार है। लड़कियां जो बड़ी, मंझली, ...छोटी कहलाती थीं, वे भी जोश के ...में बोलती रहीं।

दोपहर को रमसरना फिर आया, उसी तरह चिथड़े पहने हुए। बच्चे उसे देखकर खामोश हो गये, एक लड़की उसे पैसा देकर चली गयी। मालकिन एक बार कमरे से बाहर निकली, कुछ देर बरामदे में खड़ी कुछ सोचती रही और फिर अंदर चली गयी। घर सोया-सोया-सा लग रहा था, मकान के पिछवाड़े पर भी सन्नाटा था। बड़ी लड़की बेजरूरत सामने आयी और पीछे हट गयी। वह दरवाजे पर कुछ देर रुककर और फिर निराश होकर लौट गया।

वह सोच रहा था, अजीब लोग हैं, आज दक्षिणा अच्छी मिली, तो किसी ने ठीक से बात नहीं की।

लेकिन अगले दिन रमसरना मुसलमान होने के नाम पर चल खड़ा हुआ।

यह ठीक था कि वह गरीब है; लेकिन दुर्गति में कोई धर्म छोड़ने पर तो राजी नहीं हो जाता। तो शायद उतने दिन से ये लोग इसीलिए भीख दे रहे थे।

रास्ते में एक नदी पड़ती थी, उसमें उसने मुंह धोया, पैर धोये और दूसरे किनारे पर निकलकर पीपल की जड़ में रखे हुए पत्थर को प्रणाम किया। उसके अंदर भी आज पहली बार अपने धर्म से प्यार पैदा हुआ था।

लेकिन जब वह शहर पहुंचा, तो हाट टूट रहा था; लोग वापस जा रहे थे और जो रुक गये थे, वे दिन-भर की धूप से बौखलाये हुए थे। उस रात वह भूखे पेट सोया, जिस तरह अक्सर बड़े बाबू के घर जाने से पहले सोया करता था। अगले दिन वह फिर ठीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय पर गलियारे में खड़ा था।

उसकी आवाज सुनकर बच्चे शोर मचाने लगे—"रमसरना हाथी आ गया।"

छोटी लड़की ने उसे 'धत्-धत्' कहा और चुटियावाला लड़का थोड़ी देर शरमाने और हिचकिचाने के बाद अपनी सूखी हुई टांगें टेककर जमीन पर बठ गया।

मालकिन ने शोर मचाते हुए बच्चों से कहा—"चुप, बात करने दो ..... रमसरना कल भाग क्यों गया था रे?"

"कुछ नहीं बहूजी!" रमसरना ने कहा।

"कुछ क्यों नहीं, कल बिना पैसा लिये नहीं चला गया था?"

रमसरना चुप वठा रहा। दो बच्चे सहन में पड़ी हुई खाट पर वैठे, उसे इस तरह ताक रहे थे, जैसे अब वह कोई करतब दिखानेवाला है।

"कल कुछ खाया था?" मालकिन ने पूछा।

"अम्मा शकल देखो, फांके लग रहे हैं।" वड़ी लड़की ने कहा।

रमसरना रोने लगा। गांव में कभी किसी ने उसकी तरफदारी नहीं की थी। बच्चे उसके साथ खेल नहीं सकते थे और हर जगह 'दुर-दुर' होती थी। उसने लोगों के मकान अंदर से नहीं देखे थे। लोगों की रसोइयां कैसी हैं, वह सोच तक नहीं सकता था और यह औरत उसके लिए अपने बच्चों को डांट रही थी ..... गरम आंसू वहकर उसके गालों पर आ गये।

"रोटी खायेगा?" औरत ने पूछा।

उसने हां का सिर हिलाया।

एक लड़की रोटी ले आयी और रमसरना भूखों की तरह खाने लगा।

खाने के वीच में औरत ने कहा—"मुसलमान हो जा, तो तुझे अच्छे-अच्छे कपड़े दूंगी। भीख मांगकर क्या मिलता है; न घर है, न दर! कोई पूछनेवाला तक तो है नहीं, यहीं रह, वच्चों के साथ खेला कर!"

मंझली लड़की ने कहा—"मैं तुझे पढ़ाया भी करूंगी, पढ़-लिखके कहीं वावू वन जायेगा।"

रमसरना सोच में पड़ गया। लड़कियां सचमुच अच्छी थीं और बहूजी तो माता-समान थीं, आज तक भूख के जो दिन गुजरे थे—पूस-माघ की सू-सू करती हुई रातें और लोगों का वरताव, जैसे वह रोगी और अछूत हो—वह चुपका वैठा सुनता रहा।

"वोल होगा मुसलमान?" मालकिन ने फिर से पूछा—"दोनों वक्त खाने को मिलेगा और वही जो हम सब खाते हैं, यह नहीं कि भिखारियों की तरह उठाके रोटी पकड़ा दी।"

अव तक जो हिचर-मिचर थी, वह लालच के रेले में मिट्टी के वांध की तरह वह गयी।

उसने मरे हुए लहजे में "हां" कही।

एक लड़का भागा हुआ स्टेशन वड़े वावू को वुलाने गया और वे हांफते हुए घर पहुंचे। सहन में एक लड़की नल चला रही थी और रमसरना मल-मलकर नहलाया जा रहा था। पानी पड़ने से जहां-जहां से साबुन धुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था, उसका जिस्म निखर आता था। उस समय लग रहा था, वह सचमुच काला नहीं है, जितना धूल ने उसे रखा था।

अंदर मालकिन छोटे लड़कों के पुराने ढूंढ़ रही थी और बरामदे के पलंग पुराने कपड़ों की लादी लग गयी थी। की धार छोड़ने को रमसरना का ही नहीं हो रहा था, इस तरह तो उसे भी कभी नहीं नहलाया था।

"बस-बस सर्दी लग जायेगी।" बड़े बाबू कहा।

एक लड़की भागकर ले आयी। हाथ में लेकर की समझ में आ रहा था, वह मोटे रोएंदार कपड़े क्या करे। "अरे पोंछ।" माल- ने कहा।

रमसरना उसी तरह खड़ा रहा।

शरीर! अरे शरीर ।" बड़े बाबू कहा।

रमसरना शरीर लगा। वह मदारी की तरह था, जो पर चलता है, कभी उलटी हर-

कत भी कर बैठता है और टोकने पर चुप खड़ा हो जाता है।

मालकिन सोच रही थी, इस खुशी में एक मीलाद शरीफ भी होना चाहिये और बड़े बाबू इस खयाल में मगन थे कि इस खबर के जाने पर उनके बड़े भाई भी चौंक पड़ेंगे।

रमसरना को एक पाजामा दिया गया कि वह आड़ में होकर पहन ले, फिर मंझले ने वहीं ले जाकर उसे कमीज दी, छोटी लड़की ने त्याग से काम लेकर उसे अपनी पुरानी स्याह जूतियां पहना दीं और जब वह ओट से निकलकर बारह आया, तो मालकिन ने कहा—"देख अब कैसा मियांपूत लग रहा है!"

लड़का बरामदे में खोया-खोया-सा खड़ा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था, क्या कहे। घर के अन्य व्यक्तियों की तरह वह भी हंगामे से प्रभावित था।

फिर मालकिन उसे हाथ पकड़कर चौकी के पास ले गयी और उसे चौकी पर बैठाया जाने लगा, फिर किसी ने उसे चौकी से उठा-कर खड़ा कर दिया और छोटी एक जाजिम

महिलाएं

चित्रकार : पाल गोगां

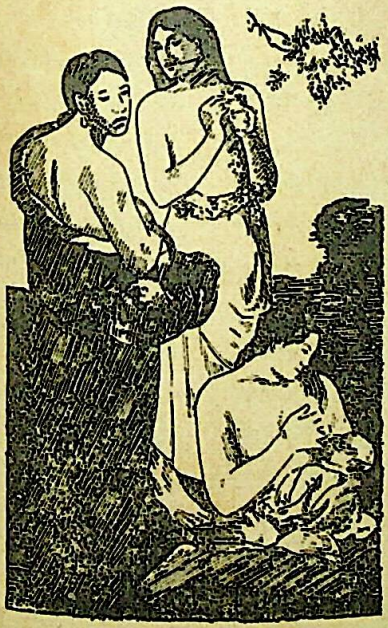

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले आयी, जो चौकी पर बिछा दी गयी, रमसरना फिर चौकी पर बैठा दिया गया।

मालकिन ने बड़े बाबू से कहा –"अब करो मुसलमान।"

बड़े बाबू आगे बढ़े।

मालकिन ने लड़के से कहा –"तू जी से मुसलमान होता है ना ?"

रमसरना चुप रहा।

"बोल, जी से मुसलमान हो रहा है ना?" मालकिन ने इस बार रमसरना का कंधा हिलाते हुए कहा।

"क्या बहूजी ?" रमसरना ने पूछा।

"मैं पूछ रही हूं, मारे-बांधे तो मुसलमान नहीं हो रहा है, देख तुझे कोई धमकी नहीं दे रहा, गला नहीं घोंट रहा ...राजी-खुशी मुसलमान हो रहा है !"

"अपनी इच्छा से मुसलमान हो रहा है?" बड़े बाबू ने मालकिन के आखिरी जुमले के साथ-साथ कहा।

रमसरना ने हां का सिर हिलाया।

"फिर से कह।" सबने कहा।"

"बस तीन दफा तो तुमने पूछ लिया।" बड़े बाबू ने कहा।

"आज से तेरा नाम खुदाबख्श है।"

रमसरना ने ऊपर-नीचे सिर हिलाया।

"बख्शो को कलमा पढ़ाओ, बख्शो पढ़ो– 'ला इला'....." एक लड़की बोली।

"ला इला....."

"इल्लिल्लाह....."

"इल्लिल्लाह....."

"ऐसे नहीं, पहले बख्शो को टोपी पहनाओ।" बड़े बाबू ने कहा।

"और उसकी चुटिया ?" हौलू ने कहा।

इन शब्दों में जादू था, सबसे पते की बात छोटे लड़के ने कही थी।

एक लड़की भागकर बकुचे से कैंची ले आयी और मंझला चुटिया काटने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन रमसरना ने दोनों हाथों से कसकर अपनी चुटिया दबा ली, कैंची वही उसकी जमा-पूंजी थी, उसके चले जाने पर वह लुट जायेगा।

"अरे छोड़, चुटिया काटने दे।" मंझले ने कहा।

"नहीं-नहीं, मैं चुटिया नहीं कटवाऊंगा।" रमसरना ने रोते हुए कहा।

"अरे, इसे क्या हो गया ?" मालकिन ने कहा।

रमसरना के सिर पर छीना-झपटी हो रही थी और वह बिलख-बिलखकर रो रहा था।

मालकिन ने कहा–"चुटिया नहीं कटेगी, तो मुसलमान कैसे होगा ? भिखमंगे का भिखमंगा ही रहेगा।"

"मैं चुटिया नहीं कटवाऊंगा।" लड़के ने कहा।

"नहीं मानेगा ?" बड़े बाबू डांटकर बोले।

"मैं नहीं कटवाऊंगा।"

कुछ समय तक चुटियावाले लड़के के सिर पर प्रलय मची रही।

फिर किसी ने धक्का देकर उसे चौकी से नीचे उतार दिया।

किसी ने कहा–" निकल यहां से।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मरे-मरे कदमों से नल के सामने से हुआ, जहां उसकी फटी हुई कमीज पड़ी है। दरवाजे पर पहुंचकर उसने भीख ने का बर्तन उठाया।

अंदर से किसी ने कहा—"पकड़ो इसे।" रमसरना कूदकर बाहर निकल गया। उसके जाने के बाद सबको ऐसा लग हुआ, जैसे मैय्यत में से आये हैं। बड़े बाबू स्टेशन लौट गये।

चुटियावाला लड़का एक पगडंडी पर लता हुआ सोच रहा था, उसके संग क्या हुआ चुका है, अगर यह खेल था, तो वह उसमें खड़ा हुआ है और अब कहां जायेगा और अगर सचमुच धर्म छोड़ने की बात थी, तो बड़ी खैरियत हुई कि वह बच निकला।

घर जाने को उसका जी नहीं चाह रहा था। नये कपड़े उसके मन को भा रहे थे और खाने के बाद भूख भी लगने लगी थी।

पगडंडी के दोनों तरफ उगे हुए पौधों में उसने कोई खाने की चीज ढूंढ़ने की कोशिश की, लेकिन कुछ न पाकर शहर की तरफ चल पड़ा।

जब शहर पहुंचा, तो सूरज डूब रहा था। कहीं घर झांकते-झांकते अंधेरा होने लगा।

उसने एक चबूतरे पर बैठकर दोने की पत्तलें चाटीं, जो किसी हलवाई ने दी थीं जिनमें मिठाई का चूरा, नमकीन और पूरियों की टांगें थीं।

थोड़ी देर में आकाश लाल होकर बुझ गया। सामने के मंदिर से संध्या के लिए आनेवाले अपने घरों को चले गये और पुजारी मंदिर के चबूतरे पर आकर बैठ गया।

रमसरना उठ बैठा और तनहाई मिटाने के लिए पुजारी के पास जा खड़ा हुआ। आज की बात किसी को बताने के लिए वह दोपहर से बेकल हो रहा था।

पुजारी ने कठोर स्वर में पूछा—

"कौन है तू ?"

"महाराज, मैं रमसरना हूं।"

"फिर ?"

"कुछ नहीं, बस हाथ जोड़ने आया था।" रमसरना ने कहा।

पुजारी खामोश बैठा रहा।

"कहां रहता है ?"

"भोजपुर में।"

"भीख मांगता है ?"

"हां !"

"कौन जात है ?"

रमसरना कुछ खग चुप रहा। फिर उसने बालों का गुच्छा अपनी उंगली पर लपेटते हुए कहा —

"एक घर रास्ते में पड़ता है महाराज, मुसलमानों का, वे लोग आज मेरी चुटिया काट रहे थे।"

"कौन है वह दुराचारी ?" पुजारी ने गुस्से से कहा।

"बड़ा बाबू !"

"तू ने कटवा ली ?"

"नहीं महाराज !"

"और क्या कहते थे ?" पुजारी ने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमसरना बोला –" कहते थे मुसलमान हो जा, हम घर में रखेंगे, कपड़े देंगे और खाना पेट भर के खाया कीजियो।" काफी देर तक वह आपबीती सुनाता रहा।

पुजारी बीच-बीच में " बदमाश कहीं के " कहता जाता था।

जब रमसरना कह चुका, तो उसने उसे अपने पास बुलाकर उसकी चुटिया छूकर देखी और देर तक रमसरना का हाथ पकड़े उसे समझाता रहा। उसके खयाल से रमसरना ने बहुत बड़ा काम किया था। ऐसा काम, जो बस ऊंची जाति के लोग ही कर सकते हैं। उसने कहा–"कल मैं यह बात सबको सुनाऊंगा कि एक बालक ने अपने धर्म की रक्षा की और फिर कोई-न-कोई अच्छा घरानेवाला तुझे अपने घर में रख लेगा।"

उस रात वह पुजारी के साथ ही ठहर गया, किंतु रात में महाराज ने जो दुर्व्यवहार उसके साथ किया, उससे उसे मंदिर से निकल भागना पड़ा।

वह काफी दूर तक भागता रहा। लेकिन भागना बेसूद था; क्योंकि पुजारी ने मंदिर से बाहर निकलकर उसका पीछा करना बेमकसद समझा होगा।

रमसरना घूमता हुआ कांजी हाउस के सामने जा निकला, यह शहर की आखिरी पुख्ता इमारत थी, जिसके पास ही नदी का पुल था और वहीं से गांव को रास्ता जाता था; लेकिन बीच रात में गांव जाने की उसकी हिम्मत न हो सकी, वह कांजी हाउस की दीवार चढ़कर अंदर उतरा, जहां एक गधा अंधेरे में सोया हुआ-सा लगता था। उससे थोड़े फासले पर वह भी भूसे के ढेर पर सो गया।

अगले दिन गांव जाते हुए उसने सोचा "वे लोग मुझे मुसलमान क्यों करना चाहते थे? उन्हें मुझे मुसलमान करके क्या मिलता? मुझसे उन्हें प्यार तो था नहीं और कौन-सा हमेशा अपने घर से खिलाते! फिर उसे खयाल आया, पुजारी भी उसका भला चाहनेवाला नहीं था, फिर वह क्यों चाहता कि मैं हिन्दू ही रहूं? उसे मेरे हिन्दू रहने से क्या मिलता और कौन-सा हिन्दू जाति-वाले सदा मेरा लालन-पालन करते! उसने सोचा, बहुत-से लोग ऐसे भी होते हैं, जो बिना कारण बहुत-से काम करते हैं, उन्हीं में से बड़े बाबू के घर वाले थे और यह महाराज भी हैं।"

रूपांतर : गुरुप्रसाद अवस्थी

पागल

एक बार कोई बड़ा अफसर पागलखाने में पागलों को देखने गया। अफसर ने दाढ़ी रख छोड़ी थी। एक पागल उसे देखते ही बोला–"सलाम हुजूर, जरा मेरी बात सुन लीजिये, मैं पागल नहीं हूं।" अफसर दूर से ही बोला–"कहो क्या कहते हो?" पागल ने कहा–"उतनी दूर से नहीं, पास आइये तब।" वह जब बिलकुल पास चला गया, पागल उसकी दाढ़ी खींचते हुए बोला–"आपको इतनी भी अक्कल नहीं कि मैं पागल न होता, तो कठघरे में क्यों रखा जाता।"

– यशोदा देवी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादों की तस्वीरें और लोरी

नारायण गंगोपाध्याय

अजगर से भी भयानक लोहे की दो मोटी चेनों को कुलियों न एक सिरे से जोड़ दिया। मोटर का इंजिन गरज उठा, पहिये झंखाड़ों को रौंदते हुए आगे को सरकने लगे। उस समय वह विशाल शांत तरुण पेड़ अपने सिर पर पीले फूलों को झुमाते-झुमाते वासंती हवा का स्वप्न देख रहा था। हठात् वह चौंककर जाग उठा। किन्तु एक मिनिट भी नहीं लगा। राक्षसी ...र की चेनों के अंतड़ियां निकाल लेने-...विचाव से वह चरमराकर धराशायी हो गया। ढेर सारी मिट्टी-पत्थर के टुकड़ों ...धूल ने गहरी सांस ली। उस भयंकर ...ज को सुनकर कितने ही पक्षी चीत्कार ...उठे। तितलियों के टूटकर बिखरे पंखों ...समान फूलों की पत्तियां और किसलय ...ओर उड़ने लगे। एक सोंधी गंध की ...वास उठी, मानो धरती का सीना बर-...ही किसी ने चीर दिया और वह क्रंदन ...उठी हो।

असिस्टेंट इंजीनियर मिहिरलाल ने भी ...गहरी सांस ली।

"बहुत सुंदर था पेड़।"

इंजीनियर सेन ने कहा —"हूं!"

"इस जंगल को लोग देवता का वन कहते थे। और यह भी कहते थे कि ....."

चुरुट को चवाते-चवाते सेन ने कहा—"अरे तुम भी इन अंधविश्वासों को मानते हो क्या?"

मिहिरलाल शरमा गया —"नहीं सर, अंधविश्वासों की वात नहीं है। मेरा घर भी तो इसी तरफ है, बचपन में इन सव जगहों पर वहुत वार आया हूं। बहुत अच्छा लगता था। इतनी ठंडी छाया, ऐसे-ऐसे फूल और तरह-तरह की चिड़ियां ....."

सेन ने बीच में ही टोका —"और इतना दुर्भिक्ष, मीलों धरती, अनपढ़-गंवार, और जंगलियों की बस्ती—तो तुम इन्हीं सवको आइडियल कह रहे हो? ये डैम, कैचमेंट की व्यवस्था, इरीगेशन, हाइड्रोइलैक्ट्रिक, यह सव क्या सरासर ब्रूटैलिटी (असभ्यता) है? इंजीनियरिंग का डिप्लोमा फाड़कर घर जाकर बैठो तुम तो मिहिरलाल, एंड स्टार्ट राइटिंग पोएट्री (कविता, लिखना शुरू कर दो)।

मिहिरलाल मौन रहा। सेन ने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कविताएं हम भी बचपन में बहुत पढ़ा करते थे। इसमें कोई शक नहीं कि ये बहुत इंटरेस्टिंग लगती हैं। लेकिन जैसे सभ्यता विकसित होती है, वैसे ही आदमी को भी वक्त पर मैच्योर (प्रौढ़) हो जाना चाहिये। अब तक तुमने शादी नहीं की ना ?"

मिहिरलाल ने सिर हिलाया —"नहीं सर।"

"किसी के साथ लव चल रहा है ? मतलब कहीं रंग चढ़ रहा है या नहीं ?"

मिहिरलाल सिर झुकाये रहा, मुंह से बोल नहीं फूटे। गोरे गालों पर थोड़ी लाली जरूर आ गयी।

सेन ने प्यार से मिहिरलाल की पीठ थपकी। कहा—"सुनिये, श्रीमान मिहिरलाल पांडे। बात पैराडाक्स के माफिक (विरोधाभास-सी) लगेगी, फिर भी कहता हूं, अब तुम चटपट शादी कर लो। रोमांटिसिज्म से छुटकारा पाने का इससे अच्छा इलाज कोई नहीं है।"

मिहिरलाल के होंठों पर इस बार मौन हंसी बिखर गयी। गालों पर लज्जा की सुर्खी और भी बढ़ गयी।

"विश्वास नहीं हो रहा ? वेट एंड सी।" सेन ने कहा —"चलो अब जरा आफिस की तरफ चला जाये। ढेर सारा काम पड़ा है।"

मिहिरलाल स्टीयरिंग के पास बैठा। जीप में बैठकर जैसे उसे छुटकारा मिला। वही राक्षसी चेन तब एक और ताजे पेड़ के गले में फांसी डालने की तैयारी कर रही थी। मिहिरलाल ने जीप की स्पीड बढ़ा दी, इंजीनियर होने के बावजूद वह जंगल पर होनेवाले इस अत्याचार को कैसे भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। सेन नहीं जानता था कि वह अब भी छिपाकर कविताएं लिखा करता है।

आफिस पहुंचकर सेन कागजों में खो गया। टेंडर के बहुत-से लिफाफे आये हुए। इसके अलावा और भी बहुत-सी कारेस्पांडेंस पड़ी है। दो-तीन ठेकेदार मिलने आये। दो तो थोड़ी-सी बात करके उठ गये; एक तीसरा वहीं जमा रहा।

"और कुछ कहना है चौधुरी ?"

चौधुरी ने बहुत धीमे स्वर में कहा—"एक केस मिला है साहब।"

कागज में आंख गड़ाये हुए ही सेन ने कहा—"हूं।"

"बहुत अच्छी चीज है साहब !"

"सोलन ?"

"नहीं जनाब, विलायती ! ओल्ड स्मगलर। शाम को दे जाऊं ?"

लापरवाही के स्वर में सेन ने कहा—"अच्छा !"

"और मेरा बिल..."

"हो जायेगा। अच्छी बात है, अब जा रहे हैं।"

"नमस्कार !" एक भौंडी हंसी हंसते हुए चौधुरी दरवाजे से बाहर हुआ। उसका काम बन गया है।

चौधुरी के चले जाने के बाद सेन ने कागजों पर से आंख उठायी और हिलते दरवाजे की ओर देखता रहा। होंठों पर एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...सी हंसी फूट आयी। यह कायदा है। ...और लो। देने का काम वह जरूर करेगा, ...खुद को अलग छिटककर नहीं। तुम ...तो देश के ही एक व्यक्ति हो। तुम्हें कुछ ...तो वह भी तो देश को ही मिलना ...। न्यायशास्त्र का सीधा-सादा तर्क है। ...ने उबासी ली और कालिंग बेल ...। बाहर से बैरा लपलपाता हुआ ...हिलाता-सा आया।

"पानी दे एक गिलास।"

...सूख गया था, गोल्ड स्मगलर की ...याद आयी। लेकिन सेन दिन में कभी ...नहीं करता है। थोड़ा-सा पानी पीकर ...में मुंह पोंछ ...। खिड़की से ...पड़ता है ...का कंस्ट्रक्शन। ...ने देखा, एक क्रेन ...काला सिर उठ ...गिर रहा है। ...पर एक बड़ी ...नदी को बांधा ...है। जो पहले ...का दरिया था, ...दिन बाद ही वह ...करुणा के ...दिखाई पड़ेगी। ...और जंगली ...यंत्र के मंत्र से वशीभूत हो जायेगी। ...बड़े-बड़े भयंकर हाथों से अब तक ...बुहारती रहती थी; पर अब उन्हीं मुट्ठियों से धान-गेहूं की बरसात होगी।

'लेट अस होप सो।' हम भविष्य के लिए नया इतिहास गढ़ रहे हैं। देवता के वन को विदा देकर हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्लांट लगा रहे हैं। आदिम अंधकार में नये जीवन के दीप जला रहे हैं।

देवता का वन! मिहिरलाल की बात याद आते ही सेन अन्यमनस्क हो गया। रोमांटिक। हां, कभी उसकी अपनी भी वह उम्र थी।

घर के पास से ही नदी जाती थी। बरसात के दिनों में छोटी-छोटी नावें पार लगातीं। नदी के किनारे-किनारे जंगल था। झाड़-झंखाड़ों का जंगल। गीली मिट्टी पर सांपों के चलने की लकीरें दिखाई पड़ती, खरगोश लुक-छिप करते रहते, बड़े-बड़े जंगली जानवर भी देखे जाते। सांपों की वजह से जंगल में जाने के लिए सभी मना करते थे। लेकिन जंगल में पाये जानेवाले फलों के लोभ में वह कितनी ही बार दोपहर में वहां गया है। जिस किसी पेड़ की ऊंची डाल पर बैठकर कितना कुछ सोचा करता था, इसका कोई ठीक-ठिकाना नहीं।

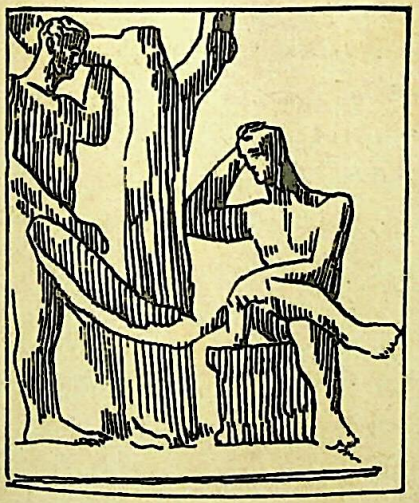

याद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह भी एक उम्र थी।

उसके बाद फिर जब थोड़ा बड़ा हुआ, तब बगीचा बनाने का शौक चर्राया।

घर के बायीं ओर पक्षियों से घिरी एक जमीन थी। तुरई और काशीफल की बेलें उसमें पहले से ही लग रही थीं। एक कोने में जवाकुसुम का जंगल लगा हुआ था।

इसी जमीन में सेन ने नये सिरे से बगीचा बनाया था। बचपन की यादों की परतें खुलती जा रही हैं। कितना बचपना था। एक बार न जाने किसने उसके गुलाब की डाल काट दी थी। सेन कटी डाल को सहलाता-सहलाता उठाकर लाया। उस पर गोबर वगैरह लगाकर कितनी ही तरह के इलाज किये थे उसने। मोगरा, बेला, गेंदा, हरसिंगार आदि क्या-क्या लगाने की कोशिश नहीं की थी उसने?

कुछ मरे, कुछ बचे। गुलाब नहीं हुआ, लेकिन गेंदा के फूल बहुत सारे हुए थे। बरसात के साथ बेला फूल की खुशबू मिली। मोंगरे के फूल भी कम नहीं हुए थे।

दिन ऐसे बीतते, जैसे कोई नशा कर रखा हो। उन्हीं दिनों एक बार घर पर ओवरसियर बाबू आये—बगीचे में न जाने कैसा मापजोख किया। बाद में सुना गया कि सब पेड़-पौधे उखाड़ दिये जायेंगे।

"क्यों?"

पिताजी ने गंभीर आवाज में कहा था—"वहां पर सेनिटरी अटैचमेंट्स बनेंगे।"

पिताजी बहुत कठोर स्वभाव के थे—बहुत कम बातचीत किया करते थे। कभी बुलाते, तो सामने जाते हाथ-पांव कांपने लग जाते थे। बगीचे के उखाड़ने के विरोध की हिम्मत होने का कोई सवाल ही नहीं उठता था। बस छिपकर कई दिनों तक तकिया आंसुओं से भिगोया था।

इसके बाद सेन बड़ा हुआ। इंजीनियर बना। विलायत गया। वापस लौटने पर उन्नति भी बराबर होती ही रही थी। उस वक्त उसके मन में पेड़-पौधों, जंगलों और झाड़-झंखाड़ों के लिए मोह नहीं रह गया था। सरकारी क्वार्टर में लान रहता है, माली मर्जी के माफिक फूल वगैरह लगाता है। सेन को इस ओर देखने तक की फुरसत नहीं। कभी-कभी शाम के वक्त दक्षिण के बरामदे से फूलों की खुशबू आती है; लेकिन उस वक्त सामने रखी बेंत की मेज पर बिस्की का गिलास पड़ा रहता है। उस समय स्नायुओं में दूसरी ही तरंग बहती है—जूही, स्वीट पी, गुलाब, रात की रानी की खुशबुएं उस माहौल में एकाकार हो जाती हैं।

और प्रोजेक्ट मोटर का इंजिन गरजता है। लोहे की चेनें वनस्पति को मरण-आलिंगन में जकड़ती हैं। धूल, मिट्टी और पत्थरों का चूरा बिखेरती हुई धरती सोंधी गंध की गहरी सांस लेती है। तितलियों के टूटे बिखरे पंखों की तरह फूलों के पत्ते इधर-उधर बिखर जाते हैं। जिन पक्षियों के घोंसले इस तूफान में टूट जाते हैं, उनकी चीख-पुकार जंगल के आर्तनाद के समान सुनाई पड़ती है।

अब तो इन सब बातों की आदत पड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...है। पहले तो कभी कुछ नहीं हुआ, पर ...अचानक मिहिरलाल पांडे ने न जाने ...एक छूत-सी लगा दी है। सेन को उस ...का गिरना याद आ ...है। और साथ ही यह ...याद आया कि उसके ...बगीचे के ऊपर एक ...इसी तरह से ईंट, ...और कांक्रीट का ...खड़ा हुआ था।

...चकित हुआ। वैरा ...कमरे में आकर लाइट ...दी। अभी से छः ...गये ? खिड़की के ...आकाश फीका है। ...का महाकाय ...घुंघला दिखने ...केन का काला सिर ...पड़ा है। बस, एक ...तो टिमटिमा रहा ...। संध्या-तारा ? हां, ...होगा।

...लज्जित हुआ। ...काम अब तक बाकी ...हैं। आज और ...नहीं हो पायेगा। इस ...फाइलों को मेज पर ...पड़े रहने देने की ...आदत नहीं है; ...न जाने कब से वह इसी तरह ...ख्यालों में खोया हुआ है।

अनजले और जले दीपक के बीच जो अंतर होता है, वही अंतर प्रम करन के पूव और पश्चात की स्थिति म होता है। दीपक जलने के पहले भी था, और अच्छा भी था; किंतु जलकर अब वह प्रकाश फैला रहा है—और वही उसका धर्म है। प्रेम मनुष्य को बहुत-सी चीजों के प्रति शांत और समाहित बनाता है। इससे मनुष्य की अपना काम करने की योग्यता बढ़ जाती है।

—वान गाफ

उसकी वजह से पास के कमरे में वेचारा क्लर्क भी रुका हुआ है, दरवान अभी तक दफ्तर वंद नहीं कर पाया। कुर्सी पर से उठकर सेन ने वैरा को आवाज दी। वैरा ने आकर कोट पहना दिया, तंवाकू का टिन और पाइप हाथ में दे दिया, उसके वाद नीला फाइल केस लेकर वह सेन के पीछे-पीछे चलने लगा।

सेन जीप में वैठा। मिहिरलाल नहीं था, इसलिए वह खुद ही ड्राइव करने लगा। वैरा पीछे वैठ गया। हेड लाइट की तेज रोशनी में आफिस के भीतर की फूलों की क्यारियां चमकने लगीं। मोतियों की तरह चमक रही हैं वे। एक वेवजह जगी हिंसक इच्छा—सेन सोचने लगा—जीप के पहियों के नीचे इन सभी फूलों को कुचल-मसल दिया जाये, तो कैसा रहे ?

उसका क्वार्टर आफिस से करीब एक मील दूर है। उसी हिंसक इच्छा पर सोचते-सोचते जैसे ही सेन ने गाड़ी को अपने क्वार्टर के गेट की ओर घुमाया, उसने देखा कि उसके अपने क्वार्टर में भी वे ही परेशान करने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले फूल लहलहा रहे हैं। एक साल हो गया उन्हें यहां रहते—पर पहले कभी इन पर निगाह क्यों नहीं पड़ी, आश्चर्य है। उसने मन-ही-मन सोचा कि कल ही माली को बुलाकर डांट देगा। कहेगा—फूलों की जरूरत नहीं है। वहां पर टमाटर की खेती करो। ग्रो मोर फूड। इंडिया इज इन एक्यूट फूड शार्टेज नाउ।

पांव पटकते हुए सेन दूसरी मंजिल पर चला गया। वदन पर का कोट एक ओर फेंक दिया। नौकर दौड़ता हुआ भीतर आया।

"मेम साहब नहीं हैं?"

"नहीं हुजूर।"

"कहां गयी हैं, क्लब?"

"जी।"

सेन को ताज्जुब नहीं हुआ। आजकल माधुरी अकेली ही क्लब जाती। सेन को हमेशा फुरसत नहीं मिलती है। कई बार उसे घर पर बैठ-बैठे भी काम करना पड़ता है। क्लब में अकेले जाने का उत्साह माधुरी को सेन ने ही दिया था-"बी स्मार्ट-बी स्मार्ट।" उसी ने जिद करके जबर्दस्ती उसके मुंह में शराब का पहला पेग डाल दिया था। नहीं तो पार्टी में इज्जत नहीं रहती, क्लब में प्रेस्टिज नहीं रहती।

आजकल क्लब से लौटने में माधुरी को करीब-करीब रोज रात पड़ जाती है, कभी-कभी तो बहुत रात हो जाती है। कभी खन्ना, कभी मुखर्जी पहुंचा देता है। शी इज नाउ स्मार्ट, वेरी स्मार्ट। कुछ तो रूप है, कुछ स्वास्थ्य भी और फिर पाउडर-लिपस्टिक वगैरह का लेप करने के बाद वह अच्छी लगने लगती है। यू कैननाट थिंक, शी इज फार्टी नाउ। वह चालीस की जगह पच्चीस-छब्बीस की लगने लगती है।

थोड़ी देर तक मूरत की तरह चुपचाप बैठे रहने के बाद सेन को अचानक महसूस हुआ कि आज उसके सिर में दर्द है। पूरे सिर में बहुत स्ट्रेन (दबाव) पड़ा है। सैंतालीस बरस पर पहुंचकर आप नौजवान नहीं बने रह सकते। अब तो सारे दिन की मेहनत के बाद जब वह घर लौटता है, उस वक्त उसे थोड़ी सेवा की जरूरत है। पत्थर और मिट्टी के बीच दिन-भर सिक लेने के बाद फूलों से लदे पेड़ की घनी छाया के लिए, उसके सारे स्नायु प्यास से जैसे व्याकुल हो रहे हैं।

आज न जाने क्या हो गया, सेन फिर से स्वप्न देखने लगा। पंद्रह-सोलह साल पहले की तस्वीर। उनकी इकलौती लड़की रूमा, जो अभी दूसरी जगह मिशनरी स्कूल में पढ़ रही है, का जन्म तब तक नहीं हुआ था। उस समय नौकरी कलकत्ता के वाटर वर्क्स में थी। एक दिन जब वह दोपहर-भर रिजर्व टैंक का इंस्पेक्शन करके घर लौटा था, तब सिर में ऐसा दर्द हुआ था कि जो एस्प्रो ने भी नहीं गया। तब सारी रात जागकर माधुरी ने उसका सिर दबाया था। और खास बात यह कि उन दिनों माधुरी को बुखार रहता था; उस दिन भी एक सौ डिग्री ताप था उसे।

स्वप्न की लहर के बीच सेन ने माधुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन गर्म हाथों को महसूस किया था। उन दिनों माधुरी खुद अपने हाथों से खाना बनाया करती थी। अंग्रेजी अच्छी तरह से समझ पाने की वजह से अंग्रेजी सिनेमाओं में नहीं जाना चाहती थी।

सेन चौंककर उठ बैठा। यह सब क्या [illegible] हो रहा है। सिर में दर्द है? तुम एक्जीक्यूटिव हो—डाक्टर को फोन करो, सारा इंतजाम हो जायेगा। इसके बाद तुम यह उम्मीद करते हो कि बीवी [illegible] महाभारत की पतिव्रताओं के समान [illegible] दबाती रहेगी?

तभी चौधुरी के उस केस की बात याद [illegible]। सेन उत्साहित हो उठा। पलक झपकते ही सारी खिन्नता न जाने कहां गायब हो गयी। स्नायुओं में इस विचार के साथ [illegible] एक ताजगी आ गयी।

"बालकिशन!"

बालकिशन हाजिर हुआ।

"चौधुरी एक लकड़ी का डिब्बा दे गया [illegible]?"

"जी।"

"खोलकर उसमें से एक बोतल निकालो। [illegible] में मेज पर लगाओ।"

बालकिशन को थोड़ा आश्चर्य हुआ। [illegible]-विवार को क्लब में जाने पर और [illegible] है, नहीं तो साहब साधारणतया रात [illegible] बजे डिनर के बाद पेग लेकर बैठते हैं। [illegible] दस-ग्यारह बजे तक चलता है। उसके [illegible] झूमते-झूमते बिस्तर पर पड़ जाते हैं—[illegible] बजे सवेरे सब कुछ साफ। नशे का कोई निशान भी बाकी नहीं रहता। आफिस से लौटने पर एक कप काफी पीने की आदत है साहब को।

बालकिशन ने कहा—"हुजूर काफी ..."

"काफी की आज जरूरत नहीं है। जो कह रहा हूं, वह करो।"

दूसरी मंजिल पर दक्षिण के बरामदे में सेन पेग लेकर बैठा। एक... दो... तीन... चार।

टन्.....टन्.....

नौ बज गये। माधुरी अभी तक नहीं लौटी। शायद ग्यारह बजे तक आयेगी, या बारह तक। झूमते-झूमते गाड़ी से उतरेगी, उसको सहारा देगा खन्ना या फिर मुखर्जी। नेचुरल। माधुरी कोशिश तो बहुत करती है; पर फिर भी वह अब तक ड्रिंक को ठीक तरह से स्टैंड नहीं कर पाती है। वापस लौटकर अक्सर ही वह खाना नहीं खाती।

सिर का दर्द फिर से उभर आया। वही यादें। सोलह साल पहले के दिन। चाहूं, तो अभी डाक्टर को फोन कर सकता हूं। नहीं, कोई जरूरत नहीं है। एक बार क्लब ही चला जाये। आज न जाने क्या हो गया है, कैसे भी अकेला नहीं रह पा रहा हूं। क्लब जाऊं, वहीं अपने को भूल पाऊंगा।

सेन उठकर खड़ा हुआ। कपड़े भी नहीं बदले—बस, भारी जूतों के बजाय हल्के सैंडल पांवों में डाल लिये।

"बालकिशन, मैं क्लब जा रहा हूं।"

"हुजूर डिनर....."

"देर लगेगी," सेन धीरे-धीरे सीढ़ियों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीचे उतर आया।

बैरा नीचे के बरामदे में बैठा बीड़ी पी रहा था। साहब को देखते ही उठ बैठा।

"तुझे साथ चलने की जरूरत नहीं है। मैं क्लब जा रहा हूं।"

जीप बाहर की सड़क पर दौड़ पड़ी।

लेकिन जीप क्लब की ओर नहीं गयी। सोलह साल पहले की यादों की परतें खुल गयीं और क्लब के रास्ते पर परतें पड़ती गयीं। इस याद ने सेन को रास्ता भुला दिया और करीब पंद्रह मिनिट बाद जब उसने जोर की आवाज करते हुए ब्रेक दबाया, तब सामने वही आदिम जंगल था। अंधेरे में हवा सांय-सांय की आवाज कर रही है, चारों ओर पेड़ों की लाशें चुपचाप पड़ी हैं।

"मैं कहां आ गया? यहां क्यों आया?"

आश्चर्य और डर से भरे हुए शब्दों में सेन ने अपने आप से ही पूछा—"इस रात में वन की कौन-सी ऐसी अदृश्य शक्ति मुझे इस तरह से अपनी ओर खींच लायी?"

लेकिन फिर आत्मचेतना अधिक न रह पायी। उसके बाद पांच पेगों के परदे पर बचपन की तस्वीरें उभरने लगीं, उसने बगीचे को तोड़-फोड़कर वहां ईंटों और कूड़े से पहाड़ बनाया जा रहा है। उसके ऊपर परदा पड़ा। दूसरे परदे पर दिखलाई पड़ी उसकी सोलह साल पहले की यादों की एक तस्वीर—एक सौ डिग्री बुखार होने पर भी माधुरी ने रात-भर सिर दबाया था।

सेन अपनी मर्जी से वहां नहीं गया; पर न जाने कौन-सी अदृश्य शक्ति उसे खींचकर उस उखड़े पेड़ के नजदीक ले गयी। सेन वहीं बच्चे की तरह लंबा होकर सो गया। सोंधी गंध से भरी मिट्टी और पत्थर के एक बड़े खड्डे में मुंह खोंस लिया। मृतप्राय जंगल की मंद-मंद सरसराहट उसकी अचेतन देह को अपने आगोश में लेकर लोरी गाने लगी।

—रूपांतर : शेफाली चौधरी

★

तीन लड़कियां खड़ी थीं। तीनों की ही आयु आठ-नौ वर्ष से अधिक नहीं थी। उनमें से दो में किसी बात पर झगड़ा हो गया और वे दोनों तीसरी को अपनी-अपनी ओर खींच रही थी।

पहली लड़की ने तीसरी से पूछा – "तुम मेरे ही साथ हो न? उससे बातें न करना। आओ हम तुम खेलें।"

दूसरी ने भी तीसरी से पूछा—"तुम मेरे साथ हो न? उससे मत बोलो। वह अच्छी नहीं है।"

पर तीसरी लड़की दोनों को समझाने लगी—"नहीं भई, ऐसा नहीं करते। मैं तो तुम्हारी भी हूं और तुम्हारी भी। झगड़ा नहीं करते। आओ हम लोग फिर से खेलें।" इतना कहकर उस लड़की ने उन दोनों लड़कियों के हाथ दोनों के गले में रख दिये

मुझे लगा मैं दुनिया में कोई नया दृश्य देख रहा हूं, जिसे अब तक मैंने कभी नहीं देखा था।

—प्रणव कुमार बंद्योपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिशोध

अलेग्जैंडर ड्यूमा

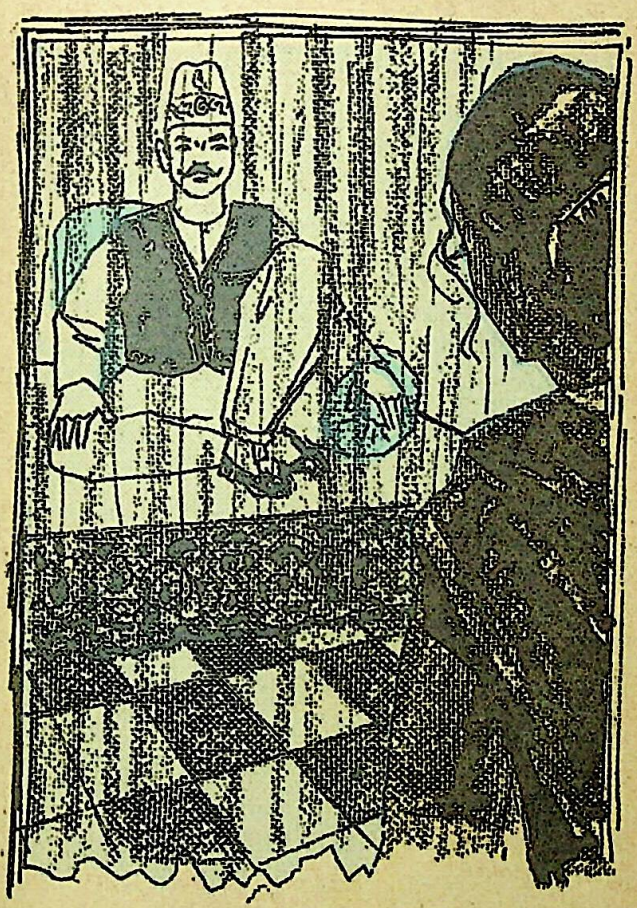

अन्याय, द्वेष और प्रतिहिंसा की अमंगलकारी शक्तियों के रौद्र नर्तन की अमर फ्रेंच कथा 'काउंट आफ मांटिक्रिस्टो' का भारतीय रूपांतर । प्रस्तुतकर्ता : श्रीसत्य ।

१९३० में भारत को स्वतंत्र करने के लिए आतंकवादी युवक भी उतने ही सक्रिय थे, जितने कि गांधीवादी । आतंकवादियों को दुतरफा लड़ना पड़ता था; एक को अपनी अल्प शक्ति से ब्रिटिश सल्तनत के साथ और दूसरे गांधीजी ने नेतृत्व करनेवाले अहिंसात्मक आंदोलन की लोकप्रियता के साथ । जब से स्वराज्य का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जयघोष हुआ, आजादी की लालसा भारत के हर नागरिक में बढ़ती गयी । जितनी जल्दी, जिस पद्धति से स्वराज्य मिल सके, लोग उसके लिए लालायित हो रहे थे । आतंकवादी क्रांतिकारियों के प्रति बरतानवी सरकार का रुख बड़ा कड़ा था ।

२७ दिसंबर १९३० के दिन बंबई के बंदरगाह पर एक समुद्री जहाज 'देवदूत' ने अपना लंगर डाला । निश्चित तारीख से यह जहाज एक दिन देर से पहुंचा था । डेक पर कप्तान का सहायक १९ वर्षीय दिलीप मौजूद था ।

इस जहाज की जो कंपनी मालिक थी, उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर जहाज के देर से आने के कारण चिंतित हो रहे थे । देवदूत के लंगर डालन के साथ ही कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर पूरी तहकीकात और जानकारी हासिल करने के लिए जहाज पर पहुंचे । कंपनी के मैनेजिंग डाइरेक्टर ने दिलीप को डेक पर थके हुए, हताश रूप में देखा । दिलीप का स्वागत स्वीकार करते हुए मोतीसिंहजी ने पूछा –" क्या बात है दिलीप, तुम इस तरह उदास क्यों दिखाई देते हो ?"

दिलीप ने जवाब दिया–" एक बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो गयी थी । लौटते समय काले बुखार से कप्तान लखनपाल शक्तावत की मृत्यु हो गयी । हमें मुकाम पर पहुंचने में इसीलिए देर हो गयी, क्योंकि कप्तान लखनपाल शक्तावत की अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए हमें अंडमान द्वीप पर रुक जाना पड़ा । कप्तान लखनपाल सिंह ने यह अंतिम इच्छा प्रकट की थी कि मैं उनके द्वारा दिया हुआ एक पैकेट अंडमान द्वीप पर पहुंचा दूं ।"

"यह तुमने अच्छा ही किया । हालांकि सिर्फ इतनी-सी बात के लिए तुम्हें आतंकवादी लोगों से संबंधित करार दिया जा सकता है । खैर, यह उम्र ही ऐसी होती है जब लोग खतरे की खास परवाह नहीं किया करते ।"

"मैंने ऐसा कोई खतरा नहीं उठाया । न तो मुझे यही मालूम है कि उस पैकेट में क्या है और न मैं यही जानता हूं कि वहां मेरे पत्र मुझे मिला है, उसमें क्या लिखा है । मुझे सिर्फ इतना ही मालूम है कि यह पत्र बंबई पहुंचा देना है ।"

इसी समय एक और व्यक्ति पास आता दिखाई दिया । दिलीप ने मुस्कराकर मैनेजिंग डाइरेक्टर की ओर मुखातिब होकर कहा–"लीजिये, डोगरा साहब आ गये हैं । भरे हुए माल-असबाब के लिए ये ही जिम्मेदार हैं । हमारी इस यात्रा के बारे में ये आपको पूरी तफसील के साथ रिपोर्ट भी दे देंगे । तब तक मैं जरा इंजिन-रूम में हो आता हूं ।"

सिगरेट बुझाते हुए मैनेजिंग डाइरेक्टर ने प्रशंसा-भरी दृष्टि से दिलीप की ओर देखा और हंसकर डोगरा से कहा –"दिलीप की उम्र अधिक नहीं है, लेकिन जिम्मेदार लड़का है । अपना काम अच्छी तरह से जानता है ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डोगरा को मैनेजिंग डाइरेक्टर की यह [illegible] पसंद नहीं आयी। उसने कुछ चिड़-[illegible] स्वर में जवाब दिया—"इस उम्र में [illegible] को अपने आप पर जरूरत से ज्यादा [illegible] हो जाया करता है। ये हजरत तो [illegible] आपको किसी हद तक कप्तान ही [illegible] लगे हैं।"

[illegible] तो लखनपाल के मरने के बाद [illegible] ही। मेरा खयाल है, मैं जल्द ही इससे [illegible] पर दस्तखत करवा लूंगा।"

[illegible]सिंहजी तो जरूरी कागजात लेकर [illegible] और डोगरा डेक पर खड़ा-खड़ा [illegible] रहा—"हजरत, अभी तक आप [illegible] बने नहीं हैं। यदि मैं चाहूं, तो आप [illegible] रहेंगे, जो हैं। बल्कि आपकी हालत [illegible] भी बदतर की जा सकती है। वक्त ही [illegible] कि दरअसल 'देवदूत' का कप्तान [illegible] लायक मैं हूं या आप।"

दिलीप अपने पिता से मिलने के लिए [illegible] गया। उसका बूढ़ा बाप उसे देख-[illegible] बेहद खुश हुआ। बेटे ने पिता के चरण [illegible] किलकते स्वर में निवेदन किया—[illegible]जी, शायद इस बार मैं जहाज का [illegible] बन जाऊं। जैसे ही मुझे पहली तन-[illegible] मिलेगी, हम लोग नया मकान ले [illegible] जहां आपके आराम के लिए एक [illegible] बगीचा भी होगा।"

दिन पिता के साथ गप-शप करते अच्छी [illegible] से गुजर गया। दिलीप अपनी यात्रा [illegible] कथा सुनाता रहा—विचित्र-विचित्र [illegible], कप्तान की मौत की खबर, लोगों का उसके प्रति प्रेम-भाव आदि-आदि। शाम को पिता की इजाजत लेकर वह पारो के घर पहुंचा। पारो के साथ दिलीप की सगाई पक्की हो चुकी थी। फकीरचंद भी पारो के उम्मीदवारों में से था। लेकिन न पारो के माता-पिता इस रिश्ते के लिए तैयार थे, न पारो स्वयं ही। फिर भी फकीर-चंद चक्कर लगाता रहता था। उसे भी भरोसा था कि सगाई तो टूट सकती है, पारो का दिल बदला जा सकता है और उसे हासिल किया जा सकता है। स्वाभा-विक रूप से इसके लिए एक ही उपाय था कि वह जहां तक बन सके, दिलीप की निंदा किया करे। इस समय पारो के घर पर बैठा वह दिलीप की आलोचना करने के प्रिय कर्म में ही व्यस्त था। उसी समय दिलीप सामने से आता दिखाई दिया। पारो की खुशी की सीमा नहीं रही। परम खुशी के साथ चरम स्फूर्ति सहित उसने दिलीप का स्वागत किया। दिलीप को अपने सामने इस रूप में देखकर फकीरचंद जल-भुन गया। उसका चेहरा मारे क्रोध और घृणा के काला-स्याह पड़ गया और रोआं-रोआं तन गया। बड़ी कोशिश से वह अपने आपको जब्त किये हुए था। जमे हुए दांत और तनी हुई शिराओं के कारण उसका सारा शरीर कांप रहा था।

दिलीप को अब ध्यान आया कि पारो के अलावा और भी कोई व्यक्ति वहां उपस्थित है और उसे कम-से-कम औपचारिक शिष्टा-चार उसके प्रति भी निभाना है। उसने मुस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कराकर फकीरचंद की ओर देखकर पूछा—"आपकी तारीफ, पारो ?"

पारो ने मन-ही-मन फकीरचंद को क्षमा कर दिया। बोली —"आओ, फकीरचंद, ये हैं दिलीप। आपने इन्हें नहीं पहचाना ? हमारे पड़ोसी फकीरचंद, लालचंदजी के लड़के।"

"अच्छा, बड़ी खुशी हुई मिलकर।"

लेकिन फकीरचंद को दिलीप से मिलकर बिलकुल खुशी नहीं हुई। दिलीप की बात का बिना जवाब दिये वह चुपचाप बाहर चला आया।

पचास कदमों के फासले पर एक शराब की दुकान पर उसे डोगरा मिल गया। इस तरह विक्षिप्तावस्था में भागते हुए फकीरचंद को रोककर उसने पूछा —"ओ हो, फकीरचंद तुम हो ! आओ, आओ, कुछ पियें। दिलीप से मिले कि नहीं ? कुछ बोल नहीं रहे हो, क्या बात है ?"

"मैं बहुत ही निराश हो गया हूं। शायद पारो की शादी बहुत जल्द दिलीप के साथ हो जाये। अपने दिल का हाल, बस मैं ही जानता हूं !"

"तुम चाहो, तो उसे रोक सकते हो।"

"जानता हूं। मैं उसे मार डालूंगा। लेकिन पारो का निश्चय है कि यदि दिलीप को कुछ भी हो गया, तो वह खुदकशी कर लेगी।"

"दिलीप को मारने की क्या जरूरत है जी ? कुछ दिनों की जेल ही उसके लिए काफी है। जहां वह जेल गया, वहां पारो

प्रिय की प्रतीक्षा कितनी मधुर!

तुम्हारी हुई।"

"तुम शायद कुछ ज्यादा पी गये हो। जेल भेजना मेरे हाथ में नहीं है। न तो दिलीप ने किसी का खून किया है, न किसी के घर पर डाका ही डाला है, जेल कैसे हो जायेगी?"

"पी तो है। पीने पर नशा भी मुझे आता है। लेकिन नशे में भी बात मैं पते की ही कहता हूं। सुनो, यदि यहां के अधिकारियों को यह मालूम हो जाये कि यह अंडमान द्वीप पर किसी से मिलने गया था और वहां से बंबई में देने के लिए किसी का खत ले आया है, तो उस पर काफी बड़ा जुर्म लगाया जा सकता है। यहां तक कि उस पर आतंकवादियों से मिले हुए होने का अथवा खुद आतंकवादी होने का इल्जाम लगाकर बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ने जेल भेजा जा सकता है।"

...कुछ देर तक दोनों सलाह-मशविरा करते ...। इसके बाद डोगरा ने बिना दस्तखत ...मजिस्ट्रेट के नाम एक खत लिखा, जिसे ...चंद ने डाक से रवाना कर दिया ।

× × ×

...रों के साथ दिलीप के विवाह में अब ...ही देर थी। दरवाजे पर शहनाई बज ...थी। उपस्थित वर तथा वधू-पक्ष के ...के कलरव में अचानक विघ्न पड़ा। ...सांच पुलिस कान्स्टेबलों के साथ एक ...स्पेक्टर ने अंदर आकर पूछा—"उप-...स्थित लोगों में दिलीपसिंह वल्द होशियार ...सिंह कौन है ?"

दिलीप ने आगे आकर जवाब दिया—"मैं हूं।"

इंस्पेक्टर ने वारंट पेश करते हुए कहा—"रूमानिया के बादशाह और कानून के ...म पर मैं आपको गिरफ्तार करता हूं।"

दिलीप ने चकित होकर पूछा—"मेरा ...म ?"

"यह आपको अदालत में ही बताया ...जाएगा।"

दिलीप को जिला मजिस्ट्रेट श्री विजय-...राव जोशी के सामने पेश किया गया। ...जयराव जोशी ब्रिटिश सरकार के परम ...क्तों में थे; लेकिन उनके पिता नारायण-...राव जोशी क्रांतिकारियों के पक्ष में भारत ...की स्वतंत्रता के हिमायती थे।

विजयराव ने दिलीप से पूछा—"सच-...बताओ, इस चिट्ठी में कहां तक सचाई है कि तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो और उनकी मदद कर रहे हो ?"

दिलीप ने जवाब दिया—"अपने जहाज पर लौटते समय मैं अंडमान द्वीप पर जरूर रुका था। जहाज पर मेरे कप्तान की काले बुखार के कारण मौत हो गयी। मरते वक्त उन्होंने मुझे एक पैकेट अंडमान द्वीप पर पहुंचाने का हुक्म दिया था। वहां से मुझे एक पत्र मिला, जो मुझे बंबई में एक सज्जन को पहुंचाना है। यह काम मैंने इसलिए किया कि मेरे कप्तान का यही हुक्म था।"

विजयराव जोशी ने कहा—"मुझे तुम्हारी बातों पर भरोसा होता है। जो चिट्ठी तुम्हें यहां देने के लिए दी गयी है, वह मुझे दे दो और हम तुम्हें बाइज्जत रिहा कर देंगे।"

दिलीप ने अपनी जेब से वह पत्र निकालकर विजयराव के हाथों में दे दिया। पत्र पर लिखे हुए पते को देखकर विजयराव के चेहरे का रंग बदल गया। यह पत्र उनके पिता के नाम था। मन में वे चाहे जितने घबराये हों, लेकिन उन्होंने चेहरे पर यह बात आने नहीं दी।

पूछा—"तुमने यह चिट्ठी पढ़ी है अथवा किसी के सामने इसका जिक्र किया है ?"

"जी नहीं। न तो मुझे यही मालूम है कि पत्र में क्या लिखा है और न मैं उन्हें ही जानता हूं, जिन्हें यह देना है। मैंने इसके बारे में किसी से कोई बातचीत नहीं की।"

विजयराव जोशी ने तेजी से पत्र पढ़ा। कुछ क्रांतिकारियों की योजनाएं थीं, जिनसे पता चलता था कि भारत को शीघ्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

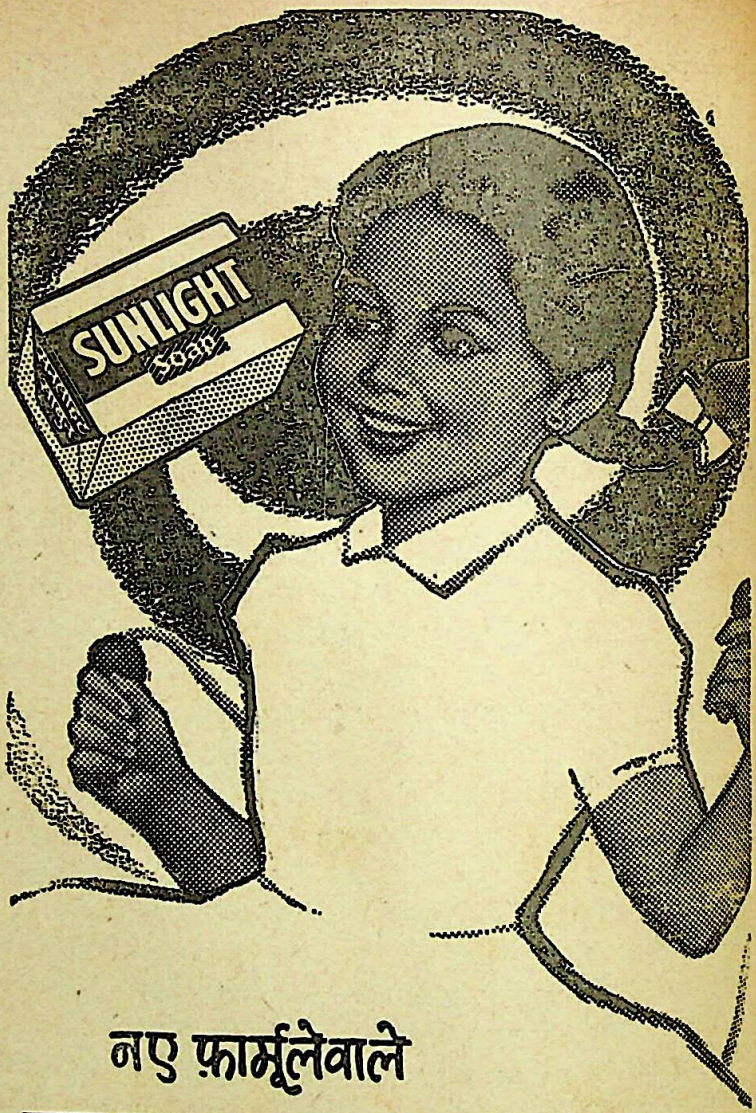

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट

से आप के कपड़े चमक उठते हैं!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

S. 56-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...करवाने की पुर-जोश कोशिश की ...रही है।

विजयराव ने एक क्षण के लिए सोचा, ...इस लड़के ने यह पत्र पढ़ लिया और ...किसी तरह उसे यह मालूम हो गया ...जिसे यह पत्र लिखा गया है, वह मेरा ...है, तो मेरा यह पद, मेरी यह प्रतिष्ठा ...ही समझो। उन्होंने तत्काल फैसला ...लिया कि उन्हें क्या करना चाहिये।

उन्होंने दिलीप से कहा—"मुझे उम्मीद ...कि मैं तुम्हें फौरन रिहा कर दूंगा; लेकिन ...पढ़ने के बाद ठीक वैसा करना मेरे ...मुमकिन नहीं है। तुम्हें यहां शाम तक ...पड़ेगा। तुम्हारे खिलाफ जो खास ...है, वह यह चिट्ठी ही है। मैं इसे ...कर देता हूं; बशर्ते तुम यह वादा करो ...इसके बारे में तुम किसी से कभी जिक्र ...करोगे।"

दिलीप ने फौरन जवाब दिया —"मैं ...करता हूं।"

तत्काल उस पत्र के टुकड़े-टुकड़े कर ...गये। एक क्षण के लिए उन्होंने सोचा— ...महत्वाकांक्षा और स्वार्थ के लिए ...इस नौजवान का बलिदान करना ही ...। अपने बचाव के लिए इसके सिवा ...उपाय नहीं है कि इसे लंबी अवधि ...जेल भज दिया जाये।"

विजयराव ने एक कान्स्टेबल को बुलाया, ...उसे कुछ कहा और इसके बाद वे ...की ओर मुखातिब होकर बोले— ...इसके साथ जाओ। शाम तक तुम्हें रोका जायेगा।"

दिलीप ने वह सारा दिन जेल की एक कोठरी में बिताया।

शाम के वक्त जेल के सुपरिंटेंडेंट के साथ कुछ कान्स्टेबल आये। एक ने कहा—"मजिस्ट्रेट विजयराव जोशी के हुक्म के अनुसार हम आपको लेने आये हैं।"

"चलिये।" दिलीप ने कहा, और वह उनके साथ चल दिया। कुछ देर तक पैदल चलने के बाद एक गाड़ी में और गाड़ी से एक नाव में उसे बैठाया गया। दिलीप की समझ में यह माया बिलकुल नहीं आ रही थी। उसका खयाल था कि अब वह आजाद है। लेकिन नाव में बैठते समय उसका माथा ठनका। उसने पूछा—"हम लोग कहां जा रहे हैं?"

"अंडमान द्वीप।"

"लेकिन वहां तो राजनैतिक कैदियों को रखा जाता है। मैंने तो कोई गुनाह नहीं किया है। मजिस्ट्रेट साहब ने मुझे कहा था ....."

एक संतरी ने जवाब दिया—"हमें क्या पता मजिस्ट्रेट साहब ने आपको क्या कहा है? हमें तो यही हुक्म मिला है कि आपको अंडमान द्वीप ले जाया जाये।"

नाव से बड़े जहाज और वहां से दो दिन की यात्रा के बाद उसे अंडमान के जेलखाने की एक कोठरी में बंद कर दिया गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसने अपराध क्या किया है और उसे यह किस गुनाह की सजा दी जा रही है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

DL-112-77 HI
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन गुजरते गये। शायद ही वह कभी सो सका हो। उसका खाना-पीना हराम हो गया। बंद पिंजरे में बौखलाये शेर की तरह वह अपनी कोठरी में चहल-कदमी करता रहा। इस तरह सात महीने गुजर गये। एक दिन जेल के इन्स्पेक्टर-जनरल जेल का मुआयना करने के लिए आये। वे कोई अंग्रेज अफसर थे। कच्ची उम्र के इस लड़के को इस हालत में देखकर उन्हें दया आ गयी। पूछा—

"कुछ चाहिये?"

दिलीप ने करुण स्वर में जवाब दिया—"मैं बस यही जानना चाहता हूं कि मैंने आखिर कौन-सा गुनाह किया है कि मुझे बिना मुकद्दमा चलाये यहां लाकर बंद कर दिया गया? मैं एक बेकसूर आदमी हूं। पता नहीं, मैं किसकी नीचता का शिकार हुआ हूं।"

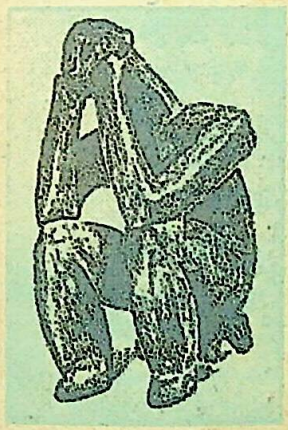

सर्वथा असहाय

इन्स्पेक्टर-जनरल ने जेल का रजिस्टर मंगवाकर देखा। वहां लिखा था—दिलीपसिंह वल्द होशियारसिंह। खूनी खतरनाक आतंकवादी। खास निगरानी रखी जाये।"

रजिस्टर बंद करते हुए इन्स्पेक्टर-जनरल ने सोचा—"बेचारा! इसके लिए कुछ भी करना मुमकिन नहीं।"

चार साल और गुजर गये। उस अंधेरी कोठरी में वह सड़ता रहा। खुशियों की उम्मीद से भरे हुए किसी मासूम को निराशा के अंधेरे में ढकेले जाने पर जो पीड़ा, जो निराशा होती है, उसका चरम दुख भोगते हुए पूरे चार साल गुजर गये। उसके दिमाग में बारंबार एक ही बात घूमती रहती—"आदमी की आदमी के खिलाफ दुश्मनी के कारण मैं इस नरक-कुंड में जल रहा हूं। एक दिन मैं इसका बदला जरूर लूंगा।"

इसके बाद वह आत्महत्या करने की बात सोचने लगा। उसकी सारी उम्मीदें खत्म हो गयीं। "अब एक ही उपाय है—मौत," वह मन-ही-मन बड़बड़ाने लगा—"मरकर मैं दूसरा जन्म लूं और इस अनाचार का बदला लूं। मरने के लिए एक ही उपाय है—बेहद कष्ट-दायक—भूखों मरना।" उसने खाना बंद कर दिया। धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य गिरता गया। उस पर जड़ता छा गयी। मौत के साम्राज्य के नागपाश उसके चारों ओर घेरा डालने लगे। इस रहस्यमय साम्राज्य का आदि भी मृत्यु है और अंत भी मृत्यु।

दीवार के सहारे एक दिन उसने अचानक घर्र-घर्र की आवाज सुनी। आवाज दीवार में से आ रही थी। उसे विश्वास हो गया कि कोई दूसरा कैदी आजादी हासिल करने के लिए यह दुस्साहस कर रहा है। आह, यदि मैं उसके साथ होता, तो उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक योजना का जन्म

"कॉफी की एक प्याली आपकी आलस दूर करती है, वाकपटुता बढ़ा देती है, आपके दिमाग में ताजगी भर देती है और कभी कभी आपकी जीभ की शिथिलता दूर करती है।

"अमेरिकन यूनियन की योजना की प्रेरणा कुछ कॉफी पीनेवालों के दिमाग में सन १७३७ में न्युयार्क के कॉफी हाउस में मिली थी। हमारे देश में जहां की जनता हमेशा अपने समाज, सम्प्रदाय, जाति के बारे में सोचती है वहां देश के हित को इनकी अधीनता, देश की आवश्यकता अनुसार जरूरत है। अगर कॉफी हाउस इन समस्याओं के प्रति हमारे अन्दर अनासक्ति दे सकें तो वे एक उपयोगी उद्देश्य को पूर्ति करेंगे।"

.....कॉफी बोर्ड भवन बंगलोर के उद्घाटन के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति के भाषण से उद्धृत...

कॉफी में स्फूर्ति का प्राचुर्य ..कही भी ..किसी भी समय

कॉफी बोर्ड, बंगलोर

FDS-CB-432-HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...नी मदद कर सकता ! वह धीरे-धीरे ...। उसने जेलर द्वारा भेजा हुआ खाना ...लिया। तीन दिन में उसमें कुछ शक्ति ...आयी। उसने अपना पानी पीने का ...तोड़ डाला। उसके टुकड़े और चम्मच ...हैंडल से वह एक विशालकाय पत्थर के ...ओर लगी सीमेंट को खरोचने ...। उसका खुदाई का यह काम तब ...चलता रहा, जब तक कि लोहे का एक ...आड़े न आ गया। इससे उसका सारा ...खत्म हो गया। निराशा के स्वर में ...मुंह से निकल पड़ा —"हे प्रभु ! मुझ ...दया करो। इस तरह निराश करके मुझे ...मरने दो।"

अचानक उसे किसी की धीमी, लेकिन ...ही प्यारी आवाज सुनाई दी। किसी ...कहा—"भगवान और निराशा की एक ...बात करनेवाला कौन है ?"

थोड़ी देर बाद दीवार के उस ओर का ...कैदी पत्थर हटाकर चूहे की तरह दिलीप ...कोठी में आ गया। अपना परिचय देते ...उसने कहा—"मेरा नाम अब्बू फकीर ...। मैं पेशावर का रहनेवाला हूं। मेरा ...था कि दीवार के बाहरी हिस्से में ...कर रहा हूं। खैर, तुमसे इस तरह ...हो गयी। अपने बारे में कहो।"

दिलीप ने अपनी कथा कह सुनायी। ...उसने कहा— "जाने किसने मुझे ...तरह से फंसाया है ? मेरी तो कोई हैसि-...ही नहीं है। इस तरह मुझे फंसाने से ...को क्या मिलेगा ?"

अब्बू फकीर ने पूछा —"अभी-अभी तुम कह रहे थे कि तुम अपने जहाज के कप्तान बननेवाले थे; तुम्हारी शादी भी होनेवाली थी किसी सुंदरी के साथ। सोच सकते हो, इन दोनों कामों को कौन रोकना चाहता होगा ?"

दिलीप के मन-मस्तिष्क में एक बिजली-सी कौंध गयी। उसके मुंह से अचानक निकल गया—"हां हां, याद आया। डोगरा और फकीरचंद ! लेकिन जेल भेजना उनके हाथ में नहीं। बिना मुकद्दमा चलाये मुझे यहां क्यों भेज दिया गया ?"

"बहुत साफ बात है," अब्बू फकीर ने कहा—"नारायणराव जोशी, जिन्हें वह चिट्ठी लिखी गयी थी, विजयराव जोशी के पिता हैं !"

"मजिस्ट्रेट के पिता ! अब सारी बात समझ में आ गयी। डोगरा, फकीरचंद और विजयराव जोशी, इन तीनों ने मुझे इस जिंदा कब्र में बिना कसूर ढकेल दिया।"

अब्बू फकीर ने दुखी होकर कहा—"इसका मुझे दुख है दिलीप कि जो कुछ हो चुका है, उसे खरोचने में मैंने तुम्हारी मदद की। मजबूरी के साथ तुम्हारे मन में बदला लेने की आग अब जिंदगी-भर धधकती ही रहेगी।"

अब्बू फकीर असाधारण विद्वान था। अगले आठ सालों तक बीच का पत्थर हटाकर दोनों लगभग रोज मिला करते। इस अरसे में अब्बू फकीर जो कुछ जानता था, वह सब कुछ दिलीप को सिखाता रहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऑफिस में हर दिन चुस्त रहना जरूरी है...

टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है

सफ़ेद कपड़ों को चमकीला बनाता है।

उसके उपरी उसे बहुत चाहते हैं। वह काम में चुस्त है। देखने में भी चुस्त। इसके लिए वह अपनी पत्नी की जहेमत तथा टिनोपाल का आभारी है जिनके कारण वह हर दिन चमकीले सफ़ेद कपड़े पहन पाता है।

आपके धुले हुए सफ़ेद कपड़े—कमीज़, साड़िया, ब्लाउज़, तौलिये, बच्चों के कपड़े वगैरह को आखिरी बार नलते समय थोड़ासा टिनोपाल डाल कर देखिए। इन्हीं कपड़ों में कितनी चमक आ जाती है! और इस पर खर्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। कपड़ों को हर दिन चमकीला सफ़ेद बनाने के लिए टिनोपाल इस्तेमाल कीजिए। सभी चुस्त लोग इसे ही पसन्द करते हैं। टिनोपाल एक आधुनिक, वैज्ञानिक, व्हाइटनर है... सभी प्रकार के कपड़ों के लिए एकदम हानिरहित।

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल रिजर्वलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

सुहृद गायगी लिमिटेड, पो. बा. नं. ९६५ बम्बई-१ बी आर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...के किसी कर्मचारी को इस विल में पड़े ...हुए दो चूहों की गुप्त मुलाकात की खबर ...नहीं मिल सकी। एक दिन अब्बू फकीर ...बीमार हो गया। उसने दिलीप को ...पास बुलाकर कहा—"दिलीप, अब मेरे ...शा गये हैं। मैं अब इस दुनिया को छोड़ ...शा रहा हूं। मुझे तुमसे एक बात कहनी ...हां से दक्षिण की ओर एक द्वीप है निको ...हां मेरी अथाह संपत्ति का खजाना ...हुआ है। मेरे मरने के बाद इस खजाने ...मेरी तरफ से तुम वारिसदार होगे।"

इसके बाद अब्बू फकीर ने दिलीप को ...भांति समझा दिया कि उस गड़े ...बजाने का सही अता-पता क्या है और ...कैसे हासिल किया जा सकता है।

दिलासा देते हुए दिलीप ने कहा—"नहीं ...भैया, तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे। ...बजाना आपका ही है और आपका ही ...। इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं।"

अब्बू ने अंतिम जवाब दिया—"तुम मेरे ...जैसे ही हो दिलीप। मेरे इस बंधन ...जीवन की एकमात्र आशा तुम्हीं तो थे। ...ने ही तुम्हें मेरे पास भेज दिया था। ...खुदा हाफिज!"

इसके बाद अब्बू फकीर से कुछ बोला ...गया। रात के लगभग एक बजे अब्बू ...मर गया।

दूसरे दिन पहरे पर तैनात चौकीदारों ...देखी। दो व्यक्ति आये, उन्होंने लाश ...लाकर लपेटा और चले गये। ...जाने के बाद दिलीप अब्बू फकीर की कोठरी में पत्थर को हटाकर फिर चला गया। उसने सोचा—"नहीं, मुझे मरना नहीं चाहिये। मुझ पर जिन लोगों ने जुल्म किया है, मुझे उनसे बदला लेना है; शायद कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनके उपकारों का बदला चुकाना भी जरूरी है। चूंकि इस कोठरी से सिवा मुर्दे के कोई कैदी बाहर निकल नहीं सकता, इसलिए मुझे मरे हुए अब्बू फकीर की जगह लेनी होगी।"

इसके बाद उसने अब्बू फकीर की लाश अपनी जगह पर लाकर रख दी और अब्बू फकीर का चाकू उसने अच्छी तरह से छिपाकर अपने पास रख लिया और कफन ओढ़कर पड़ रहा। उसी रात को दो-चार आदमी आये। उन्होंने लाश उठायी। एक आदमी मशाल लिये आगे-आगे चल रहा था। दिलीप के पांव में एक भारी पत्थर बांध दिया गया और बिना किसी विशेष मृतक-क्रिया के उसे उठाकर अथाह समुद्र में फेंक दिया गया।

इससे पहले कि पांव में बंधा हुआ वजन उसे समुद्र की गहराई में डुबा मारे, दिलीप ने चाकू से कफन चीर डाला और तेजी से ऊपर उठ आया। किनारे-किनारे तैरते हुए वह नजदीक के अनजान द्वीप के किनारे बैठकर सुस्ताने लगा। जिंदगी में एक लंबे अरसे के बाद आज पहली बार उसने अनुभव किया कि उषाकालीन सूर्य कितना सुंदर होता है और हर आदमी के लिए उसका कितना महत्व है। रेतीले किनारे पर सुस्ताते हुए उसने भगवान को लाखों धन्यवाद दिये।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने की आवश्यकता नहीं

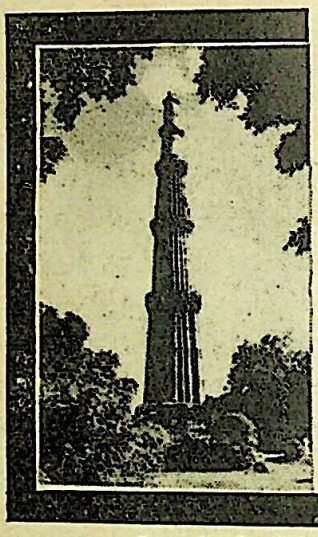

दिल्ली में जैसे
कुतुब
वैसे ही

ग्वालियर सूटिंग

पहनने वाले व्यक्ति
भी अलग ही
नजर आते हैं

वस्त्रों के प्रेमियों
के लिये सूटिंग के

GWALIOR FABRICS

निर्माता
ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (विविंग) कं० लि०. बिरलानगर-ग्वालियर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन बिना महसूल दिये चोरी से माल ले जानेवाली एक नाव में दिलीप को जगह मिल गयी। उसने अपने बारे में इतना ही बताया कि जिस जहाज से वह यात्रा कर रहा था, वह तूफान के चक्कर में नष्ट हो गया और वह किसी तरह बहते-बहते किनारे लग गया है। दिलीप की बढ़ी हुई दाढ़ी को देखकर एक नाविक ने मजाक उड़ाते हुए कहा—"तुम तो बिलकुल समुद्री डाकू जैसे लगते हो।"

उसने बिना बुरा माने जवाब दिया—"मैंने कुछ मनौती मानी थी कि जब तक मेरी मनशा पूरी न हो जाये, तब तक बाल कटवाऊंगा। लेकिन अब मिन्नत का वक्त गुजर गया है। आज तारीख क्या है?"

"२३ फरवरी १९४४।"

दिलीप सोचता रहा १४ साल! आह, दुनिया अब तक कितनी बदल गयी होगी। पता नहीं, मेरे पिता का क्या हाल हुआ होगा। वे जिंदा भी होंगे कि नहीं। पारो के साथ क्या हुआ होगा? और कैसे होंगे, डोगरा, गोपीचंद तथा विजयराव जोशी जिन्होंने मेरी जिंदगी के चौदह साल बरबाद कर दिये, मुझे जिंदा नरक भुगतने के लिए मजबूर कर दिया?

कोवार पहुंचकर उसने अपनी हजामत करवायी। नाविक के कपड़े खरीदे और नाव की चोरी करनेवाली नाव में काम करने लगा। एक दिन उसने मल्लाह से कोवार के पश्चिमी कोने पर छोड़ देने की प्रार्थना की। प्रार्थना आसानी से मंजूर हो गयी। यही वह जगह थी, जिसके बारे में मरते वक्त अब्बू फकीर ने उसे बताया था कि उसकी अथाह संपत्ति का खजाना यहां गड़ा हुआ है। बताये हुए चिह्नों को याद करता हुआ वह एक पहाड़ी की कंदरा के पास पहुंच गया। गुफा का मुख-द्वार एक बड़े शिलाखंड से बंद था। निकोबार से रवाना होते समय वह अपने साथ बारूद लेता आया था। उस विशाल शिला के नीचे बारूद रखकर उसने पलीता लगा दिया। कुछ ही क्षणों में धड़ाके की आवाज के साथ वह शिलाखंड उछलकर दूर जा गिरा और उतरने के लिए सीढ़ियां नजर आने लगीं। गुफा के अंदरूनी भाग के एक मोड़ पर दिलीप ने खुदाई शुरू की। कुछ ही देर बाद कुदाली किसी लकड़ी की चीज से टकरायी। वह तब तक खुदाई करता रहा, जब तक कि उसे एक बड़ा भारी संदूक नजर नहीं आ गया। उसने उतावली के साथ संदूक का ढक्कन खोला। जंग के कारण वह जर्जर हो रहा था। चरमराकर संदूक खुल गया। वह पूरा सोने से भरा हुआ था। इतना धन कि उसका मूल्य आंका न जा सके। खुशी के मारे दिलीप नाच उठा। विश्वास हो गया कि उसे भरी-पूरी जिंदगी वापस नसीब हो गयी है। अब उसे न पद की कमी रहेगी, न प्रभाव की, न ताकत की। उसने निश्चय किया—"अब मैं उन आदमियों से बदला लूंगा, जिन्होंने मुझे दुर्भाग्य के गर्त में धकेल दिया था।"

जब दिलीप अपने पैतृक निवासस्थान

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पहुंचा, तो उसे पूरी हकीकत मालूम हुई। इन चौदह वर्षों में उसका बूढ़ा बाप, निराश और दुखी होकर मर गया था। जिस कंपनी के जहाज में वह नौकरी करता था, उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर को इसलिए काफी तकलीफ उठानी पड़ी कि उसने दिलीप को छुड़वाने की कोशिश की थी। डोगरा साहब भी बड़े भाग्यशाली निकले। उन्होंने काफी धन-दौलत कमायी। वे बंबई में ही रहते थे। लेकिन अब लाखों के आसामी माने जाते थे। उनका अपना बैंकिंग का धंधा था।

विजयराव जोशी भी अपने जीवन में काफी सफल-सुखी थे। इस समय वे बंबई के प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट थे।

फकीरचंद ने भी काफी तरक्की की। वह सेना में भर्ती हो गया था। काफी ऊंचा पद और मर्यादा थी। वह भी बंबई में ही रहता था।

पारो ने अठारह महीने तक दिलीप का इंतजार करने के बाद यह मानकर कि दिलीप की मृत्यु हो गयी है, फकीरचंद से शादी कर ली।

इस अंतिम समाचार से दिलीप को सबसे ज्यादा चोट पहुंची। उसके मुंह से इतना ही निकला—"दुर्बलता, तेरा नाम औरत है।"

ठंडी सांस लेकर उसने मन-ही-मन सोचा—"अच्छी बात है। डोगरा, विजयराव और फकीरचंद सभी ने खूब तरक्की की, ठीक है। देख लेंगे। मौत इन सबके लिए बहुत ही सीधी और आरामदायक सजा होगी। नहीं, इन्हें भी इसी तरह तड़पना होगा, जिस तरह मैं तड़पा हूं। इन्हें भी इसी तरह धीमी गति से, लेकिन निरंतर तड़पकर दम तोड़ना होगा।

"मैं अब धनवान हूं। थोड़ी होशियारी से काम करना होगा। भगवान, मुझे शक्ति देना कि जिन्होंने पाप किये हैं, उन्हें मैं सजा दे सकूं।"

दिलीप लगातार तैयारी करता रहा कि वह निश्चित उद्देश्य के अनुसार डोगरा, विजयराव जोशी और फकीरचंद को उचित सजा दे सके। इसमें उसे कुछ साल लग गये। इसके बाद अचानक बंबई के समाज में एक बहुत बड़े आदमी, निकोबार के नवाब का आगमन हुआ। सारे शहर में उनके शाही खर्च और शानो-शौकत का दबदबा छा गया।

फकीरचंद लोकसभा के माननीय सदस्य थे। पारो-फकीरचंद की एक ही संतान थी अतुलचंद्र। बंबई आने से पहले एक बार निकोबार के नवाब साहब ने अतुलचंद्र की जान बचायी थी। एक दिन वे सीधे अतुल के यहां पहुंच गये।

अतुल १८ साल का हंसमुख, शील-संस्कारयुक्त नौजवान था। उसने नवाब साहब को सादर ग्रहण किया। अपनी जिंदगी बचाने के लिए कृतज्ञता प्रकट करने के बाद वह अपने पिता फकीरचंद को बुला लाया।

फकीरचंद ने स्वागत के स्वर में कहा—"आपके दर्शनों से हम, और आपके पधारने से यह घर पवित्र हो गया। आइये, अतुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...की तारीफ काफी सुन चुका हूं।"
...ही देर में ड्राइंग रूप में पारो भी आ
...। नवाब साहब को देखकर एक क्षण
...ए तो वह वहीं स्थिर खड़ी रह गयी।
...ने अपनी मां को संभालते हुए कहा—
...क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?"
...रो ने अपने आपको संभाल लिया।
...ी—नहीं, मेरा मन कृतज्ञता से भर उठा
...आदमी को देखकर, जिसने मेरे बेटे की
...रक्षा की है।"
...ा पारो की ओर
...नवाब साहब ने जवाब
...—शुक्रिया अदा करने
...इसी उदारता अच्छी
...बीजी। एक आदमी
...जिंदगी बचाना, एक
...की भावनाओं को
...रक्षा, अथवा एक मां के
...की धड़कन को सम-
...यह सब इतना बड़ा
...नहीं है कि इसकी
...ज्यादा तारीफ की
...। यह तो इन्सानियत
...क बहुत ही साधारण-सा काम है।"
...रो ने मानो दिलीप की बात सुनी ही
...। उसने इतना ही कहा—"आज आप
...आ जाएं, तो यह हमारा अहोभाग्य।"
...ी नहीं। यह मुमकिन नहीं है।"
...ी, फिर कभी सही। लेकिन आप
...जरूर।"
...जरूर आऊंगा।"

दूसरे दिन नवाब साहब डोगरा से मिले। बड़े तपाक से स्वागत हुआ। इज्जत के साथ कुर्सी देने के बाद डोगरा ने कहा —"नवाब साहब, निकोबार के बैंक से मुझे आपके बारे में एक पत्र मिला है, जिसमें रुपये उठाने के लिए आपको सीमाहीन सुविधा देने के लिए हमारे बैंक को लिखा गया है।"

शान के साथ बैठते हुए नवाब साहब ने डोगरा की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा —"इसमें कोई खास बात तो दिखाई नहीं देती।"

सिगरेट की राख झाड़ते हुए, हंसकर डोगरा ने कहा—"नहीं, वैसे कोई बात नहीं। मैं इस सीमाहीन—अनलिमिटेड—शब्द के बारे में सोच रहा था। साधारणतया एक बैंक दूसरे बैंक के साथ पत्र-व्यवहार करते समय इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करता।"

"ओह", नवाब साहब ने कहा— "शायद आपको डर लग रहा होगा कि मैं इतना रुपया यहां उठा लूं, जितना कि आपका बैंक भुगतान नहीं कर सकता?"

डोगरा को नवाब साहब की यह बात काफी अपमानजनक लगी। लेकिन अपने को जब्त करके बोला — "हमारे बैंक की जमापूंजी के बारे में आज तक किसी ने प्रश्न नहीं उठाया है। खैर, आप कितना रुपया उठाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनमोहिनी नफ़ीस एम्ब्रॉइडरी

आपका दिल जीत लेने वाली। हकोबा एम्ब्रॉइडर्ड कपड़े की चोली आपकी हर साड़ी के साथ एक अलौकिक ढंगसे मैच करती है।

क्यों कि ..... **हकोबा** आपकी पोशाक में जादू भर देता है।

फ़ैन्सी कॉर्पोरेशन लिमिटेड १६ अपोलो स्ट्रीट, बम्बई-१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...हैं चार-पांच लाख ?"

"चार-पांच लाख से क्या होगा ? इतनी ...रकम के लिए मुझे यहां खाता खोलने ...ही क्या थी ? मेरा खयाल है कि ...साल में मेरा काम लगभग तीस लाख ...जायेगा।"

...की खोपड़ी के बचे-खुचे बाल खड़े ...। उसके मुंह से अचानक निकल पड़ा— ...लाख !"

...का पसीना पोंछते हुए उसने मुस्क-...की चेष्टा करते हुए कहा— "सो तो है ...कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। बैंक ...ही है।"

...दिन नवाब साहब ने अपने नौकरों ...मजिस्ट्रेट विजयराव जोशी की ...और लड़के की जिंदगी बचाने की ...कर ली। विजयराव जोशी ...के मकान पर उसे धन्यवाद देने के ...आये। बोले—"आपके प्रति अपनी ...दरशाने के लिए ही मैं आया हूं।"

...स्वागत में शराब का प्याला देते ...दिलीप ने कहा—"किसी पिता के लड़के ...जिंदगी बचाने के लिए मैं निमित्त बन ...यह मेरा सौभाग्य है।"

...के बाद इधर-उधर की बातें चलने ...और विषय बदलकर न्याय पर बहस ...हो गयी। दिलीप ने कहा—"मैंने लगभग ...देशों के कानून का अध्ययन किया है। ...बार मैंने अपराधवृत्ति की प्रकृतिदत्त ...—जैसे को तैसा—अथवा प्रतिकार के ...तुलना की है। अपराधियों को कानून द्वारा जो दंड दिया जाता है, वह उन लोगों की सत्ता के अधीन है, जो पद पर आसीन हैं—जैसे, मजिस्ट्रेट। लेकिन प्रकृति का जो न्याय है, वह उस आदमी द्वारा किया जात है, जिसे भगवान ने इस धरती पर उसी मकसद के लिए भेजा है।"

"लगता है, आप शायद उन्हीं आदमियों में से हैं।"

"जी हां, किसी हद तक। भगवान की मर्जी अथवा प्रकृति के इस न्याय को पूरा करने के लिए मैंने इस कदर तैयारी की है कि कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं खुद आदमी ही नहीं रहा।"

यहीं पर एक दिन नवाब की मुलाकात मनमोहन से हो गयी। अपने पुराने मैनेजिंग डाइरेक्टर का यह सुपुत्र था। फिलहाल फौज में। काफी सुंदर, तंदुरुस्त और हंसमुख। एक दिन फकीरचंद के लड़के अतुल ने परिचय कराते हुए मनमोहन के बारे में कहा—"यूनिफार्म के नीचे एक बहुत बड़ा दिल और बेहद हिम्मत छिपी हुई है नवाब साहब, जो शायद यहां के किसी और फौजी अफसर में न हो।"

इस नौजवान से मिलकर नवाब को सचमुच बड़ी खुशी हुई। दरियादिल और चुस्तहिम्मत, अपने बाप का असली बेटा है यह मनमोहन—नवाब साहब ने मन-ही-मन सोचा।

मनमोहन नवाब साहब को एक ही नजर में भा गया। पर नवाब को यह मालूम नहीं था कि नवयुवक मनमोहन विजयराव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

HIN

अब लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

२०० ग्राम मध्यम आकार

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं
शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
एजेंटस: सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पहली पत्नी की लड़की वैज-
को दिल दे बैठा है। वैजयंती का भी
मोहन के प्रति अपरंपार स्नेह था। पर
जानती थी कि मनमोहन के साथ शादी
की उसके पिता किसी भी हालत में
नहीं देंगे। उसका खयाल था कि
पिता मजिस्ट्रेट साहब उसके प्रति
हैं और उसकी विमाता को उसमें
नेली लड़की में) इसलिए दिलचस्पी
कि उसका सारा प्यार अपने इकलौते
आदित्य में केंद्रित है। उसे वैजयंती
ईर्ष्या भी थी,
अपने नाना की
की वही एक-
उत्तराधिकारिणी
उसकी विमाता
थी कि वह
संपत्ति भी
को मिल जाये।
विजयराव जोशी
द्वितीय पत्नी
अपने पुत्र के प्रति
कामना की वात
दिनों में नवावे
कुमार को भी
हो गयी। एक
उनके घर पहुंच
। घर में वैजयंती
विमाता अर्थात
विजयराव जोशी की
मौजूद थी।

लगभग चौदह-पंद्रह साल का आदित्य अपनी मां के पास ही खेल रहा था। आगंतुक महत्वपूर्ण अतिथि के सम्मान में किसी तरह का दोष न रह जाये, इसलिए बड़े तपाक से उनका स्वागत करते हुए मां ने अपने बेटे को बाहर खेलने के लिए भेज दिया।

नवाब साहब के साथ वैजयंती की विमाता की काफी बातचीत होती रही। कुछ ही देर में बातचीत का विषय विष तथा उसके उपयोग पर चला आया। वैजयंती की विमाता का खयाल था कि आर्सेनिक विष (संखिया) विशेष हानि नहीं पहुंचा सकता और उसे शरीर में बड़ी आसानी से पहुंचाया जा सकता है।

नवाब साहब ने जवाब दिया—"सच बात तो यही है। लेकिन ऐसे भी कई जहर हैं, जो किसी को दे दिये जायें, तो वे किसी तरह का कोई निशान नहीं छोड़ते। यही लगता है कि जो मरा है, एपोप्लेक्सी की बीमारी से ही मरा है।"

चाय तैयार करते हुए वैजयंती की विमाता ने कहा—"कुछ भी हो अपराध आखिर अपराध है, भले ही वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

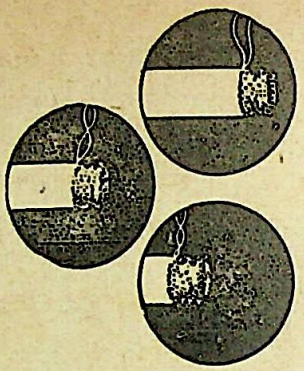

पनामा

आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती है।

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई -५१
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT. (P) 633 Hin. Greens' Adv.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ही चतुराई के साथ क्यों न किया ...आखिर अंतरात्मा तो रहती ही है।"

नवाब ने कहा—"यह तो सही बात है कि ...रात्मा रहती है; लेकिन यही अंतरात्मा ...त्मी को हजारों बहाने ऐसे बता देती है, ...अपराध के औचित्य को प्रमाणित करते ...मसलन मां का प्रेम। इसकी काफी ...हिमा गायी गयी है। इसी मातृत्व के कारण ...चोरों को औचित्य प्राप्त हो जाता है।"

...ड़ी देर चुप रहने के बाद वैजयंती की ...ता ने धीरे-से नवाब साहब को कहा—...तो जानते ही हैं नवाब साहब, केमिस्ट्री ...प्रिय विषय रहा है। उसमें आज भी ...बड़ी दिलचस्पी है।"

नवाब शायद इसके लिए तयार ही थे। ...—यह तो बड़ी खुशी की बात है। कल ...कुछ बेहद दिलचस्प रासायनिक ...भेजूंगा। अभी तो चलता हूं।"

नवाब साहब ने जाते समय सोचा—"बहुत ...। बीज बंजर भूमि में नहीं बोये गये।"

...के बाद नवाब साहब ने अपना ध्यान ...की ओर केंद्रित किया। एक पोस्ट ...में रिश्वत देकर उन्होंने एक समा...को झूठे तार भिजवाने का प्रबंध ...किया। इस तार द्वारा भेजे गये समाचार ...होता था कि सिंगापुर में भयंकर ...होनेवाला है। डोगरा साहब के ...स्यों के शेयर थे। उन्होंने यह समा...पढ़ते ही, सिंगापुर के अपने तमाम शेयर ...भाव पर भी बिके, निकाल डाले। ...दिन उसी समाचारपत्र में छपा कि सिंगापुर के विप्लव के बारे में जो समाचार छपा था, वह निराधार था। इस गलती के लिए तार-आफिस की गड़बड़ी जिम्मेदार है। डोगरा सिर थामकर बैठ गया—एकमुश्त छः लाख का घाटा और वह भी बिना वजह!

इसके तत्काल पश्चात नवाब साहब ने अपना ध्यान फकीरचंद की ओर केंद्रित किया। ब्रिटिश सरकार के जमाने में अफगानिस्तान के कबाइलियों के साथ लड़ते समय अली जाफर की पूरी दौलत इन्होंने सबकी नजर बचाकर अपने कब्जे में कर ली थी। इस राज का पता किसी तरह नवाब को लग गया। दूसरे ही दिन एक स्थानीय समाचारपत्र में एक खबर छपी:

एक तथ्य जिसके बारे में किसी को किसी तरह की जानकारी नहीं है, हमारे ध्यान में आया है। अली जाफर की लगभग दस लाख की संपत्ति एक हिन्दुस्तानी फौजी अफसर डकार गया था, जिसका नाम फकीरचंद है। अली जाफर की दोस्ती तथा विश्वास का इस तरह से नाजायज लाभ उठाया गया।

—नवाबे निकोबार

इस समाचार के छपते ही लोकसभा में शोर मच गया। फकीरचंद से भरी लोकसभा में प्रश्न पूछा गया।

पर फकीरचंद ने अपने आपको निर्दोष घोषित किया।

लेकिन तभी अली जाफर की लड़की वहां उपस्थित की गयी। उसने फकीरचंद को पहचान लिया। वह चीखकर बोली—"इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...के लिए तुमने मेरे पिता का खून किया ...। तुम खूनी हो।"

...जाफर की लड़की को देखते ही ...चंद पागलों की तरह लोकसभा से ...खड़ा हुआ। लोकसभा के अध्यक्ष ने उस ...लगाये गये आरोपों को स्वीकार किया ...खुले आम ऐलान किया कि फकीर-...ने लोकसभा के समक्ष झूठा बयान दिया ...अपने साथी के साथ धोखेबाजी की। ...अदालत के जिम्मे सौंप दिया गया।

...चंद के लड़के अतुल की समझ में ...बात नहीं आयी कि इतने अच्छे ताल्लु-...होते हुए भी, नवाब निकोबार ने सरे-...उसके पिता को जलील क्यों किया। ...सकता है, जो कुछ कहा गया है, वह सब ...हो; लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ...साहब को यह हक है कि वे किसी की ...को मिट्टी में मिला दें।

...साहब एक थियेटर में नाटक देख ...। अतुल वहीं पहुंच गया। सीधे नवाब ...के पास जाकर उसने पूछा—" मेरे ...के साथ आपने जो व्यवहार किया है, ...लिए मैं आपसे जवाब-तलब करना ...हूं।"

...उत्तेजित हुए नवाब ने जवाब दिया ...जवाब-तलब किया करता हूं, किसी ...जवाब-तलब करने की इजाजत नहीं ...।"

"लेकिन आपको इस बात का जवाब देना ...कि आपने मेरे पिता को इस तरह सरे-...बदनाम करने की हरकत क्यों की ? ..... मैं आपको चुनौती देता हूं....."

"तो तुम द्वंद्व करने पर उतारू हो! अच्छी बात है, यदि पिस्तौल चलाना जानते हो, तो कल ११ बजे अमुक जगह पर मुझसे मिलना। तब तक तुम्हारा दस्ताना मेरे पास रहेगा। पिस्तौल की गोली के साथ वह लौटा दिया जायेगा।"

अतुल इस चुनौती को स्वीकार कर चला गया। मनमोहन नवाब साहब के पास ही बैठा था। चिंतित स्वर में उसने पूछा—"आप अतुल के साथ क्या करेंगे?"

"कल ठीक ग्यारह बजे मैं अतुल को मार डालूंगा।"

"लेकिन नवाब साहब, अपने पिता का वह इकलौता लड़का है। उन्हें बहुत दुख होगा इससे।"

"मेरे सामने उसके बाप की बात मत करो। उसे दुख हो, इसकी मैं अधिक-से-अधिक कोशिश करूंगा। कारण तुम समझ नहीं सकोगे। लेकिन एक दिन तुम्हें सही हकीकत मालूम हो ही जायेगी। चलो चलें।"

रात के लगभग दस बज चुके थे। किसी महिला ने दरवाजे पर दस्तक दी। नवाब साहब ने खुद उठकर दरवाजा खोल दिया। पूछा—"कौन हो तुम?"

"दिलीप, तुम मेरे लड़के की हत्या नहीं करोगे। उसे मारोगे नहीं।"

"किसका नाम लिया तुमने?"

"तुम्हारा ही दिलीप, तुम्हारा। इसे शायद सिर्फ मैं ही नहीं भूल सकी हूं। दिलीप, यह पारो है, जो तुम्हारे दर पर आयी है!"

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SHB2/NGB-80AH.N

सेविंग्स एकाउण्ट खोलने के संकल्प किए कितने दिन हुए?

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज में एकाउण्ट का आज से ही आप शुभारम्भ कीजिए। आपकी बचत बढ़ती जायगी और ब्याज मिलता जायगा।

आपकी संचित रकम चाहे कितनी कम क्यों न हो नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ के समक्ष आप सर्वदा माननीय हैं।

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समितिबद्ध : सदस्यों का दायित्व सीमित

बम्बई की शाखायें :—९०, महात्मा गान्धी रोड ; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लायडज़ ब्रान्च), मिन्ट रोड, (मिन्ट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर) ; २१/२९, प्रिन्सेस स्ट्रीट, (लायडज़ ब्रान्च) ; ११७-११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, मायडवी ; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सान्ता क्रुज़ ; २/५७१, गोवालिया टैन्क रोड, कन्वाला हिल ; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर ; २४बि,फ्लब रोड, बाइकला।
ठाणा :—आग्रा रोड, कोलबाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"[illegible] बात है। देवीजी, पारो मर [illegible] है।"

"पारो जिंदा है दिलीप, और उसे सब [illegible] याद है। सिर्फ पारो ही, सिर्फ मैं ही तुम्हें [illegible] सकी—जब कि तुम अभी पहली बार [illegible] आये थे। दिलीप, एक बात पूछती [illegible] फकीरचंद से बदला लेने के लिए तुम इस [illegible] पागल क्यों हो रहे हो, जबकि असल [illegible] मैं हूं; क्योंकि जब तुम जेल में [illegible] मैंने ही उससे शादी करना मंजूर [illegible] था।"

"देवीजी, इस फकीरचंद के कारण ही मैं [illegible] था।"

दिलीप ने सारी दास्तान कह सुनायी। [illegible] हृदय और आंसुओं से भरे चेहरे से [illegible] चुपचाप दिलीप के इतिहास को सुनती [illegible] जैसे कोई भयंकर सपना देख रही हो। [illegible] से वह इतना ही कह सकी—"दिलीप [illegible] कर दो। माफ कर दो दिलीप, मेरे लिए [illegible] माफ कर दो।"

"अपने भगवान के प्रति गद्दारी करूं? [illegible] आत्मा से विद्रोह करूं? उस भगवान [illegible] खिलाफ, जिसने मुझ मरे हुए को पूरी [illegible] देकर कुदरत का फैसला पूरा करने के [illegible] तैनात किया? नामुमकिन। मैं बदला [illegible] ही, इसलिए कि चौदह साल तक मैंने [illegible] कुछ तड़प-तड़पकर भुगता है, वह भी [illegible] कसूर के।"

"अच्छी बात है दिलीप। लो बदला। [illegible] इससे तुम्हें चैन मिले। लेकिन मेरी [illegible] जोड़कर एक ही प्रार्थना है दिलीप कि तुम मुझसे बदला लो, मेरे पति ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है, उससे बदला लो; लेकिन मेरे इकलौते लड़के से नहीं। इसे बख्श दो दिलीप। यह मत सोचो कि मैंने कुछ भुगता ही नहीं है।"

दिलीप उठ खड़ा हुआ। चीख-चीखकर कहने लगा—"तुमने क्या भुगता है पारो? अपने बाप के अपनी गैरहाजिरी में भूखों मरने का दुख भोगा है तुमने? तुम इस दुख का अंदाज नहीं लगा सकतीं कि जिस स्त्री को किसी ने प्यार किया हो, वह उसके प्रतिद्वंद्वी का हाथ थाम ले, जबकि प्रेमी किसी जेलखाने के अतल अंधकार में पड़ा सड़ रहा हो!"

"हां, यह सच है। इतना दुख मैंने नहीं भोगा। लेकिन सच्चाई यह भी है दिलीप कि मैं आज रात के इस समय आयी हूं उस आदमी के पास, जिसे मैं प्यार करती थी और जिसकी पिस्तौल की नली मेरे लड़के के सीने की ओर उठी हुई है!"

इसके आगे पारो से बोला नहीं गया। वह चुप हो गयी। थोड़ी देर तक दिलीप सोचता रहा। इसके बाद उसने शांत स्वर में कहा—"अच्छी बात है। तुम्हारा लड़का जिंदा रहेगा। उसकी जगह तुम्हारे लड़के की गोली का शिकार मैं बन जाऊंगा!"

"तुम इतने बड़े नहीं होते दिलीप, तो रात के इस अंधकार में मैं तुम तक पहुंच नहीं पाती। एक स्त्री को इससे ज्यादा कहने का हक नहीं है दिलीप..... कि उसका दिल आज भी वैसा ही है। बस।"

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"रात बहुत हो रही है। अब तुम जाओ।" दिलीप उसे दरवाजे तक पहुंचाकर दिलीप लौट आया।

अपने बिस्तर पर करवट बदलते-बदलते वह यही बड़बड़ाता रहा—"मैं भी कितना मूर्ख हूं! मैंने उस दिन अपना सीना क्यों न चीर डाला, जिस दिन मैंने बदला लेने का निश्चय किया था।"

दूसरे दिन सवेरे ही मनमोहन नवाब साहब के घर पहुंच गया था। नवाब साहब और अतुल के द्वंद्व का, नवाब साहब की तरफ से वही साक्षी और मध्यस्थ था।

नवाब साहब ने मेंटल-पीस पर ताश का एक कार्ड रख दिया। पिस्तौल हाथ में लेकर उन्होंने मनमोहन से पूछा —"तुमने मुझे कभी पिस्तौल चलाते देखा है?"

मनमोहन को भी यही ताज्जुब हो रहा था। बोला —" कभी नहीं।"

इसके बाद चार फायर हुए और चिड़ी के इक्के के चारों हिस्सों में छेद हो गये।"

मनमोहन आश्चर्यचकित रह गया। बोला—"ताज्जुब है, नवाब साहब! मेरी आपसे यही विनती है कि आप अतुल को मारें नहीं। इस अभागे लड़के की मां भी है।"

"ठीक कहते हो मनमोहन। अतुल मुझे मार डालेगा।"

"लेकिन नवाब साहब!"

"मैं काफी जी लिया। बहुत हो गया।"

निश्चित स्थान पर नवाब साहब अतुल का इंतजार करते रहे। समय गुजरता जा रहा था, लेकिन अतुल नहीं आया। मनमोहन ने कहा—"दस मिनिट गुजर चुके हैं।"

इसी समय एक घोड़े पर अतुल आता दिखाई दिया। नीचे उतरकर उसने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा—"आप सब लोगों की साक्षी देकर मैं नवाब साहब से कुछ कहना चाहता हूं। महोदय, मैंने आपको अपने पिता के रहस्यों का पर्दाफाश करने के कारण चुनौती दी थी। मेरा खयाल था कि हकीकत चाहे जो हो, आपको कोई अधिकार नहीं था कि आप उन्हें इस तरह की सजा देते। लेकिन इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि आपको यह अधिकार था। मेरे पिता द्वारा किया गया विश्वासघात, दुख, प्रतारणा ही वे कारण हैं, जो आपको यह अधिकार देते हैं। यह जानने के बाद आपने जो कुछ किया, उसे मैं जायज मानता हूं। मैं सरेआम यह घोषणा करता हूं कि आपका बदला लेना जायज था। और मैं अपनी चुनौती वापस लेता हूं—यदि आप मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें।"

नवाब साहब समझ गये कि पारो ने अपने लड़के को सारी हकीकत बता दी है। उससे हाथ मिलाकर कहा—"तुम्हारी इस याचना स्वीकार करने में मुझे गौरव महसूस होता है।"

एक बार उनकी तबीयत हुई कि इस लड़के को वे अपने गले से लगा लें। यह लड़का उन्हीं का पुत्र हो सकता था। लेकिन जब्त कर गये।

लेकिन अतुल के पिता यह जानने के लिए बेहद उतावले हो रहे थे कि उनके लड़के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...नवाब के द्वंद्व का नतीजा क्या हुआ। ...ने आकर इत्तिला दी –"अतुल ने ...ली।"

उन्होंने दो तलवारें उठायीं और सीधे ...साहब के यहां पहुंच गये। बोले– ...कि मेरा लड़का तुमसे नहीं लड़ेगा, ...यह काम मुझे ही करना पड़ेगा। ...इससे पहले कि मेरी तलवार तुम्हारा ...छेद दे, मैं यह जान लेना चाहता हूं ...तुम दरअसल नवाबे ...कोवार बने हुए हो ...?"

नवाब साहब कुछ ...के लिए ड्राइंग रूम ...गये। जब वे लौट-...आये, तो नाविक-ड्रेस ...हुए थे। बोले– ...चंद पहचानते हो ...आदमी को?"

दिलीप!" फकीर-...के मुंह से चीख-सी ...गयी। वे वहां से ...भाग खड़े हुए।

आत्मप्रतारणा

...वाणी में बैठकर पागलों की तरह ...लगे –"चलो, घर चलो। जल्दी, ...जल्दी!"

लेकिन देर हो चुकी थी। जब वे अपने ...पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि अतुल अपनी ...को लेकर, घर छोड़कर जा रहा है। ...क्षण-भर इस दुष्कांड को देखते रहे। ...बाद घर के अंदर चले गये। सरेआम ...वदनामी, दिलीप को जीवित देखना और उसके बाद इकलौते लड़के तथा पत्नी का छोड़कर चले जाना, इस उम्र में उनसे सहा नहीं गया।

मां और बेटा अभी तक गली पार भी नहीं कर पाये होंगे कि परदों की सरसराहट सुनाई दी, इसके बाद पिस्तौल की ध्वनि सारे वातावरण में गूंज उठी।

फकीरचंद ने आत्महत्या कर ली थी।

फकीरचंद की मृत्यु के बाद नवाबे निकोबार का ध्यान विजयराव जोशी की ओर गया। वैजयंती की विमाता के साथ उस दिन की जहर संबंधी बहस के बाद उस घर में मौत का तांडव शुरू हुआ। मौत के पहले शिकार हुए वैजयंती के नाना। डाक्टरों ने यही बताया कि उनकी मृत्यु एपोप्लेक्सी के कारण हुई है। कुछ ही दिनों बाद नानी बीमार हुई।

उसी दिन वैजयंती की मुलाकात मनमोहन से हुई। वह रोते-रोते इतना ही कह सकी –"सारे घर में मनहूसियत छायी हुई है। दम लेने में भी तकलीफ होने लगी है।"

मनमोहन ने प्रस्ताव रखा–"इस घर को छोड़ दो वैजयंती। हम यहां से कहीं दूर चल दें और ब्याह कर लें। जब तक कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी सुन्दरता में चार चांद लगाइये
उदयपुर का
गाय छाप

ब्राह्मी आँवला तैल
और काला दन्त मंजन
इस्तेमाल करके देखिए कि
आपमें कितनी मोहकता छिपी थी!

आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड
उदयपुर, वाराणसी, हैदराबाद

दमकते बाल
और
चमकते दाँत

AS-41

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...र मित्र सारे मामले को रफा-दफा करके ...र पिता को इस शादी पर अपनी सह- ...ी जाहिर करने के लिए राजी न कर लें, ...न यहां लौटकर नहीं आयेंगे।"

...लेकिन वैजयंती मृत्यु-शैया पर पड़ी ...ी को छोड़ने को राजी नहीं हुई।

...सरे दिन नानी की मृत्यु हो गयी।

...विजयराव जोशी ने कहा—"आह, मौत ...ने अपना डेरा मेरे घर में ही डाल ...या है।"

...डाक्टर ने जवाब दिया—"मौत ने नहीं, ...ी अपराधी ने।"

..."मेरे घर में ?"

..."हां, राव साहब, आपके घर में ! घर ...में कोई आदमी खून-पर-खून किये जा ...रहा है। एक बात बताइये, आपके सास- ...की मौत से किसे लाभ पहुंच सकता ...आपकी लड़की वैजयंती को ?"

..."लेकिन वह किसी की हत्या करे, यह ...सम्भव है।"

..."नहीं राव साहब, अपराधी की हिम्मत ...बढ़ती जा रही है। एक मजिस्ट्रेट के नाते ...जो जहर देनेवाले हत्यारे को कानून ...के हवाले कर देना चाहिये।"

..."नहीं, नहीं, हर्गिज नहीं, वैजयंती विल- ...कुल निर्दोष है। मैं अपनी लड़की को कोर्ट ...में खड़ी करके फांसी पर झूलते कभी नहीं ...देख सकता।"

..."अच्छी बात है राव साहब, जैसी ...आपकी मर्जी ! लेकिन अब यदि इस घर ...में कोई बीमार हो, तो मुझे न बुलायें; ...क्योंकि अब मैं यहां नहीं आऊंगा।"

लेकिन डाक्टर को वापस आना पड़ा; क्योंकि इस बार डाक्टर को बुलाने के लिए विजयराव जोशी खुद उसके घर आये थे। वे बेहद घबराये हुए थे। बोले—"डाक्टर, आपको मेरे घर आना ही पड़ेगा। इस बार वैजयंती की बारी है।"

"वैजयंती की ? ओह, तो मेरा अनुमान गलत था !"

जैसे ही मनमोहन को मालूम हुआ कि वैजयंती बीमार है, वह सीधा नवाबे निकोबार के पास पहुंचा। उसे याद था, एक बार नवाब साहब ने उससे वादा किया था, जब कभी जरूरत हो, तो जो तुम चाहोगे, तुम्हें दूंगा। मेरे पास असीम शक्ति है।

नवाब साहब अपने ड्राइंग रूम में बैठे हुए थे। मनमोहन ने पहुंचते ही कहा—"विजयराव जोशी की लड़की वैजयंती मर रही है।"

बड़े ठंडे स्वर में नवाब ने जवाब दिया—"तो ? इससे मुझे क्या मतलब ? भगवान का अभिशाप है उस परिवार पर, सबको मरना पड़ेगा।"

"लेकिन नवाब साहब, मैं वैजयंती से प्रेम करता हूं।"

नवाब साहब चौंके। कुछ देर तक मनमोहन की ओर देखते रहे, इसके बाद बोले—"तुम वैजयंती को प्यार करते हो ? ओफ, कितने अभागे हो तुम ! तुम एक अभिशप्त परिवार की लड़की को प्यार करते हो। लेकिन ..."

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधना से सुनिए एक रहस्य की बात

'मेरे
रंगरूप के लिए
लक्स लाजवाब है!'

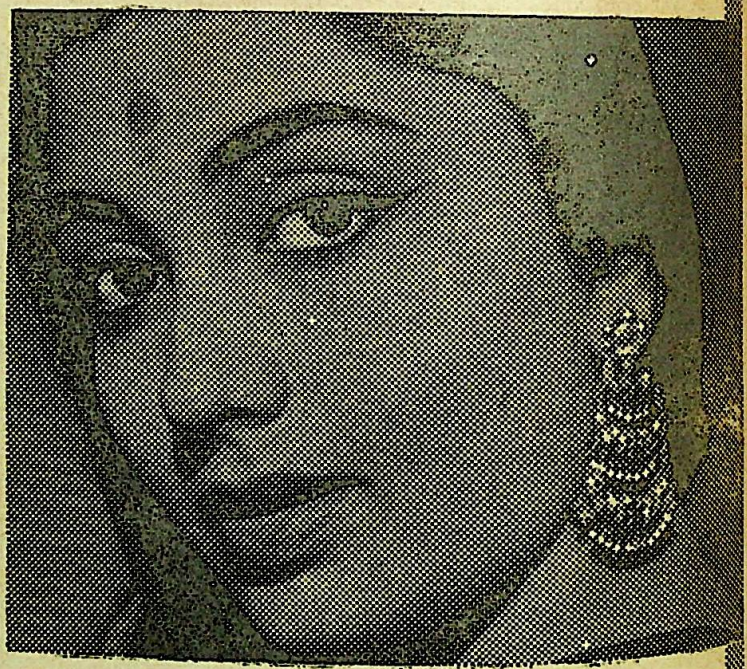

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
सौंदर्य साबुन

सफ़ेद और इंद्रधनुष के चार रंगों में

LTS. 178-75 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने उन्हें और भी लाचार कर रखा था। अब तक सब कुछ जानते हुए भी चुप थे। लेकिन अंत में उन्होंने अपने पुत्र को हत्यारे का नाम बता ही दिया। विजयराव जोशी ने निश्चय किया, इस मासूम लड़की हत्या करनेवाली डाइन को उचित दंड मिलना ही चाहिये।

[illegible] दरवाजा धीरे से खुला और [illegible] निकोबार ने प्रवेश किया। उसके मुंह से चीख निकलते-निकलते रुक गयी। बोली—"नवाब साहब, रात के इस वक्त यहां?"

नवाब साहब ने इशारे से उसे चुप रहने का संकेत करते हुए कहा—"घबराओ नहीं, मैं तुम पर बराबर निगाह रखे हूं, ताकि तुम मनमोहन के लिए बची रहो। मैं चुपचाप देखता रहा हूं कि यहां कौन आया और किसने तुम्हारे गिलास में जहर डाला। मैंने वह गिलास खाली कर दिया।"

वैजयंती ने घबराकर पूछा—"तब तो आपने उस व्यक्ति को भी देखा होगा, जिसने जहर डाला था।"

"हां, उसे भी देखा है। आधी रात होने जा रही है। यही वक्त है खूनी के आने का। तुम सोने का बहाना किये पड़ी रहो और खूब देख लेना कि खूनी कौन है। मैं इस दरवाजे के पीछे हूं। डरना मत।"

जैसे ही नवाब साहब छिपकर खड़े हुए, थोड़ी ही देर में एक काली छाया ने हाथ में शीशी लिये कमरे में प्रवेश किया। पास ही पड़ी टेबल पर रखे गिलास में उसने जहर मिलाया। वैजयंती ने आश्चर्य के साथ देखा

हूं। तुम यह हरकत नहीं करोगे, यही मेरा हुक्म है, और हुक्म इसलिए कि मुझे मालूम है, एक दिन तुम सुखी हो जाओगे। सिर्फ एक महीने तक तुम्हें इसके लिए रुकना पड़ेगा। वादा करो, तुम एक महीने तक हिम्मत नहीं हारोगे।"

× ×

"तुम अपने नाना की असीम संपत्ति विरासत में मिली है। तुम्हारी विमाता चाहती है कि वह उसके इकलौते लड़के को मिले। तुम्हारी मृत्यु हो जाने से यह सारी संपत्ति तुम्हारे पिता को मिलेगी और इसके बाद उनके लड़के को।"

"क्या मैं यहां से, इस मकान से बचकर निकल नहीं सकती।"

"नहीं, क्योंकि तुम जहां भी जाओगी, वह तुम्हारा पीछा करती रहेगी। तुम मुझ पर भरोसा कर सकती हो?"

"कर सकती हूं। लेकिन मुझे करना क्या होगा?"

"तुम मुझ पर भरोसा करके, जैसा मैं कहूं, करती जाओ। कुछ भी हो जाये, घबराना नहीं। यदि तुम्हारी आंखें कफन में भी खुलें, तो भी डरना मत। खयाल रखना कि तुम्हारा एक मित्र, बल्कि पिता, तुम्हारी और मनमोहन की लगातार निगरानी कर रहा है। अब तुम्हें किसी तरह का खतरा नहीं है। मैं चलता हूं।"

नवाब साहब चुपचाप चले गये।

दूसरे दिन वैजयंती मरी हुई पायी गयी। विजयराव जोशी के पिता बहुत ही बूढ़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधना से सुनिए एक रहस्य की बात

"मेरे
रंगरूप के लिए
लक्स लाजवाब है!"

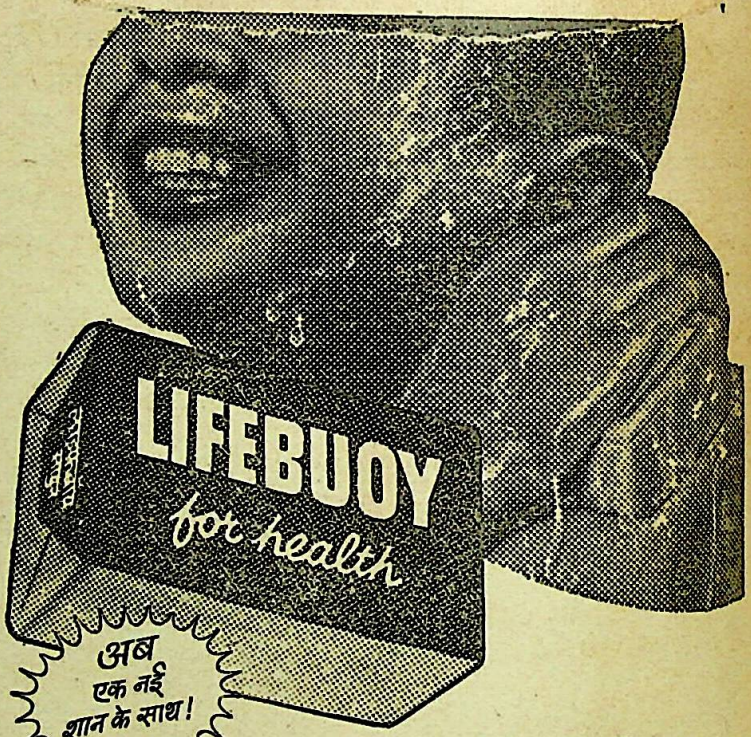

लाइफ़बॉय

है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

L. 47-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ड़के ने उन्हें और भी लाचार कर रखा ...अबतक सब कुछ जानते हुए भी चुप ...लेकिन अंत में उन्होंने अपने पुत्र को ...त्यारे का नाम बता ही दिया। विजय-...राव जोशी ने निश्चय किया, इस मासूम ...की हत्या करनेवाली डाइन को उचित ...मिलना ही चाहिये।

...नमोहन को जैसे ही ...ती की मृत्यु का समा-...मिला, उसने आत्म-...करने का निश्चय कर ...। पर नवाब साहब ...मालूम था कि लड़के ...पर इस वक्त क्या ...ही होगी। वे ठीक ...पर मनमोहन के पास ...गये। और बोले—

...हत्या कर रहे हो ?"

...जी, कर रहा हूं। ...कौन रोक सकता ...?"

...! तुम्हारे पिता के ...का लड़का आज मर ...सकता।"

...रे पिता का हवाला आप कैसे दे ...?"

...इस तरह कि तुम्हारे पिता मेरे मित्र ...। उन्होंने मुझे बचाने की कोशिश की थी। ...ऋण मुझ पर अभी तक बाकी है। ...मैं हूं दिलीप। तुम नहीं जानते, ...अपने लड़के की तरह प्यार करता ...हूं। तुम यह हरकत नहीं करोगे, यही मेरा हुक्म है, और हुक्म इसलिए कि मुझे मालूम है, एक दिन तुम सुखी हो जाओगे। सिर्फ एक महीने तक तुम्हें इसके लिए रुकना पड़ेगा। वादा करो, तुम एक महीने तक हिम्मत नहीं हारोगे।"

× × ×

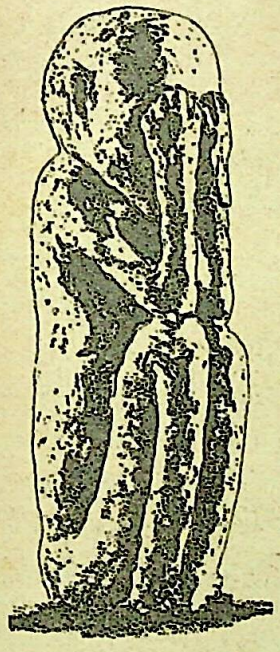

शोकाकुल

दुख से कातर विजयराव जोशी अपने निश्चय के अनुसार अपनी पत्नी के कमरे में गये। उन्होंने तय कर लिया था कि अपराधी को उचित सजा मिलनी ही चाहिये।

उनकी पत्नी उस समय अपने शृंगार में व्यस्त थी। उन्होंने दरवाजे के पास तन-कर खड़े होकर स्थिर स्वर में पूछा —"जिस जहर का इस्तेमाल तुम अक्सर किया करती हो, वह रखती किस जगह हो ?"

"आप कह क्या रहे हैं ? मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझी।"

"मैं पूछ रहा हूं, वह जहर तुम कहां रखती हो, जिससे तुमने इस घर के चार आदमियों की हत्या कर डाली ?"

"नहीं, नहीं, यह झूठ-बात है।"

"इन्कार करने से कोई लाभ नहीं। तुम इन्कार कर नहीं सकतीं। मुझे तुमसे इतनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीडा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुडने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

B3 DOL 2A HIN

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिट
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स की गोलियाँ चूसिए—आप देखेंगी कि इनकी आरोग्यकारी भाप बहुत खूबी से दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़ को साफ़ करती है और ब्रांकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है।

इनमें कोई
नुकसानदेह दवाएँ
नहीं होतीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेंट—केम्प एंड कं० लि०
पो० बा० नं० ७६३३, बम्बई-२८ (डी०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्मीद है कि थोड़ा-सा जहर तुमने अपने लिए भी बचाकर रखा होगा, ताकि तुम उस कानून के द्वारा दी जानेवाली सजा से बच सको, जो तुम्हारा इंतजार कर रहा है। मैं नहीं चाहता कि मेरा और मेरे लड़के का नाम बदनाम हो। इसलिए बेहतर है ..."

"मुझे माफ कर दो! जिंदा रहने दो।"

"हर्गिज नहीं। फांसी के तख्ते पर झूलना चाहती हो, या अपने हाथ जहर लेना चाहती हो सिर्फ तुम्हें इतना निर्णय करने का अधिकार है। मैं अभी चलता हूं। जब मैं लौटकर आऊं, तब तक गुनहगार को सजा नहीं मिली, तो मैं तुम्हें गिरफ्तार कराऊंगा।"

रात को जब मजिस्ट्रेट विजयराव जोशी लौटकर आये, पत्नी ने लड़खड़ाती आवाज में कहा—"मैंने जहर ले लिया है।"

जैसे ही उनकी पत्नी बेहोश होकर गिरने लगी, विजयराव लड़के को खोजने लगे, ताकि वह अपनी मां की लाश को न देख ले।

लेकिन लड़का कहीं दिखाई नहीं दिया। नौकर ने बताया कि लड़के को लगभग आध घंटे पहले उसकी मां ने बुलाया था। घबराकर वे अपनी पत्नी के कमरे में वापस लौटे। लड़के की लाश पर एक चिट्ठी थी :

"तुम जानते हो, मैं एक बहुत ही अच्छी मां हूं। अपने लड़के के लिए ही मैंने बड़े-से-बड़े गुनाह किये हैं। एक अच्छी मां अपने लड़के के बिना नहीं रह सकती। मैं जा रही हूं, साथ ही मेरा बेटा भी।"

चिट्ठी उनके हाथ में पड़ी रह गयी। दूर नवाबे निकोबार खड़े थे। विजयराव जोशी चीखे—"आप यहां इस वक्त कैसे?"

"मैं यह कहने के लिए आया हूं कि तुमने जो कुछ किया, उसकी काफी सजा पा ली। और अब आज जिस तरह मैं तुम्हें माफ करता हूं, मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि वे भी तुम्हें माफ करें।"

"कौन हो तुम? क्या मैंने तुम्हारे साथ कोई अन्याय किया है।"

"तुमने मुझे तिल-तिल सड़-सड़कर मरने की सजा दी थी। मैं हूं दिलीप।"

विजयनारायण राव जोशी की आंखें फटी-की-फटी रह गयीं....."दिलीप!"

इसके बाद उसका हाथ पकड़कर एक तरह से जबर्दस्ती खींचते हुए उसे वे अपनी पत्नी के कमरे में ले गये। लाशों को दिखाकर बोले—"दिलीप, तुम्हारा बदला अच्छी तरह चुक गया?"

चौदह-पंद्रह साल के आदित्य की लाश को देखकर नवाबे निकोबार की आंखों में आंसू आ गये। उनके मुंह से निकल पड़ा—"आह यह मासूम बालक भी! मैं कहीं हद से ज्यादा तो नहीं चला गया?"

अंतिम आहुति बाकी रह गया डोगरा। नवाब साहब उसके बैंक पर पहुंचे। थोड़ी देर तक तो औपचारिक बातें होती रहीं। इसके बाद नवाब ने कहा—"अब जरा काम की बात भी कर लें। आपके यहां खाता खोलते वक्त मैंने बताया था कि मुझे लगभग चालीस लाख रुपये की जरूरत होगी। मैंने लगभग पांच लाख रुपया ले लिया है, बाकी के पैंतीस लाख मुझे तत्काल चाहिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी लाजवाब धुलाई! जगमगाती सफ़ेद! बेदाग साफ़! अत्यंत आसान धुलाई! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है और ढेरों झाग! अपनी सारी धुलाई, बच्चों के वस्त्र, कमीज़ें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए। जी हाँ, घर में धोइए, सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 45-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंकर साहब उछल पड़े–"लेकिन ..."

"क्यों, आप हिचकिचा क्यों रहे हैं ?"

"नहीं, मेरा बैंक किसी भी वक्त जितने भी रुपयों का इंतजाम कर सकता है। आप रुपये ले सकते हैं।"

रुपये नवाब साहब को दे दिये गये। लेकिन बाकी खातेवालों को जवाब कैसे दे सकेंगे, इस डर के मारे डोगरा साहब बंबई में रवाना हो गये। पर कुछ ही दूर जा पाये थे कि नवाब साहब के आदमियों ने उन्हें जबर्दस्ती पकड़कर एक जर्जर कोठी में बंद कर दिया। आधी रात के समय नवाब साहब डोगरा के पास पहुंचे और पूछा–"तुम अपने गुनाहों के लिए अफसोस जाहिर करते हो?"

अंधकार में वह नवाब साहब को पहचान नहीं सका। बोला–"अपने तमाम गुनाह कबूल करता हूं! तोबा करता हूं!"

"तो मैं तुम्हें माफ करता हूं।"

डोगरा चौंका। आवाज पहचानी-सी मालूम पड़ी। पूछा–"कौन हो तुम ?"

"मैं हूं वह," नवाब साहब ने कहा–"जिसे तुमने इसलिए कुचल दिया कि तुम तरक्की कर सको। मैं हूं वह, जिसके पिता की उसकी गैरहाजिरी में तुमने भूखों मरने दिया। मैं भी तुम्हें सजा देता कि तुम भी मुझ से तड़प-तड़पकर मरो। लेकिन नहीं, मैं तुम्हें माफ करता हूं। कारण, मुझे भी अपने गुनाहों के लिए आज माफी की जरूरत है। मैं हूं कप्तान दिलीप, जो कभी कप्तान बन नहीं सका।"

डोगरा दिलीप के कदमों पर लोट गया।

दिलीप ने कहा–"उठो, तुम मरोगे नहीं। तुम्हें यहां से छोड़ दिया जायेगा।"

अब दिलीप के पास सिर्फ एक काम बाकी रह गया था। मनमोहन और वैजयंती का मिलाप करवाना। अपना बदला लेने के लिए जो भी दुष्कृत्य उसने किये थे, उस पाप को धोने का एक ही उपाय था पुण्य-कर्म का जोर।

जैसा कि नवाब ने मनमोहन से वादा किया था, वैजयंती को उसने ऐसी दवा दी थी, जिसमें सबको यही लगे कि वह मर गयी है, लेकिन वह चंद घंटों के बाद ही होश में आ गयी थी। उसे नवाब ने सही-सलामत बचा लिया था। दोनों प्रेमियों को उन्होंने निकोबार द्वीप पर मिला दिया। दोनों का वहीं विवाह हुआ और इस तरह प्रतिशोध की यह कथा सुखद अंत के साथ समाप्त हुई।

वैजयंती को जाते समय नवाब साहब एक पत्र दे गये थे। लिखा था–"यहां से जहाज द्वारा वापस अपने घर लौट जाना। तुम्हारे दादा तुम्हें आशीर्वाद देने के लिए इंतजार कर रहे हैं। मेरे प्यारे बच्चो, इस आदमी के लिए भी भगवान से कभी-कभी दुआ करना, जिसने शैतान की तरह अपने आपको खुदा के बराबर समझ लिया था। लेकिन आज इसे होश आ गया है, और वह मंजूर करता है इस बात को भगवान ही सर्वोच्च निर्णय करने का अधिकारी है। सुखी रहो।–"दिलीप, नवाबे निकोबार।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

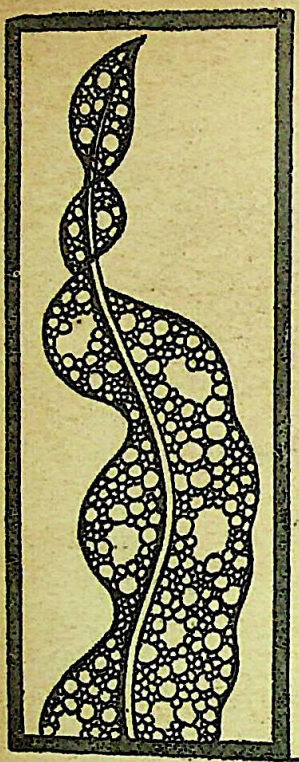

विधाता की सृष्टि जैसे मनोहर

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाइन.
शर्टिंग
स्टाइप, डाबी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर.
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१,
सूटिंग, गैबर्डिन
रुमाल,
प्रिंट
क्रेप लोन, वाइल, पाप्लीन, स्क्रीन छपाई की साडियां.
बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में

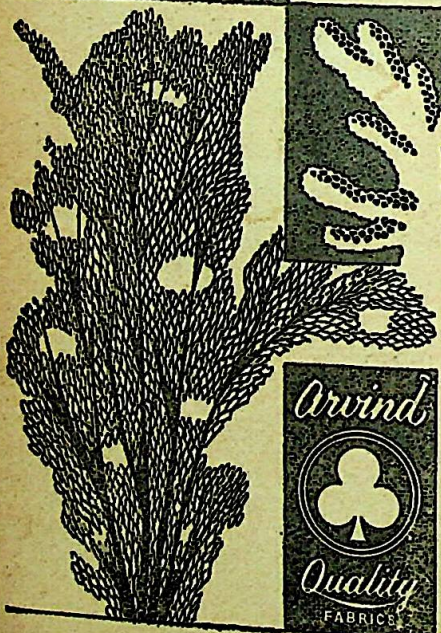

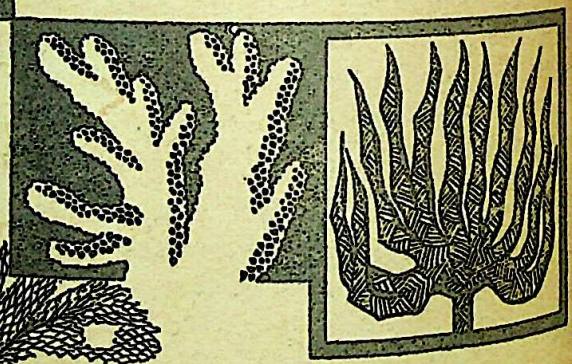

Arvind
Quality
FABRICS

·SANFORIZED·
Reg'd. T.M. of Cluett, Peabody & Co. Inc., U.S.A.

अरविंद मिल्स लिमिटेड,
अहमदाबाद-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहनें या बीवियां !

एक सज्जन अपनी दो बेटियों को बगीचे में घुमाने लाये हुए थे। दोनों जुड़वां थीं। उम्र, कद, रूप-रंग आदि में हूबहू एक-दूसरे से मिलती-जुलती थीं। उन्हें कपड़े भी एक-से पहनाये जाते थे। दोनों पर नजर पड़ते ही किसी भी अपरिचित की समझ में आ जाता था कि वे जुड़वां हैं।

बगीचे में टहलते हुए एक परिचित मिल गये और लड़कियों को देखकर पूछ बैठे—"क्या ये जुड़वां हैं ?"

उन महोदय की सामान्य बुद्धि पर तरस खाते हुए लड़कियों के पिता ने कहा—"नहीं, ये जुड़वां बीवियां हैं !"

०००

बेटी को नसीहत !

विवाह से पूर्व मां अपनी बेटी को नसीहत दे रही थी—"सबसे पहली बात, जो तुम्हें ध्यान में रखनी चाहिये, वह यह है कि जैसे ही तुम्हारा पति काम पर से घर लौटा करे, उसका स्वागत किया करना। उसे आराम-कुर्सी पर बैठाया करना। फिर उसके जूते उतारकर आराम से लेटने को कहा करना। उसके पांव ऊंचे स्टूल पर रख दिया करना और इसके बाद उसे शाम का अखबार या उसकी मनपसंद पुस्तक पढ़ने को दे दिया करना...!"

"लेकिन मां," लड़की बीच में ही बोल पड़ी —" इस-हद से ज्यादा खातिरदारी का मतलब तो उसे सिर चढ़ाना होगा।"

"हो सकता है," मां बोली, —"लेकिन इससे तुम्हें बहुत सारी रेजगी हर रोज कुर्सी पर पड़ी मिल जाया करेगी।"

०००

नहले पर दहला !

पिता रामशरणजी अपने १२ वर्षीय पुत्र श्यामशरण की स्कूल-रिपोर्ट देखकर कुढ़ उठे। परीक्षा में वह हर विषय में गोल था। कक्षा में वह सबसे बड़ा लड़का था और पिता चाहते थे कि उम्र के हिसाब से वह पढ़ाई में भी अपने साथियों में सबसे आगे रहे। डांट-डपट का 'डोज' पिलाकर वे बोले—"तुम्हें शर्म नहीं आती ! पता है, नेपोलियन जब तुम्हारी उम्र का था, तो अपनी कक्षा में सबसे ऊपर रहता था।"

श्यामशरण पर डांट-डपट का फौरन असर हुआ। वह बोला —" मुझे पता है पिताजी। लेकिन जब वह आपकी उम्र का था, तो एक बड़े साम्राज्य का सम्राट् था।"

०००

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है — सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-ज़ुकाम व इन्फ्ल्यूएंज़े का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

HIN

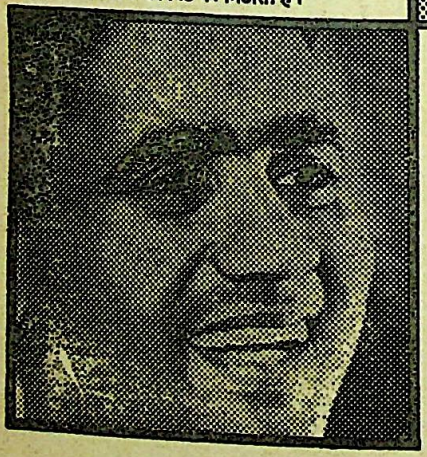

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा भी होता है !

कल शाम मैंने काफी देर से दफ्तर छोड़ा था। भाई नारायणजी उस वक्त भी अपने काम में डूबे हुए थे। आज जब नौ बजे ही लौटकर आया, तो पाया कि वे ज्यों-के-त्यों काम में डूबे हुए हैं—वही कुरता, वही पाजामा, और शिथिल और आंखें नींद से बोझिल।

न पूछे बिना न रहा गया—"यार, क्या मुसीबत है ?.....क्या रात-भर लगे रहे ?"

नारायणजी जरा झेंपे—"नहीं भाई, घर गया तो था; मगर तब तक सुबह की धूप निकल आयी थी। हुआ यह कि घर पहुंचकर जब मैं चुपचाप अपने कपड़े उतारने लगा, तो इतने में श्रीमतीजी की आंख खुल गयी और वे बोलीं— क्या उठ गये ?... मैंने झगड़े से बचने का मौका गनीमत जाना, कहा—हां, जरा जल्दी दफ्तर जाना है और नये कपड़े पहनकर चला आया।"

०००

अचूक इलाज !

एक साहब दौड़े-दौड़े दवाओं की दुकान पर गये और चिल्लाकर बोले —"जल्दी ! हिचकियां बंद करने की कोई दवा है ?"

केमिस्ट काउंटर से उनकी तरफ झुका और उन्हें बिना खबरदार किये, दो करारे तमाचे उनके गालों पर धर दिये; फिर बोला—"अब कीजियेगा, यह दवा लेना तो कुछ मुश्किल है, लेकिन है यह एकदम अचूक !"

"बेवकूफ !" साहब अपने आपको संभालते हुए लाल-पीले होकर बोले—"दवा मुझे अपने लिए नहीं, वहां कार में बैठी अपनी पत्नी के लिए चाहिये थी।"

०००

खजूर की शराब

एक व्यक्ति काजी के पास पहुंचा और पूछा—"अगर मैं खजूर खाऊं, तो इसमें धार्मिक आदेशों की अवज्ञा तो नहीं होगी ?"

"नहीं !" काजी ने बताया।

"यदि मैं खजूर में थोड़ा पानी भी मिला लूं ?"

"तो भी कोई अनुचित बात नहीं होगी।"

"और अगर इसमें कुछ मात्रा खमीर की मिला लूं तो ?"

"इसमें भी कोई बुराई नहीं है।"

"अच्छा, तो फिर यह बताइये कि खजूर की शराब की मनाई क्यों है — वह इन्हीं तीन चीजों से ही तो बनती है !"

काजी ने कहा —" अगर मैं तुम्हारे सिर पर मुट्ठी-भर रेत फेंकूं, तो क्या इससे तुम्हें चोट लगेगी ?"

"हरगिज नहीं।" वह व्यक्ति बोला।

"और अगर मैं उसमें कुछ पानी मिलाकर फेंकूं तो ?"

"तो भी मेरा खयाल है, कोई खास तकलीफ नहीं होगी।"

"अच्छा। और अगर मैं मिट्टी को पानी में सान लूं, उसे पकाकर ईंट बना लूं और तब तुम्हारे सिर पर फेंकूं, तो ?

"तो वह मेरा सिर तोड़ देगी।"

"बहुत अच्छे !" काजी ने कहा —"मेरा खयाल है, अब तुम्हें अपने सवाल का जवाब मिल गया होगा।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ गुना मज़बूत !!!

मेसर्स केटिन फेब्रिकेन, आस्लो नार्वे के टेक्निकल कोलैबोरेशन में बनायी हुई केलिब्रेटेड सांकलें २½ टन तक वजन उठाने के लिए, बनायी जाती हैं। परीक्षण से सिद्ध होता है कि ये सांकलें १६ टन वजन तक उठान पर भी नहीं टूटती – वजन उठाने की निर्दिष्ट क्षमता से ६ गुना। निश्चित रूप से मजबूती की यह गारंटी है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें:

द इंडियन लिंक चेन मैन्यफेक्चरर्स लिमिटेड

बम्बई-आग्रा रोड, भांडुप

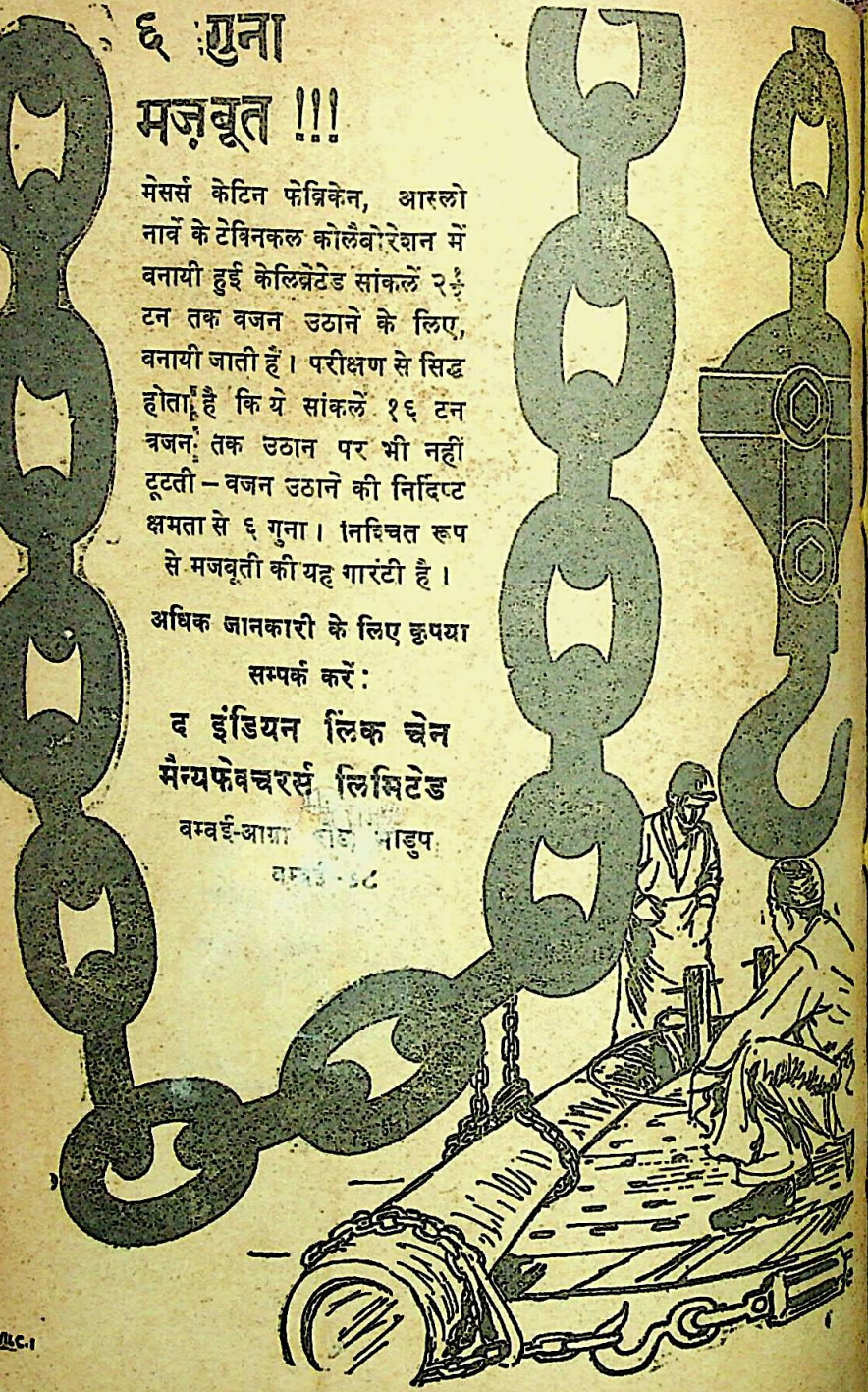

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

अप्रैल

१९६५

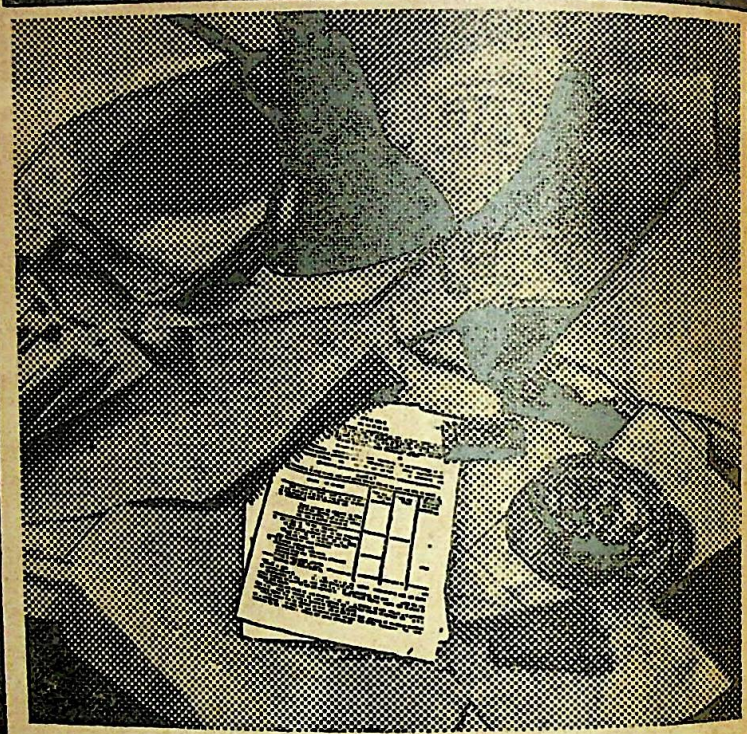

अपने कर के हिसाब में ऐसी
दिक्कत न आने दीजिये

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की मदद लीजिये

हम आप की कर संबंधी समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देते हैं। उन्हें हमारे ऊपर छोड़ दीजिये। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बड़े कार्यालय आय-कर, सम्पत्ति-कर, सम्पदा-कर, उपहार-कर और व्यय-कर के 'रिटर्न' तैयार करने तथा उन्हें प्रस्तुत करने का कार्य करते हैं।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

भारत का सबसे बड़ा बैंक

Aiyars SBM.1909 HNB

कव्हर छपाई 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' विभाग द्वारा मुद्रित-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

A.K. Goyal

निको

कृमिनाशक साबुन

पार्क-डेविस की एक बनावट

जो आपकी त्वचा को साफ और तन्दुरुस्त रख, उसे मुहासा, ददोरा, काले दागों तथा कई अन्य रोगों से मुक्त रखता है। निको से हमेशा बाल धोने से इसका जन्तुघ्न फेन फूसी का बहुत अच्छा प्रतिकार करता है। मानी हुई उपयोगितावाला निको एक साथ तीन सेवाएं करता है— सफाई, रक्षण और जन्तुनाश। आपकी त्वचा को जिस सम्हाल की जरूरत है उसे निको के रोजाना इस्तेमाल से पूरी करें।

असली कृमिनाशक साबुन, रोजाना इस्तेमाल के लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

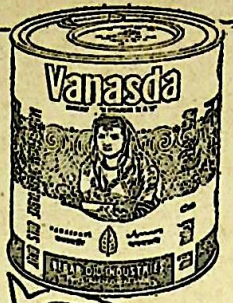

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति

(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

वरार ऑईल इन्डस्ट्रीज अकोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

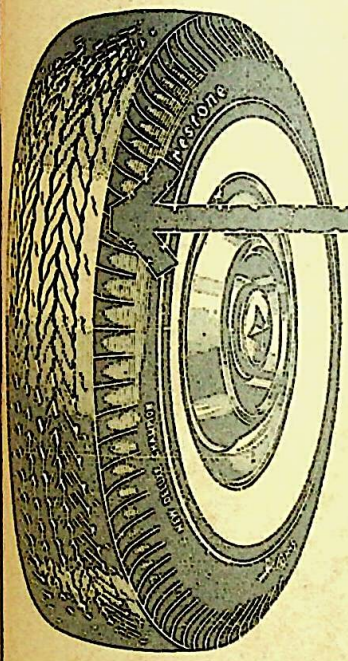

"आनोरवा नया टायर"

अतिरिक्त माइलेज के लिये बेजोड़

सुपर-टफ

आश्चर्यजनक रबड़

से बने नये टायर आपको अतिरिक्त माइलेज देते हैं !

फायरस्टोन की खोज और विकास इंजीनियरों ने अकथ परिश्रम के बाद एक नया आश्चर्यजनक रबड़ निकाला—सुपर-टफ जो अतिरिक्त लागत के बिना आपको अतिरिक्त माइलेज देता है। अब आपके सामने पेश करते हैं—न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर, जिसका सुदृढ़ ट्रैड सुरक्षित मोटरिंग के लिये बनाया गया है।

अब प्रत्येक फायरस्टोन पॅसिंजर टायर सुपर-टफ रबड़ से बनते हैं, जिससे आपको किसी भी गति पर किसी सड़क पर अतिरिक्त माइलेज मिलता है। इससे आप सुरक्षित रहते हैं; क्योंकि सुपर-टफ बहुत मजबूत होता है। जिस पर पंचर, चोट या ब्रेक का कोई असर नहीं।

Firestone फायरस्टोन

न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ-ही-साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS Ltd BOMBAY
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाउस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई न. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

HIN

अब लीजिये

लोमा

दस्ती शीशी में

२०० ग्राम !
मध्यम आकार

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं
शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तेल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
पुजेंटस: सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय: १० ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता –१

अधिकृत पूंजी	रु. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,७९,९९,२५०
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें	रु. ३,३७,००,०००

डाइरेक्टर

आई० पी० गोयनका
चेयरमैन

एम० पी० बिड़ला वाइस चेयरमैन	मदनमोहन आर० रुइया वाइस चेयरमैन
अनंत चरण ला	योगींद्र एन० नफतलाल
जी० डी० कोठारी	मोतीलाल तापड़िया
रंगनाथ बांगड़	महादेव एल० दहाणुकर
गोवर्धनदास विनानी	टी० एस० राजम
मोहनलाल नोपानी	श्रेणिक कस्तुरभाई
	एस० टी० सदाशिवन

शाखाएं

भारत के सभी प्रमुख नगरों और कस्बों में। विदेशी शाखाएं पाकिस्तान, मलयेशिया, हांककांग, तथा लंदन में। एजेंटस् और संवाददाता विश्वभर में।

कार्य और सेवा

चालू खाते की व्यवस्था। लंबी और कम अवधि के लिए फिक्सड डिपाजिट। सेविंग बैंक खाते में ३ प्रतिशत ब्याज। जमा पूंजी के लिए सुविधाजनक मासिक किश्तों में रिकरिंग डिपाजिट। विदेशी टैवलर्स चेक खरीदे और भुगतान किये जाते हैं। सभी प्रकार के घरेलू तथा विदेशी एक्सचेंज के कार्य संपन्न किये जाते हैं।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP.GM/K-9 J HIN

वाह Kolynos ...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, जायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवें पुरुष के लिए मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिए और मुस्कराइए। रोज़ रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए... और रोज़ सुबह तो ऐसा करना ज़रूरी है। मित्रों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा... अधिक आनन्द आएगा!

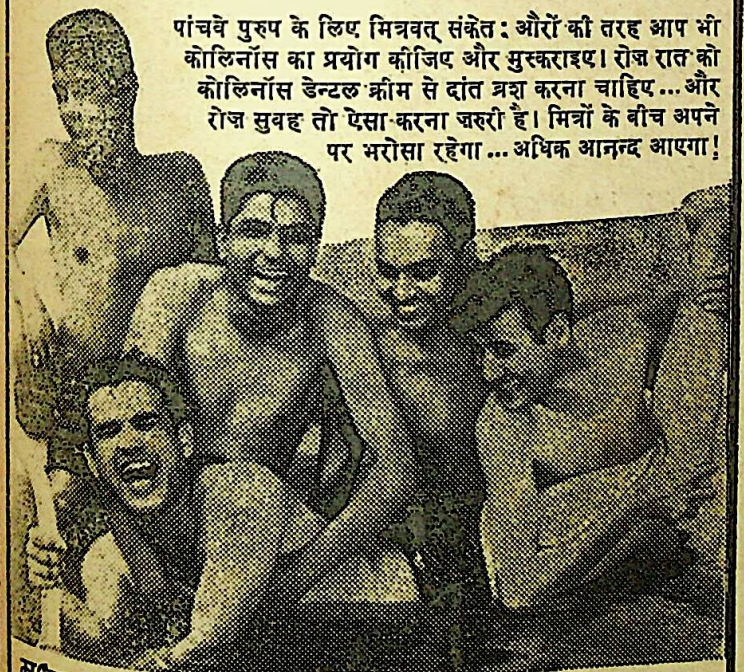

मधुर मुस्कान... कोलिनॉस मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी: जेफ़री मैनर्स अ्रैन्ड कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमर तोड़ बोझ

इसी लिए समझदार लोग

प्लानीटेब

गर्भ-निरोधक टिकियां

प्रयोग करते हैं

परिवार नियोजन का यह सबसे सरल विश्वसनीय और किफायती साधन है। अपने डाक्टर से राय लें या हमको लिखें।

हिन्द कैमिकल्स लि०, कानपुर

"सभी प्रमुख दवा-विक्रेताओं के यहां प्राप्त"

वितरक : मेसर्स एन० चिमनलाल एंड कं०, ३६ प्रिंसेस स्ट्रीट, बंबई २

न्यू स्वदेशी

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग

न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद

नरोडा रोड – अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने बचाव के लिये—आज ही एक 'एवरेडी' टॉर्च खरीदिये

एवरेडी पर ७५ वर्ष का भरोसा

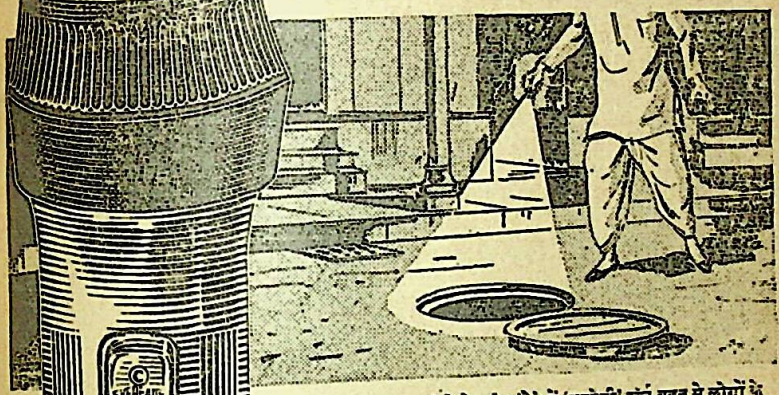

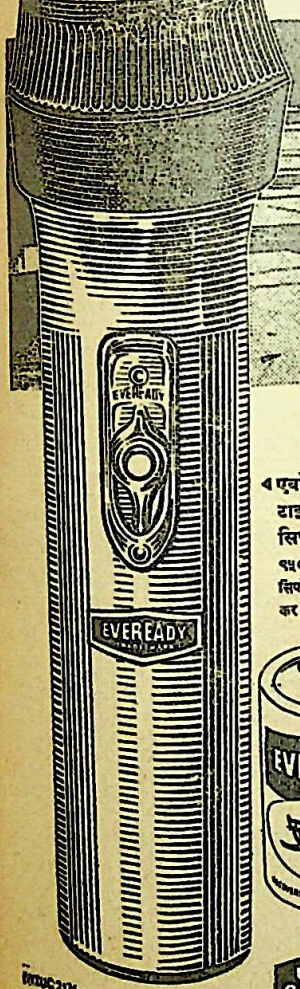

धोखे से भरे अंधेरे में 'एवरेडी' टॉर्च बहुत से लोगों के प्राण बचा चुके हैं, बहुत-से लोगों के हाथ-पाँव भी बचा चुके हैं। 'एवरेडी' डीलर की दूकान के तरह तरह के टॉर्चों में से आप जो भी 'एवरेडी' टार्च क्यों न चुनें, बराबर आप पूरा भरोसा रख सकते हैं कि 'एवरेडी' टॉर्च आपको कभी धोखा नहीं देगा।

◀ एवरेडी
टाइप नं० ३५५५
सिर्फ रु० ३.५० पै०
९५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक।
कर अलग से

★ सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।
★ और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।
★ इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
★ 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विरोप रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।
★ विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे जगमग रोशनी देती हैं और सबसे अधिक टिकती हैं।
★ आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

UNION CARBIDE

यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'नवनीत' के पुराने अंक चाहते हैं?

नवनीत के पाठक—खासकर वाचनालय और शिक्षण संस्थाएं—'नवनीत' के पुराने अंकों की फाइलें रखना चाहते हैं। इसी विचार से नवनीत के पुराने अंकों की फाइलें सस्ते मूल्य में देने की योजना हमने बनायी है। जनवरी-जून और जुलाई दिसंबर के ६-६ अंकों की विषयानुसार सूची के साथ जिल्दें बना दी गई हैं।

निम्नलिखित फाइलें हमारे पास हैं। १९५४ से १९५७ तथा १९६०, १९६१-६२ की पूरे वर्ष की फाइलें प्राप्त हैं।

प्रत्येक छमाही जिल्द का मूल्य २.५० रुपये और पोस्टेज (रजिस्ट्री) १.५० रुपये और रेलवे से मंगानेवाले को पोस्टेज माफ।

— नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ तारदेव, बंबई ३४

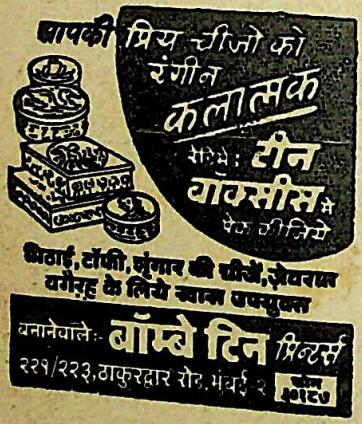

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

न व नी त प्र का श न लि०

बम्बई- ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SHB2/NGB-8IA HIN

सेविंग्स एकाउण्ट खोलने के संकल्प किए कितने दिन हुए?

अब और विलम्ब क्यों करते है ? शुरूमें आपके पास ५) होने से ही काम चल जायगा ...एवं अवश्य ही उसके साथ संचय की भावना होनी चाहिए। आज ही अपनी नजदीक वाली शाखा में पधारिए।

आपकी संचित रकम चाहे कितनी कम क्यों न हो नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ के समक्ष आप सर्वदा माननीय है।

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समितिबद्ध : सदस्यों का दायित्व सीमित

बम्बई की शाखायें:—९०, महात्मा गांधी रोड; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लॉयड्ज़ ब्रान्च); मिंट रोड, (मिंट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर); २१/२९, प्रिन्सेप स्ट्रीट, (लॉयड्ज़ ब्रान्च); ११७/११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सांता क्रुज; ५७४ गोवालिया टैन्क रोड, काम्बाला हिल; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर; नेवी, क्लब रोड नाइकला। ठाणा:—आग्रा रोड. कोलबाद रोड, (कैंसल मिल्स के पास)।

एसोसिएटेड बैंक्स : लॉयड्स बैंक लिमिटेड • नेशनल प्रॉविन्सियल बैंक लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

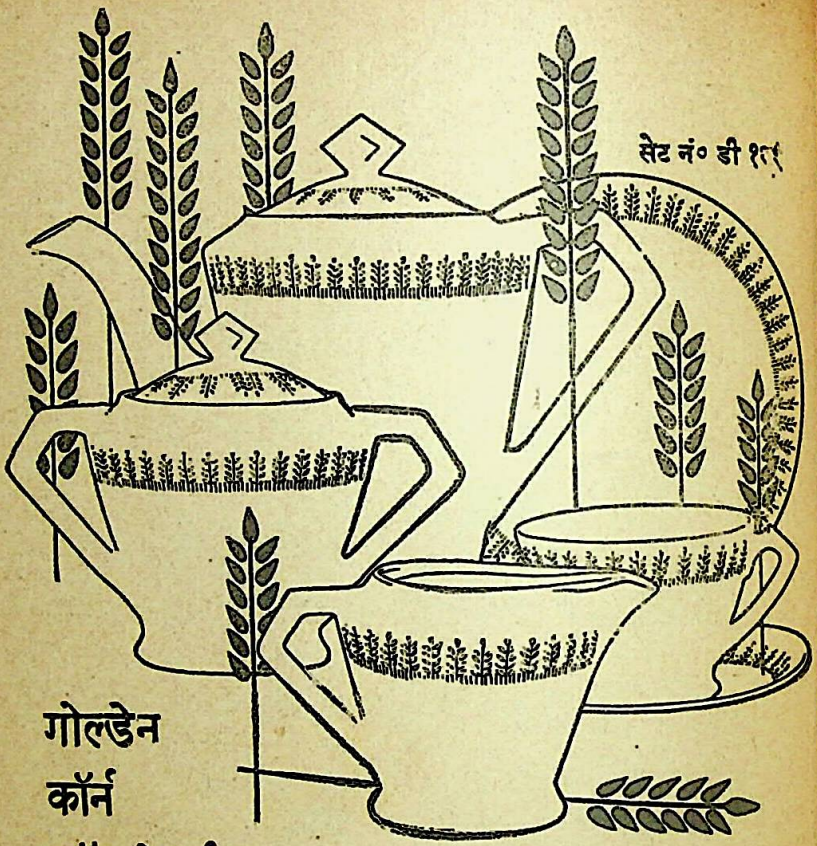

गोल्डेन कॉर्न ऑन टेपर्ड

सुनहले धान का सिरा अंकित बंगाल पॉटरीज़ की सुन्दर नई डिज़ाइन—गोल्डेन कॉर्न। नये फैशन के टेपर्ड आकार पर ऊँचे दर्जे की अति सुन्दर नक्काशी। सिर्फ़ टी सेट के रूप में पाया जाता है।

बंगाल पॉटरीज़ लिमिटेड
४५, टांगरा रोड, कलकत्ता-१५

BPC 95 HIN

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि
एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स ऐण्ड कं०
३३ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आज से दस साल
पूर्व, आपके जीवन का
वह शुभदिन जबकि आपने अपना
जीवन-साथी को चुना था
—और मुझे भी"

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है
यह तो जीवन-साथी है।

आज शादी के दसवें वर्षगांठ का आमोद भरा दिन — अतीत की स्मृति का यह कितना गौरवपूर्ण क्षण है, हर्क्युलिस और इसके मालिक—दोनों के लिये।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, यह आपके जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद वर्ष बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन होंगे..... आपकी तरक्की होगी.. ... आपके बच्चे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया बसा लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके साथ रहेगा, सर्वदा अच्छी हालत में रहेगा।

टी. आई. साइकिल्स आफ इंडिया, अम्बत्तूर, मद्रास-५८।

प्रोप्राइटर्स टचब इन्वेस्टमेंट आफ इंडिया लिमिटेड, मद्रास,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रैल
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

फलवालियां
चित्रकारः प्रभा डोंगरे

इस अंक में

१७ इबादत
रवेया
१८ हम कब तक भूखे रहेंगे ?
सत्यकाम विद्यालंकार
२१ प्रार्थना —दिनकर सोनवलकर
२३ श्रद्धा ही तो जीवन है
जावालि
२५ यह है मेरा मृत्युलेख
जे० वी० एस० हाल्डेन
२८ बिजली की नदिया शरावती
एस० श्रीनिवासाचार
३२ इशारा —आनंद नारायण मुल्ला
३३ बर्फ की गोद में सोया हुआ महाद्वीप
एलन मूरहेड
४० श्रमर्षि बाबासाहब आमटे
इला महेता
४५ प्राण-चिकित्सा से आरोग्य
डा० दुर्गाशंकर नागर
४८ पथ के प्रदीप
अल्बर्ट श्वाइत्जर
४९ प्रयोग और सफलता का प्रतीक ड्युपांट
जगत गुप्ता
५३ सच्चा रास्ता विवेक का है
५६ लोकप्रिय लेखिका दाफन द्यु मौरियेर
विभूति भूषण
६१ चेहरों का खजाना —शैलेंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

नेहरू – स्नेहभीगी यादें
टी० आर० देवगिरीकर

अक्षरदात्री मां फिशर
जीवन-परिचय

काला चीता फंदे से निकल गया
शिकार-प्रसंग

लाइनस पॉलिंग से भेंट
–सतीश कुमार

मेरी चीन-यात्रा
–जार्जेन विश

दो सूरज (उर्दू कहानी)
–इम्तियाज अली

तीसरी मोमबत्ती
–एक जर्मन कहानी

विज्ञान के हाथ में अक्षय-पात्र
–वैज्ञानिक लेख

चित्रसज्जा :
डविड लो, कनु देसाई, ओके, शणै

हमारा पता :
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१, तारदेव, बंबई–३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बम्बई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

६२ विचित्रताएं सृष्टि और मानव की
श्यामसरन 'विक्रम'
६५ मेरी कल्पना का सुख
६८ बच्चों में पढ़ने की रुचि कैसे पैदा करें
कुसुम अगस्त
७३ नींद एक, स्वप्न अनेक
लारेंस लेसिंग
७७ आप कितने प्रसन्न हैं ?
आशालता शर्मा
८१ शिकार का शौकीन बाज
रावर्ट वी० वेरी
८७ स्वप्न, जिसने प्राण बचाये
फ्रैंक एडवर्ड्स
९० सुइयां (उर्दू कहानी)
इंतजार हुसैन
९६ जाको राखे साइयां (हिन्दी कहानी)
गोविंद रत्नाकर
१०५ टूटते अरमान (हिन्दी कहानी)
गुरदीप
१०९ वार्ता-विलास
११३ हाय मेरी तैन्युल ! (पुस्तक-संक्षेप)
थंगदिनी
१३७ उड़ती मौत
१४० तैरते टापू, अनोखा संग्रहालय
सर्वेश्वरनाथ
१४४ स्वीकार सत्य की पीड़ा
शंकरलाल मिश्र
१४५ आखिर चैनल सुरंग बनने लगी
जान मोलाएर्ट
१५१ खूब थे वे लोग
१५३ हिम्मते मर्दां, मददे खुदा
बाब मार्गन
१५७ नयी पुस्तकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]
वर्ष १४: अंक ४
अप्रैल १९६५

इबादत

ऐ खुदा,
अगर तूने मेरी तकदीर में
दुनिया का कोई सुख लिखा है,
तो वह किसी काफिर को दे दे;
परलोक का कोई सुख लिखा है,
तो वह किसी भक्त को दे दे;
मुझे अपने प्रेम के सिवा कुछ न दे ।
अगर मैं दोजख के डर से
तेरी इबादत करती हूं,
तो मेरा जिस्म
दोजख की आग में जल जाये ।
अगर मैं बहिश्त के लालच से
तेरी इबादत करती हूं,
तो बहिश्त के दरवाजे
मेरे लिए हमेशा को बंद हो जायें ।
मुझे तो बस
अपने नूर का दीदार करने दे ।
ऐ खुदा !
मेरी तकदीर में अपने सिवा कुछ न रख ।

—रबेया

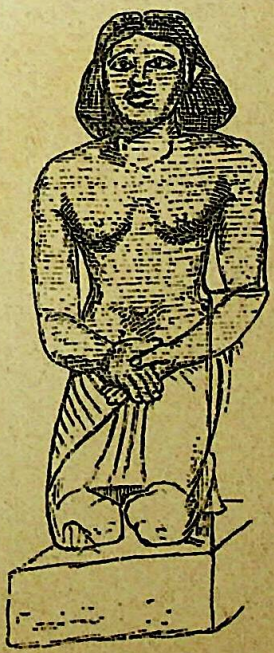

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम कब तक भूखे रहेंगे?

सत्यकाम विद्यालंकार

आज भी दुनिया की आबादी के आधे मनुष्य ऐसे हैं, जिन्हें भरपेट भोजन नहीं मिलता, अथवा जो मिलता है, वह ऐसा नहीं है कि उसे पौष्टिक आहार कहा जा सके। और ऐसे लोगों में से अधिकांश लोग एशिया और सुदूरपूर्व में हैं।

इस स्थिति का हमें तत्परता से निवारण करना होगा, वरना आज से पैंतीस वर्ष बाद २००० ई० तक विश्व की ६ अरब जनसंख्या में से आधे लोग भूख के शिकार हो जायेंगे।

हमारे देश की आबादी भी तेजी से बढ़ रही है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में प्रतिवर्ष ७० लाख के हिसाब से आबादी बढ़ रही थी; लेकिन अब १ करोड़ सालाना के हिसाब से बढ़ रही है। अगर आबादी इसी हिसाब से बढ़ती रही और अनाज की उपज न बढ़ी, तो एक दिन वह भी आयेगा, जब हमारी आधी जनता भूख से मर जायेगी।

अनाज की उपज बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में खेती के कामों पर काफी रकम खर्च की है। पहली तीन योजनाओं में कृषि संबंधी कार्यक्रमों पर कुल २,४५० करोड़ रुपये व्यय किये जा चुके हैं। चौथी योजना में भी कई सौ करोड़ की धनराशि व्यय करने का प्रस्ताव है। पांचवीं योजना में कृषि-उत्पादन को प्राथमिकता दी जायेगी।

योजनाओं के परिणामस्वरूप कृषि-उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि भी हुई है। वृद्धि का अनुपात देखने के लिए हम १९५०-५१ से १९६० तक के वर्षों के आंकड़ों का अध्ययन करेंगे।

यदि हम १९४९-५० को आधार वर्ष (१००) मानें, तो कृषि-उत्पादन १९५०-५१ में ९६ से बढ़कर १९६०-६१ में १३० पर पहुंच गया। खाद्यान्नों में यही आंकड़ा (इंडेक्स नंबर) ९७ से १३२ और अन्य फसलों में १०६ से १४२ हो गया है। खाद्यान्नों का उत्पादन दस वर्ष में ५२ लाख टन से ७६ लाख टन बढ़ गया है। इसी प्रकार की वृद्धि तिलहन, गन्ना, कपास व जूट में हुई है।

सामुदायिक कार्यक्रम का प्रसार भी बहुत बड़े पैमाने पर हुआ है। कुल ५.८ लाख गांवों में से ४ लाख गांव ३,१०० खंडों के अंतर्गत आ चुके हैं। अब देश की २२ करोड़ के लगभग जनता विस्तार-कार्य के अंतर्गत आ चुकी है। ३१,००० ग्रामसेवक तथा लगभग २६,००० विस्तार-विशेषज्ञ विभिन्न प्रकार के विकास-कार्य कर रहे हैं।

यह सब होते हुए भी हमारे यहां खेती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैदावार अभी उतनी नहीं बढ़ी, जितनी चाहिये थी।

पैदावार बढ़ाने के कई उपाय हैं। उनमें मुख्य निम्न हैं:—

१. खेती का आधुनिकीकरण,
२. सुधरे बीजों का उपयोग,
३. सिंचाई की समुचित सुविधा,
४. अच्छे उर्वरकों का प्रयोग,
५. पैकेज पद्धति का योजनाबद्ध कार्य।

१. खेती का आधुनिकीकरण

खेती के परंपरागत तरीकों के वैज्ञानिकीकरण में अनुसंधान का विशेष महत्व है। भारत में कृषि-संस्थानों ने इस काम में काफी सफलता प्राप्त की है। किंतु अभी तक अनुसंधानों के नतीजों को किसानों तक पहुंचाने का काम ठीक ढंग से नहीं हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि कृषि-वैज्ञानिकों से आशा की जाती है कि वे शोध भी करें और शोध-परिणामों का प्रचार भी करें, जबकि प्रचार-कार्य के लिए अलग कर्मचारी होने चाहिये।

किसानों को आधुनिक ढंग से खेती करने का बढ़ावा भी देना होगा। इसके लिए ऐसे वाले बुद्धिमान कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। ये कार्यकर्ता ही किसानों को नये तरीके अपनाने, सिंचाई की सुविधा का ठीक ढंग से इस्तेमाल करने, अच्छे औजारों और बीजों का प्रयोग करने की शिक्षा दे सकते हैं। लेकिन कठिनाई यह है कि अल्प वेतन में ऐसे मिशनरी भावनावाले बुद्धिमान व्यक्ति मिल नहीं सकते।

मांस के लिए हम जो पशु पालते हैं, उन्हें हमें बहुत-सा अनाज खिलाना पड़ता है। हिसाब लगाकर देखा गया है कि उतना अनाज पशुओं को देने के बजाय आदमियों के खाने में खर्च किया जाये, तो मांस से प्राप्त होनेवाली कैलोरियों से कम-से-कम ५-६ गुना अधिक कैलोरियां प्राप्त होंगी।

—सर चार्ल्स डाड्स
अध्यक्षः रायल सोसायटी आफ फिजिशियन्स

कृषि को आधुनिक बनाने के लिए यंत्रोपकरणों का प्रयोग भी आवश्यक है। लेकिन अभी हमारे देश में ये यंत्रोपकरण आवश्यक मात्रा में बनने शुरू नहीं हुए हैं।

भारत में खेती की जमीन लगभग ३० करोड़ एकड़ है, जो छः करोड़ से भी ज्यादा खेतों में बंटी हुई है। इन छः करोड़ खेतों के लिए कृषि-यंत्रों की मांग कैसे पूरी होगी—यह प्रश्न बड़ा विकट है। इसके लिए कई उद्योग-धंधों का विकास करना जरूरी होगा।

२. सुधरे बीजों का उपयोग

पैदावार बढ़ाने का सबसे सरल और सस्ता उपाय सुधरे बीजों का उपयोग है। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत बीज शुद्धीकरण का कार्यक्रम शुरू किया गया था, जिसके अनुसार हर विकास-खंड में एक बीज-फार्म स्थापित किया जायेगा। अभी तक ऐसे ४,००० क्षेत्रीय फार्म चालू किये जा चुके हैं, जिनके अंदर ९६,००० एकड़ धरती आ चुकी है। प्रत्येक राज्य में बीजों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के निरीक्षण एवं प्रमाणीकरण की व्यवस्था भी की गयी है।

किंतु अभी यह काम इतने कच्चे ढंग से किया जा रहा है कि अच्छी किस्म के बीज किसानों तक नहीं पहुंचते। जिन लोगों ने व्यावसायिक रूप से बीज तैयार करने का काम शुरू किया, वे विश्वसनीय नहीं निकले और किसानों को धोखा खाना पड़ा।

इस काम के लिए जरूरी है कि देश-भर में प्रयोगशालाएं खोली जायें। अभी तक ऐसी कृषि-अनुसंधानशालाएं दिल्ली के अतिरिक्त पंजाब, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, मद्रास तथा आंध्र प्रदेश में हैं। अन्य राज्यों में भी ऐसी प्रयोगशालाएं खुलनी चाहिये।

३. सिंचाई की समुचित सुविधा

यंत्रों की सहायता से खेती करने और अच्छे बीजों का प्रयोग होने के बाद भी यदि सिंचाई की समुचित सुविधा न हो, तो पैदावार नहीं बढ़ती। पिछली तीन योजनाओं के फलस्वरूप बृहत् एवं लघु परिमाण के सिंचाई-कार्यों से अनुमानतः २० लाख एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र को लाभ मिल जायेगा, अर्थात् चतुर्थ योजना के अंत तक ९ करोड़ एकड़ क्षेत्र सिंचित हो जायेगा।

मगर सिंचाई की बड़ी योजनाओं के साथ छोटी और बीच के दर्जे की योजनाएं भी चलायी जानी चाहिये। पुराने तालाबों और पोखरों को गहरा करना चाहिये। ट्यूबवेल लगाने का काम भी ठीक ढंग से होना चाहिये।

अभी तक राज्यों में काफी धन खर्च होने के बावजूद सिंचाई की व्यवस्था ठीक नहीं हुई है। कई इलाकों में ट्यूब वेल लगाने से कुंओं और तालाबों के पानी पर उल्टा असर पड़ा है। अतः ट्यूबवेल वहीं लगाने चाहिये, जहां पानी ३०-३५ फुट से अधिक नीचा हो। सिंचाई का नया प्रयोग-छिड़काव बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसमें पानी देने के साथ यदि ऊपर से पानी की फुहार छोड़ी जाये, तो सिंचाई बहुत अच्छी होती है।

४. अच्छे उर्वरकों का प्रयोग

भारत में पैदावार कम होने के मुख्य कारणों में एक यह भी है कि यहां की भूमि की उर्वरता बहुत कम हो गयी है। पिछले कई सदियों से हमारे किसान खेतों को केवल गोबर की खाद देते आये हैं। तभी उपज इतनी कम हो गयी है। बड़े पैमाने पर उर्वरकों यानी रासायनिक खादों का इस्तेमाल करके ही यह कमी दूर की जा सकती है। उर्वरक नाइट्रोजन, फास्फोरिक एसिड और पोटाश में से किसी एक रासायनिक पर निर्भर होते हैं।

पंद्रह वर्ष पूर्व हमारे देश में केवल १० लाख टन उर्वरकों का उपयोग होता था। अब हमारे किसान २ करोड़ ९० लाख टन उर्वरकों का प्रयोग करते हैं। तृतीय योजना तक नाइट्रोजन एवं फास्फोरिक रासायनिक खादों का उपयोग बढ़कर १०० लाख टन नाइट्रोजन और ४०–५० लाख टन फास्फोरिक एसिड हो गया है। हरी खाद की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में १० लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में बुआई करने की भी योजना है।

उर्वरकों का उपयोग पर्याप्त बढ़ा है; मगर यह प्रयोग पूरी समझदारी के साथ नहीं हो रहा। बहुत जगहों पर तो उर्वरकों के लगातार प्रयोग से जमीन के पोषक तत्वों में असंतुलन पैदा हो गया है। उर्वरकों के प्रयोग से पहले किसान को यह समझना पड़ेगा कि उसके खेत को किन पोषक तत्वों की आवश्यकता है।

फिर उर्वरकों को प्राप्त करना भी किसान के लिए उतना आसान नहीं। उनकी वितरण-व्यवस्था तो बहुत ही असंतोषजनक है। उर्वरक खरीदने के लिए किसान के पास पैसा भी नहीं है। इसके लिए उचित ऋण-व्यवस्था किये बिना काम नहीं चलेगा।

५. पैकेज पद्धति का योजनाबद्ध कार्य

इन सब उपायों से खेती की पैदावार बढ़ सकती है। लेकिन इन उपायों के उपयोग का परीक्षण सरकार को ही करना होगा। हमारे देश का किसान आधुनिक प्रकार की खेती करना तब तक नहीं सीखेगा, जब तक उसके सामने वैसी खेती करके पैदावार बढ़ाने का परीक्षण सफल नहीं कर दिखाया जायेगा। इसीलिए अब सरकार ने कुछ परीक्षण फार्मों के संचालन की व्यवस्था की है।

पिछले तीन-चार वर्षों से पैदावार बढ़ाने के लिए सात राज्यों के कुछ 'पैकेज' ऐसे चुने गये हैं, जहां सघन खेती का प्रयोग हो रहा है। इन 'पैकेजों' का क्षेत्रफल १९३ लाख

प्रार्थना

क्या प्रार्थना
शब्द है, गीत है ?
अर्चन है, वंदन है ?
नहीं।
वह तो है विनम्र चेष्टा
समष्टि के साथ जीने की अपनी
सीमाओं से आगे पहुंचने की !
जब कभी भी हम
'स्व' से हटकर सोचते हैं
या आनंद की अनुभूति में सार्थक कुछ
रचते हैं,
उसी क्षण हम होते हैं
प्रार्थना में लीन –
एक बृहत्तर जीवन में तल्लीन।
उसके लिए
नहीं है जरूरत
मंदिर, मस्जिद,
या गिरजे में जाने की।
एक छोटा काम भी
अगर किया गया है निःस्वार्थ
तो वही है प्रार्थना यथार्थ।

– दिनकर सोनवलकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकड़ है।

'पैकेज' का विचार इस बात पर आधारित है कि इन क्षेत्रों में सुधरे बीजों का उपयोग हो, पर्याप्त उर्वरक दिया जाये, खेती की रक्षा के लिए कीटनाशक दवाओं का पूरा प्रयोग किया जाये और वैज्ञानिक ढंग के यंत्रोपकरणों की सहायता से जुताई-गोड़ाई आदि सब हो।

'पैकेज' जिलों में छोटी सिंचाई योजनाओं को भी पूरा करने के लिए सीमेंट, इस्पात आदि जरूरी चीजें दी जा रही हैं। अनुभव से यह पता लगा है कि पैकेज पद्धति से पर्याप्त लाभ हुआ है। सामान्यतया जिन खेतों में प्रति एकड़ ८-१० मन गेहूं होता था, वहां २३-२४ मन गेहूं पैदा हुआ। अभी यह योजना कुछ पैकेज जिलों में चलायी जा रही है। आवश्यकता इस बात की है कि सारे देश में इसे शीघ्र लागू किया जाये।

सहकारी खेती और चकबंदी से ही यह योजना पूरी होगी। सहकारी खेती से ही किसान अच्छे बीज, नये औजार, अच्छी खाद को उपयोग में लाकर पैदावार बढ़ा सकते हैं।

भारत में खाद्यान्नों की निरंतर कमी अनुभव होने का एक कारण यह भी है कि हमारे देश के आम आदमी की औसत खुराक में अनाजों का अनुपात आवश्यकता से अधिक है। हमें अनाज के स्थान पर कुछ ऐसे खाद्य पदार्थ भी लेने चाहिये, जिनमें पौष्टिक तत्व अनाज की अपेक्षा कम नहीं होते। इनमें आलू, केला, शकरकंद, सब्जियां आदि उल्लेखनीय हैं। अनेक देशों ने भोजन में कंद-मूल-फल की मात्रा बढ़ाकर अनाज की कमी की समस्या का समाधान किया है।

अन्नाभाव का एक कारण यह भी है कि किसान को तंबाकू, तिलहन, कपास, चाय, गन्ना और पटसन जैसी फसलों से अनाज की अपेक्षा अधिक दाम मिलते हैं और आमदनी के लालच में पड़कर वह अनाज बोना कम कर देता है। ये सभी चीजें या तो स्वदेशी उद्योग-धंधों के लिए आवश्यक हैं, या इनके लिए विदेशों में अच्छा बाजार है। विदेशी मुद्रा अर्जित करने की उत्सुकता में सरकार भी इनके उत्पादन को प्रोत्साहन देती है। नतीजा यह होता है कि अनाज की बुआई कम हो रही है और संपन्न किसान अपनी ज्यादा शक्ति नकद लानेवाली खाद्येतर फसलों की खेती में लगा रहे हैं।

वस्तुतः हमें खाद्य-समस्या के हल में उसी प्रकार पूरी शक्ति लगानी होगी, जैसे हम शत्रु-सेना के आक्रमण पर लगाते हैं। खाद्याभाव हमारा सबसे बड़ा अंदरूनी शत्रु है। मौजूदा शासन यदि इस शत्रु को हराने में विफल हो गया, तो उस पर से देश का विश्वास उठ जायेगा।

पिछले पचास वर्षों में हम उद्योग-धंधों के क्षेत्र में चाहे कितने भी आगे बढ़े हों; पर आज भी देश की अर्थ-व्यवस्था का दारोमदार कृषि-उत्पादन पर है। अनाज के मामले में यदि हमने आत्मनिर्भरता प्राप्त नहीं की, तो हमारी स्वतंत्रता बिलकुल खोखली होगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा ही तो जीवन है

किसी के जीवन की ऊंचाई जाननी हो, तो उसकी श्रद्धा की गहराई नापिये।

जाबालि

जीवन ही नहीं, मृत्यु भी श्रद्धा के साथ आनंदमयी बन जाती है। हृदय की श्रद्धा जीवित रहे, तो अकेलापन भी नहीं अखरता। अपने साथियों के नेक होने में श्रद्धा न रहे, तो हजारों के बीच भी हम अकेले हो जाते हैं।

श्रद्धापूर्ण मनुष्य ही प्रगतिशील बनता है। मन में श्रद्धा हो, तभी हम समय के साथ चल सकेंगे। तभी हम अपनी परिस्थितियों में संतुष्ट रह सकेंगे। जिसे जीने की श्रद्धा है उसे कोई भी बाहरी परिस्थिति बेबस नहीं बना सकती। वह दुनिया की हर दीवार को लांघकर आगे बढ़ सकता है।

जीवन में अटूट श्रद्धा रखने से ही हम मृत्यु का भय दूर कर सकते हैं। मृत्यु की अपेक्षा जीवन अच्छा है—यह श्रद्धा मन में होगी, तभी हम भयंकर गरीबी, नितांत अभाव और बिलकुल अकेलेपन में भी जीवन को प्यार करेंगे। तब हम मौत की घड़ियों में भी ऐसे कुछ क्षण निकाल लेंगे, जो आनंद के होंगे।

जिसे जीवन में श्रद्धा है, उसे उसकी अपूर्णता में भी श्रद्धा होती है। अपूर्णता स्वीकार किये बिना हम जिंदगी का आनंद नहीं ले सकते। प्रकृति की कोई भी वस्तु पूर्ण नहीं है। धरती प्यासी है; उसकी प्यास मिटाने को वर्षा आती है। मगर वह भी पूर्ण नहीं। प्यास मिटाने के बदले वह सब कुछ बहा ले जाती है। फिर भी धरती और आसमान में प्रेम है। दो अपूर्ण वस्तुओं का प्यार ही प्यार है। और यही प्यार का सौंदर्य है।

जीवन के पूर्ण विकास के लिए जहां ऊंची चीजों में श्रद्धा रखना आवश्यक है, वहां अपने पर श्रद्धा रखना भी उतना ही आवश्यक है।

हृदय की श्रद्धा-भावना केवल भाग्य या भगवान पर ही श्रद्धा रखने की प्रेरणा नहीं देती, अपनी योग्यता पर श्रद्धा करना भी सिखाती है। यदि हम अपनी योग्यता और परिश्रम पर विश्वास रखते हैं और उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं, तो कोई काम कठिन प्रतीत नहीं होता। जिन्होंने इस सचाई को जान लिया है, और अपने जीवन में ढाल लिया है, वे ही विकास के शिखर तक पहुंच पाते हैं।

जो विद्यार्थी मस्तिष्क की शक्ति में श्रद्धा रखते हैं, वे किसी भी तरह मस्तिष्क का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकास कर लेते हैं। शिक्षा पाकर वे ज्ञानी भी हो जाते हैं। उनकी बुद्धि तथा उनके विचारों की दुनिया विशाल होती रहती है। यदि उन्हें बचपन में ज्ञान प्राप्त करने का अवसर न मिला हो, तो भी उनका नया-नया ज्ञान पाने का यत्न जीवन-भर चलता ही रहता है।

हमें यह समझ लेना चाहिये कि केवल इच्छा से सब कुछ नहीं मिलता; मगर विश्वास से बहुत मिल जाता है। बहुत लोग मित्रता की इच्छा रखते हैं; परंतु मित्र बनाने की अपनी शक्ति में श्रद्धा नहीं रखते; और चूंकि श्रद्धा नहीं रखते, इसलिए वे मैत्री के लिए कोई उद्योग भी नहीं कर पाते। इस प्रकार उनकी दुनिया छोटी-सी ही रह जाती है।

यदि कोई कुछ करना चाहता है और उसे करने की अपनी क्षमता में अटूट श्रद्धा रखता है, तो यह श्रद्धा ही उसके लिए सीढ़ी बन जाती है। बात यह है कि जिस उद्देश्य को पाने के लिए हमारे मन में गहरी श्रद्धा होती है, उसी के लिए हम आगे बढ़ते हैं। जो कुछ हम चाहते हैं, वह यदि हमें प्राप्त नहीं होता, तो साधारणतः उसका कारण यही होता है कि हमने स्वयं अपने आप पर पूरी श्रद्धा नहीं की।

हम जितना विश्वास रखते हैं, उतना ही पाते हैं, अधिक नहीं। आदमी निराशाओं, हीन-भावनाओं और शंकाओं के शिकार इसीलिए होते हैं कि वे जीवन में पूरा विश्वास नहीं रखते; और परिणामतः वे कोरे-के-कोरे रह जाते हैं।

अधिकांश व्यक्ति ऐसे ही होते हैं, जो अपने भविष्य पर विश्वास नहीं रखते, संभावनाओं के प्रति जागृत नहीं रहते। वे जीवन-भर आलसी रह जाते हैं। ऐसे आलस्य-भरे मन से उन्होंने कुछ चाहा भी, तो उसे व्यर्थ ही चाहा। अपनी सफलता के लिए वे परिस्थितियों को दोषी बतलाते हैं। वे यह नहीं देखते कि जीवन के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास की जो कमी उनमें है, वही उनकी अधिकांश असफलताओं के लिए उत्तरदायी है। अपने श्रम में श्रद्धा रखनेवाला कभी बेबस नहीं बनता।

शेख सादी के ज्ञान-भंडार 'बोस्तां' में श्रद्धापूर्ण विश्वास की एक बड़ी प्रेरक कहानी है। एक बार किसी ने हातिम से पूछा—"हातिम, तुमने अपने से बढ़कर श्रद्धालु व्यक्ति क्या कोई दूसरा भी देखा है?" हातिम की आंखों में एक पुरानी स्मृति उद्दीप्त हो उठी। उसने उत्तर दिया—"हां, एक बार मेरे यहां नगर-भोज था। उसी दिन संयोगवश मैं जंगल की ओर जा निकला। देखा, एक लकड़हारा लकड़ी काट रहा है। मैंने साश्चर्य उससे कहा—"लकड़ी क्यों काटते हो? चलो, हातिम के भोज में शामिल होकर मौज करो।" लकड़ी काटनेवाले ने लापरवाही से कहा—"जो व्यक्ति अपने श्रम से कमाकर खा सकता है, वह हातिम का द्वार क्यों देखे?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है मेरा मृत्युलेख

डा० जे० बी० एस० हाल्डेन *

अभी फरवरी १९६४ चल रहा है और यह मेरा अपना मृत्युलेख माना जा रहा है। मुझे उम्मीद है, यह १९७५ तक किसी को दिखाया नहीं जायेगा। १९७५ तक मैं ८२ वर्ष का हो जाऊंगा और उतनी उम्रतो शायद काफी है। लेकिन हाल में मेरा कैन्सर का आपरेशन हुआ है और अगर आपरेशन सफल नहीं सिद्ध हुआ, तो यह बहुत संभव है, आपको इससे भी काफी पहले ही मुझे देखने व सुनने का मौका मिल जाये।

शुरू में ही मैं कुछ डींग हांकूंगा। मैं यह जानता हूं, आजकल जो सबसे अधिक प्रभावशाली लोग जीवित हैं, मैं उनमें से एक हूं—वैसे मेरे हाथ में रत्ती भर भी सत्ता नहीं है—और सो कैसे, यह भी समझा देता हूं। सबसे पहले १९३२ में मैंने ही सिद्ध किया कि मानवीय जीनों में उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) किस रफ्तार से होता है। और मेरा अनुमान ज्यादा गलत नहीं था।

लेकिन इससे यह न समझ लें कि मैं सिर्फ गणनात्मक सिद्धांतों से ही जूझता रहा हूं। मैंने कई पशुओं और पौधों के प्रजनन के प्रयोग किये हैं और असहज विशेषताओं (एब्नार्मेलिटी) वाले विविध मनुष्यों की वंशावलियों के भी हिसाब लगाये हैं। लेकिन इसके अलावा भी मैंने बहुत-सा काम किया है। इसमें से बहुत कुछ तो शरीरशास्त्रीय प्रयोग हैं, जो मैंने स्वयं अपने ऊपर और अपने मित्रों पर किये। इसके चंद उदाहरण देता हूं।

सन १९४२ में डा० ई० एम० केस और मैं अपना ही बनाया हुआ वायुयंत्र लेकर ४८ घंटे एक खिलौनानुमा पनडुब्बी में बंद रहे। हमने बाहर सात-आठ घंटे वह वायुयंत्र चलाकर देख लिया था और हमें उस पर पूरा भरोसा था। लेकिन जलसेना को विश्वास नहीं था और वह इस बात का प्रमाण पा लेना चाहती थी कि ४८ घंटे

---

*विज्ञानवेत्ता प्रो० हाल्डेन ने अपना यह मृत्युलेख २० फरवरी १९६४ को लंदन में रेकार्ड कराया था। उनके देहांत के बाद १ दिसंबर १९६४ को बी० बी० सी० ने इसे प्रसारित किया।

हिन्दी डाइजेस्ट
१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंद रहने के बाद भी पनडुब्बी में दो आदमियों के लिए कुछ आक्सिजन बाकी रहेगी। और ऐसा ही हुआ।

लेकिन हमें काफी तकलीफ हुई। एक तो पनडुब्बी इतनी छोटी थी कि हम दोनों एक साथ उसमें लेट नहीं सकते थे। एक आदमी पांव पसारे, तो दूसरे को बैठ जाना पड़ता था। दूसरे, हमारा वायुयंत्र कार्बन-डाइ-आक्साइड को तो सोख लेता था; लेकिन हमारी सांस के साथ निकली भाप जमकर पनडुब्बी की छत पर से बूंद-बूंद कर हमारी गर्दनों पर टपक रही थी। जब हम पनडुब्बी से बाहर निकले, तो एकदम अकड़े हुए थे और ठिठुर रहे थे।

और हमने आक्सिजन के विषैले प्रभाव पर भी बहुत परीक्षण किये। यह अटपटी-सी बात लगती है। शायद आप आक्सिजन को विष नहीं मानते; लेकिन बहुत तेज दबाव में आक्सिजन में सांस ली जाये, तो वह तीव्र विष बन जाती है। उससे मिरगी के जैसे दौरे आने लगते हैं। मेरी पत्नी ही एकमात्र व्यक्ति है, जिसे ऐसे पांच दौरे पड़ चुके हैं। मुझे भी दो दौरे पड़े, और मैंने समझा उतना अनुभव ही काफी है।

लेकिन मैं तो सभी चीजों में चंचुपात करता रहा हूं। मैंने शुद्ध गणित में कुछ कसरत की है और खगोल में भी हाथ डालने की हिमाकत की है। लेकिन 'चंचुपाती' होने का मुझे तनिक भी शरम-संकोच नहीं है। कई बार यह आदत बड़े काम आती है।

सन १९३२ में नाजियों से त्राण पाने के लिए बहुत-से शरणार्थी ब्रिटेन आये। जो शरणार्थी वैज्ञानिक थे, उन्हें नौकरी दिलवाने के लिए मैंने यथाशक्ति काम किया। इस प्रकार आनेवालों में एक सज्जन थे चेन। वे जो शोधकार्य कर रहे थे, उसके बारे में हमने घंटे-दो-घंटे बातें कीं और मैं बोला- "शायद मैं तो आपकी खास मदद न कर सकूं। लेकिन आक्सफर्ड में फ्लोरी नाम के एक सज्जन हैं। इस प्रकार की चीजों में उनकी बड़ी दिलचस्पी है। मेरी सलाह है, आप उनसे मुलाकात करें।"

चेन ने उनसे मुलाकात की, और शायद आपको मालूम हो, पेनिसिलीन के पृथक्करण और निर्माण के लिए चेन और फ्लोरी को सम्मिलित रूप से नोबेल-पुरस्कार मिला। पेनिसिलीन के आविष्कार के श्रेय का दावा मैं नहीं करता; लेकिन अगर इसका आधा प्रतिशत श्रेय भी मुझे हो, तो मैंने कितने ही हजार लोगों की जान बचायी होगी!

सो चंचुपात करना, अपने साथियों द्वारा विज्ञान की विविध शाखाओं में किये जा रहे

जीवन में हम जो सुंदर-से-सुंदर अनुभव पा सकते हैं, वह है रहस्य का अनुभव। समस्त सच्ची कला और सच्चे विज्ञान का उद्गम रहस्य-भावना है। जो इस भावना से अपरिचित है, जो कभी विस्मय-विमुग्ध या अभिभूत होकर देखता नहीं रह जाता, वह मृतकवत् है। उसकी आंखें बंद हो चुकी हैं।

—अल्बर्ट आइंस्टाइन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयोगों की कुछ जानकारी रखना अच्छा है।

कभी-कभी मुझसे पूछा जाता है कि वैज्ञानिक के नाते मैं सबसे अधिक ऋणी किसका हूं। मुझे तनिक भी संदेह नहीं कि मुझ पर सबसे ज्यादा ऋण मेरे पिता जे० एस० हाल्डेन का है। वे भी मेरी ही तरह, या मुझसे भी ज्यादा चंचुपात किया करते थे। मेरी राय में वे एक महान् शरीर-क्रिया-शास्त्री थे। बारह वर्ष मैंने छुट्टियों में उनकी प्रयोगशाला में बोतल धोने जसे छोटे-छोटे काम किये और स्कूल में पढ़े विज्ञान के आधार पर परीक्षण शुरू करने में मुझे जरा भी दिक्कत नहीं हुई।

दरअसल विश्वविद्यालय में मैंने विज्ञान की कोई डिग्री नहीं ली। मेरी डिग्री तो दूसरे ही विषयों की है—गणित और यूनानी-लातीनी साहित्य की। और मैं बताता हूं, मुझे वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करने में कोई दिक्कत नहीं हुई और विज्ञान पढ़ाने में भी बहुत ही कम।

सन १९५७ में मैं भारत चला गया। कुछ तो इसलिए कि १९१७ में इराक (या उस समय के मेसोपोटामिया) में घायल हो जाने पर मैं भारत भेजा गया था, तभी मुझे उससे प्यार हो गया था। लेकिन वहां बसने का मौका मुझे अब मिला, हालांकि स्वतंत्रता के बाद वहां कई बार हो आया था। मैं महसूस करता था कि मेरा आना-जाना व्यर्थ है; अगर मैं अपने भारतीय सहयोगियों के साथ समकक्ष होकर काम नहीं कर सकता, जैसा कि अब मैं कर सकता हूं।

मैं कह सकता हूं कि मैं भारत के अपने काम को बहुत ही फलप्रद और उपयोगी मानता हूं। बेशक वहां भयंकर दिक्कतें हैं—वैज्ञानिक उपकरण नहीं मिलते, कोई भी काम करा पाना बहुत कठिन है, ब्रिटेन से भी ज्यादा कठिन; लेकिन प्रयोगशाला के बाहर प्राणियों, पेड़-पौधों और मनुष्यों पर प्रयोग करने के अपार सुअवसर वहां हैं। और साथ में वैज्ञानिक काम करने के लिए गजब के युवक मिलते हैं—हर तरह से उतने ही बढ़िया, जितने कि कैंब्रिज के युवक ... और साहब, मैं दस वर्ष कैंब्रिज में रहा हूं। पच्चीस वर्ष लंदन विश्वविद्यालय में प्रोफेसरी करते हुए मुझे जैसे स्नातकोत्तर विद्यार्थी मिले, उनसे शायद ये औसतन अच्छे ही हैं।

अगर आज से सौ साल बाद मुझे याद किया जायेगा, तो कोई आश्चर्य नहीं कि किसी ऐसी चीज के लिए याद किया जाये, जिसका आज मैंने जिक्र भी नहीं किया है।

लेकिन आज मुझे अपनी सबसे बड़ी प्रशंसा यह महसूस होती है कि लोग मेरे पता लगाये हुए किसी तथ्य का जिक्र करें—उदाहरण के लिए इसी बात का कि अमोनियम क्लोराइड खाने से मनुष्यों में एसिड विष पैदा हो जाता है-और उसके साथ मेरा नाम तक न लें। विज्ञान की परंपरा में इस प्रकार आत्मसात् कर लिया जाना मुझे विशेष नामोल्लेख के बजाय कहीं अधिक तृप्तिकर लगता है। फिर भी मेरी राय में महत्व की चीज मेरा काम है, वह अच्छा-बुरा जसा भी हो, यह नहीं कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते ह।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरावती अब तक
मैसूर को सौंदर्य-पान ही कराती थी;
अब वह उसे बिजली खिलाकर
सशक्त भी बनायेगी।

बिजली की नदिया शरावती

एस० श्रीनिवासाचार

आज से बीस साल पहले अगर आप जोग जलपात को देखने जाते, तो बस एक ही स्मृति संजोकर वहां से लौटते—मन को अभिभूत कर देनेवाली दृश्यावली की स्मृति। आखिर यही तो सदा से होता आ रहा था। लेकिन यदि आपकी कल्पना इस भव्य और रम्य दृश्य के सौंदर्यानुभव की बाढ़ में बह जाने से किसी प्रकार बची रहती, तो शायद आप भी स्वर्गीय डा० विश्वेश्वरय्या की तरह सखेद कहते—"ओह! कितनी बिजली बरबाद हो रही है।"

बरबादी तो यह सरासर थी ही; लेकिन इस बरबादी की भयंकरता को बहुत थोड़े लोग समझ पाये थे। और डा० विश्वेश्वरय्या की तरह जो समझ पाये, वे भी कुछ कर-धर नहीं सकते थे। पनबिजली-उत्पादन की कला ने १८७३ में भारत में पदार्पण किया और १९०२ में वह मैसूर राज्य आयी। किंतु शरावती को किसी ने न छेड़ा; वह अपनी हरी बनाच्छादित घाटियों में उसी तरह उच्छृंखल और अबाध गति से बहती रही। वर्ष - पर - वर्ष दूसरी अनेक नदियों की भांति शरावती की प्रचंड क्षमता भी व्यर्थ बहकर सागर में गर्क होती रही। किंतु कोई न था, जिसमें इस नदी की छिपी शक्ति को पकड़कर उसे मानव की सेवा में जोतने का संकल्प और साहस हो।

शरावती की अपार क्षमता का कुछ उपयोग करने का पहला महत्वपूर्ण प्रयास किया गया सन १९५२ में। उस साल १। लाख किलोवाट की उत्पादन क्षमतावाला महात्मा गांधी पनबिजली - घर चालू किया गया। लेकिन शरावती से तो इससे बहुत गुना अधिक बिजली निचोड़ी जा सकती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस साल २४ जनवरी को देश ने समृद्धि की दिशा में एक और कदम बढ़ाया। उस दिन प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री ने जोग में एक विशाल पनबिजली का कारखाना देश के नाम अर्पित किया और उसका १,१०० किलोवाट शक्ति का पहला जेनरेटर चालू किया। इस योजना में इतनी ही शक्तिवाले और भी नौ जेनरेटर लगाये जायेंगे, जो चार-चार, छः-छः महीने के अंतर से चालू होते जायेंगे।

चार वर्ष बाद अकेली शरावती योजना १० लाख किलोवाट से अधिक बिजली उत्पन्न कर रही होगी। तब यह एशिया का सबसे बड़ा पनबिजली केंद्र होगा। इसका पहला घटक (यूनिट) अभी जांचा-परखा जा रहा है; तीन-चार महीने में वह भी चालू हो जायेगा।

नदी के हिसाब से शरावती बहुत छोटी है। समुद्र से ४१६ किलोमीटर दूर, पश्चिम घाट के सह्याद्रि पर्वतों में अंबुतीर्थ नामक स्थान में उसका उद्गम है। पहाड़ों, घने जंगलों और मैदानों में १३१ किलोमीटर की यात्रा करके होन्नावर के पास वह अरब सागर में गिरती है। किंतु इतनी छोटी होते हुए भी उसकी जलसमृद्धि आश्चर्यजनक है—लगभग ४० लाख एकड़ फुट होगा। बात यह है कि इसका प्रस्रवण-क्षेत्र (कैचमेंट एरिया) पश्चिम घाट में है, जहां सालाना ६२५ सेंटिमीटर तक बारिश होती है।

अपने उद्गम से निकलकर शरावती धनुष से छूटे तीर की भांति ८० किलोमीटर तक वेग से दौड़ती है और घनघोर गर्जन के साथ जोग में २५२ मीटर की ऊंचाई से कूद पड़ती है। बरसात में जब शरावती लबालब भरी और छलछलाती हुई बह रही होती है, प्रपात की विशालता दर्शकों को मुग्ध और स्तब्ध बना देती है। चारों ओर के वनों की सघन सश्रीकता प्रपात की भव्यता को द्विगुणित कर देती है। पूर्णिमा की चांदनी में चमचमाते हुए जोग से बढ़कर रम्य और हृदयहारी दृश्य दूसरा न होगा। और बिजली का कारखाना बनने से पर्यटन-स्थान के रूप में जोग का आकर्षण घटेगा नहीं; बल्कि सुख-सुविधाएं बढ़ जाने से उसमें वृद्धि ही होगी।

चाहे किसी भी पैमाने से नापें, शरावती योजना एक बृहद् आयोजन है। ८६ करोड़ रुपये की लागत की यह संपूर्ण योजना भारत और अमरीका के सहयोग का एक उज्वल नमूना होगी। संयुक्त राज्य अमरीका ने ३ करोड़ डालर इसके लिए दिये हैं, जिससे योजना के लिए आवश्यक अधिकांश विदेशी मुद्रा की पूर्ति हो जाती है। इसके अलावा पी० एल० ४८० निधि से भी अमरीका ३४.५ करोड़ रुपये दे चुका है।

सात साल पहले जब यहां काम-काज शुरू हुआ, तब से जोग के चारों ओर के वन-पर्वत वृक्षों को काटते, पत्थरों को फोड़ते और मिट्टी ढोते हुए श्रमिकों की ध्वनि से गूंज रहे हैं। एक वक्त तो यहां एक साथ ४० हजार श्रमिक काम कर रहे थे।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

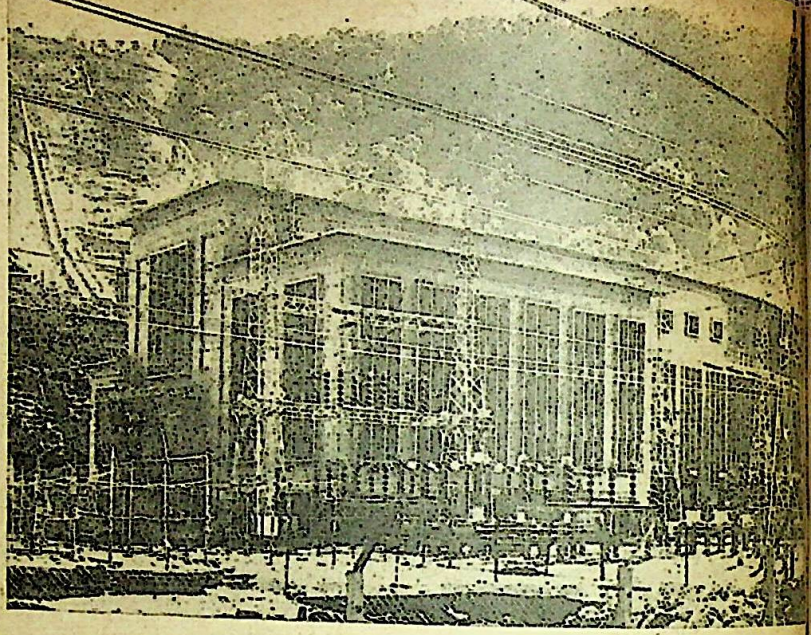

शरावती योजना का बिजली-घर और ट्रांसफार्मर-अहाता। पृष्ठभूमि में बायें ओर पेनस्टाक पाइप है, जिसमें से पानी ४५० मीटर की ऊंचाई से उतर कर जेनरेटरों को चलाता है।

शरावती के दो मुख्य अंग हैं दो बांध—एक बिजलीघर से ९.६ किलोमीटर ऊपर शरावती नदी पर, दूसरा उसकी उपनदी तलकलले पर। इनमें से पहला लिंगनमक्की बांध कहलाता है। यही मुख्य बांध है और २,०७६ मीटर लंबा व ६० मीटर ऊंचा है। इससे निर्मित जलाशय ३२२ वर्ग किलोमीटर विस्तृत होगा और उसमें ४४४.६ करोड़ घन मीटर जल समा सकेगा।

लिंगनमक्की बांध मिट्टी को ठोंककर ऊपर से पत्थर व गारे की चिनाई करके बनाया गया है। उसमें १९६ मीटर के बहाव-मार्ग (स्पिलवे), बिजली-घर में जल पहुंचानेवाले आउटलेट, ग्रीष्म में जोग में जल की मात्रा पर्याप्त रखने के लि जल भेजनेवाले स्लूस-द्वार और आगे चल कर बांध के नीचे स्थापित किये जानेवा ६० हजार किलोवाट के बिजली-घर को पानी पहुंचानेवाले पेनस्टाक पाइप आदि की व्यवस्था रहेगी।

तलकलले के बांध का निर्माण पिछले साल पूरा हुआ। यह ४५० मीटर लंबा और ६१ मीटर ऊंचा है। इसमें १३ करोड़ घन मीटर पानी का जमाव हो सकेगा। लिंगनमक्की में जल का संतुलन ठीक रखने में यह सहायता देगा। लिंगनमक्की का पानी तीन मील लंबी नहर द्वारा इसमें पहुंचेगा। बीच में उसे ६०० मीटर लंबी पहाड़ी सुरंग में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुजरना होगा। शेष नहर की छत पाट दी गयी है।

शरावती योजना एक साहस-कथा है। इसके लिए मनुष्य को प्रकृति से कठोर संघर्ष करना पड़ा है। घने, अंधकार-भरे जंगल काटकर विकट भूमि में सड़कें बनायी गयी हैं। बरसात में पानी ऐसा मूसलाधार गिरता है कि छः महीने कोई निर्माण-कार्य नहीं किया जा सकता। सात साल पहले जब इस निर्माण-कार्य की नींव डाली गयी, तब यहां इनी-गिनी सड़कें थीं, वे भी कच्ची, और थे थोड़े-से झोंपड़े।

किंतु आज तो यहां का नजारा ही बदल गया है। इस सुहावने बियाबान में हमारे इंजीनियरों और श्रमिकों ने एक शानदार चीज खड़ी कर दी है, जो बिजली पैदा करेगी और उससे दूर-दूर के कल-कारखाने चलेंगे, हजारों एकड़ कृषि-भूमि की प्यास बुझाने के लिए सैकड़ों पंप चलेंगे।

नये बिजली-घर से तो ८.९१ लाख किलोवाट बिजली तैयार होगी ही; महात्मा गांधी बिजली-घर भी सालाना १.२० लाख किलोवाट बिजली उत्पन्न करता रहेगा। मुख्य बिजली-घर के नीचे बहनेवाले जल का लाभ उठाने के लिए २। लाख किलोवाट शक्ति का एक और यूनिट कायम करने की योजना भी है।

सन १९७०-७१ तक जब यह सब हो चुकेगा, शरावती योजना लगभग १२।। लाख किलोवाट बिजली पैदा करने लगेगी। यह भाखड़ा योजना की कुल क्षमता से अधिक और मैसूर के वर्तमान विद्युत उत्पादन से बहुत ज्यादा है। आज सारा देश जितनी बिजली उत्पन्न करता है, उसका १५ प्रतिशत तो अकेली शरावती योजना से ही उत्पन्न होने लगेगा।

जोग से बंगलोर तक ४०८ किलोमीटर के बिजली के तार बिछाये जा चुके हैं। अब राज्य के उद्योग-धंधों को – खासकर जिन उद्योगों का देश की सुरक्षा में महत्व है, उन्हें बिजली की कमी नहीं रहेगी। इसके बाद मैसूर के बाक्साइट से भरपूर अल्युमिनियम बनने लगेगा। अल्युमिनियम उद्योग बहुत बिजली खाता है।

शरावती देश की सबसे सस्ती पनबिजली योजना होगी। एक किलोवाट बिजली-निर्माण की क्षमता प्राप्त करने के लिए यहां १,००० रुपये से भी कम धन खर्च होगा। यहां उत्पादित बिजली का ५० प्रतिशत मैसूर राज्य में खप जायेगा।

शरावती योजना के दो बांधों से १५४ गांवों को क्षति पहुंचेगी। ७० गांव तो सदा के लिए डूब जायेंगे। मैसूर सरकार ने इन गांवों के ढाई हजार परिवारों को पुनः बसाने का काम भी योजना की नींव डालने के साथ ही शुरू कर दिया। इन परिवारों को नकद और जमीन दी जा रही है, ताकि वे नये मकान बनाकर जल्दी अपने-अपने धंधों में लग जायें।

यह तो शरावती की कहानी की शुरूआत है। उसका पूरा सुफल कुछ वर्ष बाद सामने आयेगा। ['योजना' से साभार]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इशारा

आज़ार[1] हैं नये-नये तो हैं चारे[2] नये-नये।
मिलते हैं ज़िंदगी को सहारे नये-नये॥
जब भी घिरी है मौजों[3] में कश्ती[4] हयात[5] की।
उभरे हैं मौज ही से किनारे नये-नये॥
लायेगी तैरगी[6] ही मदावाये-तैरगी[7]।
यह रात खुद जनेगी सितारे नये-नये॥
यह ख़ारज़ार[8] आप ही उगलेगा लालाज़ार[9]।
फूटेंगे तह से दश्त[10] के धारे नये-नये॥
होने दो हर मनारहे-माज़ी[11] को बेचिराग़।
वह जगमगा रहे हैं मनारे नये-नये॥
अज़्म[12] जवां है दिल में तो राहें नयी-नयी।
नज़रों में ताब है तो नज़ारे नये-नये॥
मंज़िल बहुत क़रीब है अब गाम-गाम[13] पर।
रहरू[14] को मिल रहे हैं इशारे नये-नये॥

— आनंद नारायण मुल्ला

प्रेषक : राम सतौरिया

१. कष्ट, २. उपचार, ३. लहरें, ४. नाव, ५. ज़िंदगी, ६. अंधेरा, ७. औषध, ८. जंगल, ९. चमन, १०. बियाबान, मरुस्थल, ११. भूतकाल के मीनार, १२. संकल्प, १३. कदम-कदम पर, (१४) यात्री।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बर्फ की गोद में सोया हुआ महाद्वीप

एलन मूरहेड

न्यूजीलैंड से केवल पांच घंटे उड़ान भरकर हम एक ऐसी विलक्षण दुनिया में पहुंच जाते हैं, जहां जीवन एक स्वप्न-सा जीवन होने लगता है। यहां कदम रखते ही हम संसार से हमारा नाता टूट जाता है। चारों ओर मीलों तक बर्फ की सफेद चादरें ओढ़कर बैठी हुई पर्वतमालाएं दिखाई देती हैं। उनकी घाटियों की गहरे नीले रंग की लम्बायी झीलों में कहीं-कहीं बड़े हिमखंड धीरे तैरते हैं, मानो विशाल नीलाकाश में सुस्त शरत्कालीन मेघ मंडरा रहे हों।

हजारों मील तक फैला हुआ यह हिमाच्छादित भूखंड एंटार्क्टिका अथवा दक्षिण ध्रुव महाद्वीप कहलाता है। इसका क्षेत्रफल ५० लाख वर्गमील है, जो यूरोप के क्षेत्रफल से दुगना है। यह दुनिया का सबसे अधिक औसत ऊचाईवाला महाद्वीप है। इसकी औसत ऊंचाई ७,००० फुट है। यहां बर्फ का इतना बड़ा अंबार लगा है कि यदि वह सब एक साथ पिघलकर बह निकले, तो सारे संसार में समुद्र की सतह २०० फुट ऊंची हो जाये और सारे तटवर्ती शहर डूब जायें।

यहां किसी-किसी स्थान पर बर्फ की चादर को चीरकर बाहर झांकते हुए मटमैले रंग के शैल-शिखर भी दिखाई देते हैं, जो १६ हजार फुट ऊंची गर्दनें उठाकर अपने चारों ओर फैली सफेदी का सौंदर्य निहारते हुए-से प्रतीत होते हैं। प्रति वर्ष गर्मियों में अर्थात् अक्टूबर से मार्च तक बर्फ पिघलकर चारों ओर बह निकलती है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

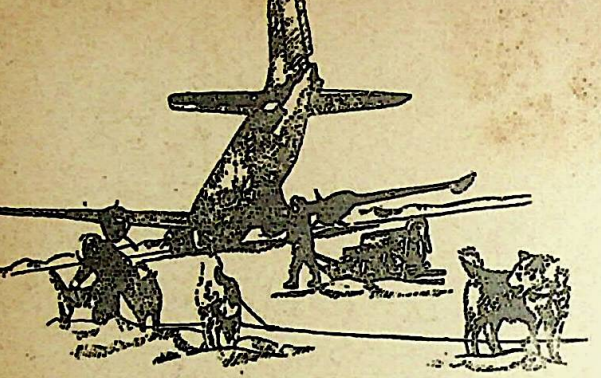

मैकमर्डो के हवाई अड्डे पर रसद उतारता हुआ ग्लोब-मास्टर वायुयान। ये झबरे कुत्ते रखवाली के लिए नहीं स्लेज गाड़ियां खींचने के लिए यहां लाये गये हैं।

यहां के बर्फानी तूफानों की भीषणता का अनुमान आप-हम नहीं लगा सकते। दो सौ मील प्रतिघंटे की रफ्तार से बर्फानी हवाओं का बहना यहां मामूली बात है। एंटार्क्टिका के अंतराल में ११,४०० फुट ऊंची एक जगह है। वहां का न्यूनतम तापमान रूसी ऋतु-विशेषज्ञों ने ऋण १२६.९° नापा है। खुश्की इतनी है कि लोहे पर जंग नहीं लगता, लकड़ी सदियों तक खुले में पड़ी रहती है और जर्जर नहीं होती। मक्खी-मकोड़े यहां जिंदा नहीं रह सकते। बर्फ के इस रेगिस्तान में कोई वृक्ष नहीं उगता, न कोई परिंदा उड़ता है।

विमान से उतरते ही यात्री चारों ओर धवल प्रशांत हिमविस्तार देखकर आनंद-विभोर हो जाता है। हिम-शिखरों की मौन सुषमा और शिखरों से मिली क्षितिज-रेखा को छूते हुए केसरी रंग के बादल हृदय में सात्विक उल्लास जगाते हैं और उद्वेगों से भरे संसार के प्रति विरक्ति-भाव उमड़ने लगता है।

यहां चहुं ओर मौन है। यह की रिक्तता में भी एक पूर्ण है, जिसके कारण यात्री को यह की नीरव प्रकृति की गोद में निमंत्रण की ध्वनि सुनाई देती है। उस ठिठुरते हिमांचल में उसे न सर्दी सताती है, न सूनेपन में उसे एकाकीपन का डर लगता है। बल्कि इन अपूर्व दृश्यों से उसे ऐसी ममतामयी आत्मीयता की प्रतीति होती है, जो उसे सभ्यता के रंग में रंगे कोलाहल-भरे शहरों में नहीं होती।

× × ×

मैकमर्डो के हवाई-अड्डे पर घनी बर्फ की चादर बिछी हुई थी। विमान से उतरते ही हेलिकाप्टर द्वारा हमें समुद्र-तट के प्रथम पड़ाव पर पहुंचा दिया गया। पड़ाव पर गोल छतवाले तंबू गड़े थे। चारों ओर जहाज से उतारे गये सामान की पेटियां बिखरी पड़ी थीं। एक तंबू में हमें स्वादिष्ट ताजा भोजन परोसा गया। शराब के दो-एक घूंट भी हमने पिये। फिर फिल्म-प्रदर्शन हुआ, जिसे देखते हुए भूल ही गये कि हम किसी अजनबी देश में हैं। मगर जब बाहर निकले, तो फिर अपने को विचित्र वातावरण में पाया।

हम सोच रहे थे कि रात के अंधेरे में हमें टार्च की रोशनी में राह टटोलते हुए अपने खेमे में जाना होगा। मगर बाहर तो सूरज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

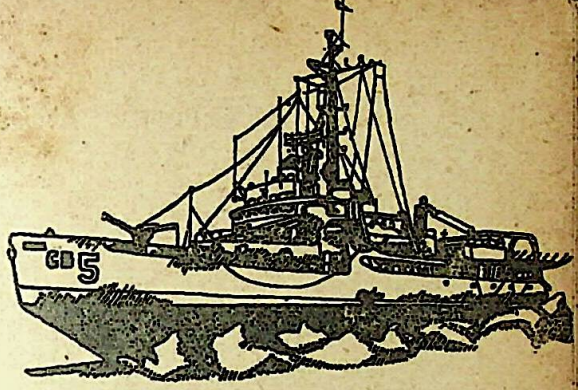

मीलों विस्तृत बर्फ में पंद्रह फुट तक चौड़ा रास्ता काटकर हिम सागर में तैरनेवाले ऐसे बर्फ-भंजक जहाज अनुसंधान दलों की डाक और रसद प्राप्त करनेवाले स्टेशनों का काम करते हैं। डाक व रसद के वितरण के लिए जहाज पर हेलिकाप्टर रहते हैं।

चमक रहा था। रात के दो बजे भी सूरज की वैसी रोशनी थी, जैसी दिन के दो बजे होती है। मध्यरात्रि में सम्राट की धूप देखकर मन विस्मय और अविश्वास से भर गया। ऐसा लगा कि यह रोशनी असली नहीं है, वह सूरज असली नहीं है—केवल सपना है।

ढलती शाम और उगते दिन का कितना आनंद होता है। वही हमसे छिन गया था। और, जब सुना कि यहां के मौसम के पूरे छहों महीने आकाश में इसी तरह सिर्फ चांद और तारे नजर आया करते हैं, सूरज निकलता ही नहीं, तब तो दिल दहल गया। इसी भय से मार्च महीने में अधिकांश वैज्ञानिक यहां से कूच कर जाते हैं।

अगले सात महीनों तक यहां सब सूना रहता है। अप्रैल महीने में आकाश धूमिल होने लगता है; उसमें सांझ की-सी धुंधली रोशनी छा जाती है, जिसमें प्रतिदिन कुछ-कुछ कालिमा घुलती जाती है। मई से अगस्त तक चारों ओर निविड अंधेरा रहता है। सितंबर के अंतिम दिनों में यह निशीथ समाप्त होने लगता है और न्यूजीलैंड का हवाई जहाज इस हिम-प्रदेश पर उतरता है। दिसंबर तक बर्फ साफ करनेवाली मशीनें भी आ जाती हैं। अब विभिन्न देशों के यात्री आने लगते हैं।

मैकमर्डो के हवाई अड्डे से दक्षिण ध्रुव ८१० मील है। रोज एक विमान वहां आता है। यात्रियों में अनुसंधान-प्रिय युवकों की अधिकता रहती है। भूगर्भशास्त्री बर्फ की सबसे निचली सतह तक पहुंचने का यत्न कर रहे हैं। कुछ वैज्ञानिक बर्फ पर रेडियो-तरंगों का प्रभाव देखने के परीक्षण कर रहे हैं। बर्फ में पर्याप्त पीने का पानी खोजने की कोशिशें भी जारी हैं। यहां एक अणु-शक्ति उत्पादन का यंत्र भी लग रहा है, जो पानी की कमी को दूर कर देगा।

पानी की समस्या यहां काफी जटिल है; क्योंकि इस हिमाच्छित प्रदेश में जलवर्षा कभी नहीं होती और बर्फ कभी इतनी नहीं पिघलती कि सप्ताह में एक बार से अधिक स्नान किया जा सके।

यहां सील और पेंग्विन ये दो प्राणी ही बहुतायत से पाये जाते हैं। गर्मियों में बर्फ के पिघलने के समय जो छोटे-छोटे जलाशय बन जाते हैं, उनके आस-पास ये प्राणी रहते हैं। सील बहुत आलसी और बेबस जीव है। धूप सेकने के लिए वह पानी से

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकलकर बर्फ की चट्टानों पर लेट जाता है। फिर कितना ही हिलाओ, हिलता नहीं। पंखनुमा पांव फड़फड़ाकर वहीं लेटा रहता है। इसीलिए १९ वीं सदी में कुछ शिकारी नुकीले सिरोंवाले लकड़ी के डंडों से ही लाखों सील मारकर ले गये।

बहुत अधिक सताये जाने पर बर्फ को खोदकर उसमें घुस जाता है, अथवा शिला से रपट कर अपनी जान बचाता है। सील तैरता बहुत अच्छा है। डुबकी लगाकर आधे घंटे तक पानी में रह सकता है। ह्वेल मछली सील को बहुत स्वादु भोजन मानती है। सील कहीं भी छिपा हो, ह्वेल उसे तलाश करके पेट भर ही लेती है।

पेंग्विन से भेंट तभी होती है, जब यात्री मैकमर्डो से ४५ मील दूर रास आइलैंड में जाये। वहां लाखों पेंग्विन एक साथ मिलेंगे। इनके दलों का फैलाव कई एकड़ भूमि में होता है। यह स्थलचर पक्षी मनुष्य से बिलकुल डरता नहीं। यह इतना स्वच्छ, निर्भीक और निरीह प्राणी है कि किसी को हानि नहीं पहुंचाता और न ही इसे विश्वास है कि कोई जीव हिंसक हो सकता है।

पेंग्विन के स्वभाव की एक विलक्षण विशेषता है। लाखों की भीड़ में रहते हुए भी वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखता है। आस-पास की हल-चलों, कोलाहलों या भीषण वेग से घटनेवाली घटनाओं में भी वह अपने अस्तित्व को भुला नहीं देता है।

यह पक्षी प्रायः बीस वर्ष तक जीता है। अप्रैल में लाखों पेंग्विन किसी समुद्र-तट पर प्रवास कर जाते हैं। अक्टूबर में फिर एंटार्क्टिक के तट पर लौट आते हैं। नर-मादा दोनों मिलकर बारी-बारी से अंडे को सेते हैं। चार महीने में अंडे से बाहर आया बच्चा अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। इन चार महीनों में अपने आश्रित बच्चों को खुराक देने के लिए पेंग्विन मां-बाप मछलियां पकड़ने के लिए जी-तोड़ श्रम करते हैं। मछलियों के

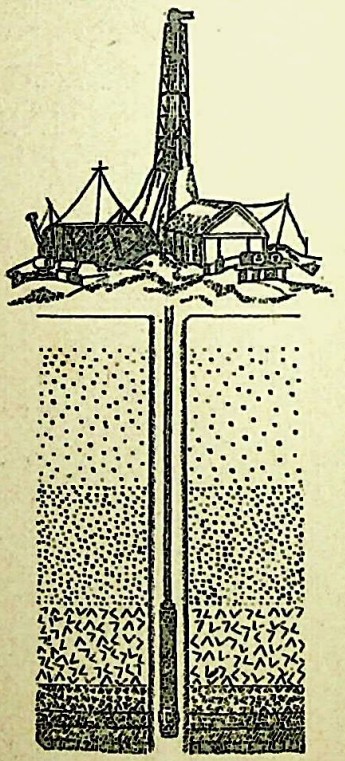

ध्रुव-प्रदेश में तेल-कूप? नहीं, ९०० फुट गहरा यह कुंआ बर्फ की तहों के अध्ययन में सहायक है। कुंए के तल की ठोस बर्फ १६०० साल पुरानी है। हर साल दक्षिण ध्रुव प्रदेश पर दो फुट के बराबर बर्फ गिरती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

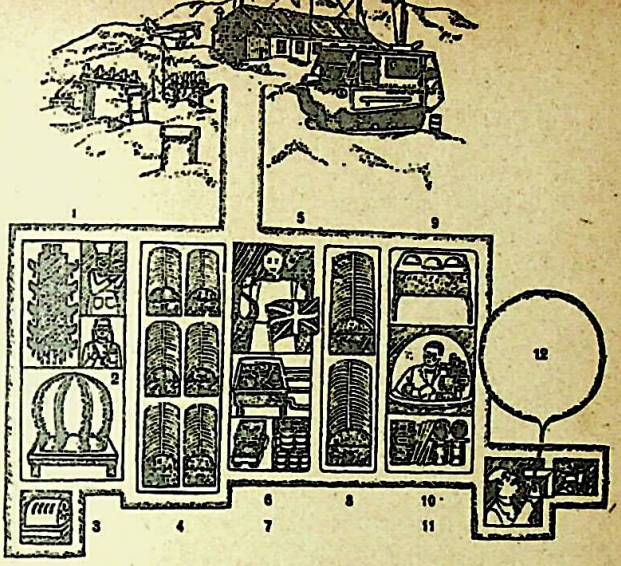

अभियान-दलों के शिबिर का नक्शा

१. रसोईघर, भोजनालय व चिकित्सालय, २. राडार गुंबज, ३. अतिरिक्त जेनरेटर, ४. बैरकें, ५. फोटोग्राफी लैबोरेटरी, ६. पानी टंकियां ७. गैराज और गोदाम, ८. बैरकें की, ९. मेरुप्रभा-निरीक्षण गुंबज, १०. जलवायु-निरीक्षण केंद्र, ११. गोदाम, १२. वेधशाला।

...वे समुद्र के अंदर कुछ ...दूरी तक जाने का खतरा ...उठा लेते हैं। जब कोई ...उन्हें अधिक अंदर खींच ...है, तो समुद्री सील उन्हें ...बड़ों में फंसाकर मारे ...नहीं छोड़ते। सैकड़ों इस ...मील का शिकार बन ...हैं।

...पेंगिन अपने बच्चों ...की चट्टानों से फिस- ...सिखाते हैं, तो बड़ा मनो- ...दृश्य उपस्थित होता है। ...जनवरी तक वे बच्चों ...खा-लिखाकर प्रवास में ...साथ चलने योग्य बना ...हैं।

...आर्कटिक की परिस्थितियों में शीघ्र ...परिवर्तन नहीं होता। दो सौ साल ...जेम्स कुक ने इस प्रदेश की खोज की ...उसने इसे जिस शक्ल में पाया था, ...भी इसकी लगभग वैसी ही सूरत है। ...ने इस प्रदेश की यात्रा को सरल ...दिया है, रेडियो ने यात्रियों के लिए ...जगत से संपर्क संभव कर दिया है; ...इस प्रदेश के असली निवासियों का— ...व सील का जीवन लगभग वैसा ही ...तो सौ साल पहले था।

...एवरेस्ट शिखर के कठिन आरो- ...के बाद यह महसूस होता है कि इतने ...का व्यय प्रयोजनहीन था, कुछ- कुछ वैसा ही यहां की दुःसाध्य यात्रा के बाद भी अनुभव होता है। फिर भी स्काट जैसे व्यक्ति जीवन की बाजी लगा देते हैं और बर्ड जैसे तपस्वी असंख्य कष्ट झेलते हुए बर्फ की चट्टानों में अकेले कुटिया बनाकर रहते हैं। यह सब मनुष्य की प्रकृति में है। वह जीने-मरने की चिंता छोड़कर किसी दुःसाध्य कार्य को करने की, तथा किसी अजेय पर विजय पाने की कोशिश हमेशा करता रहता है।

पचास वर्ष पूर्व स्काट और शेकिलटन ने यहां जो एकांत कुटी बनायी थी, वह आज भी बर्फ से ढंकी विद्यमान है। वह बीस फुट लंबी, बीस फुट चौड़ी है। आज भी वहां

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे डिब्बावंद बिस्कुट, सिगरेट, साग-भाजी व मांस मौजूद हैं, जो पचास साल पहले स्काट ने रखे थे। ये सब इतनी अच्छी अवस्था में हैं कि चाहें तो इनका उपयोग किया जा सकता है। यात्रियों के बूट भी सही-सलामत हैं। पचास साल पहले की 'इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज', बाइबल तथा काउंट आफ मांटिक्रिस्टो आदि अन्य पुस्तकें भी पूर्ववत् सुरक्षित हैं। कप्तान ओट के स्मृति-चिह्न रूप वे अलबम भी वहां पड़े हैं, जिनमें उस पशु-प्रेमी कप्तान ने घोड़ों और कुत्तों के चित्र चिपकाये थे। आज भी बर्फ में दबी हुई उनकी डायरी के पृष्ठ मिल जाते हैं, जिनमें उन्होंने अपनी यात्रा का दैनिक वृत्तांत लिखा था।

१९११-१२ में एमंडसन को समुद्र-तट से ध्रुव तक पहुंचने और वापस आने में तीन महीने लगे थे। आज हवाई जहाज से यह यात्रा एक ही दिन में पूरी हो सकती है। इस विमान-यात्रा में रास्ते के दृश्यों में विशेष विविधता नहीं है। बर्फीले मैदानों में कहीं-कहीं काले पर्वत-शिखर आकाश को चीरते हुए खड़े हैं। हां, कहीं-कहीं कोई वैज्ञानिक शिविर या बर्फीले मैदान में खड़ा हुआ कोई विमान दिखाई देता है।

बात यह है कि दक्षिण ध्रुव प्रदेश में विभिन्न देशों में २७ शिविर स्थापित किये गये हैं, जहां वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्ज प्रयोगशालाएं बनायी गयी हैं। यहां के कार्यकर्त्ताओं के लिए टनों खाद्य सामग्री तथा अन्य सामान प्रतिमास यहां विमान द्वारा पहुंचाया जाता है। आइये, जरा एक प्रयोगशाला के भीतर झांक लें।

इस छोटी-सी प्रयोगशाला के अंदर [illegible] पर आप देखेंगे कि कोई अंतरिक्ष की [illegible] तरंगों का अध्ययन कर रहा है, तो [illegible] ब्रह्मांड किरणों की छान-बीन कर रहा [illegible] कोई बर्फ की तहों में छिपे खनिज द्रव्यों [illegible] तलाश कर रहा है। बहुत-से कल्पना-[illegible] व्यक्ति यहां पहुंचकर चंद्रलोक के पास [illegible] पहुंचने की कल्पना कर लेते हैं और [illegible] के बाद ग्रह-नक्षत्रों तक उड़ानें भरने [illegible] स्वप्न भी लेने लगते हैं।

इस स्वप्नलोक में सृजन कुछ भी [illegible] होता। कहीं तिनका भी दिख जाये, [illegible] मुमकिन नहीं, फिर फूल-पौधों की तो [illegible] ही क्या! हमारी दुनिया का कोई [illegible] भी यहां सांस नहीं लेता। यहां मच्छर [illegible] मक्खी भी उड़ते नहीं दिखते। अनाज [illegible] भंडार में चूहे नहीं कूदते। फिर इंसान [illegible] मन यहां कैसे लगता होगा! इस [illegible] का बस यही उत्तर है कि यहां हर आदमी अपने काम में मस्त व मग्न है। दुनिया [illegible] दूर एकांत में एक ही लक्ष्य से आये इन [illegible] के पक्के आदमियों में सहयोग व सहानुभूति की भावना भरपूर है, जो उन्हें खुशी-जीने का उत्साह देती है।

यही कारण है कि यहां आये लोगों [illegible] मानसिक तनाव की शिकायत नहीं होती। एक बार मैंने किसी से पूछा कि क्या [illegible] पर मानसिक चिकित्सक नहीं आते? उत्तर मिला—"हां, कभी-कभी आते हैं; मगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

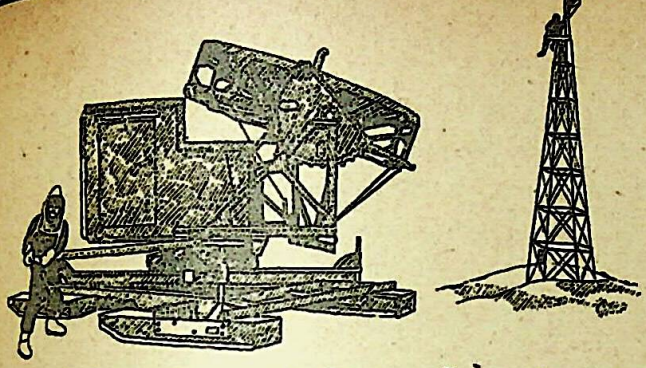

जलवायु और मेरुप्रभा के अध्ययन के लिए राडार से लेकर झंडे तक अनेक प्रकार के जटिल व सरल साधन काम में लाये जाते हैं।

अकेलेपन से पैदा हुए मानसिक तनाव को शांत नहीं कर पाते।"

मार्च महीने के शुरू से सूरज दिनानुदिन नीचे पड़ने लगता है। अप्रैल से शीत ऋतु शुरू होती है। इसलिए वापसी के यात्रियों में होड़ रहती है। यात्रियों के जो दल दोनों ध्रुवों के अंतराल में अनुसंधान को गये थे, वे अपने अड्डे की ओर मुड़ पड़ते हैं। पिछली गर्मियों में न्यूजीलैंड के छः व्यक्तियों का एक दल भूगर्भ-सर्वेक्षण के लिए आया था। दल के यात्री अपने मूल अड्डे से बहुत दूर उस जगह चले गये थे, जहां स्काट और एडमंडसन ने खेमे गाड़े थे। यहीं स्काट मृत्यु हुई थी।

वहां पहुंचने तक न्यूजीलैंड के इस यात्री-दल की सब रसद समाप्त हो गयी। लेकिन उनके रेडियो-प्रसार यंत्र उनके पास था। उस यंत्र से उन्होंने सहायता की पुकार की। एक अमेरिकी हवाई जहाज ने उन्हें एवं उनके साथियों को बचा लिया। तीन घंटे में ये अपने अड्डे पर लौट आये, जब कि समुद्र-तट तक जाने में उन्हें तीन महीने लगे थे!

इस हिमावृत विलक्षण प्रदेश में तीन-चार महीने रह लेने के बाद वापस लौटते हुए यात्री के हृदय में वहां के दिव्य दृश्यों का चित्र अंकित हो जाता है।

मेरे साथ वापसी यात्रा में हवाई जहाज में एक ऐसा यात्री बैठा था, जो पिछले १८ महीने से ध्रुव-प्रदेश में निवास कर रहा था। उस पर नागरिक जीवन के दृश्यों का क्या प्रभाव होता है, यह जानने को मैं उत्सुक था। वह शहर की सड़कों, दुकानों को देख-कर खुश होता है, या पार्कों अथवा सुंदर लड़कियों को—यही बात मैं सोच रहा था। इतने में हमारा विमान नीचे उतरा। उसने बाहर आकर सब कुछ देखा; मगर कोई ऐसी टिप्पणी नहीं की, जिससे मैं उसके मन की बात जान सकूं। आखिर चलते-चलते उसने अपना हाथ उठाकर हवा में घुमाते हुए कहा—"देखो, मक्खी।"

मैं और वह ऐसे पवित्र प्रदेश से आ रहे थे, जहां मक्खी-मच्छर थे ही नहीं। शहरी जीवन की हर चीज हमारे लिए कुछ कौतूहल की चीज बन गयी थी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रमर्षि बाबासाहब आमटे

भारत के कुष्ठ-रोगियों की सेवा के लिए सारा जीवन समर्पित करनेवाले एक आंग्ल-दंपति का परिचय फरवरी १९६५ के अंक में दिया गया था। इस कार्य में अनन्य भाव से तल्लीन एक ओजस्वी भारतीय के जीवन एवं [illegible] का परिचय वी० एन० ओके रचित पोर्ट्रेट के साथ पढ़िये ।

इला महेता

"मैं भगवान को 'शो-काज नोटिस' देनेवाला हूं कि वह.....के जैसे निष्ठावान, सेवा-परायण व्यक्ति अधिक संख्या में क्यों नहीं पैदा करता! .....देखें, उसका उत्तर कब मिलता है! पर यह तो स्पष्ट -दिखाई दे रहा है कि उसे उत्तर देना मंजूर नहीं। वह मेरा नोटिस ध्यान में रखे, यही काफी है।" इन विनोदपूर्ण किंतु भाव-भरे शब्दों में विनोबाजी ने जिन्हें श्रद्धांजलि दी है, उन बाबासाहब आमटे का परिचय देने के लिए एक नया शब्द गढ़ना होगा, ब्रह्मर्षि और महर्षि के तुक पर—श्रमर्षि ।

सूर्य की किरणों में सात रंग हैं, जो कभी-कभी स्वतंत्र रूप से गगन में अपनी छटा बिखेरते हैं; किंतु अंत में देदीप्यमान श्वेतवर्ण में समा जाते हैं। कुछ ऐसा ही बाबासाहब के जीवन में भी हुआ है। संसार के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर, उन्होंने एक ही व्रत में अपने जीवन को स्थिर कर दिया है। और वह व्रत है—सेवा। या नहीं, 'सेवा' जैसा बौना शब्द उनके कर्म की महिमा को नहीं छू सकता ।

वस्तुतः जीवन-संघर्ष के अपराजेय सैनिक बाबासाहब के शब्दकोष में 'सेवा' शब्द है ही नहीं, और न ही हैं 'दान', 'दया,' 'आराम' आदि शब्द । उनका कहना है—"दान मांगा करता है, जबकि श्रम निर्माण करता है।" और उनका श्रम गीता-वर्णित कल्याण-यज्ञ का जीवंत निदर्शन है और समाज से तिरस्कृत, अनाश्रित हजारों कोढ़ियों का आशीर्वाद ही इस यज्ञ का स्वस्तिवाचन है ।

उन्हें देखकर महाकाव्यों के महारथी योद्धाओं की याद हो आती है। 'व्यूढोरस्कः वृषस्कंधः', तेजस्वी आंखें और असत्य व अन्याय के साथ लोहा लेने के लिए लालायित रहने वाला वज्र-हृदय । ऐसा आदमी यदि अद्‌भुत-रम्य जीवन न जी पाये, तो यह आश्चर्य की बात होगी। सचमुच किसी महान उपन्यास के नायक के जैसा है उनका जीवन। और जीवन के प्रति उनकी दृष्टि भी उतनी ही कौतुकप्रिय और उत्साहपूर्ण है। एक बार अपने एक मित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने लिखा था—
संसार में हर क्षण को
क्षण और हर दिन को
उम्र मानकर जीना
चाहिये।"

बाबासाहब के पिता
निरीक्षक थे। वे
चाहते थे कि उनका बेटा
बड़ा वकील बने। बाबा-
साहब वकील तो बने; पर
बड़े वकील नहीं बन
सके—अपनी प्रामाणिकता
के कारण। लेकिन उनकी
कामना थी ही कब?

× × ×

जीवन के प्रत्येक क्षण
भरपूर जीने की अभि-
लाषा से प्रेरित होकर
बाबासाहब ने अंधकार और प्रकाश, पवित्रता और पाप आदि सभी द्वंद्वों को भीतर घुसकर
परखा है। शराब पी और छोड़ दी; बारह साल तक प्रतिदिन मांसाहार किया और
अहिंसा के लिए उससे मुंह मोड़ लिया; बाघ का आमने-सामने खड़े होकर शिकार किया;
ईश्वर की खोज में हिमालय की गुफाओं में छिपे आश्रमों की खाक छानी; 'गीतांजलि'
को समझ हृदयंगम करने के लिए ग्यारह वर्ष की उम्र में बंगला सीखी; गायिका मुमताज
बेगम का गीत सुनने के लिए पंद्रह साल की उम्र में कलकत्ता भाग गये; उदयशंकर के लिए
नृत्यकला की और ग्रेटा गार्बो के चित्र की विवेचना लिखकर सदा के लिए उसकी मित्रता
खो कर ली। विवाह किया तो प्रेम-विवाह; और उसके लिए गुंडों के छुरे भी खाये।
विवाह के समय वर महोदय के सारे शरीर पर पलस्तर पुता हुआ था और डाक्टरों
का कहना था कि वे अधिक दिन जी न सकेंगे।

जैसा कि युवावस्था में प्रायः सभी मेधावी व्यक्तियों के साथ हुआ करता है, उन पर
मार्क्स, प्रिंस क्रोपाटकिन, रस्किन और कुमारप्पा का रंग चढ़ा। अन्न ही ब्रह्म है—यह
दृढ़ धारणा थी। कोई तो पांच मिनिट सलाह देने के पचास रुपये वसूल कर ले और

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा बारह घंटे जी-तोड़ श्रम करके भी पेट-भर खाना न जुटा सके –इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था ने उनके मन पर गहरे घाव किये। अंत में गांधी-विचारधारा के प्रभाव में आ उन्होंने वकालत छोड़ दी और एक नया प्रयोग शुरू कर दिया। यह था–श्रमाश्रम।

'श्रमाश्रम' अर्थात् एक मित्र-बस्ती। भंगी से लेकर वकील तक अनेक पेशों के लो सपरिवार यहां एकत्र हुए। श्रमजीवी और बुद्धिजीवी इन दोनों को ताना-बाना बन यहां जीवन-पट की बुनाई होने लगी। आश्रम के बगीचे में उपजी साग-भाजी स्वयं कं उठाकर बाबासाहब बाजार ले जाते और बेचने बैठते। भाव-ताव कुछ न बताते। लोग और जो मन में आये, देकर सब्जी उठा ले जाते। कई बार तो यह भी होता कि कोई व्यक्ति कौड़ी के दाम पर बैंगन या टमाटर का पूरा-का-पूरा टोकरा उठवा ले जाता और जाते यह भी कहता–कैसा बुद्धू वकील है!

कई बार यह भी देखने में आता कि शाम को अंधेरा होने पर उसी संपन्न व्यक्ति नौकर आता और मानो अपने मालिक का अपराध धोने के लिए एक ककड़ी के आठ आने जाता, जो शायद उसके एक दिन के वेतन से भी अधिक था। रेलवे का एक मजदूर तो बार मेथी की एक गड्डी के दो रुपये तक दे जाता। अंत में एक दिन जब एक सज्जन दो में अपना थैला बैंगनों से भरकर चलने लगे, तो बगल में बैठे कुंजड़े ने डंडा उठाकर लथाड़ा–"मेहनत का माल मुफ्त में खाते शरम नहीं आती?"

कुछ वक्त बाद संजीदा बीमारी और अनिवार्य परिस्थितियों के कारण बाबासाहब को श्रमाश्रम बंद करना पड़ा। लोगों ने तो इस प्रयोग को एक खब्ती आदमी की खुराफात समझा था। परंतु इस प्रयोग से मिली जीवन-दृष्टि और शक्ति ने बाबासाहब के व्यक्तित्व को बहुत समृद्ध और गहरा बना दिया।

× × ×

मूसलाधार पानी बरस रहा था। एक अपंग कुष्ठरोगी जमीन पर तड़प रहा था। आने-जानेवालों की दयादृष्टि क्षण-भर के लिए उस पर पड़ती, अगले क्षण फिसलकर दूर चली जाती। उस जीती-जागती मौत को छूने की हिम्मत भला किसमें थी! बाघ से दो-दो हाथ करनेवाले, गुंडों की लाठियां खानेवाले, वकील होकर सिर पर मल की टोकरी निर्विकार भाव से उठानेवाले बाबासाहब का दिल यह दृश्य देखकर दहल गया, जैसा कि जीवन में कभी नहीं दहला था। रोग का भय! आदमी को आदमी से भय! इस भय की भयानकता की वह तीव्र अनुभूति हुई उन्हें, और वे उस कुष्ठरोगी को अपने घर ले आये। यह घटना आगे चलकर एक पुनीत आयोजन का संकल्प-मंत्र सिद्ध हुई।

कुछ समय बाद चांदा जिले में वरोड़ा गांव से डेढ़ मील दूर कुछ परती जमीन खरीदकर छः कुष्ठरोगी, एक लंगड़ी गाय और अपनी मेहनत से अर्जित १४ रुपये की पूंजी लेकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...साहब ने 'आनंदवन' की स्थापना की, जो नये मनुष्य घढ़ने की प्रयोगशाला है।

प्रारंभ से ही बाबासाहब की मान्यता थी कि कुष्ठरोगियों की शारीरिक ही नहीं, ...विक समस्याएं भी उन्हें हल करनी हैं। फलतः उन्होंने रोगियों में स्वाभिमान व शक्ति ...वना जागृत करने, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाने की दिशा में कदम उठाया। ...पंचतंत्र का यह ध्येय वाक्य उनके सामने रखा : हस्तपादादिसंयुक्ता किं यूयं व्यव-...-अरे हाथ-पांववाले होकर तुम हताश क्यों होते हो ?

आज आनंदवन में बसे हुए सभी कुष्ठरोगी अलग-अलग उद्योगों में लगे हुए हैं। खेती, ...री, कताई व बुनाई आदि श्रमानुष्ठानों से चांदा जिले का यह पथरीला, जंगली भूमि-...त् नंदनवन बन गया है। और जो लोग बात-बात में कहा करते हैं कि हम क्या कर ...हैं, हमारा देश गरीब है, उनके लिए मुंहतोड़ जवाब है। सन १९५४ में 'सिविल-...इंटरनेशनल' नामक अंतर्राष्ट्रीय सेवा-संघटन के कई सदस्य यहां पधारे। उन्होंने ...के लिए दो बड़ी इमारतें बनवाने का खर्चा देने की इच्छा प्रकट की। इमारतों की नींव ...गारा तैयार करने आदि कामों में रोगियों ने मदद की। इमारती काम के लिए बढ़ई ...में बुलाने पड़े; क्योंकि स्थानीय बढ़ई कुष्ठरोगियों के साथ काम करने को तैयार नहीं ...इंटें ढोने आदि के लिए बहुत-से स्वयंसेवक विद्यार्थी आ गये। श्रमदानियों के ...की व्यवस्था वरोड़ा के नागरिकों ने की।

वरोड़ा के रेलवे-कर्मचारियों ने संकल्प किया कि वे आश्रम के लिए एक कुंआ खोदेंगे ...फावड़े व कुदालियां लेकर जुट गये। काली कंकरीली जमीन। उनके धीरज और लगन ...क्षा हो गयी। कई बार उन्हें स्थान बदलना पड़ा। लेकिन उन्होंने तभी दम लिया, ...नी निकल आया। अगला इतिहास विलक्षण है। अनेक कुंए बनाये गये, खेती की ...निपुणी हो गयी। जहां सिर्फ एक लंगड़ी गाय थी, वह अब बड़े पैमाने पर पशु-पालन ...का व्यापार होने लगा। राष्ट्रीय पशु-प्रदर्शनी में यहां के पशुओं ने पुरस्कार जीते।

स्विट्जरलैंड की 'स्विस एड एब्राड' नाम की संस्था ने आनंदवन को ३० हजार ...की लागत के टिन काटने-ढालने के औजार, रोगमुक्त लोगों के पुनर्वास के लिए २ लाख ...हजार रुपये तथा वैज्ञानिक साधनों के लिए लगभग २ लाख रुपये की रकम दी। यह सहा-...कुष्ठरोगियों को परावलंबन के अभिशाप से मुक्ति दिलाकर, समाज का स्वावलंबी ...स्वाभिमानी सदस्य बना रही है।

आनंदवन के वातावरण म रोग की घुटन नहीं, प्रसन्नता और ताजगी है। वहां रहने-...लगभग साढ़े सात सौ कुष्ठरोगियों में से प्रत्येक का अपना बैंक में खाता है, जिसमें से वे ...अपने कुटुंबियों को पैसे भेजते हैं। कुछ समय पहले आश्रमवासियों ने एक नाटक ...दो हजार रुपये कमाये और राष्ट्रीय सुरक्षा-निधि में जमा कराये।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'फूड फार पीस' नामक एक संघठन ने आनंदवन को १,२०० वोरे गेहूं देने का निश्च किया। जब बाबासाहब को इसकी सूचना मिली, तो उन्होंने उसे लिखा—"आपकी उदा के लिए धन्यवाद। किंतु आपका गेहूं एक वर्ष के लिए ही आनंदवन को शांति दे सकेगा। गेहूं भेजने के बजाय, क्या आप हमें वैज्ञानिक पद्धति से खेती करना सिखाने की कृपा नहीं सकते, जिससे हम अपने खेतों की उपज बढ़ा सकें? ऐसा करके आप आनंदवन के लिए स्थायी शांति का निर्माण कर सकते हैं।" उत्तर में आस्ट्रेलिया से कई विशेषज्ञ आये उन्होंने रोगियों को खेती की नयी पद्धति तथा मधुमक्खी-पालन के तरीके सिखाये।

आनंदवन के आस-पास खड़ी अन्य दो इमारतें भी बाबासाहब की दीर्घ-दृष्टि की हैं। ये हैं—मुक्तिसदन और आनंदनिकेतन। जो रोगी उपचार के बाद रोगमुक्त हो उनके लिए मुक्तिसदन में व्यवस्था है। आनंदनिकेतन एक महाविद्यालय है। उसमें रो और उनके बच्चों को विज्ञान, वाणिज्य, साहित्य, तथा इतिहास आदि की शिक्षा दी जाती

बाबासाहब अब जो नयी संस्था स्थापित करना चाहते हैं, वह है—श्रमिक विश्वविद्या लय (वर्कर्स यूनिवर्सिटी)। इस विश्वविद्यालय में ऐसे वैज्ञानिक तैयार किये जायेंगे कृषि-निर्भर भारतीय समाज को कृषि-उद्योग-प्रधान समाज का रूप दे सकें।

आनंदवन के इस कार्य-विस्तार व सात्विक वैभव का मूल है बाबासाहब की निष्क कर्मासक्ति, तर्कशुद्ध दृष्टि और तपोमय सांसारिकता। इस समय आनंदवन में लग ७०० रोगी रहते हैं। उनकी दवा-दारू, खाने-पीने, उद्योग-खेती, इमारतों की मरम्म फैक्टरी-संचालन, आने-जानेवालों के आतिथ्य की व्यवस्था और हिसाब-किताब की जि दारी—सब कुछ बाबासाहब के सिर पर है।

और बाबासाहब के इस विश्वरूप व्यक्तित्व में सौम्य आत्मार्पण की एक सरिता हो गयी है। वह है उनकी पत्नी साधनाताई। पति के साथ उन्होंने भंगी की भांति मल की टोकरी सिर पर मुस्कराते हुए उठायी है, पीड़ितों को गले लगाया है। बीच में एक बा बाबासाहब को भयंकर सिरदर्द के कारण कई महीने बंबई के अस्पताल में रहना पड़ा पर सूर्यास्त के बाद जैसे शमां घर को जगमग रखती है, उसी तरह बाबासाहब की अ पस्थिति में साधनाताई ने आनंदवन को दक्षता से चलाया।

न यश का लोभ, न सत्ता की लालसा और न धन-वैभव के पीछे अंधी दौड़। केव स्वधर्मपालन की साध, ताकि अंतिम दिन इस जीवन का मूलधन ब्याज समेत ईश्वर लौटाया जा सके—यह है बाबासाहब आमटे का जीवन-दर्शन। उनका धर्म है—मानव खंडहरों में नयी इमारतें खड़ी करते हुए इस श्रमर्षि को देखकर गुजराती कवि 'सुंदरम्' ये प्रसिद्ध पंक्तियां याद आ जाती हैं:

धरती की गोद में पला हुआ मानव मैं, मानव हो पाऊं, यह भी बहुत है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राण-चिकित्सा से आरोग्य

डा० दुर्गाशंकर नागर

बहुत समय पहले चुंबक-संबंधी खोज करते हुए जर्मनी के डाक्टर रीकनबेक ने यह देखा कि चुंबक के दोनों सिरे मनुष्य की नसों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि प्राणिमात्र में कुछ-तत्व होता है और सभी में चुंबकीय प्रभाव पैदा करने की शक्ति भी होती है। इस प्रभाव के द्वारा दूसरों के प्राणतत्व पर अधिकार करने की विधि की खोज डा० मेस्मर ने की, जिसका नाम 'मेस्मरिज्म' हुआ। बाद में इसे 'हिप्नाटिज्म' भी कहा जाने लगा।

यह प्राणमयी शक्ति शरीर की प्रत्येक नाड़ी में पाये जानेवाले एक सूक्ष्म द्रव में रहती है। मस्तक और मेरु-दंड में इस द्रव का प्रमुख भंडार है। भारत के तंत्रशास्त्रों में भी इस शक्ति को सिद्ध करने के प्रयोग बताये गये हैं। भारतीय ऋषियों के अनुसार इसका कोष मस्तक की संधि के ऊपर ब्रह्म-रंध्र और हृदय में भी है। उसका प्रवाह दायें-बायें नथुनों में से निरंतर होता रहता है। योगविद्या में इसे ही सूर्य और चंद्र कहते हैं।

मनुष्य जो खाता है, जिन-जिन प्राणियों एवं पदार्थों से संबंध रखता है और जिन-जिन विचारों में निमग्न रहता है, उन सबसे उसके प्राणों का स्वरूप प्रभावित होता है। जड़ और चेतन सब प्राणियों या पदार्थों में से प्राण की छाया निरंतर निकला करती है। उस छाया के संपर्क में, जो भी आता है वह अवश्य प्रभावित होता है।

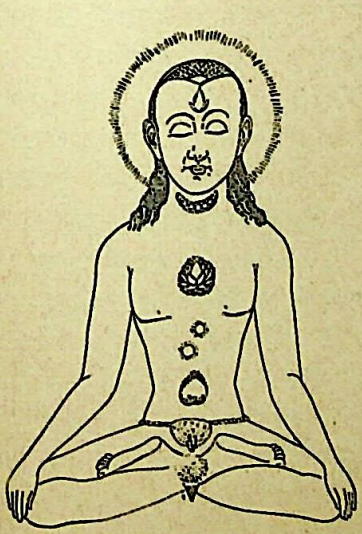

प्राणोपासना

प्राण की ये लहरें मनुष्य की इच्छा के अधीन हैं। वह जहां चाहे, उनके प्रभाव को भेज सकता है। अतः जिस व्यक्ति का प्राण-तत्व शक्तिशाली है, वह इन लहरों से दूसरे को स्वस्थ होने में भी सहायता दे सकता है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्तुतः प्राण-शक्ति के सम्यक् संचरण में बाधा आने से ही विकार होते हैं। प्राण-चिकित्सक, जिसे मानस-चिकित्सक भी कहते हैं, रोगी के शरीर-यंत्र में पर्याप्त प्राणशक्ति का प्रवाह संचरित करके उसे इतना समर्थ कर देता है कि वह स्वयं अपनी मशीनरी को ठीक रखने के लिए प्राण उत्पन्न करने लग जाता है।

मनुष्य के रुग्ण अवयव में इस शक्ति को केंद्रित करके रोगी को स्वस्थ बनाया जा सकता है। ज्ञानतंतुओं की निर्बलता से पैदा हुई सब बीमारियों को प्रबल प्राणधारा दूर कर सकती है। अतः मानसोपचार करने-वाले के प्राणतत्व निश्चय ही बहुत प्रबल होने चाहिये। उसे हृदय का स्वच्छ और चरित्रवान होना चाहिये; क्योंकि वह केवल अपना प्राण ही दूसरे में प्रविष्ट नहीं करता, अपितु अपने अन्य तत्व यानी मानसिक वासनाएं भी रोगी को देता है।

मन में अद्‌भुत शक्ति है। मनःशक्ति का प्रभाव शरीर की भिन्न-भिन्न मांसपेशियों पर, नसों पर, ज्ञानतंतुओं पर आश्चर्य-जनक होता है।

कार्यशील मन ही विचार करता है। विचारों में भी बड़ी शक्ति है। विचार-शक्ति की तुलना यदि विद्युत या प्रकाश की गति के प्रवास से की जाये, तो मालूम होगा कि विचार-शक्ति का वेग बड़ा प्रबल है। विज्ञान के प्रोफेसर एलिशा ग्रे ने अपनी 'मिरेकल्स आफ नेचर' नाम की पुस्तक में लिखा है कि प्रकाश की तरंगें १,८६,००० मील प्रति सेकेंड के वेग से चलती हैं, पर विचार-शक्ति की गति ८,००० अरब मील प्रति सेकेंड है। दिन में सूर्य की किरणें विचार-शक्ति की लहरों को खंडित कर देती हैं जिनसे उसकी गति में कुछ अवरोध हो जाता है। रात्रि के समय विचार-शक्ति का वेग बहुत तीव्र होता है।

विचार और फेफड़ों का घनिष्ठ संबंध है; इसलिए रक्त-संचार को विचारों के अधिकार में रखना परम आवश्यक है। रक्त-संचार ठीक होगा, तो नाड़ी-चक्र भी ठीक होंगे, मस्तिष्क भी ठीक होगा। प्राय: जितने भी रोग हैं, सब अनुचित विचार और अनुचित जीवन से पैदा होते हैं।

इसलिए मानसिक बल द्वारा मन की गुप्त-शक्ति को जागृत करना चाहिये और विचारों को एकाग्र करके रोगग्रस्त अवयव में पर्याप्त रक्त-संचार करना चाहिये।

रक्त-संचार को सुचारु और नियमित करने का उपाय यह है :

किसी एकांत स्थान में चित लेट जाइये। सारे शरीर को शिथिल कर दीजिये। ऐसा समझिये कि आपका शरीर शीशे का बना हुआ है। मुख बंद कर लीजिये। फिर नासिका से धीरे-धीरे आसानी से गहरी सांस लीजिये। फिर अपने दोनों हाथों की उंग-लियों को कपाल के मध्य में इस तरह रखिये कि उंगलियों के सिरे एक-दूसरे से मिल जायें और दोनों अंगूठे कनपटियों को दबाये रहें। अब जहां पर उंगलियों के सिरे मिलते हैं, वहां—आज्ञाचक्र में—चित्तवृत्तियों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...कर, यह भावना कीजिये कि सारे शरीर में विद्युत् प्रवाहित हो रही है। फिर हाथों से स्पर्श करते हुए माथे के नीचे नेत्र को स्पर्श करते हुए दोनों अंगूठों को गर्दन की दोनों बगलों से कंठ की हड्डी पर उंगलियों को मिलाकर स्पर्श कीजिये। बाद में हाथों को कंधों पर लाते हुए शरीर की दोनों बगलों पर अंगूठे लगाते हुए हाथों को पेट तक लेते चले जाइये और नाभि पर हाथों से स्पर्श कर मणिपूर-चक्र में चित्तवृत्ति एकाग्र कर शक्ति-प्रवाह की धारणा कीजिये।

यदि आपके शरीर के किसी भी अंग में पीड़ा हो, रोग हो, तो थोड़ी देर के लिए हाथों को वहीं रोक दें और कल्पना करें कि उस अंग में शक्ति का प्रवाह संचारित हो रहा है और स्वास्थ्य दे रहा है। इस सर्वांग-मर्दन में तीन मिनिट अवश्य लगने चाहिये। रात को सोते समय यह अभ्यास करने से शांत, स्वस्थ और प्रगाढ़ नींद आती है।

जिस समय शरीर के किसी भी अवयव पर हाथ रोकें, श्वास भी रोक दें। उस समय संकल्प करना चाहिये :

"मैं अपने समस्त शरीर में रुधिर की गति नियमित कर रहा हूं। इससे मेरे शरीर के कण-कण में नया रक्त-संचार हो रहा है। इस नवीन संचार से मेरे शरीर में जीर्ण हुए अनावश्यक पदार्थ बाहर निकल रहे हैं। मेरा अंग-अंग बलवान और सुपुष्ट बन रहा है।"

इस प्राण-चिकित्सा में दृढ़ संकल्प-बल अत्यावश्यक है। मनुष्य संकल्प द्वारा अपने में आकर्षण-शक्ति का संचय करके दूसरों में नयी प्राणशक्ति डाल सकता है। संकल्प-शक्ति का आधार मन है—बाह्य मन नहीं, अंतर्मन। प्राण-चिकित्सा का रहस्य भी अंतर्मन में ही है। अंतर्मन पर जो-जो विचार अंकित होते हैं, वे ही बाह्य चेष्टा में प्रकट होते हैं।

अंतर्मन सब प्रकार से नवीन बनाया जा सकता है। जब मन सब प्रकार से अनुकूल व्यवहार करता है, तब सब उद्देश्य सफल होते हैं। दुर्बलता, भय, संशय, निरुत्साह, निराशा, निष्फलता के विचारों से स्वास्थ्य खराब होता है। इसके विपरीत आशा, प्रसन्नता, प्रेम, सुख, सौंदर्य और स्वास्थ्य के विचारों से बल, वीर्य, उत्साह और आरोग्य का शरीर में संचार होता है।

प्राण-चिकित्सा का उद्देश्य यही है कि वह रोगी के ज्ञानतंतुओं को बलवान बनाये। ज्ञानतंतुओं पर मन का अप्रतिहत प्रभाव होता है और ज्ञानतंतुओं द्वारा मन शरीर के प्रत्येक अवयव को प्रभावित कर सकता है। विचारों का श्वास-प्रश्वास पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रसन्नता से श्वास हल्का हो जाता है, शोक और डर के समय श्वास लेने में भी कठिनाई मालूम होती है। इन प्रभावों पर हम आत्मसूचना (सेल्फ सजेशन) द्वारा अधिकार पा सकते हैं।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि स्नायु-दौर्बल्य और मज्जातंतु की दुर्बलता से उत्पन्न हुए सब रोग इस प्राण-चिकित्सा से दूर हो सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

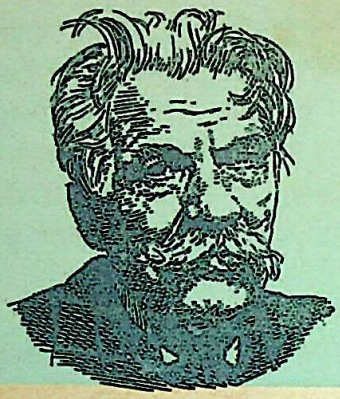

अल्बर्ट श्वाइत्जर

पथ के प्रदीप

आदर्शों की ताकत मापी नहीं जा सकती। पानी की बूंद में हमें कुछ भी ताकत दिखाई नहीं देती। लेकिन उसे किसी चट्टान की दरार में जमकर बर्फ बन जाने दीजिये, वह चट्टान को फोड़ देगी। नदी में बहती हुई वही बूंद अत्यधिक शक्तिमान इंजनों के पिस्टनों को चला सकती है। बूंद को कुछ हो जाता है और उसमें निहित शक्ति सक्रिय और परिणामकारी हो उठती है।

ठीक यही बात आदर्शों की है। आदर्श विचारात्मक होते हैं। जब तक वे विचार-रूप बने रहते हैं, उनकी शक्ति परिणामकारी नहीं होती—भले कितने ही उत्साह और आस्था से उन्हें अपनाया गया हो। आदर्शों की शक्ति तभी परिणाम करती है, जब वे किसी परिष्कृत मानव के व्यक्तित्व में प्रवेश करें।

सदा ही छोटे-छोटे कर्तव्यों की ताक में रहो। छोटा कर्तव्य ही प्रभु के लिए महत्वपूर्ण है। ईश्वरीय राज्य का भविष्य किसी बहुत बड़े शक्तिशाली मनुष्य के उत्साह पर अवलंबित नहीं है। बड़े आदमी भी जरूरी हैं; लेकिन भगवत्-सेवा के छोटे-छोटे काम करनेवालों की बड़ी-सी फौज भी जरूरी है।

धरती के पालन-पोषण और जीवन के लिए बहुत पानी चाहिये। बड़ी-बड़ी नदियां उसका अंशमात्र हैं। इन बहती जलधाराओं के अलावा पृथ्वी में भूगर्भस्थ जल है, और हैं छोटे-छोटे नदी-नाले, जो निरंतर बड़ी नदियों में मिलते रहते हैं, उनका जलकोष भरते रहते हैं और उन्हें सूखकर लुप्त नहीं हो जाने देते। छोटे नामहीन जलस्रोत न हों, तो महानदियों का बहना असंभव हो जाये। यही बात छोटे-छोटे कर्तव्यों की है, जिन्हें हम सबको पूरा करना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयोग और सफलता का प्रतीक

डयु पांट

एक व्यक्ति का संकल्प और अध्यवसाय कितने बड़े निर्माण के बीज बो सकता है ! डयू पांट उसी का प्रतीक है ।

जगत गुप्ता

ब्रैंडवाइन नदी के किनारे बसा एक छोटा-सा शहर विलमिंग्टन (अमरीका) है। उसी में बसी ११५ एकड़ की बस्ती, रासायनिकता प्रयोगशाला है । उस प्रयोगशाला में हजारों वैज्ञानिक दिन-रात इस प्रयत्न में लगे हैं कि किस क्षण संसार को कोई नयी चीज दी जा सके । वे उस कंपनी में काम कर रहे हैं, जो अमरीका की ५०० सबसे बड़ी कंपनियों में प्रथम १२ में अपना स्थान रखती है । कंपनी का वर्तमान स्वामी है डयू पांट परिवार का ५९ वर्षीय लैमोट डयू पांट कोपलैंड—संस्थापक इल्यूथेरे आइ-रेनी डयू पांट का परपोता । सालाना २५ बिलियन अर्थात २ खरब, ५० अरब रुपये का व्यापार करनेवाली इस कंपनी के ३,६०,००० स्टाकहोल्डरों का हित सोचना कोपलैंड के ही जिम्मे है, क्योंकि वे ही कंपनी के सर्वाधिक हिस्सों के स्वामी हैं, और इस पर भी कुल मुनाफे में सिर्फ साढ़े सात प्रतिशत के ही भागीदार हैं । कंपनी किस तेजी से तरक्की कर रही है, इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि कुछ ही सप्ताह पूर्व उसने एक सप्ताह में १,७५,००,००० रुपये का मुनाफा कमाया । कोपलैंड अमरीका के सर्वाधिक धनिक व्यक्तियों में तो गिने ही जाते हैं, वे एक रसायनज्ञ भी हैं और वित्तीय विशेषज्ञ भी, जो एंडयू कार्नेगी के इस कथन में विश्वास करते हैं—"अपने सारे अंडे एक झोले में रखकर तमाशा देखो ।" साथ ही कोपलैंड को इस बात का अनुभव करने में बड़ा आनंद आता है कि उनके वैज्ञानिकों द्वारा खोजी गयी अथवा तैयार की गयी चीजों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है ।

डयु पांट के वैज्ञानिक साल में ६०० से ७०० पेटेंट अधिकार कंपनी के लिए प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं और एवज में कंपनी उन्हें वेतन के अलावा उनकी खोज पर लाभांश भी देती है। यही कंपनी है, जो कि खोज करनेवाले अपने प्रत्येक वैज्ञानिक को सालाना २,५०,००० रुपये से भी अधिक बोनस देती है और कई वैज्ञानिकों को तो इसने लखपति बना दिया है। ये वैज्ञानिक जूता-चप्पल से लेकर मोटर तक के क्षेत्र में शोध करते हैं। हाल में इन्होंने डचु पांट के जरिये विश्व को जो उपहार दिये हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

कंपनी ने सीमेट्रल नामक दवा की एक ऐसी गोली तैयार की है, जो फ्लू रोकने की सबसे अच्छी दवा मानी जाती है। सन १९४१ में युगोस्लाविया के वैज्ञानिकों ने जिस रसायन की संभावना पर प्रकाश डाला था, डचु पांट के वैज्ञानिकों ने उसके उपयोगार्थ २०,००० से अधिक मिश्रणों पर प्रयोग करने के बाद सीमेट्रल की ईजाद की। यह कीटाणुओं को मारती नहीं; अपितु न उन्हें बढ़ने देती और न ही शरीर के कोशों में प्रवेश करने देती है। इस सीमेट्रेल का निर्माण करने एवं बेचने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए आज दवाइयां तैयार करनेवाली सैकड़ों संस्थाएं डचु पांट के दफ्तर में लाइन लगाये खड़ी हैं। इस दवा के निर्माण से डचु पांट की आज से बीस वर्ष पूर्व कही गयी यह बात सिद्ध हुई कि दवा-निर्माण के क्षेत्र में डचु पांट अग्रणी बनकर रहेगा।

आज अमरीका रसायनों के जरिये विदेशों से काफी मुद्रा अर्जित करता है। साथ ही देश के सभी ७९ बुनियादी उद्योगों की मांग की पूर्ति करता है। इस वर्ष अनुमान अमरीकी ५७ पौंड अमोनिया, ५९ पौंड कास्टिक सोडा, ७७ पौंड क्लोरीन और १९४ पौंड सल्फ्यूरिक एसिड का उपयोग करेगा। रसायन-उद्योग की महत्ता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि आधुनिक युग का हर निर्माण रसायन-उद्योग पर ही निर्भर है।

नायलोन का नाम तो आपने सुना ही है। उसके प्रथम निर्माता डचू पांट ही हैं। आज वे ४५० से भी अधिक किस्म के नायलोन तैयार कर कंपनी की सालना बिक्री में २५० करोड़ रुपये का योग देते हैं। इस डचू पांट ने पारदर्शी सेलुलोज को इस लायक बना लिया है कि वह पानी में नहीं घुले अर्थात् वाटरप्रूफ बन जाये। इसका नाम रखा है सेलोफेन, जो पैकिंग के काम आता है। डैकरान भी इसी कंपनी की देन है। आलीन के सूट, स्पैनडाम्स के मोजे एवं वार्नर वाड़ी स्टार्किंग—औरतों की अंदर पहनी जानेवाली नायलोन की चुस्त पोशाक भी यहीं से निकली है। फिर, इन वस्त्रों की धुलाई, रंगाई आदि भी डचु पांट के कारखानों में ही होती है।

जूते-चप्पल के क्षेत्र में डचू पांट की सबसे नयी खोज है कोरफाम। कोरफाम एक ऐसी वस्तु है, जिसका उपयोग चमड़े के बदले किया जा सकता है। यह लगभग तीस वर्ष और पंद्रह करोड़ रुपये के अनुसंधान का सुफल है। वाटरप्रूफ होने के साथ-साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...आकार बनाये रखनेवाला भी है। यह ...हर से कड़ा, अंदर से मुलायम और सब ...ह छिद्रनुमा है। डचु पांट ने इसके ...ताव में जितनी दिलचस्पी ली है, उतनी ...ने इसके परीक्षण और प्रचलन में भी। ...नी ने इसका परीक्षण करने के लिए ...ारों जूते अनाथों में बांट दिये; और इस ...न पर नजर रखी कि उन्हें यह कितना ...द आता है, इसकी कमजोरियां क्या हैं? ...पांट स्वयं भी हमेशा कोरफाम के बने ...जूते पहनते हैं, और विक्रेता तो खैर पह-...ते ही हैं। अभी कंपनी ने कोरफाम के जो ...ते तैयार किये हैं, उनकी सबसे कम कीमत ...० रुपये है; परंतु अब सस्ते जूते बनाने ...ओर भी कंपनी ध्यान दे रही है। ऊंची ...मत होने पर भी अभी ४५ बड़े-बड़े ...-निर्माता इसका निर्माण कर रहे हैं एवं ...दारों की मांग तो इसके उत्पादन ...ही अधिक है। अब तक सात लाख ...ों ने कोरफाम के जूते इस्तेमाल किये ...और डचु पांट को आशा है कि आगामी ...वर्षों में कोरफाम अमरीका के २५ प्रति-...त जूता-बाजार पर राज करेगा।

अमरीका में सालाना ६१ करोड़ जोड़े ...ते बिकते हैं। ओल्म हिकरी में एक नये ...खाने के द्वारा बड़े पैमाने पर इन जूतों ...उत्पादन शुरू हो चुका है एवं यूरोपीय ...बाजार पर धावा बोलने के लिए डचू पांट ...क्सेम्बर्ग में एक कारखाना खोल रहे हैं। ...बात की भी पूरी निगरानी रखी जा ...ही है कि कोरफाम किस प्रकार तैयार किया जाता है, इसका अन्य कपनियों को सुराग न मिले। डचु पांट इस व्यापार-क्षेत्र में इस-लिए और भी आशंकित हैं कि १९८४ तक जूतों की मांग चमड़ा-उत्पादन से ४५ प्रति-शत अधिक हो जायेगी।

डचु पांट ने फोटोग्राफी के क्षेत्र में अभी जो नया आविष्कार किया है, उससे अब नेगेटिव ही पाजिटिव बन जायेगा। अर्थात् अभी नेगेटिव से दूसरे कागज पर जो प्रिंट तैयार करने होते हैं, उसकी आवश्यकता नहीं रहेगी। डचु पांट के एक वैज्ञानिक भौतिकशास्त्री आर० किंगस्ले ब्लेक ने दिन-रात डार्क रूम में काम करते रहने के बाद जब एक प्रकाश-किरण देखी, तो डचु पांट ने अपनी प्रयोगशाला के बजट में इस कार्य के लिए और अधिक धन की व्यवस्था कर दी। इस खोज की नवीनता यह है कि जब फिल्म में तस्वीर उतार ली जाती है और उसे धोने लगते हैं, तो इमल्शन के चंद अंश इस तरह चमत्कारपूर्ण ढंग से भंग हो जाते हैं कि वैज्ञानिक अभी भी परेशान हैं। फिर उस फिल्म को हाइपो में धोने से तीव्र गति से और सहज ही नेगेटिव के बदले पाजिटिव तैयार हो जाता है। इसके विपरीत जब आम फिल्म को इसमें धोते हैं, तो उससे नेगेटिव ही मिलता है, पाजिटिव नहीं। यह फिल्म अभी प्रचलित फिल्मों जितनी तेज नहीं है। डचु पांट इसे उद्योग और नवसिखुआ छबिकारों में प्रचलित करने में लगे हैं।

'सरलीन' के आविष्कार ने तो प्लास्टिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्योग में तहलका मचा दिया है। इस विचित्र प्लास्टिक को वैज्ञानिक कड़ा अथवा मुलायम, पारदर्शी अथवा अपारदर्शी, पतला अथवा मोटा, जैसा चाहें, वैसा बना सकते हैं—महज इसके आयन तत्व से खिलवाड़ करके। इस प्लास्टिक का उपयोग फिल्म, पाइप, जेवरात आदि की पैकिंग के लिए डिब्बे बनाने में किया जा रहा है।

इनके अलावा डचु पांट मोटर और वस्त्र-निर्माण में तो दिनों-दिन आगे बढ़ता ी जा रहा है। मोटर-निर्माण के मामले में डचु पांट ने अपने हिस्से का करीब-करीब शत-प्रतिशत स्टाक होल्डरों में बांट दिया

श्रम

है, जिसकी लागत अभी करीब ६० अरब रुपये है। अपने इस मोटर-व्यापार से होनेवाले मुनाफे को छोड़कर गत वर्ष डचु पांट ने ३२ करोड़ ५० लाख डालर अर्थात् करीब १ अरब ६२ करोड़ ५० लाख रुपये कमाये। डचु पांट परिवार के जीवित १,५०० व्यक्तियों में २७ इस कंपनी के बड़े कार्यकारी पदाधिकारी हैं और १५० से भी अधिक का इस कंपनी में काफी पैसा लगा है। देश में २८ राज्यों एवं १६ विदेशों में फैले कंपनी के १२९ संयंत्र करीब २०,००० किस्म की चीजें तैयार करते हैं।

डचु पांट अपने अधिकारियों को अगाध अधिकार प्रदान करता है, ताकि वे कंपनी के प्रति पूर्ण ईमानदार रहकर कार्य कर सकें। कई विभागीय अधिकारियों का वेतन तो सालाना १२,५०,००० रुपये से ज्यादा है, जो कि कई अन्य कंपनियों के सभापतियों के वेतन से भी ज्यादा है। विलमिंग्टन का सबसे बड़ा बैंक, प्ले हाउस और दो बड़े समाचार - पत्र डचु पांट की संपत्ति हैं, और जिन पर उनका अधिकार नहीं भी है, उन पर प्रभाव तो है ही। गत वर्ष कोपलैंड को वेतन और बोनस में करीब १७,००,००० रुपये एवं डचु पांट साम्राज्य से लाभांश में १,७०,००,००० रुपये प्राप्त हुए।

डचु पांट की सफलता का एक प्रधान कारण यह है कि उसने अपने वैज्ञानिकों को नौकर बनाकर नहीं, बल्कि स्वतंत्र जीव बनाकर रखा है, जो अपनी मर्जी से काम करते हैं। ये वैज्ञानिक दिन-रात प्रयोगशालाओं में डूबे रहनेवाले न होकर जीवन का आनंद उठाते हुए नये-नये प्रयोग करने वाले हैं, जिनका उद्देश्य एक ही है—"ऐसी चीजों का आविष्कार करना, जिनका जन-जीवन में नित्य उपयोग हो सके।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी ऐसी समस्याएं संक्षेप में लिखकर सहर्ष भेज सकते हैं। —सम्पादक]

सच्चा रास्ता विवेक का है

"अगले महीने मैं मैट्रिक की परीक्षा देनेवाली हूं। मेरी आयु लगभग १५-१६ की है। मेरे घर का और आस-पास का वातावरण अच्छा नहीं है, जिससे मेरा अध्ययन में मन नहीं लगता। मेरा मन सदा अशांत बना रहता है। मैं एकांतप्रिय हूं, अतः हर समय मुझे एकांत-स्थान ही अच्छा लगता है। मैं बहुत ही ज्यादा सूनेपन का अनुभव करती हूं। जब अध्ययन के लिए बैठती हूं, सोने के लिए जाती हूं या कहीं एकांत में रहती हूं, तो मेरे मन में नाना प्रकार के अजीब-अजीब बुरे विचार और प्रश्न उठते रहते हैं, जिनसे मैं और भी उद्विग्न हो जाती हूं और अपने आपको पागल-सा अनुभव करती हूं। जब मैं स्कूल से शाम को देर से लौटती हूं, तो विभिन्न प्रकार की बातें ले मां अविश्वास करती हैं और वास्तविक बात को बिना जाने-समझे ही डांटना शुरू कर देती हैं। जब कभी छुट्टी के दिन किसी कारणवश स्कूल जाना चाहती हूं, तो वे कभी छुट्टी देती हैं तो कभी नहीं भी। उनसे पूछकर यदि मैं वहां जाती भी हूं, तो फिर मुझ पर अविश्वास करती हैं कि तुम स्कूल जाती हो या मुझे ठगकर और कहीं। मुझे मां-बाबूजी, भाई-बहनों के बीच बैठना बहुत अखरता है। जब मैं कभी घर का काम नहीं करती या उधर कुछ ध्यान नहीं देती हूं, तो मुझे बहुत अधिक डांट और गालियों का शिकार होना पड़ता है। मेरी हर बात हंसी में उड़ा दी जाती है। छुट्टियों में मैं जब कभी कहीं जाना चाहती हूं, कहीं घूमना चाहती हूं, तब भी डांट मिलती है।

"मुझे किसी के पास खत लिखने की मनाही कर दी गयी है, जिससे मुझे और भी दुःख होता है। पत्र-व्यवहार को मैं व्यक्तित्व के विकास का अच्छा साधन मानती हूं; पर वह भी बंद कर दिया गया है। जब किसी की चिट्ठी आती है, तो वह मां-बाबूजी द्वारा पढ़कर मेरे पास आती है। उसमें मेरी कई निजी बातें भी रहती हैं, जिन्हें वे नासमझी के कारण बुरा मानते हैं, और फिर मुझे दुगुना-चौगुना डांटते हैं। मेरे पास कोई ऐसा साधन नहीं, जिससे चिट्ठी सीधे मेरे हाथ लगे। मेरे खत न देने पर दूसरे दुःखित होते हैं; पर मैं स्वयं मजबूर हूं।

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन बातों को सोचकर मैं बहुत रोती हूं, तो फिर मन और भी अशांत हो जाता है, और कुछ देर निरा पागल-सा महसूस करती हूं। मैं यह खत चुपके-से बिना किसी को ज्ञान कराये भेज रही हूं। मुझे विश्वास है, मेरी वास्तविक स्थिति समझ आप अवश्य ही मुझ पर तरस खायेंगे और उचित सुझाव देकर मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

—एक बहन"

यह समस्या केवल एक बहन की नहीं—उन हजारों-लाखों बहनों की है, जो अपने नासमझ मां-बाप की मूर्खता का दंड भोग रही हैं। मां-बाप के मन में अपनी संतान के प्रति पूरा विश्वास न होने का मूल कारण प्रायः उनका अपना ही चरित्र होता है। जवानी में उन्होंने जो पागलपन किये होते हैं, उनकी याद उन्हें सभी किशोरों और जवानों के चरित्र पर शक करने को मजबूर कर देती है। अपने जवान बच्चों को वे सारे जमाने में फैली विषैली हवा से बचाना चाहते हैं—इसलिए उन्हें हर समय अपनी निगरानी में रखने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार उनका मुख्य काम जेलर का-सा हो जाता है। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि घर की जेल में अपने बच्चों को कैद करने से पहले उन्होंने उनका अपराध साबित नहीं किया; केवल संदेह को ही प्रमाण मानकर उठती जवानी के उन मासूम बच्चों को जेल के सीखचों में बंद कर दिया है।

ऐसे शक्की माता-पिता के प्रति संतान के हृदय में विद्रोह पैदा होना स्वाभाविक है। आत्म-निर्भर होते ही जवान लड़के इस विद्रोह को मां-बाप से अलग अपनी मर्जी का घर बसाकर प्रकट कर देते हैं। इसलिए इस घुटन का असर उनके दिलो-दिमाग पर नहीं होता। मगर बेचारी लड़कियां मां-बाप की पैदा की हुई उलझनों में प्रायः फंस जाती हैं। जिस बहन ने यह पत्र लिखा है, वह भी इसी का शिकार हुई है।

प्रश्न यह है कि यह लड़की अब क्या करे?

एक उपाय तो यह है कि लड़की बालिग होते ही अपनी इच्छा से किसी भी लड़के से शादी करके मां-बाप से आजाद हो जावे। दूसरा यह कि वह अपने आचरण से मां-बाप के दिल में अपने चरित्र के संबंध में ऐसा अटूट विश्वास पैदा कर दे कि मां-बाप के दिल का मैल बिलकुल धुल जाये।

इन दो उपायों में से पहला बहुत आसान है। आज की पढ़ी-लिखी लड़कियां प्रायः यही रास्ता अपनाती हैं। पंख लगते ही वे पिंजरे से उड़कर किसी भी वृक्ष की शाखा पर जा बैठती हैं—भले ही वह वृक्ष विषवृक्ष हो। बेबसी में अपनाया गया यह मार्ग प्रायः लड़कियों को ऐसे वधिक के जाल में फंसा देता है कि वे सारी उम्र पछताती रहती हैं। ये लड़कियां मां-बाप के घर से निकल कर जब शादी करती हैं, तब उन्हें शादी का अर्थ भी मालूम नहीं होता। माता-पिता के बंधन से मुक्ति पाने की इच्छा से ही वे शादी करती हैं। वह उपाय सच्चा नहीं है।

दूसरा उपाय ही सच्चा उपाय है। यद्यपि जो पिता जवानी के दिनों में स्वयं संयम से रहना न सीख सका, वह अपने बच्चों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संयम का पाठ सीख सकेगा, यह बात दुःसाध्य है। लेकिन यह असंभव नहीं है।

अच्छे अर्थों में सुशील-साध्वी लड़कियां अपनी शालीनता से बाप का दिल बदल सकती हैं। किंतु यह चमत्कार वही लड़कियां कर सकेंगी, जिनका मन चढ़ती जवानी की वासनाओं में बह न जाये। सच तो यह है कि आज की लड़कियां भी बहुत छोटी उम्र में यौनभावनाओं की तरंगों में बहने लगती हैं। आज समाज में कामुकता का विष इतना फैल गया है कि लड़कियों के मन में कामोत्तेजन के विषबीजों का अकाल में ही अंकुरित हो जाना बहुत स्वाभाविक हो गया है। पूरी तरह होश संभालने से पहले ही वे होश खो बैठती हैं। तभी एकांत-प्रिय होकर भावावेशों में दीवानगी-सी महसूस किया करती हैं।

बहुत कम लड़कियां ऐसी भाग्यशालिनी होती हैं, जो इन विषैली हवाओं से अपनी रक्षा कर सकें। जो भावना की अपेक्षा विवेक से काम लेती हैं, वे ही इस कठिन परीक्षा में सफल होती हैं। वे ही मां-बाप के हृदय में अपने प्रति अटूट विश्वास पैदा करके अस्वाभाविक बंधनों से मुक्ति पा सकती हैं।

इस प्रसंग में दो शब्द बाप से भी कह दूं। अपने संतान के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभाया। शादी करके आपने भोग तृप्ति को ही विवाह का लक्ष्य मान लिया। शायद धन-दौलत भी आपने खूब पैदा की। लेकिन संतान को उनके भाग्य पर छोड़ दिया। उनके सामने ही आप मनमानी रंग-रेलियां मनाते रहे। कामुक साहित्य पढ़ते रहे। अश्लील बातों में आनंद लेते रहे, कामोत्तेजक सिनेमा देखते रहे। आपने सोचा, बच्चे अल्पवयस्क हैं, इन बातों की गहराई को न समझेंगे। लेकिन वे सब देखते-सुनते-समझते रहे। होश संभालते ही उन्होंने आपका अनुकरण किया। तब आप उन्हें धर्मोपदेश देने लगे। उन पर आपने अंकुश लगा दिया। उन्हें पिंजरे में कैद करने की तजवीजें कीं। किया आपने कुछ और कहा कुछ और आपकी शिक्षा उनकी दृष्टि में पाखंड बन गयी।

हमारे ९९ फी सदी मां-बाप इन्हीं भूलों से अपने बच्चों का चरित्र बिगाड़ देते हैं और फिर उन्हें बंधनों में जकड़कर विद्रोही बना देते हैं। विद्रोही बन जाने पर तरुण हृदय सभी नेक कामों को पाखंड समझ लेता है। उसके मन में मानव-स्वभाव की सभी ऊंची भावनाओं के प्रति अश्रद्धा पैदा हो जाती है। समाज की सभी मान्यताओं का विरोध करना वह अपना धर्म समझ लेता है।

फिर भी पत्र लिखनेवाली बहन को मेरा सुझाव है कि वह मां-बाप को उनकी भूलों के लिए हृदय से क्षमा करके अपने हित की बात सोचे। उसका विवेक ही मार्गदर्शन कर सकता है। जब वह अपने कल्याण की चिंता करेगी, तभी संयत जीवन बिता सकेगी। लड़कियों को अतिशय भावुकता से बचना चाहिये। तरुणावस्था में भावुकता के ये क्षण उलटी राह पर डाल देते हैं। सच्चा रास्ता विवेक का है, भावुकता का नहीं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकप्रिय लेखिका
दाफन दयु मौरियेर

विभूति भूषण

दाफन दयु मौरियेर संसार की उन गिनी-चुनी लेखिकाओं में से हैं, जिनका नाम दुनिया के कोने-कोने में फैला हुआ है। आपने उनकी कोई पुस्तक न भी पढ़ी हो, तो भी उनके उपन्यास पर बनी फिल्म 'रेबेका' देखी होगी। लारेंस ओलिवियर और जोन फांटेन-अभिनीत यह फिल्म २२ वर्ष पूर्व बनी थी; किंतु आज भी लोग उसे भूले नहीं हैं। गत वर्ष भारत में भी 'रेबेका' पर आधारित एक फिल्म बनायी गयी थी।

'फ्रेंचमेन्स क्रीक' और 'जमैका इन' मौरियेर की मंजी हुई लेखनी से लिखित कथाओं पर बनी हुई हाल की लोकप्रिय फिल्में हैं। गये साल की सबसे ज्यादा बिकने-वाली इनकी पुस्तक 'दि स्पेसगोट' को भी एलेक गिनेस फिल्मा चुके हैं और अब यह फिल्म सफलता का सिक्का जमायेगी।

मौरियेर की रचनाएं विश्व की ३० भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इस प्रकार आज उनकी पुस्तकें लाखों की संख्या में लोगों के हाथों में हैं।

गत ७० वर्ष से मौरियेर-परिवार का नाम प्रसिद्धि के शिखर पर रहा है। लेखिका के पिता सर गेराल्ड दयु मौरियेर प्रसिद्ध अभिनेता थे और पितामह जार्ज ने 'ट्रिल्बी' और 'पीटर इब्बाटसन' जैसे मेलोड्रामे लिखे थे, जिनकी ख्याति बारहमासी होती थी। इस वंश की तीसरी पीढ़ी सुशोभित है कहानी-लेखिका दाफन दयु मौरियेर से और उनके बारे में इससे अधिक और कुछ कहने को हमारे पास नहीं है कि ये विश्व में सर्वाधिक बिकनेवाली कथाकृतियों की लेखिका हैं।

दयु मौरियेर अपनी एक लघुकथा के लिए १० हजार डालर लेती हैं। दूसरे कथा-लेखक इतनी बड़ी मांग करने का साहस भी शायद ही करते हों। उनके उपन्यास के फिल्मीकरण के अधिकार लगभग तीन लाख डालर में बिका करते हैं; और रायल्टी अलग। वैसे, अन्यान्य पुस्तकों से मिलने-वाली रायल्टी का स्रोत भी अजस्र है।

जैसे ही कोई कृति छपी, वे उस कृति के प्रति निस्पृह हो जाती हैं। यही नहीं, वे अपना लिखा हुआ वापस कभी नहीं पढ़तीं। फिल्म बनने के लिए भी अपनी कृतियों को ज्यों-का-त्यों दे देती हैं। यदि फिल्म पुस्तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मुताबिक न बनी, तो कोई खास नुक्ता-चीनी नहीं करतीं।

दाफन द्यु मौरियेर एकदम एकांत-प्रिय महिला हैं। परिवार से बाहर उनका घनिष्ट संपर्क कुछ ही लोगों से है। २० वर्ष के लंबे अरसे में उन्होंने केवल दो इंटरव्यू देने स्वीकार किये हैं। इंग्लैंड के कार्नवाल प्रदेश में वे ६० कमरोंवाले घर में रहती हैं। इसका नाम है मेनैबिली। इसी मकान ने उन्हें 'रेबेका' की कहानी लिखने की प्रेरणा दी थी। कहानी में इसी मकान का नाम मैंडरली है।

दाफन द्यु मौरियेर

इस मकान के पास ही 'जमैका इन' (सराय) को जाने-वाली सड़क है तथा वे पहाड़ियां हैं, जिनमें तस्कर-व्यापारियों के डेरे थे। थोड़ा-सा आगे बोडमिन नामक स्थान है, जहां रिचर्ड ग्लेविले तथा 'किंग्स जनरल' की सेनाएं लड़ी थीं। 'किंग्स जनरल' उनकी एक अन्य प्रसिद्ध कृति है।

स्पष्ट है कि दाफन किसी काल्पनिक जगत के बारे में नहीं लिखतीं। ये सारे ही स्थान मेनैबिली के आस-पास हैं। हां, अपनी कथा-नायिकाओं के समान वे स्वयं दुःख-ग्रस्त नारी नहीं हैं, बल्कि एक सुखी महिला हैं। इसलिए ही नहीं कि वे लिखने के लिए जन्मी थीं और लिखना उन्हें भर-पूर सफलता के साथ सुलभ है; इसलिए भी कि २७ वर्ष पहले जिस व्यक्ति से उन्होंने विवाह किया, वह आज भी उन्हें प्रिय है। उसे लंदन के सुंदरतम व्यक्तियों में गिना जाता है। आज वह व्यक्ति जनरल सर फ्रेड-रिक ब्राडनिंग कहलाता है और ब्रिटिश सेना में सबसे कमउम्र सेनापति है।

उनकी तीन संतानें हैं। पुत्रियां हैं तेसा और फ्लविया—२६ और २२ वर्ष की। दोनों सेना के अफसरों को ब्याही गयी हैं। २०-वर्षीय पुत्र, जिसका नाम क्रिश्चियन है, क्यूबा में एलेक गिनेस के साथ 'आवर मैन इन हव ना' नामक चलचित्र में काम कर रहा है। मां का कहना है कि तीनों में से कोई बच्चा उनके लिए कभी 'समस्या' नहीं रहा।

दाफन द्यु मौरियेर को नगरों से नफ-रत है। मेनैबिली में उन्हें जो कुछ चाहिये, वह सब मौजूद है। बड़ा रंगीन वातावरण है—चारों ओर वृक्ष हैं, समुद्र है और एकांत की शांति है।

घर में एक ओर मौड वैडल रहते हैं। वे लेखिका के गुरु हैं। इन दिनों इस मकान के घरेलू काम-काज की देख-रेख भी वे ही करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। एक पार्ट-टाइम नौकरानी है, जो सवेरे आकर काम करती है। एक माली है, जो सप्ताह में एक बार आता है। इनके अतिरिक्त और कोई सहायक नहीं है।

बावन वर्ष पूर्व लंदन में दाफन का जन्म हुआ। वहां उनके पिता प्रसिद्ध रंगमंच-अभिनेता थे। उनकी याद करती हुई दाफन कहती हैं– "स्टेज पर पिताजी को मैंने पहली बार 'डियर ब्रूटस' में देखा था। नाटक के दूसरे अंक में दिखाया गया था कि वे अपनी प्यारी पुत्री के साथ बड़े सुख से रह रहे हैं। तीसरे अंक में दिखाया गया कि वे अकेले रह गये हैं और बहुत दुःखी हैं। मैं यह बात बर्दाश्त न कर सकी और सिसकियां भरने लगी। इस पर मुझे बाहर ले जाया गया।"

१९३४ में पिता की मृत्यु हो गयी। बेटी के लिए यह जीवन में सबसे दुःखद प्रहार था–"मैं उनकी शव-यात्रा में भी न जा सकी; क्योंकि यह मेरी सहन-शक्ति के बाहर था। उस दिन मैंने एक पिंजरा खरीदा, जिसमें सफेद कबूतर भरे हुए थे। पिंजरे को सब लोगों की नजरों से दूर हैंपस्टेड हीथ लेकर आयी। वहां पिंजरा खोल दिया। श्वेत कपोत स्वतंत्रता से आकाश में उड़ने लगे। मैंने ऐसा क्यों किया? नहीं जानती; पर मुझे ऐसा करना पड़ा।"

जब दाफन १२ वर्ष की हुईं, तो उन्हें साहित्य और इतिहास की शिक्षा दी जाने लगी। मौड वैडल इनके घरेलू शिक्षक थे। तभी से उन्होंने मृत्यु और दुःख पर कविताएं लिखना शुरू किया। जब तक वे १७ की हुईं, उनकी कहानियां घोर असामाजिक या सनकों से भरी हुई होती थीं–ऐसी, जिन्हें पढ़कर बड़ों को चोट पहुंचे।

१९२७ में उनके माता-पिता ने दक्षिण-पूर्वी इंग्लैंड के कार्निश तट के फौवी नामक स्थान पर एक जगह खरीदी थी। वहां उन्हें अपने रोमांटिक दृश्यों को नाटकीय रूप देने के लिए एक लेखक की जरूरत थी। इधर दाफन को अपनी कहानियां लिखने के लिए ऐसे ही किसी स्थान की खोज थी। दोनों की जरूरतें पूरी हुईं और एक उपन्यास-लेखिका का जन्म हुआ।

दाफन रोज सवेरे यहां एक ऐसे मकान में घूमने जातीं, जो १७ वीं सदी का था और इन दिनों वीरान पड़ा था। वर्षों से उसमें कोई नहीं रहता था–उसे भुतहा समझा जाता था। मगर दाफन को वह इतना पसंद आया कि उन्होंने उसमें रहने का निश्चय कर लिया और बाद में रहने भी लगीं। वह मकान और कोई नहीं, मेनैबिली ही था।

'दि चेन आफ लव' दाफन का पहला उपन्यास था और यह एक पाठक को इतना पसंद आया कि वह इसमें वर्णित स्थान देखने के लिए फौवी आया। बाद के दो उपन्यासों को पढ़कर उसके मन में लेखिका से मिलने की उत्सुकता बढ़ी। उसके पिता लेखिका को जानते थे, उनसे परिचय-पत्र लेकर वह मिलने आया।

तीन माह बाद लेखिका उसकी पत्नी बन गयी। उनके पति ब्राडनिंग, उन दिनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षेत्र में मेजर थे। विवाह के समय वे ३५ के थे और दाफन २५ की। विवाह के बाद छः वर्ष दाफन ने ऐसी सैनिक-पत्नी की तरह बिताये, जिसे मैनेबिली के अजीबोगरीब नखरे आते थे। यह जीवन आगे चलकर 'रेबेका' की अज्ञात नायिका का चरित्र बन गया। यह उपन्यास दाफन ने मिस्र में रहते हुए १९३७ में लिखा, जिसने उन्हें अमर कर दिया।

उपन्यास इस कदर बिका कि प्रकाशक खरीदारों की मांग पूरी नहीं कर पाये। एक वर्ष में दस लाख प्रतियां बिक गयीं। अब दाफन इस स्थिति में थीं कि मेनेबिली को खरीद सकें; किंतु वह तब बिकाऊ नहीं था। इसके लिए उन्हें अगले छः वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। अंततः वह दिन आया कि उन्हें मेनेबिली किराये पर मिल गया। इस मकान के बिना उन्हें जिंदा रहना मुश्किल लगता था।

जब मेनेबिली की साफ-सफाई की गयी, तो उसमें एक मानव-कंकाल मिला। इसने दाफन को 'दि किंग्स जनरल' लिखने को प्रेरित किया। इसकी भी ९ लाख प्रतियां फौरन बिक गयीं।

इन दिनों वे साल के सारे दिन मेनेबिली में ही बिताती हैं। लंदन शायद ही कभी जाती हैं। पति चूंकि शाही घर-बार के काम-काज के अफसर हैं, ज्यादातर लंदन में ही रहते हैं और सप्ताहांत में या जब कभी छुट्टी मिलती है, मेनेबिली आ जाते हैं। दाफन को कभी-कभी राजकीय समारोहों में शामिल होना पड़ता है; क्योंकि पति चाहते हैं कि वे यह न भूल जायें कि वे लेडी ब्राडनिंग भी हैं! ऐसे अवसरों पर उन्हें दरबारी वेशभूषा धारण करनी पड़ती है; पर इस सबसे उन्हें अरुचि है। कहती हैं—"समारोहों में मैं एकदम ऊब जाती हूं, मैं अपने आपको उनके योग्य नहीं पाती।"

घर में वे बहुत सादे कपड़े पहनती हैं आसमानी जीन और स्वेटर। मेनेबिली में उनके काम करने की जगह है लकड़ी का छोटा-सा कैबिन। इसका द्वार समुद्र की ओर है। दीवारों पर उनके बनाये हुए कुछ चित्र लटके हैं—चट्टानों, वृक्षों और समुद्र के दृश्योंवाले। वे शौकिया चित्रकारी करती हैं और जो मन में आ जाये, वही चित्रित कर डालती हैं। इस कार्य से उन्हें ताजगी मिलती है।

कैबिन में अन्य सामान है—एक मेज, एक कुर्सी और एक बिजली का हीटर। काम करते वक्त दाफन के पास जाने की किसी को इजाजत नहीं है। कोई भी किसी भी बहाने उनके काम में विघ्न नहीं डाल सकता। दैनिक कार्यक्रम सदा एक-सा रहता है।

तीन बातें

मेरी सलाह मानें, तो तीन बातों का ध्यान रखें—१. साल-भर से कम पुरानी पुस्तक न पढ़ें; २. प्रसिद्ध पुस्तकों के अतिरिक्त कोई अन्य पुस्तक न पढ़ें, और ३. कभी अपनी रुचि के विरुद्ध पुस्तक न पढ़ें।—एमर्सन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुबह ११ बजे वे कैबिन में पहुंचकर लिखना शुरू करती हैं। एक बजे लंच के लिए उठती हैं। फिर तीन से सात बजे तक लिखती हैं।

हाल ही में उन्होंने फ्रांसीसी लेखक फ्रांस्वा-पेटित को बताया था कि उनकी कहानियों में उनके अपने वातावरण और वंश-परंपरा का कितना महत्व है। "मुझे विषय कैसे सूझता है?" दाफन ने बताया—"कोई छोटी-सी घटना, किसी मकान के खंडहर, कोई पुरानी सराय—ऐसी जगहें, जहां कोई रहना नहीं चाहता। मैं ऐसी जगहों को देखते हुए महीनों गुजार देती हूं। जमैका सराय में मैं कई दिन रही और तब मैंने जाना कि यहां तस्कर-व्यापारियों का गुप्त अड्डा रहा है। मैं चरित्रों की खोज नहीं करती, वे अंततः स्वतः मेरे पास आ जाते हैं। उदाहरण के लिए मैं 'माइ कजिन राशेल' की राशेल से अपनी इटली-यात्रा में मिली थी। बाद में मैंने उसे मेनैबिली में पाया। आप यहां उस का कमरा पहचान सकते हैं। पार्क और फूलों के बारे में उसके विचार यहीं अभिव्यक्त हुए हैं। यहीं वह बैठक है, जिसमें फिलिप ने अपने प्यार का इजहार किया था।"

'दि स्पेसगोट' के संबंध में दाफन ने बताया कि उसकी सृष्टि के लिए वे अपनी फ्रांसीसी वंश-परंपरा की आभारी हैं। उन्होंने कहा—"मैं अपने पैतृक पूर्वजों के निवास-स्थान के विषय में जानने को सदा लालायित रहती थी। दचु मौरियेर ला सार्त्र से आये थे। फ्रांसीसी क्रांति के पूर्व वे बुसन कहलाते थे और कांच का काम करते थे। तब वे अभिजात वर्ग में नहीं आते थे। मेरे प्रपितामह के प्रपितामह का तो नाम भी बुसन दचु मौरियेर था। वे इंग्लैंड आये और प्रसिद्ध मेरी एन से विवाह किया, जिसकी कहानी मैं लिख चुकी हूं।" उनकी पुस्तक 'मेरी एन' में मेरी के आत्मचरित के साथ तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं का भी वर्णन है।

"कांच का काम करनेवाले हमारे पूर्वज हम सबको विरासत में कला दे गये।" दाफन ने बताया—"मेरे पिता को रंगमंच, मेरे पितामह और मुझे लेखनी, मेरी बहन को चित्रकला और मेरे पुत्र को सिनेमा। हमारे परिवार के पुराने निवास-स्थान के पास कांच की फैक्टरी अभी भी मौजूद है—उसे पुराने जमाने की गढ़ी समझिये। पर उसमें कौन रहा होगा? 'दि स्पेसगोट' का दुष्ट नायक उसमें रहा। मैंने अपनी कृति में उसे एक अंग्रेज आदमी के रूप में डाल दिया है।"

दाफन दचु मौरियेर नारीवादी लेखिका नहीं हैं। उनके नारी-चरित्र वासना, हिंसा और षड्यंत्रों में उलझे हुए होते हैं। वे नहीं जानतीं कि उनके पात्र दुश्चरित्र क्यों होते हैं। नारी के संबंध में उनका अपना दृष्टिकोण बड़ा साफ-सीधा है। उनके अनुसार नारी के पास जो कुछ होना चाहिये वह है—हंसी-मजाक की समझ-बूझ और अंतर्ज्ञान। विवाह जीवन के लिए है—"मैं विवाह से पूर्व हुए एक या दो तक प्रेम-प्रकरणों को क्षमा कर सकती हूं..... पर तलाक को तो कभी नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरों का खजाना

मेरी तिजोरी में अनगिनत चेहरे हैं
जिन्हें मैं पिछले चालीस बरसों से
जमा कर रहा हूं ।
सर्वप्रथम अपने बच्चे को बढ़ता देखते हुए
मेरे मां-बाप के चेहरे,
चेहरे सगे-संबंधियों के,
जो मुझसे मिलते हैं और फिर भी नहीं
मिलते !
चेहरे
स्कूल और कालेज के
हमजोलियों के,
सबक याद करते हुए,
खेलते हुए,
परीक्षा देते हुए,
अखबारों में परीक्षाफल देखते हुए-
चेहरे !
चेहरे बुजुर्ग सहकारियों के,
सिखाते हुए जिंदगी का सबक
व्यक्ति, परिवार और समाज के प्रति
दिखाते हुए दुरूह राहें,
जिनके अंधेरे नोचते हैं आत्मा को,
कचोटते हैं नौसिखिये प्राणों को !
प्यार में आत्मसमर्पण के मुस्कराते,
बुदबुदाते,
पलक बंद चेहरे !
हादसात में भयभीत चीखते-चिल्लाते
चेहरे !
और भी लाखों-करोड़ों चेहरे
जो मिले हैं कारखानों में,
रेल, ट्राम और बसों में,
सभाओं में, सिनेमा में,
जुलूसों में, उत्सवों में,
लाखों-करोड़ों चेहरे
जो बेनाम हैं
जाने हुए हैं
और फिर भी अनजाने हैं !
चेहरों के इन सिक्कों में
सबसे दुष्प्राप्य और अनमोल हैं
वे चेहरे,
जो हैं दोस्ती के
और निस्वार्थ प्यार के !
और यही मेरा खजाना है !

—शैलेंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचित्रताएं सृष्टि और मानव की

श्यामसरन 'विक्रम'

'एक से दो भले' की कहावत जब-तब गलत भी हो जाती है। विशेषतया उस समय जबकि सृष्टि अपनी उदारता दिखाने के लिए किसी सर्प को एक की जगह दो मुंह दे दे। इस युग में तो दो-मुंहे सर्प शायद ही किसी अजायबघर में देखने को मिलें; लेकिन कुछ दिन पहले का रिकार्ड देखें, तो दक्षिणी अफ्रीका के पोर्ट एलिजाबेथ के अजायबघर में दो-मुंहे सर्प का उल्लेख मिलता है। भारतीय पुराणों में तो एक-दो दस-बीस क्या, सहस्रमुख शेष-नाग की कथाएं भरी पड़ी हैं।

यह कबूतर अपनी गर्दन के निचले भाग को गुब्बारे की भांति फुला लेता है।

नवनीत

तो, पोर्ट एलिजाबेथ के अजायबघर के उस दो-मुंहे सर्प की चार इंच आगे बढ़ी हुई गर्दन पर सचमुच ही दो मुंह थे। किसी ने ठीक कहा है कि एक फटी चटाई पर दो फकीर गुजर कर सकते हैं; किंतु निस्सीम विस्तार में फैले एक साम्राज्य पर दो शासक एक साथ गुजर नहीं कर सकते। उस सर्प के साथ भी यही हुआ। एक दिन उसके दोनों मुंह आपस में झगड़ पड़े और एक ने दूसरे को गर्दन के जोड़ तक निगल लिया। सौभाग्य से पहरेदार ने वहीं हस्तक्षेप करके दोनों में समाधान कराया और घायल प्रतिपक्षी की मरहम-पट्टी करा दी। इतने पर भी हारा हुआ खिलाड़ी अपना बदला चुकाने की फिराक में ही रहा और एक दिन सचमुच वह सर्प मृतावस्था में पाया गया। आधी रात की लड़ाई में पिछले हारनेवाले ने अपना बदला ले लिया था, प्रतिद्वंद्वी को चबा डाला था और उस मरणांतक लड़ाई में वह स्वयं भी शहीद हो गया था।

ऐसा ही विवरण न्यूयार्क के अजायबघर से भी मिला है, जहां लेंप्रोपेल्टिस नामक अमरीकी किंग स्नेक (सर्प) पाला हुआ था। दूध पिलाते समय पहरेदार को बीच में दफ्ती का टुकड़ा रखकर उसके दोनों मुंह अलग-अलग रखने पड़ते थे। उसका यह भी

अप्रैल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...था कि सृष्टि के इस उपहास से वह ...खुश नहीं था, क्योंकि एक मुंह की मौज ...थी कि पूरब को चला जाये, तो दूसरा ...चिम को रुख कर लेता था।

श्याम देश में ऐसा जुड़वां कछुआ भी ...जाता है, जिसके दो सिर और दो मुंह ...हैं; किंतु धड़ एक ही। दोनों मुंह अपने-...हिस्से में अपनी ओर के चारों पांव ...लेते हैं और तब बड़ी मुश्किल खड़ी होती ...जब एक मुंह अपने चारों पांवों को आज्ञा ...है कि उत्तर की ओर चलो, तभी दूसरा ...अपने पांवों को पश्चिम की ओर घुमा ...है। फलतः बेचारा कछुआ नौ दिन में ...कोस भी नहीं चल पाता और वहीं-...वहीं चक्कर लगाकर रह जाता है।

पांच पांव की भेड़, दो सिरवाली बिल्ली ...किसी भी दोहरे अंग के मेंढक सृष्टि ...कारखाने में प्रायः बनते रहते हैं; किंतु ...के इस शौक को क्या कहा जाये, जो ...नये, अटपटे डिजाइन हमारे सामने ...है? मानव का यह शौक सैकड़ों नहीं, ...वर्ष पुराना है। तीन हजार वर्ष पहले ...को ऐसी गोल्डफिश मछली वर्ण-

कबूतर
बारह की अपेक्षा ४८ पंखों की छटा में

सकर-विज्ञान से उत्पन्न करने का शौक था, जिसकी आंखें उभरी हुई, किंतु सिर पर उगायी गयीं थीं, मानो आकाश ही आकाश की ओर टकटकी लगाये रहने की सजा उसे दी गयी हो। कबूतरों की बड़ी अजब-अनोखी नस्लें उपजाने के प्रयोग पूर्वीय देशों में होते रहे हैं। लोटन कबूतर एक ऐसा ही नमूना है, जो भागते समय पांवों में सिर देता हुआ, लोटता हुआ जाता है। दूसरा नमूना पंखे-जैसे पूंछदार कबूतर का है, जिसमें सामान्य कबूतरों के केवल १२ पुच्छ-पंखों की अपेक्षा ४८ पंख उगते हैं और खुलने पर पंखे जैसे फैल जाते हैं। तीसरा उदाहरण कंदुक-कबूतर का है, जो उचित अभ्यास के अनंतर गल के निम्न भाग को गेंद या गुब्बारे की भांति फुला लेता है।

योकोहामा मुर्ग
तीस फुट लंबी पूंछ फहराते हुए

यही नहीं, जापान में तो यह कला भी २५,०० वर्ष पुरानी है। वहां के योकोहामा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुर्ग के शरीर में, सिर से पांव तक तो कोई असामान्य बात नहीं; किंतु सारी करामात उसकी पूंछ में रहती है। कल्पना कीजिये, दो-चार फुट नहीं, गज-दो-गज नहीं, उसकी पूंछ को ३० फुट की लंबाई तक पहुंचाया जाता है। उस हनुमान-जैसी पूंछ के कारण बेचारे मुर्ग की जिंदगी बोझ बनी रहती है। न वह आजादी से घूमने-फिरने का, न बेफिक्री से खाने-पीने का। मानो हमेशा सूली पर टंगा हो। एक काफी ऊंचे खंभे पर उसका पिंजरा रखा जाता है। उसे दिन में केवल एक बार नीचे उतारा जाता है, ताकि खाना खा ले और घूम-फिरकर जरा टांगें सीधी कर ले। नीचे उतारने में भी उसके रखवालों को यह ध्यान रखना पड़ता है कि बड़े चाव से पाले गये उसके ३० फुट लंबे पंख चाहे जैसी मैली धरती पर गंदे न हो जायें। अतः उसे जहां उतारा या घुमाया-फिराया जाता है, वह जगह आईने की तरह

दो-मुंहा अजगर

चमाचम रखनी पड़ती है और जैसे-जैसे मुर्गा चहलकदमी करता है, रखवालों को उसकी पूंछ यों थामे चलना पड़ता है, जैसे किसी शहंशाह का दामन उठाये चले जा रहे हों।

मध्य-पूर्वीय यूरोप के देशों में कहीं-कहीं ऐसे विचित्र मेंढे तथा भेड़ें पायी जाती हैं जिनकी भारी-भरकम पूंछ को पीछे से चार पहियों की गाड़ी पर लादकर चलना पड़ता है। वह पूंछ उसका शृंगार न होकर मानवीय भोजन की एक आकर्षक वानगी के रूप में होती है।

अल्जीरिया में सूडधारी चूहे पैदा किये जाते हैं और वह इस तरह कि सामान्य चूहे की आधी पूंछ काटकर उसकी कलम सिर के आगे लगा दी जाती है, जहां वह रक्त जमा लेती है और ऐसा दिखता है, मानो सूंडधारी चूहा आ रहा हो।

जैव-वैज्ञानिक मेंढ़कों पर जो अजीब प्रयोग करते रहते हैं, उनमें एक यह भी है कि मेंढ़क के अंडे को सावधानीपूर्वक एक बारीक बाल से मध्य में काटकर दो कर लेते हैं। वे ही अंडे वयस्क मेंढ़क बनने पर या तो एक-एक आंख के दो होते हैं या दो सिरवाला एक होता है। अविकसित मेंढ़क अर्थात् टैडपोल को एक आंख का बनाने के लिए लीथियम क्लोराइड रसायन का भी उपयोग करते हैं।

कुत्तों में अल्सेशियन नाम कुछ वर्षों पूर्व तक अस्तित्व में भी नहीं था। यह नयी उपज भी मानव की देन है।

स्पष्ट है कि सृजन के ऐसे उपहासों में ऐसे वर्णसंकरीय सृजनों में मानव सृष्टि से पीछे नहीं रहना चाहता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी कल्पना का सुख

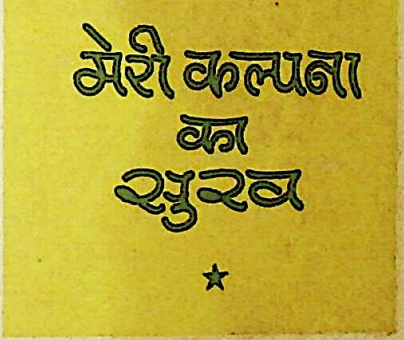

इस संसार से मेरे विदा होने के पश्चात्, मेरे दोस्त और दुश्मन दोनों अभिमान के साथ मेरे बारे में यह कह सकें कि एक व्यक्ति था, जिसने अभाव में भी और सम्पन्नता में भी अपना ईमान नहीं बेचा। —हीरालाल सेठिया

०००

मुझे वह सुख तब अनुभव होता है, जब मैं उसे मुस्कराते देखूं, जिसे मैं प्यार करता हूं। और मैं किसे प्यार नहीं करता?...यहां अपने आस-पास सभी कुछ तो प्रिय है! —महेशप्रसाद विद्यार्थी

०००

मैं जब कभी किसी स्वस्थ व्यक्ति को देखता हूं—चाहे वह भारतीय हो अथवा विदेशी, तब मेरा हृदय आनंद से प्रफुल्लित हो उठता है। मैं सोचने लगता हूं कि वह दिन न जाने कब आयेगा, जब हमारे देश के हर आदमी और बच्चे का अच्छा स्वास्थ्य होगा और ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ी जीता करेंगे। —चंद्रभानु शर्मा

०००

एक दूसरे के अधिकारों की रक्षा करते हुए ऐसे वर्ग-विहीन समाज का निर्माण हो, जिसमें इंसान, इंसान के खून का प्यासा नहीं हो। भाईचारे के सूत्र में बंधे सब देशवासी राष्ट्र-धर्म और मानव-धर्म को ही अपना एक धर्म समझें। —श्रीपालसिंह 'बेमन'

०००

सुख के संबंध में मेरी कल्पना यही है कि मैं नीरोग शरीर और सुलझा हुआ मस्तिष्क हो, तो संसार के सारे सुख स्वयं ही मेरे पास होंगे। —बसंत कुमार जोशी

०००

मैं एक ऐसे छोटे-से परिवार का अभिलाषी हूं, जिसमें हर सदस्य को एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास हो, प्यार का साम्राज्य हो और प्रत्येक एक-दूसरे के दुःख को स्वयं स्वीकार कर लेने तथा सारे सुख उसे दे देने के लिए सदैव हृदय से तत्पर हो। ऐसे परिवार में फिर दुःख दुःख न रहेगा, शोक शोक न रहेगा, रोग रोग न रहेगा। —हरीश प्रसाद

०००

मेरे पास धन की कमी न हो; और उस धन से मैं संसार के हर देश में घूमूं-फिरूं। —हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंद

प्रत्येक देश की संस्कृति - सभ्यता को देखूं, वहां की भाषा सीख सकूं व नयी जानकारी ले सकूं। —अशोक कुमार त्रिखा

०००

आज मैं अध्यापक हूं—अधिक सही कहूं, तो नौकर हूं। और नौकर का भला अपना सुख क्या! इसलिए अपने में एक रिक्तता और कुंठा अनुभव करता हूं। कभी सोचता था—'एक आदर्श पत्र है और मैं उसका संपादक'—आज भी यह स्मृति स्फूर्ति ला देती है। कभी कोई रचना बन पड़ती है, तो मैं उसे अपने जीवन का एक सार्थक दिन मानता हूं। —'प्रसाद-प्रभाकर'

०००

संसार के रंगमंच पर मैं ऐसा अभिनय करूं कि विषय-वासनाओं से लिप्त संपूर्ण विश्व के लोगों की आंखें ज्ञान के प्रकाश से चमचमा उठें और जीवन प्रेम तथा प्रसन्नता से परिपूर्ण हो जाये। —ब्रजेश चंद्र तिवारी

०००

मेरी कल्पना के सुख के रूप में कभी-कभी 'रामराज्य' आता है। मुझे इसके लिए राम की तलाश नहीं करनी पड़ती; क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं प्रजातंत्र में जी रहा हूं जहां किसी भी व्यक्ति को राम की उपाधि से विभूषित किया जा सकता है। हां, एक परेशानी आती है और वह यह कि कोई व्यक्ति लक्ष्मण या भरत बनने को तैयार नहीं होगा, कोई नारी उर्मिला और सीता नहीं बनना चाहती।

मुझे लगता है कि मैंने अपने कल्पित सुख का 'प्लाट' जमीन से कुछ ऊपर चुन लिया है। आज जबकि जीवन के चारों ओर असंगतियां और असंतोष के विषधर लिपटे हैं, तब भी इतना दुःस्साहस अवश्य करूंगा कि इन दुःखों के बीच भी कहीं छोटा-सा सुख अवश्य मिले, चाहे उसकी मात्रा 'आटे में नमक' जितनी ही क्यों न हो। —भगवतीलाल व्यास

०००

पर्वत की ढाल से उतरती हुई नदी के किनारे हरीतिमाच्छादित ढाल में एक छोटी-सी झोंपड़ी हो, जिसमें अपने छोटे-से परिवार के साथ मैं रहूं। सबके स्वाध्याय के लिए वहां एक अच्छा-सा पुस्तकालय भी हो। —चंचला बल्लभ ओझा

०००

मैं एक ऐसे संसार का निर्माण चाहता हूं जहां मनुष्य जात-पांत, धर्म और राष्ट्रीयता से ऊपर उठा हुआ हो, जहां मनुष्य को रोटी के लिए अपनी आत्मा न बेचनी पड़ती हो, जहां मनुष्य को मनुष्य समझा जाता हो।.....बाकी किसी एक व्यक्ति का जीवन रोकर कटा या हंसकर, इससे कोई विशेष अंतर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतर नहीं पड़ता। —हमीदुल हसन

०००

मैं यद्यपि ६२ वसंतों की बहार देख चुका हूं, परंतु यदि मुझे कोई राष्ट्रीय-दायित्व अधिकार जैसा कुछ प्राप्त हो, तो मैं हिन्दी भाषा, भारतीय इतिहास, साहित्य और साहित्यकारों को वह सम्मान प्रदान करूं, जिसे संसार में सर्वोच्च सम्मान माना जा सकता है। —प्रेमसिंह चौहान 'दिव्य'

०००

मेरी कल्पना का सुख तो निरंतर कार्य-व्यस्तता में है। दुःख की असीम घातें मैं खुद ही सह लूं और सुख में सब मेरे साथ रहें। —साधुशरण सिंह

०००

मैं वस्तु-स्थिति से भिन्न किसी सुख की कल्पना नहीं करता। नित्य-प्रति जीविकोपार्जन के समय के अतिरिक्त बाकी समय में रात के १२ बजे तक स्वाध्यायादि में लीन रहूं .....और मेरा यह नित्य-कर्म सतत बना रहे। कभी मृत्यु भी आये, तो रात को १२ के बाद ही। —बद्री प्रसाद पंचोली

कलाकार का धर्म

मैं विश्वविख्यात मूर्तिकार श्री रामकिंकर बैज का प्रिय शिष्य रहा हूं। श्रीनिकेतन बोलपुर वाली सड़क पर 'इकानामिक्स डिपार्टमेंट' की स्थापना हो चुकी थी। किंकरजी से वहां एक मूर्ति बनाने को कहा गया। मूर्ति का कार्य प्रारंभ हुआ। दो-चार दिन तो मैंने उनके साथ बड़े उत्साह से कार्य किया। पर पांचवें दिन सीमेंट और रेत के कारण उंगलियां सुर्ख होकर फट गयीं। सारे शरीर में थकान व्याप्त हो गयी।

उस रात मुझे बुखार आ गया। रात-भर बड़ी बेचैनी रही। मूर्ति पर कार्य करने का उत्साह प्रायः मर गया। पर किंकरजी कब माननेवाले थे? पांच बजते ही खिड़की में आकर बोले—"कि रोमेश, तबियत भाली नाई?" मैं उन्हें देखकर सारी व्यथा भूल गया। कंधे पर झोला लटकाकर उनके साथ हो गया। हम भिश्ती की मूर्ति बना रहे थे। कई बार काम करते-करते भूख लग आती थी। तब वे पास की झोंपड़ियों से मूड़ी (चना-कुरमुरा) मंगवाते थे। दुकानदार ऊपर से मूड़ी में कच्चा सरसों का तेल, नमक और मिर्च भी डाल देता था।

एक रात काम के 'इंटरवल' में, हम मूड़ी खा रहे थे। किंकर दा ने अपने हिस्से की मूड़ी अपने बांस के टोप में ले रखी थी। वे खाते-खाते बड़े जोर से हंसे और चुप हो गये। फिर बोले—"नो शेल्टर, नो वाइफ एंड नो फूड!

"क्या किंकर दा?" मैंने पूछा।

उन्होंने समझाया—"कलाकार के लिए आवास, स्त्री और खाना नहीं है। उसके लिए कुछ है, तो वह है—सतत कठोर परिश्रम। जहां वह यह समझने लगता है कि मैं बहुत कुछ हूं, वहीं उसकी पतनावस्था प्रारंभ हो जाती है।"

उनकी इस प्रेरणा का मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव हुआ। —रमेश 'सत्यार्थी'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों में पढ़ने की रुचि कैसे पैदा करें

कुसुम अगस्त

रमेश स्वप्नों में खोया रहता है । रीता लापरवाह है । श्यामा शायद ही कभी किसी सौंपे गये कार्य को पूरा करती है । रेखा लिखती तो सही-सही है, किंतु उसकी लिखावट गंदी है; जबकि प्रमीला की लिखावट तो स्वच्छ और सुंदर है, पर लिखने में त्रुटियां होती हैं । राम पाठशाला जाने से कतराता है । मनोहर को अनुशासन में रखना समस्या है, तो गीता निगरानी के बावजूद एक समस्या ही है ।

यद्यपि इन विद्यार्थियों की समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं; किंतु उनकी कठिनाइयों का कारण एक ही है कि उनको पढ़ने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिलता ।

मानसिक रूप से अविकसित बालकों को छोड़कर (जिनकी संख्या मात्र ०.३ प्रतिशत है) अध्ययन के लिए उत्सुक बालक पाठशाला में अवश्य पढ़ेगा ।

बालक की सफलता में उसके पालक का सदा हाथ रहा है, क्योंकि अध्ययन के प्रति बालक की मनोवृत्ति घरेलू वातावरण में ही पनपती और बढ़ती है । पाठशाला में बालक की सफलता उसके प्राथमिक अध्यापक पर कदापि निर्भर नहीं रहती । वह तो मात्र अपने पास भेजे हुए छः वर्षीय बालक की शक्ति और विचारधारा को पोषित करता है और सही मार्गदर्शन करता है।

शैशव काल में ही आप बालक को भाषा के तीनों रूपों की पूरी जानकारी कराने में मदद कर सकते हैं । भाषा के ये तीन रूप हैं—पढ़ना, बोलना और सुनना। तीनों परस्पर संबद्ध हैं । यदि आपका बालक पाठशाला में उतना तीव्रबुद्धि नहीं है, जितना कि उसे होना चाहिये, तो आप स्वयं उसके संभाव्य सामर्थ्य के अनुसार उससे कार्य लेने के लिए उसे उत्साहित करें। उसकी परेशानियों को दूर करने में आपको आनंद प्राप्त होगा और संतोष भी।

पालने से लेकर महाविद्यालय के जीवन पर्यंत बालक के प्रोत्साहन के निमित्त कुछ लाभदायक बातें ये हो सकती हैं:

(१) बालक के साथ बातें करें और उसे गाकर सुनायें—यदि बालक बातें सुनता है, तो भाषा के प्रति उसकी रुचि बढ़ती है और उसकी भाषा शीघ्र ही परिष्कृत होती है । शैशवावस्था में वह किसी भी आत्मीय के स्वर से प्रसन्न होगा । सात मास तक का बच्चा शिशु-गीत (नर्सरी-राइम) सुनना आरंभ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करेगा। दिन-प्रतिदिन वह थोड़ी-
गति करेगा और तालियां बजाकर,
कर वह उस छंद के जाने-पहचाने
को दोहरायेगा।

आरंभ में गाने बहुत सहायक होते हैं। कपड़ों पर इस्तरी करते हुए, भोजन बनाते घर की सफाई करते हुए मां का गुनगुनाना उसके कार्यों को अधिक रुचिकर बना देता है।

स्पष्ट बोलिये और तुकांत शब्द बोलने का प्रयत्न कीजिये। बच्चों के आगे तुतलाइये मत; क्योंकि बालक अनुकरण करता है। यद्यपि शिशु स्पष्ट उच्चारण करने में असमर्थ होता है; किंतु वह लोगों को सुनकर ही बोलना सीखता है।

(२) शब्दों के खेलों का प्रयोग कीजिये और इस तरह बालक को बातें करने के लिए प्रोत्साहित कीजिये। शब्दों के खेल मनोरंजन और अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण विचार निर्धारित करते हैं। छोटी आयु के बालक के लिए कई खेल उपलब्ध हैं। कुछ प्रस्ताव इस प्रकार हैं:-

कुछ छोटे शिशुओं को लयबद्ध शब्द अच्छे लगते हैं, जैसे—म्याऊं-म्याऊं, कुहू-कुहू आदि ... ।

अध्ययन

कुछ प्रचलित गानों का दोहराया जाना, जैसे मामा दूर के, पुए पकायें दूध के।...

एक ही ध्वनि से उच्चारित होनेवाले शब्द बालकों को सदैव आनंदित करते हैं। बच्चे से पूछिये कि वह 'ब' से शुरू होनेवाले कितने शब्द जानता है, जैसे—बकरी, बत्तख बंदर इत्यादि।

एक बड़े शब्द में से कितने शब्द बनाये जा सकते हैं—परमात्मा-परम, मामा, रमा, माप... इत्यादि

तुक स्वयं एक क्रीड़ा है। सदैव प्रयत्नशील रहिये कि तुकांत शब्दों का प्रयोग अधिक हो, जैसे—आलू, भालू, कालू... ।

कोई तुकांत छंद अथवा छोटी-सी कहानी आरंभ कीजिये और बालक को पूरा करने दीजिये।

कहानी के पात्रों का निर्माण उनके भाषा-सामर्थ्य को बढ़ायेगा। बालक से दिन-भर की किसी घटना का वर्णन सुनना उनके लिए एक उत्प्रेरक कार्य है।

किसी वाहन विशेष में की हुई सैर बालक के लिए अपरिमित सुयोग प्रदान करती है। बच्चों से उनका अनुभव पूछिये, साथ ही सैर के समय रास्ते में मिले अन्य वाहनों, लोगों और जानवर आदि का विवरण भी पूछते जाइये। बच्चा सोत्साह और सविस्तर बतायेगा।

शब्दों के खेल निरीक्षण करने और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोलने की योग्यताओं को उभारने के लिए अक्षय भंडार हैं। अध्यापक अथवा कोई पुस्तकालयाध्यक्ष ऐसे कई शब्द-खेलों की पुस्तकें बता सकता है।

(३) आप अच्छे श्रोता बनिये। अध्ययन संबंधी क्रियाएं अधिकतर श्रवण-क्रियाएं ही हैं, जो बालक के सुनने योग्य होते ही प्रारंभ होती है। आप अपने बच्चे को एक अच्छा श्रोता तभी बना सकते हैं, जब आप स्वयं एक अच्छे श्रोता हों। जब आप बालक की छोटी-छोटी बातें भी ध्यान से सुनेंगे, तो वह भी एक अच्छा श्रोता होने की बात को मान्यता देगा। वह जान जायेगा कि आप उसकी बात पर ध्यान दे रहे हैं अथवा मात्र सुनने का प्रदर्शन कर रहे हैं।

(४) अपने घर में पुस्तकों को प्रमुखता दीजिये। घर में पर्याप्त पुस्तकें और उनके पढ़ने के लिए सुविधाएं जुटाइये। कई रुचिपूर्ण पुस्तकें बालक की पाठकवृत्ति को बढ़ायेंगी। अपने बालक पर यह प्रकट कीजिये कि आप खेल-खेल में, विश्राम और जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ रहे हैं, तो वह भी ऐसा ही करेगा।

(५) अपने बच्चे के साथ पुस्तकों की खोज कीजिये। आप बच्चों के लिए उपयोगी पुस्तकों को पाकर खुश होंगे और बच्चे स्वयं भी आनंदित होंगे। बच्चे के साहित्यिक विकास के लिए यही स्वर्णावसर है। क्या आपका बालक इस सुयोग को पा रहा है? ऐसी पुस्तकें सर्वत्र प्राप्य हैं। अब ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन भी काफी होने लगा है। जन्मदिन पर, किसी उत्सव पर भेंट के लिए ऐसी पुस्तकें ही दीजिये। वे में अध्ययनशीलता बढ़ाने में सर्वाधिक यक सिद्ध होंगी।

(६) विद्वत्ता का सम्मान करें विद्वानों की सिद्धियों का जिक्र करते सबसे बढ़कर यह आपके मानसिक विकास भी उपयोगी है। यदि आपके बालक का ऐसे परिवार में हुआ है, जहां पालक विद्व है और जहां विद्वत्ता का सम्मान होता तो वह भी अध्ययन के लिए उत्सुक रहे

(७) अध्ययन के महत्व और आन का दैनिक अनुभवों से संबंध बनाये रखिये क्योंकि दिन-रात के अनुभवों को समझ जीवन को समृद्ध बनाना है। चिड़ियाघ अथवा सर्कस जानवरों के बारे में कार्य जानकारी दे सकता है। यदि बच्चों 'राइट भाइयों' के बारे में कुछ ज्ञान है वायुयान की यात्रा उनके ज्ञान को वि सित करेगी।

प्रत्येक बालक यह जानकर आश्चर्य चकित होता है कि रेशम का कीड़ा अंडे निकलकर इल्ली, इल्ली से कोया कोये से तितली बनता है। विज्ञान का प्रारंभिक पाठ कैंसर की चिकित्सा की वि मताओं को समझाने में सहायक होगा बालक के मन में यह बात बैठ जायेगी अध्ययन महत्वपूर्ण एवं आनंददायक है।

(८) अपना कार्य पूरा करने की डालिये। किसी कार्य को पूर्ण करने की आपके बालक को उत्साहित करेगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालक की व्यक्तिगत आदतों का अनुकरण करते हैं; अतः कोई भी कार्य अधूरा छोड़ें।

बच्चे पर उत्तरदायित्व डालिये। उसे पूर्ण करने से प्राप्त संतोष का अनुभव होने दीजिये। अगर वह किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को नहीं कर पाता, तो उसकी असफलता से होनेवाली निराशा का अनुभव कराइये। अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा माता-पिता के निरीक्षणों से बालक अपने के महत्वपूर्ण कार्यों को निभाने के लिए प्रेरित हो सकता है—वह उस अनुभव को समझ लेगा, जो अध्ययन की आवश्यकता है।

(९) बच्चे की प्रगति को पहचानिये। बालक की प्रगति की जानकारी पर आंखों में चमक से अथवा मुस्कराकर अथवा कंधे थपथपाकर शाबाशी दीजिये। आपका यह किसी भौतिक पुरस्कार से कहीं अधिक असर होगा। कभी-कभी बालक पर किसी वस्तु के पुरस्कार में दिये जाने का असर ठीक वैसा ही होता है, जैसे घूंसखोरी होता है।

अध्ययनशीलता को प्रेरित करने के लिए ये पुरस्कार स्थायी महत्व नहीं रखते, क्योंकि वे बालक की प्रगति में बाधक सिद्ध होते हैं। जब आपका बालक यह समझ लेगा कि आप उसकी प्रगति से प्रसन्न हैं, इस बात से आश्वस्त हो जायेगा कि यह तो एक संतोषदायक अनुभव है न कि स्थायी पुरस्कार प्राप्त करना।

(१०) बालक को कभी हतोत्साह न कीजिये। भावुकता, सामाजिक व शारीरिक रुकावटें बालक के मानसिक विकास में बाधक होती हैं। बालक को उसकी इच्छा के विरुद्ध पाठशाला भेजना भावनात्मक रुकावट है। पारिवारिक कठिनाइयों को घर तक ही सीमित रखिये। अनुशासन अपनाने से पहले तर्क से काम लीजिये; पर यह न भूलिये कि शासन आपका कर्तव्य है। अक्सर किसी काम से उसे रोकने में आपको समझ से काम लेना चाहिये। जब वह यह अनुभव कर लेगा कि आप सही हैं, तो वह भी आपकी बात मान लेगा और अनुशासन पसंद करेगा।

वयस्कों की अपेक्षा बच्चे अधिक भावुक होते हैं। प्रत्येक बच्चे के लिए यह अपेक्षणीय है कि वह पहनावे और आचार-व्यवहार में अपने बुजुर्गों जैसा रहे।

अपने बालक को दूसरे बच्चों से परिचित होने दीजिये। बालक के बाल-मित्रों को घर पर आमंत्रित करना, उसके लज्जालु स्वभाव को मिटाकर उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करेगा। यदि वह झगड़ालू है, तो दूसरों के साथ मिल-जुलकर खेलना सिखलाइये।

प्रायः दस में से एक बालक को बोलने में अड़चन होती है। आप इसकी चिकित्सा कराइये। बच्चों की आंखों की जांच कराते रहिये। छः से दस प्रतिशत बालकों की श्रवण-शक्ति दोषपूर्ण होती है। यदा-कदा दांतों की और शारीरिक जांच भी कराते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहें। पर्याप्त निद्रा बच्चे के लिए नितांत आवश्यक है। असंतुलित आहार के कारण बालक का शरीर अविकसित रह जाता है। इस पर तब तक ध्यान नहीं दिया जाता, जब तक उससे हानि नहीं पहुंचती। कई बच्चे बिना नाश्ता किये पाठशाला चले जाते हैं। यह तो ऐसा ही हुआ, जैसे मोटर बिना गेसोलिन के चलायी जाये। ये भावनात्मक, सामाजिक एवं शारीरिक दोष, जो कि सुधारे जा सकते हैं, बालक के अध्ययन संबंधी विकास को रोकते हैं।

शनैः-शनैः बालक की सफलताएं और संतोष उसकी शक्ति और सामर्थ्य को वृद्धि गर करते रहेंगे। ज्ञान से ज्ञान बढ़ता है और जीवन समृद्ध बनता है। पालक होने के नाते यह आपके सामर्थ्य में है कि आप इन बालक के मन में ज्ञान प्राप्त करने की ऐसी अतृप्त तृष्णा उत्पन्न करें, जो कि सत में प्राप्त धन से भी कहीं अधिक मूल्यवान है।

रूस में बाल-अपराध

"बाल-अपराधी वास्तव में ऐसे साधारण बालक होते हैं, जिनका पालन-पोषण असाधारण रीति से किया जाता है।" इस तथ्य के आधार पर सोवियत समाजशास्त्रियों का मत है कि भौतिक सुरक्षा, संस्कृति तथा जन-चेतना के स्तर में उत्थान करके ही यह अपराध मिटाया जा सकता है। बाल-अपराधों के कारणों की जांच के लिए सोवियत संघ में पिछले कुछ वर्षों से अपराध-संबंधी अनेक अध्ययन किये जा रहे हैं।

बालकों द्वारा किये गये अपराधों में से बहुत अधिक ऐसे अपराध होते हैं, जो जरा भी खतरनाक नहीं होते। वे तो लगभग शरारत के समान होते हैं। ८० प्रतिशत से भी अधिक अपराध चोरी तथा हुल्लड़बाजी के होते हैं। अधिकांश चोरियां केवल मिठाई, सिगरेट, खेलने के साधनों, औजारों आदि की होती हैं।

इन तथ्यों से प्रकट होता है कि बाल-अपराधों के प्रेरक कारण उचित घरेलू जीवन एवं सामाजिक चेतना की कमी है। ये दोनों कमियां भूतकाल से चली आ रही हैं। बालकों के अपराधों के पीछे मुख्य कारण रहे हैं— परिवार में उचित पालन-पोषण न होना, खराब पारिवारिक स्थिति तथा समाज-विरोधी तत्वों द्वारा भड़काया जाना।

सोवियत संघ में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है कि माता-पिताओं को अध्यापन-संबंधी ज्ञान का प्रचार किया जाये। आवश्यकता पड़ने पर सार्वजनिक संस्थाएं उन माता-पिताओं के रुख में सुधार करने का प्रयत्न करती हैं, जो अपने बालकों का गलत ढंग से पालन-पोषण करते हैं। सोवियत संघ के फौजदारी कानूनों में ऐसी बातों का पूरा तौर से समावेश है, जिनसे ऐसे अपराधों की रोकथाम हो। यदि किसी किशोर का पहला अपराध ऐसा होता है, जिससे जनता को कोई बड़ा खतरा नहीं होता, तो उसे दंड देने के बजाय सुधारने के उपायों से काम लिया जाता है। बाल-अपराधियों के लिए फांसी तथा देश-निकाले की सजाएं भी वहां मना हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नींद एक, स्वप्न अनेक

लारेंस लेसिंग

आंखें बंद हो जाती हैं; शरीर का धीरे-धीरे कम होता तापमान तेजी से ...ता है; हाथ-पांव तनाव छोड़ आराम की ...स्था में आ जाते हैं; रक्तचाप कम हो ...ता है, हथेलियां एवं शरीर के अन्य ...छ हिस्से नम हो जाते हैं; मस्तिष्क ...एवं कल्पना-लोक के बीच विचरण ...लगता है—इसे 'हिप्नागोगिक' की ...स्था कहते हैं; और इन सबके संयोग से ...अवस्था पैदा होती है, जिसे नींद कहते हैं। ...क जमाने से नींद मनुष्य के लिए अन-...हेली बनी हुई है। इलेक्ट्रो-इनकेफैलो-...(जो कि मस्तिष्क में पैदा होनेवाली ...तीय तरंग को गिनता है) एवं अन्य कई ...के आविष्कार के जरिये वैज्ञानिकों ने ...के प्रति अपनी जिज्ञासा पूरी करने में ...कुछ सफलता प्राप्त की है।

...जिस समय मनुष्य सोता है, उस वक्त ...त के पहले भाग में कुल मिलाकर दो ...अथवा उससे अधिक समय तक भी ...नींद आ सकती है। नींद की अवस्था ...नहीं होती कि एक बार सोये, तो फिर ...ही जगे; बल्कि रात्रि में कई बार जाग-...गहरी निद्रा के बीच होकर गुजरना ...है। यह मान्यता गलत है कि मध्य-रात्रि के पूर्व बड़ी गहरी नींद आती है। असलियत यह है कि जब भी मनुष्य सोयेगा, क्रमानुसार गहरी नींद आयेगी ही। नींद के मामले में सबसे सफल वैज्ञानिक क्लीटमन ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि रात्रि के उतरार्द्ध की नींद पूर्वार्ध की नींद से किसी भी प्रकार कम महत्व नहीं रखती।

एक मजे की बात और है। मनुष्य के सो जाने के बाद भी उसकी आंखों की पुतलियां जागृत अवस्था की तरह नाचती रहती हैं। क्लीटमन के सहायक यूगेन एसेरिन्स्की ने इसका पता लगाया और फिर वैज्ञानिक शोध से यह ज्ञात हुआ कि जब मनुष्य निद्रावस्था में स्वप्न देखता होता है, तो स्वप्न की तीव्रता के अनुपात में पुतलियां भी घूमती रहती हैं। और एक रात में पांच-पांच बार एवं घंटों भी ये पुतलियां घूमती पायी गयी हैं।

क्लीटमन का इस दिशा में सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वप्न देखना भी सांस लेने की तरह जागरण - निद्रा क्रम की एक स्वाभाविक क्रिया है, और जरूरी नहीं कि इसकी कोई शारीरिक क्रिया हो, और यदि इस कार्य

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में बाधा पहुंचती है, तो मनुष्य अस्वाभाविक कार्य करने लगता है। अतः पहले जो लोग यह सोचते थे कि बहुत अधिक स्वप्न देखना अथवा लंबे समय तक स्वप्न देखना अस्वाभाविक, यहां तक कि पागलपन है, वे अब इन वैज्ञानिक खोजों से आश्वस्त हो सुख की नींद सोकर लंबे स्वप्न देख सकते हैं। प्रयोग से तो यह पाया गया कि यदि कई रात लोगों को स्वप्न नहीं देखने दिया जाये, तो वे अस्वाभाविक कार्य करने लगते हैं। जैसे एक बार एक व्यक्ति को जब कई रात स्वप्न नहीं देखने दिया गया, तो उसने छोटी-मोटी चीजें चुरानी शुरू कर दीं, जिससे कि उसे सख्त नफरत थी और फिर ज्यों ही उसे सपने के आगोश में छोड़ दिया गया, उसकी यह अस्वाभाविक क्रिया बंद हो गयी।

स्वप्न देखते वक्त अल्फा तरंग चलने लगती है, जो कि जागृत अवस्था में ही चलती है और इससे यह प्रकट होता है कि स्वप्न देखने के वक्त मनुष्य पूर्ण निद्रा में भले ही न हो, अर्ध-जागृत अवस्था में रहता है। प्रायः यह पाया गया है कि स्वप्न समाप्त होते ही आंखें खुल जाती हैं। डी सेंट ने तो यहां तक कहा है—"जहां तक हमें अपने मस्तिष्क के विषय में जानकारी है, स्वप्न देखने की अवस्था जागृत अवस्था के समान ही है।" सबसे अचरज की बात तो यह है कि जो अल्फा तरंग सिर्फ जागृत-अवस्था में ही पायी जाती है, वह निद्रावस्था में भी समय-समय पर काम करती पायी गयी है। मध्यम और गहरी नींद में यह कम होकर गायब हो जाती है। जब मस्तिष्क (मेरीब्रेन) बहुत सक्रिय हो जाता है, तब भी इसका कहीं पता नहीं रहता; परंतु बड़ा सपना देखते ही यह फिर प्रकट हो जाती है।

पिछले दशक में मुख्यतः नार्थ-वेस्टर्न विश्वविद्यालय के स्नायुतंत्र-शास्त्रियों ने इस बात का पता लगाया कि इस चेतन अवस्था का नियंत्रण केंद्र कौन-सा है। उन्होंने कुत्तों पर कौशलपूर्ण शल्य-क्रिया कर यह ज्ञात किया कि वह एक भूरा पदार्थ है, जो कि जाली-तने की तरह रीढ़ से मस्तिष्क तक फैला हुआ है। यह पदार्थ रीढ़ से उठनेवाले नियंत्रक आवेगों के बीच नियंत्रण जाल का काम करता है। जागने की अवस्था में यह पदार्थ कार्टेक्सल में आने कुछ संवेदन-आवेग बिखेरे रहता है। नींद में इस जालीनुमा पदार्थ का निचला हिस्सा आनेवाले समाचार की एवं कुछ उतरते हुए आवेगों की भी राह बंद कर देता है और कारटेक्स को अपनी गतिशीलता कम करने आराम करने का अवसर प्रदान करता है। परंतु कुछ स्नायु संकटकालीन समाचार प्राप्त करने के लिए सजग रहते हैं। यह संपूर्ण यंत्र टेलिविजन की तरह काम करता है; परंतु इसका बटन कभी बंद नहीं होता।

जैसा कि क्लीटमन ने सर्वप्रथम सुझाव दिया था, यह नियमित व नियंत्रित होना करण खोज और विद्या की देन है। जानवर स्वभावतया अपना दो-तिहाई जीवन सोकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं एवं शीत-निद्रावाले जानवर तो
से भी अधिक। वे भूख से ही जगते हैं भले
वह पेट की हो अथवा वासना की। मनुष्य
यह गुण नवजात शिशुओं में प्रथम तीन
महीने तक पाया जाता है – वे भूख लगती
तभी जगते हैं। उसके बाद फिर सब
सोने लगता है और किशोरावस्था तक
पहुंचते-पहुंचते वह दो-तिहाई जागता है
और एक-तिहाई सोता है। क्लीटमन ने इसे
'लाभपूर्ण जागरण' कहा है।

सामान्यतया लोग ६ से ९ घंटे तक सोते
हैं, परंतु कुछ लोग उससे कम या अधिक
सोते हैं। औरतें पुरुषों की तुलना में
अधिक समय तक सोती हैं। बुद्धिजीवी लोग
अन्य व्यक्तियों से युवावस्था में अधिक
और वृद्धावस्था में कम सोते हैं। शरीर
गतिमान सक्रिय अवस्था में अधिक और
निष्क्रिय अवस्था में कम होता है।

फिर नींद ऐसी चीज है कि कहीं भी आ
जाती है। यदि आप मोटे गद्दे पर ही सोने
की आदी हैं और कई रात से सोये नहीं, तो
फर्श पर भी नींद आ जायेगी। यों सही बात
यह है कि आदत डालने पर मनुष्य कहीं
भी सो सकता है। जापानी लोग प्रायः जमीन
पर ही सोते हैं। बिछौने पर जाने के पूर्व
कुछ खाना, पीना अथवा धूम्रपान करना
क्लीटमन ने वांछनीय नहीं पाया, क्योंकि
इससे उत्तेजना पैदा होती है। परंतु कुछ
वस्तुओं के प्रति उन्होंने संदेह भी उठाया
है। उनमें मुख्य संदेह था सोने के वक्त
दूध पीना। प्रयोग से उन्होंने यह
पाया कि काफी पीने से सामान्यतया नींद
नहीं आती।

परंतु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें स्वाभाविक नींद नहीं आती। आज के जमाने में लोग शारीरिक मेहनत करने से जितना पीछे हटते जाते हैं, उनसे नींद भी उतनी ही दूर भागती जाती है। न शरीर थकता है, न जल्दी नींद आती है। बिजली के आ जाने से भी लोगों में कुछ अधिक जागने की आदत पड़ गयी है। फिर, जिस तीव्र गति से यात्रा और संचार की वृद्धि होती जा रही है, मानवीय प्रणाली उस तीव्रता से अपने को उसके अनुरूप बना नहीं पाती।

नींद नहीं आने का सबसे बड़ा कारण है उसका भय। मनुष्य उस संबंध में जितनी अधिक चिंता करता है, नींद की लाइन खराब होती जाती है। इससे शरीर की बेचैनी बढ़ जाती है और तनाव भी, जिससे कि मनुष्य छुटकारा पाना चाहता है। परंतु यह भय निराधार है। मनुष्य कई दिन तक जगा रहा है और उसे कोई नुक्सान नहीं पहुंचा है, क्योंकि समय मिलते ही नींद ने अपनी कमी पूरी कर ली है। तथापि नींद न आना एक अभिशाप और बीमारी बन सकते हैं।

नींद के जीव-रसायन पहलुओं की अभी तक कोई खास जानकारी नहीं मिल पायी है। यों नींद की कुछ गोलियां रसायनज्ञों ने जरूर तैयार कर ली हैं, जो कि मनुष्य को बेहोशी के आलम में रखती है; परंतु इस संबंध में और खोज अभी जारी है, क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये गोलियां जानलेवा भी बन जाती हैं।

अनिद्रा की समस्या का एक हल यह भी हो सकता है कि मनुष्य के सोने की पद्धति ही बदल दी जाये। प्रयोग यह बताते हैं कि कृत्रिम तौर पर ऐसा किया जा सकता है। इस सदी के चौथे दशक में क्लीटमन ने अपने चंद विद्यार्थियों के सोने की आदत में परिवर्तन कर प्रयोग किया—एक महीने तक और, वह भी उन्हें प्रयोगशाला के अंदर रखकर, जिससे कि चौबीस घंटे उन पर नजर रखी जा सके। साथ ही उन्हें नियमित कार्य भी करने दिया गया। सबसे पहले बारह घंटे का एक दिन माना गया और विद्यार्थियों को ४ बजे सुबह और ४ बजे शाम को तीन-तीन घंटे तक सोने दिया गया। परंतु शारीरिक तापमान सामान्य नहीं रह सका। फिर एक माह तक अड़तालीस घंटे का दिन माना गया, जिसमें एक रात छोड़कर सिर्फ आठ से नौ घंटे सोने दिया जाता था; परंतु उसमें तो और भी कम सफलता मिली। फिर चौबीस घंटे का कार्य दिन, और नींद उन्हें दबोचती रही। अंततः जब सामान्य क्रम के निकट इक्कीस और अठाईस घंटे का दिन माना गया, तो एक विद्यार्थी किसी रूप में अपने को अनुरूप नहीं बना सका, जबकि दूसरा सहज ही दोनों के ही अनुरूप बन गया। उसे तभी थोड़ी कठिनाई महसूस हुई, जबकि दिन की रोशनी में सोने की जरूरत पड़ी।

इस प्रयोग के फलस्वरूप क्लीटमन ने १९३८ में एक गुफा के अंदर अन्य प्रयोग किया, जहां न रोशनी थी, न शोर और न बाहरी तापमान में ही कोई परिवर्तन होता था। वहां विद्यार्थियों ने इस ईस घंटे के दिन को सहज ही अपना लिया परंतु तैंतालीस वर्षीय क्लीटमन स्वयं उन अनुरूप नहीं बन सके। उनके विद्यार्थी उन्हें घंटा जागते हैं और ९ घंटे सोते; पर उनकी शारीरिक क्रिया २४ घंटे के ही चक्र से होती; परंतु उस प्रयोग से इतना अव ज्ञात हुआ कि उम्र और आदत जल्दी प्रणाली अपनाने नहीं देती; परंतु शारीरिक तापमान आराम के वक्त की विधि में परिवर्तन कर बदला जा सक है। बाद में आयन ओसवाल्ड ने यह भी कर दिया कि अड़तालीस घंटे के दिन भी लोग सहज ढंग से रह सकते हैं और अनिद्रावाले लोगों के लिए अधिक उपयो है, जिनकी रातें बड़ी बेचैनी से गुजरती अधिक समय तक लगातार जागते रहने सजगता और कार्यपटुता बढ़ जाती है, जि शरीर के स्नायु व मांसल हिस्से पूर्ण आरा खोजते हैं और उसी कारण संभवतः अ नींद आती है।

आज विज्ञान जिस तीव्र गति से प्र कर रहा है, उसमें यह भी संभव है कि रिक्ष-यात्रियों को सप्ताह में सिर्फ एक ब ही लंबे समय तक सोने का अवसर मिले साथ ही स्थल, जल और वायु सेना में र रत सैनिक भी अधिक समय जाग इसके लिए वैज्ञानिकों को शीघ्र ही श्यक अनुसंधान करना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप कितने प्रसन्न हैं

आशालता शर्मा

आधुनिक युग को बहुत-से नाम दिये गये हैं। लेकिन कोई मुझसे पूछे, तो मैं कहूंगी कि यह आंकड़ा-युग है। हर बात को यहां आकड़ों से ही नापा जाता है। खेती कितनी उपज हुई है और आगे कितनी हो सकती है, आज कितनी जनसंख्या है, सौ साल बाद कितनी होगी, यहां तक कि हम भूखे हैं या हमारा पेट भरा हुआ है—ये सब बातें एक कमरे में बैठे-बैठे ही आंकड़ा-शास्त्री ज्ञात कर लेते हैं। और अभी कुछ दिन हुए शिकागो यूनिवर्सिटी के नेशनल ओपीनियन रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिक लोगों की भावनाएं नापने के लिए भी निकल पड़े थे। उनके द्वारा निकाले गये निष्कर्ष कहीं-कहीं बड़े अजीब हैं।

निराशा या दुःख का अभाव ही प्रसन्नता नहीं है, क्योंकि अत्यंत कुंठाग्रस्त व्यक्तियों को भी बहुत-बहुत खुश पाया गया है। कुछ मनोरंजक बातें भी आदमी को जिंदगी-भर खुश रखने के लिए काफी हैं। ये विचार हैं डा० नार्मन एम० ब्रेडबर्न के, जिनके निर्देशन में यह सर्वेक्षण आयोजित किया गया था। जो लोग विवाहित हैं, वे आमतौर पर यही समझते हैं कि अविवाहित रहने में बड़ा आनंद है। लड़के तो सोचते हैं कि बस कुंवारे रहो और मौज उड़ाओ। न बीवी-बच्चों का बोझ, न परिवार के झंझट। जिंदगी होटलों में खाते-पीते गुजार दो, तो आटे-दाल का भाव कभी मालूम ही न होगा।

दूसरी ओर किशोरियां हैं, जो विवाह का मतलब समझती हैं, जिंदगी को अंगीठी में झोंक देना। वे किसी का गुलाम बनकर रहना नहीं चाहतीं। मेरी एक परिचिता भी कुछ ऐसे ही घमंड में आकर विवाह न करने का व्रत ले बैठीं। जवानी के जोश में आकर अपनी इच्छाओं का दमन करती रहीं। आज जब उनकी उम्र दांपत्य की देहरी में प्रवेश करने लायक नहीं रही है, तब उन्हें अपनी भूल पर पछतावा होता है। एक अजीब-सा सूनापन उनके व्यक्तित्व पर आच्छादित रहता है। मैंने उन्हें कभी खिलखिलाकर हंसते नहीं देखा। यही हाल अविवाहित युवकों का भी है। तीस को पार करते ही जीवन-साथी की कमी उन्हें बुरी तरह खलने लगती है। सुबह उठते ही स्टोव जलाना, चाय तैयार करना, नहीं तो फिर चारपाई छोड़ते ही होटलों की शरण में भागना! कितने ही बड़े कलाकार और समाजसेवी या कुछ भी क्यों न हों, कुंवारे लोग इस खानाबदोश जिंदगी के बोझ से बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्दी ऊब जाते हैं।

बल्कि डा० ब्रेडबर्न ने तो यह खोज की है कि स्त्री की अपेक्षा पुरुष के लिए कुंवारा रहना कहीं ज्यादा कष्टप्रद है। अपने जाने-पहचाने लोगों पर नजर घुमाती हूं, तो मुझे डा०ब्रेडबर्न की बात सोलह आने सच लगती है। मेरी एक कुमारी सहेली तो बड़े मजे में है और उसे कभी महसूस ही नहीं होता कि वह अकेली है। सबसे हिलमिलकर हंस बोलना उसका स्वभाव ही बन गया है। वैसे चरित्र की बड़ी कट्टर है। दूसरी ओर कुंवर (कुंवारे) साहब हैं, जिन्हें सर्दियां और बरसात तो ऐसे काटने दौड़ते हैं कि बेचारे जी मसोसकर रह जाते हैं। पिछले दिनों उनकी आंख में कुछ तकलीफ थी। दफ्तर आते तो दवा की शीशी साथ लेकर आते। घर पर कोई भी न था, जो उनकी आंखों में दवा डाल सकता। बहरहाल उनसे अब एक पल भी नहीं कटता।

कुंवारों के दुःखी रहने का मतलब यह नहीं है कि विवाह कर लेना ही सुखी होने का नुस्खा हो गया। ज्यादातर तो बस जैसे-तैसे निभ जाना ही है। नब्बे प्रतिशत दंपति एक दूसरे से परेशान ही देखे गये हैं। लेकिन यह परेशानी शादी के दस साल बाद तक ज्यादा पायी गयी है, उसके बाद शायद दोनों एक दूसरे को समझने की कोशिश करने लगते हैं और समन्वय बना रहता है। जिनका विवाह हुए बीस वर्ष हो चुके हैं, वे दंपति पर्याप्त प्रसन्न पाये गये हैं। हां, बच्चों से परेशानी बढ़ती ही है। यह दूसरी बात है कि बच्चों का बिलकुल न होना, उनके होने से ज्यादा महसूस होता है।

हालांकि आम तौर पर देखा तो यही गया है कि पैसे की प्यास कभी मिटती नहीं है। फिर भी यह एक तीखा सच है कि पैसा हमारी अधिकांश महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर देता है, और गरीबी के अभिशाप में ग्रस्त रहना भी कोई कम प्रसन्नता की बात नहीं है। वैसे युवावस्था में आदमी को आमदनी की कमी उतनी नहीं अखरती, जितनी अधेड़ होने पर। इसकी वजह बिलकुल साफ है। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, जिम्मेदारियां भी बढ़ती जाती हैं, यानी पैसे की जरूरत फैलती जाती है। फिर आमदनी का कम होना, सारी खुशी छीन बैठे, तो क्या आश्चर्य ?

शिक्षित अधिक प्रसन्न हैं या अशिक्षित ? डा० ब्रेडबर्न के अनुसार यदि आमदनी एक जैसी हो, तो अशिक्षित व्यक्ति अधिक सुख का अनुभव करता है। क्योंकि वह समझता है कि उसे जो कुछ मिल रहा है, वह उसकी औकात से ज्यादा है। जबकि शिक्षित महोदय यह सोच-सोचकर ही कुढ़ते रहते हैं कि जितना हम कमाते हैं, उतना तो पान बेचनेवाला भी कमा लेता है, बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा।

काम सुख-प्राप्ति का सबसे सस्ता और सुलभ साधन है। बस, हाथ पैर हिलाने भर की जरूरत है कि आनंद-ही-आनंद लूटिये। कामगार लोगों में केवल १२ प्रतिशत ही ऐसे पाये गये, जो प्रसन्न नहीं थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेकार व्यक्तियों में से ३३ प्रतिशत अपनी नौकरी से बेजार थे। जो लोग स्वस्थ होते हुए भी कार्यमुक्त कर दिये गये हैं, उनको खाली बैठे रहना बड़ा बुरा लगता है। काम करनेवालों में भी सबसे ज्यादा सुखी लोग थे, जो यह समझते थे कि उन्हें ऐसा काम मिला हुआ है, जो उनकी सभी क्षमताओं का पूरा-पूरा सदुपयोग करता है और जिसकी प्रतिभा में घुन नहीं लग रहा। जो कामगृहिणी हैं, वह स्त्री नौकरी करनेवाली स्त्रियों से कम खुश नहीं रहती। एकांतप्रिय व्यक्ति उन व्यक्तियों की अपेक्षा दुःखी पाये गये, जो घूमने-फिरने, मिलने-जुलने और गप्पें हांकने में मशगूल रहते हैं।

तब क्या चिंतामुक्त व्यक्ति सुखी है? डा० ब्रेडबर्न का कहना है कि इस बारे में दो मत हैं। एक मत के अनुसार तो वही व्यक्ति सुखी है, जो चिंतामुक्त है। परंतु अब मनोवैज्ञानिकों के एक वर्ग में यह धारणा तूल पकड़ती जा रही है कि जो चिंतामुक्त है, वह व्यक्ति अवश्य ही विकारग्रस्त है, क्योंकि वह अपनी मुसीबतों को अदेखा कर देता है, परेशानियों को नजरंदाज कर देता है—यानी लापरवाह है। इस वर्ग की दृष्टि में वही व्यक्ति सुखी है, जो चिंतित है, लेकिन जिसकी चिंताएं स्वस्थ हैं, अस्वस्थ नहीं। जिसे हर समय किसी दुःखी का दुःख बंटाने की चिंता खाये रहती हो, जिसको संसार से निर्धनता, भूख और पाशविकता के समूल नाश की चिंता सताती रहती हो, उस व्यक्ति से अधिक सुखी भला कौन होगा। तो चिंता अवश्य कीजिये। किंतु यह नहीं कि पड़ोसी का धन आपकी तिजोरी में कैसे पहुंच जाये, या कि अपने प्रतिद्वंद्वी को हटाकर किस तरह आप उसकी कुर्सी हथिया लें, बल्कि यह कि किस तरह आप दूसरों के काम आ सकें। और सच तो यह कि किसी के काम आ सकने से बड़ा सुख कोई नहीं है। देने का सुख, उत्सर्ग का सुख जिसने भोगा है, वही मेरी बात को समझ सकता है।

डा० ब्रेडबर्न कहते हैं कि गरीब लोग दुःखी रहते हैं। पता नहीं; अमरीका में रहते होंगे। मैं तो रोज शाम को देखती हूं, ऊंची-ऊंची आलीशान इमारतें बनाकर लौटते हुए मजदूर आदमी और औरतें! उनके चेहरों पर कितना संतोष होता है; दिन-भर की कड़ी मेहनत की थकान की एक हलकी-सी झलक भी मुझे उनकी चाल-ढाल में नहीं मिली। चुहलबाजियां करते हुए चले जा रहे हैं। कदम इतनी जल्दी-जल्दी उठ रहे हैं, जैसे किसी उत्सव में शामिल होने जा रहे हों। कौन कह सकता है कि ये सुखी नहीं। दूसरी ओर हैं दिन-भर कुर्सी पर पड़े-पड़े ऊंघने के बाद, सीढ़ियां उतरने की तकलीफ भी न फरमाकर, लिफ्ट से आनेवाले बड़े-बड़े अफसर! मुंह लटकाये चल रहे हैं, जैसे घर नहीं लौट रहे हों, किसी जनाजे में शरीक हो रहे हैं। तो खुशी किसी की मुहताज नहीं—न पैसे की, न कुर्सी की, न ताज की। वह तो कभी भी, कहीं भी, किसी के भी पास, किसी भी परि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थति में पायी जा सकती है।

वैसे डा० ब्रेडबर्न के आंकड़े बड़े चमत्कृत करनेवाले हैं। इलिनाय्स के चार छोटे-छोटे नगरों में यह प्रसन्नता-सर्वेक्षण किया गया था। दो नगर तो आर्थिक दृष्टि से बड़े पिछड़े हुए थे; तीसरा विकास के मार्ग पर अग्रसर था और चौथा पर्याप्त समृद्ध था। इनकी आबादी ३,०८५ से लेकर ९,०२७ तक थी। प्रत्येक नगर से ४५० घर छांटे गये। २५ से ४९ वर्ष की आयु तक के ३९३ व्यक्तियों से इंटरव्यू लिये गये। १,६१३ स्त्री-पुरुषों में कुछ छपी हुई प्रश्नावलियां बांटी गयीं और उनके उत्तर प्राप्त किये गये। कुल २,००६ व्यक्तियों में से २४ प्रतिशत ने बताया कि वे बहुत खुश हैं; ५९ प्रतिशत का जवाब था—क्यों नहीं; हम लोग खुश हैं। जबकि १७ प्रतिशत ऐसे थे जो कोई खास खुश नहीं थे। अब आप ही बताइये, आप इन आंकड़ों से क्या समझे?

खैरियत है कि इन संपूर्ण सर्वेक्षण के संचालक डा० ब्रेडबर्न भी अंत में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके। उन्हीं के शब्दों में—"कोई व्यक्ति प्रतिकूल दांपत्य जीवन बिता सकता है, और तमाम दुनिया की आफतों का शिकार हो सकता है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह मुस्कराना भूल जाये, खुशियां गंवा बैठे; समस्त विपदाओं के बावजूद मनुष्य अपनी प्रसन्नता बरकरार रख सकता है।" हां, इन वैज्ञानिकों की एक बात मार्के की है कि सुख-दुःख तो सबके पास हैं, असफलता, चिंता, निराशा आदि के कारण दुःखपरक अनुभूतियों की मात्रा बढ़ जाती है, तो सुख दब जाता है। कुछ लोग हैं, जो यह संतुलन बनाये रखते हैं।

यहीं गीता याद आ जाती है—"सुखदुखे समे कृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ।" अच्छा हो कि आधुनिक गणनाजीवी वैज्ञानिक जीवन की मूलभूत प्रवृत्तियों की चीर-फाड़ करते समय दार्शनिकों से भी सलाह ले लिया करें। सुख-दुःख तो परिस्थिति-सापेक्ष है। कल जिस बात से मैं खुश थी, आज वही मेरे दुःख का कारण बन सकती है। बात वही थी, बात नहीं बदली, फिर अनुभूति क्यों बदली? क्योंकि दृष्टिकोण बदल गया। तो सुख कोई बाजार में बिकनेवाली चीज नहीं है। मानो तो सुख, न मानो तो दुःख। मन के ही भीतर है सब कुछ। अंतर में डुबकी लगाइये और सुख और प्रसन्नता के मोती बटोर लाइये।

कोई भी कभी तिरस्कृत न होने का दावा नहीं कर सकता। —बाबे नार्गीज

मनुष्य स्वेच्छा से उसी बात पर विश्वास करता है, जिस पर वह विश्वास करना चाहता है। —सीजर

सहज ही विश्वास उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति धोखेबाज होता है —ब्रेकन

अगर प्रसन्न रहना चाहते हो, तो प्रसन्न करना सीखो। —ग्रामर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार का शौकीन बाज

रावर्ट बी० बेरी

मनुष्य के मनोविनोद, खेल-कूद, आखेट आदि क्रीड़ाओं में बाज पालने का शौक बहुत पुराना है। चीन में यह चार हजार वर्ष पहले शुरू हुआ था। जब तक बंदूक का आविष्कार नहीं हुआ था, लोग प्रायः बाजों के द्वारा ही चिड़ियों का शिकार करते थे। जिस प्रकार मनुष्य ने घोड़े और शिकारी कुत्ते पकड़कर पाले और उनके जरिये शिकार खेलने का काम लिया, उसी प्रकार बाज आदि चिड़ियों से भी शिकार करने का काम लिया जाता रहा। कभी यह विद्या सर्वत्र प्रचलित थी, समय का फेर है कि अब इसे जाननेवाले लाखों में इक्के-दुक्के ही मिलते हैं।

मैं बाज-विद्या का बचपन से शौकीन हूं—लगभग बीस साल से इसमें लगा हुआ हूं। जब मैं १० वर्ष का था, अपने घर के आस-पास खेतों में तरह-तरह के कीड़े-मकोड़ों और छोटे-छोटे प्राणियों की तलाश किया करता था। एक दिन मुझे शिकारी बाज का नन्हा बच्चा नजर आया। वह अपने घोंसले से गिर पड़ा था। मैं उसे घर ले आया, उसका नाम मैंने हेनरी रखा। उसने हमारे रसोई-घर में अपना घर कर लिया और वह हमारे यहां पलने लगा।

मैंने कभी एक आदमी को सिखाया हुआ बाज उड़ाते देखा था—वह मुझे अक्सर याद आता। मैं किसी तरह उससे मिलना चाहता था। अपने माता-पिता के भी मैं पीछे पड़ा रहता था कि वे मुझे किसी ऐसे आदमी से मिला दें, जिसे बाज उड़ाने का हुनर अच्छी तरह आता हो।

अंत में वह दिन आया। मेरा परिचय जेम्स राइस से कराया गया। वे अमरीका का प्रसिद्ध पुराणपंथी हैं और जंगली बाजों को साधने की विद्या के अधिकारी विद्वान। बस, यह राइस और हेनरी का सहयोग ही था कि मैंने बाजों की दुनिया में कदम रखा।

और मेरा पहला साहसिक प्रयोग था छोटी जाति के बाज उड़ाने का। राइस ने इस बात पर जोर दिया था कि पहले मैं आम और छोटी जाति की बाज-चिड़ियां उड़ाने में निपुणता प्राप्त कर लूं। इसके बाद असली शिकारी बाजों पर आऊं। जब मैं १४ वर्ष का था, तब राइस ने मुझे पहला शिकारी बाज उड़ाने को दिया। अब तक मैंने छोटे बाज उड़ाये थे और मुझे आत्मविश्वास हो गया था कि अब मैं राइस की तरह बड़े बाजों

१९६१ हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को उड़ाने की कला दिखा सकता हूं। किंतु मैं गलत निकला।

मुझे आज भी याद है कि जब मैंने पहला बड़ा बाज उड़ाया, तो वह वापस लौटा ही नहीं। क्षितिज पर छोटा...और छोटा होता हुआ, अंततः वह बिलकुल अदृश्य हो गया। मैं हाथ मलता रह गया। बड़ी निराशा हुई।

राइस ने दूसरा बाज अगले साल दिया, मैं उसे उड़ाने में भी असफल रहा। इसके बाद मुझे फिर एक बाज दिया गया। जब मैं १८ वर्ष का हुआ, तो इस योग्य हो गया था कि असली शिकारी बाजों को पाल-पोसकर स्वयं साध सकूं। कई माह लगातार मैंने इसका अभ्यास किया।

इन शिकारी बाजों में नर बाज अंग्रेजी में 'टीअर्सल' कहलाता है और मादा 'फाल्कन'। मादा बड़ी होती है और नर से शक्तिशाली भी। यही कारण है कि बाज-विद्या में फाल्कन को पालने-साधने का महत्व अधिक है और इस हुनर को मादा के नाम पर 'फाल्कनरी' कहा जाता है।

ये शिकारी चिड़ियां कई बातों में माहिर होती हैं। प्रकृति ने भी इन्हें कई विशेषताएं प्रदान की हैं। शिकार का पीछा करने के लिए इनके पास बड़े मजबूत पर होते हैं; साथ ही तेज नाखूनवाले पंजे होते हैं, जिनसे ये अपना शिकार पकड़ और जकड़कर रख सकें। इनके अतिरिक्त अंकुशदार चोंच होती है, जिससे ये अपने शिकार का मांस चीर-फाड़ सकें। देखने की शक्ति आदमी से आठ गुनी ज्यादा होती है।

छोटे परोंवाले बाज जो 'कूपर के बाज' कहलाते हैं, छिपे रहकर अपने देखकर शिकार पर अचानक हमला करते हैं। इनके कुछ बड़े बाज, जो 'हाक' कहलाते हैं, खेतों और जंगलों के ऊपर उड़ते रहते हैं और चूहे, सांप तथा थल और जलचर जीवों का शिकार कर खाते हैं।

असली बाज, जिन्हें फाल्कन कहा जाता है, अपना शिकार खुली-चौड़ी जगह में उड़ते हुए करते हैं। इन्हें अपनी ताकत और तेज उड़ान पर भरोसा होता है। इनके उड़ने की रफ्तार ६० से ८० मील प्रतिघंटे होती है। जब ये अपने शिकार पर झपट्टा मारते हैं, तो उस वक्त उड़ने की गति २०० मील प्रति घंटे तक तेज हो जाती है।

हाक नामक बाजों को साधना आसान है। इनमें से अधिकांश को साधा जा सकता है; पर इनमें से विरले ही अच्छे शिकारी निकलते हैं। 'कूपर के बाज' खतरनाक होते हैं। उनके संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता कि वे कब क्या कर बैठेंगे। वे अपने शिक्षक को भी नहीं बख्शते। एक बार मैं ऐसे ही एक बाज को उड़ना सिखा रहा था। वह ३० मील की रफ्तार से उड़कर मेरी तरफ लौट रहा था। रफ्तार तो सामान्य थी; किंतु बजाय मेरे हाथ पर बैठने के, वह मेरे चेहरे से आ टकराया। मेरी आंख तो बाल-बाल बची; पर पास में एक ऐसा घाव हो गया, जिसमें १२ टांके लगे।

लंबी पूंछवाले बाज अपेक्षाकृत सस्ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हैं। वे मनुष्य के साथ दुष्टता करने पर कभी-कभी ही उतारू होते हैं। किंतु उड़ने और घूमने-फिरने की उद्दाम प्रकृति होने के कारण उन्हें सिखाकर और पालकर रखना बड़ा कठिन है।

बाजों को फांसना, पकड़ना और उन्हें शिक्षा देना बड़ा ही आनंददायी और चुनौती देनेवाला काम है। इसके लिए उनके जंगली जीवन की पूरी जानकारी जरूरी होती है। सच तो यह है कि बाज पालनेवाला व्यक्ति सबसे पहले प्रकृतिप्रेमी होता है, बाज-विद्या का उस्ताद होना बाद की बात है।

मेरे अपने प्रदेश पूर्वी संयुक्त राज्य (अमरीका) में अब शिकारी बाज नहीं पाये जाते। राइस तथा अन्य अधिकारी विद्वानों का मत है कि कीटनाशक दवाओं के उपयोग के कारण पिछले दस वर्षों के दौरान बाजों की आबादी यहां से गायब हो गयी। अब ये अधिकांशतः उत्तरी प्रदेशों, पूर्वी कनाडा और ग्रीनलैंड में पाये जाते हैं। जीवन के लिए ये सहचर या सहचरी रखा करते हैं।

वसंत के आरंभ में नर उस चट्टान पर लौट आता है, जिसमें इनका घोंसला होता है, मादा भी उसके पीछे आती है। यहां वे घंटों कई दिनों तक चट्टान के आस-पास उड़ते-खेलते प्यार-क्रीड़ा में डूबे रहते हैं। अपने घोंसले ये मिट्टी की चट्टान खोदकर बनाते हैं। मादा दो से चार तक अंडे देती है। पतझड़ शुरू होते ही ये समुद्र की ओर दक्षिण-पूर्वी संयुक्त राज्य और केंद्रीय अमरीका के लिए चल पड़ते हैं। उस समय ये ५० मील प्रति घंटे की गति से और १५०० फुट की ऊंचाई पर उड़ते हैं। इस उड़ान के मध्य ये शायद ही आराम करते हैं। इस समय आसमान साफ होता है और हवा अनुकूल। लेकिन अगर हवा सामने की शुरू हो जाये या मौसम खराब हो, तो ये नीचे उतर आते हैं और सागर-तट पर आराम करते हैं। यही वक्त है इन्हें फांसने का।

बाज फांसने के कई तरीके हैं। एक, जिसे मैं पसंद करता हूं, रेत में छिपकर घात लगाने का है। जब मैं देखता हूं कि कोई बाज समुद्र-तट पर आराम करने उतरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, तो मैं रेत में पीठ के बल पसर जाता हूं। मेरा सहयोगी मुझे रेत से ढंक देता है। मेरा सिर वह एक ऐसी टोकरी से ढंक देता है, जिसके छेदों से मैं देख सकता हूं। एक रस्सी मेरी कलाई से बंधी रहती है, इसके दूसरे सिरे से एक कबूतर बंधा रहता है। इस तरह मैं बाज की प्रतीक्षा करता हूं। कभी-कभी गढ़े में पानी भर जाता है। सर्दी के दिनों में यह बड़ी तकलीफदेह मुसीबत होती है। किंतु सब कुछ योजनानुसार हो जाये, तो कुछ ही देर में बाज की नजर कबूतर पर पड़ती है। मैं कबूतर को अपनी ओर खींचना शुरू करता हूं और भूखा बाज मेरी पकड़ की पहुंच में होता है। बड़ी सावधानी से और धीरे-धीरे मैं अपना एक हाथ आगे सरकाता हूं और बाज को शक न होने देते हुए, उसका एक पांव पकड़ लेता हूं। मैं ऐसे समय दस्ताने नहीं पहनता; क्योंकि उनसे स्पर्श की संवेदना समाप्त हो जाती है। बाज अपनी चोंच और पंजों के प्रहार से मेरे नंगे हाथ को बहुधा लहूलुहान कर देता है; लेकिन कोई खतरनाक घाव अब तक कभी नहीं हुआ।

बाज पकड़ने की दूसरी विधि है 'कपोत-सज्जा' अर्थात बाज को रिझाने के लिए पेश किये जानेवाले कबूतर की सजावट। यह अभी नयी चली है। मैं अपने प्रलोभक कपोत को हलके वजनवाली चमड़े की एक जाकेट पहनाता हूं। इसके ऊपर नायलान के धागों की जाली होती है, जिसमें ५० फंदे होते हैं। बाज को देखकर मैं कबूतर को उड़ाता हूं। जाकेट का भार कपोत को ऊंचे और तेज उड़ने से रोकता है। जैसे ही बाज कबूतर पर झपटता है, फंदों में उसके पंजे फंस जाते हैं और वह पकड़ा जाता है।

जब मैं बाज पकड़ लेता हूं, तो उसके सिर पर एक टोपी चढ़ा देता हूं। उसके टांगों और पंजों पर पट्टी बांध देता हूं और उसे आरामदायक नायलान के मोजे पहना देता हूं। टोपी चढ़ाने से बाज शांत रहता है और मोजे पहनाने से वह अपने आपको हानि नहीं पहुंचा पाता—यह सब तब तक के लिए किया जाता है, जब तक कि उसे 'बाज-घर' में नहीं पहुंचा दिया जाता।

जल्दी ही मैं बाज को आदमी का अभ्यस्त अथवा पालतू बना लेता हूं। पकड़ने के कुछ दिन तक मैं उसे अंधेरे कमरे में रखता हूं। मेरे प्रवेश करने पर वह भड़कता है, जोरों से फुसकारता है, काटने दौड़ता है या भाग निकलने की कोशिश करता है। मेरा खयाल है कि उस हालत में कोई बाजपालक ही इतना उदार हो सकता है कि उस विवेकहीन प्राणी की उन हरकतों को बरदाश्त कर सके। कुछ भी हो, मैं उसे अपने हाथ से खिलाना और साधना शुरू करता हूं। जैसे ही वह इस रोजमर्रा के काम के साथ अभ्यस्त होना शुरू होता है, उसे डर पर आते देर नहीं लगती।

सबसे पहले बाज को भोजन के लिए हाथ पास आना सीखना पड़ता है। यह सिखाने के लिए मैं उसे दस्ताने पहने हुए हाथ से मांस देता हूं। शुरू में वह इसकी तरफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई ही सरकता है। बाद में वह इसकी ओर कई सौ फुट लंबी डोर के छोर से उड़कर भी आने लगता है।

बाज को पकड़ने के दो-तीन सप्ताह बाद मैं उसे डोरी से बांधकर उड़ाना शुरू कर देता हूं। बाज अपने आप वापस आ जायेगा—इस बारे में आज भी मेरी आशा कभी-कदा उसी तरह निराशा का मुंह देखना पड़ता है, जिस प्रकार तब देखना पड़ा था, जब मैंने पहला बाज उड़ाया था।

बाजों को प्रलोभक अथवा चमड़े के दस्ताने की ओर उड़ाने का अभ्यास कराया जाता है। इस प्रलोभक चिड़िया के साथ मांस का टुकड़ा भी बंधा रहता है। अपने काम में जैसे-जैसे मेरा विश्वास बढ़ता जाता है वैसे-वैसे मैं उसे स्वतंत्रतापूर्वक उड़ने देता हूं। जल्द ही मैं उसे जिंदा शिकार पर उड़ना सिखाता हूं। इस काम के लिए ४०-५० कबूतर पाले रखता हूं।

पहले-पहल बाज काफी सुस्त-सा रहता है और केवल कमजोर और धीमी उड़ने-वाली चिड़ियां ही पकड़ता है। अनुभव-बढ़ने के साथ-साथ वह अधिक निपुण होता जाता है। मेरे कुछ अनुभवी कपोत भी धीरे-धीरे बाज के झपट्टे से अपने आपको बचाना सीख गये हैं।

बाज-विद्या सप्ताहांत में अथवा जब अवकाश मिल गया, खेल लिये—इस प्रकार का खेल नहीं है। बाज उड़ाने के लिए जो कम-से-कम घंटे रोज न दे सके, उसे बाज पालने नहीं चाहिये। बाज को फांसने में उसे प्रशिक्षित करने में, उसकी गलतियां सुधारने और अपनी गलतियां समझने में काफी समय लगता है। इसके अतिरिक्त उन्हें खिलाने-पिलाने और घर में रखने की सैकड़ों समस्याएं होती हैं—इनके लिए नित्य कुछ-न-कुछ समय दिये बिना नहीं चल सकता।

चुग्गे की समस्या भी कभी-कभी विचित्र ढंग से सामने आती है। जब मैं पेनिसिलवैनिया विश्वविद्यालय में पढ़ता था, तो वहां समिति के भवन में रहता था। मैंने अपने कमरे में एक 'पर्च' को बाज का निवास-स्थान बनाया। विश्वविद्यालय-भर में यह बात फैल गयी। मुझे समिति-भवन के तहखाने में लगभग दर्जन-भर कबूतर रखने पड़ते थे। किसी-किसी दिन मेरा बाज दो-तीन कबूतर मार लेता था और मुझे उन्हें बर्फ की पेटी में रखना पड़ता था। आरंभ में अधिकारियों ने इस बात पर बड़ा कड़ा रुख अख्तियार किया। लंबे वाद-विवाद के बाद वे यह मानने को तैयार हुए कि शिकार की दृष्टि से मुर्गियों और कबूतरों में कोई फर्क नहीं है।

वर्षों के अनुभव से मैंने यह जाना है कि बाजों के लिए मैना सुविधाजनक और स्वास्थ्यप्रद भोजन है। मैं उन्हें पंख-सहित प्लास्टिक के थैले में बंद करके फ्रीजर में रखे रहता हूं और बाजों को खिलाते समय तोड़-तोड़कर देता जाता हूं।

बाजों को पालने का शौक, सच देखा जाये तो क्रूरतापूर्ण नहीं है। बाज अपने शिकार को या तो तुरंत मार डालता है या

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार सही-सलामत बच भागता है। ऐसा कोई उदाहरण प्रायः नहीं होता कि कोई प्राणी घायल होकर बच भागा हो और धीरे-धीरे तड़पकर मरा हो। बहुधा बाज-विद्या को गलत समझा गया है। बहुत से लोग इसका विरोध इसलिए करते हैं कि इससे जंगल के जीव नष्ट होते हैं। यदि हम बाज-विद्या को आखेट-क्रीड़ा की दृष्टि से देखें, तो यह सचाई बिलकुल स्पष्ट हो जायेगी कि बाज पालने का शौकीन व्यक्ति बंदूक-धारी शिकारी की श्रेणी में कतई नहीं आता। सच तो यह है कि बाज पकड़नेवाला अपने बाज का शिकार नहीं करता, उसे पालता है। यह पीछा करने और पकड़ने का खेल है, न कि हत्या करने का।

पुरातन-पंथी लोग लंबे समय से इस कला का इस आधार पर विरोध करते आये हैं कि इससे बाजों की आबादी खत्म होने की नौबत आ बनता है। यह बात सर्वविदित है कि बाज बहुत ही कम संख्या में जवान होने तक जीवित बचते हैं। बहुधा भूख, बीमारी या कोई आक्रमण उन्हें नष्ट कर देता है। ऐसे युवा बाज को पकड़कर और पाल-पोसकर मनुष्य उसे एक प्रकार से प्राणदान देता है—विशेषतः उसके जीवन के जोखिम से भरे प्रथम वर्ष में उसकी रक्षा करके।

बाज पकड़ना कहीं-कहीं अवैधानिक भी है। संयुक्त राज्य में केवल १३ राज्यों ने इसे क्रीड़ा का विषय माना है। इस पर प्रतिबंध लगानेवाले कानून की दृष्टि बड़ी पुरानी है। न तो इससे बाज की रक्षा होती है, न वह शिकार के काम आता है। ये कानूनों में जंगल-जीवन का अज्ञान झलकता है।

★

नया इलेक्ट्रानिक वाद्ययंत्र

लिथुआनिया के इंजीनियर पात्रास बाबेकिस ने एक इलेक्ट्रानिक वाद्ययंत्र बनाया है, जिसे बजाना बहुत ही आसान है।

यह नया बजा छोटे-से पियानो जैसा है। इससे सैक्सोफोन, बांसुरी और बिजली गिटार की ध्वनियां निकलती हैं।

★

बर्फ पर चलनेवाली मोटर साइकिल

शीघ्र ही बर्फ पर चलनेवाली एक मोटर साइकिल, जो देखने में स्लेज गाड़ी जैसी है, सोवियत ध्रुव प्रदेश में रेंडियरों और कुत्तों को स्लेज खींचने के श्रमसाध्य एवं कष्टकर काम से विदा कर देगी।

यह मोटर साइकिल गोर्की के पाली टेकनिकल इंस्टिट्यूट ने बनायी है। पहियों के बदले इसमें स्की-रनर लगे हैं।

इस पर ५० किलोग्राम माल सहित यात्री किसी भी मौसम में बर्फ पर यात्रा कर सकेंगे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्न ने प्राण बचाये

फ्रैंक एडवर्ड्स

कहते हैं कि परस्पर गहरे भावनात्मक बंधनों में बंधे मानवप्राणी एक-दूसरे से दूर होने पर अपनी विपत्ति की सूचना किसी मानसिक-प्रक्रिया द्वारा भेज सकते हैं—भले ही इस प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार पर समझाया न जा सके। यह सब कैसे संभव होता है? कारण चाहे अज्ञात हो, ऐसी कई घटनाएं हुई हैं और उन सबमें बड़े ही रोचक की घटना है एक युवती की, जिसने सबको घोर आश्चर्य में डाल दिया।

पोलैंड के जेरनैक नगर की पुलिस इस युवती को खतरनाक पागल समझने लगी थी। वह समय-समय पर अधिकारियों के पास जाती और उनसे प्रार्थना करती कि वे उसके प्रेमी की खोज में उसकी सहायता करें। उसका प्रेमी पोलिश सेना में सिपाही था। प्रथम विश्वयुद्ध में उसे मोर्चे पर आगे जाने का आदेश मिला था और फिर लाखों अन्य सैनिकों की तरह वह भी लापता हो गया था।

अक्टूबर १९१८ में युवती मेरना को उसके बारे में पहला भयानक स्वप्न आया। उसने देखा—उसका प्रेमी किसी अंधेरी सुरंग में रेंगता टटोल रहा है। उसने मोमबत्ती एक ओर रख दी है और चट्टानों और लकड़ी के तख्तों को हटाने की भरपूर चेष्टा कर रहा है। फिर निराश होकर वह घुटनों पर सिर रखकर सुबकता है। सपना बस इतना था।

यही सपना उसे बार-बार आता रहा। १९१९ के ग्रीष्म-काल में इस स्वप्न में कुछ परिवर्तन हुआ। लड़की ने देखा, एक पहाड़ी पर एक छोटा-सा गढ़ है। इसका एक स्तंभ चकनाचूर होकर पत्थरों और तख्तों के रूप में पड़ा है। स्वप्न में जैसे ही वह मलबे के ढेर के पास पहुंचती है, उसे मदद के लिए पुकारती हुई एक आवाज सुनाई देती है। और आवाज को वह फौरन पहचान लेती है। यह उसके प्रेमी स्टैनिस्लास की ही आवाज है, जो पिछले वर्ष गायब हो गया था।

आवाज मलबे के बड़े ढेर के नीचे कहीं से आ रही थी। उसने पत्थर हटाये; पर वे इतने ज्यादा थे कि वह उन्हें नहीं हटा सकती थी। निराश होकर वह लौटती और स्वप्न-भंग हो जाता। जब यह स्वप्न बार-बार आने लगा, तो मेरना ने अपनी मां को और मां ने पादरी को सुनाया। पादरी तार्किक टाइप का आदमी था। उसने फतवा दे दिया कि यह स्वप्न इस दिल की मरीज लड़की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मानसिक खामखयालियों की उपज है।

पर मेरना को इतनी आसानी से बदला नहीं जा सकता था। लेकिन ध्वस्त स्तंभ-वाला वह किला है कहां? यह उस बेचारी को नहीं मालूम था। यूरोप ऐसे किलों से भरा पड़ा है – इस कारण स्वप्न में देखे उस किले को ढूंढ़ निकालना लगभग असंभव था।

लेकिन लड़की को यह भयानक सपना आता रहा, आता रहा। वह अपने प्रेमी को सुरंग में मार्ग टटोलते हुए देखती, सहायता के लिए उसका आर्तनाद सुनती और फिर वह किला गायब हो जाता।..... अंत में उससे रहा नहीं गया और वह उस किले की खोज में निकल पड़ी। पास में न पैसे,न कोई अन्य संबल। बस, परमात्मा ही उसका एक-मात्र सहारा था।

जहां वे दोनों कभी अंतिम बार मिले थे, वहां से उसने सड़कें नापनी शुरू कीं। कार्य को असंभव मानकर कोई उसे उत्साहित करने को भी तैयार न था। वह सड़क के किनारे सो जाती, दयालु किसान उसे कुछ खाने को दे देते, तो खा लेती। वे उसकी कहानी सुनते और विवशता से अपना सिर हिलाते। कारण, युद्ध की करुण कथाएं अनंत थीं, युद्धध्वस्त किले भी अनेक थे– इनमें उसका प्रेमी किसमें होगा, कौन जान सकता था?

२५ अप्रैल १९२०। युवती दक्षिण-पूर्व पोलैंड के ज्लोटा गांव के पास की एक पहाड़ी के पास पहुंची। जैसे ही उसकी दृष्टि पहाड़ी के शिखर पर गयी, वह हर्ष से चीख उठी। सपने में जैसा किला देखा था, वहां मौजूद था। वह सड़क पर गांव की ओर दौड़ी। आंसू बहते जाते थे। गांव में फव्वारे चौराहे पर आते-आते वह थककर पड़ी। उसके चारों ओर तुरंत भीड़ हो गयी। स्थानीय पुलिस अधिकारी मामले की जानकारी के लिए दौड़ा आया। मेरना किले की ओर इशारा इतना ही कह सकी –"वह वहां है! वहां है!"

अधिकारी पर कोई असर नहीं हुआ वेशक किला वहां था। वह वर्षों से वहां इसमें अचरज की क्या बात थी? मेरना ने अपनी कहानी सुनायी; पर किसी विश्वास नहीं किया। प्रेम की मारी लड़कि के चोंचले मशहूर थे। वे जानते थे कि लड़कियां प्रायः कुछ-न-कुछ विचित्र किया करती हैं। इन पर कोई ध्यान देने जरूरत नहीं।

पर लड़की ने कुछ लोगों का ध्यान आकर्षित कर लिया कि उन्होंने मलबे हटाने का इरादा कर लिया। ऐसे सुओं का एक बड़ा जत्था उसके साथ पर पहुंचा।

अचरज के साथ लोग भारी-भारी पत्थर के बीच ताक-झांक करने लगे। दो मलबा हटाने का काम चला। लोगों ने कि यह स्थान प्रवेश-द्वार-सा है। तब आश्चर्य की सीमा न रही, जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...दर से आदमी की आवाज आती सुनी। ...ना को भी वह स्वर सुनाई दिया। वह ...कर अपने हाथों से चट्टान तोड़ने की ...श्रम करने लगी। काम करनेवालों ने ...बाँधकर रोका और उस छेद को और ...किया। इतना कि उसमें से एक आदमी ...र आ सके।

...स्टैनिस्लास ओमेंस्की को वाहर ...निकाल लाये। वह चिथड़ों में लिपटा हुआ ...और लगभग दो वर्ष तक घुप अंधेरे में ...के कारण धूप में बड़ी परेशानी महसूस ...रहा था। लेकिन यह वही व्यक्ति था, ...मेरना अब तक अपने सपनों में देखती ...थी।

...यह इस पुराने किले के भीतर था। जिस ...ने वह किले में घुसा था, उसे तोप के ...ने तोड़कर रख दिया था। मलवे ने द्वार ढंक दिया था और उस द्वार के अलावा वाहर निकलने का और कोई रास्ता ही नहीं था। वहां वह पनीर और शराब के सहारे जिंदा रहा। उसे कुछ मोमवत्तियां मिल गयीं, जिन्हें वह रोशनी के लिए इस्तेमाल किया करता था। सैकड़ों चूहे वहां उसके साथी थे। वाहर निकलने के लिए प्रार्थना के अलावा अब उसका और कोई सहारा नहीं था।

मेरना के इस स्वप्न की आश्चर्यजनक पराकाष्ठा का हवाला पोलिश सेना भी देती है। यह स्वाभाविक था कि सेना अपने सिपाही के हालात का ब्यौरा जानना चाहती थी। अंत में स्टैनिस्लास को सेना की नौकरी से सम्मान के साथ मुक्त किया गया और उसका उसी मेरना से विवाह हुआ, जिसके सपने ने उसे जिंदगी दी।

★

ज्ञान - वृद्धि

ज्ञान के नशे में चूर बाप, अपने बेटे के साथ सड़क पर जा रहा था। थोड़ी दूर चलने ...बेटे ने मुंह उठाकर बाप की ओर देखा और पूछा – "पिताजी, इन तार के खंबों में ...कैसे चली जाती है ?"

बाप ने छड़ी घुमाते हुए लापरवाही से उत्तर दिया –"पता नहीं बेटा, मुझे बिजली से ...दिलचस्पी पैदा न हो सकी।"

...भी थोड़ी दूर ही गये थे कि बेटे ने फिर प्रश्न किया–"पिताजी, बादल में बिजली ...पैदा हो जाती है ?"

बाप ने फिर वही उत्तर दिया कि बिजली में उसकी दिलचस्पी कभी रही ही नहीं।

...अब बच्चा चुपचाप चलने लगा। दोनों जब बहुत दूर निकल गये, तो बेटे ने फिर मुंह ...–"पिताजी . . . अच्छा जाने दीजिये।"

यह सुनते ही विद्वान बाप को क्रोध आ गया। बोला–"पूछो, पूछो . . . प्रश्न न करोगे ...ज्ञान कैसे बढ़ेगा ? हमारी तरह कैसे बनोगे ?"

–मुगनी अब्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

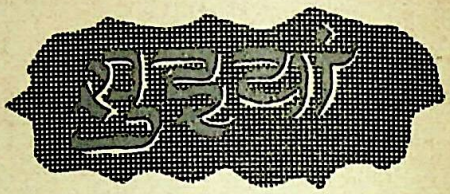

इंतजार हुसैन

चुप-चुप, उदास घूमना शुरू करती, तो लगातार घूमती रहती। बैठ जाती, तो बस बैठी ही रहती। देव ने उससे पूछा—"ऐ गुलशनेखूबी, तू क्यों उदास है?" तब वह रोयी और बोली कि अकेले में मुझे वहशत होती है। देव ने यह सुनकर उस पर तरस खाया और चाबियों का एक गुच्छा निकाल यह कह उसके हवाले किया—"बीबी, इस किले में सात कोठरियां हैं। हर कोठरी की चाबी इस गुच्छे में है। तू छः कोठरियों को खोलना और जी बहलाना। सातवीं कोठरी मत खोलना—अगर तू उसे खोलेगी, तो अपने सिर खराबी लायेगी।"

देव सुबह चला गया, तो वह चाबियों का गुच्छा संभाल खुश-खुश कोठरियों की तरफ गयी। जिस कोठरी को खोला, उसमें एक नया आलम नजर आया। किसी में इतने हीरे-जवाहरात भरे थे कि आंखों में चकाचौंध आती थी। किसी में जर्कबर्क पोशाकें सजी थीं कि उसने हर पोशाक पहनकर देखी और अपने को चांद-सूरज की तरह खूबसूरत पाया। किसी में बाग-बगीचों की बहार थी। फूल महकते थे, परिंदे चहकते थे। यों हर कोठरी में उसने एक नया आलाम पाया और उसका दिल लगा रहा।

देव रोज सुबह चला जाता और वह चाबियों का गुच्छा लेकर कोठरियों की तरफ चली आती। एक-एक कोठरी को खोलती, नित नये दृश्य देखती और बहुत खुश होती। एक दिन उसके जी में आया कि सातवीं कोठरी को भी खोले; लेकिन फिर उसे देव की हिदायत याद आ गयी और वह उधर जाते-जाते रुक गयी।

फिर यों हुआ कि वह रोज छः कोठरियां खोलती। जब उनकी सैर कर चुकती, तो उसे सातवीं कोठरी का ध्यान आता। लेकिन साथ ही उसे देव की हिदायत का भी खयाल आ जाता और वह सातवीं कोठरी खोलने के विचार को हटा देती। कभी-कभी उसके कदम सचमुच उस तरफ उठ जाते। लेकिन फिर जाते-जाते उसे देव का खयाल आता और वह पलट आती।

फिर ऐसा हुआ कि पहली कोठरी खोलने के साथ उसे सातवीं कोठरी का खयाल आ जाता। वह कोठरियां खोलती जाती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...दृश्य देखती जाती। मगर सातवीं कोठरी ...ी कल्पना में मंडराती रहती। और ...ये-नये दृश्य फीके-फीके लगते। लेकिन ...ने उसे सातवीं कोठरी खोलने को मना ...या था। सो इस मनाही की वजह से वह ...ो खोलने से डरती थी और इसी वजह ...उसकी तरफ खिंचती भी थी।

भय और आकर्षण के बीच लटकती ...कुमारी रोज एक बेजारी के अहसास ...ाथ छः कोठरियां खोलती और सातवीं ...ठरी के खयाल में खोयी रहती। सातवीं ...ठरी के खयाल ने छः कोठरियों के रंग-...से दृश्यों को बेरंग कर दिया था—जैसे ...न दृश्यों का कोई अर्थ न हो। जैसे इन ...श्यों के अर्थ सातवीं कोठरी में बंद हों। ...र सातवीं कोठरी की चाबी उसके पास ...ी और उसे खोलना उसके बस में था। ...ाबियां तो सब कोठरियों की हमारे पास ...ती हैं और उन्हें खोलना भी हमारे अधि-...ार में होता है; लेकिन यह कि हम इन्हें ...ोलते ही नहीं और हमारा अधिकार ...मारी विवशता बन जाता है। वह कोठरी के ...रवाजे पर जा खड़ी होती और सोचती कि ...ोठरी को खोलूं या न खोलूं। एक जी कहता ...े कोठरी खोल और देख कि वह क्या रंग ...खाती है। दूसरा जी कहता, क्यों मुफ्त ...ें आफ़त मोल लेती है और जिस काम को ...ना किया गया है, वह करके क्यों मुसीबत ...ें फंसती है।

कोठरी को खोलूं या न खोलूं? रोज यह ...न उसके सामने आ जाता। रोज वह करने या न करने की सरहद पर जा खड़ी होती और बिना कोई निर्णय किये कोठरी के पास से सरक आती। उसने निर्णय नहीं किया और प्रश्न उसके साथ चिपक गया। सातवीं कोठरी प्रश्न बनकर उसे पुकारती और वह उसकी तरफ खिंचती और उससे दूर भागती, जैसे आदमी बुराई की तरफ खिंचता भी है और उससे दूर भी भागता है। मगर उसे तो यों लगता था, जैसे सातवीं कोठरी उसके साथ-साथ चल रही है। वह किले के दूर-दराज कोनों में निकल जाती, अपने शयनकक्ष में चली जाती और दरवाजा भीतर से बंद कर लेती। उसे यों लगता कि सातवीं कोठरी उसके साथ अंदर चली आयी है, जैसे वह उसके अंदर उतर गयी है और खुलने की मांग कर रही है।

सातवीं कोठरी को खोलूं या न खोलूं? वह चाबी को ताले में अटकाती और फिर झिझक जाती। ताले की चाबी तो उसी के अधिकार में थी और खोलना न खोलना भी उसके बस में था। और अधिकार का होना भी कितनी बड़ी मुसीबत है और विवशता में कितना चैन है। उसने उस दिन को कोसा, जब उसने देव से अकेलेपन की विवशता की शिकायत की थी। और अकेले रहने या न रहने का अधिकार अपने हाथ में लिया था।

उसने अपनी तरफ से कुछ तय नहीं किया था। लेकिन जब वह पहली कोठरी की तरफ चली, तो वह सातवीं कोठरी की तरफ जा निकली। और जब उसने दूसरी कोठरी की तरफ कदम उठाया, तो कदम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सातवीं कोठरी की तरफ उठ गये। चाबी उसके अधिकार में थी, कदम उसके अधिकार में नहीं थे। सो वह जब पहली कोठरी की तरफ चली, तो उसने अपने आपको सातवीं कोठरी के सामने पाया। और सातवीं कोठरी ने उसे यों आ घेरा जैसा, अंधी इच्छा आदमी को आ घेरती है। उसने ताले में चाबी यों डाली, जैसे आदमी अपनी भावना के सामने ढाल डाल देता है।

उसने कोठरी खोली और बहुत निराश हुई। वहां तो कुछ भी नहीं था। हां, एक आदमी मुर्दा-सा पड़ा था। वह उसे देखकर डरी और उलटे पांव चली। लेकिन फिर उसे उत्सुकता हुई कि आखिर यह कौन अजनबी है? यहां कैसे और कब पहुंचा? क्या वाकई मर गया है? इन प्रश्नों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। वह ठिठककर खड़ी हो गयी। फिर उसे ध्यान आया कि उसकी सांस देखी जाये कि चल रही है या नहीं। लेकिन उसके करीब जाते-जाते वह ठिठक गयी। उसके करीब होने की उसकी हिम्मत न हुई। लेकिन उसे एक उत्सुकता भी तो थी कि वह वाकई मर गया है या जिंदा है। सो उसने डरते-डरते उसके तलवे को छुआ, तो उसकी उंगलियां एक सुई पर जा पड़ीं। उसने धीरे-से वह सुई निकाली और बहुत हैरान हुई कि उसके तलवे में सुई क्यों चुभी हुई है। इसी ताज्जुब में उसने पूरे तलवे को टटोला। उसमें जगह-जगह सुइयां चुभी हुई थीं। उसे और ताज्जुब हुआ। फिर वह हाथ ऊपर ले गयी और टांगों को टटोला। टांगों में भी सुइयां चुभी हुई थीं। उसे और भी आश्चर्य हुआ और इच्छा हुई कि सारे बदन को देखें। उसने सारे बदन को देखा। एक-एक हिस्से को छुआ। सारा शरीर सुइयों से विंधा हुआ था। इस अचंभे और हैरानी में राजकुमारी का डर खुद-ब-खुद जाता रहा। उसे उस मृत व्यक्ति से सहानुभूति-सी हो गयी। बस वह कूद उसके पांवों में बैठ गयी और उसके तलवे से सुइयां चुनने लगी।

वह तो केवल तलवों की सुइयां निकालने बैठी थी; लेकिन फिर वह सुइयां निकालने में ऐसी खो गयी कि सारे शरीर की सुइयां निकालती चली गयी। शरीर में चुभी सुइयां निकालना बहुत कठिन काम है और बहुत कष्टकर होता है। उसकी पोरें छिल-छिल गयीं। लेकिन उसका जी बेतरह आप हुआ था कि बैठी रहो और सुइयां निकालती रहो। ऐसे काम भी होते हैं, जो कष्ट कर होते हुए भी सुखद होते हैं। सुइयां चुनते-चुनते राजकुमारी ने सोचा कि यह अजनबी तो मर चुका है। वह उसके शरीर से सुइयां निकाल भी डालेगी, तो क्या हासिल होगा? उसने कई बार सोचा कि वह यह निरुद्देश्य काम क्यों कर रही है? उसने यह सोचा; लेकिन उसकी उंगलियां उसी तरह सुइयां चुनती रहीं। अजीब काम था कि उसे इसका कोई उद्देश्य भी नजर नहीं आता था और फिर भी वह उसमें तन-मन से डूबी नजर आती थी।

फिर सुइयां चुनते-चुनते राजकुमारी ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा कि आखिर यह अजनबी है कौन ? और उसे अपनी अम्मा से सुनी वह कहानी याद आ गयी कि एक राजकुमार एक देव की कैद में था। राजकुमार एक दिन अपने को बेजार होकर दुःख-भरी आवाज में चीखा कि मैं अकेला हूं। तब देव ने उस पर तरस खाया और यह कहकर तीर-कमान उसके हवाले किया—"देख, इस किले में चार खूंट हैं। तीन खूंट जा। शिकार खेल और जी बहला। पर चौथे खूंट मत जाओ। उधर जायेगा, तो अपने सिर बला लायेगा।" और राजकुमार तीन खूंट गया। शिकार खेला और जी बहलाया। एक दिन दिल पर मनक सवार हुई कि चौथे खूंट की सैर करें। उसे देव की चेतावनी याद आयी। लेकिन मन बुरी बला है। जिस बात को मना करो, उसी को करने को टूटकर आता है और इंसान की ऊबड़-खाबड़ चाल है कि जिस राह पर गोविंद करो, उसी पर चलता है। और आंख का स्वभाव तौर है कि जो ओझल है, उसी को देखने के लिए लालायित है। सो राजकुमार ने आव देखा न ताव, चौथे खूंट में कदम रख दिया। क्या देखा कि दूर तक हरा-भरा मैदान फैला है, और एक हिरन खूबसूरत

चित्रकार : शर्मा

औरत की तरह कुलेलें करता फिरता है। राजकुमार ने कमान पर तीर चढ़ाया और उसके पीछे हो लिया। थोड़ी देर में वह हिरन गायब हुआ और बाग नदारद। कहीं से एक आवाज आती थी; पर आवाज देनेवाला नजर नहीं आता था। राजकुमार ने सोचा कि इस आवाज की थाह लो और भेद मालूम करो। सो वह इस आवाज पर खिंचा चला गया। थोड़ा फासला तय किया होगा कि आवाज भी गायब हो गयी। न आदमी न आदमजात। न पशु न पक्षी, न फूल न पत्ती। सामने वीरान था और एक नदी बहती थी। राजकुमार को प्यास लगी। तीर कमान एक तरफ रख नदी किनारे जा बैठा। हाथ पानी में डाला और पानी से चुल्लू भरा। अचानक क्या देखता है कि दो गोरी-गोरी बांहें पानी से उभरी हैं और उस पर लपकती हैं। वह झिझककर पीछे हटा। पीछे हटना था कि पटखनी खायी और बेहोश हो गया। जब आंख खुली, तो न वह नदी, न निमंत्रित करती बाहें। वह किले में था और देव उसपर लाल-पीला हो रहा था। देव ने उसके सारे बदन में बुरी तरह सुइयां गाड़ दीं और कोठरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में डाल दिया।

और राजकुमारी ने सोचा कि क्या यह वही राजकुमार है ? क्या यह अजनबी भी सुइयां निकल जाने के साथ जाग खड़ा होगा? लेकिन फिर उसने सोचा कि वह तो कहानी थी। यह सोचते ही उसने उसके जीवित हो जाने के खयाल को दूर हटा दिया। लेकिन अगर यह शरीर हमेशा के लिए सो गया है, तो मैं इसे किस कष्ट से छुटकारा दिला रही हूं ? राजकुमारी ने अपने लहूलुहान पोरों पर नजर डाली और उसकी समझ में यह न आया कि उसके इस कष्ट की मंजिल क्या है। कष्ट की मंजिल उसकी समझ में न आयी। फिर भी उसकी उंगलियां सुइयां चुनती रहीं और उसकी पोरें खूनमखून हो गयीं। फिर उसे लगा कि जब ये सब सुइयां निकल जायेंगी, तो अजनबी जीता-जागता उठ खड़ा होगा। अब उसे ऐसा लगने के साथ न तो हैरानी हुई और न संदेह हुआ। आप-ही-आप उसे विश्वास हो गया और उसने तेजी से सुइयां चुनना शुरू कर दिया। वह उस कल्पना में मग्न थी कि अब सुइयां निकलीं और अब अजनबी जीवित हुआ। उस समय उसे लगा कि सुइयां उसके बदन से निकल रही हैं। जब हम दूसरे की सुइयां निकालते हैं, तो हम अपनी भी सुइयां निकालते हैं। तो क्या मेरे बदन में भी सुइयां गड़ी हुई थीं ? उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने बहुत जोर डाला कि सुइयां कब और कैसे उसमें चुभ गयी थीं ?. पर उसे कुछ याद न आया। हम अपने भीतर सुइयां बिंधी लिये फिरते हैं और नहीं जानते कि सुइयां कब और कैसे हममें समा गयीं।

राजकुमारी ने बदन की सारी सुइयां कैसे डालीं। उसकी पोरें खून में तरबतर थीं और उसका बदन फूल की तरह हल्का हो गया था। उसने अजनबी पर सिर से पैर तक नजर डाली। सिर के सिवा सारे बदन की सुइयां चुन ली गयी थीं। अब बदन में खून की एक रौ वह रही थी। यह देख राजकुमारी खुश हुई। उसने चाहा कि सिर की सुइयां जल्दी-जल्दी निकाले कि काम खत्म हो और अजनबी में जान आये।

राजकुमारी ने सिर की सुइयां जल्दी-जल्दी चुनीं। धूप ढलते-ढलते उसने सब सुइयां निकाल डालीं। बस एक सुई बीच दिमाग में फंसी रह गयी और राजकुमारी ने अजनबी के जागते हुए शरीर पर एक नजर डाली और अपने आप पर गौर किया कि जैसे वह खुल रही है; कि जैसे उसके छः द्वार खुल चुके हैं और वह सातवें द्वार की दहलीज पर खड़ी है। बड़ी हैरान-सी वह दहलीज पर खड़ी रही। फिर आप-ही-आप उसके दिल में एक डर समाता चला गया। उसने जागते हुए अजनबी को डरी-डरी नजरों से देखा। अपने खुलते हुए आपे पर गौर किया। फिर चिंतित होकर सोचा कि वह दिमाग में फंसी सुई को निकाले या न निकाले।

फैसले की घड़ी उस पर फिर मंडराने लगी थी। वह कुछ फैसला न कर सकी। बस एक असमंजस में उसने सुई को पोरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़का और फिर झिझककर छोड़ दिया। अजनबी फिर स्थिर हो गया। राजकुमारी ने एक पछतावे के साथ अजनबी के स्थिर बदन को देखा और फिर अपनी लहुलुहान पोरों पर नजर डाली। ठीक उसी समय किले के दरोदीवार कांपे और देव गरजता-बरसता किले में दाखिल हुआ। उसने राजकुमारी को सातवीं कोठरी खोलने का दंड यह दिया कि उस पर नौ कौड़ी बेंत बरसाये। चाबियों का गुच्छा उससे लेता और सातों कोठरियां बंद कर गरजता-बरसता अपने सोने के कमरे में चला गया।

उस दिन के बाद राजकुमारी फिर अकेली रह गयी। चुप-चाप, उदास-उदास! घूमना शुरू करती, तो फिरकनी की तरह घूमती रहती और पागल हुई सारे किले में भटकती फिरती। बैठ जाती, तो बस बैठी रहती... और वह रोयी और बोली—"मेरा अकेले जी घबराता है।"

देव ने उसकी तरफ अंगार-भरी आंखों से देखा और रोज की तरह उसे अकेले छोड़ गरजता-बरसता बाहर चला गया।

★

नाई की हजामत

एक महाशय आठ वर्ष के एक बालक को साथ लेकर बाल कटवाने के लिए हज्जाम की दुकान में गये। उन्होंने पहले अपने बाल कटवाये और नाई से बोले—"इस बच्चे के भी बाल बनाओ। तब तक मैं आता हूं।" इतना कहकर वे वहां से बाहर चले गये।

उनके आदेश का पालन कर हज्जाम ने लड़के को एक ओर बैठा दिया। लंबी प्रतीक्षा के बाद भी वे महाशय नहीं आये, तो हज्जाम ने लड़के से पूछा—"तुम्हारे पिताजी कहां गये हैं कि अभी तक नहीं आये!"

"मेरे पिताजी! वे तो अब इस संसार में हैं ही नहीं!"—लड़के ने उत्तर दिया।

"तुम्हें जो साथ लाये थे, वे . . ."

"न जाने, कौन हैं। रास्ते में मुझे मिले तो पूछा—'मुफ्त में बाल कटवाओगे?' मैंने कहा—'हां,' तो वे मुझे साथ लेते आये! बस, इतना ही मुझे उनके बारे में मालूम है!"

लड़के की बात सुनकर हज्जाम आग बबूला होने को ही था कि वहां से लड़का भी रफू चक्कर हो गया।

—रा० वीलिनाथन्

★

एक मशहूर शायर जब कभी दोस्तों के घर में बैठते, अपने कुंआरेपन पर खूब रोया करते। एक दिन वे बड़ी लालसा से बोले—"जवानी गुजरी जाती है। जिस्म में जान नहीं रह गयी है। सोचता हूं कि किसी बेवा से शादी कर डालूं।"

मजाज साहब जलकर बोले—"बेवा की शर्त ही क्या जरूरी है? तुम शादी करो, बेवा तो वह हो ही जायेगी।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाश बहुत सूना है

गोविंद रत्नाकर

सामने उन्नत हिमालय, उसके चरणों में बहती मदमाती जलधारा और उसके तट पर बसा टनकपुर। जंगल के ठेकेदारों और पहाड़ियों के सौदागरों के उस क्रीड़ा-क्षेत्र—कस्बे में 'सीजन' में खूब चहल-पहल रहती है। चाय की दुकानों पर चाय—भरे गिलास चुसकते लारी-ड्राइवरों का समूह और दुकानों के ऊपर कोठे में सुबकती पार्वती और गिरिजा! शिव-प्राप्ति के प्रलोभन में फंसाकर लायी हुई उन कन्याओं को जब सत्य का साक्षात्कार होता, तो उन निरीह-निरवलंब अबलाओं को पार्वती और गिरिजा से सुंदरी और अनोखी बन जाने के अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं रह जाता।

ऐसी ही एक पार्वती को सुंदरी बनना पड़ा; पर उसे मिल गया एक शिव भी। दूसरे दिन कोठे के नीचे अपने संगी-साथियों के बीच बैठकर जब दर्शनसिंह ने ऐलान किया कि वह ऊपरवाली सुंदरी से विवाह करेगा, तो दोस्तों ने जो कहकहा लगाया, वह दर्शन को हिला देता। पर वह कुछ ऐसी माटी का बना हुआ था कि उपहास तो क्या उससे भी कठोर प्रहार से वह ढहने वाला नहीं था। एक रात में ही उसकी माटी पककर इतनी दृढ़ हो गयी कि उससे उसने अपना घर ही बना लिया।

नहीं जायेगा वापस वह बरेली, भूल जायेगा वह भाई-भाभी को, चला जायेगा सामने उस पहाड़ में कहीं, रहेगा वहां जहां उसकी सुंदरी होगी पार्वती और वह होगा शिव। कमर में बंधी थैली और कंधे पर लटकती बंदूक ने उसे यह निर्णय करने के लिए प्रोत्साहित किया।

रात की बात उसके मन में तूफान के समान उमड़-घुमड़ रही थी। अपनी वासना के जाल में फंसी उस हिरनी के बड़े-बड़े नेत्रों में जब उसने आंसू देखे, तो क्या हो गया था उसे? उसकी पाशविकता उन आंसुओं में क्योंकर वह गयी? वह स्वयं अपने आपको नहीं समझ पा रहा था; पर पशु से मनुष्य बनकर वह अवश्य ही खुश था। अकृत्य करते-करते सावधान होकर वैसा न करने का सुख अद्वितीय होता है।

उस टोली में वैसा भी कोई हो सकता है, ऐसी अनहोनी बात कोई मानने को तैयार नहीं था। दोस्तों ने खूब मखौल उड़ाया उसका, भद्दे-से-भद्दे शब्दों का उपयोग करके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरे दिन जब वहीं पिछवाड़े एक तलैया तन गया, ढोल-पतासे पीटे जाने लगे और उनके नाद को भेदकर एक ब्राह्मण की आवाज भी सुनाई देने लगी, तो दोस्त उधर लपके। उनके लिए मिठाई के थाल तैयार थे। खूब हुड़दंग रहा, विवाह क्या था, पूरा मखौल था। दोस्तों ने कहा, अरे यार क्यों किया यह तमाशा, ले गये होते ले जाना था तो, अब भी तो महीने-बीस रोज में लौटाने आओगे इसे यहीं !

टनकपुर के बाजार में आयी हुई लड़कियों से रेलवे के स्लीपर ही बने, उनकी मूर्ति बनाकर किसी ने कभी नहीं पूजा। वहां आयी हुई लड़कियां रखैलें ही बनकर रह गयीं, किसी ने उनसे विवाह करके उन्हें गृहिणी नहीं बनाया। दर्शन यह कर दिखाने पर तुला हुआ था। पर वह समाज से डरता भी था, इसलिए उससे दूर पर्वत-प्रदेश के एकांत में अपना मंदिर बनाकर उसमें अपनी प्रतिमा की स्थापना करना चाहता था।

सुंदरी को अपनी पत्नी बनाकर जब उसने उसे घोड़े की पीठ पर बैठाया, तो उसे लगा, वह देवता बन गया है और मर्त्यलोक की एक अबला का उद्धार कर उसे स्वर्गलोक ले जा रहा है। सत्कर्म का ऐसा उन्माद अनोखा होता है। दर्शनसिंह और कुछ नहीं सोच रहा था, वह इसी में मस्त था कि उसने एक अबला का उद्धार किया है, वह सत्कर्मी है।

जंगल की लकड़ी खरीदने और शिकार खेलने के लिए वह ऊपर के पहाड़ और उसके आगे पिथौरागढ़ के मार्ग के कई पठार छान चुका था। एक स्थान उसके दिल में बसा हुआ था और अब बस गयी सुंदरी भी, उसने दोनों का मेल मिला लिया। उसने तय कर लिया, वहीं किसी तलैया के किनारे, वृक्षों के झुरमुट के सम्मुख अपना घर बसायेगा, जहां कोई किसी का उपहास करनेवाला नहीं, जहां कोई किसी की स्वतंत्रता का बाधक नहीं। महीने-दो-महीने से टनकपुर आयेगा, पिथौरागढ़ जायेगा, कुछ लेबेच करेगा, थोड़े में सुख-शांति से रहेगा और जिसने अपने आपको उसे सौंपा है और जिसे उसने अपने आपको सौंपा है, उसके साथ एकाकार होकर रहेगा।

एक सत्कर्म के पुण्य-लाभ के समान दर्शनसिंह को सुख-शांतिमय वह जीवन प्राप्त हो गया। अवश्य ही उसे उसके लिए अत्यधिक कार्यरत होना पड़ा; पर बहुकथित गाड़ी के दो पहियों के समान दर्शन और सुंदरी ने वास्तव में नर-नारी के उस कर्तव्य को खूब ही संपादित किया। पहाड़ के पठार पर, तलैया के तट पर, वृक्षों के झुरमुट के सम्मुख उसका पहाड़ी रोड़ों से निर्मित घर बस गया, उसके आंगन में फुलवारी खिल उठी, और उस जीवन-संगिनी की सेवा, सौंदर्य और सुहास से वह घर-द्वार आनंदमय हो गया। भावावेश में किये गये एक सुकर्म का इतना सुखद परिणाम होगा, इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

जीवन-पालन के लिए भी तो कुछ करना चाहिये। दर्शनसिंह का शौक उसकी आजी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विका बन गया। बंदूक का वह धनी, वन-प्रांतर का वह निवासी, जीते रहें वन-पशुओं के चर्मों के शौकीन देशी-विदेशी। दर्शन-सिंह ने यही रोजी कर ली। शिकार खेलता, कितना मन लगता उसका उसमें! साहस-शौर्य, सफलता-विफलता, श्रम-विश्रांति, हर्ष-विषाद यही तो वास्तविक जीवन है।

जीवन से नवजीवन की उत्पत्ति जीवन-धर्म है, उसकी साधना में अंतर्हित सुख अपरिमेय है। सुंदरी ने जब दर्शन-सुत सुदर्शन को जन्म दिया, तो दर्शन निहाल हो गया। और, जब वह बालक पलता-पुंसता वृद्धि पाता, अजिर-विहारी बन, अपनी किलकारी से वातावरण को मुखरित करता, तो दंपति अपने सद्भाग्य की सराहना करते।

'दिवस जात नहिं लागहिं बारा'। नन्हा-सा सुदर्शन सुंदर बलिष्ठ बालक बन गया, जो अपने पैरों पर पहाड़ चढ़ जाता, वन-प्रांतर का चक्कर काट आता, माता-पिता को सहारा देता, उनके सुख में वृद्धि करता। उस बालक के संगी-साथी और थे ही कौन, वन-पशु व वन-पक्षी। किस चिड़िया का घोंसला किस पेड़ में है, कौन पशु कहां कब चरता है, कौन से पौधे कहां कब खिलते हैं—यह सब उनकी जानकारी में था। ऐसा स्वच्छ-स्वच्छंद, सरल-सबल जीवन पौराणिक बालक को ही सुलभ हुआ होगा।

सुंदरी के जीवन का तो एकमात्र लक्ष्य था पति व पुत्र। उसकी दुनिया थी अपना अहाता या कभी-कभी आस-पास की वन-भूमि। पर्वत-पुत्री के तन की दृढ़ता का तो क्या कहना, उसके इस सद्भाग्य ने उसे मन की दृढ़ता भी प्रदान कर दी। घर का काम-काज सुचारु रूप से कर लेना ही नहीं पर पति को एक प्रेममयी पत्नी और पुत्र को एक वात्सल्यमयी माता प्रदान करना उसका काम था। वह मनोयोगपूर्वक अपने कर्त्तव्य-कर्म का पालन करती, अत्यंत कर्मलतापूर्वक करती। बड़े सुख से थे वे तीनों।

× × ×

पहाड़ी तूफान बड़े कष्टप्रद और भयंकर वह होते हैं। निर्मल नील नभ में कहीं से वदलता है, मंद गति से प्रवाहित वायु का रुख वदलता है, पहाड़ी नर-नारी ही नहीं पहाड़ी पशु-पक्षी भी सतर्क हो जाते हैं। देखते-देखते हवा की गति तेज होती है, वृक्ष झूमने लगते हैं, बदली छा जाती है, पानी की बौछारें बर्फ की गोलियां बन जाती हैं। ऐसे में एक दिन सुदर्शन घर के बाहर था। मां का दिल दहल उठा, पिता व्याकुल हो उठा।

वे जानते थे वह गया होगा तलैया की उस ओर, जहां हरी-हरी दूब का एक चक्र है जिस पर हिरन आकर चरते हैं, चिड़िया आकर फुदकती हैं। या वह गया होगा कुछ दूर उस पहाड़ी नाले के जल के साथ खेलने, या शायद और भी आगे निकल गया हो, उस पहाड़ी चोटी पर की वह चट्टान भी उसकी प्रिय जगह है, जहां से उगता और डूबता सूरज दोनों दिखाई देते हैं। पर इस मौसम में जब भालू भी अपनी मांद में घुस जाते हैं, बालक सुदर्शन का बाहर रहना मां-बाप के आतंक का कारण बन गया। बिना कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुखी दंपति

हो, मोटा कंबल ओढ़कर दर्शनसिंह बाहर निकल पड़ा। भयभीत सुंदरी उसे न जाने देना चाहती थी, न रोकना; पर वह पुत्र की खोज में पिता-पति को जाते विस्फारित नेत्रों से देखती-भर रही।

तूफान तेज होता जा रहा था, ओलों की बौछार टिन के छप्पर को तड़ातड़ पीट रही थी। बीच-बीच में टूटती डालों व वृक्षों की डरावनी आवाज सुनाई दे जाती। उधर दर्शन डग बढ़ाता आगे बढ़ता, इधर सुंदरी का दिल बैठता जाता। और उपाय ही क्या था?

बादलों के उधर सूरज छिपा या न छिपा, कुछ ही देर में इधर वन-प्रांतर में तो हाथ-को-हाथ सूझना बंद हो गया। सुंदरी रह-रह-कर द्वार खोलती, बार-बार हवा का सामना कर, अंधेरे को चीरती दूर तक देखने का प्रयत्न करती, असफल होकर फिर किवाड़ बंद कर लेती। उसने पहाड़ी तूफान बहुत देखे हैं। पर आज वह इतनी आशंकित-आतंकित क्यों है?

एक घड़ी बीती, दो घड़ी बीत गयी। सुंदरी की व्याकुलता ने उसकी मति की स्थिरता को विचलित कर दिया। वह बाहर निकलकर उस तूफान में खो जाने को प्रस्तुत हो गयी। जैसे ही उसने द्वार खोला, एक भारी-भरकम शरीर भीतर प्रवेश कर, लड़खड़ाकर, फर्श पर पसर गया।

कौन है यह, यहां ऐसे क्यों? उस सर्दी में भी सुंदरी पसीने से तर हो गयी। एक नजर देखते ही वह समझ गयी, यह कोई अपरिचित है। पर कैसा भयावह और साथ ही करुण चेहरा है उसका? अवश्य ही यह कोई भटका-भूला तूफान का सताया है। पर हे भगवान, तुमने उसे यहां इस समय क्यों भेजा? संकट का साथी यह दूसरा संकट? एक मोटा कंबल उस पर डालकर वह किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी वहीं खड़ी रह गयी।

पति व पुत्र की प्रतीक्षा में उसने चूल्हा जला रखा था, उस पर पानी गरम हो रहा था। स्त्री-सुलभ सेवा-वृत्ति जागी। गिलास-भर गरम पानी में गुड़ की एक डली मिलाकर उसने उस असहाय-अपरिचित आतुर अतिथि के होंठों को लगा दिया। अर्द्धचेतन अवस्था में वह उस प्राणदायक पेय को गट-गट पी गया। करवट बदलकर वह नींद में विलीन हो गया।

चित्रलिखी-सी सुंदरी ने बाकी रात उनींदी अवस्था में खाट के पैताने बैठकर काट दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन का सारा भार तन की संधियों पर उठाकर सुंदरी भोर होते-होते उठी। खिड़की खोलकर उसने देखा—सूरज की पहली किरणों के साथ आसमान स्वच्छ हो गया था, तूफानी झंझावात शांत था, फले-फूले बाग को झकझोरकर बंदर मानो गायब हो गया था। रात के विनाश को भेदकर उसने दृष्टि पसारी, तो वह अपने भाग्य को सराहे बिना नहीं रह सकी। दूर बायीं ओर तलैया के किनारे दर्शन चला आ रहा था और उसके कंधों पर सवार था सुदर्शन। बालसूर्य की किरणें उन दोनों को प्रकाशित-प्रफुल्लित करती-सी दिखीं। यह स्वप्न तो नहीं? नहीं, वही तो आ रहे हैं और यह उसके बेटे का स्वर ही तो है, जो उसके कर्ण-कुहुरों को स्पर्श कर रहा है। कैसा हर्ष-निनाद कर रहा है, मानो अलभ्य-प्राप्ति करके आ रहा हो। पिछली रात का सारा दुःख उस सुख में बह गया। जिस ईश्वर ने उसे टनकपुर की मंडी के रौरव से बचाया, उसी ने आज उसे निरीह होने से बचाया है। आंगन की तुलसी के औसारे और उसी की छाया में रखे कहीं से प्राप्त सिंदूरमंडित मूर्ति-खंड के सम्मुख माथा टेककर उसने आनंदाश्रुओं का अर्घ्य प्रदान किया। और फिर तो ऐसे भागी, जैसे गाय बछड़े की ओर भागती है।

सुदर्शन पिता के कंधों पर से कूदकर मां की बलिष्ठ भुजाओं से आवेष्टित सहृदय वक्ष से लिपट गया। कष्ट-सहिष्णुता और निर्भयता और उनसे भी अधिक अलभ्य-प्राप्ति की बातों का उसका प्रवाह जारी था। आनंद से बेसुध मां के मन को जगाते हुए उसने कहा—"अरी मां तू तो डर गई देखा न पिताजी भी कितने घबराये थे! मां, क्या मैं नन्हा-मुन्ना हूं, जानती नहीं का चप्पा-चप्पा मेरा दोस्त है, अपने दोस्त में क्या मैं भटकता, दुःख पाता?

"अरी मां, जो मजा कल शाम और रा को आया, वह तो कभी नहीं भूलने का। तलैया के उस पार मैं चला गया था, दिलेर खोह की ओर। जानती हो न मां, वह झरने उससे बायें घूमने के बाद चरागाह के ओर एकदम खड्ड है। मैं जानता हूं, उसमें नीचे उतरा जा सकता है। और जैसे ही मैं नीचे उतरा, मौसम ने रंग बदल देखते-देखते ओले गिरने लगे। पर मुझे दिलेर-खोह तो मेरा दूसरा घर है। मां, तु तो कभी उधर आती नहीं, खोह क्या है पूरा घर है, किसी साधु बाबा के लिए भगवान ने बनाया होगा उसे। सामने पानी, एक ओर वह बड़ी गुफा, न हवा का डर, न तूफान का।

"खूब मजे से दुबककर जा बैठा वहां पर मां तूफान बंद ही नहीं हो रहा था, घर लौटता तो कैसे? नींद इसीलिए नहीं आई कि मुझे तुम्हारी चिंता थी, तुम परेशान हो रही होगी। और मां इसके आगे की बात तुम्हें अकेले कान में बताऊंगा।"

इतना कहकर बेटे ने बाप को एक ऐसे अविश्वास की दृष्टि से देखा कि पिता उसके इस नाटक से हंस पड़ा। दर्शनसिंह ललकार कर बोला—"हां रे अब तो बातें बनायेगा ही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस सुबह जब कीचड़ में लथपथ तुझे मैंने उठाया, तब तो बोलती बंद हो रही थी, अब बढ़-बढ़कर बातें बना रहा है।"

मां बोली—"क्यों रे, ऐसी क्या बात है, जो बाप के सामने नहीं बतायेगा ?"

"ऐसी ही कुछ बात है, मां। सुनोगी तो समझोगी।"

इतने में घर आ गया। रात को गुजरे हुए संकट को तो इस सुख ने भुला दिया; पर दूसरा संकट तो घर के आंगन में पसरा हुआ था।

× × ×

समानव्यसनेषु सख्यम्। उगती धूप, में अजनबी के उस दुर्धर्ष तन-बदन को और पड़ी उस रायफल को देखकर दर्शन-के मन में एक अजनबी के यों घर में बैठने की बात पर रोष नहीं, पर संकट-एक समान-व्यसनी के प्रति समवेदना-सहृदयता जागी। पति की उस वृत्ति को कर पत्नी का वह दूसरा मानसिक संकट संवेदनहित हो गया।

तूफान के बाद का दिन कितना सुहावना होता है! टूटे डाल-पात व धरती का कीचड़ उनकी याद छोड़ जाते हैं; पर धुले-धुलाये वृक्ष और नील आकाश में चमकता सूरज जैसे कलियों को खोलता है, वैसे ही दिलों को भी खोल देता है। बड़े उत्साह से अजनबी का स्वागत हुआ, अपरिचित अपरिचित बना, बरसों से एक ही पुरुष को देखने के लिए यह एक नया अनुभव था। उसमें संकोच था, उसमें कौतूहल था।

नहा-धो, खा-पीकर दोनों शिकारी अपनी बंदूकें साधे निकल पड़े। इधर मां-बेटा मिल-कर अहाते में गिरे डाल-पात बटोरने में लगे। पर इधर बेटे का पेट फूल रहा था, उधर मां भी बेटे की उस बात को जानने के लिए आतुर थी।

"मां, मां, पिताजी जिसे वर्षों से ढूंढ़ रहे थे वह मुझे कल मिल गया—काला हिरन, एक नहीं, तीन, एक हिरनी और दो उसके बच्चे। मां, तूफान से डरती हिरनी बच्चों के साथ उसी खोह में छिपी थी, जिसमें मैं पहुंचा। और मां, अचरज तो इसमें कि वे मुझसे डरके भागे नहीं, मैं कोई बंदूकवाला थोड़े ही हूं। मां, मैंने रोटी के कुछ टुकड़े उन्हें खिलाये और रात-भर उन्हें सहलाता उनके पास बैठा रहा, कैसी चिकनी-चिकनी देह थी उनकी और उस अंधेरे में भी मैं देख पाता था उनकी वे बड़ी-बड़ी आंखें मुझे टुकुर-टुकुर ताकती, दया की भीख मांगती।

"और सुनो मां," आवाज को और भी धीमी करते हुए वह बोला—" पिताजी को यह सब नहीं बताना, नहीं तो उनकी बंदूक काले हिरनों की वह खाल—ना—मां ना—" कहते-कहते वह भय-पूरित हो गया।

मां ने उसे छाती से लगा लिया, मानो उसे, उसके उन मृग-छौनों को अभय का वर-दान दे रही हो। मां के वक्ष-स्थल की गरमी में दो सांस लेकर बालक सुदर्शन प्रसन्न व स्वस्थचित्त हो गया।

दर्शनसिंह और अजनबी में तो खूब पटी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों शिकार में ऐसे रमे कि भेद-भाव भूल गये। कभी साथ-साथ शिकार खेलते, तो कभी अलग-अलग, कभी दोनों साथ लौटते, तो कभी आगे-पीछे। अजनबी ने घर में डेरा ही डाल लिया, निःसंकोच उसमें रहता। अपने पति के मित्र के रूप में सुंदरी उसका खयाल रखती; पर पति की अनुपस्थिति में वह अजनबी मित्र जब घर में होता, तो उसकी मनोदशा ही बदल जाती। अजनबी उसी संकोचरहितता से ही नहीं, उससे भी ज्यादा आत्मीयता से बरतता! उसे नजर भरकर आपाद-मस्तक देखता भी और ऐसी नजर से जो सुंदरी को हिला देती।

"हे भगवान क्या होनेवाला है?" सुंदरी का दिल दहलता रहता। अजनबी को विदा कर देने के उसके संकेतों को पति ने हंसी में टाल दिया। और मौका देखकर अकेले घर लौटने की अजनबी की आदत तो बढ़ती ही गयी।

सुदर्शन भी तो घर में कम रहता। उसको अपने संगी-साथी मिले हुए थे। खोह के एक-मात्र मार्ग को उसने अवरुद्ध कर दिया था। काली हिरनी अपने छौनों के साथ उसमें रहती, जलकुंड के तट की घास चरती, सुदर्शन के हाथ से रोटी के टुकड़े खाती, उसके बच्चे उसके साथ किल्लोल करते और वह निर्बाध छलांगें मारने की अपनी आदत को भूलकर वहां सुख से रहती। एक ओर पिता व अजनबी का वनपशु-वध चलता, दूसरी ओर माता और पुत्र का वह स्नेह।

एक दिन शिकार में जाने के पहले दर्शन और उसका साथी अहाते के चबूतरे पर बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे और डींगें मार रहे थे। बालक सुदर्शन अपनी तैयारी कर बाहर निकला। पिता को कौतूहल तो था ही, इसमें कौन-सी बात है, जो वह उसे नहीं बताना चाहता। उसका रोज-रोज यों छिपकर जाना भी उससे छिपा नहीं था। यों लुक-छिपकर जाते बेटे को प्यार से अपने पास बुलाकर उसने बैठाया। बातों-ही-बातों में वह अपने असली अभिप्राय पर आ गया। बालक में बात को ज्यादा दिन छिपाये रखने में असमर्थ हो रहा था। अपनी सफलता और सुख को छिपाये रखना बड़ा कठिन होता है और वह भी एक बालक के लिए। बड़ी गंभीरता और समझदारीपूर्वक उसने कहा—"आप और काका एक वादा करें, तो बताऊं।

बालकों की मांग कितनी लंबी-चौड़ी होगी, सो उसे पूरा करने में बोझ भी क्या। पिता ने सोत्साह स्वीकृति दी और अपने चिंता काका ने भी सम्मति में सिर हिलाया। बालक सुदर्शन ने अपनी खोज का, अपनी सफलता का वर्णन खूब बखाना, हिरनी और उसके छौनों का वर्णन करते-करते तो वह आंख मूंदकर सुख में लीन हो गया। तत्काल सजग होकर बोला—"और, आपको मेरा कहा मानने का वादा किया है। आप उन काले मृगों का आखेट नहीं करेंगे। दीजिये मुझे वचन?"

पिता ने पुत्र के हाथ पर हाथ रखकर वचन दिया, अपरिचित आगंतुक ने भी।

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा दिन। सूरज सिर पर चढ़ आया, पर अजनबी अभी तक पड़ा सो रहा है। कई दिनों से पास में दिखाई दिये भालू के शिकार की योजना उस दिन के लिए बनी थी, फिर भी वह पड़ा सो ही रहा था। दर्शन के जगाने पर भी वह नहीं उठा और बदन में दर्द बताकर करवट लेकर सो गया।

भालू के शिकार की बात सुनकर सुदर्शन नाचने लगा। अपनी छोटी रायफल थामकर बोला—"पिताजी, आप मुझे साथ ले चलिये। आपका कहा करूंगा।"

"वाह मेरे बेटे!" कहते दर्शनसिंह ने सुदर्शन का हाथ पकड़ा और बाप-बेटे कदम बढ़ते समीप के पेड़ों के झुरमुट में से होते हुए, उधर की टेकरी पर चढ़कर विस्तृत सघन जंगल में विलीन हो गये।

सुंदरी अपरिचित को भुलाकर अपने नित्य-कर्म में लग गयी। कितना काम करना पड़ता है उसे। आंगन और चौका-बरतन ही नहीं, अहाते की फुलवारी भी उसी की सेवा की अपेक्षा करती है। उसे वह सींचती है, संवारती है, विकसित-कुसुमित करती है। बड़े प्यार से वह एक लता की टहनियों को सुलझाकर पास के पेड़ के तने से लिपटा रही थी। अचानक उसके कंधे पर किसी का हाथ टिका ही नहीं, उस हाथ ने उसके कंधे को पूर्ण रूप से ग्रहण करने की क्रिया में जकड़-सा लिया। सुंदरी चौंक उठी, गर्दन घुमाते ही देखा—अजनबी था। उस पकड़ और उस चेहरे पर लिखे भाव ऊंची आवाज में बोल रहे थे, फिर भी अजनबी ने कहा—"सुंदरी, जानती हो मैं यहां क्यों अटका पड़ा हूं? तुम्हें पाने के लिए, सिर्फ एक बार।"

सुंदरी झटका देकर दूर हट गयी; पर अजनबी की छाया तो उस पर पड़ ही रही थी। उस नर-व्याघ्र से वह कैसे बचे? इतनी बेसमझ वह क्यों बन गयी थी? क्या उसने उस व्याघ्र की भूख को पहले नहीं पहचाना था। फिर भी वह क्यों सतर्क नहीं हुई, क्यों उसने इसे यहां रखा?

अजनबी ने आगे बढ़कर सुंदरी की कलाई को दृढ़तापूर्वक पकड़ते हुए कहा—"देख सुंदरी, तू सती पार्वती नहीं, तू मुझसे बच नहीं सकती। दर्शन-सुदर्शन गये हैं पूरब, मैं जा रहा हूं दिलेर-खोह पर। सूरज जब आकाश में आ जायेगा, तब तक वहीं तेरी बाट जोहूंगा, तू नहीं आयी, तो बंदूक की गोलियां खाली कर दूंगा उन काले हिरनों के पेट में। तेरे बेटे का दिल ही नहीं तोड़ूंगा, तू नहीं मानी, तो तेरे बेटे—तेरे उस दर्शन को भी ठंडा कर दूंगा।"

उस हिंस्र-व्याघ्र की वह दहाड़ सुनकर मृगी सुंदरी मूर्च्छित तो नहीं हुई; पर बाकी उसमें कुछ बचा नहीं। पाड़े को घायल कर धीरज से उसे चबा-चबाकर खाने के लिए व्याघ्र वन में विलीन हो गया।

सुंदरी से न रहा गया। जैसी थी वैसी भागी उसी ओर जिस ओर पति-पुत्र गये थे। उस टेकरी पर पहुंच गयी, जिसके उस ओर सुबह-सुबह उसके दोनों सहारे गायब हुए थे। ढलान के साफ मैदान में दूर तक कहीं भी तो वे नहीं दिखाई देते! किधर गये होंगे? कुछ और भागी, भागती रही, सूरज ऊपर उठता रहा। हर कदम वह दूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती जा रही थी, सूरज मध्य आकाश के समीप होता जा रहा था और उस पिशाच की बंदूक हिरनी-परिवार के पास। कौन जाने यह नर-पिशाच क्या कर बैठे ?

बालक सुदर्शन के भोलेपन, उसके विश्वास की बड़ी पैनी तलवार हाथ लग गयी थी उस अजनबी पिशाच के। बड़ी निर्भयता से उसने उसका वार किया था उस निरीह सुंदरी पर। कई दिनों से घात लगाये बैठे शिकारी को जब अपना शिकार यों जाल में फांसने का मौका मिला, तो वह क्यों चूकनेवाला था ? मचान बांधे पेड़ की शाखाओं में बैठे शिकारी की भांति दिलेर-खोह में एक चट्टान पर बंदूक और मनो-कामना साधे बैठा था वह दुष्ट !

सुंदरी बेतहाशा ज्ञान-शून्य भागी चली आ रही थी। जंगल में से निकलते ही सामने ऊंची उठती पथरीली टेकरी दिखाई दे रही थी—काली-काली डरावनी। शिकार पर बैठे गिद्ध की भांति वह क्रूर नर भी बैठा दिखाई दिया—बंदूक सामने खोह की ओर साधे।

सुंदरी को अपनी छांह नहीं दिखाई दे रही थी, मध्याह्न सूर्य की उस धूप में भी उसे अंधेरा-ही-अंधेरा दिख रहा था। वह चीख उठी—"मैं आयी....." अजनबी ने मुड़-कर देखा, सुंदरी ठोकर खाकर गिरी, अज-नबी ने बंदूक कंधे पर रखी, घूमकर उठने वाला ही था कि उस गिरी हालत में भी सुंदरी ने देखा, किसी ने उस पिशाच को आ दबोचा, बंदूक की कर्ण-भेदी आवाज हुई, सुंदरी संज्ञा-शून्य हो गयी। वन को भेदकर बंदूक की आवाज भी शांत हो गयी।

× × ×

दिन चढ़े तक भालू के पंजों का निशान ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जब पिता-पुत्र थक से गये, तो उन्हें बड़े स्पष्ट एक सीधी ओर जाते निशान क्या दिखे, उनका मनोरथ पूरा हो गया। वे निशान तो जा रहे थे दिलेर-खोह की ओर। दोनों कदम बढ़ाकर उधर चले। पंजों के निशान साफ होते जा रहे थे, दोनों चुपचाप दौड़ने-से लगे। अचानक बंदूक की आवाज ने दोनों को रोक दिया; पर दूसरे ही क्षण वे और भी तेज उसी ओर दौड़ पड़े। क्या शिकार अजनबी के हाथ लग गया ?

एक ओर से खोह की पथरीली टेकरी पर चढ़ते ही दर्शनसिंह ने देखा, भालू चारों पंजे ऊपर किये पड़ा है और उसके पेट से खून बह रहा है। पास ही गर्दन-टूटा अज-नबी पड़ा है। सारी स्थिति को क्षण-भर में दर्शन समझ गया। अचानक अनजाने भालू टूट पड़ा है, शिकारी शिकार हो गया है; पर हाथ की बंदूक छूटकर भालू का खात्मा भी कर गयी है।

इसी बीच सुदर्शन चिल्लाकर बोला—"देखो पिताजी, वह मां पड़ी है।"

दौड़कर दोनों पहुंचे। सुंदरी बदहवास-सी पड़ी थी। बेटे ने मां की छाती पर झुक-कर मां-मां पुकारा, पति ने उसका सिर गोद में रखा। सुंदरी ने धीरे-से आंखें खोलीं। वह समझी, वह मरकर स्वर्ग पहुंच गयी है और वहां उसे उसका सहारा पति और प्यारा बेटा फिर मिल गये हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूटते अरमान

गुरदीप

सर जे० जे० इंस्टिटयूट आफ एप्लाइड आर्ट छोड़े उसे अभी थोड़ा समय ही गुजरा था। और इस बीच उसने बंबई के पूरब-पश्चिम से लेकर, उत्तर-दक्षिण तक का कोई भी दफ्तर नहीं छोड़ा था। जूतों की एड़ी घिस-घिसकर आधा इंच से घटकर दो सूत-भर रह गयी थी। और तलवे में म्युनिसिपैलिटी की सड़कों की तरह जगह-जगह गड़े पड़ गये थे। और अंत में मजबूर होकर उसे भी फ्री-लांसर की कतार में नंबर लगा देना पड़ा था।

और आज, उसे अपनी पहली डिजाइन के सौ रुपये बतरा साहब से मिलनेवाले हैं, जिनका 'आर्ट-वर्क' सप्ताह-भर पहले ही वह उन्हें बनाकर दे चुका था। उसकी जरूरतों के मुकाबले में यद्यपि उसकी पहली कमाई के सौ रुपये कुछ भी नहीं है; परंतु फिर भी वह बहुत प्रसन्न है। इसी कमाई के इंतजार में तो पिछले तीन साल से वह अपना मन मारता आया है। अपनी बहुत-सी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ उसको कुछ पैसे अलग भी रखने हैं; उस स्वप्न को पूरा करने के लिए, जो पिछले दिनों उसने हर साल, हर माह, हर सप्ताह, हर दिन और हर पल देखा था।

अगले शनिवार को वसु उसके साथ 'मेट्रो' में जाने को राजी भी हो गयी है। किसी लड़की के कंधे पर हाथ रखकर कोई रोमांटिक फिल्म देखने का स्वप्न इंस्टिटयूट के दिनों में ही पूरा हो जाता, अगर उसे पैसों की तंगी न लगी रहती। उसके इंस्टिटयूट के साथी हर शनिवार को अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के साथ सिनेमा देखने जाया करते थे। वह अपने मित्रों से शनिवार के किस्से सुनता और फीकी हंसी हंसकर रह जाता। और कर भी क्या सकता था? पैसों को उसकी जेब से दुश्मनी जो थी।

रोज सुबह घर से चलते समय एक बार वह सारी रेजगारी को हथेली पर रखकर गिना करता—"दस पैसे घर से बांदरा स्टेशन तक बस में आने के और दस पैसे बांदरा स्टेशन से घर तक जाने के। बांदरा से बोरी बंदर जाने के लिए तो उसके पास तीसरे दर्जे का रेलवे पास रहता ही था। इंस्टिटयूट में रोज उसे एक ड्राइंग पेपर की जरूरत पड़ती थी। सबसे सस्ता पेपर पच्चीस नये पैसे में आता था। सुबह ही वह ड्राइंग पेपर के पैसे अलग रख लिया करता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी-कभार प्रोफेसर की डांट खाकर उसे आठ आनेवाला पेपर भी खरीदना पड़ जाता था। पर उस दिन फिर उसे दोपहर की चाय नसीब नहीं होती थी और बांदरा से घर तक मार्च करनी पड़ती थी। पैदल चलने का उसे इतना दुःख नहीं होता था, जितना, पौना (दस पैसेवाली सादी चाय) चाय छूट जाने का। क्योंकि उसी के सहारे वह 'इंटरवल' का समय काट लेता था। नहीं तो बैठे-बैठे लड़के-लड़कियों को खाते-पीते ताकते रहना पड़ता था और बार-बार थूक निगलना पड़ता था।

रोज की इन्हीं छोटी-छोटी जरूरतों में घर से मिली रेजगारी समाप्त हो जाया करती थी। फिर अपने सहपाठियों की तरह लड़कियों को टैक्सी में 'गेलार्ड' ले जाकर काफी कैसे पिलाता? बालकनी के टिकिट के पैसे कहां से लाता? कई बार उसने पांच-पांच, दस-दस पैसे जोड़ने की कोशिश की; परंतु तीन साल की अवधि में कभी भी, किसी लड़की को चाय तक नहीं पिला सका, बालकनी में सिनेमा दिखाने की बात तो अलग रही। पांच-पांच, दस-दस पैसों के हिसाब में ही वह अपना सारा समय बरबाद करता रहा। और इंस्टिट्यूट के तीन हसीन साल यूं ही गंवा दिये।

आज तो पूरे सौ का नोट उसके पास आने-वाला है। अपने स्वप्न को पूरा करने का उसने निश्चय कर डाला और बस-स्टाप की ओर चलते हुए लगा उंगलियों पर हिसाब लगाने —'जहांगीर आर्ट गैलरी' से 'गैलार्ड' तक, एक रुपया टैक्सी का, दो रुपये दो कोल्ड काफी के। लड़की साथ में होगी, कम-से-कम बैरे पर रोब तो पड़ना ही चाहिये। अतः आठ आने 'टिप' के भी। पांच रुपये लगेंगे 'मेट्रो' की बालकनी की दो सीटों के। सब मिलाकर बने पूरे नौ रुपये। और अगर पिक्चर के बाद बसु ने डिनर की फरमाइश की, तो दस रुपये उसमें खुल जायेंगे। पर कुछ भी हो, नौ-दस उन्नीस। पैसे मिलते ही, इतनी रकम तो अलग जेब में रख ही लेनी है। तभी तीन घंटे बसु के साथ, सिनेमा हाल की अमावस और उसकी जिस्म की गरमाहट का आनंद उठा सकूंगा।

सौ में से उन्नीस रुपये निकल गये, तो बाकी बचे इक्यासी। घरवाले भी बंबई छोड़कर चले गये हैं। रहने का इंतजाम भी मुझे करना होगा। 'शेरे पंजाब होस्टल' का मैनेजर जगतराम चार सीटोंवाले कमरे का एक पलंग मुझे चालीस रुपये में देने को राजी हो गया है। चालीस उसे दे दूंगा, बाकी रहे इकतालीस। पहली कमाई है, कुछ रुपये मां को जरूर भेजने चाहिये। नहीं भेजूंगा, तो सोचेगी, लड़का बंबई में रहकर बिगड़ गया है। इसलिए कम-से-कम दस तो उसको भेज ही दूं। और इधर, बादल भी उठे चले आ रहे हैं। पिछली बरसात तो किसी तरह भीगते-भागते निकल गयी। परंतु इस बार तो एक पुरानी छतरी खरीद ही लेनी है। चार-पांच रुपये में चोर बाजार से अच्छी छतरी मिल सकती है। जूता भी टूटा हुआ है। बारिश में और पचड़पच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। कमीजें भी सब जवाब दे गयी हैं। सस्ती-से-सस्ती कमीज पर भी पांच रुपये तो खर्च आ ही जायेगा। अगर कमीज बनवा लूं, छाता ले आऊं, जूते बनवा लूं, तब इकतीस रुपये में से बचेगा ही क्या? और महीने-भर खाऊंगा क्या? 'उसल-पाव', डबलरोटी और छोले भी बाइस नये पैसे में आते हैं। एक बार उसके दिल ने कहा—'बसु के साथ आज सिनेमा जाने का खयाल छोड़ दे।" पर दूसरे क्षण ही उसे दोस्तों से सुने हुए शनिवार के किस्से याद आ गये और ईस्टिटचूट की लड़कियां याद आ गयीं, जो उसे सूखे कुएं की तरह खाली पाकर छोड़ गयी थीं। और उसने निश्चय कर लिया कि उन्नीस रुपये खर्च करके बसु का साथ तो कर ही रहेगा—चाहे बरसात भीगते हुए चलनी पड़े। जूता अगले पैसों पर भी खरीद सकता हूं। नुक्कड़वाला नत्थु टेलर आठ आने लेकर कमीज का कालर उलट देगा।

"इस तरह अपने आपको तसल्ली देता हुआ वह बतरा साहब के दफ्तर की ओर जानेवाली बस पर चढ़ गया।

पिछले तीन महीनों से उसल-पाव खा-खाकर उसके मुंह का जायका ही बदल गया है। बंबई सेंट्रल के पासवाले सरदार सिंह के 'ढाबे' से तंदूरी-चिकन खाने की उसकी कई दफा इच्छा हुई है। पर बचते तो इक्तीस रुपये हैं। एक दिन सरदार सिंह के 'ढाबे' से तंदूरी-चिकन खा ले या हफ्ता-भर उसल-पाव! और दस रुपये तो कम-से-कम बस के खर्च के लिए भी अलग रखने हैं। चलते-चलते अपने कपड़ों की ओर देखते हुए उसने सोचा—"इक्कीस रुपये में से, एक रुपया आठ आना और निकालना पड़ेगा। बसु के साथ जाना है, उस दिन तो गारमेंट के स्पेशल धुले कपड़े पहनने ही चाहिये। तभी तो उसके ऊपर झुककर

चित्रकार : शणै

पिक्चर देखने का आनंद आयेगा। नहीं तो बेचारी मेरे कपड़ों की बदबू से परेशान होकर दूर-दूर हटेगी। सब खर्चा पूरा करके बचते हैं—उन्नीस रुपये आठ आने। हफ्ते में चार दिन उसल-पाव खाकर किसी तरह एक महीना निकल ही जायेगा।"

बतरा साहब की बिल्डिंग की सीढ़ियां चढ़ते समय कुछ सोचकर वह रुक गया। ऊपर चढ़ने से पहले एक बार और उसने हिसाब लगा लेना ठीक समझा। उसने जेब से नोटबुक निकाली और शुरू से लेकर आखिर तक का सारा हिसाब लाल पेंसिल से उस पर लिख डाला, ताकि बतरा साहब से चेक लेकर, कैश कराने तक में कुछ भूल न जाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर जाकर 'रिसेप्शनिस्ट' से उसने बतरा साहब के विषय में पूछा। 'रिसेप्शनिस्ट' ने एक छपा हुआ कागज उसके सामने कर दिया। उसने बतरा साहब का नाम लिखा और अपने दस्तखत कर दिये। चपरासी कागज उठाकर अंदर चला गया। कुछ देर बाद आकर उसने उससे बैठने को कहा। वहां बैठा वह टाइपिस्ट, क्लर्क, चपरासी आदि को इधर-से-उधर चक्कर लगाते देखता रहा। करीब पौन घंटे के बाद बतरा साहब का सेक्रेटरी केबिन से बाहर निकला और एक सप्ताह पहले उसके द्वारा तय किया गया डिजाइन और सौ रुपये का बिल उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला—"साहब ने कहा है, अब इसकी जरूरत नहीं। आप अपना डिजाइन और बिल ले जा सकते हैं। उन्होंने दूसरे आर्टिस्ट से पचास रुपये में डिजाइन बनवा लिया है।"

वह सुन्न पड़ गया। हाथ की डायरी छूटकर नीचे गिर पड़ी। और वही पृष्ठ खुल पड़ा, जिस पर अभी-अभी उसने लालपेंसिल से सौ रुपये का सारा हिसाब लिखा था।

इलाज

मोटर की टक्कर लगने से घायल हुए एक व्यक्ति को जब लोग एक डाक्टर के पास उठाकर ले गये, तो डाक्टर कहने लगा—"भाई, मैं तो जानवरों का डाक्टर हूं।" मैं इसका इलाज नहीं कर सकता।

इस पर उन लोगों ने कहा—"डाक्टर साहब, तब तो हम लोग इसे ठीक स्थान पर ही इलाज के लिए ले आये हैं। अगर यह आदमी होता, तो सिपाही का संकेत पाये बिना सड़क क्यों पार करता?"

मैं भूल ही गया

दर्शन-शास्त्र के एक प्रोफेसर को भूल जाने की आदत थी। एक विद्यार्थी से बोले—"अच्छा तुम हो। बहुत दिनों के बाद मिले!" विद्यार्थी ने उत्तर दिया—"प्रोफेसर साहब, कल क्लास में मैंने ही तो आत्मा की चेतन तथा अचेतन अवस्था के बारे में अनेक प्रश्न किये थे और आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया था।"

"अच्छा वे प्रश्न तुमने ही किये थे। मैं तो कतई भूल ही गया। और देखो, आज शाम को तुम मेरे मकान पर आना। मैं तुम्हारी मुलाकात एक बड़े होनहार विद्यार्थी रमेश से कराऊंगा, वह भी तुम्हारे ही जैसे प्रश्नों में रुचि रखता है।"

"वह विद्यार्थी तो प्रोफेसर साहब मैं ही हूं।"

"अरे, अरे क्या मिस्टर रमेश तुम्ही हो? क्या तुम्ही आज शाम को मेरे मकान पर आ रहे हो।

"जी प्रोफेसर साहब! कृपया ७ बजे शाम को मुझे मिलना मत भूल जाइयेगा।"

"अरे रमेश, तूने क्या मुझे ऐसा मुलक्कड़ समझ लिया है!" —एम० आर० गुप्त

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्ता विलास

- पृथ्वी का स्वर्ग
- पाकिस्तान का निर्वाचन
- रूस की धर्म-निरपेक्षता
- बंबई की मरीन ड्राइव
- नाइजीरिया की आजादी

मृत्यु से पूर्व सर विंस्टन चर्चिल ने अपनी शवयात्रा के संबंध में इच्छा प्रकट की थी-"मेरा शव खूब सैनिकों और बाजे-गाजे के साथ ले जाया जाये।" ब्रिटेन ने चर्चिल को अपूर्व राजकीय ठाट-बाट के साथ विदाई दी। अनेक राजा, रानियां, राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री संस्कार में उपस्थित हुए। ११३ राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। संसार के ऐसे सभी यशस्वी पुरुष वहां आये, जिन्हें देखने को लोग उमड़ पड़ते हैं; मगर उन जीवित-जलते दीपों का प्रकाश आज फीका पड़ गया था। महारानी एलिजाबेथ, प्रेसिडेंट द गोल, आइसनहोवर भी वहां उपस्थित थे; मगर हजारों की भीड़ में से किसी ने पलक उठाकर भी इनकी ओर देखना नहीं चाहा। सबकी आंखें चर्चिल के ताबूत को ही एकटक देख रही थीं। उस एक बुझे दीपक का प्रकाश इन सैकड़ों जलते दीपों से अधिक उजला था।

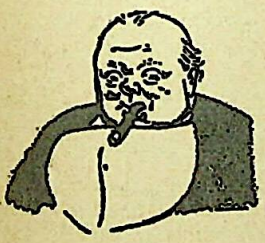

व्यंग्यचित्र : डेविड लो

× × ×

पृथ्वी पर कई स्वर्ग हैं। झीलों का देश कश्मीर और हिम से ढंका स्विट्जरलैंड अब तक इनमें मुख्य थे। मगर अब सबसे पिछड़े और सूखी रेती से भरे कुवैत का नाम भी उनमें जुड़ गया है, जहां के ३५ लाख व्यक्तियों में से औसतन प्रति व्यक्ति की वार्षिक आय एक लाख रुपये है। वहां शिक्षा, चिकित्सा और टेलिफोन-ये चीजें सबके लिए मुफ्त हैं। यही देश है जहां एक वृक्ष को हरा-भरा रखने के लिए ६५० रुपये सालाना खर्च किये जाते हैं। इससे आधा धन भी हम भारतवासी एक इंसान को जिंदा रखने के लिए खर्च नहीं कर पाते।

× × ×

बंबई को उसके ज्योतिषियों की फौज के कारण दकियानूस कह दिया जाता है। मगर संसार के सर्वाधिक फैशनपरस्त शहर पेरिस को क्या कहेंगे, जहां डाक्टर ५१४ व्यक्तियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इलियट

के पीछे एक, पादरी ५०० के पीछे एक है; मगर ज्योतिषी १२० नागरिकों के पीछे एक है; और जहां के ५३ प्रतिशत निवासी फलित ज्योतिष और ज्योतिषियों पर अंधी श्रद्धा रखते हैं ?

× × ×

अंग्रेजी के आधुनिक कवियों में सर्वश्रेष्ठ इलियट ने अनेक नवीन परंपराएं चलायीं। उनमें एक थी अपने से ४० साल आयु छोटी लड़की से विवाह करना। हमें निश्चय है इलियट को कविगुरु माननेवाले नयी पीढ़ी के भारतीय कवि इस कार्य को आधुनिकता के नाम पर नहीं अपनायेंगे।

× × ×

पाकिस्तान का निर्वाचन-कार्य निर्विघ्न हो गया। केवल ३३ अयूब-विरोधी मतदाता अयूब के गांव से आये पठानों के हाथों मौत के घाट उतरे, केवल तीन सौ जख्मी हुए, और केवल २,००० आदमियों के घर लूटे गये। ये आंकड़े कराची के लियाकतावाद के हैं। अन्य स्थानों पर जो हुआ, वह अभी अखबारों को मालूम नहीं। उपर्युक्त घटना भी अमरीका के एक प्रसिद्ध पत्र से ही हमने ली है।

× × ×

केनिया आजाद हो गया है। मगर अभी वह अपने उन ६,००० जादू-टोना करनेवालों के चंगुल से आजाद नहीं हुआ है, जो केनिया की ८० लाख में से ७० लाख आदमियों की चिकित्सा करते हैं। भारत के भी कितने लाख (या करोड़) लोग अभी इन जादू-टोना वालों के गुलाम हैं—यह जानने का प्रयत्न भी होना चाहिये।

× × ×

हिन्दू शिवजी की सवारी नंदी बैल की पूजा करते हैं। "वृषभ-पूजन की इस परंपरा का मूलस्थान टर्की के दक्षिण में अनातोलिया है"—यह विलक्षण घोषणा पुरातत्व खोजी ने अभी हाल में की है। उसे २२ फुट भूमि की खुदाई के बाद जमीन में गड़े अवशेष मिले हैं, उनमें वृषभ-मूर्तियों की मुख्यता है। उसके अनुसार ये देव-मूर्ति ३००० से ८००० ईस्वी पूर्व की हैं। पर कौन—पीछे कौन की बात भुला दें, तो भी बात तो साबित हो ही जाती है कि शिवजी की सवारी का सम्मान ८००० वर्ष पहले टर्की में भी होता था।

× × ×

बंबई के मरीन ड्राइव से लगी जमीन का टुकड़ा १० हजार रुपया प्रति गज की दर से बिका है। ऐसी एक एकड़ जमीन की कीमत ५ करोड़ रुपया होगी। टोकियो में भी आज ऐसी जमीन का दाम लगभग ६ करोड़ रुपया है। जापान में शहरी जमीन का मूल्य

क्रिस्मस ट्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए अधिक है कि वहां भूचाल के कारण बहुत ऊंची इमारतें नहीं बन पातीं और बंबई में इसलिए कि यह तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ है। प्रकृति पर विजय पाने का मूल्य मनुष्य को किसी-न-किसी रूप में देना ही पड़ता है।

× × ×

रूस अब इतना धर्म-निरपेक्ष नहीं रह गया है, जितना कुछ वर्ष पूर्व था। इस वर्ष क्रिस्मस के दिनों में वहां के होटलों और दफ्तरों में १ लाख से अधिक त्योहारी वृक्ष (क्रिस्मस ट्री) सजाये गये और ८,००० टन ज्यादा फल बिके। क्रिस्मस के लाखों बधाई-पत्रों को उसी दिन समय पर घरों में पहुंचाने के लिए हेलिकाप्टरों का सहारा लेना पड़ा।

× × ×

ढेड़ सौ वर्ष पहले बंबई की बहुत-सी जमीन विदेशी राजकीय सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप सनद पर दी गयी थी। जमशेदजी वाडिया को ब्रिटिश सरकार ने राजभक्ति के इनाम में बंबई की हजारों वर्ग गज जमीन कौड़ियों के दाम में दी थी। कामजी कावसजी को भी १८३४ में, लालबाग दाभोलकर रोड की १ लाख २० हजार वर्ग गज जमीन ९९ साल के पट्टे पर नाममात्र मूल्य पर दी गयी। उन्हीं दिनों गोकुलदासपुरा की जमीन ६ पाई प्रति गज के हिसाब से नीलाम हुई थी। जमीन तो आज भी वही है—सौ साल पहले वह मिट्टी की कीमत देती थी, आज वह स्वर्णमयी दिखाई देती है। फर्क निगाहों का है, वस्तु का नहीं।

× × ×

ख्रुश्चोव

विशाल आकार की उत्पादन-संस्थाएं तो भारत में बहुत बन गयी हैं; मगर विशाल आकार के स्टोर नहीं बने। अमरीका के मेसीज फर्म के स्टोरों का अनुकरण यहां भी हो सकता है। उसकी साठ शाखाओं में ११ हजार नियमित वेतन के नौकर काम करते हैं। इन विशाल स्टोरों में १,४०० सेल्समैन ऐसे हैं, जो दुनिया की मुख्य ४२ भाषाओं के खरीदारों से बात कर सकते हैं। इस स्टोर का अपना पुलिस-दल है। इनकी रक्षा स्वयं-चलित बिजली की गुप्त अलार्म घंटियों द्वारा होती है।

× × ×

रूस में एक और परिवर्तन आ गया है। अभी तक पदच्युत प्रधानमंत्रियों को उनकी सेवाओं के बदले मृत्यु, निर्वासन या अपमान का पुरस्कार दिया जाता था। किंतु निकिता ख्रुश्चोव को लगभग ३,००० रुपये मासिक की पेंशन दी गयी है। साथ ही उन्हें अपनी बड़ी मोटर के उपयोग का अधिकार भी दे दिया गया है।

× × ×

अभी हाल में रूस के प्रधान मंत्री कोसीगिन उत्तर वियतनाम की यात्रा पर जाते हुए जब पीकिंग के हवाई अड्डे पर उतरे, तो उनका स्वागत करने चीनी राजपुरुषों में

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से अकेले चाऊ एन-लाइ आये। मुट्ठी-भर चीनी अफसरों के साथ विमानस्थल पर जलती हुई चार लाल बत्तियों के अतिरिक्त कोई प्रकाश भी वहां न था। चाऊ के होंठों से सूखी हंसी के नाटक के साथ केवल ये शब्द निकले—"आपसे मिलकर खुशी हुई।" पांच मिनिट की औपचारिक भेंट के बाद चाऊ एन-लाइ कोसीगिन को वहीं अकेले छोड़-कर खुद वापस चले गये। जिन्हें ख्रुश्चोव के राजनीतिक पतन के बाद चीन और रूस के संबंधों में सौहार्द आने की आशा थी, उन्हें बड़ी निराशा होगी।

× × ×

नाइजीरिया की चार साल की आजादी के बाद वहां भी लोकतंत्र का नाटक खेला गया। मतदान वहां भी निर्बाध और शांति-पूर्ण समाप्त हुआ। कोई विशेष दुर्घटना नहीं घटी।

मतदान से पूर्व ही वहां विरोधी दल के नेता को १० वर्ष की कैद का हुक्म दे दिया गया था और उनके दल के ४० उम्मीद-वारों को अपराधी घोषित करके उनके पर्चे बंद कर दिया गया था। शेष विरोधियों को शांत करने के लिए मशीनगनों का प्रयोग किया गया। जनता द्वारा कुछ पुलिस चौकियां जला दी गयीं, अन्यथा निर्वाचन अत्यंत शांतिपूर्ण होता। 'जनतंत्र' की सरकार जय हुई।

☆

क्या मैं पूछ सकता हूं ?

मजिस्ट्रेट ने त्योरी चढ़ाकर क्रोध से पूछा— "तुम फिर आ गये ?"

मुल्जिम खामोश रहा।

"इस बार फिर जुआ खेला ?"

मुल्जिम मुस्करा दिया।

"तुम्हें मालूम है, जुआ खेलना बहुत बड़ा जुर्म है ?" मजिस्ट्रेट ने बुरी तरह बिगड़कर कहा।

"हुजूर, मुझे मालूम है।" मुल्जिम ने धीरे-से कहा।

"तो फिर जुआ क्यों खेला ?"

"क्या अर्ज करूं हुजूर? रात जब मैं हुजूर को टैक्सी में बिठाकर घर छोड़ने गया, तो हुजूर नशे में चूर थे। और नशे की हालत में रह-रह कर चार सौ रुपये का जिक्र फरमा रहे थे जो सरकार ने क्लब में जुए में हारे थे। जब मैं हुजूर को घर पहुंचाकर लौटने लगा, तो हुजूर ने दस रुपये बख्शीश दिये। रास्ते में कुछ साथी मिल गये। हुजूर के दिये हुए दस रुपये मैं जुए में हार गया।

मजिस्ट्रेट ने कुछ याद करते हुए फौरन हुक्म दिया—"बरी।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाय मेरी तेन्युल !

शांति के नाम पर युद्ध में जनता लूटी-कुचली जाती है....सत्ताधारी इस घिनौने खेल में अपना साधन बनाते हैं पेट की खातिर खाकी वर्दी पहनेवाले निरीह सैनिकों को.....कोरिया की एक दर्द-भरी कहानी मंगदिनी की सप्राण लेखनी से....रूपांतरकार : अनुराग शर्मा ।

पेड़ों के लिबास में यात्रियों का दल पीली रेती पर पैर घसीटता हुआ चला जा रहा था। आगे-आगे थे मर्द और पीछे औरतें व बच्चे।

सबके-सब बड़ी ही अधीरता से सामने फैले हुए रास्ते को देख रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि यह रास्ता समाप्त ही न होगा। चलते-चलते तीन दिन और दो रातें बीत चुकी थीं; लेकिन अभी तक मंजिल का पता न था। सूरज को देखकर उन्हें यह जरूर मालूम होता था कि दिग्भ्रम नहीं हुआ है। लेकिन रास्ता समाप्त भी तो हो ! एक मील खत्म हुआ नहीं कि दूसरा निकल आता था।

"हम लोग ल्यू शहर में कब पहुंचते होंगे ?"

"शायद कल।"

बालू पीले फेन की तरह रास्ते के किनारे-किनारे दुंद बांधकर उड़ रही थी, मानो रेगिस्तान में घटा छा रही हो। मगर यह घटा सूरज की किरणों से पनाह नहीं दे सकती थी ! जलती हुई किरणें राहियों को भून रही थीं। उनकी चमड़ी जलकर भूरी पड़ती जा रही थी और प्रायः उसमें से जलने की गंध भी निकलने लगी थी।

"ल्यू पहुंचकर खाने-पीने को कुछ मिल सकेगा क्या ?"

"अजी, हमें खाने को कौन देता है !"

"काश अगर मैं अभी मर जाऊं ! हां, अभी, तुरंत। जिंदगी तो पहाड़ हो रही है।" किसी ने भर्रायी हुई आवाज में कहा।

औरतें आपस में फुसफुसाने लगीं—"हाय, हाय, हेई काका फिर रोने लगे।"

"भगवान मुझे उठा ले, मैं बिलकुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकेला हूं, मेरा अब रहा ही कौन है ?" हेई के मुख से फिर एक चीख निकली।

अपनी बच्ची तेन्युल के मरने के बाद से हेई बराबर यों ही चिल्लाता रहता था—"खुदा गारत करे इन सिपाहियों को ! अगर एक भी सिपाही मेरे हाथ में पड़ जाये ....हां, कोई भी.....तो.....मगर तेन्युल तुम, तुम नहीं रही बेटी, तुम नहीं रही....."

हेई को विक्षिप्त देखकर बच्चों की हंसी आती, किंतु उनका हास्य रुंधकर गले में ही रह जाता। मर्द सुनकर निःशब्द और विषण्ण रह जाते; क्योंकि इस कराह और कचोट का अर्थ उन्हें मालूम था। उन्होंने ही कुछ दिन पहले, तेन्युल की लहू से लथ-पथ लाश लाकर बूढ़े हेई को दी थी। उफ, तेन्युल की वह लाश ! अंग-अंग सूजा हुआ और नीला, जांघें लहू से शराबोर। लाश देखने से ही मालूम हो जाता था कि बेचारी किस प्रकार तड़प-तड़पकर मरी होगी।

केवल हेई को ही नहीं, और लोगों को भी अपनी मुसीबतें याद थीं—बेबसी और बेकसी की कितनी ही कहानियां। जो सदा के लिए बिछुड़ गयीं वे पत्नियां तथा अत्याचार और आतंक से स्याह पड़ गये उनके वे चेहरे। क्या उनके दिल के जोर-जोर से धड़कने और घुटनों के कांपने का सबब यह गर्मी थी ? वे कुछ भी समझ नहीं पाते और दांत भींचकर आगे चल देते।

अचानक कहीं से कोई गंध आयी। मानो कहीं बारूद महक रही हो, या जैसे कोई लाश सड़ रही हो। लेकिन कहीं कुछ दिखाई न पड़ा। चारों ओर केवल सूर्य के ताप से धुंधुआता हुआ काला क्षितिज था, जो तवे पर चढ़ी हुई किसी बड़ी-सी रोटी के जली हुई काली कोर के समान दिखाई पड़ता था।

"मालूम होता है, जैसे कोई कहीं रो रहा हो।" एक बच्चे ने डरते-डरते कहा।

"क्या बकता है ?" कहकर उसके बाप ने उसे चुप कर दिया। लेकिन मां की आंख भी किसी आशंका में दबी हुई निकली।

औरतों को प्रेत की आशंका हुई। निर्जन रेगिस्तान, यह दहकती हुई आंखें जहां तक जाती हैं, सिवा अपने के जीवित चीज दिखाई नहीं पड़ती; फिर रो कौन सकता है ? इस बियाबान में जिंदा है ?

लेकिन बच्चे को शांति न मिली। उसने दबी जबान से फिर कहा—"मैंने जो कहा ठीक है।"

और सचमुच बच्चे का कहना ठीक था। कहीं पास ही कोई कराह रहा था।

"क्या प्रेत खुली जगह में निकलते हैं ?" एक ने यह बात कही और सभी की हड्डी-हड्डी में कंपकंपी पैदा हो गयी।

"किधर, कौन रो रहा है ?" मर्द तरफ नजर दौड़ाने लगे।

पता चला कि एक ऊंचे टूह पर निष्पत्र वृक्ष के बीच एक आदमी कराह है। कमर से ऊपर वह बिलकुल नंगा पाजामा उसका फटा हुआ था और एकदम काली पड़ गयी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मुझे मार डालो," उस आदमी ने कराह के साथ कहा—"मुझे मार डालो। अब मुझसे सहा नहीं जाता—आह....."

"तुम्हें मारना कौन चाहता है ?"

"नहीं नहीं, मुझे मार डालो, यह मेरी आज्ञा है। अब अधिक मैं सह नहीं सकता।"

तब उन्हें पता चला कि उसकी काया सड़ क्यों पड़ गयी थी। उसकी पीठ और कंधे, दोनों ही तलवार के घावों से भरे हुए थे। लाखों-लाख चींटियां उन घावों पर छायी हुई थीं। चींटियों की कुछ ऐसी भीड़ थी कि घाव की गहराई जानी नहीं जा सकती थी। ऊपर-नीचे, अगल-बगल, हर ओर चींटियों का हुजूम था, मानो वह आदमी चींटियों का एक लंबा बिल हो! पर चींटियों के नये दल अभी खबर पाकर आ रहे थे। शरीर पर अब एक चींटी के भी पैर रखने भर की जगह बाकी न थी। फिर भी वे एक दूसरे पर चढ़कर घाव की गहराई में नीचे उतरने के लिए कोशिश कर रही थीं। जीवित मनुष्य के मांस को काट रही थीं। आदमी अभी मरा नहीं था। चींटियां उसे जिंदा ही निगलती जा रही थीं।

"मुझ पर दया करो, मैं इसे सह नहीं सकता, मैं ....." बची-खुची सांस के बल को समेटकर उस आदमी ने कहा।

सभी लोगों को बड़ी घबराहट हुई। किंकर्तव्यविमूढ़ वे एक-दूसरे को देखने लगे। उनका शरीर थर-थर कांप रहा था, मानो चींटियों की फौज उनके दिल और दिमाग में से होकर कूच कर रही हो।

"तुम कौन हो ?" एक ने थरथराती हुई आवाज में पूछा। लेकिन तुरंत ही उसे ऐसा भान हुआ, मानो सवाल ही व्यर्थ हो।

"जबर्दस्ती भरती किया गया एक मजदूर। बेगार के लिए लोगों ने मुझे जबर्दस्ती पकड़ लिया।" उस आदमी ने कांपती हुई आवाज में कहा, जैसे कोई मच्छर भनभना रहा हो।

सुनते ही लोग फूंक मार-मारकर उसके शरीर पर से चींटियों को भगाने लगे। फूंक लगते ही चींटियां हड़बड़ाकर इधर-उधर दौड़ने लगीं, मानो काली स्याही सफेद जल में गिरकर फैल रही हो। लाखों तो भाग गयीं और बहुत-सी घाव की गहराई में उतरकर लहू से चिपक गयीं।

उस आदमी ने बड़ी ही कठिनाई से सांसों को संभालते हुए धीरे-धीरे अपना किस्सा कह सुनाया। कैसे वह जबर्दस्ती बेगार में पकड़ा गया, कैसे एक दिन बेहद थका हुआ होने के कारण उसने काम करने से इन्कार कर दिया, कैसे उस पर बेंत पड़ने लगे और जब उसने बेंत से अपनी रक्षा की कोशिश की, तब कैसे उसके अंग-अंग पर तलवार के वार किये गये – यह सब उसे ठीक-ठीक याद नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। लेकिन शायद वह तीन-चार दिनों से वहां पड़ा हुआ था।

जब उसकी कहानी समाप्त हो गयी, उसने फिर आजिजी के साथ कहा—"मेरी दीन दशा पर दया करो और किसी तरह जल्दी-से-जल्दी मेरा खात्मा कर दो।"

वह इन लोगों को देखना चाहता था; लेकिन पलक उठाने की ताकत भी उसमें शेष न थी। बच्चे चींटियों को कुचलते हुए उसके पास चले आये। औरतें भी जमा हो गयीं। लेकिन उसकी शक्ल देखते ही घबराकर चीखती-चिल्लाती तथा अपने बच्चों को घसीटती हुईं वे वहां से कुछ दूर पर जा खड़ी हुईं।

उस घायल मजदूर को अपने साथ कर लेने के सिवा कोई चारा न था। उन लोगों ने आगे की ओर देखा। वही अनंत पथ, वही पीला आसमान, नीचे वही जलती हुई धरती, ऊपर वही दहकता हुआ सूर्य और चारों ओर वही धुंधुआता हुआ क्षितिज। इस दुनिया में एकमात्र वे ही जीवित प्राणी थे। और कहीं कोई कुत्ता या चिड़िया भी नहीं। ऐसी अवस्था में एक घायल राही को साथ लेना क्या बुद्धिमत्ता का काम होगा?

वह बेचारा मजदूर उनसे एक ही भीख मांग रहा था—"किसी तरह मुझे इस नरक से जल्द छुटकारा दो। मेरे प्यारे भाइयो, मुझ पर दया करो और मुझे मार डालो।"

लेकिन लोग सोच रहे थे—यह हमारा भाई है; इसकी मुसीबतें भी वैसी ही हैं, जैसी हमारी; हम साथ जियेंगे और साथ ही मरेंगे। "भाई तुम घबराओ नहीं। और उन्होंने उसे कंधों पर उठा लिया।

कुछ औरतों को अपने पतियों की याद हो आयी, जो जबरन बेगार के लिए पकड़ कर ले जाये गये थे, और जिनके संबंध कोई खबर उन्हें फिर नहीं मिली। वे रोने कलपने लगीं और चीख-चीखकर मजदूर भरती करनेवालों को कोसने लगीं।

मर्द मौन क्रोध से लबालब थे। उनकी मुट्ठियां कसी और तनी हुई थीं। अगर उस वक्त कोई फौजी सिपाही उनके सामने आ जाता, तो उसकी तलवार और बंदूक की कुछ भी परवाह न करके वे उस पर टूट पड़ते और उसे कच्चा ही चबा जाते।

धीरे-धीरे शाम हो गयी। और कोई आश्रय न देखकर लोगों ने सोचा, पासवाले टूटे-फूटे मंदिर के खंडहर में किसी प्रकार रात बिता दी जाये।

कारवां वहीं जाकर उतरा। बेचारे मजदूर में कुछ भी जान न रह गयी थी। उसने प्रायः सांस लेना भी छोड़ दिया था।

एक प्रकार की भयानक शांति छा गयी। सभी लोग दम तोड़ते हुए मजदूर को घेर कर खड़े हो गये। किसी के मुंह से कोई बात नहीं निकलती थी। मजदूर बेचारा अब कराह भी नहीं सकता था। औरतों की सांस रुकती जा रही थी। बच्चे मन-ही-मन डर रहे थे कि कोई बड़ी बात हो गयी है। वे अपने मां-बाप की पांत के ऊपर से कुछ झांकने की कोशिश करते थे; लेकिन कुछ देख नहीं पाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मजदूर के होंठ धीरे-धीरे मटमैले होने लगे।

अचानक घबरायी हुई मुखमुद्रा के साथ वह चिल्ला उठा—"वह देखो.... कमीने हुने, कमीने.... देखो तो, खुदा के नाम पर.....अगर एक भी फौजी आदमी मेरे हाथ पड़ जाये .....हाय मेरी तेन्युल....."

बूढ़े की बात पर किसी ने विशेष ध्यान न दिया। लेकिन सभी मन-ही-मन कह रहे थे कि सिर्फ यह मजदूर नहीं, सिर्फ यह तेन्युल नहीं, बल्कि हम लोगों की सारी दौलत—बेटे, स्त्रियां, बेटियां, घर और छोटे-छोटे खेत, सारी संपत्ति—इस मजदूर और तेन्युल की बेटी तेन्युल की तरह बरबाद की जा रही है।

और हर एक के दिल में एक ही कचोट थी—"काश, मेरे हाथ में कोई फौजी आदमी आ पड़ता....."

और सचमुच, अगर बालू और धूल के गुबार उड़ते न होते, तो उन्हें दिखाई पड़ता कि सामने के ढालू रास्ते से तीन सिपाही उधर चले आ रहे हैं। आंधी में उड़ती हुई धूल कभी उन्हें ओझल कर देती थी और कभी वे साफ दिखाई पड़ते थे। तीनों के फौजी लिबास फटे-चिटे थे। एक की टांग में घाव था। वह दो सिपाहियों का सहारा लेकर चल रहा था। अगल-बगल के सिपाहियों में से एक का चेहरा सूखा हुआ और दूसरे का कुछ फूला हुआ था। ढालू के ऊपर आने पर घायल सिपाही को सामने देखकर घबराते हुए कहा—"अरे बाप रे, ये तो गैरफौजी आदमी हैं!"

बाकी दो सिपाहियों को मानो भय के मारे लकवा मार गया। "अब अपने को समाप्त ही समझो।"

जनता फौजियों के साथ क्या बर्ताव करती है, यह उन्हें अविदित न था। लेकिन अब उपाय ही क्या है? एक दिन और दो रातों से वे बराबर चलते ही आ रहे हैं। और इस बीच में रोटी की कौन कहे, खाने को उन्हें चना-चबैना भी नहीं मिला था। पानी के अभाव में वे अपने होंठों का पसीना चाटते आ रहे थे।

"हाय, हमारे हाथों में आज बंदूक नहीं। अगर बंदूक होती, तो इन्हें बतला देते कि हम कौन हैं।"

वे एक हारी हुई टुकड़ी के सदस्य थे और उनकी बंदूकें दुश्मनों ने छीन ली थीं। दुबले आदमी ने कहा—"इधर जाओ या उधर, मौत दोनों ही ओर है। हाय रे दुर्भाग्य! हमसे दुश्मनों को भी नफरत है और जनता को भी।"

"हमारा कसूर क्या है? क्या हमीं ने लड़ाई शुरू की? और हमें इससे फायदा क्या हुआ?"

"हां, हां, तुम तो अपने मालिकों के समान ही दूध के धुले हुए हो!"

"लड़ाई तो सिपहसालार के हाथ में है। वही हुक्म दिया करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

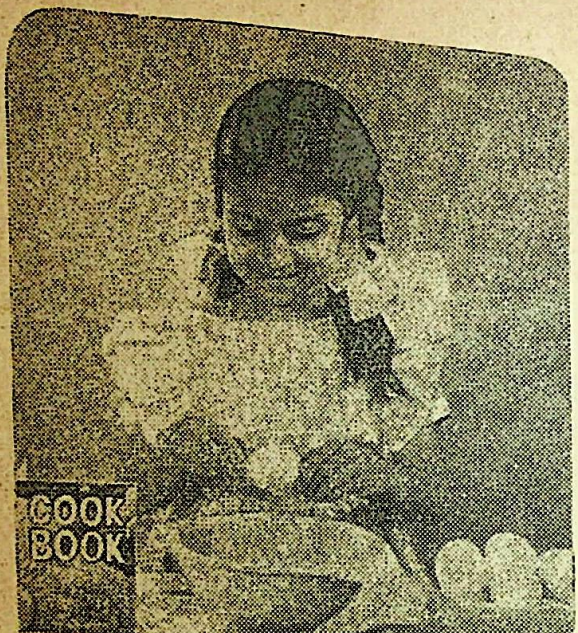

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

एक नन्ही बालिका के लिये खाना पकाना सीखना एक अच्छी महिला बनने की तैयारी है। आपको एक दिन उसे सिखाना ही पड़ेगा— जितना जल्दी सिखायें उतना ही अच्छा है।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूड़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूड़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया। आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें— उन्हे दांतो व मसूड़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूड़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूड़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

O.6

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम तो .....हम तो..... केवल.... बना ...."

"इन कुत्तों की बातें न सुनो।" औरतों ने कहा—"सभी सिपाही एक-से ही पाजी होते हैं।"

"हमारा कोई बस नहीं। सिपहसालार मारने का हुक्म देता है और हम....."

"इसकी बात सुनो मत!"

"हम क्या कर सकते हैं? हम तो भाड़े के टट्टू हैं। हम भी एक समय किसान थे। हमें भी सिपाहियों से नफरत थी। खेती इसलिए छोड़ दी कि उससे पेट नहीं भरता था। हमारे मां-बाप भी तुम्हारी ही तरह कहीं भटक रहे होंगे। कौन जाने जिंदा हैं कि मर गये। कौन जाने तुम्हारी तरह ही वे भी फौजी आदमियों को जिंदा दफनाने के लिए उत्सुक हों। हम अपनी ही दुनिया से निकाले गये अछूतों के समान हैं। शायद हमारे मां-बाप हमें अपना बेटा, हमारे भाई-बन्द हमें अपना भाई और हमारी स्त्रियां हमें अपना पति भी न समझें। लेकिन अब तो हमारी कहानी ही खत्म हो चुकी। हमारे अभी साथी हम तीनों को दुनिया की आग में जलने के लिए छोड़कर न जाने किधर चल गये। हम क्या करते? भाइयो, हमारा क्या कसूर है?" कहते-कहते दुबले सिपाही की आंखों से आंसू टपकने लगे।

"अरे, यह रो रहा है!"

बच्चों को अचरज हुआ कि क्या फौलादी आदमी भी रोते हैं?

जो आदमी उस दुबले घायल सिपाही को पकड़े हुए थे, उनके हाथ बिलकुल शिथिल पड़ गये और सिपाही जमीन पर हो रहा। उस आदमी के सिर का पसीना टपककर उसके शिकार के कंधे पर गिरा।

मोटा सिपाही बोला—"लड़ाई कौन चाहता है? सिपाही भी आखिर आदमी की शक्ल में ही पैदा होते हैं और उनके भी माता-पिता होते हैं। हम लोगों के अपने गांव में ...."

"तुम्हारा घर कहां है?"

"मारेज में।"

"और तुम्हारा?"

"ये दोनों देओ के हैं।" मोटे आदमी ने जवाब दिया।

"फौज में भरती होने के पहले तुम क्या करते थे?"

"खेती करते थे", उसने बड़ी ही उदासी के साथ कहा—"हमारे गांव के सभी लोग..."

"खेती? तो इस सत्यानासी धंधे में क्यों पड़े? किसने तुम्हें सिपाही बनने को कहा?"

इतने में ही खंडहरवाले यात्रियों में से किसी ने उन्हें देख लिया। वह चिल्ला पड़ा—"वह देखो सिपाही! ये रहे सिपाही!"

सबकी आंखें एक ही मकसद से एक ही तरफ को मुड़ीं। मानो किसी टुकड़ी को कूच का कमान मिल गया हो।

पलक मारते लोग सिपाहियों पर टूट पड़े। एक नौजवान ने दुबले सिपाही की टांग खींचकर उसे नीचे गिरा दिया और उसके कंधे में अपने दांतों को इस जोर से धंसा दिया कि मांस का लोथड़ा बाहर निकल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साड़ियाँ, कमीजें, बच्चों के वस्त्र...हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, बेदाग साफ़...इसलिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है। सारी धुलाई घर में सर्फ़ से कीजिये!

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

SU. 33-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता। सिपाही उठने की कोशिश कर रहा था; किंतु उठ नहीं पाता था। बाकी दो सिपाही भी गिरा दिये गये और सब पर बुरी तरह लात-घूंसे की मार पड़ने लगी।

"खाल खींच लो।"

"जरा कसकर जमाते चलो।"

"जान न बचने पाये।"

एक ने जरा ढील दी और दम लेते हुए कहा—"अब कुटमस में ताकत लगाने की जरूरत नहीं। सालों को जिंदा ही गाड़ डाला जावे।"

सभी का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ। मुक्कों की वृष्टि कुछ मंद हो गयी।

थोड़ी दूर पर हेई रुआं-सी आवाज में चिल्ला रहा था—"बस मार ही डालो, पाजी कुत्ते, बस मार डालो और इनका मांस खा जाओ.....हरामी, पाजी, फौजी कुत्ते।"

काका हेई के प्रस्ताव पर सभी हामी भरने लगे—"हां, कई दिनों के बाद आज भोजन भी मिल जायेगा, और वह भी सस्ता ही।"

घायल टांगवाला सिपाही मुंह के बल जमीन में गिरा हुआ था। उसके दांतों की नीली पंक्ति मुंह से निकल गयी थी, और उसके मुंह में गर्म बालू ठूंसी जा रही थी।

"सबसे पहले मुझे ही मार डालो।" उसने धीमी-सी उखड़ी आवाज में कहा।

"पहले यह क्यों मारा जाये?" एक आदमी ने कहा।

अंग-अंग से कांपते हुए घायल सिपाही ने कहा—"क्योंकि मैं अब मर रहा हूं।"

"हम तुम्हें सीधे नहीं मारेंगे। पहले खूब सता लेंगे, तब कहीं मारेंगे।"

"हां-हां, तुम्हें खूब सतायेंगे, पाजी कुत्ते। तुम्हीं लोगों ने सारा जुल्म ढाया है।"

"हां, इन जानवरों ने कितने मासूम लोगों को लूटा-खसोटा होगा।"

"पहले तलाशी ले ली जाये, शायद कहीं कुछ छिपा रखा हो।"

लेकिन मोटे सिपाही के पास खेलने के जो दो पांसे थे, उनके सिवा और किसी के पास कुछ भी न निकला।

बच्चों ने सिपाहियों पर धूल फेंकना शुरू किया। वे धूल फेंकते थे और खुद उससे बचने के लिए सिर को पीछे घुमा लेते थे। सिपाहियों के नाक, कान, आंख और मुंह बालू से भर गये थे। बच्चों के साथ-साथ उनके मां-बाप भी हंस रहे थे। लेकिन सिपाहियों की आंखों से आंसू नहीं निकलते थे।

सिपाही सिर्फ यही सोच रहे थे कि यह क्या हो रहा है? फौज के प्रति जनता के उत्कट घृणा के भावों को वे पहले से ही जानते थे। किंतु उनकी समझ में नहीं आता था कि जनता आखिर सिपाहियों से नफरत क्यों करती है। सदैव दुःख झेलने के कारण वे इस बात को भूल गये थे कि जनता पर उन्होंने कोई जुल्म ढाया है। उन्हें भूखों रहना पड़ा था। बरसों से उन्होंने औरत का मुंह नहीं देखा था, कदम-कदम पर उन्हें मौत का सामना करना पड़ता था, मोर्चे पर तोप और बंदूक के सामने उन्हें डटना पड़ता था और कभी अगर उन्होंने पीठ दिखा दी, तो अपना ही अफसर उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा

पीना और पिलाना
उम्दा बात है!

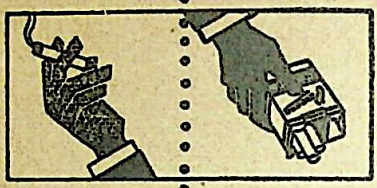

पनामा

ये आखिरी कश तक मज़ा देती हैं

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबैको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई -५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हड्डियों के घाट उतार देता था। औसत मनुष्यों के समान उनमें भी सुख और दुःख के भाव थे। उन्हें भी कुटुंब, मां-बाप, पत्नी और बच्चों की याद सताया करती थी। तो क्या जनता उनके लहू की प्यासी क्यों हो सकती थी?

लेकिन जनता लहू की प्यासी थी। ये बच्चे, ये औरतें और ये मर्द, जो तरह-तरह की विपत्तियों से होकर गुजर रहे थे, किसी पर भी दया नहीं दिखा सकते थे।

सबके बीच यही राय पक्की ठहरी कि इन पाजी कुत्तों पर अब अधिक मेहनत न करके, इन्हें जिंदा ही जमीन में गाड़ देना चाहिये।

बालू के भीतर तुरंत छः फुट गहरी खाई खोद डाली गयी, और सब मिलकर तीनों सिपाहियों को घसीटने लगे।

औरतें चिल्लायीं—"हां, इन्हें जिंदा ही दफना दो। उन्होंने बहुत अधिक जुल्म किया है, बल्कि बहुत अधिक से भी ज्यादा ही।"

औरतों को अपने पतियों और पुत्रों की याद आयी। क्रोध और घृणा से वे तिलमिला उठीं। उनकी इच्छा हुई कि इन सिपाहियों को मुट्ठी में लेकर मसल दें, इनकी हड्डियों को चूर-चूरकर डालें। लेकिन दूसरे ही क्षण वे इनकी ओर देखकर निस्तब्ध रह गयीं और बिलख-बिलखकर रोने लगीं।

"जिंदा दफनाया जाना?"

तीनों कैदी तपती हुई धरती की ओर देखने लगे। इसी जहन्नुम में वे भूख और प्यास की तड़प के साथ झोंक दिये जायेंगे।

उन्होंने अपने होंठों का पसीना चाटा। वह समुद्र-जल के समान खारा था।

"मुझे घूंट-भर पानी दे दो।" दुबले आदमी ने गिड़गिड़ाकर कहा, मानो किसी देवता से कुछ मांग रहा हो। "एक घूंट पानी पिला दो, फिर गाड़ो या जो चाहे करो।"

"पानी!" एक बूढ़ा पागल की तरह घुड़कते हुए बोला—"पानी, और तुझे? पानी! कमीने कुत्ते!"

"मार-मारकर मैं तुझे हलवा बना डालूंगा। मैं तेरी जान लेकर छोड़ूंगा।"

"सत्यानास हो तेरा कमीने। हाय, मेरी तेन्युल मेरी....."

हेई पागल की तरह मोटे सिपाही पर टूट पड़ा और जोर-जोर से उसे मारने और उस पर थूकने लगा।

"सभी सिपाही कुत्ते होते हैं, कुत्ते।" औरतों के मुंह से गाली देते-देते झाग निकल रहा था।

दुबला सिपाही औरतों की गाली सुनकर उनकी ओर देखना चाहता था; लेकिन उसका सिर उधर घूम न सका।

घायल सिपाही ने आंखें बंद किये ही कांपती आवाज में कहा—"इससे तो अच्छा है कि मुझे मार ही डालो.....मेरे देशभाइयो, मार ही डालो मुझे ....."

लेकिन किसी ने भी उसकी ओर ध्यान न दिया। सबके-सब सिपाहियों को जलती हुई रेती पर घसीटे हुए, गढ़े की ओर लिये जा रहे थे।

आर्त्त स्वर में उसने फिर पुकारा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

दर्द बरसाता

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाइयो, मुझे मार डालो । अब देर क्या
? मुझे जल्दी समाप्त कर दो ।"
इतनी आसानी से नहीं ।" बूढ़े हेई ने
उलते हुए कहा ।
घायल सिपाही ने किसी तरह अपनी
खोलीं और चारों तरफ देखने लगा ।
वह किसी ऐसे चेहरे की खोज कर
हो, जिससे बात की जा सके, लेकिन
का मुख एक से बढ़कर एक भयानक
। उसकी हिम्मत न पड़ी । उसने अपनी
बंद कर लीं । लेकिन फिर साहस
कर वह चिल्ला उठा—"प्यारे बंधुओ,
क्या होगा ? अगले साल आज के दिन
मेरे एक वर्ष हो गया होगा.....मेरी
को दिलासा देना और समझा-बुझा
उसे रोने मत देना.....हाय.....उस
बेचारी को कुछ भी मालूम नहीं है.....
कहना कि वह मेरे बारे में सोचना
दे.....हाय, मेरी प्यारी मां.....मरने
पहले कहीं एक बार भी तुझे देख पाता।"
जो हाथ उसे कसकर पकड़े हुए थे, वे
अचानक ही ढीले पड़ गये—"ऐं, क्या यह
सच है कि इनके भी माताएं हैं और वे भी
चिंतित में हैं ? ये कमीने, जिन्होंने ....."
"उसी तरह जिस तरह तुम... मेरे प्यारे
देशवासियो.....अगले जन्म में, मैं .....
एक ने उसके चेहरे पर जोर से थूका—
अगला जन्म ? तेरे लिए ? जो अपना समय
हत्या में व्यतीत करता है, जो बंदूक उठाते
ही लूट-मार शुरू कर देता है ! डायन के
बच्चे, अगले जन्म की चिंता तुझे है, तू
जो लड़ाई के दिनों में धन हड़पा करता है ?"
दुबले सिपाही ने कठिनाई के साथ सिर
घुमाकर हेई की ओर देखा । हेई, जिसके
चेहरे की हड्डियां निकली हुई थीं, जिसके
चेहरे की झुर्रियों में बालू भरी हुई थी,
जिसकी आंखें मरी हुई मछली की आंखों के
समान खुली और विकराल थीं—मानो अभी
इन तीनों सिपाहियों को निगल जायेंगी ।
उस दुबले सिपाही ने सोचा—"यह बोलता
क्या है ? किसने धन बटोरा है ?"
सिपाहियों ने बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेली
थीं । उनकी भूख, उनकी प्यास और उनकी
कठिनाइयां भी वैसी ही थीं, जैसी किसी की
भी हो सकती हैं । दुबले सिपाही से रहा
न गया । वह कड़ककर बोल उठा—"आग
लगे इस लड़ाई को । क्या तुम समझते हो कि
सिपाही बनना कोई आनंद का काम है ?
घर में कुछ था नहीं कि खाकर जियें । ऐसी
हालत में तुम क्या करते ?"
फिर सबके-सब चुप ।
केवल हवा बालू पर सांय-सांय कर रही
थी । झुटपुटा हो चला था । क्षितिज बिल-
कुल धुंधला हो गया था । आकाश और
जमीन में कोई फर्क मालूम नहीं पड़ता था ।
सूर्य के साथ ही भिन्नता का भेद भी डूब
चुका था ।
औरत, बच्चे और मर्द—सभी सिपाहियों
को एकटक देख रहे थे । उन्होंने समझा था,
सिपाही किसी दूसरी दुनिया का जीव होता
है । लेकिन वह क्या ? क्या ये भी किसान के
बेटे हैं ? इन्होंने भी खेतों में काम किया है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है।
केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से...
और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना...कर सकता है

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी ? यह सवाल रोशनी की तरह दिमाग में चमकने लगा। क्या यह संभव कि वे कमीने सिपाही भी उसी धातु के बने जिससे किसान और मजदूर बनते हैं ?

इसलिए कि तुम्हारे पास खाने को कुछ नहीं है, तुम लोगों को मारोगे, उन्हें लूटोगे और उनकी इज्जत उतारोगे ? " औरतों ने कहा।

"तुम्हें मालूम है, तुमने लोगों को कितना सताया है ?"

"हम भी किसान हैं ....."

"शांति...पाजी सिपाही फिर कुछ कह रहा है।"

"हमारे गांव में सभी लोग भूखों मर रहे थे। वे मरना नहीं चाहते थे। मगर खाने की चीजें आती कहां से ? बैठे-बिठाये कौन देता ? दुनिया में खाने की चीजें तो इफरात हैं, मगर वे भी तो किसी-न-किसी की मिल्कियत हैं।"

"वे भूखों क्यों मरते ? इसलिए फौज में भर्ती हो जाना उन्होंने बेहतर समझा। उन्होंने सोचा, लड़ाई एक-दो बरस चलेगी। उसके बाद उन्हें कमीशन अफसर का पद मिल जायेगा और जिंदगी आराम से कटेगी। मगर उन्हें दुश्मनों को मारने का हुक्म दिया गया। ऐसे दुश्मन, जिनके बारे में सिपाही सिवा और कुछ नहीं जानते थे कि वे खून और मांस के बने हुए मनुष्य हैं। वे नहीं जानते थे कि दुश्मन से उनकी क्यों दुश्मनी थी। मुमकिन है, उनके अफसर की दुश्मनी के अफसर से शत्रुता रही हो। जनता को उनसे घृणा थी; लेकिन उनके हृदय में जनता के प्रति कोई द्वेष न था। जिस टुकड़ी के वे सिपाही थे, वह हार गयी थी और वे तीनों अपनी जान बचाने के लिए भागे जा रहे थे।

"बस यही किस्सा है। अब जी चाहे तो मार डालो, या जिंदा ही दफना दो हर हालत में हम....."

इतना कहते-कहते वह चुप हो गया। उसका मुंह खुला हुआ था, उसके पीले दांतों की पंक्ति दिखाई पड़ रही थी। लेकिन उसकी आंखों में थकावट और अवसाद भरा हुआ था।

गैरफौजी यात्री किंकर्तव्यविमूढ़ होकर एक-दूसरे को देखने लगे। अब ये कमीने सिपाही अच्छी तरह उनके कब्जे में थे। यही मौका था, जिसकी ताक में वे थे। यही अवसर था अपनी प्रतिशोध की आग बुझाने का। लेकिन क्या इन लोगों पर अपना बुखार उतारना ठीक होगा ? इन लोगों पर, जिन्होंने खेती की है, जो सीधे-सादे देहाती मनुष्य हैं ?

किसी निश्चय पर पहुंचे बिना ही वे देर तक एक दूसरे की ओर ताकते रहे। कुछ क्षण पहले उनके जिन पीले चेहरों पर गुस्से और बर्बरता की आग थी, अब उन पर संकट और दुविधा के भाव झलकने लगे थे। उन्हें क्या करना चाहिये ? उनकी जिंदगी दुःख और त्रास और क्षुधा से परिपूर्ण थी; लेकिन इन सिपाहियों की जिंदगी भी तो ठीक वैसी ही थी। वे खुद मरना नहीं चाहते थे; और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफेद बाल अब कोई समस्या नहीं रहे

यदि आप युवावस्था में ही सफ़ेद बालों के कारण बूढ़े दिखाई देने लगे हैं तो आज ही

क्रैस्ट परमानैण्ट हेअर डाई

के प्रयोग से आप के सफ़ेद बालों को काला कर सकते हैं जो बिल्कुल बेमालूम और प्राकृतिक दिखाई देता है। साबुन या शैम्पू का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और एक बार लगाया हुआ डाई कई सप्ताह चलता है। क्रैस्ट परमानैण्ट हेअर डाई दुर्गन्ध-रहित और उत्कृष्ट पदार्थों से बना एक अनुभूत प्रयोग है। यदि इस डाई को लगाते समय त्वचा पर एक-आध निशान पड़ जाय तो उसे क्रैस्ट स्टेन रिमूवर से सरलता से साफ़ किया जा सकता है।

साहिब सिंह द्वारा गारण्टीड् उत्पादन

विशेष जानकारी के लिए नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए।

दि क्रैस्ट एडवाइज़री सर्विस
पो० ऑ० बॉक्स, ४४०,
नई दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिपाही भी मौत से डरते थे। क्या अपने ही समान निरीह मनुष्यों पर गुस्सा उतारने का नाम प्रतिशोध है ?

जो तीन नौजवान तीनों सिपाहियों को जकड़कर पकड़े हुए थे, उन्होंने उन्हें छोड़ दिया।

"भगवान समझे इनसे, भगवान समझे" हेई की आंखों से आंसू झर रहे थे। उसने इन पर अपना गुस्सा उतारना चाहा था; लेकिन अब उसे सूझता ही न था कि वह जाये किधर।

लंगड़ा सिपाही दर्द से कराह रहा था। उसके दांत कटाकट बज रहे थे।

"मिजाज कैसा है ?"

"बड़ी पीड़ा है, आह !" लंगड़े सिपाही ने कराहते हुए धीमी आवाज में कहा, मानो उसे डर लग रहा हो कि कोई दुश्मन सुन न ले।

"दर्द ! आह इसे गर्मी का घाव है, सो मैं जानता हूं।"

लोगों की नजर टिनी की जांघ की ओर गयी। उसने अपना पाजामा हटाया। उफ्, भयंकर घाव की खाकी रंग की पट्टी लहू से लाल हो गयी थी और उसमें पीले रंग की पीव भी भरी हुई थी।

टिनी ने थरथराते हुए हाथ से उसे हटाना चाहा; मगर पट्टी चमड़ी से चिपक गयी थी।

फूले हुए गालोंवाले सिपाही ने पानी देने के विचार से लोगों की ओर देखा; लेकिन पानी मांगने की उसे हिम्मत न हुई।

"घाव को छुओ मत। उसे यों ही छोड़ दो, टिनी !" उसने कहा।

टिनी ने थूक से पट्टी को गीला करना चाहा। पट्टी पर थूककर वह बोला—"अब इसे खींच लो।"

मोटे सिपाही ने पट्टी खींच ली। टिनी जोर से चीखने लगा। पट्टी के साथ चमड़ी और मांस के लोथड़े निकल आये; खून की धारा चल पड़ी। पीली बालू लाल हो गयी। और.....और घाव में से बिलबिलाते हुए कीड़े निकलने लगे। कोई कीड़ा अपनी देह को तानता हुआ टिनी के हाथ पर चढ़ गया, कोई उसके नखों में घुसने लगा। कुछ पैर पर और कुछ जमीन पर रेंगने लगे।

दर्शक दांत पीसने लगे। उन्हें सूझता ही न था कि किया क्या जाये।

टिनी जोर से अपने निचले होंठ को दांतों से दबा रहा था। उसके सारे शरीर में दर्द से सिहरन पैदा हो गयी थी। लेकिन वह उंगली डालकर घाव से कीड़ों को चुन-चुनकर बाहर निकाल रहा था। गंदी उंगलियों के स्पर्श से घाव में भयंकर पीड़ा हुई। टिनी एक बार आपादमस्तक कांप उठा। ऐसा जान पड़ा कि वह मूर्च्छित हो जायेगा।

फूले हुए गालोंवाला सिपाही घबरा-सा गया। उसने फिर सोचा कि पानी माँगना चाहिये। लेकिन तुरंत उसे खयाल आया कि ये लोग, जो हमारे लहू के प्यासे हो रहे हैं, हमें पानी क्यों देने लगे। उसके मन में एक ही बात आयी—"अफसोस, बंदूक नहीं। नहीं तो टिनी की यह वेदना एक क्षण में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

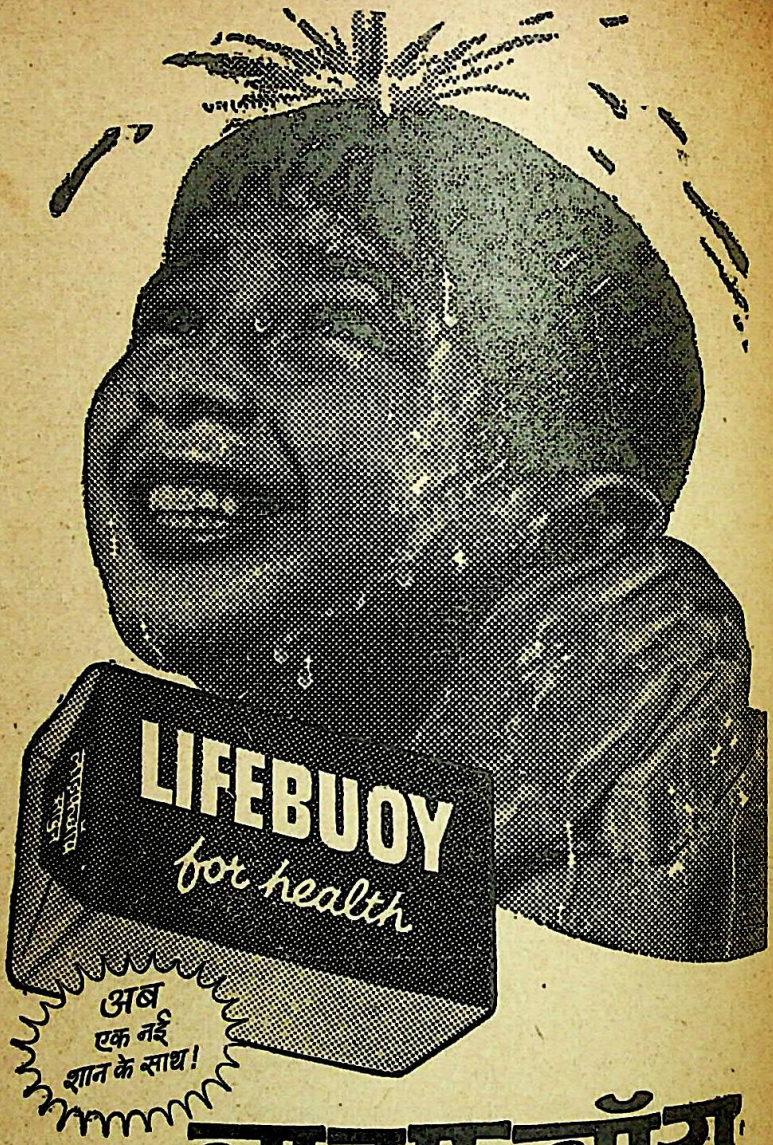

लाइफ़बॉय

है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाप्त हो जाती ।"

कीड़े अब प्रायः बिलकुल निकल गये थे । मोटे सिपाही ने थूक से गीला करके पट्टी को फिर से बांधना चाहा । तब तक एक लंबा-सा आदमी बोल उठा—"पानी के बिना कहीं पट्टी बंधती है बेवकूफ ?"

"पानी !" तीनों सिपाही उत्सुकता से उस लंबे आदमी की ओर देखने लगे । एक दिन और दो रात से वे प्यास से जलते हुए रेगिस्तान में चल रहे थे । पीने को तो एक बूंद नहीं मिला, घाव धोने के लिए कहां से आयेगा ? उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जमीन पसीने के सिवा मानो दस वर्षों से उन्होंने पानी देखा ही न हो । पीला आकाश, पीली रेत, दहकता हुआ सूर्य और तपती हुई हवा—क्या ऐसी दुनिया में भी पानी मिल सकता है ?

हेई गहरी सांस लेकर बोला—"बेवकूफ, आखिर ऐसे संकट में तुम पड़े क्यों ?"

"हमारे दुःख अभी और बाकी हैं बाबा।"

एक ही दुनिया में रहते हुए, एक ही मुसीबत सहते हुए भी, वे आपस में दुश्मन हो गये थे। ऐसा हुआ क्यों ? और अब भी, जब वे सब एक जगह पर आ मिले थे, उनकी दुनिया एक ही थी, वही पीला आकाश, वही पीली धरती, वही आग उगलता हुआ सूर्य और वही अन्नाभाव !

लंबे आदमी ने पूछा—"कितने दिनों से तुम्हें पानी नहीं मिला है ?"

छः प्यासी आंखें उसकी ओर मुखातिब हुईं; लेकिन किसी के मुंह से कोई बात न निकली । सबका कंठ सूख गया था, सभी के पेट में कुछ खलबली-सी मालूम होती थी; किंतु उन्हें जान नहीं पड़ता था कि यह भूख है या कोई बीमारी ।

लंबा आदमी गंभीर मुंह बनाकर झुंड के बाहर चला गया और फौरन एक घड़ा पानी लाकर बोला—"पियो, डायन के बच्चो ।"

क्या यह सच है ? तब इसके मानी ? तीनों सिपाहियों की आंखें अचरज से भरी और खुली हुई थीं । सभी की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी ।

सबने छककर पानी पिया । टिनी ने कुछ पानी लेकर अपने घाव को भी धो डाला । तनाव समाप्त हो गया । सबके भीतर यही भाव उमड़ पड़ा कि आखिर ये हमारे ही आदमी हैं । इन्हें मारने के बदले बचाना ही चाहिये । लेकिन किसी की भी दया कार्य-रूप में परिणत नहीं हो रही थी । दुश्मनी को इतनी जल्दी दोस्ती में बदलने में जैसे सभी लजा रहे हों । तब तक वही लंबा आदमी फिर बोला—"ये तीनों तो कराह रहे हैं और तुम लोग हाथ पर हाथ धरे चुप-चाप खड़े हो । बेवकूफ , ये लोग भी हमारे भाई हैं—ये तीनों ।"

सबके मन में यही बात थी । सभी मानो नींद से चौंककर जगे और सिपाहियों की सेवा-शुश्रूषा करने लगे ।

मोटा आदमी खुशी के मारे रोने लगा—"धन्यवाद, धन्यवाद, मेरे भाइयो.....हम तुम्हारा उपकार कभी न भूलेंगे, कभी नहीं । अब चाहे हमारी चमड़ी उधेड़ डालो या हमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है – सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-ज़ुकाम व इन्फ्ल्यूएंज़े का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ला ही गाड़ दो, हमें कोई शिकायत नहीं ...हम तुम्हारे उपकार को कभी नहीं ...सकते।"

...लू, इस तरह की बेमतलब की ...बातें क्या बक रहा है ? आखिर....." लंबे ...दी को अपनी ग्लानि की बातें अपमान-...लगीं।

...सिपाहियों को ऐसा भान हुआ, जैसे कि ...वे सपना देख रहे हों।

...आखिर हम और तुम, सभी लोग तो ...ही नाव पर हैं।"

...या मनुष्य और कुछ कहे इसके पूर्व ...मूर्छित होकर जमीन पर गिर गया। ...गालंवाले सिपाही ने उसका मस्तक ...और चिल्ला उठा—"बुखार, बुखार ! ...बुखार !"

...टी जमीन पर हाथ-पैर पटकने लगा। ...मन में कितनी ही तस्वीरें उगने लगीं। ...सबसे अधिक लुभावनी तस्वीर थी ...घर की—उसकी उदास मां की।

...छिपने को था। सभी लोग घबरा ...। जिसे जो सूझा वही कर रहा था। ...विषाद से भरकर देख रहे थे कि यह ...हो गया ?

...और सबके देखते-देखते टिनी ने दम ...दिया।

...उसे दफनाने की तैयारी में थे कि ...ने आकर कहा—"मजदूर भी कैसा-...कर रहा है !"

...लोग उधर दौड़े। उन्होंने देखा, ...वह भी शांत हो गया है और चींटियां उसे फिर अपना भोजन बना रही हैं।

स्त्रियां रो-रोकर मृतात्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करने लगीं। मर्द चुपचाप दोनों को कब्र में डाल रहे थे। उसी कब्र में, जो तीनों सिपाहियों को जिंदा दफनाने के लिए खोदी गयी थीं। फूले हुए गालोंवाले सिपाही ने रोते-रोते अपने पास से दो पांसे निकाले और उन्हें टिनी की जेब में यह कहते हुए रख दिया—"उस दिन तुमने ये पांसे मांगे थे, लेकिन मैंने नहीं दिये। इन्हें अपने साथ रखो .....हाय, तुम्हारी बूढ़ी मां ..... पर मैं उसे समझा-बुझाकर चुप कर लूंगा भैया टिनी।"

किसी ने पास के वृक्ष से दो टहनियां तोड़कर कब्र के ऊपर रोप दीं।

जब सभी रुखसत होने लगे, बूढ़े हेई ने उन दो सिपाहियों से पूछा—"तुम लोग किधर जाओगे ?"

"भगवान जाने किधर। हम लोग फौज से भागे हुए आदमी हैं। खाने-पीने के लिए कहीं कुछ इंतजाम तो करना ही पड़ेगा।"

"चलो, हम लोग सभी साथ ही चलें। ल्यू शहर पहुंचकर शायद खाने-पीने के लिए कुछ प्रबंध हो ही जायेगा।"

कालरात्रि उसी खंडहर में बीती। पौ फटते ही कारवां फिर चल पड़ा। स्त्रियां, बच्चे, मर्द और दोनों सिपाही भी। आगे-आगे थे मर्द और पीछे थीं स्त्रियां और बच्चे।

बूढ़ा हेई फिर बोला—"गारत करे खुदा इस दुनिया को। हम सभी लोग एक ही हालत में हैं .....हां, एक ही हालत में .....

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेशनल एक्को का एक सुन्दर नया मॉडल

रेडियो-निर्माण के क्षेत्र की भारत की अग्रणी कंपनी नेशनल-एक्को बड़े गर्व से आपकी सेवा में अपना नया मॉडल यू-८१९ प्रस्तुत करती है! यह मॉडल नेशनल-एक्को के परम्परागत उच्च नियमों के अनुसार बना हुआ और उत्कृष्टता के लिए बड़ी बारीकी से जाँच-परखा हुआ है। इस पर सभी कार्यक्रम बिल्कुल साफ़ और हूबहू आवाज़ में सुनाई देते हैं। अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ पधारिए और अपने मनपसन्द स्टेशन के कार्यक्रम खुद ही सुनकर देखिए।

मॉडल यू-८१९:
एसी/डीसी सेट।
३ वेव-बैण्ड,
५ वाल्व,
बेकलाइट कैबिनेट।
रु. २९८.००
क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है;
टैक्स अलग।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · दिल्ली · बंगलोर
सिकन्दराबाद · पटना

नेशनल एक्को — मॉन्सूनाइज़्ड रेडियो

भारत की सबसे बड़ी रेडियो फ़ैक्टरी में बनते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन हाय मेरी तेन्युल....."

दूसरे सिपाही ने भर्रायी हुई आवाज में दूसरे से कहा—"हम लोग भी कितने बेवकूफ हैं!"

इस पर कोई कुछ नहीं बोला। लेकिन इसका अर्थ किसी से छिपा भी न रहा।

अजी बंदूक ही छिन गयी। सत्यानास हो उनका। बंदूक होती तो हम उन्हें बतला देते कि हम क्या हैं।"

उनके चारों ओर था दहकता हुआ सूर्य, तपती हुई रेती और धुंधुआता हुआ क्षितिज; लेकिन अब वे इस चिंता से ग्रस्त नहीं थे कि अगले दिन खाने को क्या मिलेगा। वे चले जा रहे थे, कदम-से-कदम मिलाये एक लक्ष्य की ओर, सूर्य को ललकारते हुए और जलती हुई रेती को कुचलते हुए।

कंपनी का खजांची बड़े उत्साह और आनंद से मैनेजर के पास आया। बोला—"साहब, आपकी कोशिश के बाद इस साल कंपनी को मुनाफा हो ही गया। मैंने अभी बैलेंस शीट तैयार कर लिया है।"

मैनेजर की बांछें खिल गयीं, कहने लगा—"तुरंत उसकी तीन कापियां टाइप करा-लें। एक कंपनी के अध्यक्ष के पास जायेगी, दूसरी उपाध्यक्ष के पास, तीसरी बैंक के पास।"

"मगर साहब, कार्बन कागज खत्म हो गया है!"

"तो देखते क्या हैं? जाकर बाजार से खरीद लाइये।"

"जी.....कार्बन खरीदने पर तो मुनाफा घाटे में बदल जायेगा।"

०००

औरतें अपनी उम्र में से जो साल घटाती हैं, उन्हें कभी बेकार नहीं जाने देतीं, दूसरी औरतों की उम्र में जोड़ देती हैं।

०००

इंगलैंड पहुंचने के अगले दिन सवेरे मेरे अंग्रेज मित्र मुझे एक रेस्तरां ले गये। बोले—"आइये, आज आपको ठेठ अंग्रेजी नाश्ता करायें।" और बैरे को बुलाकर उन्होंने यह आर्डर दिया—"अच्छा, हम दोनों के लिए डेनिश मांस, पोलिश अंडे, डच मक्खन, स्काच मार्मलेड और ब्राजीलियन काफी ले आओ।"

०००

पत्नी: क्यों जी, आपको अब तक किसी औरत ने यह भी बताया है कि आप कितने गजब के आदमी हैं?

पति: नहीं सरला, आज तक तो किसी ने नहीं बताया।

पत्नी: तब फिर यह खयाल आपके दिमाग में घुस कहां से गया?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ती मौत

१९५७ के वसंत में जिनीवा के विश्व स्वास्थ्य-संघटन के पास खबरें आने लगीं कि भारत के मसूर राज्य के क्यासनूर जंगल के आस-पास एक रहस्यमय रोग फैल रहा है। सकड़ों लोगों को उसने धर दबोचा है। पहले तेज बुखार आता है, मचली होती है और दस्त लगते हैं। ज्यादातर मर्द ही इसके शिकार हो रहे हैं। उनकी आंखें भी लाल हो जाती हैं। रोगी कमजोर होता जाता है। कुछ हफ्ते के भीतर दस प्रतिशत रोगी मौत के घर ही बसते हैं।

कुछ महीने बाद अचानक ठीक ऐसी ही रहस्यमय बीमारी की खबरें मध्य रूस से आने लगीं। चिकित्साशास्त्री चकित थे कि हजारों मील दूर के इन दो प्रदेशों में एक ही बीमारी कैसे फैली, बीमारी कहां से आयी, कैसे पहुंचायी?

बंबई के मेडिकल रिसर्च इंस्टिटचूट में वैज्ञानिकों ने इस रहस्यमय रोग से मैसूर के मरे मनुष्यों और बंदरों के शरीरों की जांच की और वे इस परिणाम पर पहुंचे कि यह रोग एक विषाणु (वाइरस) से पैदा होता है और इस विषाणु का नाम है 'हिमाफिसिलिस स्पिनिजेरा' नाम का नन्हा जैसा कीड़ा। लेकिन सवाल यह था कि अब तक अनजाना यह रोग लगभग एक साथ मैसूर और मध्य रूस जैसे दो दूर देशों में कैसे प्रकट हुआ?

मेडिकल रिसर्च इंस्टिटचूट के कीट-विभाग के अध्यक्ष ने यों ही बातचीत के दौरान में अपने पुराने मित्र और विख्यात पक्षीशास्त्री डाक्टर सालिम अली से इस समस्या की चर्चा की। डा० अली ने कहा, क्या यह संभव नहीं कि हर साल वसंत ऋतु में जो हजारों-लाखों प्रवासी पक्षी भारत पर से होकर उड़ते हैं, उन्हीं ने यह रोग इन दोनों प्रदेशों में पहुंचाया हो?

अगले साल यानी १९५८ की वसंत ऋतु में डा० सालिम अली कुछ पक्षीशास्त्रज्ञों और चिकित्साशास्त्रियों के साथ कच्छ गये। दक्षिण भारत से उड़कर मध्य रूस जानेवाले पक्षी हर साल यहां पड़ाव डाला करते हैं।

बाल जैसे बारीक धागों के जाल बिछाये गये। उद्देश्य यह था कि कुछ पक्षी पकड़ाई में आयें और इस बात की जांच हो सके कि क्या इन प्रवासी पक्षियों पर रोग-वाहक जुंएं हैं।

कुछ पक्षी फंसे। डा० सालिम अली का अंदाज बिलकुल ठीक था। पक्षियों के शरीर उन भयानक जुंओं से भरे पड़े थे। और यही जुंएं चिड़ियों पर सवार होकर इस रहस्यमय रोग को भारत लायीं और फिर यहां से रूस ले गयी।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नए फ़ार्मूलेवाले

सनलाइट

से आप के कपड़े चमक उठते हैं!

S. 56-71 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिड़ियों को पकड़ने, उन्हें जुंओं से मुक्त ... और उनके पांवों में छल्ले बांधकर ... देने का कार्यक्रम शुरू किया गया। ... से हर साल कच्छ में उड़ती चिड़ियों के जूं पकड़ने का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर होता है। इसकी सहायता से अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य-संघटन को इस रहस्यमय रोग की रोकथाम में सहायता मिल रही है।

परिंदे नहीं, खाद के कारखाने

...वत है—अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत। गोया, चिड़िया खेती की ...मन हो। जरा पेरू के किसानों से पूछकर देखिये। वे बतायेंगे, चिड़ियां उनकी सबसे बड़ी ... हैं। वर्षाहीन देश पेरू के किसान पिछले दो हजार साल से सिंचाई के लिए एंडीज पर्वतों ...लनेवाली नदियों और खाद के लिए पेरू के तटवर्ती टापुओं से प्राप्त होनेवाले 'ग्वानो' ...र्भर हैं। यह 'ग्वानो' और कुछ नहीं, समुद्री चिड़ियों की बीट है। हजारों वर्षों से करोड़ों ...यों ने इन टापुओं को अपना घर बना रखा है और वहां बीट के सफेद पहाड़ लग गये हैं, ...हीं-कहीं सौ-सौ फुट ऊंचे हैं। प्राचीन इंका सभ्यता के जमाने से यह बीट खाद के रूप में ...ग की जा रही है। बीट में १७ प्रतिशत तक नाइट्रोजन होती है। पिछली सदी में लाखों ...बीट का निर्यात भी शुरू हुआ। उत्तर अमरीका, यूरोप और मारिशस मुख्य खरीदार थे। ...टन बीट के ३५० रुपये तक मिलते थे। निर्यात इतना बढ़ गया कि पेरू के किसानों को ... मिलनी बंद हो गयी। अंत में सन १९१० के आस-पास पेरू सरकार ने 'ग्वानो' की ...ई, निर्यात और पक्षियों की सुरक्षा के संबंध में कानून बनाये। बीट के पहाड़ फिर बढ़ने ...। अब प्रतिवर्ष ३ लाख टन बीट जमा की जाती है।

बीट-उत्पादन में मुख्यतः तीन किस्म के समुद्री पक्षियों का हाथ है—ग्वाने, बूबी और ...न। इनमें भी ग्वाने प्रधान है। कई-कई लाख ग्वाने एक साथ रहते हैं। किसी-किसी ...निवेश में ६० लाख तक पक्षी पाये ...हैं। पहले ये पक्षी तटवर्ती टापुओं ...ही रहते थे। अब पेरू सरकार ने ...तट पर दस-दस फुट ऊंची दीवारें ...वाकर विशाल बाड़े बनवाये हैं, जिन-...पक्षी निर्भीक होकर रहते हैं। इससे ...जमा करना भी आसान हो गया है।

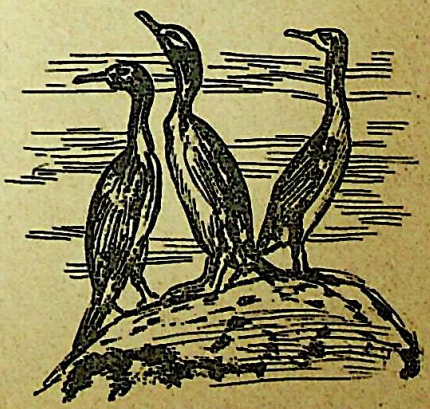

...सो पंचतंत्र में वर्णित, सोने की ...करनेवाली चिड़िया कोरी कल्पना ...है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैरते टापू, अनोखा संग्रहालय

सर्वेश्वरनाथ

हालैंड के शिफोल हवाई अड्डे पर विमान से आ रहे यात्रियों की निगाह कंट्रोल टावर के साइन बोर्ड पर जाती है। यदि यात्री पहली बार वहां आया है, तो उसका हृदय तेजी से धड़क उठेगा। कारण, साइन बोर्ड बड़े-बड़े अक्षरों में सूचना दे रहा है कि यात्री समुद्र की सतह से १४ फुट नीचे है!

नवागत यात्री को विमान से उतरते ही यहां सबसे पहले यह जानने की चिंता होती है कि वह सुरक्षित है कि नहीं। वह अपने चारों ओर नजर दौड़ायेगा और देखेगा कि हवाई अड्डा एक मजबूत परकोटे के बीच है, तो वह चैन की सांस लेगा। लेकिन परकोटे की छत पर दृष्टि जाते ही वह एक नये अचरज में डूब जायेगा। वहां तो न केवल कारें और साइकलें दौड़ रही हैं, बल्कि जहाज भी चल रहे हैं! एक ही धरातल पर जल-वाहन और स्थल-वाहन समान रूप से चल रहे हैं! किंतु कैसे संभव है यह?

यह पहेली तब सुलझती है, जब यात्री परकोटे की छत पर पहुंचता है और देखता है कि परकोटे के दूसरी ओर एक नहर है और उसका धरातल लगभग परकोटे के धरातल के बराबर है। गोल परकोटे के बीच में काफी नीचे, हवाई अड्डा है। नहर परकोटे के चारों ओर है। दोनों गोल हैं की तरह हैं। अतः इन्हें 'छल्ला नहर' 'छल्ला परकोटा' कहा जाता है।

जिस जगह आज शिफोल हवाई है, कभी वहां विशाल झील थी। सन १ के आस-पास इसका पानी पंपों द्वारा कर छल्ला नहर में पहुंचा दिया गया। प्रकार जल में से छीनी गयी इस भूमि जिसे यहां 'पोल्डर' कहा जाता है, बाद विमानस्थल बनाया गया। छल्ला नहर भी पोल्डर में पानी की सतह पर नि रखने का काम करती है। फालतू पानी में पहुंचा दिया जाता है।

इसके साथ-साथ छल्ला नहर किस व जहाजों के लिए जलमार्ग का काम देती है। एम्स्टरडम और रोटरडम के एकदम सीधा जलमार्ग इस छल्ला नहर से होकर है; इसलिए इसमें जलयानों भारी भीड़ रहती है। और छुट्टियों में सैलानी किश्तियों के आ मिलने से दुगनी हो जाती है।

ऐसे समय में एक और विचित्र देखने को मिलता है। एक ५० फुट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ५०-६० फुट लंबे टापू को एक पुलिस-नाव खींचे लिये जा रही है। गर्मियों में ऐसा अक्सर होता है। ये टापू घनी हरियाली से लदे होते हैं, जिसमें शामिल हैं सरकंडे और पानी के किनारे उगनेवाले पौधे।

ये टापू उन दिनों की यादगार हैं, जिन दिनों पोल्डर एक सरोवर था। उसे सुखाने के लिए परकोटा खड़ा किया गया और छल्ला नहर बनायी गयी। किंतु सरोवर के किनारों पर कई स्थान ऐसे भी थे, जो पर्याप्त ऊंचे थे और मजबूत भी। ऐसे स्थानों पर परकोटा बनाने की आवश्यकता नहीं समझी गयी; क्योंकि ये पुराने किनारे स्वयं परकोटे का काम कर सकते थे। इन पर वृक्ष लगे हुए थे। इन वृक्षों और पानी के बीच में सरकंडों की घनी रक्षापंक्ति मौजूद थी।

कालांतर में और भी सरकंडे उगते गये, खाली जगह पर मजबूत होते गये। इन किनारों पर तरह-तरह के दूसरे पौधे भी उगते गये। इनमें से जो पौधे सूखकर खत्म हो जाते, उनकी जड़ें सरकंडों में उलझी रह जातीं और सड़े पत्ते उन पर अपनी परतें जमाते जाते। इस तरह सरकंडों के ऊपर जलदल और हरियाली की लगभग तीन फुट मोटी जमीन बन जाती। कभी-कभी सरकंडों की कोई ऐसी रक्षापंक्ति किनारे की जमीन से नाता तोड़कर टापू बन जाती है और नहर में तैरने लगती है।

राज्य की जल-पुलिस के सिपाही नहर पर गश्त लगाते रहते हैं और जैसे ही कोई बहता हुआ टापू नहर में देखते हैं, उसे गिरफ्तार कर लेते हैं। इसका तरीका भी मजेदार है। एक बल्ले की मदद से टापू में छेद कर लिया जाता है और उस छेद में रस्सा डालकर उसे पुलिस-बोट से बांध लिया जाता है। फिर तैरते हुए टापू को छल्ला नहर के किनारे किसी ऐसे स्थान पर जमा दिया जाता है, जहां वाहनों का आवागमन न होता हो।

ये तैरते हुए टापू वाहनों के मार्ग में तो विघ्न उपस्थित करते हैं; किंतु प्रकृति-सौंदर्य के प्रेमियों को इन्हें देखकर बड़ा आनंद मिलता है।

शिफोल के हवाई अड्डे और बहते हुए टापुओं से भी ज्यादा विचित्र है हालैंड का क्रूक्वियस संग्रहालय। हार्लेम सरोवर के किनारे स्थित यह संग्रहालय आकार-प्रकार में छोटे-से सामंती किले के समान है। यह उन तीन पंपघरों में से एक है, जो झील का पानी खींचने व उसे सुखाने के लिए बनाये गये थे। १९३३ में इस पंपघर को संग्रहालय बना दिया गया। कारण यह था कि इसमें लगे उपकरण पुराने पड़ गये थे और उनसे पानी खींचने का काम लेना महंगा पड़ता था।

उपकरणों को बेच डालने और भवन को नष्ट करने के बजाय उन्हें सुरक्षित रखने का निश्चय किया गया। जहां पहले उसका बायलर-कक्ष था, वहां अब एक संग्रहालय है, जिसे देखकर बाष्प-पंप के विकास और देश के द्वारा समुद्र के साथ किये गये सतत संघर्ष के इतिहास का पता चलता है।

हिन्दी डाइजेस्ट

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीडा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

B3 DOL. 2A HIN

खास जनता

किरासन कुकर

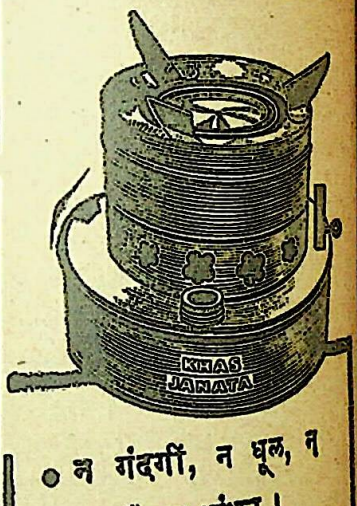

- न गंदगीं, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA.OM.35

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रूक्वियस संग्रहालय

संग्रहालय तीन कमरों में है। पहले कमरे में पानी की निकासी के प्राचीनतम यांत्रिक उपकरण संग्रहीत हैं। यहां आपको तरह-तरह की पवन-चक्कियां देखने को मिलती हैं। आर्शमीदस ने दो हजार साल पहले सिंचाई के लिए एक बरमा यंत्र बनाया था। यह पंप इस तरह काम करता था। पर लोग इसके सिद्धांत को भूल गये। बाद में १५६० में उसका पुनः आविष्कार हुआ। उसका नमूना भी यहां मौजूद है। आप यह देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे कि कुछ यंत्र पूरे-के-पूरे लकड़ी के बने हुए हैं—यहां तक कि उनके दांतेदार पहिये भी लकड़ी के ही हैं।

दूसरे कमरे में पहुंचते ही दर्शक की आंखें एक बड़े तालाब पर टिक जाती हैं। इसमें हालैंड का प्राकृतिक मानचित्र है, जिसमें दिखाया गया है कि देश का कौन-सा प्रदेश समुद्र-तल से कितने नीचे स्थित है।

नक्शे के चारों तरफ डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजी में ये तीन बातें लिखी हुई हैं: "हालैंड—जब यहां पर डाइक (समुद्री परकोटे) नहीं थे", "देश पर समुद्री तूफानों का प्रभाव" और "निचली भूमि से पानी यों खींचा जाता है।" इन वाक्यों के पास बिजली का एक-एक बल्ब है। बल्ब के जलते ही नक्शे पर पानी का तूफान आता है और देश का इतना सारा क्षेत्र पानी में डूब जाता है कि विश्वास नहीं होता, कभी ऐसा था।

इसके बाद एक-एक कर दूसरे बल्बों के जलने की बारी आती है और इसके साथ नक्शे पर दिखाया जाता है कि किस प्रकार इन विभिन्न क्षेत्रों का पानी खींचकर भूमि का उद्धार किया गया। सैकड़ों वर्षों के दौरान में हुई यह सारी भौगोलिक प्रगति, चंद मिनिटों में दिखा दी जाती है।

लोहे की घुमावदार सीढ़ियां चढ़ते हुए जब हम इस कंगूरेदार मीनार के ऊपरी कक्ष में आते हैं, तो वहां तक विशाल आक्टोपस-जैसा यंत्र नजर आता है। वस्तुतः यह संसार का विशालतम बीम-इंजन है। इंग्लैंड द्वारा निर्मित इस इंजन को १८४९ में यहां ब्रिटिश इंजीनियरों ने लगाया था। एक मिनिट में यह ७०,४०० गैलन पानी खींचता था। लेकिन इंजीनियरी की प्रगति में यह पिछड़ गया और अब संग्रहालय की शोभा है।

पर इस संग्रहालय के ये सारे उपकरण हालैंड के साहस और विकास की कहानी कहते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंकरलाल मिश्र

स्वीकार सत्य की पीड़ा

प्यास लगी
सोचा—समुंदर समेट लूंगा,
गीत होंठों पर आया
लगा—गुनगुना लूंगा,
पहले बहती हवाओं को
सांसों में बंद कर लूं
रह लूं तुम्हारे साथ ।
कलियों के सहमे-सहमे-से
खुलाव में
झील के ठहरे, सिहरते जल में,
तुम्हारे प्यार की हिचक देखी—
(अस्वीकृति का अनुभव नहीं)
रूप की पारदर्शी छायाएं
गहराइयों में उतरती गयीं ।
पर जाने कब
तुमने आंचल तले
अंधेरा फूंक दिया
प्राणों में ।
जाने क्या सोचकर
दर्द को बिखरने न दिया
खंड-खंड ।
एक बार तुमने फिर से बाहें फैलायीं
उनका विस्तार अपेक्षाकृत कम था।
(धुआं और परछाइयां)
तुम्हारे मन में जो था...
डूबती धूप के सिमटाव-सा
एक बार फिर
अपने सत्य को कर अस्वीकार
उन्हें, मेरी अभिलाषा घोषित कर
लौट गया ।
और आज फिर, पुष्पांजलि में मिटाने हुए
भेज दिया ।
स्वीकार है ।
प्यास, आग, धब्बे, टूटती रोशनियां,
डूबती ध्वनियां, उमड़न, कुहासा और तड़प
केवल मेरे ही नहीं
हैं तुम्हारे भी साथ ।
अमरता के सुखों के अभिलाषी होकर भी
परस्पर व्यवधान बने हम ।
तुम अपनी मिथ्याओं से भयभीत, शंकित।
में व्यर्थ ही,
तुम्हारे भय तथा शंका से पीड़ित।
जानता हूं मैं, हम दोनों उन सत्यों को
(जिन्हें कभी हमने स्वीकारा है)
नहीं मिटा पायेंगे,
लाख चेष्टाओं के बाद भी ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आखिर चैनल सुरंग बनने लगी

जान मोलाएर्ट के एक लेख से संचित सामग्री के आधार पर।

...कों पुराने एक सपने के साकार होने ...ी घड़ी अब निकट है। इंग्लिश चैनल ...नीचे सुरंग खोदकर ब्रिटेन और फ्रांस को ...पर जोड़ने की योजना के नक्शों पर ...सरकार दोनों देशों ने सरकारी स्वीकृति ...मोहर लगा दी है। भविष्य-स्रष्टा इंजी-...र वह शुभ मुहूर्त निकाल रहे हैं, जब ...सुरंग यातायात के लिए खुल जायेगी ...प्रति घंटे तीन हजार कारें, बसें और ट्रकें ...ाड़ी पर चढ़कर इस पार से उस पार ...जाने लगेंगी।

...ई अरब रुपये की यह परियोजना ...टनल कंपनी ने बनायी है। इसके अंत-...जो सुरंग बनेगी, उसमें परस्पर जुड़े ...तीन टयूब रहेंगे। इन टयूबों के मध्य ...ों का आवागमन होगा। दो टयूब ...गाड़ियों के लिए सुरक्षित रहेंगे। रेलें ...में जायेंगी और दूसरे से आयेंगी। दोनों ...ों का व्यास २० फुट का होगा। १० ...व्यास का तीसरा टयूब दोनों के बीचो-...च रहेगा। इसमें बाकी सुरंगों के संचा-...न की व्यवस्था होगी।

सुरंग-मार्ग का एक मुंह इंग्लैंड ऐशफोर्ड और फोकस्टोन के बीच रहेगा, दूसरा फ्रांस में कैले के निकट खुलेगा। सुरंग का २३ मील हिस्सा इंग्लिश चैनल के भीतर रहेगा; शेष दस मील जमीन के भीतर—सात मील इंग्लैंड की भूमि में और तीन मील फ्रांस के गर्भ में। इस तरह सुरंग के टयूब-मार्ग की कुल लंबाई ३३ मील होगी।

दोनों मुख्य मार्गों के टयूबों पर कंक्रीट का १५ इंच मोटा अस्तर होगा, जिसमें बिजली के तार बिछे रहेंगे। हर एक मील के अंतर पर एक स्वचलित सिग्नल की व्यवस्था होगी, जो हर तीन मिनिट के अंतर से एक-एक गाड़ी को आगे-जाने की अनुमति देता रहेगा। इस प्रकार प्रत्येक मार्ग पर प्रति घंटे २० ट्रेनें चलायी जा सकेंगी। शायद इनमें से १२ तो कारों व ट्रकों को ढोयेंगी और शेष आठ में से कुछ सवारी गाड़ियां और कुछ मालगाड़ियां होंगी। इस प्रकार हर घंटे में लगभग ३,००० कारें, ट्रकें और बसें, १२,००० यात्री और १,५०० टन माल प्रत्येक मार्ग द्वारा लाया व ले जाया जा सकेगा।

इस ३३ मिनिट की सुरंग-यात्रा के दौरान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चालक अपनी कारों में बैठे रहा करेंगे और जैसे ही रेलगाड़ी आखिरी स्टेशन पर पहुंचेगी, वे अपनी कार रेलगाड़ी पर से ही चलाते हुए ले जा सकेंगे। लंदन के विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन से पेरिस के जेर दचु नोर्द तक की यात्रा में रेल और नाव को मिलाकर अभी ८ घंटे का समय लगता है। अब यह घटकर ४ घंटे २० मिनिट हो जायेगा।

इंग्लिश चैनल में सुरंग बिछाने का विचार नया नहीं है। नयी बात बस इतनी है कि उसकी राह में से राजनीतिक रोड़े हट गये हैं। राजनीति ही पिछले १६२ वर्ष से इस योजना को साकार होने से रोक रही थी।

सदियों से ब्रिटेनवासी इंग्लिश चैनल को अपना रक्षा-कवच समझते रहे हैं। किंतु प्रक्षेपणास्त्रों के इस युग में, पानी की यह बीस मील चौड़ी खाई सुरक्षा की दृष्टि से कोई महत्व नहीं रखती। दरअसल यह चैनल अब ब्रिटेन को यूरोपीय शत्रुओं से बचाने के बजाय यूरोपीय मित्रों से अलग-थलग करके एकाकी बनाती है।

अल्बर्ट मैथ्यू संभवतः प्रथम इंजीनियर था, जिसने १८०२ में इस चैनल पर सुरंग बनाने की विस्तृत योजना नेपोलियन बोनापार्ट के सामने रखी थी। योजना के अनुसार डोवर से एक सुरंग खोदी जाती और कैले से दूसरी, दोनों आकर एक कृत्रिम टापू पर मिलतीं। यह टापू चैनल के बीच में पानी में स्थित एक रेतीले टीले पर बनाया जाता। यहां पर अस्तबल रहते और गाड़ियों के घोड़े बदले जाते। सुरंगों में हवा और रोशनी पहुंचाने के लिए ऊंची-ऊंची चिमनियां बनायी जातीं, जिनके सिर समुद्र से बहुत ऊपर उठे होते।

नेपोलियन को तो योजना पसंद आयी पर ब्रिटिश सरकार ने इसे नामंजूर कर दिया—केवल तकनीकी खामियों के कारण नहीं; बल्कि इसलिए कि सैनिक दृष्टि से इससे फ्रांस को फायदा हो सकता था। कुछ साल बाद इंग्लैंड का फ्रांस से युद्ध छिड़ गया था।

इंजीनियर मैथ्यू की असफलता के बाद जूद सुरंग का विचार बराबर बना रहा और योजनाएं बनती रहीं। कुछ योजनाएं बड़ी मत्तापूर्ण बनीं, तो कुछ ऐसी अव्यवहार गरीब भी कि मजाक-सा लगती थीं।

एक शेखचिल्ली ने यह प्रस्ताव रखा कि एक विशाल रेल का डिब्बा बनाया जाय जिसके पहिये इतने बड़े हों कि चैनल के नीचे की जमीन को छू लें, पर डूबें नहीं; उनके सहारे गाड़ी चैनल को पार कर जाय। जान फाउलर नामक अंग्रेज सज्जन ने रेल पथ बिछाकर उस पर पनडुब्बियां चलाने का प्रस्ताव रखा।

इसी कल्पना-विलास में आधी सदी गुजर गयी। इधर फर्डिनैंड दि लेसेप्स की स्वेज नहर योजना ने विश्व को चकित कर दिया। मिस्र में उसकी सफलता ने इंग्लैंड की आंखें खत्म कर दीं। धन इकट्ठा किया गया और चैनल पर सुरंग बनाने का काम १८७४ में शुरू करने का निश्चय हुआ। पर इसी बीच फ्रांस और प्रशिया के बीच युद्ध छिड़ गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

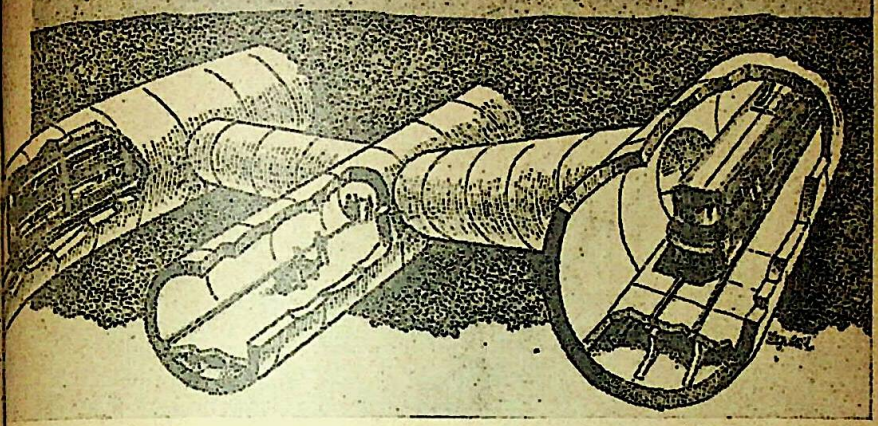

चैनल सुरंग का क्रास-सेक्शन—दायें व बायें पाइपों में रेलें चलेंगी, बीच का पाइप सुरंग की मरम्मत और देखभाल के लिए है।

और दि लेसेप्स के सहयोगी थोम दे गोमंड की बनायी हुई योजना अगले दस वर्ष तक जहां-की-तहां धरी रही।

१८८१ में योजना को पुनर्जीवन मिला। चैनल टनल कंपनी नाम की एक संस्था बनी। चैनल के दोनों तटों—डोवर और सैनगेट पर खुदाई शुरू हुई। दोनों स्थानों से खड़िया मिट्टी की निचली सतह में सुरंगें बनने लगीं। परंतु ज्यों-ज्यों दोनों सुरंगें परस्पर गले मिलने के लिए आगे बढ़ने लगीं, त्यों-त्यों फ्रांस का उत्साह ठंडा पड़ने लगा। बात यह थी कि अंग्रेजों को अब यह भय सताने लगा कि सुरंग बन जाने पर फ्रांस सूखे पांव चैनल पार कर इंग्लैंड पर आक्रमण कर सकता है।

सुरंग के समर्थकों ने बहुत समझाया कि रास्ते में छिड़ने पर सुरंग को बारूद से उड़ाया जा सकता है, या उसमें पानी भरकर बेकार बना दिया जा सकता है। लेकिन फौजियों का पैदा किया हुआ वह भय किसी दलील से मिटाया नहीं जा सका। १८८२ में क्रुद्ध भीड़ ने चैनल टनल कंपनी के मुख्य कार्यालय पर हमला बोल दिया। अंत में १८ मार्च १८८३ को ब्रिटिश सरकार ने सुरंग-कार्य बंद करने का आदेश जारी कर दिया।

तब तक दोनों ओर लगभग एक-एक मील सुरंग बन चुकी थी। अंग्रेजों ने अपनी ओर की सुरंग पर फाटक बनवा दिया। लेकिन फ्रांस की सुरंग १९४० तक खुली पड़ी रही। १९४० में जर्मनों ने उसे कंक्रीट से भरवा दिया। उन्हें भय था कि कहीं अंग्रेज सुरंग की खुदाई पूरी करके अचानक फ्रांस में अपनी सेनाएं न पहुंचा दें।

और इतिहास की विडंबना देखिये।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि १९४० में चैनल सुरंग मौजूद होती तो ब्रिटेन के लिए बहुत बड़ा वरदान साबित होता। तब हजारों ब्रिटिश सैनिकों को डन्कर्क के तट पर जहाजों की प्रतीक्षा में हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे न रहना पड़ता। चैनल-सुरंग उनके काम आती।

युद्ध से हुई बरबादी से यूरोप में साझे बाजार का विचार उपजा और उससे बल मिला सुरंग योजना को। ब्रिटेन और फ्रांस दोनों सुरंग के लिए तैयार हो गये। विरोध केवल उन लोगों ने किया, जो चैनल पर पुल बनाने के पक्ष में थे।

पुल के कुछ लाभ तो अवश्य हैं। उसमें हवा और रोशनी की व्यवस्था अलग से नहीं करनी पड़ती। उस पर हर तरह की गाड़ियां लायी व ले जायी जा सकती हैं। इसके अलावा दृश्यावली भी दर्शनीय होगी।

किंतु योजना में पूंजी लगानेवालों को दृश्यावली से ज्यादा दिलचस्पी मुनाफे में होती है। अतः सुरंग ही पसंद की गयी। पुल में खर्च तो कई गुना ज्यादा आता; किंतु आय कम होती। फिर सुरंग तो व्यापारिक संस्थाएं अपनी पूंजी से भी बना सकती थीं, जब कि पुल के लिए सरकारी अनुदान की आवश्यकता पड़ती।

ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो पुल और सुरंग दोनों के विरुद्ध हैं। वे कहते हैं कि अगले दस साल के भीतर, हवा की गद्दी पर चलने वाले होवर क्राफ्ट जैसे यान प्रचलित हो जायेंगे और तब सुरंग और पुल दोनों व्यर्थ हो जायेंगे।

किंतु टनल कंपनी इस दलील को नहीं मानती। उसका कहना है कि चैनल में अक्सर मौसम खराब रहता है, इसलिए ये नये यान माल को उतनी आसानी से पार नहीं पहुंचा सकेंगे, जितना कि सुरंग मार्ग से संभव है। यदि सुरंग की क्षमता का ७५ प्रतिशत ही उपयोग किया जाये, तो भी हर दिन ४३२ गाड़ियों का आवागमन आसानी से हो सकेगा।

इन दिनों प्रति वर्ष ६० लाख आदमी चैनल पार करते हैं। यातायात-विशेषज्ञों का कहना है कि सुरंग के खुलने के दो-चार वर्षों में ही यात्रियों की संख्या दुगुनी हो जायेगी। तीन यात्री जिसमें बैठे हों, ऐसी एक कार को सुरंग पार करने के लिए लगभग सौ रुपये शुल्क देना पड़ेगा। यह खर्च समुद्र-यात्रा व्यय से एक तिहाई कम है और विमान-किराये के आधे से भी कम।

लेकिन सुरंग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वह दस करोड़ अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के दिलों को मिलायेगी, जो धीरे-धीरे संयुक्त राज्य यूरोप की स्थापना की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

★

जब आदमी के पास कुछ ज्यादा साधन होते हैं, तब वह यह नहीं मानता कि संसार में सब इंसान समान हैं। लेकिन जब पास में कुछ नहीं रहता, तब वह इससे भी आगे बढ़कर बातें करने लगता है।

—रांगेय राघव

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

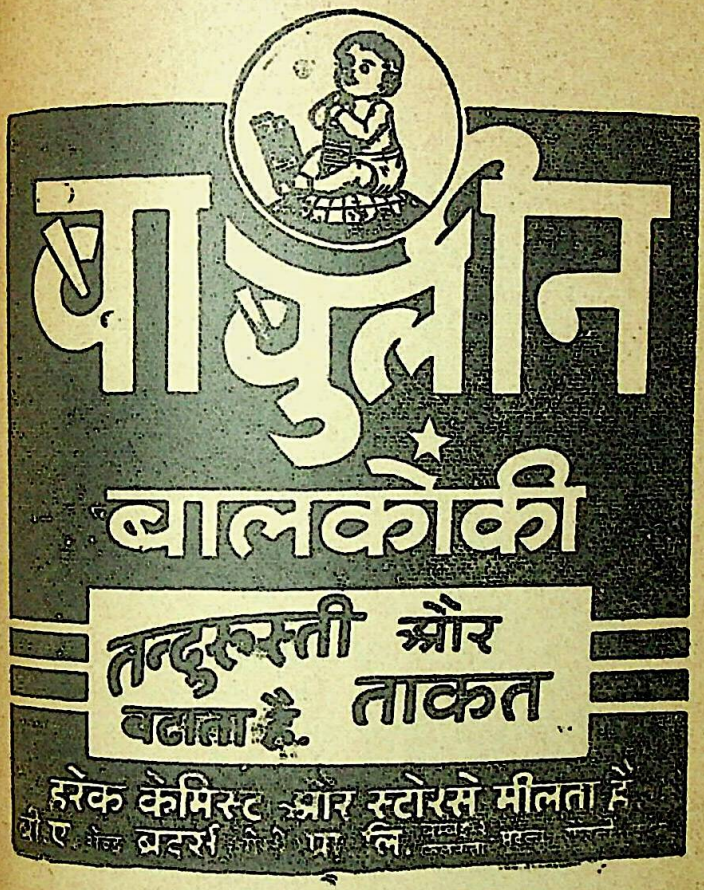

बी० ए० एंड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०

कलकत्ता, पटना और गोहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

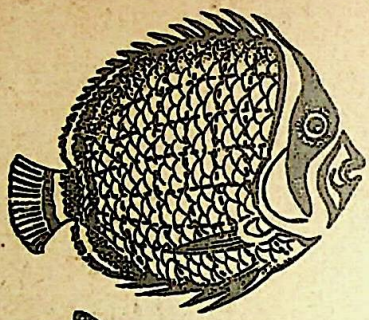

उषा की
आभा जैसे
नित नवीन

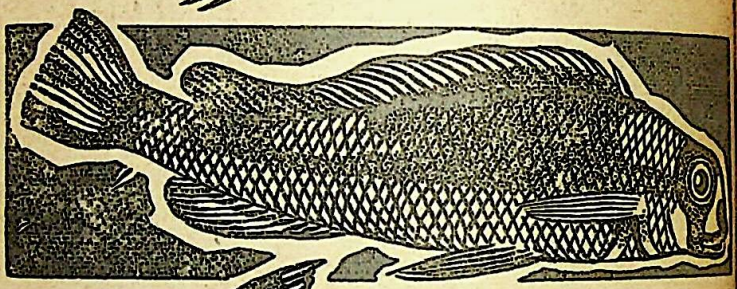

सैन्फोराइज्ड पाप्लीन
कोल्ड ड्रिंक, ब्लू बर्ड, एवर ब्राइट, गुड शाद.
शर्टिंग
स्ट्राइप, डावी, चेक, पाजामा.
धोतियां प्लैटिनम, मशहूर.
मर्सिराइज्ड लोन ५५३१
सूटिंग, गैबर्डिन
रुमाल.
प्रिंट
छपे लोन, वाइल, पाप्लीन,
स्क्रीन छपाई की साडियां.
बुने रंगीन बूटा, २×२ फैन्सी फुल
वाइल लेनो और बूटा में

Arvind
Quality
FABRICS

'SANFORIZED'

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूब थे वे लोग!

स० का० वि०

डॉ० भरतनकुमारप्पा जैसा विद्याव्यसनी कोई विरला ही होगा। प्रारंभ से ही उनकी ज्ञानपिपासा असाधारण और बहु-विध रही। मद्रास में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया, तो अमरीका में ईसाई धर्मशास्त्र का अध्ययन कर 'वैचलर आफ डिविनिटी' ली। एडिनबरा यूनिवर्सिटी से फिलासफी में पी-एच० डी० हुए। फिर भारत आकर कलकत्ता में पाश्चात्य दर्शन के प्राध्यापक नियुक्त हुए। वहां आपने भारतीय दर्शन का गहन अवगाहन किया और रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत पर शोध-निबंध लिखा। फिर में फिर लंदन यूनिवर्सिटी जाकर भारतीय दर्शन में पी-एच० डी० की उपाधि ली। लौटकर मद्रास यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक बने।

और इसके भी बाद गांधीजी के संपर्क में आये, तो गांधी-दर्शन की व्याख्या में कई ग्रंथ लिख डाले और अंत में अपने बड़े भाई जे० सी० कुमारप्पा की, जो गांधीजी के लेखों का विषयवार संकलन कर रहे थे, प्रतीक्षा करते रहे। गांधीजी के लेखों का संग्रह प्रकाशित करने की योजना बनी। अक्तूबर को पुस्तक प्रकाशित होनी थी। निश्चित समय पर प्रकाशन हो जाये, इसके लिए आप घोर परिश्रम कर रहे थे और अस्वस्थ हो गये। डाक्टरों ने विश्राम लेने की सलाह दी, तो कहा—"विश्राम स्थगित हो सकता है, काम नहीं।" उन्हीं दिनों आपने अपने घनिष्ठ मित्रों से कह दिया था—"मुझे लगता है, इसी ग्रंथ में मुझे जीवन की पूर्णाहुति देनी होगी।" और सचमुच वे उसी यज्ञ में समिधा बन गये।

जीवन में उन्होंने शायद ही कभी किसी पर क्रोध किया हो। प्रशंसा-प्रचार से सदा दूर रहे, चुपचाप अपना कर्त्तव्य करते रहे।

शंकरराव व्यास

जीवन के अत्यंत कड़वे अनुभवों को पचाकर दुनिया को मधुर संगीतामृत पिलाने की जैसी उदारता श्री शंकरराव व्यास में थी, वैसी बहुत कम कलाकारों में मिलेगी।

तरुणावस्था तक आपने अपने संगीतगुरु श्री विष्णु दिगंबर पलुस्कर की जिस तन्मयता से सेवा की, वह भी अनुपम थी। गुरुजी ने चाहा कि कोई शिष्य रामचरित-मानस को मोटे अक्षरों में लिख दे, जिससे वे बिना चश्मे के आसानीसे रामायण पाठ कर सकें। शंकर

नादोपासक

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राव ने प्रसन्नता से यह काम पूरा किया। आज भी उनके हाथों लिखी वह पांडुलिपि नासिक के 'रामनाम आधार आश्रम' में रखी है।

गृहस्थी की नाव बड़े पथरीले रास्तों से आगे बढ़ी और उस दिन तो मानो वह नाव चकनाचूर हो गयी, जब १९३३ में आपका जवान लड़का जिंदगी से रूठकर चल बसा। तीन दिन की मूर्छा के बाद जब आप संभले, तानपूरा निकाला और आलाप में खो गये। हृदय यही गीत गुनगुनाता रहा—'जीवन के मम प्राणसखा रे, सुंदर माधव नंद दुलारे'। संगीत ने हृदयाकाश में उमड़े शोक के बादलों को आंसू बनकर बरसने का अवसर दिया।

उन आंसुओं ने दिल का भार कुछ हल्का किया और आप पूर्णतः ईश्वर-समर्पित संगीत की साधना में समाहित हो गये।

आपकी एक ठुमरी बड़ी लोकप्रिय हुई—'नदिया धीरे बहो, मोरे सैंया उतरेंगे पार'। गद्‌गद कंठ से जब आप ये पद गाते थे, तो श्रोता झूम-झूम उठते थे। और मां भगवती की स्तुति में जब आप गाते थे —'जय देवी अंबिका मात भवानी,' तो हजारों मस्तक माता भवानी के चरणों में झुक जाते थे।

फिल्म-प्रेमियों को 'वीणा मधुर-मधुर कछु बोल,' 'भारत की इक सन्नारी की कथा सुनाते हैं' आदि लोकप्रिय गीतों की धुनें देनेवाले व्यासजी देश को शास्त्रीय संगीत तथा जन-संगीत के समन्वय की एक नयी परंपरा दे गये हैं।

हेनरी डुनांट

विश्व-भ्रातृत्व की स्थापना में सर्वाधिक कार्य करने के उपलक्ष्य में हेनरी डुनांट को जब १९०४ में नोबेल शांति - पुरस्कार मिला, तब वे केवल चार पैसे का भोजन खाकर गरीबी की जिंदगी गुजार रहे थे।

सच्चा ईसाई

नोबेल-पुरस्कार मिलने के बाद वे [illegible] थोड़े ही दिन जिंदा रहे।

उनके प्रयत्नों से ही १८६३ में जिनेवा की प्रथम अंतर्राष्ट्रीय परिषद बुलायी गयी थी, जिसमें चौदह देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने निश्चय किया कि युद्धक्षेत्र में घायल हुए शत्रु-पक्ष के सैनिकों की भी निःस्वार्थ चिकित्सा की जाये। इस परिषद् के निर्णय ही रेडक्रास संस्था का आधार बने।

सबसे पहले आपने लंबार्डी के मैदान में जहां नेपोलियन तृतीय की सेनाओं ने इटली को आस्ट्रिया के विरुद्ध लड़ाई में सहायता दी थी और जहां २० हजार आस्ट्रियन १८ हजार इटालियन और फ्रांसीसी सैनिक घायल होकर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, अकेले ही बिना विशेष धन-जन की सहायता के कुछ स्वयंसेविकाओं को साथ लेकर चिकित्सा-कार्य प्रारंभ किया था।

आज विश्वव्यापी सेवा-संस्था रेडक्रास के जन्मदाता के रूप में आपकी अमर कीर्ति समस्त संसार में व्याप्त है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिम्मते मर्दां, मददे खुदा

हम का सबसे ऊंचा धरातल है—आस्था का धरातल, जिस पर पहुंचकर आत्मा स्वयं अपनी ढाल और मशाल बनकर मृत्यु का मुकाबला करती है।

बाब मार्गन

पिछले साल हालीवुड में मैंने कलाबाज के तौर पर खतरे के बीच बिताये हैं। कलाबाज को खतरा मोल लेने का ही पैसा मिलता है—ऐसा खतरा, जिसमें फिल्म स्टूडियोवाले अपने कीमती अभिनेताओं को नहीं डालते। वह अभिनेता स्वयं अपने सिर संकट लेने को तैयार भी हों।

अच्छा कलाबाज होने के लिए तीन बातें जरूरी हैं। अदम्य साहस, मजबूत देह और अपने काम में रुचि। इन तीनों में अदम्य साहस ही संभवतः सबसे ज्यादा जरूरी है; क्योंकि जब भी हम इस काम के लिए आगे बढ़ते हैं, हमें खतरे का सामना करना पड़ता है। मैंने देखा है कि चंद मिनिटों में मानव-देह की धज्जियां उड़ सकती हैं। पिछले कुछ महीनों के दौरान मैंने एक और बात भी देखी है और वह यह कि आत्मा पर यह बात लागू नहीं होती। मनुष्य की आत्मा विशाल है, वह कतई नाजुक है पर भंगुर नहीं।

नौ-सेना छोड़कर मैं इस क्षेत्र में जीविका अर्जित करने लगा। वर्षों मुझे बड़ी सावधानी से इस प्रकार तैयार किया जाता रहा कि मैं हालीवुड के किसी-न-किसी अभिनेता की तरह दिखूं। मैंने रोंगटे खड़े कर देनेवाले करतब दिखाये हैं और इसमें मुझे कभी चोट नहीं लगी। मुझे कभी चोट न लगने का कारण यह था कि मैं कोई काम बेतुके ढंग से नहीं करता था और हमेशा अपने आपको सही भौतिक स्थिति में रखता था। मुक्काबाजों या फुटबाल के खिलाड़ियों की तरह मैं पहले किसी काम की तीन-चार सप्ताह की ट्रेनिंग लेता था और तब उसकी फिल्मी शूटिंग में भाग लेता था।

ऐसी ही तैयारी के बाद मैं सिनेरामा फिल्म 'हाउ दि वेस्ट वाज वन' की शूटिंग के लिए एरिजोना गया था। ऋतु अनुकूल थी और सब कुछ ठीक चल रहा था। किंतु अप्रैल १९६२ के एक दिन भयंकर दुर्घटना हो गयी।

उस दिन रेलगाड़ी को लूटने का दृश्य फिल्माया जा रहा था। गाड़ी छोटी लाइन पर चलनेवाली और पुराने फैशन की थी, जिसमें पुराने ढंग का धुंआ छोड़नेवाला इंजिन लगा था। एक या दो यात्री-डिब्बे थे, बाकी खुले हुए डिब्बे थे, जिनमें लकड़ी के लट्ठे ले जाये जा रहे थे। सबसे पीछे गार्ड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का डिब्बा था।

मेरे बाल सुनहरे रंगे हुए थे, ताकि मैं अभिनेता जार्ज पेपर्ड मालूम पड़ूं। मुझे उसकी तरह एक खतरनाक दृश्य का अभिनय करना था। इस दृश्य में जार्ज पेपर्ड एक बड़े लट्ठे को पकड़कर लटकता है। उसके बाद वह लट्ठे ढोनेवाले दो डिब्बों के बीच, उन्हें जोड़नेवाले कुंडे पर आ लटकता है।

इस दृश्य को इस प्रकार दिखाया जाना था कि इमारती लकड़ी के इन लट्ठों का भारी ढेर अंत में बिखरकर एक घाटी में इस कदर गिरे कि भयानक विनाश का दृश्य उपस्थित हो जाये।

स्टंटमैन मार्गन और पत्नी

ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि जिन जंजीरों से लट्ठे बंधे थे, वे एक निर्दिष्ट संकेत मिलते ही खुल जायें। मुसीबत यह हुई कि संकेत बहुत जल्दी दे दिया गया। और इससे मुझ पर भयंकर विपदा आ गयी।

मैंने अपना दृश्य पूरा कर लिया था; किंतु कैमरे अभी तक मुझ पर थे। वे बस मुड़ने ही वाले थे। मैं अभी लट्ठेवाले डिब्बों के बीच के कुंडे पर खड़ा था कि लट्ठे खुल गये। १५,००० पौंड का एक लट्ठा मेरी पीठ में लगा और मैं भहराकर सीधा पटरी पर जा गिरा। गाड़ी के चक्के तेज चाल से गुजर रहे थे। लट्ठेवाले दो डिब्बे और गार्ड का डिब्बा मेरे ऊपर से गुजर गये।

लोग चलती गाड़ी से गिर जाते हैं और पटरियों के बीच की जमीन से चिपके रह कर जिंदा बच जाते हैं। पर मैं तो पटरियों के ऊपर गिरा था। मुझे आज भी याद है, उस समय मैं यही सोच रहा था—"हाय, मेरे भाग्य में यही मौत बदी थी।" लट्ठे ढोने-वाला एक डिब्बा मुझसे इतनी जोर से टकराया कि वह पटरी से उछल गया।

जब लोगों ने मुझे उठाया, तो मैं आदमी नहीं, चिथड़ों का ऐसा खिलौना मालूम हो रहा था, जिसकी धज्जियां उड़ गयी हों। मेरे चेहरे का दायां भाग क्षत-विक्षत हो गया था। मेरा शरीर भयानक रूप से तुड़मुड़ चुका था। जब लोग मुझे पास के गांव में डाक्टर के पास लाये तो किसी को यह विश्वास नहीं होता था कि अब मैं जिंदा बचा हूंगा।

मेरे घावों की मरहम-पट्टी करना गांव के उस छोटे-से अस्पताल के डाक्टरों के बूते के बाहर था। अतः मुझे फौरन ७० मील दूर फोनिक्स के बड़े अस्पताल में लाया गया। वहां नौ डाक्टरों ने मेरी जान बचाने के जी-जान से कोशिश की। दर्जनों बोतल खून मेरे शरीर में चढ़ाया गया। इसके बावजूद जैसा कि बाद में डाक्टरों ने मुझे बताया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय-गति दो बार बंद हुई। जाने कैसे
र फिर से शुरू हो गयी। हो सकता है, यह
ना का प्रभाव हो। उस समय बहुत-से
मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे।

मेरी पत्नी वोन दे कार्लो बड़ी अच्छी
लेबेरी है। किंतु इससे भी बड़ा गुण उसमें
है कि वह बड़ी ही जीवट की महिला
। वह फौरन विमान से फोनिक्स आ पहुं-
। हमारी बड़ी बेटी बेरी ली को तो वह
साथ लायी थी; पर दो बच्चों को कैलि-
निया में ही छोड़ आयी थी, जहां हमारा
है। बाद में उसने बताया, उसे लग रहा
कि मैं नहीं बचूंगा। लेकिन जब मैं किसी
से अपनी एक आंख खोल पाया, तो मैंने
वोन मेरे पलंग के पास खड़ी है और
पति का जो हाल हुआ है, उसे देख
है। मेरे देखते ही वह मुस्करायी और
-"बाब, फिक्र न करो; तुम एकदम
हो जाओगे।"

आस्था या विश्वास का मेरा एक अपना
है। ईश्वर में विश्वास करने मात्र
नाम आस्था नहीं है। मेरे विचार से
स्था या विश्वास किसी लक्ष्य तक
ने के प्रति विश्वास रखने का नाम
। चाहे इसके पूर्ण प्रमाण मौजूद हों
लक्ष्य पर पहुंचना संभव नहीं, फिर भी
विश्वास बना रहे कि मैं उस तक
कर रहूंगा—इसी को मैं आस्था कहता
। यह इच्छा-शक्ति की बात है, और वह
: अपना चमत्कार दिखाती है।

जब वोन अस्पताल के कमरे में आयी,
उस समय मैं इतना कमजोर था और मुझ
ऐसा सदमा पहुंचा था कि मैं शायद ही कुछ
सोच सकता था। किंतु जब मैंने उसे देखा,
उसकी बात सुनी, तो मुझमें तुरंत एक
आस्था जागी। मुझे विश्वास हो गया कि मैं
उसे छोड़कर नहीं जानेवाला हूं। मैंने निश्चय
कर लिया कि मैं मरूंगा नहीं। अब मेरे
सामने एक लक्ष्य था। उसे पाने की मैंने
कोशिश की मैंने मन-ही-मन कहा—"डटे
रहो बाब, डटे रहो।" मैं इस कथन के साथ
इस पर पूरा-पूरा विश्वास भी करता रहा।
अंततः मैंने अपना लक्ष्य पा लिया। मेरा
विश्वास है, मेरे जिंदा रहने में मेरी आस्था
का सबसे बड़ा हाथ था।

लंबे समय तक मैं जीवन और मृत्यु के
बीच झूलता रहा। मेरी देह के कई अंग
सड़ गये थे। डाक्टरों को मेरी बायीं टांग
जांघ से काटनी पड़ी। यह मुझ पर बहुत
बड़ा मानसिक आघात था, क्योंकि मुझे
अपनी शारीरिक शक्ति पर सदा गर्व रहा
था। इसी की बदौलत खेल-कूद में मैंने
अपनी प्रतिभा दिखायी थी। विशेषतः गाल्फ
के खेल में। लेकिन डाक्टर विवश थे—टांग
न कटवाने का मतलब था मौत।

धीरे-धीरे मैं ठीक होने लगा। शरीर में
दर्द तो होता ही था, इसके अतिरिक्त अव-
साद और निराशा के पिशाच मुझे दबोचे
रहते। मैंने देखा कि मेरी भोजन करने की
इच्छा ही नहीं होती। और तब मैंने अपने
सामने दूसरा लक्ष्य रखा —" भोजन करो
और अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करो।" मैं अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपसे कहता—"जीवित रहने का लक्ष्य प्राप्त कर लेने का कोई लाभ नहीं है, यदि तुम कमजोर और असहाय होकर रहे।" और इस तरह मैंने अपने आपको भोजन करने के लिए बाध्य किया, बाद में व्यायाम के लिए भी।

अनुभव ने मुझे सिखाया है कि लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह कोशिश नहीं करनी चाहिये कि सब कुछ एकदम हाथ आ जाये। बल्कि किसी एक चीज के लिए हाथ बढ़ाना चाहिये, जो हमारी पहुंच से बाहर हो। जब वह पकड़ में आ जाये, तो फिर और आगे बढ़ना चाहिये, और तब तक बढ़ते जाना चाहिये, जब तक कि संपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।

और मैंने एक लक्ष्य यह तय किया कि जिस दिन चिकागो में बोन का नया 'शो' होनेवाला था, मैं अस्पताल से उस दिन तक छुट्टी पा जाऊं। वह दिन सितंबर में था—दुर्घटना के लगभग छः माह बाद। धन्यवाद डाक्टरों को और मेरी इच्छा-शक्ति को कि मैं उस दिन किसी-न-किसी तरह उस शो में उपस्थित होकर रहा।

कितनी विचित्र बात है कि विपत्ति हमारी आंखें खोल देती है और हमें उसी के जरिये पता चलता है कि आदमी का जिंदा रहना कितना सुंदर है और यह कैसे अचरज की बात है।

लोग मुझे पूछते हैं कि जीवन में अब कड़वाहट तो महसूस नहीं करते? अब कड़वाहट क्यों महसूस करूंगा? विपत्ति में मुझे कितने लोगों ने कितनी सहायता दी, जिनका खून मेरी देह को दिया गया, जो जानते तक नहीं। लोगों ने मुझे समवेदना के पत्र भेजे, शायद वे पहले मुझे जानते न थे। डाक्टरों और नर्सों ने दिन-रात जान बचाने का प्रयास किया। अनेक ने मुझे आर्थिक सहायता देनी चाही। लोगों ने मेरे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थनाएं कीं।

अब मैं अपने परिवार के साथ रहने लगा हूं। जीवन को नये प्रकार से जी रहा हूं। पहले की तरह तो नहीं, फिर भी मैं अपनी नकली टांग पर खड़ा रहकर गेंद को काफी दूर तक मार लेता हूं। सोचता हूं, इस प्रकार पुनर्जीवन प्राप्त कर मैंने कुछ और लोगों के लिए भी विश्वास हिम्मत न हारने की प्रेरणा का काम किया है। उन्हें मैं यही कहता हूं—"अगर मैं ऐसा कर सका, तो आप क्यों नहीं कर सकते? आप भी ऐसा कर सकते हैं। जीवन में उन्नति का रहस्य यही है। एक लक्ष्य निश्चित कीजिये। उस तक पहुंचने का भरपूर प्रयत्न कीजिये। लक्ष्य को पाकर उस पर डटे रहिये—तब तक डटे रहिये, जब तक उससे आगे के लक्ष्य पर न पहुंच जायें।

★

भाग्य को मुझ पर अपने तरकश के सारे तीर चला लेने दो। मेरी आत्मा उस विस्तृत ढाल के समान है, जो उन सबको सह लेती है—और भी अधिक सहने के लिए तैयार रहती है।

—अज्ञात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

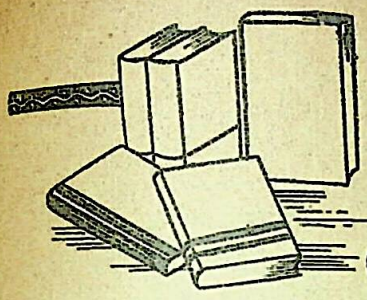

नयी पुस्तकें

वे दिन

लेखक: निर्मल वर्मा; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : २३२; मूल्य : रुपये ५० पैसे।

उपन्यास 'वे दिन' यूरोपीय जीवन के धरातल पर जिया हुआ एक भारतीय व्यक्ति का संस्मरण है। कथा का यह नायक चेकोस्लोवाकिया में अध्ययन के लिए गया हुआ था। प्राग में अध्ययन करते हुए वह एक होस्टल में रहता था। क्रिस्मस की छुट्टियों में, जेब खाली होने के कारण जब कोई काम की तलाश थी, कुछ विदेशी भ्रमणार्थियों के साथ दुभाषिया और गाइड के रूप में रहने का काम उसे मिला। भ्रमणार्थियों में वियेना की महिला श्रीमती रायना का उसके साथ घूमना-फिरना, परस्पर प्यार हो जाना और इस प्यार की परम अवस्था शारीरिक मिलन के बाद दोनों का तुरंत बिछुड़ जाना—यही इस संस्मरण-कथा का सारांश है। किंतु इस कथा के माध्यम से लेखक ने यूरोप के युद्धोत्तर जीवन की निराशा और कुंठाओं का चित्र बड़ी समर्थ शैली में प्रस्तुत किया है। वहां का जीवन कितना यांत्रिक और यंत्रणा-ग्रस्त है—शायद साधारण भारतीय की समझ में सहज ही न आ सके; तथापि उन्नत स्तर के पाठकों के लिए इस कृति में बहुत कुछ है।

निर्मल वर्मा का यह कृतित्व उन लोगों की शिकायत भी कुछ हद तक दूर करता है, जो यह कहते हैं कि हिन्दी-उपन्यासकारों का कैन्वास संकीर्ण है। भारत की भौगोलिक सीमा के बाहर विदेशी जीवन को लेकर बुनी हुई यह कथा पढ़ते हुए यह कहीं भी नहीं लगता कि लेखक विदेशी है! वह जैसे यूरोपीय जीवन में रम-रच गया है और वहां की जिंदगी और परिवेश की धड़कनों को अपनी लेखनी के 'टेप' पर उतारता चला गया है।

"गर्म पानी में नहाने के बाद मुझे लगता है, जैसे धूप में बैठकर हमने बीयर पी हो।" ठंडे देशों के जीवन की ऐसी अनुभवपूर्ण उक्तियों की छटा इस पुस्तक में यत्र-तत्र-सर्वत्र है।

शैली-शिल्प के नयेपन और ताजगी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए भी यह उपन्यास पठनीय है। पर जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते, बहुत से संवाद अंग्रजी में होने के कारण, दिक्कत महसूस करेंगे। अंग्रेजी के 'यू' (तुम) शब्द से अंग्रेजी भाषी 'वी' (हम) का काम भी लिया करते हैं, हिन्दी में इसके लिए हम शब्द का व्यवहार होता है। लेखक ने अंग्रेजी के अनुकरण में बहुधा 'तुम' का प्रयोग कर बहुत-से 'जनरल स्टेटमेंट' दिये हैं, उन प्रसंगों में 'तुम' शब्द कुछ भद्दा लगता है। 'तार' हिन्दी में पुंल्लिग है, लेखक ने स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया है। उपन्यास में नायक-नायिका के अतिरिक्त टी० टी०, फ्रांज, मारिया और सेंट पीटर जैसे चरित्र ऐसे हैं, जो स्मृति पर अपना असर छोड़ जाते हैं।

भारत के क्रांतिकारी

लेखक : मन्मथनाथ गुप्त; प्रकाशक : हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लि०, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : २३६; मूल्य : दो रुपये।

ब्रिटिश दासता से मुक्ति पाने के अभियान के दो मोर्चे थे—एक क्रांतिकारियों का, दूसरा गांधीवादियों का। क्रांतिकारियों का अभियान गांधीजी से बहुत पहले १८५७ से आरंभ हो गया था। २९ मार्च १८५७ के दिन मंगल पांडे ने अपनी बंदूक से गोली दागकर मानो क्रांति-युद्ध की घोषणा की। तब से असंख्य क्रांतिकारी प्राणों की आहुति देकर, अंग्रेजों से जूझते रहे। ऐसे अनगिनत पौने दो सौ जुझार क्रांतिकारियों का वर्णन इस पुस्तक में है—इस क्रम से कि उनके प्रयत्न का पूरा इतिहास हमारे सामने आ जाये। लेखक स्वयं इस प्रयास में शामिल था, इस उसने इसको बहुत कुछ अपनी आंखों देखा है। फिर बड़े अध्यवसाय से उसने पुराने दस्तावेज तथा अन्य प्रमाण जुटाकर पुस्तक की सामग्री को प्रामाणिक बनाया है। इस प्रकार यह पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता के महायज्ञ में समिधा बननेवाले प्रातःस्मरणीय महापुरुषों की जीवनी भी है और तल्लीन इतिहास भी।

इसे पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि देश को स्वाधीन कराने में जहां गांधीवादी प्रयत्नों का हाथ था, वहां क्रांतिकारियों का योग दान भी कम नहीं था—भले ही वर्तमान शासक-पक्ष ने उसकी उपेक्षा की हो। यह उपेक्षा लेखक को काफी खली है, किंतु ऐसा नहीं है कि जनता ने भी वैसा बरती हो। रानी लक्ष्मीबाई, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, सुभाषचंद्र बोस के प्रति जन-मन में जो श्रद्धा है, वह किसी भी आधुनिक नेता की अपेक्षा कम नहीं है।

—आलोक शीशोदिया

★

पहला भिखारी :—जानते हो, भीखू ने भीख मांगना छोड़ दिया और किसी कंपनी में जाकर नौकरी कर ली है!

दूसरा भिखारी :—अरे, क्या कहते हो यार! कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो पैसे के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप स्वप्न-सा लगती हैं–

आप स्वप्न-सा समझती हैं–

आप अपने को
शक्ति सिल्क की
मनोहरता से सजाईये,
और आपके स्वप्न सच
हो जायेंगे। शक्ति सिल्क,
जिसके डिज़ाइन इतने
रंगबिरंगे और रचना इतनी
शानदार है, जो आप ही को
मोहित करने के लिये तैयार किये
गये हैं। अपने आप को देखिये,
शक्ति सिल्क में आप कैसी
सुंदर और विचित्र लगती हैं।

क्रेप, टफेटा, साटीन, ब्रोकेड्स,
निलोन और रेयान, सूटों और कमीजों
के लिये टैरिलिन, सूटों के लिये रेयान

Shakti Silks

पोदार उत्पादन

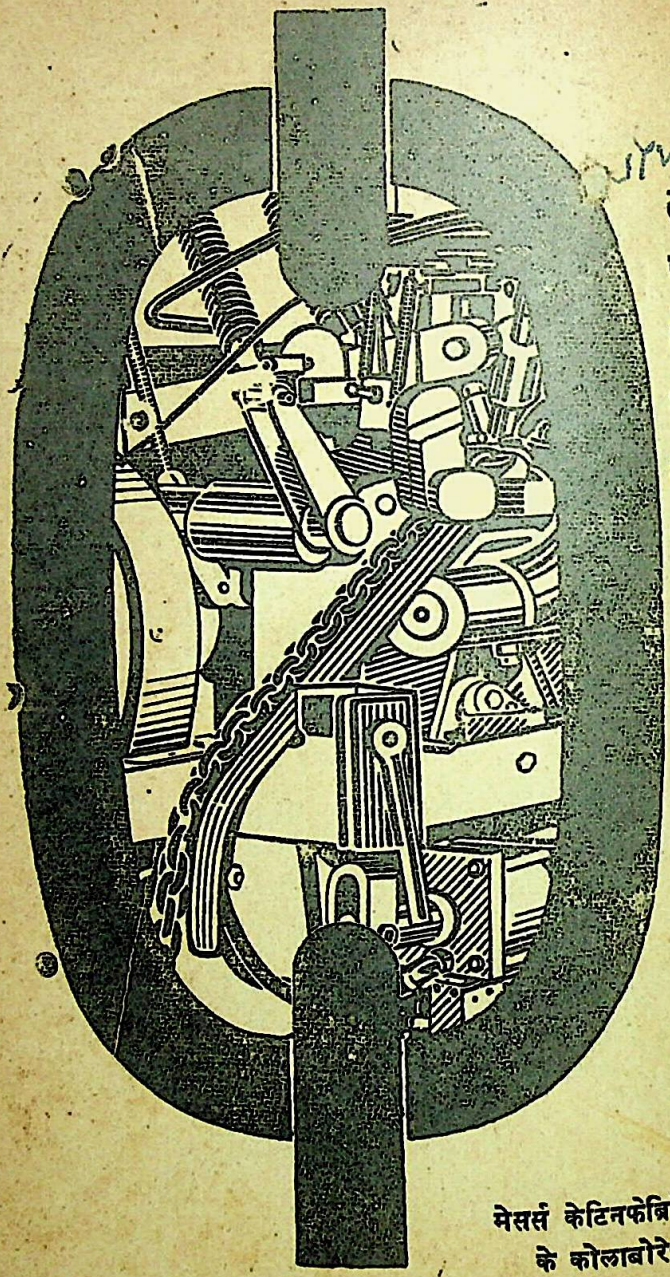

तीव्र परीक्षण के बावजूद- यह कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की वैज्ञानिक पूर्ण निरीक्षण में की जाती है।

प्रत्येक कड़ी एक ही क्वालिटी की बनती है। इन कड़ियों से बनी सांकल की मजबूती व क्वालिटी की गारंटी है। कैलिब्रेट की हुई सांकल की वास्तौल एकदम ठीक और विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अस्लो नार्वे के कोलाबोरेशन में निर्मित

"SPRUCE"

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स लि०

बंबई आगरा रोड, भांडप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

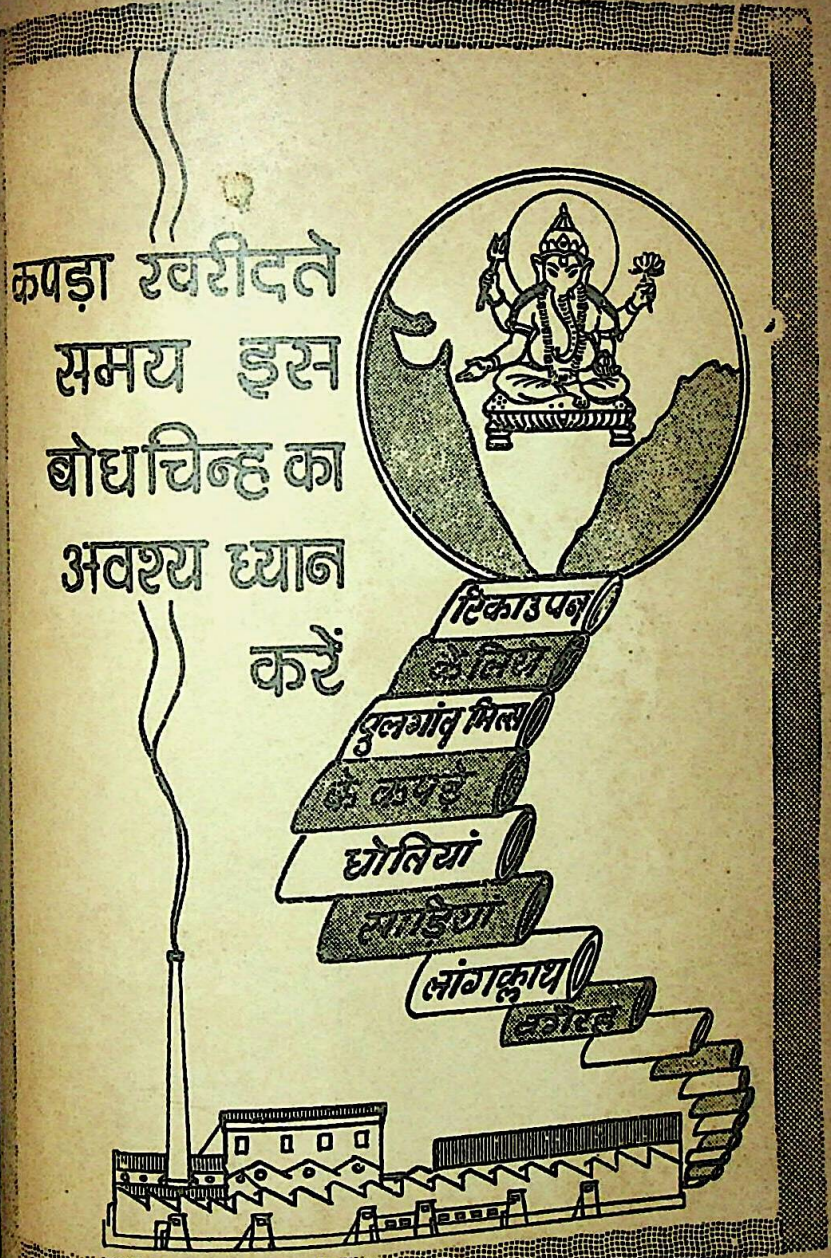

पुलगांव कॉटन मिल्स लि०, बम्बई

(मूल्य १

वार्षिक मूल्य १०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 62

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)

पश्चिम रेलवे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब भीजिये

लोमा

हस्ती शीशी में

२०० ग्रॉस !

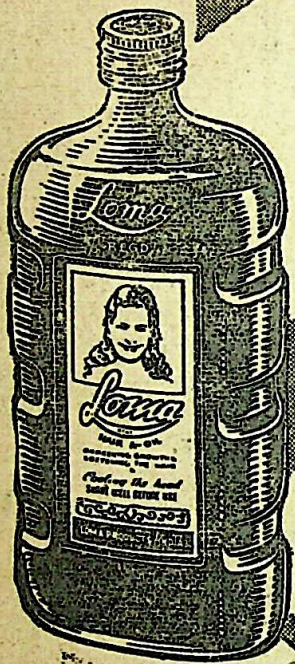

बड़ी और छोटी शीशियां
पहले की भांति सुलभ हैं
शी शी में हो या ट्यूब में
लोमा हमेशा अच्छा है

लुभावनी खुशबूवाला
विश्वविख्यात केश
तैल जो बालों को
श्याम बनाता है

सोल एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद -१
एजेंटस: सी. नरोत्तम एंड कं. बम्बई -३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'टेबिलाइज्ड' और मैफिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलतें है ।।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • ससून बम्बई • ससून
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Aiyars MGSP 1838 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

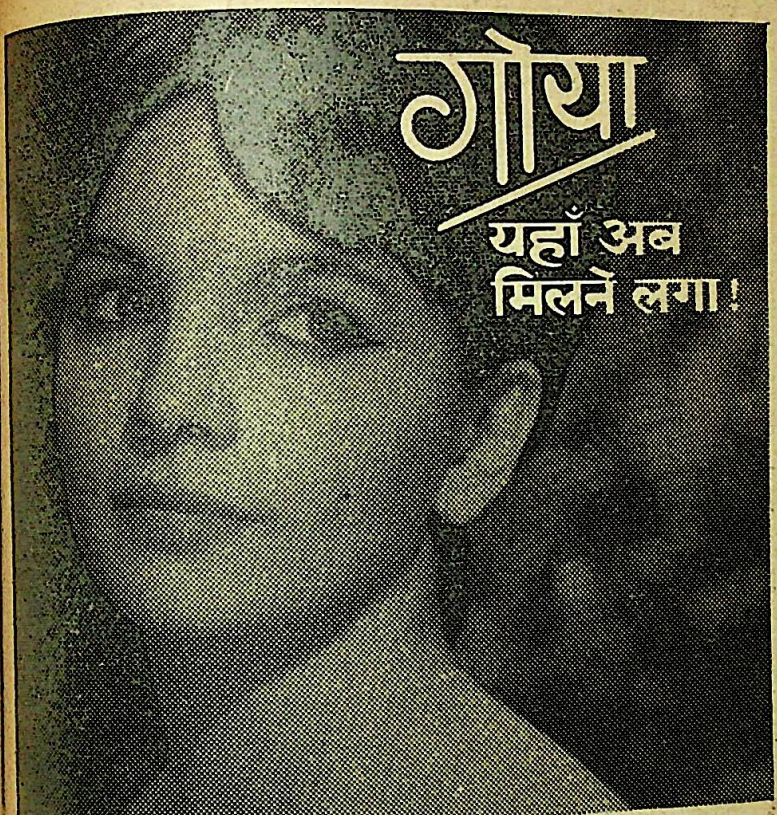

पेरिस, लंदन और न्यू यार्क की मोहक दुनिया में प्रचलित

अब विश्वविख्यात गोया की सुगन्धियाँ इनके रेशम जैसे मुलायम टेल्क के स्वरूप में आपको मिलती हैं। ये उत्तम सुगन्धियाँ– मनभावन ब्लैक रोज़, ताज़े फूलों सी सुवासित गार्डेनिया और मोहक पासपोर्ट – बनायी गयी हैं जिनकी सुगंध बहुत देर तक बनी रहती है। आप इनमें से कोई भी पसन्द कर सकती हैं। ये सुगन्धियाँ दुर्गन्ध को दूर करतीं और आपको तरोताज़ा तथा अधिक खुशबूदार बनाये रखती हैं।

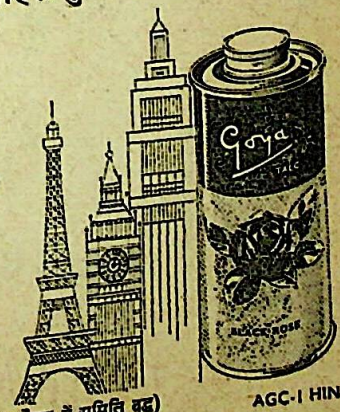

टेल्क सुगन्धियों से युक्त

गोया

पेरिस
लंदन
न्यू यार्क

अब भारत में बनने लगीं एटलांटिस (ईस्ट) लि० (इंगलैण्ड में समिति बद्ध)

AGC-1 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए जरूरी है
बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेअर आयल
आपके लम्बे काले
मुलायम और
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

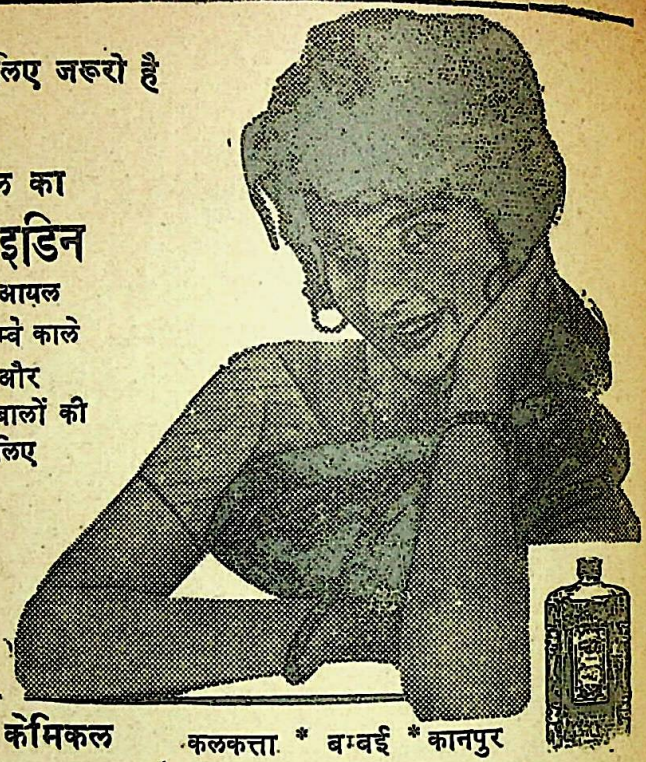

बंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

न्यू स्वदेशी

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

आकर्षक डिज़ाइन और सुन्दर रंग

न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद

नरोडा रोड – अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देना बैंक

में

अपने बच्चों के लिये अल्पवयस्क बचत खाते खोलकर उनको बचत करने का महत्व सिखाइये

१० वर्ष तथा उससे अधिक आयु के बच्चे अपने खुद के नामपर और अपने खुद के हस्ताक्षर से खाते खोल सकते है। ब्याज ४%

मुफ़्त देना बैंक में अल्पवयस्क सेविंग्ज खाता खोलने पर एक आकर्षक सिक्का पेटिका मुफ़्त मिलेगी

देवकरण नानजी बैंकिंग कपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज़,
१७, हॉर्निमेन सर्कल, बम्बई-१.

१४५ से अधिक ऑफ़िस तथा ४५ सेफ़ डिपोज़िट बॉक्स

प्रवीणचंद्र व गांधी मैनेजिंग डाइरेक्टर

DB/H/105A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) भारत सरकार
के हिन्दी में प्रकाशित
विविध वैज्ञानिक तथा तकनीकी संदर्भ ग्रंथ और मानक पुस्तकें

		रु. प.
१–पारिभाषिक शब्द संग्रह	निदेशालय द्वारा संग्रहीत	१२.००
२–विज्ञान शब्दावली	निदेशालय द्वारा संग्रहीत	७.२५
३–प्राणिविज्ञान दीपिका	ले० मगन बिहारी लाल	६.००
४–भारतीय परम्परा	मूल ले०–हुमायुन कबिर, अनुवादक–महेन्द्र चतुर्वेदी	२.५०
५–अर्ध चालक और उनके उपयोग	ले.०–ए० यौफी, अनुवादक–उदित कुमार शर्मा	३.७५
६–भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था	ले०–हरिगोपाल परांजपे	८.५०
७–समस्थानिकों के संसार में	मूल ले०–मेज़ेन्सेफ, अनुवादक–जगदीशचन्द्र सोनी	२.९०
८–शुद्ध घन ज्यामिति प्रवेशिका	ले०–गणेश सखाराम महाजनी, अनुवादक–हरिहर प्रसाद सिन्हा	४.१५
९–समीकरण सिद्धांत	ले०–डा० श्रीराम सिन्हा	३.३५
१०–रहस्यमय विश्व	ले०–जेम्स जीन्स, अनुवादक–श्रीमती अनन्त लक्ष्मी अम्माल	२.८०
११–माताओं और शिशुओं के रोगों की रोक-थाम	ले०–ओ० मकैयेवा, अनुवादक–दिनेशचन्द्र शर्मा	४.००
१२–अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	ले०–महेशप्रसाद टंडन	८.८०
१३–कार्बोहाइड्रेट्स और ग्लाइकोसाइड	ले०–फूलदेव सहाय वर्मा	४.८५

बिक्री-स्थान :

१–व्यवस्थापक,
प्रकाशन शाखा,
भारत सरकार,
सिविल लाइन्स,
दिल्ली–६

२–किताब महल,
जनपथ,
नई दिल्ली

DA 65/13

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने मृदु
कितने ताजे
कितने उल्लासकारी

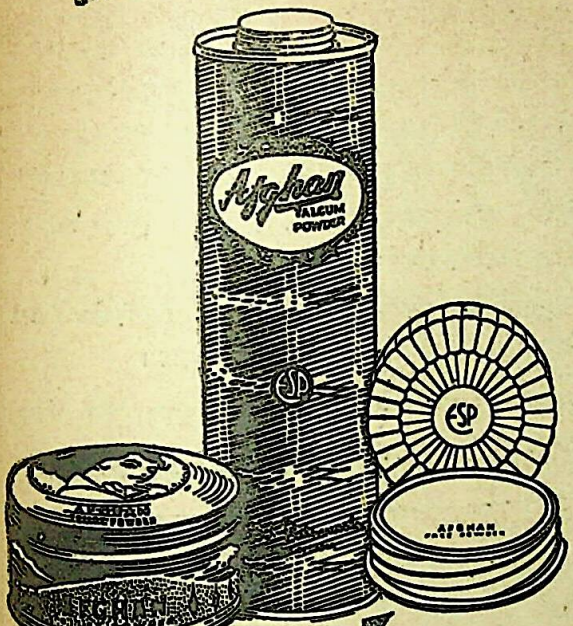

powders

* जादुई नुस्खे से बने
* * भीनी सुगंधवाले
* * * सुघड़, सुंदर पैकिंग में बंद

मुँह-हाथ धोने या नहाने के बाद छिड़क लीजिये। उमस के इन दिनों म ये आपको शीतल रखेंगे, घाम व पित्ती से बचायेंगे और ये जिस्म पर पपड़ी की तरह जमते नहीं। इनसे त्वचा सुगंधित रहती है, मनपसंद महक आपको मिलती है, कपड़े पहनने में सुविधा होती है।

अपार अनुभव, सुदीर्घ समय और परिश्रम ने पाटनवाला की इस सफल सृष्टि को संभव बनाया है

अफगान स्नो

सौंदर्य-प्रसाधन

ई. एस. पाटनवाला, बंबई-७७ (भारत)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'नवनीत' के पुराने अंक चाहते हैं!

नवनीत के पाठक—खासकर वाचनालय और शिक्षण संस्थाएं—'नवनीत' के पुराने अंकों की फाइलें रखना चाहते हैं। इसी विचार से नवनीत के पुराने अंकों की फाइलें सस्ते मूल्य में देने की योजना हमने बनायी है। जनवरी-जून और जुलाई दिसंबर के ६-६ अंकों की विषयानुसार सूची के साथ जिल्दें बना दी गई हैं।

निम्नलिखित फाइलें हमारे पास हैं। १९५४ से १९५७ तथा १९६०, १९६१-६२ की पूरे वर्ष की फाइलें प्राप्त हैं।

प्रत्येक छमाही जिल्द का मूल्य २.५० रुपये और पोस्टेज (रजिस्ट्री) १.५० रुपये और रेलवे से मंगानेवाले को पोस्टेज माफ।

— नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ तारदेव, बंबई ३४

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

न व नी त प्र का श न लि०

बम्बई- ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी प्रिय पनामा संबंधी कुछ तथ्य

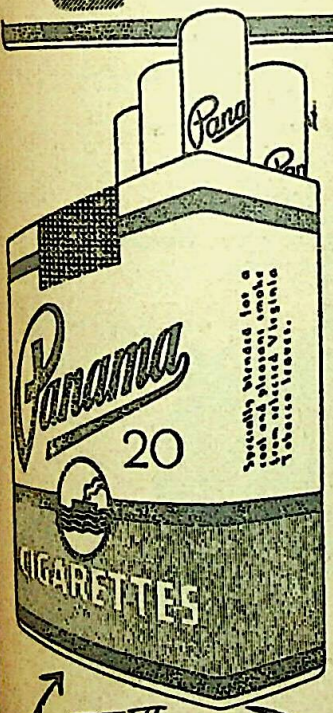

१ शीतल और सौम्य धूम्रपान के लिए आपकी पनामा चुनी हुई वर्जीनिया तम्बाकुओं को मिश्रित करके बनायी जाती है।

२ भारत के कोने-कोने में लोकप्रिय पनामा की बिक्री अपने दर्जे की सबसे ज़्यादा बिकनेवाली सिगरेटों में है।

३ देश के कई भागों में पनामा बिक्री में अव्वल भी है।

४ बरसों पहले पनामा द्वारा अपनाया गया २० सिगरेटों-वाला 'पाउच' पैकिंग आज भी लोकप्रिय है।

पनामा पीना और पिलाना एक उम्दा बात है!

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-५८

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े की मस्त चाल जैसा मस्त

अरविंद

इन बढ़िया कपड़ों की शान बढ़ती ही जा रही है

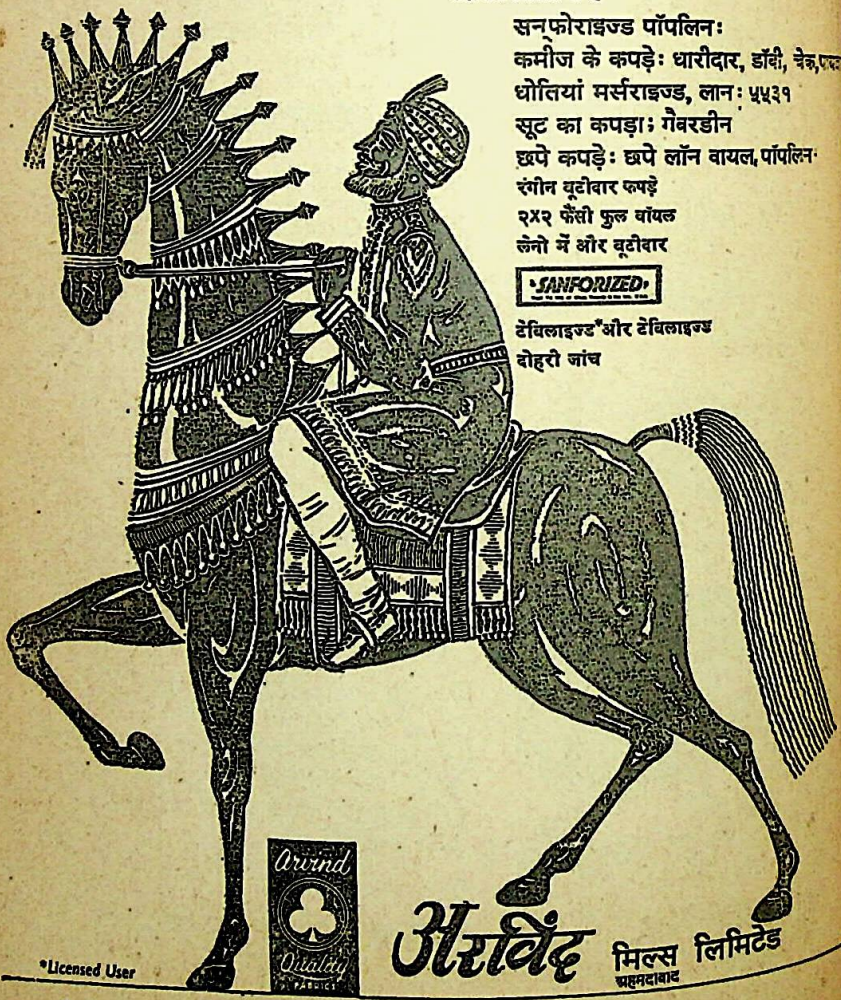

विभिन्न किस्मों में है

सन्फोराइज्ड पॉपलिनः
कमीज के कपड़ेः धारीदार, डॉबी, चेक, प्लेन
धोतियां मर्सराइज्ड, लानः ५५३१
सूट का कपड़ाः गैबरडीन
छपे कपड़ेः छपे लॉन वायल, पॉपलिन
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल वॉयल
लेनो में और बूटीदार

'SANFORIZED'

टेविलाइज्ड* और टेविलाइज्ड
दोहरी जांच

Arvind Quality Fabrics

*Licensed User

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मई
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया

शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

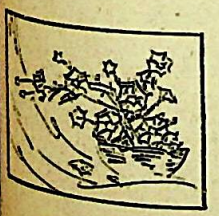

फूलदान
चित्रकार : चेतन

इस अंक में

१७ जीवन से मृत्यु तक (कविता)
भवानीप्रसाद मिश्र
१८ मकरंद-कण
आचार्य रजनीश
२० वे मानवता के महासागर थे
पी० डी० टंडन
२२ कई मुखड़े : कुछ झांकियां
नार्मन कजिन्स
२७ नेहरू : कुछ स्नेह-भीगी यादें
व्यं० रा० देवगिरीकर
३० सल्तनत बेचकर सुखी
जाबालि
३३ आजमगढ़ की शिबली अकादमी
मेवाराम गुप्त
३६ विज्ञान के हाथ में अक्षय-पात्र
शर्ली जी० वेल्टन
४१ सफलता के तीन पाये
लार्ड नफील्ड
४४ अक्षरदात्री मां फिशर
४९ एक शांतिवादी वैज्ञानिक के साथ
सतीश कुमार
५३ मेरी कल्पना का सुख
५६ दो सूरज
हजाब इस्तियाज अली
५८ ये खाते-पीते जेनरेटर
६१ मंजिल तक कैसे पहुंचूं ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

कुबेर-कुबैत
– श्रीगोपाल नेवटिया

आशावादी बनें
– एक प्रेरक लेख

शेर को कैसे पकड़ा ?
– फ्रक वक

शरीफजादा (उर्दू कहानी)

छींक : एक बीमारी
– के० एन० ध्यानी

कुंती और कर्ण
– स्वर्गीय धूमकेतु

कृषक के लिए आशा-किरण
– स्वामीनाथन्

चौरंगी (पुस्तक-संक्षेप)
– शंकर

चित्रसज्जा :

पिकासो, पालक्ली, मकबूल फ़िदा हुसैन, के० के० हेब्बार, लक्ष्मण पै, रामकिंकर, हरब्लाक, विलियम होगार्थ, ओके, शर्मे

हमारा पता

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१, तारदेव, बंबई–३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बम्बई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी वैक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

६४ मेरी चीन-यात्रा
जार्जेन बिश

७१ अपनी चिकित्सा आप न कीजिये

७४ सुख के द्वार
सरला जगमोहन

७५ आदमी की परख (कविता)
जगदीश गुप्त

७७ एक ईमानदार आदमी की आपबीती
डगलस जान्सन

८१ कार अब हवा और पानी पर भी चलेंगी

८३ कांच आंखों की रोशनी बन गया

८६ समर्पण (कविता)
महेंद्र

८७ मदाम मांटेसरी
मेरियो रेमिडी

९२ तीसरी मोमबत्ती (जर्मन कहानी)
पाउल अल्वार्डेस

९८ सस्ता भाव (हिन्दी कहानी)
महीपसिंह

१०४ यहां एक अनारकली सोयी है
हरिदयाल चतुर्वेदी

१०९ वार्ता-विलास

११४ भविष्य का विसर्जन
(पुस्तक-संक्षेप) आल्डुअस हक्सले

१३८ कल के मछुए
डेविड गंस्टन

१४० अजान स्वप्न (कविता)
शिव प्रताप त्रिपाठी

१४२ एक लेखक का सफर
विलियम फाकनर

१४७ काला चीता फंदे से निकल गया
लुडविग कोच-आइसन बर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४: अंक ५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मई १९६५

के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासि

जीवन से मृत्यु तक

मुझ पर प्रभु, कृपा करो ऐसी
जब मृत्यु-दिवस का सूर्य
छुए मुझको आकर
मैं हाथ हिलाकर,
किसी विदाई के क्षण में
दो मित्र विदा होते हैं ज्यों
ऐसे चल दूं !
मैं हर पीछे आनेवाले को
यों बल दूं
मानो वह तीर्थयात्रा है ।
मुझ पर प्रभु, कृपा करो ऐसी
मैं तीर्थयात्री का उत्साह
निबाह सकूं,
मैं जीवन के गंभीर उदधि को
मृत्युक्षणों में थाह सकूं ।

—भवानीप्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अकरंद-कण

चिंतन-धारा को नयी दिशा देनेवाले दो मूल्यवान पत्र आचार्य रजनीश के अनुभव-सिक्त कलम से।

एक स्वामी आये थे। वर्षों से संन्यासी हैं। मैंने पूछा—"संन्यास क्यों लिया?" बोले—"शांति चाहता हूं।"

सोचता हूं कि क्या शांति भी चाही जा सकती है? क्या 'चाहने' और शांति में विरोध नहीं है? उनसे यह कहा भी।

कुछ हैरान-से हो गये थे। फिर बोले—"फिर क्या करें?"

मैं हंसने लगा। कहा—"क्या, करने में भी चाह छिपी नहीं बैठी है?"

प्रश्न कुछ करने का नहीं है। शांति के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है। वह चाह का अंश नहीं है। उसे चाहना व्यर्थ है। असल में अशांति को समझना आवश्यक है। अशांति क्या है?—यह जानना है। शास्त्रों से नहीं, स्वयं से। शास्त्रों को जानने से ही शांति की चाह पैदा होती है और तब 'क्या करने' का प्रश्न उठता है।

उन स्वामी ने कहा—"अशांति वासना के कारण है, चाह के कारण है। तृष्णा न हो तो शांति है।"

मैंने कहा—"यह उत्तर शास्त्र से है, स्वयं से नहीं...अन्यथा शांति को चाहता हूं, ऐसा कहना संभव न होता। तृष्णा ही अशांति है, चाह ही अशांति है, तो शांति को कैसे चाहा जा सकता है? अशांति को जानें, स्वानुभव से उसके प्रति जागें, निर्दोष-निष्पक्ष मन से उसे समझें—यह समझ अशांति की जड़ों को सामने ला देगी। अशांति का मूल वासना है, यह दिखेगा। और यह दिखना ही अशांति का विसर्जन बन जाता है।"

अशांति का ज्ञान ही उसकी मृत्यु है। उसका जीवन अंधेरे में और अंधेपन में ही संभव है। ज्ञान का प्रकाश आते ही उसकी समाप्ति है। अशांति के विसर्जन पर जो बच रहता है वह शांति है। शांति अशांति के विपरीत नहीं चाही जाती है। वह उसकी विरोधी नहीं है। वह है—उसका न हो जाना।

इसलिए शांति को नहीं खोजना है, केवल अशांति को जानना है। सीखा हुआ ज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

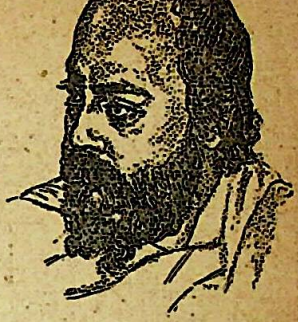

आचार्य रजनीश

इस ज्ञान में बाधा बन जाता है; क्योंकि बंधे-बंधाये उत्तर अनुभव के पूर्व ही, उधार निष्कर्षों से चित्त को भर देते हैं। इन निष्कर्षों से कोई परिवर्तन नहीं होता है। स्वानुभूति ही मार्ग प्रत्येक व्यक्ति को आत्मिक जीवन में उधार ज्ञान के बोझ को छोड़कर चलना होता है।

०००

उपलब्धि का मार्ग :

सत्य के लिए जिसकी अभीप्सा है, वह जाने कि उसे सत्य कोई कल्पना, कोई धारणा स्वीकार नहीं करनी है। उस स्वीकार पर ही साधना आत्मघात हो जाता है।

सत्य को पाने के लिए चित्त के द्वारा दिये गये सारे प्रलोभनों को छोड़ने का साहस चाहिये। चित्त से प्रदत्त कोई भी विकल्प स्वीकार नहीं करना है। तभी वह निर्विकल्प अवस्था आती है, जो स्वयं के समक्ष स्वयं के प्रत्यक्ष को देती है। अंतःप्रत्यक्ष शुद्ध ज्ञान की वह घड़ी है। इसके पूर्व बहुत कुछ आता है, जो कि सत्य नहीं है। और उसमें जो उलझता है, वह कुछ भी जान ले, स्वयं को नहीं जानता है। स्वयं को कभी भी ज्ञेय की भांति नहीं जाना जाता है। इसलिए जब तक कुछ भी ज्ञेय शेष है, तब तक यही समझना कि साक्षात् 'पर' का नहीं। ज्ञेय जब अशेष है, तब जो शेष रह जाता है, वही ज्ञान है, वही सत्य है।

रिन्झाई ने कहा है—"समाधि के मार्ग में यदि स्वयं भगवान् भी मिलें, तो उन्हें राह से हटा कर देना।"

मैं भी यही कहता हूं। समाधि की राह जब पूर्ण निर्जन है, और ज्ञान की धारा में जब कोई ज्ञेय नहीं है, और दर्शन को देखने को जब कुछ शेष नहीं है, तभी वह मिलता और पाया जाता है, जो कि सत्य है।

एक सद्गुरु ने भी एक दिन यही कहा था। उसके एक शिष्य ने सुना। उसने अपने घर पर लौट सारी मूर्तियां तोड़ डालीं और सारे ग्रंथ जला डाले और जाकर अपने गुरु से कहा कि मैं वह सब नष्ट कर आया हूं, जो कि सत्य के आगमन में बाधा है। उसका गुरु उसकी बात सुन बहुत हंसने लगा और उसने कहा—"पागल, उन ग्रंथों को जला, जो तेरे भीतर हैं उन मूर्तियों को तोड़, जो तेरे चित्त की अतिथि बन गयी हैं।"

ऐसा ही आज यहां हुआ है। एक युवक मेरी बातें सुन अपने पूजागृह को उजाड़, मूर्तियों को कुंए में फेंक आये हैं। उनसे मैंने कहा है—"मूर्तियों को नहीं, उस मन को फेंको, जो मूर्तियों का निर्माता है। और पूजागृहों को उजाड़ने से क्या होगा, जब तक कि यह सर्जक मन जीवित है, जो प्रतिक्षण नये पूजागृह बना लेता है?"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवाहरलाल नेहरू

प्रथम बरसी के अवसर पर स्नेह-भीनी संस्मरणांजलियां

वे मानवता के महासागर थे

पी० डी० टंडन

मैंने नेहरू को करीब पचीस साल नजदीक से देखा था, उन्हें समझने की कोशिश की थी। मेरे दिमाग में बहुत-सी स्मृतियों का मजमा है। बहुत-सी बातें याद आती हैं। राजनीति में उन्होंने बड़े-बड़े काम किये। स्वतंत्रता-संग्राम में उन्होंने बड़ी बहादुरी, हिम्मत और समझ से कौम की रहनुमाई की। आनेवाली पीढ़ियां उनकी वीरता और योग्यता के गीत गायेंगी। वे एक बड़े राजनीतिज्ञ और अनोखे देशभक्त तो थे ही; परंतु इन सब बातों के अलावा वे एक बड़े ही शानदार और दयावान पुरुष थे। उनकी महान मानवता उनका सबसे बड़ा गुण था। राजनीतिज्ञ नेहरू को चाहे कुछ सालों बाद कुछ लोग भूल जायें; परंतु मानव नेहरू को भुलाना आसान न होगा।

वे कभी छोटी बातों में नहीं पड़ते थे। एक दिन एक कांग्रेसी नेता आनंद भवन आये और उन्होंने आधे घंटे तक एक आदमी की बेतहाशा बुराई की। जब उस आदमी ने बोलना बंद किया, तो पंडितजी ने कहा—आप कह रहे हैं, मुमकिन है, सब सही हो लेकिन जो लोग दूसरों की इस तरह बुराई करते हैं, वे खुद अच्छे आदमी नहीं होते। शिकायत करनेवाले यह सुनकर एकदम चकित रह गये और मैंने उस दिन एक बड़ा सबक सीखा। जब कभी किसी की शिकायत करने को जी चाहता है, तो फौरन नेहरू के शब्द मुझे याद आ जाते हैं और मैं यह सोचने लगता हूं कि किसी की बुराई करना कोई शानदार बात नहीं।

मैंने जवाहरलालजी की आंखों में कई बार आंसू देखे थे और कई बार उन्हें बहुत दुःखी पाया था। ऐसे अवसरों पर उनके चेहरे पर एक करुण आभा प्रतीत होती थी। उस दिन शाम को वे अपनी मां का अंतिम संस्कार करने के बाद आनंद भवन में अपने गोल कमरे में अकेले बैठे थे। उनके चेहरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिजली के लैंप की परछाईं पड़ रही थी और वे बार-बार अखबारों को इधर-उधर उलटते-पलटते थे; पर किसी भी चीज पर उनका मन नहीं लगता था। वे बहुत दुःखी थे और अपने गम को भुलाने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन भुला न पा रहे थे। मैंने कमरे के बाहर से उनके गमजदा चेहरे को लगभग आधे घंटे तक देखा और उनका वह दृश्य अभी तक मैं भूल नहीं सका हूं।

इस दौलत-दीवानी दुनिया में बहुत कम लोग ऐसे होंगे, जो दौलत की परवाह नहीं करते। नेहरू को धन की परवाह बिलकुल नहीं और जो लोग दौलत की बहुत चर्चा करते थे, नेहरू उन्हें नापसंद करते थे। उनका विचार था कि जो लोग दौलत की बहुत चर्चा करते हैं, वे छिछले आदमी हैं। कई साल की बात है कि नेहरू अमरीका में एक दिन बहुत बड़े-बड़े उद्योगपतियों के साथ खाना खा रहे थे। एक उद्योगपति ने बड़े मजाक से कहा—"प्राइम मिनिस्टर साहब, क्या आपको यह अंदाजा है कि आप २० बिलियन डालर के मालिकों के साथ खाना खा रहे हैं?" नेहरू को पैसे का यह पागलपन बहुत बुरा लगा और उन्होंने हिन्दुस्तान आने पर कई बार उस बात की चर्चा अमरीकी राजदूत से की।

११ अप्रैल १९५५ को नेहरू ने संसद में कहा—"मुझे संपत्ति के लिए ज्यादा इज्जत नहीं है। सदस्य मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं कहूं कि दौलत मेरे ऊपर हावी नहीं है। दौलत कभी मुझे एक झंझट की बात मालूम होती है। जिंदगी में दौलत से अधिक संबंध नहीं होना चाहिये। मैं लोगों का दौलत-प्रेम समझ नहीं पाता हूं।"

हिन्दुस्तान के बंटवारे के बाद हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने जवाहरलाल की आत्मा को बड़ा घोर कष्ट पहुंचाया था। इसकी चर्चा करते हुए उन्होंने एक सभा में बड़े गम से कहा था कि उन्हें यह नहीं मालूम था कि उनके अनुयायी जानवर हैं और सुननेवालों को बताया—"मैं बापू से मिलने गया और इन दंगों की वजह से उनसे आंख न मिला सका। मेरा दिल गैरत से भरा था।" ये शब्द कहते समय उनकी आवाज में बड़ा गम भरा था।

करीब बीस साल हुए। पंडितजी, रणजीत पंडित और मैं एक मीटिंग के बाद आनंद भवन वापस आ रहे थे। रास्ते में मोटर बिगड़ गयी और घर आने की समस्या उत्पन्न हुई। एक मित्र ने हम लोगों को अपना इक्का घर आने के लिए दिया। जब हम आनंद भवन जा रहे थे, तो चैथम लाइन्स में कुछ सिपाहियों ने नेहरू को देखते ही सलामी दागी। किसी कारण जवाहरलालजी ने उसका जवाब नहीं दिया। आगे चलकर उन्होंने रणजीत पंडित से कहा कि सिपाहियों को उन्हें सलामी नहीं देनी चाहिये; क्योंकि अगर कोई अफसर देख लेगा, तो उन्हें सजा मिलेगी।

रणजीत पंडित बोले—"भाई, दिल के रवैये दूसरे होते हैं। ये सब सिपाही आपकी इज्जत करते हैं, इसलिए इन्होंने आपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सलाम किया और सजा पाने के खतरे की परवाह न की।"

नेहरू ने यह महसूस किया कि शायद सिपाही लोग यह न समझें कि मैंने उनकी परवाह न की। उन्हें महसूस हुआ कि उन्हें सिपाहियों से मिलना चाहिये था। इक्का सिपाहियों के पास वापस गया। नेहरू को देखते ही सिपाहियों ने फिर सलामी दागी और बहुत खुश हुए। नेहरू ने उनका हाल-चाल पूछा और दो-तीन मिनिट बात करने के बाद इक्के पर सवार होकर आनंद भवन की ओर चल पड़े। मैं जब नेहरू को परेड पर सलामी लेते देखता था, तो मुझे उस समय की सलामी की याद आ जाती थी। वह घटना शायद आनेवाली घटनाओं का प्रतिबिंब थी।

कई मुखड़े : कुछ झांकियां

नार्मन कजिन्स

जनवरी १९५१। रविवार। नयी दिल्ली के इंपीरियल होटल के डेस्क-क्लर्क ने मेरे हाथ में एक पुर्जा दिया, जो प्रधान मंत्री के घर से आया था। प्रधान मंत्री ने उस रोज तीसरे पहर कुछ मित्रों को बुलाया था। उम्मीद की थी कि मैं भी आ सकूंगा। कोई खास बात नहीं, यों ही बैठकर बातें होंगी।

दर्शन और राजनीति पर लंबी, नीरस चर्चा के लिए तैयार होकर तीन बजे के लगभग हम प्रधान मंत्री के घर पहुंचे। नेहरूजी दरवाजे पर ही अतिथियों का स्वागत कर रहे थे। बड़े उल्लसित दिखते थे। हम एक लंबे, चिकों से ढंके बरामदे में ले जाये गये। नजर दौड़ायी, तो देखा कि विख्यात दार्शनिक और भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् वहां थे; नामी लेखक और नेहरूजी के पुराने मित्र वी० शिवराव भी मौजूद थे। दूसरे जिन अतिथियों से परिचय कराया गया, उनमें दो केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य थे और एक न्यायाधीश।

नेहरूजी कक्ष में आये। उनका नन्हा नाती उनके कंधों पर सवार था और उनके बगल में पांव मार-मारकर कह रहा था—"और जोर से...और जोर से।"

नेहरूजी ने उसे उतारकर फर्श पर खड़ा कर दिया। बोले—"सवारी बाद में, पहले तुम्हें एक बढ़िया चीज दिखायेंगे।.....हम सभी के लिए एक बढ़िया चीज। आज दिल-बहलाव का प्रोग्राम रखा गया है।"

दिलबहलाव करनेवाला एक जादूगर था जिसने तरह-तरह के करतब किये। उसने लंबे छुरों को छोटे छुरों में, शराब को दूध में बदल दिया। कागज के प्याले से उसने मुर्गियां पैदा कर दीं। फिर उसने बीस पुरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लटके हुए धागे को काटकर तीरंदाजी अपनी महारत दिखायी। अंत में उसने कहा, कोई एक साहब आगे आयें। नेहरू-खूब मजा ले रहे थे; उन्होंने वित्त-मंत्री आगे कर दिया।

वित्त-मंत्री को पता लगा कि विलियम की कहानी उनके साथ दोहरायी जायेगी, वे झिझके। पर नेहरूजी ने उन्हें मीठी झिड़की दी। वित्त-मंत्री एक कुर्सी पर बैठाये। ठीक उनके सिर के ऊपर छः इंच की ऊंचाई पर एक गोल माला कई धागों के सहारे लटकायी गयी।

जादूगर ने ऐलान किया कि एक ही तीर वह तमाम धागे काट देगा और माला लोगों के गले में गिरेगी। फिर जैसे नयी बात सूझी हो, बोला कि आंखों पर पट्टी बंधवा-कर वह करतब कर दिखाऊंगा।

नेहरूजी बोल उठे—लोग बताते हैं, आजकल अच्छे फाइनान्स मिनिस्टर बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। सो मैं नहीं जानता कि जादूगर को यह कर-तब करने देना चाहिये कि नहीं।"

जादूगर ने ताली बजा-कर चुप होने का इशारा किया, आंखों पर पट्टी बंधवायी, धनुष उठाया, डोर कसी हुई है या नहीं यह देखा और कमान पर तीर चढ़ाया। फिर ठहरा, आंखों पर पट्टी बांधे ही लक्ष्य की ओर चार कदम सहमते-लड़खड़ाते हुए बढ़ा। अंत में अपनी जगह लौट आया और सन्नद्ध हो निशाना साधकर खड़ा हो गया।

नेहरूजी चिल्लाये—"नहीं-नहीं, आप गलत आदमी का निशाना लगा रहे हैं। ये तो जज साहब हैं—और हम उन्हें गंवा नहीं सकते। आपको जिनका निशाना साधना है, वे साठ डिग्री बायीं ओर हैं।"

अकस्मात जादूगर ने तीर छोड़ दिया। धागे काट गये। माला ठीक वित्त-मंत्री के गले में गिरी और इस गैर-वित्तीय 'सस्पेन्स' से मुक्त होकर वे भी दूसरे लोगों के साथ हंसी में शामिल हुए।

फिर आइसक्रीम का दौर चला। नेहरू-जी का नाती उनका पाजामा खींचकर बार-बार पूछ रहा था कि पीठ की सवारी कब देंगे।

उस रोज अधिक-से-अधिक गंभीर प्रसंग कोई छिड़ा, तो उनके एक पुराने सहपाठी का था। ये सज्जन एक संपन्न उद्योगपति थे और पिछले रोज नेहरूजी से मिलने आये थे।

नेहरूजी कहते थे, उनके मित्र ने बताया कि वे टैक्स के बोझ से दबे जा रहे हैं। उन्हें नयी दिल्ली के अपने बंगले पर भारी कर

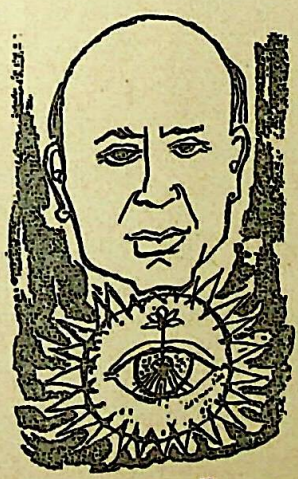

भविष्यदर्शी
चित्रकार : लक्ष्मण पै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य-प्रेमी

स्केच : के० के० हेब्बार

देना पड़ता है—अपनी शिकारगाह पर भी। जैसे यही काफी न हो, वंगलोरवाले वंगले पर भी टैक्स देना पड़ता है। और तो और, जुहू-तट के बंगले पर भी टैक्स लगता है। "अब तुम्हीं बताओ जवाहरलाल, इतना सारा टैक्स देते हुए मैं ये बंगले रखूं, यह उम्मीद तुम कैसे करते हो?" उन सज्जन ने पूछा।

"क्या तुम्हें कभी एक-दो बंगले बेच देने की भी सूझी है?"

"क्या? अपने बचपन के साथी को बस अब तुम यही सलाह दोगे?" वे सज्जन पूछने लगे।

सब हंस पड़े। नेहरूजी कहने लगे—"कैसी अटपटी बात है! मैं तो पार्लमेंट में तमाम जायदाद जब्त करने के प्रस्तावों के खिलाफ लड़ रहा हूं। ये साहब चाहते हैं, टैक्स लौटा दूं। ..... या शायद, सपनों की दुनिया बनाये बिना किसी का काम नहीं चलता।"

लौटते हुए डाक्टर राधाकृष्णन ने इन्हें अपने होटल पर पहुंचाने का प्रस्ताव किया। कार में वे कहने लगे, नेहरूजी का यह पहलू बहुत कम लोग जानते हैं। बोले:

"उनमें एक प्रकार की शाश्वत तरुणाई या शैशव है। लोग उन्हें हरदम चिंताओं में डूबे रहनेवाला, हंसना तक न जाननेवाला व्यक्ति समझते हैं। लेकिन ऐसी बात नहीं; उन्हें हंसना बहुत पसंद है। और देश के लिए यह अच्छी बात है। इससे उनका दिल तरोताजा हो जाता है। नेहरूजी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे अपने को जवान महसूस करते हैं। ऐसा आदमी कभी बूढ़ा नहीं होता, चाहे कितनी भी उम्र हो जाये, वे बूढ़े नहीं दिखेंगे। लेकिन उन्हें अपने ऊपर ज्यादा ध्यान देना चाहिये। वे बेहद काम करते हैं।

× × ×

अप्रैल १९५५। बांडुंग में एशिया-अफ्रीका सम्मेलन। संसार के अधिकांश राष्ट्रों के लिए अत्यंत महत्व की घटना। प्रसंग की नाटकीयता इस कारण बहुत बढ़ गयी थी कि विश्व के सर्वाधिक जनसंख्यावाले दो देशों का प्रतिनिधित्व करनेवाले दो व्यक्ति —भारत के जवाहरलाल नेहरू और साम्यवादी चीन के चाउ एन-लाइ—वहां पर उपस्थित थे।

दोनों जानते थे कि उनके देशों में जो कुछ हो रहा है, उसका अधिकांश नये आजाद हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टों के विकास पर गहरा असर पड़ेगा। सम्मेलन में पहले चाउ एन-लाइ का भाषण हुआ। दुभाषिया अंग्रेजी में अनुवाद कर रहा था। उन्होंने कहा कि एशिया-अफ्रीका की आशा-आकांक्षाएं वही हैं, जो चीन की हैं; और इतिहास चीन के साथ है। यह बात उन्होंने दावे के बजाय, एक घोषणा के रूप में कही। उन्होंने बांडुंग आये प्रतिनिधियों को चीन चलकर वहां समाजवाद के मातहत हो रही उल्लेखनीय प्रगति को देखने का निमंत्रण दिया। उनका बोलने का ढंग शब्दाडंबरपूर्ण या आक्रामक नहीं, बल्कि एकदम काम-काजी था।

कुछ समय बाद जब नेहरूजी बोले, दोनों व्यक्तियों के अंतर ने चौंका दिया। सिर्फ यही नहीं कि नेहरूजी बिना नोट्स और दुभाषिये के बोल रहे थे। उनमें भावना की ऊष्मा थी, श्रोता के प्रति वैयक्तिक संबंध का भाव था। वे श्रोता के साथ एक हो गये, उनके उदात्त भावों को स्पर्श करने लगे। वे उनमें शक्ति-संचार कर रहे थे, उसकी आकांक्षाओं, अरमानों को जगा रहे थे—उन्होंने ऐतिहासिक नियतिवाद का गीत नहीं गाया; यही कहा कि मानवीय परिस्थितियां अनिश्चितता से ओतप्रोत हैं। फिर स्वतंत्रता का अर्थ भी तो यही है—वह केवल इस चीज का आश्वासन देती है कि हमें अधिक अच्छी तरह काम करने का अवसर मिलेगा। और जब यह स्वतंत्रता आपकी पहुंच के भीतर है। बांडुंग आये प्रतिनिधि चाउ एन-लाइ से प्रभावित भले हुए हों; लेकिन भरोसा उन्होंने नेहरूजी का ही किया। जिन बातों में वे नेहरूजी से सहमत नहीं हो सके, उनमें भी उन पर विश्वास किया। भारत में भी कई बार लोग नेहरूजी की बात समझ नहीं पाते थे। लेकिन जानते थे नेहरूजी से देश का कल्याण ही होगा। वे जानते थे, नेहरूजी भारत को वहीं ले जायेंगे, जहां भारत को जाना है।

बांडुंग में चाउ एन-लाइ अंगरक्षकों से घिरे रहे और नेहरूजी बात करना चाहने-वालों से—नये देशों के प्रतिनिधियों से, जिन पर इतिहास-निर्माण करने का दायित्व आ पड़ा था और जिन्हें उस आत्मविश्वास की आवश्यकता थी, जो उन्हें किसी नेहरू से ही प्राप्त हो सकता था।

सम्मेलन की आखिरी बैठक से पूर्व सवेरे उन्होंने हमें शहर से दूर पहाड़ों के बीच स्थित अपने बंगले पर नाश्ते के लिए बुलाया। हम फूलों से लदी दृश्यावली को निहारते हुए बरामदे में बैठे थे। नेहरूजी फूलों के बीच घूम आये थे, उन्हें सूंघकर तृप्ति पा चुके थे। वे गहरे चिंतन के 'मूड' में थे। चीन और भारत का विशेष उल्लेख करते हुए उन्होंने एशिया के भविष्य की चर्चा की।

वे बोले कि इस बारे में उन्होंने गहराई से विचार किया है और मानते हैं कि भारत में जो कुछ हुआ है उसका भारत के बाहर गहरा असर पड़ेगा—एशिया में ही नहीं, अफ्रीका में भी। भारत और चीन गोया कांच के दो बड़े विज्ञापन-केस हैं। भारतीय केस दिखाता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को छीने बिना भी प्रगतिशील समाज रचा जा सकता है।

हिन्दी डाइजेस्ट

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज्य को कभी व्यक्ति को अपने से नीचे नहीं रखना चाहिये। बल्कि उसका तो फर्ज है कि हरदम इसके तरीके खोजता रहे कि किस तरह व्यक्ति की सेवा हो, किस तरह व्यक्ति की शान बढ़े। हिन्दुस्तान में चालीस करोड़ लोग बसते हैं, ज्यादातर गरीब हैं। उन्हें नौकरी चाहिये, खाना और दवा, स्कूल और मकान चाहिये। अब चीनी कहते हैं, पूरी तरह नियंत्रित मार्क्सवादी समाज में ही ये मांगें पूरी होनी मुमकिन हैं। वे कहते हैं, किसी पूरे मार्क्सवादी राज्य को जो जरिये हासिल होते हैं, उन जरियों के बिना यह काम जल्दी से और पूरी तरह से हो नहीं सकता।

नेहरूजी ने कहा, आज यही बातें दुनिया के ज्यादातर मुल्कों को तय करनी हैं। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि तमाम कठिनाइयों के बावजूद भारत तरक्की कर रहा है, और भी तरक्की कर सकता है।

हम सवाल कर बैठे कि उनकी राय में साम्यवादी चीन की सबसे बड़ी खूबियां और कमजोरियां क्या हैं?

अपने स्वभाव के अनुसार उन्होंने कहा कि इस तरह के फतवे देना उनका काम नहीं है – यह काम इतिहास ज्यादा अच्छी तरह करेगा। लेकिन अपने स्वभाव के अनुसार ही, उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी देश के कर्णधारों को आज से सौ साल पहले, दूसरी ही परिस्थितियों की बुनियाद पर बनायी गयी आर्थिक मान्यताओं या सिद्धांतों को अक्षरशः लागू करते हुए सावधानी बरतनी चाहिये।

क्या नेहरूजी का इशारा मार्क्स और एंगल्स के सिद्धांतों की ओर था?

वे बोले, हां। मार्क्स के लेखन में बहुत-सी बातें हैं, जो आज भी सही हैं, कीमत रखती हैं। लेकिन मार्क्स ने जब अपने सिद्धांत छापे, उसके बाद से दुनिया में जबर्दस्त हेर-फेर हो चुका है। उन्हें कुरदत के कानून जैसा अटल मानकर लागू करना पीछे की ओर लौटने जैसी बात है।

उन्होंने कहा, यों भी मार्क्सवाद बहुत संकरा है। वह आर्थिक पहलू पर बेहद जोर देता है और इन्सान की दूसरी प्रवृत्तियों को कम कीमत लगाता है। जिंदगी आर्थिक तरक्की के अलावा भी बहुत कुछ है। यह भी शक होने लगता है कि जो लोग मार्क्सवादी विचारों को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्होंने मार्क्स को पूरा समझा भी है।

उनकी आंखों में विनोद छा गया। वे कुर्सी का ढासना लगाकर आराम से बैठ गये और अपनी बात के दृष्टांत के रूप में बांडुंग का ही एक वाकया सुनाने लगे, जिसमें चाउ एन-लाइ भी आते थे। बोले:

"हम लोग एक सब-कमेटी में थे, जिसे कान्फरेंस के एक छोटे वक्तव्य का मसविदा तैयार करना था। वक्तव्य सीधा-सा था और उसमें क्या-क्या कहना है, इस पर जल्दी ही हमारी राय मिल गयी। मैंने चाउ एन-लाइ से अनुरोध किया कि पहला मसविदा वे बनायें। वे नहीं माने, बोले कि आप ही बना दें तो अच्छा रहेगा।

"मैंने मसविदा बनाया, बेशक अंग्रेजी में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और दुभाषिये की मदद से उन्हें समझाया। उन्होंने उसे सराहा; लेकिन कहा कि उसमें कुछ अहम शब्द ऐसे हैं, जो मसविदे का वे जो मकसद समझते थे, उससे कुछ अलहदा अर्थ देते हैं।

"फिर हमने मसविदे के मकसद की चर्चा की और खासकर उन शब्दों की, जिनसे कठिनाई पैदा हुई थी। मसविदे के अभिप्राय के बारे में एकराय होने में हमें दिक्कत नहीं हुई। अब बस बाकी रह गया चंद अंग्रेजी शब्दों का चीनी तर्जुमा करना। और इसमें कई घंटे लग गये—उसके बाद भी मुझे पूरी तसल्ली नहीं हुई कि अनुवाद ठीक हुआ है।

"जानते हैं आप उस वक्त मेरे मन में क्या खयाल उठा! मैंने अपने आप से कहा, हे भगवान, फिर तो चीन में कार्ल मार्क्स की क्या हालत होगी!"

वे हंसे और बोले—"मैं बिलकुल गंभीरता से यह बात कह रहा हूं।"

और मुझे याद आ गयी कई वर्ष पहले की दिल्ली में प्रधान मंत्री के साथ हुई एक बातचीत। विषय वही था, जिसे स्टुअर्ट चेस ने "शब्दों का अत्याचार" कहा है—खासकर 'इनेविटेबिलिटी' (अपरिहार्यता), 'फ्रीविल' (मानवेच्छा), 'डिटर्मिनिज्म' (कार्यकारण-जन्य नियति) आदि।

मैंने प्रधान मंत्री से पूछा था कि क्या वे मानते हैं कि मानवेच्छा से परे कोई अनिवार्य ऐतिहासिक शक्तियां हैं।

उन्होंने कहा था, ऐसे विषयों में निश्चित निर्णय देने से बचना ही अच्छा है। तो भी उत्तर दिया था—"दरअसल, मैं समझता हूं कि दोनों का सामंजस्य किया जा सकता है। आप ब्रिज खेलते हैं क्या?"

"बहुत कम और बिलकुल खराब।"

"कोई बात नहीं। आपके हिस्से में क्या पत्ते आये हैं, यह 'डिटर्मिनिज्म' (नियति) है। आप उन्हें कैसे चलते हैं, यह 'फ्रीविल' (मानवेच्छा) है। इन दोनों का एक दूसरे पर जो असर होता है, वह तय करता है कि एक शख्स के रूप में—एक कौम के रूप में भी—आप क्या हैं।" ['सैटर्डे रेव्यू' से]

नेहरू : कुछ स्नेह-भीगी यादें

त्र्यंबक रामचंद्र देवगिरीकर

पिछले चौंतीस वर्षों में जवाहरलालजी को देखने और सुनने के कितने ही मौके आये। अंग्रेजी में कहावत है कि सज्जनों का मेल स्वर्ग में भले ही सुखदायी हो; किंतु धरती पर उनसे दूर रहना ही अच्छा है। जवाहरलालजी इसके अपवाद थे।

सन १९६१ में कांग्रेस का अधिवेशन दिल्ली में होना था। कार्यकर्ताओं ने नींद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और भोजन की चिंता न करते हुए दिन-रात मेहनत करके तैयारियां की थीं। किंतु बिजली का शार्ट-सर्क्युट हो जाने से पंडाल में आग लग गयी। खबर पाकर जवाहरलालजी दौड़े आये। फायर ब्रिगेड के लोग लपलपाती दैत्याकार लपटों को शांत करने में लगे थे। चुप खड़े रहना जवाहरलालजी के लिए असंभव था। वे धधकती हुई आग में धंस पड़े। सबके दिल दहल उठे..... कहीं वे आग की चपेट में आ गये, तो क्या होगा? उन्हें पीछे न मुड़ते देखकर कोई उन्हें बांहों में भरकर उठा लाया। बाद में पता लगा कि वह उनका अंग-रक्षक था। पंडितजी कह रहे थे—"सामने आग लगी हो और मैं खतरे से डरकर खड़ा रहूं, तो मेरा जीना किस काम का?"

तीन साल तक मैं कांग्रेस कार्यकारिणी का सदस्य रहा। जब कार्यकारिणी का अधिवेशन दिल्ली में होता, बैठक जवाहरलालजी के ही घर होती। वहां जवाहरलालजी के एक और स्वरूप का परिचय मुझे मिला। प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता और पसंद-नापसंद का उन्हें स्वयं ध्यान रखते देख मैं चकित रह गया। मौलाना आजाद के बैठने के लिए बड़ी कुर्सी है या नहीं; पंतजी के आसन के पास तौलिया है कि नहीं, जिससे चाय पीते समय हाथ हिलने से चाय कपड़ों पर न छलके; चाय न पीनेवाले सदस्यों के लिए फलों का रस तैयार है या नहीं—आदि छोटी चीजों का भी वे स्वयं ध्यान रखते।

सवेरे ९ बजे बैठक शुरू होती और १ बजे तक चलती। फिर भोजन जवाहरलालजी के यहीं होता। वी० सी० राय सवेरे हवाई जहाज पर कलकत्ता से रवाना होते और भोजन के समय तक दिल्ली आ पहुंचते। अपने साथ रसगुल्ले लाना वे कभी न भूलते और जवाहरलालजी स्वयं अपने हाथ से हम सबको रसगुल्ले परोसते। खाने की मेज पर व्यंजनों का खासा मेला लग जाता। जीवन में पहली बार कई पकवान मैंने वहीं देखे। और कुतूहलवश एक बार जो गिना, तो ८० प्रकार की खाने की चीजें मेज पर थीं। लेकिन भात कहीं नजर नहीं आया। मैंने जवाहरलालजी से कहा, तो वे बोले—"भात अभी आता है। मुझे मालूम है, आप महाराष्ट्रवाले खाने के शुरू और अंत में भात जरूर खाते हैं।"

गांधीजी की तरह जवाहरलालजी खाद्य-अखाद्य नहीं मानते थे। वे हर चीज का जायका लिया करते; लेकिन संयम से। दोपहर की बैठक में चार बजे नाश्ता आता। उसमें भी वे एक-आध पकौड़ी या समोसा अवश्य लेते।

कार्यकारिणी की एक महत्वपूर्ण बैठक की मुझे याद आती है। एक अत्यंत गंभीर विषय पर उस रोज चार घंटे तक चर्चा होती रही। कार्यकारिणी के सदस्यों के अलावा केंद्रीय मंत्रि-मंडल के कई प्रमुख सदस्यों ने भी उसमें भाग लिया था। दोपहर के एक बजे चर्चा खत्म हुई। पंडितजी से प्रार्थना की गयी कि उस चर्चा के आधार पर प्रस्ताव का मसविदा वे तैयार कर दें।

जब ३ बजे हम फिर एकत्र हुए, हम सभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

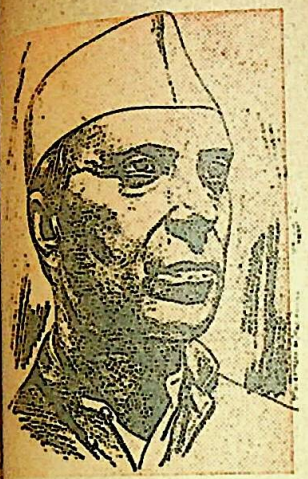

धीरोदात्त नायक

चित्रकार : वी० एन० ओके

लघुस्केप आकार के सात-आठ पृष्ठों में की हुई इबारत दी गयी। वह क्या चीज वह देखकर हम स्तब्ध रह गये। सवेरे सभा में हुई चर्चा के आधार पर तैयार गये प्रस्ताव का मसविदा था वह। लालजी ने कब भोजन किया होगा, विश्राम और कब प्रस्ताव लिखवाया होगा, कब वह टाइप हुआ होगा—यह हमारे लिए अनबूझ पहेली थी।

जिस काम को हम जैसे आदमी रात-भर माथापच्ची करके भी शायद संतोषप्रद ढंग से न कर पाते, उसे उन्होंने एक-डेढ़ घंटे में कैसे करीने से निपटा डाला था। हर विचार उनके दिमाग में सुलझे रूप में रहता था, भाषा पर उनका प्रभुत्व था। मनुष्य की असाधारणता ऐसे ही वक्त प्रकट होती है। और साधारण-से-साधारण मनुष्य के मामले में भी वे कितनी तत्परता से काम करते थे, इसका भी एक उदाहरण लीजिये।

कई वर्ष पहले श्री नगरकर नाम के एक सज्जन मेरे पास आये। उन्होंने बताया कि वे प्रतिरक्षा-विभाग में कर्मचारी थे और उन्हें अन्यायपूर्वक नौकरी से निकाल दिया गया। वे चाहते थे कि वे कितनी दयनीय स्थिति में हैं, इसकी खबर मैं पंडितजी तक पहुंचा दूं। श्री नगरकर की आखिरी अर्जी भी प्रतिरक्षा मंत्रालय ने नामंजूर कर दी थी। सो मैंने उनसे एक प्रार्थना-पत्र लिखवा लिया।

उसके बाद दिल्ली में किसी काम से प्रधान मंत्री के कार्यालय जाना पड़ा। तब उनसे मिलकर श्री नगरकर का मामला उन्हें बताया और वह प्रार्थनापत्र दिया। बोले—"पढ़कर और प्रतिरक्षा-विभाग से पूछकर कार्रवाई करूंगा।" मैंने कहा कि नगरकर बड़ी मुसीबत में हैं, मामला जल्दी निपटवा दें।

तुरंत जवाहरलालजी बोले—"अगर सौ-दो सौ रुपये दूं, तो फिलहाल उन्हें कुछ राहत मिल जायेगी क्या?" मुझे नहीं सूझा कि क्या जवाब दूं। मैंने कहा—"पैसे मेरे पास भेज दीजिये। उनसे पूछकर देखूंगा।"

वहां से मैं सीधे संसद चला गया और बैठक खत्म होने पर घर लौटा। एक मोहर-बंद लिफाफा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। खोलकर देखा, तो उसमें मेरे नाम पंडितजी का ५०० रुपये का चेक था।

कहा था सौ-दो सौ; लेकिन भेजे पूरे पांच सौ। मेरा हृदय गद्गद हो गया उनकी उदारता पर। [कन्नड 'कर्मवीर' से]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाबालि

इब्राहीम आदम बल्ख का बादशाह था। एक रात वह अपने आलीशान महल की छत पर सो रहा था कि उसे दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी।

पूछा—"कौन है ?"

उत्तर मिला—"एक ऊंटवाला।"

"यहां क्यों आये ?"

"मेरा ऊंट खो गया है, उसकी तलाश में आया हूं।"

बादशाह इब्राहीम ने आश्चर्य से पूछा—"महल की छत पर ऊंट का क्या काम ? कहीं पागल तो नहीं तू ?"

आनेवाला बोला—"तू कीमती कपड़े व जेवर पहनकर, सिंहासन पर बैठकर ईश्वर को तलाशता है। मैं भी पूछता हूं—पागल तो नहीं तू ?"

कहनेवाला तो पागल की-सी हंसी हंसता हुआ चला गया; मगर खुदा-परस्त इब्राहीम के मन में हलचल मच गयी।

कुछ दिन बाद जब वह दरबार में अपने राजसिंहासन पर बैठा था, उसने देखा कि एक तेजस्वी पुरुष स्थिर दृष्टि से उसे देखता हुआ दरबार में आया। उसकी आंखों में कुछ ऐसा सम्मोहन था कि किसी द्वारपाल या अमीर को यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि तुम कौन हो, यहां क्यों आये हो ? उसकी वर्चस्विता से सब मंत्रमुग्ध से खड़े रहे। जब वह राजसिंहासन के नजदीक पहुंच गया तो बादशाह इब्राहीम ने पूछा—"आप कौन हैं ? आपको मुझसे क्या काम है ? किसके पूछकर आप यहां आये ?"

आगंतुक ने अट्टहास के साथ कहा—"यहां आने की आज्ञा क्यों लूं मैं किसी से!"

वजीर ने कहा—"यह बादशाह का दरबार है, तुम नहीं जानते क्या ?"

"नहीं, मैं तो इसे सराय मानता हूं।"

"सराय ?"

"हां, सराय। अच्छा बादशाह, जरा यह बताओ कि क्या तुम्हारे पहले भी यहां कोई रहता था ?"

"हां, मेरा बाप भी इसी महल में था।"

"उससे पहले यहां कौन था ?"

"मेरे बाप का बाप।"

"और उससे पहले ?"

जब अपने वंश का परिचय देते-देते बादशाह थक गया, आनेवाले फकीर ने कहा—"जहां एक आदमी आये और चला जाये और फिर उसकी जगह दूसरा आ जाये, वह सराय नहीं तो क्या है ?"

इतनी-सी बात कहकर आनेवाला उल्टे पैर तेजी से वापस जाने लगा। तब एक दरबारी ने उसके चरण छूकर पूछा—"आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

?"
ेरा नाम खिज्र है," कहकर वह तेजी
हर निकल गया।
दशाह इब्राहीम उस दिन से बेचैन
ा। उसके मन में फकीर के ये शब्द
ने रहते थे;
यहां एक आदमी आये और चला जाये
ौर उसकी जगह दूसरा आ जाये, वह
न नहीं तो क्या है?"
छ दिन बाद बादशाह राज-पाट छोड़-
जंगल की ओर चल पड़ा। घने वृक्षों
ाया में बैठे-बैठे वह एक अस्पष्ट-सी
ब्द प्रायः सुना करता—"जागते रहो!
जागते रहो!"
बादशाह के कानों में ये आवाजें प्रायः
ती रहतीं। एक दिन नदी के किनारे घूमते-
ने उसने सुना—"मौत तुम्हें जगाये, इससे
खुद ही जाग उठो।" इब्राहीम का
री तरह विरक्त हो गया।
क दिन वह घने जंगल की एक पगडंडी
ा जा रहा था कि रास्ते में एक ग्वाला मिला।
के वस्त्र फटे हुए थे, माथे पर पुरानी टोपी
। इब्राहीम ने अपना स्वर्ण-जटित मुकुट
के माथे पर रख दिया, अपना शाही
ाम भी उसे पहना दिया और खुद ग्वाले
टे-पुराने कपड़े पहन लिये। बल्ख के
दशाह ने कंगाल का वेश धारण कर लिया,
ी सवारी छोड़कर अकेले पैदल यात्रा
रू कर दी।
नयी दीन वेश में घने जंगलों और पर्वतों
ो लांघते छानता हुआ इब्राहीम नैशापुर के
नजदीक पहुंचा। वहां की एकांत गुफा में उसने आसन जमाया। आस-पास के वृक्षों की सूखी टहनियां काटकर वह शहर में बेचता और जो टका-पैसा मिल जाता, उससे रोटी खरीदता। उस रोटी का आधा किसी अपंग को देता और बाकी से पेट भर लेता। हर शुक्रवार को वह नैशापुर की मस्जिद में जाकर नमाज भी पढ़ता।

निरंतर चौदह बरस बल्ख के जंगल में घूमने के बाद संत इब्राहीम ने मक्का की यात्रा की। मक्का के लोगों को उसके आने की सूचना मिली, तो उन्होंने शाही स्वागत की योजना बनायी। इब्राहीम को जब यह मालूम पड़ा, तो वह वेश बदलकर एक काफिले में शरीक हो गया। तलाश करने-वालों ने उससे भी पूछा—"आपको मालूम है, संत इब्राहीम कहां हैं?"

"अरे, वह संत-वंत नहीं है! वह तो एक पाखंडी नास्तिक है, भिखमंगा....."

उसका वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि इब्राहीम के भक्त खोजियों ने उसे इतना पीटा कि वह लहू-लुहान हो गया।

मक्का पहुंचने के बाद इब्राहीम वहीं बस गया। कुछ बरस बाद उसका लड़का भी बल्ख से तीर्थ यात्रा करने मक्का आ पहुंचा। पिता को कंगाल लकड़हारे के वेश में मज-दूरी द्वारा गुजर करते देख, लड़के का दिल दर्द से कराह उठा। उसने हजार हाथ जोड़े, मिन्नतें कीं; मगर इब्राहीम फकीरी का बाना छोड़कर बल्ख जाने को तैयार न हुआ।

इसी तरह एक बार एक व्यापारी ने एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संघर्ष

एक मजबूत आदमी
दिन-भर वातावरण को
अपनी बालों-भरी छाती से ठेलता है
और रात को
दो ईंटों के टुकड़े सिरहाने रखकर
एक बिसरी नींद सो जाता है
किसी भी देश में संघर्ष
रेशम का तकिया लगाकर नहीं सोता।

—विजय तैलंग

हजार सोने की मोहरें इब्राहीम की झोली में डाल दीं। इब्राहीम ने उन्हें लौटाते हुए कहा—"मैं खुदा से एक रोटी के सिवा कुछ नहीं मांगता। यह धन खुदा का है, मुझे यह नहीं चाहिये।"

एक बार इब्राहीम का दिल इतना बेचैन हो उठा कि वह पूरे चालीस दिन तक खुदा की इबादत भी न कर सका। इस बेचैनी का कारण सोचते-सोचते उसे खयाल आया कि उसने एक नागरिक से भिक्षा ली थी और भिक्षा के उस भोजन के बाद ही उसका मन व्याकुल हुआ था। इब्राहीम उसी समय शहर की ओर चल पड़ा। वहां जाकर उसने इस पाप का प्रायश्चित्त किया। तभी उसके मन की बेकली दूर हुई।

जब भी बल्ख का कोई आदमी धन-दौलत देकर उसकी दरिद्रता दूर करने की बात कहता, इब्राहीम का उसे यही उत्तर होता था—"बल्ख की इतनी बड़ी सल्तनत बेचकर मैंने फकीरी खरीदी है। इसे मैं किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार नहीं।"

इब्राहीम से एक भक्त ने शिकायत की—"हम रोज खुदा को बुलाते हैं, वह आता ही नहीं। कितना बेरहम है वह!"

इब्राहीम ने उत्तर दिया—"तुम खुदा का नाम लेते हो; मगर उससे प्रेम नहीं करते। तुम कहते हो, प्रेम करते हैं। मगर तुम उसकी बात नहीं मानते, उसके नियमों का पालन नहीं करते, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं करते। तुम्हें मालूम है कि ईश्वर के अधिकारी अनुचरों के लिए स्वर्ग का द्वार खुलता है; मगर तुम अधिकारी बनने का यत्न ही नहीं करते। तुम्हें मालूम है कि पाप करने से नरक की आग में जलना होगा; मगर तुम पाप का रास्ता नहीं छोड़ते। शैतान तुम्हारा शत्रु है, तुम्हें भी यह मालूम है; मगर तुम शैतान के मित्र बनकर उसके साथ ही भाई-चारा जोड़ते हो। मृत्यु किसी भी क्षण आने वाली है, यह तुम जानते हो; मगर उसकी तैयारी नहीं करते.....और फिर भी शिकायत करते हो कि तुम्हारे बुलाने पर खुदा क्यों नहीं आता?"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आजमगढ़ की शिबली अकादमी

सेवाराम गुप्त

आज से कोई इक्यावन साल पहले उर्दू के महारथी साहित्यकार मौलाना शिबली नोमानी के मन में विचार उठा कि कोई ऐसी संस्था हो, जो उर्दू में ऊंचे दर्जे के धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन करे और देश की जनता को स्वस्थ और मननीय चीजें पढ़ने को दे। पूरे एक वर्ष के विचार-मंथन के बाद उन्होंने एक संस्था की रूपरेखा तैयार की और सन १९१४ में उसे मौलाना अबुल कलाम आजाद के अखबार 'अल हिलाल' (कलकत्ता) के द्वारा जनता के सामने रखा।

मौलाना आजाद इस योजना से इतने प्रभावित हुए कि जब शिबली साहब ने संस्था का प्रास्पेक्टस उनके पास भेजा और उन्हें उसका मानद 'फेलो' बनाना चाहा, तो आजाद ने उन्हें उत्तर दिया—"दारुल मुसन्नफीन का प्रास्पेक्टस पहुंचा। मुझे आप इस सिलसिले में जो कुछ बनाना चाहें, मंजूर है। आनरेरी फेलो तो एक उम्दा बात है। अगर इसमें कोई जगह कुली की हो, तो भी मैं मंजूर कर लूंगा।"

शिबली नोमानी ने संस्था की नींव अपने ही वतन यानी आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में डाली। सबसे पहले उन्होंने अपना एक बड़ा बगीचा और दो कच्चे बंगले संस्था को अर्पित किये। जितनी भी अच्छी-अच्छी किताबें उनके पास थीं तथा मित्रों से प्राप्त हो सकीं, लाकर वहां रखीं। इस तरह ४-५ हजार उम्दा किताबें जमा हो गयीं।

लेकिन इसी बीच उनके पास परलोक से बुलावा आ पहुंचा और १८ नवंबर १९१४ को वे अपनी अंतिम यात्रा पर क्या निकले कि मुड़कर भी न देखा कि जो नींव उन्होंने रखी थी, उस पर किसी ने इमारत भी खड़ी की है या नहीं। वे कहा करते थे—"दारुल मुसन्नफीन मेरा मदफन होगा।" बात सच निकली। आज भी आजमगढ़ में दारुल मुसन्नेफीन का भव्य भवन अपने संस्थापक को अपनी बगल में हमेशा की नींद सुलाये हुए है।

शिबली नोमानी का संकल्प-बीज और मौलाना आजाद का आशीर्वाद-जल निष्फल कैसे हो सकते थे! शिबली साहब के देहांत के तीसरे दिन यानी २१ नवंबर १९१४ को उनके मित्रों और प्रशंसकों ने मिलकर उनके काम को पूरा करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकल्प किया। आजमगढ़ के नागरिकों ने भी इसमें योगदान दिया। शिबली साहब के बाग से जुड़ा हुआ उनके मित्र मिर्जा मुहम्मद सलीम और मिर्जा मुहम्मद नईम का बगीचा भी संस्था को मिल गया। अगले वर्ष उसकी रजिस्ट्री भी हो गयी। नाम रखा गया—'दारुल मुसन्नफीन,' अथवा 'शिबली अकादेमी'। भोपाल और हैदराबाद के नवाब शिबली साहब को रिसर्च के लिए जो मासिक वृत्ति दिया करते थे, वह उन्होंने मुसन्नफीन के नाम ज़ारी रखी।

'दारुल मुसन्नफीन' का अर्थ है—लेखकों का केंद्र। और देश में बहुत कम संस्थाएं होंगी, जिनके नाम इतने सार्थक होंगे। संस्था के संविधान के अनुसार उसके उद्देश्य ये हैं :

१. देश में उच्च कोटि के लेखक तैयार करना;

२. उच्च श्रेणी की पुस्तकें लिखाना, प्रकाशित करना;

३. दूसरी भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों का अनुवाद कराकर प्रकाशित करना;

४. अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन में सहायता करना;

५. पाठकों के सम्मुख पठन व मनन के लिए सर्वोत्तम सामग्री प्रस्तुत करना।

इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में दारुल मुसन्नफीन को प्रशंसनीय सफलता मिली है। अब तक वह सौ से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर चुका है। इनमें से शायद सबसे प्रसिद्ध है—'सीरतुन्नबी' (छः जिल्दों में), जो हजरत मुहम्मद साहब के सबसे प्रामाणिक जीवन-चरित्रों में गिना जाता है। संस्था का एक और प्रख्यात प्रकाशन 'सीरतुल सहाबा' चालीस वर्ष के श्रम से बारह जिल्दों में लिखा गया है। 'शेरुल हिंद' एवं 'गुलेराना' में उर्दू कविता का समालोचनात्मक इतिहास है, जिसे मौलाना अब्दुस्सलाम नदवी ने लिखा है। 'शेरुल अज्म' नाम से फारस के साहित्य का इतिहास और विख्यात फारसी कवि-दार्शनिक उमर खैयाम की जीवनी और रुबाइयों का संकलन भी यहां से शाया हुए हैं।

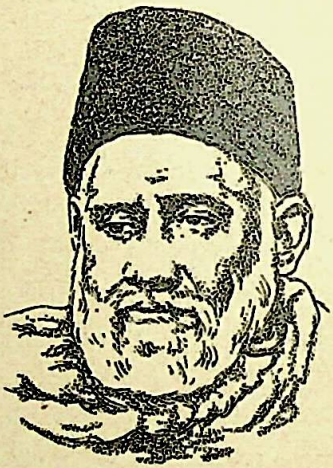

मौलाना शिबली नोमानी

ये सब पुस्तकें बड़ी प्रामाणिक समझी जाती हैं, हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के विश्वविद्यालयों में पढ़ायी जाती हैं। 'सीरतुन्नबी' का अंग्रेजी अनुवाद तैयार हो रहा है और एक मिस्री विद्वान उसका तर्जुमा अरबी में कर रहे हैं। और तो और, पश्चिमी रंग में रंगी तुर्की सरकार ने भी इसकी कई पुस्तकों का अनुवाद कराया है। 'सीरतुन्नबी', 'अल फारूक', और 'सीरत आयशा' के तुर्की रूपांतर भी प्रकाशित हो चुके हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्था का मुखपत्र 'मुआरिफ' जीवन के ८८ बहारें देख चुका है और उर्दू साहित्य-प्रेमियों की आंखों का नूर बन गया है। उसके लेख अरबी, फारसी और तुर्की की पत्र-पत्रिकाओं में उद्धृत हुआ करते हैं।

संस्था का एक बड़ा आकर्षण है उसका पुस्तकालय। आरंभ में उसमें चार-पांच हजार ही किताबें थीं। आज इस पुस्तकालय की कीमत आठ लाख रुपये कूती जाती है। इस्लाम संबंधी धार्मिक वाङ्मय का एशिया का सबसे बड़ा संकलन आपको यहां देखने को मिलेगा। उर्दू, अरबी और फारसी की अनेक दुर्लभ पांडुलिपियां यहां रखी हुई हैं। इनमें से शायद सबसे अनोखी और बहुमूल्य है शाहजहां की बड़ी लड़की जहांआरा बेगम की 'मूनिस उल अरवाह'। इस पांडुलिपि का भी एक इतिहास है। १९०६ में यह मौलाना शिबली को लखनऊ के अकबास मोहल्ले की एक कबाड़िये की दुकान से केवल १०० रुपये में मिल गयी। वे इसे बहुत संभालकर रखते थे। यह पेरिस की विश्व पुस्तक-प्रदर्शनी में १५,००० रुपये के बीमे पर जा चुकी है। इस पांडुलिपि की विशेषता क्या है, बस सांचे के ढले मोती हैं, जिन्हें देखकर आंखें रोशन हो जाती हैं।

और भी बहुत-सी बहुमूल्य पांडुलिपियां हैं, जैसे 'दानिश नाम-ए-जहां, 'गुलिस्तां', 'वकात आलमगीरी' (औरंगजेब के लिखे पत्र), 'अकबरनामा', 'आईने अकबरी', 'दीवान-ए-फैजी', 'कुल्लियात कलीम', 'बाबरनामा' और 'फरहंगजहांगीरी' आदि।

मुसन्नफीन का संबंध सारे संसार की साहित्य-संस्थाओं से है। देश-विदेश से यहां विद्वान रिसर्च करने आते हैं। इस्लाम-जगत के साहित्यकारों और मनीषियों के लिए तो भारत में यह एक तीर्थ ही बन गया है। तुर्की के जमाल पाशा, रूस के मूसाजार अल्लाह, मदीना के मौलाना इब्राहीम हमीद, काबुल के सरवर खां गोया और मिस्र के अब्दुल मुत्तलिब रशीद इसके अतिथि रह चुके हैं।

फिर देश के नेताओं की मुसन्नफीन पर कृपादृष्टि रही, तो उसमें अचरज ही क्या। मौलाना आजाद का तो स्थापना-काल से ही इससे संबंध था। जवाहरलाल नेहरू और रफी अहमद किदवई इसके आजीवन सदस्य थे। स्वर्गीय मोतीलाल नेहरू का इससे ऐसा स्नेह था कि जब भी आजमगढ़ आते, यहीं ठहरते। महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, डा० अन्सारी, अली बंधु, डा० राजेंद्र प्रसाद आदि भी यहां की अतिथि-शाला का गौरव बढ़ा चुके हैं।

मुसन्नफीन ने अभी पिछले दिनों अपनी स्वर्णजयंती मनायी है। जैसा कि हमारे यहां सभी स्वतंत्र विद्या-संस्थाओं के साथ होता है, मुसन्नफीन भी आर्थिक दृष्टि से सशक्त नहीं है। किंतु ध्येयनिष्ठा किसी भी संस्था की सबसे बड़ी संपत्ति है, और उसकी इस संस्था के पास कमी नहीं है। और दर-असल उसी के बल पर इसने आज देश में एक अनुकरणीय ज्ञानकेंद्र के रूप में प्रतिष्ठा पायी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान के हाथ में अक्षय-पात्र

विज्ञान का यह प्रयोग मनुष्य को सिर्फ खेती और रसोई की झंझटों से ही नहीं, भुखमरी के अभिशाप से भी सदा के लिए मुक्त कर देगा।

शर्ली जी० वेल्टन

पौ फटी और कैलिफोर्निया बंदीगृह के पंद्रह बंदियों को जगाया गया। आज १ जनवरी १९६४ की सुबह थी और इन बंदियों को भोजन किये, पूरे १२१ दिन हो चुके थे। आज इन्हें टेलिविजन पर गेंद के खेल-कूद दिखाये जानेवाले थे, अतः वे खेल देखने को उत्कंठित थे।

लगभग चार माह हो गये, इस बीच अन्न का एक दाना भी इनके पेट में नहीं गया; मगर फिर भी इनमें से एक भी व्यक्ति भूख से पीड़ित नहीं था। बल्कि सभी बंदी हृष्ट-पुष्ट और तंदुरुस्त थे।

जालसाजी से लेकर कत्ल तक के अपराधों के लिए सजा पाये हुए इन कैदियों को समाज भले हिकारत की नजर से देखता हो; लेकिन वैज्ञानिक और चिकित्सक इनके साथ ऐसी इज्जत से पेश आ रहे हैं, जैसे ये बड़े माननीय अतिथि हों। बात यह है कि ये ही दुनिया के पहले मानव हैं, जिन्होंने केवल रासायनिक घोल पीकर चार महीने निकाल दिये हैं।

चिकित्सा और मानसोपचार संबंधी अनुसंधान करनेवालों की एक संस्था है। नाम है—वैकेविल मेडिकल फेसिलिटी। यह अपराधी बंदियों पर वैज्ञानिक प्रयोग किया करती है। कैलिफोर्निया जेल के इन पंद्रह बंदियों ने अपने आपको इस संस्था को सौंप दिया, ताकि उन पर एक प्रयोग किया जा सके। और प्रयोग का प्रयोजन यह जानना था कि क्या मनुष्य किसी विशुद्ध रासायनिक खुराक पर जिंदा रह सकता है?

दिन में चार बार ये बंदी एक बोतल में वह कृत्रिम खुराक पीते हैं, जिसका नाम डाक्टरों ने 'मानव-भोजन' रखा है। यह एक रासायनिक घोल है, जिसमें प्रमुखता है एमिनो एसिडों की। (एमिनो एसिडों से ही प्रोटीन बनता है।) साथ ही इनमें विटामिन, नमक, कार्बोहाइड्रेट और वे सब पोषक तत्व मौजूद हैं, जो मानव-जीवन के लिए आवश्यक हैं। यह खुराक ठंडी, स्वाद में मीठी और तरल है। इसमें हर चीज तोला, माशा, रत्ती तक बड़ी बरीकी से नापकर मिलायी जाती है। इस भोजन में हर आवश्यक तत्व मानो ठूंसकर भर दिया गया है, जिससे इसकी थोड़ी-सी मात्रा भूख मिटाने के लिए पर्याप्त है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विल में इस खुराक पर रहनेवाले केवल जिंदा हैं, बल्कि उनका स्वास्थ्य ने अच्छा हो गया है। पांच माह के बाद बिलकुल स्पष्ट हो गया कि मनुष्य ना का एक ग्रास लिये बिना भी इस पर मजे से जीवित रह सकता है।

तालीस वर्षीय जीवरसायनशास्त्री डा० विनिट्ज ने इस खुराक को तैयार में दस वर्ष तक परि- किया है। उनका है, अब इस खुराक निःशंक होकर लिया जा सकता है और समय आ गया है कि संसार लाभ उठाये।

मनुष्य आज ब्रह्मांड के कहीं पर पहुंचने का यत्न कर रहा है। पृथ्वी संख्या के भार से दबी जा रही है। भोजनाभाव स्थिति में यह रासाय- खुराक किसी संजी- से कम नहीं। अकाल, सस्ती और पुष्टिकारी भोजन की कमी भीषण समस्याओं से निस्तार पाने के लिए यह खुराक ब्रह्मास्त्र का काम देगी। यही नहीं, यह मनुष्य-निर्मित भोजन अनेक रोगों से भी मुक्ति दिलायेगा।

विज्ञान-कथाओं के लेखक ही नहीं, कई रसायनशास्त्री एवं पाचन-विशेषज्ञ भी उस दिन के स्वप्न देखा करते थे, जब मनुष्य पेट भरने की चिंता से मुक्त हो जायेगा। दवा की तरह भोजन की एक गोली दिन में चार बार निगल ली, बस भोजन हो गया। न आटा-दाल, बरतन-भांडे खरीदने की झंझट, न खाना पकाने-परोसने का सिरदर्द, मकानों में कोठार और रसोईघर की भी कोई आवश्यकता नहीं।

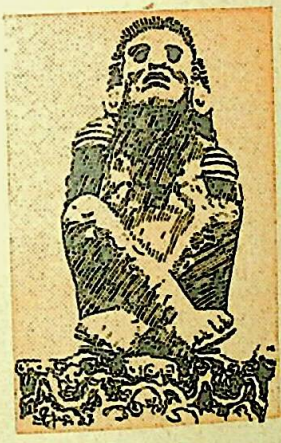

भुखमरी
एक प्राचीन मेक्सिकी मूर्ति की ओके द्वारा रेखानुकृति

इस स्वप्न को यथार्थ करने के लिए वैज्ञानिकों ने पचास वर्ष घोर श्रम किया। इन स्वप्न-दर्शियों में प्रमुख थे स्वर्गीय डा० जेस ग्रीन्स्टाइन और डा० विनिट्ज, जिन्होंने परिपूर्ण रासायनिक भोजन बना ही लिया।

सन १९५७ में इन दोनों वैज्ञानिकों ने बेथेस्डा की नेशनल हेल्थ लेबोरेटरी में इस भोजन का परीक्षण किया। वहां चूहों को इस खुराक पर पाला गया और उनकी तीन पीढ़ियों तक इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया। जो चूहे इस खुराक पर जिये, वे सामान्य चूहों की तरह संभोग करते, बच्चे पैदा करते और अपने बच्चों को खिलाते-पिलाते थे। इससे वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि इस खुराक पर मनुष्य भी इसी तरह जीवित रह सकेगा।

उन्हीं दिनों ग्रीष्म ऋतु में कुछ रूसी वैज्ञानिक बेथेस्डा की प्रयोगशाला में आये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कई प्रकार की घास-फूस के रेशों में स्थित सेल्युलोस कार्बोहाइड्रेट का सबसे बड़ा स्रोत है, जिसका मनुष्य अभी तक लाभ नहीं उठा सकता है। गाय और दूसरे जुगाली करनेवाले पशु उस सेल्युलोस को शरीर की प्रोटीन में बदल लेते हैं। और इसका साधन है जुगाली, जिसका वरदान मनुष्य को नहीं मिला है। जुगाली की क्रिया एक प्रकार के जीवाणुओं के कारण होती है। अब सचमुच इसकी संभावना है कि मनुष्य बरतनों में ये जीवाणु पालकर इनके जरिये अनुपयोगी घास-फूस से सीधे खाने योग्य प्रोटीन प्राप्त कर सके। —बर्नार्ड डिक्सन

थे। वे इस प्रयोग को देखकर दंग रह गये और उन्होंने एक सवाल बड़ा अजीब-सा पूछा—"क्या यह खुराक अंतरिक्ष-यात्रियों को दी जा सकेगी?"

कुछ माह बाद प्रथम स्पुतनिक छोड़ा गया। तुरंत दोनों वैज्ञानिकों ने अमरीकी सेना के सर्जन-जनरल को एक पत्र भेजा, जिसमें अंतरिक्ष-यात्रा के लिए इस खुराक की उपयोगिता का वर्णन था। इस रासायनिक भोजन को चूर्ण के रूप में चाहे जितने समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। यह वजनी नहीं होता और जगह भी कम घेरता है। इससे शौच भी छः-सात दिन में एक बार जाना पड़ता है। अंतरिक्ष-यात्रा में यह बात बहुत महत्वपूर्ण है। पत्र के साथ खुराक का नमूना भी भेजा गया।

पांच साल विचार-विनिमय में ही निकल गये। उसके बाद नासा (नेशनल एरोनाटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) ने अमरीकी अंतरिक्ष-यानों के चालकों के लिए यह खुराक तैयार कराने का निश्चय किया। इस काम के लिए २१ लाख रुपये की मंजूरी दी गयी। अब इस खुराक का नया नाम रखा गया—मानव का अंतरिक्ष-भोजन।

वैकेविल तो ऐसे सब प्रयोगों में लगे रहता ही है। उसने इस प्रयोग के लिए १८० कैदी स्वयंसेवक प्राप्त किये। इनमें से खूब ठोक-बजाकर सिर्फ चौबीस कैदी चुने गये।

चौबीसों कैदी अलग-अलग ढंग के थे। कई मोटे-ताजे थे और कई दुबले-पतले। सबसे छोटा २४ वर्ष का था और सबसे बड़ा ३९ का। कुछ काफी बुद्धिमान थे, कुछ सामान्य। ये समाज के विभिन्न समुदायों के लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे।

जो काम इन्हें करना था, काफी डरावना था। इन्हें छः माह तक बंदीगृह के भीतर एक और बंदीगृह में रहना था। बाहर के किसी एक मुलाकाती को महीने में केवल एक बार इनसे मिलने की छूट थी। इन सबसे बढ़कर यह कि खाने को इन्हें कुछ भी नहीं दिया जानेवाला था सिवा एक ठंडे द्रव के।

खुराक शुरू होने के बाद कुछ दिन तक ये लोग उनींदे-उनींदे रहे और इन्हें ठंड में शरीर सिकुड़ने और सिरदर्द होने की शिकायत रही। भय बढ़ने लगा। एक कैदी को लगा कि उसके सिर के बाल उड़ जायेंगे, दूसरे को चिंता सताने लगी कि उसका पुरुषत्व क्षीण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है। तीसरे ने देखा कि उसके दांत
ब होते जा रहे हैं। यह भी शिकायत
जने लगी कि इस भोजन में कोई खुशबू
स्वाद नहीं है। इसलिए उसमें कोकाकोला,
ी और नारंगी का स्वाद मिलाया गया।
भी बंदी इस प्रयोग को छोड़ना चाहें,
ैसा करने की स्वतंत्रता थी और २४
ने छोड़ भी दिया।

ब यह खुराक देना शुरू हुआ, तो कुछ
तो उसे पाचन-यंत्रों में पहले से मौजूद
ानिक भोजन की सफाई करने में लगे।
साल में सारे व्यक्तियों का वजन घट
। फिर जो कम वजनवाले थे, उनका
बढ़ने लगा। जिनका वजन जरूरत से
था, उन्होंने देखा कि उनका मोटापा
रहा है और उनकी मांसपेशियां सुघड़
ी जा रही हैं। रक्त में कोलेस्टरोल की
मात्रा घटने लगी और यह संकेत शुभ
। कोलेस्टरोल का आधिक्य हृदयरोग
एक बड़ा कारण माना जाता है।

इन प्रयोगाधीन लोगों को कोई काम
ी करना पड़ता था। बस, प्रतिदिन २५
मिनट व्यायाम और कभी पिंगपांग का
ेल। इस पर भी उनकी मांसपेशियां अच्छी
ी रहीं। अधिकांश बंदी प्रसन्नचित्त रहे।
लेकिन संस्कारों और वासनाओं की जड़ें
अवचेतन भूमि में बहुत गहरी होती हैं। बंदियों
को प्रायः रात को भोजन के स्वप्न आते थे।
कुछ ने तो खाद्य पदार्थों के रंगीन चित्र
इकट्ठे कर रखे थे। एक ने विभिन्न व्यंजन
बनाने की विधियां इकट्ठी कीं। लेकिन इन
कुछ एक सनकों के बावजूद ये कभी भूखे
नहीं रहे, न इन्होंने भूख की शिकायत की।
जो बंदी जेल में रहते हुए कालेज की पढ़ाई
करते थे, उनका मन पढ़ने में ज्यादा समय
तक केंद्रित रहने लगा।

ये १५ व्यक्ति मानो जीवित टेस्ट-ट्यूब
थे। जो कुछ इनके शरीर के भीतर जाता
और जो कुछ शरीर से बाहर आता, उसे
नापा जाता था। एक नर्स दिन में चार बार
इनका तापमान, रक्त का दबाव और नब्ज
नोट करती थी। डाक्टर प्रतिदिन दो बार
परीक्षा करता था। हर सप्ताह हर व्यक्ति
का कुछ रक्त रासायनिक परीक्षण के लिए
लिया जाता था।

प्रति सप्ताह रासायनिक पाउडर में
भभके का पानी मिलाकर तीस गैलन घोल
बना लिया जाता था। वैकेविल के १५
व्यक्तियों के लिए यह घोल सप्ताह-भर को
काफी होता था। ५० प्रतिशत सांद्रतावाला
एक चौथाई गैलन घोल प्रतिदिन ३,००० कैलोरी की शक्ति प्रदान करने के लिए पर्याप्त होता है। सभी बंदियों को एक ही घोल दिया जाता था; किंतु प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग मात्रा में। और यह मात्रा-भेद २,४०० कैलोरी से ३,७०० कैलोरी तक था।

अब जरा इस घोल के रासायनिक तत्वों पर विचार कर लिया जाये।

जीव-कोष की रचना अनेक प्रकार के अत्यंत जटिल प्रोटीनों से होती है। किंतु शरीर के ये विविध प्रोटीन २२ प्रकार के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एमिनो एसिडों से बनते हैं। इनमें से ८-१० तो मानव-जीवन के लिए अत्यावश्यक हैं। मानव-निर्मित भोजन में १८ प्रोटीन रहते हैं। प्रत्येक तत्व एक ग्राम के हजारवें हिस्से तक बारीकी से नापकर ठीक मात्रा में मिलाया जाता है। विटामिन, ग्लुकोस, नमक और ईथिल लिनोलीट आदि कुल ४० चीजें उतनी मात्रा में मिलायी जाती हैं, जितनी पोषण के लिए आवश्यक हैं।

अभी तो इस खुराक के आधारभूत शुद्ध एमिनो एसिड लगभग सोने के बराबर कीमती हैं। इस प्रकार वैकेविल के एक बंदी के एक दिन के भोजन पर ६० रुपये का खर्च आता है। किंतु वैज्ञानिकों को विश्वास है कि अंततः यह भोजन काफी सस्ता मिलने लगेगा। जिस कच्चे माल से एमिनो एसिड तैयार किये जाते हैं, वे हैं तारकोल और हवा।

आजकल तो एमिनो एसिडों की मांग मुख्यतः अनुसंधानशालाओं में ही है। कल यह स्थिति बदल जायेगी। डाक्टर इसके पहले ग्राहक होंगे। बात यह है कि यह खुराक हृदय-रोग और पाचन की गड़बड़ी जैसे बड़े और व्यापक रोगों का निवारण करने में सहायक है। वजन घटाने के लिए इस खुराक को बेखटके लिया जा सकता है।

राष्ट्रसंघ के आंकड़ों के अनुसार आज दुनिया में १.५ अरब लोगों को पूरा पौष्टिक भोजन नहीं मिलता। प्रतिदिन लगभग १०,००० व्यक्ति पोषण के अभाव या भूख से मरते हैं। इस सदी के अंत तक पृथ्वी की जनसंख्या दुगुनी हो जायेगी। उसे खिलाने-पिलाने का कोई रास्ता अभी तक हम नहीं खोज पाये हैं। और जैसा कि डा० विलियम्ज कहते हैं—"कोई देश चाहे कितना ही अन्न-समृद्ध क्यों न हो, सारे संसार का पेट नहीं भर सकता। हर देश को अपनी आवश्यकता के अनुसार अन्न स्वयं उत्पन्न करना पड़ेगा—आज नहीं तो कल, या परसों।"

इसी परसों की चिंता इस रासायनिक भोजन के आविष्कारकों को है। उनके खयाल से, कोई अचरज नहीं कि आगे चलकर एक दिन मनुष्य के लिए आवश्यक सारी खाद्य सामग्री खेतों की जगह फैक्टरियों से प्राप्त होने लगे। ये वैज्ञानिक चाहते हैं कि अमरीकी सरकार इस काम को हाथ में ले और अन्य राष्ट्रों को भी बताये कि इस भोजन का उत्पादन कैसे किया जाता है।

वैकेविल के वैज्ञानिकों को यह भ्रम नहीं है कि निकट भविष्य में दुनिया प्राकृतिक भोजन छोड़कर रासायनिक भोजन की भक्त बन जायेगी। लेकिन उनकी मान्यता है कि पूरक भोजन के रूप में तुरंत इसका उपयोग शुरू किया जा सकता है और इस प्रकार सबको पूर्ण पौष्टिक भोजन प्राप्त कराया जा सकता है।

संकट-काल में यह भोजन बहुत उपयोगी होगा। भूकंप, बाढ़ आदि से पीड़ित प्रदेशों में फंसे हुए लोगों के लिए इसे आसानी से हवाई जहाज से गिराया जा सकता है। सेनाओं के लिए तो यह वरदान होगा; क्योंकि पाउडर के रूप में इसे दीर्घ काल तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता के तीन पाये

मोटर कार के निर्माता और विख्यात धर्मार्थ संस्था नफील्ड फाउंडेशन के संस्थापक द्वारा व्यावसायिक सफलता के सूत्रों की व्याख्या।

लार्ड नफील्ड

मैंने हर मौके का पूरा लाभ उठाया है, और हमेशा गुलाम की तरह कसकर काम की है—मेरी सारी सफलता का यही राज है। १९११ में आक्सफर्ड में मारिस मोटर चलाते हुए मुझे यकीन हो गया कि कोई कार बनायी जाये, जिसकी कीमत लोगों की पहुंच के भीतर हो, तो उसकी मांग रहेगी। मैंने अनुभव किया कि जो साइकल के साथ हुई, वह कारों के साथ होकर रहेगी। १९१४ तक मेरा छोटा-सा कारखाना चालू हो गया था और मेरी राय उन लोगों से खास भिन्न नहीं थी, जाने या अनजाने इसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

जो लोग उस वक्त इस ध्येय की ओर अग्रसर हो रहे थे, उनमें से कुछ आज भी बड़े पैमाने पर काम कर रहे हैं; कुछ की नैया डूब चुकी है। पर हमारे बढ़ने का कारण यह नहीं था कि हम खुशकिस्मत थे। इसके लिए हमने तीन ठोस कदम उठाये :

१. माल के स्तर में निरंतर सुधार;

२. उत्पादन - व्यय घटाकर माल की कीमत में निरंतर कटौती;

३. सहमकर चलनेवाली आर्थिक नीति—तेजी से बढ़ती हुई छोटी उद्योग-संस्थाएं अक्सर जो खतरे ले लिया करती हैं, उनसे बचे रहना।

अधिकांश छोटे उद्योगपति इनमें से किसी एक ही चीज पर सारा ध्यान लगा देते हैं, और बाकी दो चीजों को भुला देते हैं। लेकिन इनमें से एक को भी नजर-अंदाज कर देना विनाश को न्योता देना है।

सन १९१२ में ही मुझे विश्वास हो गया था कि छोटी उत्पादन-संस्थाओं के लिए सबसे अच्छी नीति यह है कि अलग-अलग चीजों का निर्माण अलग-अलग विशेषज्ञ फर्मों से करा लिया जाये। इससे काम अधिक अच्छा होता है और सस्ता भी। अधिक मशीनें लगाने के खर्च और सिरदर्द से भी छुटकारा मिल जाता है। बचत के इस पैसे का किसी और दिशा में अधिक अच्छा उपयोग किया जा सकता है।

बाहरवालों से काम कराने का हमारा अपना खास तरीका है। अव्वल हम उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल स्वयं खरीदते हैं। इसके लिए हम देश के विभिन्न हिस्सों की चार-पांच फर्मों को ठेके देते हैं, जिससे कच्चा माल हमें बराबर मिलता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे। ठेकेदारों का भेजा हुआ माल स्वीकार करते समय हमारे कर्मचारी खुद उसे खूब ठोक-बजाकर देख लेते हैं।

कच्चे माल से पुर्जे आदि कैसे बनाने हैं, यह भी हम स्वयं तय करते हैं। उनके लिए मापक (गेज) भी हम ही मुहैया करते हैं। और कभी-कभी तो मशीनों को कहां व कैसे बैठाना है, इसका नक्शा भी हम ही बना कर देते हैं।

इस प्रकार तैयार किये गये तमाम पुर्जे हमें भेज दिये जाते हैं। वे और किसी को नहीं बेचे जा सकते। फिर हमारे निरीक्षक एक-एक पुर्जे को खूब बारीकी से परखते हैं और गोदाम में जमा करा देते हैं।

सो हमारे लिए काम करनेवाली फर्में पुर्जे भर तैयार करती हैं। उन्हें कच्चा माल बराबर मिलते रहने की गारंटी हम देते हैं। टूट-फूट का अनुपात भी हम जरा उदारता से ही तय करते हैं। ठेके लंबे अरसे के लिए देते हैं, जिससे इन फर्मों की आर्थिक जिम्मेदारी सीमित रहे।

चूंकि किफायत हमारा उद्देश्य है, इसलिए हम इन फर्मों को इतनी नीची दरों पर काम करने कहते हैं, जो आरंभ में उन्हें सर्वथा असंभव लगती हैं। उस समय उन्हें यह विदित नहीं होता कि उत्पादन-कार्य के मानकीकरण (स्टैंडर्डाइजेशन), लगातार काम मिलने की गारंटी और टेक्निकल मदद की व्यवस्था करके हम उन्हें कितनी बचत करा रहे हैं। फिर भी सिर्फ इसी बिना पर कि हमने कहा है, इस दर पर उत्पादन संभव है, फर्में ठेका ले लेती हैं। और आज तक कोई फर्म दिवालिया नहीं हुई। हमने देखा है कि इस प्रकार का प्रबंध या तो ऐसा जमकर चलता है कि लगभग स्थायी बन जाता है, या पांच मिनिट भी नहीं चलता।

लेकिन उत्पादन-व्यय तभी नीचा रखा जा सकता है, जब कर्मचारी काम में दिलचस्पी लेते हों। मेरा अनुभव है, अगर हम अपने कर्मचारियों का खयाल रखें, तो कर्मचारी भी हमारा खयाल रखते हैं। कम वेतन उत्पादन का सबसे महंगा तरीका है, और पर्याप्त ऊंचा वेतन सबसे सस्ता। कम वेतन पानेवाला मजदूर या कर्मचारी अपनी पाली पूरी कर शाम को कारखाने से बाहर निकलने तक बुरी तरह 'बोर' हो चुका होता है। और शाम की यह बोरियत अगले दिन काम के घंटों में सुस्ती पैदा करती है। किस आदमी को दिन-भर काम करने का लोभ भला क्यों होगा, अगर उसके पास शाम को मौज-मजा करने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं रहनेवाले हैं?

पर्याप्त ऊंचे वेतन से—खासकर, जब उसे पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती हो—जीवन में मनुष्य की दिलचस्पी पैदा होती है। लोगों को अगर पता हो कि अधिक मेहनत करने से वे आराम के साज-सामान पर, शौक और आमोद-प्रमोद पर अधिक खर्च कर सकेंगे, तो वे अधिक मेहनत करेंगे। क्या यह बात स्वयं हम पर भी लागू नहीं होती है?

मेरी आर्थिक नीतियां इतनी सीधी हैं कि आप शायद सुनकर मुस्करा दें। लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र डटे रहने का मुझे बहुत लाभ हुआ—
ा अधिक कि मैं बता नहीं सकता।
हली नीति यह है कि हमारी कंपनी
तार के विस्तार के लिए सारी पूंजी
ी कमाई में से ही प्राप्त करे।
ी दूसरी आर्थिक नीति है, तुरंत भुग-
बानी इस हाथ दे उस हाथ ले। हमें
ल मुहैया करनेवाली फर्में जानती हैं कि
कुछ भी हो, जो तारीख तय हो चुकी,
ोज हमारा चेक पहुंच ही जायेगा।
और आखिरी चीज यह है कि मैं हर
ने के आय-व्यय का बजट बनाया करता
र हफ्ते सेक्रेटरी मेरे सामने तलपट पेश
ते हैं, जिससे कंपनी की सही-सही स्थिति
सामने आ जाती है।

पिछले दस वर्षों में मुझे हर वर्ष कुछ नहीं
ल हजार निर्णय करने पड़े हैं। व्यापार
सफलता इस पर निर्भर है कि उसके
संचालक के निर्णयों में सही निर्णयों का
नुपात कितना होता है। यदि उसके ज्यादा-
निर्णय सही होते हैं, तो व्यापार पन-
ा; अगर ज्यादा मात्रा गलत निर्णयों की
ती है, तो व्यापार ठप हो जायेगा।
और सही निर्णयों का अनुपात अंततः
विवेक पर निर्भर है; और विवेक निर्भर
संतुलित मस्तिष्क पर। मेरा अनुभव है
संतुलित मस्तिष्क का व्यक्ति अवश्य
निर्णयी होता है।

व्यापार-उद्योग के लिए वह आदमी बड़ा
अभिशाप है, जो एक क्षेत्र में तो विलक्षण
क्षमता रखता है, लेकिन जिसे दूसरे क्षेत्रों
की कुछ भी जानकारी नहीं है। ऐसा
आदमी संतुलित निर्णय नहीं कर पाता।
दूसरे शब्दों में, वह अयोग्य प्रबंधक होता
है। व्यापार या उद्योग संस्थाओं के प्रधान
अधिकारी को हरफन मौला होना चाहिये—
किसी एक ही क्षेत्र का विशेषज्ञ नहीं। तभी
वह तमाम तथ्यों को नजर में रख सकेगा,
जो संतुलित निर्णय में सहायक होंगे।

मोटर-उद्योग की सबसे बढ़िया बात यह
है कि माल की बिक्री के साथ दाम वसूल
हो जाते हैं। मान लीजिये कि जनवरी में
हमने ९० लाख रुपये की कारें बेचीं। हम
यह तो जानते हैं कि फरवरी में हम कितना
खर्च करना चाहते हैं; लेकिन फरवरी में ठीक-
ठीक कितनी कारें बेच सकेंगे, यह हम नहीं
जानते। मान लीजिये, अचानक यातायात-
उद्योग में हड़ताल हो जाती है, या मंदी छा
जाती है। तुरंत हमारे उत्पादन, बिक्री और
वित्त-विभाग के अधिकारी विचार-विनि-
मय करते हैं और बिक्री में जितनी घटती होने
की संभावना हो, उत्पादन उतना घटा देते
हैं। इस प्रकार लाखों की बचत हो जाती है।

मोटर-उद्योग में बिके हुए माल का पैसा
न मिलने से शायद ही कोई कंपनी ठप होती
हो। यहां कंपनियां ठप होती हैं गोदाम में
रखे हुए माल का मूल्य गिर जाने से। कारें,
कारों के पुर्जे अभी कारखाने से बाहर आये
भी नहीं होते कि पुराने पड़ने लगते हैं।
इसलिए हम ऐसी व्यवस्था करते हैं कि
तैयार होने के बाद कोई कार ४८ घंटे से
ज्यादा हमें अपने पास न रखनी पड़े।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्यादान सर्वश्रेष्ठ दान है, इस मनु-वचन के अनुसार लाखों भारतीयों के लिए विद्या के बंद द्वार खोलनेवाली एक अमरीकी महिला का परिचय।

पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके

अक्षरदात्री मां फिशर

तीर्थों और पुण्यक्षेत्रों से भरे देश भारत में आज भी नये और नयी किस्म के तीर्थस्थानों का प्रादुर्भाव हो रहा है। ऐसा ही एक स्थान है, लखनऊ के निकट का 'साक्षरता-निकेतन'। देह से पकी-झुकी, किंतु मन से प्रबल एक अमरीकी महिला ने एक दीपक वहां जलाया है, जो लाखों निरक्षर ग्रामवासियों को अक्षर-ज्ञान का आलोक दे रहा है।

रोशनी बांटने के इस वंदनीय आयोजन की प्रेरणा महात्मा गांधी से मिली थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पुरानी हमदर्द मित्र श्रीमती वेल्थी फिशर दिसंबर १९४७ में एक दिन नयी दिल्ली में गांधीजी से मिलने आयीं। वे अमरीका लौट रही थीं। गांधीजी ने विदा देते हुए कहा—"अगर फिर हिन्दुस्तान आओ, तो गांवों में जाओ। असली हिन्दुस्तान गांवों में है। गांववालों के साथ रहो, उनकी मदद करो।" एक महीने बाद गांधीजी की हत्या हो गयी। लेकिन उनके वे तीन सीधे-सादे वाक्य जीवित रहे और १९५३ में श्रीमती फिशर को फिर भारत खींच लाये। वे भारत के ग्रामवासियों की सेवा करना चाहती थीं, वह भी शिक्षा-कार्य द्वारा। किंतु कार्यक्रम की कोई स्पष्ट रूपरेखा उनके मन में नहीं थी।

यों भारत और शिक्षा-प्रचार उनके लिए कोई नयी बातें नहीं थीं। भारत में ही उन्होंने अपना जीवन-सहचर पाया था और शिक्षिका के रूप में ही उन्होंने जीवन आरंभ किया था। किंतु अनुरूप पति और मनपसंद जीवन-ध्येय पाने की कहानी लंबी है।

वेल्थी होन्सिगर (फिशर उनका विवाहोत्तर नाम है) न्यूयार्क राज्य (अमरीका) के ब्रिन नाम के कस्बे में १८८० में जन्मीं। बचपन से संगीत में उन्हें गहरी दिलचस्पी थी—इतनी गहरी कि वे आपेरा-गायिका बनने का स्वप्न देखा करती थीं। मां के आग्रह पर वे कालेज गयीं तो सही; लेकिन मन संगीत के स्वप्नों में ही रमता रहा। और मां का आशीर्वाद लेकर इक्कीस वर्ष की अवस्था में न्यूयार्क के रंगमंच पर आपेरा-गायिका के रूप में उतरीं।

लेकिन जीवन ने उनके लिए दूसरा ही रंगमंच तैयार कर रखा था। एक दिन यों ही कौतूहलवश वे मिशनरियों की एक सभा में चली गयीं। डा० राबर्ट स्पियर्स का प्रवचन था। वे कह रहे थे—"अगर आज रात को दुनिया के तमाम मिशनरियों की मृत्यु हो जाये, तो भी मुझे विश्वास है कि कालेज के युवक छात्र-छात्राएं उनके रिक्त स्थान की पूर्ति कर लेंगे।" न जाने क्यों, वेल्थी को लगा कि यह बात उन्हीं को लक्ष्य करके कही गयी है। उस रात वे सो नहीं सकीं। उन्हें एक घटना याद हो आयी। पिताजी की मृत्यु हाल में ही हुई थी। घर में मातम छाया था। वे चुपचाप कपड़ों पर इस्त्री कर रही थीं। परिवार के मित्र एक विशप महोदय आये हुए थे और वेल्थी की उस स्थिर उदास मुद्रा को देखकर बोल उठे थे—"बेटी, तू बहुत अच्छी मिशनरी बन सकती है।" और उनकी बात से भीतर के कुछ तार झनझना उठे थे।

आज रात की अनिद्रा में वे सब बातें उन्हें याद आयीं। अगली भी कई रातें इसी प्रकार कटीं। अंत में एक दिन सवेरे वे मिशनरी बनने का संकल्प लेकर उठीं। मित्रों और रिश्तेदारों को आश्चर्य में डालकर, एक आकर्षक युवक के प्रेम और संगीत-सितारा बनने की चाह को तिलांजलि देकर १९०६ के दिसंबर महीने में वे चीन रवाना हो गयीं।

अगले बारह वर्ष वे चीन के नान-चांग में बाल्डियन मिशन स्कूल की प्रधानाध्यापिका रहीं। उनकी अधीनता में स्कूल ने बड़ी तरक्की की। १९१८ में वेल्थी संस्था का संचालन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक और महिला के सुपुर्द कर अमरीका लौटीं। १९२० में पृथ्वी-प्रदक्षिणा पर निकलीं और जापान, कोरिया, चीन, सिंगापुर, मलय और बर्मा होते हुए भारत आ पहुंचीं।

भारत-प्रवास के दौरान में उनका परिचय कलकत्ता के मेथोडिस्ट विशप डा० फ्रेड फिशर से हुआ। बिशप फिशर को महात्मा गांधी ने "ईश्वर से डरनेवाला और मनुष्यों से न डरनेवाला ख्रिस्ती" कहा था। वेल्थी को फिशर के सशक्त, किंतु सरस व्यक्तित्व ने आकृष्ट किया। फिशर के मन पर भी वेल्थी गहरी छाप छोड़ गयीं।

सन १९२४ में डा० फिशर मेथोडिस्ट परिषद में भाग लेने अमरीका गये। वहां उनकी फिर वेल्थी होर्न्सिगर से भेंट हुई। इस बीच डा० फिशर विधुर हो चुके थे। वेल्थी पत्नी बनकर उनके जीवन का जुआ कंधे पर उठाने तैयार हो गयीं। एक सहेली ने चेताया- "क्या ऐसा उथल-पुथल-भरा जीवन जीनेवाले आदमी का हाथ पकड़ते तुझे डर नहीं लगता? क्या तू उसे हाथ में रख सकेगी?" उत्तर मिला—"मुझे उन्हें बांधकर नहीं रखना है, उनके जीवन में हिस्सा बंटाना है।"

और १९२४ में मिस वेल्थी होर्न्सिगर मिसेज वेल्थी फिशर बन गयीं। तब वे ४१ वर्ष की थीं। किंतु प्रेम की कोई उम्र नहीं होती। वे कहती हैं—"प्रेम जवानी में ही होता हो, ऐसी बात नहीं। हम प्रौढ़ावस्था में पहुंच चुके थे। किंतु हम प्रेमी-प्रेमिका नहीं थे, ऐसा न मानियेगा।" और आज भी यह कहते हुए उनकी आंखें स्वप्निल-सी हो उठती हैं।

उनके दांपत्य के अधिकांश वर्ष एक दीर्घ 'हनीमून' की तरह भारत में बीते। इन वर्षों में वे गांधीजी और अन्य भारतीय जननायकों के परिचय में आयीं। हमारे स्वाधीनता-आंदोलन के साथ इन दंपति की गहरी सहानुभूति थी।

बात १९३८ की है। डा० फिशर अमरीका में थे। एक दिन मोटर की चपेट में आ गये और उनकी मृत्यु हो गयी। वेल्थी फिर एकाकी रह गयीं। मित्रों व बंधुओं का आश्वासन भी उन्हें शांति न दे सका। वे विश्व-प्रवास पर निकल पड़ीं। चाहती थीं कि अपने पति की अस्थियां हिमालय पर बिखरायें और शांति-निकेतन में उनका एक स्मारक स्थापित करें। मन में यह भी विचार आता था कि शायद चीन में, जहां उन्होंने सेवा-जीवन आरंभ किया था, नया जीवन जीने का बल प्राप्त हो जाये।

वर्षों प्रवास चलता रहा। शोक के साथ-साथ काम भी जारी रहा। वे व्याख्यान देतीं व विभिन्न समस्याओं पर लेख लिखती रहीं। भारत आकर दार्जिलिंग गयीं, वहां पति की अस्थियां हिम-शिखरों पर बिखरा दीं। पति का एकमात्र भौतिक स्मृतिचिह्न भी उस देश की मिट्टी को अर्पित कर दिया, जहां उनके पति ने जनसेवा की थी। कुछ समय सेवाग्राम में बिताया। फिर प्रवास शुरू हो गया। देश-देश की शिक्षा-पद्धतियों का उन्होंने अभ्यास किया। एक दुर्घटना में टांग टूट गयी, तो बैसाखी के सहारे चलती रहीं। इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९४७ आया और उनके मन में एक संकल्प-बीज बोकर चला गया।

अंत में पति की मृत्यु के १५ वर्ष बाद, ७२ वर्ष की अवस्था में श्रीमती वेल्थी फिशर चल बसीं। गांधीजी के ये शब्द अभी तक उनके कानों में गूंज रहे थे—"गांवों में बसी। असली भारत गांवों में है। गांववालों के साथ रहो, उनकी मदद करो।"

सबसे बड़ी मदद होगी साक्षरता-प्रचार—श्रीमती फिशर सोच रही थीं। शिक्षा मुक्ति का द्वार है और साक्षरता उस द्वार की दहलीज। वे ऐसी भारतीय पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं, जो भारत के नवसाक्षर प्रौढ़ों को दी जा सकें। तभी इलाहाबाद के एग्रीकल्चरल इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष ने उनसे आग्रह किया कि वे आकर अक्षर-प्रचार आंदोलन में उन्हें सहायता दें। श्रीमती फिशर इलाहाबाद जा पहुंचीं और वहां उन्होंने फरवरी १९५३ को 'साक्षरता-निकेतन' (लिटेरेसी हाउस) की नींव डाली।

योजना थी कि पांच सौ गांवों में से निरक्षरता का उन्मूलन किया जाये। फोर्ड फाउंडेशन ने आर्थिक सहायता देना स्वीकार किया। इलाहाबाद में एक छोटा-सा मकान किराये पर लिया गया और उसके बरामदे में क्लासें शुरू की गयीं।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा० क० मा० मुंशी ने १९५६ में उनसे लखनऊ को अपना केंद्र बनाने का आग्रह किया और दस एकड़ जमीन दिलवायी। डा० बारी बेकर नामक एक अंग्रेज सहयोगी भी मिल गये। १९५८ में लखनऊ का 'साक्षरता-निकेतन' खुल गया।

बीस एकड़ में बसी हुई इस संस्था की बस्ती एक छोटा-सा गांव है। आज वहां स्कूल है, दफ्तर है, पुस्तकालय है, खुली रंगशाला है, कारखाना, उपहारगृह, खेल के मैदान, छात्रावास और कर्मचारियों के निवास हैं। गांव के बीचों-बीच प्रार्थनागृह है, जिसका उद्घाटन १९५९ में डा० राधाकृष्णन ने किया था। यहां सब धर्मों के लोग प्रार्थना करते हैं।

साक्षरता-निकेतन का मुख्य कार्यक्रम है देश के करोड़ों निरक्षरों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए शिक्षक तैयार करना। समाज के सभी वर्गों व जीवन के सभी क्षेत्रों से यहां कार्यार्थी आते हैं—अध्यापक, समाज-सेवक और सहकारी संस्थाओं के कर्मचारी विशेषतः। शिक्षण पाने के बाद ये अपने गांवों-मोहल्लों में रात्रिशालाएं चलाते हैं। अब तक ६,५०० व्यक्ति यहां से ट्रेनिंग पाकर निकले हैं। उन्होंने १,६०,००० अनपढ़ों को साक्षर बनाया है।

श्रीमती फिशर साक्षरता को साधन मात्र मानती हैं। साध्य है शिक्षा-प्रचार द्वारा रहन, रहन-सहन व उद्योग-धंधों का विकास, अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का भान। यानी अंतिम लक्ष्य है मानव का पूर्ण विकास। शिक्षण-क्रम में यही व्यापक दृष्टि रखी गयी है।

संस्था ने एक और उपयोगी कार्य किया है। वह गांवों में 'शिक्षा-झोले' वितरित करती है। अमरीका की 'केयर' संस्था द्वारा भेजे जानेवाले इन 'झोलों' में पच्चीस विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए आवश्यक पाठ्य पुस्तकें, चार्ट, स्लेटें, ब्लैक बोर्ड, लैंप आदि सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीजें होती हैं। अब तक ऐसे १,५०० झोले बांटे जा चुके हैं। इनकी मदद से कहीं भी एक कक्षा आरंभ की जा सकती है।

संस्था नये-नये क्षेत्रों में भी प्रवेश कर रही है। उसने लखनऊ और इर्द-गिर्द के गांवों में प्रयोग के तौर पर सौ प्रौढ़ शिक्षणशालाएं खोली हैं। उसकी ओर से ३५ औद्योगिक स्कूल चलते हैं, जिनमें से २३ कानपुर में हैं। स्त्रियों के लिए दो वर्ष का एक सघन शिक्षक-कार्यक्रम चलता है। उसने ग्राम-पंचायतों के कार्यकर्ताओं के लिए भी एक विशेष कोर्स खोला है, जिसमें २,७०० व्यक्ति प्रशिक्षण पा चुके हैं।

वयस्कों के शिक्षण के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या है, समुचित पुस्तकों का अभाव। इसके निवारण के लिए साक्षरता-निकेतन लेखकों को तैयार करने में लगा हुआ है। प्रति वर्ष वहां कुछ दिन के लिए लेखक एकत्र होकर वयस्क नवसाक्षरों की समस्याओं और आवश्यकताओं का अध्ययन करते हैं। इन लेखकों द्वारा संस्था ने कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, घर की सार-संभाल, परिवार-नियोजन, प्रजातंत्र आदि विषयों पर ६० पुस्तकें तैयार करायी हैं, जिनकी ५ लाख से भी अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। 'उजाला' नाम की एक पाक्षिक हिन्दी पत्रिका भी यहां से प्रकाशित होती है।

साक्षरता-निकेतन को इन सब कार्यों के लिए भारत साक्षरता बोर्ड, वर्ल्ड एजुकेशन इन्कार्पोरेटेड (न्यूयार्क), भारत सरकार के समाज कल्याण बोर्ड, बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट, फोर्ड फाउंडेशन, केयर और वर्ल्ड लिटेरेसी इन्कार्पोरेटेड (कनाडा) आदि से सहायता मिल रही है। हाल में अमरीका की एजेन्सी फार इंटरनेशनल डेवेलपमेंट ने करीबन ७३ लाख रुपये की मदद दी है।

वेल्थी फिशर को ज्ञान-प्रचार की चिंता है, आत्मप्रचार की नहीं। लेकिन गुलाब भले पत्तों की ओट में छिपा रहे, हवा उसकी सुगंध को दूर-दूर तक पहुंचा ही देती है। साक्षरता-निकेतन आज प्रौढ़-शिक्षा के आंदोलन के सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय केंद्रों में गिना जाता है और उसकी संचालिका श्रीमती फिशर इस विषय की विशेषज्ञ। अभी दो साल पहले उन्हें मैगासेसे पुरस्कार दिया गया।

श्रीमती फिशर कहती हैं, अभी तो काम शुरू हुआ है। संस्था के दसवें वार्षिकोत्सव पर उन्होंने कहा था—"कुछ लोग समझते हैं, निरक्षरता का उन्मूलन असंभव है; लेकिन मुझे तो शहरों और गांवों के लाखों-करोड़ों अशिक्षितों को पढ़ाने-लिखाने के इस आंदोलन का भविष्य बड़ा उज्वल दिखाई देता है। प्रजातंत्र और विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य है और साक्षरता शिक्षा की पहली सीढ़ी है।"

श्रीमती वेल्थी फिशर के आदर्शवाद और कार्य-कौशल की कृपा से आज लाखों भारतीयों को इस पहली सीढ़ी पर चढ़ने का अवसर सुलभ हो रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक शांतिवादी वैज्ञानिक के साथ

सतीश कुमार

रूस को अमरीका से प्राप्त होनेवाली सैनिक सहायता का विरोध करने के लिए सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० लाइनस पौलिंग के विचारों में प्रत्येक भारतीय को विशेष दिलचस्पी होना स्वाभाविक है। दूसरी बार नोबेल-पुरस्कार से सम्मानित होने-वाले इस महान वैज्ञानिक के इन विचारों की सही समझ और समालोचना आवश्यक है। उनके उल्लेखनीय शांति-प्रयत्नों के लिए जब उन्हें १९६२ का नोबेल विश्व-शांति पुरस्कार प्रदान किया गया, तो हमारी और अन्य अनेक भारत के नागरिकों ने उनका हार्दिक अभिनंदन किया था। जब इससे पहले संयुक्त राष्ट्रसंघ के मंच से नेह-रूजी ने आणविक शस्त्रों पर पावंदी लगाने के लिए दुनिया के बड़े देशों से अपील की, तो डा० पौलिंग ने तुरंत नेहरूजी की मांग का समर्थन किया।

वैज्ञानिक आकाश का यह चमकता हुआ सितारा जब शांति की पुकार के साथ अपना कंठ मिलाने के लिए सामने आया, तो दूसरे वैज्ञानिकों ने भी उसका साथ दिया और उसका दुनिया पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। परंतु फिर भी आणविक शस्त्रों के धमाकों पर पावंदी नहीं लगी। इसलिए एक दिन डा० पौलिंग ने अकेले ही वाशिंग्टन में 'व्हाइट हाउस' (राष्ट्रपति भवन) के सामने धरना दिया और अमरीकी राष्ट्र-पति से यह अपील की कि वे अणु-प्रयोगों द्वारा वातावरण को जहरीला न बनायें। उसके बाद डा० पौलिंग ने इस संबंध में विश्वमत खड़ा करने के लिए सारे संसार का दौरा किया और ११ हजार वैज्ञानिकों, साहित्यकारों तथा अन्य प्रमुख विचारवान व प्रतिष्ठित नागरिकों के हस्ताक्षरों सहित एटमी धमाकों के खिलाफ एक अपील जाहिर की। इन सारे प्रयत्नों ने अपनी जो खास भूमिका अदा की, उसी के परिणाम-स्वरूप १९६३ में मास्को में रूस, अमरीका तथा ब्रिटेन ने इन एटमी धमाकों को

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाप्त करने की संधि पर हस्ताक्षर किये।

जब मैं उनसे सानफ्रांसिस्को में मिला, तो मैंने यह सवाल खास तौर से उठाया कि आखिर वे भारत को दी जानेवाली अमरीकी सहायता का विरोध क्यों करते हैं? मैंने भारत की एतत्-संबंधी नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत स्वेच्छा से यह सैनिक तैयारी नहीं कर रहा है, बल्कि चीन-भारत संघर्ष के कारण एक विशेष परिस्थिति पैदा हुई है और इसलिए भारत के सामने यह विवशता है कि वह अपने मित्रों से सहायता लेकर सैनिक तैयारी रखे।

डा० पार्लिंग ने इस प्रश्न की गंभीरता को महसूस किया और बोले—"मैं भारत की वर्तमान परिस्थिति को समझता हूं और ऐसी संकट की घड़ियां ही हमारे लिए परीक्षा का अवसर होती हैं। पं० नेहरू ने शीत-युद्ध से निर्लिप्त रहने की विशेष नीति को अपनाकर इतिहास को एक नया मोड़ दिया है। पर यदि आपका देश भारी मात्रा में अमरीका से सैनिक सहायता प्राप्त करेगा, तो मुझे उसकी इस महान नीति पर आंच आने का खतरा दिखता है।" फिर वे अमरीका की विदेश-नीति की आलोचना करते हुए कहने लगे—"हमारे देश द्वारा दी गयी सहायता के पीछे प्रायः कुछ-न-कुछ स्वार्थ-बुद्धि ही रहती है और इस स्वार्थबुद्धि का दबाव कब किस तरह आपके देश पर डाला जायेगा, इस बात की अभी आप कल्पना भी नहीं कर सकेंगे। इसलिए मैंने भारत के प्रति बहुत प्रेम और पं० नेहरू के प्रति बड़ा आदर होते हुए भी इस सैनिक-सहायता का विरोध किया है।"

"लेकिन दूसरा उपाय ही क्या है?" मैंने पूछा।

"वैसे मेरे सामने यह स्पष्ट नहीं है कि भारत और चीन की सीमा का प्रश्न वेना द्वारा कैसे हल होगा? क्योंकि भारत और चीन, दोनों ही बहुत बड़े देश हैं। दोनों की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास आदि बहुत पुराने हैं। इन दोनों के बीच शीतयुद्ध का वातावरण बना, तो वह दोनों के ही हित में नहीं है। अगर ये दोनों देश सैनिक होड़ में पड़ेंगे, तो उसका भी कहीं अंत नहीं। इसलिए मुझे लगता है कि भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ से अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए कोई जरूरी कार्रवाई करने की मांग करे।" डा० पार्लिंग ने ज्यों ही अपनी बात पूरी की कि मेरे साथी प्रभाकर ने पूछा—"जब चीन संयुक्त राष्ट्रसंघ का सदस्य ही नहीं है, तो राष्ट्रसंघ इस परिस्थिति में क्या कर सकता है?"

डा० पार्लिंग ने उत्तर दिया—"मैं सदा से यह कहता रहा हूं कि चीन को राष्ट्रसंघ की सदस्यता प्राप्त होनी चाहिये। ६० करोड़ लोगों को अलग रखकर दुनिया के किसी भी सवाल का समुचित समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकता। परंतु अगर चीन संयुक्त राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं है, तो भी भारत की मांग पर संयुक्त राष्ट्रसंघ की तरफ से चीन की किसी भी बेजा कार्रवाई के खिलाफ कदम उठाया जा सकता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीका की सैनिक मदद सदोष होगी संयुक्त राष्ट्रसंघ का सैनिक संरक्षण होगा। संयुक्त राष्ट्रसंघ की मदद कारण भारत की शीतयुद्ध से दूर रहने की महत्वपूर्ण नीति है, उस पर ठेस पहुंचने कोई भय नहीं रहेगा।" एक अमरीकी रिक होते हुए भी डा० पालिंग ने बड़ी धानी व दृढ़ता के साथ इस विचार को ट किया।

डा० पालिंग की प्रयोगशाला प्रशांत सागर के तट पर लास एंजेल्स शहर के दीक पासादेना नाम की जगह में है और गशाला से मीलों दूर उनका घर है, वे वन्य-जीवन का-सा आनंद लेते हैं। के घर पर तो टेलिफोन तक नहीं है। लिए उनको विश्राम के समय में कोई नहीं पहुंचा पाता; परंतु हम उनसे सान फ्रांसिस्को शहर के आधुनिक- 'जेकटार' होटल में, जहां वे किसी सम्मे- में भाग लेने के लिए आये थे। ज्यों ही उनका दरवाजा खटखटाया कि वे से द्वार खोलते हुए बोले—"स्वागत है वान साथियो।"

उस वक्त वे जिस सम्मेलन में भाग आये थे, उसके लिए अपना भाषण लिख थे; पर हमारे लिए उन्होंने विशेष रूप थोड़ा समय निकाला था।

डा० पालिंग की तरह ही श्रीमती पालिंग आणविक शस्त्रों का विरोध करने के महिलाओं को संगठित करने में निरं- जुटी रहती हैं। जब हमने उनकी पत्नी के बारे में पूछा, तो वे बोले—"वह तो अभी हेग में है और 'नाटो' सैनिक संधि के सदस्य देशों को सम्मिलित रूप से अणुशस्त्रों द्वारा सज्जित करने की जो योजना चल रही है, उसके विरोध में महिलाओं की तरफ से प्रद- र्शन आयोजित कर रही है। 'नाटो' संधि के सदस्य-राष्ट्रों को साझे की संपत्ति के रूप में एटमी हथियार देने का अर्थ है, जर्मनी को एटमी हथियारों से लैस करना और यह कदम कभी भी एक अणु-युद्ध की बुनियाद बनेगा, ऐसा खतरा मुझे दिखता है। इस लिए इन भयंकर अणु-शस्त्रों के विस्तार को रोकना बहुत आवश्यक है।"

अमरीका के शांति-आंदोलन में डा० पालिंग का क्या स्थान है, यह निर्णय कर पाना बहुत ही कठिन है। मैंने अमरीका में करीब सवा छः महीने यात्रा की और सैकड़ों शांतिवादी कार्यकर्ताओं से भेंट की। मैंने पाया कि डा० पालिंग का व्यक्तित्व बहुत विवादास्पद है। यहां तक कि डा० पालिंग को नोबेल शांति-पुरस्कार का दिया जाना भी कुछ शांतिवादी नेताओं को नहीं भाया है। इसलिए हम यह जानना चाहते थे कि स्वयं डा० पालिंग अमरीका के शांति-आंदो- लन के बारे में क्या सोचते हैं। डा० पालिंग ने कहा—"अमरीका में भी, और बाहर के अन्य देशों में भी कुछ लोग ऐसी अपेक्षा करते हैं कि मैं इस देश के शांति-आंदोलन का प्रवक्ता बनूं और नेतृत्व करूं तथा इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय शांति-आंदोलन को जोड़ने- वाली कड़ी बनूं। परंतु मझे नहीं लगता कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये दोनों बातें संभव हैं। क्योंकि वर्तमान शांति-आंदोलन के अधिकांश लोग शांति की बात करते हैं; पर वर्तमान आर्थिक और राजनीतिक ढांचे को बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। और इसीलिए मेरी उनके साथ पटती नहीं है। जब तक हम एक समाजवादी ढंग की व्यवस्था नहीं खड़ी करेंगे, तब तक शांति का सपना चरितार्थ होनेवाला नहीं है। क्योंकि हथियारों का निर्माण जब तक कुछ लोगों के लिए मुनाफे का धंधा बना रहेगा, तब तक निःशस्त्रीकरण के मार्ग की बाधाएं दूर नहीं होंगी।"

"मैं कह रहा था, अणुशस्त्र-परीक्षण के प्रयोगों पर पाबंदी लग जाती, तो विकसित और अविकसित देशों के बीच में घातक खाई पैदा हो जाती।"
[विख्यात अमरीकी व्यंग्य चित्रकार हरब्लाक की तूलिका से।]

"बहुत से लोग आपके बारे में ऐसी शिकायत करते हैं कि आप अमरीकी अणु-शस्त्रों का जितना विरोध करते हैं, उतना सोवियत अणुशस्त्रों का विरोध नहीं करते। क्या यह शिकायत सही है?" हमारे इस प्रश्न का डा० पालिंग ने हंसते हुए उत्तर दिया—"अणु-शस्त्र चाहे रूस के हों या अमरीका के, वे समान रूप से घातक हैं। पर एक अमरीकी होने के नाते मेरा कर्तव्य अमरीकी नीतियों की समालोचना करने का ज्यादा होता है। परंतु मैं यह चाहता हूं कि सोवियत अणु-शस्त्र और अमरीकी अणुशस्त्र राष्ट्रसंघ के आंशिक स्वामित्व में रखे जायें। सोवियत अणुशस्त्रों के उपयोग का अधिकार संयुक्त राष्ट्रसंघ के महामंत्री व सोवियत प्रधान मंत्री का संयुक्त रूप से हो। इसी तरह अमरीकी राष्ट्रपति और संयुक्त राष्ट्रसंघ के महामंत्री को भी यह अधिकार संयुक्त रूप से सौंपा जाये। यह अंतरिम व्यवस्था तब तक चालू रहे, जब तक संसार के सभी देश निःशस्त्रीकरण की भूमिका स्वीकार न करें।"

"लेकिन निःशस्त्रीकरण की बातें तो बरसों से चल रही हैं। उनका नतीजा कुछ नहीं निकलता।" जब मैंने निराशा-भरे स्वर में ऐसा कहा, तो डा० पालिंग बोले—"निःशस्त्रीकरण का संबंध दूसरे के प्रति सद्भावना और विश्वास से है। यदि ऐसा वातावरण बना सकें कि हम दूसरों से अपने प्रति अच्छा बर्ताव चाहते हैं, न केवल वैसा ही, बल्कि उससे भी बेहतर बर्ताव हम दूसरों के प्रति करें, तभी मानवीय मूल्यों की बुनियाद पर निःशस्त्रीकरण का महल खड़ा हो सकता है। निराशा की जरूरत नहीं, शक्ति-भर काम करते जाना है।"

इस तरह हमारी बातें चलती रहीं और उनका प्रवाह अनेक राजनीतिक तथा सामाजिक प्रश्नों की तरफ गया और हम एक गहरी प्रेरणा लेकर वापस आये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

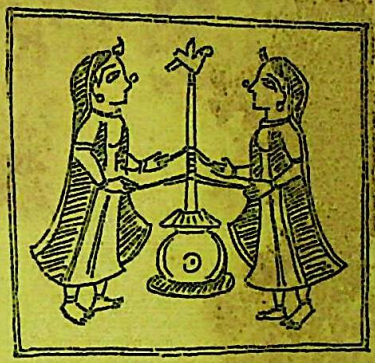

मेरी कल्पना का सुख

अपनी कल्पना के सुख में, अपने व्यक्तिगत आराम एवं अन्य विलासिता की वस्तुओं को सम्मिलित नहीं करता। मेरी कल्पना में हमेशा स्थितियां रहती हैं, वस्तुएं नहीं। मेरी मान्यता है कि जिस स्थिति में देश का अधिकांश सुखी जीवन व्यतीत करने लगेगा, उस स्थिति में मैं भी सुखचित नहीं रह जाऊंगा। मैं चाहता हूं कि मेरे सुख में किसी का रंच मात्र भी दुःख सम्मिलित न हो, और किसी के दुःख में मेरे सुख की कोई स्थिति वर्तमान न हो।

मेरे देश की जनता ऐसी भाषा बोले, जिसमें उत्साह हो, ऐसा व्यवहार करे, जिसमें कर्मठता एवं ईमानदारी हो। मैं जहां भी रहूं, वहां बौद्धिक विकास की संभावनाएं बनी रहें। कला के लिए उत्सर्ग, लोगों का सान्निध्य बना रहे। मेरे उद्देश्यपरक सृजन का क्रम कभी टूटने न पाये। महत्तर उद्देश्यों के लिए मेरा जीवन उस फूल की तरह झर जाये, जो जीवित अवस्था में सबके आनंद का स्रोत होता है, और मृत होने पर मिट्टी में रचपच उसे उर्वर बना देता है .....!

देश-भर में छोटे-छोटे परिवार, औसत सुख-भोग के साधनों से संपन्न हों; ताकि जो आदमी जहां भी हो, वहां से हर क्षण भागते रहने के लिए उतावला न बना रहे।

—कुमारिल पंत

०००

समस्याओं, उलझनों और कोलाहल से भरे शहरों से दूर, कहीं गांव के हरियाले आंगन में मेरा निवास होता। नदी का किनारा और प्राकृतिक सुषमा के बीच मेरी झोंपड़ी और निकट ही मेरे परिश्रम के फलीभूत कुछ खेत और बगीचे। मन की आकांक्षाओं को ग्रामीणों की सरलता और सादगी देकर भोलेपन का नैसर्गिक जीवन जीती और खेतों-खलिहानों में विचरती। रिक्त समय में उन्हीं ग्राम्य जीवन के मनोरम चित्र मेरी लेखनी से अंकित होते। काश! मेरी कल्पना का यह सुख मुझे मिल पाता ...!

—कुंतल गोयल

०००

वे दो आंखें, जो मुझसे बोलें, जिनसे मैं बोलूं, जो अपना हाथ मेरी ओर बढ़ायें—साथ निभाने के लिए, जो कदम मेरे साथ उठायें, कदम मिलाने के लिए। एक साथ एक-सी

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाज हो, एक साथ एक ही धड़कन हो, एक साथ एक-सा अनुभव हो। जो मेरे दिल की बात चुराकर कह दे, जिसके दिल की बात चुराकर मैं कह दूं। फिर भी वह मेरे दिल की सुने, मैं उसके दिल की सुनूं—व्यथा का उपचार कथा से हो; और इस पर भी मेरे दिल पर उसका कोई बोझ न हो और मेरा उसके दिल पर बोझ न हो। वह अपने लिए अपना काम करे, मेरे रास्ते का रोड़ा न बने, मैं अपने लिए अपना काम करूं और उसके रास्ते का रोड़ा न बनूं। इस तरह वे दो आंखें, ये दो आंखें युग-युग तक चलती चली जायें, देखती चली जायें एक दूसरे को—हमको, तुमको, उनको—सबको और अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी तरक्की का रोजनामचा लिखती चली जायें—किसी को कोई नुक्सान पहुंचाये बिना। और हम सब मिलकर फिर-फिर सोचें कि अब दुनिया सचमुच बदल रही है और अब हर बुराई पश्चात्ताप से अपना हाथ मल रही है। —रामावतारसिंह सिसौदिया

०००

मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति सात्विक तरीके से होती रहे, नित्य के शरीर-श्रम में व्यवधान न आने पाये। इसके अतिरिक्त मेरी कल्पना 'सर्वे भवंतु सुखिनः' जितनी व्यापक न भी हो, तो भी मैं जिन लोगों के संपर्क में आऊं और जो मेरे पड़ोसी हों, वे सब सुखी रहें। —कु० आशा जोशी

०००

आप यकीन कीजिये—मैं अपनी वर्तमान स्थिति से पूर्ण संतुष्ट हूं। मैंने जीवन में जो कुछ चाहा, मुझे आसानी से मिल गया। लेकिन मैं केवल निजी सुख में पूर्णता अनुभव नहीं करता। मैं चाहता हूं कि सब लोगों को सुख मिले। —विनोदकुमार गांधी

०००

हर व्यक्ति के सुख की कल्पना अलग-अलग होती है। किसी को भोग में सुख मिलता है, तो किसी को त्याग में। किंतु 'मन एव मनुष्याणां...' की तरह हमारा मन जिसे सुख मानता है, वही सच्चा सुख है। मैं भी इसी सुख की कल्पना करता हूं। —निरंजन भट्ट

०००

मैं शिक्षक हूं और उस दिन के सुख की आशा में हूं, जब शिक्षण-कार्य पुनः एक आदरणीय पेशा समझा जाने लगेगा एवं विद्यालयों में व्याप्त दलबंदी एवं अनुशासनहीनता दूर हो जायेगी। अपना एक छोटा, सादा-सा मकान होगा; सुखी-संपन्न पढ़ा-लिखा परिवार होगा; सादगी एवं ईमानदारीपूर्वक अधिक-से-अधिक विद्यादान कर सकूंगा। अगर विश्व को एक नया गांधी, मोती, जवाहर, तुलसी और कालिदास, जगदीश चंद्र रामन की भेंट दे सका, तो मेरी कल्पना का सुख सार्थक होगा। —उमेश चंद्र

०००

मेरे सुख की कल्पना एक ऐसे समाज की रचना है, जिसमें सुंदर और स्वस्थ नारी-पुरुष हों। मुस्कराहट जिनका अलंकार हो तथा संयम जिनकी शक्ति। दमित वासना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ों के कारण मनोवैज्ञानिक ग्रंथियां
ें कुंठित न बनायें। —साधना आनंद

०००

ी-कभी उदासी के क्षणों में बस एक ही
ल्पना मन में जगती है, वह है शांति-
ेहरू से बात करने की। यद्यपि अब
संभव नहीं है, फिर भी कल्पना के पंखों
सवार होकर उस सुख में डूब जाता
—जनार्दन

०००

ब तक मेरे मन में कभी भी किसी सुख
ल्पना नहीं आयी, यही मेरा सही सुख
वास्तव में जो वर्तमान काल के उपयोग
ुख मिलता है, कल्पना से नहीं। मैं एक-
ुखी हूं और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा
निभाने के बाद मुझे बड़ी मधुर नींद आती
कभी स्वप्न में भी मुझे सुख-दुःख के
विचार परेशान नहीं करते। मेरी मान्यता है
ईश्वर ने मुझे जिस परिस्थिति में रखा
उसी में जीवन जीना चाहिये। अतः
मैं कभी मृत्यु का विचार भी नहीं
रता। —हरिजीवन थानकी

०००

ेरे मन की तो एकमात्र कल्पना यही है
कि मैं गौरवमयी जननी बनूं। क्या स्वामी
विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ और महा-
कवि निराला जैसे पुत्र अब भारत में
फिर नहीं जनमेंगे? मुझे यदि इस जीवन
में जननी होने का सौभाग्य प्राप्त हो, तो मैं
ऐसा ही पुत्र चाहती हूं। —'क्षिति'

व्यक्ति के संघर्षमय जीवन में सहानुभूति और ईर्ष्या साथ-साथ चलते हैं। यदि कोई मुझसे व्यर्थ ही ईर्ष्या करे, तो इसमें मेरा क्या दोष? कम-से-कम मेरे पास तो इतना समय न हो कि मैं किसी से ईर्ष्या करूं। इसके विपरीत मैं अपने ईर्ष्यालु मित्रों का भी कोई उपकार कर सकूं—यही आकांक्षा है। —पुण्यमचंद 'मानव'

०००

यदि मेरा जीवन सदैव देश एवं समाज की सेवा में लीन रहते हुए अंत में भगवन्मुखी बन सका, तो वही मेरी सच्ची कल्पना का सुखी जीवन होगा। —श्रवणकुमार ढंढ

०००

मेरा यह देश ऐसा बन जाये, जिसमें न कोई गरीब हो, न कोई अमीर; न कोई शोषक हो, न कोई शोषित; न कोई चोर हो न कोई ठग; ऐसा हो मेरा देश, जहां शुचिता, समता और संपन्नता की त्रिपथगा सुरसरि प्रवाहित हो और तब मेरी लेखनी, सरस सुरीले गीत और हंसती हुई कहानियां लिखे—कुंठा-पीड़ा से रहित, बस यही है मेरी कल्पना का सुख। —मदनमोहन 'उपेंद्र'

०००

मैंने बचपन से ही एक कल्पना की थी कि मैं बड़ा होकर कोई ऐसा कार्य करूं, जिससे मुझे बड़े-बड़े शहर देखने को मिलें और साथ ही भिन्न-भिन्न लोगों से मेरी मुलाकात हो। अभी भी मैं यही चाहता हूं। —बृजलाल चौरसिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजाब इम्तियाज अली

जिंदगी की सुबह थी। कलियां अभी फूल न बनी थीं। खोश: (गेहूं या जौ की बाल) कच्चे थे। मैं एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठी रंगीन चोबी टुकड़ों से एक इमारत बनाने में तल्लीन थी। भावना मुझे एक ऐसी भव्य इमारत बनाने पर उकसा रही थी, जिसका मुकाबला संसार की उच्चतम इमारतों से किया जा सके। दिल में संकल्प था, दिमाग में उत्साह और आत्मा में उमंग। ये ही तीन चीजें तो हैं, जिनसे इमारतें बनती हैं। ईंट, पत्थर, गारे से नहीं। हां तो वह जिंदगी की सुबह थी।

मेरी इमारत कई बार पूर्णता को पहुंची और कई बार गिर पड़ी। जरा-सा धक्का, हवा का झोंका, पांव की ठोकर, बनी-बनायी इमारत को जमीन पर यों बिखेर देती, जैसे भूकंप से ध्वस्त नगर! किंतु मैं पहले से अधिक तल्लीनता, अधिक दृढ़ता और अधिक उत्साह के साथ फिर उसके निर्माण में लग जाती, क्योंकि वह जिंदगी की सुबह थी। कलियां अभी फूल न बनी थीं। खोश: अभी कच्चे थे।

सहसा मेरी नजर सौ साल के एक सफेद दाढ़ीवाले बुजुर्ग पर जा पड़ी, जो बुत की तरह चुपचाप खड़ा मेरी तल्लीनता को देख रहा और कुछ सोच रहा था।

"तुम कौन हो?" मैंने तनिक उद्विग्न होकर पूछा।

"दर्शक!" वह उदास स्वर में बोला- "क्या बना रही हो?"

मैं फिर अपने काम में लग गयी थी। उपेक्षा से बोली—"इमारत.....तुमने भी तो कभी बनायी थी?"

बूढ़े ने एक दीर्घ श्वास लिया- "मैंने? हां! बहुत से घरौंदे बना चुका हूं।"

"सिर्फ घरौंदे?" मैं हंस पड़ी।

बूढ़ा बोला—"नहीं, इमारतें भी बनायी हैं। किले भी खड़े किये हैं।"

यह सुनकर मैं उत्साह से उसकी ओर देखने लगी, पूछा —"फिर वे सब क्या हुए...?"

अभी मेरा वाक्य समाप्त न हुआ था कि सहसा हवा का एक तेज झोंका आया और मेरी बुलंद इमारत को ढहा गया। देखते-देखते सारी भव्य इमारत जमीन पर बिखर गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे प्रश्न का उत्तर दे रहा था—
की तेज हवा उड़ा ले गयी है—बिल-
ही तरह!" उसने ध्वस्त इमारत की
उंगली से संकेत किया।
पुनः जल्दी-जल्दी दोनों हाथों से इमा-
के मलबे को समेटते और पुनः उसे
ते हुए बोली—"वक्त की हवा तुम्हारी
त को उड़ा ले गयी, तो तुम उसे पुनः
नहीं बना लेते?"
ने मुझ पर एक भरपूर नजर डाली।
क्षितिज को देखते हुए बोला—"पुनः?
ब शाम तो होनेवाली है।"
शाम?" मैं इमारत बनाते-बनाते
आश्चर्य से उसकी ओर देखकर पूछने लगी—
"शाम?"

बूढ़ा बोला—"हां शाम, मेरा मतलब है मेरी सुबह की शाम। जब शाम होती है, तो सुबह के सारे दर्शन और सारे तर्क धरे रह जाते हैं। सिर्फ शाम का भयानक अंधेरा ही सामने होता है, तुम्हारा सूरज अभी डूबा नहीं; मगर—वह दूर देखो—" और उसने उंगली उठाकर आसमान के किनारे की ओर संकेत किया।

मैंने गौर से देखा, तो दूर क्षितिज में मुझे दो सूरज नजर आये—एक उभरता हुआ, दूसरा डूबता हुआ। —रूपांतर : सुरजीत

हल्का-भारी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र-संघ का वार्षिकोत्सव था। श्रीमती महादेवी वर्मा अध्यक्षता करने पधारी थीं। मैं एम० ए० (फाइनल) तथा एल० एल-बी० (फाइनल) का छात्र था। उस वर्ष भी मैंने 'हिन्दी कहानी प्रतियोगिता', 'हिन्दी निबंध-प्रतियोगिता', 'हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता' में प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किये। जिस सायंकाल छात्र-छात्राओं से खचाखच भरे शामियाने में, जब महादेवीजी पुरस्कार वितरित कर रही थीं, विश्वविद्यालय के अन्य अध्यापकों के साथ पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदी भी वहां पर उपस्थित थे। जब महादेवीजी के हाथों से पुस्तकों का एक बड़ा बंडल लेकर मैं मंच से नीचे उतरा और दूसरे पुरस्कार के लिए मेरा नाम पुनः पुकारा गया, तब दो हाथ का बंडल लिये-लिये ही मैं फिर मंच पर चला गया।

सहपाठियों ने जोर से तालियां बजायीं। मैं नीचे उतरा। फिर नाम पुकारा गया। इस बार तालियां खूब जोर से लगातार पीटी गयीं। मेरे हाथों में पुस्तकों के दो बड़े बंडल पहले से ही थे, तीसरा कैसे पकड़ता? तभी पूज्य द्विवेदीजी का गुरु गंभीर स्वर सुन पड़ा—"बोझ ज्यादा हो गया हो, तो इधर पकड़ा दो!"

उनके एक-एक शब्द से स्नेह टपक रहा था। अचानक मेरे मुंह से निकला—"नहीं गुरुजी, आपने ही तो शिक्षा दी है, हल्का होने से भारी रहना बेहतर है!"

बस फिर जो हंसी के फव्वारे छूटे, महादेवीजी भी अपने को रोक न सकीं। हमारे गुरुजी का तो कहना ही क्या! —रामप्रकाश कपूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये खाले-पीले जेनरेटर

फ्रैंक एडवर्ड्स

संसार में कुछ-एक ऐसे विचित्र व्यक्ति भी हुए हैं, जिन्हें जीते-जागते जेनरेटर कहा जाये, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी देह में विद्युत् का उत्पादन होता था और वह भी मामूली मात्रा में नहीं, काफी ऊंची मात्रा में।

यद्यपि ऐसे व्यक्ति बहुत नहीं, विरले ही हुए हैं; किंतु विज्ञान इनमें से किसी भी व्यक्ति की इस विचित्र क्षमता का कारण समझा नहीं सका। डाक्टरों के लिए यह 'रोग' बूते के बाहर था; अतः जब कभी उनके सामने कोई ऐसा मामला पेश हुआ, लाचार उन्होंने उसे दरकिनार किया। असहाय चिकित्सा-विज्ञान इस पर चुप्पी साधने के सिवा और कुछ कर भी तो नहीं सकता था।

कुछ उदाहरण लीजिये:

डा० ऐशक्राफ्ट ने जब यह बात सुनी कि एक नवयुवती ऐसी है, जिसे छूने पर बिजली का करारा झटका लगता है, तो उन्हें इस पर कतई विश्वास नहीं हुआ। निदान, वे इसका पता लगाने गये। उन्होंने लड़की को अपने हाथ से छुआ।

छूने के कुछ देर बाद जब उनकी आंखें खुलीं, तो उन्होंने देखा, उनके शुभचिंतक उन्हें घेरे हैं और उनकी खैरियत पूछ रहे हैं।

डाक्टर साहब आखिर वैज्ञानिक ठहरे! जब तक कारण समझ में न आ जाये, किसी चमत्कार पर विश्वास करने को तैयार नहीं होते थे। अतः वे एक बार और झटका खाने का खतरा मोल लेना चाहते थे। उनके एक-बार की खातिर जेनी मार्गन भी तैयार हो गयी। ऐशक्राफ्ट ने उसे फिर पहले की तरह छुआ और इस बार भी वही हुआ जो पहले हुआ था। डाक्टर साहब ने फिर वैसा ही झटका खाया; मगर इसका कारण फिर भी रहस्य ही बना रहा।

जेनी मार्गन सन १८६५ में मिसौरी के सिडैलिया के निकट रहनेवाली एक दुबली-पतली और डरपोक लड़की थी। शुरू में उसमें कोई खास बात नहीं थी; पर जब वह लगभग १४ वर्ष की हुई, तब न जाने किस अज्ञात कारण से उसमें अचानक यह शक्ति आ गयी और ऐसा लगने लगा, मानो वह बिजली की ताकतवर बैटरी हो। जिस किसी ने भी सुना, जेनी उसके लिए कौतूहल का केंद्र हो गयी।

जब वह पंप का हत्था पकड़ती, तो उसकी उंगलियों के अग्रभाग से विद्युत्स्फुलिंग छूटने लगते। बिजली की इन चिनगारियों का वेग इतना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता था कि स्वयं जेनी को इससे तक-
महसूस होती थी। यदि कोई दूसरा
उसके संपर्क में इस प्रकार आता कि
के शरीर की बिजली उसकी देह में
हित हो सके, तो वह जेनी की अपेक्षा
कष्ट अनुभव करता था।

कहने की जरूरत नहीं कि इससे जेनी के
की दोस्त बहुत कम रह गये। वह अपने
को अभिशप्त समझने लगी; क्योंकि
उससे दूर रहने लगे। यहां तक कि घर
बिल्ली, जो उसे बहुत प्यारी थी, अब
पास भी नहीं फटकती थी। जब उसे
के पास आने पर झटके लगने लगे, तो
भी इस मुसीबत से दूर रहने में ही
खैरियत समझी।

जेनी की यह विचित्र विद्युत्-शक्ति धीरे-
क्षीण होकर समाप्त हो गयी। जब वह
हुई, तो अपनी आकांक्षा के अनुकूल
सामान्य युवती बन गयी। अब असा-
का कोई चिह्न लेश-मात्र भी नहीं
उसमें।

चिकित्साशास्त्र और समाचारपत्रों के
में ऐसी ही एक और महिला का
मिलता है। इसका नाम था कैरो-
क्लेअर। यह अंतारियो के बोंडन
में रहती थी। बात सन १८७७ की
१७-वर्षीया क्लेअर खूब हट्टी-कट्टी
वजन में १३० पौंड थी। अचानक वह
बीमार हुई, उसकी भूख मारी गयी और
प्रतिदिन उसका शारीरिक ह्रास होने
लगा।

चिकित्सक हैरान। वे उसके शरीर में किसी चिंताजनक खराबी का पता नहीं लगा पा रहे थे; पर रोगिणी की काया लगातार छीजती जा रही थी। उसका वजन घटकर ९० पौंड से भी कम रह गया।

इसके बाद उसमें मानसिक परिवर्तन हुआ और यह परिवर्तन शारीरिक परिवर्तन से भी अधिक आश्चर्यजनक था। डाक्टरों ने इसे एक प्रकार का पागलपन या मूर्च्छा रोग करार दे दिया। इस अवस्था में उसका शरीर तना हुआ रहता, आंखें स्थिर और घूरती हुई रहतीं और वह ऐसे स्थानों और दृश्यों के बारे में बातें करती, जो उसने कभी नहीं देखे थे। जो लोग उसे जानते थे, उनके लिए उसकी बातें बिलकुल बेमतलब थीं। कारण, उन्हें पता था कि यह सीधी-सादी लड़की अपने नगर से बाहर कभी कहीं गयी ही नहीं थी।

डेढ़ वर्ष तक कैरोलिन की यही हालत रही। उसके बाद हालत सुधरी तो सही; पर एक नयी मुसीबत के रूप में। उसका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तो सामान्य रहने लगा; किंतु अब कोई उसे छू-भर लेता, तो उसे झटका लगता। यही नहीं कि उसकी देह से बिजली काफी ऊंचे वोल्टेज में प्रवाहित होती थी, यदि वह किसी ऐसी धातु की वस्तु को पकड़ती, जिस पर चुंबक का असर हुआ करता है, तो वह वस्तु उससे इस कदर चिपक जाती कि उसे वह खुद न छुड़ा पाती और उसे दूसरों की मदद से छुड़ाना पड़ता। जैसा कि जेनी मार्गन के मामले में हुआ

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था, कैरोलिन भी बड़ी हुई, तो उसकी भी विद्युत्-शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती हुई, अंततः सदा के लिए लुप्त हो गयी। चिकित्सकों ने उसके रोग का अध्ययन किया था और इस संबंध में उन्होंने अंतरियों मेडिकल एसोसिएशन को १८७९ के ग्रीष्मकाल में एक रिपोर्ट भी पेश की थी।

सन १८९० में मेरीलैंड कालेज आफ फार्मेसी नामक औषध-निर्माण के विद्यालय में एक जिंदा चमत्कार उपस्थित हुआ। यह व्यक्ति था १६-वर्षीय लुई हैंबर्गर और यह मनुष्य होते हुए चुंबक का काम देने की क्षमता रखता था। तुरंत ही औषध-विज्ञान के तमाम लोगों का ध्यान उसकी ओर गया। उन लोगों ने महसूस किया कि इस नवयुवक का अध्ययन करने के लिए उनकी अपेक्षा ऊंचे दर्जे के अनुभवी अन्वेषक चाहिये। एतदर्थ उन्होंने अनेक चिकित्सा और विद्युत्-विज्ञान के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया। उनकी रिपोर्ट से पता चलता है कि वे स्वयं चकित थे कि लुई हैंबर्गर लोहे या इस्पात की भारी वस्तुओं को अपनी उंगलियों के अग्रभाग से किसी शक्तिशाली चुंबक के समान क्योंकर लटका लेता था। आधी इंच व्यासवाली एक फुट लंबी धातु की छड़ भी उसकी उंगलियों के सिरों को छूकर उठ जाती थी और लटकी हुई झूलती रहती थी। एक बीकर में लोहे का चूरा भर दिया गया। लुई ने बीकर के कांच पर अपनी तीन उंगलियों के सिरे लगाये, तो उसके हाथ के साथ बीकर भी ऊपर उठने लगा। जब एक उंगली का सिरा बीकर से छुड़ाया गया, तो आवाज हुई 'खट', और यह आवाज इतने जोर की थी कि आराम से सुनी जा सके।

जिस विद्युत्-चमत्कार ने जेनी मार्गन, कैरोलिन क्लेअर और लुई हैंबर्गर को परेशान किया, कुछ वैसे ही चमत्कार ने फ्रैंक मैक-किस्टी पर मुसीबत ढायी। ये सज्जन १८८९ के आसपास मिसौरी के जापलिन नगर में रहते थे। बिजली का 'वरदान' इन्हें भी उसी हद तक हासिल था। अंतर यही था कि इसका साक्षात्कार उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार नहीं होता था। सुबह के समय वोल्टेज चरम सीमा पर रहता था और जैसे-जैसे दिन बीतता जाता, वह घटता जाता था। सर्दी के दिनों में तो मैक-किस्टी में विद्युत्-वेग इतना बढ़ जाता कि चलना-फिरना भी मुहाल हो जाता। उन्हें ऐसा लगता, मानो वे उस मक्खी की तरह हैं, जो गोंद-लगे कागज पर चलने की कोशिश में हाथ-पांव मार रही हो।

इनका भी अध्ययन किया गया और फिर इन्हें भुला दिया गया। कारण, इन सारे मामलों में विज्ञान को मर्ज के गवाह मरीज तो मिले; पर उसके मसीहा की तलाश वह आज तक नहीं कर सका।

पत्नी : यह पकवान मैंने पाक-विज्ञान की नयी पुस्तक में से निकाला था।
पति : बहुत अच्छा किया, यह उस पुस्तक में रहने का काबिल है भी नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी ऐसी समस्याएं संक्षेप में लिखकर सहर्ष भेज सकते हैं। —संपादक]

मंजिल तक कैसे पहुंचूं ?

"मैं अपने से बड़ा परेशान हूं। मन ऐसा थका-हारा-सा रहता है कि करवट लेने तक इच्छा नहीं होती। ३० साल की आयु है, पढ़ा-लिखा हूं; मगर किसी काम में मन नहीं लगा। यही डर लगा रहता है कि नुक्सान न हो जाये। मां-बाप ने शिक्षा में हजारों रुपये खर्च किये, ऊंची तालीम दी; मगर मुझसे पूरी पढ़ाई न हो सकी—अपने दर्जे में मैं पिछड़ गया। अच्छी नौकरी नहीं मिली, छोटी तनख्वाह का काम मिलता है; मगर मां-बाप नहीं चाहते कि मेरी पोजीशन पर बट्टा लगे। कुछ समझ नहीं आता क्या करूं? आप ही राय दीजिये, कोई रास्ता सुझाइये कि मैं भी औरों की तरह जिंदगी बिता सकूं—मेरा भी घर बसे। अभी तो किसी को साथी बनाने या मानने तक की इच्छा नहीं होती। किसी से बात करने का भी मन नहीं होता।

—रामनाथ गुप्त"

मैं आपसे पूरी हमदर्दी है। आपकी परेशानी को मैं खूब समझता हूं। इसमें आपका उतना दोष नहीं, जितना आपके मां-बाप का है। मुझे आपके घर-परिवार से परिचय नहीं; किंतु आपकी मनःस्थिति से मैं अनुमान लगा सकता हूं कि आपके माता-पिता ने आपके लालन-पालन में बड़ी भूलें की हैं। उन्हीं का परिणाम आपको भुगतना पड़ रहा है।

दोष आपके मां-बाप का भी नहीं है। शायद आप ऐसे माता-पिता की संतान हों, जिन्होंने बहुत वर्ष पूर्व परिवार-नियोजन पद्धति अपना ली थी। कोई आश्चर्य नहीं कि आप उनके इकलौते बेटे हों। उन्होंने आप पर अपने दिल का सारा प्यार उड़ेल दिया है। वह प्यार ही आपका दुश्मन बन गया।

यह ठीक है कि माता-पिता के प्यार-दुलार से ही बच्चा पलता है, दुनिया के कठिन रास्तों पर चलने का बल पाता है; मगर जब माता - पिता उसकी हर कठिनाई को खुद आसान बनाने का बीड़ा उठा लें और बड़ी उम्र तक उंगली पकड़कर चलाते रहें,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो बालक बड़ा होकर भी उनका सहारा ढूंढ़ता है। उसके दिल में अकेले चलने की हिम्मत पैदा नहीं होती। वह हर कदम पर डरता है—कोई जिम्मेदारी या जोखिम उठाने का साहस नहीं कर पाता।

आपकी परेशानी की वजह यह भी हो सकती है कि जब आप आठ-दस बरस के हो गये, तब भी आपके माता-पिता आपको अपने अड़ोस-पड़ोस के अपनी आयु के साथी बच्चों के साथ भी इस डर से खेलने न भेजते हों कि कहीं आप उनसे पिटकर न आ जायें। संभव है, स्कूल में भी आपके साथ कोई संरक्षक भेजा जाता हो।

मगर मां-बाप कब तक किसी बच्चे को बाहर जाने और जोखिम उठाने से रोक सकते हैं। आपको भी जवान होकर खुद कमाई करने बाहर जाना पड़ा, काम-धंधे की ठोकरें खानी पड़ीं। आप उसके लिए तैयार नहीं थे। रोजी कमाना आसान नहीं। ऊंच-नीच, भला-बुरा सब झेलना पड़ता है। आप वह झेल न सके। आपकी नजरों में सारी दुनिया के लोग बुरे हो गये। शायद आपका स्वप्न था कि वे सब मां-बाप की तरह आपको पालने में झुलायेंगे, आपकी मुश्किलें आसान बनायेंगे।

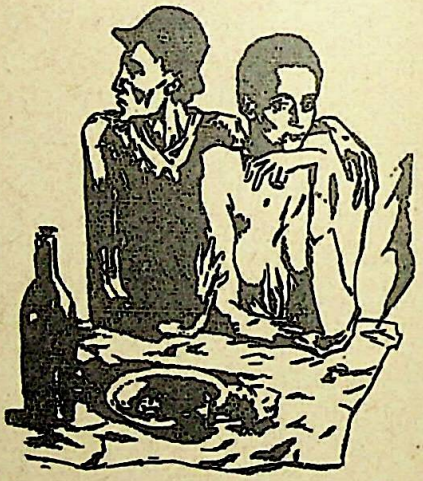

चिंता-मग्न

चित्रकार : पाब्लो पिकासो

यह स्वप्न टूटते ही आपका मन थक गया। यों भी बचपन में हम सब अनोखे सपने लिया करते हैं। उनमें वास्तविकता बहुत कम होती है। मां-बाप का कर्तव्य है कि वे उन सपनों को एक ही झटके में तोड़ तो न दें; मगर उनके वास्तविक रूप का परिचय अवश्य बच्चों को देते रहें। सपना पूरा न होने की संभावना व निराशाओं से बचने की तैयारी कराना भी मां-बाप का फर्ज है।

शायद आपका खयाल था कि ऊंची तालीम पाने पर ऊंची नौकरी भी जरूर मिल जाती है। मगर आप यह भूल गये कि ऊंची नौकरी केवल ऊंचे दर्जे में पास होने पर ही मिलती है और वह भी सबको नहीं मिलती। आपको यह नहीं सिखाया गया कि कम वेतन की नौकरी से शुरू करके भी आप ऊंचे पद पर जा सकते हैं। मां-बाप का फर्ज था कि आपको दुनिया की इन सब ठोकरों से मायूस न होकर हर काम का अनुभव पाने में खुशी लेने की तालीम देते, उसका पाठ पढ़ाते।

आपके पत्र से मालूम होता है कि आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में से हैं, जिनके माता-पिता अपनी
ज्ञान के लिए बच्चों की जिंदगी खराब
देते हैं। वे समझते हैं कि अगर उनका
छोटी नौकरी करेगा, तो समाज में
दर्जा घट जायेगा। सामाजिकता के
झूठे दंभ की रक्षा के लिए वे लड़के को
काम नहीं करने देते। वे भूल जाते हैं
कि वे भी शुरू में निचली सीढ़ी पर कदम
रखकर ही ऊंची मंजिल पर पहुंचे हैं। वे
यह भी भूल जाते हैं कि किसी भी काम का
वास्तविक अनुभव उससे संबंधित छोटे-
छोटे कामों को जाने बिना नहीं मिलता।

आपके पत्र से प्रतीत होता है कि आपका मन थक जरूर गया है; मगर अब भी आप अपने लिए रास्ता ढूंढ़कर आगे बढ़ना चाहते हैं, जिंदगी जीना चाहते हैं। इस इच्छा को और भी मजबूत बनाइये। यह दृढ़ इच्छा ही आपको आशा-भरे मन से आगे बढ़ने और जिंदगी की ऊंची मंजिल तक ले जाने में सहायक होगी।

पत्र में आपने लिखा है कि अब आपको अकेलापन ही भाता है—किसी को साथी बनाने या मानने तक की इच्छा नहीं होती। ऐसी इच्छा न होना स्वाभाविक नहीं है। यह केवल निराश मन के बाहरी संकेत हैं। किसी को साथी माने बिना आप एक कदम नहीं चल सकते, कोई भी काम पूरा नहीं कर सकते। इसलिए साथी तो आपको बनाने ही पड़ेंगे।

मगर 'साथी' का अर्थ 'सहारा' नहीं है, यह बात आप खूब अच्छी तरह जान लीजिये। बचपन में आपके मां-बाप आपके साथी भी थे, सहारा भी थे। मगर वह बात बचपन तक ही ठीक थी। अब आपको अपनी ही तालीम, ताकत और हिम्मत के सहारे अकेले नवीन यात्रा पूरी करनी होगी। और याद रखिये, अकेले का अर्थ यह नहीं है कि आप सामाजिक दायित्वों को पूरा किये बिना आगे बढ़ सकेंगे। आगे बढ़ने का अर्थ भी यह नहीं है कि आपके मन पर हर समय आगे बढ़ने का भूत सवार हो जाये। अपनी योग्यता देखते हुए ही अपना लक्ष्य निश्चित कीजिये। शिखर तक जाने के सपने न लीजिये। वही मनोरथ बनाइये, जो आसानी से पूरा हो सके। आज की मंजिल ऐसी बनाइये कि शाम ढले तक आप वहां पहुंच जायें। जिंदगी के हर पड़ाव को मंजिल मानिये और हर शाम वहां पहुंच कर खुश होइये और चैन की नींद लीजिये। रोज की यह खुशी आपको आखिरी मंजिल तक पहुंचने का बल देगी।

★

प्रशंसा और सफलता

प्रशंसा विद्वानों के लिए प्रेरणादायक है, जबकि मंद बुद्धिवालों के उद्देश्यों का अंत है। —कोल्टन

तुम्हें किसी उद्यम में सफलता प्राप्त हो या न हो; किंतु वह यश, जो उसके लिए तुम्हें प्राप्त होना चाहिये, भाग्य द्वारा रोका नहीं जा सकेगा। —मैसिंजर

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी चीन-यात्रा

जार्जेन विश

जब मेरा वायुयान गत मई माह की एक सुबह पेकिंग की धरती पर उतरा, तो सुनहरी धूप फैली थी और चीनी अधिकारियों का एक आठ सदस्यीय दल मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

उन अधिकारियों के स्वागत के साथ मेरी चीन की दूसरी यात्रा आरंभ हुई और ६ सप्ताह पश्चात् १५,००० मील का चक्कर काटने के बाद जब मैं वहां से विदा हो रहा था, तब तक उनका एक-न-एक दल मेरी राह में आंखें बिछाये खड़ा था। चीन की पहली यात्रा मैंने १९५८ में की थी। तब मैं चीन में कोई २० रोज रहा था।

तब और अब के चीन में मैंने जो प्रत्यक्ष अंतर पाया, वह यह था कि तब के चीनियों के बदन पर न ठीक वस्त्र थे, न ही उनके पेट भरे थे और न उनके खलिहान हरे-भरे थे; चीजें महंगी थीं। आज के चीन में मैंने उनके फटे-पुराने नीले कपड़ों के बदले साबुत, साफ और आकर्षक वस्त्र देखे, उनके पेट बिलकुल भरे न भी हों तो भी वे भूख से पीड़ित नहीं हैं, खेती ने बहुत तरक्की की है। (७० करोड़ की आबादीवाले चीन का मुख्य धंधा कृषि है।) एवं उद्योग तो आशा से अधिक पनपे हैं। चीजों के दामों में काफी गिरावट आयी है, जबकि मजदूरी वैसी ही है।

सर्वप्रथम मेरी मुलाकात चीन के उप-प्रधान व विदेश मंत्री मार्शल चेन यी से हुई। वे अधखुले वस्त्र में थे और उन्होंने मुझे भी अपना जैकेट उतारने को कहा। उन्होंने मुझे बताया कि उनका वेतन चीन के एक आम कार्यकर्ता जितना ही है और वे खुश हैं। मैंने उन्हें गौर से देखा, तो यह पाया कि वे पहले से कुछ मोटे जरूर हो गये हैं। मैंने उनसे पूछा—"यहां पर मैं किन-किन चीजों की तस्वीरें ले सकता हूं? कहीं निषेधाज्ञा भी है?" उत्तर मिला—"आप अपनी इच्छानुसार हर जगह तस्वीर ले सकते हैं।"

यमन के राष्ट्रपति मार्शल अब्दुल-अलसलाल दोपहर में वहां पधार रहे थे। मैंने सुना था कि कोई ढाई लाख लोग नृत्य, झंडे और बैंड-बाजे के साथ उनका हवाई अड्डे पर स्वागत करेंगे। मैंने इस अवसर पर चित्र लेने की इच्छा अपनी दुभाषिया सु यू पर प्रकट की, जो थी तो २६ वर्ष की, पर लगती थी १८ की। वह हमेशा ब्लाउज और भूरे रंग की पैंट पहनती थी, जो साम्यवादियों की पोशाक का प्रतीक मालूम पड़ती थी। परंतु उसने मेरी उम्मीद पर पानी फेर दिया। फिर मैंने कई अधिकारियों से बातें की; परंतु उप-प्रधान मंत्री की उस आज्ञा का कोई फल नहीं हुआ। मैं लेखक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection: Digitized by eGangotri

...अतः मुझे अनुमति नहीं थी, पत्रकारों ...थी। फिर भी मैंने अपना प्रयास जारी ...और अंत में आज्ञा मिलते ही मैं सु यु ...टैक्सी में रवाना हो गया।

...यों मोटर-गाड़ियों का जुलूस पीकिंग ...पहुंचा हुआ, तो कोई ३ लाख व्यक्ति ...खड़े स्वागतार्थ खड़े थे। हर जगह झंडे ...रहे थे और स्थान-स्थान पर देशी ...खेल-तमाशे दिखाये जा रहे थे। ...कि यह ७०० वर्ष पुराना शहर, ...पहले मंचु खानदान की राजधानी ...बदल गया है। इसकी आबादी ...में बढ़कर ४० लाख हो गयी है। ...अवधि में सरकार ने सड़कों के किनारे- ...१० लाख पेड़ लगाये हैं, जिससे ...की सूरत ही बदल गयी है। 'स्वर्ग- ...का द्वार' तीननमेन स्क्वायर अब २७ ...के बदले १०० एकड़ में फैला है, ...पार्टी के नेता जब कोई सभा बुलायें, ...२० लाख लोग बैठ सकें।

...मुझे एक से दूसरे और दूसरे से ...कारखाने में ले जाया गया। जब मैं ...मिल नं० ३ में गया, तो हरी चाय और ...से मेरा स्वागत हुआ एवं मुझे बताया ...कि इस मिल में ५,५०० व्यक्ति काम ...हैं और उनकी औसत उम्र २६ वर्ष ...उनकी १९,००० कताई इकाइयां और ...०० करघे, सबके सब चीन के ही बने ...हैं। उनसे रोजाना १,२३,००० पौंड ...उत्पादन होता है। कारखाने के अंदर ...पर सभी कर्मचारियों ने तालियां ...बजायीं, जो कि उनकी रीति है। मुझे बताया गया कि वह हाल शीत-ताप नियंत्रित है और अभी वसंत के मौसम के अनुसार ताप नियंत्रित है, जबकि हवा में रुई के रेशे तैर रहे थे।

एक अधिकारी ने मुझे बताया कि मिल के ६५ प्रतिशत कामगार तो महिलाएं हैं। प्रसव के वक्त कर्मी-मां को ५६ दिन की छुट्टी और प्रथम दो बच्चों तक चार युआन अर्थात् करीब आठ रुपये बधाई स्वरूप नकद दिये जाते हैं। अगर पति-पत्नी दोनों ही मिल में काम करते हों, तो काम के वक्त बच्चे की देख-भाल की जिम्मेदारी मिल की है और मां को दिन में दो बार बच्चे को दूध पिलाने की छुट्टी दी जाती है।

मशीन की धड़धड़ाहट के बीच ही एक व्यक्ति से जब मैंने पूछा कि उसकी आय क्या है, तो उत्तर मिला—"मेरे परिवार में १४ सदस्य हैं। पांच कारखाने में काम करते हैं और हम कुल ३६६ युवान अर्थात करीब ७०० रुपये महीना पाते हैं। हमारे पास एक चार

चीनी नाविक बाजे के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमरे का सजा-सजाया फ्लैट है, जिसके लिए करीब ३० रुपया महीना देना पड़ता है। भोजन में ३३२ रुपये, कपड़े में १०२ रुपये और अन्य खर्च में १८८ रुपये बैठते हैं। ८० रुपये सिनेमा-थियेटर आदि में खर्च हो जाते हैं।"

यह आमदनी बहुत थोड़ी लग सकती है; पर उन्हें कोई कर नहीं देना पड़ता। दवा-इयां उन्हें मुफ्त मिलती हैं। जूते, कपड़े आदि भी बहुत सस्ते हैं, जैसे जूते की कीमत आठ रुपये होती है, एक सुंदर वस्त्र १० रुपये में मिल जाता है। सब्जी और मछली तो बहुत ही सस्ती है। शराब विलासिता की वस्तु मानी जाती है, फिर भी सस्ती है।

इस दौरे में मैंने वे प्रासाद भी देखे, जो कभी पुराने चीनी सम्राटों के वैभव प्रदर्शित करते थे और आज मामूली प्रवेश-शुल्क पर आम जनता उनका आनंद उठा सकती है। साम्यवादी सरकार ने कुछ प्रासादों को अजायबघर भी बना दिया है।

यद्यपि पीकिंग में कपड़े पर राशन है—प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष ५ गज कपड़ा—फिर भी उन दूकानों में ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है। जब मैं पहली बार चीन आया था, तो औरतें पाजामा और कुर्त्ता पहना करती थीं; परंतु अब स्कर्ट भी पहना करती हैं। बड़ी-बूढ़ी महिलाओं को मैंने सौंदर्य-प्रसाधन किये नहीं पाया; परंतु छः-सात साल की लड़कियों के चेहरे रूज और लिपस्टिक से रंगे जरूर नजर आये। वहां के युवक-युवती आम रास्ते पर एक दूसरे का चुंबन ले प्रेम-प्रदर्शन नहीं करते; हां वे बगीचों, पार्कों आदि में घूमते अथवा बैठे देखे गये; परंतु बिलकुल सटकर नहीं, थोड़ा हटकर।

पीकिंग की सड़कों के दोनों ओर हरे-भरे वृक्ष लगे हैं। बहुत-सी सड़कें भी काफी सुधार दी गयी हैं; परंतु क्रांति के पूर्व का पीकिंग भी कहीं-कहीं नजर आ ही जाता है—जो कि एक जमाने से चीन का प्रमुख राजनीतिक केंद्र रहा है। इस पीकिंग की सड़कों पर चीन में ही बनी १४०० बिजली से चलनेवाली बसें चलती हैं और किराये भी बहुत कम हैं। गाड़ियां अथवा टैक्सी बहुत कम दिखाई दीं और वे सब भी सरकारी ही लगती थीं। टैक्सियों की संख्या पहले से चौगुनी है; पर वे लोगों की आय के बाहर हैं। उसके बदले लोग साइकिल-रिक्शे की तरह चलनेवाली तीन पहियेवाली फेरी-गाड़ी पर सफर कर लेते हैं।

एक दिन स्वागत-दल के एक सदस्य ने मुझसे पूछा—"जेल जाना पसंद करेंगे आप?" क्षण-भर तो मैं अवाक् खड़ा रहा; परंतु तुरंत ही समझ गया कि वह निमंत्रण है, धमकी नहीं। कारागार भी कारखाने की तरह ही लगता है। उसमें १८०० बंदी हैं, जिनमें १०० महिलाएं हैं। महिलाओं की कम संख्या देखकर मैंने पूछा—"क्या यहां की महिलाओं में अपराध-वृत्ति कम है?" परंतु बात वैसी नहीं है। पुरुषों को अवसर अधिक मिलते हैं। चालीस प्रतिशत बंदी तो सरकार-विरोधी अथवा गैर-साम्यवादी हैं। बाकी साधारण अपराधी हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेल की वार्डन ने मुझे बताया—"इन कैदियों को अच्छा आदमी बनाने के लिए हमारा कार्यक्रम तीन भागों में बंटा है। पहले उन्हें यह बताया जाता है कि ये खराब पूंजीवाद के परिणाम हैं और उन्हें समाजवादी आदर्श सिखाये जाते हैं। फिर राजनीतिक सीख दी जाती है, जिससे वे पूंजीवाद के नाश और समाजवाद की सफलता में विश्वास करने लगते हैं। और अंत: वे श्रम की महत्ता समझते हैं। बंदियों के परिवार को आर्थिक सहायता दी जाती है। अगर वे अपना व्यवहार अच्छा रखते हैं तो उनके परिवार के सदस्य माह में एक बार उनसे मिल भी सकते हैं।"

जेल में पहरेदार भी बहुत कम नजर आते हैं, क्योंकि वार्डन के शब्दों में—"बंदी जानते हैं कि यहां जो कुछ किया जा रहा है उनके भले के लिए है और भागने में किसी भलाई नहीं है।" वहां कुल दो ही पहरेदार थे और वे भी जेल के मुख्य द्वार पर। परंतु जेल के चारों ओर विद्युतीय घेरा लगाया गया था।

जेल के कारखाने में मैंने यह पाया कि कैदियों ने परिश्रम-प्रेम तो नहीं सीखा है; पर काम करना जरूर सीख लिया है। चीन में जितने मोजे बिकते हैं, उनका ९० प्रतिशत वे बंदी ही बनाते हैं। आठ घंटे की मजदूरी उन्हें प्रति माह करीब चार से दस युआन दी जाती है।

वार्डन ने मुझे यह भी बताया कि ४०० कैदियों ने अपना समय पूरा कर लिया है, फिर भी वे यहां से जाना नहीं चाहते, उन्हें यह जगह बहुत पसंद आ गयी है।

विज्ञान के क्षेत्र में चीन की प्रगति बड़े-बड़े कारखानों और मिलों के दर्शन से ही झलक उठती है; परंतु विज्ञान के एक विभाग चिकित्साशास्त्र में तो उसका प्रयोग आश्चर्य-जनक है। कुछ समय पूर्व वहां के एक डाक्टर ने एक मिल मजदूर के कटे हुए हाथ को यों जोड़ दिया, जैसे कोई दुर्घटना ही नहीं हुई हो। इस दिशा में वे और प्रयोग कर रहे हैं और कई मामलों में उन्होंने सफलता प्राप्त की है। अगर उनका प्रयोग पूर्ण सफल रहा, तो कल मिलों में काम करने-वालों के अपंग होने का खतरा ही जाता रहेगा।

और फिर हम कला की दुनिया देखने थियेटर की ओर बढ़े। पीकिंग ओपेरा स्कूल में देश के चुने हुए युवक व युवतियां दाखिल होते हैं और सरकस से लेकर नाच तक की शिक्षा लेने में वर्षों — किसी-किसी मामले में तो नौ वर्षों तक समय बिताते हैं। पहले नाटकों में युवक ही महिलाओं की भी भूमिकाएं निभा लेते थे; परंतु अब लड़-कियां आगे आ रही हैं। सम्राट हसुआन त्सुंग के संरक्षण में १२५० वर्ष पूर्व आरंभ हुए इस ओपेरा में कभी-कभी साढ़े सात घंटे का मनोरंजन कार्यक्रम पेश किया जाता है। पहले की प्रेम-कहानियां अब धीरे-धीरे प्रचार-कहानियों में बदलती जा रही हैं। शंघाई के एक नये थियेटर में तो ३,००० कलाकार १२,००० दर्शकों का मनोरंजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं, जिसके नायक-नायिकाएं हैं किसान, कामगार और सैनिक।

चीनी लोगों को कभी मिठाई बहुत पसंद थी और अब उसी के प्रतीकस्वरूप हर पकवान के ऊपर लाल शक्कर का एक ढेला रख दिया जाता है। मुझे लगभग छः महीने पहले बने अंडे के अचार भी खाने के लिए दिये गये, जिनका पीला हिस्सा काला और सफेद हिस्सा हरा हो चुका था। लेकिन वे थे बड़े स्वादिष्ट। खट्टे-मीठे पतंगे, फली, मछलियां आदि खाने के बाद अंत में सूप (किसी सब्जी का रस) पीने के लिए दिया गया। चावल की शराब और बीयर भी। परंतु सभी चीनी यह भोजन नहीं पाते। हां, वे भूखों भी नहीं मरते, और न उनके बदन पर चर्बी बढ़ती है। चावल, वनस्पति तेल और जलावन का राशन है। महीने में डेढ़ पौंड से अधिक किसी को मांस नहीं मिलता। परंतु राशन की मात्रा हर क्षेत्र और मौसम के अनुसार भिन्न रहती है। वे तरबूज के बड़े प्रेमी हैं, जिसे वहां तुंग कुआ कहते हैं। तरबूज का रस तरबूज के आधे हिस्से को खोखला बनाकर उसी में पिलाते हैं।

पीकिंग से मैं ५०० मील दूर शेन्यांग गया, जिसे पहले मुकदेन कहते थे और जो मंचूरिया में है। रूस की तरह चीन की रेलगाड़ियों में भी दो प्रकार के डिब्बे रहते हैं- नर्म गद्देवाले और सख्त तख्तीवाले। प्रत्येक हरे रंग के डिब्बे में एक युवती मुसाफिरों को समय-समय पर चाय पिलाया करती है। हर स्टेशन पर लड़कियों का झुंड डिब्बे को साफ कर जाता है। फिर कुछ लोग प्लैटफार्म पर सर्कस करना शुरू कर देते हैं – ताकि सेहत बने।

पीकिंग ओपेरा की नर्तकी

चीनी साम्यवादी दल के अध्यक्ष माओ त्से-तुंग ने 'शरीर निर्माण' को अच्छा बताया है, अतः हर जगह लोग कसरत करते नजर आते हैं। शंघाई में मैंने सुबह-सुबह सैकड़ों व्यक्तियों को खुले में कसरत करते देखा है। तलवारबाज एवं सर्कसबाज बच्चों को चीन की ये प्राचीन कलाएं मुफ्त सिखाते हैं।

फिर जहां-कहीं मैं गया, यही देखा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक ही बात दोहराते हैं जैसे कि तोते
ई बात दोहराते रहते हैं। चीन में सब
त्पादन होता है; पर उसकी मात्रा
नहीं बता सकता।
मुझे किसानों की झोंपड़ी में भी जाने का
ा मिला; पर मुझे ऐसा लगा कि सभी
बनायी गयी हैं, प्राकृतिक नहीं। आदर-
ार में कमी नहीं; पर हर जगह एक-
ही बात है।
ौकिंग से २६५ मील दूर तातुंग में तो
देखने के लिए इतनी भीड़ लग गयी कि
ई चित्र ही नहीं ले सका। वहां से पहले
ी गैर-साम्यवादी नहीं गुजरा था।
ड़ीवाला पश्चिमी अजनबी उनके लिए
ा तमाशा बन गया।
हां से मैं सियान पहुंचा और फिर मोटर
लान की ओर बढ़ा। रास्ते में मैंने कई
न दृश्यों के चित्र लेने चाहे; परंतु मेरे
सफर करनेवाले स्वागतकर्त्ताओं ने
-एक बहाना बनाकर एक भी तस्वीर
लेने दी। एक बार उन्हें धोखा देकर
छ चित्र लेने में सफल हो गया।
क बार कुछ लोगों को दौड़ते देख मेरे
ंह निकल गया—"वे कुत्तों की तरह
रहे हैं।" 'कुत्तों' शब्द पर उन्होंने जो
नि उठायी, उसे मैं भूल नहीं सकता।
लोगों को भला कुत्ता क्यों कहा जा
ा है? इस तरह का प्रयोग पूंजीवादी
ा जो ठहरा! काफी स्पष्टीकरण देने
बाद मेरी जान छूटी।
ीन के बाहर जानेवाले हमारे प्रत्येक
ित्र को 'सेंसर' किया जाता रहा। अतः एक
में मैंने लिखा था—"ये लोग मुझे किसी लेखक
से तो मिलाते ही नहीं।" नतीजा यह निकला
कि उसके बाद मैं जहां-जहां गया, मेरा
स्वागत लेखकों ने ही किया।

शंघाई में मैं एक चीनी पूंजीपति से भी
मिला। नाम था लिये न्यैंग। वह पहला
चीनी था, जिसे मैंने नेकटाई पहने देखा।
उसका घर भी काफी बड़ा था। परंतु वह
पहली मंजिल पर अपनी पत्नी के साथ रहता
और नीचे के कमरों को किराये पर दे रखा
था। मैंने उससे पूछा—"आप अपने को पूंजी-
पति समझते हैं?"

"जी हां। मेरे पिता कई कारखानों और
एक बैंक के स्वामी थे। वे मेरे लिए एक
बहुत बड़ा दियासलाई का कारखाना छोड़
गये हैं।"

"एक साम्यवादी देश में आप पूंजीवादी
कारखाना कैसे चला सकते हैं?"

"स्वतंत्रता के पूर्व मैं इसे पूंजीवादी ढंग से
चलाता था। अब मैं यह महसूस कर रहा
हूं कि मैं कितना खराब था। तब मैं प्रति-
योगिता में दूसरे को असफल करके बड़ा
खुश होता था। मैं दूसरों के कारखाने बंद
हो जाने से उनमें बेकार होनेवाले काम-
गारों के विषय में सोचता ही नहीं था।"

"अब आप इसे कैसे चलाते हैं?"

"अब इसका संचालन एक समिति करती
है, जिसका मैं एक सदस्य हूं। सरकार मुझे
अपनी पूंजी पर सालाना ५ प्रतिशत लाभांश
देती है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बैंक में कितना ब्याज मिलता है ?"

"साढ़े पांच प्रतिशत ।"

"फिर आप अपने पैसे बैंक में क्यों नहीं रखते ?"

"पैसे कारखाने में लगे हुए हैं, नकद नहीं हैं ।"

"लाभ हो या नुकसान, ५ प्रतिशत मिलता ही है ?"

"सरकार ने ५ प्रतिशत की गारंटी दे रखी है । आजादी के पूर्व कभी-कभी ८-९ प्रतिशत भी मिल जाता था; पर कभी-कभी २ प्रतिशत ही मिलता था ।"

और शंघाई में उनके जैसे कई पूंजीपति हैं । पर नाम सबका वही है ।

शंघाई के कैथलिक धर्म माननेवाले रोम की सत्ता नहीं मानते । उनका अपना धर्म है .....राजनीति से प्रेरित ! मैंने समझा था यहां बूढ़े और बेवकूफ लोग ही गिरजाघर में जाते होंगे, अतः उनकी संख्या अधिक नहीं होगी । परंतु वहां कोई ७५ व्यक्ति दिखाई दिये और सब बूढ़े भी नहीं थे । दीवार पर माओ त्से-तुंग की बड़ी तस्वीर लगी थी और एक छोटी-सी तस्वीर 'होली वर्जिन' की थी ।

हेगचाऊ नगर मंदिरों, प्रासादों और सुंदर बागों से भरपूर है । यहां प्रतिष्ठित साम्यवादियों को आराम करने के लिए भेजा जाता है । भ्रमणार्थियों के लिए इस नगर का विशेष आकर्षण है ।

चीन में १६० से भी अधिक किस्म के बांस पैदा होते हैं । चीनियों के जन-जीवन में उनका बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है । वे उसका भिन्न-भिन्न उपयोग करते हैं । सुई तांग में हमने रेशम का कारखाना देखा । रेशमी वस्त्र और कागज उत्पादन में भी चीन अपना स्थान रखता है । वहां से हम कैंटन वापस आये । अंत में स्थानीय सांस्कृतिक समिति से विदा लेकर, मैं पूर्व और पश्चिम में अधिकाधिक आपसी समझ-बूझ की प्रार्थना करता हुआ, चीन से विदा हुआ ।

मौत से पहले

एक व्यक्ति ने एक छः साल की बच्ची को कत्ल कर दिया । उसे फांसी की सजा सुना दी गयी । एक दिन उसकी पत्नी और बच्ची जेल में मुलाकात के लिए आयीं । पति-पत्नी में बातचीत होती रही और बच्ची एक कोने में गुमसुम बैठी रही ।

जब मुलाकात खत्म होने का वक्त आया, तो उस व्यक्ति ने सींकचों में से हाथ निकाल कर बच्ची को पुकारा – "आ मुन्नी, प्यार ले ले ।"

और मुन्नी सहमकर एक तरफ हो गयी ।

"आ जा बेटी, अब तेरे बाप के पास रखा ही क्या है प्यार के सिवा ।"

मुन्नी ने धीरे से कहा– "ना बापू, मैं प्यार नहीं लेती । सुना है, तुमने इन हाथों से मेरे जितनी एक बच्ची का गला घोंट दिया था ।"

और सींकचों से बाहर निकला हुआ हाथ सहसा कांपने लगा । –मुगनी अब्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी चिकित्सा आप न कीजिये

अरुण प्रकाश

सांस उखड़ना केवल दमे से ही नहीं होता, दिल की बीमारी में भी कई बार ऐसा श्वासावरोध हो जाता है। योगेंद्रजी को यही रोग था। डाक्टर ने उन्हें एक डाइयूरेटिक (मूत्रल) सेवन करने को कहा। इससे उनकी सांस ठीक चलने लगी। .....कुछ दिनों बाद उनकी पत्नी को भी गहरी सांस लेने में रुकावट महसूस होने लगी। रोग के सभी लक्षण बिलकुल वही थे, जो कुछ मास पूर्व उन पर प्रकट हुए थे।

पत्नी को याद आया, योगेंद्रजी जब इसी कष्ट से पीड़ित थे, तो उन्होंने डाइयूरेटिक दवा ली थी। श्रीमतीजी ने भी उसी औषध का सेवन शुरू कर दिया। लेकिन उस दवा ने श्रीमतीजी का कष्ट दूर करने में कोई सहायता नहीं की। सांस लेने में उन्हें जो रुकावट प्रतीत होती थी, वह बनी रही। प्रकृति से वे जरा जिद्दी थीं—इसलिए दवा लेना उन्होंने बंद नहीं किया। नियम से रोज औषध-सेवन करती रहीं।

कुछ दिन बाद उन्हें शरीर की मांसपेशियों में अजीब शिथिलता अनुभव होने लगी। हाथ-पैर भारी लगने लगे। हिलने-डुलने में भी कष्ट होने लगा। और आखिर एक दिन उनके बायें हाथ ने जवाब दे दिया। चाहते हुए भी वे उसे ऊपर न उठा सकीं। उसकी हरकत बिलकुल बंद हो गयी थी।

डाक्टर ने परीक्षा की, तो मालूम हुआ कि योगेंद्रजी की पत्नी को वातस्फीति (एंफाइसेमा) का रोग है। फेफड़ों की यह बीमारी आजकल बहुत फैल रही है। मामूली तौर पर फैलते हुए भी इसका नतीजा बहुत मामूली नहीं होता। इस बीमारी में यदि किसी मूत्रवर्धक औषध का अनाप-शनाप सेवन किया जाये, तो कई तरह के रोग हो सकते हैं; अर्धांग भी उनमें से एक है। योगेंद्रजी की पत्नी इसी की शिकार बनी थीं।

आजकल पेटेंट दवाइयों के स्वयं सेवन का रिवाज बहुत बढ़ गया है। हमारे देश में जब से दवाइयां बनाने के कारखानों की बाढ़ आयी है, दवाइयां सुलभ हो गयी हैं। रोग के लक्षण प्रकट होते ही रोगी किसी मित्र द्वारा परीक्षित दवाई का सेवन शुरू कर देता है। हम प्रति वर्ष करोड़ों रुपयों की पेटेंट दवाइयां बनाते हैं और इनमें से अधिकांश ऐसी हैं, जो डाक्टर के नुस्खे के बिना भी खरीदी जा सकती हैं।

स्वयं चिकित्सक बनना कई दृष्टियों से और भी खतरनाक है। प्रायः हम लोग यह समझते हैं कि जिस औषध की अल्प मात्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सेवन से अल्प लाभ हुआ है, अधिक मात्रा में उसका सेवन करने से अधिक लाभ होगा। इसलिए हम औषध के परिणाम की धैर्य से प्रतीक्षा किये बिना मात्रा बढ़ा देते हैं। बाजार में हर किस्म का दर्द दूर करने की दवाइयां मिलती हैं। पांच मिनिट में एक गोली से दर्द दूर न हुआ, तो दूसरी-तीसरी लेने को हम अधीर हो जाते हैं। ये गोलियां या टिकियां प्रायः फेनासिटिन, कैफीन और एसिटिलसैलिसाइक्लिक एसिड का मिश्रण होती है। साधारणतया डाक्टर प्रतिदिन ६ गोलियां, १० दिन तक सेवन करने को कहते हैं। लेकिन यदि स्वयं चिकित्सक व्यक्ति रोज १५ से २० तक गोलियां खाने लगे और काफी दिनों तक खाता ही जाये, तो उसे निश्चित ही गुर्दे की कोई भयंकर बीमारी हो जायेगी।

औषध की मात्रा का फैसला डाक्टरों द्वारा रोगी की आयु, प्रकृति, वजन आदि देखकर किया जाता है। यह काम विशेषज्ञ चिकित्सक ही कर सकते हैं।

माता-पिता बच्चों को जन्म देते हैं; मगर बच्चों के माता-पिता होने मात्र से उन्हें उनका चिकित्सक बन जाने का अधिकार नहीं मिल जाता। किंतु प्रायः सभी मां-बाप अपने बच्चों को नोज ड्राप, तरह-तरह के टानिक, विटामिन की गोलियां, विरेचक आदि देते हुए विशेषज्ञ बन जाते हैं। उन्हें डाक्टरी सलाह लेने की जरूरत महसूस नहीं होती।

मगर उन्हें यह स्मरण रखना चाहिये नोज ड्राप के कुछ कण फेफड़ों तक भी पहुंचते हैं। नाक के मार्ग से गया हुआ जहर फेंफड़ों तक पहुंचकर भयंकर रोग पैदा कर सकता है, अथवा श्लेष्मा झिल्ली को नुक्सान पहुंचा सकता है। विरेचक दवाइयों का अत्यधिक प्रयोग उदराशय में पोटैशियम तत्वों की न्यूनता, पेशीय अर्धांग, और धमनियों की क्षीणता जैसी खतरनाक बीमारियों का कारण बन सकता है।

अभी हाल की मेडिकल रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि अपनी दवाई आप ही करने का आग्रह रखने से ही बहुत-से मरीजों की आंखों का प्रकाश जाता रहा, बहरे हो गये और कितने ही प्राणों से हाथ धो बैठे। कुछ को अल्सर हुआ, कुछ मस्तिष्क और जिगर के रोगों से भी पीड़ित हुए। ऐसे स्वयं चिकित्सक शामकों और नींद की दवाओं का बहुत प्रयोग करते हैं।

शामक दवाइयों का सबसे बुरा परिणाम यह होता है कि रोगी का मन अपने रोग को स्वीकार नहीं करता। ऐसे रोगी के आमाशय में अपचन से जब वात का उपद्रव होता है, तो वह बाइकाबोर्नेट या एंटेसिड मिश्रित दवाई लेकर उपद्रव को शांत कर लेता है। मगर इससे रोग के मूल का अंत नहीं होता। और कालांतर में रोगोत्पादक कीटाणु पेट में अल्सर पैदा करने में सक्रिय हो जाते हैं।

एक रोगी बाजार से 'कफ सीरप' लेकर पी लेता है और खांसी को शांत कर लेता है। लेकिन इन बाह्य लक्षणों की शांति से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के असली निदान ढूंढने का काम रुक
है। कई बार यह खांसी फेफड़े में ट्यू-
का कैंसर होने से भी आती है। रोगी
के लक्षणों का दमन करके ट्यूमर
कैंसर की चिकित्सा में विलंब कर
है। यह विलंब प्राणघातक सिद्ध हो
है।

इन दमनकारी गोलियों के सेवन से अंदर
विष प्रायः अन्य प्रकार की प्रतिक्रियाओं
करता है। इन प्रतिक्रियाओं से बहुधा
रोग हो जाते हैं, रक्तवाहिनियों को
पहुंचती है, स्नायु तुरंत निर्बल होते
रक्त दूषित हो जाता है। इन सबके
परिणामस्वरूप मृत्यु भी संभावित है।
इन सब प्रतिक्रियाओं से परिचित
है—अतः वह रोगी की सारी प्रकृति
इनके प्रयोगों में पूरी सावधानी बर-
है। अगर उसे कोई शक रह जाये, तो
एलर्जी टेस्ट द्वारा भी देखता है कि
पर अमुक दवा का कोई बुरा असर
नहीं होता।

कुछ औषध ऐसे हैं, जो एक के लिए
है, दूसरे के लिए विष। त्वचा के रोगों
सर्दी-जुकाम, सिरदर्द-अनिद्रा या पीठ
के निवारणार्थ जो बेहिसाब पेटेंट दवा-
भी जाती है, उनका परिणाम रोगी के
स्थ पर बहुत बुरा पड़ता है।

पेटेंट दवाओं के अवैध सेवन से किस
रोग बढ़ रहे हैं. इसके दो उदाहरण
ये :

(१) वजन कम करने की दवाइयां—इन दवाइयां में 'एंफेटामाइन' औषध होती हैं, जो भूख को घटा देती हैं। इसका प्रयोग बहुत सावधानी से करना चाहिये, अन्यथा अनिद्रा रोग हो सकता है।

(२) ब्रोमाइड—दीर्घकाल तक अधिक मात्रा में इसके प्रयोग करने से इसके कण रोगी के अंदर जमा होते जाते हैं, जो मस्तिष्क को खराब कर देते हैं। रक्त में ब्रोमाइड के कण मिल जायें, तो पागलपन का दौर भी शुरू हो जाता है। त्वचा के लिए भी दोनों तरह की दवाइयां होती हैं। कुछ उत्तेजक होती है और कुछ उपशामक। वास्तव में डाक्टर ही यह फैसला कर सकता है कि किस आदमी को कौन-सी दवा उपयुक्त होगी।

वस्तुतः स्वास्थ्य शरीर की विभिन्न व्यवस्थाओं के संतुलन तथा विभिन्न अंगों की आवश्यकताओं की समुचित पूर्ति पर निर्भर है, और ये व्यवस्थाएं एवं आवश्यकताएं उतनी सीधी नहीं हैं, जितनी कि प्रायः हम लोग समझते हैं। रोग भी उतनी ही पेचीदा चीज है। रोग-लक्षणों का विवेचन और रोग-निवारण के लिए विशेष शास्त्रीय ज्ञान आवश्यक है। डाक्टरी की प्रेक्टिस करने का अधिकार किसे है, किसे नहीं—इस संबंध में सरकारों ने विस्तृत नियम यों ही मूर्खतापूर्वक नहीं बना दिये हैं। कहावत है—नीम हकीम खतराये जान। सो आप नीम हकीम बनकर अपनी तंदुरुस्ती को अपने ही हाथों खतरे में न डालिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख के द्वार

सरला जगमोहन

"मैं नेत्रहीन हूं। परंतु स्पर्श से आनंदित कर देनेवाली असंख्य वस्तुएं मुझे मिलती रहती हैं। पत्तों के नाजुक रेशों को मैं स्पर्श कर लेती हूं। सिल्वर वर्थ की मुलायम छाल पर अथवा पाइन वृक्ष की खुरदरी छाल पर मैं प्रेमपूरित हाथ फैला देती हूं। वसंत ऋतु में शिशिर की तंद्रा से जागती हुई प्रकृति के प्रथम चिह्न से एकाध कोंपल की शोध में आशाभरी मैं वृक्षों की शाखाओं को टटोल लेती हूं। कभी यदि भाग्य चमक उठे, तो धीमे से एकाध छोटे वृक्ष को हाथ लगाते ही मुक्तकंठ से गा रहे किसी पक्षी के कंप का भी मैं अनुभव करती हूं।"

आंखों के सामने फैले हुए अंधकार के बावजूद स्पर्श की ज्योति से जिसने संसार का सौंदर्य देखा है, ये शब्द उन हेलन केलर के हैं। संसार में बहुत थोड़े स्त्री-पुरुष ऐसे हैं, जो जीवन की परिस्थितियों को ठोकर मारकर पूर्ण और समृद्ध जीवन जी सकते हैं। हेलन केलर उन्हीं में से एक हैं। स्पर्श मात्र से 'देखे जैसे' सौंदर्य को उन्होंने अपनी सतेज कल्पनाओं से आकारबद्ध किया है। अपनी दृष्टि-शून्य आंखों को उन्होंने अपने मार्ग में बाधक नहीं बनने दिया। बल्कि उनके अंदर सौंदर्य के दर्शन और स्वरमाधुरी के श्रवण करने की तीव्र आतुरता रही है। जीवन-भर के अंधकार की चुनौती स्वीकार करने के बाद भी मात्र तीन दिनों के लिए यदि उन्हें दृष्टि प्राप्त हो जाये, तो वे क्या-क्या करें, क्या-क्या देखें और सुनें—इसकी कल्पना उन्होंने बार-बार की है।

वे कहती हैं—"अंधकार से छुटकारा पाने के प्रथम दिन मैं अपने सभी मित्रों को इकट्ठा करके उनके चेहरे जी-भर निहारूंगी; व्यक्ति के जीवन के संघर्षों का ज्ञान होने के पहले के उत्सुक, निर्दोष सौंदर्य की झांकी मुझे मिल सके, इसके लिए एक बालक के चेहरे पर मैं अपनी नजर गड़ा दूंगी। और मेरे वफादार कुत्ते स्काटी और डेन की विश्वास-भरी आंखों में देखना भी मुझे अच्छा लगेगा।"

हेलन केलर की आंखों का अंधकार साहित्य की रसपूर्ण कृतियों से प्रकाशवान् बन गया है, तभी तो वे अंधकार से मुक्ति के प्रथम दिन इन पुस्तकों को देख-भर ही न लेंगी, बल्कि लंबे समय तक प्रत्यक्ष घूम-देखकर जिस प्राकृतिक सौंदर्य की स्वाभाविकता का हम दर्शन कर पाते हैं, उसका भी वे आकंठ पान कर लेंगी। हेलन केलर कहती हैं—"भव्य सूर्यास्त के लिए मैं प्रार्थना करती रहूंगी और मैं समझती हूं कि उस रात नींद तो मुझे आ ही नहीं सकती।"

अंधकार को प्रकाश में पलट देनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...कार को, जिसे होमर ने रक्तवर्ण प्रभात ...में देखा है, उसे आश्चर्यचकित भाव ...ते हुए हेलन केलर अपने अंधकार-...के दूसरे दिन का आरंभ करेंगी। ...ही नहीं, शताब्दियों में प्राप्त मानव ...गति का परिचय प्राप्त करने के लिए ...द्वारा ईजाद ...गये औजारों, ...या और कला-...गरी के देखने ...वे थोड़ा समय ...संग्रहालयों में ...गी। फिर आज ...र्शमात्र से परि-...देवताओं की ...अन्य शिल्पा-...ों को दिङ्मूढ़ ...से देखने के लिए ...कला के संग्रहा-...में भी पहुंच ...गी। वे कहती हैं—...प्रकार कला के ...म से मैं मानव ...आत्मा में झांक लेने ...प्रयत्न करूंगी। ...के बाद जब शाम होने आयेगी, तो 'हैम-...' का मनोहारी नाटक देख लेने अथवा ...जाबेथ के युग की रंगमयी सजावट के ...चक्रवात की तरह घूम रहे फुलस्टाप ...दृश्य को देखने की भी मेरी इच्छा ...गी।" इसमें कोई आश्चर्य नहीं—क्योंकि हेलन केलर का बाइबल के बाद दूसरा आकर्षण शेक्सपीयर है।

अंगाभिनय विशेष को हेलन केलर ने शिल्पाकृतियों द्वारा जाना है। इसलिए शायद किसी बैले में जाना भी वे अधिक पसंद करेंगी।

आदमी की परख

गंगाजल पर चलती
बादल की छाया
धूप में मछलियों-सी
चमचम हिलकोरों पर
किन काले पंखों का साया।

स्याही की झीनी
जल-चादर के नीचे से
लहरों का रूप
तनिक और उभर आया।

उठी एक ऊर्मि कहीं
मेरे भीतर, जैसे—
किसी ने अंधेरे में
गीत गुनगुनाया।

—जगदीश गुप्त

हेलन केलर का कहना है कि वे अपने अंधकार-मुक्ति के तीसरे व अंतिम दिन का प्रारंभ फिर से सूर्योदय देखने से करेंगी। उसके बाद कार्य-व्यस्त स्त्री-पुरुषों की झांकी देखने के लिए वे शायद एकाध शहर की यात्रा भी करें। वे गरीबों की बस्ती में जायेंगी। आलीशान मार्गों को भी देखेंगी। बगीचों में किलोल करते हुए बालकों पर वे स्नेह-भरी दृष्टि डालेंगी और निकट से गुजरते हुए लोगों के चेहरों के भावों का निरीक्षण कर उन्हें और उनके जीवन को समझने का प्रयत्न करेंगी। उनकी आंखों के भावों को पहचानकर उनके सुख-दुःख में सहभागी होने की कोशिश करेंगी।

हेलन केलर का कहना है—"पांचवें एवेन्यू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर भी मैं चक्कर मार आऊंगी। कोई एक निश्चित वस्तु नहीं; लेकिन बदलती रंगावली मुझे देखने को मिले, इसके लिए मैं अपनी दृष्टि को थोड़ा केंद्र से बाहर मोड़ दूंगी। मुझे विश्वास है कि झुंड-की-झुंड गुजरती हुई स्त्रियों के वस्त्रों का रंग लुभावना ही होगा—यह दृश्य देखकर तो मैं अघाऊंगी ही नहीं "

अंधकार-मुक्ति की तीसरी और अंतिम रात हेलन केलर किसी सुखांत नाटक को देखने किसी थियेटर में पहुंच जायेंगी और कलाकारों तथा दर्शकों को देखकर वे हंसते-हंसते जीवन के भार को हल्का करना भी सीख लेंगी। परंतु...

"मैं नेत्रहीन हूं, आंखों से देख सकनेवालों से मैं एक ही बात कहना चाहती हूं—आप अपनी आंखों का उपयोग यह समझकर कीजिये, जैसे कल ही आप अंधे हो जानेवाले हैं।

"स्वर-भरे संगीत, पक्षियों के गान, आर्केस्ट्रा के उत्तुंग स्वरों को आप इस प्रकार सुनें कि जैसे कल ही आपके कानों के परदे फट जानेवाले हैं। आपकी स्पर्शेंद्रिय जैसे कल ही बेकार हो जानेवाली हो, ऐसा समझकर प्रत्येक वस्तु का स्पर्श करें। आनेवाले कल को शायद आप गंध की परख न कर सकें, ऐसा मानकर फूल की सुगंध का आनंद लें। हर कौर का भरपूर स्वाद लें। आप अपनी प्रत्येक इंद्रिय का जितना उपयोग कर सकें, करें। प्रकृति के साथ अपना संपर्क जितना भी संभव हो, स्थापित कर उसकी भव्यता का अनुभव करें। परंतु मुझे विश्वास है कि इन सबसे अधिक आनंददायी इंद्रिय तो नेत्र ही होंगे।"

जीवन में 'सर्वाधिक आनंददायी इंद्रिय' से वंचित रहने पर भी हेलन केलर आशा-प्रेरक शब्दों में नित्य नये खुलनेवाले द्वारों की बातें करती हैं—"जब सुख का एक द्वार बंद होता है, तो दूसरा खुलता है। परंतु कई बार हम बंद द्वार को ही इतने अधिक समय तक देखते रह जाते हैं कि हमारे लिए खुले नये द्वार को हम देख ही नहीं पाते।"

आधी रात के समय दस्तक हुई। डाक्टर की पत्नी ने नींद से उचाट हो द्वार खोला, तो सामने एक बुढ़िया को ठिठुरते हुए पाया। बुढ़िया ने दीनता से कहा—"मेरा बच्चा बीमार है, उसकी हालत बहुत खराब है। जरा डाक्टर साहब को जगा दीजिये।"

"वे इस समय सो रहे हैं, सुबह आना।"

"उसकी हालत बहुत खराब है। यदि उसे..."कहते-कहते बुढ़िया सिसकने लगी।

"तो मैं क्या करूं? तुम्हें कह दिया न सुबह आना।" और डाक्टर की पत्नी द्वार बंद करने ही वाली थी कि डाक्टर साहब आ खड़े हुए और बोले—"प्रिय, मेरे आराम के कुछ क्षणों से एक रोगी का जीवन कहीं अधिक मूल्यवान है। अतः मुझे जाना ही चाहिये!" और वे बुढ़िया के पीछे हो लिये।

—हरीश प्रसाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक ईमानदार आदमी की उशप बीती

डगलस जान्सन

...र्च १९६१ की बात है। मैं अपनी पत्नी ...हेलन के साथ अपनी माल ढोनेवाली ...गाड़ी में लास एंजेल्स की गलियों से ...रहा था। नये बननेवाले मकानों का ...ढोना मेरी जीविका थी और उस ...में विलशायर में बननेवाले एक ...के मलबे की ढुलाई के ठेके की बात-...करने जा रहा था।

...रेनो की ७-वीं, ८-वीं गलियों के बीच ...रते हुए मैंने देखा कि गली में एक भूरे ...का कैन्वास का थैला पड़ा हुआ है। मैंने ...रोककर उसे उठा लिया। वह पूरा ...हुआ था और उसके ऊपर फेडरल रिजर्व ...की कैलिफोर्निया शाखा की मोहर लगी ...थी।

"इस पर यह चिट भी बंधी हुई है!" ...ने कहा और उसे पढ़ा। फिर मेरी ओर ...चर्य से देखती हुई बोली—"अरे तुम्हें ...०,००० डालर का थैला मिला है!"

"नहीं, नहीं, इसमें इतना रुपया नहीं हो ...ता।"

लेकिन थैले में इतना रुपया था। १०-... और २०-२० डालर के नोटों की उन ...ड़ियों में दो लाख चालीस हजार डालर मौजूद थे।

"कोई आदमी इनके लिए कितना परेशान हो रहा होगा।" मैंने कहा—"अच्छा हो, हम लोग घर चलें।"

और हम घर वापस आ गये। हमारा छोटा-सा घर तीसरे एवेन्यू में था। इसमें हम किराये पर रहते थे। साथ में रहते थे हमारे तीन बेटे—रिचर्ड, क्लीमेंट और डोरेंस; जो क्रमशः १६, १३ और ११ वर्ष के थे।

मैंने एफ० बी० आइ० (केंद्रीय गुप्तचर विभाग) को फोन किया। और उन्हें बताया—"मैं गली में गाड़ी चला रहा था कि मुझे एक छोटा-सा थैला मिला, जिसमें २,४०,००० डालर के नोट हैं ..."

"अपने दरवाजों को ताला लगा लो।" फोन पर उधर से आवाज आयी—"और किसी को भी यह बात मत बताओ! किसी भी आदमी को अंदर न आने देना, जब तक कि यह अच्छी तरह न मालूम हो जाये कि वह सरकारी अधिकारी है।"

अब तो मैं और हेलन भय से थर-थर कांपने लगे। हालांकि हमें बहुत देर भयभीत नहीं रहना पड़ा; क्योंकि सारी बातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी तेजी से हुई। तुरंत ही एफ० बी० आइ० के लोग घर आ गये और हमें अपने साथ ले जाने लगे। गली में कई कारों में बंदूक-धारी सैनिक सवार थे। संरक्षण के लिए एक पुलिस-कार हमारे आगे और एक पीछे चल रही थी। इस तरह हमें मुख्य कार्यालय लाया गया।

यहां हमें पता लगा कि ब्रिक्स की एक ट्रक इस थैले को ले जा रही थी। यह थैला दरवाजे की खटकेदार चटकनी (लैच) से टकराया और किसी तरह द्वार खुल गया और थैला उछलकर बाहर आ गिरा। यह अपने ढंग की अद्‌भुत घटना थी। बेशक ब्रिक्स के लोगों ने रुपया पाकर राहत की सांस ली। हम भी खुश थे कि जिसका पैसा था, उसे मिल गया, हमारा पिंड छूटा।

असंख्य लोगों ने हमें बधाई दी और कहा कि हम बड़े ही ईमानदार हैं। अनेक फोटो-ग्राफरों ने हमारे फोटो लिये। जब हमारे बच्चे स्कूल से घर लौटे, तो संवाददाताओं की भारी भीड़ जुटी देखकर आश्चर्यचकित रह गये।

बहुत दिनों तक अखबारों में 'एक बेकार नीग्रो चौकीदार' के चित्र और उसके बारे में कहानियां छपती रहीं। मैंने देखा कि हमें लेकर ऐसी जितनी भी कहानियां छपीं, वे ज्यादातर गलत और मनगढंत थीं। उदाहरण के लिए – मैं नीग्रो तो हूं; पर मैं बेकार नहीं था, (बाकार था, अपना अच्छा खासा रोजगार चलाता था), और न मैं चौकीदार था। मेरी आय ३,००० डालर वार्षिक थी। माना कि हम लोग रासजी ठाट से नहीं रहते थे; पर हम राजा थे भी तो नहीं।

मैं यह स्वीकार करता हूं कि जब मैंने रुपया लौटाया था, तो मुझे पुरस्कार पाने की काफी अपेक्षा थी; लेकिन मैंने पुरस्कार मांगा कतई नहीं था। दस दिन के भीतर ब्रिक्सवालों ने मुझे १०,००० डालर बतौर इनाम दिये। उन्होंने मुझे ९० डालर प्रति सप्ताह के वेतन पर चौकीदारी की नौकरी भी देनी चाही, जिसे मैंने स्वीकार नहीं किया। कारण, जैसा कि मैंने कहा, मेरा अपना रोजगार था और पुरस्कार-राशि से एक ट्रक और खरीदकर मैं अपने धंधे को और बढ़ा सकता था।

परमात्मा ने जो धन छप्पर फाड़कर दिया था, कुछ दिन तो हम उसके मिलने के आनंद में मग्न रहे। फौरन ही हमने मकान खरीदना तय किया और इसके लिए खोजबीन शुरू की। हम अपने किराये के मकान से कहीं ज्यादा बड़ी जगह चाहते थे रहने के लिए, और यह अब हमारे लिए समस्या नहीं थी। मकान के दलालों ने स्वयं आकर या फोन पर हमसे संपर्क साधना शुरू कर दिया। लोगों में हम यों भी अब चर्चा के विषय थे।

घर के पास से गुजरते हुए लोग गर्दन ऊंची करके कहते –"यहां वह 'ईमानदार आदमी' रहता है।" कुछ लोग घर आकर बधाई देते, तो कुछ रेस्तरां आदि में हमें देखकर बातें करना शुरू कर देते। नगर के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेनेय हान ने नगरपालिका में हमारी
ी और हमें नागरिकों की ओर से
ाम्य-पदक भेंट किया गया।
के साथ ही एक और बात होने लगी,
ी बात जो बहुत भद्दी थी। १०,०००
के इनाम की घोषणा के बाद यह
काफी जोर पकड़ती गयी।
ब कुछ ऐसे पत्र भी आने लगे, जिनकी
ात कुछ इस तरह होती थी—"अरे
ो गये, सब कुछ तेरे हाथ में था और
ने लुटा दिया!"
ल के कस्बे के एक पुलिस के सिपाही
ा—"अगर मैं होता, तो सीमा-पार
गया होता और अभी तक सीमा-पार
हता!"
मैं अनेक और विविध सुझावों का ढेर
या, जिनमें समझाया गया था कि हम
रकम किस तरह अपने पास रख सकते
और देश छोड़कर किस तरह अपना
ा बना सकते थे।
मला पत्रों तक ही सीमित नहीं रहा।
ों ने हमारे मुंह पर भी कहना शुरू कर
। जब मैं अपने धंधे के लिए निकलता
लोगों से काम का ठेका लेने की बात
ता, तो लोग कहते—"तुम्हें बिलकुल
न करना पड़ता; पर क्या किया जाये,
बेवकूफ जो ठहरे! तुम्हें इतना सारा
मिला और तुमने उसे फेंक दिया।"
के पास से गुजरते लोग हमारा मजाक
ने और चिल्ला-चिल्लाकर भद्दे शब्द
ते। हमने अपना टेलिफोन नंबर भी बद-
लवाया, ताकि लोग हमें परेशान न करें। पर लोगों ने जाने कैसे नया नंबर भी मालूम कर लिया और टेलिफोन पर बुरी-से-बुरी गालियां सुनाने लगे।

एक दिन तो हेलन और मैं, दोनों स्तब्ध ही रह गये। एक औरत सीधी हमारे घर में घुस आयी और हिकारत-भरी नजर से देखती हुई कहने लगी—"मैं देखना चाहती थी कि क्या तुम उतने ही बेवकूफ दिखते हो, जितने हो।"

अंततः हमने नया घर खरीदा। इसमें और किसी बात की अपेक्षा आत्मरक्षा का खयाल ही ज्यादा था। चुपके-से इस घर में चले आये और इस बात की पूरी कोशिश की कि लोगों को हमारा पता न मालूम हो। पर अब सबसे ज्यादा मुसीबत हमारे बच्चों को होने लगी।

स्कूल में दूसरे लड़के हमारे बच्चों को तरह-तरह से सताने लगे। वे उन्हें अपशब्द कहते। क्लीमेंट को कड़वे व्यंग्य सुनने पड़ते। नन्हा डोरेंस स्कूल से लहूलुहान होकर लौटता। रिचर्ड बताता कि किस तरह लड़के उसकी पसलियों पर घूंसे चलाते हैं और कहते हैं—"यह लो, तुम्हारे बाप की मूर्खता का इनाम!"

हेलन और मैं अपने घर में झगड़ा नहीं चाहते थे। हमने अपने बच्चों को समझाने की कोशिश की कि उन्हें इस अपमान की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये और स्वाभिमान का अनुभव करते हुए रहना चाहिये। किंतु बड़ों के समान बच्चे इन बातों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा नहीं समझ सकते। ये बातें समझना और शांति रखना उनके लिए बड़ा मुश्किल था। स्कूल में उनकी पढ़ाई पर पानी फिरने लगा और वे निराश होते गये।

एक दिन रिचर्ड से यह सब सहा नहीं गया। वह घर पर चिट्ठी लिखकर रख गया कि वह कहीं दूर जा रहा है। दो दिन हमें पता नहीं लगा कि वह कहां है, हमें उसकी मृत्यु की आशंका हुई। हेलन घंटों मौन-शांत बैठी उसकी प्रतीक्षा करती, हर समय वह बाइबल पढ़ती रहती। वह बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला है। ऐसे में यही उसका एकमात्र सहारा थी।

आखिर रिचर्ड वापस आ गया। उसके कपड़ों का बुरा हाल था और वह भूख से बेदम था। दो दिन उसने शहर में इधर-उधर भटककर और रातें बगीचों में सोकर गुजारी थीं। आने पर वह बोला– "मैं घर कतई नहीं आना चाहता था; पर आखिर मैंने महसूस किया कि जब आप और मां यह सब अपमान सह लेते हैं, तो मुझे भी सह लेना चाहिये।"

तूफान थमा। गालियां धीरे-धीरे कम होती गयीं और अब ऐसे पत्रों का ढेर लगने लगा, जिनमें लिखा होता था कि हम कितने अच्छे, कितने ईमानदार और कैसे आदर्श नागरिक हैं। ऐसे पत्र विश्व के कोने-कोने से आने लगे। उन पर पता भी विचित्र होता था। जैसे–"सेवा में, ईमानदार चौकीदार कैलिफोर्निया" या "मिले, उस व्यक्ति को, जिसे २,४०,००० डालर मिले थे, संयुक्त-राज्य, अमरीका।"

स्कूल के बच्चे भी अब शाबाशी देने लगे, पादरियों से उत्साहजनक पत्र मिलने लगे और प्रेसिडेंट केनेडी ने भी मुझे अपने पत्र में लिखा :

"हाल ही में आपको जो २,४०,००० डालर मिले, उन्हें आपने उनके सही मालिकों को लौटाकर अपनी अटूट ईमानदारी का परिचय दिया है, इसके लिए मैं आपकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकता। मैंने इस घटना के समाचारों को बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा। मुझे दुःख है कि कुछ अभागे लोगोंने आपको और आपके परिवार को सताया। आपका यह कार्य व्यक्तिगत चरित्र का ऐसा उदाहरण है, जिस पर व्यापक ध्यान दिया जाना चाहिये।....."

इसके बाद से जीवन आसान तो हुआ; पर उथल-पुथल एकदम शांत नहीं हुई। अगले साल सरकार ने १०,००० डालर पर कर की मांग की; हालांकि मुझे बताया गया था कि पारितोषिक की यह राशि कर-मुक्त है। अंततः कर चुकाने के लिए मुझे अपना मकान ही बेचना पड़ा।

तो, यह मेरी आपबीती है। हमारे साथ जो गुजरी, उस पर बहुत कुछ कहा और लिखा जा चुका है। एक सूक्ति, जो मैंने अब तक पढ़ी है, और मुझे सबसे अच्छी लगी है, वह यह है– किसी सत्कार्य को करने का सच्चा पुरस्कार यही आत्मिक संतोष है कि आपने कोई अच्छा कार्य किया है। सच तो यह है कि अच्छा काम करना ही अच्छा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब हवा और पानी पर भी चलेंगी

साइकेल लोरांत

ई जहाज ऊपर आकाश में उड़ता है, वाई कार' नीचे सड़कों पर उड़ती हुई करेगी। अमरीका की जनरल मोटर्स टरीज के दो युवक मोटर-इंजीनियर, मान और जेराल्ड शील ने हाल ही बिलकुल नयी खोज की है। उन्होंने के तौर पर ऐसी गाड़ी बनायी है, लती तो जमीन पर है; लेकिन जमीन र उठकर हवा में उड़ती हुई। इस ई कार' का पिछले दिनों प्रदर्शन भी गया।

मीन पर चलनेवाले वाहनों के संबंध ाजकल काफी खोजबीन हुई है। इस के शोधकार्यों में एक उद्देश्य यह था अब भी है किस्थलगामी वाहनों को ऐसा दिया जाये कि वे हवा के गद्दे पर चल सकें। 'हवाई कार' की मशीन की का सिद्धांत भी वही है, जो जमीन पर चलनेवाली अन्य गाड़ियों का है। अंतर इतना ही है कि इस मशीन को गति देने के लिए जो धक्का लगता है, उसका वेग अधिक होता है।

यह नयी और प्रयोगात्मक गाड़ी स्थल-गामी वाहनों के लाभ और समस्याओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग में लायी जा रही है। पर इस नयी गाड़ी से प्रचलित कारों अथवा अन्य पहिया-गाड़ियों के लिए यातायात में प्रतियोगिता-जैसा कोई खतरा अभी नहीं है। मुख्यतः इसलिए कि इस गाड़ी की रोकथाम में बड़ी कठिनाइयां हैं। किंतु कई विशेष कार्यों की दृष्टि से यह मशीन बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

यह 'हवाई कार' धरती से चार इंच ऊपर उठी हुई चलती है, जब इसमें केवल चालक बैठा हो। चालक के साथ यात्री भी हों, तो यह सवा तीन इंच ऊपर उठी रहती है। यह पानी पर भी चलती है।

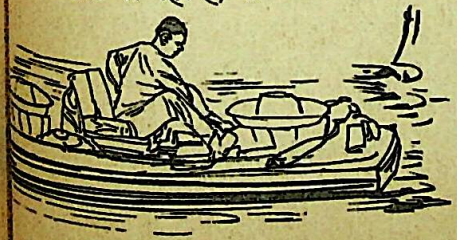

इसके अगले और पिछले पंखों को १५ हार्सपावर के इंजन चलाते हैं। इनके चलने पर गाड़ी के तले में लगे एक परिधिस्थ जेट से हवा इस तरह निकलने लगती है कि हवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का गद्दा-सा बन जाता है। हवाई कार इसी हवा पर सवार होकर चलती है।

इस कार की लंबाई १४४ इंच, चौड़ाई ८१ इंच और ऊंचाई जमीन से छत तक १४ इंच है। बड़े पैमाने पर यातायात में इसका उपयोग तभी हो सकेगा, जब सड़कों पर पथ-प्रदर्शन की एक विशेष प्रणाली अपनायी जायेगी। इसके लिए लंबे फासलोंवाले स्वचलित आम रास्ते बनाने पड़ेंगे, जो इस दृष्टि से बनाये जायेंगे कि उन पर तीव्रगामी अर्थात् १०० मील प्रति घंटे की रफ्तार से भी तेज गतिवाले वाहन दौड़ सकें।

पथ-प्रदर्शन की विशेष प्रणाली के अभाव में हवाई कार को अन्य वाहनों के बीच से गुजारना-संभालना बहुत कठिन होगा। ऐसा इस कारण है कि 'हवाई कार' टायर वगैरह के आधार पर धरती से सटकर नहीं चलती।

जमीन का एक हिस्सा, जो कारों और मनुष्य की आंख के लिए समतल है, ढाल से उतरती हुई 'हवाई कार' के लिए कुछ और ही होगा। सड़क का कोई मेहराब, जिसका प्रचलित कारों के ड्राइवर के लिए कोई महत्व नहीं, 'हवाई कार' के चालक के लिए मुसीबत बन सकता है, उसे उसका भी ध्यान रखना पड़ेगा।

'हवाई कारें' के धरती से सटकर न चलने के कारण एक और समस्या भी खड़ी होती है कि इस पर पूरा नियंत्रण नहीं रखा जा सकता। एक-दूसरे के सामने से आती हुई कारें, चाहे वे १०० मील प्रति घंटे की गति से भी तेज चल रही हों, कुछ फुट का फासला रखकर आराम से गुजर जायेंगी; पर ऐसा 'हवाई कार' का ड्राइवर नहीं कर सकता। उसके लिए ऐसा करना खतरनाक कलाबाजी दिखाने से कम न होगा।

फिर भी हवा के गद्दे पर बैठकर उड़नेवाली इस गाड़ी की संभावनाओं की उपेक्षा करना भूल होगी। इसे विशेष परिस्थितियों में काम में लिया जा सकता है और पानी के ऊपर इसकी उपयोगिता दरकिनार नहीं की जा सकती। जलमार्ग में न तो पहाड़ियां चढ़ने की समस्या आती है और न यहां नियंत्रण की बारीकी ही जरूरी होती है।

'हवाई कार' का भविष्य इसलिए भी उज्वल है कि यह उभयचर है अर्थात् यातायात का यह ऐसा साधन है, जिसे थल और जल दोनों पर काम में लिया जा सकता है।

★

कुछ भी गिनने के बजाय लिखना कितना आसान है, यह इस बात से पता लगता है कि यदि यह समझ लिया जाये कि एक आदमी एक मिनिट में २०० तक गिन सकता है, तो वह एक घंटे में १२,००० तक गिनेगा, एक दिन में २८,८००० तक गिनेगा और एक साल में १०,५१२,०,००० तक गिन सकेगा। तब भी सृष्टि का प्रथम व्यक्ति सृष्टि प्रारंभ होने के काल की पूरी गणना नहीं कर सकता। क्योंकि एक व्यक्ति को एक अरब तक गिनने में ९५१२ साल ३४ दिन ५ घंटे २० मिनिट लग जायेंगे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काँच : आंखों की रोशनी बन गया

अ० ब० स०

क और आदमी का रिश्ता पहले-पहल
न्न हुआ, इतिहास के पास इसकी सही-
ी जानकारी नहीं है। कहते हैं कि रोम
म्राट् नीरो तलवारबाजों की लड़ाई
च के टुकड़े से देखा करता था। इससे
अटकल लगायी जाती है कि मनुष्य को
युग में भी आंख को रोशनी देनेवाले
च का ज्ञान था।

र यह अटकल, अटकल मात्र ही है। हो
ता है, खेल देखते समय जो हरा कांच
ी इस्तेमाल करता था, वह उसकी कम-
निगाह की रोशनी बढ़ाने के लिए न
तेज धूप और अखाड़े की धूल से आंखों
रक्षा करने के लिए लगाया जाता हो।
उस जमाने में अमीरों के यहां दास होते
जो अपने स्वामी की निगाह कमजोर हो
ने पर उन्हें किताबें-कागजात पढ़कर
ुनाने का काम किया करते थे।

ारहवीं सदी में अरब विद्वान इब्न
ल हैताम ने वैज्ञानिक दृष्टि से आंख की
ामट का वर्णन प्रस्तुत किया और
काश के परावर्तन के संबंध में इस महत्व-
तथ्य की खोज की कि यदि वर्तुलाकार
च के टुकड़े से किसी चीज को देखा जाये,
वह बड़ी दिखती है। जिस घड़ी में यह खोज हुई, हम उसे ऐनक के आविष्कार की घड़ी कह सकते हैं।

किंतु हैताम के देशवासियों ने उसकी बात पर कान नहीं दिये, सारे इस्लाम-जगत में इस खोज की उपेक्षा हुई। नतीजा यह हुआ कि डाक्टर हैताम के सिद्धांत अगले दो सौ वर्ष तक बेकार पड़े रहे। १३-वीं सदी में एक लेखक की नजर उन पर गयी और उसने उनका लैटिन में अनुवाद किया।

यह लैटिन अनुवाद एक दिन इंग्लैंड तक पहुंचा। यहां इस पर फ्रांसिस्कन विद्वान भिक्षु रोजर बेकन की नजर पड़ी। उन्होंने इसकी वैज्ञानिक ढंग से खूब जांच-पड़ताल की। प्रयोगों के आधार पर ऐसे सबूत जुटाये, जिनका खंडन न किया जा सके। इस प्रकार यह इब्न अल हैताम का ही काम था, जिस पर खोज-परीक्षण करके बेकन ने यह बात सिद्ध की कि कांच के लेंस लगाकर देखने पर न केवल वस्तुएं ही, वरन अक्षर भी बड़े दिखते हैं।

बेकन ने अपने सिद्धांतों और निष्कर्षों के प्रतिपादन के लिए १२६७ में एक पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने लिखा—"बड़े-बूढ़ों के लिए या जिन लोगों की नजर कमजोर हो, उन लोगों के लिए यह उपकरण बहुत उप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगी साबित होंगे। इनसे वे बारीक अक्षरों को भी आराम से पढ़ सकेंगे।"

भले ही रोजर बेकन को ऐनक का आविष्कारक न माना जाये, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि उनकी खोजों ने इस काम को काफी आगे बढ़ाया।

सच तो यह है कि ऐनक के असली आविष्कारक का नाम किसी को मालूम भी नहीं है; इसीलिए इसके अविष्कार की ठीक तारीख का भी पता नहीं लगता। केवल यह उल्लेख मिलता है कि सबसे पहले ऐनकें वेनिस में बननी शुरू हुईं—बेकन की किताब छपने के तुरंत बाद।

लेकिन वेनिस में ही सबसे पहले 'आंख के लिए कांच' बनने शुरू हुए, इसका सबूत? इसका सबूत यही है कि वेनिस उन दिनों कांच के उद्योग में संसार का सबसे उन्नत नगर था। इस कारण वहां ऐनकों का निर्माण सर्वप्रथम शुरू हुआ होगा। १३०० के आस-पास वहां की नगर-परिषद् ने कुछ ऐनक निर्माताओं पर रोकथाम भी लगायी थी। ये निर्माता सस्ती ऐनकें बनाते थे और धन कमाने के लिए सफेद कांच को 'बिल्लौरी शीशा' कहकर बेचते थे।

प्रयोगरत

१४-वीं शताब्दी के मध्य इतालवी चित्रकार का बनाया हुआ भित्ति-चित्र संभवतः संसार का पहला ऐसा चित्र है, जिसमें एक पुजारी ऐनक लगाकर पढ़ते हुए दिखाया गया है। इस चित्र से पता चलता है कि आरंभ में बूढ़े लोग एक आंख का चश्मा इस्तेमाल करते थे। इसे वे पुस्तक और आंख के फासले के बीच हाथ से पकड़े रहते थे। भारत के गांवों में आज भी इस तरह का चश्मा काम में लानेवाले बूढ़े मिल जायेंगे।

१४-वीं सदी की शुरूआत में कमजोर निगाहवाले लोग ऐसे चश्मे काम में लेने लगे, जिनमें 'राइवेट' लगी होती थी। इन चश्मों में दो कांच होते थे। दोनों कांचों के बीच गोल जुड़ा हुआ एक हैंडल होता था। आज की ऐनक को हम इस दो कांचवाले चश्मे की वंशज कह सकते हैं। गौर कीजिये कि दो कांचवाला चश्मा भी एक कांचवाले चश्मे की तरह तकलीफदेह था। इसे भी उसी की तरह हाथ में उठाये-उठाये लोग थक जाते थे। आधुनिक ऐनक इस दृष्टि से कितनी आराम-देह है!

चश्मों के फ्रेम लगातार बदलते रहे हैं। शुरू-शुरू में ये लकड़ी या धातु के बनाये जाते थे और इन पर तरह-तरह की नक्काशी की हुई रहती थी। पर ये आकार-प्रकार में ऐसे भद्दे होते थे कि आज हम उन्हें देखकर हंसे बिना नहीं रह सकते।

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६-वीं शताब्दी में फ्रेम कुछ अच्छे पदार्थों
बनने लगे, जैसे चमड़ा या सींग से।
आमंती समाज में चश्मों की कीमत आस-
पर चढ़ी हुई होती थी। इन्हें खरीदना
ीरी का द्योतक था। यही कारण था
जिन लोगों की आंखें कमजोर नहीं होती
वे भी ऊंची कीमत के फैशनेबल चश्मे
पहने थे। इनके फ्रेम हाथी-दांत, चांदी या
ने के बने होते थे और इन्हें पहनने का
देश अपने बड़प्पन का दिखावा करना
ा था।

उपयोगिता का पहलू बहुत दिन तक गौण
ा; किंतु गुटनबर्ग द्वारा आविष्कृत छापे-
ने के साथ ज्यों-ज्यों लोगों में पढ़ने-
ने की रुचि बढ़ी, त्यों-त्यों ऐसे लोगों
भी ऐनक की जरूरत महसूस होने लगी,
धनवान नहीं थे।

१९-वीं सदी तक भी ऐनक आंखों की
ी-पूरी सहायक नहीं बनी थी; क्योंकि
क तक यह जानना और तय करना असं-
ा था कि किस आंख के लिए किस लेंस की
आवश्यकता है। उन दिनों डाक्टर लोग
में बेचना अपनी शान से नीचे दर्जे का
काम समझा करते थे। आज की तरह तब
विभिन्न प्रकार के लेंस भी नहीं होते थे; जो
थे-बहुत प्रकार थे भी, तो उन्हें फेरीवाले
चते थे और वे भी उम्र में छोटे-बड़े के
भाव से चश्मा निकालकर दे दिया करते
। ऐनक आंखों को माफिक न आने पर
ने मरीजों को डाक्टर आंखें धोने की दवा
र लोशन दे दिया करते थे, जो महज

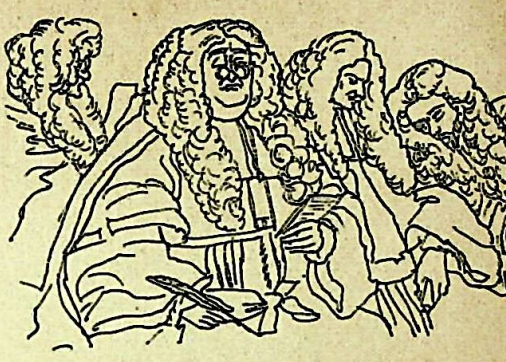

नाक पर लटका हुआ चश्मा : होगार्थ का एक चित्र

उन्होंने घड़ रखे थे, इनसे कुछ फायदा होने का सवाल ही नहीं उठता था।

ऐनक-निर्माताओं को उस जमाने में एक भारी मुसीबत से भी लड़ना पड़ा। उन दिनों लोग ऐनक को 'नाक का घोड़ा' कह-कह-कर मजाक उड़ाते थे।

पहले ऐनक के दोनों ओर दो डोरियां रहती थीं, जिन्हें सिर के पीछे या कानों से बांधा जाता था। बाद में डोरियों की जगह चमड़े की पट्टियों को दे दी गयी। धीरे-धीरे इनसे आज के 'फ्रेम' का विकास हुआ।

फिर भी अठारहवीं सदी के अंत तक ऐसा चश्मा भी चलता रहा, जिसे नाक के सिरे पर चढ़ाये रखा जाता था और इसके बजाय कि इसे पहननेवाला बुद्धिमान दिखे, वह बेव-कूफ-सा दिखता था। साहित्यकारों ने भी ऐसे चश्मे पहननेवाले का चित्रण विदूषक, मुनीम, मुंशी, क्लर्क आदि के रूप में किया है।

१९-वीं सदी तक आते-आते, एक आंखवाले या हैंडलवाले और भद्दे चश्मे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर आकारों में बदल गये। अब तो ऐनक गोल, अंडाकार या चौकोर-कई रूपों में बनते हैं और फ्रेम भी इतने सुंदर होते हैं कि पहननेवाले की शान और शोभा, दोनों बढ़ाते हैं।

जहां अब ये ऐनकें सुंदर हैं, वहां आंख की आवश्यकता के अनुरूप भी हैं। पुराने चश्मों में दृष्टि देने की क्षमता पर कोई बस नहीं था, आज के चश्मे दृष्टि-संबंधी आवश्यकता के गुण से संपन्न हैं।

जर्मन भौतिक-विज्ञानी प्रोफेसर हर्मन हेल्पहोल्ज के सराहनीय प्रयत्नों के परिणामस्वरूप १८५० के आस-पास नेत्र-विज्ञान में अभूतपूर्व उन्नति हुई। उन्होंने एक ऐसे दर्पण का आविष्कार किया, जिससे डाक्टरों को रोगी के नेत्र से परावर्तित प्रकाश का पता लग जाता है और वे उसके अनुसार चश्मे का उपयुक्त लेंस निर्धारित कर सकते हैं।

दृष्टि-संबंधी उपकरण बनानेवाले उद्योगों के विकास के साथ नेत्र-विज्ञान का भी विकास हुआ। अब ऐसे चश्मे मिलते हैं, जो कमजोर निगाहवाले लोगों को उनकी शारीरिक आवश्यकता के अनुसार फिट होते हैं, जो सुंदर भी हैं और आंख की बनावट के साथ मेल खानेवाले भी हैं।

दृष्टि-उद्योग का आधुनिकतम चमत्कार है पुतली पर लगनेवाले लेंस का आविष्कार। बहुत ही हल्के प्लास्टिक से बने ये लेंस आंख में इस तरह से लगा दिये जाते हैं कि अन्य लोगों को मालूम भी न पड़े कि आप चश्मा पहने हैं। जिस ऐनक को पहनने पर कभी चिढ़ाया जाता था, यह होगा उसका चरम परिष्कार!

समर्पण

मेरी चिद्ज्योत्स्ना समर्पित
हर क्षण उनको,
जिनके घर में आठों याम
अंधेरा छाया।
मेरे गीत समर्पित उनको
जिनके श्रम से श्लथ शरीर ने
केवल शूल बुहारे मग में,
जिन्हें न फूलों ने बहलाया।
मेरी शक्ति समर्पित उनको
जिनकी सारी शक्ति चुक गयी
जग के दारुण दुःख हरने में,
जिन्हें न सुख ने भूल-चूक
से भी दुलराया।
मेरा सब कुछ उन्हें समर्पित
जिन लोगों ने, शूली पर चढ़कर
सब सहकर,
भू-प्राणों के अंध-गर्भ में
नवोन्मेष का, नव्य चेतना का
विराट घन शंख बजाया।

—महेंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अच्छे मनुष्य' की खोज करनेवाली मदाम मांटेसरी

मेरिया रेमिडी

[illegible] १९४७–द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का [illegible]सरा साल। रोमवासियों में अभूतपूर्व [illegible]ता जाग उठी। बात यह थी कि मेरिया [illegible]री उनके बीच 'शिक्षा और शांति' पर [illegible] देनेवाली थीं।

वैसे तो मेरिया मांटेसरी रोम में ही पढ़ी [illegible] यहीं से उन्होंने औषध-शास्त्र, जीव-[illegible], दर्शन और शिक्षा-शास्त्र में उपा-[illegible] प्राप्त की थीं, छोटे बच्चों के मनो-[illegible]निक विकास के विषय में अपना सबसे [illegible] शोधकार्य भी उन्होंने यहीं किया था; [illegible] बाद में वे यही कार्य विदेशों में जाकर [illegible] लगीं–इंग्लैंड, अमरीका, स्पेन, डेन्मार्क, [illegible] और नीदरलैंड में उन्होंने स्कूल खोले। [illegible]खिर वर्षों बाद अब वे वापस रोम [illegible] थीं।

मुखड़े पर मृदु वात्सल्य, सिर पर सफेद [illegible] का ज्योतिमंडल और देह पर काली [illegible] से सुशोभित हमारी महत्वपूर्ण वयो-[illegible] महिला हमारे सामने थीं। आवाज [illegible] बड़ी ही शांत, और बोलीं वे इतनी [illegible] से कि उनकी हर बात श्रोताओं के [illegible] में पैठती गयी।

उन्होंने कहा कि विश्व को संगठित करने [illegible] जरूरत नहीं है, वह तो पहले से ही संगठित है। इस संयुक्त विश्व में हर आदमी जो काम करता है, उसका लाभ उसके पड़ोसी को भी मिलता है। कारण, आज के विश्व में हमारी आवश्यकता की वस्तुएं, प्राचीन काल के समान, हमें सीधी प्रकृति से प्राप्त नहीं होतीं। उन्हें हम तक पहुंचाने में अनेक मनुष्यों के परिश्रम का हाथ रहता है।

इस तथ्य को उन्होंने और स्पष्ट करके समझाया –"यह बात न केवल हमारे मकानों, मेज-कुर्सियों या किताबों के बारे में है, बल्कि यह फलों पर भी लागू होती है। फल, जो प्रकृति की सबसे ज्यादा शुद्ध और सीधी देन हैं, हम तक तभी पहुंचते हैं, जब मनुष्य पेड़ लगाते हैं और फल लगने पर उन्हें तोड़कर बाजार में लाते हैं।

"छोटे बच्चे स्वभाव से शांतिप्रिय बनें, इसके लिए हमें उन्हें इस नये संयुक्त विश्व में समुचित स्थान देना चाहिये। नन्हे मुन्नों को इस बात का अहसास सबसे ज्यादा आसानी से कराया जा सकता है कि काम के वक्त मानवीय सौजन्य की बड़ी आवश्यकता रहती है। कारण, यह सौजन्य हर बालक को दैनिक जीवन में बराबर मिलता रहता है। चाहे यह सौजन्य अनजाने में हो, सौजन्य तो है ही। व्यक्ति को जब यह अह-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सास होता है कि यह सौजन्य उसके अपने भीतर भी मौजूद है, तो इससे बड़ी मदद मिलती है, उसके चरित्र में निखार आता है।"

उन्होंने इस सदी के आरंभिक वर्षों में ही छोटे बच्चों में रुचि लेना शुरू कर दिया था। तब वे रोम विश्वविद्यालय के मानसोपचार औषधालय में काम करती थीं, उन्हें दुर्बल-मस्तिष्कवाले बच्चों के एक दल का अध्ययन करने का भार सौंपा गया था।

मांटेसरी ने प्रसिद्ध नृतत्वशास्त्री गिसेप सर्जी से मानसिक शोधकार्य का सम्यक वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था। सर्जी ने ही रोम विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का इंस्टिटचूट खोला था। मांटेसरी अपराध-मनोविज्ञान के अधिकारी विद्वान सीजर लोम्ब्रासो के कार्यों से भी सुपरिचित थीं। अपना अध्ययन समाप्त कर वे शोधकार्य में जुट गयीं। और असामान्यता के शारीरिक और मानसिक मूलभूत कारणों को देखने-समझने की इनकी अंतर्दृष्टि निरंतर गहरी होती गयी। साथ ही ऐसी शिक्षा-संबंधी पद्धतियों की सूझ-बूझ भी बढ़ती गयी, जिनके द्वारा मानवीय व्यवहार को सुधारा जा सके।

चिकित्सा-संबंधी शिक्षा के क्षेत्र में संसार में अन्यत्र क्या-क्या हो रहा है, इसे जानने के लिए वे विदेश-यात्रा पर चल पड़ीं। कुछ समय इंग्लैंड में रहीं, कुछ समय फ्रांस में। फ्रांस में इतार्द और सेजां के अन्वेषण इन्हें बहुत पसंद आये। जे० ई० मेरी गैस्पर्द इतार्द (१७७४-१८३८) माने हुए चिकित्सक थे, उन्होंने अपना जीवन बहरे बच्चों की शिक्षा में लगाया था।

जब मेरिया मांटेसरी रोम लौटीं, तो उन्होंने मानसिक रूप से सदोष बच्चों का अध्ययन जारी रखा, प्रशिक्षण की अपनी पद्धतियां सुधारीं और शिक्षण के ऐसे उपकरणों का आविष्कार किया, जो आज 'मांटेसरी शिक्षा-पद्धति के उपकरण' कहलाते हैं। इन उपकरणों में कुछ चीजों का एक सेट हुआ करता है। यथा—परस्पर संबद्ध पहेलियां, घन, बेलन, फीते, रंगीन वस्तुएं, अक्षर और अंक। ये उपकरण इस उद्देश्य से बनाये गये होते हैं कि इन्हें देखकर बालक में चीजों को देखने की प्रसुप्त दृष्टि जगे।

अंततः मेरिया ने अपना एक स्कूल खोला। यह स्कूल ऐसे शिक्षक तैयार करता था, जो क्षीण-मस्तिष्क बच्चों को सामान्य जीवन बिताने की शिक्षा देने का दुष्कर कार्य कर सकें।

इसी बीच मांटेसरी के दिमाग में एक ऐसा सवाल उठा, जो उन्हें दिन-ब-दिन जकड़ता गया—"अगर इस तमाम वैज्ञानिक शोध और शैक्षणिक पद्धतियों के अध्ययन के बल पर हम मानसिक रूप से सदोष बच्चों का कायाकल्प कर सकते हैं, तो यदि हम इतना ही ध्यान उन सामान्य बच्चों पर दें, जिन पर मानव-जाति का भविष्य अवलंबित है, तो इसका परिणाम क्या होगा?"

और मेरिया मांटेसरी ने तय कर लिया कि वे वैज्ञानिक शोध की पद्धतियां सामान्य बच्चों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लागू करेंगी और पक्की जानकारी
निल करने के लिए बच्चों को ऐसे वाता-
रण में रखेंगी, जहां वे अपना सहज-
स्वाभाविक व्यवहार करते हों।

ऐसा सुअवसर भी शीघ्र ही आ गया। न नगर में गंदी बस्तियों की जगह कम किरायेवाले मकानों के बड़े-बड़े ब्लाक बनाये ये। हर ब्लाक के साथ एक-एक शिशु-
क्षण-गृह भी बनाया गया और मेरिया
टेसरी को कहा गया
कि वे इन शिशु-गृहों
का प्रबंध संभालें। यह
सन १९०६ की है।
इन शिशुशालाओं के
बच्चों को मांटेसरी-
शिक्षा के उपकरण दिये
गये। ये बच्चों में स्पर्श,
श्रवण और निरीक्षण
की संवेदना को जागृत
करते थे। सबसे ज्यादा
महत्व की बात यह थी कि
इन बच्चों के शिक्षक
यद्यपि अपने शिष्यों पर नजर तो बराबर
रखते थे; पर उन्हें इस बात की पूरी स्वतं-
त्रता दे देते थे कि उनके जो जी में आये करें।

और तब ये शिक्षक और स्वयं मांटेसरी
भी चकित रह गये, जब इन्होंने देखा कि
उनमें धीरे-धीरे एक नये प्रकार के बालक
का उदय हो रहा है—ऐसे बालक का, जो
किसी एक काम पर ज्यादा देर तक अपना
ध्यान केंद्रित कर सकता है, जो विचार-

मदाम मांटेसरी

वान है, जो इस शांत प्रयोगात्मक वाता-
वरण में अपना मनोवैज्ञानिक विकास करता
जा रहा है, और स्वयं अपना व्यक्तित्व
गढ़ता जा रहा है। ऐसा बालक, जो बड़ा
उदार और स्वभावतः सुशील है—दूसरों के
साथ कतई झगड़ा-फसाद न करनेवाला
बच्चा है।

क्या यह अनाक्रामक शिशु की खोज ही
थी, जिसने मांटेसरी को इस परिणाम पर
पहुंचाया कि मनुष्य का
जन्म शांतिपूर्वक काम
करते हुए जीने के लिए
हुआ है, न कि परस्पर
लड़ने - भिड़ने और
विनाश के लिए? या
मांटेसरी की यह इच्छा
थी कि मनुष्य को कोई
ऐसा मार्ग दिखाया
जाये कि वह शांति-पथ
पर चले? हम नहीं कह
सकते कि वह कौन-सा
कारण था, जिसने उन्हें
ऐसी पद्धतियों और वातावरण की खोज की
प्रेरणा दी, जिसमें शांतिप्रिय मनुष्य का
उदय हो। किंतु उस समय से मांटेसरी का
सबसे बड़ा काम यह हो गया, और इसी में
वे आगे जीवन - भर लगी रहीं कि 'अच्छे
मनुष्य' की खोज की जाये; यह 'अच्छा
मनुष्य' हर बच्चे में पाया जाता है, जो
दुनिया में आता है।

इन्हीं दिनों उन्होंने यह बात भी महसूस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की कि यदि बच्चे की इच्छाएं अतृप्त रखी जाती हैं, तो इससे उसके मन में गांठें पड़ जाती हैं और बड़े होने पर भी अंतर्द्वंद्व के रूप में ये उसमें मौजूद रहती हैं। वयस्क और बालक के साथ जो भेद-भरा बरताव किया जाता है, बड़े होने पर बालक के मन से इस व्यवहार का असर नहीं जाता। जब बच्चा ऐसे अंतर्द्वंद्व के साथ विकसित होता है, तो उसके सर्वोत्तम आत्मिक गुण नष्ट हो जाते हैं।

१९३२ में, नीस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो के सम्मेलन में मेरिया मांटेसरी ने पहली बार सार्वजनिक मंच पर भाषण दिया था। विषय था 'शिक्षा शांति के लिए'। उन्होंने कहा था कि सदियों पहले मानव-जाति में जब कोई महामारी फैलती थी, तो वह लाखों लोगों को लील जाती थी। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक कि मनुष्य ने उन कीटाणुओं का पता नहीं लगा लिया, जो उस महामारी के कारण थे। इसके बाद टीका वगैरह लगवाने जैसे कुछ स्वास्थ्य-संबंधी नियम बनाये गये और उन्हें समाज पर लागू किया गया। परिणामतः आधुनिक मनुष्य अपने पूर्वजों की अपेक्षा महामारी के संकट से मुक्त है।

"युद्ध भी महामारी के समान ही है", मांटेसरी ने कहा—"यह मानव समुदाय को काल के गाल में इस तरह झोंकता है कि हम भौंचक्के रह जाते हैं। लेकिन जिस तरह महामारी से मुक्त होने के लिए हमने एक नयी शारीरिक आचार-संहिता स्वीकार की, उसी प्रकार युद्ध से मुक्ति पाने के लिए हमें एक नयी आध्यात्मिक आचार-संहिता अपनानी चाहिये।

"बच्चे से यह आशा की जाती है कि वह घर और स्कूल में आज्ञाकारी हो। क्योंकि आज्ञाकारिता की इस मांग का आधार कोई आंतरिक विश्वास नहीं होता और यह तर्क या न्यायसम्मत नहीं होती, यह ऐसे मनुष्य पैदा करती है, जो अंध-शक्तियों के सामने सिर झुकाये रहें। पाठशालाओं में बालकों को दंड देने के तरीके खूब प्रचलित हैं और ये सब ऐसे हैं कि अपराधी की खुले आम निंदा करते हैं—स्कूल न हुआ, अदालत का कठघरा हो गया। दंड के ये ढंग बालक के मन में जनमत का हौआ खड़ा कर देते हैं। भले ही यह जनमत स्पष्टतः अनुचित हो और गलतफहमियों पर आधारित हो, बालक के मन में इसका भय समा जाता है।

"ऐसी परिस्थितियों के साथ समझौता करने का परिणाम होता है व्यक्ति के मन में स्थायी हीन-भावना की उत्पत्ति। इससे व्यक्ति में एक ऐसी पूजा-भावना पनपती-फूलती है, जिसे लगभग मूर्ति-पूजा का दर्जा दिया जा सकता है। आरंभ में बच्चे के मन पर जो संस्कार माता-पिता और शिक्षकों के प्रति पैदा किये गये, वे ही आगे चलकर नेताओं और अफसरों के प्रति भी बन जाते हैं। दमित व्यक्तित्व के लोगों के लिए अब ये लोग 'माई-बाप' और 'अन्नदाता' बन जाते हैं। इस प्रकार पाठशालाओं का अनुशासन दासता के संस्कार डालता है।"

मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मांटेसरी ने स्कूलों के बारे में कहा कि
[illegible] प्रकार से युद्ध की प्रवृत्तियां पनपाने-
[illegible] स्थान हैं। बजाय इसके कि ये बालक
सामाजिक भावना का विकास करें, ये
मिटाते हैं। पांच वर्ष बाद इसी बात पर
देते हुए उन्होंने कहा—"आज की शिक्षा
बालक में एकाकीपन और अपने
गत स्वार्थों में लिप्त रहने की प्रवृत्ति
प्रोत्साहन देती है। बच्चों को सिखाया
है कि वे एक-दूसरे की मदद न करें;
कोई बात नहीं आती, उन्हें वे न
चाहें; किसी और की नहीं, सिर्फ अपने
काम की बात सोचें और अपने साथियों
प्रतियोगिताओं में बाजी मार ले जाने की
त्मक कोशिश करें।

"ऐसे स्वार्थ-लिप्त बालक आगे चलकर
या में क्या करेंगे? व्यावहारिक मनो-
ज्ञान के अनुसंधान से प्रकट हुआ है कि ऐसे
अपने पड़ोसियों से अलग निष्क्रिय पड़े
हैं—जैसे रेगिस्तान में रेत के कण।
कोई तूफान आये, तो इन बिखरे
मानवीय रजकणों को मजे से उड़ा ले
जायेगा और मृत्यु के गर्त में फेंक देगा।"

मृत्यु के गर्त में फेंक देनेवाला झंझावात
क्षितिज पर उन दिनों उठ भी रहा था—
सन् १९३७ का साल जो था।

कोपनहेगन में हुई छठी अंतर्राष्ट्रीय
मांटेसरी कांग्रेस के अवसर पर संस्थापिका
मांटेसरी ने कहा था—"शांति के लिए शिक्षा
हो—ये शब्द आदेश के समान माने जाने
चाहिये।" इस कांग्रेस में विश्व के अनेक देशों
के प्रतिनिधि शामिल थे। उनके सामने
मेरिया ने घोषणा की कि शांति ही मानव-
जाति का सच्चा ध्येय है और शिक्षा शांति
के लिए, शांतिप्रिय बालक के निर्माण के लिए
होनी चाहिये।

प्रश्न हो सकता है कि मेरिया मांटेसरी
के विचारों में मौलिकता क्या है? निस्संदेह
उन्होंने रूसो की उस महान परंपरा का अनु-
सरण किया है, जिसके अनुसार बालक को
मूलतः अच्छा माना जाता है, समाज उसे
बिगाड़ देता है। पर रूसो की यह प्रतीति
उसकी काव्यात्मक अनुभूति की उपज थी,
जबकि मेरिया इस निष्कर्ष पर पहुंची थीं
प्रामाणिक वैज्ञानिक अध्ययन के बाद—तब,
जब वे स्वयं सैकड़ों बच्चों को निरख-परख
चुकी थीं।

यह भी सही है कि जहां मेरिया मांटे-
सरी अनुसंधान और प्रयोगों में लगी हुई थीं,
वहां संसार के अन्य अनुसंधानी भी इसी
प्रकार के प्रयोगों में लगे हुए थे और वे भी
एक-से परिणामों पर पहुंचे। किंतु वह अकेली
मेरिया मांटेसरी ही थीं, जिनकी आत्मा में
मानव-जाति के कायाकल्प की ज्योति प्रखर-
तम रूप में प्रज्वलित हुई और वह अकेली
मांटेसरी ही थीं, जिन्होंने दुनिया को यह
बताया कि शिक्षा-पद्धति के अतिरिक्त और
कोई उपाय नहीं है, जिससे ऐसे मनुष्यों का
आविर्भाव किया जा सके, जो इतने नतिक
गुण-संपन्न हों कि अपनी बढ़ती हुई
अपरिमित वैज्ञानिक शक्ति को अपने नियं-
त्रण में रख सकें।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जर्मन कहानी

तीसरी मोमबत्ती

पाउल आल्वार्डेस

उम्र से अभी वह बालक ही था; पर अपने डील-डौल के हिसाब से बहुत बड़े कपड़े पहने रहता था। कड़े कालर के ऊपर काली टाई, लंबी काली पतलून और उसी रंग का कोट—यह था उसका पहनावा। पतलून उसकी छाती तक पहुंचती थी; पर कोई देख नहीं पाता था। जाड़े के उन दिनों में इससे ठंड से बचाव भी हो जाता था। खूंटे-जैसे खड़े-खड़े बालों को वह पोमेड लगाकर बैठाये रहता था। श्रीमती श्मित्स ने इसी उद्देश्य से तो उसे पोमेड दिया था। श्रीमती श्मित्स नदी पर बसे एक शहर के छोटे-से अतिथि-गृह की मालकिन थीं और हाइनरिश उनके यहां नौसिखिए वेटर के रूप में काम कर रहा था।

यह हाइनरिश का जन्म-स्थान नहीं था। वह ओडरब्रुख की ओर से आया था। न मालूम माता-पिता और भाई-बहन-विहीन वह यहां कैसे आ पहुंचा था। जो भी हो, वह काला सूट उसे बहुत बड़ा पड़ता था। श्रीमती श्मित्स के दो जवान लड़कों में से किसी एक का रहा होगा वह सूट! ये दोनों लड़के रूस के मोर्चे से वापस नहीं लौटे थे। परंतु श्रीमती श्मित्स इसकी कभी चर्चा नहीं करती थीं, और हाइनरिश से तो भूलकर भी नहीं। वे पुराने ढंग का डोरेवाला चश्मा पहने रहती थीं। इससे उनका चेहरा कठोर लगता था। जब कभी वे चश्मा उतारतीं, उनकी आंखों के नीचे दो गहरे लाल निशान दिखाई देते थे, और ऐसा लगता था, जैसे वे अभी रोयी हों। और रोने का कारण भी था। मगर अपने एकांत जीवन द्वारा वे हाइनरिश के जीवन को अधिक कठिन नहीं बनाना चाहती थीं। क्यों कि उस बालक पर भी काफी बीत चुकी थी।

श्रीमती श्मित्स का मकान चार सौ साल पुराना था; पर अभी तक अच्छी हालत में था। सिर्फ ऊपर का कलश कई अग्निकांडों के कारण सुनहरापन खोकर काला पड़ गया था। कलश के ठीक नीचे एक कमरा था, जिसमें उनके दोनों लड़के रहते थे, जो मृत घोषित कर दिये गये थे। आज भी श्रीमती श्मित्स इस कमरे को करीने से सजाकर रखती थीं। कोई इस कमरे में रहता नहीं था और न ही किसी के रहने की आशा थी, फिर भी वे सर्दियों में कमरे को हमेशा गर्म रखती थीं।

साथ का कमरा उन्होंने हाइनरिश को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खा था। मगर उसमें न कोई खिड़की थी
न ठंड के दिनों में आग जलाने के लिए
हा था। खपरैलों के बीच जड़े हुए एक
कांच के जरिये उसमें मद्धिम प्रकाश
ता था। इस कांच को उठाया जा सकता
। जब कभी हाइनरिश के पास समय
ता, वह एक स्टूल पर चढ़कर कांच को
ा देता और छत में से सिर निकालकर
र देखा करता था। वहां से दूर-दूर तक
न नदी दिखाई देती थी, देखकर उसे
नी जन्मभूमि की ओडर नदी याद आ
ती। इसीलिए वह प्रसन्नचित्त वहां खड़ा
ता।

परंतु इसका मौका बहुत कम ही मिलता
, क्योंकि जब वह रात को काम निबटा-
र कमरे में आता, उसे सो जाने की जल्दी
ती थी। मोमबत्ती जलाकर वह अपना
ा सूट उतारता था और कड़े कालर को
, जिसके कारण उसके गले पर एक घाव-
सा बन गया था। और तब पता चलता था
कि वह नौजवान नहीं, बल्कि अभी किशोर
ी था, संकरी छातीवाला, ठंड से ठिठुरती
तली टांगोंवाला एक किशोर! किंतु गनी-
त थी कि थकावट के कारण उसे जल्दी ही
ींद आ जाती थी और अपने बारे में वह
ज्यादा सोच नहीं पाता था।

× × ×

अब, जबकि राइन की घाटी में सर्दियां
तर आयीं और छोटी-छोटी नदियां तथा
झरने जम गयीं, तो हाइनरिश के मन में तरह-
रह के विचार उठने लगे। उसे अपना घर
याद आने लगा। ओडर नदी के पानी का
जम जाना याद आने लगा, जिस पर लोहे
के जूते पहनकर वह स्केटिंग किया करता
था। मीलों तक चमकती हुई बर्फ जमी रहती
थी। और उस पर वह खेला करता था—
उत्तर ध्रुव के खोजियों की यात्रा का खेल।
और बर्फ-ही-बर्फ देखकर साथी बालकों के
साथ खुशी के मारे चिल्ला उठता था।

एक दिन दोपहर श्रीमती श्मित्स ने उसे
ज्यों-त्यों छुट्टी दे दी, तो वह शहर के बर्फ
के मैदान पर जा पहुंचा। लाउडस्पीकर का
संगीत शोर मचा रहा था। जब भी संगीत
बंद होता, बर्फ पर लोहे के जूतों के फिसलने
की सरसराहट और बच्चों की किलकारियां
सुनाई देती थीं। मंत्रमुग्ध-सा खड़ा हाइन-
रिश यह नजारा देखता रहा, मुस्कराता
रहा, संगीत की लय के साथ धीरे-धीरे अपने
कूल्हे हिलाकर झूमता रहा। वह रसिया
था। पर आज उसके पास स्केटिंग के जूते न
थे। शायद उसी दिन उसने मन-ही-मन एक
निश्चय कर डाला।

श्रीमती श्मित्स के घर में एक पुरानी
अलमारी थी, जिसकी चाबी वे अक्सर उसी
में लगी रहने देती थीं। उत्सुकतावश हाइन-
रिश कभी-कभी उसे खोलकर उसमें झांक
लिया करता था। उसमें मालकिन के रूस
से वापस न लौटे हुए लड़कों के बचपन के
खिलौने संभालकर रखे हुए थे। उन्हीं के
बीच इस्तेमाल किये हुए स्केटिंग के जूते भी
थे, जो उसी के पैरों के नाप के थे। उनके बारे
में वह बहुत बार सोच चुका था। कई दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाद हिम्मत करके उसने अलमारी में से वे जूते निकाल लिये ।

फिर आ पहुंची क्रिस्मस की शाम ।और श्रीमती श्मित्स के यहां उस शाम को वही हमेशा के इने-गिने मेहमान आनेवाले थे । कुछ घंटों के लिए उन्होंने अपना अतिथि-गृह बंद कर दिया था। हाइनरिश ने जल्दी-जल्दी ये जूते बगल में दबाये और दबे पांव घर के बाहर निकल गया । उसने वही काला सूट पहन रखा था । पतलून उसकी छाती

चित्रकार : शर्मा

को गर्म रख रही थी । वह चाहता था कि सैर में जरा भी वक्त गंवाये बिना बर्फ के मैदान पर जाये और समय पर अपने काम पर लौट आये ।

मगर वह बर्फ के मैदान पर नहीं गया। उसके पास मैदान में प्रवेश करने के टिकिट के पैसे ही कहां थे ? यही चीज उसे शहर के बाहर खींच ले गयी, जहां कारखानों और बारूद से ध्वस्त बंकरों के पीछे एक संकरी नहर शुरू होती थी और पुलों के नीचे से गुजरती हुई मैदानों में खो गयी थी। उस पर काली चमकती बर्फ जम गयी थी, जिस पर बहती हवा बर्फ की रेत बिछा रही थी। उसके गांव में ओडर नदी भी सर्दियों में हूबहू ऐसी ही दिखती थी। और ये जूते भी तो उसके अपने जूतों की तरह बिलकुल ठीक बैठते थे ।

बड़े लंबे अरसे के बाद आज वह खुश था- बेहद खुश । होठों पर मधुर मुस्कान लिये वह काफी समय तक बर्फ पर इधर-से-उधर दौड़ता रहा । फिर एक बार झुककर लोहे के जूतों की नोक पर जोर डालकर वह जोर से उछला । छोटा होते हुए भी वह स्केटिंग के फन में उस्ताद था । हांफते-हांफते उसने अपने को संभाला । और देखते-ही-देखते काफी दूर निकल आया था । वह अकेला ही था । शाम के झुटपुटे में तेज हवा बेरोक-टोक बह रही थी और हृदय में सुखद स्मृतियां जगा रही थी । वह कल्पना कर रहा था, मैं एक कुशल अन्वेषक हूं और उत्तर ध्रुव के बर्फीले रेगिस्तान में पहुंच गया हूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार के सपनों में खोया हुआ वह ...पर दौड़ता रहा, दौड़ता रहा। फिर ...नक उसे दूर जंगल के वृक्षों की नीली ...र दिखाई दी। उसने सोचा, अब लौट ...ना चाहिये। और ठीक तभी उसके पैरों ...नीचे की बर्फ हल्की-सी आवाज के साथ ...गयी।

वह चौंक पड़ा और उसने अपने आपको ...र तक पानी में धंसा पाया। उसकी दोनों ...बाहर बर्फ पर फैली रह गयीं। वह ...कुल हिलना-डुलना नहीं चाहता था। ...सावधानी से वह उस छेद से बाहर ...कला।

सौभाग्य से किनारा पास ही था। पर ...नारे लगने पर उसे मालूम हुआ कि उसके ...ों में एक ही जूता था। क्षण-भर को उसके ...में विचार आया कि बचे हुए जूते को ...पानी में फेंककर घर पहुंच जाऊं। मगर ...का सूट भी—नहीं, सूट उसका कहां था! ...कमर तक भीग चुका था और इस चीज ...छिपा नहीं सकता था। दूसरे, अब अंधेरा ...हो चला था। कांपते हुए उसने कोट ...कर किनारे पर रख दिया। पास ही ...हुआ जूता भी रख दिया। फिर उत्ते-...ना और कंपकंपी के साथ वह बर्फ के टूटने ...जगह चला। ज्यों ही उसने जूता खोजने ...लिए अपना हाथ छेद में डाला कि उसके ...रों के नीचे की बर्फ फिर टूट गयी और इस ...वह सिर तक अंदर डुबकी मार गया। ...जल्दी ही वह ऊपर आ गया और उसके ...जमीन पर आ टिके। भयपूर्ण निश्चय के साथ उसने एक बार फिर पानी में डुबकी मारी। ठंडे बर्फीले पानी से उसका मुंह ठिठुर गया; मगर इस बात से उसे बड़ा आश्वासन मिला कि उसके हाथ ने जूता ढूंढ़ निकाला था। झुंझलाहट के साथ आधे विजयोल्लास और आधी शिकायत की मनोदशा में उसने जूते को पूरा जोर लगा-कर किनारे पर फेंक दिया, मानो वह पकड़ी हुई मछली हो। तुरंत वह तट पर आ खड़ा हुआ और ठंड से कांपते-कांपते उसने अपनी पानी चुआती हुई कमीज पर कोट चढ़ाया और मैदान की नीरवता में शहर की तरफ चल दिया।

श्रीमती श्मित्स के मेहमान कभी के विदा हो चुके थे और अब वे नाक पर ऐनक चढ़ाय गल्ले की मेज के पीछे ग्राहकों की प्रतीक्षा करती हुईं अखबार पढ़ रही थीं। दरवाजे पर आहट सुनते ही उन्होंने ऐनक के कांच के ऊपर से देखा। हरा परदा जरा-सा हटा, एक सफेद चेहरा अंदर घुसकर अदृश्य हो गया। श्रीमती श्मित्स को फिर एक ध्वनि सुनाई दी, किसी लोहे की वस्तु की ध्वनि, जो एकबारगी खनखनाकर बंद हो गयी। थोड़ी देर तक निःस्तब्धता छायी रही और परदे के पीछे से हाइनरिश की पतली देह-यष्टि दिखाई दी। उसके सिर के बाल सीधे खड़े थे और वह मालकिन के पास से जल्दी से गुजर जाना चाहता था।

"नमस्ते, श्रीमती श्मित्स", उसने धीरे से कहा—"मैं जरा दूर घूमने चला गया था।" और वह अतिथियों के लिए मेजें सजाने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमती श्मित्स ने देखा कि उसका सारा शरीर ठिठुर रहा था। उसकी पतलून का कपड़ा बर्फ के कणों के कारण चमक रहा था। और वह मेज सजाये जा रहा था। "कहां गया था रे तू?" श्रीमती श्मित्स ने पूछा।

"यहीं जरा," हाइनरिश ने जवाब दिया और अपना फीका चेहरा उनकी ओर मोड़ कर बोला—"कोट अभी सूख जायेगा—यहां खासी गर्मी है।" उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे, उसकी आंखें अपने गड्ढों में चमक रही थीं।

"और तूने क्या शक्ल बनायी है?"

हाइनरिश लड़खड़ाते हुए उनके पास आया और बोला—"मैं बर्फ पर खेलने चला गया था, सचमुच की नहीं। मैं नहर की बर्फ पर दौड़ने गया था।"

"बर्फ पर दौड़ने? जूते कहां से लाया?"

"वही जो ऊपर हैं।" हाइनरिश ने इशारा किया—"अलमारी में से। आपको तो मालूम ही है। एक जूता पानी में गिर गया था।"

हाइनरिश ने अपने सिर को झटका दिया। मालकिन के पास से हटकर वह सीधा दरवाजे की ओर गया। फिर लौटकर उसने उनके सामने जूते रख दिये—"ये रहे, अब भी बिलकुल ठीक हैं। जो जूता पानी में गिर गया था, उसे मैंने डुबकी मारकर निकाल लिया।" वह बोला। फिर अपना सिर एक तरफ झुका लिया। वह कुछ कहना ही चाहता था कि एक आह उसके मुंह से निकल गयी। वह चुपचाप खड़ा रह गया। उसके सब अंग कांप रहे थे और दांत कट-कटा रहे थे।

श्रीमती श्मित्स की विचित्र हालत थी। हाइनरिश को इस तरह देख रही थीं, मानो पहली ही दफा देख रही हों। फिर वे अपने हाथ मलने लगीं। उनकी सांस भारी हो गयी और उनके होंठ फड़फड़ाने लगे।

हाइनरिश की कल्पना के विपरीत वे बोलीं—"हे भगवान..... बेटा!" इस आवाज में दर्द भरा था। वे फौरन उसके एकदम पास आ गयीं और बोलीं—"चलो बेटा। यह कमरा बहुत ठंडा है।"

× × ×

हाइनरिश जब जागा, उसने अपने को श्रीमती श्मित्स के रूस से न लौटे हुए जवान बेटों के नरम बिस्तर पर गले तक रजाई से ढंका हुआ पाया। कूल्हों के पास उसे गर्म पानी की बोतलों का स्पर्श अनुभव हुआ। कमरे के एक कोने में अंगीठी में कोयला दहक रहा था। मेज पर एक लैंप जल रहा था, जिसे कपड़े से ढंक दिया गया था। उसके पास और भी कुछ रखा था, जिसे उसने धुंधले प्रकाश में भी पहचान लिया। वह था छोटा-सा क्रिस्मस वृक्ष। उस पर किसी तरह की सजावट न थी। बस उसकी दो टहनियों के सिरों पर दो मोमबत्तियां जल रही थीं—एक बायें और एक दायें। हाइनरिश ने फिर आंखें बंद कर लीं। तब उसे याद आया कि किसी ने घुटनों के बल बैठकर उसके शरीर पर से गीले कपड़े एक-एक करके उतारे थे और गर्म-गर्म काफी पिलायी थी। फिर वह सो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ब वह दोबारा जागा, तो गिरजे का ...घना रहा था। आधी रात बीत ...ी थी। थोड़ी देर बाद दरवाजे के ...किसी के चलने की आहट सुनाई दी। ...ाजे का हत्था धीरे-से नीचे को घूमा ...ऐनकवाले एक चेहरे ने अंदर प्रवेश ...। अब श्रीमती श्मित्स उसके बिस्तर ...न खड़ी थीं।

"बच्चे, अभी थोड़ा और सो लो; सब ...हो जायेगा।" वे धीरे से फुसफुसायीं ...रजाई से उसके पैर अच्छी तरह ढंक ...। फिर वे मेज के पास गयीं। हाइन-रश ने देखा कि उन्होंने अपनी जेब से एक मोमबत्ती निकाली और उसे उन दो मोमबत्तियों की तरह एक टहनी पर लगा दिया। फिर वे उसके पास चली आयीं और झुककर उसे देखने लगीं। शायद वे उसे अच्छी तरह देख न सकीं। उन्होंने नाक पर से ऐनक हटा ली, ऐसा लगा कि वे अभी रोयी हैं। मगर वे मुस्करायीं और धीमे-धीमे सिर हिलाती हुई देखती रहीं। हाइनरिश के होंठ जरा हिले और वह करवट बदलकर सो गया, मानो वह कोई अपरिचित स्त्री न थी।

मूल जर्मन से अनुवाद : नरेंद्र नायक

चौपदे और दोपदे

उन दिनों श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हिन्दू विश्वविद्यालय के महिला ...ेज में पढ़ाते थे और मैं बी० ए० में पढ़ता था। इसलिए वे मेरे शिक्षा-गुरु तो नहीं ...; किंतु उनकी कृपा मुझे प्राप्त थी, क्योंकि बाबू श्यामसुंदरदास ने मेरा परिचय उनसे ...ा दिया था। मैं प्रायः हरिऔधजी के निवास स्थान पर जाया करता था। एक दिन ...बोले—"देखो, मेरे 'चोखे चौपदे' काफी हो गये हैं। तुम उनकी प्रतिलिपि करके प्रेस ...ी तैयार कर दो। तुम्हें कुछ पारिश्रमिक दे दूंगा।" पारिश्रमिक की बात पर संकोच ...ट करते हुए मैंने प्रतिलिपि करना स्वीकार कर लिया और प्रतिदिन घंटे-दो घंटे ...कर लिखने भी लगा।

मेरे माता-पिता, भाई आदि भी काशी में ही रहते थे, जिनके पालन का पूरा भार ...ऊपर था। एक दिन आर्थिक संकट के कारण मेरे मुख पर उदासी का भाव स्पष्ट ...। हरिऔधजी पूछ बैठे कि आज उदास कैसे दिखते हो? मैंने टालना चाहा; किंतु वे ...छा छोड़नेवाले न थे। मैंने सब कुछ साफ-साफ बता दिया। तत्काल पचीस रुपये निकाल ...र उन्होंने मुझे दिये और कहा—"पहले घर का काम निपटा आओ, फिर यह काम।" मैं रुपये लेने में झिझकने लगा, तो स्नेहपूर्वक बोले— "भाई, मेरे चौपदे किसी दोपदे (मनुष्य) की थोड़ी उदासी भी दूर न कर सके, तो इन्हें मैं 'चोखे' किस बल पर कहूंगा?"

और मुझे रुपये लेकर ही घर जाना पड़ा।

आज भी जब महाकवि की पर-पीड़ा-अनुभूति एवं उदारता का स्मरण होता है, ...श्रद्धा से नेत्र छलछला आते हैं।

—चंद्रशेखर पांडेय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महीपसिंह

झांसी आकर मधु को मालूम हुआ, पंजाब मेल पांच घंटे लेट है। मई के महीने में दोपहर के एक बजे झांसी स्टेशन भट्ठी बना हुआ था। बंबई जानेवाला डिब्बा झांसी मेल से काटकर दूर खड़ा कर दिया गया। अंदर कितनी उमस थी! स्त्रियों के पल्ले अस्त-व्यस्त होकर इधर-उधर झूल गये थे। और पसीने की धारें ऊपर इस तरह अनवरत बह रही थीं जैसे वे स्त्रियां नहीं, बस पसीना हैं। उनकी कम-ज्यादा सुंदरता, उनकी आयु का छोटा-बड़ापन उस पसीने के नीचे डूब गया था।

फिर भी वे स्त्रियां थीं, जो एक क्षण को भी नहीं भूलतीं कि वे स्त्रियां हैं। पसीने से ही अपने मुंह पोंछ-पोंछकर वे कंघी-चोटी करने में लग गयी थीं।

पुरुष अपने जैसे-तैसे कपड़ों में डिब्बे से उतरकर प्लैटफार्म पर चक्कर लगा रहे थे।

मधु ने अपने बैग से एक उपन्यास निकाला और एक खाली बेंच पर बैठकर पढ़ने लगा। पर पढ़ा कहां जा रहा था। उसे लग रहा था, शरीर पर सैकड़ों चींटियां एक साथ चल रही हैं।

तभी उसने देखा, सामने से सुधीर आ रहा है। वही उसकी दी हुई पुरानी कार्डु राय की पैंट और सिल्क की गंदी बुशर्ट, जो पैंट में दबी हुई थी। सुधीर ने भी देख लिया कि मधु ने उसे देख लिया है। अपना रुख बदलकर वह उसके पास आ गया।

"तुम यहां कहां?" मधु ने बहुत गंभीर होकर पूछा।

"मैं बंबई जा रहा हूं?"

"बंबई.....? क्यों ..... ?"

"ऐसे ही ...वहीं कुछ नौकरी करूंगा।"

"वहां रहोगे कहां?" मधु ने कुछ रुककर प्रश्न किया। मतलब साफ था—"क्या मेरे यहां रहने के इरादे से जा रहे हो और यदि यही इरादा है, तो तुमने उसकी खबर तक मुझे देने की जरूरत नहीं समझी।"

वह उसका मतलब समझ गया, बोला—"कल्याण में मेरा एक दोस्त है, उसी के पास रहूंगा।"

मधु के अहं को कुछ चोट-सी लगी—तो यह वहां बिना उसकी सहायता के ही रह सकता है। बोला—"देखो सुधीर, मैं तो तुम्हारे लिए इतना कुछ करके हार गया। अब तुम फिर बंबई की खाक छानने जा रहे हो। पर अब मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूंगा।"

"अब मैं आप से कोई मदद नहीं लूंगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी।"

र तुम अपने घर में ही क्यों नहीं रहते ? मां-बाप के पास ? इतनी उम्र तुमने रह भटकते हुए गुजार दी, अब तो कुछ व लाओ .....।" वह शायद कुछ और ा; पर उसने देखा सुधीर उसी तरह देखता हुआ निरपेक्ष है, जैसा कि वह तरह की बातें सुनते समय हो जाया ता है।

ह चुप हो गया, सुधीर उठकर चला ।

ह फिर उपन्यास में अपना मन लगाने ; पर उपन्यास के सारे पात्र जो अभी- उसके आस-पास घूम रहे थे, उससे भागे थे। और उसने जब फिर उन्हें नामने की पंक्तियों में पकड़ना चाहा, बार-बार उसकी पकड़ में सुधीर ही ा। उसने बार-बार उसे झटका, उसे फेंका और अपने उपन्यास के पात्रों के बैठना चाहा; परंतु उसने बार-बार देखा कि सुधीर वहां बैठा हुआ है। झंझलाकर उसने उपन्यास बंद कर दिया र आंखें बंद कर बेंच पर लेट रहा। उसे ने भाई की बात याद आयी—तुम इसके ा कुछ भी करो मधु, यह दुरुस्त होने- ला नहीं है। दो साल तुमने इसे अपने पास में रखा; पर क्या बना ? यह तो कुत्ते पूंछ है, पूंछ ! नली चाहे टेढ़ी हो जाये; वह सीधी होने से रही।

झले भैया बोले—"अब यह पूरा चार बीस हो गया है।" उन्होंने सुधीर की चार सौ बीसी की सबसे ताजी घटना सुनायी। बोले—"इसे कहीं से मालूम हुआ कि इसके पिता की जान-पहचान का एक आदमी अपनी साइकिल बेचना चाहता है। यह उसके पास पहुंचा और बोला, मेरे पास एक ग्राहक है, जिसे साइकिल की बड़ी सख्त जरूरत है। मैं आपकी यह साइकिल सौ रुपये में बिकवा सकता हूं। उन सज्जन को अपनी साइकिल के साठ-सत्तर रुपये से ज्यादा मिलने की आशा नहीं थी। सौ रुपये की बात सुनकर वे बड़े खुश हुए।

"सुधीर की नजर में एक ऐसा व्यक्ति भी था, जिसे पुरानी साइकिल की जरूरत थी और वह उसके लिए सौ रुपये तक खर्च कर सकता था। इसने उससे कहा, मैं तुम्हें अच्छी पुरानी साइकिल कुल साठ रुपये में दिला सकता हूं। सुनकर वे भी खुश हुए।

"सुधीर बेचनेवाले से साइकिल यह बहाना करके लाया कि वह उसे खरीदनेवाले को दिखाने ले जा रहा है। खरीदनेवाले को साइकिल दिखाकर उसने उससे साठ रुपये ले लिये, और यह कहकर उसी साइकिल पर बैठकर वापस आ गया कि मैं अभी इसकी रसीद बेचनेवाले से लेकर आता हूं। साइकिल लेकर वह तीसरे व्यक्ति के पास पहुंचा और उसे अपनी बताकर, पचास रुपये में में बेच दी, और ११० रुपये जेब में डालकर दिल्ली रफूचक्कर हो गया।"

बेंच का हैंडिल उसके सिर में गड़ रहा था। ऐसा प्रमाद दिल-दिमाग पर छाया हुआ था कि न आंखें बंद किये ही चैन था, न आंखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोले ही। चारों ओर आग बरस रही थी। लखनऊ से सुबह नहा-धोकर वह गाड़ी में बैठा था; पर झांसी तक आते-आते ऐसा लग रहा था, जैसे हजारों मील लंबी रेगिस्तानी यात्रा की है, और महीनों से नहाना-धोना नहीं हुआ है।

वह उठा और टी-स्टाल पर जा खड़ा हुआ। देखा, सामने सुधीर खड़ा चाय पी रहा है। उसने एक नजर मधु की ओर देखा, फिर प्याले पर झुक गया। वह भी इधर-उधर देखता हुआ चाय पीने लगा। प्लैटफार्म की सीमेंट की चद्दर बड़ी ऊंची थी। सामने धूप में जाल-सी बिछी हुई पटरियां चमचमा रही थीं। उसी तरफ से अभी पंजाब मेल आने-वाली थी। मधु ने बड़े अन्यमनस्क भाव से घड़ी देखी। साढ़े चार बजे थे, गाड़ी ६ बजे से पहले आने की उम्मीद नहीं थी।

उसने देखा, सुधीर चाय के पैसे दे रहा है। उसने सिर दूसरी ओर घुमा लिया, उसे ऐसा लगा जैसे पीछे से कोई बड़ा घृणित व्यापार हो रहा है, जो उसे नहीं देखना चाहिये। क्या अजीब बात है? वह और सुधीर एक ही स्टाल पर खड़े चाय पी रहे हैं और सुधीर अपने पैसे अलग से दे रहा है।

कल्याण स्टेशन पर वह उनके डिब्बे के सामने से गुजरा, तो दीपू ने उन्हें झझकोर कर कहा—"पापा, वह देखो सुधीर भैया।"

वह सिर झुकाये अखबार पढ़ रहा था। नजर उठाकर देखा, सुधीर अपना पुराना-सा ट्रंक उठाये सामने के पुल पर चढ़ रहा है, फिर वह धीरे-धीरे ओझल हो गया।

कुमुद बिस्तरे संभालने में लगी हुई थी। दीपू की बात से चौंकी—"कौन था?"

उसने कहा—"सुधीर।"

"सुधीर.....। वह यहां कहां?"

"वह तो लखनऊ से हमारे साथ ही आया है।"

"आपको कैसे मालूम?"

"वह मुझे झांसी स्टेशन पर मिला था।"

कुमुद गंभीर हो गयी, बोली—"वहां जो करतूतें करके आया है, वे तो आपको मालूम ही हैं।"

"अब हम इसे अपने घर में जगह नहीं देंगे।"

कुमुद को उसकी बात से संतोष नहीं हुआ—कपड़े संभालती-संभालती कुछ-न-कुछ बुदबुदाती रही।

सुधीर उसके पास दो साल तक रहा था। अड़ोसियों-पड़ोसियों से भी उसकी अच्छी-खासी जान-पहचान हो गयी थी। लोगों ने और बहुत कुछ पूछा और यह भी पूछा—"सुधीर लखनऊ में क्या कर रहा है।"

मधु और कुमुद दोनों ने ही कहा—"वहां बड़े मजे में है। उसने अपनी एक दुकान खोल ली है, जो अब धीरे-धीरे चल निकली है।"

दूसरे दिन उसने देखा सुधीर एक पड़ोसी सज्जन के घर बैठा उनकी पत्नी से बातें कर रहा है। उसने मधु को देखकर भी अनदेखा कर दिया। वह पोस्ट बाक्स से अपनी चिट्ठियां लेने जा रहा था। लेकर आया, तो वह जा चुका था। उसने कुमुद से पूछा—"तुमने देखा, यहां सुधीर आया हुआ था।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली—"देखा था, अभी कल ही
लोगों से कहा था कि वह लखनऊ में है
बड़े मजे में है। भला ये अड़ोसी-पड़ोसी
क्या समझेंगे ? जिनके भी घर जायेगा,
तो बदनामी ही करेगा। नेकी बरबाद,
बाकी।"

वह डाक से आयी पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने
लगा। कुमुद अभी-अभी नहाकर
थी। तौलिया अलगनी पर फैलाकर
अपने केश छितरा दिये। खाना-वाना
कर और दीपू को स्कूल भेजकर जब वह
कर आती है, तो वह बड़ी ताजी-ताजी-
लगती है। उसका चेहरा खिले फूल की
होता है। पर आज उसके हर काम से
बेचैनी-सी खीझ प्रकट हो रही थी। बोली—
क्या लगाऊं ?"

लगाओ।"

वह तश्तरियों में सब्जी डालती हुई
बोली—"सुधीर जब जाने के लिए उनके घर
निकला, मैं दीपू को स्कूल भेजने के लिए
पर ही खड़ी थी, उसने मेरी तरफ देखा
बोला तक नहीं। भला ऐसा भी हमने
उसके साथ क्या गुनाह किया है। और कुछ
नहीं, दीपू को भी प्यार नहीं किया। वह
सुधीर भैया—सुधीर भैया—चिल्लाता रहा
और उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।"

सुधीर मधु से न बोले, कुमुद से न बोले,
उनकी बदनामी भी करे, यह सब मधु मान
लेता है; पर दीपू से न बोले, यह बात
उसकी समझ में बिलकुल नहीं आती।
कितनी बार लखनऊ जाकर उसने वहां

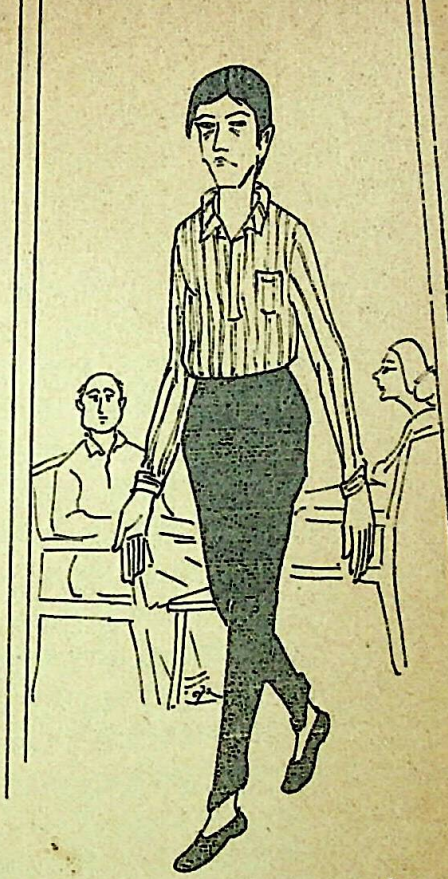

चित्रकार : शर्मा

जनरल मर्चेंट की एक छोटी-सी दुकान
खोल ली थी। जब उसका पहला पत्र उसे
मिला, तो उसने देखा उस पर मोहर लगी
थी—दीपक स्टोर्स, गणेशगंज, लखनऊ।

उसके बाद सुधीर उसे अड़ोस-पड़ोस में
दो-चार बार दिखाई भी दिया। वह मधु के
घर नहीं आया, और मधु और कुमुद ने भी
परवाह नहीं की। सोचने लगे, बदनामी
करता है तो करे, ऊंच-नीच बोलता है तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोले। क्या हमारे पड़ोसी यह नहीं जानते कि हमने इसके लिए क्या-क्या किया है।

उस दिन वह दफ्तर से आकर बैठा ही था, कुमुद ने रसोई में चाय का पानी चढ़ा दिया था कि सुधीर आ गया। बोला—"मामाजी, मेरी कोई चिट्ठी तो नहीं आयी ?"

मधु ने उसकी तरफ देखा, वह दरवाजे पर ही खड़ा था। वही पुरानी कार्डराय की पैंट, वही पैंट में दबी हुई सफेद मटमैली बुशशर्ट, पैरों पर मिट्टी की परतें और चेहरे पर सारे जमाने की गर्दिश। मधु ने मुंह घुमा लिया और बड़ी दबी जवान में कहा—"नहीं, तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया।"

और वह नजर गड़ाये सुबह का अखबार देखता रहा, जिस पर किसी स्थान के बाढ़-पीड़ितों का चित्र छपा था, जो उस प्रकोप से बेघर-बार हो गये थे। उसने फिर नजर घुमाकर दरवाजे की ओर देखा। दरवाजा सूना पड़ा था।

"कुमुद दो कप चाय ले आयी। उसने पूछा—"यह दूसरा कप किसके लिए ?"

"सुधीर आया था न ?"

"हां, पर वह तो चला गया।"

"आया क्यों था ?"

"पूछने आया था, उसकी कोई चिट्ठी तो नहीं आयी।"

"मैं समझ गयी" कुमुद बोली—"अब वह बहाने-बहाने यहां मंडरा रहा है; पर अब हम उसे अपने घर में नहीं रखेंगे।"

मधु ने कहा—"बिलकुल नहीं रखेंगे।"

फिर वह कितने ही दिन नहीं आया। नहीं आया, तो न आये। कौन उनका उसके बिना कोई काम रुका पड़ा है ? एक दिन कुमुद बोली—"सुधीर बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिया। मेरा खयाल है अड़ोस-पड़ोस में भी किसी के यहां नहीं आया। नासपीटा यहां नहीं आये, तो ठीक है, आता है तो पता नहीं दिल में कैसा-कैसा होने लगता है।"

वह चुप हो गयी और वे दोनों गुम-सुम से खो गये। मधु की बहन को मरे बीस साल से अधिक हो गये हैं, तब वह बहुत छोटा था। उसकी शक्ल का कुछ-कुछ उसे आभास है। उस समय सुधीर करीब दो साल का था। उसका बड़ा होना और बिगड़ते जाना कदम से कदम मिलाते हुए हुआ। उसकी नयी मां आ गयी, उसमें मधु को अपनी बहन ढूंढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई। सौतेलापन किसे कहते हैं, यह उसमें कहीं नहीं दिखाई दिया। पर सुधीर उसमें अपनी मां नहीं ढूंढ़ सका। वह जिस रास्ते पर चल पड़ा था, उस पर मां का होना-न-होना कोई खास अर्थ नहीं रखता था।

उस दिन शनिवार था, मधु दफ्तर से लौटा, तो सीधा घर आया। खाना खाकर वह पत्रों के उत्तर लिखने बैठ गया। पांच बजे तो उसने सोचा, उठूं। उसे चर्चगेट के पास ही एक मीटिंग में जाना था, जो छः बजे शुरू होनेवाली थी। एक घंटा तो वहां पहुंचने में लग ही जाता है। तभी सुधीर की शक्ल दरवाजे पर दिखाई दी।

"मामाजी, मेरी कोई चिट्ठी आयी ?"

मधु ने उसकी ओर देखा। उसे लगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का उत्तर बहुत कठोर हो जायेगा के लिए। वह दो क्षण उसकी ओर रहा। सुधीर के मैले-कुचैले कपड़ों नी-कुचैली शक्ल में से उसकी बहन ही थी। जब वह मरी थी, उसकी भी उम्र थी। उत्तर देने के बजाय उसने पूछा—"कहां काम करते हो?"

एक मिल में नौकरी कर ली है।"

कितनी तनख्वाह मिलती है?"

अभी तो डेली बेसिस पर रखा है, ले। चार रुपये रोज।"

कितने दिन हुए?"

ग्यारह दिन हुए हैं।"

मधु ने कहा—"बैठो।"

मेरी कोई चिट्ठी नहीं आयी?" उसने पूछा।

भई, बैठ तो जाओ।"

वह अंदर आकर बैठ गया। पर अब क्या करे? उसका प्रश्न सारे कमरे छा रहा था।

मेरी कोई चिट्ठी तो नहीं आयी?" मधु ने पूछा—"कहीं से तुम्हारी जरूरी चिट्ठी आनी है?"

उसके इस प्रश्न से सुधीर कुछ घबरा-सा गया। हड़बड़ाकर बोला—"नहीं, मैंने सोचा शायद कहीं से आयी हो।"

फिर एक गहरी चुप्पी में सारा कमरा डूब गया। कुमुद दो कप चाय रख गयी। मधु ने एक कप सुधीर की ओर बढ़ा दिया। वे दोनों धीरे-धीरे चाय पीने लगे। चाय पी चुके, तो सुधीर बोला—"अच्छा मैं जाता, हूं।"

मधु ने उसकी तरफ नहीं देखा। केवल गर्दन हिला दी, वह उठकर कमरे से निकल गया।

उसने घड़ी देखी। साढ़े पांच बजे थे, उसने उठकर जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और नीचे उतरा। बस स्टाप की ओर चला, तो उसने देखा पीछे-पीछे सुधीर चला आ रहा है। मधु कुछ धीमा हो गया और सुधीर उसके साथ आकर चलने लगा।

उसने पूछा—"कहां जाओगे?"

"कल्याण जाऊंगा।"

वे दोनों चुप-चुप चलते रहे, फिर वह धीरे से बोला—"मामाजी., कुछ पैसे दीजिये न। मेरे पास कुछ भी नहीं बचा है।"

मधु ने उसकी ओर देखा। उसे लगा, जैसे वह सुधीर से कुछ इसी तरह की बात की बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहा था। उसे लगा कि वह रुपये नहीं मांग रहा है, उसके हाथ कोई चिरप्रतीक्षित चीज बड़े सस्ते भाव में बेच रहा है। जैसे वह कह रहा हो—"मेरे पास यह सौ रुपये की कीमत की एक चीज है। मैं आपको बड़े सस्ते भाव में दे दूंगा, बस दस रुपये में। बोलिये खरीदियेगा?"

उसे लगा, कहीं सुधीर अपनी बात से फिर न जाये, या सौदा छूट न जाये।

और उसने झट से पर्स में से दस रुपये का नोट निकालकर उसके हाथ पर रख दिया।

★

झुर्रियां केवल यह बताती हैं कि मुस्कराहटें कहां खेलती रही हैं। —मार्क ट्वेन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां एक अनारकली सोती है

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत एक प्रेमगाथा

हरिदयाल चतुर्वेदी

आस्ट्रिया के युवराज रुडाल्फ का प्रमोद भवन। सवेरा होने में थोड़ी ही देर थी। चारों तरफ सन्नाटा छाया था। अचानक एक के बाद एक दो गोलियों के चलने की आवाज उस सन्नाटे को चीर गयी।

रुडाल्फ का बूढ़ा नौकर लाश्चेक अपने मालिक के कमरे की तरफ ही जा रहा था। गोलियों की आवाज से वह चौंक पड़ा और ठिठककर खड़ा हो गया। उसके हाथ-पैर ढीले हो गये। फिर अपने को संभालकर, वह तेजी से मालिक के कमरे की ओर लपका।

कमरे का दरवाजा भीतर से बंद था। लाश्चेक ने जोर-जोर से दस्तक दी, दरवाजा पीटा, फिर कई आवाजें भी लगायीं; पर कोई उत्तर न मिला।

इस शोरगुल से युवराज के दो मित्रों की नींद खुल गयी, जो उस रात वहीं थे। वे भी उठकर युवराज के कमरे की ओर भागे आये। ये दो मित्र थे—काउंट जोसेफ होय्स और कोबर्ग के प्रिंस फिलिप। उन्होंने भी दरवाजा खुलवाने में लाश्चेक का साथ दिया और तीनों के सम्मिलित प्रयत्न से जरा देर में दरवाजा टूट गया।

सामने एक भयानक दृश्य था। कमरे का सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था। मेज-कुर्सियां औंधी पड़ी थीं। सामान इधर-उधर बिखरा था। राजकुमार के पलंग पर चादर और तकिया ताजे खून से भीगे हुए थे।

बिस्तर पर युवराज चित पड़े थे। उनकी खोपड़ी फट गयी थी और उनका एक हाथ पलंग से नीचे झूल रहा था। उनकी बगल में ही उनकी रूपसी प्रेमिका बैरोनेस मेरी वेत्सेरा पड़ी थी। उसके कपड़े अस्तव्यस्त थे और शरीर लगभग अनावृत्त था। उसके भी माथे पर गोली का गहरा घाव था।

किसने की थी युवराज और उसकी प्रेमिका की हत्या?....या कि आत्महत्या का मामला था यह, जिसमें प्रेमी-प्रेमिका ने एक योजना बनाकर उस पर अमल किया था?

वियेना से पच्चीस मील दूर मेयरलिंग है। मेयरलिंग के घने जंगल में युवराज का यह प्रमोद-भवन एक अभेद्य किले के समान था। इस दुःखद घटना के समय प्रमोद-भवन में दो ही बाहरी व्यक्ति थे—काउंट होय्स और प्रिंस फिलिप। दोनों ही ने इसे आत्महत्या का मामला कहा। कारण-अन्य, वियेना-निवासियों की तरह वे भी जानते थे कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का दांपत्य जीवन सुखी नहीं था।

× ×

साल पहले बेल्जियम की राज-
स्टीफेनी से युवराज रुडाल्फ का
हुआ था। शुरू-शुरू में युवराज को
पत्नी पसंद भी आयी। पत्नी के विषय
बार उन्होंने लिखा था—"मेरी पत्नी
सुंदर, बुद्धिमती और पति-परायण
आत्मसम्मान की भावना उसमें बहुत
है। वह मन-प्राण से मुझे चाहती है।"
किंतु कुछ ही दिनों में युवराज को पता
चला कि पति-परायण होते हुए भी
वह हर काम अपनी ही मर्जी के
खिलाफ करती है। यहां तक कि पति को
खुश अपनी इच्छा के अनुरूप ढाल लेना
चाहती थी। वह धार्मिक प्रवृत्ति की थी
रंगीनमिजाजी से उसे सख्त चिढ़ थी।
इसके ठीक विपरीत, युवराज राज-
घराने के युवकों की भांति स्वेच्छाचारी
रंगीन-मिजाज थे। संस्कारों का कोई
बंधन उन पर नहीं था। रूप-रस का जी भर-
कर पान करने में ही वे जीवन की सार्थकता
समझते थे।

परिणाम वही हुआ, जो ऐसी स्थिति में
हुआ करता है। पति-पत्नी में खट-
पट रहने लगी। आगे चलकर यह खटपट
इस हद तक बढ़ी कि एक को दूसरे से कोई
मतलब नहीं रह गया।

युवराज रुडाल्फ पहले ही रसिया थे।
घर में रहा-सहा आकर्षण भी उनके
लिए समाप्त हो गया, तो उन्हें अपनी प्यास
बुझाने के लिए बाहर का आश्रय लेना पड़ा।
यों भी युवराज थे, फिर उनमें नायकोचित
गुणों की भी कमी न थी। स्वास्थ्य अच्छा
था। रंग-रूप आकर्षक था। जर्मन, फ्रेंच,
चेक, हंगेरियन, पोलिश, सर्बियन, अंग्रेजी
भाषाओं में भी उनकी खूब अच्छी गति थी।
लेखक थे, सहृदयता भरपूर थी। इसीलिए
वियेना में सभी लोगों के श्रद्धापात्र थे वे।
स्त्रियों का मन जीत लेने के तो सभी गुण
उनमें विद्यमान थे।

सन १८८८ में, यानी अपनी मृत्यु के
ठीक एक वर्ष पूर्व, बैरोनेस मेरी वेत्सेरा से
युवराज रुडाल्फ की मुलाकात हुई। युव-
राज उस समय उनतीस वर्ष के थे और
बैरोनेस मेरी सत्रह वर्ष की खिलती हुई कली
थी। युवराज का मन-भ्रमर इस विकसमान
पुष्प पर मुग्ध हो गया। जैसे उनके जन्म-
जन्मांतर के सपने साकार हो गये थे मेरी
के रूप में। छलकता हुआ अनिंद्य सौंदर्य,
सुघड़ देहयष्टि, बिजली की-सी चपलता—
वह सभी कुछ था मेरी में, जिसकी युव-
राज को जाने कब से तलाश थी। उनके
अरमान मचल उठे। एक ही दृष्टि में युव-
राज मर मिटे मेरी पर।

थोड़े ही दिनों में परिचय प्रगाढ़ घनि-
ष्टता में बदल गया। जैसे युगों से प्यासी दो
आत्माएं एक दूसरे को ढूंढ़ती चली आ रही
थीं और अब जाकर उनका मिलाप हो पाया
था। दोनों एक दूसरे को समर्पित हो गये।

किंतु ऐसी बातें छिपी नहीं रहतीं। युव-
राज रुडाल्फ और बैरोनेस मेरी का प्रेमा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख्यान चंद दिनों में सारे वियेना में खुसर-पुसर का विषय बन गया। बात युवराज-पत्नी स्टीफेनी के कानों तक भी पहुंची। उसे तो धर्म-कर्म से ही फुरसत नहीं थी; उसने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

युवराज की प्रेम-कहानी आस्ट्रिया के सम्राट को भी सुनाई पड़ी। उन्होंने भी उसकी उपेक्षा ही की।

इधर युवराज रुडाल्फ दिनों-दिन लापरवाह होते जा रहे थे। जब बात सारे राज्य में आम चर्चा का विषय बन चुकी थी, तो युवराज ही अब अपने प्रेमाख्यान को छिपाने का व्यर्थ प्रयास क्यों करते ?

शायद कुछ समय बाद नवीनता की चमक खत्म हो जाती और लोग इस बात को भूलकर अपने-अपने काम में लग जाते। लेकिन जब जनवरी १८८९ में एक शाही उत्सव में बैरोनेस मेरी ने युवराज-पत्नी स्टीफेनी का सरे आम अपमान कर दिया, तो बात बिगड़ गयी।

सम्राट का माथा ठनका। ऐसे नाजुक मसले पर बेटे से बात करना उन्हें अप्रिय तो लगा; किंतु दूसरा कोई उपाय न था। पुत्रवधू और भावी सम्राज्ञी का अपमान भी वे चुपचाप कैसे सह सकते थे ? फिर वे तो सम्राट थे—राज्य के सभी लोगों की इज्जत की रक्षा का भार उन पर था; सभी को न्याय देना उनका कर्त्तव्य था।

उन्होंने युवराज को बुलाकर फटकारा और स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि यदि वे राजकुल की मर्यादाओं का पालन नहीं करेंगे तो उत्तराधिकार से वंचित कर दिये जायेंगे।

युवराज रुडाल्फ पर इसका क्या असर पड़ा, इस विषय में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ का कहना है कि दबाव पड़ने पर युवराज को झुकना पड़ा और उन्होंने मेरी से पूरी तरह संबंध तोड़ लिया। दूसरे इतिहासकार कहते हैं कि युवराज ने पिता की इच्छा के सामने सिर झुकाने से साफ इन्कार कर दिया।

इतिहासकार कुछ भी कहते रहें, वास्तविकता यह है कि राज-संपदा, मान-प्रतिष्ठा और राजमुकुट की अपेक्षा सुनहरी केशराशिवाली बैरोनेस मेरी ही युवराज को अधिक आकर्षक प्रतीत हुई। इस घटना के बाद भी लुक-छिपकर वे मेरी से मिलते-जुलते रहे।

सन १८८९ की २९ जनवरी को बैरोनेस मेरी से युवराज की अंतिम मुलाकात हुई। अंधेरी रात थी। ओले बरस रहे थे। सड़कें बर्फ से ढक गयी थीं। और ऐसी तूफानी रात को काले रंग की एक बंद घोड़ा-गाड़ी वियेना से मेयरलिंग के घने जंगल में बने युवराज के प्रमोद-भवन की तरफ चली जा रही थी। गाड़ी में थे युवराज रुडाल्फ और बैरोनेस मेरी।

प्रमोद-भवन के विश्वस्त परिचारक लाश्चेक ने मालिक का स्वागत किया। युवराज और बैरोनेस को रात का भोजन कराने के बाद उनके आराम और विलास की बाकी सारी व्यवस्था करके लाश्चेक अपने क्वार्टर में चला गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बाद की घटना के बारे में भी लोगों
अलग-अलग रायें हैं। कुछ लोगों का
है कि युवराज सवेरे-सवेरे शिकार
जानेवाले थे और लाश्चेक उतने सवेरे
जगाने जा रहा था। दूसरे कुछ लोगों
कहना है कि मौसम शिकार पर जाने
नहीं था, यह सूचना देने ही लाश्चेक
उनके पास जा रहा था। तीसरा मत
दरवाजा टूटने से पहले तक लाश्चेक
नहीं गया था।

बहरहाल इस
में सभी एक-
है कि लाश्चेक
ही युवराज को
बार जीवित
में देखा था।
का बयान
कि पिछली रात
मालिक सर्वथा
चित्त थे और
ही रात में
ने युवराज और
प्रेमिका की
हत्या कर डाली थी।

दांपत्य-जीवन की असफलता के अलावा
कारण ऐसा न था कि युवराज आत्म-
करते। और जहां तक दांपत्य का
है, उसके दुःखमय होने पर भी दुनिया
बहुत सारे लोग जीवित तो रहते ही हैं।
युवराज के पास तो प्रचुर संपत्ति थी,
प्रतिष्ठा थी। स्वास्थ्य, यौवन,
प्रेम तथा राजमुकुट भी प्राप्त थे उन्हें। फिर वे आत्महत्या करते तो क्यों?

सम्राट ने पहले इस मामले को दबाने की कोशिश की। उन्होंने शाही चिकित्सक को बुलवाकर उनसे अनुरोध किया कि वे मिरगी या अपस्मार से युवराज की मृत्यु होने की बात का प्रचार कर दें। परंतु चिकित्सक ने विनम्रतापूर्वक ऐसा करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया।

दो दिन बाद युवराज की रहस्यमय मृत्यु के बारे में एक अति संक्षिप्त सरकारी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई —"युवराज रुडाल्फ ने आत्महत्या कर ली है।"

परंतु इसी बीच सारे आस्ट्रियन-साम्राज्य में इस घटना की चर्चा होने लगी। लोग खुले आम कहने लगे कि यह आत्महत्या नहीं, हत्या का मामला है।

फिर लोगों को इस बात का भी पता चला कि युवराज के पास ही बैरोनेस मेरी भी मृत पायी गयी। बस, फिर क्या था! जितने मुंह, उतनी बातें। कुछ लोग कहने लगे कि बैरोनेस मेरी के एक पुराने प्रेमी ने, जो जंगलात विभाग में अफसर था, ईर्ष्यावश युवराज और मेरी की हत्या कर

महाभारत

अदीब जब कहानी लिखते हैं, तो दरअसल मौत से लड़ते हैं। किसी इन्सान की जिंदगी महाभारत से खाली नहीं रही—फर्क सिर्फ इतना है कि वह खुद ही कौरव है, खुद ही पांडव है; खुद ही कृष्ण है, खुद ही अर्जुन है। वह खुद ही रथ में बैठता है, खुद ही उसे चलाकर कारजारे-हयात (जीवन के रणस्थल) में ले जाता है और उंगुली उठाकर कहता है— "सुन ऐ अर्जुन!" —कृश्नचंदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि राज-गद्दी के लोभ में पड़कर सम्राट के सगे छोटे भाई लुडविग और उसके बेटे फर्डिनेंड ने अपना रास्ता साफ करने के लिए युवराज और उनकी प्रेमिका की हत्या कर दी।

इधर अफवाहें उपजती रहीं और उड़ती रहीं। उधर शाही कब्रिस्तान में युवराज रुडाल्फ को यथाविधि दफना दिया गया।

लेकिन बैरोनेस मेरी की मृत देह उसी प्रमोद-भवन के एक कोने में वैसी ही हालत में खून से लथपथ और अनावृत पड़ी रही। फिर एक रात को घने जंगल के बीच चुप-चाप मेरी को दफना दिया गया और राज में किसी को कानों-कान भी इस बात की खबर नहीं हुई।

आज बैरोनेस मेरी की कब्र के आस-पास कैमोलिया के सदाबहार फूल खिले दिखाई पड़ते हैं। कब्र के सिरहाने एक छोटा-सा सलीब और पत्थर का एक टुकड़ा लगा हुआ है। पत्थर पर खुदा है :

मेरी बैरोनेस वेत्सेरा

जन्म : १९ मार्च १८७१

मृत्यु : ३० जनवरी १८८९

इन्सान फूल की तरह दुनिया में आता है और असमय में डाली से झड़े फूल की तरह मृत्यु की गोद में जाता है।

मेयरलिंग के घने जंगल में हू-हू की आवाज के साथ चलनेवाली तेज हवा भर शायद यह जानती है कि इस प्रेमी-युगल के एक साथ मरने का असली रहस्य क्या है।

★

महाभारत काल में दंभोद्भव नामक एक चक्रवर्ती राजा था। वह अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता था। प्रतिदिन वह अपने दरबारियों से पूछता-क्या इस समय पृथ्वी पर कोई मुझसे अधिक या मेरे समान शक्तिशाली है? इसके उत्तर में खुशामदी दरबारी उसे सर्वश्रेष्ठ कह देते थे। एक दिन उसने यही प्रश्न एक सत्यवादी से किया। उसने कहा-"मेरी सम्मति में नर-नारायण नामक दो तपस्वी आप से कहीं अधिक बलवान हैं।"

दम्भोद्भव को भड़काने के लिए इतना पर्याप्त था। वह उन तपस्वियों का पता पूछकर सेना के साथ उनके आश्रम पर जा पहुँचा। और बार-बार उन्हें युद्ध के लिए ललकारने लगा। नर-नारायण ने देखा कि बिना लड़े किसी तरह उससे छुटकारा नहीं मिलेगा। उन्होंने कुछ तिनकों को मुट्ठी में लेकर कहा-"अच्छा राजा, यदि तुम लड़ना ही चाहते हो, तो अपनी चतुरंगिनी सेना लेकर मैदान में आ जाओ, हम तुम्हारी चुनौती स्वीकार करते हैं।"

तपस्वियों ने अपने दिव्यास्त्रों से सहस्रों सैनिकों को मार गिराया। दंभोद्भव उनके दिव्यास्त्रों से आहत होकर प्राण बचाने के लिए उनके चरणों पर गिर पड़ा। नर-नारायण ने जीवन-दान देते हुए कहा-"राजन्! चाहे कोई छोटा हो या बड़ा, भविष्य में कभी किसी का अपमान करने का दुस्साहस फिर न करना।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

- खून का बदला खून
- हिन्दी समर्थन अंग्रेजी में
- आसमान में श्मशान
- चोली में पिस्तौल
- करामाती कछुआ

हाल में अमरीकी सरकार ने ३,००० पृष्ठों का एक खरीता प्रकाशित किया। इसका सारांश यह है कि दक्षिण वियतनाम में ३५ हजार विद्रोही सैनिक और हजार विद्रोह-समर्थक नागरिक हैं। इनके पास कम्युनिस्ट चीन द्वारा दिये आधुनिकतम शस्त्रास्त्र हैं, जो १०० से कम नहीं। इसमें २,००० मौसर राइफल १०० सब-मैशीनगन भी हैं। शस्त्रास्त्र देने वालों में चीन, चेस्कोस्लोवाकिया, पूर्व जर्मनी, रूस एवं जापान भी हैं। विद्रोहियों का प्रशिक्षण केंद्र उत्तर वियतनाम में है। इन्होंने दक्षिण वियतनाम को उन्होंने विद्रोह-संचालन के लिए छः प्रदेशों में विभक्त किया है। इनकी सेना को ५० बटालियनों में। विद्रोहियों को गुरिल्ला युद्ध की शिक्षा विधिवत् केंद्रों में दी जाती है। अमरीका भी पूरे बल से उत्तर वियतनाम के सैनिक-केंद्रों को नष्ट कर रहा है।

फिर भी कुछ लोग वियतनाम के युद्ध को 'गृहयुद्ध' या 'घरेलू जंग' मानते हैं। उनका यह है कि अब दुनिया के सब जंग 'घरेलू' ही रहेंगे; क्योंकि मैदानी जंग शुरू करने का साहस अब किसी में नहीं है।

× × ×

श्वेतांग अमरीकियों के खूनी दुश्मन माल्कम-एक्स की हत्या भी एक नीग्रो ने कर दी। माल्कम की हिंसावृत्ति के पीछे भी एक इतिहास है। जब वह छः वर्ष का था, तब एक कार-दुर्घटना में उसके पिता की मृत्यु हो गयी। माल्कम का विश्वास था कि उसकी हत्या श्वेतांगों ने की थी।.....आज उसके हिंसावादी दल में २ लाख, ५० हजार 'ब्लैक मुस्लिम' शामिल हैं। किंतु हिंसावादी हिंसा का ही शिकार हो जाता है। माल्कम-एक्स एक नीग्रो नार्मन की गोली का शिकार हो गया। यह शृंखला अभी टूटी नहीं है। नार्मन की हिफाजत कई शरीर-रक्षक कर रहे हैं; किंतु खून का बदला खून से जरूर मिलता है। उसकी जान के ग्राहक सैकड़ों घूम रहे हैं। माल्कम-एक्स कभी 'ब्लैक मुस्लिम आंदोलन' के आद्य गुरु एलिजा मुहम्मद का पट्ट-शिष्य माना जाता था। बाद में गुरु-चेले में अनबन हो गयी।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एलिजा मुहम्मद एक अमरीकी नीग्रो है, जिसने ईसाइयत को तिलांजलि देकर इस्लाम कबूल कर लिया है। उसका कहना है, जब तक नीग्रो शक्तिशाली न होंगे, गोरे अमरीकी उनके अधिकार उन्हें न देंगे और इस्लाम ही नीग्रो लोगों को शक्ति दे सकता है। प्रायः अल्पशिक्षित एवं निर्धन नीग्रो युवक उसके संप्रदाय में दीक्षित हो रहे हैं। ये अपने ईसाई सरनाम छोड़ देते हैं; क्योंकि ये सरनाम वास्तव में उन गोरे अमरीकियों के हैं, जिनके यहां इनके दादा-परदादा गुलाम थे। गुलामी के इस स्मारक की जगह 'एक्स' अक्षर अपना लिया गया है, जो गणित में अज्ञात संख्या का सूचक होता है। माल्कम-एक्स यानी माल्कम, जिसके पूर्वज अज्ञात हैं।

× × ×

छप्पन वर्ष की आयु में ही नैतिक संरक्षण आंदोलन (मारल रीआर्मामेंट मूवमेंट) के अध्यक्ष पीटर हावर्ड की मृत्यु से एम० आर० ए० के लिए नये अध्यक्ष के चुनाव की नयी समस्या खड़ी हो गयी है। अमरीका के एक छोटे कस्बे के व्यापारी डा० फ्रैंक बुकमैन ने १९२० में इस संस्था को जन्म दिया था। अपने उत्तराधिकारी के रूप में हावर्ड की नियुक्ति डा० बुकमैन ने कर दी थी। मगर अब इस पद के कई उम्मीदवार हैं। इनमें महात्मा गांधी के पौत्र और राजाजी के नाती राजमोहन गांधी का नाम भी लिया जा रहा है। एशिया में एम० आर० ए० को लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाने के लिए एशिया के नये सितारे राजमोहन गांधी की अध्यक्षता बहुत उपयोगी होगी।

राजमोहन अभी केवल २९ वर्ष के हैं। जब वे लंदन में पत्रकार के रूप में काम कर रहे थे, एम० आर० ए० के प्रभाव में आये। पत्रकारिता भी उन्होंने छोड़ी नहीं, एम० आर० ए० की पत्रिका 'हिम्मत' का संपादन करते हैं।

पीटर हावर्ड की खाली गद्दी के और भी तीन उम्मीदवार हैं— एक अमरीकी एक जापानी, एक स्वीडिश।

राजमोहन गांधी के अध्यक्ष बनने से कुछ अंशों तक भारत को भी अंतर्राष्ट्रीय महत्व मिलेगा; इसलिए अनेक भारतीयों की शुभकामनाएं उनके साथ हैं।

× × ×

अमरीका के साप्ताहिक 'टाइम' के संवाददाता ने लिखा है कि —"हिन्दी के संबंध में शास्त्रीजी को भी अपनी पार्टी के शब्द-शूर सदस्यों का क्रोध सहना पड़ा। पिछले सप्ताह कांग्रेस-दल के १०६ हिन्दी-पोषक सदस्यों ने अंग्रेजी में अनुरोध-पत्र देकर हिन्दी के उपयोग की प्रार्थना की। हिन्दी-समर्थक होने का प्रमाण यह था कि उनका प्रार्थना-पत्र केवल अंग्रेजी में था। अपनी संक्षिप्त, सूखी भाषा में शास्त्रीजी ने वचन दिया कि सब दृष्टियों से प्रश्न पर विचार किया जायेगा। आलोचक शास्त्रीजी पर नेतृत्वगुण-हीन होने का अभियोग करते हैं।"

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न में यों तो सभी वस्तुओं का उत्पा-कार द्वारा नियंत्रित है; किंतु बच्चों ादन पर पूरा नियंत्रण नहीं हो । इसीलिए वहां अविवाहित माताओं ख्या २४,७७,००० है ।

× × ×

मीन में गढ़ा खोदकर लाश दफनाने-में किसी ने यह कल्पना भी नहीं की कभी लाश को ऊंचा आसन भी दिया । लेकिन अब इटली में एक २० का श्मशान बनाया जा रहा है । १४,००० शव रह सकेंगे । वहां एक स्थान सुरक्षित करने में लगभग ०० रुपये खर्च होते हैं । भूमि का मूल्य अधिक है । इसलिए विचारकों का विश्वास बढ़ता जाता है कि हिन्दुओं की दाह प्रथा अधिक वैज्ञानिक और उप-है । श्मशान की ऊंचाई से स्वर्ग जाने-को भी आसानी हो जायेगी—स्वर्ग निकट ही आ जायेगा ।

× × ×

यह युग आत्मनिर्भरता का है । पहले यों की मान-रक्षा वीर पुरुष करते थे । बीरता पुरुषों तक सीमित नहीं । अश्वेत का की २७ हजार गौरांगनाएं पिस्तौल ब की सदस्य हैं । फैशन में अग्रणी फ्रांस सियों ने भी अब ऐसी चोलियां बनाना कर दिया है, जिसमें पिस्तौल छिपाकर ने का स्थान रहेगा ।

× × ×

१९६४ के वर्ष में विश्व-पर्यटन करने-वाले स्त्री-पुरुषों की संख्या ५ करोड़ ५० लाख रही । इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के शौकीन लोगों ने ४,५०० करोड़ रुपये खर्च किये । दुनिया के विद्यार्थियों का २ प्रतिशत ऐसा है, जो अपने देश से बाहर शिक्षा ले रहा है । फिर भी हमारे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का सूत्र आज भी बहुत कच्चा है । क्योंकि इन यात्राओं का लक्ष्य प्रायः निरुद्देश्य भट-कना होता है, मानव-हृदय का माधुर्य और प्रकृति का सौंदर्य देखना नहीं । विश्व-पर्य-टक प्रायः ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अपने से ऊबकर दुनिया देखने निकलते हैं ।

× × ×

आज संसार में वैज्ञानिकों की संख्या ३० लाख है । संसार की ६० भाषाओं में स्वास्थ्य-चिकित्सा संबंधी पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं । पत्रिकाओं की संख्या भी ५५ हजार से कम नहीं । वैज्ञानिकों और चिकित्सकों की संख्या में इतनी वृद्धि होने के साथ विज्ञान और चिकित्सा की उलझनें भी बढ़ती जाती हैं । क्योंकि जिस अनुपात से विज्ञान बढ़ रहा है, वैज्ञानिक तथ्यों की अप्रामाणिकता उससे भी अधिक बढ़ रही है ।

× × ×

दक्षिणी अटलांटिक महासागर के नाविकों ने एक ऐसी मादा कछुआ का पीछा किया, जो हर तीसरे साल महासागर के केवल पांच मील क्षेत्रफल के एक छोटे-से टापू 'एसंशन' में आकर छोटा-सा गड्ढा खोदकर १०० अंडे दे जाती है और उसे रेत से ढंक देती है । अंडों को सुरक्षित रखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह स्वयं हजार मील समुद्र तैर कर फिर महासागर के ब्राजीलियन तट पर चली जाती है। दो-तीन साल वहां रहने के बाद वह फिर गर्भिणी होकर एसंशन टापू में उसी स्थान पर आती है, जहां उसने तीन साल पहले अंडे रखे थे। वहीं अंडे देकर वह फिर हजार मील तैरकर वापस ब्राजील चली जाती है। इस जाति के कछुओं का रंग बिलकुल हरा होता है। पूरी आयु पर इनका वजन ८५० पौंड हो जाता है और लंबाई ५ फुट हो जाती है।

सभी को आश्चर्य है कि समुद्र के अंदर इन्हें दिशा-ज्ञान कैसे हो जाता है। प्रखर बुद्धिमान मनुष्य को भी वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता के बिना इस हजार मील की यात्रा में दिग्भ्रम हो सकता है।

× × ×

हांगकांग की सरकार ने कम्युनिस्ट चीन से पीने का पानी खरीदने का नया इकरारनामा किया है। इसके मुताबिक हांगकांग ने चीन की पूर्वी नदी से पंप द्वारा पानी खींचने का काम शुरू कर दिया है। अभी पिछले साल इस चुंगी-मुक्त बंदरगाह के ३५ लाख नर-नारी डर गये थे कि शायद उन्हें प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाना होगा। एक दिन तो समूचे हांगकांग के जलागारों में इतना ही पानी रह गया था कि चार घंटे तक गुजारा चल सके। हांगकांग प्रतिवर्ष १,५०० करोड़ गैलन चीनी पानी पंप द्वारा ले सकेगा और मूल्य रूप में १० लाख पौंड चुकाने होंगे। यों शायद हांगकांग-निवासियों को शायद कभी भी इस पानी का उपयोग नहीं करना पड़ेगा। मगर इससे वक्त आने पर उनकी प्यास बुझने का बीमा जरूर हो जायेगा। आधी प्यास तो प्यास बुझने की आशा में ही बुझ जाती है।

× × ×

भारतीय युवकों के हृदय में कितना अंग्रेजी और अंग्रेजियत के प्रति प्रेम है, इसका कुछ अनुमान इस बात से भी हो सकता है कि पिछले तीन साल में ब्रिटेन जाकर काम करने और वहीं बसने की दरखास्त देने-वाले युवकों की संख्या ४,१६,८६४ है। जुलाई १९६२ में इंग्लैंड में प्रवास को नियंत्रित करने का कानून बना था। तब से अब तक भी लाखों भारतीय प्रवासी अंग्रेजों के देश में पनाह ले चुके हैं और लाखों ऐसे हैं, जो वहीं जाकर बस जाना चाहते हैं।

★

संसार कितना वैविध्य प्रिय है! एक मील को सब देश अपने-अपने मापों से मापते हैं। तभी आयरिश मील २२४० गज का; स्काच मील १९८४ गज का; जर्मन मील १८०६ गज का; और टर्किश मील १८२६ गज का होता है।

० ० ०

मानवी अधिकारों की रक्षा के पहले मैग्नाचार्टा (घोषणा-पत्र) पर जिन २६ व्यक्तियों के हस्ताक्षर हुए थे, उनमें से केवल तीन ही इतने पढ़े-लिखे थे कि अपना नाम लिख सकते थे। शेष २३ ने अपनी मुहर लगाकर ही उसे घोषित किया था।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

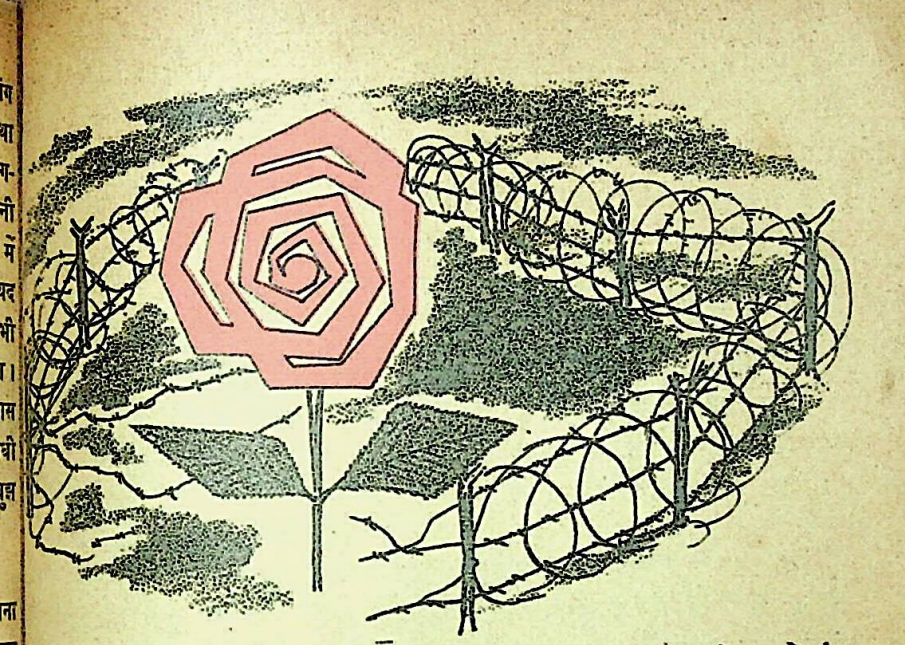

सोलहवीं सदी के प्रसिद्ध आंग्ल राजनेता और धर्मचिंतक सर टामस मूर ने अपने ग्रंथ 'यूटोपिया' में एक आदर्श सुखलोक की कल्पना की थी। तब से अनेक लेखकों ने ऐसे सुख-लोकों का चित्रण किया है। इस परंपरा की नवीनतम कृति है 'दि आइलैंड', जो कि स्वर्गीय आल्डुअस हक्सले की अंतिम रचना है। 'दि ब्रेव न्यू वर्ल्ड' और 'रिटर्न टु दि ब्रेव न्यू वर्ल्ड' जैसे वैज्ञानिक कल्पना-प्रेरित उपन्यासों के लेखक हक्सले ने भावी आदर्श जीवन की अपनी अद्भुत कल्पनाओं को एक छोटे-से टापू पाला में पनपाया है। इस द्वीप में विज्ञान शोषण का नहीं, संतोष का साधन है; काम अकुंठित, किंतु संयत है; संतान परिमित है, और धर्म भी मनपसंद; धर्म स्वानुभव का विषय है और व्यक्ति-विकास का मार्ग; राजनीति दासमुक्त है; निर्वाण अनिश्चित मरणोत्तर अवस्था नहीं, सर्वसुलभ सुखावस्था है। पर हक्सले का यह सुखलोक बिखर जाता है; क्योंकि संसार हिंसा, शोषण और झूठे आत्म-अध्यात्म से मुक्त होने को तैयार नहीं।..... 'दि आइलैंड' का यह संक्षिप्त रूपांतर डा० देवेश ठाकुर ने प्रस्तुत किया है।

आल्डुअस हक्सले

भविष्य का विसर्जन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शांत, शून्य वन्य वातावरण में सहसा एक शब्द गूंज गया –"सावधान ! सावधान !"

विल चौंककर उठा । वह मुरझायी हुई पत्तियों पर अनाज के दानों-सा निश्चेष्ट पड़ा था । उसने सोचा–"शायद मालि ने आवाज दी है ।"

"मालि !" वह अनायास पुकार उठा ।

उसने सोचा, शायद यह उसके उठने का समय है–उठकर कपड़े पहनने का, नाश्ता करने का और दफ़्तर को जाने की तैयारी करने का ।

लेकिन नहीं । उसका खयाल गलत था । दूसरे ही क्षण उसे भान हो गया कि वह अपने लंदन-स्थित मकान के शयन-कक्ष में नहीं लेटा हुआ है ।

बहुत ही हतोत्साह होकर उसने चारों ओर देखा । उसके कमरे में लटकनेवाले बादामी और पीले रंग के परदे वहां नहीं थे । उसने देखा कि उसके चारों ओर तो लंबे-लंबे वृक्षों का बिखराव है और सुबह की रोशनी में उनकी छाया लंबी होकर तिरछी छितरा रही है ।

फिर, अगले ही क्षण उसे महसूस हुआ कि उसके दायें घुटने में बड़ा दर्द है; और पीठ, बाजू तथा माथे में भी एक अजीब प्रकार की पीड़ा उसे दुःख दे रही है ।

"सावधान !" वही पूर्व - परिचित आवाज उसे फिर सुनाई दी ।

"मालि.....?" जैसे उसने अपने आप से प्रश्न किया । इस नाम ने जैसे उसके मस्तिष्क की खिड़की खोल दी ! वह देखने लगा कि अस्पताल का एक कक्ष है । एक छोटी-सी सुंदर नर्स जल्दी से दरवाजे के पास आकर पुकारती है–नंबर ५५ ।

दरवाजे पर प्रतीक्षा करता हुआ विल भीतर प्रवेश करता है । सामने वह देखता है कि उसकी पत्नी मालि खाट पर पड़ी हुई है–एकदम निश्चेष्ट । वह बेहोश है और उसके सारे शरीर पर पट्टियां बंधी हुई हैं ।

विल ने बड़े ही स्नेहपूर्ण संबोधनों से उसे पुकारा । किंतु मालि निश्चेष्ट बनी रही ।

विल के मन में निराशा छा गयी ।

विल उस अनजानी जगह पर पड़ा-पड़ा और भी बहुत-सी बातें याद करता रहा । मालि उसके जीवन से निकल गयी थी । ओफ़, उस दिन की कार-दुर्घटना कितनी भयानक थी ! सारे अखबारों में उसी के विषय में तो छपा हुआ था । ओह !

विल फार्नेबी का सिर चकरा गया ।

उसके बालों में कीचड़ जमी हुई थी । सारा शरीर मिट्टी से लथ-पथ था । वह न जाने कितने दिन से भूखा-प्यासा था । उसे लगा, पत्रकार का जीवन भी कितना कष्ट-कर है । उसने कहां से जीवन आरंभ किया था, और वह आज कहां आ पहुंचा था ! फिर, उसने आज तक पाया क्या ?

एक ऊंचे वृक्ष के नीचे पड़ा हुआ वह यही सब सोचता रहा । तभी फिर वही सुपरि-चित आवाज उसके कानों में गूंज गयी– "सावधान !"

विल फार्नेबी ने सिर ऊपर उठाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

-एक छोटी-सी काली चिड़िया ऊपर
रही थी। उसके दो सफेद पंख थे।
विल के लिए नयी चीज थी।

वह कुछ देर तक उसे देखता, सोचता
। वह सोचता रहा—वह यहां कैसे आ
? यह सब क्या है ? वह कहां है ?

भी चिड़िया फिर चहक उठी। इस बार
ाज उसके बहुत निकट से आयी और
जैसे फिर
के मस्तिष्क के
खोल दिये।

उसे सब याद
लगा।

वह रानडंग
ो के बंदरगाह
एक छोटी-सी
पर अकेला ही
पड़ा था। तब
कारिता का
उसमें लहरें
रहा था।
ग्य से बीच
फान आ गया।
मुश्किल से वह
-भरे इस नितांत
की द्वीप के किनारे अपनी नाव लगा
। चारों ओर से छोटी-छोटी चट्टानें
द्वीप को घेरे हुए थीं। उसने नाव को
कर एक चट्टान का सहारा लिया।
न के ऊपर चढ़ते हुए वह कई बार
ला भी था। उसके पैर हिल गये थे।

नवजीवन का अरुणोदय
[एक फिलिपाइनी चित्र]

और फिर चट्टानों पर इधर-उधर बिखरे हुए वे पानी के सांप! यह गनीमत थी कि वे जहरीले न थे। अन्यथा विल के जीवन का अंत वहीं चट्टानों पर हो गया होता।

वह बड़ी कठिनाई से उन पहाड़ियों पर चढ़ने की चेष्टा करता रहा। हर क्षण उसे लगता कि मृत्यु उसके बहुत निकट खड़ी है। लेकिन किसी अदृश्य शक्ति की सहायता से हर बार बच जाता था। उसके बायें घुटने से खून बहने लगा था। लेकिन वह चढ़ने की कोशिश करता ही रहा।

वातावरण में शाम का धुंधलका छाने लगा था। उसे चक्कर आ रहे थे। चट्टानों पर पड़ी हुई सूखी पत्तियों पर चित लेटा हुआ वह सिर से पांव तक घोर निराशा और तीव्र आशंका से थरथर कांप रहा था।

सुबह तक वह इसी प्रकार लेटा रहा।

× × ×

सुबह का सूर्य उग रहा था।

विल को उन सूखे पत्तों पर किसी के आने की आहट सुनाई दी। उसने बड़ी कठिनाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आल्डुअस हक्सले

से गर्दन ऊपर उठाकर देखा। दो प्यारे बच्चे उसी की तरफ चले आ रहे थे। छोटा लड़का ५ या ६ वर्ष का रहा होगा और बड़ी लड़की ११-१२ वर्ष की। लड़की के हाथ में फलों से भरी टोकरी थी। सूर्य के प्रथम प्रकाश में वे श्वेतवर्ण बच्चे सुनहरे-से दिखाई पड़ रहे थे। वे दोनों कितने सुंदर हैं– विल सोचने लगा।

बच्चों ने उसे फल खाने को दिये। न जाने कब से भूखा था विल। फलों से उसे बड़ा संतोष हुआ। अब उसे भली प्रकार से अपनी चेतना लौटती-सी प्रतीत होने लगी। उसने बालिका से पूछा–"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"मेरी सरोजिनी मैकफाइल।"

"और तुम्हारे भाई का ?"

"टाम कृष्ण।"

लड़की ने थोड़ी देर रुककर विल से फिर पूछा–"क्या तुम पाला में हवाई जहाज से आये हो ?"

विल को इस प्रश्न से पता चला कि इस स्थान का नाम 'पाला' है। वह बोला–"नहीं, हवाई जहाज से नहीं, बल्कि समुद्र की ओर से।"

सरोजिनी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी आश्चर्य में उसने पूछा –"तो क्या तुम्हारे पास नाव है ?"

"है नहीं, थी।"

और विल को फिर वह तूफानी दृश्य याद आ गया। तूफान के बीच उसकी नाव का हिचकोले खाना, नाव का एक-एक तख्ता अलग हो जाना, मस्तूल का गिर पड़ना– यह सब वह अपने मस्तिष्क के संसार में देखने लगा।

उसे एक बार फिर बड़े जोर की कंप-कंपी चढ़ आयी। इस बार उसके हृदय में उठे भय की तीव्रता दूसरे क्षणों से कहीं अधिक थी।

फिर उसने सरोजिनी को सांपों से भरी चट्टान पर चढ़ने और घायल होने की कहानी सुनायी। वह उसे खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुना रहा था।

सब कुछ सुनकर सरोजिनी ने कहा– "लेकिन तुम इतना डरे हुए क्यों हो ? तुम्हें सांप ने काटा नहीं। चट्टान से तुम लुढ़के भी नहीं। कोई गहरी चोट भी तुम्हें नहीं लगी। और फिर यह सब तो कल हुआ था। आज का दिन तो बड़ा सुंदर है। आकाश साफ है। सूर्य खूब चमक रहा है। सभी शुभ है। फिर यह सब क्यों ?"

हां, अब, जब प्राण बच गये हैं–तो यह सब क्यों हो .....?

विल ने सोचा और सोचकर बड़े जोर से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ा।

...ी उन लोगों के बीच शुद्ध यूरोपीय ...में एक व्यक्ति आ खड़ा हुआ। उसे ...ी सरोजिनी उत्साह से चिल्लायी—...ी!"

...व्यक्ति अपनी आयु के पचास वर्ष ...र चुका था। उसके चेहरे पर एक ...गंभीरता थी।

...को अपना परिचय देते हुए उसने ...'मैं डाक्टर रावर्ट मैकफाइल हूं। ...ी मेरी पोती है।"

...पर बातचीत के दौरान सरोजिनी ...की मुसीबतों की पूरी कहानी रावर्ट ...ा दी। रावर्ट का मन विल के प्रति ...समवेदना से भर गया।

...को सामान्य घरेलू मनःस्थिति ...ने के लिए रावर्ट ने उसे अपने परि-...के विषय में बताना आरंभ किया। ...ने बताया कि उनका सबसे बड़ा बेटा ...था। सरोजिनी उसी की बेटी है। ...महीने पहले पर्वत पर चढ़ते समय ...दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसी में ...मृत्यु हो गयी।

...समय वृक्षों के बीच, कहीं से ...आयी—"सावधान!"

...के पूछने पर डा० रावर्ट ने बताया ...गीरों की सुरक्षा और तत्परता के ...वहां के राजा ने लगभग एक हजार ...ों को मानवी भाषा सिखा रखी है। ...रावर्ट ने चिकित्सा व उपचार के लिए ...को गेस्ट हाउस के अस्पताल तक ले जाने के लिए विजय भट्टाचार्य और मुरुगन मालेंद्र को बुला लिया था। मालेंद्र सुंदर चेहरे और कोमल भावोंवाला एक किशोर था। विल को बहुत ही आश्चर्य हुआ, जब उसे स्मरण आया कि उसने मुरुगन को रानडंग लोबो में कर्नल दीपा के साथ देखा था और उसने कर्नल की खूबसूरत मर्सिडीज बेंस कार एक सौ दस मील की रफ्तार से दौड़ायी थी। वह कुछ कहने को ही था; लेकिन तभी मुरुगन ने इशारे से विल को खामोश कर दिया।

गेस्ट हाउस के अस्पताल में पहुंचकर विल ने डा० रावर्ट को बताया कि वह कर्नल दीपा से केवल एक संवाददाता की हैसियत से मिलने गया था। वास्तव में, विल यह कैसे बताता कि वह लार्ड एल्डीहाइड के काम से तानाशाह दीपा से मिलने गया था। एल्डीहाइड अपने पेट्रोलियम व्यापार का विस्तार करना चाहता था। वह दक्षिण पूर्व पेट्रोलियम कंपनी का सर्वेसर्वा था। विल वस्तुतः यही सब तय करने के लिए आया था कि कर्नल दीपा की शर्तें क्या होंगी? राष्ट्रीयकरण तो नहीं किया जायेगा? कितना धन रानडंग से बाहर भेजा जा सकेगा? आदि-आदि।

कर्नल दीपा ने इस विषय में काफी सहयोग-भाव दिखाया था। एल्डीहाइड चाहता था कि विल पाला भी जाये। पाला की रानी से एल्डीहाइड की मित्रता थी। रानी के 'आत्मशुद्धि' यज्ञ में उसने रुचि दिखायी थी। पाला के पेट्रोलियम पर भी उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

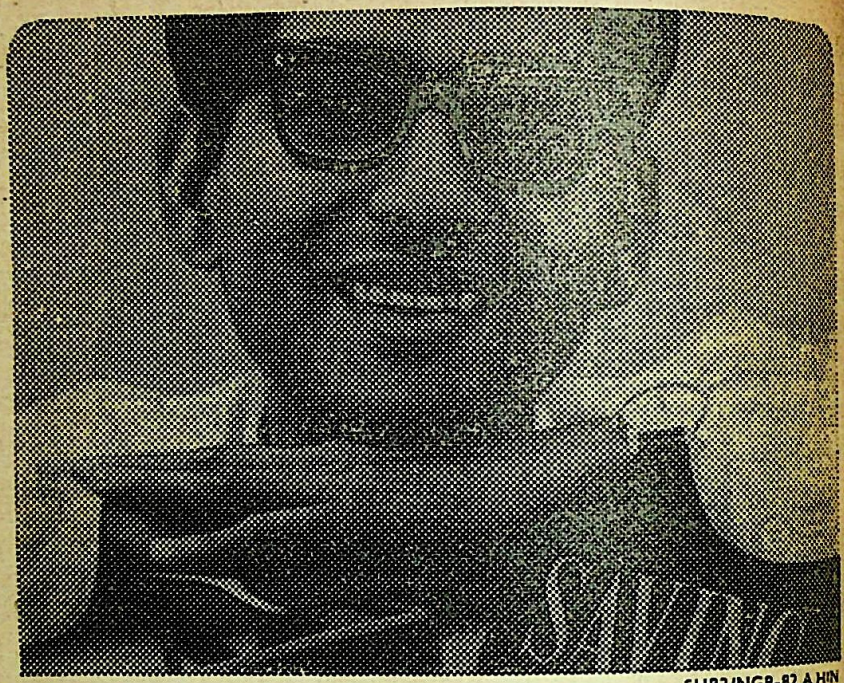

SHB2/NGB-82 A HIN

असली दोस्त के समान···नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ का एक सेविंग्स एकाउण्ट

५) से ही शुरू कीजिए-और देखिए, किस प्रकार हमारे यहाँ का एक एकाउण्ट असली दोस्त बन जाता है। आज ही अपनी नजदीक वाली शाखा में पधारिये।

आपकी संचित रकम चाहे कितनी कम क्यों न हो नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ के समक्ष आप सर्वदा माननीय हैं।

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समितिबद्ध : सदस्यों का दायित्व सीमित

बम्बई की शाखायें:—९०, महात्मा गांधी रोड; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लॉयडज़ ब्रान्च); मिंट रोड, (मिंट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर); २१/२९, प्रिन्सेप स्ट्रीट, लॉयडज़ ब्रान्च); ११७/११९, काज़ी सैयद स्ट्रीट, माण्डवी; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सांताक्रुज; ५७४ गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर; २४बी, क्लब रोड वाश्कला। ठाणा:—आग्रा रोड. कोलबाद रोड, (कॅसल मिल्स के पास)।

एसोसियेटेड बैंक्स : लॉयड्स बैंक लिमिटेड • नेशनल प्रॉविन्सियल बैंक लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी हुई थीं। इन दो सौदों के बदले विल को अपने अखबार से एक वर्ष वेतन छुट्टी और भारी बोनस देने का दिया था। यह विल का सौभाग्य था कि वह पाला आ पहुंचा था। यहां में उसे अनायास ही डा० रार्बट विशेष कृपा प्राप्त हो गयी। और यह बड़ी बात थी कि डा० रार्बट के बंगले में ठहरने के लिए स्थान मिल गया। मकान में उनकी पुत्रवधू सुशीला रहती थी।

× × ×

आसमान में ज्वालामुखियों के धुंआरे से उड़ रहे थे। सुशीला मैकफाइल अपने डुगाल्ड की मृत्यु के बारे में सोच रही पीपल की फैली शाखाओं के बीच कबू-रों के जोड़े फुदक रहे थे। डुगाल्ड का हो गया विकृत चेहरा उसकी कल्पना में आया। एक क्षण के लिए वह बेभान-सी गयी। किंतु उसने भाग्य के साथ सम-झौता कर लिया था। वह जानती थी कि उसे इन दो नन्हे प्राणों के लिए जीना होगा।

विल को अस्पताल में पहुंचाकर डा० रार्बट ने अपनी पुत्रवधू सुशीला को विल की दुःखद कथा सुनायी। सुशीला संवेदनशील युवती थी। वह उसी दिन विल को देखने गयी। उसने विल बताया कि वह मेरी सरोजिनी की मां है। फिर बातचीत के दौरान उसने इंग्लैंड और वेल्स में बीते अपने विद्यार्थी-जीवन की बहुत-सी बातें बतायीं। इन बातों में वेल्स की झीलों, जलाशयों और राजहंसों का वर्णन था।

सुशीला जब यह सब बता रही थी, तो ऐसा लगता था, मानो वह उन जलाशयों की लहरों से एकाकार होकर बहती जा रही हो। उसके चेहरे पर बालकों की भांति भोलापन छा गया था। वास्तव में उसकी बातें मेस्मरिज्य के प्रयोग सरीखी थीं, जो मन-प्राणों की पीड़ा को कम करने में सक्षम थीं।

डा० रार्बट को अपने पुत्र डुगाल्ड की आकस्मिक मृत्यु से गहरा सदमा पहुंचा था। इधर उनकी पत्नी लक्ष्मी एक अरसे से बीमार थी। वृद्ध दंपति अपनी वर्षों पुरानी स्मृतियों को दोहराकर कुछ राहत पाते थे। डा० रार्बट ने हमेशा ही इस बात को स्वीकार किया कि जीवन और जगत् के संबंध में उनकी जो भी दृष्टि है, वह अपनी पत्नी लक्ष्मी के कारण ही मिली है। और आज जब वह बीमार थी, डा० रार्बट उसकी परिचर्या में पूरी तरह लीन हो गये थे। वस्तुतः वह दिव्य प्रेम का एक उत्कृष्ट स्वरूप था।

× × ×

दूसरे दिन डा० रार्बट ने विल को यह बताया कि उन्हें पाला की राजधानी शिवपुरम् में प्रीवी-कौंसिल की बैठक में शामिल होना है। उनकी अनुपस्थिति में सुशीला उसकी देख-भाल करेगी। साथ ही उन्होंने पाला के पुराने राजा की एक आध्यात्मिक पुस्तक उसे भेंट की, जिसका शीर्षक और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफेद बाल अब कोई समस्या नहीं रहे

यदि आप युवावस्था में ही सफ़ेद बालों के कारण बूढ़े दिखाई देने लगे हैं तो आज ही क्रैस्ट परमानैण्ट हेअर डाई

के प्रयोग से आप के सफ़ेद बालों को काला कर सकते हैं जो बिल्कुल बेमालूम और प्राकृतिक दिखाई देता है। साबुन या शैम्पू का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और एक बार लगाया हुआ डाई कई सप्ताह चलता है। क्रैस्ट परमानैण्ट हेअर डाई दुर्गन्ध-रहित और उत्कृष्ट पदार्थों से बना एक अनुभूत प्रयोग है। यदि इस डाई को लगाते समय त्वचा पर एक-आध निशान पड़ जाय तो उसे क्रैस्ट स्टेन रिमूवर से सरलता से साफ़ किया जा सकता है।

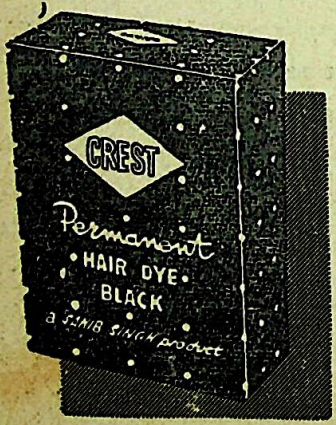

साहिब सिंह द्वारा गारण्टीड् उत्पादन

विशेष जानकारी के लिए नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए।

दि क्रैस्ट एडवाइज़री सर्विस
पो० ऑ० बॉक्स, ४४०,
नई दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र दोनों ही कुछ विचित्र थे। पुराने
का देहावसान सन १९३५ में हो गया
उनके पुत्र की मृत्यु उनसे पूर्व ही हो
थी। अतः नाती को सिंहासन मिला।
न राजा उसी नाती का प्रपौत्र था।
ड० रावर्ट से सहज ही इतनी जानकारी
र कर लेने के पश्चात् विल ने मैक-
परिवार के विषय में पूछा। डा०
ट ने बताया कि उनके आदि पुरुष
ाइल पुराने राजा के दादा के समय में
आये थे।

डा० रावर्ट के चले जाने के पश्चात् विल
पुस्तक के कुछ पन्ने पलटे। उन पृष्ठों
थान-स्थान पर सूत्र-वाक्य लिखे थे।

दाहरणार्थ :

हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं।
हम समझ सकें कि हम पहले ही वहां
जहां हम जाना चाहते हैं।

र्म के सारे शब्द गंदे हैं। जो बुद्ध, ईश्वर
ईसा के विषय में उपदेश देते फिरते हैं,
चाहिये कि वे पहले कार्बोलिक साबुन
मुंह धो लें।

संघर्ष और कुंठा सारे इतिहास और
चरित्रों की कथावस्तु है।

र्म और श्रद्धा के बीच एक अंतर है।
में हम उन शब्दों पर भी गंभीरता से
ार कर लेते हैं, जिनका कोई विश्ले-
नहीं हुआ। पाल, मुहम्मद, मार्क्स और
ेनर के शब्द लोग विश्वासपूर्वक स्वीका-
हैं। परिणाम ? परिणाम है—इतिहास
दुर्गति। अतः हे प्रभु, हमें धर्म में भक्ति

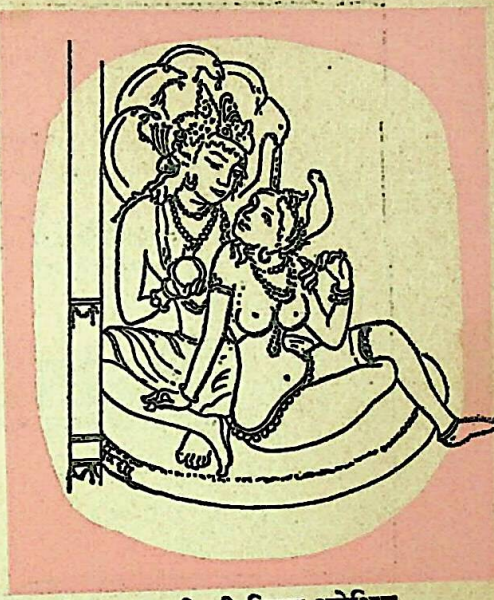

प्रेम.....उसकी भी शिक्षा अपेक्षित

दो और श्रद्धा से मुक्ति।

विल जब इस तरह की सर्वथा नवीन मान्यताओं से युक्त पुस्तक को पढ़ने में तल्लीन था, तभी मुरुगन ने भीतर प्रवेश किया। विल ने पुस्तक बंद कर दी।

× × ×

मुरुगन कर्नल दीपा के विचारों और सुधारों से अत्यधिक प्रभावित था। वह पाला का भावी राजा था; लेकिन डा० रावर्ट के 'युटोपिया' से उसके विचार मेल नहीं खाते थे। वह पाला के आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के पक्ष में था। उसका विचार था कि पुराने लोग प्रतिक्रियावादी होते हैं। उसने विल से पेट्रोलियम की बात शुरू की ही थी कि तभी रानडंग के राजदूत अब्दुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसल्स की
ठंडी हवा में प्यारभरी नींद

कैसल्स पंखे
सुख देते हैं और इतने उत्कृष्ट होते हैं कि
बिना किसी गड़बड़ी के बरसों तक सेवा करते हैं।

कैसल्स
...हर परिवार का प्रिय

एकमात्र विक्रेता:
बनाल इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
[illegible]

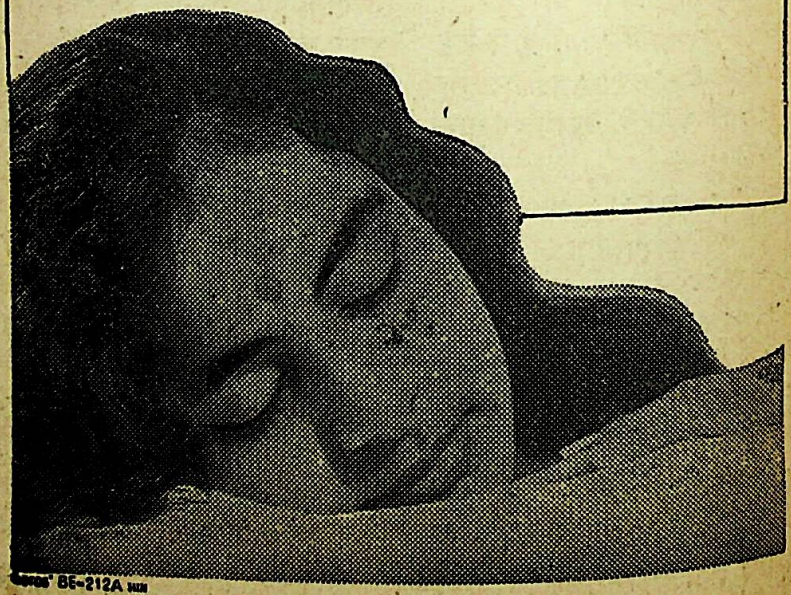

BE-212A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के साथ रानी वहां आ पहुंची।
विल को अब्दुल बाहु का व्यक्तित्व
सुंदर जान पड़ा। रानी ने विल से बाहु
भूरि-भूरि प्रशंसा की। विल की कुशल-
पूछने के पश्चात् रानी ने अध्यात्म और
'आत्मशुद्धि' यज्ञ की बातें आरंभ
दीं। उसने बताया कि उसका योग-
यों पर विश्वास है। इस यज्ञ के द्वारा
मानवता के कल्याण की संभावना
थी। फिर वह विल को अपने द्वारा
यों प्राप्त की जाने की बात विस्तार
सुनाती रही।

बातचीत में रानी ने पाला की शासन-
था की आलोचना की तथा अपने और
न के स्विट्जरलैंड तथा दक्षिण यूरोप
चिन के प्रसंगों को दोहराया। साथ ही
ने यह भी मान्यता प्रकट की कि जब
संसार वैज्ञानिक साधनों से एकाकार
हो जा रहा है, तब पाला अपनी एकांत
ता के माध्यम से किसी भी प्रकार सफल
हो सकता। उसने यह भी बताया कि
डा० रावर्ट के 'युटोपिया' को अर्थहीन
मानती है। इन बातों के साथ-साथ लार्ड
हेडिंग्हाइड के पेट्रोलियम के सौदे की बात
उसने छेड़ी।

विल पलंग पर लेटा हुआ बड़े ध्यान से
सब सुन रहा था। तभी उसे याद आया
दवा पीने का वक्त हो गया है और उसने
नर्स राधा अप्पू को आवाज दी।

दूसरे ही क्षण राधा ने भीतर प्रवेश
किया। उसका सौंदर्य अनुपम था। वह शोख
किंतु अपने काम में तेज और साथ ही एक
अल्हड़ व्यवहार करनेवाली लड़की थी।
राजदूत बाहु राधा के सौंदर्य का प्रशंसक था।
लेकिन विल ने महसूस किया कि जैसे सुंदर
त्रिवली और आकर्षक उरोजोंवाली राधा
राजदूत बाहु की प्रशंसा के बावजूद दूर-ही-
दूर रहती है।

रानी अब तक विदा ले चुकी थी। राधा
ने विल को दवा पिला दी। उसके आने से
जैसे विषयांतर-सा हुआ। एक बार फिर
पेट्रोलियम की बातें आरंभ हुईं; लेकिन
थोड़े ही समय पश्चात् चर्चा पेट्रोलियम से
हटकर 'सेक्स' पर उतर आयी।

उन्होंने यौन विषयों पर खुलकर चर्चा
की और अंत में यह स्वीकार किया कि वे
सभी मनोविकारग्रस्त पापी हैं और अनंत
की नाव पर तैर रहे हैं; यह नाव धीमे-
धीमे डूबती जा रही है और उस डूबती नाव
को छोड़कर कोई भाग नहीं सकता।

थोड़ी देर में राजदूत बाहु वहां से चला
गया। राधा की भाव-भंगिमा में उसके
प्रति स्पष्ट असंतोष झलक रहा था। उसके
जाने के बाद विल से बोली—"क्या यही इनके
देश का रवैया है कि ये पैसे देकर किसी
तरुणी को साथ सोने का न्योता दें; यदि
वह तैयार न हो, तो और अधिक पैसे देने
की बात करें?"

तभी मौका देखकर विल ने राधा से पूछ
लिया—"मुरुगन से तुम्हारा क्या संबंध है?"

वह हंस पड़ी। बोली—"मुरुगन को प्रेम
की प्रारंभिक रूपरेखा मैंने ही समझायी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आनोखा नया टायर"

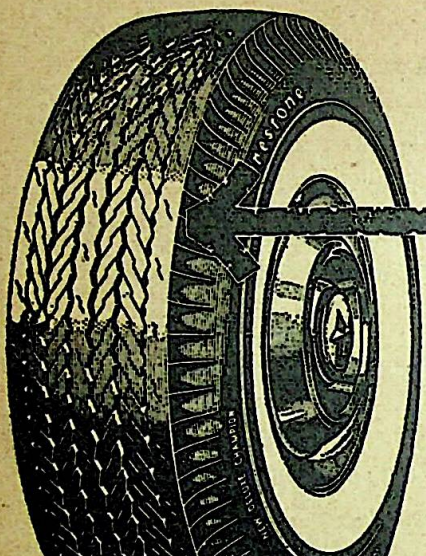

अतिरिक्त माइलेज के लिये बेजोड़

सुपर-टफ

आश्चर्यजनक रबड़

से बने नये टायर आपको अतिरिक्त माइलेज देते हैं।

फायरस्टोन की खोज और विकास इंजीनियरों ने अकथ परिश्रम के बाद एक नया आश्चर्यजनक रबड़ निकाला—सुपर-टफ जो अतिरिक्त लागत के बिना आपको अतिरिक्त माइलेज देता है। अब आपके सामने पेश करते हैं—न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर, जिसका सुदृढ़ ट्रैड सुरक्षित मोटरिंग के लिये बनाया गया है।

अब प्रत्येक फायरस्टोन पॅसिंजर टायर सुपर-टफ रबड़ से बनते हैं, जिससे आपको किसी भी गति पर किसी सड़क पर अतिरिक्त माइलेज मिलता है। इससे आप सुरक्षित रहते हैं; क्योंकि सुपर-टफ बहुत मजबूत होता है। जिस पर पंचर, चोट या ब्रेक का कोई असर नहीं।

Firestone फायरस्टोन

न्यु डिलक्स चैम्पियन टायर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझसे अवस्था में बहुत छोटा है। पहले बहुत शरमीला और डरपोक था। अब धीरे-धीरे काफी खुल गया है।

तभी राधा के मित्र रंगा करुणाकरन ने कमरे में प्रवेश किया। राधा ने विल से उसका परिचय कराया। रंगा ने बाहु के प्रति तीव्र घृणा प्रकट करते हुए उसे पूजीपतियों, शोषकों, तानाशाहों और तथाकथित अध्यात्मवादियों का गुलाम बताया।

पाला का स्वच्छंद, किंतु संयत प्रेम-व्यवहार विल के लिए एक नयी चीज थी। वह जानता था कि अमरीका और यूरोप में एक ओर यौन संबंधों पर बंधन हैं और दूसरी ओर कामनाओं की खुली छूट है। परिणामस्वरूप कुंठा उत्पन्न होती है। पाला की परंपरा और प्रचलन के खिलाफ को नियंत्रित करते थे। यह उसे नापसंद था। वह अपनी हिटलरशाही कल्पना के अनुसार पाला का आमूल नवीनीकरण चाहता था।

रंगा ने विल के सम्मुख संभोग, तंत्र और निर्वाण आदि के अनेक रहस्यों की व्याख्या की। उसने बतलाया कि संभोग प्रेम की यौगिक क्रिया-मात्र है। उससे वायवीय प्रेम पावन होता है। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धत्व भी योनि में ही अवस्थित है। संभोग ही ध्यान है।

रंगा ने आगे बतलाया कि 'सेक्स' के इस गहन विषय की शिक्षा उन्हें स्कूल में ही दी जाती है। इसीलिए तो परिवार में दो या बहुत हुआ तो तीन बच्चे होते हैं। अन्य देशों में यह पद्धति नहीं होती। वे इन बातों को छिपाते हैं और उससे काम-विकृतियां और अनियंत्रित आबादी, वैषम्य और विग्रह उत्पन्न होता है, जिसमें राजनीतिज्ञों की बन आती है। एक ओर औषध-विज्ञान और आरोग्य-शास्त्र का विकास होता है, दूसरी ओर शोषण, युद्ध और पीड़ा के खेल खेले जाते हैं—और फिर उन सबको ईश्वर के नाम पर थोपा जाता है। पाला ऐसे सभ्य संसार से पृथक रहना ही श्रेयस्कर समझता है।

संभोग....निर्वाण का सोपान

उसने यह भी बताया कि डा० राबर्ट के पूर्वज डा० एंड्रू ने पाश्चात्य जीवन की इन सब विषमताओं को गहराई से समझा था और उन्होंने जान लिया था कि आबादी की अनियंत्रित वृद्धि ही तमाम समस्याओं का मूल है। इसलिए उन्होंने पाला में संतति-नियमन के प्रयोग-केंद्रों की स्थापना की और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Shingl-SOH 33 Hindi

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

बुरी तरह उलझे-बिखरे बालों को भी सँवारने योग्य बना देता है। —उन्हें दिन भर सँवरे हुए रखता है!

मुलायम और लहराते हुए बाल... चमकीले और आकर्षक बाल... स्वस्थ और सुगंधित बाल...दिन भर सँवरे हुए बाल...यह है स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल का कमाल!

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि. बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरकार पाला को अधिक-से-अधिक संपन्न
र खुशहाल रखने का प्रयत्न किया ।
विल को सचमुच अपने पर ग्लानि हो
ती। वह सोचने लगा—कितने अच्छे और
ले लोग हैं ये। और एक मैं हूं, जो व्यापा-
यों और तानाशाहों से मिलकर इनकी
त जीवन-पद्धति के विरुद्ध षड्यंत्र कर
ा हूं।

× × ×

कमरे में पूर्ण निस्तब्धता थी ।
विल पुराने राजा की अद्भुत पुस्तक
ढ़ा रहा । उसे विचित्र स्थापनाएं पढ़ने
मिलीं। कुछ देर बाद जब वहां सुशीला
ई, वह उससे वहां की सामाजिक मान्य-
ताओं के विषय में चर्चा करता रहा ।
शीला ने उसे 'म्यूच्युअल एडाप्टेशन क्लब'
विषय में बताया । क्लब में वृहद् परि-
र होते हैं, जहां कई सहपिता, सहमाता,
भाई और सहबहनें रहती हैं । इस
कार प्रेम की अनुभूति और जिम्मेदारी
ढ़ जाया करती है। इस व्यवस्था के कारण
धिक सदस्य शांत और संतुष्ट रहता है ।
रकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता । शेष
कार में यह स्वतंत्रता नहीं होती । पाला
बच्चों को समाज की सक्रिय मूर्तियों के
प में विकसित किया जाता है । वे आरंभ
ही अपने उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक
ते हैं । वे स्वयं अपना भवितव्य समझने
ते हैं । दूसरे देशों में बच्चे विक्षिप्त-
त होने लगते हैं, या पाप की ओर उन्मुख
ते हैं । फिर ऐसी दशा में, आश्चर्य ही
क्या यदि संसार में हजारों जेलें, चर्च और कम्युनिस्ट काल-कोठरियां हों ।

इस वार्तालाप से विल विचलित हो उठा । उसे मालि और अपने संबंध याद आने लगे । संवेदनाओं के आवेग और पश्चात्ताप की जलन में उसने अपने जीवन का इतिहास सुशीला को सुना दिया ।

उसने बताया कि कैसे एक स्टूडियो में मालि के साथ उसका परिचय हुआ । वह मूर्तिमती दया थी । वह मालि से सच्चा प्यार करता था । किंतु मालि की उदारता से उसकी स्वच्छंदता बढ़ती गयी । और परिणामस्वरूप एक यहूदी लड़की रैशेल से, जिसकी मालि ने कभी आर्थिक सहायता की थी, उसका संपर्क बढ़ता गया । इससे मालि दुःखी और निराश रहने लगी । इधर विल को क्रोध आता था कि मालि अपने प्यार और एकाधिकार से उसके और रैशेल के बीच आती रहती थी । उसके मन में मालि के प्रति न क्रोध ही होता और न घृणा ही, यदि वह अपने प्रेम का बोझ उसे अनुभव न होने देती ।

.....फिर जब वह एल्डीहाइड के काम से अफ्रीका गया, तो बैब उसके जीवन में आयी और गहरे पैठ गयी । वास्तव में 'सेक्स' एक लत है, जिससे छुटकारा पाना आसान नहीं । और बैब के कारण विल को मालि खोनी पड़ी थी ।

मालि का ताबूत कब्र में उतारते समय उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह भविष्य में बैब से कभी न मिलेगा । किंतु अगली ही रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS
BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ,ही साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स्
लिमिटेड.

टेलेफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS Ltd. BOMBAY.
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मकान के दरवाजे की घंटी बजी, और ने देखा कि वैव सामने खड़ी है। वह नी प्रतिज्ञा भूल गया और आधे घंटे के तर ही वे दोनों हमबिस्तर थे।

तीन महीने में ही वैव उससे उकताकर ग हो गयी।

× × ×

डा० रावर्ट शिवपुरम् से लौट चुके थे। क दिन विल के पूछने पर उन्होंने उसे ाया कि पाला की सबसे बड़ी आपत्ति र्नल दीपा है। उन्होंने बताया कि कर्नल ीपा का कहना है कि बृहत्तर रानडंग पर उसका अधिकार है। उसने १४४७ से १४८३ क के सुलतानों के साम्राज्य के नक्शों के आधार पर रानडंग को पाला का एक इलाका सिद्ध करने की चेष्टा की है और अब उसे हड़प जाने की घात में है। पाला अपनी तटस्थ नीति एवं नये प्रयोगों के कारण न तो कम्युनिस्टों का कृपा-पात्र है और न पूंजीपतियों का। अगर पाला पर हमला हुआ, तो दुनिया के अखबार उसकी भर्त्सना तो अवश्य करेंगे; लेकिन इंसाफ और मदद के लिए कोई आगे नहीं आयेगा। और इस प्रकार संसार में हिटलर की आत्मा जागृत रहेगी। पाला के लिए यही एक चारा है कि वह राष्ट्रसंघ में आवाज उठाये और कर्नल की बात का प्रतिकार करे।

डा० रावर्ट ने यह भी बताया कि रानी पेट्रोलियम के प्यासे शोषक पूंजीपतियों का साथ देगी। वास्तव में वह रानडंग के सुलतान की बेटी है। भावनात्मक आधार पर

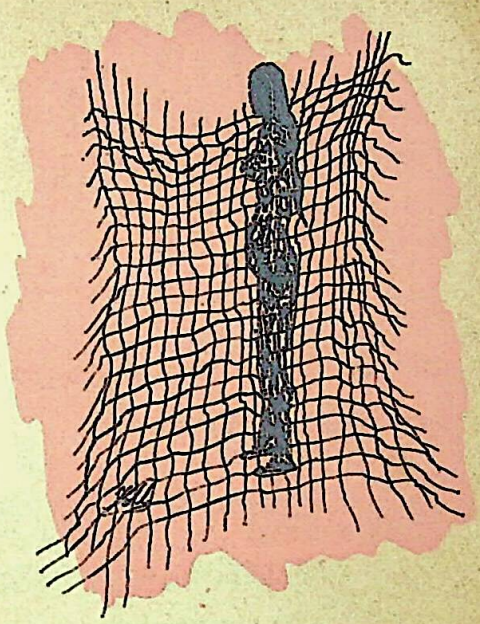

अनावृत

चित्रकार : कमलाक्ष शर्मा

ये साम्राज्यवादी रानडंग और पाला को एकता की जंजीर में बांधना चाहते हैं। पाला शांतिमय सामाजिक प्रयोगों में लगा रहा, इसलिए उसकी कोई सैनिक तैयारी नहीं है।

आगे उन्होंने यह भी बताया कि पाला के राष्ट्रीय जीवन में मैकफाइल परिवार की बड़ी जिम्मेदारी रही है। इस कुल के प्रवर्तक डा० एंड्रू मैकफाइल मद्रास में डाक्टर थे। पाला के राजा ने उन्हें अपने भयंकर टचूमर के इलाज के लिए बुलाया था। टचूमर बहुत फैला हुआ था और उसका इलाज वस्तुतः टेढ़ी समस्या थी। डा० एंड्रू ने बड़े साहसपूर्वक मेस्मरिज्म का प्रयोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र और 'ट्यूमर' का आपरेशन कर
ा। सौभाग्य से आपरेशन सफल हुआ।
न राजा की गर्भवती बेटी का आपरेशन
किया गया। राजकुमारी को न जाने कैसे
ह शंका हो गयी थी कि उस प्रसव में वह
ही नहीं सकती। उसे भी डा० एंड्रू ने
स्चिरुम से बचा लिया। कृतज्ञ राजा ने
० एंड्रू को अपना प्रधान मंत्री तथा
ल बना लिया।

दोनों के आदर्श और विचार मिल गये। दोनों ने निश्चित दिशा में प्रयोग करना आरंभ कर दिया। दोनों ही मित्र बागानों के मालिकों, पूंजीपतियों, मिशनरियों और व्यापारियों की भयानक प्रवृत्तियों से सचेत थे। पाला में साहित्य तथा ललित कलाओं का विकास हुआ। किंतु उन्होंने स्वार्थ या शोषण को पनपने नहीं दिया।

× × ×

विल की हालत सुधर चुकी थी। उस दिन सांझ गहराती जा रही थी। विल और मुरुगन बड़ी देर से बैठे बातें कर रहे थे। बात आधुनिक वाणिज्य को लेकर चल रही थी। मुरुगन रानडंग के उद्योग-धंधों और उसके निर्माण-व्यवसाय से अत्यंत प्रभावित था। वह डा० राबर्ट के मंतव्यों और पाला की परंपरागत एकांत-नीति में विश्वास नहीं करता था। वह चाहता था कि पाला में बस पैसा बरसे। उसका कहना था कि पाला के लोगों में यह भ्रम फैला है कि वे सुखी हैं। दुनिया आगे निकल रही है और पाला जहां-का-तहां पड़ा है।

राबर्ट मुरुगन के इन विचारों से परिचित थे; लेकिन उन्हें अधकचरी और बचकानी बातें समझकर टाल जाया करते। मुरुगन पाला की व्यवस्था को नशे का ही प्रकारांतर मानता था। समाधि में उसका विश्वास नहीं था। वह समृद्ध भौतिक जीवन जीने का आकांक्षी था। डा० राबर्ट की मान्यताएं इसके विपरीत थीं। उन्हें मोक्ष के औषध में विश्वास था। विल का इलाज भी उसी से हुआ था। एक बार उन्होंने विल को बताया था—व्यक्ति कभी भी मर सकता है, मृत्यु निश्चित सत्य है; फिर भी यह कैसी नादानी है कि मृत्यु के लिए कोई तैयारी नहीं करता। उन्होंने यह भी कहा था कि पाला में खाने-पीने की समृद्धि है; चाहें तो निर्यात भी किया जा सकता है। उत्पादन बढ़ाया जा सकता है और इस तरह साम्यवाद की स्थापना कठिन नहीं है। किंतु इन दो सिद्धांतों को याद रखना आवश्यक है :

(१) बिजली – भारी उद्योग-धंधे + संतति-नियमन=जनतंत्र तथा समृद्धि।

(२) बिजली + भारी उद्योग-धंधे – संतति-नियमन=दुःख, तानाशाही और युद्ध।

पाला न पूंजीवादी देश था और न साम्यवादी। वह तो बस संहकारिता में विश्वास करता था। डा० राबर्ट ने उस दिन विल को बताया कि अन्न-वस्त्र और आवास की सुविधाओं के अनुपात से संतानोत्पत्ति करके ही पाला मानवता का विकास कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीडा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुडने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पड़े।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

83 DOL 2A HIN

खास जनता

किरासन कुकर

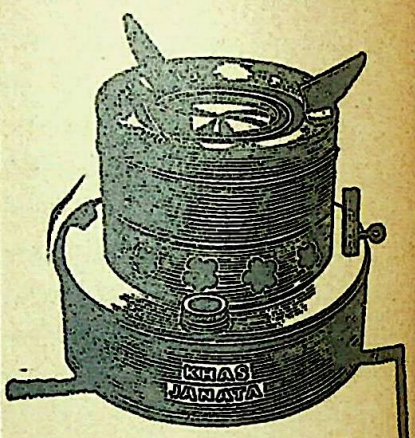

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मेटल इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA.OM.55 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता है। यहां उत्पादन और तज्जन्य पूंजी नहीं, जिससे तृतीय महायुद्ध या कोई स्थानीय युद्ध भी लड़ने की आवश्यकता महसूस हो।

उन्होंने बताया कि पश्चिम की समृद्धि के तीन आधार हैं— शस्त्रीकरण, व्यापक ऋण, और साधनों का दुष्प्रयोग। यदि युद्ध, शस्त्रास्त्र व्यय और कर्ज समाप्त कर दिया जाये, तो पश्चिम ढह जायेगा। इसके विपरीत पाला में किसी के व्यक्तित्व को अधिक महत्व ही नहीं दिया जाता। सैनिक शक्ति की पाला को आवश्यकता नहीं और समाज-व्यवस्था ऐसी है कि कोई अधिक अमीर हो ही नहीं सकता। अतः पाला के लिए आंतरिक असंतोष युद्ध या संघर्ष की समस्या ही नहीं है। हां, अच्छे-बुरे तो समाज में होते ही हैं, अतः विद्यार्थी-जीवन से उन्हें पहचानकर उनके सुधार का प्रयत्न किया जाता है। रक्त-जांच और मनोवैज्ञानिक परीक्षण द्वारा उन्हें सम्झाया और सुधारा जाता है।

× × ×

विजय भट्टाचार्य ने विल का लीला राव से परिचय करा दिया था। वह पाला के शिक्षा-विभाग से संबद्ध थी। उन लोगों ने विल को महायान पंथ के मोटे सिद्धांतों और बोधिसत्व के विषय में जानकारी दी। लीला राव ने विल को बताया कि मंदिरों, मूर्तियों तथा चित्रों की सहायता से बच्चों को किस प्रकार मानवता में दीक्षित किया जाता है और रूढ़ संस्कारों से मुक्त होकर सोचने की शिक्षा दी जाती है।

एक दिन विल विजय भट्टाचार्य के घर भोजन के लिए आमंत्रित था। जब वह वहां पहुंचा, भट्टाचार्य की पत्नी शांता अपने सुंदर बच्चे को नहला रही थी। विल को बच्चे खास पसंद न थे। किंतु उसने पूछा— "कितना सुंदर है! यह आप-सा दिखाई देगा या विजय जैसा?"

"विजय जैसा तो निश्चय ही नहीं दिखाई देगा।" शांता ने कहा।

"क्यों?"

"चंकि मैं इसके जन्म के लिए उत्तर-

मनचीता मातृत्व

दायी नहीं हूं।" विजय ने मुस्कराकर कहा।

विल भौंचक्का रह गया।

"चार वर्ष पूर्व हमारे जुड़वां बच्चे हुए थे। इस बार हमने एक परिवर्तन किया। यह बच्चा गोविंदसिंह का है। आपने गोविंदसिंह का नाम सुना है?" शांता ने पूछा।

"हां, अभी-अभी विजय ने मुझे गोविंदसिंह के चित्र और 'लैंडस्केप' दिखाये थे। किंतु उस महान चित्रकार को तो गुजरे कई वर्ष हो चुके!"

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पर भट्टाचार्य-दंपति ने विल को बताया कि किस प्रकार पाला में कृत्रिम गर्भाधान होता है। किस प्रकार शुक्राणु वर्षों तक 'फ्रीज' करके रखे जाते हैं, जिससे मरे हुए महान व्यक्तियों की संतति आगे चलती है। प्रायः अपने दो बच्चे हो जाने के उपरांत पाला के दंपति तीसरा बच्चा इसी विधि से प्राप्त करते हैं। इससे विश्व-मानवता की उदार भावनाओं का भी विकास होता है। इस प्रकार अहिंसा, मानवता और सौहार्द की रक्तगत भावनाएं संतान में आती हैं और बड़े होने पर वे सौहार्द और भाईचारे को कमजोरी नहीं समझतीं।

विल के लिए यह एक अपूर्व अनुभव था।

× × ×

एक दिन विल को पाला की शिक्षण-व्यवस्था देखने का अवसर मिला। वहां शिक्षा-केंद्रों में छोटे-छोटे आकर्षक काम दिये जाते थे, जिससे बच्चे अपना भावी उत्तरदायित्व समझ सकें। उसने देखा कि स्कूल के बगीचों में अन्य साथियों की भांति मेरी सरोजिनी और टाम कृष्ण भी रखवाली कर रहे हैं। विजय भट्टाचार्य ने विल को स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती नारायण तथा सचिव श्री मेनन से परिचित कराया।

श्रीमती मेनन ने कहा—"हमें सबसे पहले यह बुनियादी बात सोचनी होगी कि ये नन्हे लड़के और लड़कियां किस लिए हैं। उदाहरण के लिए अमरीका में मशीनों, उद्योगों, कारखानों और दफ्तरों में जोतने के लिए हैं। रूस में बच्चे राजकीय संपत्ति हैं, ताकि किसी भी क्षण युद्ध के लिए ५० डिवीजन खड़े किये जा सकें। चीन में भी यही बात है। संभव है, अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पूर्वी देश भी यही सोचें। लेकिन हमारे बच्चे न तो मशीनों या व्यापार में जोतने के लिए हैं और न राष्ट्र की मिल्कियत ही हैं।

"हमारी शिक्षा की पद्धति आप लोगों से भिन्न है। हम छात्रों को सबसे पहले यह सिखाते हैं कि किस प्रकार बीस मिनिट की अनुभूति दस सेकेंड में प्राप्त की जा सकती है। मान लीजिये, गणित का एक प्रश्न है, जिसे हल करने में साधारणतः आधा घंटा लगता है। यदि हम ३० मिनिटों को एक मिनिट में केंद्रित कर सकें, तो यह प्रश्न एक मिनिट में हल हो जायेगा। और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। वास्तव में चोटी के विद्वान इसी प्रक्रिया से इतने ज्ञानी बन पाते हैं।

"आप भय और घृणा के द्वारा शक्ति प्राप्त करते हैं। हम उसका अधिक उपयोग नहीं होने देते। बुरी शक्ति भी शक्ति है। उसे हम दूसरे अच्छे कामों में लगा सकते हैं। हम बच्चों को आरंभ से ही बताते हैं कि हिंसात्मक भावनाएं भूकंप की भांति हमारे तन-मन को झकझोर देती हैं। उनसे मुक्त रहना चाहिये। मैंने केंब्रिज में दो विद्वान देखे थे; जिनके मस्तिष्क तो गजब के विकसित थे; किंतु जो दुनियावी ज्ञान से शून्य थे। उनके शरीर भी अनुपातहीन थे। गरज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि आपके यहां एक पक्ष—विद्वत्ता पर ही दिया जाता है। हम जीवन के विज्ञान बल देते हैं, भौतिक और रसायनशास्त्रों नहीं।

"हम बच्चों को समझाते हैं कि प्रकृति मद्व्यवहार करोगे, तो प्रकृति भी तुमसे व्यवहार करेगी। प्रकृति को हानि पहुं-जोगे, तो प्रकृति तुम्हें मिटा देगी।"

प्रिंसिपल ने विल को कक्षाएं भी दिखायीं। पाई में छात्र इतने डूबे थे कि देखकर विल को आश्चर्य हुआ। बच्चों को जीववैज्ञानिक वर्गीकरण के, विभिन्न श्रेणियों में बांटा गया था।

शाम को विलकी रानी और मुरुगन से भेंट हुई। विल की बातों से स्पष्ट होता चलता था कि पाला की व्यवस्था में उसे श्रद्धा होने लगी है। रानी को यह बात अच्छी नहीं लगी।

× × ×

आज बहुत दिनों के बाद विल सुशीला के साथ बैठा था। सुशीला को वेल्स की झीलों और उनमें तैरते हुए राजहंसों की याद आ रही थी। और विल को उन दिनों की, जब प्रकृति हरी घास और फूलों से भरी रहती है। बाहर जोरों की बारिश हो रही थी और बारिश के दिनों में विल को प्रायः मालि की स्मृति आ घेरती थी। उसके मन की सभी पीड़ाएं और संवेदनाएं मिलकर जलूस की भांति उमड़ी चल रही थीं। उसने अपनी पीड़ाओं की संपूर्ण कहानी सुशीला से कह दी। वह सोचने लगा – इन पीड़ाओं की गहरी घाटियों में जीवन बिताना आपदा-पूर्ण और कष्टकर है। प्रत्येक व्यक्ति अपने को असाधारण और महत्वपूर्ण समझे बैठा है, जबकि वह अनंत के सुदीर्घ अभियान के बीच केवल एक सूक्ष्म-सा गत्य-वरोध है।

स्वप्न-शिशु का संहार

× × ×

शाम उभर आयी थी। मेरी सरोजिनी के साथ विल पाला की गलियों में वहां के सामाजिक जीवन का अध्ययन करने निकला हुआ था। एक स्थान पर उसने देखा—एक मंदिर की सीढ़ियों पर भीड़ लगी है। एक युवक लंबी शहनाई से स्वरावलियां निकाल रहा है। मेरी सरोजिनी ने बताया कि वहां युवक और युवतियां संयत प्रेम का अभ्यास करने के लिए साथ सोते हैं। अब भविष्य में किसी बुद्ध को बोधप्राप्ति के लिए घर छोड़कर, वनों में बोधिवृक्ष के नीचे नहीं बैठना पड़ेगा। उसे अपनी प्रिय-तमा रानी के साथ ही, शय्या पर बुद्धत्व प्राप्त होगा।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय शहनाई पर एडिपस का गीत बज रहा था। निकट ही कठपुतलियों का खेल चल रहा था। यह भी रहस्य-भावना और गूढ़ संकेतों से भरा हुआ था; अतः विल को कुछ दुरूह प्रतीत हुआ।

× × ×

डा० रावर्ट ने विल को मोक्ष के औषध से भी अवगत कराया। विल को बताया गया कि पाला में बचपन में ही जन्म और मृत्यु प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती हैं। अतः मृत्यु पर विशेष शोक-संवेदना का प्रश्न ही नहीं उठता। विल को मृत्यु या विदा का यह रूप देखकर बड़ा कुतूहल हुआ; उसके प्रति विश्वास भी बढ़ता गया। फलतः वह भी उसी समय सुशीला के साथ मोक्ष का यह शांतिमय औषध लेने के लिए तत्पर हो गया।

× × ×

मोक्ष का औषध लेने पर विल के तन-मन-प्राण बादलों जैसे हल्के होकर तैरने लगे। उसे लगा कि जैसे स्मृति और सूक्ष्म संवेदनाएं गहनता से निकलकर स्पष्ट हो रही हों। अनंत में आंदोलित एक सूक्ष्म प्राण। जैसे बुद्ध की निर्वाण की कल्पना इसी देह में साकार हो रही हो। जैसे एक सशक्त आत्मा का निर्माण हो चुका हो।.....विल की समस्त चेतना अपूर्व रूप से जागृत थी। कुंडलिनी जागृत होने पर रहस्यवादी संतों को कुछ ऐसा ही अनुभव होता होगा।

विल सुशीला को बताये जा रहा था कि उसे कब क्या अनुभव हो रहा है। उसने कहा कि वह अदृश्य को देख रहा है और अश्रुत को सुन रहा है।..... वह समस्त भय तथा पीड़ा की सीमा से परे कहीं पहुंच चुका है। सारा अतीत उसकी आंखों की परिधि में से गुजर रहा है। खाकी वर्दीवाले सैनिकों का अभियान, झंडे, तोप, भयानक युद्धवाद्य! कोरिया के कीचड़ में बिछी लाशें, नाजियों द्वारा नचायी गयी मृत्युनटी। और मानव के पास इतना सामर्थ्य भी नहीं कि वह रो सके, चीख सके, पुकार सके।

दूर किसी कोने से पंछी बोले–..... "सावधान .....करुणा।"

सुशीला ने विल से कहा –"सुनते हो, ये मैनाएं क्या कह रही हैं?"

फिर वे एक खुली खिड़की के सामने आकर खड़े हो गये।..... बंगले की ढलाऊ चहारदीवारी के पास राजमार्ग से भारी टैंकों और सैनिक वाहनों की गड़गड़ाहट बढ़ रही थी। सर्चलाइट का प्रकाश चारों ओर व्याप्त था। लाउड-स्पीकर से आवाज आयी :

"पाला के नागरिको, शांत रहो। देखो, तुम्हारा राजा बोल रहा है। द्वीप के पार से आये मित्रों का स्वागत करो।"

यह मुरुगन बोल रहा था। साथ में कर्नल दीपा की फौजें थीं। लाउड-स्पीकर फिर गूंजा–"मेरे माता और पिता के पैतृक राज्य आज फिर मिल गये हैं। अब से यह राज्य 'रानडंग और पाला का संयुक्त राज्य' कहलायेगा। महान राजनीतिज्ञ और आध्यात्मिक नेता कर्नल दीपा उसके प्रथम प्रधान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ो होंगे .....और ये प्रतिक्रियावादी बूढ़े ...र इनके क्रांति के अमर सिद्धांत....."

फौजी टुकड़ियां डा० राबर्ट के बंगले के ...ने रुक गयीं। बंगले के पास की झाड़ियां ...क उठीं। गोली चलने की एक आवाज ...ी। फिर मशीनगनों की गड़गड़ाहट से ...काश कांप उठा। सौ वर्षों का कार्य एक रात में मलियामेट कर दिया गया।

सुशीला ने चादर से मुंह ढंक लिया। वह थरथर कांप रही थी। विल ने उसे सहारा दिया। फौजी टुकड़ियां लौट चुकीं थीं। शोर लगभग समाप्त हो चुका था। कहीं दूर से आवाज आ रही थी :

"सावधान, सावधान.....करुणा।"

पूज्य दद्दा की कर्तव्य-भावना

बात १६ मई १९६४ की है। मैं अपने शोध-कार्य के विषय (सियारामशरण गुप्त) से संबंधित सामग्री प्राप्त करने के लिए चिरगांव गया था। ज्ञात हुआ कि उसी दिन झांसी में पूज्य दद्दाजी के बंगले पर उन्हीं की अध्यक्षता में 'महावीरप्रसाद द्विवेदी-जन्म शताब्दी समारोह' संपन्न होनेवाला है। पूज्य दद्दा ने अपने साथ मुझे भी झांसी लिवा चलने की व्यवस्था कर दी।

शाम को चिरगांव से प्रस्थान करने के लगभग कुछ मिनिट पूर्व ही पूज्य दद्दाजी का स्वास्थ्य खराब हो गया। उनके मुंह से खून की उलटी हुई। सब लोग लोग व्यग्र हो उठे। सबने झांसी न जाने की राय दी। किंतु दद्दा न माने और कार में कुछ कुटुंबीजनों और मुझे साथ लेकर झांसी नियत समय पर पहुंच गये। वहां डाक्टर वृंदावन-लाल वर्मा तथा अन्य स्थानीय साहित्यिक जन थे। समारोह भलीभांति संपन्न हुआ। दद्दाजी ने द्विवेदीजी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उस दिन वे चिरगांव न आ सके। उपचार की दृष्टि से झांसी ही रह गये।

वे दूसरे दिन जब चिरगांव लौटे, तो मैंने उनके अस्वस्थ रहते ए भी समारोह में भाग लेने पर आश्चर्य प्रकट किया, तो पूज्य दद्दाजी ने बड़े सहजभाव से कहा—"मेरे बंगले पर समारोह था, मैं यदि न जाता, तो लोग क्या कहते ? मैं तो और अधिक भाषण देता; किंतु स्वास्थ्य ने सहायता न की।"

मैं उनकी कर्तव्य-भावना पर चकित हो गया। मुझे लगा, जिस तरह उनके काव्य में कर्तव्य-भावना मुखरित हुई है, उसी प्रकार वे व्यावसायिक जीवन में भी कर्तव्य का पालन करते हैं। मैं एक सप्ताह उनके यहां अतिथि के रूप में रहा। उन्होंने मुझे शोध-कार्य में बहुत उपयोगी सलाह और सामग्री दी। वे प्रातः सायं प्रेमपूर्वक घंटों बातें करते। उनके व्यवहार में जो कोमलता तथा हृदय की उदारता प्रकट होती थी, वह आज केवल स्मरण की ही वस्तु रह गयी है।

—शिवप्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल के मछुए

डेविड गंस्टन

मछुए प्रकृति से लोहा लेते हुए सागर की गहराइयों से मछलियां पकड़ते हैं। सदियों से यही ढर्रा चला आ रहा है। किंतु आधुनिक विज्ञान ने अब इस दिशा में इतनी तरक्की कर ली है कि जब मछुए पुराने तरीके छोड़कर वैज्ञानिक साधनों से मछलियां पकड़ना शुरू करेंगे, तो बजाय मछलियों के लिए समुद्र में जाने के मछलियों को ही अपनी ओर बुला सकेंगे।

यह पहले ही मालूम हो चुका है कि मछलियों की अनेक जातियों को उनकी मनपसंद सुगंध से आकर्षित करके समुद्र के किसी चुने हुए क्षेत्र में लाया जा सकता है। सुगंध के पुछल्ले के पीछे मछलियों के दल-के-दल चले आते हैं। यह मछली की अपनी खूबी है कि वह पानी में पड़ी हुई आकर्षक सुगंधवाली वस्तु का, चाहे वह अल्प मात्रा में ही क्यों न हो, फौरन पता लगा लेती है। गंधविज्ञान द्वारा आविष्कृत गोलियां हेलिकाप्टर या साधारण विमान की सहायता से समुद्र में छोड़ दी जाती हैं। उनसे ऐसी गंध निकलती है, जो मछलियों के अपने कुदरती शिकार में पायी जाती है। बस, मछलियां उसकी तरफ तैरने लगती हैं। उत्तरी अटलांटिक में पायी जानेवाली हेरिंग, हरिपृष्ठा (माकरेल) और अमरीकी तूना तथा अन्य कई जातियों की मछलियां इस तरीके से बड़ी संख्या में और बड़े आराम से फंसायी जा सकती हैं।

मछली के कान भी बड़े तेज होते हैं। अतः यह पता लगाया जा रहा है कि क्या समुद्र के जल में विद्युत् या ध्वनि-तरंगों से कुछ विशेष आवाजें पैदा करके मछलियों को मत्स्याखेटक जहाजी जत्थों की ओर लाया जा सकता है कि नहीं। ये आवाजें ऐसी होंगी, जैसी मछलियों के खाद्य-प्राणियों की या उसके प्राकृतिक शत्रुओं की होती है।

खाद्य-मछलियों को पानी में ऐसे स्थान पर लाने के बाद, जहां उन्हें आराम से पकड़ा जा सके, यह भी जरूरी है कि वे उतनी देर उस स्थान में ठहरें, जब तक उन्हें पकड़ा नहीं जाता। इसके लिए समुद्र में एक प्रकार की हवाई जुराबें डाली जायेंगी। इन जुराबों में हजारों बारीक छेद रहेंगे, जिनसे हवा निकलेगी। यह हवा समुद्र-तट से या मत्स्याखेट जहाजों से पंप की जायेगी और इससे पानी में बुलबुलों की दीवार उठती रहेगी। मछलियां इस बुलबुलों की दीवार के कारण तैरकर बाहर नहीं जायेंगी और जहां-की-तहां बनी रहेंगी। सागर के भीतर इस

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तह की फेंसिंग (जाली) उन रासायनिकों से भी बनायी जा सकती है, जिनसे मछलियां बिदकती हैं। इस प्रकार उन्हें घेरे में रखकर इत्मीनान से पकड़ा जा सकता है।

और इस काम को प्रचलित तरीके से ही किया जा सकता है। अंतर यही रहेगा कि अब जिन जालियों का उपयोग होगा, वे अत्यंत उन्नत किस्म की होंगी—आधुनिक प्लास्टिक और मानव-निर्मित तंतुओं से बनी हुई। या यह भी हो सकता है कि समुद्र की गहराइयों में मछली पकड़ने के जाल बिछाने का काम आंशिक रूप से या पूर्ण-तया सुदूर नियंत्रित छोटी पनडुब्बियों से लिया जाये। ये पनडुब्बियां राह दिखायेंगी, जाल खोलकर बिछायेंगी और उसे बंद करेंगी। इनका नियंत्रण या तो जहाज पर स्थित रेडियो-कंट्रोल से होगा या वे स्वयं पानी के भीतर की स्थिति – मछलियों की संख्या, जाति और उनकी गति की दिशा आदि के अनुसार, जैसा जरूरी होगा, अपने आप काम करेंगी।

मछलियों को बड़ी संख्या में इकट्ठा करके जहां जरूरत हो, वहां लाने और फिर उन्हें जालों के जरिये बड़े आराम से पकड़ने की एक और अचूक विधि यह है कि चुने हुए स्थानों पर नीचे समुद्र की पेंदी पर, आणविक रिएक्टर बिछा दिये जायें। इनसे जल में ताप-धारा निरंतर ऊपर उठती रहेगी। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में मछलियां लगातार ऊपर आती रहेंगी, इतनी ऊपर कि समुद्र की सतह से कुछ फुट ही नीचे धूप से प्रकाशित जल में उन्हें साफ-साफ देखा जा सके। यहां अनेक जातियों की असंख्य मछलियों का जमाव हो जायेगा। साथ ही उन्हें पकड़ने के लिए पहले से ही फैलाये हुए जाल भी तैयार रहेंगे। इन जालों पर ऐसा नियंत्रण रहेगा कि ये मछलियों को कैद कर अपने आप जल की उन गहराइयों में ले जायेंगे, जहां ले जाना आवश्यक हो।

अधिक बड़ी मछलियों को आराम से और अच्छी तरह पकड़ने का भी नया उपाय निकाला गया है। अमरीकी तूना और

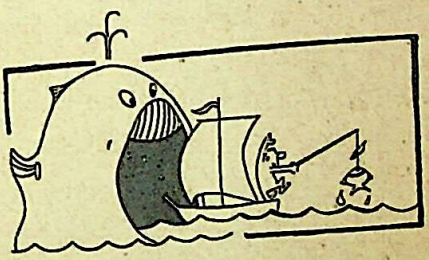

मछली पकड़ने में मगन
[एक रूसी हास्यचित्र]

वेस्ट इंडीज की बाराकूदा-जैसी मछलियों को पानी पर बहते हुए तख्तों या लट्ठों के पास जमा होने की आदत है। ऐसी मछलियों को पकड़ने के लिए काफी संख्या में नकली लट्ठे बहाये जाया करेंगे। ये हल्के वजनवाले प्लास्टिक से बने होंगे और इन्हें वापस किनारे पर खींचा जा सकेगा। इनमें ऐसे इलेक्ट्रानिक यंत्र रहेंगे, जो मछली का पता लगने पर इसकी सूचना देंगे। इस प्रकार ये लट्ठे न केवल मछलियों को आकर्षित करेंगे, बल्कि जैसे ही वे उनके पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इकट्ठी होंगी, संभवतः उनकी गंध और आवाज के सहारे उन्हें पहचानकर उनकी सूचना निकट के मछलीमार जहाज को दे देंगे। इस प्रकार ये लट्ठे मछलियों की पकड़ को तो सुनिश्चित करेंगे ही, प्रतीक्षा में जो समय समुद्र पर जाता था, उसकी भी बचत करेंगे।

गहरे सागर से मछली पकड़नेवालों की युगों पुरानी समस्या यह रही है कि जितनी मछलियां वे अपने जाल या फंदे में फंसाते हैं, उनमें से अनेक किसी-न-किसी तरह उनकी पकड़ से छूट निकलती हैं। पर अब यह समस्या भूतकाल की बात बनकर रह जायेगी। अब जालों पर विद्युत्-धारावाले तार काम में लाये जायेंगे, जो निकलने की चेष्टा करनेवाली मछली को हल्का-सा झटका देंगे। फलस्वरूप फंसने के बाद कोई मछली बाहर नहीं जा सकेगी।

यही नहीं, ऐसे लेक्ट्रानिक यंत्र इस्तेमाल किये जायेंगे, जो मछलीमारों के जत्थे को बताते रहेंगे कि समुद्र के पेंदे पर और बीच की जलधारा में डाले गये जालों में ठीक-ठीक कितनी मछलियां फंसी हैं, और प्रतिदिन कितनी संख्या में पकड़ी जाती रही हैं। ये यंत्र मछुओं को यह भी बतायेंगे कि मछलियां पकड़ने का कौन-सा मौका मौजूं है।

राडार की सहायता से मछलियों का पता लगाने की चेष्टा भी हुई; किंतु यह असफल रही। इन्फ्रा-रेड किरणों की सहायता अवश्य उपयोगी साबित होगी। इनसे

मई

अजान स्वप्न

किरणों की शय्या पर
सुधियों की छांव में
नींद की मड़ैया में
चाहों के पांव में
यादों में भूली याद
शेष रही सारी रात ।।

जीवन के उठते हुए
पैरों की गिनती में
श्वासों से निकली हुई
नीरव-सी बिनती में
चल दी उषा ललाम
आयी अंधेरी शाम ।।

पुरवा के द्वारों पर
दूर के किनारों पर
बिछी हुई अपनी-सी
मन की पुकारों पर
स्वप्नों-सा ही अजान
पौरुष का स्वाभिमान ।।

—शिवप्रताप त्रिपाठी 'शारद'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लग जायेगा कि सतह पर बड़ी संख्या
छलियां कहां तैर रही हैं। उस स्थान पर
ल-भाटे के उतार-चढ़ाव, गर्म जलधारा
दि का भी पता लग जायेगा और इस तरह
छलियां पकड़ना अधिक सरल और सस्ता
जायेगा। भविष्य में मत्स्याखेट भाग्य-
र धंधा नहीं रहेगा और अब तो लेजर
क यंत्र की शक्तिशाली प्रकाश-किरणों
हारे समुद्र में तब भी अच्छी तरह
खबीन की जा सकेगी, जब कि मौसम
त खराब हो।

पानी के भीतर मछलियों की खोजबीन
एक ऐसा मार्ग है, जिसका भरपूर विस्तार
या जायेगा। आगे चलकर ध्वनि-तरंगें
कर न केवल मत्स्य-समुदाय की गति
र दिशा का भान हो जाया करेगा, बल्कि
ज्ञों को इसका भी पक्का पता चल जाया
गा कि वे मछलियां वास्तव में हैं किस
ति की।

और यह सब हुआ करेगा दूर-नियंत्रित,
नु जलमग्न यंत्रों के द्वारा। विभिन्न
त्स्य जातियों के तैरने के विशिष्ट प्रकारों
र उनकी वास्तविक आवाजों के बारे में
मारी जानकारी जितनी ही बढ़ती जायेगी,
तनी ही हमारे लिए उनकी पहचान करने
ी क्षमता भी बढ़ती जायेगी।

अगले २० या ३० वर्षों के भीतर वह
श्य सचमुच आ जायेगा, जब हमें आज
अपने मत्स्याखेट के जहाजी जत्थे बेकार
मालूम होंगे। सागर-तट पर रहेगा एक केंद्रीय नियंत्रण कार्यालय। इसे 'हाइड्रो-सेंट्रल' नाम दिया जा चुका है। इसे लंगर से बंधे मानव-रहित 'तैराक पीपों' से पृथ्वी पर चक्कर लगाते हुए उपग्रहों द्वारा लगातार संदेश मिलते रहेंगे। ये महत्वपूर्ण संदेश होंगे मौसम की स्थिति, मछलियों की गतिविधि और लहरों के उतार-चढ़ाव आदि के बारे में।

समुद्र में मछलियों की सूचना मिलते ही निकटतम 'तैराक पीपे' से रेडियो द्वारा पूछा जायेगा कि वह मछलियों की जाति पहचानकर बताये। पहचान वह संभवतः गंध के आधार पर करेगा। शायद इसके लिए शक्तिशाली समुद्री दूरदर्शक का उपयोग भी किया जाये।

पूरी जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद 'हाइड्रो-सेंट्रल' में मौजूद मछुए कुर्सियों पर बैठे-बैठे ही जाल फेंकनेवाली पनडुब्बी को निर्देश देंगे कि वह आगे बढ़े और नियत स्थान पर पहुंचकर नियंत्रित मछलियां पकड़े।

इससे पुराने जमाने का मछली पकड़ने का आनंद तो भविष्य में समाप्त हो जायेगा, किंतु मनुष्य का लाभ कई दृष्टियों से बहुत बढ़ जायेगा। समय बचेगा, कार्यदक्षता बढ़ेगी, जानें भी बचेंगी और विश्व में भूख की समस्या भी हल होगी – यद्यपि कुछ हद तक ही; क्योंकि तब भी संसार भुखमरी से निस्तार पाने की मंजिल से निःसंदेह काफी दूर ही होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक लेखक का सफर

विलियम फाकनर

मैं एक असफल कवि हूं। शायद हर उपन्यासकार पहले कविता लिखना चाहता है; लेकिन पाता है कि वह नहीं लिख सकता और तब कहानी पर हाथ आजमाता है, जो कि कविता के बाद सबसे मुश्किल काम है। फिर उसमें भी असफल रहकर अंत में वह उपन्यास लिखने लगता है।

अच्छा उपन्यासकार बनने के लिए निन्यानवे प्रतिशत प्रतिभा की आवश्यकता है, निन्यानवे प्रतिशत अनुशासन की, और निन्यानवे प्रतिशत मेहनत की। अपने लेखन से उसे कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिये। उसे हमेशा सपना देखना चाहिये, और सपने की सीमा से भी आगे जितनी दूर तक जा सके, जाने का प्रयत्न करना चाहिये। अपने समकालीन या पूर्ववर्ती लेखकों से बढ़िया होने का खयाल उसे दिमाग से निकाल देना चाहिये। उसका प्रयत्न होना चाहिये, खुद अपने से बढ़िया बनने का। कलाकार दानवीय शक्तियों द्वारा संचालित होनेवाला जीव है। वह नहीं जानता कि वे शक्तियां उसे ही क्यों चुनती हैं। वह अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि प्रायः इस विषय में सोच भी नहीं सकता।

कलाकार का एकमात्र कर्तव्य अपनी कला के प्रति है। उसके मन में एक सपना है। वह सपना उसे इतना परेशान करता है कि वह उससे छुटकारा पाना चाहता है। छुटकारा पाने तक उसे शांति नहीं मिलती। अपनी कला के लिए वह अनैतिक बनने को भी तैयार है।

लेखक के उपकरण ? जहां तक मेरा प्रश्न है, मेरे औजार हैं– कागज, तंबाकू, भोजन और थोड़ी-सी व्हिस्की।

वास्तव में लेखक को आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता नहीं है। उसे आवश्यकता है पेन्सिल और कागज की। अच्छा लेखक हमेशा कुछ-न-कुछ लिखने में लगा रहता है। जो प्रथम श्रेणी का लेखक नहीं है, वही यह कहकर खुद को धोखा देता है कि उसके पास समय नहीं है, या वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है।

लोग वास्तव में यह जानने से डरते हैं कि वे किस हद तक मुसीबतें या गरीबी सह सकते हैं। वे यह जानने से डरते हैं कि वे कितने बलवान हैं। कोई भी चीज अच्छे लेखक को नष्ट नहीं कर सकती। उसका रास्ता रोकनेवाली एक ही चीज है–मौत। अच्छे लेखक को सफल बनने या अमीर होने की कोई परवाह नहीं होती। सफलता एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही तरह है। अगर आप उसके सामने दे टेकेंगे, तो वह आप पर सवार हो देगी। इसलिए उससे पेश आने का का है, उसकी ओर से मुंह मोड़ लेना। वह आपकी ओर आयेगी।

अगर लेखक प्रथम श्रेणी का लेखक है, कोई चीज उसके लेखन को खराब नहीं न सकती। अगर वह प्रथम श्रेणी का क नहीं है, तो कोई चीज उसकी खास हायता नहीं कर सकती। प्रथम श्रेणी से ले लेखक के सामने कला-संबंधी कोई ल्या ही पैदा नहीं होती; क्योंकि वह नी आत्मा को बेच चुका होता है।

लेखक अपने पाठक के प्रति कहां तक म्मेदायी है? इसके उत्तर में मैं कहूंगा कि क का दायित्व केवल अपने लेखन के ति है। मैं अपने लेखन में इतना लीन होता कि पाठकों की ओर से बेखबर रहता हूं। झे यह सोचने का समय ही नहीं है कि मेरे हित्य का पढ़नेवाला कौन है। मुझे अपने किसी अन्य लेखक की रचनाओं के बारे किसी की राय की कोई परवाह नहीं है। रा अपना नियत किया हुआ एक स्तर है, र उस स्तर तक मुझे पहुंचना है।

अगर लेखक को तकनीक के ही पीछे ड़ना है, तो उसे चाहिये कि डाक्टर बनकर चीर-फाड़ करे, या राज बनकर इमारतें नाये। लिखने का कोई मशीनी तरीका हीं है, कोई छोटा रास्ता (शार्ट कट) भी हीं है। वह नया लेखक मूर्ख है, जो किसी सिद्धांत के पीछे पड़ता है। उसे अपनी गल-तियों से सीखना चाहिये। अच्छा लेखक यह मानता है कि कोई भी इतना अच्छा नहीं है, जो उसे सीख दे सके। उसमें पूरा गर्व होता है। अपना पूर्ववर्ती लेखक चाहे उसे कितना भी पसंद क्यों न हो, वह उसे पछाड़ना चाहता है।

लिखना शुरू करने के पहले ही लेखक को अक्षरशः पता होता है कि उसकी रचना का अंत कहां होगा। जब मैं 'ऐज आइ ले डाइंग' लिख रहा था, तो मेरे साथ यही हुआ। वैसे यह आसान काम नहीं था। कोई भी ईमानदार काम आसान नहीं होता। अगर कोई आसानी थी तो यही कि सारा मसाला मेरे पास मौजूद था। मैंने उसे छः सप्ताह में लिख लिया था, जबकि साथ में मैं प्रतिदिन बारह घंटे मजदूरी किया करता था।

लेखक को निर्लिप्त होकर अपने लेखन को परखना चाहिये। साथ ही उसमें यह ईमानदारी और हिम्मत भी होनी चाहिये कि अपने लेखन के साथ कोई रियायत न करे। क्योंकि मेरी कोई भी रचना मेरे नियत किये हुए स्तर तक नहीं पहुंच सकी है, इसलिए मैं उसे अपनी उस रचना से तोलकर देखा करता हूं, जिसके लिए मुझे सबसे ज्यादा मुसीबतें और यातनाएं झेलनी पड़ीं।

उस रचना का नाम है 'साउंड एंड द फ्यूरी'। इस उपन्यास को मैंने अलग-अलग मौकों पर पांच बार लिखा था। यह दो खोयी हुई औरतों की दुःखद कहानी है। इसे पहले मैंने उपन्यास के एक निर्बुद्धि पात्र की आंखों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलोचक

पाल क्ली की नजर में

द्वारा देखी हुई कहानी के रूप में लिखा। पर मैं सफल नहीं हो पाया; मैंने उसे दोबारा लिखा। कहानी वही; पर एक दूसरे पात्र के दृष्टिकोण से लिखित। पर बात नहीं बनी। तब मैंने तीसरे पात्र के दृष्टिकोण से उसे तीसरी बार लिखा। फिर भी बात नहीं बनी। फिर मैंने स्वयं किस्सा कहनेवाले के रूप में बीच में आकर कथा के उन टुकड़ों को जोड़ने का प्रयत्न किया। फिर भी पूरी बात नहीं बनी।

आखिर उपन्यास प्रकाशित होने के पंद्रह साल बाद कहीं जाकर मैं इस कहानी को अपने मन पर से उतारकर कुछ शांति पा सका। इस उपन्यास से मुझे सबसे अधिक लगाव है।

लेखक के लिए अनुभव, निरीक्षण और कल्पना महत्वपूर्ण चीजें हैं। कुछ लोग प्रेरणा की बात करते हैं। मुझे नहीं पता कि प्रेरणा क्या होती है। मैंने उसके बारे में सुना जरूर है, पर उसे कभी देखा नहीं है।

मैंने लिखना कैसे शुरू किया? उन दिनों मैं न्यू आर्लियन्स में रहता था और गुजारे के लिए कभी-कभी छोटा-मोटा काम किया करता था। उन्हीं दिनों शेरवुड एंडरसन से मेरी मुलाकात हुई। दोपहर के बाद हम मिलते, घूमते, बातें करते, शराब पीते। दोपहर के पहले मैं उसे कभी नहीं मिल सका। वह अपने काम में लगा रहता था। मैंने सोचा कि अगर यही लेखक का जीवन है, तो मैं भी लेखक बन सकता हूं। सो मैंने अपनी पहली पुस्तक लिखनी शुरू की।

मुझे लगा कि लिखना तो बड़े मजे की बात है। मैं यह भी भूल गया कि तीन सप्ताह से मैं एंडरसन से मिला नहीं हूं। आखिर एक दिन वह मेरे पास आया और उसने पूछा- "क्या बात है? मुझसे नाराज हो?" मैंने बताया कि मैं एक पुस्तक लिख रहा हूं। "या खुदा!" उसने कहा और चला गया। मैंने वह पुस्तक पूरी लिख ली। उसका नाम था 'सोल्जर्स पे'।

और फिर एक दिन एंडरसन की पत्नी मुझसे मिली और उसने पुस्तक के बारे में पूछा। मैंने बताया कि पूरी कर चुका हूं। वह बोली –"शेरवुड कहते हैं कि वे आपसे एक समझौता करने को तैयार हैं। अगर उन्हें आपकी पुस्तक पढ़नी न पड़े, तो वे अपने प्रकाशक से उसे स्वीकृत करने के लिए कह सकते हैं।" मैंने कहा – "मंजूर है।" सो इस तरह मैं लेखक बन गया। मई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं अपने गुजारे के लिए कोई भी काम कर सकता था—किश्ती खे सकता था, घरों में रंगाई-पुताई कर सकता था, हवाई जहाज उड़ा सकता था। मुझे ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं पड़ती थी; क्योंकि उन दिनों न्यू आर्लियन्स में चीजें बहुत सस्ती थीं और मेरी जरूरतें थीं—सोने के लिए जगह, कुछ भोजन, तंबाकू और व्हिस्की। कोई भी काम मैं दो-तीन दिन कर लेता, तो उससे महीना-भर गुजारा हो जाता था।

स्वभाव से मैं आवारागर्द और घुमक्कड़ किस्म का आदमी हूं। मुझे पैसों की इतनी जरूरत नहीं कि उनकी खातिर लगातार काम करूं। मेरे खयाल में यह शर्म की बात है कि संसार में इतना ज्यादा काम है। सबसे अफसोस की बात तो यह है कि काम ही एक चीज है, जिसे आदमी प्रति दिन आठ घंटे के हिसाब से कर सकता है। आप रोज आठ घंटे न खा सकते हैं, न पी सकते हैं, न ही कामोपभोग कर सकते हैं। सिर्फ काम ही एक चीज है, जो आप आठ घंटे करते हैं। इसीलिए मनुष्य ने अपने आपको और दूसरों को इतना दुःखी बना रखा है।

कलाकार के पास इतना समय ही नहीं है कि वह आलोचकों की बात सुने। प्रायः लेखक बनना चाहनेवाले लोग समीक्षाएं पढ़ते हैं। जो लोग वस्तुतः लिखना चाहते हैं, उनके पास समीक्षाएं पढ़ने का समय ही नहीं होता। लेखक आलोचक से ऊंचा है; क्योंकि लेखक आलोचक को प्रभावित करता है। आलोचक जो कुछ लिखता है, वह और सबको तो प्रभावित करता है, पर लेखक को नहीं।

जो कुछ मैं लिखता हूं, अगर वह मुझे खुशी देता है, तो मुझे और कुछ नहीं चाहिये। अगर वह मुझे खुशी नहीं देता, तो उसके बारे में बातें करने या लिखने से वह अच्छा नहीं बन जाता। उसे अच्छा बनाने का एक ही तरीका है कि उस पर और मेहनत की जाये। मैं साहित्यिक व्यक्ति नहीं हूं, केवल एक लेखक हूं।

'सोल्जर्स पे' लिखकर मुझे लगा था कि लिखना एक शुगल है। पर बाद में लगा कि जैसे प्रत्येक पुस्तक की एक डिजाइन होनी चाहिये, उसी तरह हर लेखक के संपूर्ण सृजन का भी एक डिजाइन होना चाहिये। 'सोल्जर्स पे' और 'मस्कीटोज' पुस्तकें मैंने केवल लिखने के लिए लिखी थीं। पर 'सास्टोरिस' शुरू करते समय मुझे लगा कि अपनी धरती के बारे में भी लिखूं, यह मेरे लिए जरूरी है। और उसके बारे में मैं सारी उम्र लिख सकता था। तब मेरे सामने बहुत-से लोग आये और उनसे मैंने अपने निजी संसार की सृष्टि की। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरह, अपने पात्रों को चाहे जहां ले जा सकता था।

जिस संसार की मैंने सृष्टि की है, वह मेरे खयाल में संपूर्ण ब्रह्मांड में एक तरह की कसौटी है। और अगर उस संसार को ब्रह्मांड में से निकाल दिया जाये, तो ब्रह्मांड नष्ट हो जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार-प्रसंग :

काला चीता फंदे से निकल गया

लुडविग कोच-आइसनबर्ग

लंबी यात्रा के बाद मैं बर्मा की राजधानी रंगून पहुंचा। वहां एक बात ऐसी सुनी कि एक अपने ही देशवासी भाई की संभावित हत्या का काफी दायित्व मुझ पर आना था। रंगून न आता, तो वह बात सुनने को मुझे कभी न मिलती।

हत्या का प्रयत्न एक काले चीते के खूनी पंजों ने किया था।

रंगून उतरते ही मैं वहां के चिड़ियाघर पहुंचा। उसका डाइरेक्टर मि० क्याव एक बड़ा पशुप्रेमी और दिलचस्प आदमी था। वह बड़े मित्रभाव से मिला। बातों के सिलसिले में चीते का प्रसंग आ गया। उसने बताया—"रंगून के चिड़ियाघर में कई किस्म के चीते हैं; मगर सभी चितलीवाले हैं। अगर थाइलैंड का काला चीता पकड़ में आ सके, तो चिड़ियाघर की शोभा दुगुनी हो जाये।" मैं थाइलैंड के जंगलों में पशु पकड़ने ही जा रहा था। इसलिए उसने काला चीता पकड़कर भेजने का मुझसे आग्रह किया।

मैंने कहा—"आप तो थाइलैंड के इतने नजदीक हैं, अपने ही नुमाइंदे से क्यों नहीं कह देते ?"

रंगून से थाइलैंड की राजधानी बैंकाक केवल एक घंटे की उड़ान पर है। इसलिए मेरा प्रश्न बहुत स्वाभाविक था। मगर मि० क्याव उसका जवाब टाल गये।

बाद में मुझे पता लगा कि थाइलैंड में काले चीते को कानूनी संरक्षण प्राप्त है; उसका शिकार नहीं किया जा सकता। वैसे भी बर्मा और थाइलैंड में परंपरागत वैर चला आता है। इसलिए भी यह काम बर्मा के चिड़ियाघर का डाइरेक्टर नहीं कर सकता था। मि० क्याव को मैंने आश्वासन दिया कि मैं थाइलैंड का काला चीता उनके यहां भेजने की कोशिश अवश्य करूंगा।

अगले दिन मैं जब रंगून के डाकखाने गया, तो वहां मुझे एक यूरोपियन को देखकर बड़ा अचंभा हुआ। उसके नाम आयी चिट्ठियों का एक बड़ा-सा बंडल उसे दिया जा रहा था। मैंने झुककर चिट्ठियों पर लगी टिकटें देखीं, तो पाया कि सब पर जर्मनी की मोहर लगी थी। वहां अचानक अपने ही एक देशभाई से मिलकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। हम दोनों निकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कॉफी हाउस में चले गये। वहां घंटों बातें हुईं। उसने बताया कि उसका नाम ट्रूंग है और शहर से तीस मील दूर उसका एक चाय-बगीचा है।

उसने अपनी जायदाद पर आने की दावत भी दी। पर मैंने कहा—"अभी तो मुझे आज ही बैंकाक चले जाना है; मगर छः महीने बाद लौटते हुए मैं अवश्य ही आपके घर आऊंगा।" ट्रूंग को मैंने अपने बैंकाक के उस दोस्त का पता भी दिया, जिसके यहां मैं ठहरनेवाला था।

बात उसी दिन वहीं आयी-गयी हो गयी। मेरे परिचितों व मित्रों की सूची में एक नाम और जुड़ गया।

दूसरे दिन मैंने बैंकाक का विमान पकड़ा। बैंकाक पहुंचते ही मैंने काले चीते की खोज शुरू कर दी। वहां मैं जिस दोस्त के पास ठहरा था, उसका सरकार के जंगलात विभाग के साथ अच्छा रसूख था। उसने वचन दिया कि वह काला चीता पकड़वाने का सब बंदोबस्त जल्दी करवा देगा।

मगर यह काम जल्दी न हो सका। तीन सप्ताह तक मैं रोज बड़ी बेसब्री से काले चीते की खबर सुनने को तड़पता रहा। आखिर एक दिन मित्र ने खबर दी—"काला चीता फंदे में आ गया है। मगर उसे पिंजरे में बंद करके लाने का काम तुम्हें खुद करना पड़ेगा।"

जीप लेकर हम लुइर्स की ओर चल पड़े, जहां काला चीता गिरफ्त में आया था। हमें कहा गया कि वह गांव बैंकाक से १२० मील उत्तर की ओर है। हमारी जीप 'हाइवे' पर जा रही थी। मगर कुछ मील आगे जाकर हमें जीप छोड़नी पड़ी और घने जंगलों की राह आगे बढ़ना पड़ा।

देहातियों का एक दल राह दिखाता हुआ हमारे आगे-आगे चल रहा था। वहां से गुजरते हुए हाथियों के झुंड ने झाड़ियों को कुचलकर एक पगडंडी-सी बना दी थी। सात-आठ दिन बाद उस पगडंडी के निशान भी मिट जानेवाले थे। इधर-उधर की टूटी टहनियों से रास्ता कहीं-कहीं बिलकुल रुक जाता था। कहीं पगडंडी के दोनों ओर के घने वृक्षों की शाखाएं मिलकर छतरी बना रही थीं, जिनकी ओट में आकाश भी अदृश्य हो जाता था। हर ढलवान पर मटमैले पानी का तालाब बना था। पत्तों पर पड़ी बूंदें अभी सूखी नहीं थीं। हवा बाष्पिल और भीगी थी और जमीन से गीली मिट्टी का धुंआ निकल रहा था। हम दक्षिण-पूर्व एशिया के ऐसे सघन वन-प्रांतर से गुजर रहे थे, जो अपने अछूतेपन के लिए संसार में प्रसिद्ध है।

धीरे-धीरे जंगल खुलने लगा। वृक्ष विरले होने लगे। मगर वृक्षों की शाखाओं पर लताएं लिपटी हुई थीं। ऐसे ही स्थानों पर वन्य-पशुओं की बस्ती होती है। कुछ दूर तक वृक्षों पर फुदकते बंदरों ने हमारा साथ दिया। कौतूहल-भरे न जाने वे आपस में क्या बोलते चले जा रहे थे! शाम ढलने पर जंगली मैना और मार्किंग बर्ड की स्वर-बद्ध पुकार घने वृक्ष-शिखरों से आने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों ओर आग जलाकर वह रात हमने जंगल में ही काटी।

अगले दिन शाम को जब हम उस गांव पहुंचे, तो हमें पता लगा कि गांववालों ने चीते को जंगले में जकड़ रखा है। उसके पास पहुंचे। देखा कि जंगले में फंसा चीता भयंकर उछल-कूद करके फंदा तोड़कर बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है। नजदीक जाने पर मुझे पता लगा कि वह नर चीता है। मुझे देखकर गांव के कुछ लोग मशालें लेकर चारों ओर से वहां इकट्ठे होने लगे। मशाल देखकर चीता जंगले के एक कोने में दुबक गया। उसकी आंखें शोलों की तरह चमक रही थीं—वह भी जैसे दोजख के शोले हों।

वह रात मैंने घास-फूस की बनी साफ-सुथरी कुटिया में काटी। अगले दिन सुबह मैं अपने नये मेहमान चीते के पास ही बैठकर ध्यान से उसकी हरकतें देखने लगा। सचमुच उस रहस्य-भरे जंगल का प्रतीक-पशु था वह—शैतान की तरह आकर्षक और गरम देशों के छल-बल का जीता-जागता चित्र। अतुलनीय सुंदरता और अकल्पनीय क्रूरता एवं कुत्सा उसमें एक साथ कूट-कूट-कर भरी हुई थी। मैंने उसे खाने को ताजे मारे गये बकरे के मांस का एक टुकड़ा दिया। मगर उसने मुख मोड़ लिया।

शाम ढले एक छोटा, नंग-धड़ंग बालक दौड़ता हुआ मेरे पास आया और उसने शरमीली मुस्कान के साथ मुझे एक छोटा-सा बंदर भेंट किया। वानर-शिशु अपनी बेबसी से बहुत ही प्यारा लगता है। अगले ही क्षण वह मुझसे ऐसा हिलमिल गया, मानो मेरा ही बेटा हो। थाइलैंड में पशुओं के साथ बड़ी हमदर्दी का बरताव होता है। इसी-लिए मुझे भरोसा हो गया कि उस बंदर की आदतें अच्छी होंगी। क्रूर व्यवहार होने पर पशु भी हिंसक बन जाता है।

मुझे बंदर पालने का शौक नहीं था। मगर मुझे याद आया कि यूरोप से विदा होते समय एक बेऔलाद औरत ने एक बंदर ला देने को कहा था। मैंने बालक की वह भेंट स्वीकार कर ली और बदले में अपने शेविंग केस का आईना उसे दिया। आईना पाकर वह खूब खुश हुआ। अंधेरा होने तक कुछ और तोहफे भी हमें दिये गये। किसी ने हरे रंग की एक सुंदर मुर्गी दी और कोई तीन स्वर्णपंखी मोर भी लाया।

अगले दिन सुबह अंधेरा मिटने से बहुत पहले ही हमने वापसी के लिए कूच कर दिया। बैलगाड़ी के भारी पहिये गांव की पगडंडी पर सरकने लगे। गांव के कुछ लड़के भी रास्ता साफ करने को साथ चले। अपने एक गज के फेटे में उन्होंने माचिस की डिबिया खोंस ली थी। यहां के लोग कमर में एक गज कपड़े का फेटा बांधकर तन ढंक लेते हैं।

रात का अंधेरा अभी दूर नहीं हुआ था। मगर आसमान पर आधे चंद की रोशनी थी। गरम देशों में चांद ठंडे मुल्कों से ज्यादा चम-कीला होता है। पूर्वी देशों के आकाश पर तारे भी चांद की तरह चमकते हैं। उस धुंध-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में बड़-बड़े चिमगादड़ एक वृक्ष से दूसरे
उड़ते थे, तो उनकी फड़फड़ाहट से रोंगटे
हो जाते थे। किसी बड़े पत्थर से टकरा-
गाड़ी लड़खड़ा जाती, तो मुझे डर लगता
कहीं पिंजरा टूट न जाये और भूखा,
हित चीता उछलकर अपने पंजों में
न दबोच ले।

आखिर लंबे मार्ग की मुसीबतें झेलते
हम तीसरी रात उसी गांव में पहुंच गये,
से हम गाड़ी का रास्ता व जीप छोड़-
जंगल की पगडंडी पर चले थे। इस
चीते ने दो दिन भूख-हड़ताल करके
थोड़ा-सा भोजन कर लिया था। उसके
में गरम सांसों की आंधी निकल रही
। यह बेताबी देखकर लगता था, वह
हताश नहीं हुआ है। उसका मुक्ति-
दोलन इस बात का प्रमाण था कि उसका
स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है।

बैंकाक पहुंचकर हम चीते को बर्मा भेजने
इरादे से हवाई अड्डे पर ले गये। हवाई
जहाज से भेजने का खर्च तो बहुत अधिक
; मगर दूसरा कोई चारा भी न था।
तीय महायुद्ध में जापान ने रेलमार्ग को जो
ति पहुंचायी थी, वह अभी तक सुधरी
नहीं थी। बैंकाक से थाइलैंड की सीमा तक
तो आसानी से ट्रेन द्वारा पहुंचा जा सकता
; मगर उसके आगे रंगून पहुंचने के लिए
दो दिन बस की यात्रा करनी पड़ती।
जहाज से भेजते, तो मलाया अंतरीप की
क्रमा करके जहाज एक सप्ताह बाद
गून पहुंचता।

कुछ दिन बाद रंगून से चीते के सकुशल पहुंचने का समाचार आ गया। चिड़ियाघर के डाइरेक्टर ने लिखा था—"चीते को बढ़िया बाड़े में रखा गया है। कुछ दिन बाद एक मादा चीते को भी उसके साथ उसी बाड़े में छोड़ दिया जायेगा, ताकि वंशवृद्धि हो। इससे दोनों का जीवन भी सुख से कटेगा और रंगून के चिड़ियाघर को काले चीतों की कुलवृद्धि करने का सौभाग्य प्राप्त हो जायेगा।"

०००

यह चिट्ठी आने के बाद मैं थाइलैंड के अन्य प्रदेशों में घूमता रहा। चार दिन एक स्थान पर, चार दूसरे पर। चार महीने बाद जब मैं फिर बैंकाक आया, तो मुझे उसी अपने देशभाई बर्ट्रैम का, जिससे मैं बर्मा के डाकखाने में मिला था, खत मिला। उसमें लिखा था—"मैं दो दिन बाद बैंकाक आ रहा हूं, एरावान होटल में ठहरूंगा। जरूर मिलें। मैं आपकी राह देखूंगा।"

एरावान होटल बैंकाक का बहुत आली-शान होटल है। जिंदगी से ऊबकर आये अमीर अमरीकियों ने उसे ऐयाशी का अड्डा बना रखा है। इस होटल का सस्ते-से-सस्ता कमरा सौ रुपया प्रतिदिन का है। इतने खर्चीले होटलों में ठहरने की तो बात दूर, वहां जाने के विचार से भी मेरा मन विद्रोही हो जाता है।

इन होटलों में संस्कृति-सदाचार का कोई स्थान नहीं। प्रायः असभ्य, जंगली पुरुष ही वहां ठहरते हैं। उन्हें अपने मान-अपमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

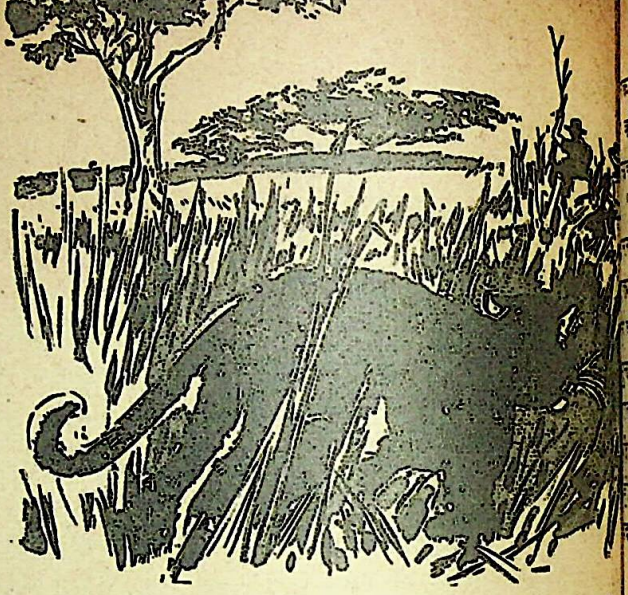

की भी चिंता नहीं होती। ये लक्षाधीश प्रायः गंवार और निर्लज्ज होते हैं। संस्कृतिजन्य शालीनता उनके दामन को नहीं छूती। लेकिन इस मूर्ख व्यक्ति-समुदाय को ही समाज में मान दिया जाता है। अपने मित्र हर बर्ट्रैम से वहां न मिलना होता, तो मैं निपट लज्जा-हीन व्यक्तियों के उस आवास की तरफ कभी कदम न उठाता।

वहां जाकर मैंने बर्ट्रैम को जिस हालत में देखा, उससे मैं चौंक उठा। चार महीने पहले वह बहुत ही विशालवक्ष, स्थूलकाय, रोबीले डील-डौलवाला व्यक्ति था। आज उसकी देह अस्थिपंजर बन गयी थी।

"अरे! आपको क्या हो गया?" मेरे मुख से चीख-सी निकल गयी उसे देखकर।

उसने कुछ मुस्कराते हुए जवाब दिया—"अभी तो मैं बहुत ठीक हूं। पिछले दिनों बड़ी विपत्ति में उलझ गया था। एक चीते ने मुझे बुरी तरह घायल कर दिया। कई हफ्ते अस्पताल में पड़ा रहा।"

"चीते ने?" चौंककर मैंने पूछा।

"हां, काले चीते ने।" उसका उत्तर था।

"मगर काला चीता तो बर्मा में होता ही नहीं। वह तो थाइलैंड में ही होता है"..... कह तो दिया मैंने; मगर याद आया, एक काला चीता मैंने भी रंगून के लिए यहां से रवाना किया था। जब तक मैं कुछ कहूं, बर्ट्रैम अपनी कहानी शुरू कर चुका था:

"आपको तो मालूम है, मेरा चाय-बगीचा इरावदी नदी के किनारे, रंगून से तीस मील दूर है। मेरे चाचा मुझे यह बगीचा दे गये थे। तब से वहीं हूं। मैंने वहां आसाम की चाय की कलम लगायी है। एक साल पहले मेरी पत्नी इंग्लैंड से आयी थी। कहां इंग्लैंड, कहां रंगून से दूर जंगल में बसा वह चाय का खेत! मुझे बड़ा डर था, इस अजनबी देश में वह परेशान हो जायेगी। सचमुच मेरी पत्नी बड़े धीरजवाली थी। बड़ी बहादुरी से उसने हालात के अनुसार अपने को ढालना शुरू किया। पहले-पहल मेरे दिन और मेरी रातें उसे प्रोत्साहन और आश्वासन देने में ही बीत गयीं। मगर जंगल तो जंगल है। कभी रात के सूनेपन में छोटे-मोटे कीट-पतंगों की सरसराहट भी चौंका देती है इन्सान को। सांप भी जहां-तहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहते ही रहते हैं। अचानक किसी सूराख
कोई बिच्छू ही बाहर झांक लेता, तो
की चीख निकल जाती।

"एक दिन मेरी पत्नी आधी रात को कुछ
सरसराहट सुनकर चौंक उठी। हुआ यह कि
जंगली मुर्गा पड़ोस के घर में लगे वृक्ष
घोंसले में आ बैठा। मेरे घर के चूजे उसे
कर डर से तड़फड़ा रहे थे। वह प्रायः
को ऐसी आवाजें सुनकर चौंक उठती
। मुझे जगाने की कोशिश करती, तो मैं
ना कोई बिलाव' कहते हुए करवट
ल लेता।

"उस दिन मेरी पत्नी उठकर खिड़की
गयी। उसने देखा, लगभग तीस कदम
एक चीता मुर्गीघर पर खड़ा है। उस
आसमान में पूरा चांद होने से उसे सब
बिलकुल साफ दिखाई दे गया। डर से
आवाज में वह हमारे फोरमैन को पुकार
-'लिन! लिन!' उसकी आवाज सुन-
चीता जंगल में घुस गया।

'मेरी पत्नी लौटकर दरवाजे तक आयी।
ने देखा, फोरमैन लिन सीढ़ियां चढ़कर
पर ही आ रहा है। उसने पूछा—'मेम
हब! आवाज आपने दी थी?'

"दूसरे नौकर भी आवाज सुनकर कमरों
बाहर निकल आये। उसी समय सबने
ा कि एक और चीता मुर्गीघर की छत
कूदा और दीवार फांदकर भाग गया।

"रात के धुंधलके में चीते का पीछा
ना व्यर्थ था। सब लोग वापस अपने-
ने कमरों में लौट गये। अगली रात फिर
मुर्गियों ने चुभती आवाज में चीखना शुरू किया। फोरमैन लिन और एक रसोइया उसे सुनकर जाग गये और दबे कदम मुर्गियों के दड़बे की ओर गये। रसोइये ने दरवाजा खोला; हाथ का लैंप ऊंचा उठाया। देखा, तो अंदर चीता बैठा था। गुर्राते हुए वह खिड़की की ओर लपका। उधर की दीवार को उसने अंदर आने के लिए पंजों से एक जगह तोड़-फोड़ भी लिया था। शायद लिन ने उस पर गोली चला दी। घायल चीता दर्द से गरज उठा।

"मालूम होता है, गोली उसकी हड्डी में लगी थी। नहीं तो चीता दर्द से गरजता नहीं। गरज के साथ वह पीछे मुड़ा और लैंप को निशाना बनाकर कूद पड़ा। उसका एक पंजा लैंप पर पड़ा, जो गिरकर टूट गया। अंधेरा होने पर लिन ने समझदारी की। उसने रसोइये को पीछे खींच, दरवाजा बंद कर लिया।

"दूसरे दिन सुबह सब लोग मकान के आंगन में जमा हो गये। चीता मर गया था। सब खुश थे। लिन ने वहीं उसकी चीर-फाड़ की। उसे चीते की खाल का शौक था। चीर-फाड़ के बाद उसने मेरी पत्नी को बताया कि चीता नर नहीं, मादा था। उसके पेट में मरा बच्चा भी निकला था। उसने यह भी कहा—'हमें सावधान रहना होगा, इसका साथी नर चीता इसकी खोज में जरूर यहां आयेगा।'

"दुर्भाग्य से मैं उस रात वहां नहीं था। फिर भी मेरी पत्नी ने बहुत साहस दिखाया। उसने सबसे कह दिया कि सारे दरवाजे बंद कर दिये जायें और कोई बाहर न निकले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर बर्मी लोग चीते को पकड़ने का लालच नहीं छोड़ सकते। एक तो उन्हें उसकी खाल रखने का शौक होता है, दूसरे चीता मारने-वाला आदमी आस-पास की सब जवान औरतों का प्रेमपात्र जाता है।"

"उक्त घटना के दो दिन बाद मुझे रंगून से लौटना था। शाम को मैं मोटर से घर की ओर चला। रास्ता कीचड़ से भरा था। पहिये बार-बार दलदल में फंस जाते और मुझे इधर-उधर से शाखाएं तोड़कर सड़क पर बिछानी पड़तीं। आधी रात के बाद मैं अपने बगीचे पर पहुंचा।

"मोटर को गराज में रखकर स्कूली बच्चों की तरह मुख से सीटी बजाता और यह सोचता कि मेरी पत्नी मुझे अचानक घर लौटा देखकर कितनी खुश होगी, मैं मजे में मकान की ओर चल पड़ा। तभी पास की झाड़ी में मुझे कुछ सरसराहट सुनाई दी। मुड़कर देखा तो कुछ दिखाई न दिया। मगर जैसे ही मैंने कदम बढ़ाया, देखा कि एक जान-वर गुर्राकर हमले के लिए पंजे उमेठ रहा है। एक बार सहमकर अभी मैं संभल भी न पाया था कि उसने हमला कर दिया। मैं नीचे गिर गया। उसके पंजों से मेरा कोट उसी समय उधड़ गया। पंजे के नाखून मेरी छाती की पेशियों में धंसे जा रहे थे। उसकी गिरफ्त में मैं ऐसा फंसा था कि हिल-डुल भी नहीं सकता था। मगर उसका पिछला हिस्सा भी बाड़ के तार में उलझ गया था।

"मैंने एक ही समझदारी का काम किया। अपने बाजुओं के पूरे जोर से मैंने चीते के जिस्म को अपनी ओर खींचना शुरू किया। बचपन में खूब कसरत करने से मेरी बाजुओं में पहलवानी ताकत थी। किसी तरह टटो-लकर मैंने उसकी गर्दन पकड़ ली और अपने दोनों हाथों के पंजों से उसका गला घोटने की कोशिश की। मुझे अहसास हो रहा था कि मैं इसमें कामयाब नहीं हो पाऊंगा। फिर भी मैंने जिस्म की सारी ताकत इसमें लगा दी। कुछ लम्हे बाद मुझे महसूस होने लगा कि चीते के पंजे कुछ ढीले पड़ रहे थे। अब उनमें वैसी कसावट नहीं रहीथी कि गड़ते चलेजायें।

"तब कहीं आवाज देने की फुरसत मिली। मेरी आवाज सुनकर जब सब लोग दौड़ेआये, तो उन्होंने देखा कि हमलावर चीता बेजान होकर तारों में उलझा पड़ा है। मेरे कपड़े चिथड़े हो गये थे। मेरी सांस अभी तक तेज चल रही थी। सारे बर्मी नौकर अचंभे में डूबे चुपचाप खड़े थे। खाली हाथों से चीते की गर्दन घोटनेवाले को वे आदमी मानने को तैयार नहीं थे। किसी दैवी शक्ति से ही कोई ऐसा कर सकता है, यही उनका विश्वास था।

"मगर मैं जानता था कि मुझे भाग्य ने बचाया था। चीते का एक पंजा ही मेरे कंधों तक पहुंचा। दूसरा पंजा तार में उलझकर रह गया। अचानक हमला करते हुए चीते ने यह नहीं देखा कि उसके और मेरे बीच एक तार भी था। तार वहां कैसे आया? इस प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया। मगर पता लगा कि लिन और उसके साथियों ने चीते को फंदे में फंसाने के लिए तारों का जाल बिछाया था।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३० अप्रैल से

अत्यन्त भावुक कलाकार राजश्री हिन्दी चित्रपट में प्रथम बार महान अभिनय के रूप में

देवी शर्मा कृत

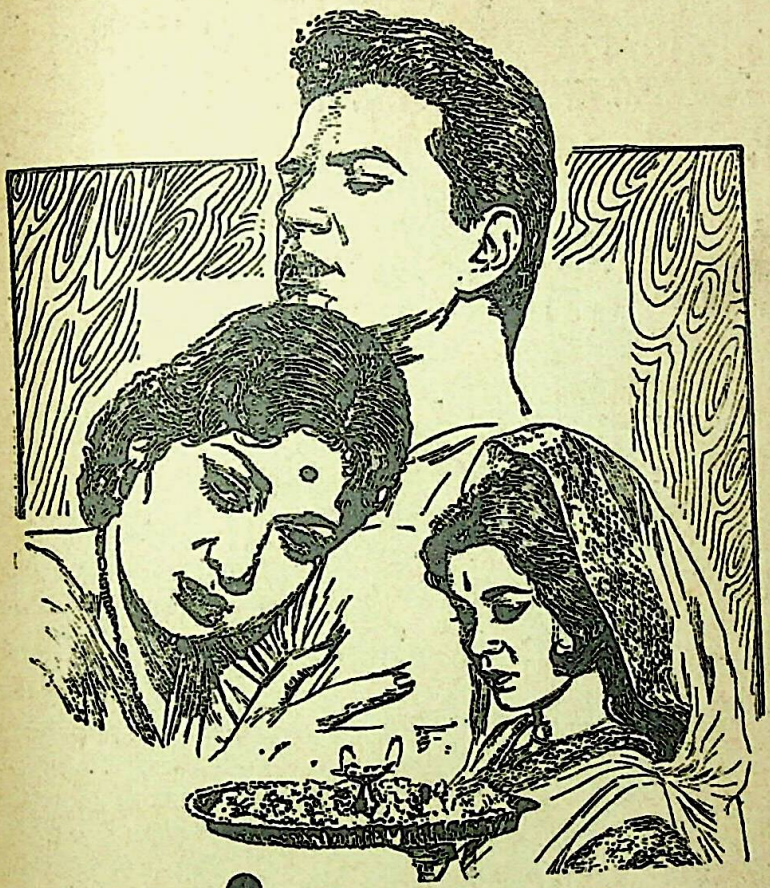

गंगा की लहरें

(रंगीन चित्र)

निर्माता-दिग्दर्शक : देवी शर्मा, संगीत : चित्रगुप्त, गीत : मजरूह

धर्मेन्द्र, कुमकुम, रहमान, नजीर हुसेन, असित सेन, अजरा, किशोर कुमार

और अन्य छविगृहों में

ताज — सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजश्री प्रकाशन

ग्रामीण महाराष्ट्र में विद्युतशक्ति के प्रसार से उन्नति का मार्ग खुला हो गया

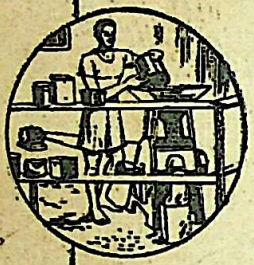

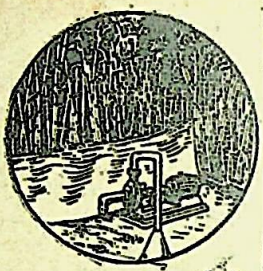

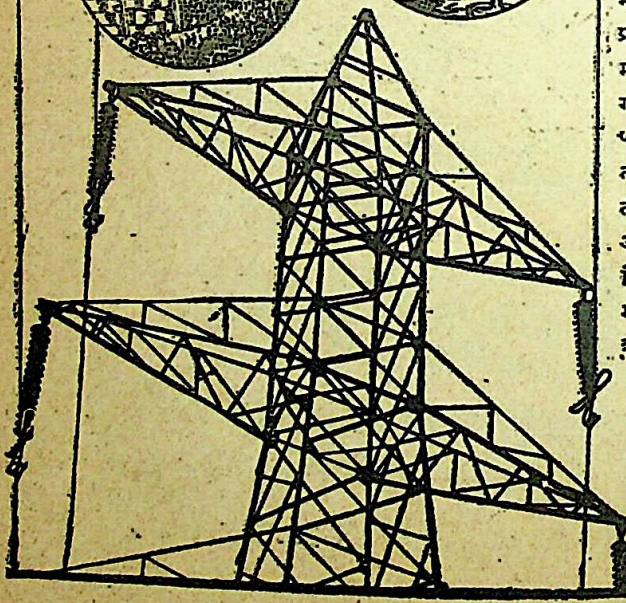

विद्युत शक्ति अपने साथ जीवन के बहुत से सुख ले आती है। अब तक केवल नागरी क्षेत्रों के लिए ही सीमित ऐसे इन सुखों का लाभ आज महाराष्ट्र के बहुत से ग्रामवासियों को भी हो रहा है। लघुउद्योगों के विकास के लिए और कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए भी विद्युत शक्ति सहायता देती है। इस ग्रामीण क्षेत्रोंमें विद्युतशक्ति का विस्तार ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्राप्ति का एक अत्यंत प्रभावी साधन हो सकता है।

महाराष्ट्र में ग्रामीण विद्युतिकरण की प्रगति अत्यंत प्रभावी रही है। प्रथम महाराष्ट्र दिन तक विद्युतिकरण किये गये ग्रामो की संख्या जो केवल ५३२ थी वह दिसंबर ३१, १९६४ तक वृद्धिंगत होकर २,६८७ हुई। तीसरी पंच वर्षीय योजना के अंततक और अधिक ५८५ ग्रामों का विद्युतिकरण संपन्न होगा। इस प्रकार महाराष्ट्र के ग्रामीण जीवन में क्रांतिकारक प्रगति हो रही है।

संचालक प्रकाशन विभाग,
महाराष्ट्र शासन, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

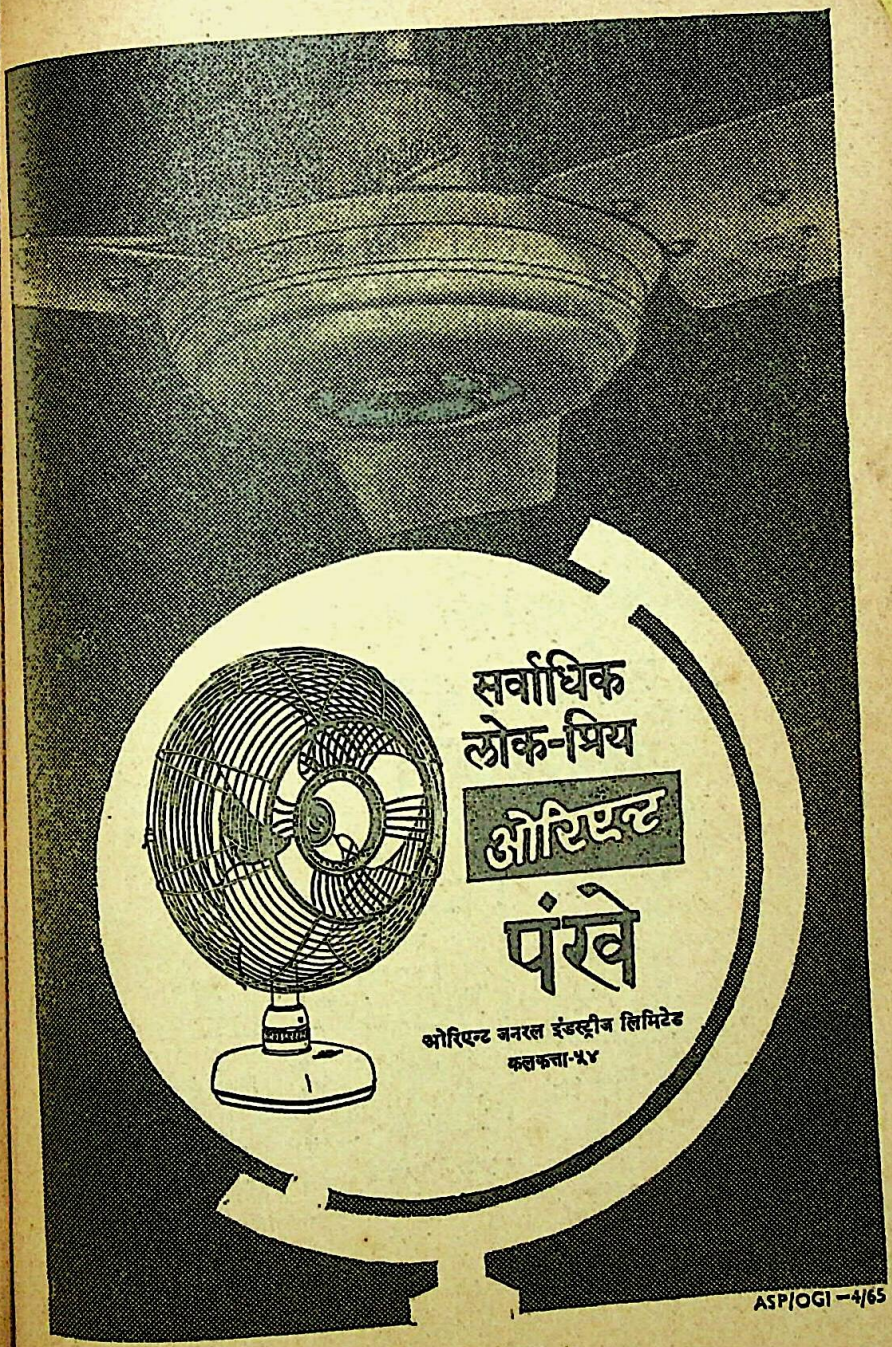

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्रियों !

आपके सहयोग से
गाडियों में

आग

लगने की घटनाएं
रोकी जा सकती हैं।

अग्नि-रोधक नियमों का पालन करें।

जलते हुए सिगरेट के टुकड़े फेंकने से पहले इन्हें बुझा दें या राखदान में डाल दें।

सवारी डिब्बो में स्टोव न जलायें।

आग पकडने वाली वस्तुओं को साथ में न रखें।

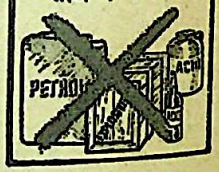

यात्रा में सुरक्षा के वास्ते मध्य रेलवे द्वारा प्रसारित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटी बचत करनेवालों के लिए

१ अप्रैल, १९६५ से लागू

डाकघर बचत बैंक

ब्याज की दरों में वृद्धि

- कम से कम बकाया रकम पर ४ प्रतिशत करमुक्त ब्याज
- रुपया जमा करने और निकालने की कोई सीमा निर्धारित नहीं
- चेक से रुपया निकालने की सुविधा
- वयस्क और बच्चे, दोनों चला सकते हैं

बढ़ने वाली सावधिक जमा का खाता

- १० रु० की मासिक जमा पर पकने के बाद मिलने वाली रकम के अलावा, मियाद पूरी होने पर करमुक्त बोनस
  १५ रु०, ५ वर्षीय खाते पर
  ५० रु०, १० वर्षीय खाते पर
  १०० रु०, १५ वर्षीय खाते पर
  नये खोले गए खातों के लिए और उन पुराने खातों के लिए, जिनके पकने में अभी ५ या १० वर्ष शेष हैं
- अतिरिक्त जमा की अन्य रकमों पर आनुपातिक बोनस
- इन खातों में जमा की गयी रकमें, आयकर का हिसाब लगाते समय कुल आय में नहीं जोड़ी जाएंगी

राष्ट्रीय रक्षा पत्र (प्रथम प्रचालन)

ब्याज पर कर लगेगा

- १० रु०, १०० रु० और १,००० रु० के पत्रों पर
- १० वर्ष बाद पक जाने पर क्रमशः १८ रु०, १८० रु०, १,८०० रु० मिलेंगे
  ये पत्र केवल व्यक्ति ही खरीद सकते हैं
- इन पत्रों की बिक्री १ जून, १९६५ से शुरू हो जाएगी लेकिन जो खरीदार १ अप्रैल, १९६५ के बाद १२ वर्षीय राष्ट्रीय रक्षा पत्र खरीदेंगे, वे उन्हें ३१ दिसम्बर, १९६५ तक नये पत्रों में बदलवा सकेंगे

राष्ट्रीय बचत संगठन
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

डीए ६४/७३९

[मूल्य १.००

वार्षिक मूल्य १०]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

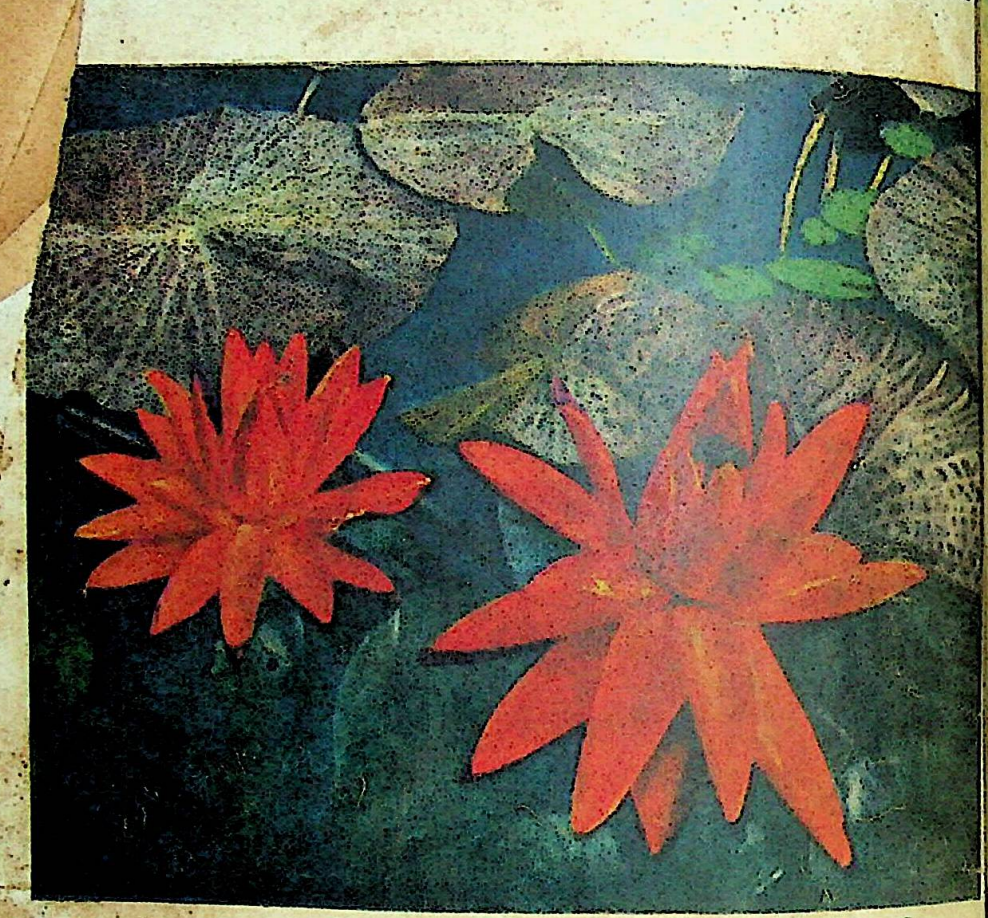

आप भी फूल जैसी खिलें

रमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

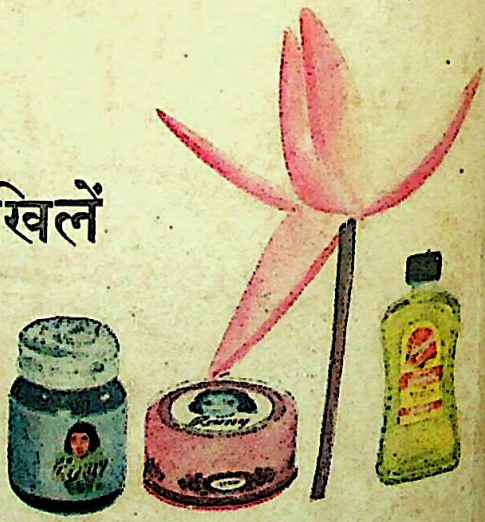

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

जून
१९६५

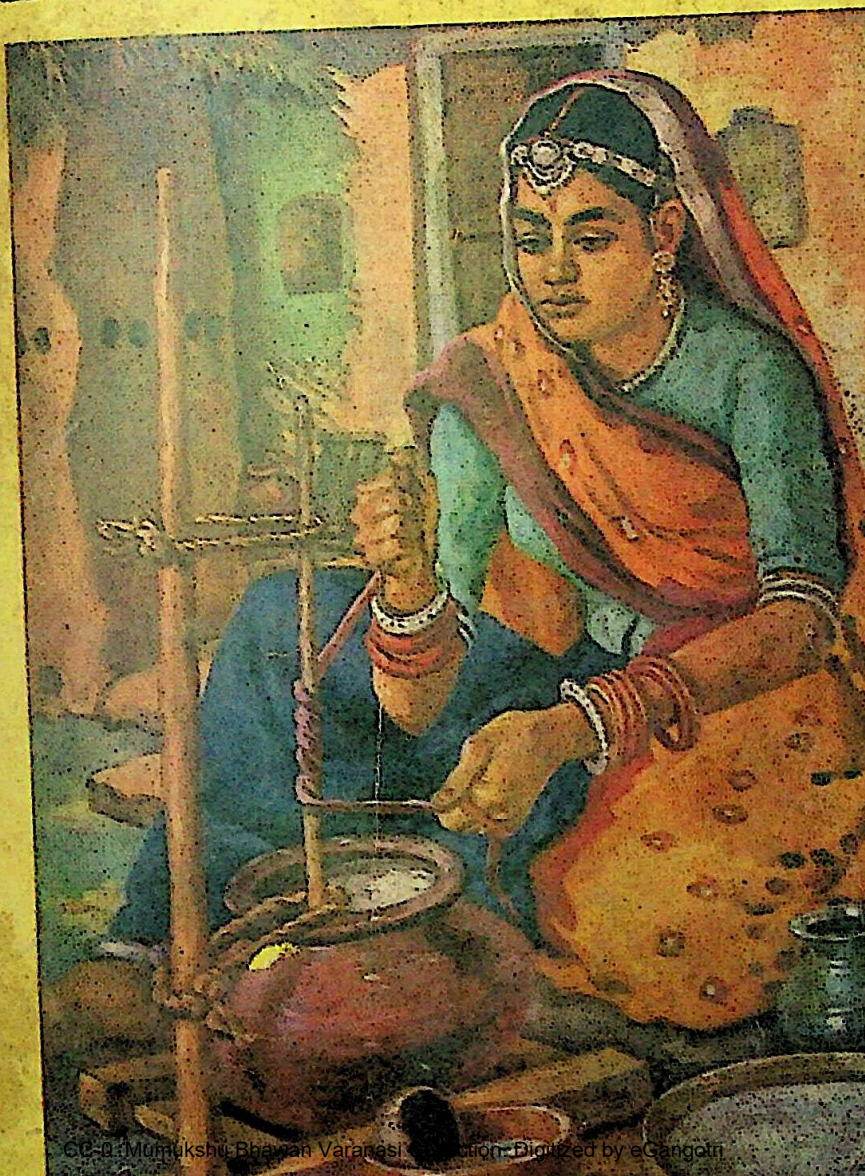

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

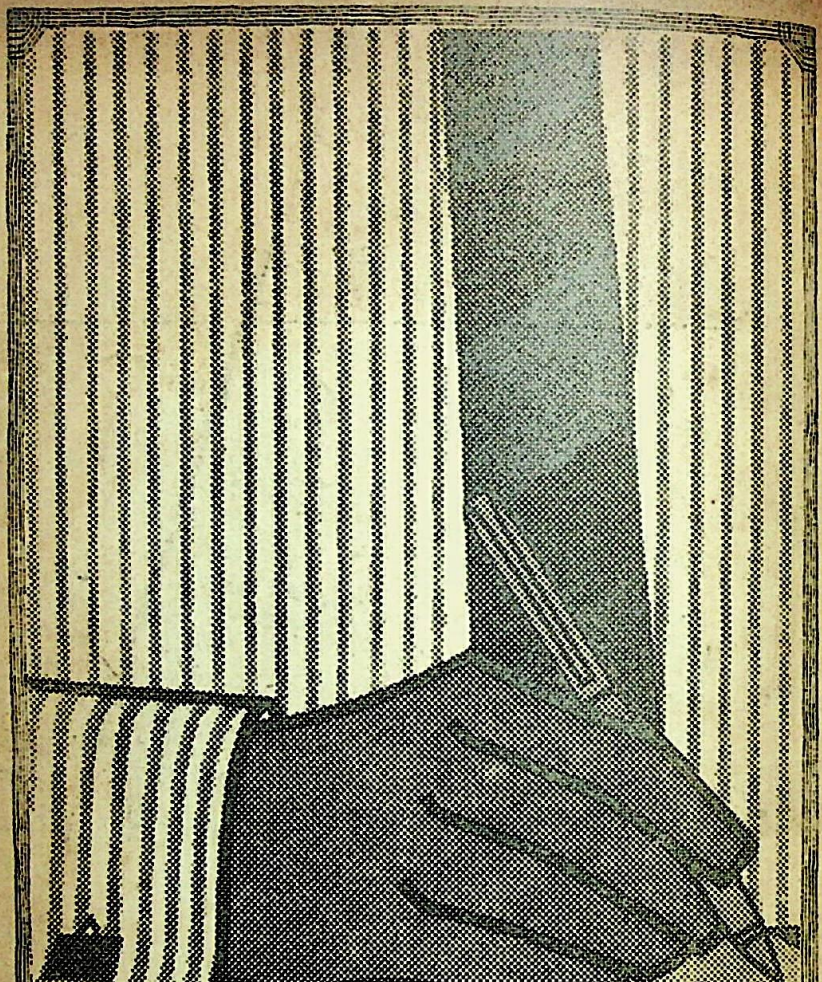

MAFATLAL GROUP

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'टेबिलाइज्ड' और मैकिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलते हैं।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • ससून बम्बई • ससून
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Alyars MGSP 1838 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाइल के लिहाज़ से लाजवाब!
क़ीमत के लिहाज़ से बेहतरीन!

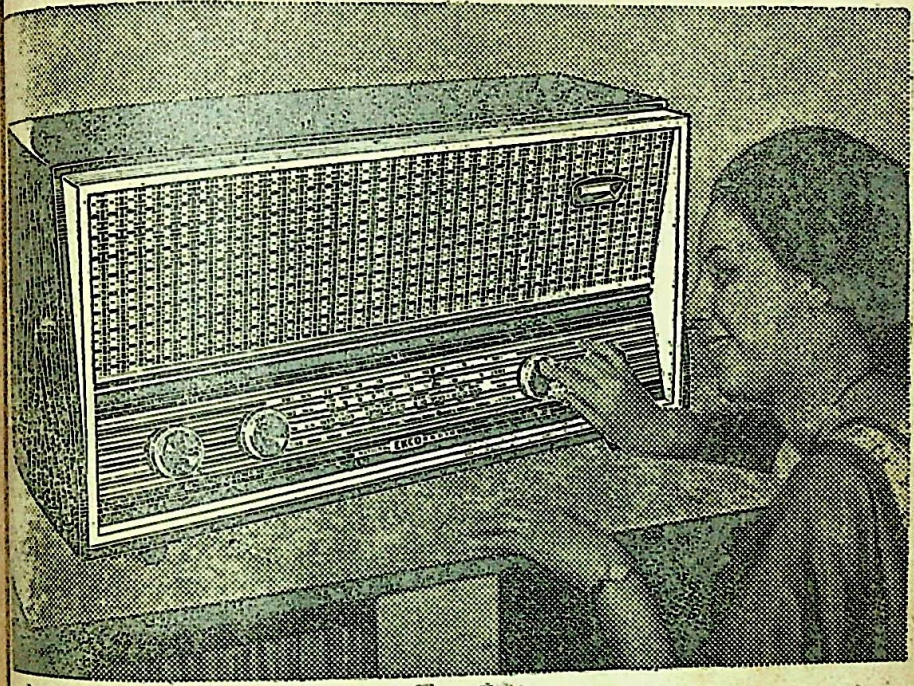

ी नेशनल-एक्को रेडियो सेट की ख़ूबियों की तुलना इतने ही
न्त के किसी दूसरे रेडियो सेट की ख़ूबियों से कीजिए...
ी आप देखेंगे कि यह आपके पैसों का ज़्यादा से
दा फ़ायदा पहुँचाता है। इसकी साफ़ और हूबहू
ाज और दिलकश ख़ूबसूरती पर तो आप फ़िदा हो
ेंगे! अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ
ा ही इसे बजवाकर सुनिए!

मॉडल ८०६: ६ वाल्व, ३ वेव-बैण्ड; लकड़ी की विनियर्ड कैबिनेट।
मॉडल यू-८०६—एसी/डीसी सेट।
मॉडल ए-८०६—एसी सेट।
रु. ३९५.००
क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है; टैक्स अलग

रल रेडियो एण्ड इण्डस्ट्रीएन्सेज़ लिमिटेड
ई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • सिकन्दराबाद • पटना

नेशनल एक्को — भारत का एकमात्र मॉन्सूनाइज़्ड रेडियो!

JWT-GRA-3405

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटी बचत करनेवालों के लिए

१ अप्रैल, १९६५ से लागू

डाकघर बचत बैंक

ब्याज की दरों में वृद्धि

- कम से कम बकाया रकम पर ४ प्रतिशत करमुक्त ब्याज
- रुपया जमा करने और निकालने की कोई सीमा निर्धारित नहीं
- चेक से रुपया निकालने की सुविधा
- वयस्क और बच्चे, दोनों चला सकते हैं

बढ़ने वाली सावधिक जमा का खाता

- १० रु० की मासिक जमा पर पकने के बाद मिलने वाली रकम के अलावा, मियाद पूरी होने पर करमुक्त बोनस
  १५ रु०, ५ वर्षीय खाते पर
  ५० रु०, १० वर्षीय खाते पर
  १०० रु०, १५ वर्षीय खाते पर
  नये खोले गए खातों के लिए और उन पुराने खातों के लिए, जिनके पकने में अभी ५ या १० वर्ष शेष हैं
- अतिरिक्त जमा की अन्य रकमों पर आनुपातिक बोनस
- इन खातों में जमा की गयी रकमें, आयकर का हिसाब लगाते समय कुल आय में नहीं जोड़ी जाएंगी

राष्ट्रीय रक्षा पत्र (प्रथम प्रचालन)

ब्याज पर कर लगेगा

- १० रु०, १०० रु० और १,००० रु० के पत्रों पर
- १० वर्ष बाद पक जाने पर क्रमशः १८ रु०, १८० रु०, १,८०० रु० मिलेंगे
  ये पत्र केवल व्यक्ति ही खरीद सकते हैं
- इन पत्रों की बिक्री १ जून, १९६५ से शुरू हो जाएगी लेकिन जो खरीदार १ अप्रैल, १९६५ के बाद १२ वर्षीय राष्ट्रीय रक्षा पत्र खरीदेंगे, वे उन्हें ३१ दिसम्बर, १९६५ तक नये पत्रों में बदलवा सकेंगे

राष्ट्रीय बचत संगठन
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भविष्य के लिए बचत देना बैंक को आपकी मदद करने दीजिये

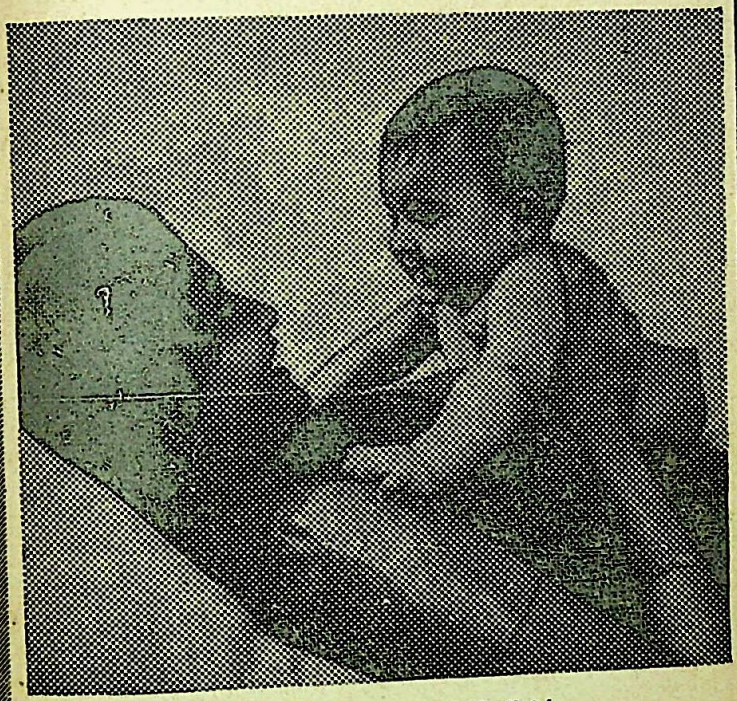

सेविंग्ज एकाऊण्ट – ब्याज ४%

अल्पवयस्क बचत योजना – ब्याज ४%

फ़िक्स्ड डिपॉज़िट – ब्याज ६% से ७½%

देना बैंक

देवकरण नानजी बैंकिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज, १७, हॉर्निमेन सर्कल बम्बई-१.

१४५ से अधिक ऑफ़िस तथा ४५ सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट

प्रवीणचंद्र व. गांधी मॅनेजिंग डाइरेक्टर

DB/H/168 - A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

INDU FABRICS BOMBAY

सर्व प्रकार के उत्तम
सुंदर कपड़े साथ ही साथ

हैंडलूम व पावरलूम में
लगनेवाले बारीक
सूत उचित भाव
में मिलेंगे

दि
इंडिया
युनाईटेड
मिल्स
लिमिटेड.

टेलिफोन नंबर २६५३३१

THE INDIA UNITED MILLS Ltd BOMBAY
INDU FABRICS BOMBAY
"THE BIG SIX"

"इंदु हाऊस", डुगल रोड, बॅलार्ड इस्टेट, मुंबई नं. १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह... कोलिनॉस

Kolynos

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, जायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

पांचवीं स्त्री के लिए एक मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिए और मुस्कराइए। रोज़ रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए...और रोज़ सुबह तो ऐसा करना ज़रूरी है। सहेलियों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा... अधिक आनन्द आएगा।

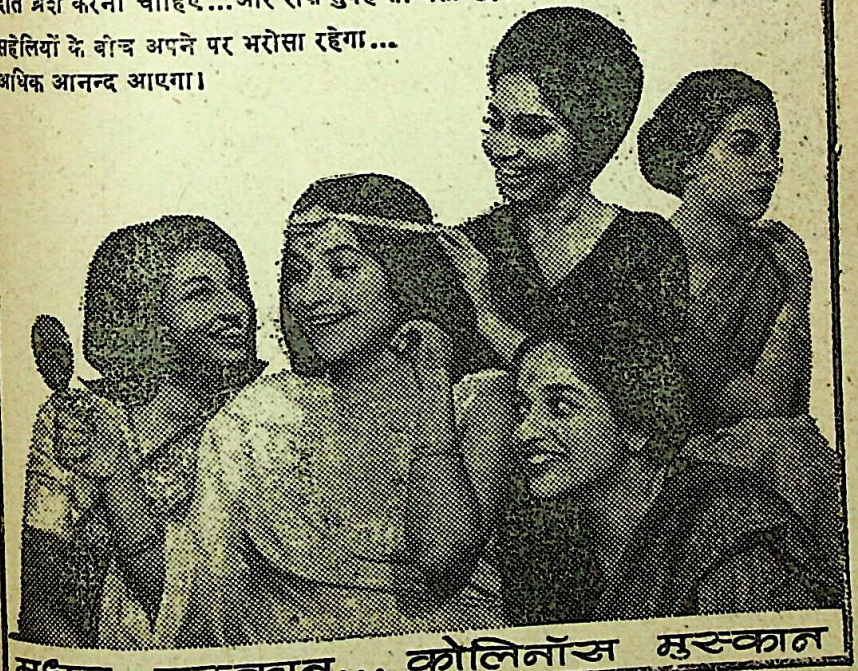

मधुर मुस्कान... कोलिनॉस मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी: जेफ़री मैनर्स ऑन्ड कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

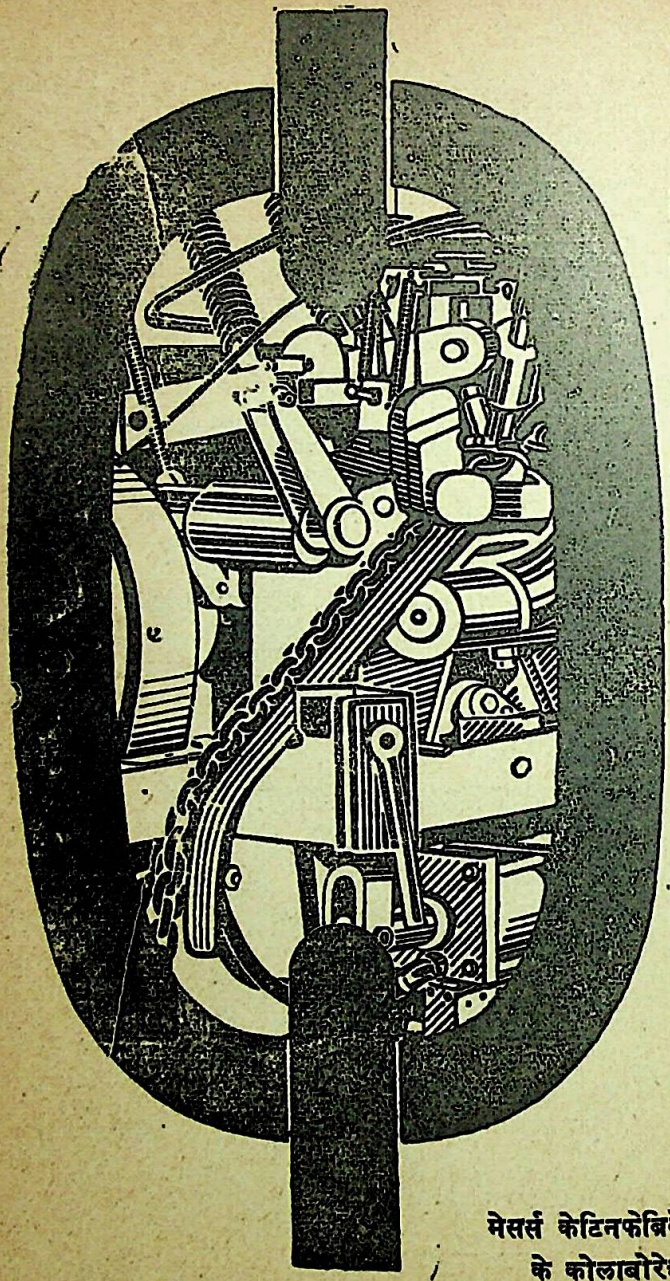

तीव्र परीक्षण के बावजूद ये कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की वेल्डिंग पूर्ण निरीक्षण में की जाती है।

प्रत्येक कड़ी एक ही क्वालिटी की बनती है। इन कड़ियों से बनी सांकल की मजबूती व क्वालिटी की गारंटी है। कैलिब्रेट की हुई सांकल की नाप-तौल एकदम ठीक और विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अस्लो नार्वे के कोलाबोरेशन में निर्मित

ASPILC3

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स लि०

बंबई आगरा रोड, भांडुप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकमात्र निर्माता:

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

बम्बई • कलकत्ता • नई दिल्ली • मद्रास • कानपुर • पटना
इंदौर • बर्धा • गौहाटी • हैदराबाद • जयपुर • जलंधर • बंगलोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी?

पॅप्स

लीजिये!

पॅप्स की टिकियां भी धीरे धीरे घुलेंगी,
आप शीघ्र ही महसूस करने लगेंगे कि इनकी
आरोग्यकारी शक्ति अपना प्रभाव दिखाने लगी है...
ये गले की तकलीफ और सीने की जकड़न
में आराम पहुंचाती हैं...खांसी और सर्दी पैदा
करने वाले बीटाणुओं का नाश करने में सहायता
देती हैं। आपको शीघ्र आराम मिलता है!

★ गले की तकलीफ और ब्रॉन्काइटिस में लाभदायक
★ बच्चों को बखूबी दी जा सकती है
★ सभी जनरल स्टोर्स में और केमिस्टों के यहां मिलती है

पॅप्स
शीघ्र आराम पहुंचाती है

SHBI-FP-1 HIN

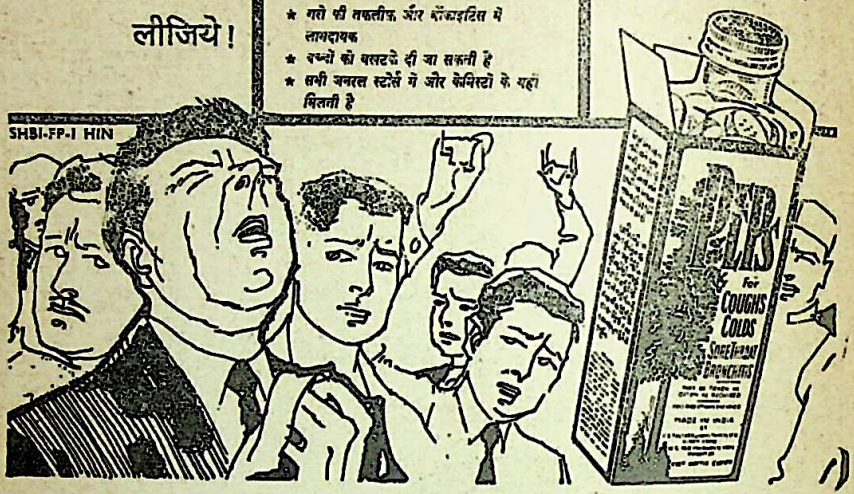

डिस्ट्रीब्यूटर : कैम्प एंड कम्पनी लि० पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई-२८ (डी०डी०

tik-20

टिक-20
खटमलों का
नाश
करता है

Veigy
गायगी
डायजिनॉन

टाटा-फाइजन उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़ अकोला

ASPV-17 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप थके हों,

उदास हों,

तंग हों, तो

नये उत्साह,

नयी उमंग

के लिये

पढ़िये

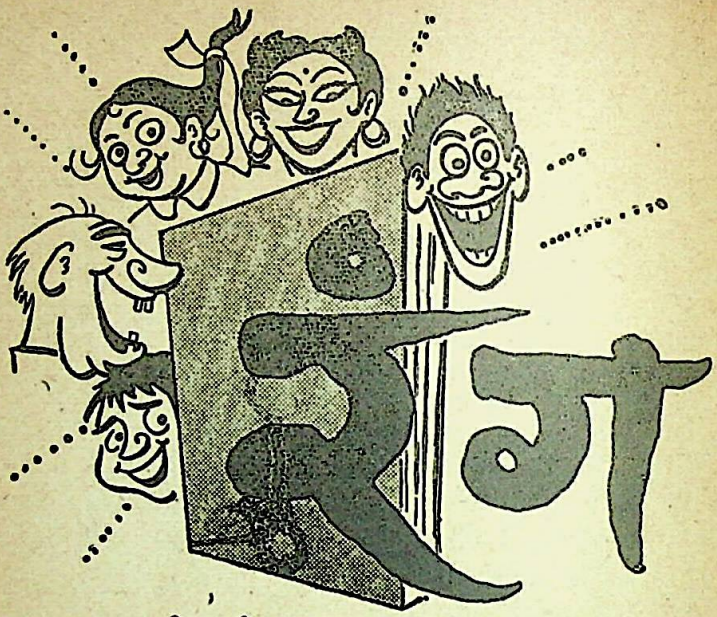

एक : अंक

५० पैसे

वार्षिक :

पांच रुपये

५० पैसे

हास्य व्यंग से भरपूर रंगीला मासिक

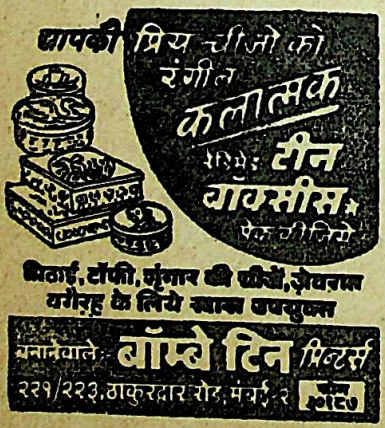

३ वर्ष का चंदा भेजनेवालों को सुंदर भेंट

यदि आप तीन वर्ष का चंदा एक-साथ भेज दें, तो नवनीत मिलने के साथ ही आपको और भी दो लाभ होंगे।

१. तीन वर्ष के चंदे के लिए ३० के स्थान पर केवल २५) देने होंगे।

२. ८०० पृष्ठ की पुस्तक 'कविता-कौमुदी' (उर्दू शायरी), मूल्य ८), भेंट स्वरूप दी जायेगी।

हमें विश्वास है कि लौटती डाक से आप २५) भेजकर तीन वर्ष के ग्राहक बनेंगे और सुंदर भेंट का लाभ उठायेंगे।

नवनीत प्रकाशन,
३४१ तारदेव बम्बई-३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

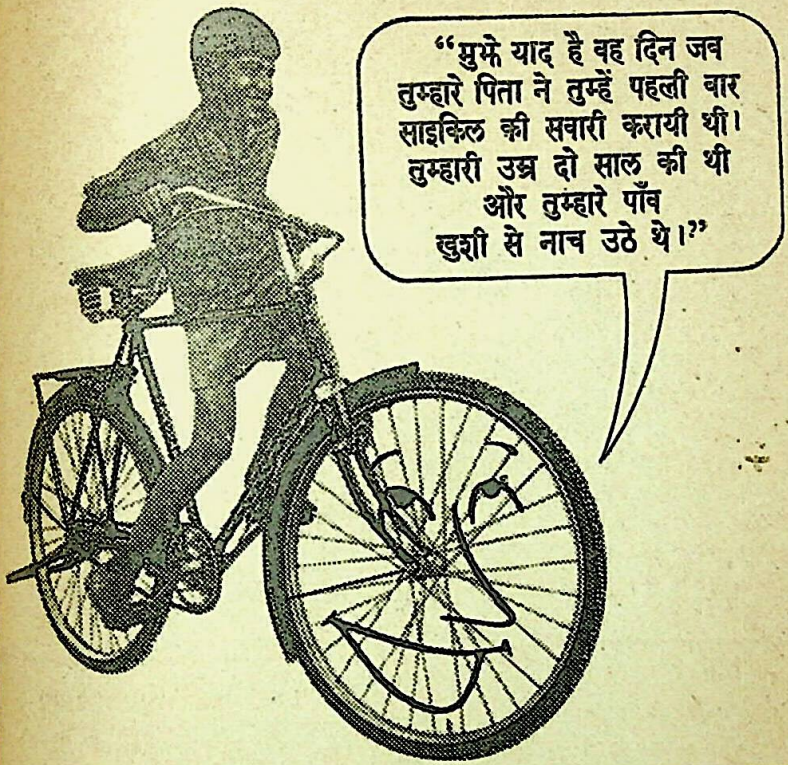

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है—
वह तो जीवन-साथी है।

बारह साल बीत चुके हैं और हर्क्युलिस आज भी पिता और अब पुत्र की सेवा में उसी विश्वसनीयता के साथ तत्पर है।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, यह आपके जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद वर्ष बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन होंगे... आपकी तरक्की होगी... आपके बच्चे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया बसा लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके साथ रहेगा।

टी. आई. सायकिल्स आफ इण्डिया अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

प्रोप्राइटर्स : ट्यूब इनवेस्टमेंट्स आफ इंडिया लि० मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन लगाने का एक नया क्षेत्र

१ मार्च १९६५ तक १९ करोड़ रुपये तक के
लगभग १,३३,०००आवेदन पत्र
यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया की यूनिटों में धन लगाने के लिए प्राप्त हो चुके थे।

यूनिटों में धन लगाने से पूंजी की सुरक्षा के अलावा अन्य लाभ ये हैं.....

* यूनिटों में धन लगाने से पूंजी सुरक्षित रहती है, क्योंकि ट्रस्ट की विनियोग-नीति, विनियोजन के मजबूत व दूरदर्शी सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होती है।

* यूनिट ट्रस्ट का कार्य-परिचालन विनियोजन के एक संतुलित और सुवितरित संविभाग में धन लगाने के सिद्धांत पर आधारित होता है। दस यूनिटें खरीदने पर यूनिटधारक समूचे संविभाग में, जो सरकारी प्रतिभूतियों, औद्योगिक डिबेंचरों, अधिमान अंशों व साम्य अंशों से मिल कर बनता है, भाग ले सकता है। इस प्रकार धन लगाने में जोखिम भी कम से कम उठाना पड़ता है और यूनिटें आपकी पूंजी को सुरक्षा प्रदान करती हैं। साथ ही आपको उचित लाभांश प्राप्त होते हैं तथा पूंजी में वृद्धि की गुंजाइश भी रहती है।

* धन लगाने के लिए यूनिट एक अभूतपूर्व माध्यम है, जिनके अनेक प्रमुख फायदे हैं। इनसे नियमित आय होती रहती है.... इनके खरीदारों को महत्वपूर्ण कर-छूटें मिलती हैं.... इन्हें पैसे की जरूरत पड़ने पर भुनाया जा सकता है।

यूनिटें देश-भर में प्रमुख बैंकों की सभी शाखाओं से प्राप्त हैं

यूनिट खरीदिये

बचत के लिए इसमें धन लगाना अच्छा है

यूनिट ट्रस्ट आफ इण्डिया

मुख्य कार्यालय : बम्बई लाइफ बिल्डिंग, ४५ वीर नरीमन रोड, पोस्ट बाक्स नं. २०००, बम्बई—१.

शाखाएँ : रिजर्व बैंक आफ इण्डिया एनेक्स, १३ नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बाक्स नं. ५५२, कलकत्ता—१.
रिजर्व बैंक बिल्डिंग, फोर्ट ग्लेसिस, साउथ बीच रोड, मद्रास—१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

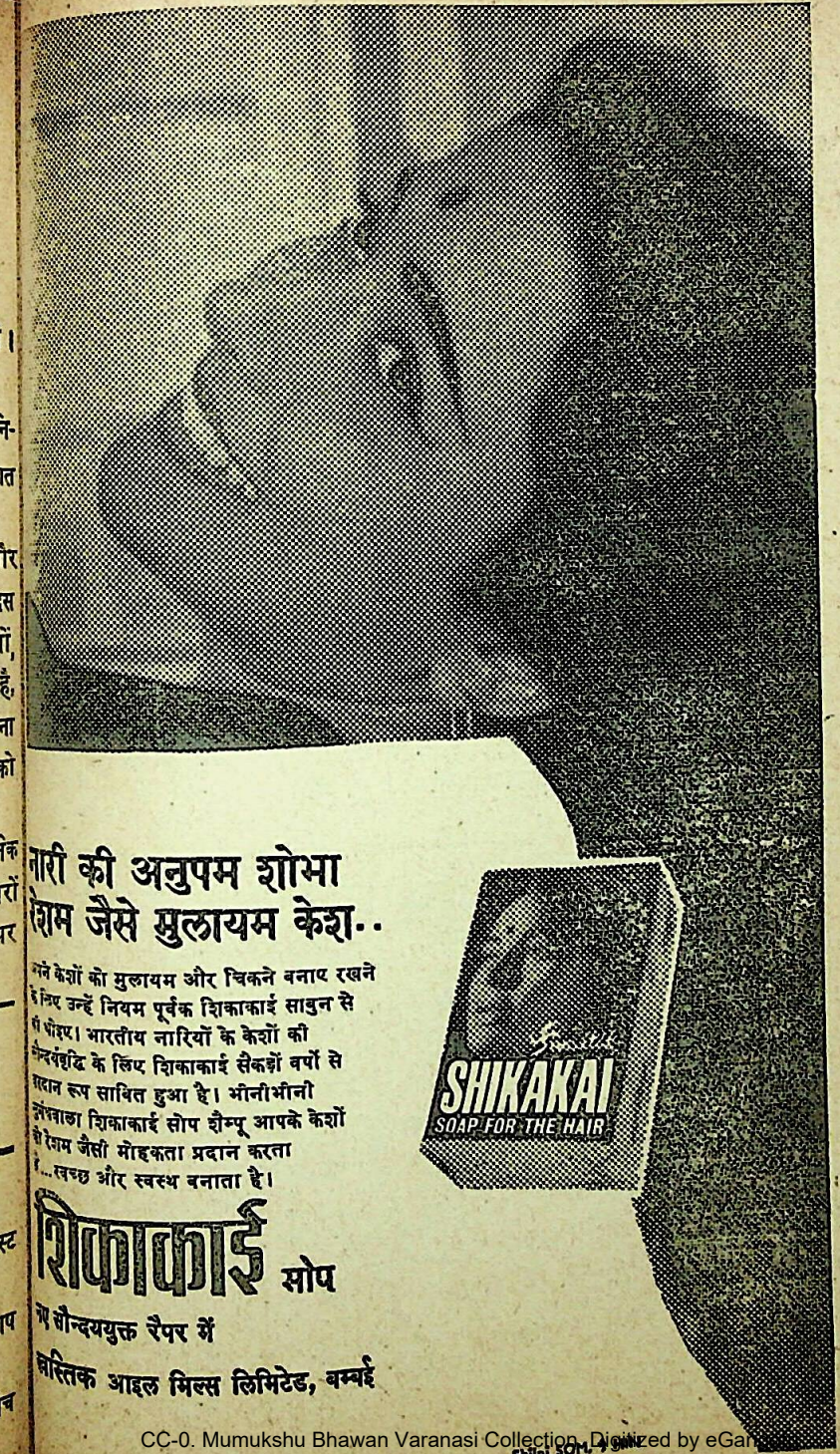

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल्दी कीजिए!
जल्दी कीजिए!
आज ही एकाउण्ट खोलिए

बैंक ऑफ़ बरोडा
के ज़रिए
अब आप ७½% ब्याज कमा सकते हैं!

इस सुनहले मौक़े को हाथ से न जाने दीजिए! अब बैंक ऑफ़ बरोडा ने अपनी ब्याज की दरें बढ़ा दी हैं। आप अब अपना फ़िक्स्ड डिपॉज़िट एकाउण्ट खोलकर पहले से कहीं ज़्यादा ब्याज कमा सकते हैं।

याद रखिए कि आपकी अभी जमा की जानेवाली फ़िक्स्ड डिपॉज़िट की रक़मों पर इसी ऊँची दर का ब्याज मिलता चला जायगा भले ही आगे चलकर दरें घटें या बढ़ें।

बदली हुई दरें नीचे दी गयी हैं:

डिपॉज़िटों की मियाद		कम से कम रक़म	दर
इतनी या इससे ज़्यादा	लेकिन इससे कम		
९१ दिन	६ महीने	रु. २,५००/-	५% प्रतिवर्ष
६ महीने	१ साल	रु. ५००/-	५½% प्रतिवर्ष
१ साल	२ साल	रु. ५००/-	६% प्रतिवर्ष
२ साल	३ साल	रु. ५००/-	६½% प्रतिवर्ष
३ साल	५ साल	रु. ५००/-	६½% प्रतिवर्ष
५ साल	७ साल	रु. ५००/-	७% प्रतिवर्ष
७ साल	९ साल	रु. ५००/-	७½% प्रतिवर्ष
९ साल या उससे ज़्यादा	...	रु. ५००/-	७½% प्रतिवर्ष

सेविंग्ज़ बैंक एकाउण्ट की रक़मों पर ब्याज ३% प्रतिवर्ष से बढाकर ४% प्रतिवर्ष कर दिया गया है।

दि बैंक ऑफ़ बरोडा लिमिटेड

(संस्थापित: सन् १९०८) प्रधान कार्यालय: बड़ौदा

JWT-BB-3728

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जून
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

दधि-मंथन
दीपसिंह शेखावत का एक चित्र
श्रीगोपाल नेवटिया के
निजी संग्रह से

इस अंक में

१७ पुराने गीत
जावालि
१८ दर्द : विकास की एक मंजिल
प्येर तैयार द शार्दें
२० वेधशालाओं का व्यसनी जयसिंह
सूर्यनारायण व्यास
२४ अतृप्त मातृत्व
धूमकेतु
२९ गुर्दे : शरीर का फिल्टर-यंत्र
हर्बर्ट एस० बेंजामिन
३२ इस्लामी कला : सौंदर्य और सीमाएं
अहमद मम्दूह हम्दी
३५ पथ के प्रदीप
डैग हैमरशोल्ड
३६ समुद्र के गर्भ में नया नागलोक
कमांडर जाक कोस्तू
४० दोस्ती का द्वार खुला रखें
सुमित्रा श्रीवास्तव
४४ कवि-पुंगव बेंद्रे
एच० वी० रामचंद्र राव
४८ नया-पुराना
जेम्स थर्बर
४९ आशावादी बनें
५१ हाथियों का वार्तालाप
५५ कुबैत-कुबेर
श्रीगोपाल नेवटिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

आक्टोपस का आलिंगन
—सर आर्थर ग्रिबल

ताऊसो रबाब आखिर
—अयोध्या प्रसाद गोयलीय

खरगोशों का महाप्रलय
—कमला वाघ

क्या कहने स्पेन की ट्रेन के
(यात्रा-वर्णन)

इंजीनियर लुई अर्माद
(प्रेरणा-पुष्प)

फफूंद का आटा खाइये
(वैज्ञानिक लेख)

पदक
(रुमानियन कहानी)

दुनिया के दस आश्चर्य
(वैज्ञानिक लेख)

किम (पुस्तक-संक्षेप)

चित्रसज्जा :
ओरेस्त झुवे, ओके, बंसीलाल वर्मा, शणै, पारदुले

हमारा पता
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१, तारदेव, बंबई—३४;
फोन : ७२८४७

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बम्बई—३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी वक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

६० मेरे पिताजी
जनरल करियप्पा

६१ मेरी कल्पना का सुख

६४ सुंघनी का इतिहास

६८ आचार्य गुरदयाल मल्लिक
सत्येन

७१ शेर को कैसे पकड़ा ?
फ्रैंक वक

८१ जीवन की खुशियां....
फरीद

८२ जिंदगी (कविता)
निरंकार देव सेवक

८४ भारतीय डाक-प्रणाली
रामचंद्र सिंह सागर

९० छींक : एक बीमारी
के० एन० ध्यानी

९२ आपमें हंसने का माद्दा कितना है ?

९५ बत्तख का घोंसला (कहानी)
माइकल मैकलवर्टी

९९ एक नजर का फेर (कहानी)
गुरुवचन सिंह

१०३ शरीफजादा (कहानी)
मिर्जा रुसवा

१०९ वार्ता-विलास

११३ कनि (पुस्तक-संक्षेप)
शंकर

१४० धोखा (कविता)
अमीक हनफी

१५१ चरित्रहीनता का भ्रम

१५५ जवानी के बाद जवानी

१५७ खूब थे वे लोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४ : अंक ६

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

जून १९६५

के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मा

पुराने गीत

मेरी वीणा के पुराने गीतों में
कोमल क्वणन ही नहीं,
तांडव के ताल भी हैं;
आत्मा की संजीवनी ही नहीं,
प्रलय का महाकाल भी है।
डूब गयी है इन्हीं स्वरों में
सागरों की गहराई,
और हिमगिरि के शृंगों की
अभ्रंकष ऊंचाई;
झंझा, तूफान, आंधियां
और अंगारे मरुथल के
समा गये हैं।
स्वर्ग और पृथ्वी-तल के
नित-नवीन स्वरों के गीत,
जो सभी गाते हैं,
रंगीन बुलबुलों-से टूट जाते हैं—
वे विश्वास नहीं जगाते हैं।

—जाबालि

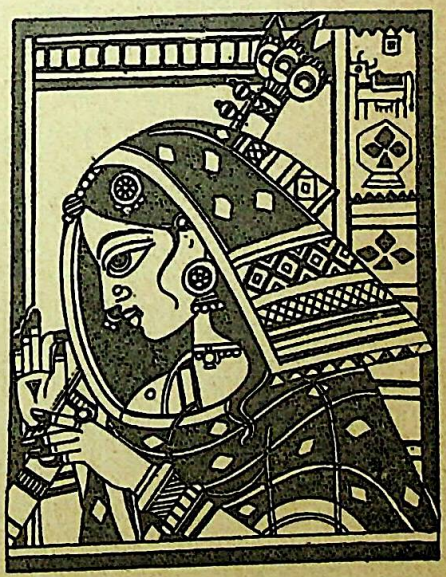

बीणा-वादिनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख : विकास की एक मंजिल

जेसुइट पादरी, भूगर्भशास्त्री एवं धर्मचिंतक प्येर तैयार द शार्दें (मृत्यु १९५४) इस सदी की फ्रांसीसी प्रज्ञा के शलाका-पुरुषों में से थे। दुःख के सृजनात्मक रूप की निम्न-लिखित व्याख्या उनके एक निबंध का आंशिक अनुवाद है।

बीमारी रोगियों के मन में स्वभावतः ऐसा विचार भरने लगती है कि वे निकम्मे हैं, यही क्यों, धरती पर भारस्वरूप हैं। बीमार को बरबस यह अनुभव होने लगता है कि अपने अभागेपन के कारण वह जीवन के मुख्य प्रवाह से काट दिया गया है, पुरुषार्थ और हलचल से वंचित कर दिया गया है। अपनी स्थिति उसे एकदम अर्थहीन प्रतीत होती है। उसे लगता है कि बीमारी ने उसे विश्वव्यापी हलचल के बीच निष्क्रिय पड़े रहने का शाप दे दिया है।

इन मायूसी-भरे विचारों को मिटाने के लिए मैं यहां दिखाना चाहता हूं कि संसार के निर्माण में—भौतिक संसार के भी निर्माण में—दुःख-दर्द का स्थान और उपयोग है।

संसार अभी निर्माण के दौर में है। यह एक बुनियादी सत्य है, जिसे हमें समझ लेना और इस तरह आत्मसात् कर लेना है कि वह हमारे सोचने के ढंग में रच-पच जाये।

ऊपरी दृष्टि से देखने पर ऐसा लग सकता है कि धरती के तख्ते पर समस्त जीव और उनके भाग्य यों ही बेतरतीब और मनमाने ढंग से फेंक दिये गये हैं। हमें विश्वास-सा होने लगता है कि हम आगे-पीछे भी, यहां के बजाय वहां भी, पैदा किये जा सकते थे; धनी-निर्धन कुछ भी हो सकते थे। जैसे देश और काल के धरातल पर संसार एक विशाल फुलवाड़ी हो, जिसका माली अपनी मर्जी से फूलों की अदला-बदली करता रहता है।

लेकिन इस ढंग की धारणा तर्क में टिकती नहीं। विज्ञान, दर्शन और धर्म की शिक्षाओं के प्रकाश में हम जितना ही गहरा सोचेंगे, उतना ही यह पायेंगे कि संसार कुशलतापूर्वक सजायी हुई पृथक्-पृथक् वस्तुओं के पुंज जैसा नहीं है; वह तो किसी जीवंत वस्तु जैसा है, जो वृद्धि की अपनी ही प्रवृत्तियों से बंधा हुआ है।

प्रतीत होता है, जैसे शताब्दियों से सच-मुच कोई विश्वव्यापी योजना हमारे चहुं ओर चल रही है। ब्रह्मांड में कोई तैयारी चल रही है, कोई बाजी लगी है। इसका सही-सही वर्णन 'गर्भावस्था' या 'जन्म' के रूप में ही हो सकता है। और यह है मानव-आत्माओं तथा उनसे संपृक्त भौतिक तत्वों से निर्मित आध्यात्मिक सत्य का जन्म।

जन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े परिश्रम से, मानवीय परिश्रम के श्रम और प्रभाव से, एक नयी धरती बन ी है, उभर रही है, अपने आपको परि- कर रही है। नहीं, हम गुलदस्ते में रखी ियां नहीं हैं। हम तो किसी विशाल वृक्ष ुगी फूल-पत्तियां हैं—और वृक्ष भी ऐसा, न पर हर चीज सही मौसम में, सही जगह, के साथ, सबके आदेश से पैदा होती है।

आप सोचेंगे, वृद्धिशील संसार की यह ना है तो चातुर्यपूर्ण, किंतु एकदम हवाई । परंतु वास्तव में इसके सीधे व्यावहारिक िणाम निकलते हैं। क्योंकि इससे मान- व प्रयत्न के महत्व और व्यक्ति के दुःख- की कीमत संबंधी हमारी धारणाओं को ा बल मिलता है।

आइये, इस बात को जरा और खुलासे से ें, और वृक्ष एवं गुलदस्ते की तुलना को र खयाल में लायें।

गुलदस्ते में कोई दोषपूर्ण या रोगग्रस्त ी दिखाई दे, तो हमें आश्चर्य होता है; ोंकि उसकी सब कलियां एक-एक करके ी हुई और चतुराई से सजायी हुई होती । इसके विपरीत, किसी वृक्ष पर—वृद्धि व िकास की अपनी आंतरिक आपदाओं तथा ी-पानी रूपी बाहरी आपदाओं से जूझ े हुए वृक्ष पर—टूटी टहनियां, घायल ियां और सिकुड़े, रोगग्रस्त, बदरंग फूल का अपना-अपना न्यायोचित स्थान है। इसके गवाह हैं कि जिस तने पर वे उगे उसने बढ़ने-पनपने के लिए कितनी ीबतें झेली हैं।

इसी तरह, यदि संसार में हर वस्तु स्वयं में पूर्ण है, स्वयं अपना साध्य है और सिद्धांततः कहीं भी रखी जी सकती है, तो हमारे लिए यह मानना मुश्किल होगा कि संसार में ऐसे व्यक्तियों के अस्तित्व का कोई औचित्य है, जो पूर्ण बनने नहीं दिये गये हैं, ऊपर को उड़ान भरते-भरते दर्दनाक ढंग से रोक दिये गये हैं। यह अर्थहीन असमानता क्यों? ये निरर्थक प्रतिबंध क्यों?

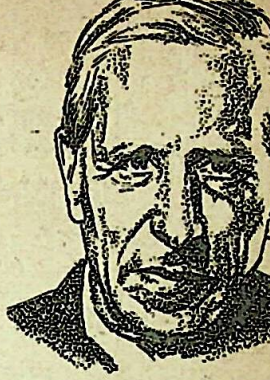

तत्वज्ञानी शार्दे

किंतु यदि संसार सचमुच एक अभियान है, जो अभी पूरा नहीं हुआ है, और यदि हम सब जन्म लेते ही घमासान में झोंक दिये जाते हैं, तब हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकेंगे कि वह महान विश्वप्रयत्न, जिसमें हम भाग भी ले रहे हैं और बाजी पर भी चढ़े हुए हैं, सफल हो—इसके लिए दुःख-दर्द अनिवार्य है।

संसार एक विशाल टटोलबाजी है, एक विशाल खोज, विशाल आक्रमण है; अनेक पराजयों और प्राणों की कीमत चुकाकर ही वह आगे बढ़ सकता है। और जो लोग दर्द झेल रहे हैं—उनका दर्द चाहे किसी प्रकार का हो—वे निकम्मी और अधूरी वस्तुएं नहीं हैं। ये तो वे लोग हैं, जिन्होंने विश्व की प्रगति और विजय की कीमत चुकायी है। ये वे लोग हैं, जो शान से खेत रहे हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेधशालाओं का व्यसनी जयसिंह

पराक्रम, प्रजा-परायणता, पांडित्य तीनों में अग्रगण्य एक नरेश का परिचय

सूर्यनारायण व्यास

जयपुर नगर का निर्माता महाराजा सवाई जयसिंह एक यशस्वी, साहसी एवं निर्भीक नरेश ही नहीं, खगोलशास्त्र का प्रथित पंडित और कलाप्रेमी भी था। उसने अपने समय में ज्योतिर्विज्ञान के प्रचार-प्रसार का बहुत काम किया।

मुगल काल में वह उज्जैन का राज्यपाल रहा था और अपने कार्यकाल में उसने वहां वेधशाला का निर्माण कराया था, जो आज भी बनी हुई है। अपनी गुणग्राहकता और योग्यता से उज्जैन में वह इतना जनप्रिय बन गया था कि वेधशाला के पास का एक भाग 'जयसिंहपुरा' नाम से आज भी उसकी स्मृति की धरोहर बना हुआ है।

महाराजा जयसिंह ने अपने नवनिर्मित नगर जयपुर में भी एक विशाल वेधशाला बनवायी और काशी, दिल्ली एवं मथुरा में भी एक-एक वेधशाला स्थापित की थी। अवश्य ही उन दिनों ये वेधशालाएं अंतरिक्ष का अनुसंधान करती होंगी, ग्रहों की गति का सूक्ष्म निरीक्षण कर खगोल-ज्ञान की प्रगति करती होंगी। आज तो वे महाराजा जयसिंह का स्मारक मात्र रह गयी हैं।

केवल उज्जैन की वेधशाला में ग्रहों का नियमित रूप से वेध लिया जाता है। केंद्रीय शासन उसका थोड़ा-बहुत उपयोग उठा लेता है। एक पंचांग (एफेमेरिस) भी यहां से प्रकाशित होता है।

औरंगजेब के शासन के चालीसवें वर्ष में सन १६९९ में जयसिंह ने आमेर का राज्य-शासन हाथ में लिया था। छः वर्ष बाद ही औरंगजेब की मृत्यु हो गयी। जयसिंह ने दक्षिण के अभियान में भाग लेकर बहुत शौर्य दिखाया था।

राजस्थान के प्रथम इतिहासकार टाड ने लिखा है कि औरंगजेब की मृत्यु के पहले ही मुगल शहजादों में सिंहासन को लेकर संघर्ष आरंभ हो गया था। उस समय जयसिंह ने आजमशाह के पुत्र बेदारबक्त का साथ दिया था और उसकी मदद के लिए वह धौलपुर की चढ़ाई में भी गया था। किंतु उस संग्राम में बेदारबक्त मारा गया।

फलतः जब शाहआलम दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, तो बेदारबक्त का साथ देने के अपराध में आमेर का राज्य मुगल साम्राज्य से पृथक् कर दिया गया और शाहआलम की ओर से दूसरा व्यक्ति उसका शासक बनाकर बैठाया गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुगल बादशाह के इस कृत्य को जयसिंह सह न सका। उसने कछवाहों की सैन्य-शक्ति लेकर मुगलों का मुकाबला किया और सम्राट को पराजय का सामना करना पड़ा। स्वाभाविक ही था कि इससे जयसिंह और सम्राट में घोर विरोध उत्पन्न हो जाये। किंतु शूर जयसिंह ने इसकी जरा भी चिंता न कर, मारवाड़ के राजा अजीतसिंह से संधि-संबंध स्थापित कर लिया। आमेर के सिंहासन पर चालीस वर्ष तक शासन करते हुए उसे अनेक बार युद्ध का सामना करना पड़ा; लेकिन उसने स्वाभिमान के साथ अपना गौरव बनाये रखा और मुगल साम्राज्य उसे नष्ट नहीं कर सका।

जयसिंह बहुत ही नीति-परायण और न्यायप्रिय शासक था—इस बात को उसके विरोधी भी स्वीकार करते थे। आमेर से छः मील की दूरी पर उसने जयपुर की प्रतिष्ठा की। शिल्प, सुंदरता और व्यवस्थितता की दृष्टि से यह नगर भारत की सब राजधानियों में सर्वथा अनोखा ही बनाया गया। इसके निर्माण-कार्य में जयसिंह को एक बंगाली विद्वान विद्याधर की सूझ-समझ से बड़ा सहयोग मिला।

उस युग के और भी कई राजा ज्योतिष में अभिरुचि रखते थे। किंतु जयसिंह का ज्योतिष-ज्ञान बहुत सूक्ष्म और प्रौढ़ था। इस विषय में भी विद्याधर का सहयोग कम महत्वपूर्ण नहीं था। खगोल-विज्ञान में जयसिंह की योग्यता की इतनी प्रसिद्धि हो गयी थी कि दिल्ली के सम्राट मुहम्मदशाह ने पंचांग-संशोधन का कार्य उसके सुपुर्द किया।

खगोल के निरीक्षण-परीक्षण के लिए जयसिंह ने कई यंत्रों का निर्माण किया था, जिनकी प्रशंसा अनेक विदेशी विद्वानों ने भी की थी। इसके लिए उसने समरकंद के उलूगबेग के यंत्रों को भी देखा और सात वर्ष तक उन पर परीक्षण किये और बाद में उनसे भी अधिक सूक्ष्म और उपयोगी नये यंत्रों का निर्माण कराया।

सवाई जयसिंह के एक समकालीन चित्र की ओके द्वारा अनुकृति

उन्हीं दिनों पुर्तगाल का एक पादरी मेन्युअल भारत आया था। जयसिंह ने पुर्तगाल में किये गये ज्योतिष के प्रयोगों का परिचय प्राप्त किया और अपने विद्वानों को पादरी के साथ पुर्तगाल भिजवाया। महाराजा को सहयोग देने के लिए पुर्तगाल-नरेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

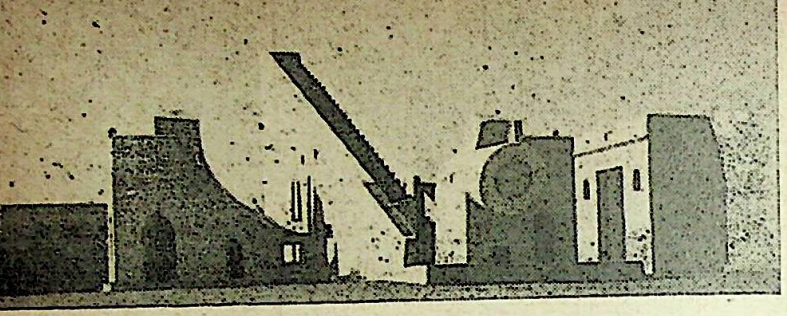

उज्जैन की वेधशाला

ने खगोलज्ञ जेवियर डि सिल्वा को भारत भेजा, जिसने जयपुर आकर पुर्तगालवासी डि-ला हायर द्वारा निर्मित यंत्र महाराजा को दिये।

इन यंत्रों में चंद्र की गतिविधियों का ठीक निरीक्षण नहीं हो पाता था; आधी डिग्री की भूल रह जाती थी। इसी प्रकार की भूल तुर्किस्तान के यंत्रों में भी थी। जयसिंह ने उनका भी परीक्षण किया था।

उन दिनों मुगल साम्राज्य में आंतरिक विग्रह चल रहा था और निर्बलता भी पैदा हो गयी थी। परंतु जयसिंह ने उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली। वह ज्योतिष और खगोल-विज्ञान की प्रगति में लगा रहा। दिल्ली के इन विप्लवों का शमन हो जाने पर बादशाह ने जयसिंह को दिल्ली बुलवाया और आगरा तथा मालवे का प्रशासक बनाकर भेजा। उसी काल में जयसिंह ने मथुरा और उज्जैन में वेधशालाएं बनवायी थीं।

जयसिंह ने अपने कागज-पत्रों में स्वीकार किया है कि सन १७२८ तक उसने वैज्ञानिक यंत्रों का निर्माण लगातार जारी रखा था। जब डा० डब्ल्यू० हंटर नाम का विद्वान भारत आया, उसने जयपुर और उज्जैन के यंत्रों को देखा और उनका प्रयोग कर उनकी बहुत प्रशंसा की थी।

उज्जैन में ज्योतिष के एक युवक पंडित से भी डा० हंटर ने शास्त्रचर्चा की थी। इस युवक का प्रपिता सवाई जयसिंह का निकट मित्र था और उसे सम्राट की ओर से 'ज्योतिष राय' की पदवी भी प्राप्त थी। जयसिंह की ओर से उसे पांच हजार रुपये वार्षिक की जागीर मिली थी। डा० हंटर उज्जैन के उस युवक पंडित से बहुत प्रभावित हुआ था।

हंटर के लौटने के बाद १७४३ में जयसिंह की मृत्यु हो गयी। वह एक ज्ञान-विज्ञान-संपन्न, सुयोग्य, नीति-परायण, सफल शासक था। उसने सम्राट से कहकर हिन्दुओं पर लगा जजिया कर समाप्त कराया था। वह अच्छा लेखक और ग्रंथकार भी था।

भारत में वेध लेने की प्रथा पुरातन काल से चली आ रही थी। ई० पू० ३२३ में चंद्रगुप्त मौर्य मगध का शासक था। उसने सेल्युकस की पुत्री से विवाह किया। उस समय भारतवासियों और यूनानियों में शास्त्रों का आदान-प्रदान होने लगा था और भारत में वेधशालाएं स्थापित की गयी थीं।

उज्जैन भारत के समय-मान का माध्यम था—मानो भारत का ग्रीनविच था। बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय से वहां वेधकार्य होता था। काल-गणना का प्रमुख माध्यम होने के कारण ही वहां के प्रमुख देवता का नाम 'महाकाल' था। उज्जैन को मध्यरेखा-स्थानीय मानकर इसी आधार पर सिद्धांतों की रचना हुई है। वराहमिहिर के अनुसार भी, आद्य-सूर्य-सिद्धांत के प्रणेता ने अपना समस्त गणित उज्जैन-स्थित याम्योत्तर को शून्य रेखांश मानकर किया है।

यह प्रमाणित करता है कि ग्रहों की गति-विधियों के सूक्ष्मावलोकन के लिए उज्जैन में पुराकाल में वेधशाला का अस्तित्व रहा है।

जयसिंह के आश्रित पं० जगन्नाथ ने, जो संस्कृत के विद्वान थे, उर्दू और फारसी में भी योग्यता प्राप्त की थी। जयसिंह ने 'जिज मुहम्मद' नाम का जो ग्रंथ फारसी में तैयार कराया था, उसका अनुवाद पं० जगन्नाथने ही किया। संस्कृत में इस ग्रंथ का नाम 'सम्राट्-सिद्धांत' रखा गया। इसकी भूमिका में लिखा है :

"इस समय जिन गणित ग्रंथों का पर्याप्त प्रचार है, जैसे सैयद गुरगनी व खयानी आदि के ग्रंथ, इन शिल अल मूलचंद अकबर, हिन्दू ग्रंथ, यूरोपी ग्रंथ—उन पर से गणित करने पर सूक्ष्म-प्रत्यक्ष नहीं होता—विशेष रूप से दूज का चंद्र-दर्शन, ग्रहों के उदय-अस्त, ग्रहयुति आदि वेध से ठीक नहीं मिलती।

"जब यह बादशाह मुहम्मद शाह को बताया गया, तब बादशाह ने इन गणित-संबंधी उलझनों के निर्णय के लिए जयसिंह को आदेश दिया कि समरकंद की वेधशाला की तरह ही दिल्ली में यंत्रों का निर्माण कराया जाये।"

समरकंद में तैमूरलंग के नाती मिर्जा उलूगबेग ने एक वेधशाला बनवायी थी। किंतु बादशाह की आज्ञा से जयसिंह ने जो वेधशालाएं बनवायीं, वे समरकंद की कापी नहीं थीं। अपने ज्ञान, मौलिक सूझ और अन्वेषण के आधार पर उसने इनका निर्माण कराया। धातु के बजाय, ईंट-चूने से बनी होने पर भी ये वेधशालाएं बहुत सूक्ष्म कार्य कर सकती हैं, करती रही हैं।

जयसिंह के बाद उज्जैन की वेधशाला दो सौ साल तक उपेक्षित रही। सन १९०४ में मेरे स्वर्गीय पिताश्री ने लोकमान्य तिलक के सहयोग से इस ओर ग्वालियर राज्य का ध्यान आकर्षित किया और स्वर्गीय महाराजा माधवरावजी सिंधिया ने इसका पुनरुद्धार कराया। आज यह वेधशाला सक्रिय है।

जयपुर की वेधशाला बहुत विशाल है। उसमें अनेक यंत्र बने हुए हैं। दिल्ली की वेधशाला (जंतर-मंतर) भी कई यंत्रों से सज्जित है। परंतु ये दोनों अब निष्क्रिय-उपेक्षित हैं।

यदि सरकार इन सब वेधशालाओं का उचित उपयोग ले और योग्य आधुनिक उपकरणों से इन्हें सज्जित करे, तो ये सैनिक, असैनिक, हवाई और जलपोतीय मार्गदर्शन सफलता से कर सकते हैं। आवश्यकता है महाराजा जयसिंह की स्थापित परंपरा के पुनरावर्तन की, और अंतरिक्ष-अनुसंधान में प्रगति करने की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक संवाद :

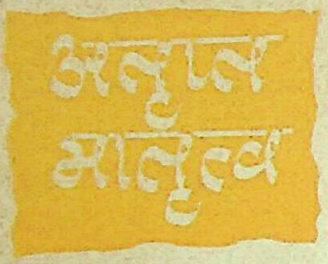

मानवीय आदर्शों के निष्ठावान व्याख्याकार गुजराती साहित्यशिल्पी 'धूमकेतु' के अवसान से एक सशक्त रश्मि-स्रोत सूख गया। महाभारत के मार्मिक प्रसंग को नाटकीय रूप देनेवाली उनकी कृति 'कुंती अने युधिष्ठिर' का यह हिन्दी रूपांतर कुंदनिका कापडीआ ने प्रस्तुत किया है।

स्व० धूमकेतु

[महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका है। धृतराष्ट्र उत्तर-क्रिया के लिए गंगा-तट पर गये हैं, यह सुनकर पांडव भी वहां जाते हैं। मृत स्वजनों को तर्पण देने का प्रसंग है। युधिष्ठिर शिविर के बाहर घूम रहे हैं। निरभ्र आकाश में तारे रत्नपुष्पों की भांति खिले हैं।]

युधिष्ठिर:—इस समय यह कौन ? धीरे-से बहती हुई परछाईं की तरह कौन चुपचाप चला जा रहा है ?

कुंती:—(कुछ व्यग्रता से) .....मैं हूं, कुंती।

युधि०:—कौन ? मां तुम ?.....इस समय और अकेली ?

कुंती:—(अधिक व्यग्रता से) मैं तुम्हारे ही पास आ रही थी। रात अंधेरी है और ऐसी एकांत अंधेरी रातों में कोई चीज, मेरे जीवन में गुप्त और सुप्त पड़ी हुई कोई चीज जागृत हो जाती है युधिष्ठिर!

युधि०:—मां, आज तुम्हारी आवाज में ऐसी अस्वस्थता क्यों है ?

कुंती:—प्रसंग ही ऐसा है। स्वजन मर्मांतक घाव करते हैं.....जीते जी नहीं, मरने के बाद।

युधि०:—मां ! .....तुमने तो अपनी वीरतापूर्ण वाणी से हमें प्रोत्साहित किया था ! हमने युद्ध जीता, राज्य पाया, हमारे शत्रु हारे—और अब तुम्हारी वाणी में ऐसा विषाद शोभा देता है क्या ?

कुंती:—प्रोत्साहन तो मैंने तुम्हें इसलिए दिया था कि तुम निर्बलता को निर्मलता न मान बैठो। महाराजाधिराज पांडु के पुत्र युद्ध का झंझट रोकने के लिए विरक्ति धारण कर लेते, तो इसमें न उनकी शोभा थी, न वैराग्य का प्रताप था। पराजय की कल्पना से ग्रहण किया हुआ शांतिमार्ग मनुष्य को छिपी अशांति ही देता है। बेटा, क्षत्राणी को तो यह जानकर ही पुत्र को जन्म देना होता है कि वह रणभूमि में रौंदा जायेगा। .....लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभी यह रणकथा जाने दो। आज तो मैं एक रहस्य-कथा तुम्हें बताने आयी हूं।

युधि०:—कौन-सी ?

कुंती:—सारे युद्ध से अधिक आग इस छोटी कथा में भरी है, और वह आग मेरा अंग-अंग जला रही है।

युधि०:—बोलो मां, बोलो.....वह कौन-सी बात है, जो विजय के बाद भी अभी तक तुम्हें जला रही है ? क्या तुमने ही नहीं कहा था मां, कि मृत्यु तो वैर का शांति-ध्वज है ?

कुंती:—यदि मैं सह सकती तो, तुम्हें यह कथा सुनाने न आती। अतृप्त वैर उतना वेदनामय नहीं होता, जितना अतृप्त मातृत्व।

युधि०:—जिस कथा को, धरती माता जितनी सहन-शक्ति रहते हुए तुम सह नहीं पातीं, उसे सुनने और सुनकर सह लेने की शक्ति मैं तुमसे मांगता हूं। बोलो मां, बोलो। इस अंधेरी रात में इस रण-क्षेत्र के छोर से जैसे मुझे फिर अश्व-त्थामा की आवाज सुनाई दे रही है।

कुंती:—अंधेरी रात! ...हां बेटा, ऐसी अनेक रातों में, अनेक वर्षों तक युद्धघोष मुझे सुनाई दिया है। और वर्षों तक युद्धघोष को अपने सिंहनाद से थर्रा देनेवाला.....

युधि०:—(घबराकर) मां, तुम अर्जुन की बात कर रही हो क्या ?

कुंती:—ना बेटा, अपने सिंहनाद से युद्धघोष को थर्रा देनेवाला.....

युधि०:—(बीच में!) पितामह की ?

कुंती:—ना बेटा, महारथी कर्ण की।

युधि०:—कर्ण की ? महारथी कर्ण की ?

कुंती:—'सूतो वा सूतपुत्रो वा' कहनेवाले कर्ण की। वीरता की उस मूर्ति की मुझे इस समय याद आ रही है। बेटा, क्या कभी क्षण-भर दिखाई देकर अंधेरे में अदृश्य हो जाये, ऐसा सपना तुमने देखा है ?

युधि०:—हां मां। कर्ण में मुझे हमेशा ही एक महान स्वप्न की मूर्तिमान छाया दिखा करती थी। उसके चरण तुम्हारी याद दिला देते थे.....और उसका विषाद जैसे तुम्हारी अंतर्व्यथा की।

कुंती:—मुझे भी उस कर्ण की, जो अपने को राधेय मानता था, किंतु जो वास्तव में

मातृत्व

[चेक चित्रकार ओरेस्त दयुबे]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौंतेय था, उस तरुण कर्ण की आज याद आ रही है। बेटा, कर्ण कौंतेय था।

युधि०:—मां, तुम कह रही हो? कर्ण कौंतेय था?

कुंती:—जैसे तुम्हारी, वैसे उसकी भी मैं मां हूं। बेटा, सुन रहे हो?

युधि०:—मां.....तुम.....

कुंती:—हां, बेटा, मैंने उसे त्याग दिया था। ऐसी ही काजल-भरी अंधेरी रात में उसे गंगा में बहाकर मैं लौट आयी थी—वह दृश्य आज तक मेरी आंखों के सामने है। तुम्हारे महाभारत से कहीं अधिक बड़े युद्ध स्त्री के हृदय में भरे हैं। रात के अंधकार से लिपटी रणभूमि को देखकर मुझे स्त्री-हृदय याद आ जाता है। जो वेदना, जो करुण कथा स्त्री-हृदय में भरी है, उसकी तुलना में महाभारत कितना सुखमय और शांत प्रतीत होता है!

युधि०:—किंतु मां, स्त्री का हृदय ही महाभारत को संभव बनाता है। तुमने पहले इतना भर कहा होता कि कर्ण हमारा बड़ा भाई है, तो यह विनाश रुक जाता। कर्ण के बिना कौरव थे ही क्या? और कर्ण तथा अर्जुन—सारे संसार में अप्रतिम तुम्हारे ये दो पुत्र एक हो जाते, तो दुनिया में अविजित क्या रह जाता? मां, तुम्हारे हृदय में यह जो संहार का बीज इतने दिनों गुप्त रहा, वही तो तुम्हें पश्चात्ताप की आग से भर रहा है न? किंतु...तुमने थोड़ा पहले बताया होता!

कुंती:—बेटा, तुम मेरे पुत्र हो; परंतु पुरुष हो। स्त्री का हृदय तुम समझ नहीं सकोगे। अपने मातृ-हृदय को मैं स्वयं ही अंत तक बराबर समझ नहीं पायी। मातृ-हृदय को पूरा-पूरा समझने के लिए मुझ स्त्री को भी स्त्रीत्व मिटाकर माता बनने की शिक्षा लेनी पड़ी है। जब कर्ण को त्यागा, तब मैं स्त्री थी। तब मेरे मन में वेदना नहीं थी, शरम से छुटकारा पाने का आनंद था। किंतु मुझे क्या पता था कि दीपक के मंद प्रकाश में देखा हुआ, कुछ दृश्यमान कुछ अदृश्य, अधखिले मोगरे के फूल जैसे नन्हे बालक का वह निर्दोष मुखड़ा मेरे रोम-रोम में सोये हुए मातृत्व को जगाकर हर घड़ी, हर पल मौन वाणी से मुझे बुलायेगा—"ओ मां!" मैं वर्षों से अंधेरी रातों में, जंगल में और नगर में, महल में और झोंपड़ी में, नींद में और स्वप्न में कर्ण की वह मौन वाणी सुन रही हूं—"ओ मां, मुझे त्याग दिया? मुझ वाणीहीन निर्दोष और त्यागे जाते हुए भी तुम्हें मधुर स्नेह से देखनेवाले, केवल विश्वास पर जीनेवाले नन्हे बालक को त्याग दिया?" युधिष्ठिर बेटा, स्त्री मातृत्व को छोड़ ही नहीं सकती—शरीर को छोड़े बिना.....यह मुझे अब पता चला।

युधि०:—तब तो मां, मैंने जो सुना था कि तुम युद्ध से पहले कर्ण से मिलने गयी थीं, वह सच ही लगता है।

कुंती:—युद्ध से पहले मैं उसे देखने गयी थी। मिलती तो हमेशा थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौरीशंकर गोवर्धनराम जोषी 'धूमकेतु'

[चित्रकार : वंसीलाल वर्मा]

युधि०:—कहां ?

कुंती:—अपने मन में। युद्ध से पहले मैंने कर्ण को देखा; परंतु मेरे हृदय में तो एक नन्हा सुंदर बालक—नील आकाश के अंतर में सुप्त सत्यमय सौंदर्य जैसा—हर घड़ी उपस्थित रहता था।

युधि०:—तुम्हारे हृदय में ऐसा बड़ा काल्पनिक विषाद उमड़ता देखकर संसार के प्रति मेरी आसक्ति बुझ रही है, और वनवास की आकांक्षा जाग रही है।

कुंती:—कर्ण की मृत्यु का मुझे उतना शोक नहीं, जितना गाढ़ निद्रा में पड़े बालक को छलने का। बेटा युधिष्ठिर, संपूर्ण साम्राज्य की समृद्धि के नीचे सोया हुआ यह नन्हा बालक मुझे जो वेदना दे रहा है, उसकी तुलना में अनेकानेक वीर-मृत्युएं कुछ नहीं। तो मैं यह कहने आयी थी कि कर्ण तुम्हारा भाई था—उसकी उत्तरक्रिया अब तुम्हीं करो। उसे छलने के बदले में किया हुआ, यह छोटा-सा काम भी मुझे कुछ शांति देगा।

युधि०:—मां, काश मैं जानता कि कर्ण मेरा भाई है.....

कुंती:—तब तो यह न जानने में ही सबका श्रेय था। मैंने उसे समझाकर भी देखा।

युधि०:—और उसने क्या कहा ?

कुंती:—उसने जो कहा, उसे सुनकर मुझे अनुभव हुआ कि यदि किसी मंत्रशक्ति से मैं उसे गोद में उठाने योग्य बालक बना सकती, तो मैं उसे चुंबनों से भर देती। काश, ऐसे वीर पुत्र की पांच-छः वर्ष की अवस्था की मीठी शरारतें मैं देख पाती !

युधि०:—पर मां, उसने क्या कहा था ?

कुंती:—वही अमर शब्द—"मां, पता नहीं क्यों तुमने नित्य जीवन-व्यथा भोगकर मेरे हृदय में शक्ति भरी? पर जो भी हो—चाहे दैव मेरे विरुद्ध हो, पराजय स्पष्ट दिखाई दे रही हो, पुरुषार्थ का केवल उपहास होनेवाला हो, और दूसरी भी अदृश्य आपत्तियां आनी निश्चित हों, तो भी मैं भीरु नहीं बनूंगा, नहीं बनूंगा। तुमने ही मां अपने जीवन से मुझे सिखाया है कि भीरुता से अधिक तुच्छ कुछ भी नहीं। तुम्हारे पक्ष की विजय में स्पष्ट देख सकता हूं। परंतु जय-पराजय से ऊपर उठे हुए अपने पुत्र को युद्ध में जूझने और धराशायी होने की अनुमति दो।" बेटा, जैसे मेरे जीवन की वर्षों की व्यथा ने उसके जीवन में सदा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थान पा लिया था।

युधि०:—मां, कर्ण वीर था, उसने वीरमृत्यु पायी है। उसका शोक छोड़कर अब तुम्हें हमें मार्ग दिखाना है।

कुंती:—तुमने जो किया, वह आवश्यक धर्म था। अब मुझे इस वैभव का मोह नहीं, चाह भी नहीं। रक्त से सनी राज्यलक्ष्मी भोगने की प्रेरणा मैंने तुम्हें कभी नहीं दी। भीरुता और रक्तरंजित युद्ध में से तुम रक्तरंजित युद्ध को अपनाओ—वस यह मेरा संदेश था। मुझे अब किसी प्रकार के भोग की चाह नहीं।

युधि०:—राज्यलक्ष्मी पाने के वाद फिर त्याग की बात ?

कुंती:—यही तो जीवन-चक्र है युधिष्ठिर ! और इसीलिए आज मेरे मन में एक और वात उपजी है। और वह भी जीवन-चक्र के क्रम में अनिवार्य लगती है।

युधि०:—क्या ?

कुंती:—(गंभीरता से) अपने पाप के संपूर्ण प्रायश्चित्त के रूप में मुझे अग्नि में से निकलना पड़ेगा, अग्निस्नान करना होगा।

युधि०:—तुम्हारा हृदय इतना व्यथित है.....

कुंती:— (आकाश की ओर मुंह करके) मैं व्यथा से नहीं वोलती। मुझे लगता है वेटा, मैं अग्निस्नान इसी गंगा के किनारे करूंगी, जहां मैंने सत्य को त्यागा, सौंदर्य को छोड़ा, भीरुता स्वीकार की।

युधि०:—मां !

कुंती:—(उसी अवस्था में) तुम्हें, भीम को—अर्जुन को—नकुल को—लाडले सहदेव को पुकारती हुई और.....

युधि०:—मां, वस करो। बस करो ! दुःख से तुम्हारी मति फिर गयी है।

कुंती:—(किंचित् करुण हास्य से) और अपने सबसे प्रिय पुत्र कर्ण को वुलाती हुई मैं अग्निस्नान करूंगी—तभी मेरा हृदय बालक कर्ण की मुस्कान से छका-छक भरेगा, तभी उसका मातृत्वपद मुझे पुनः प्राप्त होगा।

जीवन का गरल

किसी ने कहा—"मनुष्य बड़ा, वहुत बड़ा हो सकता था; लेकिन उसके दोप ही उसे देवत्व तक पहुंचने से लाचार कर देते हैं। सहज, प्रकृतिसिद्ध अहं पर विजय प्राप्त कर सकना, सत्पुरुषार्थ के एक कण से भी संभव है। किंतु पराक्रम-वैभव के विभूतिमान प्रकोष्ठ को उद्घाटित करने के बदले लोग निंदा और ईर्ष्या की कोठरी में छिद्रान्वेषण और दोष-दर्शन के सहारे अनायास जा पहुंचते हैं। और परिणाम यह होता है कि हम अपना सब कुछ गवां बैठते हैं। दूसरे के दोषों में जिसका दर्शन हमें होता है, वह दूसरे का न होकर हमारे मन का गरल ही तो है—जिसे हम दूसरों पर सर्वदा लादने के असफल प्रयत्न में, मुक्तिकामी की भांति अपने को निष्कलंक प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं।"

श्रोता का चेहरा प्रफुल्लित हो उठा—कमल दलों की तरह।

—दिगंबर झा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुर्दे: शरीर का फिल्टर यंत्र

हर्बर्ट एस० बेंजामिन

हमारी देह में पसलियों के पिंजरे के पिछले भाग में नीचे की ओर, मुट्ठी जितने और आधे पौंड वजन के दो नलिका-रूप हैं। इन नलिकाओं की कुल लंबाई है ४८ मील। यही गुर्दे कहलाते हैं और ये सारे शरीर के तमाम द्रव पदार्थों की बूंद को प्रतिदिन अनेक बार छानते और जांचते हैं।

गुर्दों में २० लाख कोशों के लच्छे और ४ लाख नलिकाएं हैं—प्रत्येक डेढ़-डेढ़ इंच लंबी है। ये हमारी देह के सारे घुलनशील रासायनिक रसायनों का ठीक संतुलन बनाये रखती हैं। यदि देह में किसी रसायन का आधिक्य हो जाये, तो ये लच्छे और नलिकाएं उसे मूत्र के साथ बाहर निकाल देती हैं। यदि किसी रसायन की मात्रा आवश्यकता से कम हो, तो उसे ये मूत्र में बह जाने नहीं देतीं और इस तरह शरीर में फिर उसका संतुलन कायम कर देती हैं।

द्रव-संतुलन का यह आदर्श नुस्खा, जो हमारे गुर्दों ने अपना रखा है, वास्तव में समुद्र ने निकाला था। आज के समुद्र ने नहीं, बल्कि लाखों वर्ष के पहले के समुद्र ने, जब जीवन शुरू ही हुआ था। उस समय ऐसे जीव थे, जिन्हें गुर्दों की जरूरत नहीं थी। कारण, उनके शरीर के अंदर की रासायनिक रचना वैसी ही थी, जैसी कि समुद्र-जल की थी, जिसमें वे रहते थे।

युगों बाद, अब समुद्र बदल गया है और उसी तरह आदमी भी। विकास की अद्भुत प्रक्रियाओं से गुजरते हुए आज मनुष्य स्थल-चर प्राणी बन गया है और यह परिवर्तन संभव हुआ है गुर्दों की बदौलत।

अभी कुछ समय पहले तक यही माना जाता था कि बस शरीर से विषैले पदार्थ बाहर निकालना ही गुर्दों का काम है। अब हमें मालूम है कि शरीर में जीवन के आवश्यक रासायनिक तत्वों में से कोई भी कम या ज्यादा हो जाये, तो जहर पैदा हो सकता है। देह में जरूरत से ज्यादा या कम मात्रा में नमक या पानी का होना, तीव्र विष के समान घातक हो सकता है।

इन रहस्यमय तथ्यों का उद्घाटन कोई मामूली काम नहीं था। लगभग ४० वर्ष पूर्व पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के डा० ए० एन० रिचर्डस ने बड़ी मार्के की खोज की। उन्होंने मेंढ़क को बेसुध करके उसके गुर्दों के लच्छों और नलिकाओं को सूक्ष्म-दर्शक के नीचे रखकर जांचा। बड़ी सावधानी और कठिनाई से उन्होंने इन अवयवों में से बहुत ही थोड़ी मात्रा में कुछ द्रव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकाला । यह चिकित्साशास्त्र के लिए अत्यंत महत्व का-प्रयोग था । इससे गुर्दों के काम के विषय में कई गुप्त भेद खुले ।

ये लच्छे और नलिकाएं वस्तुतः करती क्या हैं ? प्रत्येक लच्छा या नलिका आकार में पिन की नोक जैसी होती है । कोरी आंख से शायद ही दिखाई दे । २० लाख लच्छे मिलकर रोज इतना नमक और पानी स्वच्छ करते हैं कि उसकी मात्रा हमारी देह के वजन से लगभग दस गुना होता है । २० लाख नलिकाएं लगातार लगभग सारी मात्रा को वापस शरीर में भेजती हैं ।

लच्छों से रोज लगभग ७५ गैलन मूत्र स्रवित होता है । किंतु नलिकाएं लगभग ७४।।। गैलन वापस खींच लेती हैं और लगभग पाव गैलन ही मूत्र के रूप में शरीर से बाहर जाता है ।

लाखों नलिकाओं से बूंद-बूंद करके रिसकर निकला यह द्रव गुर्दों से बहकर गुर्दा-श्रोणि (पेल्विस) में आता है । यह एक इंच चौड़ी कीप (फनल) है । नीचे की एक फुट लंबी और चौथाई इंच मोटी मूत्रवाहिनी से होता हुआ यह द्रव मूत्राशय में पहुंचता है, जो नाभि के कई इंच नीचे स्थित है ।

मूत्राशय में हम पाव गैलन जितना मूत्र रोके रख सकते हैं । वैसे, प्याला-भर द्रव वहां इकट्ठा हुआ नहीं कि मूत्राशय की थैली की दीवारों पर दबाव पड़ने लगता है और ऐसा होते ही स्नायु दिमाग को खबर कर देते हैं कि अब पेशाब करना चाहिये ।

जीवन के लिए आवश्यक तत्वों के अतिरिक्त जो तत्व शरीर में पहुंच जाते हैं, उन सबको गुर्दे बाहर निकालते रहते हैं—जैसे विष, औषध या शरीर में बना कोई भी ऐसा पदार्थ, जिसकी शरीर को आवश्यकता न हो । यदि गुर्दे यह काम न करें, तो जिंदगी खतरे में पड़ जाये ।

उदाहरण के लिए, मान लीजिये कि गुर्दा क्षतिग्रस्त होने के कारण देह से पर्याप्त सोडियम बाहर नहीं निकालता । इस अतिरिक्त सोडियम को अतिरिक्त पानी चाहिये, जिसमें वह घुल सके । इसके लिए वह शरीर में अधिक द्रव रोकना शुरू कर देगा और इससे शरीर में सूजन आ जायेगी । इसी प्रकार सोडियम की समुचित मात्रा का अभाव शरीर में ऐंठन पैदा करेगा ।

देह में से बहुत अधिक जल का निकल जाना तेज प्यास, बुखार और मौत का भी कारण बन सकता है । लवणों को जज्ब करके मूत्र के रूप में बाहर करने के लिए शरीर में काफी पानी न हो, तो लवण विष का रूप धारण कर लेंगे ।

गुर्दे की बीमारी में भी यदि गुर्दों के पच्चीस प्रतिशत तंतु भी काम करते हों, तो स्वास्थ्य ठीक रखा जा सकता है । उदाहरण के लिए, पूरा एक गुर्दा निकाल दिये जाने पर भी जीवन सुरक्षित रह जाता है । इस नयी जानकारी से गुर्दे की बीमारियों को रोकने में सहायता मिली है । इसके चार उपाय हैं :

१. अच्छा संतुलित भोजन करें और जल तथा अन्य पेय पदार्थ पर्याप्त मात्रा में लें ।

२. गला अक्सर खराब रहता हो, तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान दें। 'नेफ्राइटिस' अब घट रह
किन अभी भी सबसे भयानक गुर्दा-रोग
ा जाता है। शायद शरीर में बार-बार
टोकोकस जीवाणुओं द्वारा विष उत्पन्न
ो जाने से यह रोग होता है। स्ट्रेप्टो-
कस गले की सूजन के मुख्य कारण हैं।

३. यदि पेशाब सफेदी लिये हुए या मट-
या धूमिल भूरे रंग का आये, लंबे अर्से
चक्कर आते हों, थकान या ज्वर रहता
चेहरा और घुटने सूजे रहें, या छाती से
र नीचे पेडू तक दर्द उठता हो, तो फौरन
क्टर से मिलना चाहिये।

गुर्दे के बारे में लोगों में बहुत गलतफहमियां
। उदाहरणतया, गुर्दों के सामने पेट में
उठने पर भी लोग अक्सर समझ लेते
कि उन्हें गुर्दे की बीमारी है; जबकि गुर्दे
बीमारी में ऐसा शायद ही कभी होता
है। पेशाब बार-बार आना, या कम मात्रा
में आना भी गुर्दा रोग का लक्षण नहीं है।

हाल की जांचों से एक तथ्य और सामने
आया है। गुर्दे शरीर की अतिरिक्त रासा-
यनिक व्यवस्था के सर्वोच्च नियंत्रक तो हैं
ही; साथ ही शरीर के संपूर्ण 'एरिथ्रो-
पोएटिन' का भी वे उत्पादन करते हैं।
एरिथ्रोपोएटिन रक्त के लाल घटकों के
निर्माण के लिए निहायत जरूरी है।

गुर्दे मनुष्य के प्रजनन में भी बड़ा हाथ
बंटाते हैं। पूर्ण होने के प्रयास में भ्रूण एक
के बाद गुर्दा बनाता जाता है। इस प्रकार
गर्भ से बाहर आने से पूर्व हम दो जोड़े गुर्दों
का पूरा उपयोग कर चुके होते हैं। अब ये
मूत्र-उत्पादन तो बंद कर देते हैं; पर बेकार
नहीं हो जाते। इनकी अधिकांश कोशिकाएं
जननेंद्रियों के निर्माण में काम आती हैं। *

पुस्तक-संक्षेप विशेषांक

नवनीत का अगस्त, १९६५ का अंक नये ढंग का होगा। एक ही रुपया देकर आप इसमें एक साथ चार पुस्तकों का संक्षेप पढ़ सकेंगे। और पुस्तकें हैं :

१. **टोब्या** : इथियोपिया का एक मार्मिक उपन्यास;

२. **संजीवनी और नश्तर** : रूसी गृह-युद्ध की एक विकट घटना के कारण, प्राणहारी सैनिक पेशा छोड़कर प्राणदाता सर्जन बननेवाले एक युवक की संघर्ष-भरी आत्मकथा;

३. **बाहुबलि** : प्राचीन कन्नड जैन महाकाव्य 'भरतेश-वैभव' के आधार पर भगवान गोम्मटेश्वर का आख्यान;

४. **अफ्रीकी घाटी** : वन्य पशुओं के जीवन की भावपूर्ण झांकियां।

इनके अलावा, पर्ल बक की एक सुंदर कहानी भी होगी और नवनीत के अन्य सभी स्थायी स्तंभ भी रहेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस्लामी कला सौंदर्य और सीमाएं

कला-परंपराओं के उद्गम को ढूंढना चैतन्य का मूलबीज खोजने जैसा है। दोनों का अवसान रहस्यानुभूति में होता है। किंतु इस्लामी कला के मिस्री विशेषज्ञ अहमद मम्दूह हम्दी का यह विश्लेषणात्मक लेख वैज्ञानिक कला-मीमांसा का अच्छा निदर्शन है।

जीवंत वस्तुओं के चित्र अंकित करना इस्लाम में अनुचित समझा गया है। यों कुरान में इस प्रकार का कोई स्पष्ट निषेध नहीं मिलता; किंतु कहा जाता है कि पैगंबर साहब ने अपने उपदेशों में इसकी मनाही की थी। जो भी हो, यह निषेध इस्लाम के मूल सिद्धांतों का अंग नहीं है; बल्कि इसके मूल में यह आशंका रही है कि मूर्तियां और चित्र कहीं अरबों को फिर उसी मूर्तिपूजा में न फंसा दें, जिसे उन्होंने अभी - अभी त्यागा था और जिसे वे इस्लाम अंगीकार करने के पहले तक अच्छी चीज समझते थे।

इब्राहीम आदिलशाह
[दक्खनी कलम की एक शबीह]

वैसे सभी मुसलमान चित्रकला से द्वेष नहीं करते थे, फिर भी इस्लामी कला जिस वातावरण में पनपी और विकसित हुई और जो कलाशैलियां उसे विरासत में मिली थीं, उनके प्रभाव से उसमें मूर्तिकला और पोर्ट्रेट-कला का विकास हो नहीं पाया।

इस्लामी कला मुख्यतः सजावटी कला बन गयी। उसमें दीवारों, पुस्तकों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं को सजाने के लिए ज्यामितिक बेल-बूटों और मनुष्यों व पशु-पक्षियों की अत्यंत सांकेतिक आकृतियों का अंकन किया जाने लगा। यों भी सेमेटिक जातियों में मूर्तिकला या चित्रांकन की विशेष प्रतिभा नहीं थी। वे यह भी मानती थीं कि पोर्ट्रेटों में जादुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्ति होती है।

चाहे शिया हो या सुन्नी, इस्लाम की सभी शाखाओं में चित्रांकन और मूर्तिकला को बुरा माना गया है। लेकिन जीवंत वस्तुओं की प्रतिकृतियां या तस्वीरें बनाने के इस निषेध का सब मुसलमानों ने सब जगह पालन किया हो, ऐसी बात नहीं। गैरसेमेटिक इस्लामी देशों ने बहुधा इसका उल्लंघन किया; और उन देशों ने भी, जिनकी अपनी पुष्ट कला-परंपराएं थीं, जिन्हें वे अरबों की तरह आसानी से तिलांजलि नहीं दे सकते थे। यही कारण है कि ईरान, भारत और तुर्की में मिनिएचर चित्रकला पनपी। ईरान के मुसलमानी बरतनों पर और फातिमी शैली की रचनाओं में मनुष्यों व पशुओं की आकृतियों के पाये जाने का यही कारण है।

और इसमें शिया धर्म-सिद्धांतों का कोई हाथ नहीं था। अय्यूबी खलीफा पक्के सुन्नी थे; लेकिन बाइबल के सजावटी चित्रों से युक्त धातु की कलाकृतियों में उनकी बड़ी दिलचस्पी थी। भारत, तुर्की और ग्रनाडा के शासक भी सुन्नी थे। और ईरान ने भी शिया धर्म को राजधर्म १६ वीं सदी में ही स्वीकार किया।

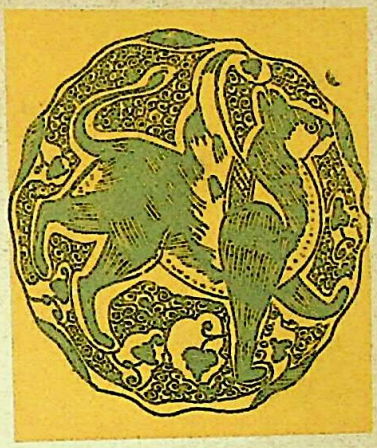

काल्पनिक पशु के चित्र से युक्त तश्तरी
[निर्माणकाल ११ वीं सदी, देश मिस्र]

फिर भी जीवंत वस्तुओं के निरूपण की इस मनाही का इस्लामी कला पर बड़ा ही गहरा असर पड़ा, जिसके परिणामों पर हम नीचे विचार करेंगे।

१. इससे मुसलमान कलाकारों ने प्राकृतिक वस्तुओं का अनुकरण छोड़कर अनूठी सजावटी आकृतियों का विकास किया। इसमें उन्हें इस कदर सफलता मिली कि ये आकृतियां उनकी कला का विशेष लक्षण बन गयीं, जैसा कि 'अरावेस्क' शब्द स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है।

अराबेस्क शैली का एक सुंदर पैनल

२. यह परिपाटी बन गयी कि मस्जिदों, उनके फर्नीचर तथा मुस्लिम धर्मग्रंथों की सजावट में जीवंत वस्तुओं की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६ वीं सदी के एक ईरानी चित्र की अनुकृति

आकृतियां उपयोग न की जायें। यही कारण है कि ईसाई धर्म की तरह इस्लाम में अपने प्रवर्तकों के चरित्र, धर्म-सिद्धांतों व इतिहास का निरूपण करनेवाली तस्वीरें और मूर्तियां नहीं पायी जातीं।

३. इस्लामी कला में मूर्तिकारों की प्रतिभा प्रकट नहीं हुई, शरीर व चेहरे की पूरी बारीकियों का निरूपण करनेवाली मूर्तियों के निर्माण के प्रति एकदम उपेक्षा बरती गयी और कलाकारों का सारा ध्यान वास्तुशिल्प में तथा दीवारों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं को विविध कलात्मक डिजाइनों से सजाने में केंद्रित रहा।

४. भारत, ईरान और तुर्की में जो मिनिएचर चित्रकला पनपी, उसमें भी धार्मिक विषयों को कतई नहीं छुआ गया। बेशक कुछ साहसी कलाकारों ने इस्लामी इतिहास और पैगंबर साहब के जीवन की कुछ घटनाओं को अंकित किया। लेकिन ऐसे चित्रों की संख्या बहुत कम थी और नैष्ठिक मुसलमान इन्हें बुरा समझते थे।

५. कातिबों की बड़ी कद्र की जाती थी; क्योंकि वे बड़े सुंदर अक्षरों में कुरान की नकलें तैयार करते थे और उनकी कला को धार्मिक लोग बुरा नहीं समझते थे। कातिबों की कला की इतनी मांग थी कि जो एक समूची किताब नहीं खरीद सकते थे, वे किसी नामी कातिब का लिखा हुआ एक-आध पन्ना ही प्राप्त कर लेते और बहुत गर्व से अपने पास रखते थे। इन पन्नों पर या तो कुरान शरीफ की आयतें होती थीं, या कोई मशहूर कविता।

६. बहुत थोड़े ही मुसलमान कलाकार मनुष्य या पशु-पक्षियों की आकृतियों के चित्रण में सिद्धहस्त और प्रसिद्ध हो पाये; क्योंकि प्रकृति का यथावत् अनुकरण उनका उद्देश्य नहीं था। उनके अपने ही खास 'मोटिफ' थे। ईरान के चंद बड़े चित्रकारों को छोड़ दें, तो हम पायेंगे कि मानव-शरीर की गठन, संतुलित अनुपात और हृदय के भावों को अभिव्यक्त करनेवाली मुखमुद्राओं पर ध्यान लगभग दिया ही नहीं गया। नग्न आकृतियों से तो इस्लामी चित्रकला जैसे अपरिचित ही रही। परिप्रेक्ष्य (पर्स्पेक्टिव) के बुनियादी नियमों की भी उपेक्षा की गयी। ईरानी मिनिएचर चित्र अपनी एकरूपता, सपाट चपटेंपन, प्रकाश व छाया के अभाव और भावशून्य मुखभंगिमा के कारण नीरस प्रतीत होते हैं। बेशक उनका अपना सौंदर्य और आकर्षण है। लेकिन कह सकते हैं कि यहां भी सजावटी तत्व की ही प्रधानता है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ के प्रदीप

डैग हैमरशोल्ड

अगला पग धरने से पहले कभी आंखें नीची करके जमीन को मत परखो। जो सदा दूर क्षितिज पर आंखें गड़ाये रहते हैं, केवल उन्हीं को सही राह मिलती है।

जीवन उसी को आत्मसमर्पण करता है, जो उसे जीत ले। हार मान लेने से जो मिले, वह चीज स्वीकार मत करो। ऐसा करोगे, तो चोरी के माल पर पलने लगोगे और तुम्हारी मांसपेशियां निष्क्रिय हो मर जायेंगी।

जब तक पर्वत की चोटी को छू न लो, उसकी ऊंचाई मत नापो। तब तुम देखोगे कि वह कितनी नीची थी।

०००

यह नहीं हो सकता कि तुम अपनी पाशविक प्रवृत्तियों से खेलते भी रहो और पूरे मुनि बन जाओ; झूठ से खिलवाड़ भी करो और सत्य का अधिकार न खो बैठो; क्रूरता को खुलकर खेलने भी दो और अपने मन की सुकुमारता न गंवा दो। जिसे अपना बाग साफ-सुथरा रखना हो, वह घास-फूस के लिए अलग क्यारियां सुरक्षित नहीं रखता।

०००

स्वतंत्र और जिम्मेदार होकर जियें, बस इसी के लिए तो मनुष्य का निर्माण हुआ है। जो इस एकमात्र मार्ग को चुनने से चूकेगा, हमेशा के लिए राह भटक जायेगा।

०००

मौत के वात्याचक्र से एकाकीपन की छटपटाहट सर्द हवा के झोंके लाती रहेगी। सिर्फ वही चीज तुम्हारी रह जायेगी, जो दूसरों की है; क्योंकि किसी दिन जब तुम्हारी जिंदगी अशेष हो जायेगी, केवल वही चीज डूबने से बचायी जा सकेगी, जो तुमने दूसरों को दे दी है।

०००

अपने भाग्य का चौखटा चुनने की छूट हमें नहीं है। लेकिन उस चौखटे में क्या भरें, यह हमारे हाथ में है। जो साहसिक अनुभव (एड्वेंचर) चाहता है, अपने साहस की मात्रा के अनुसार वैसा अनुभव पायेगा; जो बलिदान होना चाहता है, अपने हृदय की शुद्धता के अनुसार बलिदान किया जायेगा।

०००

जब अवचेतन की विरोधी धाराएं टकरा-कर जबर्दस्त भवरें पैदा कर दें, तब भी जल को एक धारा में प्रवाहित किया जा सकता है, बशर्ते हृदय के स्लूस-द्वार प्रार्थना की नहर में खोल दिये जायें, और नहर पर्याप्त गहरी खोदी गयी हो। ['मार्किंग्स' से]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समुद्र के गर्भ में नया जागलोक

कमांडर जाक कोस्तू और उनके साथियों के साहसिक अनुभव ।

हम सब जानते हैं कि समुद्र की दुनिया जमीन से तीन गुना बड़ी है । इन्सानी आबादी जिस तेजी से बढ़ रही है, उससे अनुमान हो सकता है कि एक दिन ऐसा आयेगा, जब हम जमीन की सतह पर रहने के बजाय, समुद्र में रहने पर मजबूर हो जायेंगे ।

हाल ही में लाल सागर के तटवर्ती सूडान के बंदरगाह के पास एक ऐसी बस्ती कायम की गयी है, जो समुद्र के अंदर है । इसका उद्देश्य कोई नगर बसाना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक खोज करना है । लेकिन इस अनुभव के बाद, कभी यह भी संभव हो सकेगा कि समुद्र के नीचे बस्ती भी बसायी जा सके । नीचे हम ऐसे व्यक्ति के अनुभवों की कहानी दे रहे हैं, जो इस बस्ती में एक महीने तक रहा है । सुनिये :

"हम समुद्र की सतह से ३० फुट नीचे एक सुंदर और बड़े ही विश्रामप्रद मकान में हैं । इस मकान में तीन कमरे हैं । साथ में एक स्नान-घर, एक प्रयोगशाला भी है । हमारी इस छोटी-सी बस्ती का दूसरा मकान ३६ फुट नीचे है । इसकी चिमनी से निकलते हुए बादल हमारे पास से बुलबुलों की सूरत में गुजरते हैं । तीसरा मकान सबसे नीचे है और मछलीघर के नाम से मशहूर है । इसके गिर्द हजारों की संख्या में मछलियां हर वक्त मौजूद रहती हैं ।

"मकान चारों तरफ से बंद है । अंदर आने के लिए एक दरवाजा है । मकान के अंदर मानव-निर्मित हवा का दबाव इस कदर ज्यादा है कि दरवाजा खोलने पर भी पानी अंदर नहीं आ सकता । सांस लेने के लिए अलग-अलग गैसों के बक्स तैयार किये गये हैं । जैसे ही हमें घुटन महसूस होने लगती है, वैसे ही कमरे से पुरानी हवा निकाल दी जाती है और नयी हवा बना ली जाती है ।

"प्रयोगशाला में जुदा-जुदा सिलिंडर भरे हुए हैं । एक वैज्ञानिक हर समय मौजूद रहता है, वायु का दबाव मालूम करता रहता है । दीवारों में शीशे की खिड़कियां लगी हैं, इस तरह से हम मजे से अपनी कुर्सियों पर बैठकर समुद्र में उछलती-कूदती मछलियों का नजारा देख सकते हैं ।

"एक मकान से दूसरे मकान तक पहुंचने के लिए गलियां बनी हुई हैं, जिनके दोनों तरफ लोहे के जंगले लगे हैं, ताकि शार्क मछली के हमलों से बचाव हो सके ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर निकलते वक्त हम गोताखोरी का
बास पहन लेते हैं। कमर पर हवा का
लिंडर बांध लेते हैं और हाथों में टार्च
कर पानी में तैर पड़ते हैं। जंगले की
द से दूसरे मकान तक पहुंचने में आसानी
ती है। अगर टार्च गिर जाये, तो हम एक
ल दबाकर अपने माथे पर लगा हुआ
ब जला लेते हैं।

"इन मकानों की तैयारी के लिए हमें
ई माह तक दिन-रात काम करना पड़ा।
से पहले दिन एल्डो नाम का जहाज
मुद्र में लंगर डालकर खड़ा किया गया। फिर
कानों को पानी में उतारा गया। गोता-
रों ने हाथ में कुल्हाड़े, हथौड़े और दूसरे
जार लेकर गलियां बनायीं। जब मका-
न मुकम्मिल हो गये, तो बिजली और
वन के सिलसिले जहाज से मिलाये गये।
स दौरान कई छोटी-मोटी दुर्घटनाएं भी
ो गयीं; लेकिन ईश्वर को धन्यवाद है कि
सी की जान नहीं गयी।

"समुद्र के नीचे मकान बनाना बहुत
ठिन काम था; लेकिन
म बहुत धीरज और हिम्मत
े डटे रहे। तीसरे मास के
तिम सप्ताह में सब काम
रा हो गया। और जब सब
कान पूरे हो गये, तो हम
रूरी सामान समेत दुनिया
ी इस पहली समुद्री बस्ती
ें आबाद होने के लिए पानी
ें उतर पड़े।

"हमारा असली उद्देश्य समुद्र की तह में रहनेवाले जीव-जंतुओं के जीवन-संबंधी रहस्यों की खोज करना है। इसीलिए अब तक हमने अनगिनत छोटी-बड़ी मछलियां पकड़ी हैं। जंतुओं के अलावा हम समुद्र में पैदा होनेवाली चीजें भी जमा करते जाते हैं।

"कई बार इन डरावने कामों में हमें खतरे का सामना भी करना पड़ा है। एक बार मैं अपने दोस्त हैरी के साथ समुद्र की तह में उतरा। कुछ देर तक हम पथरीली जमीन पर चलते रहे। फिर जंगल शुरू हो गया—ऐसा जंगल, जो कम-से-कम तीन मील क्षेत्र में फैला था। जंगल में दाखिल होते वक्त हमें डर महसूस हुआ कि कहीं कोई खतरनाक समुद्री जानवर न छिपा हुआ हो। लेकिन जी कड़ा करके हम झाड़ियों और छोटी-छोटी बेलों को एक तरफ हटाते हुए अंदर घुस गये।

"अभी कोई दस कदम चले होंगे कि हैरी जमीन पर गिर पड़ा। उसे उठाया, तो मालूम पड़ा कि सिलिंडर में गैस खत्म

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होनेवाली है। दो मिनिट तक अगर कुछ न हो सका, तो वह मर जायेगा। डर से मेरे हाथ-पांव फूल गये। हम इस वक्त अपने समुद्री मकान से कोई एक फर्लांग पर होंगे। वहां तक पहुंचना नामुमकिन था।

"मैंने जल्दी से अपनी कमर से लटकते हुए थैले को टटोला। खुशकिस्मती से मैं गैस का एक फालतू सिलिंडर ले आया था। फौरन उसे कमर से उतारा और हैरी के गले में डाल दिया। उसकी नली खोलकर हैरी के सिलिंडर में दाखिल कर दी। जैसे-तैसे करके हम मकान तक पहुंचे। बाद में हमें पता चला कि उसके सिलिंडर में कोई खराबी आ गयी थी।

"हमारे चारों तरफ गहरा पानी है। छोटी-छोटी रंगीन मछलियां बार-बार शीशे के अंदर आकर झांकने की कोशिश करती हैं। एक मकान से दूसरे मकान तक जाते हुए गोताखोर दिखाई देते हैं, जिनकी देह के हर अंग से रोशनी छूट रही होती है।

"एक रोज बड़ी दिलचस्प घटना घटी। मैंने मांस का एक टुकड़ा शीशे के करीब लटका दिया। मछलियां बार-बार आतीं, उस पर झपटतीं और टकराकर वापस हो जातीं। एक पीले रंग की मछली तो पूरे आधे घंटे तक उसे हासिल करने की कोशिश करती रही।

"हमारे पास हाकनर नाम का एक खानसामा था। पिछले हफ्ते वह ऊपर चला गया। जब तक वह यहां रहा, बड़े दिलचस्प किस्से होते रहे। सारा दिन वह शीशे के करीब कुर्सी डाले लेटा रहता था। सुबह से शाम तक उसके पास मछलियों का मजमा लगा रहता। पर ज्यों ही हम में से कोई पास जाता, मछलियां शरमाकर भाग जातीं।

"गहरे पानी में इतनी छोटी मछलियां होती हैं कि उन्हें आसानी से देखा भी नहीं जा सकता—सिर्फ महसूस किया जाता है। ज्यों ही इन्सान उनके घेरे में फंस जाता है, वे पूरी ताकत से उसे काटती हैं।

"कभी-कभी शार्क भी हम पर हमला कर देती है। पिछले सप्ताह ३६ साल के एक गोताखोर जिम पास्टन को एक शार्क से मुकाबला करना पड़ा। हुआ यह कि वह खाने के सामान से भरी हुई बाल्टी उठाये तैरता हुआ जंगले के अंदर आ रहा था। एक जगह जंगला टूट गया था। एक शार्क अंदर आ गयी और उसने वहां से गुजरते हुए जिम पर हमला कर दिया। जिम ने तेज़ी से एक तरफ होकर खाने की पूरी बाल्टी शार्क के मुंह में धकेल दी। शार्क तिलमिलाकर पीछे हटी। इस बीच जिम दरवाजे तक पहुंच चुका था। शार्क ने पलटकर दुबारा हमला किया।

"लेकिन जिम की किस्मत अच्छी थी। उसने फुर्ती से दरवाजा खोल दिया। शार्क दरवाजे के तख्ते से टकरायी और नीचे की तरफ लुढ़क गयी। जिम ने एक मिनिट की देर किये बिना छलांग लगा दी और दरवाजा मजबूती से बंद कर दिया। दो-एक दफा शार्क ने दरवाजे को धकेला; लेकिन उसे तोड़ने में कामयाब न हो सकी। आखिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वश होकर लौट गयी।

खूंख्वार समुद्री जानवरों और मछ-यों से बचने के लिए हमने एक नया का निकाला है। चार-पांच गोताखोर सभी एक बहुत बड़े खोल में घुस जाते हैं समुद्र की गहराइयों में बेखटके तैरते मछलियां और दूसरे समुद्री जानवर अजीब चीज से डरते हैं और इसे ने ही दूर भाग जाते हैं।

कई दफा समुद्र में तूफान आता है। एक घटना हमारे साथ पिछले हफ्ते । हम सब दिन-भर की मेहनत के बाद के वक्त बड़े कमरे में कुर्सियां डाले खेल रहे थे कि अचानक कमरे की खिड़कियों पर आहट होने लगी। हम वक रह गये। आखिर समुद्र की तह में मिलनेवाला कौन हो सकता है?

"उठकर देखा, तो समुद्र का पानी बुरी खोल रहा था। ऐसा महसूस होता जैसे अभी-अभी वह उमड़ता और शोर ाता हुआ हमें निगल लेगा। थोड़ी देर में ने देखा कि लगभग ३० फुट लम्बी शार्क बेबस और मजबूर हालत में तड़प रही है। वह बार-बार इस समुद्र की भयंकर भंवर से निकलने की कोशिश करती थी; लेकिन नाकाम हो जाती थी। हमारे देखते-ही-देखते वह बेजान होकर पानी में तैरने लगी।

"ठीक इस समय जहाज से जैक्सन नाम का गोताखोर खाने की बाल्टी ला रहा था। शार्क को पानी पर तैरता देखकर वह उस ओर बढ़ा; लेकिन तिलमिलाकर पीछे हट गया। बाद में उसने बताया कि उस जगह पानी इतना गरम था कि उसमें किसी जानवर का रहना नामुमकिन था। दूसरे रोज हमें मालूम हुआ कि समुद्र के इस स्थल पर गरम पानी की भंवर मौजूद थी। गरम पानी की इस भंवर ने सैकड़ों मछलियों को खत्म कर दिया। अगले कई दिन तक मछलियों की लाशों का ढेर लग गया।

हमें यहां आये हुए एक माह गुजर चुका है। अब तक हमारा स्वास्थ्य अच्छा है। यह बात हमारे लिए सौभाग्य की है कि हम समुद्र की तह में बननेवाले प्रथम नगर के नागरिक हैं।"

★

एक अति सुंदर घड़ा था; बड़ा सुडौल और नाना रंगों व आकृतियों से चित्रित। स्वच्छ आंगन में सुवासित जल से सुपूर्ण वह भव्य आसन पर आसीन रहता था।

संयोगवश एक दिन घड़ा फूट गया। निर्मल सुवासित जल आंगन में बिखर गया। उसके शोकमग्न टुकड़े भूमि पर लोट-लोट कर बिलखने लगे—"निष्ठुर दैव, तुमने क्या किया?.....अब हम कहां मिलेंगे?"

उनका करुण संताप स्नेहमयी धरती माता से नहीं देखा गया। उसका मातृ-हृदय पिघल पड़ा। वह बोली—"मेरे बच्चो, चाहे तुम पके घड़े के टुकड़े हो; परंतु अपने अणु-अणु से मुझ में मिल जाओ, तुम अनंतता को प्राप्त होओगे और तुम्हारे दुःख-संताप का निश्चय ही सदा के लिए अंत हो जायेगा।"

—विष्णुदत्त पुरोहित ★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोस्ती का द्वार खुला रखें

सुमित्रा श्रीवास्तव

कुछ ही दिन पहले की बात है। मैं और मेरे पति कुछ खाने-पीने के खयाल से एक स्थानीय रेस्तरां में पहुंचे। रात काफी हो गयी थी, अतः भीतर इक्के-दुक्के ग्राहक ही थे। हम बैठे ही थे कि एक कोने में बैठे हुए दंपति पर हमारी नजर गयी। पिछले किसी अवसर पर हमारी उनसे मुलाकात हुई थी; पर तब से फिर हमारी भेंट नहीं हुई थी। उन्होंने भी हमें पहचान लिया और हम चारों में परिचय की मुस्कान का आदान-प्रदान हुआ।

मेरे पति ने कहा कि हमें उनमें शामिल हो जाना चाहिये। पहले पहल तो मैं राजी हो गयी; लेकिन फिर मुझे कुछ संकोच हुआ और मैंने कहा—"शायद वे अकेले बैठना चाहते हों।"

और यह सोचकर हम अपनी ही मेज पर बने रहे।

पर जाने क्यों मुझसे रहा न गया और मैं उठी, उनकी मेज के पास पहुंची और झिझकते हुए कहा—"क्या आप हमारे साथ शामिल होना पसंद करेंगे? या फिलहाल अकेले बैठना चाहते हैं?"

"आइये न?" उन दोनों ने निमंत्रण दिया—"कृपया आप लोग हमारे साथ आ जाइये। हम लोग आपस में यही बहस कर रहे थे कि हम आपको बुलायें या नहीं; पर कुछ तय नहीं कर पा रहे थे—इसलिए कि शायद आप लोग अकेले बैठना चाहते हों।"

कहने की जरूरत नहीं कि हम चारों ने शामिल होकर खाया-पिया और इसमें हम सबका आनंद इसलिए और भी बढ़ गया कि हमें एक दूसरे का साथ मिल गया था।

इस सुखद अनुभव ने मुझे यह सोचने को विवश किया कि अपने गत जीवन में कितने अवसरों पर, संकोच के कारण या यह सोचकर कि कहीं मैं औरों के कार्यक्रम में खलल न डालूं, आत्मीयता के पौधे को सींचने से मुंह मोड़े रही थी। इस तरह कितनी ही बार मैंने दोस्ती के द्वार बंद कर लिये थे।

अक्सर ऐसा होता है कि हम इस असमंजस में पड़े रहते हैं कि पहले कौन बोले, और इस तरह मित्रता में पहल करने से अपने आपको रोके रखते हैं। क्या इससे हम दूसरे के सामने कठिनाई खड़ी नहीं कर देते? संभव है, वह भी उसी तरह झिझक रहा हो, जिस तरह हम। शायद वह निश्चय न कर पा रहा हो कि पहल करने पर उसे आपसे आत्मीयता मिलेगी कि नहीं।

जब मैं बच्ची थी, बड़ी ही उत्सुक रहती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि मेरी सहेलियों में से कोई मेरे घर का खटखटाये और इस तरह जब कोई बिना आ जाती और कहती कि मैं इधर जर रही थी, अचानक मन में आया कि मिलती जाऊं, तो मुझे बेहद खुशी थी। उनके साथ मेरा समय बड़े ही सुख बीतता था।

आजकल वह सब सपना हो गया है। बिना बुलाये अपने मित्रों से मिलने नहीं । जायेंगे, तो कम-से-कम पहले फोन लें, मानो मित्रों से मिलने के लिए भी ज्ञा की जरूरत हो।

यदि आपके यहां भी मित्र बिना बुलाये अनपेक्षित आ जाते हैं, तो आप पर की क्या प्रतिक्रिया होती है ? क्या इससे को ऐसा लगता है कि उन्होंने आपका ी कार्यक्रम चौपट कर दिया ? क्या वे को सूचना देकर, या कहिये, सावधान के आते, जिससे कि अगर मैली कमीज ने बैठे हों, तो उनके ने से पहले बदल , या अपने अस्त-स्त कमरे को सजा-ार लेते ? क्या में आपकी पोल खुल ी कि आप घर में रहते हैं ? मित्रों सामने आप अच्छी ह दाढ़ी बनाकर सज-संवरकर ही

उपस्थित होते थे, आज उन्होंने अचानक घर आकर आपका 'बेढंगापन' देख लिया ?

कहा जाता है कि आज हम अलगाव की जिंदगी जी रहे हैं। रेडियो और टेलिविजन के आगमन से हमें अपने घर में ही विविध मनोरंजन के साधन मिल गये हैं। दुनिया अब एकाकी श्रोताओं और एकाकी दर्शकों का संसार बन गयी है। लेकिन इससे क्या अब आदमी को आदमी की जरूरत ही नहीं रह गयी ?

कहा जाता है कि यदि जो कुछ हमें देखने और सुनने को मिलता है, हमें वह पसंद न हो, तो नगर बदल लेना चाहिये। अपनी और दूसरों की भावनाओं को क्या ताक पर रख दिया जाना चाहिये ? क्या दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने और अपने दृष्टि-कोण को बदलने और संवारने की इस दुनिया में कोई गुंजाइश नहीं रह गयी ?

यह सही है कि इस जगत में वस्तुओं की विविधता है और उनकी बहुलता के कारण हम राजसी ठाठ से रह सकते हैं। फिर भी नाना पदार्थोंवाली इस दुनिया में आदमी अकेला है, वह दूसरों से कटा-कटा, अलगाव में जी रहा है। लोग, जिनके व्यक्तित्व में विविधता है; लोग,

दोस्ती के चंदोवे के नीचे
चित्रकार : के० एम० शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिनमें अपने-अपने गुण हैं; लोग, जो मानवीय गुणों से संपन्न हैं, अपनी और दूसरों की जिंदगी को बेहतर और खुशहाल बना सकते हैं—मगर हालत यह है कि वे एक-दूसरे से मुंह चुराते हैं। अपने-अपने कार्य-व्यापारों में व्यस्त होने के बहाने उन्हें किसी दूसरे से मिलने-जुलने की फुरसत ही नहीं है।

बेशक इस अलगाव के और भी कारण हैं। उच्चतर आर्थिक स्तरवाली दुनिया में हम एक-दूसरे पर बहुत कम निर्भर होते हैं; हमें अपनी-अपनी योग्यताओं पर कहीं अधिक निर्भर रहना पड़ता है। कभी वह जमाना था कि एक-दूसरे की मदद के बिना काम ही नहीं चलता था—कम-से-कम जिंदगी की जरूरतें तो मिल-जुलकर ही जुटायी जाती थीं। पर अब स्थिति बदल गयी है। गृहिणियां अब पहले की भांति अपनी पड़ोसिनों की सहायता से पापड़, बड़ियां आदि नहीं बनातीं। अब जो कुछ चाहिये, बाजार में मिल जाता है। मर्द अब मिलकर शिकार के लिए नहीं निकलते, मांस दुकान पर मिल जाता है।

एक जमाना वह भी था, जब घर में कोई बीमार हो जाता, तो तमाम पड़ोसी मदद को दौड़ते थे। किसी एक के घर में हुई मृत्यु मुहल्ले या गांव-भर को शोकाकुल कर देती थी। जाति के तमाम लोग जुट जाते थे और बिना लजाये शोक प्रकट करते और शोक-संतप्त परिवार को ढाढ़स बंधाते थे। आज वह सब पहले - जैसा कहां? तार, चिट्ठी या फोन से शोक प्रकट कर दिया या स्वयं जाकर औपचारिकता निभा आये, बस छुट्टी।

और यह है भी कितना आसान। इसमें आता-जाता भी क्या है? न हमें दुःखी लोगों को देखना पड़ता है, न हमारा हृदय विह्वल या आलोड़ित होता है कि उसमें सहानुभूति-भरे वाक्य निकलें।

हम लोग अपनी निजी दुनिया में बुरी तरह कैद हैं। जब हम अपने साथियों के सुख-दुःख में भाग नहीं लेते, तो हमें यह कैसे महसूस हो सकता है कि हम एक हैं, सारा मानव-समाज एक है?

दादी से एक कहानी सुनी थी। बहुत पुरानी बात है। एक आदमी लंबी सुनसान सड़क पर यात्रा कर रहा था। मीलों लंबा सफर करके वह थककर चूर हो चुका था। उसने देखा, सामने से कोई अजनबी पास आता जा रहा है। वह सोचने लगा, कौन होगा वह? हो, न हो, वह लुटेरा है। मुझे पीट-पीटकर मार डालेगा और मेरा सब कुछ लूट ले जायेगा। इस खयाल से वह बहुत घबरा गया और छिपने की जगह तलाश करने लगा। उसने यह भी कोशिश की कि उसे कोई ऐसी चीज मिल जाये, जिसे वह हथियार के रूप में इस्तेमाल करके अपनी रक्षा कर सके।

उधर अजनबी पर भी इसी तरह की चिंता सवार थी। वह भी यही सोच रहा था कि उसके सामने से पास आते हुए उस आदमी का इरादा क्या हो सकता है? जैसे-जैसे दोनों निकट आते गये, उनका भय बढ़ता गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब दोनों कुछ ही फुट के फासले पर थे। अचानक वे दोनों एक दूसरे को पहचानकर ख़ुशी से चिल्लाये। दौड़कर एक-दूसरे से लिपट गये और दोनों के मुंह से निकला—"अरे वाह, यह तो तुम हो।"

मुझे और मेरे पति को एक बार बम्बई जाना पड़ा। हम वहां पहली बार गये थे, इसलिए के लिए बिलकुल अजनबी थे और हमें कुछ महीने वहां गुजारने थे। पतिदेव को अस्पताल में भरती होकर आपरेशन कराना था। मुझे वहां हर क्षण एकांत और भयावह लगने लगा। सब ओर अपरिचित लोग थे, सूरतें अनजानी थीं।

उस समय मुझे दो बातें याद आयीं। पहली तो वही, अपना रेस्तरांवाला अनुभव; दूसरी यह दो यात्रियों की कहानी।

बस, हम ज्यादा दिन अजनबी नहीं रहे। अस्पताल में हमारे परिचित बढ़ने लगे। वहां अधिकांश आगंतुक अजनबी थे, हर एक को आपस में प्यार-परिचय की वैसी ही जरूरत थी, जैसे कि हमें।

एक सुंदर महिला से मैंने सबसे पहले परिचय किया। हम अपने चिंतातुर घंटे एक-दूसरे के साथ बातों में आराम से गुजार सकते थे—उसका पति भी आपरेशन के लिए आया था। मेरी इस मित्र ने खूब सारी यात्राएं की थीं और भारत की कई भाषाएं जानती थीं।

वेटिंग-रूम में मैंने एक वृद्धा देखी, वे चुपचाप अकेली बैठी रहती थीं। मैंने एक दिन उनसे बात की। वे मुस्करायीं; पर बोली कुछ नहीं। पता चला कि वे मेरी भाषा नहीं समझती थीं। दूसरे दिन मैंने अपनी बहु-भाषी मित्र को उनसे मिलाया और जब वह उनसे उनकी भाषा में बात करने लगी, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उस दिन के बाद हम तीनों का वक्त बड़े ही मजे से गुजरने लगा।

हम एक बड़ी दुनिया में रहते हैं। भले ही लोग यह कहें कि यातायात और संचार के आधुनिक साधनों के कारण दुनिया सिकुड़कर छोटी होती जा रही है, हम अब भी बड़ी दुनिया में रहते हैं। ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। कुछ बातें हम जानते हैं, तो कुछ बातें दूसरे लोग। जब तक हम उनसे नहीं मिलेंगे, और उस पुराने जमाने के तरीके से नहीं मिलेंगे, जिसमें परस्पर आत्मीयता का गहरा नाता जुड़ जाता था, हम कई मानो में अधूरे और टूटे-टूटे से रहेंगे।

मनुष्य-मनुष्य के बीच विभिन्नताएं उतनी नहीं हैं, जितनी समानताएं हैं। भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक अंतर के बावजूद हमारे भय, इच्छाएं और मित्रता की चाह—सब एक-से हैं।

अतः हम उन दो अजनबी यात्रियों की तरह न हो जायें कि एक-दूसरे से डरें और शक की निगाह से देखें। हमें तो उस सुखद क्षण की स्थिति में रहना चाहिये, जबकि उन दोनों ने जैसे ही एक-दूसरे को देखा था, हर्ष के साथ गले लगा लिया था और कहा था—"भई वाह, यह तो तुम हो।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि-पुंगव बेंद्रे

जिनके गीत कन्नड-भूमि के हलवाहे से लेकर प्रगल्भ प्राध्यापकों तक सबके कंठों में बसे हुए हैं।

एच० वी० रामचंद्र राव

सन १९०९ में नरगुंद (जिला गुलबर्गा) की राष्ट्रीय शिक्षणशाला की पांचवीं कक्षा में एक विद्यार्थी पढ़ा करता था। वह संस्कृत में धड़ल्ले से बातचीत कर सकता था; लार्ड मैकाले का काव्य 'होरेशियस' और शेक्सपियर का नाटक 'मर्चेंट आफ वेनिस' उसे कंठस्थ थे; पंडितराज जगन्नाथ के 'भामिनीविलास' के श्लोकों को उसे बातचीत में उद्धृत करते देख लोग चकित रह जाते थे। इतनी नन्ही उम्र में वह संस्कृत और मराठी के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ पढ़ चुका था। फिर भी उसके अध्यापकों को शिकायत रहती थी कि लड़का पढ़ाई पर बिलकुल ध्यान नहीं देता।

किंतु विद्यार्थी निश्चित था। उसे पूरा विश्वास था कि शिकायत करनेवाले ये ही गुरुजन आगे चलकर उसका सिक्का मानेंगे और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे। हां, उसके मन में उन दिनों यह बलवती इच्छा थी कि पढ़-लिखकर वह रामकृष्ण मिशन का संन्यासी बने और धर्मप्रचार के लिए जीवन उत्सर्ग कर दे। किसे मालूम था कि आग चलकर वह कन्नड के सर्वमान्य कवि द० रा० बेंद्रे के रूप में प्रसिद्धि पायेगा।

दत्तात्रेय रामचंद्र बेंद्रे ३१ जनवरी १८९६ को मैसूर राज्य के धारवाड नगर में (जो उस समय बंबई प्रांत में था) पैदा हुए। बेंद्रे-परिवार सम्मानित तो था; किंतु संपन्न नहीं था। अभी वे ग्यारह साल के थे कि पिता का स्वर्गवास हो गया। सो जीवन की संघर्षमयता का अनुभव उन्हें बचपन से ही मिलने लगा। सन १९१८ में पूना के फर्ग्युसन कालेज से बी० ए० पास किया और वहीं के विक्टोरिया हाई स्कूल में अध्यापक बन गये।

कविता-लेखन बहुत पहले ही आरंभ हो चुका था। किंतु जिस कविता ने उन्हें कन्नड के अग्रगण्य कवियों की पंक्ति में ला बैठाया वह १९३० में छपी। उसका शीर्षक था 'हक्कि हारुतिदे' (चिड़िया उड़ रही है)। फिर जब उनका पहला कविता-संग्रह 'गरि' (पंख) प्रकाशित हुआ, विदेशी सरकार की वक्रदृष्टि उन पर पड़ी। संकलन की एक कविता 'नरबलि' में जिलाधीश को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

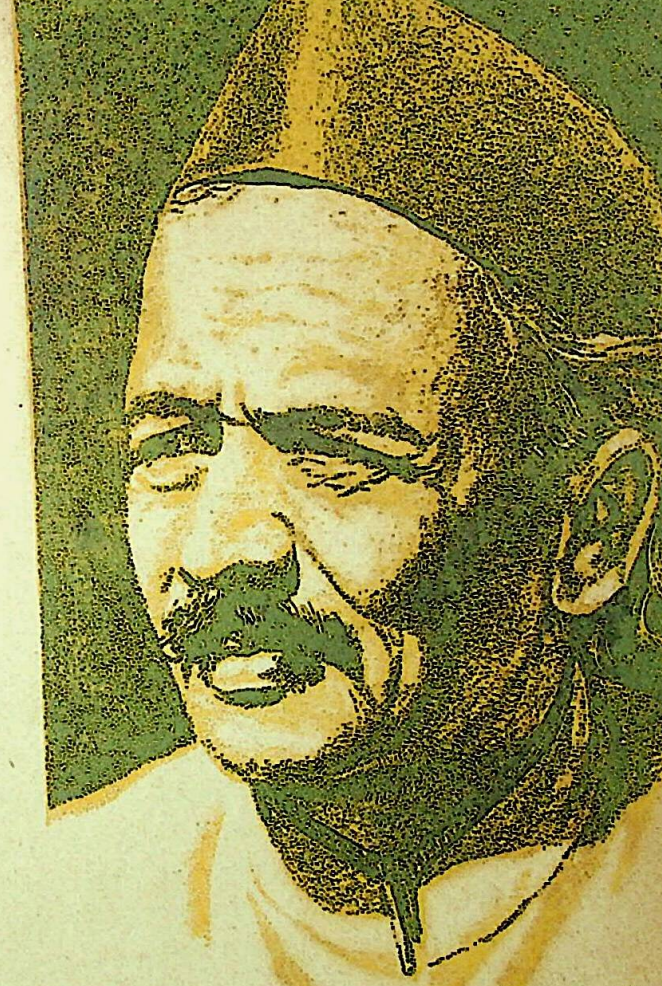

पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके

द्रोह की गंध आयी। णामत: बेंद्रे को कारा-न भोगना पड़ा।

लेकिन कठिनाइयां की कमर न तोड़ सकीं। विपत्तियों के कों ने उन्हें जितना झुकाना चाहा, उनकी ना बढ़ती ही गयी; ष्टों के बीच साधना निखरती गयी। १९४४ बीस बरस का जवान ा शाम चल बसा। ते-भर बाद उसके टे भाई आनंद ने आंखें द लीं। दो बेटे और बेटियां तो पहले ही ाल की भेंट हो चुके थे। नौकरी कभी है, तो कभी नहीं। ज्यादा दिन कहीं म भी नहीं पाते थे। आज अध्यापक हैं, तो कल संपादक; कभी ाध्यापक हैं, तो कभी ानाध्यापक। कभी पूना में हैं, तो कभी ारवाड में, फिर शोलापुर या गदग में।

किंतु जीविका की अस्थिरता के बीच भी ाव्यवेल निरंतर बढ़ती और फूलती रही। उनके लोकप्रिय काव्य-संग्रह 'नादलीले', 'उय्याले' (हिंडोला) और 'सखीगीते' की चना मानसिक पीड़ा और भौतिक कष्ट के इन्हीं दिनों में हुई। बीच में भयंकर अर्थाभाव और आंतरिक क्लेश के दिनों में कन्नड के मूर्धन्य कहानीकार मास्ति वेंकटेश अय्यंगार ने बड़ा भाई बनकर उन्हें संभाला। दो मूर्धन्य साहित्यकारों में इस प्रकार का स्नेह हमारे यहां एक दुर्लभ वस्तु है। बाद में बेंद्रे कई वर्ष तक आकाशवाणी के धारवाड केंद्र में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कन्नड के सलाहकार के रूप में रहे।

बेंद्रे का साहित्यिक उपनाम 'अंबिकातनय दत्त' है। और उनकी काव्य-साधना भी दत्तात्रेय की तपश्चर्या की कोटि की ही है। उनकी कविता अध्ययन की गंभीरता के साथ अनुभव की ठोस भूमि पर खड़ी है। सच्ची अनुभूति उसमें सचोट रूप में प्रकट होती है। वस्तु की गंभीरता के साथ शैली की सरसता का ऐसा सामंजस्य कम कवियों को ही सिद्ध होता है। यही कारण है कि हलवाहों से लेकर साहित्य के सार्थवाहों तक सभी के वे प्रिय कवि हैं।

बेंद्रे की पहली प्रकाशित कविता 'हक्कि हारुतिदे नोडिदिरा' को सुनकर कन्नड की नवजागृति के पुरोधा वी० एम० श्रीकंठय्या ने कहा था—"अपनी ज्योति को टाट की ओट में छिपाये न रखो।" काल को पक्षी के रूप में चित्रित करनेवाली यह कविता आज कन्नड-भूमि में बच्चे-बच्चे की जबान पर है। उसकी कुछ पंक्तियों का मुक्त गद्यानुवाद इस प्रकार है :

राज्यों व साम्राज्यों को ढहाकर
भूमंडल की परिधि पार कर
द्वीप-महाद्वीपों को डुबोकर, उतराकर,
सम्राटों के शीश पर पांव धर
—देखो चिड़िया उड़ रही है।
युग-युग का ललाट-लेख पोंछकर
मन्वंतर की भाग्यरेखा नोंधकर
पंख फैलाती, चेतना को जगाती
नवयुग के शिशु-गण का मंगल मनाती
—देखो, चिड़िया उड़ रही है।

कालगति चिड़िया बनकर उड़ती रहती है — युग बदलते हैं, साम्राज्य बनते-उजड़ते हैं; किंतु कालपक्षी की उड़ान रुकती नहीं, उसके पंख थकते नहीं।

स्वर्गीय प्रसाद ने चिंता का मानवीकरण किया है 'कामायिनी' में। चिंता की खलरेखा को बेंद्रे अपने ही ढंग से देखते हैं। उनके लिए वह अतीत की विकट नटी है—

चेहरे पर दीनता गहरी
छाती में शून्यता उभरी
देहधारी चिंता की मूर्ति
आंखों में अंधकार बसाये
माथे पर मरघट की नीरवता रमायें
अतीत की विकट नटी-सी—
आयी हो तुम कौन ?

'नरबलि' का उल्लेख हम ऊपर कर आये है। अंग्रेजी सत्ता के स्वामिभक्त कर्मचारियों को कंपानेवाली इस कविता में वस्तुतः कवि ने युद्ध की विध्वंसकता पर अपने मन की घुटन व्यक्त की है। कवि कहता है—मुर्गी की बलि के विरुद्ध शांतिपुराण बांचे गये हैं; बकरी-भैंसे की बलि के विरुद्ध बुद्ध-चरित सुनाया गया है; किंतु मानव की निर्मम हत्या पर, योजनाबद्ध नरबलि पर किसी को आपत्ति नहीं। यही नहीं, उसे आत्मार्पण कहकर उसकी प्रशंसा में गीत गाये जाते हैं। कैसी विडंबना है!

बेंद्रेजी पर आयरिश कवि ए० ई० रसल की गहरी छाप है— विशेषतः उनकी कविता 'दृष्टिदीप' (कैंडल आफ विजन) का। उन्हें प्रभावित करनेवाले दूसरे आधुनिक साहित्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हार हैं—येट्स, रवींद्र और खलील जिब्रान। उनपर काफी समय से वे अरविंद के दर्शन का मनन कर रहे हैं।

चिंतन और जीवनानुभव को दो-चार सरल शब्दों में पिरो देने में बेंद्रे बेजोड़ हैं। 'नन्न हाडु' (मेरा गीत) की ये पंक्तियां दीजिये—"रसवे जनन, विरस मरण, समरसवे जीवन।" रस ही जन्म है, विरसता मरण है, समरसता जीवन है।"

बुद्धि-वैभव के स्वामी होते हुए भी बेंद्रे मानते हैं कि काव्य-व्यापार मुख्यतः हृदय का व्यापार है; काव्य हृदय-संवेद्य है। बौद्धिक धारणाओं के बंधनों में न बंधकर, मुक्तहस्त से परिमल बांटने की पुष्पवृत्ति ही कवि के लिए वांछनीय है। कवि अतीत की सांस्कृतिक परंपरा को अनागत में गूंथनेवाला सेतु है। राम के राज्य में वाल्मीकि को और युधिष्ठिर के राज्य में व्यास को कवि के नाते कौन-सा महान स्थान प्राप्त था? किंतु राम और युधिष्ठिर की कीर्ति आज वाल्मीकि और व्यास के कारण ही है।

प्राचीन और अर्वाचीन काव्य के रसिक समीक्षक बेंद्रे मानते हैं कि कविता कोई बासी पड़ जानेवाली चीज नहीं, जिसे एक ही घूंट में गले के नीचे उतार दिया जाये। कविता आस्वादन की वस्तु है; आत्मा को आप्लावित करनेवाली रसधारा है। उनकी कविताएं आपात-मधुर तो हैं ही, दुबारा पढ़ने पर गहरा रस देती हैं। उनमें जितना ही गहरा पैठा लगायें, उतने ही मोती हाथ लगते हैं। बेंद्रे समर्थ समालोचक भी हैं। उनके दो ग्रंथ 'साहित्य हागु विमर्श' (साहित्य और समालोचना) एवं 'साहित्य-संशोधन' (साहित्यानुसंधान) कन्नड के समालोचना साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने पाश्चात्य समीक्षा-तत्वों एवं भारतीय काव्य-मीमांसा के सिद्धांतों में समन्वय करने का यत्न किया है। इस बहुविधि साहित्य-सेवा के लिए उन्हें दो बार कन्नड साहित्य सम्मेलन का सभापति चुना गया है।

संस्कृत, अंग्रेजी और कन्नड के अलावा मराठी पर भी बेंद्रे का अधिकार है। मराठी संत-साहित्य का उनका अध्ययन तलस्पर्शी है। भारतीय भाषाओं की स्थिति के संबंध में उनके ये विचार मननीय हैं:

"जब से हमारे विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी को गुरुस्थान मिला है, शेली, कीट्स आदि की गाथा गायी जा रही है, जिसे सुनते-सुनते हम मुग्ध हैं और सोचा करते हैं— हमारी भाषाओं में भी वह गांभीर्य, वह विस्तार और वह औन्नत्य कब देखने को मिलेगा? पंप, कुमार व्यास, प्रभुदेव, बसवेश्वर, रत्नाकर और पुरंदरदास की विचारधारा को जिन्होंने आत्मसात् कर लिया है, ऐसे कन्नड-भाषी कब जन्मेंगे? अभी तो अभिमाना-भाव और दुरभिमान के बीच विकृत संघर्ष चल रहा है। स्वस्थ चिंतन एवं सूझबूझ की बिजली कभी कहीं ही कौंधती है।"

जो बात बेंद्रेजी ने कन्नड के विषय में कही है, वह समृद्ध बनने की इच्छुक सभी भारतीय भाषाओं के लिए चिंतन का मसाला देती है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक नयी दंतकथा :

नया-पुराना

कभी एक सयाने कछुए के हाथ एक पुरानी पोथी पड़ गयी, जिसमें लिखा था कि किसी समय एक कछुए ने दौड़-प्रतियोगिता में खरगोश को हराया था। यह पढ़कर वह विस्मित रह गया। उसने जितनी भी पुस्तकें मिल सकीं, छान डालीं। किसी में भी यह पढ़ने को नहीं मिला कि कभी किसी खरगोश ने भी कछुए को हराया हो। सो उसने परिणाम निकाला कि वह भी दौड़ में खरगोश को हरा सकेगा।

और वह खरगोश की खोज में निकल पड़ा। घूमते-घूमते उसे गिलहरी, नेवला, स्यार, मेंढक वगैरह अनेक प्राणी मिले। सबने उसे प्रतियोगिता के लिए ललकारा। लेकिन कछुआ सबसे एक ही सवाल पूछता—"क्या तुम खरगोश को हरा सकते हो?" सब यही जवाब देते—"भला, वह कैसे हो सकता है?"

"मगर मैं हरा सकता हूं।" कछुआ अकड़कर कहता—"तुम लोगों के साथ बेकार भाग-दौड़ करके वक्त गंवाने का कोई मतलब नहीं।" और कछुए ने खरगोश की खोज जारी रखी।

कई दिन की खोज के बाद उसे एक खरगोश मिल ही गया। कछुए ने उसे दौड़ की प्रतियोगिता के लिए ललकारा। खरगोश ने मजाक करते हुए पूछा—"लेकिन तुम दौड़ोगे किन पैरों से, यह तो बताओ?"

कछुआ झुंझलाकर बोला—"तुम उसकी फिक्र मत करो। जरा यह पढ़ो, इसमें क्या लिखा है।" और वही पुरानी पोथी खरगोश के सामने कर दी, जिसमें लिखा था कि उतावले लोग हमेशा बहुत तेज नहीं होते।

"अरे जाओ," खरगोश ने कहा—"तुम तो डेढ़ घंटे में पचास फुट भी नहीं दौड़ सकोगे, जबकि इतनी दूरी मैं सिर्फ १½ सेकेंड में तय कर लूंगा।"

"बेकार डींग मत हांको, तुमसे पूरा एक सेकेंड भी शायद दौड़ते नहीं बनेगा।" कछुए ने बात काटी।

खरगोश ने उत्तर दिया—"सो तो तुम देख ही लोगे।"

दोनों ने दौड़ की प्रस्थान-रेखा खींची और वहां से नापकर ठीक पचास फुट की दूरी पर समाप्ति-रेखा बनायी। फिर सब जानवरों को जमा करके वे प्रतियोगिता के लिए तैयार हो गये। मेंढक ने दोनों को प्रस्थान-रेखा पर सीध में खड़ा किया। कुत्ते ने पिस्तौल दागी और दौड़ शुरू हो गयी।

जब खरगोश समाप्ति-रेखा पार कर गया, कछुआ अभी प्रस्थान-रेखा से ८¾ इंच ही दूर सरक पाया था।

अंत में खरगोश ने कछुए को तसल्ली देते हुए कहा—"दोस्त, जमाना बहुत बदल चुका है। नया झाड़ू भी शायद अच्छी सफाई कर दे; पर पुरानी आरी का कोई भरोसा नहीं।"

—जेम्स थर्बर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आशावादी बनो

सोमेश्वर

आस्तिक और नास्तिक आदमी में आधारभूत अंतर केवल दृष्टिकोण का बरना देखने में दोनों एक से होते हैं। दगी के हर मोड़ पर आस्तिक और स्तिक यों तो एक-सा ही व्यवहार करते र आते हैं। दोनों खाते हैं, पीते हैं। दोनों दी-ब्याह करते हैं और दोनों को कपड़े र मकान की जरूरत होती है। दोनों ह और जंग में हिस्सा लेते हैं। दोनों मार पड़ते हैं और तंदुरुस्त होते हैं। दोनों ते और मरते हैं। फिर दोनों में अंतर क्या ? अंतर केवल दृष्टिकोण का है, नुक्ते-लाह का है।

जीवन के संबंध में मानवी दृष्टिकोण दो ह के होते हैं। एक आशावादी, उम्मीद-रखना; दूसरा निराशावादी, मायूसाना। जी में इन्हें 'आप्टिमिस्टिक' और 'पेसि-स्टिक' कहते हैं।

आशावाद में संतोष, प्रसन्नता और शांति । निराशावाद में बेचैनी, भय और अशांति । दोनों के भेद को बताने के लिए किसी ने क बड़ा अच्छा उदाहरण दिया है। आधे गिलास पानी को देखकर एक कहता है कि धा गिलास भरा है। दूसरा कहता है कि धा गिलास खाली है। कहते दोनों ठीक भेद केवल जुदा-जुदा दृष्टिकोण का, देखने के अंदाज का है। एक उजले पहलू को देखता है, इसलिए आशावादी है। दूसरा अंधेरे पहलू पर नजर रखता है, इसलिए निराशा-वादी है।

आशावादी रहने में ही जीवन आगे बढ़ता है। आशावादी ही उजले भविष्य के सपने देखता है, उन सपनों को सच्चा बनाने की कोशिश करता है। यह ठीक है कि सपने कभी-कभी टूट भी जाते हैं। सपने झूठे भी होते हैं। लेकिन सपनों का आनंद कभी झूठा नहीं होता, उस आनंद की अनुभूति झूठी नहीं होती। यह आनंद ही मनुष्य को कठिन-से-कठिन काम करने की हिम्मत देता है, उत्साह देता है।

आशावाद इन्सान को दुर्भाव से लड़ने और मुसीबतों का डटकर सामना करने का उत्साह देता है। धैर्यपूर्वक काम करते जाना और नतीजे का देर तक इंतजार करना उसके लिए ही मुमकिन है, जो स्वभाव से आशा-वादी है।

आशावादी आदमी बड़ी-से-बड़ी मुसी-बत का भी अपने लाभ के लिए उपयोग कर लेता है। सच तो यह है कि आदमी हर मुसी-बत का अच्छा उपयोग कर सकता है। संसार में ऐसे सफल पुरुषों की कमी नहीं, जो मुसीबतों से ही बनते हैं।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैलिफोर्निया के डा० डंकन ऐसे ही आशावादी व्यक्ति थे। उन्हें अचानक पक्षाघात हो गया। उनके शरीर का कोई भी अंग हिलता-डुलता न था। डाक्टरों ने उनके सांस के लिए नकली फेफड़ा लगा दिया था। फिर भी डा० डंकन अपने सब काम खुशी-खुशी करते रहे। चारपाई पर लेटे हुए ही वे अपने बच्चों को पाठ पढ़ाते और मित्रों से ताश खेलते। बीमार पड़ने से पहले उन्हें फोटो खींचने का शौक था। चारपाई पर लेटे-लेटे उन्होंने हाथ के बजाय ठोड़ी से 'शटर' दबाकर कैमरे से काम लिया। इस प्रकार उन्होंने जो फोटो लिये, वे भी सुंदर थे। उनकी सुंदरता और कलात्मकता की सभी ने प्रशंसा की। उस प्रशंसा से और अपने काम की कामयाबी से डा० डंकन को जो आनंद मिला, उससे उन्हें गीरोग बनने में बड़ी ही सहायता मिली।

उनकी जगह यदि कोई निराशावादी स्वभाव का आदमी होता, तो वह किसी भी हालत वे स्वस्थ न हो सकता। डा० डंकन ने अपने अनुभवों को इन शब्दों में लिखा है :

"इलाज के लिए जब मैं अस्पताल भेजा गया, तो मैं पहले-पहल अपनी दयनीय अवस्था पर दुःखी हुआ। मुझे खयाल आया कि मैं अपने परिवार के लिए केवल बोझ हूं। मेरी पत्नी के पास इतने पैसे भी नहीं थे कि वह मेरे पूरे इलाज का खर्च उठा सकती। इसलिए मुझे जल्दी ही कोई ऐसा काम करना था, जिससे मैं दुनिया के लिए नहीं, तो कम-से-कम अपने परिवार के लिए कोई उपयोगी काम कर सकूं।

"मैंने सोचा, मैं रोगशय्या से हिल-डुल भी नहीं सकता; लेकिन कम-से-कम अपने परिवार के सुख-दुःख में शरीक तो हो सकता हूं, परिवार की हर कठिनाई को सुलझाने के लिए ठीक सलाह तो दे सकता हूं और अपने बच्चों के लिए यह आदर्श भी रख सकता हूं कि किस प्रकार बड़ी-से-बड़ी मुसीबत में भी शांत और प्रसन्न रहा जा सकता है।

"मैंने संकल्प कर लिया कि मैं अपने पक्षाघात को भूलकर बच्चों से सदा मुस्कराते हुए बात करूंगा। मुझे हंसते देखकर सभी का दिल हल्का होता था और सारे घर में प्रसन्नता का प्रकाश फैल जाता था। ऐसे वातावरण में ही मेरे लिए स्वस्थ होना संभव था और सच भी यही है कि यदि मैं अपने आस-पास हंसी-खुशी का वातावरण न बनाता, तो बड़े-से-बड़े डाक्टर भी मुझे पूरा स्वस्थ न बना पाते।"

आशावादी मनुष्य ही मानवमात्र के कल्याण में योग दे सकता है। साधारण दृष्टि से देखा जाये, तो सभी सांसारिक व्यवहारों के साथ कुछ-न-कुछ दुःख और बुराइयां जुड़ी हुई हैं। फिर भी संसार आगे बढ़ रहा है। अतः हर आदमी का कर्तव्य है कि इस प्रगति में पूरा योग दे। और यह तभी संभव है, जब मनुष्य आशावादी हो और मानवीय व्यवहारों में अटल और गहरा विश्वास रखता हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथियों का वार्तालाप

विचार-विनिमय केवल इन्सान ही नहीं, मूक प्राणी भी करते हैं। हाथी कैसे आपस में गुफ्तगू करते हैं, इसका रोचक वर्णन यहां पढ़िये।

विचार-विनिमय का कोई साधन पास न होने पर जीवित प्राणी सजातीय से किसी प्रकार का वार्तालाप नहीं कर सकते। अतः सभी प्राणियों के विकास के लिए वार्तालाप की आवश्यकता है। मानव-प्राणी ने विविध भाषाओं से उस आवश्यकता की पूर्ति कर ली है। परंतु मानवेतर चौपाये भी अपने विचार एक दूसरे से कैसे प्रकट करते हैं? इस संबंध में खोजबीन करनेवाली पश्चिम जर्मनी की एक संस्था मैक्सप्लैंक इंस्टिट्यूट के डा० वुल्फ डीट्रिच कुह ने अफ्रीका में दीर्घ काल तक हाथियों का निरीक्षण कर उनकी बातचीत के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाले हैं।

प्रत्येक प्राणी अपना अनुभव सजातीय प्राणी से प्रकट कर सकता है। जैसे, जब किसी चूहे-परिवार के मुखिया को उसके बिल के आस-पास रखे खाद्य पदार्थ पर संशय होगा, तो वह उसको स्पर्श नहीं करेगा और अगर उस कुटुंब का कोई भी चूहा उस पर विष नहीं मारेगा। हिरनों का समूह अपने मुखिया हिरन के पीछे-पीछे चलता है। फिर भी अपने अनुभव व्यक्त करने के लिए उसके पास शब्द नहीं होते। आदमी अपने बच्चे को क्या करना, क्या नहीं करना शब्दों के माध्यम से सिखाता है। पर चतुष्पाद प्राणियों में माता-पिता अपने बच्चों को किस समय कैसा व्यवहार करना है, यह स्वयं आचरण करके सिखाते हैं। मनुष्यों के शिक्षण के बारे में भी देखा जाये, तो यही पद्धति सर्वोत्तम और अधिकाधिक परिणामकारी मानी जाती है।

लेकिन प्रायः देखा गया है, शब्द न होते हुए भी किसी-किसी अवसर पर मानवेतर चतुष्पाद प्राणी विशिष्ट प्रकार की आवाज निकालकर अपना अभिप्राय प्रकट करते हैं। मनुष्यों में भी देखा जाता है कि अत्यंत हर्ष या शोक के समय शब्दों के बदले ध्वनि से ही मनोभाव प्रकट करते हैं। मानवेतर प्राणी—विशेषतः चतुष्पाद प्राणी—अभिनय अथवा ध्वनि का आश्रय लेते हैं। वे श्रवणेंद्रियों को विशेष प्रकार से हिला-डुलाकर तथा विभिन्न प्रकार की गंध छोड़कर अपना मनोभाव प्रकट करते हैं।

दरअसल चतुष्पाद प्राणी किस गंध पर कैसा व्यवहार करना है, यह निश्चित रखते हैं। मनुष्य अपनी घ्राणेंद्रियों का उतने सामर्थ्य के साथ उपयोग नहीं कर पाता। कुत्ते के आंखें न हों, तो भी कोई हर्ज नहीं; पर यदि उसके नाक न हो, तो उसके जैसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभागा प्राणी दूसरा नहीं। नाक पर जिन प्राणियों का बहुत अधिक भरोसा है, वे नाक से अपने भू-प्रदेश को कैसे जान लेते हैं, यह बात हमारे लिए एक पहेली है।

वन में पाये जानेवाले विभिन्न खूंख्वार जंगली जानवर घ्राणेंद्रिय का कब और कैसे उपयोग करते हैं—कहना बड़ा मुश्किल है। उसकी अपेक्षा हाथी की सूंड की गतिविधि का बारीकी से निरीक्षण करके इसे समझना आसान है कि वह कब किस प्रकार की संवेदना का अनुभव कर रहा है अथवा क्या चाह रहा है। हाथी की सूंड सिर्फ उसकी घ्राणेंद्रिय-भर नहीं होती। वह नाक, हाथ के पंजे और बाहुएं—तीनों का काम करती है। उसके किसी और अंग की अपेक्षा उसकी सूंड की गतिविधि से ही यह पता चलता है कि वह क्या चाहता है अथवा वह किस मौज में है। यह सब जानने के लिए सूंड की गतिविधि को निरखना चाहिये। सूंड से वह जो प्रतिदिन सर्वसाधारण क्रियाएं (देह को घिसना, पोंछना और किसी चीज का उठाना) करता है, हम सिर्फ उन्हीं को न निरखें। उसके साथ ही कानों व मस्तिष्क की गतिविधि का ध्यान रखने पर उसके 'मूड' और काम दोनों का मेल बैठने लगता है।

क्रानवर्ग के प्राणि-संग्रहालय में डा० वुल्फ डीट्रिच ने ८ वर्ष के एक हाथी-दंपति के सूंड के माध्यम से चलनेवाले वार्तालाप को कितनी ही बार देखा है। यह जोड़ा बंधन में रहकर भी सहज प्रवृत्तियों को यथापूर्व निभाता था। डा० वुल्फ डीट्रिच निरीक्षण करने के इरादे से रात-दिन उन दोनों के अगल-बगल ही रहते। जब हाथी उनसे कुछ मांगते, तो वे न देते, बल्कि जब हाथी अपनी सूंड ऊपर उठाकर याचना की मुद्रा प्रदर्शित करते, तब डा० वुल्फ डीट्रिच टालमटोल कर देते। तब वे दोनों प्रश्नवाचक निगाहों से उनकी ओर ताकने लगते कि आठों पहर हमारे साथ रहनेवाला, हमारी जरा भी सेवा न करनेवाला, आखिर यह

जब दो हाथियों में मैत्री होती है, वे इस तरह आपस में मिलते हैं। मिलन की विधि उनके पारस्परिक सौहार्द का ही नहीं, हाथी-समूह में उनकी सामाजिक स्थिति का भी परिचायक होती है। दोनों में से जो हाथी अधिक ताकतवर होता है, वह दूसरे के मुंह में अपनी सूंड डालता है। और ताकतकर हाथी को ही अधिकार है कि दूसरे की मदस्रावी ग्रंथि को छुए; कमजोर हाथी को यह अधिकार नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुक है कौन ?

वहां एक और नर हाथी
था। उन दोनों नर
थियों की डा० वुल्फ डीट्रिच
बारे में हुई प्रतिक्रिया
ि ध्यान देने योग्य है।
ने लिखा है :

वह बलिष्ठ हाथी मुझे
न्यास देखते ही सामने
र मेरी ओर टकटकी
कर देखने लगता, उसके
न अधिक फैलने लगते और
र ऊपर उठाकर चौकन्ना-
ो जाता। फिर अपनी सूंड
ारता हुआ वह झपझप
बढ़ाता, मेरी ओर आने
ता। जैसे-जैसे हमारे बीच की दूरी कम
ी जाती, सूंड से गंडस्थल को स्पर्श
ने की उसकी प्रवृत्ति बढ़ती जाती। पहले
सूंड के अग्रभाग को मस्तक तक ले जाता
र फिर गंडस्थल को स्पर्श करता। यही
ी और हथिनी की ज्ञानेंद्रिय है। इसे
स्रावी इंद्रिय भी कहते हैं। इस प्रकार
के स्पर्श का उसके लिए क्या उपयोग
ता होगा, यह कहना कठिन है। पर ऐसा
ता है कि उसके मदस्राव की गंध का
भव होते ही हाथी में एक प्रकार का
आत्मविश्वास जागृत होता होगा।

"उस हाथी को जब किसी को दंड देने
मन होता, तो सूंड-प्रहार करने से पूर्व
मदस्रावी इंद्रिय का पहले स्पर्श करता—

१. आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ते हुए प्रक्षुब्ध हाथी के सिर व सूंड की स्थिति;
२. बल-प्रदर्शन के लिए आगे बढ़ता हुआ हाथी;
३. डरा हुआ हाथी आत्मरक्षा के लिए सूंड मुंह में डाले हुए ;
४. आराम से अपनी सूंड सीधी लटकाये हुए स्वस्थ-चित्त हाथी।

दंड पानेवाला चाहे मनुष्य हो या उसका सजातीय। हाथी के खाने के स्थान पर क्या होता है, वही देखिये। जब उसे कोई दूसरा हाथी त्रास देना शुरू करता था, तब वह सूंड से गंडस्थल का स्पर्श कर मस्तक से टक्कर मारकर उसे निकाल बाहर करता था। सजातीय को उसने कभी सूंड का फटका मारा हो, ऐसा देखने में नहीं आया। एक दूसरी बात और ध्यान देने योग्य देखी गयी। जब-जब अधिक ताकतवाले हाथी की कम ताकतवाले हाथी से टक्कर होती, तब-तब कमजोर हाथी की मदस्रावी ग्रंथि तक अपनी सूंड प्रथम उठाने का गौरव बलवान हाथी को ही मिलता। फिर कम ताकतवाला हाथी अधिक ताकतवाले हाथी के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रास्ता भी कर देता था। और उसे यदि भरोसा हो जाता कि वह सामना कर सकेगा, तो बलवान हाथी के मुंह में अपनी सूंड डाल कर कायदे से उत्तर देता।

"यदि अधिक बलवान हाथी अपनी सूंड कम बलवान हाथी के मुंह में पहले डाल देता, तो भी कम बलवान हाथी को ही उसी तरह उत्तर देना पड़ता। नहीं तो दोनों में द्वंद्व शुरू हो जाता।"

जब नर हाथियों में झगड़ा होनेवाला होता है, तो अन्य प्राणियों की तरह कुछ विशिष्ट संकेतों की पूर्ति होने लगती है। यज्ञवेदिका पर बैठा ब्राह्मणवृंद जिस तरह विशिष्ट नियमों का दृढ़ता से पालन करता है, उसी प्रकार उनका पालन किया जाता है। प्रथम वे आमने-सामने होकर गंडस्थल से एक-दूसरे को ढकेल-ढकेलकर नीचे बैठाने का प्रयास करने लगते हैं। कम बलवान और उम्र में छोटे हाथी को इस बात का तुरंत भरोसा हो जाता है कि सामनेवाला उससे अधिक पराक्रमी है; तब वह प्रतिद्वंद्वी पर टकटकी लगाये कुछ कदम पीछे लौटकर एकदम घूमकर चला जाता है। यह उनका निश्चित नियम है।

पर यदि इसी दरम्यान कमजोर हाथी को अपने आत्मबल का साक्षात्कार हो जाये, तो वह पुनः पैंतरा बदलकर खड़े होने से पूर्व अपनी सूंड मस्तक पर पटकने लगेगा। और अपने फैले कानों को अधिक फैलाते हुए प्रतिस्पर्धी की ओर ताकने लगेगा। उसकी इस पैंतरेबाजी का पता प्रतिस्पर्धी को तुरंत हो जाता है। जंगल में दो समान शक्तिवाले हाथियों के बीच ऐसे ही द्वंद्व होते होंगे।

क्रोनवर्ग में ऐसा कभी नहीं हुआ कि हाथी ने अपनी सूंड का प्रहार किसी आदमी पर किया हो। बल्कि उनकी सूंड की विशेष प्रकार की हलचल से लगता है कि वे स्वयं भयभीत होते हैं। ऐसे अवसरों पर वह अपनी सूंड नीचे लटकाने के बजाय शरीर की ओर खींच लेते हैं और फिर जैसे उन्हें कुछ मदद की अपेक्षा हो, मदस्रावी इंद्रिय की ओर झुकने लगते हैं। जब-जब ऐसा होता है, तब-तब शत्रु पर चढ़ाई करने की तीव्र इच्छा रखते हुए भी वे किसी भय के कारण रुक जाते हैं, ऐसा समझने में कोई हर्ज नहीं।

सूंड उठाकर लड़ाई के पैंतरे में खड़ा रहनेवाला हाथी अधिक बलवान है, ऐसा समझना चाहिये।

[सौजन्य : मेघदूत फीचर्स]

★

एक महिला अपनी पड़ोसिन से अपने आदर्श दांपत्य-जीवन के बारे में बातचीत कर रही थीं—"हमारे घर हर काम एक दूसरे के सहयोग से होता है। वे मेरे कामों में हाथ बंटाते हैं और मैं उनके। घर के हर काम में दोनों का बराबर योगदान रहता है। आज शाम की चाय को ही लीजिये—मैंने प्रस्ताव रखा, उन्होंने चाय बनायी; मैंने चाय पी, उन्होंने बर्तन धोये....।"

—मुगनी अब्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुवैत-कुबेर

श्रीगोपाल नेवटिया

मी उस दिन अपने देश (राजस्थान) के मध्य अपने सुषुप्तप्राय नगर में गया । प्राचीन हवेलियां खंडहर हो रही थीं, ने लोग जीर्ण-शीर्ण हो रहे थे । पर नगर हर नये घर बन रहे थे, नौजवान टेरि- के सूट पहने हाथ में ट्रांसिस्टर रेडियो र घूम रहे थे । कारण पता चला कुवैत- र की कृपा !

त्काल कुछ मास पूर्व किये कुवेरपुरी ल के दर्शन का एक दृश्य सम्मुख उप- न हो गया । होटल के अपने वायु- कूलित कमरे की खिड़की से देखा था— क पर मजदूरों की कतारें लगी हैं, निर्माण- र जोरों से हो रहा है । मन-ही-मन उन रों और राजस्थान के इन चेहरों को ाकर देखा, दोनों एक से थे । कुवैत की कों पर, वहां के मकानों में दो-चार साल म करके ये राजस्थानी मजदूर इतना कमा ते हैं कि नगर के छोर पर बनी अपनी ड़ी की जगह पक्के ठांव बनवाते हैं, टेरि- न वस्त्र और ट्रांसिस्टर से अपना शौक पूरा ते हैं और खुल्लमखुल्ला या चोरी-से ने सोने से अपनी अर्द्धांगिनियों को विभू- त करते हैं ।

यह कुवैत-कुबेर है कहां और कैसा ? यह है एक देश—छः हजार वर्गमील से भी छोटा देश । फारस खाड़ी के पश्चिमोत्तर में, इराक के दक्षिण-पूर्व स्थित यह घोर रेगिस्तान अभी कल तक इने-गिने घरौंदों और दस-पांच अमीरों के निवासों के अतिरिक्त कुछ नहीं था, पुरातत्ववेत्ताओं ने मरी-दबी दो बस्तियों को ढूंढ़ निकाला है और उनके दो-तीन हजार वर्ष पुराने होने के ही नहीं, अपितु पांच हजार वर्ष पहले भारतवर्ष से उनके महत्वपूर्ण व्यापार-संबंधों के प्रमाण भी उपस्थित किये हैं ।

कुछ भी हो, अति प्राचीन की बात जाने दें । कुवैत का ज्ञात प्राचीन इतिहास शुरू होता है १६ वीं सदी से, जब कुवैत की भौगोलिक स्थिति और वहां के प्राकृतिक बंदरगाह के कारण पुर्तगाली जहाज वहां रुका करते थे । सौ वर्ष के अपने प्रभाव के प्रमाणस्वरूप समुद्रीतट पर निर्मित पुर्त्तगाली किलों के अवशेष अब भी मिलते हैं । पिछली दो सदियों में सबाह राज-परिवार के विजय-अभियान, अंग्रेजी मातहती, गत सदी के अंत में अलग राज्य और अब १९६१ में पूर्ण स्वतंत्र देश के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता—इतना-सा है इस देश का इतिहास । लेकिन महत्वपूर्ण प्राचीन इतिहास क्या, महत्वपूर्ण तो है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सका अर्वाचीन आर्थिक-विकास। और संयोगवश तीन दिन के कुवैत-प्रवास में उस समृद्धि के प्रत्यक्ष दर्शन हो गये।

आजकल कहीं आना-जाना कष्टसाध्य तो रहा नहीं। बम्बई-दिल्ली से तेहरान, तेहरान से बगदाद-कुवैत या बम्बई से सीधे कुवैत वैसे ही चले जाइये, जैसे बम्बई से पूना या लखनऊ से कानपुर। इराक-ईरान बड़े देश हैं, बड़ी बस्तियां हैं, उनके इतिहास हैं, समृद्धि-मार्ग के उनके आचरण की भी नयी-पुरानी बड़ी बातें हैं। परंतु सौ वर्ष पुराना कुवैत घरौंदों के झुरमुट की जगह आज भव्य प्रासादों, खानावदोश अश्वारोहियों की जगह अमरीकी मोटरों पर सवार धनाढ्य शेखों, बूंद-बूंद पानी और एक-एक हरी पत्ती के लिए तरसनेवालों की जगह टब और फव्वारों में नहानेवालों और सब खाद्य-व्यंजनों के उपभोक्ताओं से भरपूर है।

मैंने जैसा सोचा था, वैसा ही पाया इस

कुवैत की एक सड़क

कुबेरपुरी को। इस युग के आरामदेह हवाई जहाज में उस रेगिस्तान के ऊपर उड़ते समय रजत-स्वर्णमय बालू के विस्तार और उसके समकक्ष फैले नील उदधि के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था। हवाई जहाज नीचे उतरा, तो कुछ ही क्षणों में समुद्र-तट पर बसा एक अमरीकी नगर-सा दिखाई दिया। इमारतें-सड़कें स्पष्ट होने लगीं, खिलौनों-जैसी मोटरें भी दौड़ती दिखाई देने लगीं और दिखाई देने लगे वे स्थल भी, जो आग उगल रहे थे—या कहना चाहिये, सोना उगल रहे थे।

अपने निवास-काल की एक संध्या को उस रेगिस्तान की संपूर्ण नीरवता और निर्जनता में, एक प्रचंड अग्निशिखा के समीप पहुंच-कर, उसकी पृष्ठभूमि में दिवाली के दर्शन कर रहा थी, तो वर्तमान कुवेर, उसके स्वरूप, उसके करतबों का जो भान हुआ, उसने प्रचार-पुस्तिकाओं में पढ़ी कुवैत-गाथा को मूर्तिमान कर दिया। कुवैत शहर से बाहर निकलते ही तेल के बीसों-पचासों कुंए हैं, उनके कारखाने हैं, उनकी बस्तियां हैं, जो जगमगाते हैं; और ऐसे अनेक स्थल हैं, जहां से भूगर्भ से निःसृत गैस लप-लपाती आग के रूप में अहर्निश जलती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होली-दिवाली का अद्भुत समन्वय

ह !

भी तीन दशक पहले तक यहां न होली न दिवाली—थी केवल व्यापक दरिद्रता-हरा ! सन ३४ में अंग्रेजी और अम-की कंपनियों को तेल-खनन के अधिकार हुए। गत महायुद्ध के अंत तक विशेष ति नहीं हुई। सन ४६ में कुवैत से तेल पहला जहाज विदेश गया और आज तो ाना आठ-नौ करोड़ टन तेल-उत्पादन ा है और शेख के विवेकपूर्ण निर्णय के स्वरूप कमाई का अर्धांश कार्य-कुशल म्पत्तिशाली विदेशियों के हिस्से में र भी कुवैत को वह तेल देता है साला-ड़ाई-तीन अरब रुपया। और यह उत्पा-—यह आय उत्तरोत्तर वृद्धि पर है और वहां के चार लाख निवासियों का हित-न हो रहा है।

आबादी की तुलना में वहां योग्यता की ी होने के कारण उससे विदेशियों का भी हित-साधन होता है। तेल की आम-ी का एक बड़ा भाग विदेशी कंपनियों को ता है। बड़ी संख्या में विदेशी कामों ो हैं, बहुत अच्छी रोजी कमाते हैं, सुखी र स्वदेश लौटते हैं — ऐसे लोगों का ेख के प्रारंभ में उल्लेख है। कुवैत में लोग पद-पद पर देखे। कोई सड़क पर त कर रहा है, तो कोई दुकान लगाकर है, तो कोई डाक्टर है या अध्यापक है। स्तान के ऐसे बहुत लोग हैं वहां। कर्म-ल आदमी जहां सफलता की संभावना हो, वहां पहुंच ही जाता है।

आदमी क्या नहीं करता, क्या नहीं कर सकता ? हजारों फुट की गहराई से उसने वर्तमान युग का कल्प-द्रव—तेल उसी तरह निकाल लिया है, जिस तरह अर्जुन ने तीर मारकर धरती-तल से जल निकाला था। पर इस रेगिस्तान में जल दुर्लभ है। गहरे कुंओं से मिलनेवाले खारे-मीठे अपर्याप्त जल, और नावों पर लादकर पानी लाने की पुरानी प्रथा से काम न चलता देख मनुष्य ने यहां कारखाना खड़ा कर दिया, जिसमें समुद्री जल से पचास लाख गैलन पानी रोज तैयार किया जाता है और उसमें वृद्धि की संभावनाएं भी सन्निहित हैं।

पानी की ऊंची टंकी

कुवैती तेल सुदूर विदेशों में जाता है, बदले में भिजवाता है साग-सब्जी, अनाज-गोश्त, कपड़े-लत्ते, दवा-दारू, रेडियो-रेफ्रिजरेटर, मोटर-वायुयान—और पानी भी ! तेल ले जाने के लिए आनेवाले खाली जापानी जहाज सिंचाई के लिए खाद मिला पानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाकर यहां के वृक्षों को सींचने की योजना में संलग्न हैं। हर प्रकार की चीजों से लदे-भरे जहाज यहां के बंदरगाह की शोभा बढ़ाते हैं। इस कुबेरपुरी की दुकानें आज जरूरत की चीजों से लेकर ऐशो-आराम की नयी-से-नयी चीजों से भरी पड़ी हैं।

आज के भांति-भांति के टैक्सों और कंट्रोलों के जमाने में, यह विश्वास करना मुश्किल होगा कि कुवैत में कोई टैक्स है भी तो बरायेनाम। चाहे जो आयात करो। विदेशी मुद्रा की कोई कमी नहीं। आयात पर कर नहीं। आय भी कर-मुक्त। यहां तक कि म्युनिसिपल टैक्स भी नाममात्र। जहां धरती के गर्भ में कल्प-द्रव अपार हो, वहां इन छोटी आमदनियों की शासन को क्या जरूरत? वहां के शासन के सम्मुख समस्या आय की नहीं, समस्या है आय के उपयोग की। उस छोटे-से देश पर, उस छोटी-सी आबादी पर आम-दनी के वे दो-तीन अरब रुपये कैसे खर्च किये जायें?

कुवैत के शेख
अब्दुल्ला अस्सलीम अस्सबाह

वहां के वर्तमान शासक अमीर शेख अब्दुल्ला अस्सलीम अस्सबाह मध्ययुग के पुरुष होकर भी आधुनिक हैं। आय के सदुपयोग की ओर उनका विशेष ध्यान है। सड़कें बन रही हैं। स्कूल-अस्पताल, खेल-कूद के मैदान, रहने के मकान एक के बाद एक बनते जा रहे हैं। जहां प्रति व्यक्ति १३-१४ हजार रुपया प्रति वर्ष औसत आमदनी हो, वहां की समृद्धि का क्या कहना?

यहां १८ करोड़ रुपया प्रति वर्ष शिक्षा पर खर्च होता है। नये आकर्षक भवनों में इतनी पाठशालाएं हैं कि सहसा विश्वास नहीं होता कि इतनी छोटी वस्ती के लिए इतनी ज्यादा और इतनी अच्छी पाठशालाएं! आज इन स्कूलों में ६० हजार से अधिक बालक - बालिकाएं निःशुल्क शिक्षा पा रहे हैं। ऊंची पढ़ाई का भी वहां प्रबंध है, वजीफे देकर छात्र विदेश भी भेजे जाते हैं। रोगोपचार का प्रबंध तो जैसा कुवैत में है, वैसा कहीं नहीं—प्रत्येक एक सौ निवासियों के पीछे अस्पताल की एक शैया! सात सौ से अधिक शैयाओंवाला, आधुनिकतम साधनों से संपन्न अलसबाह अस्पताल यहां का प्रमुख चिकित्सा-केंद्र है।

कम आय के लोगों के लिए मकान, वाजिब दाम पर बिकनेवाली चीजों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...र, धर्मशील मुसलमानों के लिए ...दें, खेलने-कूदने के मैदान, स्टेडियम, ...बगीचे, पठन-पाठन के केंद्र, रेडियो, ...विजन—सभी कुछ यहां राज्य की ओर से ...ता की सेवा के लिए प्रस्तुत है। शासन ...बागडोर अमीर के हाथ में है; पर प्रजा-...प्रणाली को भी उस व्यवस्था में यथो-...न स्थान है। जिसे आजकल 'वेलफेयर ...' कहते हैं, कुवैत सही माने में वह है।

...र इस सारी सफलता का श्रेय उस ...र्म-स्थित कुबेर के भंडार को है। दुनिया-...में तेल का जितना भंडार आज कूता ...है, उसका एक चौथाई कुवैत में है। ...चम एशिया के देशों में तेल-उत्पादन ...र उसके द्वारा होनेवाली आमदनी की ...ट से कुवैत सर्वोपरि है। प्रति वर्ष ८-९ ...रोड़ टन तेल का उत्पादन और उससे ...ई-तीन अरब रुपया राज्य को आमदनी! ...तुतः यह देश गरीब एशियाई और ...ोकी देशों के बीच ही नहीं, यूरोप-अमरीका के बीच भी धन्ना सेठ है।

इस धन का प्रदर्शन रेगिस्तान के एक कोने में कुवैत शहर में उसी प्रकार है, जिस प्रकार रेत के टीबे पर उगा हुआ एक वन-फूल। यदि यहां उपजाऊ भूमि होती, जल होता, प्रकृति की शोभा होती और सवा सौ डिग्री की गरमी नहीं होती, तो सचमुच कुबेरपुरी और नंदनवन यहां एक साथ होते। पर तेल की कृपा से वर्तमान युग के सब सुख-साधन प्राप्त, प्रायः हर घर वायु-अनुकूलित, दो वर्ष पुरानी कोई मोटर सड़क पर नहीं, दूब के मैदानों की कमी परंतु कालीनों की कमी नहीं, खिलते फूल और गाती चिड़ियां न सही, पर टेलिविजन और रेडियो के दृश्य व संगीत सर्वत्र। भगवान ने कुछ भी न देकर भी, इसे सब कुछ दे दिया।

कुवैत सचमुच मायाजाल लगता है। जैसे किसी ने जादू की छड़ी से मिट्टी के ढेले को छू दिया हो और वह फल-फूलों से लदी एक शाखा बन गया हो।

आओ कुछ बात करें

...ओ, कुछ बात करें.....
...र-मधुर शब्द बोल, मधुगंधी रात करें
...ओ, कुछ बात करें...

...ली हुई खिड़की पर धुली चांदनी देखें
...रों से अधरों पर अमिट चिह्न रेखें,
...-गंध-रस बिखरा रसभीनी रात करें
...ओ, कुछ बात करें...

...खों से देखें बाहर- भीतर सब सुंदर
...णों से सुनें प्राण के गोपनतम प्रिय स्वर
...ायित सारा परिवेश रूप-सौरभ से
अधरों से झरें शब्द छंद मंद-मंद मुखर
पुलकायित देह-गात सारी मझरात करें
आओ, कुछ बात करें...

प्यार के हमारे चिर साक्ष्य चांद तारे
प्रणय-दीप्ति-दीपित मुखचंद्र निहारें
देह की द्विधा के सब बंधन कर ढीले
महामिलन के अक्षर-मंत्र उचारें
मिलन-कल्प-रात साथ सोकर उठ प्रात करें..
आओ, कुछ बात करें... —कुमारिल पंत

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महानता लोकोत्तर कार्य और प्रसिद्धि से भिन्न चीज है; वह वस्तुतः व्यक्तित्व का एक विशेष धर्म है, जो औसत आदमी के सीमित जीवन में भी प्रकट हो सकता है।

जनरल करियप्पा

मेरी दृष्टि में, जीवन में जिस महानतम व्यक्ति से मेरा संपर्क हुआ, वे थे मेरे पिताजी। यह बात मैं सिर्फ स्नेहवश या पितृ-भक्ति से प्रेरित होकर नहीं कह रहा हूं। बात यह है कि महान कहलाने के लिए किसी व्यक्ति में मेरे खयाल से जो गुण होने चाहिये, उनसे वे परिपूर्ण थे।

उनकी कर्तव्यनिष्ठा जबर्दस्त थी। पचास साल पहले कुर्ग में शायद एक भी कार नहीं थी और सभी घुड़सवारी किया करते थे। एक दिन शाम को पिताजी को समाचार मिला कि हमारे एक नजदीकी बुजुर्ग रिश्तेदार का देहांत हो गया है। रिश्तेदार का घर हमारे यहां से बीस मील दूर था। अंधेरा हो चला था और अगले दिन सवेरे पिताजी को बहुत महत्वपूर्ण मुआयने पर जाना था। बुजुर्ग रिश्तेदार को अंतिम प्रणाम करने से वे नहीं चूकना चाहते थे; न ही मुआयना स्थगित करने की उनकी इच्छा थी। सो रातों-रात बीस मील की यात्रा करके रिश्तेदार की मातम-पुरसी में शामिल हुए और बीस मील लौटकर सवेरे मुआयने पर चले गये। किसी भी कर्तव्य से चूके नहीं।

एक और प्रसंग। उनके एक घनिष्ठ मित्र पर, जिन्हें वे वर्षों से जानते थे, उन्हीं की अदालत में मुकद्दमा चलनेवाला था। मुकद्दमे से पहले सवेरे उन्होंने मित्र को घर पर भोजन के लिए बुलाया। भोजन के दौरान मुकद्दमे के विषय में कोई चर्चा नहीं हुई। दोपहर को अदालत में पिताजी ने अपने मित्र को कसूरवार पाया और तीन महीने की कैद की सजा दी। मित्रता का तनिक भी लिहाज नहीं किया। जब मित्र सजा काटकर जेल से छूटे, पिताजी उन्हें फिर खाना खिलाने घर पर लाये। ऐसी थी उनकी कर्तव्यभावना।

किसी से रियायत मांगना, किसी का एहसान सिर चढ़ाना पिताजी को कतई पसंद नहीं था। याद आता है, एक बार उन्होंने मुझसे कहा था—"बेटा, अपनी ही योग्यता के बल पर जियो। किसी से कृपा न चाहना, किसी का एहसान सिर न चढ़ाना।" यह आदेश जीवन में मेरे लिए बड़ा ही उपकारी सिद्ध हुआ। ['भवन्स जर्नल' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि जीवन में स्वाभाविक रूप से बाधाएं आती रहें और मैं उनमें विजय ता रहूं, तो मुझे वैसी ही प्रसन्नता होगी, सी किसी प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने पर होती । तब मेरा जीवन सुखी , अत्यंत सुखी गा। —हिरण्य कुमार

०००

शिवपुरी से कोटा जाते समय एक बार नर्मदा नदी देखी थी । नवंबर माह बहुत ही उद्धत-असंयत ! बस, वैसे ही बहते जाने की मेरी कामना है । मुझे झील-न बंधना नहीं भाता । चाहता हूं—बहते जाऊं, बहते जाऊं और अगर किसी दिन ट जाऊं, प्रपात बनकर अपना संतुलन खो हूं, तो भी अपने प्राप्य की दिशा में ही बढ़ूं—कर से संभल कर । यह गिरना शायद सारी मजोरियों का समाप्त होजाना होगा क्योंकि गिरने के बाद जब उठा जायेगा, तो कुछ निखरकर—संवरकर । —ललित सुरजन

०००

सुख ? महज एक कल्पना, जो होती साकार नहीं । दुःख ? सिर्फ एक दोस्त, जिसे करता कोई प्यार नहीं ।...बस, यही मेरे सुख की कल्पना है । —रा० प्र० द्विवेदी 'रामेश्वर'

०००

सत्साहित्य के प्रचार के लिए रेल-गाड़ियों में चलते-फिरते पुस्तकालय हों, जिनमें 'नवनीत' की पुरानी फाइलें भी हों । सर्वाधिकार-सुरक्षित श्रेष्ठ कृतियों का पुनर्मुद्रण हो, ताकि वे फिर प्रकाश में आ सकें । —शंभूनारायण श्रीवास्तव

मेरी कल्पना का सुख

कश्मीर की हसीन वादियों के बीच किसी कोने में मेरा छोटा-सा मकान हो, सामने झील हो . . . . और मैं रात में दूर, बहुत दूर तक नाव पर बैठा घूमता रहूं । . . . . सामने की पहाड़ियों से किसी प्रेयसी की आवाज गूंजकर मेरे हृदय को आंदोलित कर दे और जिंदगी-भर वह मेरे कानों से टकराती रहे । —रमेश वर्मा 'सरस'

०००

अठारह वर्ष की नौकरी के बाद भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे पैर अभी जमे नहीं। जीवन में विकट परिस्थितियां व संघर्ष आते ही जाते हैं। शहरी जीवन से ऊब हो आयी है। इच्छा होती है कि किसी कस्बे में बस जाऊं, जो रेल्वे स्टेशन हो। नौकरी की चिंता न हो। थोड़ी-सी खेती हो, छोटा-सा घर हो और दैनिक अखबार मिलता रहे। स्वार्थी मित्रों की चौकड़ी से दूर रहूं। अपनी एक शानदार लायब्रेरी हो। —गोपालप्रसाद साध

०००

हिमगिरि की तराई हो, दूर श्वेत हिमशृंगों की मनोमुग्धकारी आभा हो, सुंदर उपवन हो, स्वच्छ सरिता और उसके तट पर हो एक 'कला-कुंज', जिसमें गरीब बच्चों को शिक्षा और बेकारों को काम मिल सके। —महेंद्र

०००

आज हमारी अवस्था यह हो गयी है कि सिवा अपने लाभ के कुछ और सोचते ही नहीं। मैं चाहता हूं कि हमारा देश सुखी-समृद्ध और महान हो, हमारे आस-पास का वातावरण स्वच्छ हो और सब लोग एक-दूसरे की मुसीबत में हाथ बंटाने को तैयार रहें। —शिवाजी राव घाटगे

०००

मैं रात-दिन तेजी से भागते काल-चक्र, बदलते मूल्यों, अंधाधुंध दौड़ती भीड़ से अलग, भूखी आंखों के परदों पर भांति-भांति के चित्र उतारता हूं कि कोई निष्ठावान चरित्र अथवा कोई प्रमथ्यु (जिसने राजा जुपिटर के महलों की बंधी आग को मुक्त किया था) कुछेक हाथों की रोशनी को छीनकर जनसाधारण के बीच उछाल दे, ताकि हर आदमी अपना सूरज लेकर जी सके, उनमें एक मैं भी हूंगा और तब मैं रोटी-कपड़ा-मकान की चिंता से मुक्त होकर और प्राणघातक कुंठाओं, वर्जनाओं और शंकाओं से ऊपर उठकर मां सरस्वती की स्वस्थ आराधना कर सकूं, शायद तब साहित्य-मंदिर राजनीतिक अखाड़ा भी नहीं बनेगा। —बलराज जोशी

०००

हमारे देश में जिस प्रकार प्राकृतिक बनावट में विषमता है, उसी प्रकार सामाजिक क्षेत्र में भी जमीन-आसमान का अंतर है। एक तरफ लखपति-करोड़पति हैं, तो दूसरी तरफ करोड़ों की संख्या में निर्धन हैं। मैं ऐसे समाज की आकांक्षा करता हूं, जिसमें सभी लोग सुख-शांति से जीवन बिता सकें। —अवध विहारी भोंडले

०००

मेरा जीवन उस तीर की भांति हो, जो लक्ष्य-वेध करके भी ठहरे नहीं, बल्कि चलता ही रहे। और प्रत्येक शुभ कामना तथा आकांक्षा मेरा लक्ष्य हो। परस्पर ईर्ष्या न हो। अपने खेत के काम में कोई आगे निकल जाये, तो क्या हम उसका हंसिया छीनना चाहेंगे? फिर यह सारा विश्व भी तो अपना खेत ही है! —नथु कालु चौहाण

०००

वास्तव में सुख की कल्पना करने में जो सुख है, उसे पा जाने में शायद उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौथाई भी नहीं। कल्पना का सुख तभी सुख है, जब तक वह कल्पना-जगत में। वास्तविक जगत में आया नहीं कि सुख देने का अपना बहुत कुछ सामर्थ्य खो बैठेगा। —अमृतलाल बेगड़

०००

मैं चाहता हूं कि मेरी बम्बई की एक छोटी-सी बहन का प्रेम, नागपुर के रिश्तेदारों का मोह, घर के माता-पिता और भाई-बहनों का प्यार—इतना ही नहीं, बल्कि इस समूचे विश्व का दायरा एक संदूक में संकुचित हो जाये, ताकि मैं उसे अपने कर्तव्य-क्षेत्र—इंजिनियरिंग-कार्य में सभी को प्राप्त कर सकूं। —चंद्र प्रकाश देवरस

शिक्षक और शिष्य का आदर्श

शिष्य जब गुरुकुल में प्रविष्ट होने के लिए शिक्षक के पास पहुंचता है, तब वह उसका उपनयन संस्कार करता है। वेद का कथन है—" शिक्षक उपनयन संस्कार करके शिष्य को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। उसे तीन रात्रि अपने उदर में रखता है। फिर जब शिष्य जन्म लेता है, तब उसके दर्शन के लिए देव एकत्र होते हैं।"

यह वर्णन शिक्षक-शिष्य के पारस्परिक संबंध पर अच्छा प्रकाश डालता है। शिष्य का शिक्षक के अधीन रहना वैसा ही है, जैसे शिशु का माता के गर्भ में रहना। गर्भस्थ शिशु का जैसा निकट संबंध माता के साथ होता है, वैसा ही शिष्य का शिक्षक के साथ होना चाहिये। यज्ञोपवीत देने को 'उपनयन संस्कार' इसीलिए कहा जाता है कि उसके द्वारा शिक्षक शिष्य को अपने समीप लाता है।

शिष्य तीन रात्रि शिक्षक के गर्भ में वास करता है। यहां तीन दिन न कहकर तीन रात्रि कहना साभिप्राय है। रात्रि अज्ञान का उपलक्षण है। शिष्य त्रिविध अज्ञान से घिरा होता है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर चुकने पर प्रथम रात्रि पार हो जाती है, माध्यमिक शिक्षा पूर्ण होने पर द्वितीय रात्रि एवं उच्च शिक्षा समाप्त होने पर तृतीय रात्रि। यह आजकल की दृष्टि से स्थूल वर्गीकरण है; अन्यथा ज्ञानकांड, कर्मकांड तथा उपासनाकांड विषयक अज्ञान को एक-एक रात्रि माना जाता है। तीन रात्रि गर्भ में रहकर फिर शिष्य जन्म लेता है, स्नातक बनता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य को 'द्विज' इसीलिए कहते हैं कि एक बार वे माता के गर्भ से तथा दूसरी बार आचार्य के गर्भ से जन्म लेते हैं। जब वह स्नातक बनता है, तब देवजन उसके दर्शनार्थ एकत्र होते हैं।

इस आलंकारिक वर्णन से वेद निर्दिष्ट करता है कि शिक्षक का शिष्य के प्रति माता-सा संबंध हो तथा माता गर्भस्थ शिशु के लिए जो बलिदान करती है, शिक्षक भी शिष्य के लिए वह बलिदान करने के लिए उद्यत रहे। —प्रो० रामनाथ वेदालंकार

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डी० एफ० एन० हैरिसन के एक लेख के आधार पर प्रस्तुत

जिस पदार्थ को नाक में पहुंचाकर छींक हासिल की जाती है, उसका नाम है सुंघनी तंबाकू। यों तो इसे बहुत पुराने—हिपोक्रेटस के—जमाने से दवाओं के काम में लिया जाता रहा है; पर आज जो सुंघनी सूंघी जाती है, वह बारीक पिसी हुई तंबाकू है और बावजूद इसके कि लोग इसे बड़े चाव से 'सूंघते' या इसकी 'फंकी' लेते हैं, यह कोई लाभ नहीं पहुंचाती सिवा इसके कि इससे संभवतः अंतर्देशीय आय बढ़ती है।

फ्रांस में तंबाकू आयी ब्राजील से, १५५६ में। लाया इसे आंद्रे थेवट नामक एक फ्रांसीसी। सुंघनी के रूप में प्रचलित किया इसे जीना निकोट ने, १५५९ में। निकोट पुर्तगाल के गाजा सेबेस्तियन के यहां फ्रांस के राजदूत थे। सुंघनी को उन्होंने आधासीसी के दर्द की दवा के रूप में चलाया और उनके नाम पर १५७० से इसे निकोटियाना कहा जाने लगा।

तंबाकू के उत्तेजक गुणों के कारण यह बड़ी तेजी से प्रचलित हुई और लोगों में इसकी आदत पड़ती गयी। शताब्दी समाप्त होते-होते फ्रांस में यह हालत थी कि सुंघनी के आदी घर-घर पाये जाने लगे—यह सबसे ज्यादा आम सामाजिक 'लत' बन गयी।

ब्रिटेन में सुंघनी १६६५ की भीषण प्लेग के दिनों में लोकप्रिय हुई—कारण यह था कि लोगों के मन पर इसका यह सिक्का बैठ गया था कि इसमें रोग-निरोधक शक्ति है, साथ ही यह दुर्गंध से बचाती है। स्काट लोगों ने सुंघनी को इतने उत्साह से अपनाया और वे उसका इतना अधिक सेवन करने लगे कि वे सुंघनीबाजों के प्रतीक बन गये और सुंघनी की दुकानों पर दुकानदार उनका पुतला लगाने लगे। पहाड़ी व्यक्ति का यह पुतला मानो साइनपोस्ट बन गया और सुंघनी की दुकान का परिचय देने लगा। सत्रहवीं सदी के अंत तक सुंघनी जीवन का बहुत जरूरी फैशन बन गयी; किंतु सुंघनी का स्वर्ण-काल आया ब्रिटेन में जार्ज तृतीय और उसकी महारानी शार्लोत (१७६०-१८२०) के समय में। रानी सुंघनी-की इतनी आदी थी कि लोगों ने उसका नाम 'सुंघनी शार्लोत' रख दिया था।

रानी की ही बात नहीं, उन दिनों क्या पुरुष, क्या नारी; क्या डाक्टर, क्या मरीज; क्या साधु, क्या गृहस्थ—सब सुंघनी-भक्त थे। लार्ड नेल्सन, वेलिंग्टन के ड्यूक, मेरी अंतोन्वा, नेपोलियन, डिसरायली, पोप और प्रसिद्ध डा० सैम्युअल जान्सन—सभी चुटकी-भर सुंघनी से ताजगी लिया करते थे। प्रायः सुंघनी सुंदर, सजी हुई मूल्यवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डिबिया में रखी जाती थी। ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि उस समय के प्रमुख चिकित्सक डाक्टर लैडक्लिफ ने अपने रोगी डीन स्विफ्ट को कान के भीतर के एक रोग के लिए जो दवा बतायी, वह और कुछ नहीं, सुंघनी ही थी।

सुंघनी-सेवन की प्रथा १९-वीं सदी के मध्य तक चलती रही—उसमें निरंतर तेज तंबाकू काम में लेने का क्रम चलता रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से अब फिर उसका शौक बढ़ रहा है। अमरीका के कृषि-विभाग का अनुमान है कि १९६१ में १ करोड़ ५४ लाख २२ हजार एक सौ किलो सुंघनी बिकी—सारी-की-सारी अमरीका में। लंदन में भी सुंघनी की दुकानें मौजूद हैं। आज भी ये सुंघनी के ५० विभिन्न मिश्रण बेचती हैं।

सुंघनी तैयार करने का जो हुनर है, सुंघनी-निर्माता उसे एकदम गुप्त रखते हैं। ब्रिटेन में सुंघनी प्रायः तंबाकू की पत्तियों और डंठलों को बारीक पीसकर तैयार की जाती है। पीसने से पूर्व तंबाकू को नमक के घोल में रखकर उससे खमीर उठाया जाता है और इस प्रकार उसे 'अहानिकारक' बना दिया जाता है। पीसने के बाद उसमें सुगंध मिलायी जाती है। पर हुनर इन बातों में नहीं है, वह तो है विभिन्न तंबाकुओं के मिश्रण में।

यह तो रही पश्चिम की सुंघनी की बात, अब पूर्व की सुंघनी लीजिये। थाइलैंड-जैसे देशों में इसका बहुत प्रचलन है। पूर्व में जो सुंघनी लोकप्रिय है, पश्चिम में काम में आने-वाली सुंघनी से बहुत भिन्न है। पूर्व की सुंघनी में मिश्रण की वस्तुओं और तैयार करने के तरीके में काफी फर्क है। इस सुंघनी में ५० प्रतिशत सूखी तंबाकू और ५० प्रतिशत पूर्वी गोंद रहता है, साथ में कुछ हड्डी का पाउडर भी मिलाया जाता है। गोंद तैयार करने के लिए चूने को भट्ठी में काफी ऊंचे तापमान पर पकाया जाता है। इस प्रकार इसमें कैलशियम कार्बोनेट और फास्फेट काफी मात्रा में रहते हैं। पानी मिलाने के बाद गोंद के इस पेस्ट में तंबाकू मिला दी जाती है और फिर इसे धूप में सुखाया जाता है।

सूखे कत्थई पाउडर के रूप में तैयार सुंघनी का थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सेवन किया जाता है। घोड़े की नाल के आकार की धातु की नली की मदद से इसे लिया जाता है। नली का एक सिरा मुंह में और दूसरा नाक में रखा जाता है। फूंक मारने पर सुंघनी नाक के भीतर चली जाती है — यों यह एक प्रकार का धूम्रपान कहा जा सकता है।

दक्षिण अफ्रीका की बंतू जाति में सुंघनी लेने का आम रिवाज है और समा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोहों के समय तो इससे खास आवभगत की जाती है। सुंघनी में सिर्फ तंबाकू ही नहीं होती; उसे तो बल्कि बहुत मामूली उत्तेजक माना जाता है और इसलिए कई तरह की भस्में और जड़ी-बूटी भी पीसकर सुंघनी में मिलायी जाती हैं, उसे तेज और नशीली बनाने के लिए। वहां २० से ऊपर ऐसे पेड़-पौधे हैं, जो सुंघनी में इस्तेमाल के लिए मशहूर हैं। इन्हें जलाकर, राख को पीसकर उसमें थोड़ा-सा पानी मिलाया जाता है। स्वाद के लिए नींबू का रस या यूकलिप्टस का तेल भी मिलाया जाता है। जब इस राख में तंबाकू का पाउडर मिलाकर सुंघनी बनायी जाती है, तो वह बड़ी तेज होती है। इसमें न केवल निकोटिन है, बल्कि कार्सीनोजन नामक पदार्थ भी रहता है, जिससे कैंसर फैलता है।

सुंघनी में निहित पदार्थों और उसके प्रयोग की विधि के अनुसार लोग विभिन्न रोगों के शिकार होते हैं। ब्रिटेन में आम तौर पर इसे नाक से सूंघकर लिया जाता है। नथुने में चुटकी-भर सुंघनी हाथ से या बांदी की चम्मच से रखकर गहरी सांस के साथ उसे भीतर खींच लिया जाता है। यों सुंघनी-निर्माताओं की सोसायटी ने १८५७ में सुंघनी लेने की १२ कलात्मक विधियां बतायी थीं, जो सुंघनी की पेटी पर छपी हुई रहती थीं। ब्रिटेन की संसद के दोनों सदनों में सुंघनी लेने पर कोई पाबंदी नहीं है, जबकि धूम्रपान वर्जित है।

हर प्रकार की तंबाकू में उसका विष—निकोटिन—मौजूद रहता है। सुंघनी के द्वारा नसों में पहुंचकर वह अपना विष तक प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता।

ऐसी घटना भी हुई है कि सुंघनी की ८ ग्राम मात्रा निगलने पर शरीर में घातक विष फैल गया है। जिन शराबों में सुंघनी मिलायी जाती है, वे विषाक्त होती हैं। एक शाही दावत में कवि सैंतुअल सुंघनी-मिली शराब पीने के कारण भोजन की मेज पर ही मर गया था।

अमरीका में सुंघनी लेने का आम तरीका यह है कि चुटकी-भर पाउडर मुंह में मसूड़े और निचले होंठ के बीच में दबा लिया जाता है। दक्षिण अफ्रीका की जोसा और फिंगो जातियों में भी यही विधि प्रचलित है। इस विधि का लोकप्रिय नाम है—'फंकी लेना'। महिलाओं को यह ढंग विशेष प्रिय है। इसमें सुंघनी खर्च भी कम होती है और आदत जल्द बनती है। भारत में भी इस तरीके से तंबाकू खायी जाती है।

सुंघनी के आदी सुंघनी लेना २० वर्ष की उम्र से शुरू कर देते हैं और ४० साल तक आनंद उठाते हैं या तबतक, जब तक कि वे अपने इस अपराध के कारण रोग में जकड़ नहीं जाते।

सुंघनी की डुबकी लेनेवालों को मुंह का कैंसर होता है। रोजनफेल्ड और कैलावे की खोज के अनुसार ९० प्रतिशत महिला-रोगियों को जिन्हें मुंह का कैंसर हुआ, फंकी लेकर सुंघनी खाने की आदी थीं।

जोहांसबर्ग के अस्पतालों में हुए अनु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वेक्षण के अनुसार १९४९-५१ के कुल कैंसर-रोगियों में से ६.९ प्रतिशत ऐसे थे, जिनके श्वास-मार्ग में गांठें पड़ी हुई थीं, सुंघनी सूंघने के परिणामस्वरूप।

भारत में भी जहां पान में तंबाकू खायी जाती है, मुंह का कैंसर होने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। न्यू ब्रिटेन और न्यूगिनी में ऐसी घटनाएं भारत की अपेक्षा बहुत कम होती हैं। कारण यही है कि यहां के लोग पान तो खाते हैं; पर उसके साथ तंबाकू का सेवन नहीं करते।

यूरोप में घातक रोगों के जितने बीमार आते, उनमें ५० प्रतिशत फेफड़े के कैंसर से पीड़ित थे; किंतु बंतू बीमारों का प्रतिशत १ ही था। इसका कारण यह है कि यूरोप वाले धूम्रपान बहुत करते हैं, जबकि बंतू लोगों में इसका रिवाज नहीं के बराबर है।

इससे यह बात भी सामने आती है कि धूम्रपान की अपेक्षा सुंघनी कम खतरनाक है। खास तौर से ब्रिटेन में जो सुंघनी व्यावसायिक उद्योगों द्वारा बनायी जाती है, वह खतरे से बहुत कुछ दूर होती है।

ग्रेट ब्रिटेन में सुंघनी के आदी २२ व्यक्तियों के अध्ययन से पता चला कि सुंघनी के कारण नासा-मार्ग में लगातार परिवर्तन होता जाता है; पर यहां की व्यावसायिक सूंघनी ऐसी है, जो कैंसर-उत्पादक तत्वों को पैदा नहीं करती।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जो लोग सुंघनी के बिना न चला सकें, वे ऐसी सुंघनी लें, जो कम-से-कम खतरनाक हो।

★

श्रुतायुध महाभारत-काल का एक महावीर था। उसके पिता वरुण ने उसे एक शत्रु-घातिनी गदा प्रदान की थी। उसकी यह विशेषता थी कि बड़े-से-बड़े बलवान शत्रु पर भी उसका प्रहार निष्फल नहीं हो सकता था; लेकिन किसी निहत्थे या निरपराध व्यक्ति पर प्रयोग करने से वह पलटकर प्रयोक्ता को ही मार डालती थी। वरुण ने यह रहस्य श्रुतायुध को बताकर सावधान कर दिया था कि प्रमादवश इस महान शक्ति का दुरुपयोग न करना। इस गदा के कारण ही श्रुतायुध संसार में अजेय शूरवीर माना जाता था।

भारत-युद्ध में जिस समय अर्जुन जयद्रथ के वध का संकल्प करके बड़े वेग से शत्रुओं पर आक्रमण कर रहा था, राजा श्रुतायुध उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा। अर्जुन ने उसके सारथी और घोड़ों को मार डाला। श्रुतायुध बाणों से आहत होकर रथ से कूद पड़ा और हाथ में अमोघ गदा लेकर अर्जुन की ओर झपटा। अर्जुन की विजय से प्रसन्न होकर कृष्ण उस समय अपना शंख बजा रहे थे। ऐसे दारुण समय में कृष्ण का हर्ष से शंख बजाना श्रुतायुध को बहुत ही अप्रिय लगा। उत्तेजितावस्था में उसने दूर से वह गदा कृष्ण के ऊपर ही फेंक दी। जो होना था, वही हुआ। श्रुतायुध की गदा लौटकर उसी के सिर पर वज्र की तरह गिरी। उसका एक-एक अंग चकनाचूर हो गया।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्येन

दस-बारह साल पुरानी बात है, विश्व-भारती, हिन्दी-भवन के तत्कालीन अध्यक्ष का पत्र आया कि आचार्य गुरदयाल मल्लिक देहरादून आनेवाले हैं, उनसे जरूर मिलना। और जब मल्लिकजी आये, तो मैं बीमार था। मैंने अपनी असमर्थता का संदेश उन तक पहुंचा दिया। दूसरे दिन क्या देखता हूं कि वे स्वयं ही मेरे यहां चले आये हैं। उस दिन पहले पहल मल्लिकजी की विनम्रता, उदारता और आत्मीयता का परिचय मिला।

जब मैं शिमला पहुंचा, तो 'हिमाचल ब्रह्म मंदिर' में मेरे ठहरने की व्यवस्था हुई। वहां मल्लिकजी गर्मियों में प्रायः आकर ठहरते हैं और लोगों को अपने प्रवचन तथा सत्संग से लाभान्वित करते हैं। इस प्रकार उन्हें निकट से देखने और उनके सम्पर्क से लाभ उठाने का अवसर मुझे मिलता रहा।

गत वर्ष जब वे शिमला में थे, तो उन दिनों आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी आये हुए थे। हम कुछ मित्र द्विवेदीजी के निवास-स्थान की ओर बढ़ रहे थे कि रास्ते में मल्लिकजी से भेंट हो गयी। वे द्विवेदीजी से मिलकर लौट रहे थे। मैंने अपने साथियों का परिचय दिया, तो मल्लिकजी राकेशी से बोले—"कोई कविता सुनाओ!" राकेशी की कविता समाप्त हुई, तो मैंने मल्लिकजी से गुरुदेव टैगोर का कोई गीत सुनाने के लिए कहा। वे कहने लगे—"मैं गुरुदेव के गीत नहीं गाता।" हम तीनों आश्चर्य से मल्लिकजी के मुंह की तरफ देख रहे थे। मैंने सोचा कि शायद उन्हें इस समय कोई गीत पूरा याद नहीं आ रहा है, इसलिए मैंने कहा—"दो-चार पद ही सुना दीजिये किसी गीत के। आपके मुंह से सुनने का मन है।"

मल्लिकजी कहने लगे—"मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं गुरुदेव के गीत कभी नहीं गाऊंगा।"

अब तो हमारी उत्सुकता और बढ़ गयी। मैंने पूछा—"इस प्रतिज्ञा की क्या कोई कहानी है?"

"हां," और वे बताने लगे—"शांतिनिकेतन की ही बात है, एक दिन सुबह नहाते हुए मैं गुरुदेव का एक गीत गुनगुना रहा था। नहाकर बाहर निकला, तो देखा गुरुदेव टहल रहे थे। उन्होंने पूछा—'मेरा गीत तुम ही गा रहे थे?' मैंने 'जी हां' में उत्तर दिया, तो बोले—'तुम उसे सही ढंग से नहीं गा रहे थे, उसकी वह धुन नहीं है'। मैंने बताया कि मैं तो गीत के काव्य का आनंद उठाने के लिए ही गा रहा था, संगीत के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार से नहीं। तो गुरुदेव बोले– 'नहीं, जैसे मैंने रखा हुआ है, वैसे ही गाना चाहिये।' लेकिन यह मेरे बस की बात न थी। और उसी दिन गुरुदेव के सामने ही मैंने प्रण कर लिया कि उनका गीत नहीं गाऊंगा।"

विनय की मूर्ति मल्लिकजी का यह एक दृढ़निश्चयी रूप था।

श्री गुरदयाल मल्लिक का जन्म डेरा इस्माईल खां (अब पश्चिमी पाकिस्तान में) श्री नारायणदास मल्लिक के घर हुआ। स्कूली शिक्षा डेरा इस्माईल खां, क्वेटा और लाहौर के स्कूलों में प्राप्त करने के बाद उन्होंने बंबई के सेंट जेवियर्स कालेज में प्रवेश किया। शिक्षा समाप्त करने के बाद कुछ समय तक अपने बड़े भाई के व्यावसायिक कार्यालय में काम करते रहे।

आचार्य गुरदयाल मल्लिक

सन् १९१९ के अगस्त महीने में मल्लिकजी शांतिनिकेतन पहुंचे। बीच-बीच के कुछ उस अरसे को छोड़कर, मल्लिकजी सन १९४६ तक शांतिनिकेतन में ही रहे। १९४६ में शांतिनिकेतन छोड़ने के बाद, सामाजिक तथा शैक्षणिक कार्यों से नाता जोड़कर प्रमुख रूप से हरिजनों तथा ग्रामीणों के बीच रहकर आज तक सेवा-कार्य में रत हैं।

गांधीजी से मल्लिकजी की भेंट लाहौर में जलियांवाला बाग कांड की जांच के सिलसिले में अक्टूबर १९१९ में हुई थी। फिर १९२१ में अहमदाबाद में गांधीजी के सत्याग्रह-आश्रम से संपर्क जुड़ा और वह संपर्क समाज-कार्य के माध्यम से आज तक बना हुआ है।

मल्लिकजी शांतिनिकेतन में अंग्रेजी के शिक्षक थे। गुरुदेव के संपर्क की देन के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया–"शांतिनिकेतन की शिक्षा-प्रणाली में रचनात्मक कलाओं के माध्यम से व्यक्तिगत विकास करने पर जोर था। गुरुदेव के संपर्क की देन है–'सर्वदेशीय मनुष्य की दृष्टि।"

"और स्वर्गीय एंड्रूज का आप पर क्या प्रभाव पड़ा?"

"मानव-जाति की सेवा की आकांक्षा–" मल्लिकजी का संक्षिप्त-सा उत्तर था। और आज भी इसी आकांक्षा के पालन में उनका अधिकांश समय लगता है। गांधीजी और एंड्रूज जैसी विभूतियों की प्रेरणा से उन्हें दरिद्रनारायण की सेवा में रुचि हुई। गुरुदेव की प्रेरणा से रहस्यवादी कविता के अध्ययन में विशेष रुचि बढ़ी।

मल्लिकजी समाज-सेवी होने के साथ-साथ लेखक और समीक्षक भी हैं। अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्रिकाओं के लिए "जी० एम०" नाम से पुस्तकों की समीक्षा करते रहे हैं। हिन्दी में गांधीजी और 'गुरुदेव', 'गीतांजली एक अध्ययन' तथा 'दिल की बात' नामक पुस्तकें लिखी हैं। प्रथम दो पुस्तकें गुजराती में भी प्रकाशित हुई हैं। एक पुस्तक उर्दू में स्व० सी० एफ० एंड्रूज पर लिखी है। अंग्रेजी में स्व० प्रेमचंद की लघु-कथाओं के अनुवाद के अतिरिक्त 'डिवाइन ड्वेलर्स इन द डैज़र्ट' तथा "हाउंड आफ द हार्ट" प्रकाशित हुई हैं।

मल्लिकजी ने एक बार चर्चा के दौरान कुछेक प्रश्नों के बड़े रोचक उत्तर दिये थे, वे इस प्रकार हैं :

"आपका प्रिय ग्रंथ कौन-सा है ?"

"गुरुदेव की 'गीतांजली'—अनेक में एक के दर्शन के कारण।"

"आपके प्रिय लेखक ?"

"टैगोर, कबीर और मीरा—ईश्वर-प्रेम पर दिये गये जोर के कारण।"

"आपका प्रिय संगीतकार ?"

"भक्ति-गीतों के सभी गायक।"

"आपका प्रिय चित्रकार ?"

"श्री नंदलाल बोस।"

"आपकी प्रिय हाबी ?"

"प्राकृतिक सौंदर्य के पर्यवेक्षण और चिंतन के माध्यम से मौनाभ्यास"।

"आपके स्वास्थ्य और कर्मशक्ति का रहस्य ?"

"ईश्वर की कृपा।"

"आपका भावी कार्यक्रम ?"

"सभी गतिविधियों से उत्तरोत्तर अवकाश।"

मल्लिकजी ने अपनी कर्मशक्ति का रहस्य 'ईश्वर की कृपा' बताया है; लेकिन जहां तक मैं समझ सका हूं, नियमितता उनके व्यवस्थित जीवन की कुंजी है। यह बात उनकी दैनिक जीवन-चर्या से भी स्पष्ट हो जाती है। ६९ वर्ष की आयु में भी वे बिलकुल स्वस्थ रहते हैं। सादे लिबास में सादा व्यक्तित्व, आकर्षक मुस्कान, निश्छल व्यवहार—इन सब गुणों ने मिलकर मल्लिकजी के मित्रों-श्रद्धालुओं की काफी बड़ी संख्या बना दी है।

हरिजन आश्रम (अहमदाबाद), फ्रेंड्स रूरल सेंटर (होशंगाबाद) तथा पंजाब की गांधी स्मारक निधि से उनका निकट का संपर्क है।

सबसे बड़ी बात—उनके विचारों में सुलझाव है, इसीलिए वे प्रभावशाली भी हैं।

अंत में मैंने उनसे पूछा—"आज के लेखकों के लिए क्या आवश्यक है ?" तो मल्लिकजी ने कहा—"निर्माण"

"और आज के संपादक के लिए क्या जरूरी है ?"

उनका उत्तर था—"इंटेग्रिटी" (निष्ठा)

और इन दोनों गुणों के आचरण से ही मल्लिकजी ने अपने व्यक्तित्व का निर्माण एवं संपादन किया है। यही उनका गुरुमंत्र है।

★

इतिहास जिस स्याही से लिखा गया है, वह पक्षपात और पूर्वाग्रह की स्याही है।—ट्वेन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेर को कैसे पकड़ा?

फ्रंक वक

सन १९२६ का वसंत मैंने सिंगापुर में गुजारा। क्या बारौनक और खूबसूरत शहर है। मेरा दिल चाहा कि उम्र का बाकी हिस्सा इसी हसीन शहर में बसर करूं; मगर ऐसा नहीं कर सकता। पेट की दोजख की आग बुझाने के लिए इधर-उधर मारा-मारा फिरना पड़ता है, चार दिन भी चैन से बैठने का समय नहीं मिलता।

जवानी के तीस साल दरिंदों-परिंदों और जलीय जानवरों को पकड़ने में कट गये, दुनिया के बड़े-बड़े सर्कसों और चिड़िया-घरों में मेरा नाम शैतान की तरह मशहूर है। उन दिनों भी बर्मा जाने का मकसद सिर्फ चंद स्याह चीते और कुछ बंदर पकड़ना था। अपने लंबे तजुर्बे की बदौलत मैं जल्दी ही ये जानवर हासिल करने में कामयाब हो गया और अब मैं सिंगापुर के मौसमे-बहार का लुत्फ उठाने के बाद समुद्री जहाज से सानफ्रांसिस्को रवाना होने का इरादा रखता था, क्योंकि ये जानवर वहां के चिड़ियाघर के लिए ले जाने थे। पैंतीस-चालीस दिन के इस खतरनाक सफर में मेरे लिए सबसे ज्यादा जो चीज परेशान करनेवाली थी, वह उन जानवरों के पिंजरे थे। जी हां, लकड़ी, लोहे और टीन की चादरों के बने हुए पिंजरे—मैं अच्छी तरह इत्मीनान कर लेना चाहता था कि सफर के दौरान जहाज के हिचकोलों से कोई पिंजरा टूट तो नहीं जायेगा।

एक मर्तबा इसी लापरवाही की वजह से मैं मरते-मरते बचा था। किस्सा यह हुआ कि कांगो के जंगलों से मैंने एक जोड़ा बन-मानुस का पकड़ा था और मैं उस जोड़े को लकड़ी के एक बहुत मजबूत पिंजरे में बंद करके लंदन ले जा रहा था। एक रात समुद्र में जबर्दस्त तूफान आया, जहाज में रखे हुए जानवरों के पिंजरे एक दूसरे से टकराने लगे और उसी दौरान बनमानुस के पिंजरे की एक दीवार चटख कर टूट गयी, बस फिर क्या था? दोनों बनमानुस आजाद हो गये।

दरअसल इन पशुओं के लिए पिंजरे बनाना भी एक आर्ट है, जो हर बढ़ई के बस की बात नहीं—बड़ी तलाश के बाद मुझे सिंगापुर में ही एक कुशल चीनी बढ़ई मिल गया, जिसका नाम हिनमूंग था। मेरी और उसकी दोस्ती बरसों तक रही।

यात्रा से कुछ दिन पहले का जिक्र है, मैं सिंगापुर के होटल रेफल्ज के एक आराम-दायक कमरे में बैठा था कि एकाएक हिन-मूंग वहां आया, उसका चेहरा तमतमा रहा था, उसने आते ही कहा—"जनाब जल्दी चलिये, सुल्तान जहूर आपसे टेलिफोन पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई बात कहना चाहते हैं।"

मैं हैरत से उसका मुंह ताकने लगा। सुल्तान जहूर मेरा पुराना दोस्त था और मैं कई बार उसके साथ शिकार पर जा चुका था; लेकिन इतने सवेरे वह किस काम के लिए मुझे फोन कर रहा था? जरूर कोई खास बात है, यह सोचकर सीढ़ियां उतरकर नीचे कमरे में गया, जहां टेलिफोन रखा था। मैंने रिसीवर कान से लगाया।

"हेलो, मैं फ्रैंक बोल रहा हूं।"

"भई, मैंने तुम्हें बेवक्त तकलीफ दी।"

उधर से सुल्तान जहूर की जानी-पहचानी आवाज मेरे कान में आयी—"मैं सोच रहा था कि अगर तुम सफर पर रवाना हो गये, तो बहुत बुरी बात होगी—किस्सा यह है कि एक आदमखोर शेर ने बड़ी तबाही फैलायी है, क्या तुम उसे जिंदा पकड़ सकते हो? अगर तुम उसको जिंदा पकड़ लो, तो तुम्हें कोई भी चिड़ियाघर अच्छी-खासी रकम दे सकता है, बोलो क्या इरादा है?"

सुल्तान जहूर ने एक सांस में ये सारी बातें कह डालीं। मैंने एक क्षण के लिए इस सूरते हाल पर गौर किया, मामला बेढ़ब था, मैंने बहुत से शेरों और चीतों को गिरफ्तार किया था; लेकिन आदमखोर से आमना-सामना करने की नौबत कभी न आयी थी। सुल्तान जहूर ने शायद मेरी खामोशी से अंदाजा लगा लिया कि मैं इस बात में रजामंद हूं, वह फौरन बोला—"देखो दोस्त, मैं तुम पर जोर नहीं दे सकता कि तुम जरूर ही उस आदमखोर को जिंदा पकड़ो—उसे मारा भी जा सकता है, मैं तो सिर्फ यह चाहता हूं कि वहां काम करनेवाले मजदूरों में फैला हुआ डर दूर हो जाये, अगर तुम रजामंद हो, तो मैं सिपाहियों को तुम्हारी कमान में दे सकता हूं।"

मैंने हां भर ली और अपने कमरे में आकर हिनमूंग को बताया कि सुल्तान ने फोन पर क्या कहा है, तो उसका चेहरा डर से सफेद पड़ गया। वह देर तक चीनी जबान में कुछ कहता रहा, क्योंकि वह अंग्रेजी रवानी से नहीं बोल सकता था।

उसी रोज दोपहर को रियासत ज़हूर के शानदार किले में वहां के मुसलमान सुल्तान से मेरी मुलाकात हुई। यह किला रियासत के फौजी हेडक्वार्टर की हैसियत से भी इस्तेमाल होता था। सुल्तान ने मेरा परिचय अपनी फौज के एक मेजर से कराया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही इस साहसिक काम में मेरा मदद-गार बननेवाला था। उसके बाद दूसरे सिपाहियों को देखा, वे सब खाकी वर्दी पहने हुए थे और काफी चाक व चौबंद दिखाई देते थे, उन्होंने सिरों पर मलाया की जानी-पहचानी निशानी स्याह टोपियां पहन रखी थीं।

मेजर ने मुझे बताया कि मोटर तैयार है, इसलिए हमें फौरन घटनास्थल पर पहुंचना चाहिये। मेरी हिदायत के मुताबिक सुल्तान ने हुक्म जारी कर दिया था कि जिस कुली को शेर ने हलाक किया है, उसकी लाश जिस जगह पड़ी है, वहीं रहने दी जाये।

हम जल्दी ही वहां पहुंच गये। कुली की लाश मुझे दिखायी गयी। शेर ने उसकी एक टांग और बायां शाना चबा लिया था, गर्दन और सीने पर भी गहरे घाव थे। शेर ने उस कुली पर उस वक्त हमला किया, जब वह एक दरख्त से रबर निकाल रहा था, उसका प्याला और टोका भी करीब ही पड़े थे।

रबर के उन दरख्तों की हिफाजत के लिए ऊंची कांटेदार झाड़ियों की एक दीवार चारों तरफ फैली हुई थी, उससे जरा हटकर अनानास के दरख्तों का एक झुंड था। इस झुंड के अंदर जाबजा शेर के पंजों के निशान साफ-साफ दिखाई दे रहे थे और वह उसी बाड़ के अंदर से गुजरकर रबर के जंगल तक पहुंचा था। चुनांचे इस स्थान पर बाड़ के अंदर खासा बड़ा सूराख बना हुआ था, जिससे पता चलता था कि जिस शेर ने उसे मारा है, वह गैरमामूली कूव्वत रखता है।

मैंने तुरंत अपने आदमियों को हुक्म दिया कि फौरन बेलचे और कुदालें मंगवायी जायें। थोड़ी देर बाद बेलचे और कुदालें लिये हुए मजदूर वहां पहुंच गये। अनानास के दरख्तों के झुंड में ऐन उस मुकाम पर जहां शेर ने झाड़ियों की बाड़ को काटा-छांटा था, चार फुट लंबा, चार फुट चौड़ा और पंद्रह फुट गहरा गढ़ा खोदने की हिदायत की। तीन घंटे की मेहनत के बाद मजदूरों ने यह गढ़ा खोद डाला। गढ़े का मुंह हमने घास-फूस, नर्म शाखों और पत्तों से इस तरह ढांप दिया कि करीब से देखने पर भी अंदाज न हो कि यहां गहरा गढ़ा खुदा हुआ है। उसके बाद गढ़े से निकली हुई मिट्टी जंगल में इधर-उधर जरा फासले पर बिखेर दी गयी और कुली की लाश को वहीं पड़ा रहने दिया गया, जहां एक रोज पहले शेर ने उसका कुछ हिस्सा खाया था। मजदूरों को समझा दिया गया कि इस हिस्से में कोई शख्स न आये, वर्ना शेर खबरदार हो जायेगा और इधर का रुख नहीं करेगा। सिपाहियों के जिम्मे यह ड्यूटी लगायी गयी कि वे सुबह के वक्त इस गढ़े का मुआइना करें, अगर शेर इसमें मौजूद हो, तो मुझे जहूर के किले में खबर कर दें। मुझे उम्मीद थी कि शेर रात को किसी वक्त इधर आयेगा और गढ़े में जरूर गिरेगा।

लेकिन अगले रोज दोपहर तक कोई खबर न आयी, तो इंतजार की परेशानी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूटने के लिए मैं अली को साथ लेकर खुद वहां चला गया। सूरते हाल में कोई तब्दीली नहीं हुई थी। शेर उस रात इधर नहीं आया और न किसी शख्स ने उसे देखा और न उसकी आवाज सुनी—कुली की लाश अब बदबू देने लगी थी और उसके साथी और रिश्तेदार यह बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थे। लिहाजा मैंने कुली की लाश को वहां से उठवा दिया।

अब सवाल यह था कि मैं क्या करूं? क्या सफर का प्रोग्राम मुल्तवी करके इस आदमखोर की खोज में लग जाऊं? या सुल्तान जहूर से साफ-साफ कह दूं कि मैं यहां नहीं रुक सकता, क्योंकि जो जानवर मेरे कब्जे में हैं, उनकी खुराक और देखभाल का खर्च इतना ज्यादा है कि मेरी जेब जल्दी ही खाली हो जायेगी। मैं उन जानवरों को वादे के मुताबिक अमरीका पहुंचा देना चाहता हूं। अभी मैं यही सोच रहा था कि मेजर ने मुझ से कहा—"मैं अपने आदमियों को लेकर जंगल में आदमखोर की तलाश करने जा रहा हूं, मैं उसके ठिकाने का पता लगाऊंगा, अगर आप चलना चाहें, तो चलें।"

मैंने उससे कहा कि वह जंगल में जाकर आदमखोर को तलाश करे—अभी तो मैं सिंगापुर वापस जा रहा हूं, उसके बाद मैं सुल्तान जहूर से बात करूंगा—मेरे दिल में यह ख्वाहिश सिर उठा रही थी कि अगर मैं इस आदमखोर को पकड़ने में कामयाब हो जाऊं, तो वारे-न्यारे हो सकते हैं, मुझे सिर्फ इसी एक शेर की इतनी कीमत वसूल हो जायेगी, जितनी कीमत इन जानवरों को बेचकर हासिल करूंगा—लिहाजा क्यों न किस्मत आजमायी जाये।

तीसरे रोज एकदम सुबह सुल्तान जहूर की तरफ से भेजा हुआ एक जरूरी तार मेरे नाम आया। मैंने जब तार पर नजर डाली, तो हैरत से एकदम उछल पड़ा, उसमें लिखा था—"जल्दी पहुंचो, शेर गढ़े में गिर गया है।"

मैं फटी-फटी आंखों से तार का यह मजमून देखता रहा, खुदा की पनाह—मेरे वहम व गुमान में भी न था कि ऐसा वाकया इतनी जल्दी मुमकिन हो सकता है। मैंने अपने मुलाजिम अली से कहा कि वह मोटर का इंतजाम करे—जल्दी-जल्दी मैंने जरूरत की चंद चीजें अपने थैले में रखीं और मोटर में बैठकर सत्तर मील प्रति घंटे की रफ्तार से जहूर के जंगल की ओर रवाना हो गया। मेरे जोश की इंतहा न थी। अब मुझे सिर्फ यह फिक्र थी कि वे बेवकूफ मजदूर कोई ऐसी हरकत न करें, जिससे गढ़े में गिरा हुआ शेर फरार होने में कामयाब हो जाये।

मैं जब वहां पहुंचा तो हंगामा मचा हुआ था, हर शख्स बदहवासी के आलम में इधर-से-उधर भागा फिर रहा था, इतना शोर था कि कान पड़ी आवाज न सुनाई देती थी। सैकड़ों मजदूर और कुली जंगल में और अनानास के दरख्तों के झुंड में खड़े थे और सबकी नजरें उस गढ़े पर लगी हुई थीं, जिसके ऊपर कटे हुए दरख्तों के बड़े-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गड़े तने रख दिये गये थे, यह देखकर मैंने इत्मीनान की सांस लिया, गढ़े में से जब शेर के गुर्राने की आवाज मेरे कान में पहुंची, तो पहली बार फतहमंदाना मुस्कराहट मेरे होंठों पर फैल गयी, मैंने अली से कहा—देखा, आखिर हमने शेर को पकड़ ही लिया।"

मेजर और उसके सिपाही भी वहां मौजूद थे। उनके अलावा एक अंग्रेज औरत और उसका शौहर बड़ी दिलचस्पी से यह तमाशा देख रहे थे, औरत के हाथ में कैमरा था, और वह तरह-तरह से तस्वीरें उतार रही थी। मुझे देखते ही मजदूरों के चेहरे खिल उठे और वे भाग-भागकर मेरे गिर्द जमा होने लगे।

अब हर शख्स इस कोशिश में था कि शेर के पकड़े जाने की दास्तान सबसे पहले वह सुनाये। मैंने बमुश्किल उनको परे ढकेला और कहा—"मुझे पहले शेर को देखने दो, उसके बाद मैं हर शख्स का किस्सा सुनने के लिए तैयार हूं।"

मेजर और उसके सिपाहियों ने गढ़े पर रखे हुए बड़े-बड़े तनों में से एक तना उठाया, मैंने झुककर घास-फूस और पत्तों में से झांका, तो एक बहुत बड़ा शेर मुंह खोल अपनी सुर्ख-सुर्ख आंखों से मुझे घूर रहा था। वह गुर्राकर उछला और मेरे पंजा मारने की कोशिश की। उसका पंजा मेरे चेहरे से एक फुट दूर ही रह गया। मैंने अंदाजा किया कि अगर दरख्त के तने गढ़े के मुंह पर न रखे जाते, तो यह शेर इस गढ़े में से बड़ी आसानी से निकल सकता था, इसके लिए सिर्फ एक छलांग ही काफी थी। मैंने अपनी जिंदगी में बड़े-बड़े शेर देखे थे; लेकिन मलाया का यह आदमखोर अपनी मिसाल आप था। उसका कद गधे से भी ऊंचा और लंबाई बारह फुट थी, बल्कि इससे भी ज्यादा होगी। अब मेरे सामने यह मसला था कि इतने बड़े शेर को इस गढ़े में से कैसे निकाला जाये। इसी बीच अगर यह आजाद हो गया, तो फिर क्या होगा?

मेरा तरीका हमेशा से यह रहा है कि जब शेर गढ़े में गिर जाता, तो मैं रस्सियों की मदद से लोहे का पिंजरा गढ़े में लटका देता, उस पिंजरे में किसी जानवर को बंद कर दिया जाता, पिंजरे का दरवाजा रस्सी के जरिये मर्जी के मुताबिक खोला और बंद किया जा सकता था। शेर को एक दिन भूखा रखा जाता, शेर पिंजरे के जानवर को खाने के लिए जब बिलकुल आमादा हो जाता, तो फिर पिंजरे का दरवाजा ऊपर उठा लिया जाता, शेर पिंजरे में घुसकर उस जानवर पर झपटता और फौरन ही पिंजरे का दरवाजा गिरा दिया जाता। इस तरह शेर पिंजरे में कैद हो जाता और हम उसे आसानी से बाहर निकाल लेते; लेकिन इस शेर के मामले में सूरते हाल ही दूसरी थी। मैंने जो गढ़ा कायदे के मुताबिक खुदवाया था, वह इस शेर के लिए नाकाफी था।

मैंने घड़ी पर निगाह डाली, सूरज डूबने में अभी कई घंटे बाकी थे, मैंने फैसला किया कि चाहे कुछ हो मुझे आज ही इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमखोर को पिंजरे में कैद करके सिंगापुर ले जाना है। मैंने लोगों को हिदायत की कि मैं सिंगापुर जा रहा हूं, जरूरी इंतजाम के बाद फिर वापस आऊंगा। इस दौरान वे आदमखोर की पूरी-पूरी हिफाजत करें। और फिर मैंने अपनी मोटर को साठ मील फी घंटा की रफ्तार से छोड़ दिया। अली मेरे साथ था, हिनमूंग और उसके शागिर्द अपने मकान पर मौजूद थे। मैंने उनसे कहा कि वे फौरन सब काम छोड़कर एक बड़ा पिंजरा एक घंटे के अंदर तैयार कर दें। मैंने शेर के डील-डौल को पेशेनजर रखते हुए पिंजरे का नक्शा भी उन्हें समझा दिया, फिर बाजार से तीन सौ फुट लंबा और ढाई इंच मोटा बेहद मजबूत रस्सा खरीदा। रस्सा खरीदने के बाद मैं बंदरगाह पर गया और वजन उतारने की मशीन के बारे में पूछताछ की। उसके बाद शहर वापस आकर एक ट्रक किराये पर लिया। इस बीच हिनमूंग और उसके शागिर्द पिंजरा तैयार कर चुके थे। पिंजरा और रस्सा मैंने ट्रक में रखवा दिया। अली के भतीजे से कहा कि अब वह फौरन जहूर की तरफ चल पड़े। मैं अली को लेकर अपनी कार में पीछे-पीछे आता हूं।

मेरा इरादा था कि रास्ते में किला जहूर में रुककर सुल्तान से मुलाकात करता चलूं। ज्योंही मेरी गाड़ी किले के सहन में रुकी, सुल्तान अपने कमरे से बरामद हुआ। उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था, उसने खूब मुबारकबाद दी, फिर कहने लगा—"अच्छा हुआ कि तुम यहां आकर मुझसे मिल लिये, अगर शेर तुमको खा जाता, तो मैं कभी तुम्हें माफ न करता।" यह सुनकर मैं हंस पड़ा।

जब मैं किले से मोटर लेकर निकला, तो आसमान पर स्याह बादल जमा हो रहे थे और कहीं-कहीं बिजली भी कड़क रही थी। अली ने कहा—"बारिश होनेवाली है, जरा जल्दी पहुंचना चाहिये।"

मैंने एक्सेलरेटर पर पैर रख दिया और मोटर हवा से बातें करने लगी। मैं सोच रहा था कि अगर बारिश शुरू हो गयी, तो काम बिगड़ जायेगा। सबसे पहली मुश्किल तो यह होगी कि जंगल की नरम जमीन बारिश में भीगकर फिसलवां हो जायेगी और दूसरी रुकावट रस्सा पैदा करेगा। आप जानते हैं कि पानी में तर होकर रस्सा कितना सख्त हो जाता है। मैं अगर शेर को सूरज छिपने से पहले-पहले सुल्तान के पास न ले जा सका, तो बड़ी सुबकी होगी। शायद कुदरत मुझे इस बेजा दावे की सजा देने के लिए बारिश का यह जबर्दस्त तूफान ला रही थी।

उस रोज मैंने सत्तर मील फी घंटा की रफ्तार से मोटर चलायी। अली मेरे साथ बैठा थर-थर कांप रहा था, उसने दबी जबान से मोटर आहिस्ता चलाने के लिए कहा भी था; मगर मैं तो बारिश से पहले वहां पहुंचना चाहता था; लेकिन ज्यों ही मैं सड़क की आखिरी हद तक पहुंचकर मोटर से उतरा, बारिश शुरू हो गयी। अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन मील का सफर पैदल तय करना क्योंकि आगे घना जंगल था और मोटर के अंदर नहीं जा सकती थी। हमारे जल्दी ही पानी से तर हो गये, मगर रुके नहीं, बल्कि हम बराबर दौड़ते ढ़े के इर्द-गिर्द बहुत से कुली घेरा डे खड़े थे। मेजर और उसके सिपाही बारिश में भीग रहे थे, मुझे उनकी लगन दिली खुशी हुई। मैंने मेजर का शुक्रिया ा किया, तो वह सिर्फ मुस्करा दिया।

बारिश की परवाह किये बगैर मैं तेजी अपने काम में लग गया। गढ़े के अंदर पानी में भीगने के कारण गुर्रा रहा और मजदूर डरकर पीछे हटने लगे । मैंने उन्हें समझाया कि शेर इस गढ़े में निकल नहीं सकता; इसलिए वे इत्मी-नान से वहीं खड़े रहें। मैं चंद मिनिट में उसे पिंजरे में बंद कर दूंगा। वे सब मुझे हैरत से देख रहे थे। मैंने अपना लंबा शिकारी चाकू निकाला और रस्से के कई टुकड़े कर लिये, फिर उनके सिरों पर मुख्तलिफ फंदे लगाये, इसके बाद मैंने मजदूरों की मदद से गढ़े के ऊपर रखे हुए तनों में से दर्मियानी तना उठाया। अब मैं शेर को गढ़े के अंदर अच्छी तरह देख सकता था। बारिश का पानी गढ़े में जमा होने के कारण शेर का जिस्म कीचड़ में अच्छी तरह लथपथ हो चुका था और वह मुंह खोले बुरी तरह दहाड़ रहा था। शायद वह भूखा भी था।

चंद मिनिट तक शेर की हरकत गौर से देखने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि उसके पंजे चिकनी मिट्टी के अंदर फिसल रहे हैं, क्योंकि जब वह बेक़रारी से इधर-उधर घूमता या गढ़े की दीवार पर पंजे रखकर ऊपर उछलने की कोशिश करता, तो उसके पंजे फिसल जाते और वह पीठ के बल गढ़े में जा गिरता। मैं खुश था कि बारिश ने मेरे काम में जो रुकावट डाली थी, शेर भी उससे बचा नहीं रहा।

मैंने मेजर और उसके सिपाहियों से कहा कि वे होशियार रहें और अपनी बंदूकें हंगामी हालत के लिए तैयार रखें, क्योंकि हमारा वास्ता एक आदमखोर दरिंदे से था, जो न जाने कब हमारे हाथों से निकल जाये और किसकी जान ले ले। उधर बारिश धीरे-धीरे तेज होती जा रही थी। आसमान पर स्याह बादलों की फौज उमड़-उमड़कर आ रही थी और बिजली इस जोर से कड़कती कि दिल दहल जाते। हवा की शिद्दत से पानी के थपेड़े इस जोर से चेहरे पर पड़ते कि कुछ न सूझता। फिर आदमखोर का बराबर चीखना और दहाड़ना—आप अंदाज़ा कर सकते हैं कि कैसा भयानक दृश्य होगा।

मैं गढ़े के किनारे पर घुटनों के बल बैठ गया और कमंद शेर की गर्दन में फंसाने की कोशिश करने लगा। कई मर्तबा फंदा उसके गले में पड़ा, मगर ज्यों-ही मैंने उसे खींचना चाहा, शेर जोर से झटका मारता और अपनी गर्दन फंदे में से निकाल लेता और फिर गैज व गजब से दहाड़ने और उछलने लगता। उसे फौरन यह एहसास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गया कि मैं उसकी गर्दन रस्से से जकड़ लेना चाहता हूं। एक बार जब मैंने बड़ी एहतियात से फंदा उसकी गर्दन पर फेंका तो शेर ने अपना मुंह खोलकर उसे दांतों में दबा लिया और इस जोर का झटका मारा कि अगर गढ़े के ऊपर रखे हुए तनों का सहारा मुझे न मिलता, तो मैं ही उसमें जा गिरता और शेर की खुराक बन जाता। जालिम के दांत रेजर ब्लैड की तरह तेज थे। उसने कई रस्सों को दांतों से काट-काट-कर बेकार कर दिया।

एक घंटे की जबर्दस्त और जानलेवा कोशिश ने मुझे और शेर दोनों को थका दिया। अब मैंने एक नया फंदा बनाकर डाला। शेर ने उसे भी मुंह में दबाना चाहा, मगर कामयाब न हुआ। मैंने फौरन रस्सा खींच लिया और शेर का जबड़ा फंदे में आकर खुला-का-खुला रह गया। अब वह अपना मुंह बंद नहीं कर सकता था, मैंने जल्दी से रस्से का सिरा दो मजदूरों को थमाया और उन्हें हिदायत की कि उसे ढीला न होने दें। उसके बाद दूसरा फंदा फेंका, उसे शेर के दायें पंजे में फंसाकर वह भी मैंने दो मजदूरों के हवाले किया, फिर उसका बायां पंजा और कमर रस्सों में जकड़ ली। अब एक साथ पंद्रह मजदूर उस जालिम शेर को रस्सों में फंसाये हुए खड़े थे। शेर गढ़े के अंदर पूरी कूव्वत से उछल रहा था। मैंने उसे अब आठ फंदों में गिर-फ्तार कर लिया। गढ़े के चारों तरफ मजदूर और कुली रस्से थामे हुए थे और अकेला शेर कूव्वत में उन सब पर भारी था।

मैं बार-बार उन्हें हिदायत करता कि अगर रस्से जरा भी ढीले हुए, तो शेर आजाद हो जायेगा। शेर से इस जोर-आजमाई और बारिश में लगातार भीगने का नतीजा यह निकला कि मेरे कंधे, गर्दन और पीठ शल हो गयी। उधर पानी आंखों में बार-बार आ जाता। जब मैंने देखा कि शेर अच्छी तरह काबू में आ गया है, तो कुलियों को हुक्म दिया गया कि वे धीरे-धीरे रस्सों को अपनी तरफ खींचें और हम शेर को गढ़े की गहराई से निकालकर सतह के करीब ले आये। शेर को ऊपर उठाने के लिए मजदूरों को इस कदर जोर लगाना पड़ा कि बेचारे हांफने लगे, फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी।

अभी मैं सिपाहियों को पिंजरा गढ़े में लटकाने का हुक्म देने ही वाला था कि एक कुली की चीख सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा, तो वह कुली जिसने सबसे पहला रस्सा थाम रखा था, फिसलता हुआ गढ़े के किनारे तक आ गया था, उसके कदम उखड़ चुके थे। मैं अब इस पोजीशन में खड़ा था कि हाथ बढ़ाकर उसे थाम लूं और ज्यों ही मैंने लपककर उसे पकड़ना चाहा, खुद मेरे पैर भी फिसल गये, और मैं कुली के साथ घिसटा हुआ गढ़े में गिरने ही वाला था कि मेरी बगल में खड़े हुए अली ने जिस्त लगा-कर वह रस्सा पकड़ लिया, जो मेरे हाथ से छुटनेवाला था—फिर सिपाहियों ने फौरन हमें आकर थाम लिया। वरना मैं और दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ी जरूर गढ़े में गिर जाते और हमारा
ा हश्र होता, उसे सोचकर मैं आज भी
ंप जाता हूं । नतीजा यह निकला कि
ने और कुली के गिरते ही दूसरे कुली
हवास होकर रस्से हाथों से छोड़ देते
र आदमखोर आजाद होकर हमारे साथ
ी गढ़े में गिरता ।

कुलियों के हलक से इस अचानक खतरे
चीखें निकल रही थीं। बारिश ने जमीन
न कदर चिकनी और फिसलवां कर दी
ी कि उनके कदम जमने दुश्वार हो रहे
उधर शेर उनको बराबर झटके दे रहा
। सिपाहियों ने जल्दी से पिंजरा गढ़े में
ारा, शेर का सिर गढ़े की सतह को छू
ा था और उसकी दुम नीचे लटक रही
ी। मैंने पिंजरा इस रुख से गढ़े में रखवाया
कि उसका दरवाजा ऊपर की तरफ खुलता
ा। अब शेर को इस दरवाजे के अंदर
ाखिल करना था, इसके बाद वह बिलकुल
ारे काबू में आ जाता; लेकिन यही
सबसे ज्यादा खतरनाक काम था ।

मैं देख रहा था कि अगर थोड़ी देर तक
न मजदूरों को रस्से से निजात न दिलायी
ाती, तो रस्सा उनके हाथों से निकल जायेगा
और ऐन वक्त पर सारी मेहनत पर पानी
फिर सकता है । मैंने जल्दी अली को अपने
मंसूबे से आगाह किया। फिर मैंने मेजर से
कहा—"मेजर, अब मामला तुम्हारे ऊपर
छोड़ता हूं, इन कुलियों को संभाले रहना ।"

इससे पेश्तर कि वह कुछ पूछे या कहे,
मैंने एक और रस्सा पकड़ा और उसके
सहारे गढ़े में उतर गया । अब शेर मेरे सिर
पर लटक रहा था और मैं पिंजरे के करीब
खड़ा उसे देख रहा था । मैंने एक बार फिर
गढ़े में से चिल्लाकर कहा—"मेजर, रस्सों
को मजबूती से थामे रखना, वरना शेर
मुझे जिंदा न छोड़ेगा, बस चंद मिनिट की
तकलीफ और है । और हां, अपनी बंदूकें
भी संभाले रखो ।"

अब मैं खुद मिट्टी और कीचड़ में अच्छी
तरह लथपथ हो चुका था । पिंजरे का
दरवाजा खोलने के बाद मैंने शेर की दुम
पकड़ ली और उसे घसीटकर पिंजरे के ऐन
ऊपर ले आया और फिर पुकारकर कहा—
"अब सब लोग बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे
आगे बढ़ते जायें, देखना किसी का पैर न
फिसलने पाये ।"

शेर का आधा धड़ जब पिंजरे में दाखिल
हुआ, तो मैंने कहा—"रस्से छोड़ दो ।"

कुलियों ने एकदम रस्से छोड़ दिये और
एक धमाके के साथ जहूर का आदमखोर
पिंजरे में आ गया—मैंने फुर्ती से सलाखदार
दरवाजा गिरा दिया, शेर बुरी तरह दहाड़
रहा था, पिंजरे में बंद होते ही उसने उसकी
दीवारों को हिलाना शुरू कर दिया और
इससे पेश्तर कि मैं गढ़े से बाहर निकलूं,
लकड़ी के बने हुए बेहद मजबूत पिंजरे की
एक दीवार चरचराने लगी और उसका एक
तख्ता बाहर निकल आया । यह देखकर
मेरे होश उड़ गये, शेर अगर उसे एक
धक्का और लगाता, तो तख्ता यकीनन
उखड़ जाता। यकीन कीजिये दहशत से मेरा

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदन सुन्न हो गया। शेर का वजन कम-से-कम तीन सौ पौंड था और जाहिर है कि इतने वजनी दरिंदे के लिए लकड़ी का पिंजरा तोड़ देना आसान बात थी। एक बार फिर मैं हलक फाड़कर चीखा—"जल्दी से हाथौड़ा और कीलें मुझे दे दो, जल्दी...।"

इतने में तख्ता जरा-सा और बाहर निकला, मैंने उसे पीछे ढकेलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। कई मिनिट गुजर गये, हथौड़ा और कीलें मुझे न मिलीं, अलबत्ता गढ़े के ऊपर मजदूरों के चिल्लाने और भागने-दौड़ने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। मुझ पर एक-एक क्षण यमलोक की यातना की मानिंद गुजर रहा था, मैं फिर पागलों की तरह चीखा—"अरे, जालिमों, हथौड़ा और कीलें मुझे दे दो ? अली, तुम भी मेरी आवाज नहीं सुनते ?"

तब अली ने गढ़े के ऊपर से झांककर देखा और कहा—"साहब, हथौड़ा और कीलें मिल ही नहीं रहीं.... सब लोग तलाश कर रहे हैं, शायद वे मिट्टी के ढेर में गुम हो गयी हैं।"

मैंने अपना सिर पीट लिया—"मैं तुम सबको कत्ल कर दूंगा, किसी को जिंदा न छोड़ूंगा, वरना मुझे हथौड़ा और कीलें दे दो, उल्लुओ, गधो...." । मुझे याद नहीं कि मैंने कुलियों और मजदूरों के अलावा मेजर और उसके सिपाहियों को भी कितनी गालियां दे डाली थीं, आखिर आवाज आयी—"हथौड़ा मिल गया है; मगर कीलें नहीं मिलतीं।"

मुझे उस वक्त ऐसा गुस्सा आया कि अगर उनमें से कोई मेरे नजदीक होता, तो मैं जरूर गला घोंट देता। फिर किसी ने ऊपर से हथौड़ा नीचे फेंका, उधर शेर पिंजरे का एक कमजोर मुकाम तलाश करके वहां कूव्वत आजमाई कर रहा था। मैंने गढ़े की दीवार में अपने दोनों पैर टिकाकर हाथों की ताकत से तख्ते को अंदर ढकेला, फिर हथौड़ा लेकर उस तख्ते के किनारे पर उभरी हुई कीलें ठोकीं, कंबख्त हिनमूंग ने जल्दी में पिंजरे के उस तरफ कीलें बहुत कम लगायी थीं और यही वजह थी कि तख्ता उखड़ रहा था। किसी तरह खुदा-खुदा करके अली ने कीचड़ में से कीलें तलाश करके मुझ तक पहुंचायीं और जब मैंने सब कीलें अच्छी तरह ठोंक दीं, तो बेदम होकर वहीं गढ़े में लेट गया।

जब हमने आदमखोर के पिंजरे को गढ़े में से निकालकर ट्रक में रखा, तो बारिश के तूफान की तूंदी में फर्क आ चुका था। बादल धीरे-धीरे फटने लगे, और जब हम जहूर के किले तक पहुंचे, तो सुल्तान मेरे स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़ा था। तभी पश्चिम में बादलों के अंदर से डूबते हुए सूरज ने एक क्षण के लिए झांका और फिर छिप गया। सुल्तान का चेहरा खुशी व आश्चर्य से तमतमा रहा था, उसने आगे बढ़कर मुझे सीने से लिपटा लिया और जब वह मुझसे अलग हुआ, तो मेरे जिस्म पर थुपी हुई कीचड़ का बड़ा हिस्सा उसके कीमती कपड़ों को भी दागदाग कर चुका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की खुशियां दिल में या आंख में?

फरीद

मां ने अपनी ऐनक के शीशे साफ करते हुए कहा—"मेरी निगाह तो रोज-बरोज गती जा रही है। मैं मेज पर रखी हुई चीजों भी साफ तौर पर नहीं देख सकती।" मां चेहरे पर उदासी के बजाय मुस्कराहट फैल ी थी और उनकी आवाज धीमी होने के बावजूद बुलंद और विश्वास-भरी थी।

सात महीने पहले एक दिन हम खाने की ज पर बैठे इन्सान की निगाह और उसके र पहलुओं पर बातें कर रहे थे। मां उसी ज अपनी ऐनक के शीशे बदलवाकर लायी ी। बरसों से उनकी निगाह कमजोर थी र हर साल उन्हें नये और ज्यादा नंबर शीशे लगवाने पड़ते थे। एकाएक मां के थ से चमचा गिरा और प्लेट टूट गयी।

"मेरी आंखें धुंधला रही हैं," मां यह हते हुए खड़ी हो गयीं। हम घबरा गये र मेज से उठ खड़े हुए।

"तुम सब खाना खाओ, तुम्हारी परेशानी मेरी आंखों का इलाज नहीं। मैं सिर्फ तुम्हारे पिताजी के साथ डाक्टर के यहां तक जाऊंगी।" मां ने पूरे भरोसे के साथ कहा।

डाक्टर ने मां को बताया कि अब उनकी नजर कम होती जा रही है। कोई दवा इन आंखों में चमक पैदा नहीं कर सकेगी और कोई भी ऐनक का शीशा उनकी नजर को कम होने से नहीं बचा सकेगा। सात-आठ महीने तक वे मोटी-मोटी चीजें देखती रहेंगी और उसके बाद बिलकुल अंधी हो जायेंगी।

पिताजी का रंग उड़ गया और उनके चेहरे पर डर और उदासी के भाव उभरने लगे। लेकिन मां ने डाक्टर का शुक्रिया अदा करते हुए पिताजी का हाथ थामा और बड़े शांत स्वर में कहा—"अभी बहुत समय है, मैं आंखों से वंचित होने के बाद भी आंखों-वाली औरत की तरह आपके हर काम में हाथ बंटाऊंगी और मेरे बच्चों को यह आभास तक न होगा कि उनकी मां अंधी है और हर चीज में उनकी मदद की मोहताज होकर रह गयी है।"

इतनी भयंकर भविष्यवाणी सुनकर भी मां का चेहरा गुलाब की तरह खिला था। उनकी आंखों में नजर की चमक जरूर कम हो गयी थी; लेकिन विश्वास और आशा की रोशनी मौजूद थी।

मां को यह स्वभाव उनकी मां से मिला था। जब उन्होंने अपनी मां की गोद में आंख खोली, तभी वे पिता के प्यार से वंचित हो चुकी थीं। लेकिन अनाथ होने के दुःख ने उन्हें निराशा में नहीं डुबोया; बल्कि आम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोगों से ज्यादा आत्मविश्वासी बना दिया था। उन्हें आत्महीनता से बड़ी घृणा थी। वे कभी यह पसंद नहीं करती थीं कि कोई अनाथ समझकर उनकी मदद करे। इसलिए उन्हें बचपन से ही अपना हर काम हौसले और हिम्मत के साथ करने की आदत पड़ गयी थी।

सात महीने के इस अरसे में मां ने राह टटोलना, जगह पहचानना और कदमों की आहट से आदमी को पहचानना सीख लिया था। वे हर बात और हर काम पर पहले से ज्यादा ध्यान देतीं। अपना, अपने पति और बच्चों का हर काम पहले की तरह खुद ही करतीं, जब हम हाथ बंटाने आगे बढ़ते, तो डांट देतीं।

और जिस रात उनकी आंखों में रोशनी बिलकुल न रही, उन्होंने बड़ी खामोशी से हम सबको जमा किया और बड़े ही प्यारे अंदाज में बोलीं—"मेरे बच्चो, तुम एक बात खूब सोच-समझ लो कि तुम अपनी मां से मोहब्बत का सबूत तभी दे सकोगे, जब मेरे कहने पर अमल करोगे। आज मैं नजरों से बिलकुल वंचित हो चुकी हूं। मैंने अपने आपको इस वक्त के लिए बहुत पहले ही तैयार कर लिया था। आंखों से वंचित होने के बावजूद मैं वे सब काम कर सकती हूं, जो नजर रहते कर सकती थी। इसलिए तुम मुझसे अंधों का-सा नहीं, नजरवालों का-सा सलूक रखना—मेरा हाथ पकड़कर, मुझे रास्ता दिखाने की कोशिश मेरे आत्म-सम्मान को ठेस पहुंचायेगी। चूल्हा जलाते वक्त अगर मेरी उंगलियों को आग झुलसे, तो भी मैं इसे इससे बेहतर समझती हूं कि खुद को अंधी जानकर बेकार बैठी रहूं।"

हमने मां की बातों को सुना और खामोश हो गये। वे रोज की तरह चूल्हा जलातीं, खाना तैयार करतीं; फर्श, अलमारियां, बर्तन और फर्नीचर खुद ही साफ करतीं। उनकी मदद के लिए हम बढ़ना भी चाहते; मगर उनकी नसीहत को मानते हुए और उनकी डांट-डपट के डर से रुक जाते।

आज इस बात को कई बरस बीत गये हैं। हम बचपन की मंजिल से आगे बढ़कर जवानी के दौर में दाखिल हो चुके हैं; लेकिन हमारी मां अब भी उसी तरह काम-काज करती हैं, जिस तरह अंधी होने से पहले और अंधी होने के फौरन बाद किया करती थीं।

इस लंबे अरसे में हमने उनके चेहरे पर शिकन नहीं देखी और कभी भी आंखों से

जिंदगी

क्या कोई कोमल
गुलाब की कली तुमने
कांटों से घिरी हुई
कभी कहीं देखी है?
ऐसी ही जिंदगी हमारी है,
जो हमको प्यारी है।
फिर भी हम
आस लगाये बैठे
अब वह खिल जायेगी,
उपवन महकायेगी।

—निरंकार देव सेवक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वंचित होने का दुःख नहीं पाया। हां, एक दिन, सिर्फ एक दिन, वर्षा के बाद जमीन पर फिसलन थी। मां बाजार से सब्जी लाने के लिए बस स्टैंड पर खड़ी थीं। बस आयी, वह अभी रुकने भी न पायी थी कि मां ने कदम बढ़ा दिया। सवार होते वक्त वे गिर पड़ीं। मामूली चोट आयी। दो रोज अस्पताल रहीं और फिर हमेशा की तरह काम-काज में जुट गयीं। बस से गिरने की एक घटना ने न तो उनके आत्मविश्वास को ही मिटाया और न उन्हें कभी अपने काम-काज करने से रोका।

एक दिन हमने उन्हें आराम करने का मशविरा दिया, तो उनके चेहरे पर पहली बार निराशा और कष्ट की लहरें उभरीं और उन्होंने अपनी धुंधली आंखों को खोलते हुए कहा—"तुम मुझे जीवन की खुशियों से क्यों वंचित रखना चाहते हो? जीवन की रंगीनियां और खुशियां हासिल करने के लिए आंखें जरूरी नहीं हैं।"

मां का यह जवाब लाजवाब था। आज भी मां अपने काम में व्यस्त थीं और उस रोज भी जब हमेशा के लिए दुनिया को छोड़कर चली गयीं।

★

ये परिवर्तन

पिछले कई हजार वर्षों में मनुष्य के रहन-सहन के तरीके में जबर्दस्त परिवर्तन हुआ है। सो परिवर्तन कोई नयी चीज नहीं है। लेकिन पिछले कुछ अरसे में बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि परिवर्तन की रफ्तार बेतहाशा बढ़ गयी है। एक हजार साल पहले मनुष्य को अपने समूचे जीवन-काल में रहन-सहन के तरीके में कोई खास फर्क नहीं दिखाई देता था। बल्कि कई-कई पीढ़ियां गुजर जाती थीं और परिवर्तन का अनुभव नहीं हो पाता था। आज परिवर्तन की गति अविश्वसनीय है। मेरे ही जीवन-काल को लीजिये। लिंडबर्ग की अटलांटिक उड़ान मुझे याद है। मैंने ७०७ जेट विमान बनते देखे। फिर मेरे देखते गागारिन औ ग्लेन अंतरिक्ष में उड़े। और तो और, एक अंतरिक्ष-यात्रिणी भी शून्य में विचरण कर आयी है। मैंने अपनी आंखों के सामने पहला अणुबम बनते और बाद में गजब के ताकतवर हाइड्रोजन बमों का विकास होते देखा है। मेरे देखते-देखते अमरीका की आबादी दुगुनी हो गयीर है। और मैं कोई बहुत बूढ़ा आदमी नहीं हूं। यह सब परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहा है। मुझे अपने एक विनोदी मित्र का एक कथन याद आ जाता है। वे कहा करते हैं—"मेरी दादी घोड़े और गाड़ी पर चढ़ती थी और कार पर चढ़ते घबराती थी। मेरी मां कार पर बैठती थी और हवाई जहाज पर चढ़ते डरती थी। मैं सामान्य हवाई जहाज में यात्रा करता हूं; मगर जेट वायुयान पर चढ़ते हुए डरता हूं। मेरी बेटी जेट-वायुयान पर सफर करती है; मगर घोड़ा-गाड़ी पर चढ़ते उसे डर लगता है।"

—प्रो० हैरिस ब्राउन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय डाक-प्रणाली
मौर्य काल से आज तक

रामचंद्र सिंह सागर

यद्यपि जनसाधारण में विचारों को लिखित रूप में व्यक्त करने की प्रथा भारत में कोई नयी नहीं है, तथापि जिस रूप में वह आज हमारे सामने विद्यमान है, वह बहुत अधिक पुरानी भी नहीं है। पत्र लिखने की प्रणाली भारत में सर्वप्रथम अंग्रेजी साम्राज्य के प्रसिद्ध गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी के शासन-काल में आरंभ हुई, फिर तो उसका बड़ी तेजी के साथ प्रचार हुआ।

इसके पूर्व भारत में समाचार भेजने या विचारों को लिखित रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने का कार्य पत्रवाहक या हरकारों से लिया जाता था। यही हरकारा सरकारी भाषा में दूत या राजदूत कहलाता था। राज-दरबारों में दूत और रनिवासों में दूतियां यह काम किया करती थीं। भारत में यह प्रथा बहुत दिनों तक चलती रही; और आज भी भारत के आंतरिक ग्रामों में इसी प्रथा द्वारा संदेश भेजे जाते हैं।

मौर्य कालीन डाक-व्यवस्था : भारत के इतिहास में सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के पूर्व का काल जनपद राज्यों का काल था। छोटे-छोटे राज्य थे, छोटे-छोटे राजा। सिकंदर के आक्रमण से देश में एक नयी चेतना आयी और देश में एक नियमित राज्य की स्थापना हुई, जिसका प्रथम हिन्दू सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य बना। मौर्य शासन-काल के पूर्व का समय डाक-पद्धति के लिए अंधकार युग के नाम से पुकारा जा सकता है; क्योंकि किसी जनपदीय राजा ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्य काल की डाक-व्यवस्था के बारे में कुछ संदर्भ मिलते हैं। उस समय संदेश भेजने के लिए कबूतरों का प्रयोग किया जाता था। यह प्रथा मुगल काल तक बनी रही; किंतु इस प्रथा से जनसाधारण को कोई विशेष लाभ नहीं पहुंच सका।

इस्लाम कालीन डाक-व्यवस्था : मुहम्मद तुगलक (शासन काल १३२५-१३६१) की डाक-व्यवस्था के बारे में अरब के प्रसिद्ध यात्री इब्न बतूता ने प्रकाश डाला है। मुहम्मद तुगलक के समय में दो प्रकार के हरकारे होते थे। प्रथम श्रेणी के डाक हरकारों को घुड़-हरकारा और द्वितीय श्रेणी के डाक हरकारों को पैदल हरकारा कहा जाता था। घुड़-हरकारों को शाही अश्वारोही सेना से छांटा जाता था, जिन्हें चार-चार मील के अंतर पर नियुक्त किया जाता था। पैदल हरकारों को एक-एक मील के अंतर पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियुक्त किया जाता था। हर तीन मील के अंतर पर संतरी के खड़े होने के लिए कठघरे बनवा दिये जाते थे। दूसरे स्थान से आनेवाले संतरी या हरकारों से वहां की डाक लेकर हरकारे अपनी मंजिल पर चल दिया करते थे। हर डाक हरकारे के पास लगभग छह गज लंबी लाठी या बेंत रहती थी, जिसके एक सिरे पर छोटे-छोटे घूंघरू या घंटियां बंधी रहती थीं। टालियों की आवाज सुनकर गंतव्य स्थान का हरकारा बाहर निकलकर डाक प्राप्त करता था और अपनी मंजिल की ओर लौट पड़ता था। इस व्यवस्था के द्वारा डाक-पद्धति में सुनिश्चितता आ गयी और साथ-साथ समय की बचत भी हो गयी।

शेरशाह कालीन डाक-व्यवस्था : शेरशाह ने प्रजा की सुख-सुविधा के लिए जहां अनेक कार्य किये, वहां राज्य में लंबी-लंबी सड़कें बनवाकर राज्य के विभिन्न भागों को परस्पर सुसंबद्ध किया। आज की ग्रांड ट्रंक रोड उसी के समय में बनी। इन लंबी-लंबी सड़कों के दोनों ओर शेरशाह ने छायादार वृक्ष लगवाये और थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सरायें बनवायीं। ये सरायें ही डाक-चौकियों का काम करती थीं। प्रत्येक सराय में दो घोड़े तैयार रखे जाते थे, जो एक सराय से दूसरी सराय को सूचना भेजने में प्रयोग किये जाते थे। शेरशाह ने ऐसी सत्रह सौ सरायें बनवा रखी थीं। इन सरायों के अतिरिक्त निकट के स्थानों में पैदल डाक भेजने की व्यवस्था थी। इस प्रकार शेरशाह को सारे साम्राज्य की सूचनाएं मिल जाती थीं।

मुगल काल में डाक-व्यवस्था ने कोई विशेष उन्नति नहीं की। शेरशाह की डाक-व्यवस्था ही ईस्ट इंडिया कंपनी के समय तक ज्यों-की-त्यों बनी रही। वही घुड़सवार डाक-व्यवस्था रही।

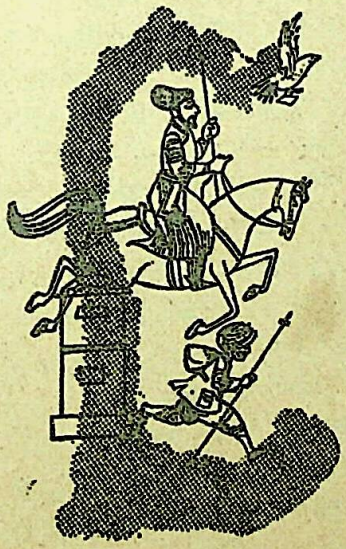

'महाराष्ट्र टाइम्स' के सौजन्य से

ईस्ट इंडिया कंपनी तथा ब्रिटिश कालीन डाक-व्यवस्था : ईस्ट इंडिया कंपनी सन १६३९ से १६८८ तक पूर्णतया स्थापित हो गयी थी। उसने अपने इन क्षेत्रों (कलकत्ता, बंबई और मद्रास) के लिए देश में प्रचलित डाक-व्यवस्था को ही स्वीकार कर लिया था; क्योंकि उसके पास इसके अतिरिक्त और कोई चारा भी न था। उस समय ब्रिटेन में भी इसी प्रकार की डाक-व्यवस्था अपनायी जाती थी। बाद में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय, बचत तथा रक्षा को ध्यान में रखकर डाक-व्यवस्था में धीरे-धीरे अनेक सुधार किये गये ।

सन १७६६ में लार्ड क्लाइव ने एक प्रस्ताव पास किया कि सभी प्रकार के पत्र तथा डाक राजभवन से भेजे जाने चाहिये, जहां एक पोस्ट मास्टर (जिसको उस समय पोस्टल राइटर कहा जाता था) अपने सहायकों के साथ रात-भर सारी शाही डाक को प्राप्त और वितरित करता था । किंतु इस व्यवस्था से जनसाधारण को लाभ होना तो दूर की बात थी, ईस्ट इंडिया कंपनी के बड़े-बड़े भारतीय जमींदारों तथा सामंतों को भी लाभ न हो सका । जनसाधारण तो देश में प्रचलित हरकारा डाक-व्यवस्था के द्वारा ही अपने विचार एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाते थे । यह व्यवस्था महंगी ही नहीं, अपितु अविश्वसनीय भी थी । उस समय महाजन अपनी डाक और पत्र भेजने के लिए अपने साधन प्रयोग करते थे, जिन्हें महाजनी डाक के नाम से पुकारा जाता था।

लार्ड वारेन हेस्टिंग्स के समय में डाकघरों की स्थापना अधिक सुचारु रूप में की गयी। उस समय प्रांतों के मुख्य-मुख्य नगरों को सरकारी मुख्यालयों के डाक हरकारों द्वारा संबंधित कर दिया गया । सन १७७० में मद्रास से कलकत्ता तक एक साप्ताहिक डाक सेवा आरंभ की गयी । ऐसी ही डाक-सेवा सन १७७५ में मद्रास और बम्बई के बीच आरंभ की गयी । ३१ मार्च १७७४ को वारेन हेस्टिंग्स द्वारा एक नियमित डाक-प्रणाली आरंभ की गयी । इस प्रणाली द्वारा 'पोस्ट मास्टर जनरल' का एक पद अस्तित्व में आया और इस दिन से एक सौ मील की

ब्रिटेन की स्टैनली गिबन्स कंपनी द्वारा छापी जानेवाली डाक-टिकिट-सूची संसार-भर के स्टैंप-संग्राहकों की दृष्टि में वैसी ही प्रामाणिक है, जैसे हिन्दू के लिए वेद और वकीलों के लिए संविधान । इस सूची का प्रकाशन आरंभ हुए इस वर्ष एक सदी दूरी हुई । इस उप-लक्ष्य में स्टैनली गिबन्स ने गत फरवरी में लंदन के रायल फेस्टिवल हाल में एक स्टैंप प्रदर्शिनी आयोजित की थी, जिसमें संसार के अनेक बड़े स्टैंप-संग्रहों के कई अत्यंत दुर्लभ डाक-टिकिट लाकर रखे गये थे । उन दुर्लभ टिकिटों में दुर्लभतम था—ब्रिटिश गयाना द्वारा १८५६ में जारी किया गया एक सेंट का लाल टिकिट । यह एक अमरीकी संग्रह में है और २५ लाख रुपये के लिए बीमा कराया गया है । इसका पिछला मालिक हाइंड नाम का अमरीकी था । जब उसने सुना कि ऐसा ही एक और भी टिकिट मौजूद है, तो उसने बड़े प्रयत्न से, मुंह मांगे दाम पर उसे खरीदा और जलाकर नष्ट कर दिया । और भी दिल-चस्प किस्सा है १८४७ में छपे मारिशस के हरे टिकिट का । मारिशस के गवर्नर की पत्नी ने एक सरकारी पार्टी दी थी । पार्टी के निमंत्रण -पत्र भेजने के लिए मारिशस के डाक-विभाग ने नये स्टैंप बनवाये । जल्दी में डिजाइन बनानेवाले ने उस पर 'पोस्ट पेड़'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक भेजे जानेवाले पत्रों पर दो आने पर बजाते चलते थे। रात के समय इन हरकारों के साथ दो मशालची और दो धनुर्धारी भी चलते थे। इस तरह वे चोर-डाकू और जंगली जानवरों से अपनी रक्षा कर सकते थे।

पीतल का सिक्का लिया जाने लगा। यह सुविधा केवल ईस्ट इंडिया कंपनी शासित क्षेत्र में ही प्राप्त थी। देश के भागों में वही पुरानी डाक-प्रणाली ती रही।

वारेन हेस्टिंग्स ने ही १ दिसंबर १७८४ डाकघरों में सुधार के लिए कुछ और म बनाये और सन १७८४ से १७८९ बम्बई, मद्रास और कलकत्ता के मध्य में काफी सुधार किये गये। १८ वीं ब्दी के अंत तक बंगाल में डाक-थैलों ेवड़ा आरंभ की गयी। इन डाक-थैलों डाक हरकारे ढोकर ले जाते थे। ऐसे हरकारों का कार्य-क्षेत्र आठ मील का हुआ था। इन हरकारों के पास एक ढोल रहता था, जिन्हें वे उजाड़ बंजर रास्तों

लार्ड वैलजली ने जहां भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को विस्तृत किया, वहां डाक-सेवा में भी कुछ सुधार किये। लार्ड विलियम वैंटिंक ने डाक-सेवा को सेना-सेवा के पद-चिह्नों पर चलाया। लार्ड विलियम वैंटिंक के बाद का चालीस वर्ष का समय एकदम अंधकारमय है।

जब तक देश में शाही डाक-प्रणाली जारी नहीं की गयी, उस समय तक ब्रिटिश राज्य में मंडल डाक-प्रणाली के आधार पर कार्य चलता रहा। इस प्रणाली द्वारा मंडल के सभी मुख्यालयों को पुलिस और राजस्व-

---

बजाय 'पोस्ट आफिस' लिख दिया। युगांडा का एक डाक-टिकिट और भी अनोखा यह छपा हुआ नहीं, बल्कि टाइप किया हुआ है। सफेद कागज के आयताकार टुकड़े ऊपरी भाग में बायीं ओर 'यू' और दायीं ओर 'जी' अक्षर टाइप किये हुए हैं और बीचों च अंकों में ५०, जिसका मतलब है—कीमत ५० कौड़ी।

स्टैनली गिबन्स का संस्थापक गिबन्स दवाफरोश था। १८६३ में एक रोज दो विक उसकी दुकान में आये और डाक-टिकिटों से भरा एक बड़ा-सा झोला उसके सामने कर बोले—"इनका कितना दोगे?" ये टिकिट उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में किसी लाटरी जीते थे। गिबन्स ने पांच पौंड में सब खरीद लिये और खुद उनसे ५०० पौंड का मुनाफा माया। तब से उसने बाकायदा स्टैंप-व्यापार शुरू किया। आज स्टैनली गिबन्स कंपनी ार में डाक-टिकिटों की सबसे बड़ी नीलाम एजेन्सी है। नीलाम के दिन वहां ६५,००० ंड का टिकिट व्यापार होता है। कंपनी स्वयं भी वर्ष में दस लाख पौंड के टिकिट खरीदती-ती है। कंपनी के कर्मचारी इसकी पूरी जानकारी रखते हैं कि संसार का कौन-सा सिद्ध डाक-टिकिट इस समय किस संग्रह में है और वहां कैसे पहुंचा।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टेशन से संबद्ध कर दिया गया। इन स्थानों की डाक पर मंडल अधिकारियों का नियंत्रण रहता था। इन डाकघरों का मुख्य उद्देश्य सरकारी पत्र-व्यवहार को वितरित करना था। इन डाकघरों का दूसरा उद्देश्य था कि शाही डाकघरों के नाते ये नगरों और मंडल के ग्रामों में भी डाक बांटें। सभी डाक पुलिस और चौकीदारों की सहायता से वितरित की जाती थी। किंतु इस प्रणाली का कोई संतोषजनक परिणाम नहीं निकला, क्योंकि जनता को डाक कर्मचारियों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था।

सन १८३७ में सरकार को डाक-विभाग के लिए पूर्णाधिकार प्राप्त हो गया था। परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी ने सभी निजी डाक-प्रणालियों पर प्रतिबंध लगा दिया था। कहीं-कहीं लाइसेंस देकर निजी डाक-प्रणाली के आधार पर डाक वितरित करने का अधिकार जनता को दिया गया था। अब डाक सुविधा के साथ-साथ डाकघरों ने जनता को अन्य भी अनेक प्रकार की सुविधाएं प्रदान कीं।

भारत में सबसे पहला डाक टिकिट १ अक्टूबर १८५४ में निकाला गया था। इसके पूर्व समस्त डाक देय-डाक-हरकारों के द्वारा वितरित की जाती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन-काल में लार्ड डलहौजी के समय तक बिना टिकिटवाले पत्र भेजने की प्रथा थी। डाकिया बैरंग पत्रों का बंडल लिये द्वार-द्वार पत्र वितरित करता था और पत्र पानेवाले से उसी प्रकार डाक के दाम प्राप्त करता था, जैसे आज यदा-कदा प्रेषित बैरंग पत्रों पर डाक महसूल लिया जाता है। लेकिन उन दिनों हर पत्र का महसूल प्राप्त नहीं हो पाता था और डाकखानों को काफी हानि उठानी पड़ती थी। उस समय डाकघरों की मुहर भी पत्रों पर नहीं लगायी जाती थी और न ही उन पर पत्र पानेवाले से लिया जानेवाला महसूल ही लिखा जाता था। कालांतर में सभी पत्रों पर मुहर लगायी जाने लगी और उन पर महसूल लिखा जाने लगा, जिससे डाकघरों को होनेवाली हानि से बचाया जा सके। किंतु समस्या ज्यों-की त्यों बनी रही। लार्ड डलहौजी ने इस प्रथा को ही बदल डाला। आज बैरंग पत्रों पर सारे भारत में एक-सा महसूल लिया जाता है; किंतु उन दिनों इस प्रकार का महसूल दूरी और भार के आधार पर लिया जाता था, जो काफी महंगा पड़ता था। इसे डाक-टिकिटों के आविष्कार ने सदा-सदा के लिए दूर कर दिया।

पहले डाक-टिकिट टकसाल में छपते थे और पहला टिकिट कलकत्ते की टकसाल में भारत के डिप्टी सर्वेयर जनरल कैप्टन थूलियर की अध्यक्षता में छापा गया, जो भविष्य में सत्ताईस महीने छपकर बंद हो गया। कलकत्ता की टकसाल में छपनेवाले टिकिटों पर मद्रास सर्किल का चिह्न अंकित रहता था।

आगे चलकर भारतीय टिकिटों को छापने का ठेका लंदन की टामस द लारीं एंड कंपनी को दिया गया, जो भारत के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ तक टिकिट छापकर भारत भेजती
। सन १९२६ में नासिक में सिक्योरिटी
की स्थापना होने पर भारत में फिर से
-टिकिट छपने लगे। नासिक में सबसे
जार्ज पंचम का टिकिट छापा गया था।
मे भारत ने सन १९२९ में प्रथम हवाई
ट निकाला और इस दिशा में भारत
ने को सभी कामनवेल्थ देशों में अग्र-
बनाया। सन १८२८ तक भारत के
टों पर इंडिया पोस्टेज के स्थान पर
इंडिया पोस्टेज शब्द छापा जाता था।
विक्टोरिया के शासन-काल से भारत
टिकिटों पर इंडिया पोस्टेज मुद्रित होने
था। सन १९३१ तक भारत में प्रच-
डाक-टिकिटों पर इंग्लैंड के राजा-रानी
चित्र छापा जाता था; किंतु जैसे ही नयी
ल्ली को भारत की राजधानी घोषित
या गया, वैसे ही भारत में प्रथम बार
रक टिकिट छापा गया था, जिस पर
दिल्ली के प्राचीन भव्य भवनों के चित्र थे।

सन १९४७ से अपने देश में अपनी सरकार के डाक-टिकिट छपने लगे। १९६४ तक अपने देश में बर्मा, नेपाल, भूटान और सिक्किम सरकारों के डाक-टिकिट भी छापे जाते थे, जिनका मुद्रण कागज के अभाव में बंद कर देना पड़ा। पहले आज के समान भारत के पृथक रसीदी टिकिट भी न थे। इंग्लैंड के समान डाक-टिकिट ही रसीदी टिकिट के लिए प्रयोग किये जाते थे। रसीदी डाक-टिकिटों का आविष्कार सन १९३२ में हुआ।

इस प्रकार भारत का डाक-विभाग कई पीढ़ियों को पार कर वर्तमान दशा को पहुंचा है और जनसाधारण के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने में लगा है। डाक-टिकिटों का प्रचलन मानव-समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ है, जिससे शिक्षित और अशिक्षित सभी लाभ उठा रहे हैं।

★

स्वागत

एक बार प्रसिद्ध साहित्यिक मार्क ट्वेन को एक आम सभा में भाषण देने के लिए
मंत्रित किया गया।

जब वे उस नगर में निश्चित तिथि को आये, तो उन्हें ऐसा लगा, जैसे उनके
क्रम का पूरा विज्ञापन नहीं किया गया है।

नागरिकों को उनके होनेवाले भाषण का पता है या नहीं, यह जानने के लिए वे
दुकान में चले गये।

उन्होंने दुकानदार से पूछा—"क्यों भाई, यहां पर आज कोई मनोरंजक कार्यक्रम
होनेवाला है, जिससे एक यात्री अपना शाम का समय काट सके?"

दुकानदार ने उत्तर दिया—"हां हां, मेरा खयाल है कि आज यहां पर कोई भाषण
नेवाला है। आज तो दिन-भर काफी अंडे बिके हैं।" —माधुरी मैतिन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छींक एक बीमारी

के० एन० ध्यानी

कोई व्यक्ति कहीं जा रहा हो और उसी समय कोई छींकने लगे, तो क्या वह उसे कोसेगा नहीं ? इस बात को अंधविश्वास समझकर भले ही ध्यान न दिया जाये; लेकिन अधिक छींकें आना भी कोई अच्छा लक्षण नहीं है। इससे कई प्रकार के रोग हो सकते हैं ।

जिस प्रकार आकाश में सप्तर्षि-मंडल है, ठीक उसी प्रकार हमारे शरीर में सात धातुएं हैं। उन्हीं के ऊपर शरीर की संपूर्ण स्थिति अवलंबित रहती है । यदि उनकी क्रियाओं में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है, तो शरीर में तरह-तरह के रोग घर कर बैठते हैं।

गले में रुकावट, सिर में दर्द, जिगर में विकृति, शरीर में खून की कमी, भोजन में अरुचि, स्मरण-शक्ति का नाश, अनायास ही अत्यधिक छींकें आना, हाथ-पैरों में ऐंठन, जलन, चुभन, छाती एवं पीठ में दर्द, और न जाने कितने ही प्रकार के छोटे-छोटे रोग इससे हो जाते हैं । मामूली बात समझकर लोग अक्सर इनकी उपेक्षा कर देते ह; परंतु यह स्मरणीय है कि डाकू घर में धीरे-धीरे ही प्रवेश करता है ।

हम जो खाना खाते हैं, उसकी सबसे पहले रस-धातु बनती है। रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेदा, मेदा से अस्थि, अस्थि से मज्जा एवं मज्जा से शुक्र (वीर्य) धातु बनती है । इस प्रकार हमारे शरीर में ये सातों धातुएं निरंतर अपना कार्य करती रहती हैं । खून बनाने का कार्य जिगर (लिवर) का होता है । यदि वह दुर्बल हो जाये, तो शरीर में खून की कमी हो जाती है और रस से जो खून बनना चाहिये था, वह खून न बनकर कफ रूप में परिणत हो जाता है । इसीलिए मंदाग्नि हो जाती है और शरीर कमजोर होने लगता है । आगे चलकर वह श्लैष्मिक कला द्वारा मस्तिष्क की छोटी-छोटी श्लैष्मिक कलाओं में आवृत हो जाता है और वे श्लैष्मिक कलाएं जब पूर्णरूपेण भर जाती हैं, तो नाक की झिल्लियों में कफ को स्थान दे देती हैं। फल-स्वरूप हम अपनी नाक में कुछ रुका हुआ-सा महसूस करते हैं और उस रुके हुए मल को निकालने की कोशिश करते हैं । इस प्रकार कुछ दवाइयों के द्वारा या तिनके के

CC-0. Mumukshu Bhawan, Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रे हम उस मल को बार-बार निकालते
हैं, जिससे नाक की झिल्लियां कम-
पड़ जाती हैं। उनसे पतला-पतला स्राव
लने लगता है और बार-बार छींकें आने
ती है। कई बार तो छींकें इतना भयंकर
धारण कर लेती हैं कि वह जीर्ण सर्दी
रूप धारण करती हुई नाक में सूजन,
न्न, श्वास-खांसी एवं नजला जैसी
धियों को उत्पन्न कर देती हैं। नजले से
भी सफेद हो जाते हैं। कुछ लोगों को
के कारण टी० बी० (राजयक्ष्मा) तक
जाती है।

अब तनिक सूक्ष्म रूप से यह विचार करें
यह कफ इतनी मात्रा में बनता क्यों
? जिगर अपना काम क्यों बंद कर देता
? सातों धातुएं किस प्रकार दूषित हो
ती हैं ?

हमारे पूर्वज सदा से कहते आये हैं कि
जैसा खाये अन्न, वैसा बने मन।" आप
सा खाना खायेंगे, आपके शरीर में वैसी
प्रतिक्रिया होगी। यदि आप अधिक गरम
शीतल पदार्थों का सेवन करते हैं, अथवा
में अधिक रहते हैं, धूप में घूमते हैं,
एवं मूत्र के वेग को रोकते हैं, तो इन्हीं
कारणों से जिगर में विकृति आ जाती
और सातों धातुएं दूषित होकर इस रोग
सहायक हो जाती हैं।

यह भी ध्यान रखने की बात है कि छींक के वेग को कभी नहीं रोकना चाहिये, चिकित्सा के द्वारा उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि आप उस वेग को रोकते हैं, तो सिर में दर्द होने लगेगा और चक्कर आने लगेगा। कभी-कभी तो नाक एकदम लाल हो जाती है और उसमें सूजन भी आ जाती है। अतः भूलकर भी छींक के वेग को न रोकें।

जब भी आपको इसकी शिकायत हो, सबसे पहले आप यह खोजें कि छींक आने की वजह क्या है, उसको दूर करने की कोशिश करें। यों इसमें अदरक का स्वरस निकाल-कर पीना भी लाभदायक है। सोंठ, काली मिर्च एवं पीपल की समान मात्रा एक माशा चाय के रूप में उबालकर एक कप नित्य-प्रति पी जायें, तो अत्यंत लाभ पहुं-चता है। कायफल का छिलका कूट-पीसकर छान लें और उसे एक-एक माशे की मात्रा में गरम जल के साथ सेवन करें। दालचीनी, बड़ी इलायची एवं तेजपात इनको बराबर मात्रा में कपड़छान करके ४-४ रत्ती की मात्रा से दिन में दो बार शहद से सेवन करें।

जब छींक का रोग उग्रावस्था में हो, तो विश्राम करें, गरम पेय, गरम जल से स्नान, गरम वस्त्र, हवादार गरम कमरा, एवं सिर पर गरम कपड़ा लपेटकर रखें। हल्का, सुपाच्य भोजन करें। फिर आपको छींक की शिकायत नहीं रहेगी।

★

पूरा व्याख्यान, लिखित अथवा कथित एक मृतक भाषा के समान है, जब तक वह उत्सुक और तत्पर श्रोता नहीं पा लेता।

—आर० एल० स्टीवेन्सन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपमें हंसने का माद्दा कितना है?

कुसुमाकर

क्या आपका जीवन सहज-स्वाभाविक हास्य-विनोद से भरपूर है? क्या आप दुनिया की हर चीज में हंसने का मसाला ढूंढ़ लेते हैं? मजाक न समझें, तो हम यह जानना चाहते हैं कि आपमें हंसने का माद्दा कितना है? आइये, जरा उसे इस प्रश्नोत्तरों के पैमाने से मापकर देखिये :

(१) जब आप बच्चे थे, क्या बड़ों के आपसे मजाक करने पर बुरा मान जाते थे? (क) हमेशा? (ख) कभी-कभी? (ग) कभी नहीं?

(२) पेशेवर हंसोड़ों और उनके हंसी-मजाक के कार्यक्रम देखकर आप पर क्या प्रतिक्रिया होती है? (क) क्या आपको उनकी हर बात हंसी-भरी लगती है? (ख) सिर्फ मनपसंद कलाकारों के चुने हुए कार्यक्रम ही भाते हैं? (ग) अधिकांश प्रयास बचकाने लगते हैं?

(३) कौन-सी हंसी आपको सबसे ज्यादा अच्छी लगती है? (क) अप्रकट दबी हंसी? (ख) जोरदार ठहाका? (ग) मंद उत्फुल्ल हास?

(४) वह कौन-सा हास्य है, जिस पर आप कम-से-कम हंसते हैं? (क) हल्के स्तर का मजाक? (ख) शाब्दिक चमत्कार से उत्पन्न हास्य? (ग) बुद्धि-चातुर्य से उत्पन्न सूक्ष्म हास्य?

(५) आप किसी पत्र-पत्रिका में कोई व्यग्यंचित्र देखते हैं और वह आपकी समझ में नहीं आता, तो आप क्या करते हैं? (क) किसी से पूछकर समझने की कोशिश करते हैं? (ख) क्या उसे बार-बार देख-पढ़कर खुद ही समझने की कोशिश करते हैं? (ग) यह सोचकर छोड़ देते हैं कि कौन माथा-फोड़ी करे?

(६) आप कोई ऐसी फिल्म या नाटिका देखने जा रहे हैं, जो बारीक हंसी-मजाक से भरपूर है और आपका एक ऐसा मित्र आपके साथ चलना चाहता है, जिसकी हास्य-बुद्धि कच्ची है। ऐसी परिस्थिति में क्या आप (क) उस कार्यक्रम में जाना रद्द कर देंगे? (ख) चित्र या नाटिका देखने के बाद मित्र को, जितना समझा सकते हैं, समझायेंगे? (ग) हास्य आपके मित्र के पल्ले नहीं पड़ रहा, इस पर आप दोहरे हास्य का मजा लेंगे?

(७) दूसरों में आप किस प्रकार का हास्य-विनोद सबसे ज्यादा पसंद करते हैं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(क) खूब खुला हुआ ? (ख) चतुराई से ढका हुआ बारीक हास-परिहास ? (ग) व्यंग्यपूर्ण ?

(८) "भई, आप तो मजाक भी नहीं सह सकते ?" यह बात लोग आपको कितनी अधिक कहते हैं ? (क) अक्सर ? (ख) कभी नहीं ? (ग) कभी-कभी ही ?

(९) क्या आप कुछ पढ़ते-पढ़ते किसी पर अचानक ठहाका लगा बैठते हैं ? (क) शायद ही कभी ? (ख) हमेशा ? (ग) केवल तब, जब आप अकेले हों ?

(१०) क्या कभी किसी ने आपके मुंह पर ऐसा कहा है ? (क) वाह, जवाब नहीं आपका ! (ख) अजी, आपमें तो हंसी-मजाक का माद्दा रत्ती-भर भी नहीं ! (ग) भई, आपका साथ बड़े मजे का है !

(११) क्या आप तब बेहद चिढ़ जाते हैं, जब (क) आपको वही पुराना चुटकला सुनाया जाये, जिसे आप बार-बार सुन चुके हैं ? (ख) ऐसे लोगों से सामना हो, जो हमेशा किसी-न-किसी बात पर हंसते रहते हैं ? (ग) जब आपने ऐसी किसी बात को गंभीरतापूर्वक ले लिया है, जो मजाक में कही गयी थी ?

(१२) प्रैक्टिकल मजाक करनेवाले वयस्कों को आप क्या मानते हैं ? (क) ऐसे बच्चे, जो वस्तुतः अभी वयस्क नहीं हुए ? (ख) काम के लोग, जो दंभ भरनेवालों के दिमाग ठिकाने रखते हैं ? (ग) मजेदार लोग, जो अपनी चतुराई गलत दिशा में खर्च कर रहे हैं ?

(१३) किस तरह का कार्टून आपको सबसे ज्यादा हास्यपूर्ण लगता है ? (क) जिसके नीचे लंबा और पेचीदा शीर्षक हो ? (ख) जिसके नीचे शीर्षक हो ही नहीं ? (ग) छोटे-से-छोटे शीर्षकवाला ?

(१४) अच्छे स्वास्थ्य के अलावा, वह कौन-सी चीज है, जिसे छोड़ना आप कम-से-कम पसंद करेंगे ? (क) धन और सुरक्षा ? (ख) मित्र ? (ग) हंसने की क्षमता ?

(१५) इनमें से कौन-सा वाक्य आपके होंठों पर सबसे ज्यादा आता है ? (क) "यह हंसने की बात नहीं है।" (ख) "मैं, यह बात सुनाये बिना नहीं रह सकता।" (ग) "मैं तो हंसते-हंसते मर गया।"

(१६) क्या आप ऐसे अवसरों पर भी हंस पड़ते हैं, जहां गंभीर रहना अपेक्षित हो ? (क) केवल तभी, जब आप बेखबर हों ? (ख) कभी भी नहीं ? (ग) बहुधा ?

(१७) पिछले २४ घंटे में आप कितनी बार सहज रूप से हंसे हैं ? (क) बिलकुल ही नहीं ? (ख) केवल एक बार ? (ग) कई बार ?

(१८) जब अचानक कोई नयी परिस्थिति उपस्थित हो जाती है, तब क्या आप (क) उसमें हंसी-मजाक की बात तुरंत निकाल लेते हैं ? (ख) दिमाग लड़ाने पर बहुत देर बाद कोई ऐसी बात निकाल पाते हैं ? (ग) कभी ऐसा खयाल ही नहीं करते ?

(१९) कुल मिलाकर लोगों का रवैया आपके साथ कैसा रहता है ? (क) क्या वे आपके साथ हंसते हैं ? (ख) आप पर हंसते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ? (ग) आपके बहुत हंसने से तंग हैं ?

(२०) इनमें से कौन-सी चीज आपको वास्तव में सबसे बढ़कर लाभकारी लगती है ? (क) जोर का शोर ? (ख) अच्छी हंसी ? (ग) जी-भर आराम ?

एक कागज लीजिये और इन प्रश्नों के अपने उत्तर—क, ख या ग जो भी हों—लिख डालिये। फिर नीचे दी हुई तालिका से उत्तर के अनुसार अपने अंक लिख लीजिये :

(१) क=०, ख=४, ग=६
(२) क=५, ख=३, ग=१
(३) क=२, ख=५, ग=४
(४) क=२, ख=३, ग=४
(५) क=३, ख=४, ग=०
(६) क=०, ख=२, ग=६
(७) क=५, ख=३, ग=४
(८) क=०, ख=५, ग=१
(९) क=२, ख=६, ग=५
(१०) क=५, ख=१, ग=४
(११) क=३, ख=१, ग=२
(१२) क=१, ख=५, ग=३
(१३) क=२, ख=५, ग=४
(१४) क=३, ख=३, ग=६
(१५) क=०, ख=४, ग=५
(१६) क=४, ख=१, ग=५
(१७) क=०, ख=२, ग=६
(१८) क=६, ख=३, ग=०
(१९) क=६, ख=२, ग=५
(२०) क=१, ख=६, ग=३

इस हास्य-परीक्षा में यदि आप अपने को ७५ से १०० के बीच अंक दे सकें, तो यह तय है कि आपमें हंसने का माद्दा भरपूर है। आपके प्राप्तांक ९० से ऊपर हों, तो समझिये कि हंसने का माद्दा आपमें बहुत ज्यादा है और हम आपसे कहेंगे अब उसे और न बढ़ाइये। क्योंकि यह याद रखना जरूरी है कि जीवन में कुछ प्रसंग ऐसे भी आते हैं, जिनमें गंभीर रहना जरूरी है।

५० और ७५ के बीच अंक पानेवाले निश्चय ही हंसी-मजाक का खासा मजा लेते हैं और खूब हंसमुख हैं।

२५ और ५० के बीच रहनेवालों से हमारा निवेदन है—आपको इस कदर उदास रहने की भला क्या जरूरत है ?

और २५ से नीचे रहनेवाले भाई सुनें—अगर आप अपने मुंह को लटकाये हुए रखने की जगह कभी-कभी उससे कहकहे भी फूटने दें, तो इसमें आपका क्या खर्च होगा।

कलाम और गला

दिल्ली के एक हिन्दी-पाक मुशायरे में हफीज जालंधरी अपनी एक गजल सुना रहे थे कि फिराक गोरखपुरी ने ऊंचे स्वर में कहना शुरू किया—"वाह हफीज प्यारे, क्या गला पाया है ? यार मेरा सारा कलाम ले लो और अपना गला मुझे दे दो।"

हफीज उसी क्षण शेर अधूरा छोड़कर फिराक से कहने लगे—"जनाब फिराक साहब ! मैं आपका नियाजमंद हूं। मेरी आवाज तो क्या, आप मुझे भी ले लीजिये; लेकिन खुदा के लिए मुझे अपना कलाम न दीजिये।"

— केदार उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयरिश कहानी—

माइकल मैकलवर्टी

राथलिन द्वीप की नीची पश्चिमी पहाड़ियों पर सुनहरी किरणों की वर्षा करता हुआ सूरज अस्त हो रहा था। इन पहाड़ियों में से एक पतली, नन्ही-सी पगडंडी बलखाती हुई चली जा रही थी, जिस पर एक नन्हा-सा बालक इठलाता चला जा रहा था।

अचानक उसे कुछ याद आया, उसने पगडंडी छोड़ दी और एक पहाड़ी पर दौड़कर चढ़ने लगा। जब ऊपर पहुंचा, तो हांफ रहा था। वह वहीं खड़ा होकर सुनहरे किनारे-वाले बादलों को और उनसे फूट रहे प्रकाश को बाल-सुलभ दृष्टि से निहारता रहा। नीचे तालाब के किनारे उसे अपनी गाय दिखाई दी और वह छड़ी घुमाता हुआ उसी की ओर लपका। दौड़कर तेजी से नीचे जाने पर कानों में आती हुई हवा के स्वर से वह प्रसन्न हो गया। पास की घास से कुछ समुद्री चिड़ियां उसके स्वर के कारण उड़ गयीं, मानो पहाड़ी पर से कुछ वर्षा के टुकड़े उड़कर इधर को आ रहे हों।

इस तालाब का मुंह पश्चिम की ओर था, जिसमें आस-पास की नहरों का पानी आ रहा था। एक ओर समुद्र की ओर से हवा आने का मार्ग था। उस लड़के ने पास पड़े पत्थर उठा-उठाकर तालाब में फेंकने आरंभ कर दिये। एक पत्थर फेंककर उस शांत जल में बनती-बिगड़ती लहरें देखता और उनके समाप्त होने से पूर्व ही एक और पत्थर फेंक देता। जब इससे थक गया, तो चपटे-चपटे पत्थर उठाकर पानी की सतह पर खिलवाड़ करने लगा।

जब कोई चपटा पत्थर दो-चार बार जल की सतह को छूता हुआ दूसरे किनारे पहुंच जाता, तो वह आनंद से उछल पड़ता और अपने स्वर की प्रतिध्वनि सुनकर पुनः आनंदित होता।

इस प्रकार आनंदित हो, वह दौड़ता हुआ गया और अपनी गाय की पीठ पर एक थपकी दी। अनमने मन से गाय ने उस धूलसनी पगडंडी पर अपने पांव बढ़ाये, जो उस घाटी से बाहर ले जाती थी।

वह लड़का अंतिम पत्थर तालाब में फेंकने ही वाला था कि उसके सिर पर एक चिड़िया उड़ती हुई गुजरी। उस चिड़िया की गर्दन पूरी सामने को खिंची हुई थी और मद्धिम प्रकाश में उसकी संतरी रंग की टांगें स्पष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिख रही थीं। निस्संदेह वह एक जंगली बत्तख थी। उसने तालाब के दो-तीन चक्कर लगाये और हर चक्कर के साथ वह नीचे आती गयी और अंत में पानी की सतह पर रेखाएं बनाती हुई पास ही की घास में घुस गयी।

वह लड़का आश्चर्य से उसे देखते हुए हल्के कदमों से उसका पीछा करने लगा। उस समय भूरे पड़ते जल में पत्थर-सी काली जंगली बत्तख का पीछा करना कठिन था। अंत में बालक वहां पहुंचा, जहां पहुंचकर वह बत्तख लंबी-लंबी घास में ओझल हो गयी थी। सामने ही घास के बीच कुछ जमीन-सी लगी। पानी गहरा न था, सो वह सावधानी से आगे बढ़ने लगा।

उसने अपनी पतलून के पांयचे ऊपर चढ़ा लिये और हाथ फैलाकर अपनी नंगी टांगें पानी में डाल दीं। जैसे-जैसे वह समीप पहुंचता गया, उसका पांव पानी में धंस जाता, कुछ बुलबुले उठते और तब रुककर वह दूसरा पांव उठाता। अब वह अत्यधिक सावधानी बरतने लगा; पर तभी उसकी पतलून का एक पैर छूट गया और पानी में गिर गया। उसने पकड़ने का प्रयत्न किया, तो पांव लड़खड़ा गये, जिससे छपाक का एक स्वर हुआ और वह जंगली बत्तख अपने पंख फड़फड़ाती हुई ऊपर उठी और पहाड़ी के शिखर की ओर उड़ती चली गयी।

कुछ क्षण तो वह बालक भयाकुल स्थिति में खड़ा रहा। तब वह आगे बढ़ा और उस छोटे-से द्वीपनुमा जमीन पर चढ़ गया, जहां ढेरों पंख व सूखी घास आदि थे। वह इधर-उधर ढूंढ़ता रहा और तब उसे वह घोंसला दिखाई दिया, जिसकी उसे तलाश थी। घोंसले में सूखी घास, तिनके और पंख थे और उन सबके बीच पड़ा था एक अंडा। वह प्रसन्नता से नाच उठा। उसने अंडा उठा लिया। वह आकाश की तरह स्वच्छ हरा था, जिसमें हल्के से पीले रंग की झलक थी। तब उसे अचानक याद आया कि उसने ठीक नहीं किया, क्योंकि उसने सुन रखा था कि अगर अंडे को कोई हाथ लगा दे, तो चिड़िया अंडे को सेना तो दरकिनार, उस घोंसले को ही छोड़ देती है।

उसके चेहरे की सारी प्रसन्नता सूख गयी और एक उदासी छा गयी। उसके मन ने माना कि उससे एक पाप, एक भयंकर अपराध हो गया है। उसने फौरन अंडा रखा और अपने पदचिह्नों को सावधानी से मिटाता हुआ अपनी गाय के पीछे दौड़ा। अब सूर्य अस्त हो चुका था और शाम की ठंडक ने उसके शरीर में सिहरन पैदा कर दी और मन में उदासी।

प्रातः उठकर नित्य की भांति स्कूल गया। सड़कपर न चलकर अपने नंगे पैरों को पत्थरों से बचाने के लिए वह सदा किनारे-किनारे घास पर ही चलता है। उसका घर चूंकि अंतिम है, इसलिए पहले उसे ही चलना पड़ता है। रास्ते में पैडी मिल गया, दोनों ने ही हाथ की बुनी नीली स्वेटरें पहनी हुई थीं। भूरे रंग की पतलूनें थीं। और घर पर बने हुए झोले थे। पर इसे तो अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

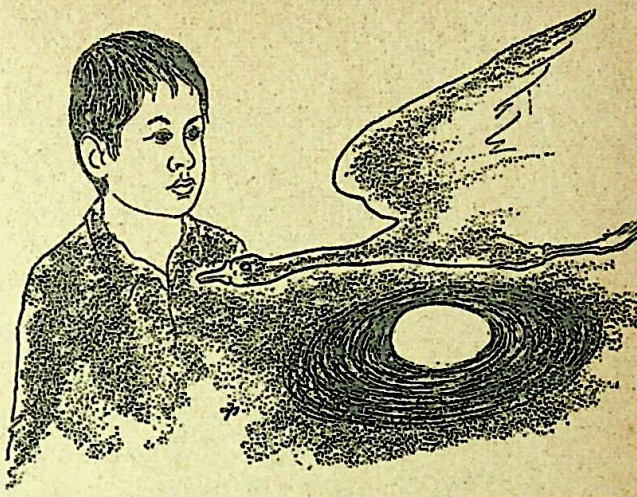

सले की बात सबको
ानी थी, सो मिलते ही
ी से बोला—"पैडी, मेरा
ं एक घोंसला है, एक
ली बत्तख का घोंसला,
समें एक अंडा भी है।"

पैडी को ईर्ष्या हुई,
ोला—"तुम्हें कैसे पता कि
ली बत्तख का है?"

"वाह, मैंने स्वयं अपनी
ंखों से देखा है। उसकी
लरी टांगें भी देखी हैं।"

"वह कहां है?" पैडी ने चुनौती देते हुए
हा।

"मैं तुम्हें क्यों बताऊं? तुम्हारे पास तो
ीन घोंसले हैं, तुमने तो कभी नहीं बताया।
ं बता दूंगा, तो तुम चुरा लोगे।"

पैडी उपेक्षा के स्वर में बोला—"रहने
ो, किसी ऐसी बत्तख के या किसी समुद्री
चिड़िया के अंडे होंगे, इसीलिए तो नहीं बता
हा है।"

उस बालक ने अपनी जीभ निकालकर
ैडी को दिखायी और बोला—"जा-जा,
ुछ जानता भी है! समुद्री चिड़िया के अंडों
र तो दाने होते हैं। यह तो साफ चिकना
रे रंग का है, मैंने उसे अपने हाथ में लेकर
खा है।"

कहने को तो यह बात कह गया; पर
ीभी उसे ध्यान आया कि यह मैं क्या कह
या। पर पैडी चूका नहीं, फौरन बोला—
या कहा, तुमने हाथ में लेकर देखा, तब
तो वह छोड़ जायेगी। वह जरूर छोड़
जायेगी, जरूर छोड़ जायेगी।"

यही शब्द तो वह सुनना नहीं चाहता
था। पैडी इतना कहते हुए कूदता-फांदता
आगे निकल गया।

इस बालक को लगा, मानो वह अभी रो
पड़ेगा। उसका मन भी कह रहा था कि
पैडी ने ठीक कहा है; पर उसकी बात होनी
नहीं चाहिये। इसलिए वह ऊंचे स्वर में
चिल्लाया—"नहीं, वह नहीं छोड़ेगी, नहीं
छोड़ेगी।" इससे उसके मन को कुछ विश्वास
तो बंधा।

लेकिन अपनी कक्षा में बैठे-बैठे उसका
विश्वास फिर डगमगाने लगा। खिड़की में
से शीशे पर गिरती और गिरकर लुढ़कती
बूंदें देखकर उसे याद आयी तालाब के उस
सुनसान कोने की, जहां ठंड के मारे घोंसला
भी ठंडा होगा और उसमें पड़ा वह एकाकी
अंडा भी पत्थर की तरह निर्जीव और ठंडा!

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके मन में इन विचारों से सिहरन हो उठती। दिन-भर उसका मन पढ़ाई में न लगा। वर्षा में ही भागते-भागते वह घर पहुंचा। आलू और नमक लगी सूखी मछली का भोजन करने में भी उसे उस दिन कुछ समय न लगा। दौड़ा-दौड़ा तालाब पर गया और पानी में पैंठकर उसी स्थान की ओर लपका। सधे-सावधान कदमों से आगे बढ़ने लगा। दिल की धड़कन तेज हो गयी और हर धड़कन यही मना रही थी कि जंगली बत्तख ने घोंसला न त्यागा हो। अंतिम दो-चार कदम पर तो बड़ी कठिनाई से वह अपने आपको संभाल पाया।

लंबी-लंबी घास में झांककर देखा कि जंगली बत्तख अपनी चोंच सामने रखे लेटी है, मानो सो रही हो। बालक का हृदय बांसों उछल पड़ा। आखिर उसने घोंसला नहीं त्यागा था। वह वापस मुड़ने को ही था कि न जाने क्या हुआ कि बत्तख ने अपनी गर्दन उठायी, इधर-उधर घुमायी और पंख फैलाकर ऊपर उड़ गयी।

बालक फिर डर गया, लौटने लगा; पर उसकी दृष्टि फिर उत्सुकता से घोंसले की ओर गयी। उसने देखा कि उस घोंसले में दो अंडे पड़े थे। आनंद के मारे उसकी सांस ऊपर की ऊपर रह गयी। वह लपककर तालाब से निकला और वर्षा में सीटी बजाता हुआ अपने घर की ओर भाग गया।

★

जिंदगी का हिसाब

"डाक्टर साहब, जल्दी चलिये मरीज की हालत खराब है। बस यहीं नजदीक ही जाना है। रिक्शा बाहर खड़ा है।" डाक्टर साहब ने बैग आगंतुक को थमाया। रिक्शा मकान के दरवाजे पर पहुंचा, तो अंदर से जोर-जोर से रोने की आवाज आ रही थी। मरीज लंबे सफर पर रवाना हो चुका था। मरीज के रिश्तदार ने मायूसी से डाक्टर साहब की तरफ देखा और दो आंसू उसकी आंखों से टपक पड़े। डाक्टर साहब ने रिक्शा-वाले को वापस चलने को कहा और साथवाले व्यक्ति से भी कुछ कहा, जिसके जवाब में उसने ठंडी सांस भरकर कहा—"हां डाक्टर साहब, कल सवेरे दवाखाने पहुंचा दूंगा।" शायद फीस की बात थी।

पान की दुकान पर एक साहब पानवाले से कह रहे थे—"भई, तुम्हें पता चल ही गया होगा कि.....श्रीवास्तव साहब चल बसे। उनका कितना हिसाब निकलता है? उनके घरवालों ने पैसे भिजवाये हैं।"

"कैसा हिसाब बाबूजी?" पानवाले ने दुःखभरी आवाज में कहा—"वे जब इस दुनिया से ही अपना हिसाब खत्म करके चले गये, तो मेरा उनका हिसाब कैसा? मेरा उन पर कुछ बाकी नहीं है। विश्वास न हो, तो कापी देख लीजिये।" और कापी के बीच से एक पन्ना गायब था।

—जगदीश चंद्र बत्रा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुबचन सिंह

"कसाई नहीं तो...?" रामसेवक प्राय: जंगबहादुर को कहता—"अब तो शहरों में मुर्दे बिजली से जलने लगे हैं। कुत्ते भी बिजली से मारे जाया करेंगे। तब क्या करोगे ?"

जंगबहादुर होंठों में मुस्करा देता। कसाई छोड़, कोई उसे जल्लाद या पाजी कह दे, तब भी वह सुनकर मौन रह जाता है। कोई अधिक कुरेदे, तो कह देता है—"अरे भाई, जब नौकरी है, तो हमको अपना काम करना ही होगा; और हम अपना फरज जरूर पूरा करेगा।"

यह सब जानते हैं कि जंगबहादुर नोटी-फाईड एरिया में मुलाजिम है। उसका काम है एक दो-नाली बंदूक लेकर गली-टोले में घूमना और जहां जिस आवारा कुत्ते को देखे, उस पर गोली दाग देना। भंगी उस मरे हुए कुत्ते को उठाकर नदी किनारे किसी गड्ढे में फेंक आते हैं।

कुत्ते मारना जंगबहादुर की ड्यूटी है। कोई उसके काम में बाधा डाले, और कोई कुछ कहे, तो वह उसकी रिपोर्ट कर सकता है। जिस पर रिपोर्ट होगी, उस पर चालान होगा, और फिर सजा और जुरमाना!

जंगबहादुर से लोग घृणा करते हैं। बच्चे उसके पास नहीं फटकते। जिस गली में वह अन्य मजदूरों के साथ कंपनी के क्वार्टर में रहता है, उस गली के लोग उससे ठीक तरह बात नहीं करते। किसी प्रकार का खान-पान और लेन-देन भी नहीं है।

जंगबहादुर की स्त्री एक नाटे कद और खामोश तबीयत की औरत है, जो एक विशिष्ट पहनावे में रहती है। उसके गले में लाल-लाल बड़े मनकों की माला और कानों में चांदी की मुर्कियां झूला करती हैं। गली की औरतें बात-बात पर उससे झगड़ा करती हैं। कभी नल पर, तो कभी कहीं और। वह लाजवाब-सी होकर रह जाती है।

"कसाइन!" यही ताना मिलता है उसे।

और यह सुनकर वह माथा नीचे झुका लेती है।

नाम है उसका कुसुम। जंगबहादुर उसे बहुत चाहता है। उसने उसे समझा रखा है—"कोई कुछ कहे, कुछ सुनाये, मुंह से कुछ मत बोलो!"

कुसुम ऐसा ही करती है। पर वह भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जंगबहादुर के काम से खुश नहीं है। बल्कि दुखी है। पर वह मुंह से कुछ नहीं कहती। जब मन अधिक दुःखी हो जाता है, तो एकांत में रो लेती है।

इस रोने के पीछे एक कारण और भी है, और वह यह कि उसके कोई संतान नहीं।

"संतान हो भी तो कैसे!" एक पड़ोसिन ने ताना मारा था—"कसाइयों के यहां भी क्या कभी कुछ फलता-फूलता है? क्या बिगाड़ते हैं ये बेचारे बेजबान कुत्ते, जिन्हें कसाई बहादुर गोली दागता है!"

कुसुम किसी कुत्ते के गोली लगकर मरने की कल्पना से सिहर उठती है। और बहादुर से पूछती है—"जिसका खून करते हो, क्या उसका पाप नहीं लगेगा तुम्हें? कैसे घर फूले-फलेगा?"

बहादुर की नजर ऊपर आसमान की ओर उठ जाती है। मन-ही-मन वह जाने भगवान से क्या कहता है, क्या पूछता है, और फिर चुप रह जाता है। कुसुम को कोई उत्तर नहीं दे पाता।

एक दिन कुसुम बोली—"तुम यह नौकरी छोड़ दो।"

"पांच बरस की पुरानी नौकरी छोड़ दूंगा, तो करूंगा क्या? पक्की नौकरी है।"

कुसुम साड़ी के छोर से आंसू पोंछने लगी।

एक दिन ऐसी ही एक और बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो गया। कुसुम सवेरे ही बोली—"मेरा मन खराब है। काम पर मत जाओ। मैंने आज एक सपना देखा है। तुम्हें बहुत सारे कुत्तों ने मिलकर काटा है। तुम लहूलुहान पड़े तड़प रहे हो। आज जरूर कोई अनर्थ हो जायेगा।"

जंगबहादुर बोला—"लो बैठ जाता हूं। जो बोलने को है, बोलो। पीछे से मत टोको।"

"आज काम पर मत जाओ।"

"बिना छुट्टी लिये कैसे नहीं जायें?"

"आज भर मत जाओ!" कुसुम गिड़गिड़ायी।

"चुप पगली!" कहता हुआ नाराज-सा जंगबहादुर ड्यूटी पर चला गया। लेकिन दिमाग परेशान था। कुसुम का रोता हुआ चेहरा उसकी आंखों के सामने घूमता रहा। कुसुम पर गुस्सा भी आ रहा था—"वह यह क्यों नहीं समझती कि डीऊटी डीऊटी है।"

बहुत दिनों से वह नगर की एक बस्ती की ओर नहीं गया था। कमेटी के दफ्तर में रिपोर्ट आयी थी कि वहां आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ गयी है। दफ्तर से उसे उसी ओर जाने का हुक्म हुआ।

जंगबहादुर उसी ओर चल दिया। सच में उस दिन उसे अपने काम से कुछ नफरत का अहसास हो रहा था। कंधे से बंदूक टेककर बिलकुल चलने का मन नहीं कर रहा था। लेकिन जाना ही पड़ा। कुसुम की बात याद आ गयी। सपने की बात! "बहुत सारे कुत्तों ने मिलकर उसे काटा है, और वह लहूलुहान जमीन पर पड़ा कराह रहा है।" तो क्या आज सजमुच कुत्ते उसे काटेंगे ही!

नहीं नहीं, वह उनका दुश्मन थोड़े ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। वह तो 'डीऊटी' से बंधा हुआ एक मजदूर आदमी है। वरना कभी उनकी हत्या न करता।

बड़ी गंदी बस्ती है। बहुत दिनों के बाद बहा गया था। नंग-धड़ंग बच्चे टोली बनाकर उसके पीछे हो लिये। वे कुत्तों के मरने का तमाशा देखना चाहते थे। एक बार उसने घूरकर बच्चों की ओर देखा। लेकिन उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ। जंगबहादुर मन-ही-मन मुस्कराया। बच्चे जानते हैं, मैं उन पर गोली नहीं चला सकता। क्योंकि वे इन्सान के बच्चे हैं। वह चुपचाप गश्त लगाने लगा। घरवाले उसे देखते ही अपने-अपने कुत्तों को उनका नाम ले-लेकर पुकारने लगे। कोई-कोई तो अपने कुत्ते को खींचकर घर में ले गया। लेकिन कुत्ते थे कि उसके चैलेंज को स्वीकार करते हुए एक स्वर में भौंक रहे थे।

जंगबहादुर इतना मौका तो सबको दे ही देता है कि जो जिस कुत्ते की रक्षा करना चाहे, कर ले। उसे कोई एतराज नहीं। लेकिन अगर कोई ऐसा कुत्ता है, जिसके गले की पट्टी के साथ लटका हुआ नंबर न दिखाई पड़ा, तो उसे गोली मारनी ही पड़ेगी। क्योंकि यह उसकी 'डीऊटी' है।

कई कुत्ते छिपाये जा चुके थे। एक घर के बरामदे में से एक कुतिया अचानक ही निकलकर उस पर भौंकने लगी। वह शायद छिपा दी गयी थी; लेकिन मौत उसे बाहर खींच लायी। जंगबहादुर ने देखा, न उसके गले में पट्टी थी और न नंबर। बगैर मालिक की कुतिया! उसने निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। ठांय-सी एक आवाज हुई और कुतिया धरती पर गिरकर 'आउं-आउं' करती हुई तड़पने लगी। दो-चार बार उसने हाथ-पांव मारे और फिर ठंडी हो गयी।

जंगबहादुर विभ्रांत दृष्टि से उसे देखता रह गया। आज तक उसने कई कुत्तों पर गोलियां दागी थीं, कईयों को मरते देखा था; लेकिन जाने क्यों आज की मौत उसे बड़ी भयानक, बड़ी दर्दनाक और बड़ी करुण लगी। उसके देखते-ही-देखते एक पिल्ला उस मरी हुई कुतिया के पास आया और चूं-चूं करने लगा।

जंगबहादुर उसी विभ्रांत दृष्टि से उस नन्हे व्याकुल बच्चे को भी देखता रहा। और सोचने लगा, क्या इसी की रक्षा के लिए बावरी कुतिया उस पर भौंकी थी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने घर के परदे के पीछे कोई औरत खड़ी उसे कोस रही थी। उसे लगा, जैसे आज उसके हाथ से एक बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है। उसे कुतिया को नहीं मारना चाहिये था। उसे उस पिल्ले पर बहुत दया आयी। वह आगे बढ़ा और उसे अपनी गोद में उठा लिया। वह बच्चा उसकी गोद में आकर और भी जोर-जोर से चूं-चूं करने लगा। इस बात से शायद बिलकुल अनजान कि उसकी मां का हत्यारा वही है।

जंगबहादुर बस्ती का चक्कर लगाने की अपेक्षा सीधा दफ्तर की ओर लौट चला।

वहां पहुंचकर उसने बंदूक दफ्तर में जमा करायी और बगैर हाजरी लिखाये घर की ओर चल दिया। जाते-जाते कहता गया—"कल से हम काम पर नहीं आयेगा। हम नौकरी से छुट्टी लेता है।"

उस दिन जब वह गली से हाथ में कुत्ते का बच्चा लिये हुए गुजरा, तो कुछ लोगों ने हंसकर पूछा—"अरे कसाई, यह क्या उठा लाया ?"

वह पिल्ले का मुंह चूमता हुआ बोला—"बच्चा !"

"आखिर वही हुआ न !" रामसेवक ने देखा, तो बोला—"पागल हो ही गया न। कुत्ते को अपना बच्चा कहता है।"

जंगबहादुर घर में आकर कुसुम से बोला—"ले देख यही है हमारा बच्चा ! भगवान ने दे दिया न।" और वह हंसा। हौले से आश्चर्यजनक हंसी। कुसुम एकदम अवाक्-सी विस्मित दृष्टि से उसकी ओर देखती रही !

शरम आनी चाहिये !

मेरे बड़े भाई के बंगले में एक जामुन का पेड़ है, जिसमें बहुत बड़ी और मीठी जामुन होती हैं। भाभी का दस्तूर है कि बाग के किसी फल को खुद खाने या बच्चों को खिलाने के पहले, वे पहले ठाकुरजी को भोग लगाया करतीं हैं। पिछली फसल में जो सबसे पहले ग्यारह जामुन माली ने दोपहर को लाकर दिये, वह भाभी ने अलग रख दिये और बच्चों से कहा कि इन्हें वे अभी न खायें; कल 'भोग' लगने के बाद उन्हें मिलेंगे। मेरे आठ-वर्षीय भतीजे अतुल से न रहा गया और उसने चुपके से दो जामुन खा लिये; क्योंकि जामुन गिने हुए ग्यारह थे, इसलिए भाभी ने कमी जान ली। पूछने पर सब बच्चों ने कहा कि उन्होंने नहीं खाये। मुकदमा मेरे भाई साहब (जो वकील हैं) के सामने पेश हुआ। उन्होंने बच्चों से अपनी-अपनी जीभ बाहर करने को कहा। अतुल की जबान रंगी हुई थी। चोर पकड़ा गया। भाई साहब ने उसे बहुत डांटा और कहा—"अतुल, तुझे शरम आनी चाहिये। एक तो मां का कहना नहीं माना और दूसरे झूठ बोला। जब मैं तेरे बराबर था, तो कभी झूठ नहीं बोलता था।" अतुल चार लड़कियों के बाद हुआ था, इसलिए दुलार में खराब हो गया था। सो वह ढिठाई से बोला—"तो फिर डैडी आपने किस उम्र से झूठ बोलना शुरू किया था ?" — रूपनारायण शिवपुरी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू उपन्यास—

शरीफजादा

मिर्जा रुसवा

मिर्जा आविदहुसैन के वालिद मिर्जा बाकर हुसेन लखनऊ में हजरत अब्बास की दरगाह के पास रहते थे। दस पये हफ्ता बिना खिदमत कराये नवाब करमतउल्दौला की सरकार से पाते थे। पिता की मृत्यु के समय आविदहुसैन मिडिल क्लास तक पहुंच गये थे। ज्यों-त्यों करके मिडिल पास हो गये। घर का भार उन्हीं पर आ पड़ा था; मगर खर्चे की तरफ से किसी कदर इत्मीनान था, इसलिए कि नवाब की सरकार से सात रुपये मासिक उनकी वालिदा को मिलते रहे; मगर पूरा साल भी न गुजरा था कि नवाब साहब कर्बला जाकर स्वर्गवासी हो गये।

अब ये एंट्रेंस में थे। बाहर की आमदनी बंद हो गयी, तो घर का माल-असबाब बिकने लगा, दो-तीन तपेलियों और लोटों के सिवा कुछ भी बाकी न रहा। ये अब तक स्कूल में पढ़ने जाते थे। बीवी की चूड़ियां गिरवी रखकर दस रुपये इम्तहान की फीस के दाखिल किये। इम्तहान में दो दिन थे कि वालिदा हैजे में फंस गयीं और ऐन इम्तहान के दिन उनका इंतकाल हो गया। बेचारे इम्तहान न दे सके। घर का असबाब और बीवी का दहेज मां की जिंदगी ही में फरोख्त हो चुका था, जो कुछ रहा-सहा था, वह क्रिया-कर्म और फातिहा में लग गया। घर में मियां, बीवी, एक तीन बरस का लड़का और एक छः महीने की लड़की थी। रोजगार की कोई सूरत नहीं नजर आती थी।

आज बड़ी परेशानी में घर से निकले हैं, बीवी-बच्चों का दूसरा फाका है। दिल में कुढ़ रहे हैं कि एंट्रेंस की सनद पर शहद लगाओ और चाटो। मिडिल करके रुड़की चला जाता, दो साल किसी-न-किसी तरह गुजार कर सबओवरसियर तो ही हो जाता या मेडिकल कालेज चला जाता।

मियां तो नौकरी की तलाश में बाहर गये। बीवी बेचारी सुबह से टोपी काढ़ने में मसरूफ थीं—तैयार हो गयी, तो खिड़की में जाकर पुकारीं—"हमसाई (पड़ोसी) तुम्हारे मियां घर में हैं?"

"हां, क्या टोपी तैयार हो गयी?"

"हां बहन, खुदा-खुदा करके तैयार हुई है, जरा तुम अपने मियां को तो दिखाओ।"

पड़ोसन टोपी अपने मियां के पास ले गयीं और बोलीं—"बेच दो ..... बेचारी के यहां आज तीसरा फाका है, बच्चे गश में पड़े हैं।"

"तुमने मुझसे पहले क्यों न कहा, बनिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के यहां से कुछ ला देता।"

"बड़े गैरतदार लोग हैं, चाहे दम निकल जाये, मुंह से न कहेंगे, मियां-बीवी की एक राह है, जब फाका होता है, बच्चों तक को घर से नहीं निकलने देते।"

मियां हसन अली टोपी लेकर घर से निकले, जल्दी-जल्दी पायचेवाली गली में पहुंचकर कई दुकानदारों को टोपी दिखायी, आखिर एक रुपये में बिक गयी।

हसन अली ने रुपया लाकर अपनी बीवी को दिया, वह खुशी-खुशी दौड़ी गयीं और आबिदहुसैन की बीवी को बुलाकर रुपया हवाले कर दिया।

उस वक्त की खुशी इस नेकबख्त बीवी की जबाने कलम से अदा नहीं हो सकती। फौरन मियां हसन अली से खाने-पीने के लिए अनाज मंगाया, बच्चों को दो टिकियां डालकर खिलायीं। खुद कुछ नहीं खाया, एक टोपी का कपड़ा और रखा था, उसे निकालकर टोपी छापी और उसे काढ़ना शुरू कर दिया। भूख के मारे टांका नहीं सूझता, हाथ कांप रहे हैं; मगर क्या मुमकिन कि वे बिना मियां के कुछ खायें। अब चार बजे होंगे, टोपी बकुची में बांधी, वजू किया, नमाज पढ़ी, फिर चूल्हे में आग सुलगायी।

इधर आबिदहुसैन ने दिन-भर में कई दफ्तर छान मारे, दस-बारह बंगलों पर गये; मगर कहीं कोई काम नहीं मिला। सरे शाम घर की तरफ लौट रहे थे, बीवी-बच्चों का खयाल दिन-भर मस्तिष्क में घूमता रहा है, कदम उठ नहीं रहे हैं, एक जगह चक्कर आ गया, सड़क के किनारे घास पर बैठ गये, सोचने लगे कि घर जाकर क्या करेंगे, अपने आपको दरिया में गिरा दें, साथ ही बीवी-बच्चों की बेकसी का खयाल आ गया।

वे इन्हीं खयालात में थे कि एक गंवार-सा आदमी करीब आकर बैठ गया।

"मियां साहब, आप कुछ फारसी पढ़े हैं?"

"हां पढ़ा तो हूं, क्यों?"

आदमी ने मिर्जई की जेब से एक खत निकालकर दिया। खत का खुलासा यह था कि बलदेव मिस्त्री की मार्फत एक हजार का लोहा खरीदकर भेज दो, उसके बाद लोहे की लंबी-चौड़ी फेहरिस्त थी। वह आदमी बड़ी विनय से कहने लगा—"आप जवाब भी लिख दीजिये, थोड़ी दूर चले चलिये, बलदेव मिस्त्री का कारखाना है, आपको देर नहीं होगी, सवारी पर भिजवा दूंगा।"

आबिदहुसैन भी यह सोचकर कि घर दूर है, चला भी नहीं जाता है, आगे पहुंच जायेंगे, उस शख्स के साथ बलदेव के कारखाने में पहुंचे और खत पढ़कर सुनाया, जवाब लिखने के लिए कलम-दवात और कागज की जरूरत हुई।

बलदेव का कोई चौदह-पंद्रह बरस का लड़का माधो कुछ दूर पर मेज-कुर्सी लगाये पढ़ रहा था। बलदेव ने उससे कलम-कागज मंगवाकर जवाब लिखवाना शुरू किया। बातों-बातों में आबिदहुसैन के मुंह से निकल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया कि एंट्रेंस पास हूं। बलदेव के कई मुलाकातियों के लड़के एंट्रेंस पास करके अच्छी नौकरियों पर निकल गये थे। माधो अभी छठीं में था; मगर बाप को उसे एंट्रेंस पास कराने का अरमान था, उसने पांच रुपये महीने पर रोजाना दो घंटे के लिए आविदहुसैन को ट्यूशन पर रख लिया।

आविदहुसैन को घर वापस आते-आते दस बज गये। घर में चिराग जल रहा था। उन्हें हैरत हुई कि तेल कहां से आया? बैठने के साथ ही बीवी ने दस्तरख्वान लाकर बिछा दिया और हाथ धोकर खुद भी बैठ गयीं। सारा माजरा सुनाया और देर से लौटने का सबब पूछा। उन्होंने अपनी सारी घटना कह सुनायी। वे पांच रुपये महीने पर खुश नहीं थे; मगर उनकी बीवी उन बीवियों में नहीं थी, जो हमेशा अपने शौहरों की शिकायत किया करती हैं। उन्होंने मियां को ढाढ़स दिया कि खुदा का शुक्र करो, नमक का सहारा बहुत होता है, टोपियां अगर महीने में चार तैयार हो गयीं, तो ये चार रुपये भी कहीं नहीं गये, तुम अपना दिल मजबूत रखो।

आविदहुसैन दूसरे ही दिन से माधो को पढ़ाने जाने लगे। उसे पढ़ाकर कोई ग्यारह बजे घर पहुंचे, बीवी के साथ खाना खाया। एक बजे आडिट आफिस गये, तो वहां वहीं जवाब मिला कि कोई जगह खाली नहीं है। दफ्तर से बाहर आते समय एक दोस्त रजा हुसैन से मुलाकात हो गयी, उन्होंने उसी दफ्तर में अक्सकशी सीखने का इंतजाम कर दिया। आविदहुसैन आदमी मेहनती थे, दफ्तर में अक्सकशों की जरूरत भी थी, आठ दिन में जरूरी काम सीखकर बीस रुपये माहवार के मुलाजिम हो गये। माधो को पढ़ाना भी नहीं छोड़ा, आठवें-दसवें दिन बीवी टोपी तैयार कर लेती थी, इस तरह तीस रुपये महीने का इंतजाम हो गया।

आविदहुसैन को अपनी जिंदगी में जितनी कामयाबियां हुईं, उनमें उनकी बीवी का बहुत बड़ा हाथ था। मियां-बीवी में एक को दूसरे पर पूरा भरोसा था। मियां के कामों पर नुक्ताचीनी करने की उनकी आदत न थी, वे मियां की इज्जत करती थीं, बदगुमानी को दखल नहीं था।

मिर्जा साहब दिन-भर दफ्तर में काम करने के बाद शाम को मुंशी नबीबख्श नक्शा-नवीस के घर चले जाते थे, उन्हें अंग्रेजी पढ़ाते और उनसे नक्शानवीसी व भवन-निर्माण का तरीका सीखते, कुछ महीनों में पूरे नक्शानवीस और एस्टीमेटर हो गये। मुंशी नबीबख्श एक महीने की छुट्टी पर जाने लगे, तो उन्हें अपना कायम मुकाम बना गये। इंजीनियर उनके काम से बहुत खुश था; मगर कुछ रोज बाद तमाम एस्टी-मेटरों के साथ उन्हें भी कम कर दिया गया। अब वही पांच रुपये माधो की ट्यूशन के रह गये।

आविदहुसैन ने बलदेव के कारखाने में लोहार और बढ़ई का काम सीखा, औजार खरीदकर घर पर मेज, स्टूल, चौकी, घड़ौंची बनाकर बेचने लगे। नीलाम में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीने की एक टूटी मशीन लाकर उसे दुरुस्त किया, अब मुहल्ले से सिलाई का काम आने लगा, मियां-बीवी की कमाई में खुदा ने इतनी बरकत दी कि अपना गिरवी मकान छुड़ाकर किराये पर दे दिया और जिसमें वे खुद किराये से रहते थे, उसे भी खरीद लिया। बीवी के हाथ व गले में दो-एक जेवर भी हो गये। ये बीवी ने अपनी सिलाई से बनवाये थे।

आबिदहुसैन इसी बीच पंजाब यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग के इम्तहान की तैयारी भी प्राइवेट तौर पर करते रहे। बाद में इम्तहान में अव्वल नंबर पास हुए और दो ही महीने में पचहत्तर रुपये के नौकर हो गये। मिर्जा साहब ने कभी एक

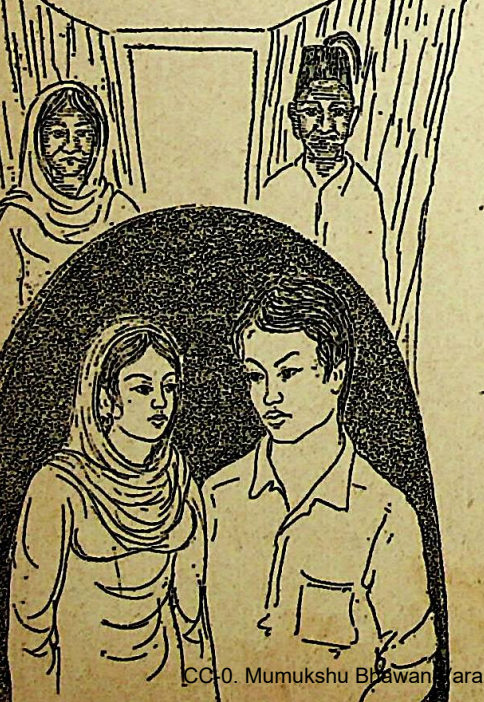

हब्बा नाजायज नहीं लिया। बलदेव की नौकरी भी नहीं छोड़ी। घर पर भी काम करते रहे। बीवी अलग काम करती थी। मिर्जा साहब की लगन और परिश्रम की वजह से अफसर भी उनकी कद्र करते थे। इस तरह आगे चलकर वे सबइंजीनियर हो गये।

जब मिर्जा साहब महकमा नहर में मुलाजिम थे, एक रिश्वतखोर हेडक्लर्क से उनकी अदावत हो गयी। वजह यह थी कि ठेकेदार दो रुपये सैकड़ा ओवरसियर को देता था, ओवरसियर और हेडक्लर्क में आधे-आधे का हिस्सा था। मिर्जा साहब उस ओवरसियर की जगह तब्दील होकर आये थे; लेकिन ये इन बातों के कब रवादार थे। मुंशीजी को सख्त नुक्सान पहुंचा। वे साहब के कान उनकी तरफ से भरने लगे, पहले तो कुछ असर न हुआ, आखिर साहब उनसे नाराज हो गया।

मिर्जा साहब की वजह से दफ्तरवालों को आर्थिक नुक्सान होता था, इसलिए वे उन्हें निकलवाने की फिक्र में थे। आखिर एक ठेकेदार से घूंस देने का झूठा बयान साहब के सामने दिलवा दिया और इस ढंग से मुकद्दमा बनाया कि साहब को यकीन हो गया। उसने मिर्जा साहब को मुअत्तल करके मुकद्दमा अदालत में भेज दिया। इस्तगासे की तरफ से गवाह पूरे उतरे और चार्जशीट कायम हो गया।

अब सफाई के गवाह गुजरे। मिर्जा साहब ने यह उज्र किया कि जिस दिन और जिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्त का यह वाकया है, वे पचास मील के फासले पर खुद इंजीनियर के साथ पैमाइश कर रहे थे; मगर हेडक्लर्क ने पहले ही से किताब में तारीख बदल दी थी। लिखे हुए के मुकाबले में मिर्जा साहब का जवानी उज्र न चल सका। अब जेल जाने में कोई बात बाकी न थी। साहब को उनसे कोई हमदर्दी न थी। एक तो हेडक्लर्क ने नाराज कर रखा था, दूसरे साहब किसी कदर बद-जबान भी थे, कुछ रोज पहले दोनों में तकरार भी हो चुकी थी।

अब मुकद्दमे के फैसले में तीन दिन बाकी हैं। ठेकेदार शिवबिहारीलाल और रामदीन शराबखाने में बैठे ठर्रा उड़ा रहे हैं और गप-शप लड़ा रहे हैं।

"कहो, इस मुकद्दमे में क्या होगा ?"

"मिर्जा अब की बार नहीं बचते। गये छः-सात बरस को।"

"बड़े पुण्य का काम किया तुमने !"

"ऐसे का जाना ही अच्छा है। न आप खायें, न दूसरों को खाने दे।"

"क्यों, क्या ठेका तोड़ दिया ?"

"ठेका तो नहीं तोड़ा, पैमाइश में कोई गुंजायश नहीं रखी।"

"तो फिर जितना काम तुमने किया था उसके दाम दिलवा दिये—एक पुल हमने भी बनवाया था, उसमें न एक इंच घटाया न बढ़ाया। न हमारा नुक्सान किया न सरकार का। तुमने उस गरीब को बेकार फंसा दिया, देखना क्या भुगतान भुगतते हो !"

"तो क्या यह सब झूठ है ?"

"बिलकुल झूठ है, उस दिन चार बजे साहब ने पुल देखा, मिर्जा साहब साथ थे, मैं भी वहीं था, मेरे चिट्ठे में साहब का मिला खत लिखा हुआ है, उस दिन साहब ने शिवदीनखेड़ा में मुकाम किया, दूसरे दिन सुबह से शाम तक पैमाइश में रहे, तुझसे रिश्वत लेने किस वक्त पहुंचे ?"

"७ मई को साहब दौरे पर गये ही नहीं, नोटबुक पर १७ तारीख लिखी है !"

"७ से १७ दफ्तर में बना है, कोई हमारा चिट्ठा तो देखे।"

इधर इन दोनों ठेकेदारों में ये बातें हो रही थीं, उधर मल्खी चमार जो मिर्जा के साईस का भाई था, वहीं भट्ठी में बैठा उनकी बातें सुन रहा था, उसने अपने भाई से सारा बयान किया। साईस ने मिर्जा साहब से सब हाल कहा। अदालत में रामदीन मय चिट्ठे के तलब हो गया। यही शहादत मिर्जा साहब की बेकसूरी के लिए काफी थी; मगर भगवान का किया कुछ ऐसा हो गया कि मिर्जा साहब के एक दोस्त ने मल्खी से रामदीन और बिहारी की बातचीत दोबारा सुनकर और अंग्रेजी में अनुवाद करके अखबार में भेज दी, यह अखबार सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर की नजर से गुजरता था, उसने अखबार पढ़कर एग्जिक्यूटिव इंजीनियर की रिपोर्ट निकालकर देखी। उसमें सीता नाले के मुआइने का जिक्र था, और तारीख ७ मई और मुकाम शिवदीनखेड़ा तहरीर था।

साहब ने उसी वक्त एक चिट्ठी एग्जि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यूटिव इंजीनियर को और एक सेशन जज को तहरीर की। अब तो मुकद्दमे की सूरत ही बदल गयी—मिर्जा साहब बाइज्जत बरी हुए। शिवबिहारी ठेकेदार सात बरस को गया, हेडक्लर्क पर जालसाजी का जुर्म तो साबित न हो सका; लेकिन उसे इस इलाके से फौरन तब्दील कर दिया गया। मिर्जा साहब वहीं रहे और सुपरवाइजर बन गये।

आगे चलकर मिर्जा साहब ने असिस्टेंट इंजीनियर तक तरक्की की। यह तरक्की उनकी योग्यता को देखते हुए कुछ भी न थी। उनसे कम योग्यता के लोगों ने ज्यादा तरक्की की थी। वास्तव में तरक्की के लिए केवल परिश्रम या दयानत से काम नहीं चलता क्योंकि तरक्की के लिए अफसरों की खुशनूदी भी जरूरी थी। सो बेचारे मिर्जा साहब पेंशन लेकर घर रहने लगे।

मिर्जा आबिदहुसैन की उम्र अब लगभग पचास साल की है। गंदुमी रंग, मियाना कद। परिश्रम का नतीजा यह है कि वे अब भी नौजवान मालूम होते हैं। चौड़ी हड्डी जबर्दस्त कलाइयां, मजबूत हाथ, रफ्तार किसी कदर तेज, देखने से मालूम होता है कि जैसे इन्हें बहुत कुछ काम करना है। किसी ने इन्हें कभी बेकार नहीं देखा होगा। —रूपांतर : गुरुप्रसाद अवस्थी

पिता की बात

मेरे एक मित्र प्रिंसिपल हैं। उन्होंने एक बार मुझे अपने घर चाय के लिए बुलाया। लेकिन जब चाय आयी, तो सिर्फ एक प्याली।

मैंने पूछा—"आप नहीं लेंगे?" बोले—"जी नहीं, मैंने चाय-सिगरेट, सिनेमा सब छोड़ दिया।" मैंने कहा—"अभी से यह वैराग्य!"

वे बोले—"वैराग्य की बात नहीं है। मुझे तनख्वाह करीब हजार रुपये मिलती है। समाज में भी प्रतिष्ठा है; लेकिन मेरे तीन छोटे-छोटे लड़के हैं। सभी भिन्न-भिन्न स्कूलों में पढ़ रहे हैं। जिन बच्चों का पिता शिक्षा का उच्चाधिकारी हो और जिनके यहां सुख-सुविधा की कमी न हो, उन बच्चों को बिगड़ते देर नहीं लगती। अगर मैं चाय-सिगरेट पीऊंगा, तो वे और कुछ पीने की सोचेंगे। अगर मैं सिनेमा देखूंगा, तो शायद वे फिल्म में भरती होने का सपना देखने लगें। प्रगति तो पिता से आगे बढ़ने में है न! फिर वह बिगड़ने की दिशा में हो या सुधरने की। यही सब सोचकर मैंने उनकी भलाई के खातिर अपने घर से चाय-सिगरेट व सिनेमा को निर्वासित कर दिया है। अपने पर अंकुश रखने से बच्चे निरंकुश नहीं हो पाते।" और मैं उस साधन-सम्पन्न पिता की सादगी पर मुग्ध रह गया।

— रामनारायण उपाध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

- अमरीकी अमरता
- गुरिल्ला लड़कियां
- नंगी देह, भूखे पेट सिपाही
- निर्णय फाइलों में दब गया
- हवाई हड़ताल

अमरीका के पनामा शहर में एक अमरत्व प्राप्ति संशोधन संस्था है। वाशिंग्टन और न्यूयार्क में भी आयुष्यवर्धक संस्थाएं बनी हैं। इन संस्थाओं का लक्ष्य मनुष्य को अमर बनाना है। इसी लक्ष्य की पूर्ति में डिट्रायट के प्रोफेसर राबर्ट एटिंगर ने 'दि प्रास्पेक्ट आफ इम्मार्टैलिटी' यानी 'अमरत्व-प्राप्ति की संभावनाएं' नाम से एक पुस्तक लिखी है। यह मनुष्य को अमर बनाने का जो उपाय बताती है, वह आत्म-विज्ञान का नहीं, बल्कि सर्वथा भौतिक विज्ञान का है। उपाय यह है कि हृदय-गति बंद होने के तुरंत बाद शरीर को बर्फ में जमा दिया जाये और ऐसे बर्फ जमे शरीर को तब तक सुरक्षित रखा जाये, जब तक शारीरिक मृत्यु पर डाक्टर विजय नहीं पा लें। यह काल तीन-सौ से तीन हजार साल तक भी हो सकता है। ऐसी हिम-प्रभावित देह तब तक सुरक्षित रखी जा सकती है। उसे पुनः हिम-शून्य किया जा सकता है और बर्फ में जमे रहने से शरीर में पैदा हुए दुष्प्रभावों को दूर करके जीव-कोशों को पुनः जागृत किया जा सकता है। प्रोफेसर एटिंगर ने बताया कि अभी तक मानव को हिम-मानव बनाने के इस प्रयोग का क्रियात्मक परीक्षण नहीं किया गया है। मगर इस प्रयोग का नाम-करण 'क्राइयोबायोलाजी' नाम से हो गया है और गत वर्ष क्राइयोबायोलाजिकल सोसा-यटी (हिम-शरीर समाज) की एक बैठक वाशिंग्टन में हो भी चुकी है। हजारों आदमी दरखास्त दे चुके हैं कि मृत्यु के बाद उनका शरीर बर्फ में जमाकर अनंत काल तक रखा जाये। कठिनाई यही है कि इतने बर्फ जमे शरीरों को रखा कैसे जायेगा? इतना बड़ा मरघट कैसे बनेगा?

× × ×

'न्यूज वीक' में एक अमरीकी संवाददाता ने वियतनाम से लिखा है—"दक्षिण वियत-नाम के विद्रोही वियतकांग सैनिकों ने गुरिल्ला युद्ध करने के कुछ नये हथियार निकाल लिये हैं। इनके पास ऐसे छोटे बम रहते हैं, जो देखने में फाउंटन पेन लगते हैं और उसी तरह जेब में रखे जा सकते हैं। इनके पास ऐसे छोटे बम-गोले भी हैं, जिन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वियतकांग की लड़कियां हेअरपिन बनाकर बालों में खोंस लेती हैं।

"वियतकांग की सेना में लड़कियों तथा औरतों से बहुत काम लिया जाता है। हर गांव में ऐसी बहुत-सी औरतें होती हैं, जो वियतनाम की सेना के पहुंचने पर उसके सैनिक कार्यों में बाधा पहुंचाती हैं। गांव से बाहर आकर ये शोर मचाती हैं—'इस गांव में कोई बागी नहीं है। अगर तुम गोलियां चलाओगे, तो अपने ही आदमी मारे जायेंगे।'

"वियतकांग की लड़कियां वियतनामी फौज में भर्ती हुए अपने रिश्तेदारों को बागी बनाने का प्रचार-कार्य भी बड़े विचित्र ढंग से करती हैं। फौजी डेरों के आस-पास खेतों में वे छिप जाती हैं और मेगाफोन, लाउड-स्पीकर से अपने रिश्तेदार फौजियों के नाम ले-लेकर उन्हें पुकारती हैं और कहती हैं—'तुम्हारा गांव अमरीकी शिकंजों से आजाद हो गया है, तुम भी सरकारी फौज की जलील नौकरी छोड़कर आजाद फौज में शामिल हो जाओ। इज्जत की जिंदगी बसर करो और देश को अमरीकी पंजे से आजाद करो।'

"वियतकांग के बागी सिपाही कई बार बिना वर्दी के ही लड़ते हैं। कमर में केवल जांघिया पहना होता है और नंगी छाती पर हाथ के बम-गोलों की पेटी बंधी हुई होती है। ये इतने जांबाज होते हैं कि जहरीले कांटेदार तारों पर लेटकर अपने साथियों के लिए अंदर घुसने का रास्ता बना देते हैं। ये वेतन के लिए नहीं लड़ते। वेतन इन्हें जो मिलता है, वह इतना कम है कि उसके लालच में कोई आदमी जान पर नहीं खेल सकता। उन्हें केवल १८० पियेस्टर माहवार मिलते हैं, जो लगभग दस रुपये होते हैं। चाहे कोई मामूली सिपाही हो या अपने दस्ते का कमांडर, वेतन एक जैसा ही होगा। इनके पैरों में जूते नहीं होते, चप्पलें होती हैं। और ये चप्पलें भी चमड़े की नहीं, बल्कि उन पुराने रबर-टायरों की होती हैं, जिन्हें अमरीकी फौज कूड़ा-करकट समझकर फेंक चुकी होती है।

"रात को इन जांबाज सैनिकों के कैंपों में घासलेट की लालटेनें जलती हैं। खाने को केवल मिर्चवाले चावल खाते हैं, जिन्हें हफ्ते में एक बार उबालकर पोटलियों में भर लिया जाता है। ये पोटलियां प्रायः इनके गले में लटकी रहती हैं।"

× × ×

पिछले दिनों रोम के पोप पाल छठे ने पचास सदस्यों की एक परिषद संतति-निरोध पर कैथोलिक मंतव्य का निश्चय करने के लिए बुलायी थी। अनुमान यह था कि यह परिषद संक्षेप में अपना अभिमत पोप के सामने रख देगी और पोप उसे देखकर संतति-निरोध पर कैथोलिक धर्म का प्रामाणिक वक्तव्य दे देंगे। लेकिन परिषद ने जुदा-जुदा पचास फाइलों में इतनी बड़ी रिपोर्ट दी कि जमीन पर रखने से वह एक फुट ऊंची बन गयी। इसलिए पोप के लिए संक्षेप में किसी एक निश्चय पर पहुंचना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छिन हो गया। पोप ने इतना ही कहा कि पिपद ने समस्या के संबंध में जो मत प्रकट या है, वह चिकित्सा एवं नैतिक, दोनों ष्टियों से अस्पष्ट है एवं उदार तथा अनु-र विचारों से मिश्रित है। एक बार फिर ान-निरोध पर पोप की स्पष्ट सहमति ने का प्रयत्न विफल हो गया। जहां फाइलें ी हो जाती हैं, निर्णय छोटा हो जाता है, ा अक्सर फाइलों के नीचे दब जाता है।

× × ×

अभी तक प्रायः सब जगह हड़तालों का ंबंध वेतन की कमी से होता था। लेकिन िछले दिनों अमरीकन-वर्ल्ड-एअरवेज के ४,५०० विमान-चालकों ने, जिन्हें ३१,००० डालर (लगभग १,५५,००० पया) प्रति वर्ष मिलता है, हड़ताल करके ह साबित कर दिया कि हड़ताल का कारण केवल वेतन नहीं, अन्य कारण भी हो सकते हैं। इस हड़ताल से विमान-यात्रा करनेवाले ोगों को बड़ी असुविधा हुई। प्रतिदिन १४,००० यात्री अमरीका में विमान से यात्रा करते हैं, उन्हें दूसरे उपाय ढूंढने पड़े। हवाई काम करनेवालों के सभी काम हवाई होते हैं।

× × ×

इटली के आल्प्स पर्वत की तराई में बसे एक गांव की स्त्रियों ने कमाल की हिम्मत दिखलायी। इस गांव की आबादी केवल ७९० है। अभी तक गांव की कौंसिल में केवल पुरुष होते थे। मगर पुरुषों ने फैसला किया कि वे कौंसिल के नये चुनाव में भाग नहीं लेंगे, कौंसिल नहीं बनने देंगे और पहाड़ी इलाकों में नये वृक्ष उगाने का काम तब तक नहीं करेंगे, जब तक उन्हें केंद्रीय सरकार की मदद नहीं मिल जायेगी। इसका नतीजा यह होता कि नये वृक्ष उगाने का काम कुछ महीनों के लिए बिलकुल बंद हो जाता। गांव की महिलाओं ने इसे अनुचित समझा और पुरुषों द्वारा विरोध किये जाने पर भी कौंसिल के निर्वाचन में केवल महिला उम्मीदवारों को चुन लिया। सारी कौंसिल महिलाओं की बन गयी। इन महिलाओं ने थोड़े ही समय में १८,००० नये वृक्ष उगवा दिये। महिलाओं का नेतृत्व एक स्कूल की मामूली अध्यापिका ने किया था। सच तो यह है कि आजकल स्त्रियां कल्याण-कार्यों को करने में अधिक व्यावहारिक और दृढ़-संकल्प हो गयी हैं। पुरुषों का पौरुष केवल अपने अधिकारों के लिए युद्ध करने में ही खप जाता है।

× × ×

अफ्रीका के लोकतंत्रीय निर्वाचन का नमूना देखिये। कांगों की राजधानी लियोपोल्ड-विल् में ६६ मतदान केंद्र बने थे। सरकार ने चुनाव की एक निश्चित तिथि घोषित कर दी। उस तिथि पर मतदान केंद्रों के बाहर हजारों लोग क्यू में खड़े हो गये। लेकिन २४ घंटे खड़े रहने के बाद भी उन्हें वोट देने के लिए नहीं बुलाया गया। कांगो सरकार ने इस अव्यवस्था के लिए विदेशी दूतों को जिम्मेदार ठहराया। मगर बाद में तहकीकात करने पर सच्चा कारण यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालूम पड़ा कि निर्धारित तिथि तक अभी मतदान पेटियां ही नहीं बनी थीं। पेटी बनानेवाले कारीगरों ने अपना काम पूरा नहीं किया था। बाद में कांगो सरकार ने घोषणा की कि चुनाव कुछ दिन बाद होगा। मगर इस बीच चुनाव के लिए जो मतदान-पत्रों की कापियां बनी थीं, उन्हें मिशनरी प्रिंटिग हाउस को बेच दिया गया। ये कापियां बाद में मिशनरी स्कूल के बच्चों के काम आयीं। इस तरह कांगो का मतदान मजाक बन गया। यह खबर एक अमरीकी पत्र की है, इसमें कितना सत्य है, इसका ज्ञान भी उसे ही है।

× × ×

यह ट्विस्ट का जमाना है। अमरीका की फोर्ड मोटर कंपनी ने एक ऐसी मोटर ईजाद की है, जो रिस्ट के ट्विस्ट से ही मोड़ी जा सकेगी। इसमें स्टीयरिंग का पहिया नहीं होगा। उसकी जगह प्लास्टिक के दो पांच-पांच इंच व्यास के चक्र होंगे। एक चक्र दायें हाथ के लिए, दूसरा बायें के लिए। ड्राइवर चाहे तो दोनों हाथों से काम ले सकेगा, चाहे एक ही हाथ के चक्र से गाड़ी को मोड़ सकेगा। अपनी सीट पर बहुत आराम से बैठकर भी वह मोटर पर पूरा काबू रख सकेगा। कंपनी ने इसे 'रिस्ट ट्विस्ट' नाम दिया है। अर्थात यह मोटर केवल हाथ की कलाई के थोड़े से घुमाव के साथ जितनी चाहे मोड़ी जा सकती है।

इन्सान आरामपसंद होता जा रहा है। शायद किसी दिन ऐसी मोटर भी निकल आये, जिसे आंख के इशारे द्वारा मनमाना मोड़ दिया जा सके।

× × ×

टोकियो के एक व्यक्ति योशिहारु फुजीता की पत्नी उसे छोड़कर चली गयी थी। उसे वापस बुलाने के लिए उसने अजीबोगरीब काम किया। वह टोकियो की एक हजार फुट ऊंची मीनार पर चढ़ गया। लोगों ने देखा, तो दौड़े आये। मीनार के नीचे उसके दस्तखतों से एक पत्र पड़ा था। उसमें लिखा था—"मैं आत्महत्या करना चाहता हूं।" भीड़ में से किसी ने पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस चौकी से ३०० पुलिसमैन उसे बचाने के लिए वहां पहुंचे। तीन घंटे की कोशिश के बाद उसे नीचे उतारा गया। और पुलिस ने उसकी पत्नी को वापस बुलाकर मियां-बीवी की सुलह करवायी। ऐसे ही अवसरों पर प्रमाणित होता है कि विवाह व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक जिम्मेदारी है।

× × ×

मेक्सिको के एक भविष्यवक्ता के अनुसार तृतीय महायुद्ध १९६५ से १९७१ के मध्य किसी भी समय हो सकता है। इसी भविष्यवक्ता ने राष्ट्रपति केनेडी की हत्या तथा हाल में चिली में आये भूकंप की भविष्यवाणी भी की थी। अहरो आम्या एरथ नामक उक्त ज्योतिषी ने कहा है कि १९६५ से १९७१ तक की अवधि इस शताब्दी की सबसे संकटपूर्ण अवधि होगी। उसके अनुसार १९७१ के प्रथम रविवार को मेक्सिको नगर पूर्णतया ध्वस्त हो जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

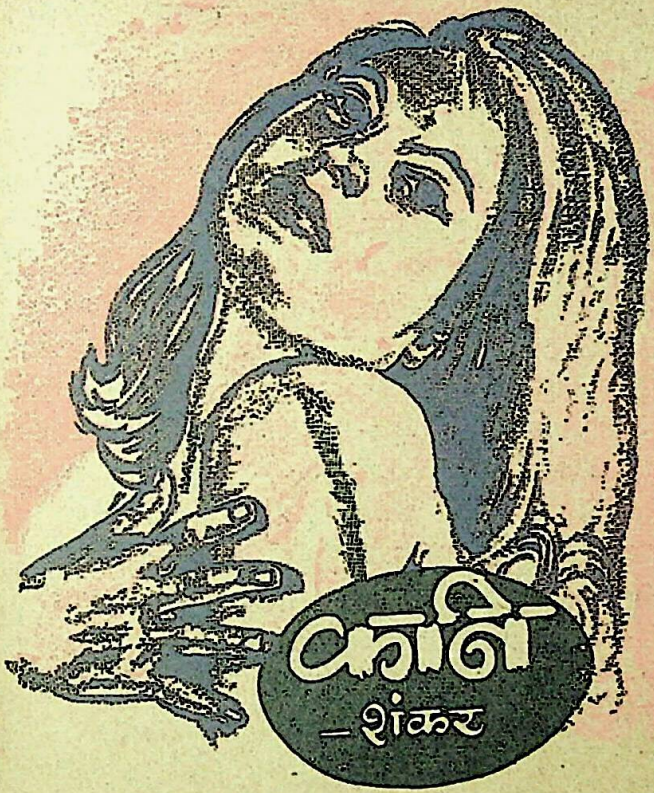

"करुणा वह सिरा है, जिससे कोई किताब सदा खुली रहती है, पठनीय बनी रहती है"..... वाणी की प्रगल्भता और व्यंग्य की प्रखरता के अप्रतिम साधक आस्कर वाइल्ड ने साहित्य के इस महासत्य को जीवन के अंतिम दिनों में, तिरस्कार और कारावास की यातना की घड़ियों में पहचाना था।

.....बंगला के प्रतिभावान युवा उपन्यासकार शंकर ने अपने लोकप्रिय उपन्यास 'चौरंगी' में करुणा के कई मर्मस्पर्शी एवं अविस्मरणीय चित्र अंकित किये हैं। 'कनि' उनमें से एक है।

[चौरंगी – हिन्दी अनुवादक : राजकमल चौधरी; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली; मूल्य : ११ रुपये; पृष्ठसंख्या : ५२८]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज भी जब किसी अपरिचित युवती के संपर्क में आता हूं, आज भी जब किसी स्त्री के बारे में राय कायम करने का अवसर आता है, मैं कनि को याद किये बिना नहीं रह पाता। कनि अब मुझे कोई स्त्री नहीं लगती। लगता है, जैसे वह एक रंगीन, बेहद रंगीन सपना थी। वह एक इंद्रधनुष थी, जो थोड़ी देर के लिए इस अंतर्राष्ट्रीय होटल के नीले आकाश पर उगी थी।

कनि कौन है, मुझे पता नहीं था। इससे पहले उसका नाम भी कभी सुना नहीं। शाहजहां के मैनेजर मार्कोपोलो एक दिन काउंटर पर आये और उन्होंने मेरे हाथ में एक फोटोग्राफ थमा दिया। हंसते-हंसते बोले—"ऐसी तस्वीरें जवान लड़कों को नहीं देखनी चाहिये। मगर जब होटल में नौकरी करते हो, तो क्या उपाय है? और होटल का आदर्श कर्मचारी तो न 'मैस्कुलिन जेंडर' होता है, न 'फेमिनाइन'। वह तो 'न्यूटर' होता है।"

मार्को से ही पता चला, यह एक नीलनयना विदेशी सुंदरी की तस्वीर है। उसके सिर के केश प्लैटिनम की तरह हैं। वे बोले—"जाओ, अखबारों में विज्ञापन दे आओ—'कनि, द वूमन इज कमिंग।' पहली बार शाहजहां होटल में एक पूरी औरत आ रही है।"

सत्यसुंदर दा बहुत सारी तस्वीरें मेरे सामने पटकते हुए बोले—"डिस्प्ले का काम सीखो! तुम्हें अकेले ही सौ आदमियों का काम जानना चाहिये!" सारी तस्वीरें कनि की थीं। मुख्य द्वार के दोनों ओर दो बोर्ड लगाकर मैंने खूबसूरत ढंग से तस्वीरें सजा दीं—"कनि इज कमिंग!"

बोस दा ने दुबारा विज्ञापन पढ़ा—"कनि इज कमिंग!" फिर बोले—"कमिंग! मगर कहां से कमिंग, तुम्हें पता है?" फिर हंसते हुए बोले—"सच पूछो तो ये सुंदरियां सीधे नीले आसमान से उतरकर शाहजहां के नाचघर में चली आती हैं। जन्नत की परियां हैं, धरती से कैसे आयेंगी? मगर हमारी यह कनि मिडल-ईस्ट को विजय करके अभी पेरिस के एक होटल में शो दे रही है। वहां से उड़कर आकाश-मार्ग से सीधे हमारे शाहजहां में उतर आयेगी।"

बोस दा इस वक्त हल्के 'मूड' में थे। कहने लगे—"वह बहुत ज्यादा फीस पर आ रही है। वैसे भी कैबरे-गर्ल ज्यादा लेती हैं। मगर कितना लेती हैं, यह सुनकर तो कितने बैरिस्टरों और एफ०आर०सी०एस० उपाधिधारी सर्जनों का सिर दुखने लगेगा। उनका सारा घमंड, सारी साधना, सारी विद्या कैबरे-सुंदरी के नृत्यरत पद-युगल के हल्के धक्के से चूर-चूर होकर फर्श पर बिखर जायेगी।"

उन्होंने मुझे सावधान भी कर दिया—"कई बार गेस्ट लोग काउंटर पर आकर पूछते हैं, कैबरे-गर्ल कितना लेती है? कोई पूछने आये, तो कहना—माफ कीजिये, मुझे पता नहीं! कैबरे के सारे कागज-पत्र एकदम कान्फिडेंशियल होते हैं।"

और विज्ञापन के छपते ही टेलिफोन से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग पूछताछ करने लगे थे। कलकत्ता में जिन युवकों के पिताओं के पास काफी रुपये हैं, जिन कंट्रैक्टरों को नये ठेकों की जरूरत है, जो सेल्स-आफिसर बड़ी कंपनियों के पर्चेज-आफिसरों को खुश करना चाहते हैं, उनमें से कितनों ने फोन किया था। ऐसे बहुत सारे फोन मुझे ही उठाने पड़े थे।

× × ×

रात के आठ बजे से ही शाहजहां होटल के सामने गाड़ियों का जमघट लग गया, जैसे देश-भर की सारी खूबसूरत गाड़ियों को किसी विशाल जाल में बांधकर शाहजहां के सामने खींच लाया गया है। गाड़ी आती है, गेट के सामने क्षण-भर के लिए रुकती है। दरबानजी दरवाजा खोलकर लंबा सेल्यूट मारते हैं, और किनारे हटकर खड़े हो जाते हैं। साहब गाड़ी से उतर पड़ते हैं।

कारें आती जा रही हैं। पुरानी कारों से नये लड़के उतर रहे हैं, नयी कारों से पुराने वृद्ध। कलकत्ता की जनसंख्या का श्रेष्ठतम अंश शाहजहां होटल में भीड़ लगा रहा है। शाहजहां के मुमताज रेस्तरां में आज तिल रखने को जगह नहीं है।

शराब पानी की तरह पी जा रही है। सिगरेट के तीखे धुएं से हवा का बोझ भारी हो रहा है। लगता है, किसी ने टियर-गैस छोड़ दी है। घड़ी के कांटे दस के घेरे में झांकने लगे हैं। डिनर-प्लेट पर छुरी-कांटे की टुं-टां-टें ध्वनि से लगता है, कहीं दूर आर्केस्ट्रा बज रहा है। फोकला चटर्जी चीखने लगा है—"अब कितनी देर है?"

वोस दा ने दरवाजे के पास से मुझे इशारा किया। सिनेमा हाल की तरह अचानक चारों कोनों में जलती हुई सफेद बत्तियां बुझ गयीं। स्टेज पर जाकर बायें हाथ में माइक थामकर मैं क्षण-भर चुपचाप खड़ा रहा। मैंने देखा, साढ़े तीन सौ व्यक्तियों की सात सौ आंखें मेरी ओर खिंच गयी हैं। सात सौ कान मेरी बातें सुनने को आतुर हैं। अनजाने में ही मेरे होंठों से निकल गया—"लेडीज एंड जेंटलमेन!"

उस रात पूरे हाल में एक भी 'लेडी' नहीं थी। फिर भी मैंने दोहराया—"लेडीज एंड जेंटलमेन! शाहजहां होटल की इस मीठी और रंगीन शाम के मौसम में, हमें उम्मीद है, आप लोगों ने हमारे फ्रांसीसी चेफ़ की बनायी हुई लजीज चीजों और दुनिया के खास-खास मुल्कों से चुनकर मंगवायी गयी शराब का जी-भरकर शौक किया है। अब मैं आपके सामने कनि को पेश करता हूं। अपनी रंगीन जिंदगियों में आपने कितनी ही औरतें देखी होंगी। मगर वे सारी अधूरी औरतें थीं। पूरी औरत एक ही है—हमारी कनि! इस सदी में बनानेवाले ने सिर्फ़ एक ही औरत बनायी है—हमारी कनि, द वूमन!"

और अब सारी बत्तियां एक साथ गुल हो गयीं। जैसे सारा हाल अचानक किसी अज-नबी ताकत के प्रभाव से खामोशी में डूब गया—सिर्फ एक क्षण के लिए। और तब अंधेरे की दीवारों को छेदती हुई रोशनी की पतली-सी कटार स्टेज पर नाचने लगी, जैसे अंधेरे स्टेज पर किसी को ढूंढ़ रही है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टेज पर कोई आकर खड़ा भी हो गया है; मगर अंधेरे में उसे देखना मुश्किल है। और रोशनी तो रुकती नहीं, आर्केस्ट्रा के संगीत के सुर-ताल पर नाचती चली जा रही है। अंधेरे का लबादा ओढ़कर जो मानव-आकृति स्टेज पर खड़ी है, वह क्या कनि है? कनि, द वूमन?

पागल होते हुए दर्शकों की उत्सुकता पर अधिक आघात न करके, रोशनी की लकीर अब चौड़ी होकर फैलने लगी। मगर कनि कहां है? नहीं है कनि। स्टेज पर ईवनिंग-सूट पहने दो फुट लंबा एक बौना चहल-कदमी कर रहा है। उसके सिर पर तीन फुट ऊंची टोपी है, हाथ में एक काली छड़ी है।

निराश दर्शकों को आश्चर्य प्रकट करने का कोई मौका न देते हुए बौने ने अपनी टोपी उतारकर बायें हाथ में रख ली और हाथ की छड़ी घुमाता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया। बोला—"गुड ईवनिंग, लेडीज एंड जेंटलमेन, मैं ही हूं कनी द—"और जैसे आगे की बात भूल गया हो, याद करने लगा—"लड़की या लड़का—लड़का या लड़की—नहीं मैं ही वह लड़की हूं—कनि, द वूमन!"

सारे दर्शक हो-हो करके हंसने लगे। समृद्ध कलकत्ता महानगरी के दो-एक संभ्रांत नागरिक अब स्थिर नहीं रह सके, विचलित होकर कुर्सी से उठ खड़े हुए और चिल्लाने लगे—"हमें कनि चाहिये! असली कनि! यह बेवकूफ बौना कहां से आ गया?"

जैसा पहले तय किया गया था, माइक के सामने आकर मैंने कहा—"लेडीज एंड जेंटलमेन, मुझे क्षमा कीजिये! मेरी समझ में नहीं आ रहा है, ऐसा कैसे हो गया! अभी पांच मिनिट पहले मैं कनि के कमरे में गया था। वह ड्रेस पहनकर तैयार थी। एक विटामिन टैब्लेट खाकर आने ही वाली थी। मुझसे बोली, तुम चलकर एनाउन्स करो, मैं तुरंत आती हूं। मैं चला आया। अब पता नहीं, दो फुट का यह बूढ़ा आदमी कहां से आ गया!"

बौना चुप नहीं रहा। मेरी बात खत्म होते ही उछलकर माइक के पास आ गया और लड़कियों की तरह पतली आवाज में रोता हुआ बोला—"यकीन कीजिये, मैं ही कनि हूं। एक गलत टैब्लेट खाने से ही मेरी यह हालत हुई है। पांच मिनिट पहले मेरे पास सब-कुछ था। नारीत्व था, यौवन था, सुंदरता थी। सब कहां चला गया? कहां खो गया?" और वह अपने हाथ से अपना शरीर टटोलने लगा। फिर जेब से एक टैब्लेट निकालकर खा गया और फिर अपने सिर के इर्द-गिर्द हाथ घुमाता हुआ कोई मंत्र पढ़ने लगा।

अचानक सारी रोशनियां बुझ गयीं। और दूसरे ही क्षण पहली कतार में बैठा हुआ एक मारवाड़ी दर्शक चीत्कार करने लगा—"ओ: ! ओ: ! कोई मेरी गोद में आकर बैठ गया है! मेरी गोद में....."

मैंने कहा—"डरिये नहीं। डर की कोई बात नहीं। बताइये, कैसा लग रहा है?"

उन सज्जन का डर अब तक दूर हो गया था। उनकी गोद में कौन-सी चीज आ गिरी है, वे समझ गये थे। इसीलिए उन्होंने मजाक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के ढंग से कहा—"बहुत साफ्ट। खूब नरम लग रहा है।"

अब एक बत्ती जल उठी और रोशनी में लोगों ने देखा, मारवाड़ी सज्जन के गले में अपनी बांहें डाले कनी बैठी है। उसके सिर पर छोटा-सा मुकुट है, गले में हार; और पांव की एड़ियों से हाथों के मणिबंध तक वह एक रंगीन रेशमी कपड़े से ढंकी है। फिर एक साथ कई बत्तियां जल उठीं और स्टेज पर आकर कनि ने दर्शकों के सामने सिर झुकाया।

कनि ने अब अपना नाच शुरू किया। वह अपना रेशमी प्रच्छद पहने ही नाच रही थी। इसीलिए नाच में उतनी गति, उतनी तेजी नहीं आ रही थी। दर्शक जरा उदास होने लगे थे। कनि ने कहा—"माई डार्लिंग कैलकटा वालाज, मैंने सुना है, तुममें से कई लोग मेरा स्टैटिस्टिक्स जानने को बेचैन हो रहे हैं। मुझे अफसोस है, मुझे कोई भी संख्या याद ही नहीं रहती। बेहतर हो, तुममें से कोई स्टेज पर आकर मेरे फिगर का हिसाब कर ले! यहां क्या गणित का कोई प्रोफेसर है?"

नारी...एक समस्या
चित्रकार : सं० वि० पारदुले

दर्शकों में से कोई कुछ नहीं बोला। तब मुंह बिचकाते हुए कनि ने पूछा—"कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट?"

फिर भी कोई उत्तर नहीं।

"एनी टेलर?" कनि के इस सवाल पर भी सभी लोग चुप्पी साधे रहे।

"माइ डियर डियर्स!" कनि नकली दुःख प्रकट करने लगी—"इस ग्रेट सिटी में क्या कोई दर्जी नहीं है? क्या यहां की लड़कियां सिलाई की हुई चीज नहीं पहनतीं?"

इस मजाक पर सारे लोग हंस पड़े।

"एनी वे, कोई भी ऐसा आदमी, जो सही-सही हिसाब कर सकता हो?" कनि ने अनुरोध किया। फोकला चटर्जी जैसे इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। उठकर स्टेज की ओर आने लगा। मैंने मापने का फीता कनि की तरफ फेंक दिया।

इधर बौना साहब फिर हाल में घुस आया है। कनि को देखकर जैसे पागल हो रहा है। जीभ निकालकर शरमा रहा है, अपना सिर नोच रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

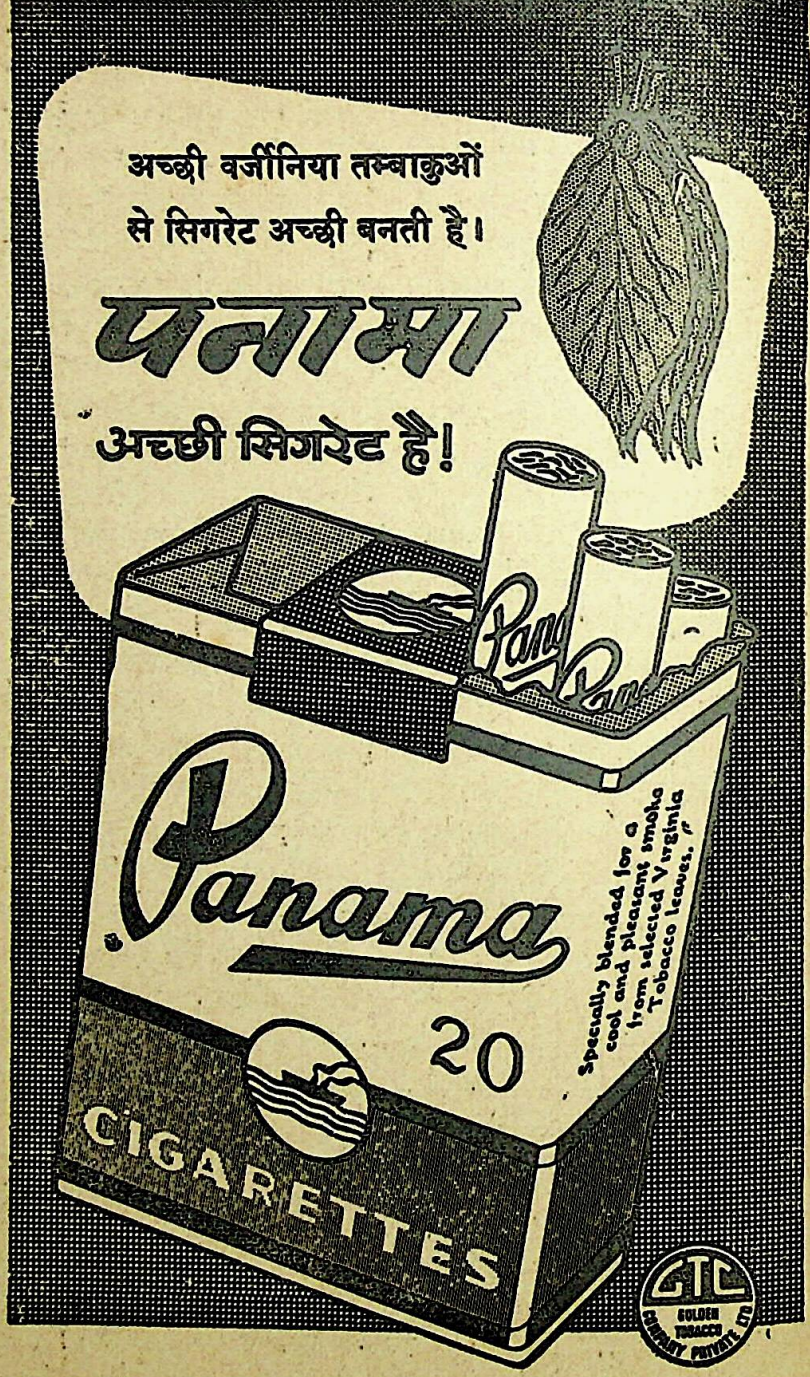

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई-५१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टेज के एक किनारे पीठ फेरकर कनि खड़ी है। फोकला के हाथ में फीता देकर कहती है—"नाप लो! कल तक तो ३८-२४-३६ था!"

बौना माइक पर आकर दर्शकों से कहता है—"मुझसे भूल हो गयी थी। मैं कनि नहीं हूं। मेरा नाम है लैंब्रेटा। लैंब्रेटा, द मैन!" फिर कनि की तरफ देखता हुआ चीखता है—"हलो मिस! मैं स्टैटिस्टिक्स का एक्सपर्ट हूं। मैं बहुत बड़ा एकाउंटेंट हूं, बहुत भारी दर्जी हूं।"

फिर वह फोकला को धक्का देता हुआ बोला—"हटो, मैं नापूंगा।" फोकला ने पहले तो ध्यान नहीं दिया। मगर लैंब्रेटा सचमुच उसे अपनी सारी ताकत लगाकर धक्का देने लगा। हाल के सारे लोग इतने जोरों से हंस रहे थे कि पूरा होटल हिलने लगा। अंत में तंग आकर बौने के हाथ में फीता देकर फोकला चटर्जी वापस आ गया। कनि एक गीत गुनगुना रही थी और हल्के लय-ताल से अपनी देह हिला रही थी। उसके घुटनों के पास खड़ा लैंब्रेटा चीखकर क्या कह रहा है, वह सुन ही नहीं पा रही थी।

कनि अपने दोनों पांव फैलाये खड़ी थी। बौना लैंब्रेटा दो बार उसके पांवों के बीच से पार हो गया। अश्लील इशारे करते हुए हाल के कई लोग सीटियां बजाने लगे। लैंब्रेटा का उस ओर ध्यान नहीं है। वह सारी ताकत लगाकर 'कनि द वूमन' का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। मगर गर्वमयी, दीर्घांगिनी विलासिनी जैसे उसे देख ही नहीं रही है।

अपनी असफलता से खीजता हुआ लैंब्रेटा पता नहीं कहां से एक छोटी-सी सीढ़ी उठा लाया। फिर कनि की पीठ से सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ने लगा। मगर कनि आगे बढ़ गयी। सीढ़ी सहित लैंब्रेटा धराशायी हो गया। फिर भी वह निराश नहीं हुआ। फिर उसे रोककर उसकी पीठ पर उसने सीढ़ी लगा दी और ऊपर चढ़ गया। सीढ़ी के नीचे छोटे-छोटे दो चक्के लगे थे। ज्यों-ज्यों कनि आगे बढ़ती है, सीढ़ी भी खिसकती जाती है, सीढ़ी पर चढ़ा हुआ लैंब्रेटा भी खिसकता जाता है।

धीरे-धीरे उसकी हिम्मत बढ़ गयी। उसने कनि को चूमने की कोशिश की। इसमें असफल होकर वह बड़ी ही प्यारी भाषा में प्रेम-निवेदन करने लगा। मगर कनि गुस्से में भर उठी। उसने सीढ़ी पर चढ़े हुए लैंब्रेटा को कान पकड़कर ऊपर उठा लिया। वह हवा में झूलने लगा। दोनों पांव शून्य में पटकता हुआ चीखने लगा—"प्लीज, प्लीज! मुझे माफ कर दो, मिस! मुझे माफ करो! मैं अब कभी इतनी लंबी औरत से प्यार नहीं करूंगा। कभी नहीं, कभी नहीं! मुझसे गलती हो गयी।"

कनि ने जब लैंब्रेटा को फर्श पर पटक दिया, तो उधर हाल में हंसते-हंसते कई आदमी कुर्सी से लुढ़ककर कार्पेट पर गिर पड़े। क्षण-भर के लिए सारी बत्तियां जल उठीं। तेज रोशनी में लोगों ने देखा, लैंब्रेटा उठकर स्टेज से बाहर भागा जा रहा है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

*रंगरूप के निखार के लिए मुझे

लक्स पर एतबार है*

वैजयंती माला कहती हैं

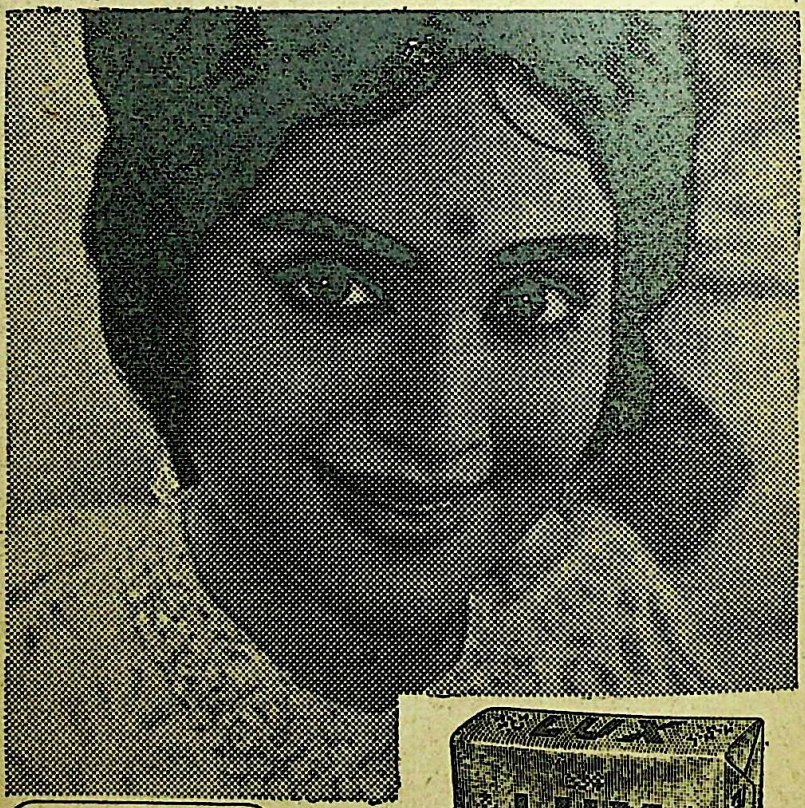

सुंदर रंगरूप आप के लिए
भी उतना ही ज़रूरी है
जितना कि
वैजयंती माला के लिए...
इस की देखभाल भी
वैसी ही होनी चाहिए।

लक्स टॉयलेट साबुन चित्र-तारिकाओं का
शुद्ध मुलायम सौंदर्य साबुन सफ़ेद और
इंद्रधनुष के चार रंगों में

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

लिंटास – LTS-0[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब कनि ने अपना रेशमी लबादा उतार फेंका और वह नाचने लगी—वासना का आदिम नाच। नाचती हुई स्टेज के नीचे उतर आयी, और एक दर्शक की गोद में गिर पड़ी। फिर बगल के एक दर्शक का रूमाल छीनकर हंसती-हंसती अपना पसीना पोंछने लगी। पीछे से एक आदमी ने पुकारा—"हम लोग पीछे छूट गये हैं।" कनि नाचती-कूदती उधर चली गयी। क्षण-भर उस आदमी की गोद में बैठी रही।

फिर वह स्टेज पर आकर नाचने लगी। एक-एक कर उसके शरीर के कपड़े अपने आप नीचे खिसकने लगे, फर्श पर गिरने लगे। माथे का मुकुट गायब हो गया। हाथों के दस्ताने चले गये। और अब स्कर्ट भी खुलकर गिर पड़ा। नारी-शरीर के मांस के टुकड़ों का भूखा शहर कलकत्ता एक नयी आशा की उत्तेजना से अट्टहास करने लगा। मगर कनि स्कर्ट के नीचे भी स्कर्ट पहने है, और उस स्कर्ट के नीचे भी एक और स्कर्ट पहने है। वह कितने स्कर्ट पहने है, जानने का उपाय नहीं है।

इसके बाद ? इसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ याद नहीं है। मैंने देखा, आर्केस्ट्रा-संचालक गोमेज का चेहरा घृणा और ग्लानि से स्याह हो गया है। उनके सहकारी वादक तेज गति से अपने-अपने बाजे बजाये जा रहे हैं। और अचानक मुझे लगा, कनि के शरीर पर अब कोई वस्त्र नहीं है—पार-दर्शी रेशम तक नहीं। और उसी क्षण अंधेरा फैल गया — हल्का-हल्का नीला-सा अंधेरा; और सभी कुछ उस नीले अंधेरे में डूब गया। पतली-सी रेशमी चादर फर्श से उठाकर किसी तरह अपना नंगापन छिपाने की कोशिश करती हुई कनि गायब हो गयी।

फिर बत्तियां जगमगाने लगीं। हंसी का शोर और तालियों की लगातार गड़-गड़ाहट। स्टेज पर कपड़ों का ढेर लगा है और बौना लैंब्रेटा स्कर्ट, पैंटी, फ्राक, ब्रेसियर, अंडरवियर उठाने लगा है। फिर इंटरवल। कुछ मिनिटों की फुरसत पाकर अतिथियों ने और भी शराब गले के अंदर उड़ेल ली।

इंटरवल खत्म हो चुका है। गोमेज के वाद्यों से जादू-भरी उद्रेककारी स्वरधारा बह रही है। कनि स्टेज पर खड़ी है अकेली। मगर यह क्या ? उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है। सिर्फ बेलून हैं, जो उसकी लज्जा का निवारण कर रहे हैं। छोटे-छोटे सतरंगे बेलून। कनि नाच शुरू करती है। नाचती हुई अपना बेलून-शरीर लिये अतिथियों के बीच चली आती है। उसके हाथ में लोहे का एक छोटा-सा औजार है। एक दर्शक के हाथ में उसे थमाकर कहती है—"एक बेलून फोड़ दो।"

दर्शक लोहे का औजार कनि की छाती के पास के एक बेलून में घुसा देते हैं। जोर की विचित्र-सी आवाज होती है, बेलून फट-कर सिकुड़ जाता है।

थोड़ी देर नाचकर कनि फिर दूसरे दर्शक के पास रुकती है। वह भी एक बेलून फोड़ता है। वैसी ही विकट आवाज होती है। कनि नाचती हुई आगे बढ़ जाती है। फिर एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

ग्लैक्सी

का तीव्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

दर्प बरसाता

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन
खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया दर्शक, फिर एक नये बेलून का फूटना, फिर वही आवाज, वही नाच । जैसे-जैसे बेलून फटते जाते हैं, कनि का शरीर नंगा होता जाता है। हाल में बैठे लोगों का उन्माद बढ़ता जाता है ।

कनि के पास अब कुल तीन बेलून बच गये हैं । वे तीनों बेलून फोड़ने के लिए कई बूढ़े आदमी एक साथ दौड़े आये । फटाक्-फटाक्-फटाक् आवाजें हुईं और साथ ही सारी रोशनी बुझ गयी । चारों ओर घना अंधेरा छा गया । अंधेरे में भागती हुई कनि भरे हुए गले से बोली—"प्लीज ! मेरा लबादा ला दो !" लबादा मैंने उसे थमा दिया और वह लबादा ओढ़कर भीतर भाग गयी थी ।

बत्तियां जल उठीं । मैं माइक पर चला गया और बोला—"लेडीज एंड जेंटलमेन, आनंद के इस अवसर पर उपस्थित रहने के लिए कनि और शाहजहां होटल की ओर से मैं आप लोगों को असंख्य धन्यवाद देता हूं । गुड नाइट !"

मगर मेरी जान नहीं छूटी । फोकला चटर्जी मेरा हाथ पकड़कर बोला—"मि० रंगनाथन आपसे मिलना चाहते हैं । जरा बाहर चलिये । प्राइवेट बात है ।" मैं बाहर चला आया । फोकला रंगनाथन की ओर मुड़ा । उससे दस-दस रुपयों के कुछ नोट लेकर मेरी ओर बढ़ाता हुआ बोला—"असली मुसीबत क्या है, समझ रहे हैं ? मिस्टर रंगनाथन बहुत 'लोनली' महसूस कर रहे हैं । आप अगर जरा कनि को राजी कर दें..... । रात तो अभी ज्यादा नहीं हुई है । फिर इन लड़कियों को तो रात-भर जगने की आदत होती है । दिन में सोती हैं—रात में ऐश करती हैं ।"

कोई भी उत्तर देने की मानसिक अवस्था में मैं नहीं था । केवल अपने दोनों हाथ पीछे हटाकर मैं फोकला चटर्जी के चेहरे की तरफ देखता रहा । रात के अंधेरे में वह हंसने लगा, जैसे भूत-प्रेत हंसते हैं । हंसते-हंसते बोला—"टू यंग ! आप अभी एकदम कच्चे हैं । कच्ची कली की तरह अनजान !" और फिर मिस्टर रंगनाथन को पीछे बैठाकर गाड़ी स्टार्ट करके चला गया । एक-एक कर सारी गाड़ियां चली गयीं ।

मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था । शाम को खाने की भी फुरसत नहीं मिली । अब भी खाने-पीने की इच्छा नहीं थी। अचानक मेरे कदम होटल के बरामदे से बाहर निकल आये ।

× × ×

काफी देर तक घूमते रहने के बाद जब मैं वापस होटल में आया, तो सुबह होने में कुछ ही घंटे बचे थे । मैं सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर आ गया । देखा, शराब की एक छोटी-सी बोतल हाथ में लिये लैब्रेटा छत के नंगे फर्श पर बैठा है । मुझे देखते ही वह उठकर खड़ा हो गया और मैंने अपना कमरा खोला, तो मुझसे बिना पूछे ही मेरे कमरे के अंदर आ गया । उसकी आंखों की ओर देखकर भय होता था । जो विदूषक कुछ ही देर पहले महफिल के साढ़े तीन सौ दर्शकों को हंसा रहा था, वह नहीं है । यह कोई दूसरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

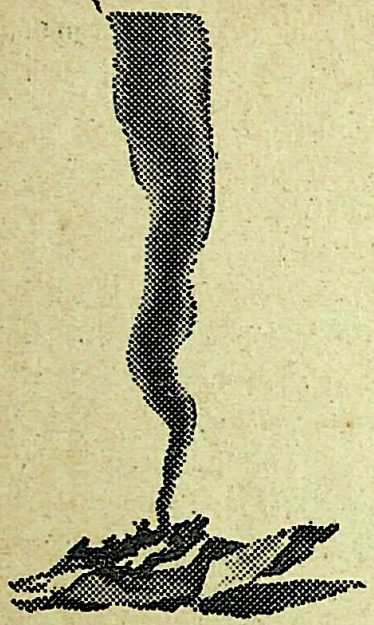

पैसा आता है
...जाता है

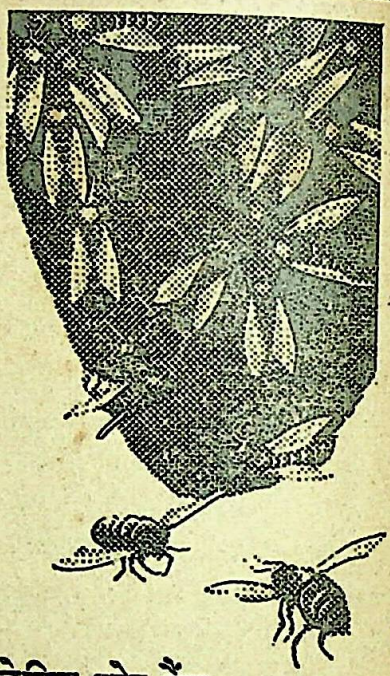

लेकिन स्टेट बैंक
में पैसा आता है
...बढ़ता भी है

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में पैसा जमा करने का अर्थ है भविष्य को सम्हालना। आप पढ़ रहे हों या कमा रहे हों, आप की बचत पर भी पैसा आता है। इसलिए चेक की सुविधा के साथ सेविंग्स अकाउंट खोलिये।

कर कम होने से आप के पास ज्यादा पैसा बचता है। इसलिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में ज्यादा पैसा जमा करके उस पर अधिकतम ब्याज पाइये। पहले कभी इतना ज्यादा ब्याज नहीं मिलता था।

ब्याज की नयी दर १८ फरवरी १९६५ से:

सेविंग्स बैंक अकाउंट्स	...	...	४%
सेविंग्स बैंक डिपाजिट्स	...	...	५%

फिक्स्ड डिपाजिट्स

९१ दिन या ज्यादा, पर ६ महीने से कम		...	५%
१२ महीने या ज्यादा, पर २४ महीने से कम		...	६%
६० महीने या इससे भी ज्यादा	...	...	७%

ब्याज-दरों के पूरे विवरण के लिये लिखिये

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया भारत का सबसे बड़ा बैंक

4years SB.2051-HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी है—जर्जर, पीड़ित, किसी अनदेखी आग में जलता हुआ आदमी मिस्टर लैंब्रेटा।

लैंब्रेटा बोला—"मैं तुम्हारी राह देख रहा था। सुनो, मैं तुम्हें होशियार कर देता हूं। कल से कैबरे में तुम किसी आदमी की गोद में कनि को बैठने न देना। नहीं तो नतीजा बहुत बुरा होगा।"

मैं कुछ समझ नहीं पाया। क्या लैंब्रेटा नशे में चूर है? मेरे उत्तर की प्रतीक्षा न करके बोला—"कलकत्ता के तुम सारे लोग जानवर हो! तुम लोगों के मां-बाप, दादे-परदादे सभी जानवर थे, जानवर थे, सब जानवर थे!" और इतना कहकर वह मेरे कमरे के अंदर ही अपनी विशिष्ट भंगिमा में नाचने लगा, जैसे वह नाच का विद्रूप कर रहा हो। साथ ही गाने भी लगा।

मेरी आंखों पर नींद उतर आयी थी। मैंने कहा—"मिस्टर लैंब्रेटा, सारा दिन काम करने के बाद बेहद थक गया हूं। मुझ पर दया कीजिये।"

वह मेरे बिस्तर पर चढ़ गया और हाथ-पांव नचाता हुआ बोला—"कनि की गोद में बैठते वक्त तुम्हारी यह थकावट कहां चली जाती है?"

"मुझसे ऐसी बातें क्यों कह रहे हैं? मैं तो उसकी गोद में नहीं बैठा हूं।"

"हां-हां, तुम क्यों बैठोगे? तुम लोग तो रोम के पोप हो, कैंटरबरी के आर्चबिशप हो। कनि एक जवान लड़की है और उसके पास बांहें हैं, गोद है, जवान देह है, तुम कलकत्ते-वाले तो इतना भी नहीं जानते हो!"

लैंब्रेटा के हाव-भाव से लगा, नशे के जोश में अब वह मेरे कमरे की चीजें तोड़ने-फोड़ने लगेगा। निरुपाय मैं कमरे से बाहर आ गया।

मैंने कनि से फोन मिलाया और जितने कम शब्दों में हो सका, उसे अपनी समस्या समझायी।

कनि के स्वर से लगा, वह डर गयी है। बोली—"मैं तुरंत आ रही हूं।"

छत का दरवाजा एक क्षण के लिए खुला। स्लीपिंग-गाउन से समूची देह ढंके, सिर पर रेशमी 'बानेट' लगाये जो औरत सामने खड़ी है, कुछ ही घंटे पहले वह हाल में नाच रही थी। उसकी भंगिमाओं में लास्य था, यौवन का दाह था। किंतु रात के इस हल्के अंधेरे में मेरी आंखों की सीध में जो खड़ी है, इस कनि में जरा भी आग नहीं। इसके चेहरे पर पूर्णिमा के चांद की शांति है, स्निग्धता है, शीतलता है।

कनि ने पूछा—"वह है कहां? आपके ऊपर 'एटैक' किया था क्या?"

मैंने कहा—"आपके असिस्टेंट ने मुझ पर आक्रमण तो नहीं किया; मगर मेरे बिस्तर पर बैठकर ह्विस्की पीते-पीते उसे गंदा कर दिया है।"

कनि शरम से गड़ गयी। धीमी आवाज में बोली—"आइ ऐम सो सारी, बाबू!" फिर सीधे मेरे कमरे के अंदर चली आयी। अस्फुट स्वर में उसने पुकारा—"हैरी!.... हैरी!"

लैंब्रेटा का और भी कोई नाम हो सकता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, मुझे पता नहीं था। 'हैरी' सुनते ही लैंब्रेटा चौंक पड़ा और कनि को दरवाजे पर देखते ही उसने ह्विस्की की बोतल दोनों हाथों से कसकर पकड़ ली, जैसे कनि बोतल छीनने के लिए ही आयी हो।

कनि दांत पीसती हुई बोली—"हैरी, बहुत रात हो गयी है। तुमने इस शरीफ आदमी का सारा बिस्तर शराब से गंदा कर दिया है।"

लैंब्रेटा जल-भुन गया। बोला—"जो मेरी इच्छा होगी, वही करूंगा। एक मग बियर लाकर इस छोकरे का तकिया भिगो दूंगा। दो बोतल रम लाकर अपना कोट तर कर लूंगा। ह्वाट इज दैट टु यू ?"

शायद ऐसी परिस्थिति के लिए कनि तैयार नहीं थी। लज्जा और अपमान से उसका चेहरा उतर गया। अपने गुस्से को दबाती हुई वह लैंब्रेटा के पास चली गयी। उसने अपना हाथ उठाया। फिर जैसे उसे याद आ गया, कमरे में मैं भी हूं। वह मेरी ओर घूम गयी। बोली—"प्लीज, तुम जरा बाहर जाओ। एक मिनिट के लिए, प्लीज।"

मैं चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। मगर सिर्फ एक ही मिनिट मुझे बाहर रहना पड़ा होगा। फिर कनि ने बाहर झांककर कहा—"कम इन !"

भीतर आकर मैंने देखा, लैंब्रेटा पानी-पानी हो रहा है। मुझसे बोला—"प्लीज ! मैं अपनी गलती मान रहा हूं। मुझे माफ कर दीजिये !"

"जाओ, अपने कमरे में जाओ !" कनि ने हाथ उठाकर उसे बाहर चले जाने का इशारा किया।

बाहर जाने के लिए उठता हुआ लैंब्रेटा मेरी ओर देखता हुआ लगभग रोती हुई आवाज में बोला—"तुम सिर्फ मेरा ही अपराध देखते हो। और जब वे लोग मुझे शिपैंजी कह रहे थे, तब तुमने उन्हें कुछ नहीं कहा। तब क्यों नहीं बोले ?"

छोटे बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोता हुआ, वह अपने कमरे में चला गया और उसने कमरे के किवाड़ जोड़ लिये।

कनि धीरे-धीरे छत के एक कोने में जाकर खड़ी हो गयी। मैंने देखा, वह रो रही है। कनि द वूमन अपने स्लीपिंग-गाउन की बांह से अपनी आंखें पोंछ रही है। फिर मेरे पास आकर उसने टूटती हुई आवाज में कहा—"ब्रूट्स ! दुनिया के ये लोग कितने 'ब्रूट' हैं। जानते हो, हैरी मेरे पास खड़ा था। बार से उठकर एक आदमी मुझसे पूछने लगा, तुम्हारा यह 'क्लाउन' शिक्षित शिपैंजी है, या आदमी ?.....जानवर ! मैं तुम्हें नहीं कह रही हूं। बुरा मत मानना। सारा दिन खटने के बाद तुम सोने आये और हैरी ने तुम्हारा मूड बिगाड़ दिया।"

मैं लज्जित हो गया। बोला—"कोई बात नहीं। उसने जान-बूझकर तो कुछ किया नहीं। जो कुछ किया शराब के नशे में।"

कनि ने कहा—"जाती हूं, उसे एक बार देख आती हूं।" और वह दबे पांव लैंब्रेटा के कमरे में चली गयी। दरवाजा खुला ही था। मेरी नींद काफूर हो चुकी थी। देर तक मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर केयर फ्री

आराम
करते
हुए भी
अपने
क्रीज़ खराब
न होने वाले

ग्वालियर
सूटिंग

में शानदार
दिखाई देते हैं।

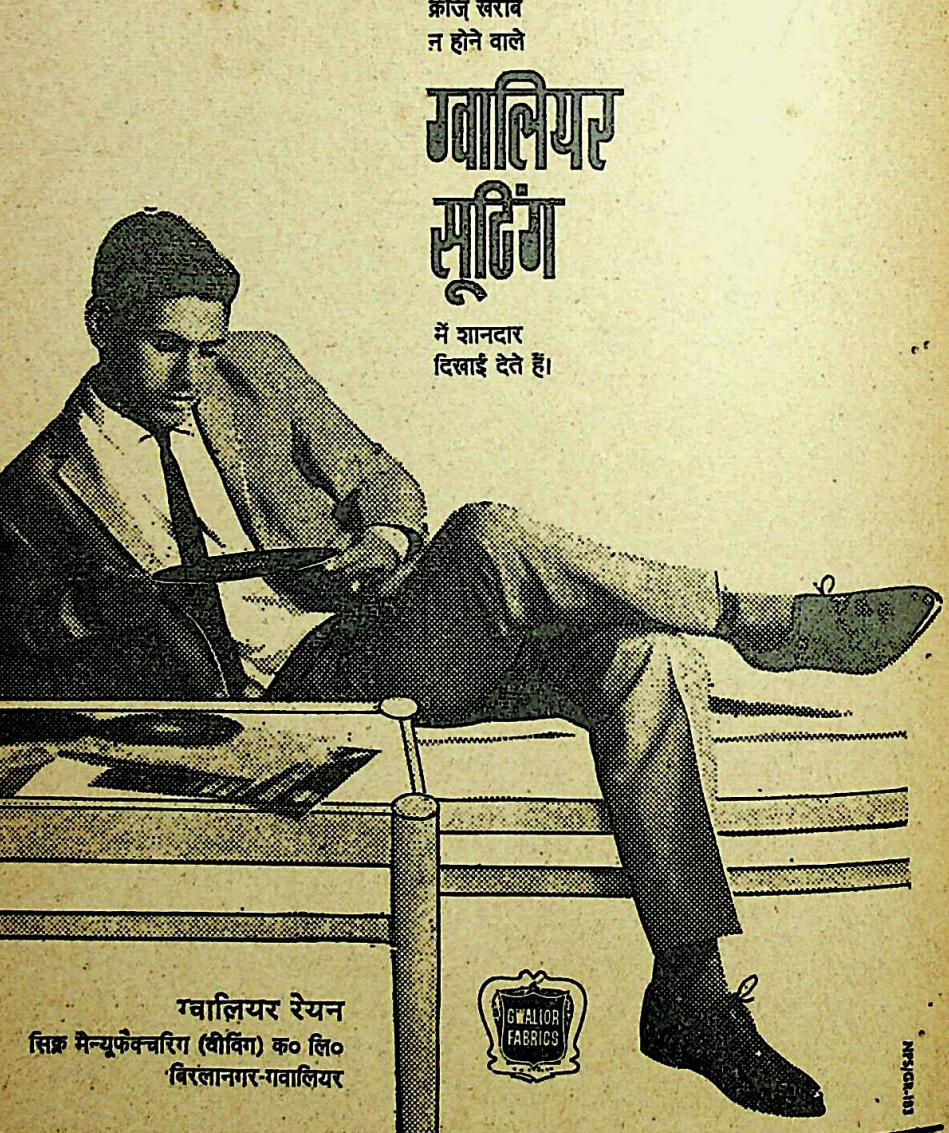

ग्वालियर रेयन
सिंथेटिक मैन्यूफैक्चरिंग (वीविंग) क० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

देश के सभी प्रमुख स्टोरों में प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने कमरे के सामने छत पर खड़ा रहा।

बहुत समय बाद ऐसा लगा, लैंब्रेटा के कमरे का दरवाजा खुल गया है। अंधेरे में सफेद पालोंवाली नाव की तरह तैरती हुई कनि हल्के कदमों से बाहर निकल आयी। दरवाजा उसने आहिस्ता से सटा दिया। सीढ़ियों की ओर जाते हुए उसने मुझे देखा। उसे उम्मीद नहीं थी कि मैं अब तक खड़ा होऊंगा। मगर वह मेरी ओर नहीं आयी। अवज्ञा करके नीचे उतर गयी।

× × ×

सवेरे चाय पीकर मैं कमरे से निकला, तो कनि ऊपर चली आयी थी। देखा, वह सिर्फ एक अंडरवियर पहने शाहजहां होटल के गुंबज के पास बैठी सूर्य-देवता को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। धीरे-धीरे मैं छत के बीच में चला आया। मुझे लगता है, कनि सूर्य-विलास नहीं कर रही है, सर्वपाप-विनाशकारी सूर्यदेव की किरणों से अपने शरीर को पवित्र कर रही है।

मुझे देखकर कनि हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई। बोली—"गुड मार्निंग!"

मैंने उत्तर दिया—"गुड मार्निंग!"

"ऐसी धूप अगर हमारे यूरोप में हर रोज मिल सकती, तो मुझे कहीं काम-धाम नहीं मिलता। इतनी खरी धूप में स्नान करके हमारे देश की हर लड़की खूबसूरत हो जाती। इस धूप के बिना जो लड़कियां सिर्फ 'एट्रैक्टिव' कही जाती हैं, वे सभी महान सुंदरियां बन जातीं। फिर मुझ-जैसी साधारण लड़की को कौन पूछता?"

रात के कैबरे में रंगीन सपनों की तरह जगमगानेवाली लड़की का भी एक साधारण जीवन होता है, उसके साथ भी सहज-भाव से बातचीत की जा सकती है, हंसा-बोला जा सकता है, कनि से मिले बिना इस बात पर मुझे विश्वास नहीं हो सकता था।

एक छोटी-सी कुर्सी मेरी ओर बढ़ाकर कनि बोली—"खड़े क्यों हो, बैठ जाओ।"

मैं बैठ गया। कनि ने पूछा—"हैरी को देखा है?"

मेरी धारणा थी, रात के पागलपन के बाद हैरी अब तक सो ही रहा होगा। कनि भी यही सोच रही थी। मैंने कहा—"देखता हूं, मिस्टर लैंब्रेटा अभी तक सो ही रहे हैं या जग चुके हैं।"

कनि बोली—"अगर सोया हो, तो उसे 'डिस्टर्ब' नहीं करना।"

मुझे जरा गुस्सा आ गया। एक कैबरे-गर्ल का मसखरा है, कोई ऐसा वी० आइ० पी० तो नहीं कि उसे ब्रेक-फास्ट के वक्त भी 'डिस्टर्ब' नहीं किया जा सके। परंतु मैंने इतना ही कहा—"हम होटल में नौकरी करते हैं। किसी को 'डिस्टर्ब' न करने का आर्ट भी हमें मालूम है।"

लैंब्रेटा के कमरे का दरवाजा सटा हुआ था। नजदीक जाकर देखा, तो ताला बंद था। "दरवाजा तो बंद है।" मैंने कनि से कहा। वह घबरा गयी। बोली—"फिर वह कहां चला गया? ....."

भारी मुसीबत है! लैंब्रेटा कहां है, यह भला मैं कैसे बता सकता हूं? कनि की आंखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के कपड़ों की धुलाई सर्फ़ से कीजिए और फिर देखिए इस धुलाई की अनोखी शान। सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है जिसके कारण आपके कपड़े अत्यंत आसानी से सबसे सफ़ेद और साफ़ धुलते हैं। कमीज़ें, साड़ियाँ, बच्चों के वस्त्र—सभी कपड़े—सर्फ़ से धोइये।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

SU. 25-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर आयीं । बोली—"तुम्हीं इसके लिए जिम्मेवार हो । क्यों तुम रात को मुझे बुला लाये ? एक छोटे-से निरीह आदमी ने जरा देर के लिए तुम्हारे कमरे में गोलमाल किया, तो कौन-सी बड़ी बात हो गयी ? तुम बर्दाश्त नहीं कर सकते थे ?"

मैं स्तंभित रह गया । मगर वह रुकी नहीं । कहती गयी—"मुझे देखो, मैं जो इतना कुछ सहती रहती हूं । मैं और हैरी रात-दिन हजारों लोगों की हजारों किस्म की भद्दी-भद्दी बातें सहते रहते हैं, अत्याचार सहते रहते हैं, मुंह बंद किये रहते हैं, कभी किसी से कोई शिकायत, कोई 'कम्प्लेंट' नहीं करते ।"

मैं हक्का-बक्का होकर कनि की आंसुओं से भीगी आंखें देखता रहा । कनि मेरे नजदीक आकर बोली—"जानते हो, कल रात वह बिस्तर पर लेटा-लेटा फूट-फूटकर रो रहा था । मैंने उसे कितना समझाया, कितनी माफी मांगी । मगर वह मुझसे एक शब्द नहीं बोला । उसने मुझसे बात तक नहीं की । मुंह फेरे हुए पड़ा रहा, रोता रहा ।"

तभी फूलों की एक बड़ी-सी डाली और फलों से भरी टोकरी लादे वेटर गुड़बेरिया ऊपर आया और कनि मेम साहब के पांवों के पास रख दिया । फूलों की डाली में एक कार्ड लटक रहा था, जिस पर प्रेषक सज्जन का नाम और फोन-नंबर लिखा था ।

कनि ने उपहार की ओर देखा तक नहीं । वह तो छोटी उम्र की लड़कियों की तरह रो रही थी । उसे देखकर मुझे ऐसा लगा, वह हमारे किसी गांव की छोटी-सी अबोध बच्ची है, इतने बड़े शहर में आकर अपने संगी को खो बैठी है ।

मैंने गुड़बेरिया से पूछा—"हमारे नाटे साहब की कोई खबर रखते हो ?"

गुड़बेरिया बोला—"नाटे साहब ? वे तो बाहर घूमने गये हैं ।"

अब कनि की खोयी हिम्मत वापस आने लगी । उसके मेघाच्छन्न चेहरे पर क्षण-भर के लिए मुस्कराहटों की किरणें तैरने लगीं । मगर यह खुशी लमहे-भर की थी । मेरी रिस्टवाच की ओर देखकर कनि फिर चिंतित होने लगी । मैंने कहा—"इतनी फिक्र क्यों करती हैं ? वह अब आ ही रहा होगा ।"

और मेरी बात खत्म भी नहीं हुई होगी कि दरवाजा खोलकर लैंब्रेटा छत पर आ गया । उसका मिजाज इस वक्त ठीक था । वह असली भारतीय ढंग से ताली बजा-बजाकर गुनगुना रहा था—"पाटीटो पावना सीटाराम ।"

"इतनी देर तक कहां थे ? क्या कर रहे थे ? मैं तो चिंता से मरी जा रही थी ।" कनी ने पूछा ।

लैंब्रेटा बोला—"यह तो तुम्हारा स्वभाव है ।" फिर व्यंग्य करने लगा—"मेरे लिए चिंता करते-करते तुम्हें नींद नहीं आती है । मेरे लिए चिंता करते-करते तुम्हारे 'नेकेड-डांस' का लय-ताल टूट जाता है ।"

कनि यह उत्तर सुनने को कतई तैयार नहीं थी । उसकी दोनों आंखें छलछलाने लगीं । उसने कहा—"हैरी, तुमने मुझी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

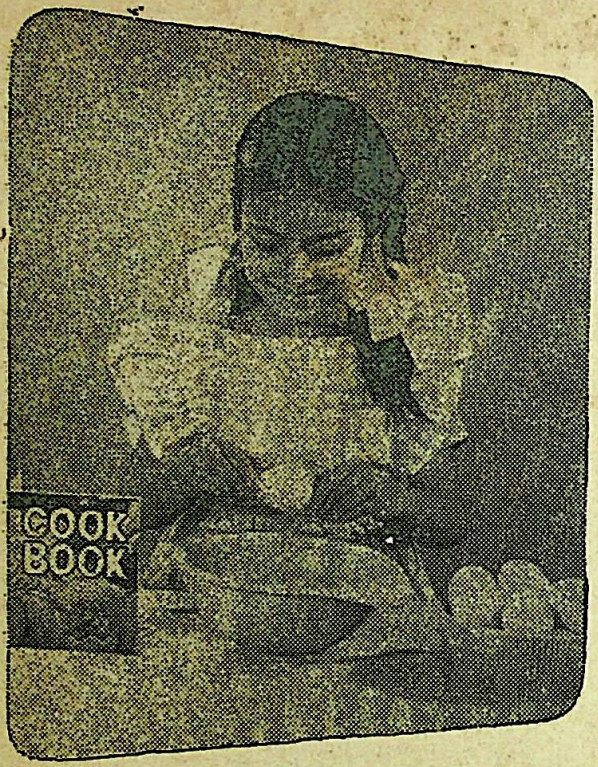

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

एक नन्ही बालिका के लिये खाना पकाना सीखना एक अच्छी महिला बनने की तैयारी है। आपको एक दिन उसे सिखाना ही पड़ेगा — जितना जल्दी सिखायें उतना ही अच्छा है।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूड़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूड़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया। आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें— उन्हे दांतो व मसूड़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूड़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूड़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

O.6

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी बात कही ? मुझी से ?'

किंतु प्रभात के सौंदर्य ने लैंब्रेटा के मन में प्रसन्नता भर दी थी। वह अपनी भूल समझ गया। कनि का हाथ थामकर बोला—"मैं मजाक कर रहा था। मगर तुम तो अभी भी छोटी-सी बच्ची हो, मजाक तक नहीं समझतीं।"

कनि अपने आंसू पोंछने लगी। लैंब्रेटा ने बताया कि वह मैदान में घूमता-घूमता नदी के किनारे जा पहुंचा, जहां फुटपाथ पर बैठकर कुछ लोग गा रहे थे। वह भी उनके बीच बैठ गया। उन्होंने उसे यह गीत सिखाया और गेंदे के कुछ फूल भी दिये। उन्हीं में से एक आदमी उसे शाहजहां होटल के दरवाजे तक पहुंचा गया।

जेब से गेंदे के फूल निकालकर लैंब्रेटा बोला—'वंडर फुल!' और गीत गुनगुनाता हुआ अपने कमरे में चला गया।

× × ×

मुमताज में पांव रखने की जगह खाली नहीं है। बहुत पहले ही सारे टेबल बुक हो चुके हैं और लोग उन पर कब्जा जमाकर बैठ चुके हैं। जिम सामने की कतार में कुछ लोगों के बैठने के लिए कुर्सियां डालने लगा। लोग सामने की कतार में बैठने के लिए घूंस तक देने को तैयार हैं और जिम तो कुछ भी कर सकता है पैसों के लिए। शराब की बिक्री तो और भी ज्यादा है।

आज कई औरतें भी आयी थीं। हमारे मुमताज का यह 'फ्लोर-शो' कलकत्ता की संस्कृति का सबसे प्रमुख अंग है। शिक्षिता-प्रशिक्षिता, आधुनिका भारतीय ललनाओं के लिए भी इस तीर्थस्थान का दर्शन अनिवार्य कर्त्तव्य है।

मैं कनि के कमरे में गया। कनि कमरे में नहीं है। दरवाजा वैसे ही खुला पड़ा है। मैं डर गया। ऐन शो शुरू होने के वक्त मेम साहब कहां चली गयी हैं ? पांच रुपये का टिकट लेकर और पचास रुपये की शराब पीकर जो लोग मुमताज की नरम-गरम कुर्सियों पर जमे बैठे हैं, उन्हें अगर पता चले कि फ्लोर-शो नहीं होगा, कनि द वूमन नहीं आयेगी, तो शाहजहां के कर्मचारियों की क्या दुर्गति बना दी जायेगी, यह सोचकर मैं कांप उठा। क्या करूं, समझ में नहीं आ रहा था। मैं छत पर चला आया। अपने कमरे में घुस ही रहा था कि बगल के कमरे से लैंब्रेटा की आवाज सुनाई पड़ी। वह कह रहा था—"जाओ ! तुम अगर जाने के लिए इतनी उतावली हो, अकेली चली जाओ।"

कनि कातर स्वर में बोली—"प्लीज.... नासमझ न बनो। उठो, चलो मेरे साथ।"

लैंब्रेटा अजगर की तरह फुफकार छोड़ने लगा—"देखो, मेरी देह पर हाथ न रखो। क्या समझती हो ? प्यार जताने से मैं पिघल जाऊंगा ?"

तभी मैंने अंदर जाकर कहा—"अगर और देर कीजियेगा, तो लोग हमारे होटल में आग लगा देंगे।"

कनि लगभग रोती हुई बोली—"मुझ पर दया करो। तुम्हारे पांव पड़ती हूं, चलो।"

लैंब्रेटा बोला—"ठीक है। मगर आज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोया
स्पर्शित मनमोहक
सुन्दरता आप
पा सकती हैं

गोया के विशेषज्ञों द्वारा सुगन्धित किया हुआ मोहक रेशम जैसा मुलायम गोया टेल्क पेरिस, लंदन और न्यू यार्क की रूपरानियों को बहुत पसन्द हैं। ये उत्तम सुगन्धियाँ—मनभावन ब्लैक रोज़, ताज़े फूलों सी सुवासित गार्डेनिया और मोहक पासपोर्ट—बनायी गई हैं जिनकी सुगन्ध बहुत देर तक बनी रहती है। आप इनमें से कोई भी पसन्द कर सकती हैं। ये सुगन्धियाँ दुर्गन्ध को दूर करतीं और आपको तरोताज़ा तथा अधिक खुशबूदार बनाये रखती हैं।

टेल्क सुगन्धियों से युक्त

गोया

एटलांटिस (ईस्ट) लि०
(इंगलैण्ड में समितिबद्ध)

पेरिस लंदन न्यू यार्क

अब भारत में बनने लगीं

AGC-2 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आखिरी वार। देखूंगा, कल से कौन मुझे स्टेज पर ले जाता है।"

मैं कनि के साथ वाहर आ गया। लैंब्रेटा कपड़े वदलने लगा। कनि का चेहरा सूख गया है, आंखें सूज गयी हैं। कहती है—"वह बड़ी अजीव बातें करता है। वताइये तो, कैवरे इज़ कैवरे! यह तो नाच है, अभिनय है। जिंदगी से इसका क्या ताल्लुक है? मगर हैरी इतनी-सी वात समझ नहीं पाता। कहता है, शो के वक्त मैं किसी भी कस्टमर की गोद में नहीं वैठूं। वताइये, ऐसा कैसे चलेगा?"

अव तक मैं कनि से कुछ नहीं वोला था; मगर अब रहा नहीं गया। मैंने कहा—"ऐसे आदमी को साथ रखेंगी, तो आपकी लोकप्रियता खत्म हो जायेगी।" फिर हम लोग नीचे उतर आये।

कल रात की तरह आज भी रोशनी वुझ गयी। कल रात के ही सारे लोग आज भी सामने वैठे हैं। आज भी वैसा ही शोरगुल होने लगा। वही गूंज। वही लय-ताल। वही चीख-पुकार। वही उम्मीदों का हुजूम। फिर उम्मीद का टूट जाना। नहीं, कनि द वूमन नहीं है। कनि के वदले वामनावतार लैंब्रेटा आ गया है।

मगर लैंब्रेटा? यह वौना तो लैंब्रेटा नहीं। अभी स्टेज पर इसे नाचते देखकर कौन कह सकेगा, कुछ ही मिनिट पहले यह बिस्तर पर पड़ा भूखी बिल्ली की तरह गुर्रा रहा था। यह तो कोई दूसरा वौना है, जो तीन फुट ऊंची टोपी हाथ में थामे कह रहा है—"गुड ईवनिंग, लेडीज एंड जेंटलमेन. मैं ही कनि हूं, कनि द वूमन। मेरे लिए इतनी रात तक वैठे आप लोग इंतजार करते रहे हैं, यह मेरे लिए गर्व की वात है।"

इसके वाद, जो वातें कल हुई थीं, फिर दुवारा होने लगीं। वत्तियां वुझ गयीं। सामने की कतार के एक सज्जन चीत्कार कर उठे—"पता नहीं, मेरी गोद में आकर कौन वैठ गया है!"

मैंने अंधेरे में देखने की कोशिश करते हुए कहा—"डरिये नहीं।"

मगर लगता है, आज कनि ने आदमी चुनने में गलती की थी। एकदम समझदार आदमी की गोद में जा वैठी थी। समझदार आदमी चिल्लाने लगा—"मिल गया, मिल गया। रोशनी न जलाइये।"

मैंने एक सेकेंड देर नहीं की, रोशनी जलाने का इशारा किया। मुमताज रेस्तरां की सारी वत्तियां एक साथ जल उठीं। कनि अपनी सारी ताकत लगा उस समझदार आदमी की गोद में बिल्ली की तरह उछल पड़ी। वह कांप रही थी, उत्तेजना से हांफने लगी थी। मगर उसकी उत्तेजना को समझने की फुरसत किसी को नहीं थी।

कनि ने अपना नाच शुरू कर दिया। नाच का प्रागैतिहासिक लय-छंद जैसे जंगली नगाड़े बजाकर अतिथियों के अंतस्तल के आदिम पशु को नींद से जगा रहा है। सीमा बंधनहीन वह आदिम आग—आदिम जंगल की आग—कोट-पैंट-टाई का जाल भस्म कर बाहर निकलना चाहती है, ज्वालामुखी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बढ़िया

सनलाइट

से हर बार

आप के कपड़े ज़्यादा चमकदार धुलते हैं

अपने रोज़ पहनने के कपड़े
नये बढ़िया सनलाइट से धोइये

लिंटास-S.59-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन जाना चाहती है।

तमाशा देखती हुई औरतें 'ओ लार्ड!' कहकर अपने साथी के शरीर पर ढुलक पड़ती हैं, निढाल हो जाती हैं। उनके चेहरे पर फैली हुई उत्तेजना और उनके होंठों की हंसी से स्पष्ट है कि वे आधुनिकाएं हैं, इस नाच और इस विद्रूप में रस ले रही हैं। रुचि-सुरुचि के किसी कानून में बंधकर वे पुरुषों से अलग नहीं रहना चाहतीं और न पुरुषों को कानून में बांधे रहना चाहती हैं।

मैंने देखा, आस-पास बैठे लोगों की तेज निगाहों की परवाह किये बिना टेबल के नीचे साड़ीवाला एक पांव ट्राउजरवाले एक पांव को दूसरे पांव के बीच दबाये है। सभ्यता के काले जंगल में एक मकड़ी का जाल दूसरी मकड़ी के जाल में उलझ गया है।

कनि नाच रही है। उसके साथ लैंब्रेटा भी नाच रहा है। कनि के शरीर की गति-धीरे-धीरे तेज हो रही है। लैंब्रेटा भी ताल पर ताल देकर, लय का, छंद का साथ देकर अपनी प्रेयसी का मन जीतना चाहता है। मगर शीघ्र वह थक गया, हांफने लगा। एक लंबी छलांग लगाकर जितनी दूरी कनि पार कर लेती थी, उतनी दूरी जाने में लैंब्रेटा को तीन बार कूदना पड़ता था।

कनि समझ गयी। अचानक उसका रूमाल फर्श पर गिर पड़ा। बौने ने झुककर रूमाल उठा लिया और बड़ी उम्मीद-भरी निगाहों से कनि की ओर देखता हुआ उसे रूमाल थमाने लगा। उसी क्षण कनि ने लैंब्रेटा के कान में कोई बात कही। उसने भी कोई जवाब दिया और अचानक कनि गुस्से में जलने लगी, थरथराने लगी। जैसे बौने को भस्म कर डालेगी।

नाचते-नाचते उसने हाथ उठाकर लैंब्रेटा को धमकाया—"पाजी! शैतान के बच्चे! दूर हो जाओ मेरी नजरों के सामने से। तुम्हारे इतने छोटे शरीर में इतनी बड़ी शैतानी भरी है!" और डरता-सहमता हुआ लैंब्रेटा और भी बौना होकर स्टेज के बाहर उतर गया।

कल लैंब्रेटा बहुत देर तक नाचता रहा था। आज इतनी जल्दी ही हट गया। बात मेरी समझ में आ गयी थी। उससे नाच संभल नहीं रहा था। उसकी यह हालत देखकर ही कनि ने रूमाल गिरा दिया। उससे बोली—"तुम अब आराम करो।" और नकली नाराजगी दिखाने लगी। बेचारा बेहद हांफ रहा था। पसीने से सारे कपड़े भीग गये थे।

मगर कनि नहीं थकी है। लट्टू की तरह तेजी से नाच रही है। मुमताज की सारी बत्तियां एक-एक कर बुझ गयी हैं। सिर्फ नीली रोशनी की एक हल्की-सी रेखा है, जो उसके अर्धनग्न शरीर को और भी रहस्य-मय बना रही है।

तभी लैंब्रेटा ने पास आकर धीमी आवाज में मुझसे कहा—"पहली बार जिसकी गोद में कनि बैठी थी, उस आदमी को तुम पहचान सकते हो? मैं सोडे की बोतल से उसका सिर फोड़ दूंगा। तुम लोग मुझे अब तक पहचान नहीं पाये हो। मैं बहुत बदमाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

बुरी तरह उलझे-बिखरे बालों को भी सँवारने योग्य बना देता है। —उन्हें दिन भर सँवरे हुए रखता है!

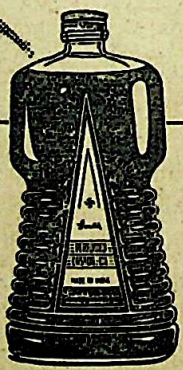

मुलायम और लहराते हुए बाल... चमकीले और आकर्षक बाल... स्वस्थ और सुगंधित बाल...दिन भर सँवरे हुए बाल...यह है स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल का कमाल।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि. बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी हूं। जानते हो, उस हरामजादे ने कनि को नोच-खसोट लिया है।"

मैंने कहा—"गुस्सा न कीजिये। चुपचाप खड़े रहिये।"

लैंब्रेटा बोला—"क्यों चुप रहूं? हर जगह लोग इसी तरह हमें सताते रहेंगे, और हम बर्दाश्त करते रहेंगे?"

मैं विरक्त हो गया—"मिस्टर लैंब्रेटा, आपसे बहस करने की फुरसत मुझे नहीं है।"

इसी बीच इंटरवल आ गया। बिजली-मिस्त्री ने मेरे इशारे पर स्विच बंद करके निरावरण कनि की लज्जा की रक्षा की। फिर क्षण-भर बाद ही उजाला फैल गया।

स्क्रीन के पीछे आकर कनि एक रेशमी लबादा ओढ़े हांफ रही थी और पसीना पोंछ रही थी। दायें हाथ की कोहनी पर उंगलियां फेरती हुई वह बोली—"यहां आकर कुछ लोग इतना पी लेते हैं कि होश-हवास खो बैठते हैं। वह आदमी तो पीकर एकदम पागल हो गया था।" फिर बड़े ही मधुर स्वर में कहा—"जरा आयोडिन ला सकते हो? उस आदमी ने इस तरह नोच लिया है कि अब तक मेरी बांहें जल रही हैं।"

इसी वक्त लैंब्रेटा आ गया। बोला—"कौन आदमी? किसे तुम आदमी कहती हो, कनि? यहां तो सभी जानवर हैं।"

लैंब्रेटा कहीं से स्पिरिट, आयोडिन की शीशी और रूई ले आया था। कनि का हाथ पकड़कर बड़े ही प्यार से वह खरोंची हुई जगहों पर स्पिरिट लगाने लगा। कनि आंखें बंद करती हुई बोली—"उफ! हैरी, तकलीफ हो रही है।"

लैंब्रेटा गंभीर होकर कहने लगा—"इन जानवरों का भगवान सर्वनाश करे।"

नाच फिर शुरू हो गया। रंगीन वत्तियों के मेले में कनि का बेलून-नृत्य। कमर में, सारे अंगों पर बेलून बांधकर वह जैसे पैराशूट से उतरनेवाली हवाई युवती बन गयी है। अभी क्षण-भर पहले वह उदास थी, चिंतित थी; मगर एक ही क्षण में मुस्कराहटों से, चंचलता से, यौवन के उन्माद से भर उठी। आंखों देखे बिना इस परिवर्तन पर विश्वास करना कठिन है।

हाल में बैठे मेहमान उल्लास से झूमने लगे। चीख-पुकार मच गयी। सीटियां बजने लगीं। ठहाके लगे। कनि की ओर फूलों के गुच्छे फेंके जाने लगे। बरसों से शाहजहां होटल के आमोद-कक्ष में वासना के उन्माद में जो कुछ होता आया है, वही सारा कुछ दुहराया जाने लगा।

फिर भी पता नहीं क्यों, मुझे लगा, आज कहीं कोई स्वर टूट गया है, कोई लय खो गयी है। कलवाली बात नहीं है। यों आज भी कनि के नृत्य में प्रागैतिहासिक उन्मत्तता का अभाव नहीं था, आज भी कनि की बड़ी-बड़ी आंखों में जहरीली नागिन की भयानक तीक्ष्णता थी, वह लोगों को डंस रही थी। फिर भी, आज वह थकी हुई थी, उदासी की हल्की-हल्की छाया उसके चेहरे पर कांप रही थी।

आज भी दर्शकों ने बेलून फोड़े। वासना-कलुषित उल्लास में मुमताज का यह ऐति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धोखा

—अमीक़ हनफी

तुम भी शायद आईना हो !
साफ उजला और चमकता आईना।
जो भी आते हैं तुम्हारे सामने,
तुम दिखा देती हो उनको अपनी सूरतें,
तुम पढ़ा देती हो उनको
उनके चेहरों की किताब
और एक मासूम हैरानी के परदे में
छिपा लेती हो अपना मुद्दुआ ।।

तुम भी शायद आईना हो !
जो भी रहता है तुम्हारे रूबरू
अंखड़ियों में क्या तुम्हारे दिल में भी
सिर्फ उसकी शक्ल आती है नजर
और तुमसे छूटकर
दूर तनहाई में रहता है
वह इस खुशगुमानी में मगन—
छोड़ आया है
तुम्हारे दिल पै अपनी गहरी छाप
खींच आया है
तुम्हारे दिल पै पत्थर की लकीर ।।

[रूपांतर : मेवाराम गुप्त]

हासिक कक्ष डूबने-उतराने लगा; मगर थोड़े ही क्षणों के लिए। थकी हुई नर्तकी आज थोड़ी ही देर के बाद दर्शकों की शिकारी निगाहों को धोखा देकर अंधेरे में गायब हो गयी। रोशनी जल उठी। तरह-तरह की पुकारों से हाल भर उठा। घर लौटने के लिए लोग नेज कदमों से बाहर निकलने लगे। भीड़ टूटने लगी।

माइक को स्टेज से हटाकर, बैरों को जरूरी आदेश देकर सत्यसुंदर दा बाहर जाने लगे, तो मुझसे टकरा गये। बोले—"बड़ी गड़बड़ हो गयी है। मैनेजर साहब बेहद नाराज हैं। उन्हें पता चल गया है कि आज कनि जी लगाकर नहीं नाच रही थी। जिम से मैनेजर की देर तक बातचीत हुई है। उन लोगों को पता चला है, सारी खराबी का कारण वही बौना साहब है। उसी की वजह से कनि का नाच चौपट हो रहा है।"

मैं बोला—"उस बेचारे का क्या कसूर ? एक तमाशबीन ने कनि को नोच-खसोटकर सारा मामला बिगाड़ दिया।"

मैं डर गया था। मुझे लगा, कनि का अनिष्ट होनेवाला है। बोस दा मेरी हालत समझ गये। हंसकर बोले—"इसीलिए कहता हूं शंकर, इसका नाम सराय है। यहां किसी से लाग-लगाव पैदा न करो।" फिर कहने लगे—"सारा अपराध तो कनि का है। होटल के बैरे-खानसामे तक कनि और बौने का का नाम लेकर मजाक करते हैं, हंसते हैं। जिम खुद ही कह रहा था, कनि ने अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बौने के लिए एयरकंडीशंड कमरे की मांग की थी।"

मैं तो जानना चाहता था, मैनेजर और जिम कौन-सा फंदा डाल रहे हैं। मगर बोस दा के चेहरे का भाव देखकर जोर देकर पूछ नहीं सका।

× × ×

मैं काउंटर पर का काम-धाम पूरा करके जब ऊपर आया, सवेरा हो चुका था और कनि छत के एक किनारे बैठी थी। उदास थी। धूप की ओर पीठ किये, सिगरेट पी रही थी। मुझे देखकर बोली—"गुड मार्निंग!"

मुझे पता है, आज की सुबह कनि के लिए 'गुड' नहीं है, फिर भी मैंने कहा—"गुड मार्निंग!" कनि उठ आयी। पहले उसने लैंब्रेटा के कमरे में झांककर देखा कि वह उसे देख तो नहीं रहा है। फिर चुपचाप मेरे कमरे में चली आयी। कुर्सी पर बैठती हुई बोली—"तुम्हारी ड्यूटी खत्म हो गयी है?"

"अभी तो छुट्टी ही है। अब शाम को जो होना है, होगा। क्यों, कुछ काम है?"

"अगर तुम्हें खास तकलीफ न हो, मेरे साथ चलो। मैं जरा बाहर घूम आना चाहती हूं।" उसने उत्तर दिया।

कलकत्ता के बारे में कनि को कोई जानकारी नहीं है। फिर उसकी-जैसी औरत का अकेले बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं है। वैसे भी मुझे लगा, मैं इन्कार कर दूं, तो भी वह अकेली ही निकल पड़ेगी। इसलिए मैं साथ जाने को राजी हो गया।

बाहर जाने के कपड़े पहनकर कनि जब अपने कमरे से बाहर आयी, तो पहचानी नहीं जाती थी। लगता था, कोई टूरिस्ट लड़की है, कालेज की पढ़ाई पूरी करके अपने अमीर पिता के साथ विश्व-भ्रमण के लिए निकली है।

चित्तरंजन एवेन्यू होकर टहलते हुए, हम दोनों चौरंगी आ गये। मैंने पूछा—"कहां चलना है? विक्टोरिया, मेमोरियल, या म्यूजियम, या चिड़ियाघर या गवर्नर-हाउस? क्या देखना चाहती हो?"

उसने इन सारे नामों के प्रति कोई औत्सुक्य नहीं दिखाया। अपने वैनिटी बैग से कागज का एक पुर्जा निकालकर मेरे हाथों में थमा दिया। उस पर शहर की एक अनजान गली का नाम लिखा था। मैंने अचरज से पूछा—"आप यहीं जाना चाहती हैं?"

"हां, वहीं चलना होगा। नहीं तो, क्या मैं कलकत्ता की खूबसूरती देखने के लिए बाहर निकली हूं?"

मैंने टैक्सी बुलायी। टैक्सी में बैठकर उसने कहा—"मैं उसी ग्रेट मैन से मिलना चाहती हूं—प्रोफेसर शिवदास देव शर्मा द ग्रेट—जिनके रिसर्च सेंटर से घोषणा हुई थी कि लार्ड कर्जन कभी इंग्लैंड के प्रधान मंत्री नहीं बन सकेंगे। जंगी लाट लार्ड किचनर से यश-प्रशंसा पाकर भी वे किचनर को बताने में डरे नहीं कि जहाज के डूबने से ही उनकी मौत होगी।"

कनि को प्रोफेसर शिवदास द ग्रेट का गरिमामय इतिहास कंठस्थ है। उनकी कई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

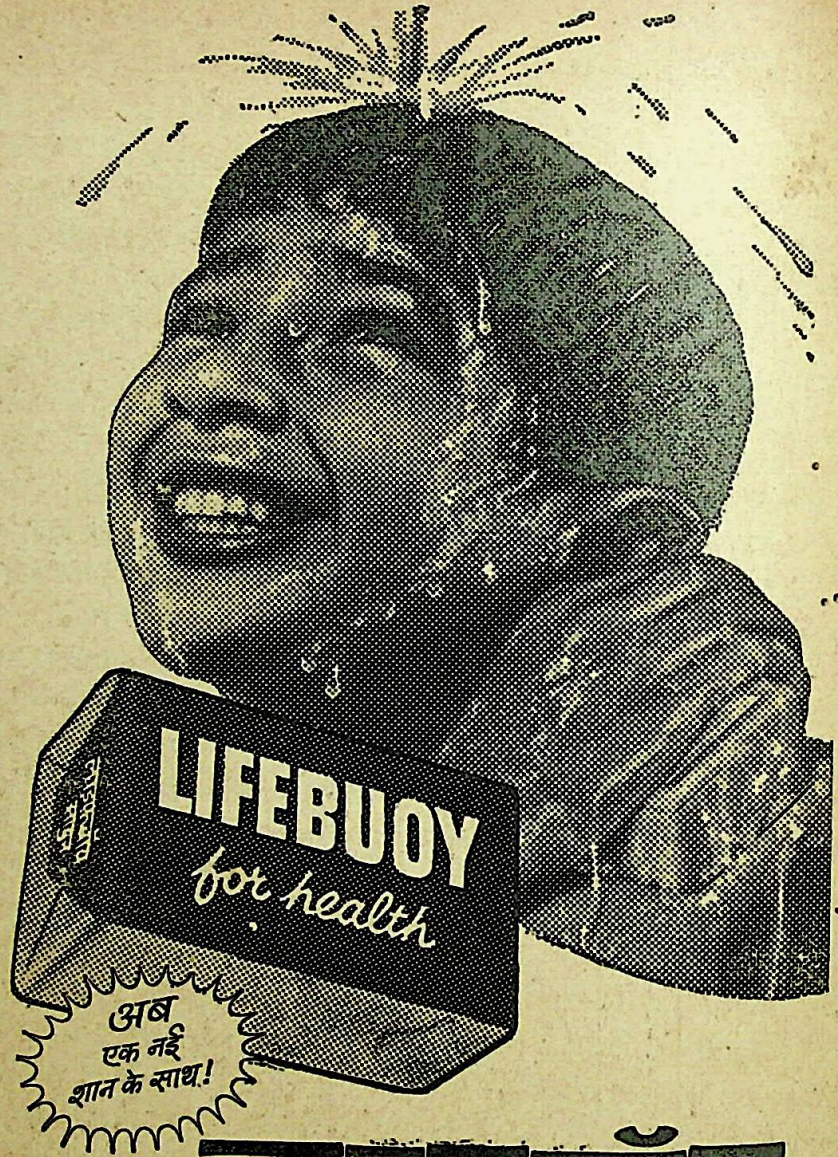

लाइफ़बॉय

है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ

L. 47-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महान भविष्यवाणियों में रवींद्रनाथ द्वारा 'सर' उपाधि का त्याग, लार्ड ब्रेबोर्न की अकाल मृत्यु, जर्मनी का अधःपतन, गोयरिंग की आत्महत्या, सुभाषचंद्र का भारत-त्याग और विदेशी युवती से विवाह और भारतवर्ष की स्वतंत्रता-प्राप्ति शामिल हैं।

कनि ने बैग में से एक छपा हुआ पर्चा निकाला। ऊपर ही लिखा था, 'प्राइवेट एंड कान्फिडेंशियल'। इसी पर्चे से जानकारी मिली कि महापुरुष शिवदास देव शर्मा प्रब्लिसिटी में विश्वास नहीं करते हैं।

इसी पर्चे से पता चला कि प्रोफेसर शिवदास ने महादेव देसाई के द्वारा कस्तूरबा को सूचना दी थी कि उनके पति हत्यारे के हाथों मरेंगे; मगर उन्हें घबराने की आवश्यकता नहीं—वे पति की गोद में सिर रखकर सती-साध्वी की भांति मरेंगी। एडवर्ड आठवें को शिवदास द ग्रेट ने जो कवच पहनने का उपदेश दिया था, अगर वे उसे पहन लेते, तो इंग्लैंड के राजपरिवार का इतिहास कुछ और ही होता। इस अणुशक्ति-संपन्न महाकवच को बनाने के लिए यज्ञादि करने में जो तिहत्तर रुपये चार आने खर्च होते हैं, उससे एक आना ज्यादा लेना शिवदास देव शर्मा द ग्रेट गोमांस-भक्षण जैसा पाप समझते हैं।

कनि से बार-बार मैंने लौट चलने की प्रार्थना की; मगर उसने मेरी बात बिलकुल नहीं सुनी।

शहर के एक किनारे एक अंधी गली में शिवदास का रिसर्च-सेंटर है। हम लोग जब वहां पहुंचे, वे गनी-बैग, जूट, तिलहन आदि की दरों के चढ़ाव-उतार के बारे में अपने 'क्लायंटों' को उपदेश दे रहे थे।

शिवदास महोदय के सहकारी थोड़ी ही देर बाद हमें अंदर ले गये। अंदर जाते ही शिवदास द ग्रेट ने जनेऊ निकालकर कनि को आशीर्वाद दिया। कनि जूते बाहर खोल आयी थी। अपना स्कर्ट संभालती हुई, पांव मोड़कर एक खाली आसन पर बैठ गयी।

शिवदास द ग्रेट की धूर्त आंखें कनि की जांच-पड़ताल करने लगीं। उन्होंने कनि के सिर पर हाथ रखा। फिर आंखें बंद करके किसी देवता का ध्यान करने लगे और अंग्रेजी में बोल पड़े—"मदर, मदर, नो फियर, शिवदास विल सेव यू।"

कनि उनका उच्चारण समझ नहीं सकी। मेरी ओर देखने लगी। मैं बोला—"वे कहते हैं, डरो नहीं, चिंता नहीं करो।" शिवदास द ग्रेट की विशेषता है कि वे स्वयं पहले कोई सवाल नहीं पूछते हैं। आदमी का चेहरा देखकर ही उसके भूत-भविष्य का निर्णय कर लेते हैं। यह लड़की 'बी-ट्विल', 'हैंडिकैप' या 'इंडियन आयरन' के बारे में कुछ पूछने नहीं आयी है, यह तो ज्योतिष-विद्या जाने बिना भी कोई कह सकता था। फिर भी शिवदास आंखें बंद करके सोचते रहे। इसी वक्त बैग से दस रुपये का नोट निकालकर कनि ने महात्मा के पांवों पर भक्तिपूर्वक रख दिया।

शिवदास ने आंखें खोलीं। रहस्यमय ढंग से मुस्कराते हुए बोले—"चिंता करने की जरूरत नहीं। तुम्हारा मन जो चाहता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चही तुम्हें मिलेगा।"

कनि के चेहरे पर जैसे हजार 'वाट' का बल्ब जल उठा। वह खुशी से दमकने लगी।

शिवदास द ग्रेट ने कहा—"अपने दोनों हाथ खोलकर मेरे सामने रखो।" कनि ने वैसा ही किया। शिवदास हाथ देखते रहे। फिर बोले—"बहन, तुमने जीवन में बहुत बर्दाश्त किया है। मगर अभी कुछ और बर्दाश्त करना होगा, कुछ और।"

कनि आंखों में आंसू भरकर बोली—"हैरी का अगर भला हो, तो मैं और भी बहुत-कुछ सहने को तैयार हूं प्रभु।"

शिवदास द ग्रेट बड़े ही प्यार से मुस्कराये। बोले—"सब समझ रहा हूं, सब देख रहा हूं। तुम क्या चाहती हो, मुझे मालूम है। फिर भी तुम्हारे मुंह से एक बार सुनना चाहता हूं। जो मांगना चाहती हो, अपना मुंह खोलकर मांग लो। मां भगवती इन्कार नहीं करेंगी।"

कनि के होंठ थरथराने लगे। धीमे-धीमे वह बोली—"प्रभु, आप जो भी चाहेंगे, वह हो जायेगा। आपके इच्छा करने की देर है। मेरे पास जो कुछ है, मैं सारा कुछ आपको समर्पण कर दूंगी—आप हैरी को थोड़ा लंबा कर दीजिये। मैं सुख-संपत्ति कुछ भी नहीं चाहती। सिर्फ, हैरी आदमी बन जाये, बौना न रहे। कोई उसे 'बौना' कहकर मजाक नहीं उड़ा सके।"

भूत-भविष्य समझनेवाले महात्मा शिवदास भी आश्चर्यचकित हो गये। मेरी ओर देखते हुए बोले—"मेम क्या कह रही है?"

"हरी इनका एक साथी है। वह बौना है उसके साथ....."

"कहने की जरूरत नहीं है। मैं समझ गया।" शिवदास कहने लगे—"उसी बौने को बड़ा करना होगा, है न? उसे खींच-खांचकर आदमी के साइज का बनाना होगा?"

"हां प्रभु, इसके लिए आप जो मांगेंगे, वही दूंगी।" कनि ने कहा।

शायद ऐसा स्वर्ण अवसर प्रोफेसर शिवदास द ग्रेट को बहुत दिनों से नहीं मिला था। उनकी जीभ से लार टपकने लगी। सिर हिलाते हुए, झूमते हुए बोले—"कोई असंभव बात नहीं है। वामन से दैत्य; दैत्य से वामन—यह तो हमारे देश में प्राचीन काल से होता आया है। एक यज्ञ करना होगा। इसका नाम है वामनावतार-यज्ञ। बड़ा ही कठिन और श्रमसाध्य यज्ञ है। सात दिन सात रात प्रधान पुरोहित को एक ही आसन से बैठकर होम करते रहना होगा।"

शायद शिवदास अब यज्ञ के व्यय की लंबी-चौड़ी फेहरिस्त पेश करते। मगर मेरे विरक्त चेहरे की ओर देखकर जरा डर गये। मुझे टटोलने के लिए बोले—"आप कुछ कहना चाहते हैं?"

मैं नाराजगी दिखाता हुआ कहने लगा—"भूल न जाइयेगा। मैं हूं होटल शाहजहां का कर्मचारी। जरा सोच-समझकर बात कीजिये। मैं कलकत्ता के आस-पास का लड़का हूं। और मैं ही इस सीधी-सादी लड़की को साथ लाया हूं.....।"

मैं क्या चीज हूं, यह शिवदास द ग्रेट पूरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह समझ गये और बात बदलते हुए बोले—"यह वामनावतार यज्ञ शायद मेरे सिवा कोई दूसरा करना नहीं जानता है।"

कनि अधीर होकर बोली—"प्रभु, आप व्यवस्था कीजिये। मैं शाहजहां होटल का 'शो' बंद करके आपके यहां बैठी रहूंगी। हैरी का हाथ पकड़कर, पांव पकड़कर किसी तरह उसे भी यहां ले आऊंगी।"

मगर अब शिवदास द ग्रेट सिर हिलाने लगे। एक-एक शब्द पर रुकते हुए बोले—"मगर इस यज्ञ का एक कुफल भी है। होम के बाद बौना लंबा तो हो जायेगा, औसत आदमी के बराबर लंबा हो जायेगा, मगर .....मगर यज्ञ के बाद वह ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह पायेगा। उसकी उम्र घटाकर ही तो लंबा बनाया जा सकता है। छः महीने से ज्यादा जी नहीं सकेगा। आज तक जितने बौने लंबे किये गये हैं, छः महीने से ज्यादा एक भी नहीं जिया है।"

कनि का चेहरा नीला पड़ गया। वह भय से सिहर उठी—"क्या हैरी... हैरी नहीं बचेगा?...मर जायेगा? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। किसी तरह भी नहीं। मैं उसे मरने नहीं दूंगी।" और अपना स्कर्ट संभालती हुई वह उठ खड़ी हुई।

शिवदास ने कहा—"ईश्वर ने जिसे जैसा बनाया है, वैसा ही रहना चाहिये। उसकी इच्छा के विरुद्ध जाने से वह नाराज होता है।"

कनि ने ध्यान देकर उनकी बात सुनी। फिर झुककर भारतीय ढंग से उसने महात्मा को प्रणाम किया।

शिवदास द ग्रेट ने बगल में पड़ा बक्स खोलकर तांबे का एक छोटा-सा कवच निकाला—सर्वशांति कवच। बोले—"एक्स्ट्रा पावरफुल कवच है, अणु-शक्ति-संपन्न। स्नान-पूजा करके, पवित्र मन से इसे धारण करोगी और जिस दिन पहनोगी, उस दिन चौबीस घंटे तक किसी प्रकार का अनाचार या मद्यपान नहीं करना होगा।"

कनि ने श्रद्धा से अभिभूत होते हुए कवच लेकर कहा—"ड्रिंक नहीं करती हूं।" फिर दस रुपये और शिवदास द ग्रेट के हाथ में डालती हुई पूछने लगी—"मैं इसे पहन लूंगी, तो हैरी को सुख-शांति मिलेगी?"

"अवश्य मिलेगी। इसीलिए तो यह एक्स्ट्रा पावरफुल स्पेशल कवच दिया है।" शिकार हाथ से निकल गया, यह सोचकर शिवदास ने लंबी सांस ली।

रास्ते-भर कनि चुपचाप रही। मुझसे एक भी शब्द नहीं बोली। हैरी को स्वस्थ और स्वाभाविक बनाने की अंतिम आशा भी शिवदास द ग्रेट के ज्योतिष-रिसर्च-सेंटर में वह खो आयी थी।

होटल आने पर सत्यसुंदर दा ने कहा—"तुम लोग बाहर नहीं जाते, तो क्या बिगड़ जाता? लैंब्रेटा ने मुसीबत खड़ी कर दी है। कहता है, शराब लाओ। गुड़बेरिया ने उसे बताया, आज ड्राइ डे है। इस पर वह जिम के पास चला गया। जिम तो यही मौका ढूंढ़ रहा था। उससे बोला, मैनेजर के पास चले जाओ, वे इंतजाम कर देंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीडा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुडने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

BJ DOL. 2A HIN

खास जनता

किरासन कुकर

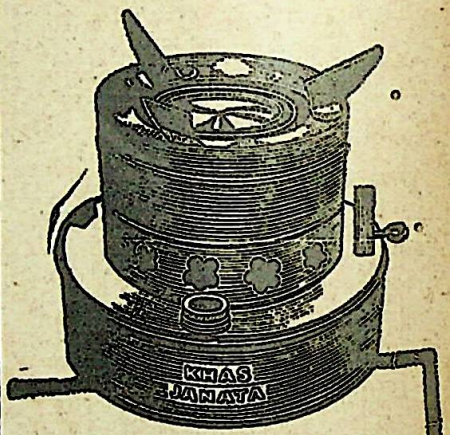

- न गंदगी, न धूल, न धुआँ या झंझट।
- कम खर्च और कोई खतरा नहीं
- अलग पुर्जे मिलते हैं

दि ओरियेन्टल मैटल
इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड
७७, बहूबाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

KALPANA. OM. 55 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लैब्रेटा सीधे मैनेजर साहब के पास चला गया। दरवाजे पर बेहूदे ढंग से धक्का मारने लगा।

"शायद इतने पर भी कुछ नहीं होता। मगर इसी वक्त जिम यह खबर देने पहुंच गया कि दूसरे होटल में दस दिन के फ्लोर-शो की सारी टिकटें बिक चुकी हैं। मगर हमारे यहां कई एडवांस बुकिंग की सीटें कैन्सिल करवा दी गयी हैं। जिम ने पहले जो राय दी थी, मैनेजर ने उस पर ध्यान नहीं दिया था। मगर अब तो बात बहुत आगे बढ़ गयी है। शायद मार्कोपोलो अभी तुरंत कनि को बुलायेंगे।"

× × ×

ड्राइ-डे की उस निर्जन, उदास दोपहरी में जिस तरह बिना पूछे मैं चुपचाप कनि के कमरे में चला गया था, आज मैं ऐसा दुस्साहस नहीं कर सकता। मगर मुझे उस गलती का कोई अफसोस नहीं है।

कमरे में आकर मैं अवाक् रह गया था। गालों पर हाथ रखे कनि पत्थर बनी बैठी है। उसके रेशमी बाल चेहरे पर बिखर गये हैं। मुझे इतने पास खड़े देखकर भी वह कुछ बोल नहीं रही है, निश्चल है।

मैं सारी बात समझ गया। और अपने आप मेरे मुंह से निकल गया—"आइ ऐम सारी। विश्वास करो, मैं बहुत दुःखी हूं।"

कनि बोली—"मैं भी जा रही हूं। हैरी को अलग हटाकर मुझसे कोई काम नहीं हो सकता है। मैंने सिर्फ एक अनुरोध उन लोगों से किया है। हैरी को किसी तरह ये बातें मालूम न हों। मैं हैरी को बताऊंगी, मैं ही उनसे लड़ पड़ी हूं। गुस्से में आकर मैंने ही काम छोड़ दिया है। बस, इतनी-सी बात। आइ होप, वे लोग अपनी बात रखेंगे। वे लोग हैरी की जिंदगी बरबाद नहीं करेंगे। हैरी अपनी खराबियों से, अपनी कमियों से ऊपर उठने की लगातार कोशिश कर रहा है। मगर अपनी हीनताओं से वह अलग नहीं हो पाता है। वह कमजोर आदमी है। अगर ये बातें उसे मालूम हो गयीं, तो हमेशा के लिए हार मान लेगा।"

कनि रुकी। सांस लेकर फिर आगे बढ़ी—"वे लोग समझते हैं, मैं शायद पागल हो गयी हूं। तुम्हारा जिम इस तरह हंसने लगा कि मेरा समूचा शरीर सिहर उठा। एक बौने के लिए मैं अपना भविष्य नष्ट कर रही हूं, वे लोग मुझसे कहते थे। मगर उन्हें क्या पता? वे क्या जानें? उनका कोई दोष नहीं।"

कनि क्या कह रही है? क्या कहना चाहती है? उसकी बातों का मतलब क्या है? उसके हाथ में एक छोटा-सा फोटोग्राफ था। अभी तक उस पर मेरी नजर नहीं गयी थी। मुझे देखकर ही शायद कनि ने तस्वीर का रुख बदल दिया था। मगर अब कनि छिपाना नहीं चाहती। वह बड़े ही ध्यान से तस्वीर देखने लगी। मैंने भी देखा। स्काटलैंड के किसी छोटे-से कस्बे की किसी महिला की तस्वीर। उसकी गोद में एक नवजात शिशु। उसकी बगल में खड़ा एक बालक। सात-आठ साल का होगा।

कनि बोली—"पहचान सकते हो?" मैं कैसे पहचान सकूंगा भला? कनि रोती हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५०१ स्पेशल

५०१ स्पेशल से *हर* धुलाई, स्पेशल धुलाई - *बिना अधिक ख़र्च किए!*

टाटा-उत्पादन

५०१ स्पेशल साबुन के स्पेशल फ़ार्मूला से भरपूर झाग... जिससे सभी कपड़े साफ़, उजले और आसानी से धुलते हैं।

SHBI-501S-85 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली—"मेरी मां!" फिर जरा रुककर, अपने आपको संभालती हुई बोली—"मेरी और हैरी की मां!"

"क्या?" मैं सातवें आसमान से धरती पर आ गिरा।

"हां, मेरी मां ही हैरी की मां है। मैं मां की गोद में हूं। हैरी, मेरा सगा भाई हैरी, मां के पास खड़ा है। उस वक्त किसे पता था कि हैरी इतना ही ऊंचा रहेगा, कभी बड़ा नहीं होगा।"

आंसुओं की नदी में कैबरे की रहस्यमयी नर्तकी का व्यक्तित्व डूबने लगा। डूबते हुए उसने कहा—"हैरी इतना ही बड़ा रह गया। मगर उसने हमारे लिए बहुत-कुछ किया है।"

कनि ने ब्रिटिश द्वीपपुंज की एक मां, एक बहन और एक भाई की कहानी सुनायी। संसार में उनका कहीं कोई नहीं था। बौना भाई ही रेस्तरां में काम करके परिवार का पेट पालता था। विनम्र भाव से मुस्कराता हुआ, वह रेस्तरां के अतिथियों के लिए स्विंग-डोर के किवाड़ खोलता था, झुककर खड़ा रहता था। अतिथि प्रसन्न होकर उसके बौनेपन का मजाक करते हुए उसे बख्शीश देते थे। और इसी बख्शीश के सहारे विधवा मां और बहन का गुजारा चलाता था हैरी।

लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गयी, हैरी का स्वभाव भी बदलता गया। वह चिड़चिड़ा हो गया। शराब पीने लगा। मां के सिवा कोई उसे संभाल नहीं पाता था।

कनि का लिखना-पढ़ना नहीं हो सका। मगर बौने बड़े भाई ने कनि को गाना सिखाया। रेस्तरां के गाने और रेस्तरां के नाच। दिमाग ठीक रहने पर हैरी गाता था और कनि को बताता था, रेस्तरां की लड़कियां कैसे नाचती हैं।

इस तरह अनजाने में ही कनि धीरे-धीरे डांसर बन रही थी। होश संभालने के बाद उसने इसे ही अपनी जिंदगी का रास्ता बना लिया। वह कैबरे-डांसर बन गयी। बड़े भाई को उसने नौकरी से हटा लिया। बोली—"तुम घर में रहो, मां का जी बहलाओ। यही तुम्हारी नौकरी है।"

मां से छिपाकर हैरी अपनी छोटी बहन से पैसे मांगता था और शराब में चूर होकर, मां से डरता हुआ, दबे पांव घर लौटता था। मां समझ जाती थी, कुछ कहती नहीं थी। मां को जब गुस्सा आता, वह बोल-चाल बंद कर देती थी। हैरी मां का हाथ पकड़कर माफी मांगने लगता था। रोता हुआ कहता था—'मां, अब कभी तुम्हें तकलीफ नहीं दूंगा।' करुणामयी मां क्षमा कर देती थी।

"मां अब नहीं है, फिर भी हैरी अब तक मां से डरता है।" कनि अपने आंसू पोंछती हुई मुझसे बोली—"मां जब मृत्युशैया पर थी, उसने मुझे और हैरी को अपने पास बुलाया। हैरी से पूछा, तुम अच्छे लड़के की तरह रहोगे? कनि जो कहेगी, मानोगे?" हैरी छोटे बच्चों की तरह हामी भरने लगा।

"और, आज भी जब हैरी शराब पीकर बेकाबू हो जाता है, पागल हो जाता है, मैं उसे डराती हूं। कहती हूं, मां से शिकायत कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूंगी। तुरंत हैरी होश में आ जाता है; मगर फिर मुझसे बातें नहीं करता। बिस्तर पर पड़ा रोने लगता है। मैं उसे मनाती हूं।

"तब भैया ठीक हो जाता है। मुझे दुलार करने लगता है। कहता है—'तू मेरी प्यारी बहन है, सोना बहन, हीरा बहन। लगता है, अब तुझे नींद आ रही है। अब सोने चली जा।' मैं कहती हूं, तुम नहीं सोओगे, तब तक मुझे नींद नहीं आयेगी। मेरा भैया हंस पड़ता है। कहता है, ठीक है। और सचमुच सो जाता है।"

कनि जरा मुस्करायी। और उस रात पहली बार जब लैंब्रेटा ने मेरे कमरे में ऊधम मचाया था और कनि ने लैंब्रेटा का कमरा अंदर से बंद कर लिया था, उस समूचे दृश्य का अर्थ मेरी समझ में आ गया। कनि के जीवन का सारा रहस्य स्पष्ट और स्वच्छ होकर मेरे सामने फैल गया।

कनि अब तक अपने आपको संभाल चुकी थी। कंघी से अपने बालों को सहेजती हुई बोली—"हैरी को अकेला छोड़कर मैं कहां जाऊंगी, बताओ? हर वक्त मुझे उसी की चिंता लगी रहेगी। इसीलिए मैंने उसे नाच का 'पार्टनर' बना लिया है। मगर हैरी मेरी हालत देखकर, लोगों का व्यवहार देखकर पागल हो जाता है। इतना नहीं समझता, अभिनय अभिनय है, जीवन नहीं।"

इसके बाद फिर कनि टूटने लगी—"मेरा बड़ा भाई है, अपना सगा भाई; मगर लोगों को बता नहीं सकती। हमारा 'प्रोफेशन' ही ऐसा है, भाई-बहन को लोग नाच में प्रेमी-प्रेमिका बनते देखकर क्या कहेंगे?"

कनि से और भी बातें होतीं। मगर लैंब्रेटा कनि के कमरे में आ गया। मैं उसकी ओर देखता हुआ बाहर निकल गया।

इसके बाद भी एक बार फिर लैंब्रेटा से छत पर मेरी मुलाकात हो गयी। अपने बैग में सामान भरता हुआ, मुझे बुलाकर वह बच्चों की तरह कहने लगा—"ऐ लड़के, इधर सुनो! तुमने देख लिया न, क्या हुआ? हमें गुस्सा दिलाकर, अब उसका फल भुगत रहे हो न? तुम्हारे शाहजहां होटल को नाच दिखाकर अब हम जा रहे हैं।"

फिर उसने कहा था—"मेरी बात याद रखना। तुम्हारे इस गंदे शहर में अब हम लोग कभी वापस नहीं आयेंगे।"

× × ×

सचमुच वे दोनों फिर कभी कलकत्ता वापस नहीं आये। वे ही क्या, कोई वापस नहीं आता है। यौवन के मौसमी फूलों के साथ रात की पांथशाला में आनेवाली प्रिया क्या दुबारा वापस आती है? क्या मौसमी फूल दुबारा वापस आते हैं? फिर भी मुझे अब तक कनि याद है। उसे भूल नहीं पाता हूं। सुबह के उजाले में, दोपहरी की निस्तब्धता में, शाम के शोर-गुल और रात के रंगीन अंधकार में जिसे देखा है, वह एक ही कनि नहीं है। एक ही कनि में कई कनियां छिपी हुई हैं। कनि द गर्ल, कनि द मदर, कनि द सिस्टर को मिलाकर जिस एक कनि द वूमन की सृष्टि हुई है, उसकी बातें याद करके मैं आज भी चकित रह जाता हूं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी ऐसी कोई समस्या संक्षेप में लिखकर भेज सकते हैं। --संपादक]

चरित्रहीनता का भ्रम

"मैं बचपन में अपने एक बड़े चचेरे भाई के संपर्क में आकर कुछ यौन-संबंधी बातें सीख गया था। धीरे-धीरे उस कुटेव का विकास हुआ और मैट्रिक पास करने तक मेरा चरित्र एकदम गिर गया। मैंने पढ़ाई जारी रखी; किंतु प्रथम वर्ष डिग्री कोर्स में फेल हो गया। इसी बीच सौभाग्य से मुझे कुछ सत्साहित्य पढ़ने को मिला। उसने मुझे नयी स्फूर्ति और प्रेरणा तो दी; लेकिन मेरा चरित्र नहीं सुधर सका। यद्यपि अब मैं कुछ ही दिनों में सायंस का ग्रैजुएट हो जाऊंगा; लेकिन मेरे चरित्र की हालत यह है कि किसी लड़की को देखते ही मन में वासना जाग उठती है।....मैं चाहता हूं कि आगे बढ़ूं और पढ़-लिखकर कुछ करूं। लेकिन अपने चरित्र को देखते हुए कुछ हिम्मत नहीं होती। क्या कोई ऐसा उपाय है, जिससे एक बार गिरा हुआ व्यक्ति पुनः चरित्रवान बन सके ?

—एक नवयुवक पाठक"

आपकी उलझन आपकी ही नहीं, ऐसे हजारों-लाखों नवयुवकों की भी है,जो संस्कारहीन घरों में पल रहे हैं। जिस घर के मां-बाप का चरित्र स्वयं कमजोर है, जहां के वातावरण में पवित्रता नहीं है, उन घरों के युवकों का चरित्र भी कमजोर और अपवित्र होगा। आज के घरों में माता-पिता का परस्पर व्यवहार प्रायः अमर्यादित रहता है। आपने भी अपने चचेरे भाई के संपर्क में आकर अपना चरित्र बिगाड़ लिया। इसमें आपका दोष नहीं था। दोष केवल घरवालों का भी नहीं था। आज का साहित्य, आज की फिल्में और फिल्मी गीत सभी कच्ची उम्र के नौजवानों में कामोत्तेजन पैदा करने में योग देते हैं।

इसलिए उनके प्रभाव से बिलकुल बचे रहना असंभव है। आयु के साथ मनुष्य के मन में काम-भावना आती ही है। किसी के मन में समय से थोड़ा पूर्व और किसी में समय के साथ, स्त्री-सहवास की इच्छा पैदा होती है। और यह स्वाभाविक भी है। इस इच्छा को पाप समझना भूल होगी। यह मनुष्य की ऐसी प्रधान प्रवृत्तियों में से एक है, जो उसे जीने का उत्साह देती है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सृष्टि को आगे बढ़ाती है। यह न हों, तो न घर बने, न बच्चे पैदा हों और न ही संसार का कोई महान कार्य पूरा हो।

अतः स्त्री-सहवास की इच्छा को ही वासना मानकर मन में अस्वाभाविक निरोध बनाना, अपने विकास को रोकना है। आपके मन में "किसी लड़की को देख लेने से जो वासना उत्पन्न होती है," वह किसी सीमा तक स्वाभाविक है। किंतु वह सीमा वहीं तक है, जहां तक वह आकर्षण वासना न बनकर मधुर स्नेह बन सके। आप लड़की पर मुग्ध होकर उसे अपने अधिकार में लाने की न सोचें; बल्कि उसके सौंदर्य का आदर करें। एक दूसरे के गुणों का आदर करना स्वयं एक गुण है। आदर की इस भावना में भोग की इच्छा का कोई स्थान नहीं है।

हमारे समाज में 'चरित्र' की व्याख्या प्रायः स्त्री-सहवास की तीव्र कामना और उससे संबंधित प्रवृत्तियों से की जाती है। यह भूल है। चरित्र बहुत ही व्यापक अर्थ का शब्द है। इसका संबंध मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व से है। अपने सभी गुणों का विकास करते हुए सबके लिए दृढ़तापूर्वक कल्याणकारी कार्यों में लगे रहने से ही चरित्र का विकास होता है।

चिंता-विमूढ़
एक मेक्सिकी मूर्ति

यह मनुष्य के संपूर्ण जीवन के विकास की एक प्रक्रिया है, जो जीवन में प्रतिक्षण सचेष्ट रहती है। इसलिए किसी भी मनुष्य के जीवन में कोई भी क्षण ऐसा नहीं आता, जहां से वह अपने चरित्र का निर्माण फिर से न कर सके।

फिर आप तो अभी युवक हैं। अभी तो यह संभावना ही नहीं है—आप उस गहराई में गिर जायें, जहां से आप उठ न सकें। आपकी चरित्र-संबंधी निर्बलता यौन विचारों की है। इसे दूर करने के दो ही उपाय हैं।

प्रथम यह कि आप संयम करना सीखें। संयम इंद्रियों की वृत्तियों का किया जाता है। करनेवाला मनुष्य का मन होता है। लेकिन यह तभी संभव है, जब मन स्वयं इंद्रियों का गुलाम न बन जाये। मन स्वयं अपने मार्ग पर नहीं चलता। या तो इंद्रियां अपने सुखों के लिए उसे अपने रास्ते पर चलाती हैं अथवा मनुष्य की आत्म-प्रेरित बुद्धि मन को अपने वश में रखकर उससे वही काम करवाती है, जो कल्याणकारी होता है। बुद्धि द्वारा भला-बुरा सोचकर इंद्रियों की प्रवृत्तियों पर रोकथाम रखना ही संयम है। इसलिए संयम के लिए बुद्धि और आत्मा को इंद्रियों से ऊंचा मानना होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल मानने से ही काम नहीं चलेगा। प्रति-क्षण ध्यान रखना होगा कि हम किसी भी आवेश में आकर कोई ऐसा कार्य न करें, जो विचारपूर्ण न हो।

दूसरा उपाय यह है कि अपनी वृत्तियों को रचनात्मक कार्यों में लगायें। वृत्तियों को दवा देना वैसा ही निरर्थक है, जैसा सांप को पिटारी में बंद कर देना। पिटारी में बंद करने से ही सांप का जहर दूर नहीं हो जाता। हमारे अंतर्मन की पिटारी में ऐसे बहुत से जहरीले सांप बैठे रहते हैं, जो अवसर पाते ही हमें डस लेते हैं।

इस तरह का दमन प्रायः मनुष्य के जीवन को निष्कर्म और निरानंद बना देता है। ऐसा दबा हुआ आदमी अपना आत्मविश्वास भी खो बैठता है। तब वह कोई ऐसा शांत सरोवर ढूंढ़ लेता है, जहां उसकी नाव बिना हिले-डुले पड़ी रहे। वह दब्बू, कायर और दीन-हीन हो जाता है।

अतः ऐसे दमन से बचकर आपको अपनी काम-भावना के प्रवाह के लिए नये मार्ग ढूंढ़ने होंगे। आपको अपने जीवन का ऊंचा लक्ष्य बनाना होगा, ऊंचे आदर्शों के प्रति आस्था रखनी होगी। पत्र में आपने संकेत किया है कि "मैं चाहता हूं कि आगे बढ़ूं।" इस चाह को तीव्र बनाइये। पूरे आत्म-विश्वास के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाइये।

आपका यह आत्मविश्वास इस भ्रम के कारण शिथिल हो गया है कि आपने अपने चचेरे भाई के संपर्क में आकर यौन संबंधी कोई ऐसा पाप कर दिया है, जिसके लिए न समाज क्षमा करेगा, न ईश्वर; और अब आप को यह दंड भुगतना पड़ेगा कि आप कभी यशस्वी जीवन नहीं बिता सकेंगे। यह आपकी महान भूल है। कामजन्य अपराध भी अपराध है; किंतु यदि अपराधों की सूची बनायी जाये, तो इसकी गिनती कई ऐसे अपराधों से नीचे आयेगी, जिन्हें समाज सरलता से क्षमा कर देता है, अथवा क्षुद्र-सी भूल मानकर केवल सावधान कर देता है कि आगे से ऐसा न करना।

बचपन में की गयी यौन विषयक भूलों को हौवा बनाने की प्रथा हमारे समाज में पड़ गयी है। इन्हें बहुत डरावनी बनाकर बालकों के सामने पेश किया जाता है। आप भी अगर इसे हौवा समझते रहे, तो आप अपने विकास के विश्वास को खो बैठेंगे, अपने को बहुत दीन-हीन मानने लगेंगे। स्मरण रखिये, आपका अपराध भले ही कल्पित हो, दीन-भावना कल्पित नहीं होगी। यह दीनता आपकी सब शक्तियों को सोख लेगी। जीवन की कुचली हुई शक्तियां हमारे मन में दीनता का बीज बो देती हैं और यही विष-वृक्ष बनकर हमारी मानसिक मृत्यु का कारण बनता है। इसका उपाय केवल यही है कि आत्मसम्मान की भावना को प्रबल बनायें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है – सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-जुकाम व इन्फ्ल्यूएंजे का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

HIN

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवानी के बाद जवानी

बहुत से मशहूर आदमियों ने ढलती उम्र में भी कुछ-न-कुछ सीखने का सिलसिला जारी रखा। सुकरात ने बहुत बड़ी उम्र में बाजा बजाना सीखा, जिससे वह बुढ़ापे की थकान और उदासी को दूर कर सके।

स्पेम के राजनीतिज्ञ केटो ने अस्सी साल की उम्र में ग्रीक भाषा सीखनी शुरू की। यूनानी साहित्यकार प्लूटार्क जब पचहत्तर वर्ष का था, तब उसने लैटिन की शिक्षा प्रारंभ की थी। विख्यात इटालियन कहानीकार बोकेशियो ने पैंतीस वर्ष की उम्र में साहित्यिक जीवन का प्रारंभ किया था और बहुत जल्दी वह चोटी के लेखकों में आ गया। आज के लेखक पच्चीस वर्ष की अवस्था में यदि लेखन-कार्य सफलतापूर्वक न कर सकें, तो यह समझते हैं कि अब उन्हें यशस्वी बनने का अवसर नहीं मिलेगा।

सर हेनरी स्पेलमैन विज्ञान का विद्यार्थी था; किंतु पचास वर्ष की आयु तक उसने विज्ञान की शिक्षा का कोई लाभ नहीं उठाया। आखिर ५०-६० की आयु के बाद उसने फिर विज्ञान के परीक्षण किये और वह बहुत जल्दी बड़ा वैज्ञानिक बन गया।

फ्रांस के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कालबर्ट ने ६० वर्ष की आयु में लैटिन भाषा का अभ्यास किया और कानून की शिक्षा ली। आज के तालीम पाये लोगों में कितने ऐसे हैं, जो डिग्री पाने के बाद किसी भी नये विषय का अध्ययन शुरू करें?

लुडोविको ने ११५ वर्ष की आयु में अपनी जीवन-कहानी लिखी। होमर के अनुवादक ओग्लिवी को ५० वर्ष की आयु तक ग्रीक भाषा नहीं आती थी। प्रसिद्ध विचारक फ्रैंकलिन ने दार्शनिक विषयों का अभ्यास ५० वर्ष की आयु के बाद ही किया था।

हममें से कितने हैं, जो ३०-३५ या ४० वर्ष की आयु के बाद अखबारों या हल्के-फुल्के पत्रों के अलावा कुछ भी पढ़ते हैं?

एक प्रसिद्ध वकील से जब पूछा गया कि तुमने इतनी बड़ी आयु में कानून पढ़ना क्यों शुरू किया, तो उसने जवाब दिया था—"मैं जानता हूं कि मैंने पढ़ाई बहुत देर में शुरू की; लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि अब मैं बहुत जल्दी पढ़ाई पूरी कर लूंगा।"

सच तो यह है कि स्वस्थ बूढ़ा आदमी जवान की अपेक्षा आधे समय में कोई भी दिमागी काम पूरा कर सकता है।

इतिहास में ऐसे हजारों आदमियों के उदाहरण मौजूद हैं, जिन्होंने ढलती आयु में ही बिलकुल नये विषयों का अध्ययन और अभ्यास शुरू किया और बहुत जल्दी कामयाबी की चोटी पर पहुंच गये। केवल आलसी आदमी यह कहा करते हैं—"भई, अब मैं बूढ़ा हो गया हूं, नयी बात कैसे सीखूंगा?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

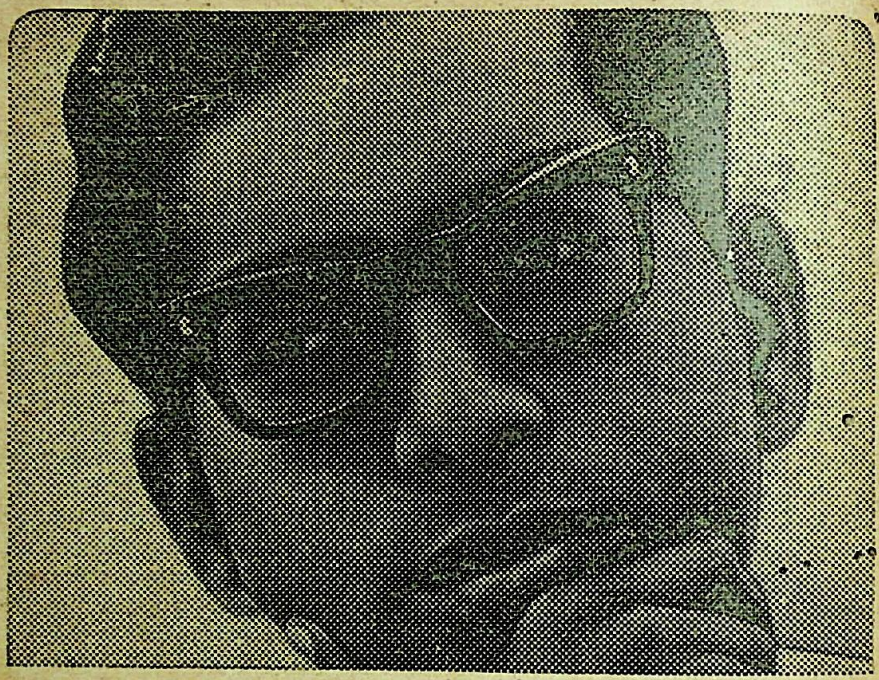

SHB2/NGB-80A HIN

सेविंग्स एकाउण्ट खोलने के संकल्प किए कितने दिन हुए?

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज में एकाउण्ट का आज से ही आप शुभारम्भ कीजिए। आपकी बचत बढ़ती जायगी और ब्याज मिलता जायगा।

आपकी संचित रकम चाहे कितनी कम क्यों न हो नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ के समक्ष आप सर्वदा माननीय हैं।

नेशनल ऐण्ड ग्रिण्डलेज़ बैंक लिमिटेड

संयुक्त राज्य में समितिबद्ध : सदस्यों का दायित्व सीमित

बम्बई की शाखायें:—९०, महात्मा गांधी रोड; २७०/२७२, डॉ० दादाभाई नौरोजी रोड, (लॉयड्ज़ ब्रान्च); मिंट रोड, (मिंट रोड तथा सर पी० एम० रोड के कोने पर); २१/२९, प्रिन्सेप स्ट्रीट, लॉयड्ज़ ब्रान्च); ११७/११९, काज़ि सैयद स्ट्रीट, माण्डवी; ६५एफ, लिंकिंग रोड, सांता क्रुज; ५७४ गोवालिया टैन्क रोड, कम्बाला हिल; शिवाजी मंदिर, एन० सी० केलकर रोड, दादर; २४बी, क्लब रोड वाइकला। **ठाणा:**—आग्रा रोड. कोलबाद रोड, (कैसल मिल्स के पास)।

एसोसियेटेड बैंक्स : लॉयड्ज़ बैंक लिमिटेड • नेशनल प्रॉविन्सियल बैंक लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख़ूब थे वे लोग!

काशी कृष्णमाचार्य :

नब्बे वर्ष की अवस्था में भी संस्कृत के प्रचार में यत्नशील रहनेवाले महामहोपाध्याय अवधान-शिरोमणि काशी कृष्णमाचार्य चोटी के विद्वान ही नहीं थे, अत्यंत स्वाभिमानी, धर्मनिष्ठ साहित्यकार भी थे।

तेलुगु और कन्नड के मर्मज्ञ होते हुए भी आपने संस्कृत-प्रचार को अपने जीवन का ध्येय बनाया था। तेलुगु लिपि में संस्कृत लिखने की परिपाटी के जन्मदाता आप ही थे। संस्कृत पत्रकारिता का प्रारंभ भी एक तरह से आपसे ही हुआ। 'मातृभाषा' नाम से एक संस्कृत पत्रिका का संचालन-संपादन आज से पचास वर्ष पूर्व आपने किया था। पत्रिका संस्कृत-प्रेमियों में बहुत लोकप्रिय हुई थी।

ध्येयनिष्ठ

चालीस वर्ष पूर्व आपने संस्कृत-शिक्षा के लिए जो पुस्तकें लिखी थीं, उन्हें शिक्षा-मंत्रालय ने मान्यता दी और आज भी वे पाठ्यक्रम में हैं और संस्कृत-शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें मानी जाती हैं।

स्वाभिमानी आप बचपन से ही थे। जिन दिनों आप संस्कृत के अध्यापक थे, आपने एक धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करने के लिए छुट्टी मांगी। मुख्याध्यापक ने प्रार्थना अस्वीकार कर दी, तो आपने तुरंत नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

आपके स्वभाव में दृढ़ता इतनी थी कि एक बार पश्चिमी चिकित्सा-पद्धति से विश्वास टूटा, तो जीवन-भर डाक्टरी दवा नहीं की। राजयक्ष्मा रोग में भी प्राकृतिक चिकित्सा से ही आरोग्य-लाभ किया। ऐसे धर्मनिष्ठ, स्वाभिमानी और दृढ़व्रती विद्वान आज कहां है?

०००

बाबू हरिसाधन मुखोपाध्याय :

बंग-साहित्य की समृद्धि में बाबू हरिसाधन मुखोपाध्याय का योगदान कम महत्व का नहीं माना जाता। जो काम अंग्रेजी में सर वाल्टर स्काट ने विशाल ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर किया, वही काम हरिसाधन बाबू के हाथों बंगला में संपन्न हुआ।

विश्राम में साहित्य-सृजन

आजीविका के लिए डाक-तार विभाग के एक ऊंचे ओहदे की जिम्मेदारी निभाते हुए भी आपने लगभग २० विशाल ऐतिहासिक उपन्यास लिखे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और लगभग ८ सामाजिक उपन्यास रचे।

दिन के सब कामों से निपटने के बाद रोज रात को १२–१ बजे तक लालटेन् की रोशनी में तन्मय होकर लिखना, आपका प्रतिदिन का कार्य था। आप प्रायः कहा करते थे–"निद्रा लेने से पूर्व यदि कोई दस मिनिट भी अच्छी पुस्तक पढ़ ले, तो दस घंटों की थकान उतर जाती है।" थकान उतारते-उतारते आपने राजपूत योद्धाओं के शौर्य एवं मुगलों के वैभव का चित्रण करनेवाले डेढ़ दर्जन उपन्यास लिख डाले।

आपके सामाजिक उपन्यासों में नारी-स्वभाव का अत्यंत गौरवमय चित्रण है। इसका संपूर्ण श्रेय आपकी रूपवती, सौम्य, सुशील पत्नी को दिया जाता है।

आधुनिक लेखकों के भाग्य में भी यदि यह ईश्वरीय वरदान आ जाये, तो निश्चय ही साहित्य-सृजन की अनेक उलझनें खुद-ब-खुद मिट जायें।

०००

फिलिप गिब्स :

युद्ध के मैदान में जब चारों ओर से गोलियों की बौछार होती थी, सैनिक अपनी खंदकों में निशाना साधे बैठे होते थे, तब फिलिप गिब्स मुख में फाउंटन पेन दबाये, कंधे पर कैमरा लटकाये एक स्थान से दूसरे स्थान तक दौड़ते नजर आते थे। खाना कभी मिला, कभी न मिला; नींद कभी पूरी हुई, कभी न हुई; मगर अखबार के लिए ताजी खबरें भेजने में कभी देर नहीं हुई।

युद्धक्षेत्र की अग्रिम पंक्ति के साथ ही वे रहते थे। जहां से अन्य सब पत्र-संवाददाताओं को वापस भेज दिया जाता, वहां भी वे किसी-न-किसी तरह पहुंच जाते। कई बार तो बंदूकधारी सैनिकों के पहरे में उन्हें वापस जाती हुई ट्रेन में चढ़ाया गया।

तत्पर पत्रकार

मगर शीघ्र ही उनका चेहरा गोलियों के बीच नजर आता था।

फिलिप गिब्स के संवाद जीत-हार के समाचार-भर नहीं होते थे; बल्कि मानवीय भावनाओं से भरे होते थे, युद्ध की पृष्ठभूमि पर चित्रित होते मानवीय सुख-दुःख की बातों का सजीव चित्रण होता था।

फिलिप गिब्स जैसा संवाददाता लाखों में एक मिलेगा।

★

साधुओं का एक प्रतिनिधि-मंडल गृहमंत्री गुलजारीलाल नंदा से मिलने आया। अपने समाज के लिए विशेष रियायतों की मांग करते हुए साधुओं ने अनेक धर्मग्रंथों से दलीलें दीं। इनसे उनकी मांगों के औचित्य की पुष्टि होती थी। सब कुछ धैर्यपूर्वक सुनते हुए नंदाजी मुस्कराये। बोले –"आपकी मांगें भला क्यों न पूरी की जायेंगी? आपका तो वकील परमात्मा है।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऑफिस में हर दिन चुस्त रहना जरूरी है...

टिनोपाल सफ़ेद कपड़ों को अधिक सफ़ेद बनाता है

सफ़ेद कपड़ों को चमकीला बनाता है।

उसके उपरी उसे बहुत चाहते हैं। वह काम में चुस्त है। देखने में भी चुस्त। इसके लिए वह अपनी पत्नी की जहमत तथा टिनोपाल का आभारी है जिनके कारण वह हर दिन चमकीले सफ़ेद कपड़े पहन पाता है।

आपके धुले हुए सफ़ेद कपड़े—कमीज़, साड़िया, ब्लाउज, तौलिये, बच्चों के कपड़े वगैरह को आखिरी बार नलके सनय थोड़ासा टिनोपाल डाल कर देखिए। इन्हीं कपड़ों में कितनी चमक आ जाती है! और इस पर खर्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। कपड़ों को हर दिन चमचमाता सफ़ेद बनाने के लिए टिनोपाल इस्तेमाल कीजिए। सभी चुस्त लोग इसे ही पसन्द करते हैं। टिनोपाल एक आधुनिक, वैज्ञानिक, ब्लाइटनर है...सभी प्रकार के कपड़ों के लिए एकदम हानिरहित।

टिनोपाल सी. आर. गायगी, एस. ए. बासल स्विटज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

सुहृद गायगी लिमिटेड, पो. बा. नं. ९६५ बम्बई-१ बी आर

Shilpi SGT. 179 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने 'एवरेडी' टॉर्च पर आप बराबर भरोसा रख सकते हैं

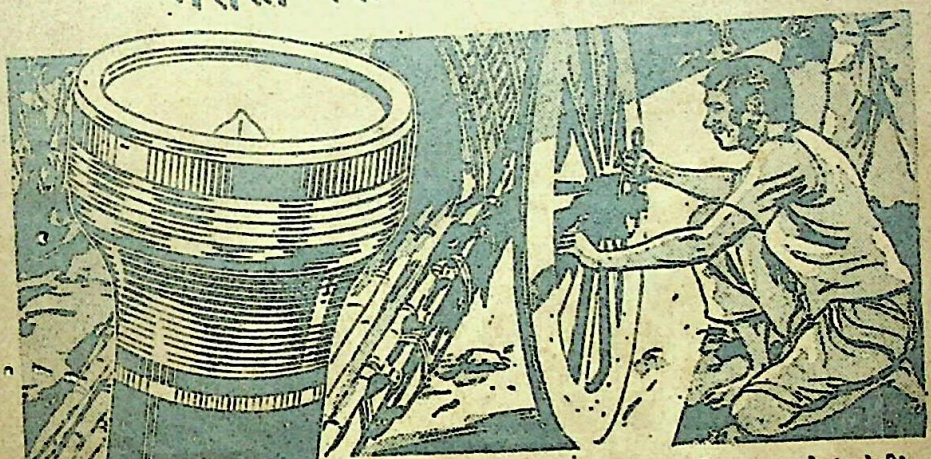

'एवरेडी' डीलर की दुकान के तरह तरह के 'एवरेडी' टॉर्चों में से जो भी 'एवरेडी' टॉर्च क्यों न चुनें, बराबर आप पूरा भरोसा रख सकते हैं कि 'एवरेडी' टॉर्च आपको कभी धोका नहीं देगा।

- सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।
- और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।
- इनके मजबूत देगोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
- 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।
- विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे लगातार रोशनी देती हैं और सबसे अधिक टिकती हैं।
- आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

'एवरेडी'
टाइप नं० ३५६२
सिर्फ रु० ३.००
७५ बैटरी—
सिर्फ ४८ पैसे में एक।
कर अलग से

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

UNION CARBIDE

UWTUC 2139

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 6248

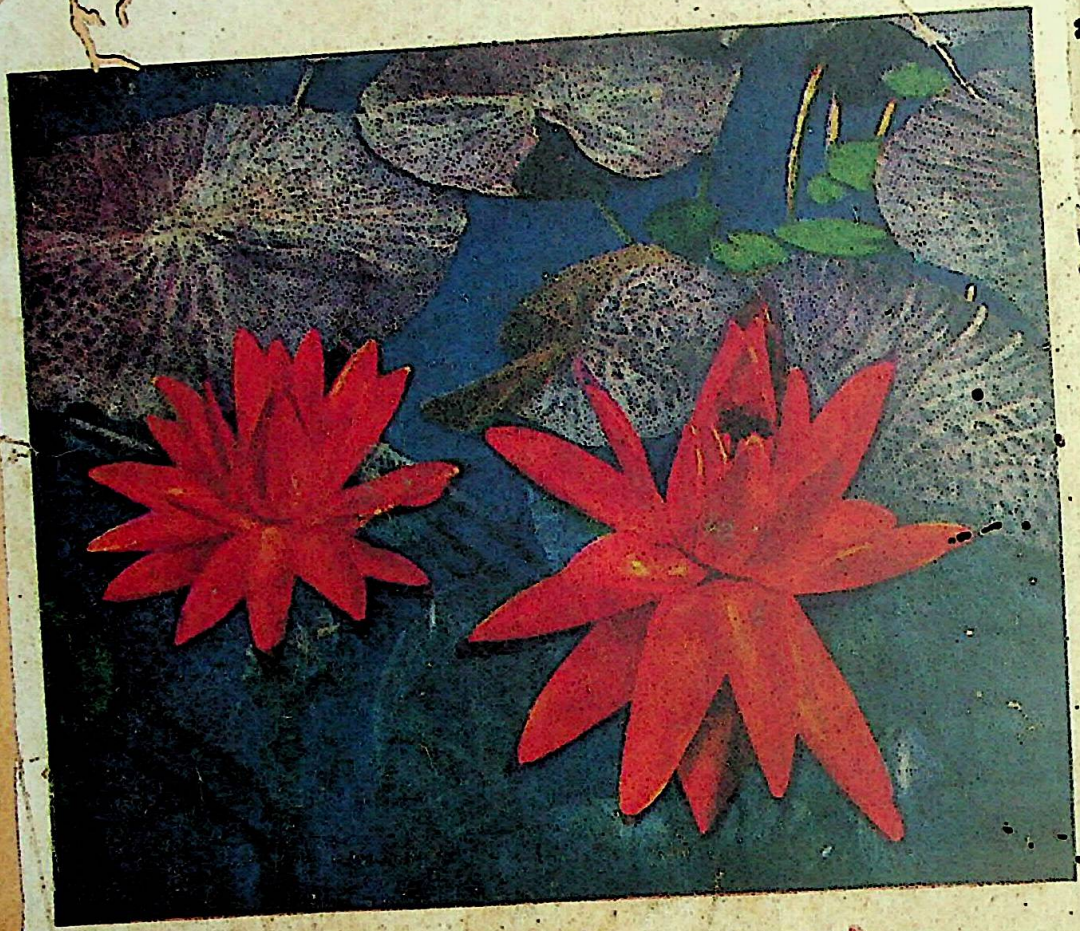

आप भी फूल जैसी खिलें

रमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri